हिन्दी

विश्वकोष

(षष्ठ भाग)

) खड़िक चातुरर्थिक इञ्। खड़िक

खाड़िकि (पु

सम्बन्धीय (• स्त्री•) आखात, खलीज, तीन ओरको

खाड़ी (हिं रा। हुआ समुद्रका हिस्सा। जैसे—बङ्गाल

जमीन्दृवे (। २ अरहरका कोई पेड़। यह हुआ होता

की खाड़ी विरी रङ्ग।

है। ३ म• पु०) खपड़े छानेका एक ठाट। इसमें पतली

खाड़ (हिं... लकड़िया लगती हैं।

पतली स स• पु०) खड़रस्यापत्यम् खड़ूर ढक।

खाड़ूरेय एक ऋषिके अपत्य।

खड़ूर मध (स• पु०) खर्गोन्मत्ताया अपत्यम् खडी

खाडोन्मत्ते। खडोन्मत्ताके अपत्य।

खात्ता ढय स• त्रि•) खड्गानां समूहः खाद खाद्गा

खाड्गिक पु। खड्गधारी, तलवारबन्द।

खस्त्यर्थे (• स्त्री•) खण्डस्य भाव, खण्ड अप। 'बादर

खाण्ड (स नामकौमुदी) १ खण्डका भाव, टुकड़पन।

वाम् वय।(हिं। २ खण्डविकार, चीनीकी चीज।

खण्डस्य वि वि•) खाण्ड खण्डविकार याति, या क।

खाण्डव (अण्मुल, चीनीका बना हुआ। (पु•)

१ खण्डविकारदेवो। (स्त्री•) खाण्ड ख्यामस्तदाख्यया अधि

२ पाड्य। आश्रम, खाण्डवी अण्। २ कोई प्रसिद्ध वन।

छाया लगायी उनिसा है कि उस वन में पूर्वकालको

कालिकापुराण वास रहा। चन्द्रवंशीय सुदर्शन

इक आदि देखें] 1

Vol.

नामक किसी राजाने इन्द्रके आदेशसे उस वनको आबाद करके खाण्डवी नामकी कोई पुरी बसायी थी। इसी खाण्डवीपुरीने गुणगरिमामें उस समयकी समस्त पुरियोंमें श्रेष्ठता पायी। खाण्डवी १०० योजन दीर्घ और ५० योजन विस्तृत थी। दिन दिन सुदर्शनकी महिमा भी बढ़ने लगी। एक एक करके सब राजा हार कर उनके अधीन हो गये। सुदर्शनने देवताओं पर भी अपना अधिकार फैलाया और अधीन प्रजा पर कुछ कुछ अन्याय आचरण भी चलाया था। थोड़े दिनोंमें ही उनसे सब लोग बिगड़ पड़े। सुदर्शनने काशिराज विजयसे सन्धि स्थापन करके उनको अपना मन्त्री बनाया था। काशीराजने अवकाश मिलने पर सुदर्शनके अनिष्ट करनेकी चेष्टा की। सुदर्शन यह गुप्त संवाद पाकर उनसे लड़ने लगे। इस लड़ाईमें सुदर्शनकी हार हुई। काशीराजने खाण्डवीपुरी लूट करके तोड़ फोड़ डाली। फिर इन्द्रने आकर काशीराजसे कहा था कि उस स्थानमें पीछेको एक वन रहा। उसमें देव और गन्धर्व सुखसे विचरण करते थे। सुदर्शनने उनके सुखमें बाधा डाल खाण्डवीपुरी बसायी। उनकी इच्छा थी फिर वह स्थान वन जाय तो अच्छा हो। काशी राज विजयने देवोंके आदेशसे वहां एक वनझाड़ी लगवा दी और प्रजाको अपने साथ राज्यमें ले गये। इसी वनका नाम खाण्डव है। (वह्निपुरा० ८८ अ०)

द्वापरके अन्तमें अग्निने ब्राह्मणके वेशमें अर्जुनके पास जा कर खाण्डव वन जला देनेके लिये प्रस्ताव किया। अग्निकी प्रार्थनासे मध्यम पाण्डवने उसमें सम्मति दी और श्रीकृष्णकी सहायसे खाण्डव वन जलाना प्रारम्भ किया। देवराजने दूतसे खाण्डवदाहकी बात सुन अर्जुनको लड़ाई ठान दी। युद्धमें सेनाओंके साथ देवताओंको पराजय स्वीकार करना पड़ा। अर्जुनने विना किसी बाधासे खाण्डव दहन करके अपना अक्षय कीर्ति स्थापन की। (कालिकापुराण ८० अ०)

बहुत पुराने समयसे भारतवासी खाण्डव-वनको जानते हैं। यजुर्वेदके तैत्तिरीय आरण्यक (५।१।१) और पञ्चविंशब्राह्मणमें (२५।३) उसका उल्लेख लगा है। पाण्डवोंने धृतराष्ट्रसे पांच गांवोंमें यही खाण्डव-प्रस्थ मिला था, अन्तको उन्होंने यहीं इन्द्रप्रस्थ स्थापन किया। (भारत, आदिपर्व) इन्द्रप्रस्थ देखो।

खाण्डवक (सं० त्रि०) खण्ड चातुरर्थिक-वुण्। खण्ड-सम्बन्धीय।

खाण्डवप्रस्थ (सं० पु०) इन्द्रप्रस्थ, मौजूदा दिल्लीका एक किलादा। (भारत १।६१ अ०)

खाण्डवायन (सं० पु०) खाण्डवं तन्नामकं वनं अयनं आश्रयः यस्य, बहुव्री०। खाण्डववनमें रहनेवाले ऋषि। (भारत १।११० अ०)

खाण्डविक (सं० पु०) खाण्डवं मोदकादिशिल्पमस्य खाण्डव-ठन्। लड्डू बनानेवाला, हलवाई। (भारत, आश्व० १ अ०)

खाण्डवी (सं० स्त्री०) एक पुरी। इसे चन्द्रवंशीय सुदर्शनराजने हिमालयके निकट बसाया था। खाण्डव देखो।

खाण्डवीरणक (सं० वि०) खण्डवीरणेन निर्वृत्तम्, वुण्। खाण्डवीरणनिर्वृत्त।

खाण्डिक (सं० पु०) खण्डं मोदकादिकं शिल्पमस्य, ठञ्। १ हलवाई, कंदोई, मिठाई बनानेवाला। (क्ली०) खण्डिकानां समूहः, खण्डिक-अञ्। खण्डिकादिभ्यश्च। पा ४।२।४५। २ खण्डिक समूह।

खाण्डिकीय (सं० पु०) खाण्डिकेन प्रोक्तमधीयते, खण्डिक छण्। तित्तिरिवरतन्तु खण्डिकोखाच्छण्। पा ४।३।१०२। खण्डिकोक्त शास्त्र पढ़नेवाले।

खाण्डिक्य (सं० पु०) १ निमिवंशके कोई राजा। इनके बापका नाम मितध्वज रहा। खाण्डिक्य बड़े कर्मतत्त्वज्ञ थे। (क्ली०) खाण्डिकस्य भावः कर्म वा, खाण्डिक-यञ्। पत्यन्तपुरोहितादिभ्यश्च। पा ५।१।१२८। २ खाण्डिकका भाव, खाण्डिकता, गुप्ता, नाराजगी। ३ खाण्डिकका कर्म।

खाण्डित (सं० त्रि०) खण्डित-अण्। खण्डितका सम्बन्धित (देशादि)।

खाण्डिन्य (सं० त्रि०) खण्डिन् चातुरर्थिक-ण्य। खाण्डिन्ति देखो।

खात् (सं० अव्य०) अव्यक्त शब्द, समझमें न आने वाली आवाज।

खात (सं० क्ली०) खन भावे क्त। १ खनन, खोदाई। कर्मणि क्त। २ पुष्करिणी, तालाव। ३ कूप, कुआं। ४ गर्त, गड्ढा। (त्रि०) ५ [illegible]

खात (हिं० स्त्री०) १ मलवेद। २ [illegible] [illegible] गाय बनानेके लिये रखा जाता है। [illegible] हुवा रखनेकी जगह। ३ खाट, पांस। (त्रि०) ४ [illegible] ना।

खातक (सं० क्ली०) खात [illegible] १ परिखा, खाई। (पु०) २ अधमर्ण, असामी, रुपया उधार लेनेवाला। ३ शत्रु [illegible] सेना विदारण करनेवाला, जो दुश्मनकी फौज न टिकने दे।

खातभू (सं० स्त्री०) खातभूः। १ परिखा, खाई। २ प्रतिकूप, कूएंका गड्ढ।

खातमा (फा० पु०) १ अन्त, आखीर। २ मृत्यु, मौत। ३ सिरा।

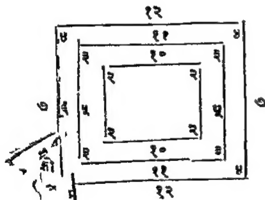
खातव्यवहार (सं० पु० खातस्य पुष्करिण्याः व्यवहारः दैर्घ्य विस्तारवेधादिभिर्यस्ता निर्णयः ६-तत्। गणित-विशेष, एक हिसाब। इससे तालाब आदिका घेतफल निकलता है। लीलावतीमें खातव्यवहारकी प्रणाली इस प्रकारसे लिखी है—

जिस गणितसे खातका परिमाण [illegible] जाता, खातव्यवहार कहलाता है। क्षेत्रकी तरह खात भी चौकोना, तिकोना और गोल कई प्रकारका होता है। परन्तु लीलावतीके टीकाकार मुनीश्वरने इसे विशेष करके २ भागोंमें बांटा है—विषम और सम। खातका ऊपरी भाग मुख और नीचेका हिस्सा तल (पेंदा) कहलाता है। जिस गड्ढेके मुंहकी लम्बाई

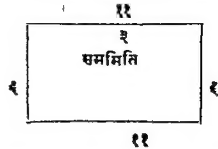
चौड़ाई पेंदेकी लम्बाई चौड़ाईसे मिलती, इसको जनता सम वा समखात कहलाती है। फिर जिसका मुख तलके बराबर लम्बा चौड़ा नहीं रहता, उसको सब कोई विषमखात कहता है खातके गाम्भीर्यको वेध कहते हैं। जिस गड्ढेकी सब जगहकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई बराबर नहीं आती, उसकी समभिति निकाल कर प्रक्रिया की जाती है। लीलावतीमें समभिति करनेका उपाय इस प्रकारसे लिखा है—

गड्ढेमें जो कई एक जगहें छोटी बड़ी लगें, उनको सूतसे नापके अलग अलग रखना चाहिये। फिर सबको मिलाकर स्थानसंख्या अर्थात् नापी जानेवाली जगहोंके जोड़से भाग लगाते हैं। इसमें जो लब्ध आता, गड्ढेकी लम्बाईकी समभिति माना जाता है। इसी प्रकारसे चौड़ाई और गहराईकी असमानता होने पर उनकी भी समभिति बनानी पड़ती है।

उदाहरण—जिस गड्ढेकी लम्बाई तीन जगहोंमें १२, ११ और १० हाथ, चौड़ाई ३ स्थानों ७, ६ और ५ हाथ और वेध ३ मुकामों पर ४, ३ तथा २ हाथ हैं, उसकी समभिति बनाइये।



प्रक्रिया—तीनों जगहों की लम्बाई १२, ११ और १० का जोड़ ३३ है। इसको स्थानसंख्या ३से भाग देने पर ११ फल आता है। इसलिये इस खातके दैर्घ्यकी समभिति ११ हुई। इसी प्रकार स्थानत्रयके विस्तार ७ ६ और ५का योगफल १८ है। इसको स्थान संख्या ३से बांटने पर ६ लब्ध होगा। सुतरां गड्ढेके विस्तारकी समभिति ६ निकली। फिर तीनों स्थानों के वेध ४, ३ और २का योगफल ८ होता है। इसको ३ से भाग देने पर ३ ही लब्ध आयेगा। इसलिये गहराईकी समभिति ३ ठहरती है। समभिति करनेसे इस खातका आकार नीचे लिखा जैसा होगा—



खातफल निर्णय करनेका उपाय—खातके क्षेत्रफलको वेधसे गुण करने पर जो फल आता, खातका घनफल कहलाता है।

उदाहरण—दिखलाये हुए खातका फल स्थिर करो।

प्रक्रिया—प्रदर्शित खातकी समभिति करने पर आयतक्षेत्रके नियमानुसार क्षेत्रफल ६६ ठहरता है। इसके वेधकी समभिति ३से गुण करने पर १९८ निकलेगा। इसलिये खातका फल १९८ घनहस्त है।

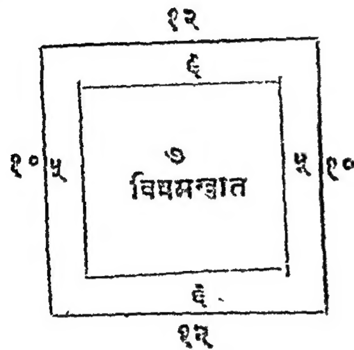
घनहस्त देखो।

विषमखातके फलनिर्णय करनेका नियम—मुखक्षेत्रफल, तलक्षेत्रफल और युतिज क्षेत्रफल (मुंहकी लम्बाई और पेंदेकी लम्बाईके जोड़को लम्बाई और मुंहकी चौड़ाई तथा पेंदकी चौड़ाईके जोड़का चौड़ाई मान करके हिसाब लगानेसे जो फल आता, युतिज क्षेत्रफल कहलाता है।) तीनों क्षेत्रफलोंको जोड़नेसे जो आयेगा, ६से वह बांट दिया जायेगा। इससे जो लब्ध निकलता, समक्षेत्रफल ठहरता है। फिर समक्षेत्रफलको वेधसे गुण करने पर मिलनेवाला फल ही खातका घनफल होता है।

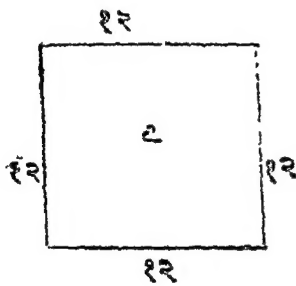
उदाहरण—जिस विषम खातके मुखका विस्तार १०, तथा दैर्घ्य १२ और तलका विस्तार ५, दैर्घ्य ६ और वेध ७ है—उसका घनफल ठीक करो।

प्रक्रिया—मुखका क्षेत्रफल १२०, तलका क्षेत्रफल ३०, मुखका दैर्घ्य १२ और तलका दैर्घ्य ६ तथा दोनोंका योगफल १८, मुखका विस्तार १० और तलका विस्तार ५ तथा दोनो का योगफल १५ है। इन्हीं दोनो योगफलोंको यथाक्रम दैर्घ्य और विस्तार कल्पना करने

से युतिज क्षेत्रफल २७० निकलता है। इनका योग फल (१२+३०+२७०=४२०) ४२० है। इसको ६से बांटनेसे समक्षेत्रफल ७० आवेगा। इसको वेध ७से पूरण करने पर ४९० फल मिला। इसलिये खातका परिमाण ४९० घनहस्त होगा। बावड़ी, तालाब आदिका परिमाण प्रायशः इसीप्रकार निकालते हैं। क्योंकि उसका मुख और तल बराबर नहीं रहता।

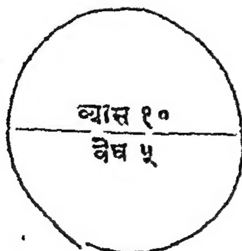


सदृशसम समखातका उदाहरण—जो गड्ढा १२ हाथ लम्बा, १२ हाथ चौड़ा और ८ हाथ गहरा है—उसका घनफल क्या आवेगा।



प्रक्रिया—क्षेत्रफल १४४को वेध ८ द्वारा गुण करनेसे फल १[illegible]६ घनहस्त होगा।

वृत्त[illegible]का उदाहरण—जिस गोल गड्ढेका व्यास १० और [illegible] ५ हाथ है, उसका फल स्थिर करो।



प्रक्रिया—वृत्तक्षेत्रके नियमानुसार प्रक्रिया करने पर सूक्ष्म परिधि $\frac{३९२७}{२५}$ और सूक्ष्म क्षेत्रफल $\frac{३९२७}{५०}$ आता है।

इसको वेध ५से गुण करने पर घनफल $\frac{१९६३५}{१०}$ आता है। जो गड्ढा अपने मुंहसे धीरे धीरे घटकर एकबारगी ही गुम हो जाता, सूचीखात कहलाता है। इस गड्ढेको समखात माननेसे आनेवाले फलका $\frac{१}{३}$ अंश ही सूचीखातका फल समझना चाहिये।

उदाहरण—११ हाथ लम्बे, १२ हाथ चौड़े और ९ हाथ गहरे सूचीखातका फल कितना होगा?

प्रक्रिया—इस समखातके फल १२९६को ३से भाग करने पर ४३२ फल मिलता है। इसलिये ४३२ ही उक्त सूचीखातका फल है।

जिस गोल तालाबका व्यास १० और वेध ५ है, फल कितना निकलेगा?

पहले दिखलाये हुए समवृत्त खातके घनफल $\frac{१९६३५}{१०}$ का ३से भाग करने पर $\frac{६५४५}{१०}$ इस गोलतालाबका फल निकला। (लीलावती-खातव्यवहार)

खाता (हिं० पु०) १ बही खाता, खतौनी। २ हिसाब किताबकी बही। इसमें हरेक असामी या कारबारीका हिसाब रोज रोज ब्योरेवार लिखा जाता है। ३ विभाग, मद।

खाति (सं० स्त्री०) खन भावे क्तिन् आत्व। खनन, खोदाई, खोदनेका काम।

खातिक—दाक्षिणात्यकी एक जाति। बम्बई प्रदेशके विजयपुर शोलापुर प्रभृतिमें यह लोग रहते हैं। कहीं कहीं खातिक सूर्यवंशी लाड़ भी कहलाते हैं। सम्भवतः यह गुजरातके सूर्यवंशियोंकी शाखा होंगे।

यह लोग मराठी भाषामें बातचीत करते हैं। और महाराष्ट्रसे आ कर इस प्रान्तमें बसे होंगे। इनमें सूर्यवंशी लाड़ और मुलतानी नामकी श्रेणियां होती हैं। इन दोनों विभिन्न विभागोंमें खाना पीना या शादी विवाह नहीं चलता।

खातिकोंमें बिलगीकर, बुजरूनर, चंदूकाल, धर्मकम्बला, गोविन्दकर, प्रभुकर, राजपुरी प्रभृति उपाधि होती है। वरकन्या दोनोंका एक ही उपाधि रहनेसे विवाह नहीं करते।

परन्तु कोई कोई कर्णाटी या हिन्दी भी बोल सकता है। खातिक बकरी, भेड, भैंस आदि जन्तु पालते हैं। पत्थर और मट्टीसे घर बनाये जाते हैं। सबको साफ सुथरा रहना अच्छा लगता है। मैला कपड़ा कोई नहीं पहनता।

खेत जोतनेके लिये किसान खातिक बैल और घोड़े रखते हैं। रोटी, दाल, भात और तरकारी इनका प्रधान आहार है। सब लोग थोड़ा बहुत मांस मछली खा लेते हैं। इन्हें भेड़, हिरन खरगोश, बत्तख मुर्गी वगैरहका मांस खानेमें भी कोई आपत्ति नहीं। आश्विन मासकी 'कालो नवमी' (महानवमी) तिथि इस जातिके महापर्वका दिन है। उस अवसर पर कितने ही लोग भवानीदेवीको पूजाके लिये भेड़ बलि चढ़ाते और बड़े समादरसे प्रसादी मांस खाते हैं। आश्विन मासके नवरात्रको अर्थात् महालयासे महानवमी पर्यन्त बड़ी धूमधाम रहती है। शिवरात्र और प्रति एकादशीको यह अपनी दूकानें बन्द रखते हैं। भाद्र मासकी गणेश चतुर्थीको गणेशदेवकी प्रतिमूर्ति बना कर पूजी जाती है। दुर्गा, श्यामा, मारुती शिवराय आदि इनकी कुलदेवता हैं। हिन्दूशास्त्रोक्त पर्वके दिन यह भी उपवास आदि नियम पालन करते हैं। किसी देवताकी पूजा करनेसे पहले खातिक स्नान करके शुद्ध हो जाते और जल चन्दन, पुष्प नारिकेल, पूगफल शर्करा, गुड़, छोहारा, कर्पूर और धूपदीप लेकर पूजा चढ़ाते हैं। ऊपर कहे हुए देव देवियोंके छोड़ यह सूर्यनारायणकी भी उपासना करते हैं। इनमें प्राय सभी मादकसेवी (नशाबाज) हैं। पूजा पार्वण आदिके समय इसीलिनके लिये शराब, भांग, गांजा और अफीम न मिलनेसे मजा किरकिरा पड़ जाता है। पुरुष मस्तक पर चोटी रखते हैं। स्त्रियोंको लाल या काला कपड़ा और गहना पहनना अच्छा लगता है। सधवा स्त्रियां विवाहके पीछे बराबर 'मङ्गलसूत्र' पहने रहती हैं।

इनकी स्त्रियां प्रसवके पीछे १ अथवा १॥ मास तक सोवरसे नहीं निकलतीं। इस अवस्थामें प्रसूतिको गर्म रखनेके लिये चारपाईके नीचे पहले १५ दिन अंगीठीमें आग रखाते और गुड़, गिरी, सोंठ, पीपल गोंद तथा छोहारा बुकनी करके मक्खनके साथ खिलाते हैं। घरकी वृद्धा स्त्री ६ठें दिन षष्ठीमाताकी पूजा लेतीं और उसी रोज धात्रीको विदा कर देती हैं। बहुतोंके घरमें छठीको भाईबन्द और नातेदार रिश्तेदारोंका भोज होता है। १२वें दिनको पुत्रका नामकरण किया जाता है और अहवाती स्त्रियां सूपमें पञ्चधान्य रखके लड़केको गोद खिलाने पहुंचती हैं। ३ मास या ६ मासकी उम्रमें बच्चेका चूड़ाकरण होता है। विवाहका कोई समय बंधा नहीं है। १ मासकी बालिकासे लेकर १८ वर्षकी युवती तक ब्याही जाती है। सब लोग बाल्यविवाहको अच्छे समझते हैं। कन्याको प्रथम ऋतुमती होने पर यह अशुचि नहीं मानते। पहले ५ दिनों अङ्गको धो कर कन्याके अच्छी तरह हलदी लगाते और ६ठे दिन नहलाते हैं। फिर शुभदिन देख कर उसे स्वामीका सहवास करनेकी आज्ञा दी जाती है। इनका विवाहकी बातचीत ठहरानेमें पहले कन्याकर्ताका मतामत लेना पड़ता है। उनके कन्याका विवाह करने पर खीकृत होनेसे वरकर्ता कन्याकर्ताकी कुलदेवताके सामने २ नारियल तीन पाव गिरी और ५ सेर चीनी भेंट करके उपस्थित स्वजातीयोंको सम्बोधन करके इस प्रकार वाक्य दान करते हैं—मेरे पुत्रके साथ इनकी कन्याका विवाह होगा। फिर उपस्थित ज्ञाति कुटुम्ब आदिको शक्कर और पान देकर विदा करना पड़ता है। शुभदिनको लग्न ठहराते हैं। इसी बीच वरकन्या दोनों एक दूसरेके घर आते जाते रहते हैं। वरकर्ता को ४ सेर शक्कर, ४ सेर गिरी २ पाव पोस्तदाना, ३ पाव सुपारी, २०० पान, कन्याके लिये ४ अङ्गियाएं चांदीको बालियां और हमेल और पहननेके कपड़े देने पड़ते हैं। कहीं कहीं कन्याकर्ता अपनी लड़कीको गृहदेवताके सामने बिठला उसकी गोदमें ५ सुपारी, ५ छोहरे, गिरीके ५ टुकड़े, ५ केले और ५ सेर चावल डालते और दामादको १ दुपट्टा और एक पगड़ी देते और आये हुए लोगोंको पान और शक्कर बांटते हैं। ज्योतिषी विवाहका शुभदिन ठहराता और कागजके

दो टुकड़ों पर वरकन्याका नाम लिख कर, वरके नामका कागज वरकर्ता और कन्याके नामका कागज कन्याकर्ताको पकड़ाता है। यही दोनों कागज विवाहके समय तावीजमें रखके वर और कन्याके गलेमें बांध दिये जाते हैं। विवाहसे ४।५ दिन पहले एक चौकोर कुण्ड बनाके उसके चारों कोनों पर चार कलपात्र रखके सूतसे उसको चारों ओर लपेट देते हैं; वरके शरीरमें हलदी लगा उस कुण्डके पानीसे ही उसको नहलाया जाता है। इसी दिन वरकन्याके कुलदेवकी पूजा होती है। विवाहके दिन कुण्ड खोद कर वर तथा कन्याको नहलाते नये सफेद कपड़े पहनाते हैं। वर घोड़े पर चढ़के विवाह करने जाता है। वर मण्डपके नीचे पहुंच कन्याके सामने टोकरी पर और कन्या वहीं पर खड़ी होती है। इसका नागा स्नान करनेका कुण्ड; फिर सूतसे लपेटते, उसीको कन्याके बायें और वरके दाहने हाथमें बांध देते हैं। विवाहके समय वर और कन्याके बीचमें कपड़ेका एक परदा लगा दिया जाता है। पुरोहित पूजा पाठ शेष करके आये हुए लोगोंके साथ नवदम्पतीको धान्य छोड़के आशीर्वाद देते हैं। दूसरे दिन कन्याको वर कन्या दोनों बैल पर चढ़के निकलते हैं। चलते समय राहमें ग्रामदेवताको प्रणाम करना पड़ता है। वरके घर पहुंचने पर कन्याकी माता अपनी लड़कीको ले कर समधिन (वरकी माता) को सौंप जाती है। विवाहके पीछे तीसरे दिन कन्याके पिता जातिभोज करते और वरके पितामाताको कपड़े और दिखावके लिये एक रुपया देते हैं। ५वें दिन वरकर्ताको भी इसी प्रकारसे जातिभोज और मर्यादासे दूना रुपया देना पड़ता है।

इनमें बहुविवाहकी चाल तो है, किन्तु विधवा-विवाह नहीं होता। मराठोंके बीचमें रहनेवाले सभी खातिक शवदाह करते, परन्तु विजयपुरके लोग मृतदेह गाड़ देते हैं। मुर्देको कब्र दे करके शववाहक दूबको हाथमें ले घरको लौट आते और मृत व्यक्तिके प्राणवायु निकलनेकी जगह उसको छोड़ जाते हैं। तीसरे दिन मृतव्यक्तिके आत्मीय कब्रके ऊपरी पत्थर पर पानफलफूल, चना, छोहारा, गिरी, गुड़, आम और रोटी आकर रखते हैं। फिर सामने शव ढालनेवाला हरेक मनुष्य उस पर थोड़ा थोड़ा दूध ढालता है। यदि कौआ आकर इन चीजोंको नहीं खाता, इन्हें उठा कर गायको खिलाया जाता है और साथ ले आनेवाले कंधे पर घी और दही मला करके शुद्ध होते हैं। इनमें ११ दिन पीछे मुर्देकी रौप्य प्रतिमूर्ति बनानेकी चाल है। मूर्ति बन जाने पर कापड़ीमें सबके पूज्यपाद पूर्वपुरुषोंकी प्रतिमूर्तियोंके साथ पूजाके घरमें उठाकर रख दी जाती है। वैशाख मासकी अक्षयतृतीयाको नदीके तीर पर कम्बल बिछा और उस पर इन सभी प्रतिमूर्तियोंको रख कर धूम धड़ाकेसे श्राद्ध, पूजा और तर्पण आदि करते हैं। इस पितृकार्यमें जो जो व्यक्ति उपस्थित रहता, उसको निमन्त्रण करके खिलाना पड़ता है।

खातिर (अ० स्त्री०) १ समादर, सम्मान, इज्जत, मनुहार। (अव्य०) २ अर्थ, निमित्त, कारण, वास्ते, लिये।

खातिरख्वाह (फा० क्रि०वि०—क्रि० वि०) इच्छानुरूप, मर्जीके मुताबिक।

खातिरजमा (फा० स्त्री०) विश्वास, सन्तोष, तसल्ली भरोसा।

खातिरदार (फा० वि०) खातिर करनेवाला, जो खातिर करता हो।

खातिरदारी (फा० स्त्री०) मनुहार, आवभगत, खातिर करनेका काम।

खातिरी, खातिर देखो।

खातिरी (हिं० स्त्री०) नदी किनारेकी एक फसल। यह खादके जोरसे या सींच सींच कर तैयार की जाती है।

खाती (हिं० स्त्री०) १ खन्ती, गड्ढा, खों। २ क्षुद्र पुष्करिणी, तलैया। ३ भूमिको खनन करनेवाली कोई जाति। ४ खुदाई। (वि०) ५ खानेसे लगा हुआ, जो खा रहा हो।

खाती—एक हिन्दू जाति। यह लोग लकड़ीकी चीजें बनाते हैं। युक्तप्रदेशमें इन्हें बढ़ई और दाक्षिणात्यमें सुतार कहा जाता है। खाती शब्द राजपूतानेमें व्यवहृत है। इनकी विसोतर, मेवाड़ी, पूर्विया, दिल्लीवाल, जांगड़ो और बढ़ई आदि श्रेणियां प्रधान हैं। फिर विसो-

मरे १२०, मेवाड़े ५५, पूर्विये ५५, दिल्लीवाल ५६, बढ़ ८५८ और कांगड़े १४४४ शाखाओंमें विभक्त हुए हैं।

खाती थाला देखो।

खात (स० क्ली०) खन भ्रम क्विप्। वनितिक्षियो किम। उण् ४।११। १ खनित, खुदा। २ खात, गड्ढा। ३ बन लक्षण। ४ सूत्र, धागा। ५ जलाधारविशेष, पानी रखने का कोई पात्र।

खाद (स० पु० खाद भावे घञ्। भक्षण, खुराई।

खाद (हिं० स्त्री०) पांस, खेतोंमें डाला जानेवाला गोबर इत्यादि। चूना, खड़िया आदि चीजें भी खाद का काम देती है। खाद डालनेसे खेतकी उपज बढ़ जाती है। खेतकी प्रत्येक नाजके लिये अलग अलग खाद पड़ती है। शहरों की म्युनिसपालिटियां अपना कूड़ा कर्कट इकट्ठा कर खाद जैसा बरतती हैं।

खादक (स० त्रि०) खाद-ण्वुल्। १ भक्षक, खानेवाला (मनु ५।५१) २ ऋणग्रहीता, कर्ज लेनेवाला।

"खादको वित्तहीन स्यात् लग्नको वित्तवान् यदि।
मूलमात्र प्रदेहं तम्।" (कात्या०)

यदि ऋण लेनेवाला निर्धन और देनेवाला धनवान् हो, तो उसे मूल ही देना पड़ता है।

खादतमोदता (स० स्त्री०) खादत मोदत इत्युच्यते यस्यां क्रियायां मयूरव्यंसकादित्वात् समास। एक क्रिया, खाना उड़ाना। इसमें भोजन और हर्षप्रकाश करनेकी अनुमति रहती है।

खादतवमता (स० स्त्री०) खादत वमत इत्युच्यते यस्यां क्रियायां मयूरव्यंसकादिवत् समासः। एक क्रिया खाना उगलना। इसमें भोजन और वमनकी अनुमति होती है।

खादन (स० पु०) खादत्यनेन, खाद करणे ल्युट्। १ दन्त, दांत। (क्ली०) भावे ल्युट्। २ आहार, खुराई।

खादनकोष्ठक (स० क्ली०) धान्यादिदत्तोयन भोजनपात्र, घोड़े की दाना, घास खिलाने का दो हाथ लम्बा बर्तन।

खादनीय (स० त्रि०) खाद अनीयर्। भोजनीय, खाया जानेवाला।

खादर (हिं० पु०) १ तराई, कछार, नीचे जमीन। इसमें बरसातका पानी बहुत दिन ठहरता है। खादर प्रायः नदी, झील आदिके तीर पड़ता है। २ चरागाह, गोचर भूमि।

खादि (स० त्रि०) खाद कर्मणि इन्। १ भक्ष्य, खाया जानेवाला। (पु०) २ अलङ्कारविशेष, कोई गहना। (ऋक् १।१६६।९) ३ त्राणकर्ता, त्राता, बचानेवाला। (ऋक् १।१६८।१)

खादि (हिं० स्त्री०) दोष, बुराई।

खादित (स० त्रि०) खाद कर्मणि क्त। भक्षित, खाया हुआ।

खादितव्य (स० त्रि०) खाद तव्य। खादनीय, भक्ष्य, खाने लायक।

खादिम (अ० पु०) सेवक, खिदमत करनेवाला। दरगाह वगैरहका रखवाला भी खादिम कहलाता है।

खादिम हुसैन खां—नवाब मीरजाफर उद्-दौलाके समय पूरनियाके एक सुबेदार। इन्होंने मीरजाफरको विद्रोही होने पर पूरनियामें घुसने न दिया था। इसीसे मीरजाफरके नवाब होने पर उनके पुत्र मीरन फौजके साथ खादिमको आक्रमण करने चले, वह डर कर भाग खड़े हुए। किन्तु अचानक डेरेमें बिजली गिरनेसे मीरन मर मिटे।

खादिर (स० त्रि०) खदिरस्य विकार, खदिर अण्। १ खदिर निर्मित, खैरका बना हुआ। २ कत्थई। (पु०) खदिरस्य अवयव। ३ खदिरसार, कत्था। ४ विट्खदिर, पापड़ी कत्था।

खादिरक (स० त्रि०) खदिर चातुरर्थिक वुञ्। खदिर निर्वृत्त, खैरसे पैदा होनेवाला।

खादिरसार (स० पु०) खदिर विकारे अण्, तत कर्मधा०। खदिरसारनिर्यास, कत्था। इसका संस्कृत पर्याय—खादिर, खदिरसार, सतसार, रङ्गद और रङ्गक है। कत्था कड़वा, तीता, उष्ण, रुचिकर, दीपन और कफ, वात, व्रण तथा कण्ठका रोग दूर करनेवाला है। (राजनिघण्टु)

खादिरायण (स० पु०) खदिरस्य गोत्रापत्यम्, नडादि फक्। खदिर नामक ऋषिके वंशमें उत्पन्न होनेवाले।

खादिरेय (स० त्रि०) खादिरो ढक्। [illegible] खादिरोंमें उत्पन्न।

खादिरपत्रा (सं० स्त्री०) खादिरस्येव पत्रं यस्य, बहुव्रो०। कटकायुक्त। (सुश्रु० ४।१८।१)

खादी (सं० त्रि०) खादति, खाद-णिनि। १ भक्षक, खानेवाला। (मनु ४।७१) २ शत्रुओंकी हिंसा करनेवाला, जो दुश्मनको मारता हो। ३ कटकयुक्त।

खादी (हिं० स्त्री०) गाढ़ी, एक प्रकारका मोटा देशी कपड़ा। आज कल खादीका सम्मान बहुत बढ़ गया है। लोग विलायती मलमल और तनजेब छोड़ इसे पहनने लगे हैं। (वि०) २ खादि निकालनेवाला, जो ऐब ढूंढ़ता है। ३ दूषित, ऐबी, खराब।

खादुक (सं० त्रि०) खाद-उकञ् संज्ञायां कन्। हिंसालु, खूंखार, मार-काट करना हो जिसकी आदतमें दाखिल हो।

खादोअर्णस् (वै० स्त्री०) खाद भक्षणे असुन् खादः खाद्यं अर्णो जलं यस्य, बहुव्रो०। नदी, दरया। (ऋक् ५।४५।१२)

खाद्य (सं० त्रि०) खाद कर्मणि ण्यत्। १ भक्षणीय, खाया जाने वाला। (क्लो०) अष्टविध आहारोंमें अन्यतम आहार, खानेकी चीज।

खाद्यपत्री (सं० स्त्री०) खदिरवृक्ष, खैरका पेड़।

खाद्य, खाद्युक—खाद देखो।

खान्, खां देखो।

खान (सं० क्लो०) खे धातूनां अनेकार्थत्वात् भक्षणे भावे ल्युट्। १ भोजन, खाना। २ खनन, खोदाई ३ छिदन, काटछांट।

खान (हिं० स्त्री०) १ आकर, खान, खदान। २ कोल्हूका घर। इसमें सेलखन वगैरह डाल कर पेरा जाता है।

खान—बङ्गालके वर्धमान जिलेका एक गांव। यह अक्षा० २३° २०' उ० और देशा० ८७° ४६' पू०को अवस्थित है। आबादी कोई १६०० होगी। खान ईष्ट-इण्डियन रेलवेका बड़ा जङ्क्शन है। यहां कार्डलाइन लूप लाइनसे शाखारूपमें फूट चली है।

खानक (सं० त्रि०) खन-ण्वुल। खनक, खोदनेवाला। (पु०) २ सेंधार, राज।

खानकाह (फा० स्त्री०) मठ, मुसलमान फकीरोंके रहनेकी जगह।

खानखाना—हिन्दीके एक मुसलमान कवि। यह बैराम खान्के बेटे थे। १५५६ ई०को इनका जन्म हुआ। यह केवल अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओंके ही विद्वान् न थे, परन्तु संस्कृत और व्रजभाषा भी पढ़े थे। अकबर बादशाह इन्हें बहुत चाहते थे। शिवसिंहने लिखा है कि यह श्लोक भी बनाते थे। उनके कवित्त और दोहे प्रशंसा योग्य हैं। नीतिके इन्होंने सबसे अच्छे दोहे कहे हैं। उनकी सभामें मिथिलाके लक्ष्मीनारायण कवि उपस्थित रहते थे। इनका नाम अब्दुर्रहीम खानखाना नवाब था।

खानखानान् (फा० पु०) १ सरदारोंका सरदार, उच्चपदाधिकारी। २ उपाधिविशेष, एक उपाधि। यह मुसलमान सरदारोंको मुगलोंके जमानेमें मिलता था।

खानगाह डोगरां—१ पञ्जाब प्रान्तके गुजरानवाला जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३१° ३१' तथा ३१° ५८' उ० और देशा० ७३° १४' एवं ७४° ५' पू०के बीच पड़ती है। क्षेत्रफल ८७३ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः २३७८४३ है। इस तहसीलकी जमीन अच्छी और चिनाबकी नहरसे सिंचती है।

२ पञ्जाब प्रान्तीय गुजरानवाला जिलेकी खानगाह तहसीलका सदर। यह अक्षा० ३१° ४८' उ० और देशा० ७३° ४१' पू०में पड़ता है। यहां प्रति वर्ष जून मासको मुसलमानोंके मकरेका मेला लगता है। लोकसंख्या प्रायः ५१४८ है। इसमें कपास ओटनेका एक कारखाना भी है।

खानगी (फा० वि०) १ अपना, घरू, दूसरेसे सरोकार न रखनेवाला। (स्त्री०) २ छोटी रण्डी।

खानजादा (फा० पु०) १ धनवान्‌का पुत्र, अमीरका लड़का। २ उच्च कुलका व्यक्ति।

खानदान (फा० पु०) वंश, घराना।

खानदानी (फा० वि०) १ कुलीन, अच्छे घरानेवाला। २ पैतृक, पुश्तैनी, मौरूसी।

खानदेश—बम्बई प्रान्तके मध्यस्थ विभागका एक जिला। यह अक्षा० २०° १५' तथा २२° २' उ० और देशा० ७३° ३५' एवं ७६° २४' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्र-

फल १०४१ वर्गमील है। खानदेशके उत्तर सतपुरा पहाड़ और नर्मदा नदी, पूर्वको बरार और मध्यप्रदेशका नीमार जिला, दक्षिणको सातमाला, चादोर या अजन्टा पहाड, दक्षिण पश्चिम नासिक जिला और पश्चिमको बड़ोदा राज्य तथा रेवाकांठा एजेन्सीकी छोटी रियासत सागबारा है। ताप्ती नदी इस जिलाके उत्तर पूर्व कोणमें लाके पश्चिमकी ओरको बहती और इसके दो छोटे बड़े टुकडे करती है। इनमें बड़ा टुकड़ा दक्षिण-को पड़ता जो गिरना, बोरी और पांझर नदियोंके पानीसे सिंचता है। यहां खानदेशका १५० मील लम्बा मैदान है। यह नीमारके किनारेसे नन्दुरबार तक चला गया और उपजाऊ भूमिसे भरा है। इस प्रान्तमें बड़े बड़े शहर और गांव बसे जिनमें आमके चारो ओर बागबगीचे लगे हैं। ग्रीष्मऋतुको छोड़ कर सभी समय में खेत विभिन्न फसलों से लहराया करते हैं। उत्तरकी सातपुरा पहाड़की तरफ जमीन ऊंची हो गयी है। बीचमें और पूर्व दिक्की भूमि प्रायः समान है। उत्तर और पश्चिममें घना जङ्गल है। उसमें भील लोग रहते, जो जङ्गली कन्दमूल फल खाकर जीवन निर्वाह और लकड़ी काट कर धनोपार्जन करते हैं। ताप्ती खान्-देशमें घूम घूम १८० मील तक बही और १९ सहायक नदियों की धारा उसमें मिली है। परन्तु किसी नदीमें जहाज या नाव नहीं चल सकती और ताप्ती इतनी गहरी बहती है कि खेत सिंचनेको पानी लेनेमें बड़ी अड़चन पड़ती है। भुसावलमें रेलवेपुलके नीचे ऊपर दो झरने हैं। वर्षा ऋतुमें ताप्तीको सम्भा नहीं सकते, भुसावलके रेलवे पुलसे चलते फिरते हैं। इस जिलेके उत्तर पश्चिम कोणमें ४५ मील तक नर्मदा फैली है। समयानुकूल नर्मदाकी राहसे लकड़ी समुद्र किनारे पहुंचायी जाती है। इस जिलेके नालों में भी बारहो महीने पानी भरा रहता है। चार बड़े पहाड़ों के नाम—सातपुरा हत्ती, सातमाल, चादोर या अजन्टा और पश्चिमघाट। सर्व गालना पर्वत खानदेशको नासिकसे अलग करता है। खानदेशका जङ्गल बहुत अच्छा है। इसमें कई प्रकार-की कीमती लकड़ी होती है।

वन्य पशु भी बहुत हैं। किन्तु शिकारकी भरमार होनेसे अब चीते उतने नहीं देख पड़ते। १७वें शताब्द तक इस जिलेके उत्तर पहाड़ी भूमिमें जङ्गली हाथी बसे देखे रहे।

ऊंचाई भेदसे खानदेश जिलेका जलवायु विभिन्न पड़ता है। पश्चिमी पहाड़ों और जङ्गलोंमें और सतपुरामें पानी बहुत बरसता है, परन्तु बीचमें और दक्षिण-को उसकी कमी रहती है। धुलिया नगरमें औसतको देखते २२ इञ्च वृष्टि होती है। लोगोंका स्वास्थ्य शीत कालको सबसे अच्छा और ग्रीष्मऋतुको बुरा रहता है। वर्षाके पीछे भूमि सूखनेसे मलेरिया बढ़ता है। पश्चिममें गर्मीको छोड़ कर दूसरे मौसम पर आबहवा बहुत बिगड़ जाती है।

खानदेशका पूर्वकालीन इतिहास ई०के १५० वर्ष पहलेसे १२८५ ई० तक लगा है। प्रथमोक्त समय बहुत पुराने शिलाफलकको पढ़के निकाला गया है। फिर १२८५ ई०को एकाएक मुसलमान बादशाह अला उद्-दीन दिल्लीसे खानदेश पहुंचे थे। महाभारतमें तूर्णमाल और असीरगढ़ नामक पार्वत्य दुर्गोंकी बात लिखी है। तूर्णमालके राजा पाण्डवोंसे लड़े थे। असीरगढ़ अश्व-त्थामाका पूज्यपीठ जैसा माना जाता है। लोगोंमें प्रवाद है कि ई०से बहुत पहले यहां अवधसे आये राजपूत राज्य करते थे। आन्ध्रोंको उन्हीं राजपूतों का वंशधर मानते हैं। थोड़े दिनके लिये पश्चिमके क्षत्रियोंने आन्ध्रोंको दबादिया था। ई० ५वें शताब्दको चालुक्यवंश ने बल पकड़ा फिर स्थानीय राजाओं का राज्य चला। अला उद्दीनके खानदेश पहुंचते समय असीरगढ़के चौहान राजा राजत्व करते थे।

१७६० ई०को मराठोंके असीरगढ़ अधिकार करते समय यहां मुसलमानी अमलदारी रही। इसके बीचमें दिल्लीसे सूबेदार मुकर्रर होकर खानदेश शासन करते आते थे। मुहम्मद बीन तुगलकके अधीन १३२५से १३४६ तक बरारके एलिचपुरसे इसका शासनकार्य चला। १३७०से १६०० ई० तक फरूकी वंशके अमीरोंने इस प्रान्तका प्रबन्ध किया। वह नाममात्र गुजरातके सुलतानों की वश्यता मानते थे, वस्तुतः वह स्वाधीन रहे। १५८८ ई०को मुगल खानदेश पहुंचे थे। इसी

वर्षको अकबरने अपनी फौजके साथ खान्देश पर चढ़ाई की थी। उन्होंने असीरगढ़ अधिकार किया और शासनकर्ता राजा बहादुर खाँको गिरफ़्तार करके ग्वालियरके कैदखानेमें भेज दिया। फिर खानदेश दिल्ली साम्राज्यमें मिलाया गया। १७वें शताब्दके मध्यभागको इसकी बड़ी बढ़ती हुई। १६७० ई०से मराठा आक्रमण आरम्भ हुए और सौ वर्षसे अधिक समय तक इसको भीतरी बाहरी सब प्रकारकी विपद् झेलनी पड़ी। शिवजीने दूसरी बार सूरतको तहस नहस करके चौथ मांगनेके लिये अपना एक अफ़सर खान्देश भेजा था। मराठोंने सालहेर किला जीत कर अपने कब्जे किया और खाण्डेराव दाभाडेने पश्चिमी पहाड़ोंमें अड्डा जमा दिया। फिर इस जिलेमें कई बार लूटमार हुई। शिवजी, शम्भुजी और औरङ्गजेबने बारी बारी इसको खूब लूटा खसोटा था। १७२० ई०को निजाम-उल्-मुल्कने खानदेश अपने राज्यमें मिलाया था। परन्तु १७६० ई०को मराठोंने उनके लड़केको यहांसे निकाल बाहर किया और पेशवाने इसका कुछ भाग होलकर और कुछ भाग सेंधियाको दे दिया।

१८०२ ई०को होलकरकी सेनाने इसका तहस नहस किया था। दो साल तक जमीनकी कोई परवा न की गयी और बरबादीके सबबसे कठोर दुर्भिक्षकी नौबत आ पड़ी। फिर दूसरे साल पेशवाके बद इन्तजामीसे इनका दारिद्र्य और भी बढ़ गया। लोगोंने अपना सम्बन्धीका काम काज छोड़ दल बांधा और चारो ओर घूम घूम कर खूब लूटा मारा था। १८१८ ई०को इसी हालतमें यह जिला अंगरेजोंके हाथ आया। बहुत सालों तक बलवाई भील तङ्ग करते रहे। १८२५ ई०को आउटरामने भीलोंको फौज खड़ी करके यह उपद्रव मिटाया था। १८५२ ई०को फिर सख्त बलवा उठ खड़ा हुआ और १८५७ ई०को भागोजी और काजरसिंह नायकके नेतृत्वमें भील लोग बिगड़ पड़े। किन्तु यह उपद्रव दबानेमें कोई बड़ी तकलीफ़ नहीं हुई।

खान्देशमें पत्थरके मन्दिर, कुण्ड और कूएं बहुत हैं। इनमें अधिकांश सम्भवतः १२वें या १३वें शताब्दके बने हैं। यह सब इमारतें पहाड़ोंको काट काट कर बनायी गयी हैं। कुछ खानोंके पत्थर इतने बड़े हैं, कि लोग देवताओंके हाथका बना समझते हैं। सिवा इसके खान्देशमें कुछ मुसलमानी इमारतें भी हैं, जिनमें सबसे बड़ी एरण्डोलकी मसजिद है। चालीसगांव तालुकाकी पीतलखोरा उपत्यकामें एक टूटा फूटा चैत्य और विहार है। यह बौद्धोंका बहुत ही पुरानी इमारत है और सम्भवतः ईसासे २०० वर्ष पहले बनी होगी। दररेके नीचे पाटनका उजाड़ नगर है, जिसमें पुरानी कारीगरीके मन्दिर और शिलालिपियां वर्तमान हैं। फिर सामनेकी ओर पहाड़ पर दूसरी ओर पोलीकी बनी गुहाएं हैं। बाघलीके छायमन्दिरमें दालानकी भीतरी दीवार पर तीन बढ़िया खुदा हुई तख्तियां लगी हैं।

इस जिलेमें ११ शहर और २६१४ गांव बसे हैं। लोकसंख्या १४२७३८२ होगी। प्रधान नगरोंके नाम हैं—धूलिया, भुसावल, धारनगांव, नसीराबाद, नन्दुरबार, चालीसगांव, भड़गांव, सावनेर, शहादाद, चोपड़ा, जलगांव, पारोल, एरण्डोल, अमलनेर, फैजपुर, पाचोड़, नगरदेवल, सोडवार। खानदेश जिलेके पश्चिमी भागकी आबादी बहुत हलकी है। परन्तु यावल और जलगांवकी बसती सबसे घनी लगती है। गुजराती खान्देशकी व्यापारिक भाषा है। किन्तु सरकारी दफ़्तरों और स्कूलोंमें चलनेसे मराठी जबानका आदर बढ़ता जाता है। घरमें लोग खान्देशी या अहिराणी बोलते हैं, जो गुजराती, मराठी, निमाड़ी और हिन्दुस्तानीकी खिचड़ी है।

कुनबी, भील, महार, मराठा, माली, कोली, ब्राह्मण, वानी, राजपूत, वांगड, वनजारा, तेली, सोनार, नाई, चमार, सुतार (बढ़ई), शिम्पी (दरजी) और मांग—खान्देशकी प्रधान जातियां हैं। कुनबी, पारधी, राजपूत और गूजरवानी खेती करते हैं। यहांके व्यापारी अधिकांश दूसरे प्रान्तोंसे आ आकर बसे हैं। आबादीमें आदिम अधिवासी और खानबदोश बहुत हैं। बहुतसे भील पुलिस कानष्टेबिलों और चौकीदारोंका काम करते हैं। निरधी सातमालाके नीचे रहनेवाले हैं।

पहले लोग इनसे बहुत डरते थे। बलवेके समय उन्होंने बड़े बड़े अत्याचार किये हैं। रेलवे और गाड़ियों के चलनेसे बनजारों की बड़ी क्षति हुई है। खान्देशके अधिकांश मुसलमान शेख कहलाते हैं। सैकड़े पीछे ५०से ज्यादा आदमी खेती किसानी करते हैं।

भूमि विभिन्न प्रकारकी मिलती, कहीं उपजाऊ और कहीं ऊसरकी पड़ती है। स्थानीय लोग इसे चार भागों में बांटते हैं—काली काली (सफेद), खारल और बरकी (सफेद तथा नोनिया)।

खान्देशमें ज्वार और बाजरा बहुत बोया जाता है। ताप्ती उपत्यका और पश्चिम अञ्चलमें गेहूं भी खूब होता है। दालों में अरहर, चना, उड़द और मूंगकी खेती की जाती है। तलहनमें तिल और अलसी प्रधान है। रुई घोंगनघाट और धारवाड़के बीजसे उत्पन्न होती है। जहां सींचनेको पानी मिलता, ऊख थोड़ी बहुत लगा दी जाती है। मिर्च, सौंफ और धनिया खास मसाले हैं। फुलवाड़ियोंमें पानके भीट खूब लगाये जाते हैं।

खान्देश जिलेमें नीमार और बरारसे मंगाये गये अच्छे अच्छे गाय बैल देख पड़ते हैं। थोड़े छोटे और बेकाम होते हैं।

खेती की सिंचाई गिरना और पांझर नदीके बांधों, और झीलों और तालाबोंसे की जाती है। पश्चिम ऐसी कोई नदी नहीं है, जिसमें बांधके चिह्न न मिलें। इससे मालूम होता है कि पहले वहां कितने ही बांध थे। कई एक नहरें भी निकाली गयी हैं। जिलेके अधिकांश भागमें पानी ऊपर ही मिलता है। किन्तु सात पुरामें और ताप्तीसे ८।१० मीलके बीच १०० हाथ गहरे तक कूए खोदने पड़ते हैं।

खान्देश कनाड़ाके बाद बम्बई प्रान्तका सबसे बड़ा जङ्गली जिला है। जिसका बड़ा अंश सरकारने लकड़ी और घासके लिये सुरक्षित रखा है। परन्तु यहां लकड़ीका खर्च पैदायशसे ज्यादा है। महुआ, साखू, बबूल और सीसम बहुत होता है।

यहां खनिज पदार्थ बहुत कम निकलते हैं। इमारती पत्थर हरेक जगह होता है। भुसावलके पास वाघर नदीगर्भमें सबसे बड़ी पत्थरकी खान है। काली मट्टीमें चूनेका कङ्कड़ निकलता है। रुईकी गांठे बांधने और कपास ओटनेके कई कारखाने खान्देशमें चलते हैं। ऊनका मोटा कम्बल इस जिलेमें लगभग सब जगह बुना जाता है। १८७४ ई०को जलगांवमें रुई कातने और कपड़ा बुननेका एक कारखाना खुला था। भुसावलमें रेलवेका कारखाना है।

रफतनीकी सबसे बड़ी चीज रुई है। बम्बईके भाटिये स्थानीय व्यापारियों और किसानोंसे इसे खरीद गांठे बांध बांध सीधे विलायत भेज देते हैं। बाहर भेजी जानेवाली दूसरी चीजों में अनाज, तेलहन, मक्खन घीव, मोम और शहद प्रधान है। बाहरसे नमक, मसाले, धातुएं कपड़े, सूत और शक्करकी आमदनी होती है। जलगांव और भुसावलमें व्यापार बढ़ रहा है।

पहले खानदेशमें बड़ी सड़कें न थीं। पहले पहल बम्बई आगरा रोड बनाया गया, जो इस जिलेमें मालेगांव, धूलिया और शीरपुर होकर निकलता है। धूलियासे सूरत और म्हासवाड़को भी सड़क लगी है। यहां कुल ८५१ मील राह बनी, ३२५ मील पक्की है। ८५० मील तक उसकी दोनों तरफ पेड़ोंकी कतारें लगायी गयी हैं। इस जिलेके दक्षिणभागमें नांदगांवसे भुसावल तक १३० मील ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे चलती है। भुसावलमें उसके बंट जानेसे एक शाखा जबलपुर और दूसरी नागपुरको जाती है। १९०० ई०को जलगांवसे अमलनेर और चालीसगांवसे सूरत में रेलवे खुली थी। ताप्ती वेली रेलवे सूरतसे अमलनेरको आती है।

ताप्ती और छोटी छोटी नदियोंमें एकाएक भयानक बाढ़ आ सकती है। १९वीं शताब्दको ६ बार बाढ़ आयी, जिससे इस जिलेने बड़ी हानि उठायी। १८२२ ई०को ताप्तीने ६५ गांव बहाये और पचास डुबाये थे इससे ढाई लाख रुपयेका धक्का लगा। १८७२ ई०को पांझरमें बाढ़ आनेसे धूलियाके ५०० घर बह गये। नदीके सामनेका एक गांव गुम हुआ था। कुल १५२ गांवोंका नुकसान उठाना पड़ा और १६ लाखका माल असबाब बिगड़ गया।

दुर्गा देवी दुर्भिक्षको छोड़ कर जिसके कारण, कहते हैं, खान्देशकी आबादी बहुत घटी थी, १६२९ ई०की फिर अन्नकष्ट हुआ। १८०२-४ ई०को गेहूं रुपये सेर बिका था। कितने ही लोग मरे और बहुत खेत उजड़ गये। खानदेशकी यह दशा होलकरके हमले-से हुई थी। १८९९ ई०को पानी न बरसनेसे ९८००० आदमी और ३८५००० मवेशी औसतसे ज्यादा काम आये।

खान्देश जिला १७ ताल्लुकोंमें बंटा है। मेहवास राज्यका प्रबन्ध भी इसी जिलेसे होता है। धूलियाके जिला और दौराजजके नीचे १० छोटे जज काम करते हैं। फौजदारी फैसलेके लिये ५० मजिष्ट्रेट हैं। अपराधोंमें चोरी, सेंध और डाका बहुत चलता है। किसान सीधे मालगुजारी सरकारको देते हैं। १८५२ ई०को इर्द्दगिर्दके पैमायश होनेके समय बलवा खड़ा हुआ था, परन्तु मुखियोंके पकड़े जाने पर बन्द हो गया।

खानदेशमें २१ म्युनिसपालिटियां हैं—आमलनेर, पारोल, एरण्डोल, धरनगांव, भाडगांव, चोपडा, शेर-पुर, सिन्धखेड, बेटवाड, सवाड, यावल, चालगांव, धूलिया, सोनगीर, तलोद, शाहाड, प्रकाश, नन्दुरबार, फैजपुर और रावेर। इनकी औसत आमदनी २ लाख रुपया है।

जिला पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टकी सहायता २ असिष्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट, १ उम्मेदवारी करनेवाले असिष्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट और ४ इन्सपेक्टर करते हैं। कुल ३७ थाने हैं। जिला जेल धूलियामें बना है।

बम्बई प्रान्तके २४ जिलोंमें लिखने पढ़नेके बारेमें खान्देशका दरजा बारहवां है। १९२१ ई०की सौमें प्रायः ५ आदमी साक्षर थे। अब शिक्षाकी बड़ी उन्नति हुई है।

खानपान (सं० क्ली०) धातू नामनेकार्थत्वात् खा भक्षणे ल्युट् खाना पा पाने ल्युट्, पानं खानश्च पानञ्च तयो: समाहार:। भोजन और पान, खाना पीना।

(गारुड़ १०२ अ०)

खानपुर—बहावलपुर राज्य और पंजाबके अन्तर्गत खानपुर निजामतका सदर तहसील। यह अक्षा० २७° ४३´ तथा २८° ४´ उ० और देशा० ७०° २७´ एवं ७०° ५३´ पू० सिन्धु नदीके किनारे अवस्थित है। भूपरिमाण २४२५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १२०८१० है। यहां खानपुर, गरही इख्तियार खां और नौशहरा शहर हैं। इसके दक्षिणमें बालुका प्रदेश, उत्तरमें ऊसर जमीन और सिन्धु-नदी-तटस्थ उर्वरा निम्नभूमि है। यह तहसील खजूर (खजूर) के लिये प्रसिद्ध है और उक्त राज्यका एक मनुष्यशाली स्थान है। यहांकी आमदनी प्रायः एक लाखसे कुछ अधिक होगी।

खानसामा (फा० पु०) भण्डारी, रसोइया। यह अंग-रेजों और मुसलमानोंके पास रहता है।

खाना (हिं० क्रि०) १ आहार करना, पेट भरना। मुंहमें डालना। २ मार डालना, शिकार करना। ३ चाटना। ४ कुतरना, काटना। ५ चबाना। ६ बिगा-ड़ना, मिटाना। ७ उड़ाना। ८ हड़पना, मार बैठना। ९ खर्च करना, लगाना। १० रिशवत लेना, अधर्मसे रुपया कमाना। ११ अंटना, खपना। १२ छोड़ना, भूलना। १३ झेलना, उठाना।

खाना (फा० पु०) १ आलय, जगह, घर। २ कोष्टक। ३ सन्दूक।

खानाकुल—बङ्गाल प्रान्तीय हुगली जिलेके आरामबाग उपविभागका एक गांव। यह अक्षा० २२° ४३´ उ० और देशा० ८७° ५२´ पू०में काना नदीके पश्चिमतट पर अव-स्थित है। लोकसंख्या प्रायः ८८६ होगी। पीतलकी कुछ चीजोंका यहां कारबार चलता और पास ही बढ़िया सूती कपड़ा बनता है। नदीके तट पर महादेवका एक बड़ा मन्दिर है।

खाना खराब (फा० वि०) १ चौपटचरन, घर बिगाड़ने-वाला। २ आवारा, इधर उधर घूमनेवाला, जिसके रहनेको जगह न हो।

खानाजङ्गी (फा० स्त्री०) गृहयुद्ध, आपसकी लड़ाई।

खानाजाद (फा० वि०) १ गृहजात, घरका पैदा। (पु०) २ दास, गुलाम।

खानातलाशी (फा० स्त्री०) घरकी ढूंढ खोज या देख

माल। खानातलाशी किसी छिपी चीजको ढूंढनेके लिये होती है।

खानादारी (फा० स्त्री०) गार्हस्थ्य, गृहस्थी।

खानापीना (हि०) खानपान देखो।

खानापुरी (हि० स्त्री०) खानों जगहका भराव।

खानापुर—१ बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १५° २२´ तथा १५° ४७´ उ० और देशा० ७४° ५´ एवं ७४° ४४´ के बीच पड़ता है। खानापुरका रकबा ६३२ वर्गमील और आबादी लगभग ८५५८६ है। इस देशमें दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिमको पहाड़ और जङ्गल है। खेतीका कहीं नाम नहीं। इसके उत्तर पश्चिमस्थ पर्वत प्रधानतः उच्च लगते हैं। केन्द्रस्थल, उत्तर पूर्व और पूर्वमें जमीन बहुत अच्छी है।

२ बम्बईके सतारा जिलेका एक तालुक। यह अक्षा० १७ ८´ तथा १७° २७ उ० और देशा० ७४ १४´ एवं ७४° ५१´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५१० वर्गमील और लोकसंख्या ८५८९१ है। यहां बहुत कम जङ्गल है। यरला नदी खानापुरके उत्तरसे दक्षिणको कृष्णासे मिलनेके लिये निकल गयी है।

३ बम्बई प्रान्तीय सतारा जिलेके खानापुर तालुकका एक गांव। यह अक्षा० १७ १५´ उ० और देशा० ७४ ४९´ पू०में बीटासे लगभग १०´ पूर्वको अवस्थित है। इसकी जनसंख्या प्राय ५७२८ है। भूपालगढ़के पास पड़नेसे यह पुराने समयमें अपने निकटस्थ प्रदेशका सदर रहा। नगरमें पत्थर और मट्टीकी दीवारें और बुर्जदार फाटकोंका भग्नावशेष विद्यमान है। इस गांवकी मसजिदमें अरबी और कनाड़ी भाषाके शिलाफलक लगे हैं।

खानाबदोश (फा० वि०) गृहहीन, उठल्लू, जहां तहां रह जानेवाला।

खानाशुमारी (फा० स्त्री०) गृहगणनाकार्य, मकानोंका शुमार लगानेका काम।

खानि (सं० स्त्री०) खनिरेव पृषोदरादिवत् वृद्धि। खनि, खदान।

खानिक (सं० क्ली०) खानेन खननेन निर्वृत्तम्, खन ठञ्। १ कुड्यच्छेद्य, दीवारका गड्ढा। २ रन्ध्र, छेदाद्यात।

खानिल (सं० त्रि०) खाने खनने शिल्पत्वेनास्त्यस्य, खान बाहुलकात् इलच्। सन्धिचोर, नकबजन, सेंध लगानेवाला।

खानिष्क (सं० क्ली०) अति शुष्क मांस, बहुत सूखा हुआ गोश्त।

खानी (सं० स्त्री०) खनि या ङीप्। खनि, खदान।

खानुआ—राजपूतानाके भरतपुर राज्यकी रूपवास तहसीलका एक गांव। यह अक्षा० २७ २ उ० और देशा० ७७° ३३´ पू०में बाणगङ्गाके नदीके वामतट निकट भरतपुर नगरसे प्राय १२ मील दक्षिण अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय १८५० होगी। यहीं १५२७ ई०के मार्च मासको बाबर और मेवाड़ राणा संग्रामसिंहके अधीन राजपूत राजाओंसे बोर और युद्ध हुआ। प्रथम बादशाहने हारने पर शराब न पीनेका शपथ लिया और सोने चांदीके आबखोरे और पियालोंका तोड़ करके गरीबोंमें बांट दिया था। परन्तु पीछेको राजपूतोंके हारने पर राणा जख्मी हो करके मुश्किलसे भाग पाये और डूंगरपुरके रावल उदयसिंह काम आये।

खानोदक (सं० क्ली०) खानाय पानाय उदकं यत्र, बहुव्री०। नारिकेलफल, नारियल, डाभ।

खान्य (वै० त्रि०) खन ण्यत्। खनन किया जानेवाला, जो खुदने लायक हो। (वाज० सं० ११।१।११)

खापगा (सं० स्त्री०) खस्य आकाशस्य आपगा, ६-तत्। गङ्गा, सुरसरि।

खापट (हि० स्त्री०) भूमिविशेष, किसी किस्मकी जमीन्। इसमें लोहेका भाग अधिक रहता है। खापटकी मट्टी कड़ी और भारी पड़ती और पानी पड़नेसे लसलसाने लगती है। इसको केवल वर्षा ऋतुमें ही आकर्षण कर सकते हैं। खापटमें सिवा धानके और कुछ नहीं उपजता। इसकी मट्टी कपसा या कायिम कहलाती है। कायिमसे कुम्हार बर्तन बनाया करते हैं।

खापा—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलेकी रामटेक तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २१° २१´ उ० और देशा० ७८°

खारिक (सं० पु०-स्त्री) एक वृक्ष और उसका फल। यह पुष्करतीर्थके पास सह्यापर्वत कहलाता है।

खारिज (अ० वि०) १ बहिर्भूत, अलग किया हुवा। २ जो सुना न गया हो। एक असामीसे लेकर दूसरे असामीको जमीन् देनेका काम 'दाखिल खारिज' कहलाता है।

खारिन्धम (सं० त्रि०) खारीं धमति, खारी-धा-खश् ह्रस्वः मुमागमश्च। शस्यपरिमाणकारक, अनाज नापने या तौलनेवाला।

खारिन्धय (सं० त्रि०) खारीं धयति, खा-धा-खश् ह्रस्वः मुमागमश्च। खारी परिमित पान करनेवाला, जो ४ द्रोण पीता हो।

खारियाँ—पञ्जाब प्रान्तके गुजरात जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२° ३१' तथा ३३° १' उ० और देशा० ७३° ३५' एवं ७४° १२' पू०के बीच अवस्थित है। उत्तरपूर्वमें झेलमनदी इसको झेलम जिलेसे अलग करती है। इसका अधिकांश जङ्गली, जरायती और नालोंमें भरा है। पब्बीपहाड झेलम नदीके साथ साथ उत्तरपूर्व और दक्षिण-पश्चिमको चला गया है। लोकसंख्या प्रायः २४२-६८७ है।

खारिश (फा० स्त्री०) १ कण्डू, खुजली। २ खरखराहट।

खारिश्त, खारिश देखो।

खारिम्पच (सं० त्रि०) खारीं खारीपरिमितधान्यादिकं पचति, खारी-पच-खश् ह्रस्वः मुमादेशश्च। परिमाणे पचः। पा ३।२।३३। खारीपरिमित धान्यादिका पाक करनेवाला, जो ४ द्रोण भोजन बनाता हो।

खारी, खारि देखो।

खारी (हिं० स्त्री०) १ लवणभेद, किसी किस्मका नमक। २ छोटा खारा। (वि०) ३ नमकीन, खारा।

खारीक (सं० त्रि०) खारां खारीवापमर्हति, खारी-ईकन्। खार्या ईकन्। पा ५।१।३३। १ खारीवाला, जिसमें ४ द्रोण बीज डाला जा सके। २ खारी-परिमित धान्यादि द्वारा क्रीत, ४ द्रोण अनाजसे खरीदा हुआ।

खारीमाट (हिं० पु०) नीलका रङ्ग बनानेका एक तरीका। किसी बड़े बर्तनमें ४ मन पानी भरके एक एक सेर नील, चूना और मञ्जी छोड़ते और गुड़ डालकर उठाते हैं। गर्मीको १ दिन और जाड़ेको २ दिनमें खारीमाट उठ आता है। अति शीतकालको इसे आग पर भी चढाया जाता है।

खारीवाप (सं० त्रि०) खारीं तत्परिमितं धान्यं उप्यते वप् आधारे घञ्। १ खारी परिमित धान्यादि वपन करने योग्य, जिसमें ४ द्रोण बीज पड़ सके। २ खारी-परिमित धान्य वपन करनेवाला, जो ४ द्रोण अनाज बोता हो। सिद्धान्तकौमुदीके मतानुसार स्त्रीलिङ्गमें खारीवाप शब्दके उत्तर टाप् होता है, परन्तु मुग्धबोधमें ङीप्का विधान है।

खारेपाटन—बम्बई प्रान्तीय रत्नगिरि जिलेके देवगड सब-डिवीजनका एक नगर। इसकी लोकसंख्या कोई २८०० होगी। विजयदुर्गा नदीके कई मील हट जानेसे अब यह नगर बन्दरगाह नहीं रहा। नदीके किनारे किनारे बहुत दूर तक एक सड़क चली गयी है। इसकी पास पीर मुसलमानोंकी कब्रें बनी हैं। पहले यह मुसलमानोंका एक बड़ा शहर था।

यहां प्रधानतः नमकका कामकाज होता है। सोमवारको बाजारमें बड़ी भीड़ लगती है। अङ्गरेजी शासनके आरम्भसे १८६८ ई० तक यह एक छोटे विभागका सदर रहा, परन्तु १८६८ ई०को देवगढ विभागका सदर बन गया। १६वीं शताब्दीके आरम्भकाल (१५१४ ई०) बारबोसाके कथनानुसार वह एक छोटा स्थान था और मलबारके जहाजसे सस्ता चावल और तरकारी वहांसे खरीद ले जाते थे। उसी समय यहांका व्यापार बड़ा खारेपाटन डाकुओंका लक्ष्य बना था। १५७१ ई०को पोर्तगीजोंने उसको जला डाला। १७वीं शताब्दीको कई बार वह कोङ्कण सागर-तटका सबसे अच्छा बन्दर बताया गया। १७१३ ई०को वह खण्डोजीराव अङ्गरियाके हाथ लगा और १७५६ ई० तक उन्हींके हाथमें रहा। १८१८ ई०को यह अङ्गरेजोंको सौंपा गया।

नगरके सामने किसी छोटी पहाड़ी-पर एक एकड़ परिमित दुर्ग अवस्थित है। १८५० ई०के उसके बुर्ज और दीवारें तोड दी गयीं। जामा मसजिदका ध्वंसा-

खनेसे देखनेसे समझ पड़ता, कि यह एक बहुत बड़ी इमारत रही। वर्तमान नगरसे 'बाहर' ईंटका एक बड़ा ढेर है। इसके शिलाफलकमें लिखा है कि १६५८ ई०को किसी ब्राह्मणने इसे बनाया था। नगरके मध्यमें जो एक पत्थर गड़ा, हिन्दू और मुसलमानोंके महल्लोंकी सीमा समझा जाता है। नगरके मध्य कर्णाट जैनों का निवास और एक जैन मन्दिर है।

खारवा (हिं० पु०) १ किसी किस्मका रङ्ग। यह चालसे बनता और मोटे कपड़े रंगनेमें लगता है। २ मोटा लाल कपड़ा। यह कारुयोंमें बहुत बनता है।

खारेला (हिं० पु०) कुसुमभेद। यह पञ्जाबमें बहुत उपजता और कटीला रहता है। खारेलाका दाना छोटा पड़ता और किसी काममें नहीं लगता। इसके बड़े रङ्गके फूल पाते जो देखनेमें बहुत सुहाते हैं। खारेलाका हिन्दी पर्याय—कटियारी, बनबदरे और बनकुसुम है।

खारेपथार—पूना जिलेकी एक अधित्यका। यह पुरन्दर गिरिदुर्गसे १४ मील पूर्व जेजुरी नामक गांवके पास एक पर्वतमें पड़ती है। इस पर बहुत पुराने समयका खंडोबा देवका मन्दिर है। लोग भक्तिसे इन खंडोबा देवकी पूजा करते हैं। पूनाके रहनेवालोंको विश्वास है कि वह हाथमें तलवार ले सबको रक्षा करते हैं। खंडोबाकी मूर्तिके पास ही उनकी स्त्री मलसाबाईकी प्रतिमूर्ति है।

खारोद—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलेका एक गांव। यह शौहरिनारायणन सरसे ३ मील उत्तर पड़ता है। यहां लक्ष्मणेश्वर शिवलिङ्ग है। मन्दिर ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है। इसमें ९३३ चेदि संवत्की एक शिलालिपि मिली है। कोई कोई कहता कि रत्नपुरके राजा ताम्रध्वजके भाई मयूरध्वजने यह मन्दिर बनाया था। यहां बहुतसे मन्दिरोंका ध्वंसावशेष पड़ा है। एक मन्दिरमें आदित्यदेव ७ घोड़ों पर चढ़े विराज रहे हैं। मन्दिर ईंट और पत्थरका बना है। कहते हैं कि रावणके भ्राता खर और दूषण यहां रहते थे। उन्होंके नाम अनुसार 'खारोद' नाम भी निकला है।

खार्कार (सं० पु०) खरस्य इदं खार एवं कार करोति प्रकाशयति, खार-क्र-अण् पृषोदरादिवत् अकार लोपे साधु। गदभजातिका शब्द, गदहोंका रेंकना।

(भागवत ३।१७।११)

खार्जूर (सं० क्ली०) खर्जूरस्येदम्, खर्जूर-अण्। १ मद्यविशेष, किसी किस्मकी शराब। इसको बनानेकी प्रणाली यह है—कटहल, पक्की खजूर, अदरक और सोमलताका रस मिला कर शराब पकानेके तरिकेसे पकाने पर जो शराब बनती खार्जूर ठहरती है। २ खर्जूरमद्य, खजूरका शराब। खार्जूर वातकोपन पथ्य, कफघ्न, लघु, कषाय, मधुर, हृद्य, सुगन्धि और इन्द्रियशोधन होता है। (सुश्रुत)

खार्जूरकर्ण (सं० पु०) खर्जूरकर्णस्यापत्यम्, खर्जूरकर्ण-अण्। खर्जूरकर्ण ऋषिके अपत्य।

खार्जूरखरा (सं० स्त्री०) खार्जूर देखो।

खार्जूरायण (सं०पु०) खर्जूरस्य गोत्रापत्य, खर्जूर फक्। खर्जूर नामक ऋषिके गोत्रापत्य।

खार्जुलीय (सं० त्रि०) खर्जुलस्येदम्, खर्जुल-ठक्। १ खर्जुल सम्बन्धीय। (स्त्री०) २ रसायनविशेष।

(भावप्रकाश)

खाल (हिं० स्त्री०) १ त्वक्, चमड़ा, मनुष्य पशु आदिके देहका बहिरावरण। २ अधोदेश, आधा चरसा। ३ भाथी धोंकनी। ४ शव, मुर्दा। ५ निम्नभूमि, नीची ज़मीन्। ६ खाड़ी। ७ अवकाश, खाली जगह। ८ गाम्भीर्य, गहराई। (पु०) ९ नाला।

खालत्य (सं० स्त्री०) खलतेर्भाव:, खलति ष्यञ्। कपालरोग, खोपड़ीको एक बीमारी। यह बालोंको झाड़ देता है। (चरक)

खालफूंका (हिं० पु०) धोंकनी चलानेवाला, जो भाथी लगाता हो।

खालसा (हिं० वि०) १ एकाधिकृत, जो एक बोटे दखलकारमें हो। २ सरकारी।

खालसा—पञ्जाबका सिख सम्प्रदाय। सिख सम्प्रदाय नानकने चलाया था। गोविन्दने नानकको चलायी रीति नीतिमें फिर सुधार किया। इस तरह सिखोंमें दो दल हो गये। कुछ लोग गोविन्दके नये धर्मके

विधानोंको मानते और कुछ पुराने मतके अनुसार ही चले जाते हैं। गोविन्दके नये विधानोंको माननेवाले ही 'खालसा' सम्प्रदायभुक्त हैं। परन्तु यह प्रभेद आजकल उठ गया है। 'खालसा' शब्द अरबीके 'खालिस' का अपभ्रंश है। इसका अर्थ पवित्र एवं शुद्ध है। सुतरां खालसा कहनेसे शुद्ध पवित्र और विशिष्ट व्यक्तिका बोध होता है। सिख इस शब्दका अर्थ कोई ईश्वररहस्यपूर्ण जैसा मानते हैं। यह भी नानकके आदि ग्रन्थकी अवाभक्ति करते हैं। अब गोविन्दके संस्कृत नियमों पर लोगोंका उतना दृढ़ विश्वास नहीं रहा।

खालसा सम्प्रदायके लिये गोविन्दने जो नियम बनाये थे, उनमें 'पहल' अर्थात् अभिषेकक्रिया ही सबसे बड़ी है। पहलेकी चाल आज भी जारी है सिख धर्म अवलम्बन करनेसे पहले पात्रको सब बाल रखाना पड़ते हैं। दो-एक महीने बाद जब बाल बड़े बड़े हो जाते, पात्र नीले रङ्गके कपड़े पहन कर उपस्थित होता और उसे एक तलवार, एक बन्दूक, धनुर्वाण और माला देना पड़ता है। फिर गुरु और पात्र शर्बतसे हाथ-पांव धोते हैं। इसी शर्बतमें चीनी डालके तलवार या छुरेकी धारसे चलानेका नाम पहल है। इसके पीछे आदिग्रन्थसे पांच श्लोक पढ़ाये जाते हैं। प्रति श्लोक एक ही निश्वासमें पढ़ना और छुरीसे वही पानी मथना पड़ता है। फिर पात्र हाथ जोड़ कर ग्रन्थी वा पुरोहितका दिया हुआ वही पानी ग्रहण करता और उसे लेकर कपाल, मस्तक तथा दाढ़ी मूंछमें लगाता और कहा करता है—'वाह गुरुजीका खालसा, वाह गुरुजीकी फतेह!' गोविन्द गुरु अपने आप पांच लोगोंके साथ इसी प्रथासे सिख धर्ममें अभिषिक्त हुए थे। फिर उन्होंने परस्परका पदधौत पहल जल पीया भी था। स्त्रियां भी इसी प्रकार पहलके पानीसे अभिषिक्त की जाती हैं। उन्हें केवल शर्बत उलटी छुरीसे चलाना पड़ता है। सिखोंके बच्चोंका बहुत छोटी अवस्थामें ही यह अभिषेक हुआ करता है।

सिख, रणजित् सिंह, पंजाब आदि देखो।

खाला (हिं० वि०) निम्न, नीचा।

खाला (अ० स्त्री०) मौसी, मांकी बहन।

खालिक (सं० त्रि०) खल- इव, खल-ठक्। पत्र, स्यादिभा ठक्। पा ४।२।१०८। खलके सदृश-पाजी-जैसा।

खालिक (अ० पु०) स्रष्टा, दुनियाको बनानेवाला।

खालिस (अ० वि०) विशुद्ध, खरा, बेमेल।

खाली (अ० त्रि०) १ रिक्त, रीता, जो भरा न हो। २ बेकाम, निठल्ला। ३ व्यर्थ, फिजूल। (क्रि० वि०) ४ अकेले, विना किसीकी मददके। (पु०) ५ कोई ताल।

खालू (फा० पु०) मौसा, मौसिया, मांकी बहनका स्वामी।

खाले (हिं० क्रि०-वि०) नीचे, तले, गड्ढेमें।

खाल्यकायनि (सं० पु०-स्त्री०) खल्यकाया अपत्यम्, खल्यका-फिञ्। खल्यकाका अपत्य।

खाल्यायनि (सं० पु० स्त्री०) खल्या-फिञ्। खल्याका अपत्य।

खाव (हिं० स्त्री०) १ शून्य, खाली जगह। २ जहाजमें माल रखनेकी कोठरी।

खावन्दमीर—खावन्द शाह अमीरका एक पुत्र। इनका असल नाम गयासुद्दीन मुहम्मद-बिन्-हमीद-उद्दीन् खावन्द अमीर था।

किसीका मत है कि इनका जन्म १४७५ ई०को हिरात नगरमें हुवा। १४९८ ई०को इन्होंने 'रोजत् उस् सफा' नामक फारसी ग्रन्थका सारसंग्रह करके 'खुलासत्-उल् अखबार' नामक एक सुन्दर ग्रन्थ प्रणयन किया था। इस ग्रन्थके अतिरिक्त और कई एक ग्रन्थ बनाये यथा १ 'हबीब उस्-सियार' २ 'मसीर उल् मुलुक' ३ 'अखबार-उल-अोखयार' ४ 'दस्तूर-उल वजरा' ५ 'मुकारिम-उल-अखलाक' ६ 'मुन्तखिब तारीख', ७ 'वास गाफा' इगरायब-उल्-असबाब' ८ 'जवाहिर-उल-अखबार'। १५२७ ई०को जन्मभूमि हिरातमें घोर विप्लव हुआ, इसलिये हिरात छोड़ कर मौलाना साहब उद्दीन और मिर्ज़ा इब्राहीम कानूनी नामक दो विद्वानोंके साथ ये भारतवर्ष आये। १५७८ ई०को आगरा नगर आकर सम्राट् बाबरसे इन्होंने भेंट की और सम्राट्से सम्मान लाभ किया। तत्पश्चात् जब बाबर बङ्गाल पर आक्रमण करनेके लिये आये, तो खावन्दमीर भी उनके साथ थे। बाबरकी मृत्युके बाद इन्होंने हुमायूके नामानुसार

कानून हुमायूं नामक ग्रन्थ रचना किया। यह ग्रन्थ अबुल फजलके अकबीर नामेमें उद्धृत है। ये सम्राट् हुमायूंके साथ गुजरात भी गये थे। बादमें १५३५ ई०को इनका मृत्यु हुआ। अब दिल्ली से ला करके अमीर खुसरुकी कब्रके पास इनका लड़ा गया।

खाविन्द (फा० पु०) १ पति, खसम। २ स्वामी, मालिक।

खावी (हिं० स्त्री०) वर्षके आरम्भमें नौकरी को पहलेसे दिया जानेवाला धन या अन्न।

खाशरी (स० स्त्री०) गाम्भारी वृक्ष। काशरी देखो।

खास (अ० वि०) १ मुख्य, बड़ा। २ स्वीय, अपना। ३ स्वय, खुद। ४ खालिस, विशुद्ध, ठेठ। (स्त्री०) ५ मोटे कपड़ेकी कोई थैली। इसमें चीनी डाल कर पीछे बोरेमें भरते हैं। ६ बनियोंके नमक चीनी वगैरह रखने- की थैली।

खासकलम (अ० पु०) अपना लेखक, निराला मुन्शी, प्रायवेट सेक्रेटरी।

खासगी (हिं० वि०) मालिकका, निजका, निराला।

खासतराश (फा० पु०) राजनापित, बादशाह या राजाके बाल बनानेवाला नाई।

खासतह्सील (अ० स्त्री०) जिला तहसील, जिस तह- सीलमें बड़ा हाकिम रहता हो।

खासदान (हिं० पु०) पानदान, पान रखनेका डब्बा।

खासनवीस (अ० पु०) खासकलम, अपनी ही लिखा पढ़ी करनेका रखा हुआ मुन्शी।

खासपुर—आसाम प्रान्तीय कछार जिलेके शिलचर उपविभागका एक ग्राम। यह अक्षा० २४° ५५´ उ० और देशा० ९२° ५०´ पू०में बरायल पहाड़के दक्षिण मुख पर अवस्थित है। १८वीं शताब्दीके आरम्भसे अन्तिम राजाके १८३०में मरने तक खासपुर कछार के राजाओंकी राजधानी रहा। १७९० ई० को कछार के राजा और उनके भाई ताम्रमयी मूर्तिमामें प्रवेश करके हिन्दू क्षत्रिय बन गये। पहलेकी राजधानीका निद र्शन ४ मन्दिरों, २ अन्य भवनों और ३ सरोवरों के भग्नावशेषमें मिलता है।

खासबरदार (फा० पु०) राजाको सवारीके आगे आगे चलनेवाला नौकर।

खासबाजार (फा० पु०) राजाके महलके पासका बाजार। राजा खास बाजारसे ही चीजें खरीदते हैं।

खासा (अ० पु०) १ राजभोग, बादशाही का खाना। २ राजाके चढ़नेका हाथी घोड़ा, बादशाहकी अपनी सवारीका जानवर। ३ वस्त्रविशेष, कोई सूती कपड़ा। यह पतला और सफेद होता है। ४ पिष्टकविशेष, किसी किस्मकी मोयनवाली पूरी।

खासा (हिं० वि०) १ उत्तम, अच्छा। २ नीरोग, तन्दु रुस्त। ३ सलोना। ४ सुन्दर, सुडौल, देखनेमें भला। ५ सम्पूर्ण, पूरा। ६ उपयोगी, कामका।

खासियत (अ० स्त्री०) १ स्वभाव, आदत। २ गुण, खूबी।

खासिय—आसामका एक जिला। यह अक्षा० २४° ५८´ तथा २६° उ० और देशा० ९०° ४५´ एवं ९२° ५१´ पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६०२० वर्गमील है। खासियाका २१६० वर्गमील भूभाग अंगरेजों के अधिकारमें है। लोकसंख्या प्राय २ लाख निकलेगी। खासिया जिलेका बड़ा शहर शिलङ्ग है।

खासिया और जयन्ती दो पहाड़ ब्रह्मपुत्र तथा सुर्मा नदीकी अववाहिकाके बीच पड़ते हैं। आजकल दोनों एक जिले जैसे गिने जाते हैं। खासिया जिलाके उत्तर कामरूप तथा नवगांव, पूर्वको नवगांव और कछार, दक्षिणको श्रीहट्ट (सिलहट) और पश्चिमको गारो पहाड़ है। फिर यह जिला ३ बड़े भागोंमें बटा है—स्वाधीन खासिया पहाड़, ग्राम और वहदादार। सरदार और सिन्दो नामक कई एक अधिनायक खासिया अञ्चल शासन करते हैं।

अंगरेजोंके अधिकृत खासिया पहाड़में चौबीस पर- गने हैं—शिमाइ, मायल, शिदोट, मायलबो, मवारङ्ग या माफलङ्ग, मौसमादिङ्ग माव से सरकार, माव ममाई, मिनतेङ्ग, मावलङ्ग, माव पुमकिर्तियङ्ग मोङ्ग शिरी, नोङ्गलिमखिन, नोङ्गवा, नोङ्गरियात, नोङ्गकरी, लुखिया, रामदायत, मायलमोपेम, शिङ्गरियाङ्ग, शिङ्ग राङ्ग, तिरना, उमानिया, मरविसु और लालिमा।

जयन्तीमें नीचे लिखे २५ परगने लगते हैं—यमबी, अपदुक (कुकी), दरङ्ग, जोवाई मङ्गकमट, मङ्गमी, बाकादोङ्ग, मौलगोराल, (सिकिर), मूलपोई (कुकी)

साउक्रूट, मौनमाव, नोङ्कलौ, मोफुलुङ, नोङ्ग्स्तोईङ्ग, नरप्, नर्तियाङ्ग, कोङ्वा, नोङ्गजिङ्गी, रम्बोइङ्ग, विसयाई, साइपुङ्ग (कुकी), सोतिङ्ग, मिलियङ्ग, सोलतङ्ग, सातपाथर और मङ्गपुङ्ग।

स्वाधीन खासिया पहाड़में सियम नामक अधिनायकों के अधीन भवान या वरवा, चेरा, खायरिम, लङ्गकिन, मलाई सोहमत, महाराम, मारीव, मावइङ्ग, माव सिनराम, मिलिएम, नोङ्गसोफो, नोङ्गखलव, नोङ्गमपूङ्ग, नोङ्ग स्तायन और रामवराई १५ परगने हैं। वह दादारोंके अधीन गिना जाता है। सरदारोंके अधीन द्वारा नोङ्ग तिरलेन, जिरङ्ग, मावलङ्ग और मावदोन नोङ्गखोङ्ग पांच और लङ्गदोयोंके अधीन लनयवङ्ग, मावफलङ्ग नोङ्गलिवाई और मोडिवङ्ग हैं।

खासिया पहाड़में वैसा जङ्गल नहीं है। नदीकी चालके अनुसार यहां एकके बाद दूसरी उपत्यका लगी है। यह सभी उपत्यकाएं केवल घासफूससे ढंकी है, बड़े बड़े पेड़ देख नहीं पड़ते। समुद्रपृष्ठसे २००० हाथ ऊंचे एक प्रकारका देवदारु वृक्ष मिलता है। पहाड़की ऊंची चोटी पर कड़ियोंके लायक यथेष्ट वृक्ष होते हैं। फिर भी खासियाके जङ्गलसे आय होनका सुभीता नहीं पड़ता। पहाड़ोंके बीच बीच नदी नाले बहते हैं। उनमें डोंगियों पर लोग आया जाया करते हैं।

खासिया पहाड़का दक्षिण भाग चूनके कङ्कड़से भरा है। पुराने समयसे खासियाका चूना बङ्गालमें कामकाजके लिये आता है। यहांसे प्रति वर्ष कोई २ लाख रुपयेका चूना बाहर भेजा जाता है। खासियाके चेरापूंजी, लाकादोङ्ग और भावड आदि स्थानोंमें बढ़िया लोहा मिलता है। परन्तु उसे इकट्ठा करने और स्थानान्तरको भेजनेमें बहुत व्यय पड़नेसे लोगोंका प्रयोजन नहीं निकलता। पहाड़ोंके बीच बीच मिलावटी कच्चा लोहा पाया जाता है। यहांके लोग पानीकी धार और कोयलेके सहारे लोहा शुद्ध कर लेते हैं। पुराने समयसे खासिया लोग लोहा गलानेके लिये विख्यात हैं। विलायती लोहेकी आमदनीसे इनका यह काम काज भी मट्टीमें मिल गया है। यहां गैण्ड, वाघ आदि यथेष्ट उपजता है। वनमें हाथी, गैंडे, चीते, भैंसे, सुरागाय और नाना प्रकारके हिरन देख पड़ते हैं।

खासिया पहाड़में विविध गुहाएं और गह्वर हैं। उनमें चेरापूंजी और रूपनाथकी गुहा प्रधान है। रूपनाथमें एक प्रकाण्ड गह्वर है। बहुतोंको विश्वास है कि उसकी राह चीनको चले जाते हैं। लोग कहा करते कि उसी गह्वरमें होकर चीना सैन्य भारत पर चढ़ा था। इसका नाम गुहामन्दिर है। उसमें हिन्दू देवदेवियोंकी नानाविध मूर्तियां खोदी गयी हैं।

कछारकी सीमा पर कपिली नदीके तीर एक ऊंचा झरना है।

यहां अधिकांश खासिया और सनतेङ्ग नामक जङ्गली लोग रहते हैं। दोनों जातियां असभ्य होते भी उन्नतिशील लगती हैं।

खासिया जिलेमें प्रायः २ लाख लोगोंका वास है। इसमें खासिया और सनतेङ्गोंकी संख्या १॥ लाखसे भी अधिक है।

खासिया और जयन्ती मिला कर आज कल एक जिला बन जाते भी पहले दोनों स्वतन्त्र-राज्य जैसे ही प्रसिद्ध थे। खासिया पहाड़ सियम सरदार आदिके अधीन रहा, परन्तु जयन्तीमें कोई राजा राजत्व करते थे। जयन्ती देखो।

१७६५ ई०को बङ्गालकी दीवानी मिलने पर अङ्गरेज कम्पनीकी दृष्टि श्रीहट्टकी ओर गयी। उस समय इस अञ्चलमें केवल जङ्गली लोग रहते थे। उनका आचार व्यवहार भारतके दूसरे लोगोंसे अलग था। उनका धर्म विश्वास दूसरे किसी जातिसे नहीं मिलता था। युरोपके वणियोंको यह देख कर लालच लगा कि वह प्रकृतिके क्रीड़ास्थलमें प्राकृतिक महार्घ्य द्रव्य भोग करते थे। उन्होंने भी यहांसे चूना और नारङ्गी इकट्ठी करके काम काज खोला था। बहुतसे लोग कहा करते कि कलकत्तेके बाजारमें 'सिलहट चून' नाम सुन करके युरोपीय वणिकोंने खासिया लोगोंसे मिलनेकी चेष्टा की थी।

१८२६ ई० को नोङ्गखलाव नामक स्थानके सरदारने

उत्तर आसाम और सुर्मा उपत्यकाके बीच आने जानेकी राह बनानेको कई एक अंगरेजोंके साथ कोई प्रबन्ध किया था। उसी समय कुछ अङ्गरेज नोङ्गखलाव नगरमें आकर रहने लगे। उनके साथ थोड़े बङ्गाली भी थे, जिनके दुर्व्यवहारसे खासिया लोग बिगड़ पड़े। इसीसे १८२८ ई० को ४थी अपरेलको खासियाओंने अङ्गरेजोंको आक्रमण किया था। इस युद्धमें अङ्गरेज कम्पनीके दो लेफटीनेण्ट और कई एक सिपाही मारे गये। फिर खासियोंका उत्पात धीरे धीरे बढ़ा था। ब्रटिश गवर्नमेण्ट अधिक ठहर न सकी। खासियाओंको दबानेके लिये दलका दल ब्रटिश सैन्य भेजा गया, परन्तु साहसी खासिया लोगोंने सहजमें वश्यता स्वीकार न की। धनुर्वाण मात्र उनका हथियार है। उसीके बल पर खासियाओंने सैकड़ों अङ्गरेजोंको मार डाला था। अनेक कष्टोंके पीछे १८३३ ई०को खासियाओंने वश्यता मानी।

१८३५ से १८५४ ई० तक नोङ्गखलाव नगरमें एक राजनीतिक अङ्गरेजी कर्मचारी रहा, फिर वह चेरापूंजीको उठ गया।

जयन्ती पहाड़के लोग अपना परिचय 'पनार' जता देते और खासिया उन्हें 'सनतेङ्ग' जैसा पुकारते हैं। १८३५ ई० से वह भी ब्रटिश प्रजा जैसे समझे जाते हैं। इसी वर्षको जयन्तीराज राजेन्द्रसिंहने नवगांवसे कई लोगोंको पकड़ मंगा कर कालीमन्दिरमें बलि किया था। इसी दोषपर अङ्गरेज सरकारने उन्हें राज्यसे हटा दिया।

खासिया—आसाम विभागके अन्तर्गत खासिया पर्वतकी रहनेवाली एक जाति। इनके मुंह और सारे अङ्गकी बनावट देख बहुतसे लोग मङ्गोलीय या तूरानी जाति की शाखा जैसा अनुमान करते हैं। इसके शरीरका रङ्ग गहरा कालासिला पीला लगता है। नाक चपटी, मुंह बैठा और ठीक बना हुआ, आंखें छोटी और काली, पुतलीके पास पीलापन और होंठ मोटे होते हैं। इनमें स्त्रीपुरुष दोनों बड़े बड़े बाल रखते, केवल निर्धन लोग सिर मुड़ा डालते हैं। खासिया तेजस्वी और बलिष्ठ हैं। यह स्वभावसे ही विनयी, धीर और हास्यमुख होते हैं। इन्हें सदा सर्वदा परिश्रम करना अच्छा लगता है। खासिया उतने चतुर और मिस्री नहीं हैं, परन्तु सीखनेसे सभी प्रकारके काम कर सकते हैं। दरिद्र लोग सूती कपड़ेका घुटने तक कुर्ता पहनते हैं। जो अपेक्षाकृत धनी हैं, मत्थे पर सूती या रेशमी कपड़ा बांधते और चद्दर डालते हैं।

इनमें साधारणतः १५से १८ तक स्त्रियों और १८से २४ वर्ष तक पुरुषोंका विवाह हो जाता है। विवाहकी चाल बहुत सीधी है। किसी किसी स्थानमें वरकर्ता और कन्याकर्ता हो विवाह पक्का कर लेते हैं। सगाईके पीछे वर अपने भाईबन्दों और कुटुम्बियोंको साथ लेकर कन्याके घर जाता और वहीं भोजन करके रातको लौट आता है। दूसरे दिन वह कन्याको अपने घर ले आता है। कन्याके साथ भी उसके कुटम्बी आदि वर घर पहुंच वैसे ही खाते पीते हैं। दो दिन वरके घर रहकर नव दम्पती कन्याके घर पहुंचते हैं। विवाह हो जाने पर वरको जीते जी ससुरके घर पर ही रहना पड़ता है। कोई विशेष कारण न आनेसे इनका विवाह बन्धन कैसे टूट सकता है। स्त्री यदि बांझ हो, तो मांबाप या इनके सरदारके सामने कारण दिखा करके विवाहका बन्धन तोड़ते हैं। इसी अवसर पर स्त्रीपुरुषको पांच कौड़ियां बदल बदल करनेको दी जाती हैं। फिर दोनोंसे पूछ कर उन्हें फेंक देते हैं। कौड़िया फेंक देने पर विवाहका बन्धन सदाके लिये टूट जाता है। एक बार स्त्रीपुरुषका विवाह बन्धन टूट जानेसे फिर उनका एक दूसरेके साथ विवाह नहीं हो सकता। परन्तु भिन्न परिवारमें विवाह करनेकी क्षमता दोनोंको होती है। खासियाओंमें विधवा विवाह चलता है। किन्तु बहु विवाहकी प्रथा एकबारगी ही निषिद्ध है। छिनारा इनमें महापाप माना जाता है। जो ऐसे बुरे काममें लगा रहता, विशेष लाञ्छना सहता है।

विवाहके पीछे पति ससुरके घर जाकर रहता। स्त्रीको वंशमर्यादाको बढ़ाया करता है। उसके पुत्र भी मातुल वंश सम्भूत जैसा परिचय देते हैं। पिताके वंशका कोई मान नहीं रहता। विवाहमें

दूल्हा जो कुछ पाता, उसके घरवालोंको मिल जाता है।

धनी खासिया ईंटकी दीवारी खड़ी करके घर आदि बनाते हैं। साधारण लोगोंके घर पत्थर, मट्टी या लकड़ी की दीवारसे ही तैयार हो जाते है। खासिया चावल, मछली, सूअर आदिका मांस और शाक भाजी खाते हैं। स्त्रीपुरुष दोनोंको दिन रात पान खाना अच्छा लगता है।

यह हिन्दुओंके धर्म अथवा ब्राह्मणोंको बड़ाई बिलकुल नहीं मानते। सब लोग उपदेवताकी पूजा किया करते हैं। रोग होनेसे किसी प्रकारका औषध नहीं लिया जाता। जिस उपदेवताके प्रकोपसे रोग लगता, उसकी शान्तिके लिये बलि चढा करता है। किसीका मृत्यु होनेसे यह शव दाह करते और उसका भस्म किसी बर्तन आदिमें भर कर मट्टीमें गाड रखते हैं। जहां यह भस्म गाड़ा जाता, चारों कानों पर चार पत्थर खड़े करके ऊपरसे एक चपटा पत्थर दबा देते हैं। खासिया आत्माको देहान्तर प्राप्तिको मानते और बताते कि मानव-जाति मृत्युके पीछे बन्दर, घोड़ा, कछुवा, मेंढक आदिके रूपमें परिणत हो जावेंगे। इनमें जातिभेद नहीं होता।

यदि कोई खासिया मसानेमें रहता, उसके मरने पर उसका धन आदि मांको, मां न रहनेसे नानी, नानीके अभावमें बहन और उसके बाद भानजीको मिलता है। बहन न रहनेसे भाई, भाईके अभावमें मामी या मौसी या उसके लडके आदि मृत व्यक्तिकी सम्पत्ति पाते हैं। यदि भाई या मौसाके भी पुत्र आदि न रहें, तो नानीकी बहनें या उसके बेटे ही उक्त सम्पत्तिके अधिकारी होते हैं। किसी स्त्रीके मरने पर उसका विषय उसकी मांको प्राप्य, माताके न रहनेसे उसके भाई या बहन या भानजी पाया करते हैं। जो व्यक्ति मामाके घर न रहके श्वशुरके घर पर ठहरता, उसका विषय उसकी स्त्रीको मिलता है; स्त्रीके मर जाने पर उसके बेटे पाया करते हैं। मृत व्यक्तिका पद या उपाधि उसके भाईको ही मिलती है, भाई न रहनेसे मौसेरा भाई उसका अधिकार करता है। मौसेरे भाईके अभावमें बडा भानजा उक्त पद या मर्यादा पाता है। कोई उत्तराधिकारी न होनेसे राजा-को सारा विषय मिल जाता है। क्योंकि शवको जला करके भस्म गाड़नेका भार अकेले राजा पर ही पड़ता है। सेला पहाडके खासियोंकी सम्पत्ति दो भागोंमें बंटती है। पहले पुरखोंकी मिली सम्पत्ति अन्त्येष्टि क्रिया करनेवाला आत्मीय पावेगा। दूसरे मृत व्यक्तिका अपना कमाया धन आदि उसके पुत्रोंको मिलेगा और जितने दिन उसकी मां फिर विवाह नहीं करती, उसके खिलाने पिलानेका भार पुत्रको ही उठाना पड़ेगा।

खासियोंमें कोई कोई वेल्स मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्मकी दीक्षा ग्रहण करता है। उनके साहाय्य-से यह लोग कुछ कुछ विद्यानुशीलन करने लगे हैं। खासियाओंकी कोई अपनी भाषा या लिखी पोथी न थी। देशीय लोग कहा करते, जब वह समतल भूमि पर रहते थे, बाढ़ उनका सबकुछ बहा ले गयी। फिर उसीसे वह उक्त पहाडी जङ्गलमें जाकर बसे थे।

खासियाना (हिं० पु०) मञ्जिष्ठाभेद, किसी किस्मका मंजीठ। इसका वर्ण अति उत्तम रहता है। यह खासियासे मंगाया जाता है।

खासिया क्षत्रिय—एक पहाड़ी क्षत्रिय जाति। यह लोग विशेषतः नेपाल और कुमाऊं, गढ़वाल आदि जिलोंमें रहते हैं। इनके २० भेद तक पाये जाते हैं। अपनेको क्षत्रिय बतलाते भी यह लोग यज्ञोपवीत कम पहनते हैं। खस देखो।

खासिया ब्राह्मण—पार्वत्य ब्राह्मणजातिभेद। इनकी २५० श्रेणियां तक होती हैं, जैसे—धोबल, घटयारी, कनयारी, गरवाल, मुनवाल, पंपानोई, उपरेती, चोनाला, कुठारी, बुसरी, दोर्वास, सनवाल, धुनीला, पानड़ी, लेमडारी, चवनराल, फुलोरिया, भोलिया, ननियाल, चौदासी, दलाकोटी, बुढ़लाकोटी, धुराली, धुराता, पंचोली, बनेरिया, गरमाला, बलोनिया, विरारिया, वमारी इत्यादि।

खासी (अ० स्त्री०) १ अच्छा, बढ़िया। (स्त्री०) २ राजा या बादशाहके अपने आप बांधनेको तलवार, ढाल या बन्दूक।

खास्सा (अ० पु०) खासियत देखो।

खिंग (फा० पु०) श्वेतवर्ण अश्वभेद, नुकरा, सफेद रङ्गका एक घोड़ा। इसके मुंहने पट्टे और चारों सुमों का रङ्ग कुछ कुछ गुलाबी और सफेद होता है।

खिंगरी (हि० स्त्री०) पिष्टकभेद, मठरी, किसी किस्मका मोयनदार पूरी। यह मैदेकी बनती और बहुत पतली तथा छोटी रहती है।

खिंचना (हि० क्रि०) १ आकर्षित होना, खिंच जाना, घसिटना। २ निकलना, बाहर होना। ३ तनना, कड़ा पड़ना। ४ जाना, बढ़ना। ५ खपना, चुसना। ६ भबकेसे चलना, उतरना। ७ कलमसे निकलना। ८ रुकना, बन्द होना। ९ पहुंचना, चला जाना। १० बिगड़ना, अच्छा न लगना। ११ घटना, महंगा पड़ना।

खिंचवाना (हिं० क्रि०) खिंचाना, खींचनेका काम कराना।

खिंचाई (हि० स्त्री०) १ खींच, आकर्षण, कर्षण। २ खींचनेकी उजरत या मजदूरी।

खिंचाना, खिंचवाना देखो।

खिंचाव (हि०) खिंचाई देखो।

खिंचावट, खिंचाई देखो।

खिंचाहट, खिंचाई देखो।

खिंडाना (हि० क्रि०) इतस्ततः निक्षेप करना, फैलाना, बिखेरना।

खिखिंद (हि० पु०) १ किष्किन्ध्या पर्वत। यह पहाड़ महिसुर राज्यके उत्तरभागमें पड़ता है। २ बीहड़ जमीन।

खिखि (सं० पु०) खिरित्यव्यक्तशब्देन, खेटति भीरुत्वात् भयमुत्पादयति, खि-खिट्-ड। पृषोदरादिवत् साधु। शृगालविशेष, लोमड़ी। 'खिखि' के स्थल पर किसी पाठ देख पड़ता है।

खिखिर (सं० पु०) खिङ्खिर पृषोदरादिवत् साधु। लोमड़।

खिङ्खिरः (सं० पु०) खिमित्यव्यक्तशब्द किरति कृ क पृषोदरादिवत् सत्व न साधु। १ खिखि। २ वारिवाहक एक खुशबूदार चीज। ३ खट्वाङ्ग, महादेवका एक हथियार। इसका रूपान्तर 'खिङ्किर' भी होता है।

खिचड़वार (हि० पु०) खिचराही, खिचड़ी दान करनेका दिन, मकर-सङ्क्रान्ति।

खिचड़ी (हिं० स्त्री०) १ दाल और चावलका मेल। २ दाल और चावलको मिला कर पकाया हुआ भोजन। ३ विवाहकी एक प्रथा, भात। ४ मिश्रित पदार्थद्वय, दो मिली हुई चीजें। ५ खिचराही, मकरसङ्क्रान्ति। ६ बदरपुष्प, बेरीका फूल। ७ बयाना, साई। (वि०) ८ मिश्रित, मिला हुवा।

खिचिङ्ग—उड़ीसा प्रान्तके करद राज्य मयूरभञ्जका एक गांव। यह अक्षा० २१ ५५´ उ० और ८५ ५०´ पू०में अवस्थित है। आबादी कोई २६८ होगी। इसमें मूर्तियों, स्तम्भों और इष्टक तथा प्रस्तर निर्मित कई मन्दिरों का ध्वंसावशेष मिलता है। ग्राम समग्र एक मन्दिरावली देखने लायक चीज है। मालूम होता है कि अकबरके सेनापति मानसिंहने इनमें किसी शिवमन्दिर का संस्कार कराया था।

खिचड़ (हि० पु०) खिचड़ी।

खिचा (सं० स्त्री०) खेचरिकान्न, खिचड़ी।

खिजना, खीजना देखो।

खिजलाना (हि० क्रि०) १ खीजना, बिगड़ना। २ खिझाना, छेड़ना।

खिजां (फा० स्त्री०) १ पतझार, पत्ते गिर जानेका मौसम। २ अवनति, गिराव।

खिजादिया अमानियो—काठियावाड़के हलावार विभाग का एक मध्यवर्ती राज्य। यहां एक गांव है। उसका एक अधिकारी रहता है। आमदनी २८०० रुपया है। इसमें ५२) रु० गायकवाड़को देने पड़ते हैं। लोकसंख्या १५६ है।

खिजाब (अ० पु०) केशकल्प, श्वेत केशोंको कृष्णवर्ण बनानेका औषध।

खिजारिया—काठियावाड़के गोहेलवाड़ विभागका एक छोटा राज्य। यह राज्य दो भागोंमें बटा है। इसमें एक टुकड़ा २ वर्गमील और दूसरा एक वर्गमील पड़ता है। प्रत्येक भागका आय प्राय डेढ़ हजार रुपया है। इसमें बड़ोदाके गायकवाड़को १०) रु० और जूनागढ़के नवाबको ४७) रु० देना पड़ता है। खिजारिया दोम

गढसे ९ कोस दक्षिण-पूर्व और ढोलासे २॥ कोस उत्तर पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४०० है।

खिझना (हिं० क्रि०) खोजना, चिढ़ना। (वि०) बिगड़ैल, चिढ़ जानेवाला।

खिझाना (हिं० क्रि०) चिढ़ना, तङ्ग करना, छेड़ना।

खिडकना (हिं० क्रि०) खिसकना, सरकना, चला जाना।

खिडकाना (हिं० क्रि०) टकराना, हटाना, टालना।

खिड़की (हिं० स्त्री०) १ क्षुद्र द्वार, छोटा दरवाजा। यह दीवारोंमें प्रकाश और वायु आने जानेके लिये लगायी जाती है। २ फाटकका छोटा दरवाजा। फाटक बन्द करके लोगोंके आनेजानेको इसे खोल देते हैं। गुप्तद्वार, चोर-दरवाजा।

खिताब (अ० पु०) उपाधि, पदवी।

खिताबी (अ० वि०) उपाधिधारी, खिताब पाया हुआ।

खित्ता (अ० पु०) प्रान्त, सूबा।

खिदमत (फा० स्त्री०) सेवा, टहल, नौकरी।

खिदमतगार (फा० पु०) सेवक, टहलुवा, नौकर।

खिदमतगारी (फा० स्त्री०) सेवकाई, नौकरी।

खिदमती (फा० वि०) १ सेवामें संलग्न, खिदमत करनेवाला। २ सेवा सम्बन्धीय, खिदमतके मुताबिक।

खिदरापुर—बम्बई प्रान्तीय कोल्हापुर राज्यका एक ग्राम। यह शीरोलसे दक्षिण-पूर्व पड़ता और गङ्गेश्वर स्वामीके अधिकारमें रहता है। इसमें कपेश्वर महादेवका मन्दिर विद्यमान है। दीवारें खूब खुदे हुए काले पत्थरकी बनी हैं। गुम्बज पर पलस्तरकारी की हुई है। प्रधान भवनमें दो दो नक्काशीदार मण्डप लगे हुए है। मण्डपोंमें दो चौकें है। उनसे बाहरीमें बीस और भीतरीमें १२ नक्काशीदार खम्भे खड़े हैं। मन्दिरके सामने खुला हुआ स्वर्गमण्डप है। बाहरी और आड़की छटी दीवारमें २६ कोठे और भीतर घेरेकी शकलमें १२ खम्भे लगे हैं। मन्दिरसे बाहर नक्कारखाना है। मन्दिरके दक्षिण द्वारमें एक पार्श्व पर देवनागराक्षरोंमें सिंहदेवकी देवगिरि यादव शिलालिपि लगी है। इसके अनुसार १२२५ शकको मीराजका खण्डलेश्वर ग्राम कोपेश्वरकी पूजाके उद्देश्यसे उत्सर्ग किया गया। यहां एक जैन मन्दिर भी है। प्रति वर्ष पौषमासको कोपेश्वरका मेला होता है।

खिदिर (सं० पु०) खिद्यति क्षणप्यापचीयत दुःखेन तपसा वा खिद्-किरच्। इषिमदिमुदि खिदोच्छिदि। उण् १।५१। १ चन्द्र, चन्द्रमा। २ दीन। ३ तापस।

खिदिरपुर—कलकत्तेके दक्षिण एक उपनगर। यह अक्षा० २२° ३२' २५" उ० और देशा० ८८° २२' १८" पू०में अवस्थित है। यहां जहाजोंका बड़ा कारखाना है।

कलकत्ता देखो।

खिद्यमान (सं० त्रि०) खिद तास्छील्ये चानश्। १ खेदयुक्त, रंजीदा। २ सैन्यग्रस्त, फौजसे घिरा हुआ। ३ उपतप्त, छवला हुआ।

खिद्र (सं० पु०) खिद-रक्। स्फायितञ्चिवञ्चि शकिक्षिपि क्षुदीत्यादि उण् ।२।१३। १ रोग, बीमारी। २ दरिद्र, गुर्बत। ३ भेदन, कटाव।

खिद्वन् (सं० त्रि०) खिद अन्तर्भूत णिजर्थे क्वनिप्। खेदकारक, रुलानेवाला।

खिन्न (सं० त्रि०) खिद-क्त। १ दैन्ययुक्त, गरीबीका मरा हुआ। २ आलस, सुस्त। ३ खेदयुक्त, नाखुश।

खिपरा—१ सिन्धु प्रदेशके थर और परकर उपविभागका एक तालुक। यह अक्षा० २५° २६' तथा २६° १५' उ० और देशा० ६९° ३' एवं ७०° १६' पू० बीच पड़ता है। क्षेत्रफल २२४९ वर्गमील है। इसमें १२५ गांव लगते जिसमें कोई ५४६८१ लोग बसते है।

२ खिपरा तालुकका बड़ा शहर। यह प्रायः १६० वर्ष पहले स्थापित हुआ था। खिपरा पूर्व नाराके किनारे अक्षा० २५° ४८' ३०" और देशा० ६९° २५' पू०में बसा है। यहां प्रधानतः किसान लोगोंका वास है। कपास, ऊन, नारियल, चीनी, तम्बाकू और अनाज आदिका व्यापार होता हैं। कपड़ा बुनने और छापनेका काम भी खूब है। खिपरामें दीवानी फौजदारी अदालत, थाना, डाकघर और धर्मशाला विद्यमान है।

खिमलासा—मध्यप्रदेशके सागर जिलेकी कुराई तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २४° १२' ३०" उ० और देशा० ७८° ३४' ३०" पू०में सागर नगरसे २१ कोस उत्तर-पश्चिम पड़ता है। आबादी कोई ३ हजार है।

शहरको चारों तर्फ १४ हाथ ऊंची चहारदीवारी लगी है। बीचमें एक दुर्ग है। उसमें दो बढ़िया घर बने हैं। खिमलासाका 'शीश महल' (आईनाघर) नामक हिन्दू राजभवन और गुम्बजदार समाधिमन्दिर देखने योग्य है। शीशमहलकी पहले जैसी तड़क भड़क अब नहीं रही सही, परन्तु आज भी छतसे और तितके कमरे आईनेसे जड़े हैं।

पहले यह नगर दिल्लीके बादशाहके अधीन रहा। परन्तु १६९५ ई०को नि सन्तान महाराजका मृत्यु होने पर पेशवाके प्रतिनिधि खिमलासाका किला अधिकार कर बैठे। १८१८ ई०को सागर जिलेके साथ यह स्थान वृटिश गवर्नमेण्टका अधिकारभुक्त हो गया। १८५७ ई०के जुलाई महीनेमें जब सिपाहियोंका विद्रोह हुआ, भानपुरके राजाने इस स्थानको आक्रमण किया था। विद्रोहियोंके अत्याचारसे नगरकी विशेष क्षति हुई। उस समय बहुतसे अधिवासी शहर छोड़ भागे। आज भी वहनमें टूटे फूटे और खाली मकान पड़े हैं।

खियाना (हि० क्रि०) १ घिस जाना, रगड़ खाना, मिटना। २ खिलाना, भोजन कराना।

खिर (स० स्त्री०) नार, जोलाहोंकी ढरकी। इसमें बानेका सूत रहता है। बुनते समय खिरको एक तर्फसे दूसरी ओर चलाना पड़ता है।

खिरडरी (हि० स्त्री०) कत्थेकी एक गोली। इसमें खुशबूदार मसाला डाला जाता है।

खिरन—युक्तप्रदेशके रायबरेली जिलेकी दलमऊ तहसीलका एक परगना। इस परगनेके उत्तर मोरवां, पूर्वको दलमऊ तहसील और रायबरेली, दक्षिणको सरेनी और पश्चिमको पनहां, भगवन्तनगर, बिहार और पाटन आदि कई एक विभाग हैं। खिरनका क्षेत्रफल १०२ वर्गमील है। इसमें १२१ गांव या मौजे लगते हैं। उससे ७८ मौजे तालुकदारी बीस जमीन्दारी और बीबाम पट्टीदारीके बन्दोबस्तमें हैं। सबसे पहले इस परगने पर भड़ लोगोंका अधिकार रहा, किन्तु कोई ७१० वर्ष हुए बैस वंशके राजा अभयचन्द्रने उनके हाथसे छीन अपने राज्यमें मिला लिया। उनके आठवें पुरुष राजा सातनने खिरन परगनेके बीच सातनपुर नामक एक नगर स्थापन किया था। फिर अवधके नवाब आसफ उद् दौलाके राजत्व समय किसी तहसीलदारने यहां एक दुर्ग बनाया। किलेके पास ही खिरन शहर और तहसीलदारी है। खिरनमें एक पाठशाला और साप्ताहिक बाजार है। हिन्दू राजाओंके अधिकारकालको मट्टीका जो किला बना था, उसका ध्वंसावशेष आज भी देख पड़ता है।

खिरनी (हि० स्त्री०) क्षीरिणीवृक्ष, एक पेड़। यह दरख्त ऊंचा और सदाबहार होता है। खिरनीका काठ रक्तवर्ण, चिक्कण, कठिन तथा सुदृढ़ निकलता और कोल्हू और घर बनानेमें लगता है। उसकी बड़ी सुगमतासे खराद भी सकते हैं। २ क्षीरिणीफल। यह निमकौड़ी जैसा दूधिया और मीठा रहता और ग्रीष्म ऋतुको पकता है।

खिरपाई—बङ्गालके मेदिनीपुर जिलेका एक कसबा। यह अक्षा० २२° ४१' उ० और देशा० ८७° १७' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या ५०४५ है। यहां बहुतसे जुलाहे रहते, जो एक तरहका बढ़िया और कीमती कपड़ा तैयार करते हैं।

खिरहिटी (स० स्त्री०) महासमङ्गा नाम क्षुप, एक झाड़ी।

खिराज (अ० पु०) कर मालगुजारी, राजा प्रजासे अलग से बचाता है, इसीसे वह जमीनकी पैदावारका कुछ भाग कर स्वरूप राजाको अर्पण करती है। इसी राजभागका मुसलमानी नाम खिराज है।

खिरासर—कठियावाड़के हल्ला विभागका एक छोटा राज्य। इसका भूपरिमाण ११ वर्गमील है। खिरासरके राजा अङ्गरेज सरकारको २१६६) और जूनागढ़के नवाबको ३५०) रु० खिराज अदा देते हैं। इसमें १२ गांव लगते हैं। लोकसंख्या ३११७ है। सालाना आमदनी १५४३२ रु० है।

खिरिरना (हि० क्रि०) १ अनाजको सींक सींकके छाजमें डालकर छानना। २ खुरचना।

खिरैंटी (हि० स्त्री०) बरियारा, बीजबन्द।

खिल (स० त्रि०) खिल क। १ अकृष्ट, जो जाता न गया हो। २ उच्छन्न, उजड़ा हुआ। (पु०) १ विष्णु।

७ परिशिष्ट। ऋग्वेदका श्रीसूक्त आदि, यजुर्वेदका शिवसङ्कल्प प्रभृति और महाभारतका हरिवंश 'खिल' कहलाता है।

खिल्अत (अ० स्त्री०) सरोपाव, बादशाह या राजासे मिलनेवाली पोशाक वगैरह। यह सम्मान सूचनार्थ दी जाती है।

खिल्क़त (अ० स्त्री०) १ सृष्टि, दुनिया। २ जनसमूह-भीड़।

खिलकौरी (हिं० स्त्री०) खिलवाड़, खेलकूद, हंसी-दिल्लगी।

खिलखिलाना (हिं० क्रि०) अट्टहास करना, कहकहा मारना, जोरसे हसना।

खिलचीपुर—भारतवर्षकी भूपाल एजेन्सीका एक देशी राज्य। यह अक्षा० २३° ५२′ तथा २४° १७′ उ० और देशा० ७६° २६′ एवं ७६° ४२′ पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल २७३ वर्गमील है। इसके उत्तर राजपूताना एजेन्सीका कोटा राज्य, पूर्वको राजगढ़, पश्चिमको इन्दोर और दक्षिणको नरसिंहगढ़ है। इसका पुराना नाम 'खीचीपुरपाटन' है। पहले खिलचीपुर उत्तरको गागोर, दक्षिणको सारङ्गपुर और पश्चिम तथा पूर्वको कुमराज तक चला गया था। परन्तु पठानोंके आक्रमणसे धीरे धीरे घट पड़ा। मालवेका यह प्रान्त खिचीवाड़ा कहलाता है। यहांकी आबहवा अच्छी है।

खिलचीपुरके राजा खीची चौहान हैं। १५४४ ई०को उग्रसेनने यह राज्य स्थापित किया। गागरौनकी खीची राजधानीसे उन्हें घराऊ झगड़े कारण भाग आना पड़ा था। दिल्ली-सम्राट्ने उन्हें जो पीछेको सनद दी, उसमें अब इन्दोरमें लगनेवाला जीरापुर तथा माचलपुर परगना और ग्वालियरका शुजालपुर भी था। १७७० ई०को यह प्रान्त खीचियोंके हाथसे निकल गया। कारण अभयसिंहको सेंधियासे सन्धि कर लेना पड़ा था। १८७३ ई०को खिलचीपुरके राजा अमरसिंहको 'राव बहादुर'का पुश्तैनी खिताब मिला। १८९९ ई०को भवानीसिंहजी सिंहासनारूढ़ हुए। राव बहादुर दुर्जनसालसिंह साहेब बहादुर वर्तमान अधीश्वर हैं। राजाको ९ तोपोंकी सलामी मिलती है।

लोकसंख्या ३११०३ है। राज्यके अधिकांशकी भूमि पथरीली, परन्तु दक्षिणपश्चिमकी उपजाऊ है। वार्षिक-आय १ लाख २० हजार और वृटिश गवर्नमेण्टको दिया जानेवाला कर १२६२५) रु० है।

२ मध्यभारतके खिलचीपुर राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४° ३′ उ० और देशा० ७६° ३५′ पू०में अवस्थित है। आईन-ई-अकबरीमें इस नगरका नाम 'खलजीपुर' लिखा है। लोकसंख्या प्रायः ५१२१ है। यहां डाकखाना, स्कूल, जेल और अस्पताल बना है।

खिलजी (फा० पु०) अफगानिस्तानकी सीमा पर रहनेवाले पठानोंकी एक जाति। अला-उद्-दीन् इस खानदानमें खूब मशहूर बादशाह हो गये हैं। खिलजी घरानेने भारतमें १२८८ ई०से १३२१ ई० तक राज्य किया।

खिलना (हिं० क्रि०) १ फूलना, फटना, कलीकी पंखड़ियां खुलना। २ प्रसन्न होना, मौजमें आना। ३ अच्छा लगना, ठीक जंचना। ४ बीचसे फटना, दरकना। ५ अलग

खिलवत (अ० स्त्री०) एकान्त, तनहाई, अलाहिदगी।

खिलवतखाना (फा० पु०), एकान्त, स्थान, निराली जगह।

खिलवाड़ (हिं० पु०) हंसी खेल, ठट्ठा।

खिलवाना (हिं० क्रि०) १ भोजन करना, खाना दिलवाना। २ खुश कराना। ३ फुटाना, खूब अच्छी तरह भुंजाना। ४ खीलें लगवाना, गंठाना।

खिलाई (हिं० स्त्री०) १ भोजनक्रिया, खाना पीना। २ खिलानेकी क्रिया। ३ लड़कोंको खेलानेवाली दाई।

खिलाड़, खिलाड़ी देखो।

खिलाड़ी (हिं० पु०) १ खेल करनेवाला, कलाबाज। खिलाड़ीका-तान पकड़ लड़ना, पटा बनेठी घुमाना और ऐसी ही दूसरी कसरतें करना है। २ जादूगर, हाथकी सफाई दिखानेवाला। ३ बैलोंकी एक जाति। खिलारी देखो।

खिलात—बलूचस्तानकी राजधानी। इसका ठीक नाम किलात है। बलूचस्तानके राजा खिलातके खान् कहलाते हैं। यह नगर अक्षा० २८° ५३′ उ० और देशा०

६६° २८' पू० में बसा और समुद्रपृष्ठसे ४५१२ फुट ऊंचा पड़ता है। खिलात शहर शाहमर्दान नामक चूनाके पहाड़की चोटी पर बनाया गया है। इसमें ३ फाटक लगे हैं। नगरमें दो दुर्ग हैं। पुराने किलेका नाम मिरी है। यही आजकल खान्‌का महल बन गया है। शहरकी चहारदीवार मट्टीसे बनी, जिसके बीच बुर्जे लगी हैं। चहारदीवारी और मोरचोंमें गोली चलानेके लिये छेद बने हैं। शहरकी राहें बहुत खराब हैं। बाजार बड़ा और सब चीजोंसे भरा है। नगरमें एक स्वच्छसलिला नदी बहती है। मिरी दुर्गमें बहुतसी अट्टालिकायें हैं। इसे वर्तमान मुसलमान राजवंशके पूर्ववर्ती हिन्दू राजाओंने निर्माण किया था। खिलातकी राजसभा बहुत बढ़िया है। राजसभाके सामने जो बरामदा लगा है। यहांसे नगर और चारों ओरोंके पहाड़ोंका दृश्य बहुत अच्छा देख पड़ता है। नगरके पूर्व और पश्चिमको दो उपकण्ठ हैं। इनको मिलाकर शहरके बाशिन्दोंका शुमार कोई १४ हजार है। खान् बहुरुई जातिके आदमी हैं। नगरको पूर्व और कितनी ही सुरम्य उद्यान विशिष्ट उपत्यकाए हैं। उनमें ब्यानकोह सबसे बड़ा है।

(बलूच और बेलूचस्तान देखो।)

खिलात नगर—बलूचस्थानके खिलात राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २८°२' उ० और देशा० ६६°३५' पू०में क्वेटासे ८८ मील दूर पड़ता है। लोकसंख्या दो हजार से अधिक नहीं। अधिवासियोंमें कुछ हिन्दू व्यवसायी भी हैं। नगर प्राचीरवेष्टित है। मिरी नामक दुर्गमें खां आश्रय लिया करते हैं। ई० १५वीं शताब्दीमें यह मीरवारियोंके हाथ लगा और अहमदजाई खानोंकी राजधानी बना। १५०८ ई०को इसने अहमद शाह दुरानीका आक्रमण रोका और १८३८ ई०को अंगरेजोंके हाथ लगा। एक वर्ष पीछे फिर मरवां विद्रोहियोंने इसको अधिकार किया। किलेके नीचे कालीजीका एक मन्दिर है, जो मुसलमानी तारीखसे पहलेका बना हुआ मालूम पड़ता है। देवीकी मूर्ति अग्निका चिह्न धारण किये हुए दो दीपकोंके सामने जो निरन्तर जला करते हैं, यही है।

खिलाना (हि० क्रि०) १ खेलमें लगाना। २ भोजन कराना। ३ फुलाना।

खिलाफ (अ० वि०) विरुद्ध उलटा।

खिलाफत (अ० स्त्री०) १ मुहम्मदके प्रतिनिधिका धार्मिक उत्तराधिकार, धर्मसम्बन्धीय प्रतिनिधित्व। २ खलीफाका हलका, खलीफाका बड़प्पन। प्रधानतः इस शब्दका अर्थ दामासकस और बगदादमें मुहम्मदसे हलाकूखानके समय तक राजत्व करनेवाले राजाओंका उत्तराधिकार है। ३ मुसलमान जगत्‌के धार्मिक प्रतिनिधिका पद।

पूर्वमें राज्य करनेवाले मुसलमान लोगोंका इतिहास, जो खलीफा कहलाते थे, प्रधानतः तीन बड़े भागोंमें बांटा है—(१) मुहम्मदके ठीक पीछेवाले उत्तराधिकारी पहले चार खलीफे। (२) उमैयद खलीफे और (३) अब्बासीद खलीफे।

१—पहले ४ खलीफे।

मुहम्मदके मरने पर प्रश्न उठा था—कौन उनका उत्तराधिकारी होगा। उमर नामक किसी प्रदेशीने बाहरी मुसलमान लाकर मदीनाके बाशिन्दोंको दबाया और मुहम्मदके मित्र तथा श्वशुर अबूबकरको खलीफा बनाया।

अबूबकरका शासन—अबूबकरने उस समय बड़ी खूबी दिखलायी थी। मुहम्मदने युनानियोंके विरुद्ध जो चढ़ाई करनेकी तैयारी की थी, इन्होंने उसको चुपकेसे भेज दिया और अपने आप मदीना नगरकी रक्षा किया। फौज वापस आने पर अबूबकर बलवाइयों पर आक्रमण करनेको आगे बढ़े। अरब मैदान छोड़ भागे थे। सिर्फ यममेमें ही कड़ी लड़ाई हुई। अपने सिद्ध-पुरुष मुसेलिमाके अधीन बानू हनीफ खूब लड़े थे। परन्तु जीत न सके।

पड़ोसी देशों पर धर्मयुद्धकी घोषणा जो मुहम्मद कर गये थे, नये इसलाम-धर्मको अरबोंमें सर्वप्रिय बनानेके लिये खासे जरिया थे। क्योंकि उसमें लूट मारसे माल भी मिल जानेका मौका था।

मध्य और उत्तरपूर्व अरबस्तानको अधीनस्थ करके खलीफाकी फौज निम्न यूफ्रेटस पर चढ़ी थी, जहांसे वह अलग होने पर सीरियाको बुलायी गयी। ६३२

ई०की ग्रीष्म ऋतुमें दामासकस का पतन हुआ और ६३६ ई०की २०वीं अगस्तको यारमुककी बड़ी लड़ाई लड़ी गयी। जिससे सम्राट् हेराक्लियसको सीरिया छोड़ना पड़ा। इसी बीच ईराकमें ईरानियोंके विरुद्ध भी हो रहा था। ६३७ ई०को कदीसियाकी लड़ाईमें हार हो जानेसे उन्हें भी अपने साम्राज्यका पश्चिम अंश छोड़ना और खास ईरानमें ही रहना पड़ा। मुसलमान मदाइनके प्रभु बन बैठे और बिलकुल पिछले भागों ही यूफ्रेटिस और टिगरिस दोनों नदियों-के देशको उन्होंने जीत लिया। ६३८ ई०को मेसोपोटे-मियामें सीरिया और ईराककी फौजोंका सामना पड़ा था। थोड़े ही समयमें उन्होंने आर्योंसे प्राचीन सेमितिक देश पैलेस्टाइन, सीरिया, मेसोपोटेमिया, असीरिया और बाबिलोनिया छीन लिया था। इसके बाद ६४० ई०में मिस्र भी जीता गया। गस्सन और कोराकी रियासतें अरबोंके अड्डे बनीं, नये साम्राज्यके केन्द्र कूफा और बसरामें थे। फिर भी कुछ दिनों मदीना ही इस्लाम धर्मकी राजधानी रहा। जीतके पीछे पहली शताब्दीमें कितने ही ईसाई मुसलमान हो गये। परन्तु उन्होंने ऐसा मुसलमान नागरिकोंके अधिकार पानेको ही किया था, वह जबर्दस्तीसे मुसलमान नहीं बनाये गये। ६४१ ई०को नेहावन्दमें जो लड़ाई हुई, उससे ईरान दबा था। अन्तको ससानीद साम्राज्यका प्रत्येक प्रान्त मुसलमानोंके हाथ लगा और नौजवान राजा ३य यजदगर्दको अपने देशके कोनेमें हट कर बुरी तरह मरना पड़ा। परन्तु ईरानी अपने पवित्र अधि-कारों, राष्ट्रीयता और धर्मके बचावको अरबोंसे लड़ते आते थे।

२ उमरका शासन—६३४ ई०की १२वीं अगस्तको अबू-बक्रके मरने पर उमरको खिलाफत मिली। इन्हींके १० वर्षके राजत्वमें खास कर बड़ी बड़ी जीतें हुई थीं। यह कभी मैदानमें नहीं गये, सिवा ६३८ ई०को सीरिया घूमने पहुंचनेके मदीनामें ही बने रहे। उमर बड़े बुद्धिमान् थे। अपने राज्यमें अमन चैन कायम करनेको इन्होंने मुसलमानी जीत और आगे न बढ़ायी। उन्होंने जो वाक्य कह कर राज्यभार ग्रहण किया था, कभी न भूलेगा—ईश्वर साक्षी है; आप लोगोंमें जो सबसे कम-जोर होगा, जब तक मैं उसको उसके हक न दिला लूंगा, मेरी निगाहमें सबसे ताकत पर रहेगा। परन्तु जो सबसे मजबूत है, जब तक कानूनको नहीं मानता, सबसे कमजोर समझा जावेगा। मदीनाकी मसजिदमें किसी फारसी मजदूरने उमरको छुरी भोंक दी और ६४४ ई०के नवम्बर महीनेमें मर गये।

३ उसमानका शासन—अपनी मृत्युसे पहले उमरने निम्नलिखित ६ मोहाजिरों (परदेशियों) की उन्हींमें-से किसीको खलीफा नामजद करनेको कहा था—उसमान, अली, जुबैर, तालह, सैयद और अबदुर-रहमान। अबदुर-रहमानने निर्वाचनमें खड़े होनेसे इनकार करके उसमानको खलीफा बनानेके लिये अपना मत दिया था। इन्हींको खिलाफत मिल गयी। परन्तु यह बहुत कमजोर बादशाह थे, इसलाम सरकार बिलकुल कुरेश उमाइयोंके हाथ जा पड़ी थी। वह अपने आप ईराक प्रान्तको कुरेशोंकी फुलवारी बताने लगे।

अली, जुबैर और तालहने विरोध किया था। उनके दलमें अच्छे अच्छे लोग थे। उन्होंने कहा कि कुरेशोंने इस्लामका कोई काम नहीं किया, वह कैसे अन्दोरको आकर अपना प्रभुत्व जमा सकते हैं। प्रान्तोंमें सब जगह लोग खलीफा और उनके सूबेदारोंके विरोधी बन गये, केवल सीरियामें उसमानके भतीजे मोआवियाने अपने सुप्रबन्धसे शान्ति भङ्ग होने न दी। ईराक और मिस्रमें बड़े जोरकी हलचल थी। इसका मुख्य उद्देश्य उसमानको राज्यच्युत करके अलीको सिंहासन पर बैठाना था, जिन्होंने अपने आप काम किया और जो मुहम्मदके निकटस्थ सम्बन्धीय थे; कुछ उत्साही लोग उन्हें एक तरहका मसीहा भी मानते थे। विद्रोहियोंने बलपूर्वक अपना काम निकालना चाहा। वह झुण्डके झुण्ड मदीना पहुंचे और उसमानसे कई रियायतें जबरन् मांगने लगे। यद्यपि खलीफाकी फौज सिन्ध और ओक्ससे अटलान्टिक तक मारकाट मचा रही थी, मदीनामें उसकी बहुत कम थी। इन्होंने बलवाइयोंको रियायतोंसे खुश कर दिया; परन्तु जैसे

जो वह वापस चले गये, काम फिर पुराने ढंग पर ही होने लगा। इससे शासन बिगड़ते ही रहे। ६५६ ई०को दोबारा बलवाइयोंके सरदार मिसर और ईराक से बहुत ज्यादा शिकायतें लेकर मदीना पहुंचे। खलीफाने फिर झूठे वादे करके उन्हें टालना चाहा था परन्तु बलवाइयोंने इन्हें इनके घरमें ही घेरके पकड़ लिया और राज्य छोड़ देनेको कहा। इनके राज्य छोड़ने पर राजी न होनेसे उन्होंने ८० वर्षकी अवस्थामें इनको वध किया था।

४ अलीका शासन—अधिकांश विद्रोहियों ने अलीको खलीफा बना दिया। तालह और जुबैरको भी इनका सम्मान करना पड़ा था। परन्तु यह दोनों वफादारकी मा ऐशाके साथ इराकको भाग निकले और बसरामें जाकर बलवेका झण्डा खड़ा किया। परन्तु ६५६ ई०के नवम्बर मासको बसरामें जो लड़ाई हुई, तालह और जुबैर काम आये और ऐशा पकड़ ली गयीं। फिर भी अली शान्ति स्थापन न कर सके। मोआवियाने दमस्क की मसजिदमें उसमानके लहुलुहान कपड़ेको दिखाया और अपने विरोधी को बदला लेने पर उसकाया था। अन्तको अली मार डाले गये और इससे मुसलमान जगत्में उनका बड़ा नाम हुआ।

२—उमैयद वंश।

मदीना जीतनेसे मुहम्मदके दुश्मनोंको भी उन्हें 'ईश्वरदूत' मानना पड़ा था। मुहम्मदने देखा कि मदीनाके लोगोंकी बनिस्बत उनके दुश्मनोंमें ज्यादा काबिल आदमी थे। इसीसे मक्के और यमनकी सूबेदारी उमैयदों या मखजूमी और दूसरे कुरैशियों को सौंपी गयी। अबूबक्रने भी मुहम्मदकी ही चाल रखी। मुहम्मदके मरने पर अरबोंने जो हमला किया और मुसलमान जो ईराक और सीरिया पर चढ़े, सेनापति उमैयद आदि ही थे। उमर इस रस्मसे अलग न हुए। उन्होंने ही अबू सुफियान्के लड़के यजीद और यजीदके मरने पर उनके भाई मुआवियाको सीरिया का सूबेदार बनाया और मिसर प्रान्त अम्र इब्न अल आसके नीचे लगाया था। उमैयदोंके राज्यशासन का वर्णन बहुत कठिन है।

१ मोआवियाका शासन—मुहम्मदके मक्का फतह करने पर मक्काके सरदार अबू सुफियान्के लड़के मोआवियाने अपने बाप और भाई यजीदके साथ इसलाम धर्म ग्रहण किया और वह मुहम्मदका एक मन्त्री चुना गया था। जब अबूबक्रने सीरिया जीतनेको फौज भेजी, अबू सुफियान्के बड़े लड़के यजीद एक सूबेदार और मोआविया उनके नायब थे। ६३८ई०को उमरने उन्हें दमास्कस और पैलेस्टाइनका गवर्नर बनाया और उसमानने इस अधिकारमें सीरियाका दक्षिण अंचल और मेसोपोटामिया भी मिलाया था। कोन्स्टैनटाइन सम्राट्से इन्होंने स्थल और जल दोनों जगह युद्ध किया। ६५५ ई०को लिसियाकी अन्धाधुन्ध लड़ाईमें यूनान-सम्राट् २य कौनस्टान्सका जहाजी बेड़ा पूरे तौर पर हारा था। किन्तु अलीसे झगड़ा होने पर उत्तरमें इनकी तरक्की रुक गयी।

मोआविया एक महान शासक थे और उमय्य साम्राज्यमें सीरियाका प्रबन्ध अच्छेसे अच्छा था। इनको सिरीय इतना चाहते और मानते थे, जब उसमानके खूनका बदला लेनेको कहा गया, वह एक स्वरसे बोल उठे हुक्म देना आपका और उसको मानना हमारा काम है। ६५७ ई०को यूफ्रेटिसके पास जो युद्ध हुआ, मोआविया कुरानकी दोहाई दे कर जीते थे। इस पर कई सरपंच मुकर्रर हुए। उन्होंने अलीसे राज्य छोड़ने और दूसरा उत्तराधिकारी निर्वाचन करनेको कहा था। अलीके इनकार करने पर मोआवियाने राज्यशासन अपने हाथमें ले लिया और मिसर पर आक्रमण किया। फिर अलीके उत्तराधिकारी अबूबक्र पुत्र मुहम्मद पर लोग बिगड़ खड़े हुए जो, उसमान वधके नेता थे। मुहम्मद खदेरे और भागते भागते पकड़े और किसी किसीके कथनानुसार एक गधेकी खालमें सीये जाकर जला दिये गये।

इसी बीच मोआवियाने यह देखा कि अली उन्हें कुचल डालनेकी चेष्टा करेंगे, यूनानियोंसे प्रति वर्ष बहुत रुपया देनेको वह सन्धि कर ली। इसमें यह शर्त थी कि यूनानी शान्तिभङ्ग न करेंगे और उनके अमीर बन्धक देंगे। पहले अली खारीजाइटोंसे लड़नेमें

लगे रहे, परन्तु सिफीनकी लड़ाईमें जीत मोआविया पर पड़नेको तैयार हुए। किन्तु उनकी फौजने वैसा करना न चाहा। अलीको ही एक खिरईत नामक आदमी इस बात पर बिगड़ खड़े हुए कि उन्होंने मध्यस्थोंका फैसला न माना था और कितने ही लोगोंको कर आदि न देनेको उसकाने लगे। अलीने बड़ी मुश्किलमें उन्हें दबाया था। परन्तु मोआवियासे लड़ने उनके साई आखिर तक न गये। मोआवियाने अपनी तरफसे अलीके राज्यमें लगातार हमले किये और अपने गुमाश्तोंके जरिये बसरामें खौफनाक बलवा खड़ा करा दिया। फिर मदीना और मक्के पर चढ़ाई होनेसे लोग मोआवियाको खलीफा मानने पर मजबूर किये गये। ६६१ ई०को अलीके मार डाले जाने पीछे उनके लड़के हसन खिलाफतके लिये चुने गये थे, परन्तु मोआवियाके साथ लड़ाई होनेके भयसे वह सिकुड़ रहे। मोआवियाने बसरा लूट मार सरकारी खजाना हिफाजतके साथ मक्के भेज दिया था। जब इनके वंशज गद्दी पर बैठे और यह घर्षे विरक्त साधु बन गये, हसनने कूफाके खजानेका माल, जिसमें ५० लाख अशर्फियां थीं, और ईरानी सूबे दराबकी मालगुजारी अपनी हुकूमतके बदले मांगी थी। जब यह बात चीत खुली, हसनके खीमेमें बलवा फूट पड़ा। हसन अपने आप जख्मी हुए और मदीनेको पीछे हट गये, जहां वह आठ-नौ वर्ष पीछे चल बसे। यह प्रवाद कि मोआवियाने उन्हें जहर दिलाया था, बेबुनियाद है।

६६१ ई०को ग्रीष्म ऋतुमें मोआविया कूफामें दाखिल हुए और अनुयायियोंसे सम्राट्‌जैसे स्वीकार किये गये। इस वर्षको एकताका साल कहते हैं।

मोआवियाके एक कट्टर दुश्मन जियाद बचे रहे। १४ वर्षकी अवस्थामें उन्हें बसराकी फौजका माली काम सौंपा गया था। वह अलीके एक वफादार नौकर रहे और बसरामें मोआवियाकी तरफसे जो बलवा खड़ा हुआ था, उन्होंने दबा दिया। फिर वह फारस और किरमान पहुंचे, जहां उन्होंने शान्तिरक्षा की और लोगोंको अलीके पक्षमें बना रखा। अलीके मरने पर जियाद इस्तखारमें किला बांध बैठ रहे और आत्मसमर्पण करनेको राजी न हुए।

जैसे ही मोआवियाका हाथ खाली हुआ, उन्होंने यूनाके विरुद्ध अपनी सैन्य चालना की। इराकके अधीनस्थ होते ही उन्होंने मौजूदा तुलहमासेन मान अलानों और यूनानीयों पर अपनी फौज चढ़ायी थी। उस समयसे कोई ऐसा वर्ष नहीं आया, जिसमें जङ्ग न हुए हों। ६६८ और ६७४ ई०को मोआवियाने कुस्तुनतुनिया जीतनेकी कोशिश की। उनके लड़ाकी बेड़ेने सारजिकस अधिकार किया था। अफरीकामें भी मुसलमान राज्य बढ़ानेका काम जोरसे चला। ६७० ई०को इन्होंने कैरवानकी नींव डाली जहां आज भी उनके नामकी बड़ी मसजिद खड़ी है।

आखीरको कूफाके हाकिमने जियादका नटखटपन बिगाड डाला, परन्तु मोआवियाने उन्हें अबू सुफियान्‌का पुत्र और अपना भाई जैसा मान दूसरे वर्ष बसरा और उसमें लगनेवाले पूर्व प्रान्तोंका अधिकारी बनाया था। जियादने शीघ्र ही वहां फिर शान्ति प्रतिष्ठा की। ६६२ ई०को खरिजाइतोंके बलवेमें उनके सरदार मारे गये। परन्तु शीया लोग नाखुश थे। जियादने, अम्रको अपना सहकारी बनाया था, जिन पर शुक्रवारको बड़ी मसजिदमें नमाज पढ़नेके समय पत्थर फेंके गये। इस पर जियादने अपने आप जा शीयाओंके नेताओंको गिरफ्तार किया और १४ बलवाइयोंको जिनमें कई सम्भ्रान्त व्यक्ति थे, दामासकस पकड़के भेज दिया। उनमें सात जिन्होंने वश्यता स्वीकार न की, मार डाले गये। शीयाओंने उनको शहीद जैसा तसव्वर किया और मोआविया पर बहुत बड़ा पाप करनेका इलजाम लगाया। फिर पूर्वको साम्राज्य फैलानेका काम हाथमें लिया गया। इसके लिये इसको सबसे बड़ी फौज देनी पड़ी थी। जियादकी खुरासानको भेजी हुई पहली फौजने पुनर्वार सर्व, हिरात और बलखको अधिकार किया, तोखारिस्तान जीत लिया और ओक्सस तक कदम बढ़ा दिया। ६७३ ई०को जियादके लड़के अबदुल्लाने उस नदी पार करके बोखारा अधिकार किया और लूटका माल लाद फांद जो ट्रान्स-ओक्सियानाके आवारा तुर्कोंसे मिला था, वह वापस आये। अबदुल्ला अपने साथ बसराको २०० तुर्की तीरन्दाज

आये थे। खलीफा उसमानके लड़केने जिन्हें मोआवियाने खुरासानका हाकिम नियुक्त किया था, ६७४ ई०को समरकन्दके ऊपर चढ़ाई की। दूसरे सेनापति सिन्ध तक घुस गये और काबुल, सीस्तान, मकरान और कन्धारको उन्होंने जीत लिया। ६७२-६७३ ई० को जियादके मरने पर ऐसा अमन चैन बढ़ा, किसीको अपनी जान या मालका खौफ न रहा और अकेली औरत भी अपने घरमें खुले किवाड़ों महफूज थी।

मोआविया एक आदर्श अरब सैयद था। निम्न लिखित प्रवादसे उसकी बुद्धिमत्ताका पूर्ण परिचय मिलता है—मोआवियाका एक प्रान्त अबदुल्ला बी० जुबैरके मुल्कसे मिला था। उन्होंने एक सख्त चिट्ठीमें मोआवियाके गुलामोंकी यह शिकायत की कि वह उनके राज्यमें अनधिकार प्रवेश करते थे। मोआवियाने इसके जवाबमें अपने बेटे यजीदकी यह बात न मान कि उन दिक्कतोंके लिये जुबैरको कड़ी सजा मिलनी चाहिये। एक खुशामदी चिट्ठी लिखी, जिसमें अनधिकार प्रवेश पर खेद प्रकट किया और गुलामों और राज्य दोनोंको जुबैरके लिये छोड़ दिया। इस पर जुबैरने राजभक्तिका आग्रह दिखाया था। इससे यजीदको शिक्षाके लिये भी एक नीति निकल आया।

मोआविया पर अपने कई दुश्मनोंको जहर देनेका इलजाम लगाया जाता है। परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। ६८० ई०को इनका मृत्यु हुआ। इनके अन्तिम शब्द यह थे—तुम परमेश्वरसे डरो, जो बड़ा और शक्तिशाली है, क्योंकि परमेश्वर जिसकी प्रशंसा सबको करनी चाहिये, उससे डरनेवालेको बचाता है, जो परमेश्वरसे नहीं डरता, कैसे बच सकता है। ऐसी स्थितिमें यह बात नहीं मानी जा सकती कि वह शराबखोर, ऐयाश और मजहबसे लापरवाह थे। उनके समय मदीनाको अरबमकोंके खिलाफ दामासकस और सीरियामें पूरा अमन न रहा।

२ यजीदका शासन—मोआवियाके मरते ही विरोधका सूत्रपात हुआ। यजीद गद्दी बैठे थे। इन्होंने सबको राजभक्तिकी शपथ लेनेको लिखा। अलीके बंशजोंने हुसैनको यह कह कर कूफा बुलाया कि उन्हें ईराकका सूबेदार बनाया जावेगा। अली इस पर तैयार हो गये। यजीदने मशहूर जियादके बेटे ओबैदुल्लाको कूफामें शान्तिस्थापन करने भेजा था। हुसैन मक्कासे अपने खानदानके साथ कूफाको रवाना हुए, परन्तु जब वह यूफ्रेटिसके पश्चिम करबलामें पहुंचे, उमरकी फौज देख कर छक्के छूट गये। हुसैन इस उम्मेद पर लड़ने लगे कि कूफासे उन्हें मदद मिलेगी और ६८० ई० १० अक्तूबरको मय अपने सभी साथियोंके खेत रहे। परन्तु कूफामें हुसैनके तरफदारोंने इसे एक आफत समझा और उमर, ओबैदुल्ला और यजीदको हत्यारा विघोषित किया। शीया आज भी उन्हें बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। मुहर्रमका १०वां शीयाओंमें दिन 'कत्लकी रात' कहलाता है। रातको जगह जगह जहां ताजिये रखे जाते, लोग मरसिये पढ़ते और रो रो देते हैं। करबला, जहां हुसैनकी कब्र है, शीयाओंका सबसे पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है। उबैदुल्लाने हुसैनका सर उनके बालबच्चोंके साथ दामासकस पहुंचाया था। यजीद इस पर बहुत रंजीदा हुए और कैदियोंको सही सलामत मदीना भेजा। लोग शीयाओंके मतवैको बुरा बतलाते थे। जुबैरने हुसैनके मरने पर अपनेको ईश्वरीय बधका एक शरणागत व्यक्ति ऐसा परिचित किया और चुपके चुपके खलीफा भी कह दिया। मदीनाकी मसजिदमें लोगोंने यजीदसे लड़नेकी प्रतिज्ञा की थी। यजीदने इसके खिलाफ अपनी फौज भेजी। ६८३ ई०के अगस्त महीने सिपाहियोंने आकर मदीना नगरको घेर डाला और बहुत कहने सुनने पर भी जब नगर न हुआ विरोधियोंको छल बलसे नगर दखल किया और तीन दिन तक लूट मार होती रही, नागरिकोंको बाध्य हो यजीदकी वश्यता माननी पड़ी। सम्भवतः ६८३ ई० १२ नवम्बरको यजीद मरे थे। फिर जुबैरने खुलकर अपनेको खलीफा बतलाया और लोगोंको राजभक्तिकी शपथ उठानेको बुलाया। जब शीघ्र ही अरब, मिसर और ईराकमें खलीफा घोषित हुए, और मदीनाको वापस हुए। उमैयद निकाल बाहर किये गये।

३ द्वितीय मोआविया—ठीक नहीं, इन्होंने कितने दिन राजत्व किया; परन्तु थोड़े ही दिनोंमें रोगसे ग्रसित हो प्राणत्याग दिया। ६८४ ई०को मराज राहतमें दामास्कसके पास जो घोर युद्ध हुआ, दह्हाक और जुफेरको एक बड़ी सेना रखते भी हारना पड़ा और छन्दोंमें इसका बड़ा बखान हुआ।

४ प्रथम मरवांका शासन—इन्होंने यजीदकी विधवा-पत्नीका पाणिग्रहण करके अपनी परिस्थिति सुधारी और अपने बेटे अबदुलमलिकके लिये खिलाफतकी राह निकाली थी। मराज-राहतकी लड़ाईके पीछे इन्होंने मिसर जीत अपने दूसरे लड़के अबदुल अजीजको उसका सुबेदार बनाया था। परन्तु हजाजको भेजी हुई फौजके टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये गये। उबैयदुल्लाकी भेजी एक फौजने जिसके सेनापति इब्राहीम थे, सिरीयोंको मोसलके पास हरा दिया। फिर जुबैयरने अपने भाई मुसअबको बसराका आला हाकिम बनाया और कूफा पर उसको चढ़नेका हुक्म लगाया। मुखतार जिनका कूफामें बड़ा जोर था, पराजित हुए।

५ अबदुल मलिकका शासन—६८५ ई० ७ मईको मेरवान मर गये। प्रवादानुसार उनकी स्त्रीने ही उनका गला घोंट दिया, क्योंकि उन्होंने उसको और उसके लड़के खलीदको मारापीटा था। अबदुल मलिक आसानीसे तख्त पर बैठ गये, परन्तु कुछ दिन उत्तर सीरियाके झगड़ोंमें फंसे रहे। लेबाननमें जराजिम घुस पड़े। इन्हें पहले उनसे और फिर कुस्तुनतुनियाके बादशाहसे एक नामुवाफिक सुलह करनी पड़ी। ६८८ ई०को जब इन्होंने मुसअब पर चढ़नेके लिये बोटनान हबीबमें डेरा डाला, इनके भतीजे इब्न अशदाकने खलीफा बनना चाहा था। इन्हें पीछे लौट अपनी ही राजधानी घेरनी पड़ी। अशदाक आत्मसमर्पण करने पर बाध्य हुए। इन्होंने उन्हें अपने महलमें बुलवा अपने ही हाथों मार डाला था। फिर इन्होंने ईराककी चढ़ाई पर ध्यान दिया। बाजोमेरामें मुसअबकी छावनी लगी थी। परन्तु इनका पहला काम जुफेर और मुखतारके सहायकोंको नीचा देखाना था। इसी बीच मसअबको बसराका खतरनाक बलवा दबाना पड़ा। ६९१ ई०के मध्य भागको अबदुल मलिककी छावनी दैर-अल-जथलीकमें लगी थी। मसअब अपने प्रधान-सेनापति इब्राहीमके साथ मारे गये। इससे खलीफाके लिये ईराककी राह खुली। इन्होंने हज्जाजको २००० सिरीयोंके साथ मक्का जुबैयरसे लड़ने पहुंचाया और वादी-अल कुराके पास ५००० आदमियोंके साथ पड़े तारीकको संवाद भेजा कि वह मदीना अधिकार करके हज्जाजसे जा मिलते। ६९२ ई० २५ मार्चको मक्का घिरा था। छ महीने तक घेरा पड़ा रहा। आखीरको हज्जाजने जुबैयरका सरकाट, दामास्कस भेज दिया। इब्न जुबैयरके साथ ही वह प्रभाव भी मिट गया, जो मुहम्मदने इसलाम पर डाल रखा था। मक्काके घिरते समय काबामें आग लगने पीछे इब्न जुबैयरने दरगाहको फिर बना कर बढ़ा दिया। परन्तु हज्जाजने नया हिस्सा तोड़ काबेको पहले ही जैसा रख छोड़ा। १० साल तक सीरोया और मेसोपोटामियाके रेगस्तानमें उसलों पर हमले होते रहे और उनकी भीषणता पर कितने ही छन्द प्रबन्ध लिखे गये।

४० दिन ठहरके जब अबदुल मलिक ईराकके सीरिया लौटे, कूफा और बसरामें अपने दो प्रतिनिधि लेके उमैयद शाहजादे छोड़ चले। मोहल्लब खलीफाके कहने पर खरीजीतोंसे लड़ते थे, परन्तु उक्त दोनों शहजादोंके उनकी मदद न कर सकने पर खरीजीता एकसे ज्यादा लड़ाई जीत गये। मुहल्लबकी फौज उन्हें छोड़ अपने अपने घर चली गयी और कितना ही समझाने बुझाने पर भी न लौटी। फिर हजाजने कूफा जा सैन्य संग्रह किया और सहायता पा कर मोहल्लबने खरीजीतोंको दबा दिया। वह ६९७ ई०के आरम्भमें हज्जाजके पास बसरा वापस पहुंचे। उन्होंने इन्हें खुरासानका अधिकारी बना ट्रान्स-आकसियाना पर कई चढ़ाइयां की थीं। ६९५ और ६९६ ई०को अपने आप हज्जाजको शबीबसे लड़ना और उनको दबाना पड़ा। उन्होंने कूफा जीत अपनेको नवाब बतलाया था। फिर सीजस्तानका सूबेदार अशअथ बलवाई हो गया और सुस्तरके पास हज्जाजको मार भगाया और बसरामें प्रवेश किया। इसके बाद वह कूफा पर चढ़ा था,

जिसको उसने अधिकार कर लिया। हज्जाजने कूफासे १८ मील पश्चिम देरकुरामें डेरा डाला जहां खलीफाके भाई मुहम्मद और उसके लडके अबदुल्ला उसके लिये नई फौज ले पहुंचे। ७०२ ई०के जुलाई मास फैसलेकी एक लडाई हुई। हज्जाज जीते और इब्न अशअद बसराको भागे थे। वहां उन्होंने नयी फौज इकट्ठा की, परन्तु मासकिनकी खूंखार जङ्गमें फिर हार होनेसे वह अहवाजमें जा छिपे, जहांसे हज्जाजकी फौजने उन्हें जल्द निकाल बाहर किया। फिर वनवाई सीजीस्तानको हटा और फिर काबुल अमीरके पास जाकर रहा था। उसके साथी खुरासान भाग गये, जहां यजीद सूबेदारने उनके हथियार छीन लिये। काबुलके अमीरने धोकेबाजको छलसे मार डाला था। उसका सर पहले हज्जाजके पास और वहांसे दामस्कस भेजा गया। यह ७०३ या ७०४ ई०की घटना है। फिर यजीदसे खुरासानका अधिकार छीन लिया गया। हज्जाजने उन पर बलवाइयोंकी तरफदारी करनेका इल्जाम लगाया था हज्जाजने पहले अपने भाई मुफहलको और फिर कुतैबको खुरासानका सूबेदार बनाया और चीन तक इसलाम धर्म फैलानेको आदेश दिया। ७०२ ई०को हज्जाजने बसरा और कूफाके बीच नया वासस्थान निर्माण किया, जहां उनके विरोध सम्बन्धी दोनों राजधानियोंके बिगडे नागरिकोंसे लडने भिडने का डर न था और हमेशा किसी भी बलवेको जो उठ खडा हो, दबानेका मौका था। अबदुल मलिकने अपने राज्यारम्भ कालकी बैतुलमुकद्दसमें उमरकी बनायी मसजिदमें एक शानदार गुम्बज चढाया था, जो ६९१ ई०को पूरा हुआ। ६९२ ई०को सेबास्तके पास मेसोपोटामिया और आरमेनियाके सेरवानने जो खलीफाका भाई था २य जुस्तनीयकी यूनानी फौजको शिकस्त दी थी। ६९६ ई०को अबदुल मलिकने एक बहुत बडी फौज अफरीका भेजी। उसने कैरवान् अधिकार किया, कारथेज तक समुद्रतटको उजाडा और यूनानियोंका सारी किलेबन्दियोंसे निकाल भगाया था। फिर फौज बरबरों पर पटी, जिन्होंने उसे ऐसा मारा कि बारकाको पीछे लौटना पड़ा। ५ वर्ष पीछे फिर इसी फौजने बरबरोंको पराजय करके अपने अधीनस्थ किया। अबदुल मलिकके मरने पीछे तक हसन कैरवांके शासक बने रहे। अबदुल मलिकने मुसलमानी सिक्का चलाया था। ६९४ ई०को हज्जाजने कूफामें चांदीके दिरम ढाले। अरबी राजभाषा बनी थी। आखिरकार दामस्कससे प्रान्तीय राजधानियों तक बाकायदे सरकारी डाक भेजनेका इन्तजाम किया गया। अबदुल मलिक अपनी कन्याका विवाह खलीदके साथ करके उन्हें और अन्य अशदकके लडकोंको राजी करनेमें कामयाब हुए। उन्होंने अपने आप यजीदकी लडकीसे शादी कर ली थी। अबदुल मलिकने अपने बेटोंकी तालीम पर बडी निगरानी रखी। उनके भाई अबदुल अजीज जो मिसरके शासक थे, ७०३ या ७०४ ई०का मर गये। उन्होंने पहले अपने लडके वलीद और उसके पीछे दूसरे लडके सुलेमानको अपना उत्तराधिकारी चुना था। ७०५ ई० ८ अकतूबरको वह अपने आप ६० सालकी उम्रमें चल बसे। उनके दरबारमें शायरीका हुजूम रहता था।

६ प्रथम वलीदका शासन—यह इसलामके इतिहासका एक बडा शानदार वक्त था। एशियामाइनर और आरमेनियामें खलीफाके भाई मसलम यूनानियोंसे कई जगह जीत गये, तियाना फतेह हुआ और कुसतुनतुनिया पर चढनेकी बडी तैयारी रही। अफरीकामें भी फतहयाबी हुई थी। ७१० ई०को तनजियरके शासक तारीकने स्पेन पर चढाई की और रोडेरिकको शिकस्त दी। कितने ही घोड़े छूट गये, परन्तु राजाका पता न लगा। फिर तारीक कई जगह विजय करते हुए आगे बढे, परन्तु अपनी हालत नाजुक देख मूसासे मदद मांगी थी। ७१२ ई० अपरैल महीनेको वह १८००० आदमियोंके साथ जहाज पर बैठ स्पेनमें आ उतरे और टेमसेससे थोडी दूर पर जो लडाई हुई, उसमें राजा हारे और मारे गये। मूसाने फिर तोलेदो आ जीता और धूमधामसे राजधानीमें प्रवेश किया। उन्होंने घोषणा की कि हम आयोलोअके एक मात्र राजा दामास्कसके खलीफा हैं। इसी वर्ष मूसाने मुसलमानी सिक्के भी ढाले, जिस पर लैटिन भाषाका

पहुँच था। फिर वलीदने उन्हें दामासकस वापस बुला लिया। वह अपने लड़के अबदुल अजीजको शासक बना लौट पड़े। इन्होंने रोडेरिक राजाकी बेवासे शादी करके अपनी शक्तिको सङ्गठन किया था। ७१४ ई०के अगस्त मास मूसाने स्पेन छोड़ा और दामासकस वलीदके मरनेसे कुछ ही पहले जा पहुँचे। लूटका बहुतसा माल ले जाते भी उनका समुचित पुरस्कार न मिला। उन पर गबनका इलजाम लगाया और १००००० अशर्फी जुर्माना न देने पर कैद किये जानेको धमकाया गया था। परन्तु उन्हें सुलेमान खलीफाके मित्र यजीदकी सिफारिश पर छुटकारा मिला। ७१६ ई०का मक्का जाते राहमें वह मर गये। उनके लड़के अबदुल अजीजका कोई २ साल सलतनत करनेके पीछे कत्ल हुआ।

पूर्वमें मुसलमानी फौजोंको अचम्भेकी कामयाबी हुई। थोड़े ही सालोंमें चीनकी सरहद तक कई मुल्क जीत लिये गये। इसी बीच मुहम्मद कासिम मकरान आक्रमण किया और देवलको लेकर सिन्धुके पार उतरे और हिन्दुस्थानी राजा दाहिरको एरा मुलतान पर चढ़ गये। वह मुलतान जीत लूटका कितना ही माल ले चलते बने।

वलीदने दामसके आधे गिरजा घरमें मुसलमानी मसजिद बनायी थी। इनके समयको मोरियामें बहुतसे आलीशान महल और देहातोंमें अमीरोंके रहनेको खूबसूरत इमारतें तैयार हुईं। इन्होंने मदीनाकी मसजिद भी बढायी थी। इसके लिये नबी और उनकी बीबीके कमरे गिराये गये। खेतीके नये तरीके निकले और जङ्गल आबाद हुए थे। सींचनेके लिये नहरें खोदी गयीं। रेगस्तानमें भी जानमालके जानेका खौफ न रहा।

७ सुलेमानका शासन—७१५ ई०के फरवरी महीने अपने भाईके मरनेसे यह आसानीके साथ गद्दी पर बैठ गये। सुलेमान हज्जाजसे नाराज थे। इन्होंने उनके रखे कितनों ही प्रान्तीय शासकोंको निकाल बाहर किया और हज्जाजके दुश्मन यजीद मुहल्लबको ईराकका सूबेदार बना दिया। फिर यजीद मर्वमें जा बसे और खुरासानकी सूबेदारी मिलने पर जोरजान और तबरिस्तान कई बार चढ़े, परन्तु कुछ भी कुछ कामयाब हुए। ७१५ ई०को सुलेमानने अरबने पर मसलमने एशिया माइनरको आक्रमण किया और उमर ओबेदान एक अच्छे जहाजी बेड़ेके साथ उनके पृष्ठपोषक बने। पहले साल चढ़ाई खाली गयी। अमोरियमका घेरा टूटा था, परन्तु परगामम और सरदीस अधिकृत हुआ। ७१६ ई० २५ अगस्तको कुस्तुन्तुनियाका अवरोध खुश्कीकी राह आरम्भ किया गया और २ सप्ताह पीछे समुद्रकी औरसे भी ऐसा ही देख पड़ा। एक साल तक घेरा रहा, परन्तु घिरने वालोंकी सर्दीसे तङ्ग आकर उठाना पड़ा। मसलम अपनी टूटी फूटी फौज किसी न किसी तरह वापस लाये और जहाजी बेड़ा भी तूफानमें लौटते वक्त तबाह हो गया। तोप्रसके युद्धमें चार्लस मारटेल भी विजयी हुए। मसलम वापस ही आ रहे थे, कि दावीकमें सुलेमान मर गये। इनका चालचलन वलीद जैसा पक्का और किफायती न था। परन्तु वह एक धर्मपरायण व्यक्ति रहे।

८ द्वितीय उमर—यह एक सीधे सादे और कम खर्च करनेवाले व्यक्ति थे। इन्होंने अपने रिश्तेदारोंसे भी किफायतका तकाजा किया, जिससे लोगोंमें नाराजगी और बेचैनी फैल गयी। लोग मुसलमान बनने पर बाध्य हुए। जुल्मकी शिकायत फौरन सुनी जाती थी। मुसलमानी इतिहासमें यह साधु राजा-जैसे प्रसिद्ध हैं। शमा अबदुल्ला नामक शासक पीरेनीज पर्वत पार करके नारबोन ले लिया था, परन्तु ७२० ई०के जुलाई मास वह तोलोसमें हारे और मारे गये।

९ द्वितीय यजीद—उमरने बहुत थोड़े दिनों राजत्व किया और ७२० ई० ९ फरवरीको उनका मृत्यु हुआ। बिना किसी झगड़े अबदुल मलिकके लड़के २रे यजीद तख्त पर बैठ गये। देशमें बलवा फूट पड़नेसे इन्हें अपने मशहूर भाई मसलमसे उसको दबानेके लिये कहना पड़ा। बलबेके अक्रमें लड़ाई हुई, जिसमें बलवाई यजीदको हार होनेसे भारत तक भागते भागते आना पड़ा। मसलमको ईरानी और

खुरासानकी सूबेदारी मिली थी। परन्तु दमिश्कसे मालगुजारी न भेजनेके इलजाम पर उनकी जगह पर उमर होबैरा मुकर्रर किये गये। उन्होंने कितने ही खुरासानियोंसे बहुतसा रुपया रिशवत लिया था। इसी नाराजगीसे उमैयदों की जड़ हिल गयी।

अफ्रीकामें भी इसी कारण बड़ा उपद्रव हुआ। बरबरोंने सूबेदारको मार भूतपूर्व सूबेदार मुहम्मद यजीदको उनके आसन पर बैठाया था। खलीफाने पहले इनसे मान लिया, परन्तु पीछेसे महम्मदको निकाल बिशरको सूबेदार बना दिया। उन्होंने सिसिलीके विरुद्ध एक अभियान भेजा था।

२य यजीदने कविता और गीतविद्याका बड़ा सम्मान किया। ७२४ ई०को २६ जनवरीको उनका मृत्यु हुआ। उन्होंने अपना उत्तराधिकारी पहले हिशम और उनके पीछे अपने बेटे वलीदको नियत किया था।

१० हिशमका शासन—हिशम एक बुद्धिमान् और योग्य राजा थे। ईराकके सूबेदार खलीफा बनाये गये और १५ वर्ष तक उन्होंने साम्राज्यके अर्धपूर्व प्रान्तका शासन किया। किन्तु यह बड़ी तड़क भड़कसे रहते थे। अन्तको शिकायत होने पर खलीद निकाले गये और यूसफ सूबेदार बने। फिर खलीद दमिश्कमें जाकर बसे और यूनानियोंसे खूब लड़े भिड़े। ७४० ई०को ६ जनवरीको ईराकमें बलवा फूटा। यूसफ मार डाले गये। उनका सर दमिश्क और वहांसे मदीना भेजा था। खुरासानमें भी बड़ा उपद्रव हुआ। परन्तु ७३६ ई०को खलीदके भाई असदने खारीतसे हरा तुर्कों पर बड़ा विजय पाया था। हिशमसे राज्यशासनकालको असदने खारीत और तुर्कोंके विरुद्ध एक असफल अभियान किया। भारतमें कितने ही प्रान्त फिर स्वाधीन हो गये। इससे भारतका पूर्वीय भाग त्यागी कर देना पड़ा। ७३० ई०को मुसलमान बुरी तरह हारे, परन्तु आरमेनिया आजर-बैजनके सूबेदारोंने खजरी को पराभूत करके शान्ति स्थापित की। हिशमके सम्पूर्ण शासनकाल बैजेण्टाइनो युद्ध होता रहा। ७३६ ई० तक हिशमके लड़के मोआविया सेनापति थे, जो एशियामाइनरमें अपने घोड़े परसे एकाएक गिर कर मर गये। उनके मरने पर खलीफाके दूसरे लड़के सुलेमान फोजके अफसर बने। परन्तु पूरे वीर बहादुर थे, जिन्होंने ७३२ ई०को सम्राट् कानस्टेण्टेनीको गिरफ्तार किया। किन्तु यूनानियोंने मराश और मलाशियाको फिरसे जीत लिया।

हिशम राज्य शासनके दूसरे वर्ष स्पेनके सूबेदार अनबस पीरेनीज पर्वत पार करके लड़ी चढ़ाई की थी। ७२५ ई०को उनके मर जानेसे मामला ठण्डा पड़ गया। ७३२ ई०को चार्ल्स मार्टेलने मुसलमानोंको रोका था। इब्राहीम मार डाले गये और मुसलमान पीछेको जल्द जल्द लौट पड़े। ७३८ ई०को स्पेनके नये सूबेदार उकबा फिर फ्रांसमें दाखिल हुए और लियन्स तक बढ़े, परन्तु फ्रांकों द्वारा दोबारा नारबोन तक खदेर दिये गये।

अफरीकामें बलवा फूटनेसे ७४० ई०को हिशमने कोलथूम और बलजके अधीन ३०००० फौज भेजी थी। परन्तु बलवाइयोंने उसे परास्त किया और कोलथूमको मार डाला। बलज बाकी सेना लेकर छूटा बहु वे और वहांसे ७४१ ई०के अन्तको स्पेन गये जहां उन्होंने बरबरोंका भीषण विद्रोह दबाया था। ७४२ ई०को उनका मृत्यु हुआ। अफरीकाके बरबरोंने कैरवान लेनेकी कोशिश की थी, परन्तु इसजालाके सूबेदारने उनकी फौजको पूरी शिकस्त दी।

७४३ ई०के फरवरी मास २० वर्ष राजत्व करके हशम अन्त बसे। वह लोकप्रिय न थे। इनके समय मुसलमान राज्यका अध पतन आरम्भ हुआ।

११ द्वितीय वलीदका शासनकाल—द्वितीय वलीद खूबसूरत, ताकतवर और एक मशहूर शायर थे। परन्तु यजीदने साजिश करके दमिश्कमें अधिकार किया और २य वलीदके खिलाफ २००० आदमी भेज दिये जो किसी देहातमें रहते थे और जिनके पास दो सौसे ज्यादा लड़नेवाले सिपाही न थे। ७४४ ई०को १७ अपरैलको उनका वध हुआ। उनका सर दमिश्कमें बहु वाया और भालेकी नोक पर उसके दिखानेको बाजारमें निकाला गया।

खलीफाकी मौतकी खबर पा कर होमसके नागरिकोंने अबू मुहम्मदको अपना सेनापति बना दामासकस पर चढ़े थे। राजधानीसे १२ मील दूर सुलेमानने उन्हें परास्त किया। अबू मुहम्मद अपने कितने ही साथियोंके साथ गिरफ्तार हुए। पैलेस्टाइनके भी दो एक बलवे आसानीसे दबा दिये गये।

१२ द्वितीय यजीदका शासन—इन्होंने तख्त पर बैठते ही एक बढ़िया वक्तृता दी, परन्तु वलीदने सिपाहियोंकी जो तनखाह बढ़ायी थी, काट डाली। इसीसे लोगोंने उनका नाम 'नाकिस' रखा था। मनसूर नामक कलबाइत ईराकके सूबेदार बनाये गये और उन्होंने पहले गवर्नर यूसुफको पकड़ खदरामें कैद किया। सिन्धु और सीजस्तानको छोड़ कर दूसरे सुदूरवर्ती प्रान्तोंने खलीफाकी हुकूमत न मानी और अफशानमें अबदुर रहमान आजाद-जैसे हो गये। स्पेनमें सब अमीरोंने इस हुकूमतसे अपनी जान बचानी चाही थी। ७४४ ई०को २५ सितम्बरको २य यजीदका मृत्यु हुआ।

१३—२य यजीद अपने भाई इब्राहीमको उत्तराधिकारी बना गये थे। २ महीने सल्तनत करने पीछे वह २य मरवान द्वारा राज्य परित्याग करने पर वाध्य हुए।

१४—द्वितीय मरवान् एक शक्तिशाली पुरुष थे। अपने बेटे अबद मलिकको ४०००० आदमियोंके साथ सक्कामें छोड़ वह ८०००० आदमी लेकर मेसोपोटामियामें दाखिल हुए। १२०००० फौजके साथ सुलेमान हारे थे। फिर २य मरवान दामास्कस पर चढ़े और ७४४ ई०की ७ दिसम्बरको उसके अधीश्वर बन बैठे। परन्तु पैलेस्टाइनमें फिर बलवा फूट पड़ा और दामासकसको यजीदने जा घेरा। मरवानको ईराक पर चढ़ाई करनेका विचार छोड़ सीरियाका विद्रोह दबाना पड़ा। उन्होंने १०००० सिरीयोंको युद्ध सज्जासे सुसज्जित करके २०००० किन्नेसरिन और मेसोपोटेमियाके सिपाहियोंके साथ यजीदके अधीन ईराक भेजा था। परन्तु रुसाफा पहुंचने पर यजीदने उन्हें समझा बुझा अपनेको खलीफा स्वीकार कराया और अपनेको किन्नेसरिनका अधिकारी बनाया। फिर यजीदकी फौजमें कोई ७०००० सिरीय भरती हो गये। मरवानने अपनी प्रधान सेनाके साथ आगे बढ़ खोमाफर्में सुलेमानको पूरी शिकस्त दी थी। फिर होमसको उन्होंने ५ महीने तक घेर रखा। फतेह होने पर होमस, बालबक, दामासकस, जेरुसलम और दूसरे शहरोंको दीवारें गिरा दी गयी।

ईराकमें अबदुल्ला नामक एक साहसी पुरुषने अपनेको शाम्राज्यों और मुआवियोंके एक दलका सरदार बना कूफा ले लिया और हीराको कदम बढ़ा दिया था। किन्तु बलवाई हार गये और ७४४ ई०के अक्तूबर मास कूफाने आत्मसमर्पण किया। फिर अबदुल्लाने मेदिया (जब्बाल) पहुंच कर अपना दल जुटाया था, जिनकी मददसे वह एक बड़ी सल्तनतका हाकिम बन बैठा। अन्ततः खरीजीतोंकी मददसे शैबान कौमके सरदार कूफा पर चढ़ गये। इब्न उमर और इब्न सईद पूरे तौर पर हारे और ७४५ ई०के अगस्त महीने हीराको भी आत्मसमर्पण करना पड़ा।

जब मरवान होमसको घेरे थे, दहहाक मेसोपोटेमियाको लोट पड़े और मोसल दखल कर बैठे। फिर मरवानके बेटे अबदुल्लाको निसीबिसमें रहना दुश्वार हो गया। सुलेमान भी खवारिज पहुंचे थे, जहां उनके पास १२०००० आदमी रहे। अखीरको मरवान दुश्मन पर झपटे थे। ७४६ ई०के सितम्बर मास काफरतूबाकी घमासान लड़ाईमें खवारिज हार गये। इस युद्धके पीछे ही यजीदने अपनी सेना ईराकको सञ्चालित की थी। ७४७ ई०के मई या जून महीने उन्होंने खरीजाइतोंको परास्त करके कूफा अधिकार किया। इब्न होबैराने अखीरको मेसोपोटेमिया फौज भेजी थी। खरीजाइत उसको देख भाग खड़े हुए। सुलेमान और मन्सूरने भारतको पलायन किया था। परन्तु इसी बीच खुरासानमें एक ऐसा तूफान चल पड़ा, जिसमें किसीको चलने काम न किया। अन्तमें ७४९ ई० २८ नवम्बरको कूफाकी बड़ी मसजिदमें अबुल अब्बास खलीफा बनाये गये।

अब्बासी।

१ अबुल अब्बास ने अपनी घोषणामें प्रशंसा करते

भी कूफावासीका विश्वास न किया। उन्होंने अम्बरके पास हीरा और हाशीमिया नामक दो स्थान बनवाये थे। ७५४ ई० ५ जूनको अबुल अब्बासका मृत्यु हुआ। इनके दाहिने हाथ अबू जहम और सलाहकार भाई अबू जाफर थे।

२ मन्सूर—अबुल अब्बासके मरनेकी खबर सुन अब्दुल्ला एक बड़ी फौजके साथ हरन पहुंचे और खलीफा बन बैठे। किन्तु ७५४ ई० २८ नवम्बरको अबू मुसलिमने उन्हें शिकस्त दी और वह बसराको भाग गये। फिर उन्होंने मन्सूर खलीफाकी राजभक्ति स्वीकार की थी, मन्सूरने अबू मुसलिमको मदाइनमें धुपकेसे बुला मरवा डाला। इसी प्रकार अब्बासी घराने प्रतिष्ठाका सारे गये। उनको लोग साहब उद दौला कहा करते थे।

८०० ई० सालसे अफरीका कहने सुननेको अब्बासियोंके मातहत रही। इसी बीच स्पेनमें पायाल्य उमैयदोंकी अलग खिलाफत बन गयी। हिशाम खलीफाके पोते अब्दुर रहमान खलीफा हुए। ७५७ ई०को ७०००० फौजके साथ मुसलमानोंने धावा करके कानष्टेण्टीनोके हाथों गिराया हुआ मालाथिया का बनाया था। ७५८ ई०को कूफासे थोड़ी दूर खलीफाके रहनेकी जगह ६०० रावेंदी फकीर सम्मानप्रदर्शन करने गये थे, परन्तु झगड़ा हो जानेसे सबके सब कतल हुए।

मन्सूरको बड़ा डर यह था कि उमैयदोंके समय उन्होंने मुहम्मदकी अधीनता मानी थी। ७६२ ई०को मुहम्मदने मदीना छीन अपनेको खलीफा बनाया था। परन्तु कूफाके सूबेदारने युद्ध करके उन्हें मार डाला। उनका सर काट करके मन्सूरके पास भेजा गया। मुहम्मदने मरते वक्त नबीकी मशहूर तलवार एक सौदागरको दी थी, जो पीछेको हारून अल् रशीदको मिल गयी। इसी बीच इब्राहीम बसरा अह्वाज, फारस और वसीतके मालिक बन बैठे। लगातार ऐसी बातोंके खौफसे मन्सूरने ५० दिन तक कपड़े न बदले और न आराम ही किया। बाखमरामें कड़ी लड़ाई हुई। इब्राहीमका मस्तक काट करके मन्सूरको पहुंचाया गया। कूफामें अपना बचाव न देख मन्सूरने बगदादको अपनी राजधानी बनाया था। तीन वर्षमें ७६६ ई०को उसका निर्माणकार्य समाप्त हुआ।

मुहम्मदके एक लड़केने भारतको भाग किसी राजाका शरण लिया था। मन्सूरने पता लगा उन्हें मरवा डाला। ७७५ ई०को मक्काके हजको जाते राहमें मन्सूरका मृत्यु हुआ। उनका वयस ६५ वर्ष रहा और उन्होंने २१ वर्ष राजत्व किया था। मक्कामें मन्सूर दफनाये गये। वह बड़े उत्साही बलवान् हृदयके मनुष्य थे। उन्हें काबिल अफसर चुननेकी अच्छी सूझ थी। वह किफायती रहे और अपने लड़केको भरा खजाना छोड़नेकी उन्हें फिक्र थी।

३ मेहदीका शासन—मन्सूरके मरने पर मुहम्मद अल् मेहदी खलीफा बनाये गये। इसके दूसरे ही वर्ष कोष और मखशबमें मोकन्ना नामक एक खारिजीने बलवा किया था। कितनी ही बार जीतने पीछे वह समाम किलेमें घिरा और जहर खाकर मरा था। उसका सर काट कर मेहदीके पास भेजा गया। फिर मेहदी मक्काके हजको चले। उनके लिये ऊंटों पर लदकर बर्फ मक्का गया था। उन्होंने काबाको आकर फिर बनवाया और उसमें खूब बेशकीमत सामान लगवाया। मक्का मदीना पहुंच मेहदीने मसजिदकी इमारत बढ़ायी थी। उन्होंने हजकी राहमें कूप खुदवाये, सड़कें बनवायीं, सराये सुधरायीं और हाजियोंके सुभीतेके कई काम करवाये।

मन्सूरके शासन समय बैजन्तायनों पर बराबर हमले होते रहे और लाओडोसिया नगर अधिकार किया गया। परन्तु माघ बदशान पहुंच मन्सूर ४१ सालकी उम्रमें एकाएक चल बसे। कोई उनकी मृत्युका कारण शिकारकी दुर्घटना और कोई जहर दिया जाना बतलाता है।

मेहदीके शासनमें खूब बढ़ाओ रही। महत् साम्राज्य सङ्गठनका बड़ा उद्योग हुआ, कृषिकार्य, व्यापार, वाणिज्य तथा राजस्व बढ़ा और लोगोंका हाल अच्छा था। सुदूर पूर्वतक साम्राज्य फैल पड़ा। चीन सम्राट, तिब्बतके राजा और भारतीय नरेशोंने खलीफासे सुलहनामा किया था।

४ हादीका शासन—मेहदीके मरने पर मूसा अल्-हादीके नामसे खिलाफतके तख्त पर बैठ गये। हुसेन-अलीनामें बलवा खड़ा करके खलीफा बने थे। परन्तु फारसमें सुलेमानने युद्ध करके उन्हें विनाश किया। ७८६ ई०की १४ सितम्बरको हादी मांने अपने आप अधिकारप्राप्तिके लिये उन्हें जहर दे दिया था। तीन वर्ष पीछे वह भी मर गयीं।

५ हारुन् अल् रशीदका शासन—हारुन् पैखटके तख्त पर बैठे थे। उन्होंने अपने उस्ताद वफादार यहियाको अपना वज़ीर बनाया। यहियाने राज्यकी अच्छी उन्नति की थी। ७९२-९३ ई०को अली घरानेके एक आदमीने खिलाफत पानेका दावा किया। हारुंने फदलके अधीन ५०००० आदमी भेजे थे। फदलने उससे सुलह कर ली। बगदाद पहुंचने पर उसका अच्छा स्वागत हुआ, परन्तु कुछ महीनों बाद उस पर साजिशका इलजाम लगा और उसे कैदखानेमें भूखों मरना पड़ा। फिर हारुं अलीके दूसरे वंशधर काजिमको बगदाद पकड़ लाये, जिसने जगह दिये जानेसे अपने प्राण गंवाये। हादथका किला तैयार हो जाने पर खलीफाने फराज नामक तुर्कको तारसस शहर फिरसे बनानेका काम सौंपा था। ७९७ ई०में उन्होंने हमला करके इरीनको सुलह करने पर मजबूर किया। फिर दो सेनापतियोंने आरमेनियासे खजरोंको निकाल भगाया जिन्होंने १००००० मुसलमान और ईसाई पकड़ लिये थे।

दूसरे वर्ष हारुंने सब बरमेसाइडोंकी विनाश किया; सिर्फ यहयाके भाई मुहम्मद बचे जो ७९५ ई० तक खलीफाके दीवान् रहे। इसी वर्ष कुस्तुन्तुनियामें सम्राज्ञी इरीनको निकाल निकोफोरस बादशाह बने थे। उन्होंने हारुंको कर देनेसे इनकार किया। हारुंने अपनी फौजके साथ एशिया-माइनरमें दाखिल हो मारकाट शुरू की और कितने ही मकानोंमें आग लगा दी। निकोफोरसको डर कर सन्धि करनी पड़ी थी। ८०५ ई०को पहले पहल लेमसमें मुसलमान कैदी छूटे। किन्तु खुरासानमें गड़बड़ देख निकोफोरसने फिर सन्धि भङ्ग करके कितने ही लोगोंको कैद किया था। इस पर हारुं १३५००० लड़ाका फौज लेकर एशिया-माइनर पहुंचे। हेराक्लिया और दूसरी कितने ही जगहें दखल कर ली गयीं। इसीके साथ सेनापति होमैयदने साइप्रस जीता था। ८०८ ई०को फिर लेमसमें मुसलमान और यूनानी कैदी छोड़े गये। दूसरे वर्ष समरकन्दमें राफीने बलवा मचा अलीको हराया और उनका खजाना लुटाया था। खलीफाने यह खबर पा कि बलवा अलीके जुल्मसे हुआ था, हरसमाको उनकी जगह भेज दिया। ८०९ ई०के मार्च मास खुरासान जाते बीमारीसे हारुंका ४५ सालकी उम्रमें मृत्यु हुआ। हारुंकी अमलदारीमें अफरीकाके सूबेदार इब्राहीम इस बात पर आजाद किये गये कि वह सालाना खिराज खलीफाको पहुंचाते रहेंगे। हारुंके खलीफाके वक्तमें ही पहले पहल बगदादमें कागजके कारखाने खुले थे।

६ अमीनका अमलदारी—हारुनके मरने पर अमीनको खिलाफत मिली थी। अमीनने अपने उत्तराधिकारी भाई मामूनको खुरासानसे बगदाद बुलाया, परन्तु वह इस डरसे न गये कि वहां मार डाले जाते। ८०९-८१० ई०को अमीनने अपने पांच सालके लड़के मूसाको अपना उत्तराधिकारी बना दिया। मामूनने इस पर बिगड़ खलीफाका नाम खुरासानके सब कामोंसे अलग किया था। अमीनने ४०००० फौज खुरासान उनके खिलाफ रवाना की। ८११ ई०के मई महीने राहमें दोनों फौजें भिड़ गयी। किन्तु मामूनके सेनापति ताहिरने एकाएक दुश्मन पर हमला करके उसे भगाया था। मामून् फिर खलीफा बन बैठे।

अपनी हारकी खबर सुन अमीनने २०००० आदमी हमादान् भेजे थे। ताहिरने उन्हें शिकस्त दे मीदियाकी सब पोख्ता जगहें दखल कर लीं। दूसरे वर्ष फिर अमीनने नई फौज मैदानमें उतारी थी, परन्तु ताहिरने उन्हें भी हरा होलवान् छीन लिया जिससे बगदादका रास्ता खुला। फिर ताहिरने अहवाज, वासित और मदाइनको ले राजधानीके पास अपना खेमा जा लगाया। चारों ओरसे घिरा रहते भी बगदाद शहरने २ साल तक अपनेको बड़ी बहादुरीसे बचाया था।

अखीरमें अमीन ताहिरके हाथ अपनेको सौंपने पर मजबूर हुए। ताहिरने उन्हें पकड़ कर कत्ल किया था। ८१३ ई०के सितम्बर महीने उनका सर काट कर मामूनके पास भेज दिया गया।

७ मामूनकी हुकूमत—अमीनके मरने पर ताहिरने बगदादमें मामूनको खलीफा बनाया। इनके समय कलाकौशल, विज्ञान और साहित्यकी अच्छी उन्नति हुई परन्तु शुरुआत खूब तूफानी थी। ताहिर मेसोपोटेमिया और सीरियाके सूबेदार बनाये गये और उन्हें बलवाई नसरको दबानेका काम मिला। अलीद भी बिगड़ उठे थे। कूफामें इब्न टबाटबाने खेतमें एक फौज उतार दी। हसनकी भेजी फौज उससे हारी थी। फिर इराकके बसरा, वसीत और मैदइन नगर भी दुश्मनके हाथ लगे। अलीदोंने मक्का, मदीना और यमनको दबा लिया। कूफामें अबु दलके सेनापतिने नया सिक्का ढाला और राजधानी पर आक्रमण करने-का भय दिखाया। हसनने अपनी मददके लिये हर थमको बुलाया था, जिन्होंने पहुंचते ही दुश्मनका आगे बढ़ना रोक दिया। ईराकके सब शहर फिर अब्बासियोंके हाथ आ गये। अफरीकाका नक्शा भी दबा था। हरसम मर्वको खलीफासे मिलने गये, परन्तु लोगोंके बहकानेसे मामूनने उन्हें कैदखाने में डाला था, जहां वह कुछ ही दिनमें मर गये। ८१७ ई०को मामूनके अपना उत्तराधिकारी अली पर रिदाकी बनाने मारे अब्बासी ताज्जुबमें आये थे। बगदादके लोगोंने इस पर बिगड़ मामूनको राज्यच्युत किया और उनके चचा इब्राहीमको खलीफा बना दिया। इस पर मामूनने मनही मन सोचा कि फदल उन्हें कठपुतली जैसा समझते थे। एक दिन फदल मरे मिले और अली एकाएक चल बसे। मामूनने इस पर अत्यन्त शोक प्रकाश करके फदलके भाई हसनको अपना वजीर बनाया और उनकी बेटीसे अपनी शादी भी कर ली। इसपर इब्राहीम खलीफाकी ताकत घट गयी और उन्हें छिप कर अपना जान बचानी पड़ी। ८१८ ई०के अगस्त महीनेसे मामूनकी असली हुकूमत शुरू हुई। ताहिरने अपने लिये अलग राज्य स्थापन करनेका विचार किया था, परन्तु ८२२ ई०को उनके मर जानेसे मनकी बात मनमें ही रह गयी। ताहिरके लड़के अबदुल्लाने मेसोपोटेमिया और मिसरका बलवा दबाया था। फिर इब्राहीम खलिफा जो भागे थे पकड़े गये, परन्तु खलीफाने उनको माफ कर दिया। वह गाने बजानेकी तरहसे दरबारमें आरामसे रह कर करने लगे।

मुल्कमें अमन चैन होने पर मामूनने अपना ध्यान विज्ञान और साहित्य पर लगाया था। उन्होंने गणित, ज्योतिष, वैद्यक और विज्ञानकी पुस्तक यूनानी भाषासे अनुवाद करायीं और बगदादमें एक विद्यालय खोला जिसमें एक पुस्तकालय और एक वेधशाला भी थी। उन्हींके आदेशसे दो सुविज्ञ गणित शास्त्रियोंने पृथिवीके वृत्तका अंश निर्धारण करनेका काम अपने हाथमें लिया। धार्मिक सिद्धान्तोंमें भी मामूनकी दिलचस्पी रही। ८३३ ई०को एक हुक्मनामा निकाल उन्होंने सब विद्वानोंको यह समझानेके लिये बुलाया था कि कुरान ईश्वर वाक्य नहीं। जिसने यह बात नहीं मानी, कैद खानेमें डाला गया। मामूनने इन अपराधियोंको बगदादसे अपने पास मंगवाये जानेका हुक्म किया था, परन्तु वह मुश्किलसे अदन पहुंचे होंगे कि खलीफाके मरनेकी खबर लगी। ८३३ ई०के अगस्त माष ठण्डेके दरयामें नहानेसे उन्हें बुखार चढ़ा और ४८ वर्ष उम्रमें उनका मृत्यु हुआ।

मामून निराले दिमागके आदमी थे और मन्सूरके बाद उनके जैसा खलीफा विरला ही हुआ।

८ मोतासिमका राजत्व—मामूनके मरने पर अबू इशाक अल-मोतासिम खिलाफतके मालिक हुए। और ८३३ ई० २० सितम्बरको बगदादमें जा पहुंचे। उनके शरीर रक्षक तुर्क गुलाम रहे, जो ज्यादा जोर जुल्म करने पर बगदादियोंके हाथों, जहां तक हो सका मारे गये। मोतासिमने बगदाद छोड़ सामरामें अपने रहने को इमारत बनवायी थी।

अरबयुद्धके समय बसरा और वासितके बीच दलदल वाले मुकामको बहुतसे जाट नामक भारतवासियोंने अधिकार किया और टिगरिस नदीमें आने जाने वाले

जहाजों पर महसूल लगा दिया। मोतासिमने ७ महीने जोरोंसे लड़ उनके आत्मसमर्पण करने पर बाध्य बनाया था। ८३५ ई०के जनवरी महीने वहांसे वह लोग अनजरबाको निकाले गये। ८३५ ई०को ही मोतासिमने एक तुर्की राजकुमार अफशींको मोदिया-का सूबेदार मुकर्रर किया और बाबकसे लड़नेको कह दिया। तीन साल लड़ाई होनेके पीछे बाबक पकड़े गये और समारा पहुंचने पर जल्लादोंने उनके हाथ पांव काट डाले। उनका शिर खुरासान भेजा गया। ८३७ ई०को थिओफिलसने सरहदी शहर जिवतराको मिसमार किया था। मोतासिमने बदला लेनेकी गरजसे बड़ी फौजके साथ चढ़ाई की और अमो-रियम नगर दखल करते वक्त खूब लूट उनके हाथ लगी। ८४२ ई० के जनवरी महीने मोतासिमका मृत्यु हुआ।

९ वातहिककी अमलदारी—मोतासिमके मरने पर उनके बेटे वातहिक खलीफा हुए। इन्हें भी इल्मका बड़ा शौक था। उसको पूरा करनेके लिये वातहिकने अपने अफसरोंसे रुपया मांगा और उन के इनकार करने पर रिशवतखोरीके लिये उनको कैदखानेमें डाला और जुर्माना किया। खलीफा कुरानको भी ईश्वरवाक्य न मानते थे। इस पर बगदादमें बलवा होनेकी खबर लगी। बलवाइयोंके सरदार अहमद पकड़े और समारा भेजे गये, जहां वातहिकने अपने हाथसे उनका शिर काट डाला। मदीनाके आसपास अरबोंने जो बलवा खड़ा किया था, तुर्की अफसरोंने उसे दबा दिया। ८४६ ई०को वातहिक मर गये।

१० मोतवक्किलकी खिलाफत—वातहिकके मरने पर उनके भाई जाफर अल्-मोत-वक्किल नामसे खिलाफतके मालिक हुए। इन्होंने वजीर जय्यातको जिन्होंने इनकी खिलाफतकी मुखालिफत की थी, पकड़ कर बेरहमीसे मार डाला। इसी बीच महमूद नामक किसी जालसाजने अपनेको नबी बतलाता और २७ आदमियोंको अपना पैरो बनाया था। खलीफाने उससे और उसके साथियोंको पकड़ मंगाया और खूब कोड़ोंसे पीटा। फिर उसके सब साथियोंको हुक्म हुआ कि उसके शिर पर सबके सब दश दश मुक्के लगाते। ८५० ई० को वह मुक्कोंके मारे मर गया।

मोतवक्किलने करबलामें हुसैनकी कब्रका इमारत गिरवा दी थी। ८६४ ई०को हुसैनके एक वंशधर यहया जो पकड़ कर कोड़ोंसे पीटे गये थे, चुपकेसे भगे और कूफामें बलवा खड़ा करने पर मारे गये। कहते हैं कि खलीफाने अपने एक भांड़को अलीकी नकल करनेका भी हुक्म दिया था। ८४८-८४९ ई०को इब्न बाईतने बलवा किया, किन्तु बोघा नामक तुर्की सेना-पतिने उसे पकड़ कैद कर लिया जहां उसे मरना पड़ा। ८५१-८५२ ई०को अरमेनियामें बलवा फूटा था। बोघाने उसे भी दबा दिया। ८५२-८५३ ई०को बेज-न्ताइन ३०० जहाजोंके साथ मिसरमें उतर पड़े। फोम-तात राजधानी लूटा और जलायी गयी। यूनानी फिर टिनिसके पास गाइल नदीके मुंहानेकी सारी किले-बन्दी तोड़ कर दियीं और लूटके साथ लौट पड़े। ८५६ ई०को वह अमीद तक पहुंच १०००० कैदी ले गये थे। किन्तु ८५८ ई०को मुसलमानोंने यूनानियोंके कितने ही आदमी और जानवर पकड़े और उनके जहाजी बेड़ेने अनटोलियाको विध्वस्त कर डाला।

८५५ ई०को होमसमें बलवा हुआ, कारण खली-फाने ईसाइयों और यहूदियों पर बहुत सख्ती की और बेचैनी बढ़ी थी। यह बलवा बड़ी मुश्किलमें दबा ईसाइयों, और यहूदियोंके धर्ममन्दिर तोड़े, बहुतसे बड़े आदमी कोड़ोंकी मार मार डाले और सब ईसाई निकाल बाहर किये गये। ८५१ ई०को बोजा नामकी जङ्गली कौमने सोने और पन्नेकी खानों पर हमला किया था, जिसे ८५६ ई०को मुहम्मद अल् कौमीने दबा दिया। फिर मोतवक्किलने २० लाख अशरफी लगा सामराके पास एक बढ़िया महल्ला बनाया था। ८६१ ई०के दिसम्बर मास यह मार डाले गये।

११ मोन्तासिरका शासन—बापके मरते ही मोन्तासिर-ने अपनेको खलीफा बतलाया था। यह बहुत कमजोर और अहमद इब्न् खब् नामक वजीर और तुर्की सेना-पतियोंके हाथकी कठपुतली बने हुए थे। कहते हैं कि ६ महीने पीछे जहरके जरिये मोन्तासिर मर गये।

१२ मुस्तइनकी हुकूमत—मोतासिमके मरने पर उनके उनके चचेरे भाई अल मुस्तइन नामसे खिलाफतके तख़्त पर बैठे थे। परन्तु ८६५ ई०को वह बगदाद भाग गये और मोताज़ खलीफा हुए।

१३ मोताज़का राज—८६६ ई०के जनवरी मास बगदादमें यह तख़्त नशीन हुए और अपनी खिलाफतकी मुख़ालिफत करनेवाले तुर्की सेनापति वसीद और बोघाके पञ्जेसे छूटनेकी कोशिश करने लगे। इन्होंने अपने एक भाई मुयय्यदको मार डाला और दूसरे मुअफ़्फ़क़को मुल्कसे बाहर बगदादको निकाला था। परन्तु उन्हें फौजको कोई २०००००० अशरफियां तनखाह देनी थी। इतनी बड़ी तनखा चुका न सकनेसे वह पकड़ लिये गये और ८६८ ई०के जुलाई मास कैदखानेमें भूखों मरे। इसी बीच खोरासान और मिसरके सूबेदार आज़ाद हुए।

१४ मुहतदीकी खिलाफत—मोताज़के गिरफ़्तार होते ही वासिकके लड़के अल मुहतदी खिताबके साथ खलीफा बने थे। वह शरीफतबा, सखी और जोरादार शख्स रहे। उन्होंने कलावतों और गवैयों को निकाल बाहर किया और सब खेल कूद बन्द कर दिया। वह मुनसिफीकी तरह मुतवज्जह हुए और लोगों की शिकायतें दूर करनेको उनसे खुले तौर पर मिलने लगे। ८७० ई०के जून महीने तुर्की सिपाहियों ने मुहतदीको मार डाला।

१५ मोतमीदकी खिलाफत—मुहतदीके मारे जाने पर मुतवक्किलके लड़के मोतमीदको खिलाफत मिली थी। परन्तु याकूबने बलवा खड़ा करके नीशापुरको दखल कर लिया और इराक पर भी धावा कर दिया। खलीफा खुदबखुद नबीका जामा पहने उससे लड़ने गये। आखीरमें मुवफ़्फ़क़ने उसे मार भगाया। ८६९से ८८३ ई० तक बसरामें हबशियोंका बलवा उठाना पड़ा था, जिसमें बहुतसा रुपया खर्च हुआ। ८८२ ई०को खलीफाको मोरोया और मेसोपोटेमियाके राजा अहमदके वजीरने कैद करके सामरा भेजा था। ८८६ ई०को अहमदकी पोती मोतमिदसे ब्याही गयी। दशवर्ष पीछे खलीफाके सेनापति मुक़तफीने मिसर विजय किया।

इनके शासन कालको सम्राट् १म बसील मुसल्मानोंसे कामयाबीके साथ लड़े, किन्तु ८८४ ई०को बुरे तौरसे हारने पर उनकी फौज, सेनापति और कितने दूसरे साथी मर मिटे।

१६ मोतज़िदका शासन—८९१ ई०को मोतमिदके मरने पर उनके लड़के अबुल अब्बास अल् *मोतज़िद नामसे तख़्त*-नशीन हुए। यह बहुत लायक और ताकत वर थे। हमदानकी मददसे मेसोपोटामियाके खरीजीय कुचल डाले गये। दक्षिण-पश्चिम मदीया अबू दोलाफ घराना दबा दिया गया। अज़रबैजन और अरमेनियाके तुर्की सूबेदारोंने बलवा खड़ा करना चाहा था, परन्तु उनकी एक न चल सकी और इस साजिशमें शरीक होनेवाले तारससके बाशिन्दे मज़ायाब हुए और उनके जहाज जला डाले गये।

१७ मोकतफ़ीकी खिलाफत—९०२ ई०को मोतज़िदके मरने पर उनके बेटे मोकतफी खलीफा हुए। यह अपने आप फौज लेकर सीरीयाके कारमैथीयों पर चढ़े थे। खलीफाके सेनापति मुहम्मदने दुश्मनको पूरे तौर पर शिकस्त दी। परन्तु इस हारका बदला चुकानेको (९०६ ई०) मक्कासे लौटनेवाले कारवांके २०००० आदमियोंको मार डाला और बहुतसा माल असबाब लूट लिया।

मोकतफीके राजत्व कालको बैनजातीयोंसे बड़ा युद्ध हुआ। ९०५ ई०को यूनानी सेनापति अण्ड्रोनिकसने मरश अधिकार किया और इसलतक दबा लिया था, परन्तु ९०७ ई०को समुद्रमें मुसलमान फतेहयाब हुए और इकोनियमको दबा बैठे। अन्तको बैजन्तीय सम्राट्को बगदाद दूत भेज सुलह करनी पड़ी।

१८ मोकतादिरका राज—९०८ ई०के अगस्त मास मोकताफीके एकाएक मरने पर मोकातादिरके खिलाफत मिली थी। यह मोकताफीके भाई थे। तख़्तनशीनीके वक्त इनकी उम्र १३ साल ही रही। बगदादके बहुतसे बड़े आदमियोंने बलवा करके पहले खलीफा मोताज़के बेटे अबदुल्लाको खिलाफत सौंपी थी, परन्तु मोतादिदके घरवालोंने उन्हें मार डाला। मोकतादिरमें अच्छे गुणोंका अभाव न होते भी उन्होंने शासनकार्य अपनी

मां, अपनी महिलाओं और ख्वाजोंको सौंप रखा था। इन्होंने खजानेका खूब रुपया उड़ाया और अमीर आट-सियोंको लूटा मारा। ९२३ ई०को कारमेथीयोंने बसरा दखल किया और इसके दूसरे ही वर्ष मक्कासे लौटते एक कारवाको दवा लिया था। फिर कूफा उनके हाथ लग गया। बगदाद सरकारने कारमेथीयोंको दवाना चाहा था, परन्तु उन्होंने (९२७ ई०) एक बड़ी फौजको हराया और बगदाद पर भी अपना हाथ बढ़ाया। दूसरे वर्ष मक्का लूट लिया गया। दुश्मन काला पत्थर भी लहासा उठा ले गये, परन्तु ९५० ई०को इमामके कहनेसे वह काबे वापस आया ९२९ ई०को मोकतादिरको तख्तसे उतारनेकी साजिश हुई, परन्तु उनके सेनापति मूनिसने उन्हें अपने घर ले जाकर छिपा रखा। फिर वह गद्दी बैठाले गये थे। ९३२ ई०को मूनिस अपने खिलाफ साजिश होते देख मोसल चले गये और वहांसे बहुतसी फौज इकट्ठी करके बगदाद पर चढ़े। अकतूबर मासको जो युद्ध हुआ, मोकतादिर मारे गये। मरते वक्त इनकी उम्र ३८ वर्ष थी।

१९ काहिरका हुकूमत—मोकतादिरके खेत रहने पर काहिर खलीफा बने थे। यह शराबी थे और अपने खर्च के लिये लोगोंको जायदादें जब्त करके रुपया वसूल करते थे। किन्तु ९३४ ई०के अपरेल महीने इनकी आंखे फोड़ डाली गयीं और तख्तसे उतार दिये गये, सात वर्ष पीछे गुर्बतमें इनके प्राण निकले।

२० राज़ीका राजत्व—काहिरके मरने पर मोकतादिरके बेटे अल् राज़ी बिल्लाने खिलाफत पायी थी। इनकी ताकत देखने लायक रही। खजाना खाली था, सिपाही तनखाह मांगते थे और बगदादमें बलवा उठ खड़ा हुआ था।

२१ मुत्तक़ीका [illegible]—९४० ई०को राज़ीके मरने पर मोकतादिरके दूसरे लड़के अल मुत्तक़ीबिल्ला खलीफा हुए। बसराके किसी बरीदीने धंवा करके बगदाद दखल किया था, किन्तु सेनापति क़ुर्तकीनने उसे निकाल भगाया। बरीदीके फिर बगदाद पर चढ़नेसे मुत्तक़ीने मोसल भाग नसीर-उद्-दौलाकी पनाह ली, जिन्होंने जाकर बगदादसे बरीदीको हटाया था। परन्तु बजकमके पहले कप्तान तूज़ूनने ९४४ ई०को खलीफाको आंखें निकलवा लीं।

२२ मुस्तकफीका हुकूम—तूज़ूनके मरने मुत्तक़ीका उत्तराधिकारी मुकतफीके लड़के अल् मुस्तकफी बिल्लाको चुना था। ९४५ ई०को एक बुवैद सरदारने बगदाद आक्रमण किया और खलीफाने उन्हें सुलतान उपाधिके अनुसार सम्राट् मान लिया। फिर खलीफाके साजिश करने पर उन्होंने इनकी आंखें फोडवा डालीं।

२३ मोतीकी [illegible]—मुस्तकफीके पीछे मोकतादिरके एक लड़के अल् मोती बिल्ला खिलाफतके मालिक हुए। यह नाममात्रको ही खलीफा रहे, रियासतका सब काम सुलतान करते और इन्हें ५०००० दिरहम रोज पेनशन देते थे। फिर तुर्की सिपाहियोंने बलवा मचा दिया और ९७४ ई०के अगस्त मास मोतीको तख्तसे उतार निकाल बाहर किया।

२४ ताईका अधिकार—मोती खलीफाका खाली खिताब अपने बेटे ताईको दे गये थे, जिन्हें तुर्कोंने तख्त नशीन किया। उधर बगदादमें अज़्द-उद्-दौलाने बख्तियारका उत्तराधिकार पाया था। इन राजाके समय बुवैदोंकी ताकत बहुत बढ़ी। उन्होंने, जहां तक हो सका गिरी हुई मसजिदों और दूसरी इमारतोंकी मरम्मत करायी, अस्पताल तथा पुस्तकालय स्थापित किये और आब-पाशीको तरक्की दी। शीराजमें उन्होंने जो पुस्तकालय खोला था, जगत्का एक आश्चर्य रहा। उन्होंने करबलामें हुसेन और कूफामें अलीका मकबरा भी बनवाया था। किन्तु ९८३ ई०को उनके मरने पर उनके तीनों लड़के आपसमें लड़ने लगे। ९९० ई०को छोटे लड़के बाहा-उद्-दौला जीते और उन्होंने खलीफा ताईको (९९१ ई०) तखतसे उतार दिया।

२५ कादिरकी हुकूमत—फिर मोकतादिरके एक पोते अल् कादिर बिल्लाके नाम पर खलीफा बनाये। ९७६ ई०को सुबकतगीनने सीजिस्तानके बोस्त और बलूचिस्तानके कोसदारको अधिकार किया और भारतके राजा दयापालको हरा दिया था। वह सिन्धुके पश्चिम प्रान्तके राजा माने गये। उनके मरने पर उनके बेटे महमूदने सारा खुरासान और सीजिस्तान साथ भारतके एक बड़े

भागको जीता था। १०३१ ई०के नवम्बर महीने कादिर मर गये। वह कुछ आध्यात्मिक ग्रन्थोंके रचयिता थे।

२६ कायमकी खिलाफत—कादिरके मरने पर उनके बेटे कायम नामसे खलीफा बने। बगदादकी हालत बिगड़ जानेसे इन्होंने तुगरलको अपनी मददके लिये बुलाया था। उन्होंने बगदाद पहुंच बुइदेंके खानदानको निकाल बाहर किया। परन्तु १०५८ ई०को तुगरलकी अदम मौजूदगीमें शीयाओंने बगदाद राजधानी अधिकार करके मुसतनसीरको खलीफा बना दिया। तुगरलने जल्द नीचा देखा खलीफाको अपनी लड़कीकी शादी कर देने पर मंजूर किया था। परन्तु शादी होनेसे पहले ही वह मर गये। १०७५ ई०के अप्रेल महीने कायमकी भी मौत हुई।

२७ मुकतादीकी हुकूमत—कायमके मरने पर उनके पोते मुकतादीको खिलाफत मिली थी। १०८७ ई०को इन्होंने मलिक शाहकी बेटीसे अपनी शादी की, परन्तु अच्छा बर्ताव न करनेकी शिकायत पर उसको पीछे लौटना पड़ा। मरनेसे कुछ ही दिन पहले सुलतानने इन्हें बगदादसे निकाल बसरामें रहने पर मजबूर किया था। १०९४ ई०के फरवरी मास बरकियारीकके बगदादमें फतेहयाबीके साथ दाखिल होने पर शायद खलीफा जहर खा कर चल बसे।

२८ मुसतजहीरकी खिलाफत—मोकतादीके मरने पर उनके लड़के मुसतजहीर खलीफा हुए। उस समय इनकी उम्र १६ साल ही थी। ११०४ ई०को बरकिया रोकके मरने पर उनके भाई मुहम्मदने १११८ ई० तक सलतनत की। इनके पीछे १० महीने बाद मुसतजहीर भी मर गये।

२९ मुसतरशीदका राजत्व—१११८ ई०के अगस्त मास मुसतरशीद अपने बाप मुसतजहीरकी जगह खलीफा हुए। इन्होंने बफायदा खलीफाके पुनरधिकार प्रतिष्ठाकी चेष्टा की थी। ११२४ ई०के अकतूबर महीने यह अपने महलमें रहने और कभी खेत न लड़ने पर मजबूर किये गये। फिर थोड़े दिन बाद इनका कत्ल हुआ।

३० राशिदका राजत्व—मोसतरशीदके मरने पर उनके बेटे राशिदको खिलाफत मिली। इन्होंने मोसलके राजा जङ्गीके साथ अपने बापका अनुसरण करना चाहा था। परन्तु सुलतान मसऊदने उनकी फौजको मार भगाया और बगदाद दखल करके राशिदको ११३६ ई०में तख्तसे उतार दिया। राशिद बच कर निकल भगे, परन्तु २ वर्ष बाद कत्ल कर डाले गये।

३१ मुकतफीकी खिलाफत—राशिदके पीछे मुस्ताजिरके लड़के मुकतफीको खिलाफत मिली थी। इन्होंने असलमें बगदाद जिले और इराकमें भी हुकूमत की। ११६० ई०के मार्च मास इनका मृत्यु हुआ।

३२ मुसतनजिदका राज्य—मुकतफीके मरने पर उनके बेटे मुसतनजिदको खिलाफत हासिल हुई। इन्होंने हिल्लामें मजयदियोंका राज्य समाप्त करके खिलाफतकी हद बढ़ायी। मोसलके नुरुद्दीनकी फौजने मिसर जीता, फातिमाका घराना उखड़ा और सलादीनका दबदबा बढ़ा था। ११७० ई०के दिसम्बर मास यह अपने सेनापति डोमोके हाथों मारे गये।

३३ मुस्तदीकी हुकूमत—मुसतनजिदकी मौत होने पर उनके लड़के और वारिस मुस्तदी खलीफा हुए, परन्तु कोई असली हुकूमत हासिल कर न सके। ११८० ई०के मार्च मास मुस्तदीकी मौत हुई।

३४ नासिरकी सलतनत—मुस्तदीके पीछे उनके बेटे नासिर खिलाफतके मालिक हुए। ११८७ ई० २ अकतूबरको सलादीनने फिर जेरुसलम दखल किया था। नासिर बड़े होसलेमन्द थे। उन्होंने खोजस्तानको अपनी खिलाफतमें मिलाया और मौदियाके मालिक भी बन बैठना चाहते थे। परन्तु खिवाके खारिजमने अब्बासियोंको निकाल अलीके किसी वंशधरको खलीफा बना बगदादके तख्त पर बैठानेकी ठान ली। उधर चङ्गेज खानने चीनका उत्तर प्रान्त जीता और अपना राज्य ट्रैन्स ओक्सिनियन सीमा तक बढ़ाया था। मुसलमानोंके इमामने उन्हें एक सन्देसा दिया कि वह जाकर खिवाके राज पर जिसने उनके दूतोंका अपमान किया था चढ़ जाते। १२२५ ई०को नासिरके मरने पर झुण्डके झुण्ड बहशी मोगोंने खिलाफतके पूर्व भागको कुचल डाला, शहरोंको जला दिया और लोगोंको बेरहमीसे मार डाला।

३५ ज़ाहिरका राज्य—नासिरके मरने पीछे उनके बेटे ज़ाहिर खलीफा हुए, परन्तु १२२६ ई०के मार्च मास मर गये।

३६ मुस्तनसिरकी ख़िलाफ़त—ज़ाहिरके पीछे १२४२ ई०के दिसम्बर मास तक मुस्तनसिरने खिलाफत की, जब कि वह भी चल बसे। १२२७ ई०को जङ्गीज खान् मरे, परन्तु मङ्गोलीय खिलाफत पर हमला करनेसे न रुके। खीवाके अतिरिक्त राजा जलालुद्दीन् उनसे बराबर लड़ते रहे।

३७ मुस्तसिमकी हुकूमत—अपने बाप मुस्तनसिरके मरने पर मुस्तसिमको खिलाफत मिली थी। यह बगदादके आखिरी खलीफा रहे इनके रहनुमा अच्छे आदमी थे। १२५६ ई०के जनवरी महीने हलाकूने ओक्सस नदीको पार किया और इस्माइलियों की किलेबन्दीको गिराना शुरू कर दिया था। फिर १२५८ ई०के जनवरी मास वह खिलाफतकी राजधानी बगदादके पास आ पहुंचे। मुस्तसिमने वेफायदा आरज़ूमिन्नतके साथ सुलह करनेको कहा था। शहरमें लुटपाट और मारकाट मच गयी। खलीफा सारी छिपी हुई दौलत लानेको मजबूर किये और पीछे अपने २ बेटों और बहुतसे रिश्तेदारोंके साथ मार डाले गये। सार्वजनिक भवनोंमें आग लगी थी। इन्हींके साथ अब्बासियोंकी पूर्वीय खिलाफत खत्म हुई, जो अबुल अब्बासके कूफामें दाखिल होनेके समयसे ५२४ वर्ष तक बराबर चलती रही।

तीन वर्ष पीछे अबुल कासिमने जो भाग कर मिसरमें जा छिपे थे, वेफायदा अब्बासियोंकी खिलाफतको वापस लाना चाहा। वह एक फौज लेकर बगदाद पर चढ़े, परन्तु राहमें ही वह युद्ध होने पर हारे और मार डाले गये। यह अल मुस्तनसिर बिल्ला नामसे खलीफा बन चुके थे। अब्बासियोंके कोई दूसरे वंशधर भी मिसरमें जा छिपे थे। कैरोमें वह अल् हाकिम नामसे खलीफा विघोषित हुए। उनके लड़कोंको भी खलीफाका खिताब मिला था, परन्तु किसीका कुछ प्रभाव न पड़ा। खिलाफतकी यह नाजुक हालत बहुत दिन तक चलती रही। अन्तको तुर्कस्तानके सुलतान १म सलेमने मिसरको फतेह करके आखिरी खलीफा मुतवक्किलको अपने नाम पर खिलाफतसे अलग कर दिया। १५३८ ई०को कैरोमें वह मर गये।

अब्बासी घरानेके दूसरे वारिस मुस्तनसिरके पोते मुहम्मदने पीछेको भारत अपनाहली थी। दिल्लीके सुलतानने उन्हें बड़ी इज्जतसे बिठाया, 'मखदूमज़ादा' बनाया और राजा-जैसा व्यवहार लगाया था। इनके लड़के बगदादमें १ दिरम रोज पर इमामका काम करते थे।

खिलारी—बम्बई प्रदेशके एक जातीय गोरू या मवेशी। दाक्षिणात्यस्थ खानदेशके पश्चिम अञ्चलमें खिलारी नामक गोपालक रहते हैं। उन्हींके नाम पर इन पशुओंको भी खिलारी कहा जाता है। यह देखनेमें बहुत सुन्दर, बलवान् और द्रुतगामी होते हैं। इनका पश्वादि ज्ञान इतना तीक्ष्ण है, जिस कामके सिखलाते, मानो सहजमें ही समझ जाते हैं। खिलारी बैलोंकी एक जोड़ी ६मील घण्टेके हिसावसे दो-तीन दिन तक बराबर गाड़ी खींच सकती है। गायोंका रङ्ग दूध-जैसा सफेद रहता और बैलोंके कन्धोंके पास थोड़ी ललाईका मेल रहता है। सींग मोटे और सीधे होते हैं। केवल गायके सींग टेढ़े-मेढ़े चलते हैं। सतारे और पण्ढर-पुरके बीच पहाड़ी प्रदेशमें इन पशुओंकी जन्मभूमि है।

खिलाल (हिं० पु०) बाजीकी परी हार। यह ताश वगैरहके खेलमें हुआ करता है।

खिलाह (सं० पु०) अश्वभेद, किसी किस्मका घोड़ा। यह पाण्डु,केसरपुच्छ और कपिलवर्ण होता है। (जयदत्त)

खिलीकृत (सं० त्रि०) खिल-च्वि-कृ-क्त। १ दुर्गम बनाया हुआ, जो आने जानेके लिये मुश्किल कर दिया गया हो। २ निरुद्ध, घिरा हुआ।

खिलीभूत (सं० त्रि०) खिल-च्वि-भू-क्त। दुर्गम बना हुआ, जो आने जानेके लिये मुश्किल हो गया हो।

खिलेयु (सं० पु०) खिलस्य हरेर्विष्णोर्गुणो यत्र, बहुव्री०। हरिवंश। (हरिवंशसमाप्तिपुष्पिका:)

खिलौना (हिं० पु०) क्रीड़ाद्रव्य, खेलकी जगह। यह बच्चोंके खेलनेको लकड़ी, मोम, मट्टी, कपड़े आदिसे बनाया जाता है। लखनऊके खिलौने मशहूर हैं।

खिलौरी (हिं० स्त्री०) धनिया, खरबूजा, ककड़ी वगैरह-

के भुने हुए बीज। इसको भोजनके पीछे मुखशुद्धिके लिये व्यवहार करते हैं।

खिल्य (सं० त्रि०) खिले भव, खिल यत्। १ खिलसे उत्पन्न। २ परिशिष्टपठित, परिशिष्टमें पढ़ा जानेवाला। ३ प्राणियोंके गमनयोग्य। (ऋक् १०।१४२।३)

खिल्ली (हिं० स्त्री०) १ हंसी, ठठोली २ गिलौरी, पानका बीड़ा। ३ कील काँटा।

खिशी (हिं० स्त्री०) १ मोढ़ी, खुल खिला कर हंसने वाली।

खिसाड़ी (हिं० स्त्री०) इक्षुभेद किसी किस्मकी ऊख।

खिसलाव (हिं० पु०) खिसकनेको स्थिति, जिस स्थानमें फिसल पड़े।

खिसलाहट (हिं० स्त्री०) खिसलाव देखो।

खिसारा (फा० पु०) क्षति, घटी, नुकसान।

खिसियाना (हिं० क्रि०) १ लज्जा पाना, शर्म खाना। २ क्रोध करना, नाराज होना। (वि०) ३ लज्जित।

खिसियाहट (हिं० स्त्री०) १ लज्जा, शर्म। २ क्रोध, गुस्सा।

खिसोर—पञ्जाबके डेराइस्माइल खां जिलाकी एक गिरिमाला, इसका दूसरा नाम 'रत्नारो रत्नमयगिरि' है। यह अक्षा० ३२° १३´ से ३२° ३४´ उ० और देशा० ७० ५६´ से ७१ २१´ पू०के बीच अवस्थित है।

यह गिरिमाला १४०० हाथसे २२३४ तक ऊँची है। इसकी लम्बाई ५० मील और चौड़ाई ६ मील है। इसके गिरिशिखर पर कई एक प्राचीन हिन्दू दुर्गके खण्डहर हैं और बहुतसे भग्न देवमन्दिर हैं। वे सब आजकल "काफिरकोट" नामसे विख्यात हैं। इस गिरिमाला पर बिलोत नामके स्थानमें सैय्यद पीरकी मस्जिद है, यह निकटस्थ मनुष्यके निकट अति प्रसिद्ध है।

ऐसा कहा जाता है कि पहले पीर साहेबकी नौका पर चढ़ कर सिन्धु पार होते थे। उनके वंशधर मखदूम मखोलकी जागीर भोग करते हैं। यहांके चूना पहाड़ पर बहुतसे युगोंके प्राचीन प्रस्तरीभूत जीवदेह पाये जाते हैं। इसमें स्थान स्थान पर लवणस्तर हैं, उन मेंसे शिमालके निकट मोसा नामका झरना प्रधान है। पहाड़के ऊपर कृषियोग्य बहुतसी उर्वरा जमीन है। यथेष्ट वर्षा होने पर गेहूं और बाजरा बहुत होता है। पहाड़के नीचेके देशमें तम्बाकू उत्पन्न होती है।

खिसी, खिसियाहट देखो।

खींच (हिं० स्त्री०) १ आकर्षण, खिंचाव। २ कनकैया लड़ानेका एक हाथ। इसमें अपना पतङ्ग दूसरे पतङ्गके नीचे ले जा कर उलटा घुमा कर खींचते हैं। खींचका हाथ ऐसा अच्छा होता है, कि दूसरेको कनकैया कटनेसे नहीं बचती। इसमें डोर खींचते खींचते पीछेको भी हटा जाता है।

खींचतान (हिं० स्त्री०) १ लेवदेव, लपा झपी। २ उलट पलट, धींगा धींगी।

खींचना (हिं० क्रि०) १ आकर्षण करना, घसीट लेना। २ निकालना, खोलना। ३ भरना। ४ चलाना, हिलाना। ५ वशीभूत करना, गुलाम बनाना। ६ लगाना। ७ पीना। ८ टपकाना, चुवाना। ९ निःशार करना, खा जाना। १० लिखना। ११ चित्र बनाना। १२ रोकना। १३ मंगाना।

खीखर (हिं० पु०) वन्य जन्तुविशेष, किसी किस्मका वन बिलाव। इसको कटास भी कहा जाता है।

खीचीचोहान—चोहान राजपूतोंकी एक शाखा। कोई कोई कहते हैं कि इन्होंने किसी समय देवी भगवतीको एक पात्र खीचड़ी भोग लगाया था। देवी सन्तुष्ट होकर इनको किसी स्थानमें जाने कहा, वहां इन्होंने बहुतसा सोना और चांदी पाया। तभीसे वे खीचड़ी नहीं खाते हैं। इसी खीचड़ीसे खीची नाम हुआ। किसी किसीका मत ऐसा है कि खिचरी या खीच स्थानमें ये वास करते थे इसीसे ये खीच कहलाये और वह स्थान "खीचीवाड़" नामसे विख्यात हुआ।

खीची चोहान लोग कहलाते हैं। शाकम्भरका राजा माणिकरायके २४ लड़के थे। उनमेंसे एकका नाम अजयराव था। यही अजयराव उन्होंके पूर्व पुरुष थे। उनके १६श पुरुषमें गयासिंहने जन्म ग्रहण किया था। उनको अलङ्गराव और विम्बञ्जरराव नामके दो पुत्र थे। ये दोनों खीचीपुर पाटनमें रहते थे और दिल्लीपति पृथ्वीराजके समसामयिक थे। पृथ्वीराजने उन दोनोंको मालवारमें अठारह हजार ग्राम युक्त गागरोन् परगणा प्रदान

किया। ज्येष्ठ भ्राता निःसन्तान था। छोटेको चूड़पाल नाम का एक लड़का था जो माउमदयानमें राज करते थे। सिंहराव, रतनसिंह और मलसिंह ये तीनो चूड़पालके वंशधर थे। मलसिंहने अपने तीन लड़कोंके बीच राज बांट दिया। बड़े जत्पाल या जैत्पालके हिस्सेमें गागरोम्, मध्यम अदलजीके भागमें अमलवाद और छोटे विलासके भागमें रामगढ़ पड़ा। छोटे लड़के विलासके कोई पुत्र नहीं होनेके कारण उसका हिस्सा दोनों भाइयोंके बीच बराबर २ बांट लिया। अबुलफजलने आइन अकबरीमें लिखा है कि जैत्पालने कमाल उद्दीनका नाश कर मालवराज्य (१३२४ ई० में) अधिकार किया था।

जैत्पालके उत्तराधिकारी पांच मनुष्य थे—१ सावतसिंह, २ राव कण्ड्वा, ३ राजा पिपाजी, ४महाराज द्वारिकानाथ, ५ महाराज अचलदास। अचलदासके राजत्व कालमें मुसलमानोंने गागरोनपर आक्रमण किया। अचलदास खिचिराजकी पुरानी राजधानी खिचीपुरपाटन आत्मरक्षाके लिये भाग गये लेकिन पितृराज्यकी रक्षाके लिये १४४८ ई०में ये रणस्थल गये और मुसलमानोंके हाथसे मारे गये। इन्हींके साथ साथ गागरोनके ज्येष्ठ खीची राजवंशका भी शेष हो गया।

जैत्पालका छोटा भाई अदलजीके लड़केका नाम धारुजी था। ये अलाउद्दीन बारके समसामयिक थे। खीची वंशमें धारुजी सविशेष भक्ति और श्रद्धाके पात्र थे। राजपूत भाट आज तक भी उनका कीर्तिगान करते हैं। भट्ट ग्रन्थमें लिखा है कि प्रधान प्रधान राजपूत राजागण सुलतान अलाउद्दीनके साथ अपनी अपनी लड़कियोंका आदान प्रदान करते थे। किन्तु धारुजी प्रबल प्रतापी सुलतानके आदेशको नहीं मानते थे। इसीसे राजा धारुजी अपना राज्य खोकर वनवासी हो गये थे। अन्तमें सुलतानने उन पर संतुष्ट हो कर खीचीवारके २४, जिला इन्हें प्रदान किये। उनके बारह लड़के थे। जिसमेंसे परिसिंह ज्येष्ठ था। इसके शासनकालमें खीचीवार राज्य दक्षिणमें शारङ्गपूर और सुजालपूर तक और पूर्वमें भिलसा तक फैला हुवा था। राजपूत भाट ऐसा कहा करते हैं कि अरिसिंह साठ लाख हिन्दू और अठारह लाख मुसलमानके ऊपर शासन करते थे। उनके बाद इसी वंशके सात मनुष्य राजा हुवे। यथा सातावजी, हेमजी, आसमजा, रघुमल, रोहितास, दुर्गादास और शामिरसेन। इन सात राजाओंके समय कोई घटना न हुई थी। राजा शामिरका लड़के नारायणदासने हुमायूंको सहायता की थी इस लिये उन्हें पांच हजार मसनदारका पद मिला था। अकबर बादशाहने उनके लड़के गरिबदासको भामिरगढ़ दिया था। गरिबदासका लड़का दीपशाह था। सम्राट शाहजहां दीपशाहको बहुत मानते थे। उन्होंने दीपको बारह जिलाकी जागीर और सुलतान अधिकार प्रदान किया था। दीपशाहके लड़के गरिबदासको दो लड़के थे। बड़े लालसिंहने १६७७ ई०में राघवगढ़ स्थापित किया।

लालसिंहके तीन लड़के थे—धीरत्, सुजन, और केशरी, ये तीनो भाई क्रमानुसार राघवगढ़, रामनगर, और गढ़ामें राज्य करते थे।

धीरतके दो लड़के-गजसिंह और विक्रमादित्य थे। औरङ्गजेबके राज्यकालके अन्तिम समयमें जब सब वीर राजपूत उनके विपक्षमें थे और जिस उद्वेगमें बादशाहकी मृत्यु हुई थी उस समय राजा गजसिंह भी उस षड़यन्त्रमें लिप्त थे और अपना पितृसिंहासन छोटे भाईको अर्पण कर अपने राज्यके संग्रामसिंहके यहां आश्रय लिया था।

विक्रमादित्यके दो लड़के—बलभद्र और बुधसिंह थे। बलभद्रने पितृसिंहासन पाया और बुधसिंहने ईसागढ़की जागीर। आजतक भी ईसागढ़ बुधसिंहके वंशधरोंके अधीन है। राजा बलभद्रका पुत्र बलवन्तसिंह और उसका लड़का जयसिंह था। जयसिंहके राज्यकालमें महाराष्ट्र सेनाने खीचीराज पर चढ़ाई की। उनसे जयसिंहने ५२ बार लड़ाई की। १८१६ ई०को सेनापति बसत्ता पांच हजार अश्वारोही और ८ दल पैदल सिपाही और बहुत गोलागोली लेकर बजरङ्गगढ़ और जयनगर पर अधिकार जमाया और उसके बाद राघवगढ़के राजा जयसिंहके विरुद्ध अग्रसर हुये। वीरवर चौहान राजाने अदम्य साहससे कुछ समय तक

राजधानीकी रक्षा की। किन्तु उनका वैसा साहस और अध्यवसाय व्यर्थ हुआ। उनके घरहीके किसी शत्रुके षड़यन्त्रसे राघवगढ़ विपक्ष सैन्यके हाथ आ गया। जयसिंह सीपूर जङ्गलमें अपना प्राण बचानेके लिये भाग गया। १८१८ ई०को उसी चिन्तासे उनकी मृत्यु हुई। उनके लड़केका नाम दुकुलसिंह थे। इन्होंने अपहृतराज्यको उद्धार करनेके लिये बहुत स्थानोंसे सैन्य संग्रह कर शत्रुओंके विरुद्ध आक्रमण किया। इस समय ब्रटिशगवरमेण्टने १८२० ई०में राजा दूकुलसिंहको राघवगढ़ और बालभट जिला दिला दिया। तभीसे वह स्थान उन्हींके वंशधरोंके अधीन आ रहा है। यहांकी आमदनी १७५००० रुपये है। उसी समयसे वह स्थान ग्वालियर राजका करदराज्य हुआ।

खीज (हि० स्त्री०) १ चिढ़, झझलाहट। २ चिढ़नेकी बात, झुंझलाहट पैदा करनेवाली चीज।

खीजना (हिं० क्रि०) १ चिढ़ना, उकताना, बिगड़ना।

खीप (हिं० पु०) १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह सघन तथा सरल रहता और पञ्जाब, राजपूताना तथा अफगानस्तानमें उपजता है। पत्र क्षुद्र एवं लम्बे लगते और शीतकालको छोटे छोटे फूल खिलते हैं। यह पशुओंके खिलाने और रस्सियां बनानेमें काम आता है। २ लाजवन्ती। ३ शतधारा।

खीर (हि० स्त्री०) दुग्धपक्व तण्डुल, जाउर, तस्मई। पहले चावल चुन बिन करके सुखा लेते हैं। फिर उसे गर्म घीमें डाल अच्छी तरह भुना जाता है। चावल भुनते भुनते लाल हो जाने पर विशुद्ध दूध डालते हैं। जब दूधमें पकते पकते चावल फूल आता, चीनी देकर कड़ाही उतार ली जाती है। शीतल होने पर दूधमें बना हुआ यही भात 'खीर' 'जाउर' 'तस्मई' आदि नाम धारण करता है। खीर खानेमें फिर किसी चीज पर मन नहीं चलता।

खीरचटाई (हि० स्त्री०) अन्नप्राशन, पसनी, जिस दिन शिशुको सर्वप्रथम अन्न खिलाया जाये।

खीरमोहन (हि० पु०) एक बङ्गला मिठाई। यह छेनेका बनता है।

खीरा (हि० पु०) फलविशेष। खीरा कर्कटीजातीय एक फल है। यह वर्षा ऋतुमें उपजता और मोटा मोटा एक एक बित्ते तक लम्बा लगता है। खीराका सिरा काट दोनों कटे टुकड़ोंको छुरीसे गोद करके एक दूसरे पर रगड़ते हैं। इससे उसके मुंह पर फेन उमड़ आता है। फिर पहली कटी जगहके एक अङ्गुल नीचेसे दोबारा काटते हैं। कहते हैं, ऐसा करने पर खीरेका कड़ुवापन निकल जाता है। अन्तको छुरीसे बकला छील करके खीरा नमक और काली मिर्चकी बुकनीके साथ खाते हैं। यह खानेमें बहुत अच्छा लगता और डकार आने पर अपना ही मजा रखता है। खीरेकी तरकारी भी बनती है। इसके बीज ठण्डाईमें पीस कर पीये जाते हैं। खीरा शीतल होता और बहुत खानेसे शीतज्वर उत्पन्न कर देता है।

खीरी (हि० स्त्री०) बाख, चौपायोंके थनके ऊपरका मांस। इसमें दुग्ध उत्पन्न होकर अवस्थान करता है।

खील (सं० पु०) कील पृषोदरादिवत् साधु। कीलक, कांटा।

खील (हि० स्त्री०) १ लाई, भुना और खिला हुआ धान। २ कील, कांटा। ३ अलङ्कारविशेष, कोई जेवर या गहना। स्त्रियां इसे नाकमें पहनती और लौंग भी कहती हैं। ४ मुंहासेकी कील। ५ भूमिविशेष, कोई जमीन। बहुत दिन पीछे जोती जानेवाली भूमि 'खील' कहलाती है।

खीलना (हि० क्रि०) खील लगाना, गांठना।

खीली (हि० स्त्री०) पानका बीड़ा, लगा लगाया पान।

खीवन (हि० स्त्री०) उन्मत्तता, मस्ती।

खीवर (हिं० पु०) वीरपुरुष, बहादुर आदमी।

खीस (हिं० वि०) १ नष्ट, बरबाद, उजाड़। (स्त्री०) २ खिसियाहट, चिढ़। ३ कोप, गुस्सा। ४ बिगाड़, नाराजगी। ५ लज्जा, शर्म। ६ दांत निकालनेका भाव, ७ त्रिमार्ग घाटी। ८ दुग्धभेद। ब्यानेके पीछे ७ दिन तक होनेवाला गायका दूध 'खीस' कहलाता है। इसका अपर नाम पेउस है।

खीसा (हि० पु०) १ थैला, जेब। २ किसी किस्मकी थैली। यह कपड़ेकी बनती है। इसको हाथमें डाल

कर शरीर धोया मला जाता है। २ खोल, होंठोंके ऊपर दांतोंका निकास।

खुंटकढ़वा (हिं० पु०) कानमैलिया, कानका खूंट निकालनेवाला।

खुंटफारो (हिं० वि०) अति दुष्ट, निहायत पाजी, बड़ा बदमाश।

खुंड (हिं० पु०) १ तृणविशेष, एक घास। यह मोटा रहता और काली जमीनमें खूब उपजता है। खुंड दो हाथ तक बढ़ जाता और मोटा डण्ठल लाता है। इसका दूसरा नाम गुंड या गूनर भी है। पशु खुंड बहुत कम खाते हैं। २ गूंठ, गुठा, कोई पहाड़ी टट्टू।

खुंडला (हिं० पु०) क्षुद्र गृहभेद, टूटा फूटा या गिरा पड़ा झोपड़ा।

खुंदाना (हिं० क्रि०) कुदाना, नचाना, घोड़े पर चढ़के उसको कायदेसे चलाना फिराना।

खुक्ख (हिं० वि०) १ खाली, छूछा, जो रुपया पैदा खो या हार बैठा हो। २ खिलाल खाये हुआ, जो ताशके खेलमें हार गया हो।

खुखंड (हिं० पु०) राजिकाभेद, किसी किस्मकी राई।

खुखड़ा (हिं० पु०) सड़ा हुआ पेड़, खोखला दरख्त।

खुखड़ी (हिं० स्त्री०) १ कुकड़ी, आंटी, तकुवा पर लपेटा हुआ धागा। यह बुननेमें लगती है। २ छुरीकाभेद, किसी किस्मकी बड़ी छुरी। यह प्रायः नेपालमें तैयार होती है।

खुखुन्द—एक पुराना नगर। यह युक्तप्रदेशमें गोरखपुरसे १६ कोस दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। किसी समय खुखुन्देमें बहुतसे लोग रहते और पुण्यस्थान-जैसा समझते थे। आज भी इसमें भूरि-भूरि प्राचीन कीर्तियां पड़ी हैं। पुराविद् कानिङ्गहाम साहबने लिखा है—नालन्दाको छोड़ कर इतना प्राचीन ध्वंसावशेष कहीं देखनेमें नहीं आया।

आजकल इस नगरमें उतने लोग नहीं रहते। जगह जगह हिन्दुओंकी बहुतसी देवदेवियों और जैन तीर्थङ्करोंके तथा प्रतिमूर्तियां पड़ी हैं। परन्तु एक भी जैन देख नहीं पड़ता। बीचबीच गोरखपुर और पटनेसे श्रावक और जैन बनिये यहां देवदर्शनको आ जाते हैं। खुखुन्देमें हिन्दुओंके देवालय तथा देवमूर्तियां अधिकांश टूट गयी हैं।

खुगीर (फा० पु०) १ नमदा, घोड़ेके चारजामेमें नीचे की ओर लगनेवाला कपड़ा। २ जीन, चारजामा। बेकाम चीजोंका जमाव 'खुगीरकी भरती' कहलाता है।

खुङ्गाह (सं० पु०) खुमित्यव्यक्तं शब्दं कृत्वा गाहते, गाह-अच्। श्वेतपीतवर्णाश्व, सफेद पीले रङ्गका घोड़ा।

खुचर (हिं० स्त्री०) व्यर्थ दोषारोप, झूठी ऐबजोई।

खुजदार—बलूचिस्तानके कलात राज्यका प्रधान स्थान और कलात खां नायबके दैशी सहकारीका सदर। यह अक्षा० २७° ४८' उ० और देशा० ६६° ३७' पू०में पड़ता है। सिन्धी लोग इसको 'कोहियार' कहते हैं। इसके ऊपरि सिरे पर १८७० ई०को एक किला बना था। यहां उत्तरसे कलात, दक्षिणसे कराची तथा बेला पूर्वसे कच्छी और पश्चिमसे मकरात तथा खारानकी सड़क आ करके मिली है। ग्रीष्म ऋतुमें स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता।

खुजलाना (हिं० क्रि०) १ रगड़ना, नाखूनसे घिसना। २ खुजली उठना, सुरसुरी चलना।

खुजलाहट (हिं० स्त्री०) खुजली, सुरसुरी, चुल।

खुजली (हिं० स्त्री०) १ खुजलाहट, सुरसुरी। २ कण्डू रोग, खारिश्त, खाजको बीमारी।

खुजिस्तान—ईरानके दक्षिण-पश्चिम अवस्थित एक प्रदेश। इसके उत्तर लारिस्तान तथा बख्तियारी पर्वत, दक्षिण ईरानकी खाड़ी और पश्चिम शाटउल आरब है। खुजस्तानका शासन कार्य अब अरब और शुस्तरके शेखोंमें बंटा है। शुस्तर नगरमें ही इसकी राजधानी है। करुण, दिजफुल, जुराही, केरखा आदि बड़ी नदियां हैं। यहां बहुतसे लोगोंके घर नहीं, वह खेमोंमें ही रहते हैं। खोजस्तानमें भूगर्भस्थ गृह भी हैं। समोदा नामकी बड़ी जलाभूमि पहले कालडियन झीलका एक टुकड़ा थी। ग्रावोने इसका नाम 'सुसियाना' और हिरोदोतासने 'सिसा' लिखा है। केरसमाके पास पुराने शहरका भग्नावशेष है।

खुज्जाक (सं० पु०) खुज आक निपातनात् अकारस्य ह्रस्वत्वम्। देवताड़ वृक्ष।

खुभार (हिं० पु०) तृणमूलभेद, पेड़की एक जड़। यह भूमिके भीतर न चल ऊपर हो ऊपर चारो ओर फैल जाती है।

खल्लि—मध्यप्रदेशके रायपुर जिलामें दुर्ग तहसीलके अधीन एक जमीदारी। यह रायपुरसे २५ कोस दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। अक्षा० २१° ५७' उ० और देशा० ८१° ५७' ३० पू०में है। क्षेत्रफल (परिमाण) ७१ वर्ग-मील है। इसमें ३२ ग्राम और १४१८ घर हैं।

खुञ्चाक, खञ्चाक देखो।

खुटक (हिं० स्त्री०) १ खुटकनेका काम, ऊपरी तोड़ फोड़। २ खटका, फिक्र।

खुटकना (हिं० स्त्री०) उपरिभाग तोड़ना, सिरा कपटना। २ खटका होना, खड़खड़ाना।

खुटना (हिं० क्रि०) १ उद्घाटित होना, खुलना। २ अलग रहना, साथ छोड़ना। ३ पुरना, बाकी न रहना।

खुटपना (हिं० पु०) सदोषता, ऐबीपन, बुराई।

खुटाई (हिं० स्त्री०) खोटापन, बुराई, ऐब।

खुटाना (हिं० क्रि०) पुरना, बाकी न रहना।

खुटिला (हिं० पु०) कर्णालङ्कारभेद, कारनफूल।

खुटिला -युक्तप्रदेशीय फतेहपुर जिलेको खजुहा तहसील का एक गांव। यह ई० आई० रेलवेके बिंदकीरोड ष्टेशनसे ६७ कोस दक्षिण पड़ता है। इसमें कई एक देवमन्दिर बने और हिन्दी उर्दूकी एक पाठशाला भी है

खुटेरा (हिं० पु०) खदिरवृक्ष, खैरका दरख्त।

खुद (हिं० वि०) पृथक्, अलग।

खुद्दी (हिं० स्त्री०) १ कोई मिठाई। यह तिल और चीनी या गुड़ मिला कर बनायी जाती है। २ सम्बन्ध-विच्छेद, अलाहदगी।

खुड्डी (हिं० स्त्री०) खुरड, जखमकी पपड़ी। यह जखमका मवाद है, जो उसी पर जम जाया करता है।

खुठमेरा (हिं० पु०) धान्यभेद, किसी किस्मका मोटा धान।

खुड (सं० पु०) वातरक्तरोग, बाईके खूनका बीमारी।

खुडक (सं० पु०) खुनक लकारण्य डकार। गुल्फ, टखना। खुलक देखो।

खुडक (हिं० स्त्री०) खुटक, खटका।

खुडला (हिं० पु०) चिड़ियाखाना, मुर्गियोंका दर्बा।

खुडवात (सं० पु०) वायुरोगभेद, बाईकी एक बीमारी।

खुड वा (हिं० पु०) घोघी, सर पर तेहरा चौहरा करके डाला जानेवाला कम्बल या कोई दूसरा कपड़ा। पानी या सर्दीसे बचनेके लिये खुड वा लगाया जाता है।

खुड्डाक (सं० त्रि०) १ क्षुद्र, नाचोज। २ क्षुद्र, छोटा। ३ कनिष्ठ, पिछला।

खुड्डाकपद्मतैल (सं० स्त्री०) वातरक्तका एक तैल, बाईके खूनकी बीमारी पर लगाया जानेवाला एक तैल।

खुड्डी (हिं० स्त्री०) सण्डास, पाखानेका गड्ढा।

खुशडावाड—बम्बई प्रान्तके भावनगर राज्यका एक नगर। यह महुवासे उत्तर-पश्चिम १३ मील दूर पड़ता है। इस स्थानसे एक मीलकी दूरी पर सिंघा-घार नामकी एक बौद्ध गुफा है। लोग उसको अघोरी बाबाकी गुफा कहते हैं। किसी सुन्दर दुर्गका ध्वंसा-वशेष भी यहां विद्यमान है। मालूम होता है कि मुसलमानोंकी अमलदारीमें यहां एक थाना भी रहा। दुर्गके कूपको 'पांच बीबीकी कुवो' कहते हैं। जैनों वैष्णवों और स्वामी नारायणके अनुयायियोंके अच्छे अच्छे मन्दिर बने हैं। खुशडावाडमें व्यापार भी बहुत होता है। यह मालन नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित है। इसकी पूर्व और पांच मीलकी दूरी पर मालन, रोझकी और लिलियो तीन नदियों का सङ्गम है। इसी सङ्गमका नाम त्रिवेणी है और वहां त्रिवेणेश्वर महा देवका मन्दिर बना है। श्रावण कृष्णा अमावस्याको वहां एक बड़ा मेला लगता है। यहां आम और नारियलकी उपज अच्छी है।

कहते हैं कि चम्पाराजवालके मादरोडमें राज्य शासन करते समय वह भूभाग निर्जन था। उनके २ पुत्र रहे—डेमगन और गांगायत। उन्होंने अपने पितासे विवाद करके वहां एक झोपड़ा जा बनाया। उसी समय मांगरोलके भूतपूर्व गवर्नर फतेह खान् अपने बापसे बिगड़ लूटमारका कितना ही खजाना ले अपनी ५ बीवियोंके साथ वहां पहुंचे। उन्होंने इस

दोनों भाइयोंसे मेलजोल बढ़ाया था। परन्तु इनमेंसे प्रत्येक उनके वधकी गुप्त चेष्टामें लगा रहता और बिना दूसरेको कोई खबर दिये रुपया ले लेना चाहता। अखीरोंके आपसमें झगड़ा बढ़नेसे हेमगजने उनको गांगायतके दुर्भावकी सूचना दी। फतेहखांने गङ्गा यतदो जहर दे एक किला बनाया। अहमदशाहने फौज भेज करके किला घेरा था। पहले तो फतेहखां की तोड़ करके खड़े, परन्तु पीछेसे गियासद्दीपको भाग खड़े हुए। उनकी ५ बीबियोंने कूएंमें गिर करके प्राणत्याग किया था। उसीसे उक्त कूए 'पांच बीबो नो कुआ' नाम पर अभिहित हुआ है। सुलतानकी फौजने पीछा करके फतेह खांको पकड़ लिया और अहमदाबादमें कैद कर दिया। वहीं उनका मृत्यु हुआ था। फिर हेमगलजीने उसे अधिकार किया और कुछ पीढ़ियों तक उनके वंशज यहां रहे। इस वंशके बाल खेंगारजी अन्तिम वीर थे। उनकी नौकरीमें बहुतसे बनार अहीर रहे। परन्तु यह उनको बहुत सताया करते थे। इसीसे उन्होंने खेंगारजीको जो आमता पकड़ करके हाजीमें डाल दिया और उनका काम तमाम किया। अहीरोंने मालिक बन करके लूटमार मचायी थी। परन्तु मुसलमानोंने उन्हें जीत करके यहां एक थाना बैठाया। मुगल साम्राज्य नष्ट होने पर कुण्डलके मुसलमानोंने इसे लूटा और मार उजाड़ा। १७८५-८६ ई०को ठाकुर वखत सिंहजीने मङ्गुआ विजय करने पीछे इसे फिर बसाया था। उसी समयमें यह भावनगर राज्यमें लगता है। लोकसंख्या प्रायः दो सहस्र है।

खुतन—पूर्व्व तुर्किस्तानके मध्यवर्ती एक जनपद। यह इयरकान्दके दक्षिण-पूर्व खुतन और काराकास नदियोंके सङ्गमस्थान पर अक्षा० ३७° १५´ उ० और देशा० ७९° २५´ पू०में अवस्थित है।

मध्य एसियामें यह जनपद अतिप्राचीनकालसे ही समृद्धिशाली जैसा प्रसिद्ध है। ई०से १४० वर्ष पहले इसका चीनके साथ बड़ा सद्भाव था। उस समय बौद्धधर्मका अधिक प्रचार था।

खुतन नगर चारों ओरसे दुर्भेद्य प्राचीरसे घिरा हुआ है। यहां अठारह हजार घर हैं और डेढ़ लाख मनुष्य रहते हैं। विदेशी वणिकके ठहरनेके लिये दश सराय हैं। बहुतसे मनुष्य व्यापार करनेके लिये यहां आते हैं।

खुतबा (अ० पु०) १ प्रशंसा, तारीफ। २ राजाके यशकी घोषणा।

खुताइन—युक्तप्रदेशके जौनपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५° ५०´ एवं २६° १२´ उ० और देशा० ८२° २१´ तथा ८२° ४६´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका रकबा ३६२ वर्गमील है। खुताइनमें ५ परगने और ७०० गांव लगते हैं। लोकसंख्या २१८४३८ है। किसानोंको ५१७०५०) रु० मालगुजारी देनी पड़ती है। इसमें २७००००) रु० राजस्व है। इस तहसीलमें गोमती नदी बहती है। इसी नदीकी राह लोग आते जाते हैं। खुताइन ग्राममें कचहरी लगती है। यह स्थान अक्षा० २५° ५८´ ७´´ उ० और देशा० ८२° ३६´ ५८´´ पू०में गोमती नदीके किनारे जौनपुर शहरसे ८कोस उत्तर-पश्चिम पड़ता है। गांवमें कोई १ हजार लोग बसते हैं। बुधवार और शनिवारको बाजार भरता है।

खुत्थ (हिं० पु०) ठूंठ, वोटा, पेड़का एक हिस्सा। पेड़ काट डालने पर जड़का जो ऊपरी भाग बच जाता, खुत्थ कहलाता है।

खुत्थी (हिं० स्त्री०) १ खूंथी, खोभर। यह ज्वार अरहर आदिका वह अंश है, जो फसल कट जाने पर भी भूमिमें लगा रहता है। २ धरोहर, अमानत, थाती। ३ वसनी, रुपया रखनेकी थैली। खुत्थीको रुपया भर करके कमरमें बांध लेते हैं। ४ सम्पत्ति, दौलत, रुपया, पैसा।

खुद (फा० अव्य०) स्वयं, अपने आप।

खुदकाश्त (फा० स्त्री०) कृषिभूमिभेद, खेतीकी एक जमीन। जिस भूमिको उसका प्रभु अपने आप जोतता बोता, खुदकाश्त कहा जाता है। परन्तु खुदकाश्त सीर नहीं होती।

खुदकुशी (फा० स्त्री०) आत्महत्या, अपने आपको मार डालनेका काम।

खुदगरज़ (फा॰ वि॰) स्वार्थपर, मतलबी, अपना काम बनानेवाला।

खुदगरज़ी (फा॰ स्त्री॰) स्वार्थपन, अपना मतलब देखनेकी बात।

खुदना (हिं॰ क्रि॰) विदीर्ण होना खुद जाना।

खुदमुख्तार (फा॰ वि॰) स्वतन्त्र, जो किसीसे दबता न हो।

खुदमुख्तारी (फा॰ स्त्री॰) स्वातन्त्र्य, आज़ादी, दूसरेके दबावमें न रहनेकी बात।

खुदरा (हिं॰ पु॰) क्षुद्र वस्तु, फुटकर चीज। फुटकर चीजें बेचनेवालेको 'खुदरा फरोश' कहा जाता है।

खुदराय (फा॰ वि॰) मनचला, अपनी तबीयतके मुवाफिक काम करनेवाला।

खुदरायी (फा॰ स्त्री॰) स्वेच्छाचारिता, अपनी मर्जीके मुताबिक काम करनेकी बात।

खुदवाना (हिं॰ क्रि॰) खोदनेके काममें दूसरेको लगाना, खनन कराना।

खुदवायी (हिं॰ स्त्री॰) १ खुदवानेका काम। २ खोदनेकी मजदूरी।

खुदा (फा॰ पु॰) परमेश्वर, ईश्वर।

खुदाई (फा॰ स्त्री॰) १ ऐश्वभाव, खुदाकी सिफत। २ सृष्टि, दुनया।

खुदाई (हिं॰ स्त्री॰) १ खोदनेका काम। २ खोदनेकी बात। ३ खोदनेकी उजरत।

खुदागञ्ज—युक्तप्रान्तके शाहजहांपुर जिलेकी तिलहर तहसीलका एक नगर। यह अक्षा॰ २८ ८´ ४० और देशा॰ ७८ ४४ पूर्में अवस्थित है। लोकसंख्या कोई ६१२६ है। कहते हैं कि १८वीं शताब्दीके मध्यभागको यहां एक बाजार बनाया गया, यहां १८५० ई॰ तक अंगरेजोंके अधीन अपना तहसीलका सदर रहा।

खुदावन्द (फा॰ पु॰) १ परमेश्वर। २ अन्नदाता, मालिक। ३ महाशय, हुजूर।

खुदाबन्द खान्—अमीर उल उमरा शायस्ता खान्के लड़के। यह अपने बापके जीतेजी एक हजारी मनसबदार और बरारदबके शासनकर्ता थे। १६८४ ई॰को अपने पिताके मरने पर इन्होंने दिल्ली जाकर अमानत उल् मुलुक असद खाकी लड़कीसे शादी की। १७०० ई॰में औरङ्गजेबने इन्हें बिदर और बीजापुर-कर्णाटका शासनकर्ता और अढ़ाई हजारी मनसबदारका पद प्रदान किया। बादशाहके मृत्यु समय ये तीन हजारी मनसबदार हुवे थे। बादशाहके मरने पर उनके लड़कोंके विवादमें यह आजिमशाहका पक्षावलम्बन कर लड़े थे और १७०१ ई॰को लड़ाईमें आहत होकर पञ्चत्वको प्राप्त किया।

खुदावाद—भारतका एक प्राचीन नगर। यह सिन्धुप्रदेशके करांची विभागके अन्तर्गत दादू तालुकके बीचमें है। दादूसे ४ कोस दक्षिण-पश्चिम और सेहवानसे ८ कोस उत्तर-पूर्व है। अक्षा॰ २६ ४०´ उ॰ और देशा॰ ६७´ ४६ पू॰में अवस्थित है। आजकल यह नगर श्रीहीन हो गया है। सत्तर वर्ष पहले तलपुरके मीर यहां वास करते थे। उस समय यह समृद्धिशाली था और बहुतसे मनुष्य रहा करते थे। तलपुरके मीरोंका मकबरा आज भी इसकी पहली बढ़तीका परिचय देता है।

खुदियां—पञ्जाब-प्रान्तके लाहोर जिलेकी चुनियां तहसीलका एक नगर। यह अक्षा॰ ३०° ५९´ उ॰ और देशा॰ ७४ १७´ पू॰में मूलतान फिरोजपुर रोड पर पड़ता है। आबादी लगभग ३४०१ है। नगरके पास ही एक नहर बहती है। १८७५ ई॰को यहां म्युनिसपालिटी बनी। नगरमें एक अस्पताल है।

खुदी (फा॰ स्त्री॰) १ अहम्मन्यता, अपनी धुन। २ अभिमान, शेखी।

खुद्दी (हिं॰ स्त्री॰) १ कणा, किनकी। २ तलछट, कम्पके रसके नीचे बैठ जानेवाला मैल।

खुनकी (फा॰ स्त्री॰) शीतलता, सरदी।

खुनखुना (हिं॰ पु॰) बालकोंका एक खिलौना। इसे झुनझुना या झुनझुना भी कहते हैं। हाथमें पकड़ कर हिलानेसे यह खुनखुनाने लगता है। छोटेमें इसमें लकड़ी, लोहे या किसी दूसरी धातुका खोखला पोला लट्टू जोड़ दिया जाता है। उसीमें छोटे छोटे कंकड़ या दूसरे कड़े दाने भरे रहते, जो खुनखुनके हिलते ही आवाज़ देने लगते हैं।

खुनती–१ बिहारके रांची जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २२° ३८´ तथा २३° १८´ उ० और देशा० ८४° ५६´ एवं ८५° ५४´ पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल ११४० वर्गमील है। लोकसंख्या १८८७३० होगी। १९०५ ई०में उसको उपविभाग बनाया गया।

२ बिहार-रांची जिलेके खुनती उपविभागका सदर। यह अक्षा० २३° ५´ उ० और देशा० ८५° १६´ पू०में अवस्थित है। आबादी प्रायः १४४६ है। अपने प्रान्तमें यह केन्द्रीय व्यापारका स्थान है।

खुनदलु—पञ्जाबके हिन्दू राज्योंके बीच एक ह्रद (Lake) यह शतद्रुसे शिवालिक तक फैला हुआ है और १३८ फीट गहरा है। समुद्रपृष्ठसे २८०० फीट ऊंचा है।

खुनस (हिं० स्त्री०) बिगाड़, नाराजगी, अनबन।

खुनसाना (हिं० क्रि०) बिगड़ना, नाराज होना।

खुनसी (हिं० वि०) गुस्सावर, बिगड़ उठनेवाला।

खुफिया (फा० वि०) छिपा हुआ, पोशीदा।

खुफिया पुलिस (हिं० स्त्री०) सफेद पुलिस, सी० आई० डी०।

खुभना (हिं० क्रि०) चुभना, धंसना, घुसना, लगना

खुभी (हिं० स्त्री०) १ कर्णालङ्कारविशेष, कानमें पहननेको लौंग। २ खुमी।

खुसरा (फा० पु०) किसी किस्मके फकीर। यह भीख मांगते और मुसलमान होते हैं। खुसरा अधिकतर पश्चिममें ही देख पड़ते हैं।

खुमान—चित्तौरके एक राणा। यह बाप्पाके पुत्र, अपराजितके पौत्र और राणा कालभोजके प्रपौत्र थे। इनका अपर नाम कर्ण था। योगीवर हारीतके तपस्या स्थल पर एकलिङ्गका प्रसिद्ध मन्दिर बनाया था। ९वीं शताब्दीके आरम्भ होमें पिताके मरने पर यह चित्तारके सिंहासन पर बैठे। इनके राजत्व-कालमें ८१२–३६ ई०का मुसलमानोंने कई बार चित्तौर पर आक्रमण किया। खुरासानके अधिपति मुहम्मद इस दलके अधिनायक थे।*

खुमान चौबीस बार अदम्य उत्साहसे शत्रु विरुद्ध लड़े। फिर इन्होंने ब्राह्मणोंके परामर्शसे अपने छोटे लड़के जगराजको राजा बनाया किन्तु थोड़े दिनके बाद ही उनकी बुद्धि पलटी। परामर्शदाता ब्राह्मणोंको नाश कर फिर भी राजगद्दी पर बैठे।

इस समय वे बहुत दिन तक राजा न रहे। पापका प्रायश्चित्त पड़ा। ईश्वरकी इच्छासे उनके दूसरे पुत्र मङ्गल-ने उनको शीघ्र ही राजच्युत और निहत करके पितृसिंहासन आरोहण किया। खुमान स्वजातीयोंमें ऐसे गौरव और सम्मानभाजन हुए थे कि आजतक भी उदयपुरमें किसी व्यक्तिके पद मर्दन होने या विपद-की आने पर पार्श्वस्थ मनुष्य "खुमान तुम्हारी रक्षा करें" कह कर आशीर्वाद दिया करते हैं।

खुमान—बुंदेलखण्डस्थ चरखारी राज्यके एक हिन्दी कवि। इनका जन्म १६८३ ई०को हुआ। यह जन्मान्ध और बिलकुल अशिक्षित थे। कहते हैं—कोई साधु पुरुष एक बार इनके घर गये और ४ मास वहां निवास-करके जब जाने लगे, बहुतसे सम्भ्रान्त पुरुष उन्हें चर-खारीसे बाहर पहुंचाने लगे। थोड़ी दूर पहुंचने पर दूसरे लोग तो लौट पड़े, परन्तु साधुके प्रत्यावर्तनका बहुत कहने पर भी खुमान उन्हींके पास ठहर गये। खुमानकी दलील थी–मैं क्यों अपने घर वापस जाऊं? मैं अन्ध, अशिक्षित और घरके किसी कामका नहीं। मसल मशहूर है—धोबीका कुत्ता घरका न घाटका। साधुने इस पर सन्तुष्ट हो इनकी जिह्वा पर सरस्वती-मन्त्र लिख दिया और इनसे पहले अपने कमण्डलुको वर्णनामें कविता बनानेको कहा। उन्होंने इसकी प्रशं-सामें शीघ्र ही २५ कवित्त बनाये, फिर साधुके चरण छू करके घर वापस आये। यह संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओंकी कविता करते थे।

एकबार इन्होंने ग्वालियरमें सेंधिया राजाके कहनेसे रात भरमें ७०० श्लोक लिखे। 'लक्ष्मणशतक' और 'हनुमान् नखसिख' इनके प्रधान ग्रन्थ हैं।

खुमान सिंह—इनका उपनाम खुमान रावल गुहलोत था। यह मेवाड़ प्रान्तीय चित्तौरके राजा थे। ८३० ई० इन्हींके सम्मानमें 'खुमान रायसा' ई० १८वीं

* खलीफा हारूं अल् रशीदने अपने पुत्र अल मामूंको खुरासान सिन्ध और भारतीय यमन राज्य दे डाला था। वही मामूं महाराज खुमानके समकालवर्ती रहे। सुतरां स्पष्ट ही अनुमित होता है कि लिपिकारोंने भ्रमवशतः मामूंके बदले मुहम्मद लिख दिया होगा।

भाषाटीका लिखा गया। इसमें खुमान रावल और उनके वंशका इतिहास दिया हुआ है।

खुमार (अ० पु०) १ नशा, मद। २ नशेका उतार।

खुमारी (हिं० स्त्री०) खुमार देखो।

खुमी (हिं० स्त्री०) १ क्षुद्र उद्भिदोंकी एक जाति। इनमें पत्ते या फूल नहीं लगते। भूंफोड़, ढिंगरी, कुकुरमुत्ता आदि [illegible] भी खुमी कहलाते हैं। यह हरित कोषाणुसे शून्य रहते, दूसरे वृक्षोंकी भांति मृत्तिका प्रभृति पदार्थोंसे अपने शरीरकी पुष्टि नहीं कर सकते, केवलमें सफेद या मटमैले लगते और अन्य वृक्षों या कीड़ोंको आहार करते हैं। वर्षा ऋतुको सड़े आद्र काठ पर गोल गोल छोटी खुमी लग जाती है। इसे कठफूल कहा जाता है। इसमें जहर होता है। खुमीका शरीरकोष अन्य वृक्षोंसे विभिन्न रहता है। इसके कोषाणु सूत जैसे लम्बे निकलते हैं। खुमी दो प्रकारकी होती है—हरे भरे वृक्षोंके रससे पलनेवाली और सड़े गले मुर्दे से लेनेवाली। पहली तो गेहूंकी बालमें बनाती पर लग जाती और दूसरी कठफूल, भूफोड़ आदिका रूप बनाती है। इसके वृक्ष एक इंच से आठ दस इंच तक बढ़ते, फूलनेमें कोमल लगते और छाते जैसे देख पड़ते हैं। इसीसे खुमीका अंकुर नाम छाता है। इसकी छतरीमें कई परत रहते हैं। भूफोड़, ढिंगरी आदिको खाया भी जाता है। मांसानु

२ दांतोंमें जड़ी जानेवाली सोनेकी कील। ३ हाथी के दांतों पर चढ़ाया जानेवाला धातुका बना हुआ छल्ला।

खुंड (हिं० स्त्री०) अन्नकी सूखी पत्ती।

खुर (सं० पु०) खुर क। १ शफ, सुम, टाप। यह पशुओंके पांवका निम्नस्थ भाग है और उनके उत्थित होने पर भूमिसे संलग्न रहता है। सींगवाले चौपायोंके खुर बीचसे फटे होते हैं। २ कोलदल, बेरकी पत्ती। ३ नखीनाम गन्धद्रव्य। ४ खट्वादि पादुक, पायोंके नीचेका हिस्सा।

खुरक (सं० पु०) खुर इव कायति, कै क। १ तिलवृक्ष। २ कोकिलाक्षक्षुप। (क्लो०) ३ उत्तम नृत्य।

खुरक दोगा (हिं० पु०) रक्तधातुभेद, विरनकुरी रोगा। यह मृदु, श्वेतवर्ण तथा शीघ्र गलनेवाला होता है।

खुरका (हिं० स्त्री०) १ तृणविशेष, किसी किस्मकी घास। यह अफीमको बिगाड़ देती है।

खुरखुर (हिं० पु०) १ कण्ठशब्दभेद, गलेकी एक आवाज। यह कफाधिक्यके कारण श्वास लेते समय कण्ठसे निकलता है। इसे 'घरघर' भी कहते हैं। २ धीरे धीरे खरोंचनेकी आवाज। ३ दबे पांवों चलनेका शब्द।

खुरखुरा (हिं० वि०) खुरदरा, नौबाज़दार, गड़नेवाला।

खुरखुराना (हिं० क्रि०) १ खुरखुर करना। २ घरघराना। ३ गड़ना, नीवा ऊंचा पड़ना।

खुरखुराहट (हिं० क्रि०) १ श्वासप्रश्वासके समय कण्ठ-स्वरको कफ आदिसे उत्पन्न होनेवाली एक विकृति। २ खुरदरापन, नाहमवारी।

खुरचन (हिं० पु०) १ कोई मिठाई। दूधको कड़ाहीमें चढ़ा करके गर्म करते और मलाईको कड़ाहीकी चारों ओर एक सीकसे चढ़ाते चलते हैं। इसी प्रकार जब दूधका सब पानी जल जाता और कड़ाहीकी चारों ओर लगी मलाई जम जाती, कड़ाहीको नीचे उतार ठण्डा कर देते और मलाईको छुरीसे खुरच लेते हैं। इसमें चीनी डालनेसे खुरचन तैयार बनता है। यह खानेमें बहुत अच्छा लगता है। २ कड़ाहसे खुरचा हुआ गुड़। ३ खुरच कर निकाली जानेवाली कोई चीज।

खुरचना ((हिं० क्रि०) करोचना, करोना, किसी जमी हुई सख्त चीजको छुरीसे निकालना।

खुरचनी (हिं० स्त्री०) १ कसेरोंका कोई औजार। यह छेनी जैसा रहता और बरतन साफ करनेमें चलता है। २ चर्मकारोंका कोई यन्त्र। ३ खुरचनेका काम देनेवाली कोई चीज।

खुरचाल (हिं० स्त्री०) कुत्सिताचरण, बुरा काम, पाजीपन।

खुरचाली (हिं० वि०) धमदायी, बदमाश, [illegible]।

खुरचौ (हिं० स्त्री०) पछाड़ी, बड़ा ढेला। यह कपड़ेको

अच्छी खासी बनती है। बीचमें दोनों ओर आवश्यक वस्तु रखनेके लिये मुंह होता है। यह मुसाफिरोंके बड़े कामकी चीज है। दो थैले रहनेसे इसे अनायास घोड़े पर रख या कान्धे पर डाल सकते हैं। जैसा आराम खुरजीमें सामान रख कर चलनेसे मिलता, वैसा या ट्रङ्कमें देख नहीं पड़ता।

खुरट (हिं० पु०) खुररोगविशेष, चौपायोंके खुमकी एक बीमारी। इसे खुरा, खुरहा या खुरपका भी कहते हैं। नादानके कीचड़में जानवरको बनानेसे खुरट सिट जाता है।

खुरणस (सं० त्रि०) खुर इव नासिका अस्य बहुव्री० नसादेशः टच् णत्वञ्च। चिपिटनासिक, नकचपटा।

खुरतार (हिं० स्त्री०) खुरका आघात, टापकी चोट

खुरथी (हिं० स्त्री०) कुलत्थ, कुलथी।

खुरदा (खुरधा) उड़ीसाके अन्तर्गत पूरी जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा० १९° ४१´ एवं २०° २६´ उ० और देशा० ८४° ५६´ तथा ८५° ३२´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका परिमाण फल ९७१ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ३५८२३६ है, जिसमें हिन्दुओंकी संख्या अधिक है। यहां १२१२ गांव बसते हैं। यह उपविभाग दो थानोंमें विभक्त है। खुरदा और वाणपुर।

उड़ीसाके प्राचीन हिन्दूराजाओंके अधःपतन होने पर शेष राजा यही क्षुद्र उपविभाग मात्र लेकर थोड़े समय तक स्वाधीन थे। इसके जङ्गल और पर्वतादि महाराष्ट्र अश्वारोही सेनासे दुर्भेद्य और दुरारोह होने-होके कारण वे अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करते आये थे। अन्तमें १८०४ ई०को यहांके राजाने अङ्गरेज-राज्य के विरुद्ध अस्त्र धारण किया, इसका परिणाम यह हुआ है कि अङ्गरेज-राजाने इनका राज्य छीन लिया। तभीसे यह अङ्गरेजोंके अधीन चला आ रहा है।

गौराङ्गमहाप्रभुके समसामयिक सूर्यवंशीय राजा प्रताप रुद्रदेवका १५२४ ई०को स्वर्गवास हुआ। इसके साथ साथ सूर्य वंशका गौरव भी नष्ट हो गया। उनके मरने पर उनके ३२ लड़कोंमेंसे बड़ा लड़का राजा बना। लेकिन वह प्रभूत क्षमताशाली मंत्री गोविन्द-विद्याधरके हाथसे मारा गया। उसके बाद दूसरा लड़का राजा हुआ। वह भी मन्त्रीके कौशलसे मन्त्रिपुत्र मधु श्रीचन्दन-के हाथसे प्रतापरुद्रके अवशिष्ट लड़कोंको भी मार डाले गये। राज्यके अनेक क्षमताशाली मनुष्योंको मार कर मंत्री गोविन्दविद्याधर अकण्टक राज्य पाकर १५३३ ई०में राजा गोविन्ददेव नाम ग्रहण कर राज-सिंहासन पर बैठा। उस समय मुकुन्द हरिचन्दन नामका एक सेनानी और प्रधान मन्त्री दनार्दन विद्याधर विशेष विख्यात थे। मुकुन्द कटकके शासनकर्ता हो कर राजा उपनामसे विख्यात थे।

इस समय बङ्गालके मुसलमान शासनकर्ता और दक्षिणमें गोलकुण्डाके मुसलमान राजाओंने उड़ीसाके विरुद्ध अस्त्र धारण किया। राजमहेन्द्री प्रभृति गोदावरी तीरस्थ स्थान लेकर गोलकुण्डा राजाके साथ विवाद ठाना। इस विवादके लिये युद्ध प्रारम्भ हुआ। राजा गोविन्द देव राज्य छोड़ कर आठ मास तक सालिगण्डा नामक स्थानमें रहनेके लिये बाध्य हुये। इस समय इनके दो भ्रातृपुत्र रघुभञ्ज छोटरा और बलही श्रीचन्दनने जगन्नाथजीके मन्दिरके पार्षदोंको विनाश किया और कटकके शासनकर्ता मुकुन्द हरिचन्दनको कटकसे भगा कर राज-सिंहासनको ग्रहण किया। राजा गोविन्ददेवने इस संवादको पा कर गङ्गातीरमें अपने दोनों भ्रातृपुत्रको परास्त किया। आप गङ्गातीर पर मृत्युके करालग्रासमें फंस गये और तत्पश्चात् मन्त्री दनाई विद्याधरने प्रतापरुद्रदेव नामके एक मनुष्यको राजसिंहासन पर बैठाया। यह बहुत अत्याचारी राजा थे। सिर्फ मन्त्री होके उनसे आठ वर्ष राज्य करने बाद निःसन्तान अवस्थामें इन्होंने देह त्याग किया। उसके बाद नरसिंह जाना नामक एक सामन्त सरदार मुकुन्द हरिचन्दनकी सहायतासे दनाई-विद्याधरको कारावद्ध करके आप सिंहासन पर बैठ गये। इस समय राजा गोविन्ददेवका भ्रातृपुत्र रघुभञ्ज छोटराने सैन्य संग्रह करके राज्य पर हमला किया; किन्तु मुकुन्द हरिचन्दनने उसे कैद कर डाला। एक वर्षके बाद, नर-सिंहजाना सिंहासनसे च्युत किया गया। अन्तमें मुकुन्द हरिचन्दनने तेलङ्गी मुकुन्ददेव नामसे १५५० ई०में राज-सिंहासन ग्रहण किया। ये बड़े विवेचक अतु

दयालु राजा रहे। अपने बुद्धिबलसे इन्होंने त्रिवेणी तकके देश अधिकार कर त्रिवेणीमें घाट और मन्दिर स्थापन किया। इन्हींके समय बङ्गालका नवाब सुलेमानके सेनापति कालापहाड़ने १५५८ ई०में राजाको परास्त और मार कर उड़ीसाको अपने अधिकारमें कर लिया।

मुकुन्ददेवके बाद दो मनुष्य नामको मात्रके राजा हुये और वे दोनों मुसलमानोंके हाथसे मारे गये। तत्पश्चात् उड़ीस-राज्य २१ वर्ष तक अराजक अवस्थामें मुसलमानोंके अधिकारमें रहा। नामको भी एक राजा नहीं था। उसके बाद बहुतसी गड़बड़ीके पीछे दनाई मन्त्रीके पुत्र रघाई रामचन्द्रदेवने १५८० ई० को सर्दारोंके अभिप्रायानुसार-उड़ीसा महाराज नामसे सिंहासन ग्रहण किया। दनाई विद्याधर गजपति वंशके थे, इसलिये इनको अन्यान्यको 'गजपतिवंश' नामसे विख्यात थी। उनके पूर्व्वगौरव नष्ट होने पर भी यह 'जमिदार वंश' नामसे पुकारा जाता है। महाराज रामचन्द्रदेवहीने कालापहाड़के ध्वंसावशिष्ट देवमन्दिरादिका निर्म्माण, संस्कार और देवमूर्त्तियोंका उद्धार किया। जगन्नाथदेवकी मूर्त्ति भी इसी समय नूतन प्रस्तुत की गयी। १५८२ ई०को राजा मानसिंह यहांके शासनकर्त्ता होकर आये। इस समय तेलङ्ग मुकुन्ददेवके दो लड़के और राजा रामचन्द्रके बीच राज्य पानेको तकरार उठी। राजा मानसिंहने मध्यस्थ होकर इस गड़बड़ीको इस शर्त्तपर शान्त कर दिया कि खुरदा प्रदेश और पुरुषोत्तमक्षेत्र बिना करके महाराज रामचन्द्र भोग करेंगे और महाराजकी उपाधि इन्हींको रहेगी। किला आल और उसके अधीन अन्यान्य स्थान तेलङ्ग मुकुन्द देवके ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र रायके अधिकारमें और सारङ्गगड़ चकोरी मुकुन्द के द्वितीय पुत्रके अधिकारमें रहेगा। ये भी राजा कहलायेंगे किन्तु महाराज रामचन्द्र ही १२९ किलाके ऊपर हुकूमत करेंगे और सबोंमें इन्हींकी प्रधानता रहेगी।

खुरदामें निम्नलिखित राजा राज्य करते थे—

रामचन्द्रदेव	१५८० ई०
पुरुषोत्तमदेव	१६०८
नरसिंहदेव	१६३०
गङ्गाधरदेव	१६५५
बलभद्रदेव	१६५६
मुकुन्ददेव	१६६४
दिव्यसिंहदेव	१६८२
कृष्ण वा हरिकृष्णदेव	१७१५
गोपीनाथदेव	१७२०
रामचन्द्रदेव (२रा)	१७२७
वीरकिशोरदेव	१७४२
दिव्यसिंह देव (२रा)	१७८६
मुकुन्ददेव (२रा)	१७९८

इनो अन्तिम राजाने अङ्गरेजोंके विद्रोही हो कर अपना राज्य नष्ट किया। इस वंशके राजगण अभीमें नामको मात्रके 'जगन्नाथका राजा' या 'उड़ीसाराज' कहलाकर राजदरबारमें सम्मानित होते थे, किन्तु यथार्थमें ये सिर्फ साधारण जमींदार।

अन्यान्य विशेष विवरण उत्कल शब्द देखो।

खुरदार्य (हिं० पु०) बैलोंसे अनाज मांडनेका काम।

खुरनस् (स० त्रि०) विकलनेन टच् अलच्। चपटनेवाला।

खुरपका (हिं० पु०) पशुरोगभेद, चौपायोंकी एक बीमारी। इसमें उनके मुख तथा खुरोंमें दाने उभर आते, मुखसे लालास्राव होता, देह गर्म हो जाता, तथा श्वास चलता और पांव रखना कठिन पड़ता है।

खुरपा (हिं० पु०) १ बड़ो खुरपी। यह औज़ार लोहेका बनता और पकड़नेके लिये काठका दस्ता लगता है। इसको घास छीलने और ज़मीन गोड़नेमें व्यवहार करते हैं। २ चर्मकार यन्त्रभेद। इससे छील कर चमड़ा साफ किया जाता है।

खुरप्र (स० पु०) खुर इव प्राति, प्र। प्रा क। वाण विशेष, किसी किस्मका तीर।

खुरफ (हिं० पु०) कुलफा, एक साग। यह लोनियाँ जैसा होता है।

खुरमा (अ० पु०) १ खारक, छोहारा। २ कोई पकवान। खुरमा मीठा और नमकीन दोनों तरहका बनता है। पहले मोटा आटा मोयन डाल कर दूधमें साना और उसी समय इच्छानुसार चीनी या नमक डाला जाता है। फिर मोटी रोटी जैसा उसको बेल कर छोटे छोटे लम्बे तिकोने या चौकोर टुकड़े उतारते और उन्हें घीमें लाल करके भूनते हैं। कोई कोई सादे खुरमे बना कर भी चीनीमें पाग लेता है।

खुरली (सं० स्त्री०) खुरैः सह लाति पौनःपुन्येन यत्र, ला-क गौरादित्वात् ङीष्। १ शस्त्रप्रयोग, अस्त्रशिक्षा, हथियार चलानेकी तालीम। २ विपक्षके आक्रमणसे आत्मरक्षा करनेका अभ्यास, दुश्मनके हमलेसे अपनेको बचानेकी महारत।

खुरसानी (सं० स्त्री०) १ यमानीभेद, खुरासानी अजवायन। (पु०) २ खुरासानी घोड़ा।

खुरहीटा, खुरपका देखो।

खुरहुर (हिं० स्त्री०) १ खुरोंके चिह्न, सुमके निशान्। २ जङ्गलमें पशुवोंके चलनेको खुरोंकी बनी हुई कोई राह। ३ पगडण्डी।

खुरहा, खुरपका देखो।

खुरा (हिं० पु०) १ खुरपका। २ हलमें फाल या कुसियाकी मजबूतीके लिये लगाया जानेवाला लोहेका एक कांटा।

खुराई (हिं० स्त्री०) चौपायोंके दोनों पैर बांधनेकी एक रस्सी।

खुराई—मध्यप्रदेशके सागर जिलेकी उत्तर-पश्चिम तहसील। यह अक्षा० २३° ५१´ तथा २४° २७´ उ० और देशा० ७८° ४´ एवं ७८° ४१´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका रकबा ८४० वर्गमील और आबादी कोई ८३७८२ है।

२ सागर जिलेकी खुराई तहसीलका सदर। यह अक्षा० २४° ३´ उ० और देशा० ७८° २०´ पू०में बीनाकी रेलवे लाइन पर पड़ता है। आबादी लगभग ६०१२ है। यह तहसीली एक पुराने किलेमें लगती है। यहां बहुतसे जैन बसते और उनके अच्छे अच्छे मन्दिर देख पड़ते हैं। १८६७ ई०को यहां म्यूनिसपालिटी हुई। प्रतिसप्ताह मवेशियोंका बड़ा बाजार लगता है।

खुराक (सं० पु०) खुर-आकन्। १ पशु, चौपाया। २ यवनाल, जुआर।

खुराक (फा० स्त्री०) आहार-भोजन, खाना।

खुराकी (फा० स्त्री०) १ खानेके लिये दिया जानेवाला नकद पैसा। (वि०) २ पेटू, बहुत खानेवाला।

खुराफात (अ० स्त्री०) १ अश्लील तथा अकिञ्चन विषय, बुरी बात। २ निन्दावाद, गालीगुफता। ३ उपद्रव, झगड़ा।

खुरायल (हिं० पु०) बपनके लिये प्रस्तुत खेत, जो खेत बोनेके लिये तैयार हो।

खुरालक (सं० पु०) खुर इव अलति पर्याप्नोति, अल-ण्वुल्। लौहमय बाण, लोहेका तीर।

खुरालिक (सं० पु०) खुराणां आलिभिः कायति प्रकाशते, कै-क। १ नापितभण्डी, क्षुरहरी। २ नाराच अस्त्र। ३ उपधान, तकिया।

खुरासनीवचा (सं० स्त्री०) खुरासानी या सफेद बच।

खुरासान—एक विस्तृत जनपद, कोई बड़ा मुल्क।

"सिन्धुपीठं समासाद्य मक्के शान्तं सुरेश्वरी।
खुरासानाभिधो देशो म्लेच्छमार्गपरायणः॥" (शक्तिसङ्गमतन्त्र

हम लोग जिसको अफगानिस्तान बलूचिस्तान बोलते हैं, अफगान, बलूची और यहुदी जातियां इसे खुरासान कहती हैं; किन्तु यह बहुत बड़ा देश है, कोई पूरा पता नहीं लगा सकता कि यह ठीक कितना बड़ा है। किसी किसीके मतमें खुरासानके उत्तरमें आरल और काश्यपीय ह्रदके बीचकी मरुभूमि दक्षिणमें लवण मरुभूमिसे पारसके दूसरे दूसरे भागोंमें पृथक् हुआ है, पूरबमें अफगानिस्थानकी सीमापर असभ्य जातियोंका निवास और उर्वरा भूमि तथा पश्चिममें रूसाधिकृत अहमदाबाद राज्य है। इसकी लम्बाई ५०० मील, चौड़ाई ४०० मील और क्षेत्रफल प्रायः दो लाख वर्गमील है। यह सीमा लेकर कईबार खुरासानके ऊपर विदेशियोंने आक्रमण किया। इसके नाना स्थानमें बहुत दफा नाम परिवर्तन हुवा है। आजकल भी सीमान्तवासी भिन्न भिन्न जाति इसे भिन्न भिन्न नामसे कहा करती है। मुगलसम्राट् बाबरने

अपनी जीवनीमें लिखा है "भारतवासी सिन्धु नदीके पश्चिमी किनारेके समस्त मुल्कोंको खुरासन कहते हैं।" यहां प्रायः १२ या १३ लाख मनुष्य रहते हैं। यह विस्तीर्ण प्रदेश पहले पारस और अफगानोंके अधिकारमें था। आजकल इसका अधिकांश रूसाधिकृत या रूसियोंके अधिकारमें है। प्रजा भी पारसकी अपेक्षा रूसकी अधीनतामें सन्तुष्ट हैं। यहां अरब, बलूच, बेयत्, चूलई, कराय, खूरसाही, खेक, लेयर, मरदी, मुजदरणी, मेखा और तोमूर प्रभृति जातियां रहती हैं। यहां बहुतसी नदी और नाला हैं जिनमेंसे आद्रेक नदी प्रधान है। इसीके जलसे यहांकी जमीन उर्व्वरा और शस्यशाली हुई है। स्थान स्थान पर कुञ्जवन, उपवन, सुललित द्राक्षावन और चारणक्षेत्र हैं। यहांकी शोभा देखते ही मन मोहित हो जाता है। जिस समय पारस राज्यमें अन्तर्विद्रोह हुआ था, उसी समय तुर्कोंने ओक्सस नदी पार होकर खुरासनको अधिकारमें लाया था। इस समय महावीर रुस्तमने अपने भुजबलसे आफ्रासियावको परास्त कर देशरक्षा की थी। चङ्गिस खां और तैमूरकी चढ़ाईसे खुरासनकी दशा शोचनीय हो गई। तुर्कोमियोंके राजत्वकालमें उजबकने प्रति वर्ष मसजिद और नगरको लूटते यहां आते थे। उसके भयसे एक दिन भी प्रजा आनन्दसे चैन न करती थी।

खुरासानके कई एक भाग पारसके अधीन हैं जिनमेंसे मशेद नगर सुप्रसिद्ध है। इस नगरके बीचमें एक सुन्दर नैशपोलिकर समाधि-मन्दिर है। जिसमें इमाम और राजा हारुन अल-रसीदकी हड्डियां संरक्षित हैं। पारसके अन्तर्गत खुरासानके मनुष्य अतिबलिष्ठ और दुर्धर्ष हैं। सैकड़ों बार इन्होंने शत्रुओंके आक्रमणको सहन करके वंशपरम्परासे युद्धप्रिय प्रजा बन गयी है। इसी लिये नादिरशाहने एक दिन कहा था 'यही लोग पारसकी तलवार हैं'।

खुरासानी (फा० वि०) खुरासानदेशीय, खुरासान मुल्कके मुताल्लिक।

खुरासानी यमानी (सं० स्त्री०) यमनीभेद, खुरासानी अजवायन। यह कड़वी, रूखी, पाचक, ग्राही, उष्ण, मादक, भारी, वात बढ़ाने और पित्तको मिटानेवाली होती है। (वैद्यकनिघण्टु)

खुराही (हिं० स्त्री०) नीची ऊंची राह, अब करके चलनेकी जगह।

खुरिकापत्र (सं० पु०) केनो नामक पत्रशाक, एक सब्जी।

खुरिया (हिं० स्त्री०) १ कटोरी, छोटा प्याला। २ फूटनेको जोड़को गोलश्छी।

खुरिया—मध्यप्रदेशके जशपुर राज्यकी अधित्यका। यह अक्षा० २२° तथा २२° १४' उ० और देशा० ८३° ३०' एवं ८३° ४४' पू०के मध्य अवस्थित है। यह उत्कृष्ट गोचरभूमि प्रदान करती है। मिर्जापुर आदि अन्यान्य स्थानोंके अहीर या गड़रिये अपने मवेशी यहां चारनेको लाते हैं।

खुरी (हिं० स्त्री०) १ खुरका चिह्न, सुमका निशान। २ द्रुतगामी नदीस्रोत, जोरसे बहनेवाला पानी। खुरीमें नाव चलाना कठिन पड़ जाता है। ३ मालद्वीपवासियोंकी कोई नाव। मालद्वीपी अच्छी हवामें इसी पर चढ़ करके भारत आते थे।

खुरचनी (हिं० स्त्री०) १ खुरची जानेवाली चीज। २ खुरचनेका यन्त्र।

खुरू (हिं० पु०) १ खुरसे भूमि खोदनेका काम। इसमें चौपाये प्रायः डकारा या रांभा करते हैं। क्रोध या आह्लादके समय ही खुरू होता है। २ उपद्रव, झगड़ा, बखेड़ा। ३ ध्वंस, बरबादी।

खुरुक (हिं० स्त्री०) नारिकेलशस्य, खोपरेकी गरी।

खुर्जा—युक्तप्रदेशके बुलन्दशहरमें एक तहसील। जिसके बीच खुर्जा, जेवर और पहासू नामके तीन परगना हैं। यह अक्षा० २८° ४' एवं २८° २०' उ० और देशा० ७७° २८' तथा ७८° १२' पू०के मध्य अवस्थित है। यह यमुनासे काली नदी तक विस्तृत है। भूपरिमाण ४४२ वर्गमील। लोकसंख्या २४६८३८ है। यहां ३८४ गांव और ७ शहर बसते हैं। इसकी आमदनी ३२४४१० रुपये हैं। इस तहसीलमें एक दिवानी, एक फोजदारी अदालत और पांच थाना हैं।

२ उक्त खुर्जा तहसीलका प्रधान नगर और बुलन्दशहर जिलाके प्रधान वाणिज्यस्थान। अक्षा० २८° १५

उ० और देशा० ७७° ५१′ पू०में बुलन्दशहरसे पांच-कोस दक्षिणमें अवस्थित है। लोकसंख्या २९२७७ है।

दिल्ली और मेरठ जानेकी बड़ा बड़ा रास्ता यहां आकर मिला है और नगरकी डेढ़ कोस दक्षिणमें इष्ट इण्डियन रेलवेका ष्टेशन है।

इस नगरमें अधिकांश चुलवाल वणिया और केशगी पठान वास करते हैं। चुलवाल वणिया जैनमतावलम्बी हैं, यही लोग आजकल यहांके प्रधान व्यवसादार हैं। इन्होंके यत्नसे यहां पर एक सुन्दर जैन-मन्दिर बनाया गया है। मन्दिरके भीतर और बाहर भागमें सोनेका काम किया हुआ है। मन्दिरकी शिल्पनैपुण्य देखनेसे मालूम पड़ता है कि आजतक भी भारतवर्षमें शिल्प और चित्र-विद्याका लोप नहीं हुवा है। इस नगरके बीचमें एक सुन्दर सरदावर है। नगरके बड़ा बाजार निर्माण करनेमें एक लाखसे अधिक रु० व्यय हुये थे।

खुर्द (फा० वि०) क्षुद्र, छोटा।

खुर्दबीन (फा० स्त्री०) सूक्ष्म दर्शनयन्त्र, बारीक चीजोंके देखनेका एक औजार (Microscope)। यह किसी प्रकारके खास शीशेसे तैयार होती है। इसको लगाकर देखनेसे छोटी चीज बहुत बड़ी लगती है।

खुर्दबुर्द (फा० वि०) नष्टभ्रष्ट, टूटाफूटा, गया गुजरा।

खुर्दा (फा० पु०) सामान्य द्रव्य, छोटी मोटी चीज।

खुर्दाफरोश (फा० पु०) सामान्य वस्तुविक्रेता, छोटी मोटी चीजोंका सौदागर।

खुर्रांट (हिं० वि०) १ बुड्ढा, पुराना। २ अनुभवी, भरा-भुगता। ३ कांइयां, होशियार।

खुलक (सं० पु०) खुर-क्कुन् स्वार्थे कन्। जङ्घा और पाद-की सन्धि, जांघ और पांवका जोड़।

खुलका (सं० स्त्री०) नाभिगड्ड, तोंदीका गड्ढा।

खुलदाबाद—हैदराबाद राज्यके औरङ्गाबाद जिलेका एक तालुक। इसकी आबादी कोई १४५१२ है। पूर्व तथा उत्तरकी यह देश पहाड़ी है।

२ हैदराबाद राज्यके औरङ्गाबाद जिलेके खुलदा-बाद तालुकका गांव। यह अक्षा० २०° १′ उ० और देशा० ७५° १२′ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २८४५ है। यहां औरङ्गजेब उनके लड़के आजम शाह, निजामराज्य प्रतिष्ठाता आसफजाह, नासरजङ्ग, अहमदनगरके नवाब निजामशाह, निजामशाही वजीर मलिक अम्बर, कुतुबशाही नवाबोंके अन्तिम तानशाह और बहुतसे मुसलमान साधुओंकी कब्रें बनी हैं। पहले इसे 'रौजा' कहते थे। यहां लोग स्वास्थ्यरक्षाके लिये आया करते हैं।

खुलना (हिं० क्रि०) १ उद्घाटित होना, खुल जाना। २ छूटना, उघड़ना। ३ फटना, चिरना, विदीर्ण होना। ४ छूटना, निकलना। ५ छूट पड़ना, सरकना। ६ लगना, ठहरना, मालूम पड़ना। ७ जारी होना, चलना। ८ भेद कहना, कच्चा हाल बताना। ९ सजना, अच्छा लगना।

खुलना—बङ्गालके दक्षिण-पूर्व दिशामें एक जिला। यह अक्षा० २१° ३८′ एवं २३° १′ उ० और देशा० ८८° ५४′ तथा ८९° ५८′ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल २१८८ वर्ग मील है। लोकसंख्या १२५३०४३ है। इसके उत्तर यशोर जिला, पूर्वमें वाखरगञ्ज जिला, दक्षिणमें बङ्गोपसागर और पश्चिममें २४ परगना जिला हैं। इस जिलाका सदर खुलना शहर है। एक तरफमें पद्मा और ब्रह्मपुत्र दूसरी ओर भागीरथी, इन दोनोंके बीच असमान चतुर-स्राकारमें खुलना जिला अवस्थित है। यहां पर नदी और नाला यथेष्ट हैं। समस्त जिला प्रधान तीन भागोंमें बांटा गया है। उत्तर-पूर्व विभाग यशोर जिलाकी सीमासे बागेरहाट तक है। यहांकी जमीन नीचो और जलमयी है।

दक्षिण विभाग—खुलना-सुन्दरवनमें सर्वत्र नदी और जलमय प्रदेश हैं और सामान्य परिमाणकी उपज होती है। उत्तर-पश्चिम विभागकी जमीन अधिक ऊंची और वासके लिए भी उत्तम हैं। यहांपर खजूरका जंगल है और धान्यदेव भी अधिक है, यहां खजूरके रससे गुड प्रस्तुत होता है जो अत्यन्त उत्कृष्ट लगता है। यहांसे अनेक देशोंमें चीनीकी रफ्तनी होती है। पूर्वांशकी जमीन वास करनेके लिये अत्यन्त उपयोगी है। नदी किनारे घनी बस्तियां अवस्थित है। यहांकी प्रधान नदियां मधुमती, भैरव, कपोताक्ष, भद्रा, पाठारबांका, यमुना, इच्छामती, गलघसिया, बांशजला और शिरसा हैं। इन

नदियोंके किनारेकी जमीन कुछ ऊंची है।

१८८२ ई० के पहिले खुलना स्वतन्त्र जिला नहीं था, किन्तु यशोर जिलाका उपविभाग था। तत्पश्चात् २४ परगनासे सातक्षीरा उपविभाग और यशोरसे बागेरहाट नामक दूसरा उपविभाग लेकर खुलनाके साथ एकत्र करने पर एक नवीन जिलाकी सृष्टि हुई। यशोर और नदीयाके शासनकार्य सुविधा करने हीके अभिप्रायसे ऐसी व्यवस्था की गई। यशोरसे दो उपविभाग स्वतन्त्र करके नदिया जिलाका भार कम करनेके लिये उससे बनगांव उपविभाग लेकर यशोर जिलामें मिला दिया गया। वस्तुत बनगांव भौगोलिक अवस्थिति अनुसार यशोरके मध्य आ जानेसे सुविधा प्राप्त हुई। १८८२ ई०की पहली जूनको यह परिवर्तन हुआ।

खुलनामें भी अन्यान्य जिलाकी तरह मुन्सफी, सब जज, जज मजिष्ट्रेट, ज्वाइण्ट मजिष्ट्रेट, कलेक्टर, तथा, सिविल सार्जन हैं।

इस जिलामें १३ तेरह थाने, ११ चौकी और एक निमक पाखरा एक अड्डा है। इस जिलाका सदर खुलना शहर है। भैरव नदी जिस जगह सुन्दरवनमें प्रवेश करती है ठीक उसी स्थानपर खुलना अवस्थित है। इसलिये इसको सुन्दरवनकी राजधानी वा प्रधान शहर कहते हैं। पहिले यह शहर लवण प्रस्तुत करनेका प्रधान स्थान था। आजकल भी निमकका कारबार यहां यथेष्ट होता है। इसके सिवा सातक्षीरा, कालारोया, कालीगञ्ज, देवहाट, चन्दखोया, बागेरहाट, कपिलमुनि, दौलतपुर, मोरेलगञ्ज प्रभृति स्थान भी प्रधान हैं। सातक्षीरामें अनेक हिन्दू मन्दिर हैं। बागेरहाटमें साठगुम्बज प्रभृति खां जहान् आलीका बनाया मस्जिद प्रसिद्ध है। [खांजहान्आलीदेखो।] कपिलमुनिमें सागरयात्रियोंकी भीड़ होती है। (कपिलमुनि देखो।)

खुलना, सातक्षीरा और बागेरहाटमें गवर्नमेण्टका दातव्य औषधालय है। उनके साथ साथ छोटा अस्पताल भी है। मोरेलगञ्जमें साहब जमीन्दारसे स्थापित किया हुआ दौलतपुरमें महमोसकोपसे स्थापित और सातक्षीरामें मनोमोहन जमीन्दारसे स्थापित औषधालय है।

इस जिलामें आउस, आमन और बोरो तीन प्रकारके धान होते हैं। उसके अलावे मटर, पाट, ताड़, खजूर भी यथेष्ट होते हैं। सुन्दरवनमें जलाने की काठ, जलानेका काठ, मधु, कड़ी (मोम) इत्यादि पाये जाते हैं। चीनी, गुड़, नील और चावलकी यहांसे रफ्तनी होती है और लोहेकी चीज विलायतसे आती है। सातक्षीरा सर्वापेक्षा अस्वास्थ्यकर स्थान है। हैजा और ज्वर यहां बहुत होते हैं।

इस जिलामें हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमानोंकी सङ्ख्या अधिक है।

खुलना शहर अक्षा० २२° ४८′ उ० और देशा० ८९° ३४′ पू०में अवस्थित है। यहां होकर ढाका और बाखरगंजसे चावल, श्रीहट्टसे चूना, और कलकत्ता नीबू, पावना, राजशाही और फरिदपुरसे सरसों, गोलदाज कलाई, पावनासे घी और सुन्दरवनसे लकड़ी कलकत्ते जाते हैं।

खुलवा (हिं० पु) द्रवीभूत धातुको सांचेमें भरनेवाला।

खुलवाना (हिं० क्रि०) खोलनेका काम दूसरेसे कराना, खुलाना।

खुला (हिं० वि०) १ अबद्ध, जो बंधा न हो। २ आवरणरहित, बेरोक। ३ स्पष्ट, जाहिर।

खुलावया (हिं० पु०) मृदङ्ग या तबला बजानेकी एक रीति। इसमें दोनों हाथों या केवल बामहस्त द्वारा तबले पर खुली थाप लगा बजाना आरम्भ करते हैं।

खुलासा (अ० पु०) निचोड़, मतलब।

खुलासा (हिं० वि०) १ खुला, जो बन्द न हो। २ साफ, बेरोक। ३ स्पष्ट, जाहिर। ४ संक्षिप्त, मुख्तसिर।

खल (सं० स्त्री०) नखी नामक गन्धद्रव्य, नख।

खुल्लक (सं० त्रि०) खुल स्वार्थे कन्। १ अल्प, थोड़ा। २ नीच, कमीना। ३ कनिष्ठ, छोटा। ४ दरिद्र, गरीब। ५ निष्ठुर, बेरहम। ६ खल, पाजी।

खुल्लताल (सं० पु०) खुल्ल कनिष्ठ ताततस्य पितु, पूर्व निपात। पिताका कनिष्ठ भ्राता, चचा।

खुल्लना—धनपति वणिक्की कन्या और धनपति वणिक्की पत्नी। यह स्वर्गकी अप्सरा रत्नमाला रहीं। दुर्गाके शापसे इन्हें मानवी होना पड़ा। इनके स्वामी धनपति जब गौड़राज्यमें वाणिज्य करने गये थे, सपत्नी इन्हें

बड़ा कष्ट दिया। धनपति वाणिज्य करके लौट आने पर खुल्लनाको बहुत चाहने लगे। इनके पुत्रका नाम श्रीमन्त था। (कविकङ्कण-चण्डी)

खुल्लम (सं० पु०) खुल्लेन लीयते, ला बाहुलकात् क। पथ, राह।

खुल्लमखुल्ला (हिं० क्रि०-वि) प्रकाश्यरूपसे, खुले तौर पर, सबके सामने।

खुश (फा० वि०) प्रीत, प्रसन्न, जो दुःखी न हो।

खुशकिस्मत (फा० वि०) भाग्यशाली, अच्छे नसीबवाला।

खुशकिस्मती (फा० स्त्री०) सौभाग्य, अच्छा नसीब।

खुशखत (फा० वि०) सुलेखक, अच्छा लिखनेवाला।

खुशखबरी (फा० स्त्री०) अच्छी खबर, भला समाचार।

खुशदिल (फा० वि०) १ प्रसन्नचित्त, मिलती। २ दिल्लगी बाज, हंसैया।

खुशनवीस (फा० पु०) सुलेखक, अच्छा लिखनेवाला।

खुशनवीसी (फा० स्त्री०) सुलिपि, अच्छे अक्षरोंकी लिखावट।

खुशनसीब, खुशकिस्मत देखो।

खुशनसीबी, खुशकिस्मती देखो।

खुशनुमा (फा० स्त्री०) देखनेमें अच्छा लगनेवाला, जो उमदा देख पड़ता हो।

खुशनुमाई (फा० स्त्री०) देखनेकी बहार, सजावट, सुघराई।

खुशबू (फा० स्त्री०) सुगन्ध, अच्छीसी गमक।

खुशबूदार (फा० वि०) सुगन्धि, खूब महकनेवाला।

खुशरङ्ग (फा० वि०) १ खूब रङ्गदार, अच्छे रङ्गवाला, चटकीला। (पु०) २ देखनेमें अच्छा लगनेवाला रङ्ग।

खुशरङ्ग—हिन्दीके एक प्राचीन कवि। इनकी कविताका नमूना नीचे लिखते हैं—

"गुलशनमें देखता हूं सब गुल[illegible]में तू है।
तुझे गुलबदनकी प्यारे सारे चम[illegible]में तू है॥
जिस गुलको तूने चाहा किया खूबीसे मामूर।
हर फूल बोकलीमें गुलगूं सभीमें तू है॥
इस तफा[illegible] ए चमनमें है गुल तरह तरहके।
सब है नज़र[illegible] तेरा सब रङ्गियोंमें तू है॥
'खुशरङ्गी' तू के[illegible]सा सानी तेरा न कोई।
मुमताज़ गुल हरमका हर्के गुलशनमें तू है॥
अथवा तेरे गुलदस्ता २२ गुलमें है [illegible]।
इसमान पर लहता दरा गुलोंमें तू है॥"

खुसरू—हिन्दीके एक कवि। इनकी कविता बहुत मीठी होती थी।

"बहुत रही बाबुल घर दुलहिन चल तोरे पी ने बुलाई।
बहुत खेल खेली सखियनसों अन्त करी लरकाई॥
न्हाय धोयके बस्त्र पहिरे सब ही सिंगार बनाई।
बिदा करनको कुटुम सब आये सगरे लोग लुगाई॥"

* * * * *

गहरी गहरी [illegible] [illegible] [illegible] पकड़ के ठाढ़ी।
बैठत [illegible] [illegible] [illegible] तिलक लगाई॥
गुण नहीं एक औगुन बहुतेरे कैसे [illegible]।
खुसरू कहे [illegible] [illegible] नहीं कोई साथी॥"

खुसरू अमीर (अमीर खुसरू) दिल्लीके मुसलमान बादशाहोंकी सभामें रहनेवाले एक विख्यात कवि। यह जाति-के तुर्की रहे। खुसरूके बापका नाम अमीर मुहम्मद सैफ-उद्दीन था। वह बाल्खोक देशसे भारतके उत्तर-पश्चिम पटियाला नगरमें आकर बस गये। १२५३ ई०को जन्म हुआ। जब बादशाह गयासुद्दीन् तुगलक भारतके सिंहासनको उजलाते थे, इन्होंने 'तुगलकनामा' नामका एक इतिहास बनाया। खुसरूने सब मिलाकर ९९ किताबें लिखी हैं। उनमें इस्लीवहिश्त, सिकान्दर-नामा आदि कई पोथियां मुसलमान लोगोंमें बड़ी इज्जत पाती हैं। सिवा इसके इन्होंने कुछ छोटी छोटी कवि-तायें भी बनायी हैं। खुसरू रचित कतिपय पुस्तकोंके नाम यह हैं—पञ्जगञ्ज, लैला-मजनू, शीरीन्, ऐजाज खुसरोवी, आईना सिकन्दरी, खुम्सखानी, इनशा अमीर खुसरू, जवाहिर-उल्-बहर।

लोग कहते हैं कि उनकी और वीरबलकी आपस-में खूब होड़ा होडी होती थी, परन्तु वीरबलके सामने उन्हें अरमाना ही पड़ता था। कोई कोई इन्हें अकबर-बादशाहका साला भी बतलाता है। परन्तु यह निश्चित नहीं—वह यही खुसरू थे या कोई दूसरे।

खुसरू परवीज—१ सासन घरानेके ईरानी बादशाह हरमूजके लड़के। इनके बापके मरने पर, सेनापति बहरामने मुल्कको अपने कब्जे में किया था। यह रोमक-सम्राट् मरीसकी मददसे सिपहसालारको हरा ५८१

ई०को बापके तख्त पर बैठ गये। बादशाही मिलनेके पीछे इन्होंने सबके सामने मरीषको धर्मपिता-जैसा कबूल किया। ६०३ ई०को मरीस क़त्ल किये गये। यह उसी वक्त अपने धर्मपिताका बदला चुकानेको रोमक राज्य पर चढ़े थे। दारा, एदेसा वगैरह कई मुकाम जल्द हाथ आ गये। सिरीया और पालेस्टाइन लूट कर तहस नहस कर डाले। जेरूसलम जीतने पर सोनेका असली सलीब (Cross) महीसे निकाल फतिहमन्दीकी नशानीके तौर पर अपने राज्यमें ले आये। कुछ दिन पीछे रोमके बादशाह हिराक्लियसने आकर ईरान पर हमला किया था। उन्होंने कासपीय ह्रदसे इस्फहान शहरके बीच सभी मुकाम तोड़ फोड़ डाले। सरकारी खजाना लूटा और अच्छे अच्छे महलोंका तहसनहस किया गया। मुल्कका ऐसा मटियामेट देख रैयत परवीज पर बिगड़ी और राजद्रोही बन गयी। इनके ज्येष्ठ पुत्रने इन्हें बांध लिया था। परवीजके १८ लड़के उनके सामने ही क़त्ल किये गये। इसके बाद वे कैदमें रखे गये। ६२८ ई०को इनका मृत्यु हुआ। परवीजके साथ ही नौशेरवान्का घराना भी गुम हो गया।

खुसरुमलिक—कोई क्रीतदास या गुलाम। यह खुसरु शाह कहलाते थे। बादशाह मुबारककी मिहरबानीसे खुसरु उनके बड़े प्यारे और वज़ीर बन गये। उन्होंने ऐसे ही अपने आप मराठा देश जीतके लौटे, इन्हें उसका सूबेदार (शासनकर्ता) बनाके दिल्लीसे दक्षिणको भेज दिया। मालिकने लूट मार करके एक ही सालके बीच कितनी ही दौलत इकट्ठी कर डाली। फिर इनका हौसला इतना बढ़ गया कि अपने अन्नदाता मुबारकको भी चुपकेसे मार डालनेमें जी न हिचका। १३२१ ई०को यह नसीर उद्दीन् नामसे दिल्लीके तख्त पर बैठे थे। इसी वर्ष राज्यके कई आदमियोंने सिपहसालार गाज़ीबेग तुगलकसे मिलके इनके मुक़ाबलेमें लड़ाई खड़ी कर दी। अमीरोंको यह दुश्मनोंके हाथमें पड़ मारे गये।

२ बादशाह मुहम्मद तुगलकके भानजे। सम्राट्ने अपनी राज्यप्राप्तीच्छा बढ़ने पर एक भारी फ़ौजके साथ खुसरुको नेपाल जीतने भेजा था। यह बड़ी मुशकिलसे पहाड़ोंको पारकर १३३७ ई०को चीनकी सरहद पर जा पहुंचे। इसी जगह एक तरफसे चीना फौज और दूसरी तरफसे नेपालकी पहाड़ी फौजने आकर इन पर हमला किया और रसदका सारा सामान लूट लिया। सात दिन तक ऐसी ही तकलीफसे लड़ने भिड़ने पर इनके सिपाही घबरा उठे। इसी मौकेपर मेहकी बारिश पड़ी थी। पहाड़की उसी खाली जगहमें चारों तरफोंका पानी जाकर जमा हो गया। यह साथ अपने सिपाहियोंके मर मिटे और मुहम्मदकी ऊंची उम्मीद मारी पड़ी।

३ गजनवी शाही खानदानके आखिरी बादशाह। इनके बापका नाम खुसरु शाह था। पिताके मरने पर ११६० ई०को यह लाहोरके तख्त पर रौनक अफरोज़ हुए। ११८४ ई०को सुलतान मुहम्मद गोरीने जब लाहोर पर हमला किया, हारने पर खुसरु पकड़ लिये गये। मुहम्मद गोरीने इन्हें बालबच्चोंके साथ अपने भाई गयासुद्दीनके पास फीरोजकोह नगर भेजा था। वहीं खुसरु सपरिवार मार डाले गये।

४ दिल्ली—सम्राट् मुहम्मद-बीन तुगलकके बहनोई और खुदावन्द जादाके खाविन्द। इन्होंने एक बार मुहम्मदके उत्तराधिकारी सुलतान फीरोज शाहको मार डालनेके लिये छिप छिप कर साजिश की थी। किन्तु इनके बेटे दावर मालिकने सुलतानको जल्द आनेवाली मुसीबतकी बात बतला दी। सुलतानने भाग कर अपना प्राण बचाया था।

खुसरु शाह—गजनवी बादशाह बहराम शाहके लड़के। इनका असली नाम निज़ाम् उद्दीन् था। ११५२ ई०को अपने वालिदके मरने पर इन्होंने लाहोरका तख्त हासिल किया और सात वर्ष तक सल्तनत करके ११६० ई०का शरीर छोड़ दिया।

खुसरु सुलतान—मुगल बादशाह जहांगीरके लड़के। यह राजा मानसिंहकी बहनके गर्भसे १५८७ ई०को लाहोरमें उत्पन्न हुए थे। फिर १६२२ ई०को दक्षिणमें इनका मृत्यु हुआ। दाक्षिणात्यसे लाश लाकर इलाहाबादके खुसरुबागमें गाड़ी गयी थी। फारसीकी एक किताबमें

लिखा है कि उनके छोटे भाई शाहजहानने ऐसा नामका कोई हरकारा भेजा था, जिसने गला दबाकर उन्हें मार डाला।

खुशरोज—इसका दूसरा नाम नौरोज अर्थात् नव वर्षका प्रथम दिन। जिस दिन सूर्य मेषराशिमें जाते हैं उस दिन फारसके मुसलमान राजगण आनन्द उत्सव मनाते हैं। दिल्लीके मनुष्योंका ऐसा विचार है कि भारतवर्षमें पृथ्वीराजहीने पहले पहल खुशरोज उत्सवका प्रचार किया था। किन्तु अबुल फजलने लिखा है कि अकबर बादशाहने इस उत्सवको निकाला। वे मुसलमानके नवमी दिनमें राजकीय समस्त कर्मचारीको बुला कर आनन्द-उत्सव करते थे। उस दिन सम्राट्के अन्तःपुरकी स्त्रियां भी शौकसे बाजार खोलती थीं। जहां राजपूत महिलाएं भी आनन्दसे उपस्थित होती थीं। अन्तःपुरकी स्त्रियां उनसे मनमानी चीज खरीदती थीं। उस समय अकबर बादशाह एकान्तमें राज्यकी सम्भ्रान्त महिलाओंके मुखसे राज्यकी तथा वाणिज्यकी अवस्था सुनते थे। कोई कोई ऐसा कहते हैं कि अकबर बुरे अभिप्रायकी इच्छासे यह खुशरोज मनाते थे। वे उस समय राज्यकी सुन्दर महिलाओंकी रूपमाधुरी पान करते थे। ऐसा सुना जाता है कि अकबर बादशाह राजपूत राजाओंको अपने अधीन कर लेने पर भी शान्त न रहे किन्तु खुशरोज उपलक्षमें समागत कुलवधूओंके सतीत्व भी नष्ट कर डालते थे। वे इस व्यवहारमें पृथ्वीराजकी स्त्रीके हाथ पकड़े गये। अकबर उस अद्वितीय स्त्रीके सौन्दर्य पर विमुग्ध होकर चतुरतासे एक गुप्तकक्षमें बन्द कर बैठे। वह स्त्री उस कक्षमें प्रवेश कर गोलकधंधेमें पड़ गई। बाहर होनेका रास्ता देख न पड़ा; सामनेमें सिर्फ अकबर बादशाह ही देख पड़े। सम्राट् अकबरने प्रेमभिक्षाकी इच्छासे उन्हें कई बार प्रलोभन दिया। किन्तु वह पतिव्रता राजपूत स्त्री थोड़े ही समयमें अपनी अवस्था जान गई और अपने कटिदेशसे तेज छुरी निकाल कर अकबर पर आघात करनेके लिये आगे बढ़ी। यह देखकर बादशाहका मुख सूख गया और करबद्ध हो क्षमाके लिये प्रार्थना करने लगे। इस पर वह साहसी स्त्री बोली "दिल्लीश्वर! तुम अपने इष्टदेवका शपथ खाकर प्रतिज्ञा करो कि कभी इस तरहका अन्याय व्यवहार स्त्रियोंके प्रति न करोगे। नहीं तो तुम्हारा निस्तार नहीं है।" अकबरने प्राणनाशके भयसे वैसा ही स्वीकार किया और अपने मुखको नीचे कर उस राजपूत-स्त्रीको बाहर जानेका पथ दिखला दिया। उसी दिनसे अकबर बादशाहने खुशरोजके उत्सवमें आमोद प्रमोद करना एकदम बन्द कर दिया। आजतक भी राजपूत भाटगण उस पतिव्रता राजपूत-स्त्रीकी सुख्याति गाते हैं।

खुशवक्त राय—एक चतुर राजनैतिक। १८०९ ई०को महाराज रणजितसिंहके साथ वृटिश गवर्नमेण्टकी सन्धिके समय ये वृटिश एजेण्ट और सम्वाददाता हो कर अमृतसहरमें रहते थे।

खुशहाल (फा० वि०) सम्पन्न, मजेमें, जिसको कोई तकलीफ न हो।

खुशहाली (फा० स्त्री०) आराम, सुख, अमनचैन, अच्छी गुजर।

खुशाव (फा० पु०) धान निरानेका एक ढङ्ग, धानकी कोई निरौनी। यह काश्मीरमें चलता है।

खुशाव—१ पञ्जाबके शाहपुर जिलेकी एक तहसील। झेलम् नदीके किनारे अक्षा० ३१° ३२' एवं ३२° ४२' उ० और देशा० ७१° ३०' तथा ७२° ३८' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल २५३६ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ११११८८५ है।

पञ्जाबके लवण पहाड़के द्वारा यह तहसील विभक्त है। यहां पर नदीको धार कछार किनारा छोड़ कर दूसरी जगह वैसा शस्य नहीं उपजता है। इसमें २०६ ग्राम हैं। यहां एक फौजदारी एक-दीवानी अदालत और ६ थाना हैं। इसका राजस्व २ लाखसे अधिक है।

२ तहसीलका प्रधान नगर। झेलम् नदीके दक्षिणमें और शाहपूर नगरसे ४ कोस दूरमें अक्षा० ३२° १८' उ० और देशा० ७२° २२' पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ११४०१ है, जिनमेंसे अधिकांश मुसलमान हैं। यहां पर म्यूनिसपालीटी भी है। प्रत्येक मनुष्यको एक एक रु० टैक्स देना पड़ता है। यहां मूलतान, अफगानिस्तान प्रभृतिके

साथ वाणिज्य-व्यवसाय चलता है। गल्ला, कपास, पशम, ऊन और देशीय वस्तुओंको रफ्तनी तथा विलायती कपड़ा, धातु, शुष्क फल, चीनी और गुड़की आमदनी होती है। यहां सुन्दर मोटा कपड़ा तथा रेशमी कपड़ा प्रस्तुत होता है। कुछ सातसौ करघा बराबर चलते हैं।

खुशामद (फा० स्त्री०) अयथा स्तुतिवाद, झूठी तारीफ, चापलूसी, किसीको मतलबकी बातोंसे खुश करनेका काम।

खुशामदी (फा० स्त्री०) खुशामद करनेवाला, चापलूस। दूसरेकी खुशामद करके अपना काम चलानेवाला 'खुशामदी टट्टू' कहलाता है।

खुशाल—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनकी कविता बड़ी मनोहारिणी रही—

"पिय प्यारी ओर हो ओर निहारे।
नववधिया बचसाने नैना सीसा सान्न अपारे॥
रसिक खुसाल करत निमिषांतर। कुमभिलु न बिहारे॥"

खुशाल—(पण्डित) दि० जैन सम्प्रदायके एक ग्रन्थकर्ता इन्होंने "मुक्तावलव्रतोद्यापन" और "कांजीहादशव्रतोद्यापन" नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं।

खुशाल खान्—खटकजातीय एक सर्दार, मालिक आकोरका पुत्र। अकबरके समयमें जबकी पार्वती जाति काबुलके कई स्थानोंमें लूट पाट करती थी, उस समय मालिक आकोरने अकबर बादशाहके निकट रक्षाभार प्राप्त किया। उनके मरने पर उनके लड़के खुशालखान्ने यह भार ग्रहण किया। जब औरङ्गजेबने पठानोंको दमन करनेके लिये अपनी सेना अफगान सीमा पर भेजी उस समय खुशालखान्ने उनकी जन्मभूमिकी रक्षाके लिये पोश्तिनो भाषामें एक कविता अमोकी रचना की थी जिसके पाठ करनेसे खटक जाति उत्तेजित हो जाती थी। आजकल भी खटक अत्यन्त आदर और भक्तिके साथ खुशालकी कविता गाया करते हैं। खुशालको ५२ लड़के थे। जिनमेंसे ज्येष्ठपुत्र बैरामखान् था। इसने खटकके शेख रहमकार नामक एक साधुके लड़केको मार डाला था। इसी अपराधमें औरङ्गजेबने खुशालखान्को बारह वर्ष तक दिल्लीके कारागारमें बन्द किया था।

खुशालचन्द—दिल्लीपति मुहम्मदशाहके दिवानी कार्यालयके एक कर्मचारी। इन्होंने 'तारीख इ मुहम्मद शाही, या 'तारिख इ नादिर उज्जमानी' नामकी किताब फारसी भाषामें रचना की है। इस ग्रन्थमें इब्राहिम लोदीसे महम्मद शाहके राजत्वकाल तकका हाल वर्णन किया है।

खुशालचन्द्रकला—दिगम्बर जैनसम्प्रदायके ग्रन्थकर्ता। ये सांगानेरके रहनेवाले खण्डेलवाल थे। खास इनके रचित ग्रन्थ तो कोई महत्वपूर्ण मिला नहीं है। पर इनने बड़े बड़े ग्रन्थोंका पद्यानुवाद कर डाला है। इन्होंने 'हरिवंशपुराण' सं० १७८०में 'पद्मपुराण' सं० १७८३में और 'उत्तरपुराण' सं० १७९९में बनाया है। धन्यकुमारचरित्र, व्रतकथाकोष, जम्बूचरित्र, और चौबीसी पाठपूजा—ये भी इन्होंने बनाये हैं। बम्बईके जैन मन्दिरमें एक यशोधरचरित्र है, जिसको इनने १८०१ वि० सं०में बनाया था। मालूम नहीं कि, इसके कर्ता 'हरिवंश' आदिके कर्तासे भिन्न हैं या एक ही हैं। इनने अपनेको सुन्दरका पुत्र और दिल्ली शहरके जयसिंहपुरामें रहनेवाला बतलाया है।

खुशाल पाठक—युक्तप्रान्तीय रायबरेली नगरके एक हिन्दी कवि। इन्होंने शृङ्गाररसकी कविता लिखी।

खुशी (फा० स्त्री०) प्रसन्नता, आह्लाद, दिलकी कुशादगी।

खुश्क (फा० वि०), शुष्क, सूखा। २ रसिकतारहित, रूखा। (क्रि० वि०) ३ सुचि, सिर्फ।

खुश्कसाली (फा० स्त्री०) अनावृष्टि, वृष्टिका अभाव, जिस साल पानी न बरसे।

खुश्का (फा० पु०) भात, पानीका पका चावल।

खुश्की (फा० स्त्री०) १ शुष्कता सूखापन, रुखाई। २ भूमि, जमीन्। ३ पलेथन, लोई या पेड़े काटनेका सूखा आटा। ४ अनावृष्टि, पानी न बरसनेकी हालत।

खुसखुस (हिं० पु०) १ खुसर फुसर, कानाफूसी, गुपचुपकी बातचीत। (क्रि० वि०) २ चुपके चुपके, धीमी आवाजमें।

खुसुरफुसुर, फुसफुस देखो।

खुही (हिं० स्त्री०) खुड़ुआ, घोघी, खोही, पानी या जाड़ेसे बचनेके लिये कम्बलको सर लपेट कर डालनेका एक ढंग।

खूंखार (फा० वि०) १ रक्तपायी, खून पीनेवाला। २ खौफनाक, भयानक। ३ क्रूर, झगड़ालू।

खूंट (हिं० पु०) १ प्रान्तभाग, छोर। २ चतुष्कोण प्रस्तरविशेष, कोई चौकोर पत्थर। यह बहुत वजनी रहता और घरकी दृढ़ताके लिये कोनों पर लगता है। ३ भाग, हिस्सा। ४ देवी देवताका एक प्रसाद। इसमें कई छोटी छोटी पूरियां रहती हैं। ५ काष्ठशल्क, लकड़ीका सफसूल। ६ कर्णालङ्कारविशेष, कानका एक गहना। यह गोल दिये जैसा बनाया जाता है। इसे 'बिरिया' और 'ढार' भी कहते हैं। ७ कानका मैल। (स्त्री०) ८ रोकटोक, पूछताछ।

खूंटना (हिं० क्रि०) १ टोकना, पूछताछ करना। २ छोड़ना। ३ घटना, कम पड़ना।

खूंटा (हिं० पु०) मेख, गोल लकड़ीका छोटासा नोकदार बनाया हुआ टुकड़ा। इसमें किसी भी चीजको रस्सीसे बांध देते हैं।

खूंटाफारी (हिं० स्त्री०) १ बिगाड़, अलगाव, मनमोटाव। (वि०) २ द्वेषमूलक, फूट डालनेवाली। इस अर्थमें यह शब्द प्रायः 'बात'का विशेषण होता है।

खूंटी (हिं० स्त्री०) १ छोटा खूंटा, छोटी मेख। २ कटी फसलका डण्ठल। ३ चपटी, गुल्ली। ४ निकलनेवाले बालोंका सिरा। यह बहुत कड़ी पड़ती और छूनेसे गड़ती है। ५ नीलकी दोरेजी फसल। यह नील कट जाने पर उसके डण्ठलसे उपजती है। ६ सीमा, छोर। छोटी खूंटीको 'खूंटिया' कहते हैं।

खूंटी-उखाड़ (हिं० पु०) अश्वका एक अशुभचिह्न, घोड़ेकी कोई भौंरी। यह पांवमें पुट्ठेके पास पड़ती और अपना मुंह ऊपरको रखती है। खूंटी-उखाड़ रहनेसे घोड़ा बड़ा बदमाश होता है।

खूंटीगाड (हिं० पु०) अश्वका एक अशुभचिह्न, घोड़ेके पैरकी कोई भौंरी। यह पुट्ठेके पास नीचेको मुंह किये रहती है। इसके होनेसे घोड़ा कम ऐबी निकलता है।

खूंड़ा (हिं० पु०) कोष्ठदण्डविशेष, कोरीको एक छड़। इसमें भरा लगा कर ताना डाला जाता है।

खूंड़ी (हिं० स्त्री०) सूक्ष्म काष्ठखण्डविशेष, एक पतली लकड़ी। इसके छोर पर कांचका गुरिया फोड़ कर बांधा और उसमें रेशमका बारीक धागा डाल ताना जाता है।

खूंथी (हिं० स्त्री०) खूंत्थी, कटी फसलकी छोटी खूंटी।

खूंद (हिं० पु०-स्त्री०) थोड़ीसी जगहमें घोड़ेकी चल फिर, कुदौटी।

खूंदना (हिं० क्रि०) १ पैर उठा उठा कर उसी जगह रखना, नाचना। २ रौंदना, चल फिर करके बिगाड़ना। ३ कुचलना।

खूंदी (हिं० स्त्री०) कृमिविशेष, एक कीड़ा। यह शीतकालकी रबीका फसल बिगाड़ देती है। इसका पतला नाम 'गेरुई' है।

खूखू (हिं० पु०) थूक, खूखर।

खूच (हिं० स्त्री०) संयोगजल, पायनाय, पानीकी गर्दन। इसे 'जलसंयोजक' या 'जल-डमरूमध्य' भी कहते हैं।

खूझा (हिं० पु०) खोभरा, निकम्मा रेशा।

खूटना (हिं० क्रि०) १ खण्डित होना, कटना, रुकना। २ चूकना, कम पड़ना। ३ चिढ़ाना, हंसी उड़ाना, दिक करना।

खूटगांव—मध्यप्रदेशके चांदा जिलेकी एक जमींदारी। इसमें ४२ गांव लगते हैं, क्षेत्रफल १५० वर्गमील है।

खूदर (हिं० पु०) मैल, तलछट, फोंक। इसका हिन्दी पर्याय—खूद और खूदड़ है।

खून (फा० पु०) १ रक्त, लहू। २ वध, कतल।

खून—बम्बई प्रेसिडेन्सीके अहमदाबाद जिलामें दण्डक नामक उपविभागके अन्तर्गत एक बन्दर। यह भादर वा घोलेवासे ढाई कोस भादर खाड़ीके प्रवेशपथमें अक्षा० २२° ३´ ३०´´ उ० और देशा० ७२° १७´ १०´´ पू०में एक आलोकघर है। इस घरके प्रायः ३४ हाथ ऊंचेमें दीपमाला है। आठ कोससे उसका आलोक (प्रकाश) देखा जाता है।

खूनखराबा (हिं० पु०) १ रक्तपात, मारकाट। २ किसी किसमका रङ्ग या वार्निश। यह लकड़ी पर चढ़ता है।

खूनी (फा० वि०) १ हिंसाकारी, कातिल। २ निर्दय बेरहम। ३ क्रूर, बदमाश। ४ अत्याचारी, दस्तन्दाज। ५ रक्ताभ, लाल।

खूब (फा० वि०) १ अच्छा, बढ़िया। (क्रि० वि०) २ अच्छी तरह, भली भांति, सफाईसे।

खूबकला (फा० स्त्री०) खाकसीर, किसी घासका दाना। यह किसी घासका, जो फारसमें जगती, पोस्त जैसा गुलाबी बीज है।

खूबचन्द—मारवाड़के एक हिन्दी कवि। ईडरराज गम्भीरसाकीकी प्रशंसामें इन्होंने एक काव्य बनाया था।

खूबचन्द सोधिया—हिन्दीके एक अच्छे लेखक। इन्होंने "सफलग्रहस्य" नामक एक पुस्तक लिखी है।

खूबड़खाबड़ (हिं० वि०) असमतल, नीचा ऊंचा, चढ़ उतार।

खूबसूरत (फा० वि०) सुन्दर, सुहावना।

खूबसूरती (फा० स्त्री०) सौन्दर्य, रौनक, चमक दमक।

खूबानी (फा० स्त्री०) फलविशेष, किसी किसमका मेवा। इसका दूसरा नाम जरदालू भी है। यह काबुलके पहाड़ोंमें उपजती है। खूबानी सूखी और ताजी भी खायी जाती है। इसका तेल 'कड़वे बादामका तेल' कहलाता है। खूबानीसे कतीरे-जैसा गोंद भी निकलता है। खूबानी मईसे सितम्बर तक पक जाती है। लोग इसकी गुठलीका बादाम भी फोड़ कर खा डालते हैं।

खूबी (फा० स्त्री०) १ गुण, सिफत। २ भलाई, अच्छाई ३ उम्दगी, सफाई।

खूमड़ा—युक्तप्रदेशकी एक मुसलमान जाति। पहले यह हिन्दू रहे, पीछेको मुसलमान हो गये। खेतों पर पत्थरकी चक्कियां लाद करके बेंचते फिरना इनका प्रधान व्यवसाय है। रामपुर रियासतमें यह चटाइयां और पङ्खे भी बनाते हैं। बिजनौर और मुरादाबाद जिलेमें इनकी संख्या अधिक है।

खूरेम (हिं० स्त्री०) हस्तिपादगत रोमविशेष, हाथीके पैरकी एक बीमारी। इसमें हाथीके नख फट जाते हैं और उसमें कुछ कुछ पीड़ा होती है। खूरमसे हाथी लङ्ग करने लगता है।

खूसट (हिं० पु०) १ उल्लू, घुग्घू। (वि०) २ गंवार, बेसमझ। ३ डोकरा, गया गुजरा बुड्ढा।

खृगम (वै० स्त्री०) तनुत्राण, शरीररक्षक। (ऋक् ५।४१।१)

खृष्टान, ईसाई देखो।

खृष्टीय (हिं० वि०) ईसवी, ईसाके मुताबिक।

खेउरा—इसका नाम मेउखान (Mayo mines) है। पञ्जाब झेलम् जिलाके पिण्डदादनखांमें एक विस्तृत लवणकी खान। यह अक्षा० ३२ ३८ ४० और देशा० ७३ ३ पूर्वमें अवस्थित है।

यहां नमकका पहाड़ नामको जो गिरिश्रेणी है, उसीमें बीच लाल चिक्कण मृत्तिका और रेतीले पत्थरके ऊपर उठा हुआ कच्चा नमक देखा जाता है। यहां सारी जगहमें तह तह पर लवण आकर है। यह पर्वतके आकारको नमकका खान कई सौ वर्षसे मनुष्यके व्यवहारमें आ रही है। तोभी इसका कोई अंश घटा नहीं। मालूम पड़ता है। अकबरके समयमें यहां पर गड्ढा बना करके नमक निकाला जाता था। सिख राजाके शासनकालमें यहांके मनुष्य जहां पर सुविधा देखते, गड्ढा करके नमक संग्रह करते थे। वृटिश गवर्मेण्टका अधिकार होने पर अब मामूली लोग नमक निकाल नहीं सकते।

यहांके लवणको भी उसने अपने एकाधिकारमें कर लिया है। लवण उठानेके लिये नानाप्रकारके यन्त्र और राजकर्मचारी नियुक्त हैं। आजकल खेउराकी सिर्फ बगी और सुजावलखान्में काम होता है। प्रति वर्ष एक लाख मनसे भी अधिक नमक संग्रह किया जाता है। इससे सरकारको प्राय सताईस लाख रु०की आय होती है।

१८७० ई०का बड़े लाट मेयो यहां आये थे, इसी लिये इसका नाम मेयो खान पड़ा।

खेक (हिं० पु०) वृक्षविशेष, एक बड़ा पेड़। यह तराई आसाम और मणिपुरके जङ्गलोंमें उत्पन्न होता है। इसका काठ उत्तम निकलता और रङ्ग बने बनाये रङ्ग जैसा लगता है।

खेकसा (हिं० पु०) एक फल। यह परवल जैसा

होता है। इसकी तरकारी बनायी जाती है। जङ्गली झाड़ियों पर इसकी लता अपने आप फैल पड़ती, जो कुंदरूसे मिलती है। खेकसीका फूल पीला होता और हरा फल, पकने पर लाल पड़ जाता है। इसके ऊपर रूयें या कांटे होते हैं। खेकसा खानेमें करेला-जैसा लगता है। इसे 'ककोड़ा' और 'बन-करेला' भी कहते हैं।

खेकरा—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलाकी बागपत तहसीलका एक नगर। यह अक्षा० २८° ५२′ उ० और देशा० ७७° १७′ पू० पर अवस्थित है। खेकरा मेरठ नगरसे १२ कोस पश्चिम पड़ता है।

यह नगर अति प्राचीन है। ऐसा प्रवाद है कि प्रायः पौने दो हजार वर्ष पहले यह नगर अहीरोंने पत्तन किया। फिर वे सिकन्दरपुरको जाट जातिसे भगाये गये। सिपाही विद्रोहके समय यहांके जमींदार भी विद्रोही हुए। उनकी जायदाद जब्त करके किसी वृटिश राजभक्त जमींदारको दी गयी है।

यहां एक सुन्दर जैनमन्दिर और पुलीस ष्टेशन है। प्रति वर्ष खेकरामें मेला लगता है। लोकसंख्या प्रायः ८८१८ है। इस नगरकी आमदनी २०००) रु० है।

खेखीरक (सं० पु०) खे आकाशे खोलक इव, लस्य रत्वम्। शब्दयुक्त यष्टि, आवाजदार छड़ी।

खेखोलक (सं० पु०) आवाजदार छड़ी, बजनेवाला डण्डा।

खेगमन (सं० पु०) खे आकाशे गमनं यस्य, बहुव्री०। श्यामकण्ठपक्षी, एक चिड़िया।

खेचर (सं० पु० क्ली०) खे आकाशे चरति, चर ट अलुक्समा०। १ शिव। २ विद्याधर। ३ पारद, पारा। ४ सूर्य आदि ग्रह। ५ मेष आदि द्वादश राशि। ६ कासीस, कसीस। ७ पक्षी, चिड़िया। ८ तृण, घास। ९ घोटक, घोड़ा। (त्रि०) १० आकाशगामी, आसमानमें चलनेवाला।

खेचरा (सं० स्त्री०) आकाशवल्ली, अमरबेल।

खेचराञ्जन (सं० क्ली०) कासीस, कसीस।

खेचरान्न (सं० क्ली०) खेचरं द्विदलादिमिश्रितं अन्नम्। द्विदलादि सहित एक अन्न, खिचड़ी। (पाकराजेश्वर)

खेचरी (सं० स्त्री०) खेचर-ङीप्। १ योगाङ्ग मुद्राविशेष। काशीखण्डके मतानुसार जीभको उलट कर कपालके कुहर और दृष्टिको ऊपर उठा भौंहोंके बीचमें लगानेका नाम खेचरी मुद्रा है। खेचरी मुद्रा कर सकने पर कोई रोग नहीं होता और कर्मका फल भी मिट जाता है। चित्त और जिह्वा दोनोंके आकाशमें अवस्थान करनेसे ही इसको खेचरीमुद्रा कहते हैं। सभी मुनियोंने इस मुद्राके बल सिद्धि पायी है। विन्दुके देहमें स्थिरभावसे रहने पर मृत्युका भय तिरोहित होता है। इस मुद्राको लगानेसे विन्दु ठहर जाता है। (काशीखण्ड ४१०)

२ पूजाकी कोई तन्त्रोक्त मुद्रा। बायें हाथको दाहनी ओर और दाहने हाथको बायीं ओर रखके दोनों हाथ परिवर्तन करना चाहिये। फिर अनामिकाको मिला करके तर्जनीमें लगाते और बीचकी उंगली चढ़ा या सटा करके अंगूठे पर जमाते हैं। इसीका नाम खेचरी मुद्रा है। (तन्त्रसार)

खेचरी गुटिका (सं० स्त्री०) गुटिकाविशेष, एक गोली। यह मन्त्रसिद्ध होती है। इसको मुंहमें डाल लेनेसे मनुष्य पक्षीकी भांति आकाशमें उड़ सकता है।

खेजड़ी (हिं० स्त्री०) शमीवृक्ष, एक पेड़।

खेजिरि—बङ्गाल-प्रान्तके मेदिनीपुर जिलाका एक नगर। यह भागीरथीके मुहानापर अक्षा० २१° ५२′ उ० और देशा० ८७° ५८′ पू०में अवस्थित है। पहले यहां टेलीग्राफ आफिस था। अङ्गरेजोंके जहाज यहां आ करके ठहरते थे। आजकल कई एक अङ्गरेजोंके मकबरे देख पड़ते हैं। लोकसंख्या १४५७ है।

खेजिल—यूफ्रेटिस नदीके तीरमें रहनेवाली योद्ध जाति। इनकी रमणियां परमासुन्दरी होती हैं।

खेट (सं० पु० क्ली०) खे अटति, अट्-अच् खिट्-अच् वा। १ सूर्य आदि ग्रह। २ कर्षकग्राम, खेड़ा। ३ अस्त्रविशेष, एक हथियार। ४ चर्म, चमड़ा। ५ मृगया, शिकार। ६ तृण, घास। ७ कुणपास्त्रका अधःस्थित फलकाकार कोई काष्ठ, ढालके नीचेकी एक लकड़ी। हेमाद्रिके परिशिष्टखण्डमें लिखा है कि

बालकके लिये कुण्डलीमें खेट १२ अङ्गुल उत्तम, १० अङ्गुल मध्यम और ८ अङ्गुल निकृष्ट होता है। किन्तु बलवान्के लिये वह २०, १८ और १६ अङ्गुल रहनेसे यथाक्रम उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट कहा है। ८ बलदेवकी गदा। ९ कफ, बलगम। १० घोटक, घोड़ा। (त्रि०) ११ सुनिन्दक, बुराई करनेवाला। १२ अधम, कमीना। १३ धनवृद्धिजीवी, सूदखोर। १४ मक्षक, खा डालनेवाला।

खेटक (स० पु०) खेट स्वार्थे कन्। १ ग्रामविशेष, किसानोंका गांव। २ फलक, ढाल। ३ अस्त्रविशेष, कोई हथियार। ४ धनवृद्धिजीवी, सूदखोर।

खेटकी (स० पु०) १ ज्योतिषी, भड्डरी। २ शिकारी। ३ वधिक, बहेलिया।

खेटाङ्ग (स० पु०) खेटमङ्ग यस्य, बहुव्रो०। उप द्रावक जन्तुविशेष, अपदेवता। (कालोखण्ड ११४०)

खेटिताल (स० पु०) खेटिः तालोऽस्य, खिट्-इन्, बहुव्रो०। वैतालिक।

खेटी (स० पु०) खिट् णिनि। १ नागर। २ कामुक।

खेट्ट (स० स्त्री०) तृण, खर, घास।

खेड (स० स्त्री०) गन्धतृण, एक खुशबूदार घास।

खेड—१ बम्बई प्रेसिडेन्सीके अन्तर्गत रत्नगिरि जिला का एक उपविभाग। यह अक्षा० १७ २१´ एवं १७° ५४ उ० और देशा० ७३ २०´ तथा ७३ ४२ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरमें कोलाबा जिला पूर्वमें सातारा जिला, दक्षिणमें चिपलून और पश्चिममें दापोली है। क्षेत्रफल ६८२ वर्ग मील। लोकसंख्या ८५५८४ है। यहां १४६ गांव बसे हैं। यहां धान्यादि शस्य और नानाप्रकार मटर होता है। यहां तीन थाना और दो फौजदारी अदालत हैं। राजस्व ८२००० रु० लेना पड़ता।

२ उक्त खेड उपविभागका प्रधान नगर। यह अक्षा० १७ ४३ उ०, और देशा० ७३ २४´ पू०में जगवदी नदी किनारे अवस्थित है। इसकी चारों तरफ पाहाड़ है। लोकसंख्या प्राय ५०५२ है। यहां डाकघर, पाठशाला और सराय हैं। नगरके पूर्वमें तीन पत्थरके मन्दिर हैं, जिनमें कई एक कुष्ठरोगी रहते हैं।

३ पूना जिलाके अन्तर्गत एक नगर। भीमा नदीके वायें किनारे अक्षा० १८ ५१ उ० और देशा० ७३ ५५´ पू० पर अवस्थित है। लोकसंख्या ३८३२ है। यहां पर म्युनिसपालिटी, डाकघर, औषधालय, तहसीलदारी और पुलीस अदालत है। यहांकी आस पासकी जमीन लेकर खेड ग्रामका क्षेत्रफल लगभग २० वर्गमील होगा। इस ग्राममें बहुतसी प्राचीन कीर्तियां पड़ी हैं। जिनमेंसे भीमा नदी किनारे सिद्धेश्वरका मन्दिर, दिलावर-खांकी मसजिद और कब्र देखने लायक हैं।

४ बम्बई प्रदेशके पूना जिलेका एक ताल्लुका। यह अक्षा० १८ ३७´ तथा १८ १३ उ० और देशा० ७३ ३१´ एवं ७४ १०´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ८७६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १५६२७५ है। उत्तर और दक्षिणको २ बड़ी गिरिश्रेणियां लगी हैं। अधिकांश भूमि लाल या भूरी है। जलवायु स धारणत अच्छा रहता है।

खेडब्रह्म—गुजरातके माहीकाठा राज्यकी एक तहसील और थाना। यह ईदर नगरसे प्राय ३० मील उत्तरको हरनाई नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित और प्राचीनकालकी एक पुण्यक्षेत्र रहनेके लिये सुप्रसिद्ध है। यहां बहुतसे पुराने मन्दिरोंका ध्वंसावशेष देख पड़ता है। ब्रह्मपुराणके मतानुसार ब्रह्माने यहां अपने आपको पापोंसे मुक्त करना चाहा था। विष्णुने पूछने पर उन्हें इसके लिये जम्बूद्वीपके भरतखण्डमें किसी पवित्र स्थान पर जा यज्ञानुष्ठान करनेकी सम्मति दी। ब्रह्माके आदेशसे विश्वकर्माने आबू पहाड़से दक्षिण साबरमतीके दाहने तट पर ३ कोस घेरका एक नगर बनाया था। वह स्वर्णप्राचीरवेष्ठित और २४ द्वारयुक्त रहा। फिर खाच (हरनाई) नदी उसमें प्रवाहित होती थी। फिर उन्होंने यज्ञके लिये ८००० ब्राह्मणोंकी सृष्टि की। यज्ञ पूर्ण और पाप दूर होने पर ब्रह्माने अपने ब्राह्मणोंकी रक्षाके लिये १८००० वैश्योंको उत्पादन किया और ब्राह्मणोंसे कहा तुम मेरे उद्देशमें एक मन्दिर बनावो और उसमें मेरी चतुर्भुज मूर्ति लगावो।

बहुतसे मन्दिर वर्तमान नगरकी सीमाके भीतर हीं

बहुत बिगड़ गये हैं, उनकी कोई देख भाल नहीं करता। नगरसे उत्तरको जङ्गलमें जो ध्वंसावशेष पडा, सबसे अधिक लाभदायक लगा है। उसमें एक सूखे भील पर अनेक कारुकार्यविशिष्ट मन्दिर देखने-योग्य हैं। ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि उसको ब्रह्माके पुत्र भृगुने, जब वह यह अन्वेषण करनेको ऋषियों कर्टक प्रेरित हुए कि त्रिदेवमें कौनसे बडा है, निर्माण किया था। ब्रह्मा और रुद्र अपनी निन्दा सुनके बिगड़े और भृगुको दण्ड देने पर उद्यत हुए। फिर इन्होंने विष्णुकी जा करके परीक्षा ली और साहसपूर्वक उनकी छाती पर अपनी लात रख दी। परन्तु विष्णु भगवान् क्रुद्ध होनेके बदले उनसे अपने वक्षःस्थलकी कठोरताके कारण क्षमा मांगने लगे—आपके पैरमें चोट तो नहीं लगी? भृगुने लौट कर विष्णुको सबसे बड़ा बतलाया था। देवताओंके अपमान करनेका पाप छोडानेको भृगु ब्रह्म क्षेत्र गये और हिरण्याक्षमें स्नान करके अपने आश्रममें महादेवकी स्थापना की और कठिन तपश्चर्यामें लग गये। अन्तको शिवने प्रसन्न हो उनका पाप दूर कर दिया।

उक्त स्थानको भृगु ऋषिका आश्रम कहा जाता है। इसके भीतर किसी स्तम्भसे निकलती हुई एक देवी मूर्ति खोदित है। यह सत्तावन लम्बा, तीस चौड़ा और ३६ फुट ऊंचा है। इसमें ब्रह्माकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। लोग उसकी पूजा किया करते है। नगरके निकट ही पोल पहाड़ है। प्रति वर्ष माघ शुक्ल चतुर्दशी-को मेला लगता है। इसमें गुजरात और मेवाड़के सभी भागोंसे व्यापारी आया करते है।

खेड़ा (हिं० पु०) १ क्षुद्रग्राम, पुरवा। २ नानाप्रकार मिश्रित अन्न। यह निकृष्ट तथा सुलभ रहता और पालित पक्षियोंमें विशेषतः कपोतोंके खानेमें लगता है। गावका मुखिया और पुरोहित 'खेड़ापति' कहलाता है।

खेड़िताल (सं० पु०) गायक, गवैया।

खेड़ी (हिं० स्त्री०) १ लौहभेद, किसी किस्मका देशी लोहा। इसके बने अस्त्र अतितीक्ष्ण होते हैं। खेड़ी नेपालमें बहुत तैयार की जाती है। इसका दूसरा नाम 'भरकुटिया' है। २ मांसखण्डविशेष, गोश्तका एक टुकड़ा। यह जरायुज शिशुवोंके नालमें दूसरे प्रा पर संलग्न होता है।

खेत (हिं० स्त्री०) १ क्षेत्र, जोतने-बोनेकी जमीन। २ खेतकी फसल। ३ स्थान, जगह। ४ समरभूमि, लड़ाईका मैदान। ५ पत्नी, जोड़।

खेतिहर (हिं० पु०) कृषक, किसान।

खेती (हिं० स्त्री०) १ कृषि, का..., खेतका कामकाज। कृषि देखो। २ खेतमें लगी हुई फसल।

खेतीबारी (हिं० स्त्री०) कृषिकार्य, किसानी।

खेतुर—बङ्गाल प्रान्तके राजशाही जिलेका एक गांव। यह अक्षा० २४° २४' उ० और देशा० ८८° २५' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ४४० होगी। ई० १६वीं शताब्दीको चैतन्यदेवके आगमनसे यह स्थान पुण्यक्षेत्र जैसा प्रसिद्ध है। उन्हींके सम्मानार्थ गांवमें एक मन्दिर भी बनाया गया है। प्रति वर्ष अकतूबर मासको यहां बड़ा मेला लगता है।

खेत्रि—राजपूतानाके जयपुर राज्यके अधीन एक सामन्त राज्य। यह अक्षा० २८° उ० और देशा० ७५° ४७' पू०में जयपुर शहरसे ८० मील उत्तरको अवस्थित है। लोक-संख्या प्रायः ८५३७ है। राज्यकी चारो ओर छोटे छोटे पहाड़ हैं। समुद्रतलसे २३३७ फीट ऊंचे पहाड़की चोटी पर एक दुर्ग बना है। यहां एक ऐंग्लो-वर्नाक्यु-लर हाइ-स्कूल, एक अस्पताल और पांच देशी विद्यालय है; जिनमें डाक और तारके आफिस भी लगे, हुए है। शहरके आस पास तांबेकी खान है। जिनसे प्रति वर्ष ३००००) रुपयेकी आमदनी होती है। इसमें खेत्रि, चिड़ावा और कोट-पुतली नामके तीन शहर हैं और कुल २५५ ग्राम लगते है। महाराष्ट्रकी लड़ाई-के समय यहांके सर्दार राजा अभयचन्दने वृटिश-सेना-पति लार्ड लेकके पक्ष हो बहुत सहायता दी थी, इसी लिए वृटिशराजने उक्त सर्दारको प्रत्युपकारस्वरूप एक लाख रुपये आमदनीका 'कोटपुतली' नामक एक स्वतन्त्र परगना दान दिया था। राज्यकी आय लगभग पांच लाख रुपये है। खेत्रिके सामन्त प्रति वर्ष जयपुर राजाको ७३७८०) रु० कर दिया करते है। यहां प्रायः ६५० हाथ ऊंचे गिरिदुर्गमें सामन्त राजका वासभवन है।

खेद (सं० पु०) खिद भावे घञ्। १ शोक, अफसोस।

२ अवसाद अफसुर्दगी, थकावट। ३ रोग, बीमारी। साहित्यदर्पणके मतसे रति अथवा पथगतिसे उत्पन्न होने वाला श्रम भुलावा। यह लम्बी सास आने और सो जानेका कारण है। (साहित्यद० ३ १७०)

खेदन (सं० क्ली०) खिद ल्युट खेद, रञ्ज, अफसोस।

खेदना (हिं० क्रि०) खदेरना, भगाना, पीछा करना।

खेदा (वै० स्त्री०) रश्मि रज्जु। (ऋक् ८।७७।३)

खेदा (हिं० पु०) १ आखेटमें किसी वन्य पशुको वध करने या पकड़नेके लिये खदेर करके एक उपयुक्त स्थानमें ले जानेका ढङ्ग। इसमें लोग ढोल बजाते और हल्ला मचाते हैं २ शिकार, अहेर।

खेदाई (हिं० स्त्री०) १ खदेर, पीछा। २ खदेरनेकी उजरत या मजदूरी।

खेदि (सं० पु०) खिद अपादाने इन्। किरण, झलक।

खेदितव्य (सं० क्ली०) खिद भावे तव्य। खेद, अफसोस।

खेदिनी (सं० स्त्री०) अग्नपर्णीक्षुप, एक बेल।

खेद्य (सं० त्रि०) खिद णिच् यत्। कलाया जानेवाला, जिसे अफसोस करना पड़े

खेना (हिं० क्रि०) १ नाव आदि जलयान चलाना, मल्लाहगरी करना। विशेषत नौकादण्डका परिचालन 'खेना' कहलाता है। २ निर्वाह करना, पार लगाना।

खेनेवाला (हिं० वि०) खेवैया, नाव चलानेवाला।

खेप (हिं० स्त्री०) १ भरती, लदान, चालान। एक बारमें जितनी चीज ले जायी आती 'खेप' कहलाती है। २ दौड़, धावा, रवानगी।

खेपड़ी (हिं० स्त्री०) १ नावकी बल्ली। २ नौकादण्ड, डांड।

खेपना (हिं० क्रि०) काटना, पहुंचाना गुजारना

खेपरिभ्रम (सं० क्ली०) १ आकाशमें विचरण, आसमानमें घूमफिर। (वि०) २ आकाशमें विचरण करनेवाला, जो हवामें उड़ता हो।

खेमकर्ण—पञ्जाबके लाहोर जिलेकी कसूर तहसीलका एक नगर। यह कसूर नगरसे ३३ कोस अक्षा० ३१ ८´ उ० और देशा० ७४ ३४´ पू०में विपाशा नदीके प्राचीन किनारे पर्यवस्थित है। यहाकी लोकसंख्या ६०८३ है। नगर चारो ओर चहारदीवारीसे घिरा हुवा है। पहले समयमें यह एक समृद्धिशाली नगर था। आजकलभी कई एक खण्डहर पूर्व गौरवका परिचय देते हैं। यहां म्युनिसपालिटीभवन, विद्यालय, थाना और पान्थनिवास हैं।

खेमटा (हिं० पु०) छह मात्राओंका एक ताल। कोई कोई चार मात्राओंके तालको भी 'खेमटा' कहता है। जैसे—

+	१	०	१
धाटे धें	नाते ने,	ताटे धें	नाधेने
+	१	०	१
धेगेधि	नातिन	नागधि	नातिन

(सङ्गीतरत्ना०)

इस तालका नाच गाना भी 'खेमटा' ही कहा जाता है। बहुतसे टादरे इसी तालमें गाते हैं।

खेमा (अ० पु०) शिविर, डेरा, तम्बू, कनात।

खेय (सं० त्रि०) खन्यते खन् कर्मणि क्यप इकारयादेश। १ खननीय, खोदा जानेवाला। (क्ली०) २ परिखा, खाई। ३ खरनई।

खेयोङ्ग्था—चट्टग्राम और आराकानवासी जातिविशेष। साधारणत मनुष्य इन्हे 'जुमिया' कहकर पुकारते हैं। इनमें बारह शाखायें हैं;—१ रियाङ्ग्सा, २ पलेङ्ग्सा, ३ पनिङ्ग्सा ४ कोकदिनसा, ५ वैयमसा ६ मङ्ग्सा ७ फाङ्गोयसा ८ कोकपियसा, ९ चेङ्ग्सा, १० मरोसा, ११ मावकोसा, १२ क्रोङ्गच्छङ्ग्सा, १३ टेङ्ग्यात, १४ कोकमासा, १५ महलेङ्ग्सा। जिस नदी किनारे ग्राममें ये दलबाध कर रहते हैं उसी नदीके नाममें अपनी अपनी शाखाका नाम रख लेते हैं। कर्णफूली नदीके दक्षिणभागमें जो रहते हैं उन्हें मद्र नदी किनारे बन्दार ग्रामवासी बोमोङ्गको कर देना पड़ता है। और जो कर्णफूली नदीके उत्तरभागमें रहनेवाले मोङ्ग राजाको कर देते हैं। ग्रामवासी द्वारा निर्वाचित किसी मण्डलको राजाका कर वसूल करनेके लिये नियुक्त करते हैं। यही मण्डल सर्दारके छोटे छोटे मुकद्दमोंका विचार करते हैं जिसमें इनको दोनों पक्षसे कुछ कुछ मिल जाया करता है।

जितने रुपये यह प्रजासे लेकर राजा या सर्दारको देते हैं उनमेंसे कुछ रु० शासके अन्तमें कमिशन काट कर उन्हें मिल जाता है। प्रत्येक परिवारको चारसे लेकर आठ रु० तक प्रतिवर्षमें कर देना पड़ता है। उन लोगोंको कुछ भी कर नहीं देना पड़ता है जो अविवाहित पुरुष, पुरोहित, विधवा, पतिहीन स्त्री हैं अथवा जो सम्पूर्ण रूपसे शिकारही के ऊपर अपनी जीवन निर्वाह करते हैं।

पहले पहल यह जाति भी अन्यान्य पार्वतीय जातियों की तरह भूत प्रेतोंको खुश करनेके लिये पूजा करती थी। आजकल इस जातिके मनुष्य गौतम बुद्धकी पूजा करते हैं जिसके लिये प्रत्येक ग्राममें एक धर्म-मन्दिर है। साधारणत: कई एक वृक्षोंकी छायामें चार हाथ ऊंचा मन्दिर बनता है। मन्दिरके बाहर और भीतर अकेले बांसका काम किया जाता है।

प्रत्यह प्रात: और सन्ध्यासमय ग्रामके समस्त पुरुष दल बाँध बाँध कर आते और सिरसे पगड़ी उतार कर घुटने टेक बुद्धदेवकी उपासना करते हैं और प्रतिष्ठित मूर्तिकी पार्श्वस्थित घण्टाको बजाते हैं। इन लोगोंका विश्वास है कि घण्टा बजानेसे देवता जाग उठते और हमारे भजनको सुनते हैं।

सन्ध्यासमय ग्रामके युवक वहीं खेलते कूदते और नाचते हैं। भजन-मन्दिरके भीतर ऊंचे बांसके मञ्च पर गौतम बुद्धकी मूर्ति रहती है। प्रतिदिन प्रात: समय ग्रामकी लड़कियां, मन्दिर आतीं और फूल आदिसे बुद्धदेवकी पूजा करतीं हैं। यह उपस्थित अतिथिकोंका दैनिक आहारोपयोगी खाद्यद्रव्य साथ ही लिये आती और थियङ्गके बाहर चारों ओरकी दिवार पर ... है। तख्ता लटका करता है और इसी स्थानमें ग्रामके समस्त बालक बालिका आकर लिखना पढ़ना सीखते हैं।

प्रतिवर्ष इन लोगोंमें खेतीको बोनीसे पहले 'सियाङ्ग-युङ्ग्पा' व्रत होता है। इस व्रतमें आठ या नौ वर्षके लड़कोंका सर मुंड़ाया और पुरोहितोंका जैसा पीला कपड़ा पहनाया जाता है, उनमेंसे प्रत्येक दक्षिणास्वरूप चावल या कपड़ा लेकर पुरोहितके चारों ओर बैठता है। इस समय प्रत्येकके सामने एक एक दीपक जला करता है। फिर लड़के सात दिन तक पुरोहितके कथनानुसार खाते पीते और पहनते ओढ़ते हैं। यही इनकी दीक्षा है। स्त्रियां इस व्रतको नहीं कर सकतीं। जब कोई प्रिय व्यक्तिकी गुरुतर पीड़ा वा आग विपदमें रक्षा पाता है, तो उसे ईश्वरको धन्य करनेके लिये यह व्रत करना पड़ता है।

क्षुद्र क्षुद्र मन्दिर व्यतीत इनके दो मन्दिर प्रधान हैं। एक बोमोङ्गके राजाकी राजधानी वृन्दावन-नगरमें, दूसरा चट्टग्रामके रावजान थानाके अन्तर्गत है। इन दो स्थानोंमें बुद्धदेवके दर्शनके लिये अनेक यात्री वैशाख मासको आते हैं।

खियोङ्ग्या बहुत सामान्य भावसे वस्त्रादि परिधान करते हैं। साधारण मनुष्य घुटने तक लम्बा सूती वस्त्र पहनते हैं, किन्तु बड़े आदमी रेशम या बारीक मलमल व्यवहार करते हैं। सब लोग अङ्गरखा और टोपी पहनते हैं इनमेंसे कोई भी मनुष्य जूता व्यवहार नहीं करता। स्त्रीजाति साधारणत: अपनी छातीमें एक खण्ड कपड़ा बांधते हैं। समय समय पर अङ्गा भी पहनते और टोपीके बदले सिर पर रुमाल लपेटते हैं। ये अलङ्कार पहनना ... पसन्द करती हैं।

लड़कोंकी शादी १७ या १८ वर्षकी अवस्थामें होती है। पुत्रके योग्य एक सुपात्री पिताको खोजनी पड़ती है। तत्पश्चात् वरकर्ता एक घटक स्वरूप आत्मीयको कन्याकर्ताके निकट विवाह सम्बन्ध स्थिर करनेके लिये भेजते हैं। यदि कन्याकर्ताकी सम्मति हुई तो एक दिन वरकर्ता जाकर कन्या देखते और यौतुक स्वरूप एक अङ्गा और चांदीकी एक अंगूठी देते हैं। बाद उसके शुभनक्षत्र देखकर विवाहका शुभलग्न स्थिर होता है। दोनों पक्षवाले अपने अपने कुटुम्बको निमन्त्रणपत्र और एक मुरगी भेजते हैं। किसी किसी स्थानमें आजकल मुरगीके बदले पैसा दिया जाता है। विवाहके दिन वर और यात्री बहुत धूमधामके साथ लड़कीके घर जाते हैं, जहां वर और बरातके टिकनेके लिये बांसके छोटे छोटे घर बनाये जाते हैं। इन घरोंमेंसे एक घर वरके लिये सजा हुवा रहता है। सन्ध्या समय वर लड़कीके घर जाता है। जहां लड़के और लड़कीको एक सूतसे लपेट

देते हैं और पुरोहित आकर विवाहके मन्त्रादि पाठ करते हैं। उसके बाद सात बार लड़का और लड़कीके हाथमें भात रखा जाता है और लड़केका दाहना हाथ उठा करके लड़कीके हाथ पर रखते हैं और पुनर्वार मन्त्रादि पाठ किया जाता है। इसके बाद विवाह शेष हो जाता है और बरात बड़ी धूमधामके साथ भोजन करती है।

ये मुर्दोंको जलाते हैं। अपनी जातिके किसी मनुष्य के मरने पर उनमेंसे एक व्यक्ति ढोल बजाता और स्त्रियां उच्चैस्वरसे रोती हैं। ढोलकी आवाज सुनने पर सब पड़ोसी एक जगह इकट्ठे होते हैं और मुर्दाको जलानेके लिये ले जाते हैं। इस काममें इन्हें २४ घंटे लगते हैं। जब ये शव जलानेके लिये जाते हैं, तो आगे आगे पुरोहित, उसके बाद शिष्यगण, उनके पीछे कुटुम्बादि और सबके पीछे शवको लिये हुए मृत मनुष्यके जातिवर्ग रहते हैं। एक निकट आत्मीय मुर्देके मुंहमें अग्नि देता है। मुर्देके जल जाने पर उसका भस्म मट्टीमें गाड़ा जाता है और इस कब्रके ऊपर बांसमें निशान बांध कर खड़ा कर देते हैं। मरनेके सात दिन बाद पुरोहित आ मृतव्यक्तिके कल्याणार्थ स्वस्त्ययन करते हैं।

यह लोग आराकानी भाषामें बातचीत करते और ब्रह्मदेशीयोंके जैसे अक्षरोंमें लिखते पढ़ते हैं।

एक समय यह जाति बहुत प्रबल हो गयी थी। इनका अत्याचार आज भी बङ्गवासियों खास कर पूर्व-बङ्गाल और चट्टग्रामके लोगोंको नहीं भूलता।

उस समयके मघ राजा या राज राजादेशसे नहीं करते थे। वे दल बांध बांध कर लूटते और देश जलाया करते थे। इसी कारण सुन्दरवनके कुछ अंश और बाखरगञ्ज, चट्टग्राम प्रभृति स्थानोंसे बहुत मनुष्य प्राण लेकर भागे। क्योंकि टोगलासे ससरा करके १६६४-६५ ई०में बङ्गालके शासनकर्ता शायस्ता खां आराकान राजाके विरुद्ध युद्धके लिये अग्रसर हुए उस समय चट्टग्राम मघ राजाके अधीन था।

इस युद्धमें मघ पूर्णरूपसे पराजित होकर भाग गये और चट्टग्राम फिर बङ्गालके अधीन हो गया। इस समय बङ्गालके प्राय सभी स्थानोंमें मघ वास करते हैं। [मघ देखो।]

खेरकेरिया—भूटानमें लच्मी नदीका निकटस्थ एक ग्राम। यह दरङ्ग जिलाके उत्तर प्रान्तमें अवस्थित है। यहां प्रतिवर्ष एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें दूर दूर देशके मनुष्य आते हैं। कितने ही रुपयोंका माल बिका करता है

खेरडी—काठियावाड़ प्रान्तके राजकोट राज्यका एक ग्राम। यह राजकोट नगरसे ८ मील पूर्वको अवस्थित और सुप्रसिद्ध लोमा खुमानके निवासस्थान जैसा परिचित है। इन्होंने गुजरातके सुलतान मुजफ्फरको आश्रय दिया, जिन्होंने अकबर बादशाहके तत्प्रान्तीय सूबेदारसे अपने आपको छिपा लिया था 'मीरात सिकन्दरी' में उसको सरदार परगनेका गांव लिखा है। विश्वासघातकतासे लोमा खुमानके नवानगरमें मरने पर मालूम होता है कि उनके वंशधरोंने खेरडीका अधिकार गवां दिया और जाम साहबने उन्हें निकाल बाहर किया। फिर यह थोड़े दिनों जसदानमें रहे परन्तु १६६०-६५ ई०को थोका खाचरने लोमाखुमान भ्राता भोकाके पौत्र नय खुमानसे जयदान विजय किया और यह लोग लोलियानाको पीछे हट गये। खेरडी नगरकी लोकसंख्या प्राय १३४८ है।

खेरवा (हि० पु०) सामुद्रिक नाविक, समुद्रमें जहाज बनी करनेवाला मल्लाह।

खेरवाड—१ मज विभागकी एक छावनी। यह अक्षा० २३ ५८ उ० और देशा० ७३ ३६ पू०में उदयपुर नगरसे ५० मील दक्षिण गोदावरी नाम्नी क्षुद्र नदीके तटों पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय २२८८ होगी। १८४० और १८४४ ई०को खड़ी की हुई मेवाड़ भील सेनाका यह सदर मुकाम है।

खेरवाडी—छोटानागपुरकी एक भाषा। इसकी बहुतसी शाखाएं भ्रमवश स्वतन्त्र समझी जाती हैं उनके नाम हैं—सन्ताली, मुण्डारी, भूमिज, बिरहार, कोडा, हो, तूरी, आसुरी, अगरिया और कोरवा।

खेरवाल—(खेडवाल) गुजरातके ब्राह्मणोंकी एक शाखा। यह खेडा जिलेमें बहुत पाये जाते हैं। इनका बड़ा स्थान आनन्द उपविभागके उमरेठ ग्राममें है। यह अपनी

उत्पत्ति विप्रवर्ग और पशुवर्ग ब्राह्मणोंसे बतलाते और कहते हैं कि चन्द्रवंशीय राजपूत राजा मोरध्वजके शासन कालको यह शहर जीर्ण और शीर्ण देखके [illegible] सन्निकटस्थ श्रीरङ्गपट्टनमें जा करके रहे थे। श्रीरङ्ग पट्टनसे आज भी इनका सम्बन्ध लगा है। यह पञ्चाङ्ग (विस) और वहिरङ्ग (बाज) दो श्रेणियोंमें विभक्त है। कहते हैं, किसी समयको खेड़ाके राजा पुत्रकामनासे ब्राह्मणोंको बहुतसा दान दिया, परन्तु अधिकांश ब्राह्मणों ने उसको अग्राह्य समझ नगरसे बाहर जा करके निवास किया था। इसीसे दान लेनेवाले भीतरी और न लेनेवाले बाहरी कहलाये हैं। यह हृष्टकाय, परिश्रमी, मितव्ययी और उन्नतिशील है। इनकी स्त्रियां विवाहोत्सवों वा ज्ञातिभोजोंमें सम्मिलित नहीं होतीं। विधवाएं सफेद कपड़े पहनती हैं। विस या भीतरी बहुत कम देख पड़ते और दरिद्रावस्थामें लाड़ बनियों का कुलपौरोहित्य करते हैं। परन्तु बाज लोग दान ग्रहण न करनेका गर्व रखते और धनी होते हुए जमान्दारी, महाजनी और सौदागरीमें लगे रहते हैं। माही-कांठेमें भी खेड़वालोंकी दोनों श्रेणियां मिलती हैं।

खेराटि सूरमल—भील जातिमें एक प्रधान धर्मप्रचारक इनका प्रधान उद्देश्य यह था, कि श्रीरामचन्द्रजी ईश्वरावतार हैं। भीलोंके "भक्त" नामक गुरु अपनेको खेराटि सूरमलका शिष्य बतलाते हैं। (भी॰ है॰।)

खेराली—काठियावाड़के झालावाड़ विभागमें एक क्षुद्र राज्य। खेराली और बादला नामक ग्राम इस राज्यके अन्तर्गत हैं इसका क्षेत्रफल ११ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: १६३८ है। इस राज्यकी आमदनी २५८८०) रु० और मालगुजारी ६७८) रु० ब्रिटिश गवर्नमेण्टको देना पड़ता है।

खेरालु—१ बड़ोदा राज्यके काडी प्रान्तका एक तालुका। इसका क्षेत्रफल २४६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: ७६४६३ है। यह इस छोरसे उस छोर तक समतल और जङ्गलसे भरा हुआ है। खारी इसके भीतर पूर्वसे पश्चिमको बहती है।

२ गुजरातमें बड़ोदा राज्यके काडी विभागके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३° ५४ उ० और देशा० ७२° ३८ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: [illegible] है। यह स्थान [illegible] प्रतिष्ठित [illegible] मन्दिरके कारण प्रसिद्ध है। यहां [illegible] [illegible], थाना, [illegible], [illegible] और [illegible] पाठशाला है।

खेरी [illegible] १२ [illegible] [illegible] और [illegible] है। २ [illegible], [illegible]। ३ [illegible], [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] है।

खेरी—युक्तप्रदेशके लखनऊ विभागका एक उत्तरांश जिला। यह अक्षा० २७° ४१ तथा २८° ४२' उ० और देशा० ८०° २ तथा ८१° १८' पू० के मध्य अवस्थित है। इस जिलाके उत्तरमें मोहन नदी, पूर्वमें कौड़ियाला नदी, दक्षिणमें सीतापुर तथा हरदोई जिला और पश्चिममें शाहजहांपुर जिला है। यह जिला सीतापुरसे २८ मील उत्तर और लखनऊसे ८४ मील उत्तर पश्चिम है। इसका क्षेत्रफल २९६० वर्गमील है और लोकसंख्या प्राय: ९०५१३८ है। यह जिला [illegible] कामें विभक्त है, जिसमें होकर कौड़ियाला, [illegible], उल्ल, जमवारि, कठना, गोमती और सुखेता नदियां बहती हैं। उल्ल नदीके उत्तरकी तराई बहुत अस्वास्थ्यकर है। कौड़ियाला और चौका नदीके मध्यकी जमीन शस्यशालिनी और उर्वरा है। जिलाका प्राय: ६५० वर्गमील स्थान जङ्गलसे भरा है। इस वनमें सुन्दर शाल, और शीशमकी लकड़ी पायी जाती है, इसलिये लगभग ३०३ वर्गमील जमीन सरकारको खास अपनी है। इस जिलाके उत्तरमें मलेरिया ज्वर प्रबल है। दक्षिणांश स्वास्थ्यकर है। यहां अधिक मूल्यवान् खनिज पदार्थ नहीं है, सिर्फ खैरीगढ़ परगनामें मिट्टीका तेल निकलता है। गोला नामक स्थानमें अच्छा कङ्कर और खैराडामें उत्कृष्ट शोरा मिलता है। यहां जङ्गलमें बाघ, हरिण, चित्रमृग, शूकर और नीलगाय देखे जाते और विषैले सर्प तथा कुम्भीर भी यथेष्ट पाते हैं। यहांकी उपज कोदो, काकुन, बाजरा, उड़द, मूंग, गेहूं, यव, सरसों, ऊख, कपास, तम्बाकू, अफीम, नील, और नाना प्रकार शाक सब्जी हैं।

यह जिला तीन तहसीलों और १७ परगनाओंमें विभक्त है। प्रथम, लखीमपुर तहसीलके अधीन खेरी, श्रीनगर, भूर, पाइला और कुकरामैलानी परगना है। दूसरी निघासन तहसीलके अधीन फीरोजाबाद, धौराहा, निघासन, खैरीगढ़ और पलिया परगना, तीसरी, मुहम्मदी तहसीलके अधीन मुहम्मदी, परगवान, औरङ्गाबाद, काठा, हैदराबाद, बरदापुर और अतवा पिपरिया परगना है। यह जिला डिपुटी कमिश्नरके शासनाधीन है,

यह अकबरके समयमें बहुत जमींन्दारोंके अधिकारमें था। मुहम्मदीके राजाने अकबर बादशाहसे पांच ग्राम और ३०० बीघा जमीन प्राप्त की थी। एक समय वे समस्त जिलाके अधिकारी थे। वर्तमान समयमें जाङ्गरी, बैजवार, सूर्यवंश, जन्वार, राजपूत सिख, और सैयद यहांके जमींदार हैं। यहां विद्यालय, थाना, अस्पताल और औषधालय हैं।

२ उक्त जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २७ ५४´ उ० और देशा० ८०° ४८´ पू० पर अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या ६२२३ है। यहां १४ हिन्दूमन्दिर, १७ मसजिद और तीन इमामबाड़ा हैं। इस शहरमें एक विद्यालय भी है। १५६२ ई०को मरे सैयद खुर्दका मकबरा देखनेकी चीज है।

खेल (सं० त्रि०) खेलति, खेल अच्। १ अति सुन्दर भावमें गमन करनेवाला, जो बहुत अच्छी तरह चलता हो। (पु०) २ वेदप्रसिद्ध कोई राजा। अगस्त्य इनके पुरोहित रहे। इनकी पत्नी 'विश्पला' कहलाती थी। किसी समय खेल राजासे शत्रु पचीय धारकृपोंमें लड़ पड़े। इसी युद्धमें राजपत्नी विश्पलाके दोनो पैर कटे थे। पुरोहित अगस्त्यने अश्विनीकुमारद्वयको उसके प्रतीकारका अनुरोध किया, उन्होंने रात्रिको जा करके लोहेके दूसरे दो पैरोंको विश्पलाके टूटे पैरोंकी जगह लगा दिया। (ऋक् १।११६।१५)

खेल (हि० पु०) १ केलि, क्रीडा, मन बहलाव, उछल कूद चलफिर, दौड़ धूप। इसीमें आंखमिचौनी, कुई कुम्भीवर, लुकोलोय, अंधेरियाउजेरिया, लुकी गुकीयर, कमड्डी, चटई डण्डा, गेंडी गेंट, गोली गुलिया, ताश शतरञ्ज, गवडा, सुरवग्गा आदि बहुतसे मनबहलावोंका बोध होता है। २ काम, बात। ३ खिलवाड़, हलका काम। ४ अभिनय, स्वांग, तमाशा। ५ अलौकिकता, निरालापन, अद्भुत लीला। ६ कोई क्षुद्र सरोवर। इसमें पशु जल पीते हैं।

खेलन (सं० क्ली०) खेल-ल्युट्। १ क्रीड़ा, खेल, मन बहलावा। २ खेलनेकी चीज, जिससे खेला जावे। जैसे—गेंद, बल्ला गोट ताश आदि।

खेलना (हि० क्रि०) १ मन बहलाना, खेल करना। २ देवी आना, भूत चढ़ना इसमें मनुष्य अपने हाथ पैर और सर हिलाने लगता है। ३ घूमना फिरना। ४ अभिनय दिखाना स्वांग बनाना, तमाशा करना। इसका प्रेरणार्थक रूप 'खिलवाना' है।

खेलनी (सं० स्त्री०) खेलत्यत्र, खेल आधारे ल्युट ततो ङीप्। शारिफलक, मोहरा, गोट।

खेलवाड़ (हि० पु०) १ हंसी दिल्लगी, खेलकूद, मन बहलाव। २ खेलकूद करनेवाला, दिल्लगीबाज।

खेला (सं० स्त्री०) खेल-घञ्-टाप्। स्वनामख्यात क्षुप, एक झाड़ी। यह मधुर, ठण्डी, दूध बढ़ानेवाली और कफकर होती है। (राजनिघण्टु)

खेलाई (हि० स्त्री०) क्रीडन, खेल।

खेलाड़ी (हि० वि०) १ खेलैया, खेलनेवाला। २ दिल्लगीबाज, हंसैया। (पु०) ३ क्रीड़ा करनेवाला व्यक्ति। ४ पात्र, अभिनेता, तमाशा दिखानेवाला। ५ परमेश्वर, दुनियाको बनाने बिगाड़नेवाला।

खेलात—बलूचस्तानका देशी राज्य। यह अक्षा० २५° १´ तथा ३०° ८´ उ० और देशा० ६१° ३७´ एवं ६९° २२´ पू०के बीच पड़ता है। इसका पूरा क्षेत्रफल ७१५८३ वर्गमील है। इसके उत्तर इरान, पूर्व बोलान गिरिसङ्कट, मरी तथा बुगती पर्वत एवं सिन्धु, उत्तर छागई और क्वेटा-पिशीन् जिले और दक्षिणको लसबेल तथा अरब सागर है। यह देश बहुत पहाड़ी है। नदियां प्रायः दक्षिणको बहती हैं। समुद्रतट १६० मील विस्तृत और पसनी बन्दर प्रधान है। गुआदरको चारों ओर मस्कटके सुलतानका अधिकार है।

प्रस्तरके उद्भिद् दक्षिणमें विभिन्न हैं। जलवायुकी

अवस्थामें भी बड़ी विभिन्नता दृष्ट होती है। भीतरी भागमें गर्मी बहुत पड़ती सर्दी कम रहती है। वृष्टि सभी जगह अनियमित रूपसे होती और अल्प तथा स्थानीय रहती है। यथाक्रम अरबों, गजनवियों, गोरियों, मङ्गोलों और फिर सिन्धुवासियोंके अधिकारमें आ यह दिल्लीके मुगल-सम्राट्का अधिकृत हुआ। अहमदशाह शक्ति ई० १५वीं शताब्दको उत्थित हुई और १८वीं शताब्दीको अपनी चरम सीमा पर पहुंच, परन्तु यह सदा दिल्ली या कन्दाहारके अधीन रही। प्रथम अफगान युद्धके बाद यह अंगरेजोंके अधीन हो गया। इसका आधिपत्य १८५४ और १८७६ ई०की सन्धियोंमें विवेचित और विस्तारित हुआ है। मकरानमें कारेजका ध्वंसावशेष और 'गब्रबन्द' (आतशपरस्तोंके पुश्ते) भूतत्त्ववित्ताओंके देखने योग्य है।

खिलातके अधिवासी चटाइयोंके झोपड़ो या कम्बलोंके डेरोंमें रहते हैं। लोकसंख्या प्रायः ४७०३३६ है। प्रधानतः बराहुई, बलूची, दिहवारी और सिन्धी भाषाएं प्रचलित हैं।

भूमि अधिकांश बालुकामय है। गेहूं और ज्वार प्रधान खाद्य है। मकरानमें खजूरका बड़ा खर्च है। बागोंमें अनार बहुत देख पड़ता है। नारी और काछीसे बहुत अच्छे मवेशी आते हैं। सरवान और काछीमें बलूचस्तानके सबसे अच्छे घोड़े पैदा होते हैं। खिलात नगरके पास बड़े बड़े गधे उपजते और मकरानके गधे अपनी द्रुतगतिके लिये प्रसिद्ध रहते हैं। भेड़ और बकरे बहुत हैं। काछी, पाब पहाड़ और खारांमें ऊंट बहुत होते और सब जगह माल असबाब ढोनेके लिये जानवर मिलते है। सब लोग अपने अपने घरमें मुर्गियां रखते हैं। अमीरोंके पास अच्छे अच्छे ताजी कुत्ते रहते हैं।

यहां रुपये पैसेका चलन बहुत कम है। मालगुजारी और मजदूरी कृषिजात द्रव्योंमें दी जाती और खरीद फरोख्त विनियमसे चलती है। जनता अति दरिद्र है। परन्तु अब गये कई सालोंसे लोग अच्छे कपड़े पहनने लगे हैं। मकरानियोंमें भिक्षावृत्ति अधिक प्रचलित है। सोर पहाड़में कोयलेकी खान है। दलदलोंकी मट्टीसे अच्छा नमक निकलता है। काछीमें मोटा रेशमी कपड़ा बुना जाता और मकरानमें कसीदे रेशमकी चीजें बनती हैं। सभी जगहके स्त्रियां सूईके काममें होशियार हैं और यहांकी कारचोबी उमदा और देखने लायक होती है। स्त्रियां काले ऊनके टिकाऊ नमदे तैयार करती हैं। खजूरकी चटाइयां, थैलियां, रस्सियां और दूसरी चीजें भी बनायी जाती हैं।

व्यवसाय महसूलकी अधिकता और ऊंटोंके किरायेमें रुका है। राज्यके पूर्व और उत्तरपूर्व नार्थवेष्टर्न रेलवे चलती है। कोटासे खेलात नगर तक बैलगाड़ी आने जानेकी राह और तार भी लगा है। अंगरेज गवर्नमेण्ट खेलातके खांकी प्रजा और दूसरे स्वाधीन लोगोंके झगड़ोंमें ही हस्तक्षेप करती है। राज्यका पूरा आय प्रायः साढ़े सात और ८॥ लाख रुपयेके बीच और खर्च कोई साढ़े तीन या ४ लाख रुपया वार्षिक है। अंगरेज सरकार खां साहिको कितना ही रुपया प्रति वर्ष शान्ति बनाये रखनेको देती है। किसानोंको खांके किलेकी मरम्मत और घोड़ेकी हिफाजत करनी पड़ती है। सेनाकी व्यवस्था ठीक नहीं।

अभी तक शिक्षाकी अवहेलना ही रही है। ससजिदके मदरसोंमें कुछ लड़के पढ़ते और हिन्दू अपने घर पर ही मातापिता कर्तृक शिक्षित हुवा करते हैं।

खेलाना (हिं० क्रि०) १ क्रीड़ामें किसी अन्य व्यक्तिद्वारा प्रवृत्त करना। २ क्रीड़ामें सम्मिलित करना खेलको मिलाना। ३ बहलाना, चुप करना, बहटाना। प्रायः

खेलि (सं० स्त्री०) खे आकाशे अलति पर्याप्नोति, सुन्दर अल्-इन्। १ गान, गाना। २ वाण, तीर। ३ भ्रलिये ४ पक्षी। ५ जन्तु। पनो

खेलुआ (हिं० पु०) यन्त्रविशेष, एक औजार। यह देखनेमें थाली-जैसा होता है। इससे चर्मको मुलायम बनाते, खारी नमक रगड़ रगड़ करके खिलाते हैं।

खेव (हिं० पु०) तृणविशेष, एक घास। इसका अपर नाम 'पलञ्जी' है। प्रथम वृष्टिमें ही यह खूब उग आता और घोड़ेको खानेमें बहुत सुहाता है।

खेवट (हिं० पु०) १ पट्टीदारोंकी जमीनके हिसाबका एक कागज। इसमें पटवारी उनको जमीन और मालगुजारीकी कैफियत लिखता है। २ मल्लाह, मांझी।

खेवनाव (हि॰ पु॰) वृक्षविशेष, एक पेड़। यह पेड़ बड़ा होता और भारतके कई प्रान्तोंमें उपजता है। इनके भीतरसे रेशेकी रस्सी बनती है। खेवनावसे लाह भी निकलती है। स्थानविशेषमें इसको 'दुवरखेव' भी कहा जाता है।

खेवा (हि॰ पु॰) १ नावका किराया, किश्तीकी मजदूरी। २ नावकी खेप। ३ बार, मरतबा। ४ भरी नाव।

खेवाई (हि॰ स्त्री॰) १ नौकापरिचालनकार्य, जहाजरानी नाव चलाई। २ नाव पर चढ़नेका भाड़ा या किराया। ३ कोई रस्सी। इससे दण्ड नौकामें आबद्ध किया जाता है।

खेस (हि॰ पु॰) वस्त्रविशेष, एक कपड़ा। यह मोटे देशी सूतका बनता और चादर जैसा लम्बा रहता है। इसको बिछौनेमें व्यवहार करते हैं।

खेसर (स॰ पु॰) खे आकाशे इव शीघ्रगामित्वात् सरति, सृ-ट अलुक् समा॰। अश्वतर, खच्चर। यह घोड़ीके पेटमें गधेका उत्पन्न किया हुआ एक जन्तु है। पर्याय—अश्वखरज, सक्षद्गर्भ, अश्वग, खमी, सन्तुट, मिश्रद, मिश्रशब्द, अतिभारग।

खेसारी (हि॰ स्त्री॰) चटरी, किसी किस्मका मटर। इसकी फलियां चपटी रहती हैं। खेसारीकी दाल बनाया करते हैं। यह सस्ती बिकती और भारतमें प्राय सर्वत्र खेतोंमें उपजती है। खेसारीको कार्तिक अग्रहायण मासमें बोया जाता है। यह प्राय साढ़े तीन मासमें तैयार होती है, प्रवादानुसार अधिकतासे इसको व्यवहार करनेसे मनुष्य पङ्गु बन जाता है। खेसारी बहुत दस्तावर होती है।

खेह (हि॰ स्त्री॰) धूलि, खाक, मट्टी।

खैंचनी (हि॰ स्त्री॰) काष्ठखण्डभेद, देवदारु लकड़ीकी एक तख्ती। इस पर तेल डाल करके औजारोंको साफ किया जाता है।

खैबर—उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रदेशमें अफगानस्थानकी जानेवाला एक ऐतिहासिकगिरि सङ्कट (घाटी) इसका केन्द्र स्थान अक्षा॰ ३४ ६´ उ॰ और देशा॰ ७१ ५ पू॰में अवस्थित है। इस घाटीके पहाड़ भी खैबर ही कहलाते हैं।

खैबर घाटी अफगानस्थानसे भारत आनेकी उत्तरकी बड़ा राह है। यह घाटी पेशावरसे १०॥ मील पश्चिमको आरम्भ होती और ३३ मील पहाड़ियोंमें घूमती हुई डक्कामें जाकर निकलती है। कादिमसे अली-मसी मुहाण है और उसकी पश्चिम सीमाके बाहर बौद्ध धर्म तथा प्राचीन सभ्यताके अनेक निदर्शन विद्यमान हैं। जुलाई, , अगस्त, दिसम्बर और जनवरी महीनेमें खबरकी नदियोंमें एकाएक बाढ़ आ जाती है। यहां लदे हुए जानवरोंको आने जानेमें बड़ी तकलीफ पड़ती है।

यह घाटी सदा सर्वदा भारतवर्षका एक प्रधान मार्ग रही है। मकदूनियाके सिकन्दरने इसी राह अपनी सेना भारत भेजी थी। महमूद गजनवीने भी जयपाल चढ़ाई करते समय खैबर घाटीसे काम लिया। मुगल बादशाह बाबर और हुमायू कई बार इस राह होकर गुजर गये। नादिर शाहने खैबर घाटीमें जा कर जमरूदके पास काबुलके सूबेदार नासरखानको हराया था। अहमदशाह दुरानी और उनके पौत्र शाह जमाने पञ्जाब पर आक्रमण करते समय कई बार खैबर-सङ्कट मार्गका अनुसरण किया। मुगल बादशाहोंने इस घाटीके अधिकार पर बड़ा जोर डाला, परन्तु वह इसे रख भी रख न सके। इस पर अफरीदियोंका अधिकार है। बादशाह जलाल उद्दीन् अकबरने इसकी सड़क ऐसी सुधारा था कि गाड़ियां मजेमें आती जाती रहीं। परन्तु उस समय भी खैबरमें रोशानिया लोगोंका दबदबा था। १५८६ ई॰को अपने भाई मिर्जा मुहम्मद हकीमके मरने पर जब अकबरने काबुल अधिकार करना चाहा राजपूत वीर मानसिंहको रोशानियोंसे लड़ करके आगे बढ़ना पड़ा। १६७२ ई॰को औरङ्गजेबके अधीन सूबेदार मुहम्मद अमीन खांको लोगोंने खैबरकी राहमें भटका दिया और उनके ४०००० आदमी मार काट करके सब रुपये हाथियों स्त्रियों और बच्चोंको लूट लिया।

१८३८ ई॰को पहले पहल अङ्गरेज शाहजादा तैमूरको खैबरको राह काबुल ले गये थे। प्रथम अफगान युद्धके खैबरमें कई लड़ाइयां हुई और अङ्गरेजी सेनाको कष्ट भी झेलने पड़े। १८४२ ई॰ ६ अप्रेलको जनरल पोलक अपनी सेनाके साथ खैबरकी राह आगे बढ़े थे। काबुलसे पीछे लौटने पर उनकी सेनाके दो भागों पर

आक्रमण किया गया। १८७८ ई०को सर नेवली चेम्बर लेनने जो मित्रतासूचक दल अमीर शेर अली खाँके पास भेजा था, अली मसजिदमें एक रहा। उसे धमकाया और हटाया गया था। इस पर खवरकी राह अंगरेजोंने तीसरी वार काबुल पर चढ़ाई की। १८७९ ई०को सन्धिके अनुसार खैवरके लोग अंगरेजी अधिकारमें आये अब खैवर घाटी खुली रहती और सप्ताहमें दो वार काबुल आमदरफ़्तके लिये फौज पहरा दिया करती है।

खैवरकी पोलिटिकल एजेन्सीके उत्तर काबुल नदी तथा सफ़ेद कोह पहाड़, पूर्व पेशावर जिला, दक्षिण अक्काखेल और ओरकजाई देश और पश्चिमको चकमनी तथा मसूजाई देश है। प्रकृत प्रस्तमें जमरूद और लण्डी कोतलके बीच खैवर पर शिनवारियों, जक्काखेल, कूकी खेल और ओरकजाइयोंका अधिकार रहा। परन्तु सिख राज्य बढ़ने पर अफरीदियोंने यह प्रान्त उनसे छीन लिया।

१८९७ ई० अगस्त मासको अफरीदियोंने खैवरकी चौकीयों पर आक्रमण किया और लण्डीकोतलकी सुरक्षित सरायको तोड़ फोड़ दिया था। परन्तु १८९८ ई० अकतोवर मासको जो सन्धि हुई, अफरीदियोंने अंगरेजोंको छोड़ करके किसी दूसरे राजासे सम्बन्ध न रखनेकी प्रतिज्ञा की और सड़क तथा रेल निकालने पर कोई आपत्ति न करनेको सम्मत हो गये।

खैमख (सं० पु०) खे आकाशे कातवगो मखः, स्वार्थे अन्। आकाश कर्तव्य यज्ञ विशेष। (ऋचं ४।२५।१५)

खैर (हिं० पु०) १ खदिरवृक्ष, ववूलकी जातिका कोई पेड़। यह अति वृहत् रहता और लगभग सम्पूर्ण भारतमें प्रचुर परिमाणसे उपजता है। इसका भीतरी काठ भूरा होता, कम घुनता और गृहनिर्माण तथा कृषियन्त्रोंमें लगता है। खैरका डण्डा बहुत अच्छा समझा जाता है। इससे उपयोगी गोंद निकलता। २ खैरकी लकड़ीका जमा हुआ रस, कत्था। यह खदिर काठखण्डोंको उबालनेसे निकलता है। ३ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। इसका रङ्ग भूरा और दैर्घ्य एक वित्ता होता है। खैर दाक्षिणात्यमें कुटीरों वा क्षुद्र वृक्षों पर घोंसला लगाता और उसको भूमितक पहुंचाता है। कण्ठ तथा चञ्चुका वर्ण किञ्चित् श्वेत रहता है।

खैर (फा० स्त्री०) १ कुशल, भलाई, चैन। (अव्य) २ अस्तु, अच्छा, भला। ३ क्या चिन्ता, परवा न छोड़ो।

खैर—युक्तप्रदेशके अलीगढ़ जिलाके पश्चिम विभागमें तहसील। इसके पश्चिमसे यमुना नदी है। खैर तह लके भीतर तीन परगना हैं। तथा खैर चन्दौसी, तप्पल यह अक्षा० २७° ५१' एवं २८° ११' उ० देशा० ७७° २८' तथा १८° १' पू०के मध्य अवस्थित क्षेत्रफल ४०७ वर्ग मील है। लोकसंख्या १७८८९७ है। इस तहसीलमें २७२ ग्राम और तीन शहर हैं। प्रधान नगर खैर अलीगढ़से १४ मील उत्तर-पश्चिम यहां की आमदनी ४०१००० रु० है। इस तहसी बहुत जगह ऊसर मैदान है। जहां वहीं वहीं घ अतिरिक्त और कुछ उत्पन्न नहीं होता है। इस मैदा बहुतसे जङ्गली शूकर पाये जाते हैं।

खैर—इस तहसीलमें ४ थाने और १ फौजदारी अद है। खैर तहसील प्रधान नगरका नाम भी खैर ही इसमें तहसील दारी, थाना, मुन्सिफी, डाक खाना स्कूल बना है। शहरमें पुलिस और सफाईका निकालनेको प्रत्येक घर पीछे एक कर लगता है। १ ई०को सिपाहियोंने जब विद्रोह उठाया था, चौहा इस नगरको अधिकार किया और राव भूपालसिं राजा बना दिया। परन्तु जून मासके प्रथम ही आ सिख-सेनादलने खैर नगर आक्रमण करके राजाको प लिया और सैनिक अदालतने विचार करके उन्हें प पर चढ़ा दिया। कई दिनों पीछे चौहानोंने जाटोंके सम्मिलित हो नगर आक्रमण और महाजनी कोठि लुण्ठन किया था। शेषको उन्होंने नगरके गृहादि फोड़ भूमिसात् कर दिये।

खैर आफियत (फा० स्त्री०) क्षेमकुशल, चैनचान, खुशी।

खैरखाह (फा० वि०) शुभचिन्तक, भला चाहनेवा

खैरखाही (फा० स्त्री०) शुभचिन्तकी. भला मना हालत।

खैरगली—उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेशके हजारा जि

एक छोटी छावनी। यह अक्षा० ३३ ५५ उ० और देशा० ७३ २० पू०में अबोटाबाद और मरीकी सड़क पर पड़ती है। जाड़ेमें रावलपिण्डीमें रहनेवाले अंगरेजी पहाड़ी तोपखानोंमेंसे एक ग्रीष्मऋतुमें यहां रखा जाता है।

खैरपुर—उत्तरसिन्धुप्रदेशके अन्तर्गत एक देशी राज्य। यह अक्षा० २६ १० से २७ ४६ उ० और देशा० ६८ २० से ७० १४ पू०के बीच अवस्थित है। इसके उत्तरमें शिकारपुर जिला, दक्षिणमें हैदराबाद जिला, पूर्वमें जैशलमीर और पश्चिममें सिन्धुनद है। इस राज्यकी लम्बाई ६० कोस और चौड़ाई ३१ कोस और क्षेत्रफल ६०५० वर्गमील है यहांकी जनसंख्या १९९३१३ है।

खैरपुरका इतिहास सिन्धु राज्यके इतिहासके साथ लगा हुआ है। (सिन्धु देखो।) १७८३ ई०को बलूच वंशीय मीर फतेह अली खां तलपुर सिन्धुदेशके राजा हुए। उनके थोड़े दिन राज्य करनेके बाद उनके भानजे सोराब खां तलपुरने, अपने दो लड़कों मीर रुस्तम और अलीमुरादके साथ खैरपुरमें राज्य स्थापन किया। उससे मीरसोराबके अधमें खैरपुर पड़ा। उस समय राजकर अफगानिस्तानके अमीरको दिया जाता था। १८११ ई०को सोराब खांने राज्यभार अपने बड़े पुत्र रुस्तमको अर्पण किया १८१३ ई०को काबुलमें वरकजाइ वंशके राज्य लाभ करते समय नाना प्रकारका गड़बड़ हुआ था उसी समय मीर रुस्तमने काबुलकी अधीनता छोड़ी थी थोड़े दिनके बाद मीर रुस्तम और अलीमुराद दोनों भाइयोंमें विवाद होने पर अंगरेजोंको मध्यस्थ बनाना पड़ा। १८३७ ई०में अङ्गरेजोंके साथ एक सन्धि हो गई जिसमें यह निश्चित हुआ कि सिन्धुनदी और सिन्धुप्रदेशके रास्तेसे अङ्गरेज लोग ना विरोक टोकके जा सकते हैं और अङ्गरेजी सेना जब काबुल जायेगी तो उस समय वहांके मीरोंको सहायता देनी पड़ेगी। इस पर बहुतसे राजा सहमत न हुवे। उस समय अली मुरादने खैरपुरमें अपना प्रभुत्व स्थापन कर लिया था। उन्होंने अङ्गरेजको यथारीति सहायता दी थी। इसका फल यह हुवा कि मियानी और दबोरकी लड़ाईके बाद जब समस्त सिन्धुप्रदेश अङ्गरेजोंके हाथ आया, उस समय खैरपुरमें अङ्गरेजोंके अधीन वह एक स्वतन्त्र राजा रहे। १८६६ ई०को अङ्गरेज गवर्नमेण्टने राजाको एक सनद दी जिसमें कहा गया कि मुसलमानी आईन अनुसार तलपुर मीर राजत्व कर सकते हैं। गवर्नमेण्ट इस पर कोई आपत्ति न डालेगी। मीर अलीमुराद १८९४ ई०में मर गये और उनके लड़के मीर फैज महम्मद खांको राजगद्दी मिली। १५ तोपोंकी सलामी है। Lt Col हिज हाईनेस मीर सर इमाम वकस खान् तलपुर जी० सी० आई० वर्तमान अधीश्वर हैं

इस राज्यमें एक शहर और १५३ ग्राम हैं जिनमें लगभग ३६००० हिन्दू और १६३००० मुसलमान बसे हैं। यहांके सैकड़े पीछे ६८ मनुष्य कृषि और शेष नौकरी तथा वाणिज्य व्यवसाय करते हैं। खैरपुरकी जमीन बहुत उपजाऊ है। यहां जोवार, बाजरा, गेहूं, चना तथा अनेक प्रकारकी दाल और कपासकी उपज प्रधान हैं। यहां फलवृक्ष भी यथेष्ठ हैं। यथा—आम, सेव, अनार, खजूर तथा शहतूत। यहांके पाल्य पशु ऊंट, घोड़ा भैंस, बैल भेड़, गदभ और खच्चर हैं। इस राज्यमें ७३१ वर्गमील जमीन जङ्गलोंसे भरी है उन्हांकी देख भाल करनेके लिये राज्यकी ओरसे थोड़े कर्मचारी नियत किये गये हैं जङ्गलोंसे प्रायः २६०००) रु०की आमदनी है। यहांसे कपास, रेशम, अनाज, नील हाथका बुना कपड़ा चमड़ा तथा तम्बाकूकी रफ्तनी होती है।

विचारके लिये यहां दो अदालत हैं, एक खैरपुरमें दूसरी मीरके साथ। जब मीर कहीं जाते तो अदालत भी उनके साथ ही रहती है खैरपुरकी स्थायी अदालतमें एक हिन्दू और मीरके साथ दो मौलवी न्यायकर्ता रहते हैं इस राज्यको यद्यपि मृत्यु दण्ड विधानका सम्पूर्ण अधिकार भी है तथापि मीर किसीको मृत्यु दण्ड की आज्ञा नहीं देते दीवानी अदालतमें बादीको अदालतके व्ययको भांति प्रार्थित अर्थका चतुर्थांश राजकोषमें देना होता है। इस लिये मुकदमाकी संख्या अल्प ही रहा करती है। वे पञ्चायत होके द्वारा अपने अपने विवादकी मीमांसा कर लेते हैं। यहांकी सैन्यसंख्या प्रायः पांच सौ हैं जिनमेंसे थोड़े अश्वारोही और थोड़े पैदल हैं। जिनके पास तलवार और बन्दूक

रहा करती हैं। इस राज्यमें शिक्षाका बहुत अभाव है। यहां सिर्फ छ विद्यालय हैं जिनमें प्रायः ढाई हजार लड़के पढ़ते हैं यहां एक शिल्प स्कूल भी है जिसमें कुम्हार, लोहार, बढ़ई, जुलाहे और दर्जीके काम सिखाये जाते हैं

मालगुजारी बटाईकी रीतिसे खेतजात द्रव्योंमें ही ली जाती है। मीर साहबको उसका तृतीयांश मिलता है। कुल आमदनी कोई १२ लाख है। इसमें १८५०००) रु०की जागीर भी आ जाती है। १८०२ ई० तक यह देशी सिक्का चला, परन्तु अब अंगरेजी रुपयेने उसका स्थान अधिकार कर लिया। मीर साहब गवर्नमेण्टको कोई कर नहीं देते।

इसराज्यमें छ अस्पताल हैं। यहां आठ मास तक कठिन गर्मी पड़ती है, वृष्टि बहुत कम होती है। स्थायी और सविराम ज्वर, आँख उठना, और चर्म रोग यहां प्रायः बहुतोंको हुआ करते हैं।

२ खैरपुर राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २७° ३´ उ० और देशा० ६८° ४९´ पूमें सिन्धुनदीसे १५ मील पूर्व और रोहरीसे १७ मील दक्षिण, मीरवाह नहरकी बगलमें अवस्थित है। यहाँकी जनसंख्या प्रायः १४०१४ है, जिसमें विशेष कर मुसलमान है। इसका निर्माण कौशल कुछ भी नहीं है। अधिकांश घर यहां मिट्टीके हैं, बहुत थोड़े ईंटोंके बने है। राजभवन नानाप्रकारके रङ्गसे चित्रित है। यहांका जलवायु उपयुक्त नहीं होनेके कारण राजा अपने राजभवनमें नहीं, सदा कोटदीगोमें रहा करते हैं। नगरके बाहरमें पीर रेहान्, जियाउद्दीन् तथा काजीतफर शहीदको २ मसजिदें हैं। इस शहरमें दो औषधालय हैं जिनमें एक स्त्रियोंके लिये है।

तलपुरराजके प्राधान्य समयमें यहां प्रायः १५००० मनुष्य रहते थे परन्तु इसका दिनों दिन ह्रास होनेके कारण आजकल सिर्फ ८००० ही मनुष्य है। यहां आजकल कुछ शिल्पकर्म भी होते हैं, यथा बुनना, बहुत प्रकारके कपड़ा रङ्गना, सोनारका काम, और बन्दूक आदि बनाना। गलिचा बुननेका काम भी थोड़े दिनसे आरम्भ हुआ है। इसके कार्य कर्त्ता पञ्जाबी शिक्षक द्वारा सिखाये जाते हैं। खैरपुरसे नील जोआर, बाजरा और तीलकी रफ्तानी होती है।

खैरपुर—पञ्जाबके अन्तर्गत भावलपुर राज्यकी मीनचीनाबाद निजामतमें एक तहसील। यह अक्षा० २८° ४९´ एवं ३०° उ० और देशा० ७२° ७´ तथा ७३° १८´ पू०के मध्य सतलज नदीके बायें किनारे पर अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २२०० वर्ग मील है। जनसंख्या प्रायः ८१८७की है। यहांकी आमदनी दो लाख रुपये है।

खैरपुर—पञ्जाबके अन्तर्गत मुजफ्फरगढ़ जिलामें अलीपुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८° २०´ उ० देशा० ७०° ४९´ पू०में मुजफ्फरगढ़ शहरसे ५० मील दक्षिणमें अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः २२५७ है। यह शहर खैरशाहका निर्माण किया हुआ है। इस लिये इनका नाम खैरपुर पड़ा। यह निम्नभूमिमें अवस्थित होनेके कारण चन्द्रभागा नदीकी बाढ़में प्लावित हुआ करता है। इस शहरके प्रायः बहुत घर ईंटोंके बने हैं। यहांका रास्ता इतना सङ्कीर्ण है कि उसमें हो कर गाड़ी नहीं चल सकती। यहांसे कपास, रेशम और अनेक प्रकारके शस्य रफ्तानी होते हैं। और बहुत प्रकारके कपड़े विदेशसे यहां आते हैं।

खैरवा—झांसीके आसपास रहनेवाली एक हिन्दू जाति। इनका विश्वास है कि पन्नानरेश स्वर्गवासी छत्रपालसिंह जीके राजत्वकालमें यह जाति १७०० ई०के लगभग झांसीको आयी थी। यह जाति क्षत्रियवर्णमें गिनी गयी है।

इस जातिकी विवाह-प्रणाली उच्च जातियों की सी है। ये स्वगोत्रमें विवाह नहीं करते परन्तु तीन कुल छोड़कर विवाह करते है। इनलोगोंमें भांग, गाँजा और अफीम विशेष रूपसे प्रचलित है। ये मछली खाते और शराब भी पीते हैं। खैर या खदिरवृक्षसे सामान बना कर बेचना ही इनकी मुख्यवृत्ति है।

जब ये लोग अपने संबन्धियोंसे मिलते तो राम राम, जय श्रीकृष्ण, जय राधाकृष्ण कहा करते हैं। ये देवीके उपासक होते और उनके नाम पर बकरे बलिदान करते हैं।

खरवाल (हि० पु०) वृक्षविशेष, कोलियार पेड़।

खेरसार (हि० पु०) कत्था, खेरका जमा हुआ रस।

खेरा (हि० वि०) १ कत्थई, खर-जैसा लाल। खेरके रङ्गका कबूतर, घोड़ा और बगला भी 'खेरा' ही कह लाता है। (पु०) २ धान्यकृमि, रोगभेद, धानकी एक बीमारी। इसमें उसकी मञ्जरी पीतवर्ण पड़ जाती है। ३ एक तालाकी दून। ४ मत्स्यविशेष, कोई मछली। यह बङ्गालकी नदियोंमें बहुत होती है।

खेरा—मेदिनीपुर जिलाकी एक प्राचीन जाति। इस जातिके अधीन एक समय बलरामपुर, खड़गपुर, और केदारकुण्ड परगना थे। बलरामपुरमें खेराराजके वासस्थान और उनके प्रतिष्ठित देवमन्दिरादिका भग्नावशेष विद्यमान है। बहुतोंका मत है कि बलरामपुर और कर्णगढ़के राजाओंके पूर्वपुरुष खेराराज्यके दीवान और गढ़के सर्दार थे। उन्हींके षड्यन्त्रसे खेराके राजा मारे गये और उनकी सातों रानियां सती हुई। रानियोंने चितारोहण कालमें उन्हें यह कहकर शाप दिया कि "जिन्होंने षड्यन्त्र रचकर हमलोगोंका नाश किया हम सतियोंके अभिशापसे उनकी भी सात पुरुषके बीचमें ही सन्तान नष्ट होगी।" सतीकी बात कदापि मिथ्या नहीं होती और ऐसा सुना जाता है कि बलरामपुरके राज्यवंशमें भीमसेन महापात्रसे सप्तम पुरुषमें राजा वीरप्रसाद और कर्णगढ़ राजवंशके प्रथम राजा लक्ष्मणसिंहसे सप्तम पुरुष अजितसिंह निर्वंश रहे।

कोई कोई कहते हैं कि मेदिनीपुर शहरसे पांच या ६ कोस दूर जगन्नाथ जानेके रास्तेका बगलमें अयोध्यागढ़में खेराके राजा रहते थे। इस गढ़के ऊपर जाड़बाङ्गला नामका एक मन्दिर है जिसमें खेराराजकी कुलदेवी भगवती सिंहवाहिनीकी मूर्ति है। इसके अतिरिक्त खेरा राजाकी और भी कई कीर्तियां है।

आजकल भी मेदिनीपुर जिलामें बहुत जगह खेरि नाम जाति रहती है।

खेरागढ़—१ युक्तप्रान्तीय आगरा जिलेकी दक्षिण-पश्चिम तहसील। यह अक्षा० २६ ४५´ तथा २७ ४ उ० और देशा० ७७ २६ एवं ७८° ७ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ३०८ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १२७६८२ है। खेरागढ़ तहसीलका एक छोटा ही गांव है। उतङ्गन नदी इसको दो भागोंमें बांटती है। यहांके पहाड़का लाल पत्थर मकान बनानेके लिये बहुत अच्छा रहता और कीमती ठहरता है।

२ इसी नामकी तहसीलका एक नगर। यह आगरासे ८ कोस दक्षिण—पश्चिममें उतङ्गन नदी किनारे अवस्थित है। यहां थाना, डाकघर और विद्यालय हैं।

३ मध्यप्रदेशका एक जागीरदारी राज्य। यह अक्षा० २१ ४ तथा २१ ३४´ उ० और देशा० ८०° २७´ एवं ८१ १२´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ९३१ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १३७५५४ है। खेरागढ़ द्रुग जिलेके पश्चिम सीमा पर पड़ता है। इसमें ३ टकड़े हैं। पहले खेरागढ़के राजाओंका अधिकार केवल खुलवा नामक छोटेसे परगनेपर रहा। ई० १८वीं शताब्दीके शेषकालकी एक सेवाके बदले सवर्धा राज्यमें खमरिया ले लो गयो और राज्यका प्रधान क्षेत्र खेरागढ़ मण्डलाके राजाओंसे मिला। फिर डोंगरगढ़ उस जमीनदारको आधी भूमिका भाग है, जिसने मराठोंके विरुद्ध विद्रोह किया था। खेरागढ़ और नाद गांवके राजाओंको बलवेको दबा करके उनका राज्य आपसमें बांट लिया। खेरागढ़ शहर कोई ४६५६ लोगोंकी एक बसती है। बङ्गाल नागपुर रेलवेके डोंगरगढ़ और नादगांव दोनों ष्टेशनोंसे यह २७ मील दूर पड़ता है। राज्यके पश्चिम भागमें पहाड़ है। खेरागढ़के राजा नागवंश राजपूत समझे जाते हैं। १८९० ई०को २३ वर्ष वयसमें राजा कमलनारायण सिंह अभिषिक्त और १८९८ ई०का मौरूसी राजा उपाधि प्राप्त हुये। लोग पूर्वी हिन्दीकी एक शाखा भाषा व्यवहार करते हैं। खेत सींचनेके लिये २२४ तालाब हैं। खेरागढ़ नगरमें पीतलका बर्तन और लकड़ीका सामान बनता है। बोड़ियां तैयार करनेमें बहुतसे लोग लगे रहते हैं। राज्यके दक्षिण भागमें हो करके बङ्गाल नागपुर रेल निकली है। इस राज्यकी वार्षिक आय प्राय २०२०००)

रु० है। गवर्नमेण्टको ७०००० रु० प्रति वर्ष कर दिया जाता है।

४ उक्त खैरागड़ राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २१ २५ ३० उ० और देशा० ८१ २ पू०में अङ्क और पिपरिया नद सङ्गम पर अवस्थित है यहांकी जनसंख्या २८८७ है।

खैरात (अ० पु०) दानपुण्य, निछावर, बखशिश।

खैरावाद—बङ्गालके बाखरगञ्ज जिलामें एक नदी। यह वरीशालसे निकल रानीहाटमें जा कर बाखरगञ्ज नगर होती हुई अङ्गरियाहाट तक पहुंची है। फिर महालिया गुलाचिपा और रागावद आदि नाम धारण कर वङ्गोपसागरमें गिरी है।

२ युक्तप्रादेशिक सीतापुर जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २७ ३२ उ० और देशा० ८० ४६ पू०में लखनऊ बरेली ष्टेट रेलवे पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १३७४४ होगी। पहले यह एक बड़ा स्थान रहा कहते हैं कि ई० ११वीं शताब्दीको कंरा नामक किसी पासीने उसको बसाया था। लोग इसको प्राचीन मसछत्र नामक पुण्य तीर्थ समझते हैं। दिल्लीके पहले बादशाह यहां एक सूबादार रखते थे। अकबरके समयको खैराबाद एक सरकारकी राजधानी रहा। ई० १८वीं शताब्दीके प्रथम अर्धभागमें यहां अवधको निजामत लगती थी। अंगरेजी राज्यमें मिलाया। इसीके नाम पर एक डिविजन बन गया। यहां कई एक मन्दिर और मसजिदें खड़ी हैं। १८६८ ई०से म्युनिसपालिटी चल रही है। खैराबादमें दैनिक बाजार लगता और कपड़ा छपता है। जनवरी मासको बड़ा मेला लगता है।

खैरियत (फा० स्त्री०) १ कुशल, राजी, खुशी। २ मङ्गल भलाई

खरोमूरत—पञ्जाब अटक जिलेको फतेहजङ्ग तहसीलका एक पहाड़। यह अक्षा० ३३ २५ से ३३ ३० उ० और देशा० ७२ ३७ से ७२ ५६ पू० पर्यन्त विस्तृत है और सिन्धुसे प्रायः ३० मील दूर उठ करके २४ मील पूर्व को चला गया है। पहले इसमें बड़ा जङ्गल था, परन्तु अब पशुओंके अधिक चरनेसे उसका कहीं चिह्न तक देख नहीं पड़ता पहाड़का दक्षिण भाग बहुत भयानक है

खैलर (हिं० पु०) मन्थनदण्ड, मथानी

खैला (हिं० पु०) बछड़ा, काममें न लगा हुआ छोटा बैल

खैलायन (स० त्रि०) खिल चातुरर्थिक अण्। खिल-निर्वृत्त, खिलसन्निहित।

खैलिक (स० त्रि०) खिल वा परिशिष्ट सम्बन्धीय।

खोंखना (हि० क्रि०) खासना, खों खों करना।

खोंखा (हि० स्त्री०) कास, खासी।

खोंखों (हि० पु०) खांसनेकी आवाज, कासजनित शब्द।

खोंगा (हि० पु०) १ अवरोध, रुकावट। २ बछड़ा, नया बैल जो काममें न लगा हो। ३ अनभिज्ञ व्यक्ति, नावाकिफ शख्स

खोंचा (हिं० पु०) १ खुरच, छिलाव २ फटन ३ मुष्टि, मुट्ठी। ४ मुष्टि परिमित कोई द्रव्य, मूठा। ५ वकभेद, किसी किस्मका बगला।

खोंचो (हि० पु०) १ बहेलियोंकी एक लम्बी लग्गी। इसके छोर पर लासा लगाते और पक्षियोंको फंसाते हैं। २ आघात, खोंच।

खोंची (हिं० स्त्री०) परजा या भिखमङ्गोंको दिया जानेवाला थोड़ासा अनाज।

खोंटना (हिं० क्रि०) कपटना, फुनगी फुनगी तोड़ना।

खोंड—द्राविड़ वंशके अन्य जातिकी भाषा।

खोड(कन्ध)—मन्द्राजके गञ्जम जिला और उड़ीषाके करद राज्यमें रहनेवाला द्राविड़ जाति। इनकी कुल संख्या लगभग ७०११४ है।

खोंड अपनेको क्विलोक या क्विनजू कहते हैं। इन दो शब्दोंकी व्युत्पत्ति 'को' या 'कू' से है। तेलङ्ग भाषामें इसका अर्थ 'पहाड़' है।

इनमें ववाहका कोई दृढ़ नियम नहीं है। इनके दो प्रधान भेद हैं, प्रथम 'कुटिया खोड' जो सदा पर्वत पर रहा करते, द्वितीय समभूमि पर रहनेवाले खोंड। ये कुछ कुछ हिन्दू धर्मानुसार चलते हैं। द्वितीय श्रेणीके खोंड फिर कई एक शाखमें बंट गये हैं। राज

ख ड़ दाल, तोनल, पोरखिय', कन्धरा, गोरिया, नगला प्रभृति इसी श्रेणीके हैं राजखोंड ही सबोंके अधीश्वर माने जाते, जबतक उन्हें थोड़ी जमीन न रहे तब तक वे राजखों' नहीं कहला सकते। जब कोई राजखोंड किस दूसरे श्रेणीमें विवाह करता तो वह भी उसो श्रेणी म मिला लिया ाता है। 'दल जो बलसुदिया भी कहलाता सैनिकमें भर्ती होते है। पोरखिया भैंस खाते कन्धरा हरिद्रा (हल्दी) उपजाते। जोगा रिया मवेशी चराते है। खोंड अपने श्रेणीमें विवाह नहीं करते परन्तु ये मामाकी लड़कीसे शादी कर सकते हैं।

अधिक अवस्था आने पर ये विवाह करते। लड़कीके लिये इन्हें पण देने पड़ते हैं दश या बारह मवेशीके शिर ही इन लोगो का पण है। किन्तु आजकल दो या तीन मवेशीके मुण्ड अथवा एक रुपया पण कहकर लेते है। बारात लड़कोके घरसे वरके घरको ज ती है। विवाहकाल वर और कन्या बाहर निकल अपने किसी एक कुटुम्बके कन्धे पर बैठते है। वर कन्याको अपनी ओर खींचता और एक वस्त्र उन दोनो के अङ्गको ढकता है। एक मुर्गा भी इस समय बलिदान किया जाता। समस्त रात्रिको बरामदा में ही वह व्यतीत करते और प्रात कालको वर तथा कन्या किसी एक पोखर पर जाते है। वरके शरीरमें तीर और धनुष बधे रहते हैं। वर को रखी हुई सात गोबरकी रोटियों पर निशाना करना पड़ता है और प्रति निशानक बाद कन्या आ वरको पहिले दतवन और पोछे मिठाई देती है। यह प्रथा उनके भविष्य कार्यकी याद दिलाती है

पुत्र जन्मके छठे दिन उसकी माता तीर और धनुष ले लड़केके सामने खड़ी रहती है। युवावस्थामें पुत्र को आखेटमें चतुर होनेका यह सकेत है

ये मृतशरीरको पृथ्वीमें गाड़ते है। एक रुपया या एक पैसा उसके वस्त्रके एक कोनेमें बाध देते जिससे मृतदेह रिक्त हाथसे दूसरा लोक न जाय। मुर्दाके साथ कभी कभी उसके कपड़े तीर और धनुष पृथ्वीमें गाड़ देते हैं।

खोंड और भी देवको मानते है जिसमेंसे 'धरणी देवता' या पृथ्वी प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष ये तीन त्यौहार मानते है। चार या पांच वर्षमें एक बार पृथ्वी देवता को महिष बलिदान देते है। पूर्व समयमें महिषके बदले मनुष्य बलिदान देते रहे। काला हल्दीमें मेंढ़ धरणी माताको चढ़ाया जाता है और इसका मांस अपने पड़ोसियोंके मध्य बाट देते है आखिरमे जानेके पहले ये तीर और धनुषकी पूजा कर लेते हैं। उनको विश्वास है कि मनुष्योंके मर जाने पर उसकी आत्मा पुन छोटे छोटे बच्चोमें जन्म लेती है।

खोंड ग्रहस्थी, आखेट और लड़ाई वृत्तिके अतिरिक्त दूसरा कार्य्य नहीं करते।

खोंडर (हि० पु०) वृक्षका अभ्यन्तरस्थ शून्य भाग, पेड़के भीतरका पोला हिस्सा।

खोंडा (हि० वि०) १ भग्नाङ्ग, टूटे अङ्गवाला। बहुधा यह शब्द उस व्यक्तिके लिये व्यवहारमें लाते, जिसके सामनेवाले दो तीन दांत टूटे दिखलाते है।

खोंता (हि० पु०) घोंसला, चिड़ियोंका घर।

खोंप (हि० स्त्री०) १ पसूजन, सलङ्गा, सिलाईका लम्बा टांका। २ फटन।

खोंपना (हि० क्रि०) गा ना, चुभाना, धाम देना।

खोंपा (हि० पु०) १ हलकी कोई लकड़ी। इसमें फाल लगता है। २ छप्परका कोन। ३ भूसा रखनेकी जगह। इसको छप्परसे ढा देते हैं।

खोंपी (हि० स्त्री०) हजामतके खतका कोना, बालोंका एक बनाव। २ खोंपा।

खोंसना (हि० क्रि०) अटकाना, लगाना, घुसेड़ना।

खो—१ मध्यप्रदेशमें एक प्राचीन ग्राम। यह उषहरा नगर-से डेढ़ क्रोश पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यहां बहुत घर और देवमन्दिर थे। आजकल उनका भग्नावशेष मात्र है। इस ग्राममें युवराज हस्तनीका शिलालेख पाया गया है। यहांके भग्नमन्दिरमें वृहदाकार दशा-वतारकी भग्न प्रस्तरमूर्ति पाई हुई है।

खो—पूर्व उपद्वीपके काम्बोजराज्य अधिवासी एक प्रबल जाति। इसकी संख्या प्राय चार लाख है। इनका आचार व्यवहार चीन और श्यामवासीके सदृश है।

खोड़डार (हि० पु०) कोल्हूमें खोइ इकट्ठा करनेकी जगह

खोइलर (हिं॰ पु॰) वंशदण्डविशेष, बांसकी एक छडी। इससे कोल्हूके गरडे चलाये जाते हैं।

खोइहा (हिं॰ पु॰) खोई उठाने या फेंकनेवाला मजदूर।

खोई (हिं॰ स्त्री॰) १ ऊखके रस निकाले हुए टुकडे। २ लाई, खीलें। ३ कम्बलकी घुग्घी।

खोकरी—बम्बई प्रदेशस्थ जंजीरराज्यके किलाके ग्राम पासका एक क्षुद्र ग्राम। यहां तीन वृहत् प्रस्तरकी समाधि (कब्र) है जिनमेंसे जञ्जीरका प्रधान मीटो सुरुलखांकी समाधि बड़ी है। कहा जाता है कि सुरुल खाँकी समाधि उनके जीवनकालमें बनी थी। प्रति वृहस्पतिवारको उक्त कब्रके पास कुरान पढ़े जाते हैं।

खोखा (खक्र) बम्बई प्रदेशस्थ कच्छ जिलेके अन्तर्गत एक मुल्क। यह कान्यकोटसे १ मील दक्षिणमें अवस्थित है। इसके नष्ट भ्रष्ट स्तुपविशिष्ट स्थानमें दो जीर्ण शैव-मन्दिर हैं।

खोखर (हिं॰ पु॰) एक राग। इसको मालकोसका पुत्र बतलाते और दिनको प्रथम प्रहर गाते हैं।

खोखर—सिन्धुप्रदेशवासी जाटजातिकी एक शाखा। एक समय सिन्धु और पञ्जाब प्रदेशमें इनका बल और पराक्रम बहुत बढ गया था। मुहम्मद गोरी जब हिन्दुस्तानको लूट कर स्वदेश जा रहे थे, रास्तामें इसी खोखर जातिके हाथसे उनकी मृत्यु हुई। अनेक ग्रन्थकारोंने इन्हें "गक्कर" या 'गोक्कर" नामसे भी उल्लेख किया है, किन्तु "खोखर" और 'गक्कर' ये दो स्वतन्त्र जाति हैं। पहिले पञ्जाब, सिन्धु और काठियावाड़में इसी खोखर जातिकी प्रधानता थी, उस समय मूलतान प्रभृति अनेक स्थान इन्हींके शासनाधीन थे।

खोखरा (हिं॰ पु॰) भग्न जलपोत, टूटा फूटा जहाज।

खोखरी—बम्बई प्रदेशस्थ काठियावाड़ जिलेके गोन्दल राज्यका [illegible]—यह गोन्दल राज्यसे ८ मील उत्तर तथा सुलतानपुर ग्रामसे ६ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यह महाल या आय उपविभागका सदर है। खोखरीमें ४ मील दक्षिण-पश्चिममें गोन्दली नदी भादर नदीसे मिली है। यहाँकी जमीन उर्वरा है। लोकसंख्या प्राय: २६६५ होगी।

खोखला (हिं॰ वि॰) १ पोला, खाली, जिसके भीतर कुछ न रहे। (पु॰) २ रिक्तस्थान, खाली जगह। ३ छेद छिद्र, बड़ा सूराख।

खोखा (हिं॰ पु॰) १ हुण्डी लिखा हुआ कागज, सकारी हुई हुण्डी। २ बालक, लड़का।

खोङ्गाह (सं॰ पु॰) खे आकाशे उड्डयनशक्तिगर्व्व कुर्वन् गाहते, गाह-अच् पृषोदरादिवत् गकारस्य कत्वं साधु: श्वेत पिङ्गलवर्ण अश्व, सफेद पीला घोड़ा।

खोङ्गाह खोङ्गाह देखो।

खोज (हिं॰ स्त्री॰) १ अनुसन्धान, तलाश। २ चिह्न, पता।

खोजक—बलुचिस्तानके कोटा पिशीन जिलामें तोवकाकर-का एक ऐतिहासिक गिरि-सङ्कट। यह अक्षा॰ ३०° ५१´ उ॰ और देशा॰ ६६° ३४´ पू॰ कोटामें रेलद्वारा ७० मीलकी दूरी पर अव स्थित है। यह रास्ता दक्षिणमें किलाअब्दुल्ला-से शेलवाघ तक चला गया है। शेलवाघमें रेलवे खोजक घाटी होकर गयी है जिसे बनानेमें ७० लाख रुपये व्यय हुवे थे। यह १८८८ और १८८९ ई॰के मध्य निर्माण किया गया था, इसकी दूरी लगभग २॥ मीलकी होगी। विजेता, सैनिक तथा सौदागर कई बार इस पथसे आये गये।

खोजक—पठान जातिकी एक शाखा। ये सेबुतर काकर पठानोंकी एक अन्यतम शाखा है।

खोजदार—बलुचिस्तानमें उपत्यका मध्यस्थ एक क्षुद्र नगर। यह खप्पर राजधानीसे १० मील दक्षिणमें अवस्थित है यह नगर पहले समृद्धिशाली था इस स्थानमे रूदखाना नदीतीर तक अनेक भग्नावशेष चिह्नादि देख पड़ते हैं यह पत्थरको कुरसो पर २५ फुट ऊंचे स्तम्भ ग्रथित है

खोजनखेर—मध्यभारतमें मालवा एजेन्सीका क्षुद्र राज्य। भूपरिमाण ५ वर्गमील और जनसंख्या ५४८ है। इस जमीन्दारोको आमदनी प्राय: ६०००) रु॰ है।

खोजना (हिं॰ क्रि॰) अनुसन्धान करना, ढूंढना।

खोजा (हिं॰ पु॰) १ ख्वाजा, मुसलमानोंके रनवासका द्वारपाल या नौकर। यह पुरुषत्वहीन होता है। २ सरदार, मुखिया। ३ नौकर।

खोजा अहम्मद-यसेवि—मध्यएसियाके अन्तर्गत अनुर्वर समतल भूमिके ऊपर भ्रमणकारी नोमाद जातिके मध्य एक पगम्बर धर्म और नीति सम्बन्धमें इनकी बनायी हुई कवितायें खिरविज और उजबक कुरान को जैसे भक्ति करते हैं।

खोजी (हि॰ वि॰) अनुसन्धानकारक, ढूंढनेवाला ।

खोट (सं॰ पु॰ क्ली॰) रसजारण द्रव्यभेद, कुश्ता बनानेकी एक चीज। इसको 'यमक' या 'फुट' भी कहते हैं।

खोट (हिं॰ स्त्री॰) १ दूषण, ऐब। २ उत्तम द्रव्यमें अधम द्रव्यका मिश्रण, अच्छी चीजमें बुरीका मिलाव। ३ अच्छीमें मिलायी जानेवाली कोई खराब चीज। (वि॰) ४ खोटा। 'खोट कुमार खोट अति मारो' (तुलसी)

खोटक (सं॰) खोट देखो।

खोटन (सं॰ क्ली॰) लंगड़ाई, लंगड़ी चाल।

खोटा (हिं॰ वि॰) दूषित, खराब, जो खरा न हो ।

खोटाई (हिं॰ स्त्री॰) खोटापन देखो।

खोटापन (हिं॰ पु॰) १ दोष, नुक्स। २ फरेब, धोका, छल। ३ दुष्टता, बदमाशी। ४ क्षुद्रता, ओछापन।

खोटि (सं॰ स्त्री॰) खोट इन्। १ कन्दुकखोटी। २ पालङ्कीवृक्ष। ३ चतुरा स्त्री, होशियार औरत।

खोटी, खोटि देखो।

खोट्टिग—राष्ट्रकूटीय कृष्णके उत्तराधिकारी। यह कृष्णके छोटे भाई थे। इन्हें 'महाराजाधिराज' 'परमेश्वर' और 'परमभट्टारक' को उपाधि मिली थी। ८७१ ई॰के अकतूबर मासमें सीयक हर्ष नामक मालवके परमार राजाने युद्ध कर इनका राज्य ले लिया। धरवार जिलाके मदर गुहामें खोट्टिगके राजत्वको एक शिलालिपि है।

खोड (सं॰ त्रि॰) खोडति, खोड-अच्। खञ्ज, लंगड़ा।

खोड (हिं॰ स्त्री॰) देवकोप, भूतप्रेतका फेर।

खोडकशीर्षक (सं॰ क्ली॰) खोड इति खव न खोडक शीर्षं मस्य, बहुव्री॰ कप्। १ कपिशीर्षक। २ हिङ्गुल।

खोडरा (हिं॰ पु॰) पुरातन वृक्षका शून्य स्थान, पुराने दरख्तका खोखला हिस्सा।

खोण्डमाल—उड़ीसामें अंगुल जिलाका एक उपविभाग। यह अक्षा॰ २॰ १३' से २॰ ४१' उ॰ और देशा॰ ८३ ५॰ से ८४ ३६ पू॰ पर अवस्थित है। भूपरिमाण ८०० वर्गमील और जनसंख्या प्रायः ६४२१४ है। इस उपविभागमें १३०० फीट ऊंची एक अधित्यका है। इसका बहुतांश जङ्गलसे भरा है। गिरिमाला खोण्डमालसे गञ्जाम तक चली है और ऊंचाई लगभग तीन हजार फीटकी होगी। फुलवानी इस उपविभागका सदर है। यहां सिर्फ द्राविड वंशके खोंडजातिके मनुष्य वास करते हैं। ग्राम छोटे छोटे पहाड़ और घने जङ्गलोंसे विभक्त हैं। पूर्वकालमें चार पांच वर्षमें एक बार खोंड धरणी देवताको मनुष्य बलिदान देते रहे। इन्हींका ख्याल था कि इनसे जो उनको प्रधान रहस्यी रहो, परिपूर्ण रूपमें उपज नहीं सकती जबतक पृथ्वीके भीतर मनुष्यका रक्त न जाय। किन्तु यह प्रथा गवर्नमेण्टने सदाके लिये बन्द कर दी। आजकल वे सिर्फ महिष या मेष बलिदान देते हैं। खोंड किसी जमींदार या राजाके अधीन रहते नहीं आये हैं वे सिर्फ खास गवर्नमेण्टकी जमीन जोतते जिसके लिये उन्हें कर भी देना नहीं पड़ता है। किन्तु हरेक हलके पीछे तीन आने सड़क आदिकी उन्नतिके लिये देने पड़ते हैं। इनमें बाल्य तथा प्रौढ़ विवाह प्रचलित हैं। बाल्यविवाहमें कन्या वरसे बड़ी रहती है। खार देखो।

खोत—कोलाबा जिलेमें रहनेवाली एक जाति। ये पेन, रोह और चौलो ग्राममें रहते हैं। प्राचीनकालमें ये जिलेको तहसीलके कर्मचारी रहे और मुसलमान बादशाहसे इन्हें कररहित ग्राम मिले थे। महाराष्ट्रके समयमें भी इन्हें जागीर मिली थी। किन्तु आजकल इन्हें ग्राम्यकर देने पड़ते जिसे ये चारकिस्तमें चुकाया करते हैं। खोटकी संख्या ४३० है। हिन्दुओंमें ब्राह्मणको ही अधिक हृ सरकारकी ओरसे आजतक भी ग्रामोंका प्रबन्ध इन्हीं लोगोंके हाथमें है। ग्राम प्रबन्ध करनेके लिये प्रतिवर्ष ये अपनेमेंसे किसी एकको नियत करते हैं कभी कभी कलेक्टरसे भी कोई व्यक्ति नियुक्त किया जाता है। विवाहादिमें ये बहुत रुपये व्यय करते जिसके लिये इन्हें जमींदारी भी कभी कभी बेचनी पड़ती है।

खोत उत्तम पक्का मकानमें रहते और बहुतसे मवेशी पालते हैं।

खोदई (हिं॰ पु॰) वृक्षविशेष एक दरख्त। यह हिमालयकी तराईमें उपजता और रंगने आदि कई काममें लगता है।

खोदना (हिं॰ क्रि॰) १ खनन करना, गड्ढा करनेके लिये कुदाल आदिसे जमीनकी मट्टी निकालना। २ कोंचना, उसकाना। ३ उपहास करना, छेड़ना। ४ नक्काशी करना।

खोदनी (हिं॰ स्त्री॰) खननयन्त्रविशेष, खोदनेका एक औजार। यह छोटी होती है।

खोटसी (खोची)—बम्बई प्रदेशस्थ कोल्हापुर राज्यके अलत उपविभागका एक ग्राम। यह कोल्हापुरसे उत्तर-पूर्व १२ मील वारन पर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय: १७३९ है यहां भैरव चेत्रपालका एक मन्दिर है जो २५० वर्ष पूर्व १६०० ई॰ को अलत उपविभागके सुलतान राव नामक एक इनामदार द्वारा निर्माण किया गया था। चैत्र मासमें प्रतिवर्ष यहां मेला लगा करता है।

खोदाई (हिं॰ स्त्री॰) खननकार्य, खोदनेका व्यापार। २ खननका पारिश्रमिक, खोदनेकी उजरत। ३ नक्काशी।

खोदु—बम्बईके अन्तर्गत काठियावाड़ राज्यका एक ग्राम। यह वधवानसे उत्तर-पश्चिम १५ मीलकी दूरी पर बसा है। यह महाल या आय उपविभागका सदर है। यहां उपविभागके कर्मचारी आ रहते हैं। खोदुमें उत्तम प्रस्तरकी एक खान है। प्राचीन कालमें सुलतान जी और राजोजीने वांकानर परगना विजय किया था। सुलतानजी इसके मुख्य सदरमें और राजोजी रती देवली नामक एक क्षुद्र ग्राममें रहने लगे। राजोजीने असंतुष्ट हो उक्त ग्रामको छोड़ दिये और खोदु विजय कर वहां राजत्व करने लगे। राजोजीके पिता पृथ्वीराजके मरने पर वधवान इलाहाबाद राज्यमें मिला दिया गया और राजोजी खोदु छोड़कर वधवानमें रहने लगे यहां एक सतीस्तम्भ है जो लगभग १००६ शकमें निर्माण किया गया था। जनसंख्या प्राय: १६०० है।

खोनचा (हिं॰ पु॰) १ कोई थाल या परात। इसमें मिठाई आदि खाने पीनेकी चीजें भर करके रखते हैं। २ फेरीवालोंकी थाली। इसमें मिठाई रख करके बेचते हैं,

खोना (हिं॰ क्रि॰) १ गंवाना, जाया करना। २ भूलना छोड़ना। ३ विगड़ना, खराब करना। ४ कूटना, रह जाना।

खोनोमा—आसामके अन्तर्गत नागापहाड़जिलामें एक बड़ा और समृद्धिशाली अङ्गामी नागाका ग्राम। यह अक्षा॰ २५ ३९ उ॰ और देशा॰ ९४ १ पू॰में अवस्थित है। १८७९ ई॰में सि॰ दमन्त नामक एक सरकारी अफसर बड़ी निर्दयतासे अपने ३५ साथियोंके साथ इस ग्राममें मारे गये। बाद उसके यह ग्राम घेर लिया गया और १८७८ ई॰के नवम्बर मासमें अङ्गरेजोंके हाथ आया, किन्तु। इस चढ़ाई में दो युरोपीय अफसरोंका प्राणान्त हुआ। यहांके ग्राम वासी नागा लोग जाप्भो पहाड़के शिखरपर भाग गये और १८८० ई॰के जनवरी मासमें अदम्य उत्साह और धैर्य से कछारमें बालाधन बाग पर हमला किया; जो ८० मीलकी दूरी पर था। वहां जाकर उन्होंने मैनेजर बुलाइथ और १६ कुलीयोंको मार डाला।

खोन्दकार—मुसलमान धर्मावलम्बी फारसी शिक्षक। इनका दूसरा नाम "मुर्शिद" अर्थात् धर्म मार्ग प्रदर्शक और "आखन्द" अर्थात् शिक्षक है। ५८ वर्ष पहले मुसलमान लड़कोंकी शिक्षा और कलमा पाठ विना इनके न बनता था। मुसलमान स्त्रियोंकी ऐसी धारणा है कि जिस पर इनकी कृपा होती उसका रोग क्षणमात्रमें दूर हो सकता है। इसलिये जब किसीको पीड़ा होती, तो शीघ्रही खोन्दकार बुलाये जाते हैं। किसीको ज्वर वा ताप चढ़ने पर वह कागजके एक टुकड़े पर कुरानके दो चार मन्त्र लिख देते जिनको रोगी बांध लेते है। पूर्व बङ्गालके हिन्दू और मुसलमानका दृढ़ विश्वास है कि इनका प्रदत्त फूंका हुआ पानी वात और स्नायवीय वेदनाकी अव्यर्थ महौषध है।

खोपड़ा (हिं॰ पु॰) १ कपाल, सर। २ नारियल। ३ नारियलकी गरी ४ नारियलका गोला। ५ भिक्षापात्र-विशेष, भीख लेनेका कोई बर्तन। यह दरयायी नारियलका अर्धभाग होता है। ६ गाड़ीकी एक लकड़ी। यह मोटी रहती और दोनो पहियोंके मध्यभागमें धुरोंसे मिल करके लगती है।

खोपड़ी (हिं॰ स्त्री॰) कपाल, सर।

खोपा (हिं॰ पु॰) १ छप्परकूटकोण, छप्परका गोशा। २ गृहकोणविशेष, मकानका कोई कोना। यह किसी मार्गकी ओर पड़ता है। ३ बालोंका एक बनाव। यह तिकोना कटता और खोपड़ी पर पड़ता है। ४ ग्रथित बेणी, गूंथी हुई लट। ५ नारियल, गरीका गोला।

खोपोवली—बम्बईके अन्तर्गत थाना जिलेका एक क्षुद्र ग्राम। यह खालापुरसे ५ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है।

जनसंख्या ५१५ है। यहां पेनिन्सुला रेलवेकी एक शाखा है। १८॥ एकर विस्तृतफलका एक उत्तम जलाशय होनेके कारण यह स्थान प्रसिद्ध है। पेशवाके मन्त्री नाना फड़नविस कर्तृक निर्मित एक शिवजीका मन्दिर है।

खोवा (हि० पु०) थापी, गच या पलस्तर कूटनेका एक छोटी और चपटी मुगरी।

खोभार (हि० पु०) गर्तविशेष, एक गड्ढा इसमें कूड़ा ककट और भाड़न भूड़ न डाला जाता है।

खोय (हि० स्त्री०) खू, आदत, स्वभाव बान टेव।

खोया (हि० पु०) मावा, खोवा, लोईकी शक्लमें ओटा हुआ दूध पेड़ा, बरफी और लड्डू खोयेसे बनते हैं। यह खानेमें मधुर और पुष्टिकारक होता है।

खोर (स० त्रि०) खोर अच। खञ्ज, लगड़ा।

खोर (हि० स्त्री०) १ सङ्कीर्णपथ तङ्ग गली, कूचा। २ पात्रविशेष, कोई नाद। इसमें पशुओंको चारा डाल करके खिलाते हैं।

खोर (हि० पु०) वृक्षविशेष, एक पेड़। यह सिन्धु-प्रदेशकी मरुभूमिमें उपजता और देखनेमें कचा तथा सुन्दर रहता है। खोरका काष्ठ पीताभ्र तवर्ण, गुरु तथा कठिन होता और परिष्कार करने पर अति चिक्कण निकलता है। इसकी कृषियन्त्र निर्माणमें व्यवहार करते हैं। खोरका अपर नाम 'साहीकाटा' और 'बनरीठा' भी है।

खोरक (स० पु०) खोर स्वार्थे कन्। गर्दभज्वर, गधेकी चढ़नेवाला बुखार।

खोरनी (हि० स्त्री०) भड़भूजेकी एक लकड़ी। इससे भाड़में झोंका जानेवाला बचा खुचा ईंधन, उसमें जलनेके लिये भीतरकी सरका दिया जाता है।

खोरा (हि० पु०) १ पात्रविशेष, कटोरा। (वि०) २ विकृताङ्ग, लङ्गड़ा, लूला।

खोराक (फा० स्त्री०) १ खाद्यद्रव्य, खानेकी चीज। २ आहारकी मात्रा। ३ औषधमात्रा।

खोराकी (फा० वि०) १ अधिक मात्रामें भोजन करनेवाला, पेटू जो ज्यादा खाता है।

खोराकी (हि० स्त्री०) खोराकका दाम, खानेके लिये दिया जानेवाला पैसा।

खोरास—बम्बईके काठियावाड़ प्रान्तका एक गांव। यह ग्राम पाटन सोमनाथसे १७ मील उत्तर पश्चिम पड़ता है। लोकसंख्या प्राय १०६६ है। कहते हैं चोरवाड़के नागनाथ महादेवके मन्दिरमें जो शिलाफलक रखा है, खोरासमेंही बहा गया था। उसमें संवत् १४४५ (१३८९ ई०) यहा और ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखा है—खोरासके सूर्यमन्दिरका जीर्णोद्धार माल नामक किसी व्यक्तिने कराया था। माल मकवानाजातीय रहेला क्षत्रिय रहे। युवराज शिवराजने उन्हें खोरासका स्थानीय शासक बनाया। इस ग्रामके दक्षिण कालीपात नदी बहती है। खोरासमें २ सरोवर हैं। उनमें एकको जाम्बवालु कहा जाता है।

खोरि (हि० स्त्री०) १ सङ्कीर्ण पथ, तङ्ग राह। २ दूषण, नुक्स।

खोरिया (हि० स्त्री०) १ बेलिया, कटोरिया। २ अबरक वगैरहके छोटे छोटे बुन्दे। यह चमकीले रहती और स्त्रियाँ और स्वांगके रूपोंके मुखपर शोभाके लिये लगती है। ३ कूएकी पैंदीका मध्यभाग। यह तरसा खींचनेमें बैलोंके पड़ चलनेसे कूपके मुखपर आ उपस्थित होता है।

खोल (स० त्रि०) खोल अच्। खञ्ज लगड़ा।

खोल (हि० स्त्री०) १ गिलाफ, भज्ज। २ कीट आदिका उपरि चर्मावरण। यह समय समय पर बदल जाती है। ३ मोटी पिछौरी या चादर।

खोलक (स० पु०) खोल अच् सज्ञाया कन्। १ पात्रविशेष, डेगची। २ वल्मीक, दीमककी पहाड़ी। ३ शिरस्त्राण, पगड़ी, टोपी। ४ पूगकोष, सुपारीका छिलका।

खोलना (हि० क्रि०) १ उद्घाटन करना, अवरोध हटाना, उघाड़ना। २ छेदना, बिगाड़ देना। ३ तोड़ना, काटना। ४ मुक्त करना, छोड़ना। ५ लगाना, ठहराना। ६ जारी करना, चलाना ७ स्थापन करना। ८ आरम्भ करना। ९ प्रकाश करना, बतलाना। १० पूछना, प्रश्न करना।

खोलपेटुआ—बङ्गमें खुलना जिलामें प्रवाहित एक नदी। आशासूनीके निकट कपोताक्षसे यह नदी निकली है। पहिले यह नदी कुछ पश्चिम ओर जाकर बुढ़ाढाघाटमें मिल गई है और उसके बाद दक्षिण मुख होते हुये सुन्दरबनमें फिर भी कपोताक्षनदीमें गिरी है।

खोलवी—मध्यभारतके अन्तर्गत एक क्षुद्र ग्राम। यह आगरा नगरसे १५ कोस उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। इस ग्रामके उत्तर-पूर्व लाल पत्थरका एक पहाड़ देखा जाता है। समतल क्षेत्रसे यह पहाड़ प्रायः २०० हाथ ऊंचा है। बौद्ध लोगोंने अजण्टा और कार्लीकी तरह इस ग्राममें पर्वत काट कर बहुतसे स्तूप, चैत्य और गुहा-मन्दिरादि निर्माण किये थे। स्थानीय कृषक और ब्राह्मण कहते हैं कि पाण्डुतनय भीम, अर्जुन प्रभृति पाण्डवोंने इन समस्त गिरिगुहाओंको काटा था। आजकल भी अधिवासी दो, एक गुहाओंको अर्जुनगृह, भीमगृह जैसा कहा करते हैं। इस खोलवी पहाड़के दक्षिण भागमें बड़े बड़े ११ गुहा-मन्दिर हैं जिनमें एक या दो घर है। घरके बाहरी और भीतरी भागका आयतन क्रमशः २२७ और ११६ फुट है। यही अर्जुनगृह है। दूसरा घर भीम-मन्दिर कहलाता है, जिसकी लम्बाई ४२ फुट और चौड़ाई २२ फुट है। एक और मन्दिर है, जिसमें बुद्धदेवकी चार मूर्तियां हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़की उत्तर और पूर्व दिशामें कई एक बौद्धस्तूपादिका ध्वंसावशेष देख पड़ता जिसका गठनकौशल आश्चर्यजनक है प्रत्येक स्तूप पर्वत पर ही गठित है। अन्यान्य स्थानोंकी भांति इसका अन्तर्भाग किसी गुहासे संलग्न नहीं इस स्थानकी स्तूपभित्तिका निम्न स्तर खोद करके निकालने पर देखा गया है कि समग्र स्तूप मन्दिर-जैसा है और उसमें बुद्धदेवकी प्रतिमूर्ति प्रतिष्ठित है। डाक्टर कनिङ्गहाम साहबके मतमें खोलवीके यह स्तूप ७००से ८०० ई०के बीच निर्मित हुवे।

खोलापुर—बरार-अमरावती जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २०° ५७´ उ० और देशा० ७७° ३३´ पू०में अमरावती नगरीसे ८ कोस पश्चिममें अवस्थित है। एक समय यह स्थान 'रेशम'के व्यवसायके लिये प्रसिद्ध था। १८०८ ई०में एलिचपुरके सूबादार विठलभाग देवने इस नगरसे एक लाख रुपया मांगा, परन्तु उन्होंने अपना आदेश ग्राह्य न होने पर, ससैन्य नगर आक्रमण किया पहिले यहां प्रतिवर्ष राजपूत और मुसलमान लड़ते रहे। इसी उत्पातसे इस नगरका ह्रास होने लगा आजकल यहां प्रायः ५३७७ मनुष्य रहते हैं।

खोलि (सं० स्त्री०) खोल-इन्। तूण, थाम।

खोलिया (हिं० स्त्री०) नलग्रन्थसेट, एक पनालीदार रुखानी। इससे बढ़ई लकड़ी पर बेलबूटे बनाते हैं।

खोल्मुख (सं० पु०) खे आकाशे उल्मुख इव रक्तवर्णत्वात्। मङ्गलग्रह।

खोवई—आसामकी एक नदी। यह त्रिपुरा राज्यमें निकल श्रीहट्ट जिलाके हवीगञ्ज उपविभाग होकर उत्तर-पश्चिमको और बहती हुई हवीगञ्जके निकट बराकमें गिरती है। नदीकी लम्बाई लगभग ८४ मील होगी।

खोवा, खोया देखो।

खोशाक (सं० पु०) जीवशाक, एक सबूजा।

खोह (हिं० स्त्री०) १ गुफा, कोल, दराज २ पर्वतमध्यस्थ गभीर गर्त, पहाड़का गहरा गड्ढा। ३ दो पर्वतोंका मध्यस्थ सङ्कीर्ण स्थान।

खोही (हिं० स्त्री०) १ पत्रछत्र, पत्तोंका छाता। २ खुंवा, घोघी।

खौं (हिं० स्त्री०) १ गर्त, गड्ढा। २ खत्ती, अनाज रखनेका गहरा गड्ढा।

खौंचा (हिं० पु०) १ साध पड़ गणना भेद, साढ़े छहका पहाड़। २ कोई सन्दूक। इसमें मिठाई आदि खाद्य द्रव्य रखते हैं।

खौफ (आ० पु०) भय, दहशत, डर।

खौर (हिं० स्त्री०) १ त्रिपुण्ड्, चन्दनका आड़ा टीका। २ स्त्रियोंका कोई अलङ्कार, औरतोंका एक गहना। यह आड़ी खौर जैसी सोनेकी बनती और मत्थे पर लगती है। ३ किसी किस्मका जाल। इससे मछलियां पकड़ी जाती हैं।

खौरना (हिं० क्रि०) खौर लगाना, चन्दनका टीका बनाना, तिलक निकालना।

खौरहा (हिं० वि०) १ गञ्जा, जिसके सरके बाल उड़ गये हों। २ खजहा, जिसके खुजली हो गयी हो।

खौरा (हिं० पु०) १ कण्डुभेद, किसी किस्मकी खाज। इसमें चर्म रूखा पड़ और बाल झड़ जाता है। खौरा कुत्ते बिल्लीकी भी होता है। (वि०) २ खौरहा।

खौरी (हिं० स्त्री०) १ कपाल, खोपड़ी। २ भस्म, राख।

खौंक (हिं० पु०) हृषभशब्द, बैलकी बोली या डकार।

खौलना (हिं० क्रि०) उबलना, गर्म होकरके गुरने लगाना।

खौलाना (हिं० पु०) उबालना, पानी वगैरहको इतना गर्म करना कि वह बोलने लगे।

खौंहा (हिं० वि०) १ खोराकी, पेटू, ज्यादा खानेवाला। २ खानेका लालची मरभुखा। ३ अन्य व्यक्तिका उपार्जित धन व्यय करनेवाला, जो दूसरेका रुपया पैसा उड़ाता हो।

ख्यात (० त्रि०) ख्या क्त। १ कथित, कहा हुआ। २ विश्रुत, सुना हुआ। ३ ख्यातियुक्त, मशहूर। इसका संस्कृत पर्याय—प्रतीत, प्रथित, वित्त, विज्ञात और विश्रुत है।

ख्यातगर्हण (सं० त्रि०) ख्याता प्रसिद्धा गर्हणा निन्दा यस्य, बहुव्री०। अवगीत, बदनाम, जिसको बहुतसे आदमी बुरा कहते हों।

ख्यातव्य (सं० त्रि०) ख्या तव्य, बतलाया जानेवाला।

ख्याति (सं० स्त्रि०) ख्या क्तिन। १ प्रशंसा, तारीफ। २ प्रसिद्धि, नामवरी। ३ कथन, बातचीत। ४ प्रकाश, रोशनी। ५ ज्ञान, समझ। ६ महत्तत्त्व।

"ततो महान् भवति स स्वा पुरुषेण ख्यातिरव च।" (सांख्यभाष्य)

ख्यातिकर (सं० त्रि०) प्रशंसा करनेवाला जो तारीफ करता हो।

ख्यातिघ्न (सं० त्रि०) ख्यातिको नाश करनेवाला, जो नामवरीको मिटाता हो।

ख्यातिमत् (सं० त्रि०) ख्याति मतुप्। ख्यातियुक्त, नामवर।

ख्यात्यापन्न (सं० त्रि०) ख्यात्या आपन्नो युक्त, ३ तत्। ख्याति लाभ करनेवाला जो शोहरत हासिल कर चुका हो।

ख्यान—व्यवसायी और कृषिजीवी जातिविशेष। उत्तर बङ्गमें यह ख्येन और आसाममें कोन्लिता कहलाते हैं। ये अपनेको कायस्थ सन्तान जैसा बतलाते हैं। इनके पूर्वपुरुष कोचविहारराज सरकारमें दैवज्ञका काम करते थे। ये देखनेमें सुश्री हैं। इनका मुख चौड़ा मस्तक गोल, नाक ऊँची, दिया जैसी और चक्षु आमकी फाक जैसा होता है। इनमें कई एक गोत्र हैं। इनका विवाह सगोत्रमें नहीं होता। इन लोगोंमें बाल्यविवाहकी प्रथा प्रचलित है। पांचसे १२ वर्षकी अवस्था तक लड़कोंका विवाह होता है। विवाहके कार्य कन्यापादि उच्च श्रेणीके हिन्दूकी तरह हैं। विवाहके पहले कन्या वरको उपहार भेजती है, वरके उपहार ग्रहण करने पर विवाह-बन्धन दृढ़ हो जाता है। इन लोगोंमें भी विधवा विवाह और विवाह बन्धनच्छेद निषिद्ध है। पूजा विवाह प्रभृति मङ्गल कार्यमें ये ब्राह्मणको नियुक्त करते हैं ब्राह्मण, कायस्थ, और वैश्य इनके हाथका जल और मिष्टान्न खाया करते हैं।

ख्यापक (सं० त्रि०) ख्या णिच् ण्वुल। १ ज्ञापक, बतलानेवाला। २ प्रकाशक, जाहिर करनेवाला

ख्यापन (सं० क्ली०) ख्या णिच्-ल्युट्। प्रकाशन, जाहर।

ख्याल (अ० पु०) १ ध्यान, तवज्जोह। २ अनुमान, अटकल। ३ विचार, समझ। ४ आदर, सम्मान, लिहाज। ५ गीतभेद, किसी किस्मका गाना। इसमें एक मुखड़ा और एक अन्तरा लगता तथा विशेषत शृङ्गार इसका वर्णन रहता है। ६ लावनीके गानेका कोई ढंग।

ख्याल खुशाल—एक विख्यात कवि तथा गायक। इनकी कवितायोंमें एक यों है —

अन्दरा निसर चलिहो डिगाना ख्यालमस्ताना।
रीझ रिझोना बाको चितवनमें है टोना।
रूप लजावन दरके बावर व च बागर नटनागर
रसिक प्रीतम मन मोह लियो है कोई न भावे
ख्याना सोना सोना रहना भोना॥

ख्याली (फा० वि०) १ फर्जी, कल्पित, अटकलपच्चू। २ खब्ती, पागल, सनकी।

ख्रिष्टान (हिं० पु०) ईसाई, क्रिश्चियन।

ख्रिष्टीय (हिं० वि०) ईसवी, ईसाके मुताबिक।

ख्रीष्ट (हिं० पु०) ईसा, मसीह। ईसा देखो।

ख्वाजा (फा० पु०) १ प्रभु, खाविन्द। २ प्रधान, सरदार। ३ सुप्रसिद्ध व्यक्ति, मशहूर शख्स। ४ प्रतिष्ठित वणिक्, बड़ा सौदागर। ५ मुसलमान साधु, कोई मुसलमान फकीर। ६ अन्तःपुरका क्लीव दास, जनानखानेका नामर्द नौकर।

ख्वाज कुतब—एक मशहूर गायक। इनकी बनाई बहुतसी कवितायें हैं जिनमेंसे एक इस तरह है :—

सैदनी सब आईली सुन तरस पीरका ख्वाजे कुतब देहरी।
शेप मगायक औलीया बन आए नबी है रसूल सन र ग नवीलाहादर
रहीम एसाहब हुलसन नजर वसीलिया
एस दरवाज दरवसीलियामें॥

ख्वाजौ खिदर—एक प्रसिद्ध कवि और गायक। इनकी कविताओंमेंसे एक यह है—

आज रच्यो करतार दीन मनुष होय
अवतरयो छत कश्यपसुत इत हुमायुंको नन्द।
वेतिफिर हरपतु दुख दारिद्र दूर करण
याको तेज तेरो तप छिति छायो एकहो संग॥

ख्वाजौ दीन शकरगञ्ज—एक नामी कवि तथा गायक। इन्होंने अच्छी अच्छी कवितायें रचना की हैं जिनमेंसे एक यों है :—

गेमें पाऊं पाऊं हजरत खवाजदीन शकरगंज
सुलतान मशायक महबूब इलाही।
निजामदीन औलिया अमीर खोसरोकेवल बलजाहीं॥

ख्वाजे मीर—एक प्रसिद्ध कवि। इनकी एक कविता इस तरह है—

धन धन राग धनाश्री धन धन गोकुव गाम।
धन धन नन्द योशमति जहा प्रगटे सुन्दरश्याम॥

ख्वाजे मौतदीन कुतबदीन—एक मशहूर मुसलमान कवि, इन्होंने बहुती कवितायें रची हैं जिनमेंसे एक यों है—

दम दम मदार लाडिले खवाज पीर मेरे
तिनकी बिथा दूर करो निहोर।
खवाज मौतदीन कुतबदीन तुरकमान
राखले तुम अपनी ओर॥

खाब (फा० पु०) १ निद्रा, नींद। २ स्वप्न, सपना।

ख्वार (फा० वि०) १ भ्रष्ट, बर्बाद, खराब। २ अपमानित, बदनाम।

ख्वारी (फा० स्त्री०) १ भ्रष्टता, बर्बादी। २ तिरस्कार, वेइज्जती।

ग

ग—कवर्गका तीसरा व्यञ्जनवर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है। इसका आभ्यन्तर प्रयत्न जिह्वामूल स्पर्श और वाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष है। गकार अल्पप्राण वर्णके मध्य गिना जाता है। मातृकान्यासके दक्षिण मणिबन्धमें इसका न्यास करना चाहिये। इसकी लिखन-प्रणाली तन्त्रके मतसे इस प्रकार है—गकारमें सर्व समेत तीन रेखायें होती हैं, पहली अधोगत वक्र-रेखा है इस रेखाके ऊर्ध्वस्थित अग्रभागसे एक दूसरी सरल रेखा खींचनी पड़ती है इस सरल रेखाके दक्षिणाग्रसे अर्धोदिक्को फिर एक सरल रेखा खींचते है। वर्तमान समयमें गकारमें भी एक मात्रा दी जाती है, किन्तु तन्त्रमें इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसकी प्रथम रेखाको अधिष्ठात्री लक्ष्मी तथा तीसरी रेखाके अधिष्ठाता स्वयम् ईश्वर हैं। गकारको दाडिम कुसुमके सदृश रक्तवर्णा, चतुर्बाहु, रक्तवस्त्रधारिणी और रत्नलङ्कार-से सुशोभित ब्राह्मणीके सदृश ध्यान करना पड़ता है। इसका नाम गो, गौरी, गौरव, गङ्गा, गणेश, गोकुलेश्वर, शार्ङ्गी, पञ्चात्मक, गाथा, गन्धर्व्व, सर्व्वग, स्मृति, सर्व्व-सिद्धि, प्रभा, धूम्रा, विजास्य, शिवदर्शन, विश्वात्मा, गौ, वालवङ्ग, त्रिलोचन, गीत, सरस्वती, विद्या, भोगिनी, नन्दन, धरा, भोगवती, हृदय, ज्ञान, जालन्धर और लव है। (वर्णाभिधान) तान्त्रिक मतसे हृदयमें जो द्वादशदल पद्म है, उसके तृतीय दलमें गकार अवस्थित है। काव्या-दिके प्रथममें गकार होनेसे रचयिताकी आकांक्षा बढ़ती

है, किन्तु किसी दूसरे व्यञ्जनके साथ युक्त होने पर विपरीत फल होता है। (इत्तरत्नाकरटीका)

ग (सं स्त्री०) गै क। १ गीत। २ गणेश। ३ गन्धर्व। ४ एक गुरुवर्ण।

गगई (हिं० स्त्री०) गलगलिया। मैना जातिकी एक चिड़िया जो ग्यारह इंच लम्बी भूरे रङ्गकी होती और भारतके प्रायः सभी प्रान्तोंमें मिलती है। यह खेतों, मैदानों और जङ्गलोंमें फिरती है। इसके अण्डा देनेका कोई ठिकाना नहीं है। यह झाड़में घोंसला बना लेती और चार अण्डे देती है। गगई बोलनेमें खूब तेज है।

गगकुरिया (हिं० स्त्री०) हरिद्राभेद एक प्रकार लम्बी और बड़ी गांठवाली हलदी यह कटकमें होती है।

गगतिरिया (हिं० स्त्री०) वृक्षविशेष जलपीपर। यह सजल भूमिमें होती है। इसकी पत्तियां नुकीली निकलती है। इसमें पीपल जैसी बाल आती हैं। इसका दूसरा नाम पनिसिगा है। जलपिप्पली देखो।

गगबरार (हिं० पु०) गङ्गा या किसी दूसरी नदीकी धारा या बाढ़के हटनेसे निकली हुई भूमि। इस पर नदीकी मिट्टी जमी रहती है।

गगरी (हिं० स्त्री०) बनी नामकी एक कपास। इसके पत्र दीर्घ तथा विस्तृत और तन्तु सूक्ष्म एवं कोमल लगते हैं। पुष्पके नीचेकी कमरखी पत्तियां दीर्घ और बैंगनी होती है। इसे विहारमें जेठी, बङ्गालमें भोगला, बरारमें टिकड़ी जुड़ी आदि कहा जाता है।

गगला (हिं० पु०) एक प्रकारका शलगम। यह गङ्गाके किनारे होता और आकारमें दीर्घ और अच्छा लगता है।

गगवा (हिं० पु०) वृक्षविशेष। यह दक्षिणमें समुद्र किनारे तथा ब्रह्म अन्दामान और सिंहलमें उपजता है। यह चिर हरित् रहता है। इसमें श्वेतवर्ण दुग्ध निःसृत होता जो वायु लगनेसे जमता और काला लगता है। ताजा दूधका स्वाद खट्टा होता और बहुतोंका मत है कि जहरीला भी है। इसके काठसे दियासलाई आदि बनायी जाती हैं।

गंगशिकस्त (हिं० पु०) नदीसे काटी हुई जमीन।

गंगेटी (स० स्त्री०) ओषधिविशेष, एक पत्ती। यह पिण्डकाको प्रवाहित करती और मलमूत्रल रहती है।

गंगेरन (हिं० स्त्री०) गोरचतण्डुला, गुल्मकरी। इसके पर्वोंमें दो नोंके रहतीं और पुष्प पाटलवर्ण लगते हैं। गंगेरनका फल परिपक्व होने पर फट कर पांच टुकड़े हो जाता है। नागबला देखो।

गंगेरुआ (हिं० पु०) काकाण्डीक्षुप एक झाड़ी। इसके पत्र त्रिकोणरूपसे सीकोंमें सुसज्जित रहते और क्षुद्र क्षुद्र फल लगते हैं। गाङ्गेरुक एक पार्वत्य वृक्ष है।

गंगोटी (हिं० स्त्री०) गङ्गातीरस्थ मृत्तिका, गङ्गाकी मट्टी।

गंगोलिया (हिं० पु०) निम्बुकभेद, किसी किस्मका नीबू। यह खट्टा और दानेदार होता है।

गंजिया (हिं० स्त्री०) १ खारी, कोई जालीदार थैली। इसमें घसियारे घास डालते हैं। २ पात्रविशेष, कोई बर्तन। यह मट्टीका बनता, मुंह तङ्ग रहता और देखनेमें चपटा लगता है। ३ रुपया डालनेकी कोई थली। यह सूतसे जालीदार बनायी जाती है।

गंजेड़ी (हिं० वि०) गांजाखोर, गांजा पीनेवाला।

गंठकटा (हिं० पु०) गांठ काट लेनेवाला, जो कमरमें बंधे रुपये पैसे चाकू या किसी दूसरी चीजसे कपड़ेको काट कर निकाल लेता हो।

गंठजोड़ा, गठबन्धन देखो।

गठबन्धन (हिं० पु०) १ ग्रन्थिबन्धन, खूंटजोड़ाई। यह पति तथा पत्नीका उत्तरीय वस्त्रका प्रान्तभाग परस्पर बांधनेसे होता है। विवाहमें ही इसका आरम्भ है। गंठबन्धन स्नानदान और पूजार्चनादिके समय किया जाता है। २ विवाह, शादी। ३ मैत्री, दोस्ती।

गंठिवन (हिं० स्त्री०) ग्रन्थिपर्ण देखो।

गंठवा (हिं० पु०) धागोंका एक जोड़। इसमें तानेवाने या नयी पायीका तागा पुराने कपड़ेके तागेसे मिलाया जाता है।

गंडधिसनी (हिं० स्त्री०) १ चाटकारिता, खुशामद, चापलूसी। २ सख्त मिहनत, कड़ी मशक्कत। ३ बैठक, बैठाई।

गंडतरा (हिं० पु०) गंतरा, बच्चोंके नीचे बिछाया जानेवाला कपड़ा।

गंडनी (हिं० स्त्री०) गण्डाला, मरघटा।

गंडरा (हिं॰ पु॰) तृणविशेष, एक घास। यह मूंज जैसा रहता और आर्द्र भूमिमें उपजता है। इसके पत्र अर्ध अङ्गुलि प्रशस्त और हस्त वा सार्धहस्त विस्तृत होते हैं। गंडरा २ फुटसे ६ फुट तक बढ़ जाता है। इसकी शाखाके मध्यभागकी डेढ़ दो हाथ दीर्घ पतली पतली सींक सुखानेसे सुनहली निकलती है। इसी सींकके उपरिभागसे आश्विन मासको मञ्जरी आती है। पौषसे पहले ही गंडरा सूखने लगता है। लोग इसके हरे सींके निकाल करके विविध पात्र प्रस्तुत करते हैं। फाल्गुन चैत्र मासको काट करके गंडरा छानी छप्परसे लगता है। इसकी झाड़ू और चटाई भी बनती है। गंडराका मूल ही 'खस' नामसे विख्यात है। २ कोई धान। यह भाद्र आश्विन मासको पकता है।

गंड़ासा (हिं॰ पु॰) १ अस्त्रविशेष, एक हथियार। इससे प्रायः कटिया या हरियारी काटी जाती है। गंड़ासा प्रायः एक हस्त परिमित दीर्घ होता है। जाली नामक काष्ठमें लोहका एक प्रशस्त तीक्ष्ण खण्ड लगा करके इसे बनाते हैं। पर्याय—गंड़ास, गंड़सी, गड़सिया है।

गंडेरी (हिं॰ स्त्री॰) १ इक्षुखण्ड, ऊखसे पोर पोर टुकड़े। २ छिले हुए पौंडेका छोटा छोटा टुकड़ा। यह चूसनेके काम आता है।

गंडोरा (हिं॰ पु॰) हरित् आमखर्जूर, हरी और कच्ची खजूर।

गंदना (हिं॰ पु॰) १ बदबूदार कोई मसाला। यह रसुनपिण्डालु जैसा रहता है। २ तृणविशेष, कोई घास। यह रसुन ग्रन्थिको यव स्थापन करके वपन करनेसे उगता है। पर्याय—दंदना है।

गंदला (हिं॰ वि॰) मलिन; अपरिष्कृत, मैला, धवंल। २ अपवित्र नापाक।

गंदीला (हिं॰ पु॰) तृणविशेष, एक घास। यह वर्षा ऋतुमें उपजता पतले पतले पत्र रखता है। इस मध्य भागमें एक सींक भी होती है। बुंदेलखण्डमें गंदीला अधिक देख पड़ता है।

गंधाना (हिं॰ क्रि॰) दुर्गन्ध छोड़ना, बदबू देना, बुरी बास आना।

गंधिया (हिं॰ स्त्री॰) १ कृमिभेद, कोई कीड़ा, गुजुवा। यह वर्षा ऋतुको उड़ता और बुरी तरह महकता है। २ हरित्वर्ण कीटभेद, कोई हरा कीड़ा। यह भुनगे जैसा होता और धान, मकई आदिको बिगाड़ता है। ३ कोई घास गंदीला देखो।

गंज (हिं॰ स्त्री॰) तृणविशेष, कोई घास। पर्याय—अगिया है।

गंधेल (हिं॰ पु॰) वृक्षविशेष, कोई पेड़। यह क्षुद्राकार रहता और हिमालयके तीरमें उपजता है। बङ्गदेश और दाक्षिणात्यमें भी इसका अभाव नहीं। गंधेलके पत्र तथा कुड्मल लोमश होते हैं। इसकी कई बहुत महकती हैं। गंधेलकी सींकें आठ दश इञ्च तक बढ़ते और उनमें डेढ़ दो इञ्च दीर्घ तीक्ष्णाग्र पत्र निकलते हैं। इनके पुष्प श्वेतवर्ण और फल दीर्घाकार बेर जैसे होते हैं। गंधेलकी पत्ती मसाले और छाल तथा जड़को औषधमें व्यवहार करते हैं।

गंधेला (हिं॰ पु॰) १ पक्षिविशेष, कोई चिड़िया। (वि॰) २ दुर्गन्धि, बदबूदार, गंधानेवाला।

गंधोली (हिं॰ स्त्री॰) कपूरकचरी।

गंव (हिं॰ स्त्री॰) १ अवसर, मौका। २ युक्ति, ढंग। ३ प्रयोजन, मतलब। ४ दांव, घात।

गवई (हिं॰ स्त्री॰) १ क्षुद्रग्राम, छोटा गांव।

गंवरदल (हिं॰ पु॰) १ गंवारोंकी भीड़। (वि॰) २ देहाती, गंवार। ३ गंवारू, भद्दा, अच्छा न लगनेवाला।

गंवहियां (हिं॰ पु॰) अतिथि, अभ्यागत, मेहमान, किसी दूसरे गांवसे आया हुआ आदमी।

गंवाना (हिं॰ क्रि॰) १ खोना, डाल देना, बिसराना, भूलना। २ व्यतीत करना, काटना, बिताना।

गंवार (हिं॰ वि॰) १ ग्रामीण, देहाती। २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ अनजान, नावाकिफ।

गंवार (गंवारिया) राजपूतानेका जातिभेद। यह मूंजकी रस्सियां सिरकियां, सींगकी कंगियां आदि बना करके बेचते और किसी स्थान पर स्थायी रूपसे न ठहर करके भ्रमण ही किया करते हैं। गंवारिये अपना परिचय राजपूत जैसा देते हैं।

गंवारी (हिं॰ स्त्री॰) १ ग्राम्यता, गंवारपन।

२ अज्ञानता, नासमझी। ३ मूर्खता, बेवकूफी। ३ गंवार औरत। ४ गंवारपन लिये हुई, जो मूर्खतासे भरी हो। ५ भद्दी, बेढंगी।

गंवारू (हिं० वि०) ग्रामीण, देहाती, बेढंगा, भद्दा।

गंस (हिं० स्त्री०) १ द्वेष, दुश्मनी। २ लगती बात। ३ बाणकी अनी, तीरकी नोक, गांसी।

गंसना (हिं० क्रि०) १ कसना जड़ करके बांधना। २ बानेको खूब कड़ा करना। सूतको गंस देनेसे बुनावटमें छेद नहीं रहता। ३ गठना, कटा पड़ना। ४ भरना। ५ चुभना, छिदना, घुसना।

गंसीला (हिं० वि०) तीक्ष्णाग्र, नोकदार। २ चुभीला, धंस जानेवाला। ३ ठोस, ठस, जिसमें छेद न रहे।

गइया, गऊ देखो।

गई करना (हिं० क्रि०) टालना, बराना, सुनी अनसुनी करना।

गईबहोर (हिं० वि०) बिगड़ीको बनानेवाला।

गउथ (हिं० स्त्री०) तृणविशेष, एक घास। यह अफगानस्तान और बलूचस्तानमें अपने आप उपजा करती है, किन्तु भारतमें चौपायोंको खिलानेके लिये लगायी जाती है। इसका बीज आश्विन कार्तिक मास खेतकी मेडों पर डाला और जलसे अच्छी तरह सींचा जाता है। गउथ ६ मासमें प्रस्तुत होता है।

गऊ (हिं० स्त्री०) गो, गाय।

गकार (सं० पु०) ग स्वरूपे कार। ग स्वरूप वर्ण, 'ग' अक्षर।

गक्खर (हिं० पु०) जातिविशेष, एक कौम। इस जातिके लोग पञ्जाबके उत्तर पश्चिममें निवास करते हैं।

गगन (सं० क्ली०) गच्छन्त्यस्मिन्, गम-युच् मयान्तादेश। अमिन २।८८ ८, १ आकाश, आसमान, चलने फिरनेकी खाली जगह। इसका संस्कृत पर्याय—वह्नि, धन्व, आप, पृथिवी, भू, स्वयम्भू, अध्वा, सागर, समुद्र और अध्वर है। इसरे पर्याय आकाश शब्दमें देखो। गगनका गुण—व्यापकत्व, छिद्रत्व, अनाश्रय अनालम्ब, आश्रयान्तरशून्य, अव्यक्त और अधिकारिता है।

'चिति गगनपावक पवन समीरा।' (तुलसी)

गगन शब्दके नकारका णत्व भी हुआ करता है। बहुतोंके मतमें मूढ व्यक्ति ही णकारको स्वीकार करते हैं, वास्तविक णकार नहीं बनता। किन्तु आचार्यमञ्जरीके निम्नलिखित श्लोकमें णत्वका प्रमाण पाते हैं—

"गगणको गणको परिगाभते।"

२ शून्य खाली जगह। ३ लग्नको अपेक्षा दशम राशि, कुण्डलीका १०वां घर। ४ अभ्रधातु, अबरक। ५ मेघ बादल। ६ छन्दोविशेष। यह छप्पयका एक भेद है।

गगनगति (सं० त्रि०) गगने गतिर्यस्य, बहुव्री०। १ आकाशगामी हवामें उड़नेवाला। (पु०) २ देवता। ३ सूर्यादि ग्रह। (स्त्री०) ४ आकाशगमन, आसमानी चाल, उड़ान।

गगनचर (सं० त्रि०) गगने चरति चर-टच्। आकाशगामी आसमानमें चलने फिरनेवाला। २ विद्याधर। (पु०) ३ पक्षी।

गगनचरी—विजयार्द्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें स्थित साठ नगरोंमेंसे एक नगर।

गगनधूल (हिं० स्त्री०) १ किसी किस्मका कुकुरमुत्ता। यह गोलाकार रहती और वर्षा ऋतुको पेड़ोंके नीचे या खुले मैदानमें उपजती है। इसका वर्ण श्वेत आता और नूतन पुष्पका शाक बनाया जाता है। शुष्क हो जाने पर इसके मध्यभागसे मलिन हरित्वर्ण रज निकलता है। यह धूलि कान बहनेको अति लाभदायक औषध है। २ केतकीपुष्परज केवड़ेके फूलकी धूल।

गगनध्वज (सं० पु०) गगने गगनस्य वा ध्वज इव। १ मेघ, बादल। २ सूर्य।

गगनन्दन—विजयार्द्ध पर्वतकी उत्तर श्रेणीके स्थित पचास नगरोंमें से एक नगर

गगनप्रिय (सं० पु०) एक दैत्य। (हरिवं ३ ६९ अ)

गगनभेड़ (हिं० स्त्री०) पक्षिविशेष, एक चिड़िया। यह जलके निकट निवास करती है। पर्याय—कज, कराकुल है।

गगनमण्डल (सं० क्ली०) गगनस्य मण्डलम्, ६ तत्। आकाशमण्डल, आसमानका घेरा।

गगनमारकगण (सं० पु०) अभ्रमारकद्रव्य, अबरकको कुश्ता बनानेवाली चीजें।

गगनवल्लभ, गगननन्दन देखो।

गगनविहारी (सं० त्रि०) गगने विहर्तुं शीलं यस्य, वि-हृ-णिनि। १ आकाशपथमें विचरण करनेवाला, जो आसमानमें घूमता हो। (पु०) २ खेचर, पक्षी।

गगनसद् (सं० त्रि०) गगने सीदति गच्छति, गगन-सद्-क्विप्। १ आकाशगामी, हवामें उड़नेवाला। (पु०) २ सूर्य आदि ग्रह। ३ देवता।

गगनसिन्धु (सं० स्त्री०) गगनस्य सिन्धुः- ६-तत्। मन्दाकिनी, गङ्गा।

गगनस्पर्श (सं० पु०) वायु, हवा।

गगनाङ्गना (सं० स्त्री०) गगनगता अङ्गना। दिवाङ्गना अप्सरा, परी।

गगनादिलौह (सं० क्ली०) एक औषध। अभ्रक त्रिफला लौह कुटज, त्रिकटु, पारा, गन्धक, सज्जिया, सोहागा, सज्जीमट्टी, दालचीनी इलायची, तेजपत्र वह दोनों जीरा सबको चूर्ण करना और उसमें सबसे आधा चित्रकचूर्ण मिलाना चाहिये इसीका नाम गगनादिलौह है। इसको २ तोले मधुके साथ लेहन करने पर सोमरोग और मूत्रातिसार अच्छा हो जाता है। (रसेन्द्रसारस०)

गगनादिवटी (सं० स्त्री०) वातरोगका एक औषध। अभ्रक, पारद, गन्धक, ताम्र, मुण्डलौह, तीक्ष्णलौह और स्वर्णमाक्षिक बराबर बराबर ले करके मुलहटी वासक, द्राक्षा तथा भूकुष्माण्डके क्वाथमें घोंटना चाहिये। इसको २ रत्ती घी और गुड़के साथ खाने पर कठिन वातरोग, पित्तरोग, क्षय, श्वास, मद, कफ, शोष, दाह और तृष्णा मिट जाती है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गगनाध्वग (सं० पु०) गगनाध्वना गच्छति, गम-ड। सूर्य।

गगनानङ्ग (सं० क्ली०) मात्रावृत्तभेद। इसके आदिमें रगण लगता और प्रत्येक पादको १६वीं मात्रा पर विश्राम पड़ता है। फिर गगनानङ्गके प्रतिपादमें ५ गुरु और १५ लघु लगते हैं। कोई कोई १२ मात्राओंके बाद भी यति निर्देश करता है।

गगनाम्बु (सं० क्ली०) गगनस्याम्बु, ६-तत्। गगनोदक, बरसाती पानी। यह बल्य, रसायन, मेध्य, शीतल, आह्लादक और त्रिदोष, ज्वर, दाह, विष तथा रक्षोघ्न होता है। वृष्टिके जलका यह स्वाभाविक गुण रहते भी उसके अपवित्र स्थान वा अपवित्र पात्रमें पतित होनेसे उसका पीना या उसमें नहाना अतिशय अहितकर और अनुपकारी है। पात्रके दोष गुण अनुसार जलको भी भला बुरा समझते हैं। (सुश्रुत)

गगनेचर (सं० पु०) गगने चरति, अलुक्‌स०। १ देवता २ सूर्यादि ग्रह। ३ राशिचक्र। (त्रि०) ४ गगनचारी, आसमानमें उड़नेवाला।

गगनोल्मुक (सं० पु०) गगने उल्मुक इव। मङ्गलग्रह।

गगर—युक्तप्रदेशके नैनीताल और अलमोड़ा जिलेकी एक पर्वतश्रेणी। यह अक्षा० २९° १४′ तथा २९° ३०′ उ० और देशा० ७९° ७′ एवं ७९° ३०′ पू०के बीच पड़ती है। इसका प्रकृत नाम गर्गाचल है। इसमें तुन, सनोवर आदि अच्छी अच्छी लकड़ियां होती हैं।

गगरा (हिं० पु०) कलसा, घड़ा। यह तांबे, पीतल, लोहे, मट्टी आदिका बनता है।

गगरी (हिं० स्त्री०) कलस, छोटा घड़ा।

गगली (हिं० स्त्री०) अगरुभेद, किसी किस्मका अगर।

गगोरी (हिं० स्त्री०) क्रमिविशेष, एक कीड़ा। यह भूमिके भीतर बिल तैयार करके रहती है।

गग्नु (सं० स्त्री०) वाक्य, गुफ्तगू, बात।

गघ्न (सं० पु०) हास, हंसी।

गङ्ग (हिं० पु०) १ एक मात्रावृत्त। इसके प्रतिपादमें ९ मात्राएं लगती हैं, अन्तको २ गुरु रहना चाहिये।

गङ्ग—हिन्दी भाषाके एक प्रसिद्ध कवि। यह अकबरके समयमें विद्यमान थे। इनका प्रकृत नाम गङ्गाप्रसाद रहा।

गङ्ग (हिं०) गङ्गा देखो।

गङ्गकवि,—गङ्गाप्रसाद देखो।

गङ्गकीर्त्ति—दि० जैन ग्रन्थकर्त्ता। ये वि० स० ११७७में हुए थे।

गङ्गदेवकवि—दि० जैन ग्रन्थकर्ता। इन्होंने "श्रावकप्रायश्चित्त" रचा था।

गङ्गा (सं० स्त्री०) गम्यते ब्रह्मपदमनया गच्छतीति वा, गम्-गन् टाप्। एक प्रसिद्ध नदी। इसका पर्यायः—

विष्णुपदी, जह्नु—तनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रिपथगा, त्रिस्रोता, भ मप्रसू, अर्ध्य तीर्थ, तीर्थराज, त्रिदशदीर्घिका, कुमारसू, सरिद्वरा, सिद्धापगा, स्वर्गापगा, खापगा, ऋषिकन्या, हैमवती, स्वर्यापी, हरशेखरा, सुरापगा, धर्मद्रवी, सुधा, जह्नुकन्या, गान्दिनी, रुद्रशेखरा, नन्दिनी, अलकनन्दा, सितसिन्धु, अध्वगा, उग्रशेखरा, सिद्धसिन्धु, स्वर्गसरिद्वरा, मन्दाकिनी, जाह्नवी, पुन्या, समुद्रसुभगा स्वर्नदी, सुरदीर्घिका, सुरनदी, स्वर्धुनी ज्येष्ठा, जह्नु-सुता, भीष्मजननी, शुभ्रा, शैलेन्द्रजा, और भवायना। वैद्यक राजनिघण्टके मतसे इसका जल शीतल, स्वादिष्ट, स्वच्छ, अत्यन्त रुचिकर, पथ्य, पवित्र, पापनाशक, तृष्णा और मोहनाशक, दीपन एवं प्रज्ञावृद्धिकारी है।

गङ्गा अत्यन्त प्राचीन पुण्यसलिला नदी है। हिन्दुओंका ऐसा दृढ विश्वास है कि पृथ्वीके सर्वतीर्थोंमें गङ्गा ही प्रधान है। गङ्गामें मृत्यु होनेसे मनुष्यजातिसे लेकर निकृष्टजाति कीट, पतङ्ग तक भी मोक्ष लाभ करते हैं। (ऋक् १।७५।५), कात्यायन, श्रौतसूत्र, शतपथ, ब्राह्मण-प्रभृति प्राचीन ग्रन्थोंमें गङ्गा नाम है। पुराण, उपपुराण, इतिहास, इन सब प्राचीन पुस्तकोंमें गङ्गाकी थोड़ी बहुत कथा लिखी हुई है। वाल्मीकि रामायणके गङ्गा हिमालयकी कन्या हैं। सुमेरुतनया मनोरमा वा मेनाके गर्भसे इनकी उत्पत्ति है। देवताओंने किसी कार्य वशसे हिमालय पहाड़के निकट गङ्गाको भिक्षाकर लिया है।* तभीसे यह ब्रह्माके कमण्डलुमें रहने लगी। इधर सगर राजाके दुष्कर्मी पुत्र कपिल मुनिके शापसे भस्म हो जानेके कारण, सगर वंशके राजा पवित्र गङ्गाको पृथ्वी पर लानेकी चेष्टा करने लगे। किन्तु उनकी कितनी ही चेष्टायें निष्फल हुईं। बहुत दिनके बाद सगरवंशज राजा भगीरथ अपने मन्त्रियोंके ऊपर राज्यका भार अर्पण कर पहले पहल ब्रह्माकी तपस्या करने लगे। उनकी कठोर तपस्याके हजार वर्षके बाद ब्रह्माजी सन्तुष्ट हुए। ब्रह्माजी सब देवताओंको साथ लेकर राजा भगीरथके निकट पहुंचे। भगीरथने अपनी इच्छा (अभिप्राय) प्रगट की। भगीरथका यह अभिप्राय था कि गङ्गाजीको पृथ्वी पर लानेसे उनके पूर्वपुरुष मोक्ष पा जायें। ब्रह्माके स्वीकृत होते भी वे अपनी कठोर तपस्यामें लगे रहे। राजा भगीरथने सोचा, जब गङ्गा स्वर्गसे पृथ्वी पर आवेंगी तो यह निश्चय है कि उनका भार पृथ्वी सह न सकेगी। इसलिये गङ्गाधारणको महादेवकी तपस्या करनी पड़ी।* शिवजीको सन्तुष्ट करनेमें उन्हें अधिक परिश्रम न पड़ा। एक वर्षके भीतरही शिवजी उनकी तपस्यासे सन्तुष्ट होकर वर देनेके लिये उपस्थित हुए। तब भगीरथने अपना अभिप्राय प्रगट किया और शिवजीने गङ्गाको अपने ऊपर धारण करनेका भार ले लिया। गङ्गाजीने सोचा कि यह अच्छा ही हुवा। इस समय महादेवजी मेरे हाथमें आ जायगें। क्यों कि मैं इतने जोरसे स्वर्गसे गिरूंगी कि पृथ्वी छेदन करती हुई शिवजीके साथ पातालमें प्रवेश कर जाऊंगी। महादेवजी गङ्गाकी आन्तरिक इच्छाको जान कर पहलेहीसे सचेत हो गये। यथासमय गङ्गाजी स्वर्गसे शिवजीके मस्तक पर पतित हुईं। शिवजीके असाधारण कौशलसे उनकी धारा जटाके मध्यहीमें रुक गई, किसी प्रकार बाहर न जा सकी। भगीरथ गङ्गाजीको न देख कर पुनः तपस्या करने लगे। उनकी तपस्यासे सन्तुष्ट होकर गङ्गाको भूतपतिने छोड़ दिया और वह विन्दुसरोवरमें गिर गई। विन्दुसरोवरमें गिरनेसे गङ्गाकी सात धारायें हो गईं यथा ह्लादिनी, पावनी और नलिनी ये तीनों पूर्व ओर, वङ्क्षु, सीता और सिन्धु दूसरी तीन पर्वत, ग्राम, वन, उपवनादिको बहती हुई पश्चिमकी ओर और एक धारा भगीरथको बतलाई हुई राहसे चली। इसी कारण इनका नाम भागीरथी पड़ा। भागीरथीके समुद्रमें जा करके गिरनेसे भस्मीभूत सगरके वंशके पवित्र होकर स्वर्गको सिधारे। भगीरथकी इच्छा पूरी हुई। (रामायण आदि० ४२ स०, ४४ सर्ग)

गङ्गाका दूसरा नाम विष्णुपदी है। इसी नाम अथवा दूसरेही किसी कारणसे हो, बहुतोंका विश्वास है कि गङ्गा वैकुण्ठवासी भगवान् विष्णुके पदसे उत्पन्न हुई है। किन्तु विष्णुपुराणका पाठ करनेसे ऐसा मालूम पड़ता है

* कृत्तिवासी रामायणके मतसे देवता हिमालयके पास आकरके गिरि गङ्गाको ले गये। दासाको मेनकाने गङ्गाको न देख उनको शाप दिया।

* देवीभागवतके मतसे गङ्गाको धारण करनेके लिये बहु वर्ष तक महादेवको आराधना की।

कि आकाशमण्डलमें ध्रुवको अवलम्बन करके समस्त ज्योतिष्क मण्डल अवस्थान करता है। उसी ज्योतिष्क मण्डलमें सेव अवस्थित है। पौराणिकगण इसे ही विष्णु भगवानका तृतीय पद जैसा वर्णन करते हैं। (विष्णुपुराण (२ ८) सेवसे वृष्टि होती है और उसीसे गङ्गाकी उत्पत्ति है।

गङ्गाका और एक नाम जाह्नवी है। रामायण और विष्णुपुराणमें इनकी कथा इस प्रकार लिखी हुई है :— महाराज भगीरथ रथपर चढ़ कर आगे आगे चलने लगे। स्रोतस्वती गङ्गाने भी ग्राम, नगर, वन, उपवनादिको बहाते हुए उन्हींके पीछे पीछे प्रबलवेगसे गमन किया। महामुनि जह्नु अपने आश्रममें बैठकर एक यज्ञका आयोजन कर रहे थे। गङ्गाके जलसे यज्ञस्थल डूब गया, यज्ञमें विघ्न पड़ा। किन्तु मुनि तनिक भी न हटे, वरन क्रुद्ध हो कर गङ्गाको दबानेका विचार किया। सोच समझ करके अन्तमें वह गङ्गाको योगबलसे पान कर गये। देवता, गन्धर्व, मनुष्यादि सबके सब विस्मयापन्न हुए। गङ्गाके नहीं रहनेसे हम लोगोंकी कैसी दशा होगी इस प्रकार चिन्ताकर सभी घबरा उठे और मुनिसे गङ्गाको छोड़ देनेकी प्रार्थना करने लगे। तब मुनिने अपने कर्णरन्ध्र द्वारा गङ्गाजीको परित्याग किया। इसीसे गङ्गाका नाम जाह्नवी वा जह्नुसुता पड़ा। (रामायण १।४३ स:)

देवीभागवतमें किसी जगह लिखा है कि लक्ष्मी, सरस्वती, गङ्गा ये तीनों नारायणकी पत्नी हैं और वैकुण्ठवासी विष्णु भगवान्के निकट ही रहती थीं। एक दिन गङ्गा उत्सुकतासे बार बार विष्णु भगवान्की ओर दृष्टिपात करने लगीं। भगवान् भी उसे देख कर हंस पड़े, किन्तु सरस्वती इस पर बहुत चिढ़ीं। उन्होंने भगवान्को कुछ उलटी सीधी सुना दी। किन्तु भगवान् कुछ न बोल कर बाहर निकल गये। इधर गङ्गा और सरस्वतीमें कलह उत्पन्न हो गया। पद्मा मध्यस्थ बन लड़ाईको शान्त करने गईं। इसका फल उलटा हुआ। सरस्वतीने पद्माको ही पहले शाप दिया—"तुम नदी रूप धारण करके पापियोंके आवासस्थान मर्त्यलोकमें जाओ।" गङ्गासे स्थिर न रहा गया, वे बोल उठीं "पद्मा! जिस तरह सरस्वतीने विना दोषकेही आपको शाप दिया है, उसे भी नदी रूपमें मर्त्यलोक जाकर पापराशि ग्रहण करना पड़ेगा।" सरस्वती भी क्रुद्ध होकर गङ्गासे बोलीं "तुमको भी इसी तरह फल भोगना पड़ेगा।"

इसी समय विष्णु भगवान् आकर उपस्थित हुवे और कहने लगे "आओ! देवदुर्विपाकसे तुम भारतमें नदी बनो। देवी लक्ष्मी! तुम्हारा पूर्ण अंश वैकुण्ठमें वास करेगा और अर्धा अंश धर्मध्वज राजाके घरमें कन्यारूपमें जन्म लेगा। वहीं बादको तुलसी नामसे विख्यात होगा। दूसरे अंशमें पद्मावती नदी नामसे अवतीर्ण हो। गंगे! तुम भी विश्वपावनी सरित्के रूपमें अवतीर्ण हो। भगीरथ अति आराधना करके तुमको ले जावेंगे। वहां पर मेरा अंश समुद्र और मेरे अंशके अंशसे उत्पन्न शान्तनुराज तुम्हारे पति होंगे।" (देवीभा० ९।६०)

महाभारतीय दानधर्मके मतसे गङ्गाके गर्भसे १५० हाथ तक गङ्गातीर कहा जाता है। प्राण कण्ठगत अर्थात् अर्थके अभावसे क्षुधा और तृष्णासे कातर होने पर भी किसीका दान इस स्थान पर ग्रहण नहीं करना चाहिये। गङ्गाके किनारेसे दो कोस तक "क्षेत्र" कहलाता है। गङ्गाक्षेत्रमें बैठकर दान, जप या होम करनेसे असीम फल होता है। (स्कन्द) किसी किसी पुराणके मतमें भाद्र मासकी कृष्णचतुर्दशी तिथिको गङ्गाजल जितनी दूरतक प्लावित होता है, "गर्भ" और उसके दूसरे भागको तीर कहते हैं। (दानपर्व) गङ्गाके उद्देश्यसे जाने पर पारदार्य, परद्रव्यहरण, परद्रोह इत्यादि पाप विनष्ट होते हैं। गङ्गाके दर्शन करनेसे ज्ञान, ऐश्वर्य, आयु, प्रतिष्ठा, और सम्मान आदि प्राप्त होते हैं। गङ्गाजल स्पर्श करनेसे ब्रह्महत्या, गोहत्या, गुरुहत्या इत्यादि समस्त पाप छूट जाते हैं। सिंहको देखकर जिस तरह मृगगण भयसे विह्वल हो कर भागते हैं, उसी तरह गङ्गास्नाननिरत मनुष्यको देख कर यमके दूत भयभीत होकर चल देते हैं, उसको यमका कोई भय नहीं रहता। गङ्गामें अज्ञात स्नान करनेसे सर्व पाप नष्ट होते हैं, ज्ञानपूर्वक स्नान करे तो मुक्ति मिला करती है। श्रवणा नक्षत्रयुक्त द्वादशी पुष्यायुक्त अष्टमी और आर्द्रा नक्षत्रयुक्त चतुर्दशी तिथिमें गङ्गा स्नान करना प्रशस्त है। वैशाख, कार्त्तिक और माघ मासकी पूर्णिमा, माघ

महीनेकी अमावस्या, कृष्णपक्षीय अष्टमी तिथिको गङ्गा स्नान करनेसे प्रचुर फल होता है। चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण और व्यतीपातमें गङ्गास्नान करनेसे सहस्र गुण फल है। (ब्रह्मपुराण) गङ्गामृत्तिका सिर पर धारण करनेसे सूर्यसे भी अधिक तेजशाली हो सकते हैं। (कूर्मपुराण) गङ्गामें किसी रूप पुण्यकार्य करनेसे सहस्र गुण फल होता है। अश्व, गो, सुवर्ण, रथ घोड़ा और गजदान करनेसे जो फल मिलता है, गङ्गाजल दान करनेसे उससे सौ गुना अधिक फल है। गण्डूष मात्र गङ्गाजल पान करनेसे अश्वमेधयज्ञ करनेका फल होता है, स्वच्छन्दरूपसे पान करने पर मुक्तिलाभ है। जो मनुष्य सात रात अथवा तीन ही रात गङ्गा तीर पर वास करता है, उसको नरकका कष्ट भोगना नहीं पड़ता। तपस्या, यज्ञ, ब्रह्मचर्य और दान करनेसे जो सुख नहीं मिलता, केवल गङ्गातीरमें वास करने पर मनुष्य वही सुख अर्थात् मोक्ष पा सकता है। (ब्रह्मपुराण)। ६०००० विघ्न सर्वदा गङ्गाको घेरे रहते हैं। अभक्त अथवा कुकर्मी मनुष्य जब गङ्गाके तीरमें उपस्थित होते हैं तो उनके हृदयमें काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि रिपु आ करके भर जाते और गङ्गास्नान करने नहीं देते हैं। (भविष्य) मातृविक्रय तथा पितृविक्रयसे भी गङ्गाका दान ग्रहण करना निन्दनीय है। गङ्गाके भीतर कभी दान नहीं लेना चाहिये (ब्रह्मपुराण) जिसको गङ्गासे अधिक दूसरे तीर्थ में भक्ति है और जो गङ्गाको उतनी भक्ति नहीं करता उसको कठिन नरकयातनाका अनुभव करना पड़ता है। (भविष्य) ज्ञान पूर्वक गङ्गाके किनारे मृत्यु होने पर,मुक्ति होती है और अज्ञान मृत्यु स्वर्गप्रद है। मनुष्यके विषयमें क्या कहना है—कृमि, कीट, पतङ्ग, आदि जिस जन्तुका मृत्यु गङ्गामें होतो अथवा जो हवा उमड़ कर गङ्गामें भी गिर जाता, वह परमगति पाता है। (भविष्यपुराण) जिसका आधा शरीर मृत्यु कालको गङ्गाजलमें डूबा रहता, उसको भी पुन जन्म नहीं, ब्रह्मसायुज्य मिलता है। (स्कन्द) मनुष्योंकी जितनी हड्डियां गङ्गाजलमें रहतीं, उतने ही हजार वर्ष पर्यन्त उसका ब्रह्मलोकमें वास होता है। इसी कारण भारतीवासी मृत व्यक्तिकी अस्थि गङ्गामें डाल देते हैं। (कौर्मपुराण)

जिसका केश, रोम और नखादि भी गङ्गाजलमें निक्षिप्त होता, उसको सद्गति मिलती है। काशीखण्डमें गङ्गामाहात्म्य अत्यन्त सुन्दर रूपसे वर्णित है। उसके मतसे स्वर्ग, मर्त्य और पातालमें जितने तीर्थ हैं, सबसे गङ्गा तीर्थ प्रधान माना जाता है। ऐसा कोई पदार्थ ही नहीं है जिसके साथ गङ्गाको उपमा वा उपमेय भाव हो सके। समस्त याग, यज्ञ करनेसे जो फल होता है, गङ्गाके अकेले दर्शनसे उसका शतगुण फल मिल जाता है। ऐसा कोई भी पाप नहीं, जो गङ्गाजल स्पर्शसे विनष्ट न हो। ऐसा कौन अभीष्ट है जो गङ्गा स्नानसे पूर्ण न हो। शौच, आचमन, सेक, निर्माल्य, मलघर्षण, गात्रमर्दन, क्रीड़ा, दानग्रहण, अभक्ति, अन्य तीर्थोंके भक्ति वा प्रशंसा, विष्ठा, मूत्रपरित्याग और सन्तरण ये १३ कार्य गङ्गामें करना निषिद्ध है।

किसी पुराणके मतसे वैशाख मासकी तृतीया तिथिको ब्रह्मलोकसे हिमालय पहाड़ पर गङ्गा अवतरण हुई हैं। ब्रह्मपुराणके मतसे ज्येष्ठ मासके शुक्लपक्षकी दशमी तिथि मङ्गलवारको गङ्गा हिमालय पहाड़से पृथ्वी पर गिरीं। भीष्म और व्यास प्रभृति इनके विवरण दे देंगे।

पौराणिक मतसे विष्णु, गङ्गा और ग्राम्यदेवता, आदिका एक स्थितिकाल निरूपित है। आस्तिक हिन्दुओं का विश्वास है कि वह निर्दिष्ट समय व्यतीत होनेसे, विष्णु, गङ्गा आदि धरातल छोड़ कर देवलोक चले जायेंगे मनुष्योंकी दुर्दशाकी सीमा न रहेगी। देवीभागवतके मतसे कलियुगके पांच हजार वर्ष व्यतीत होने पर गङ्गा, सरस्वती और पद्मावतीका शाप मोचन होगा, ये तीनों अपनी २ मूर्तिको धारण कर विष्णुलोक चली जायगी। यह छोड़ कर विष्णुको एक और अनुमति है कि विष्णु लोक जाते समय काशी और वृन्दावन भिन्न दूसरे तीर्थ अपने साथ लेती जायगी। (देवीभागवत ९।८।२१)

ब्रह्मवैवर्तपुराणका मत है कि जब सरस्वतीने गङ्गाको वैकुण्ठ परित्याग करने और भारत पर अवतीर्ण होनेका शाप दिया, तो गङ्गाने रोते रुए अत्यन्त आकुल तासे विष्णु भगवान्‌के निकट शापमोचनकालनिर्णय करनेका अनुरोध किया। विष्णुने उन्हें अत्यन्त कातर देख कर कहा —

"अथ प्रभृति देवेशि ! कलेः पञ्च सहस्रकम् ।
'वर्ष' स्थितिस्ते भारत्याः शापेन भारतेभुवि ॥

देवेशि ! सरस्वतीके शापसे कलिके पांच हजार वर्ष पर्यन्त तुम्हें मर्त्यलोक भारतवर्षमें रहना होगा, उसके बाद फिर तुम मेरे निकट आवोगी। इसी प्रकार दूसरे दूसरे पुराणोंमें भी गङ्गाकी स्थितिके सम्बन्धमें लिखा है। इसीसे मालूम होता है कि वर्तमान कलिके पांच हजार वर्ष पर्यन्त गङ्गाकी स्थिति है; उसके बाद चली जावेंगी। वराहपुराणमें लिखा है—

"पृथिवी गंगाहीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ"

अन्तिम कलि अर्थात् प्रलयसे पूर्व कलिमें पृथिवी पर गङ्गा न रहेंगी। आधुनिक धर्ममीमांसक हिन्दू पंडित वराहपुराणके वचनके साथ दूसरे पुराणोंके वचनोंको मिलाकर ऐसी मीमांसा करते हैं कि अन्तिम कलिको गङ्गा चली जावेंगी, अभी नहीं। दार्शनिक भी कहते हैं कि प्रलयकालके पूर्व एक भयानक सूर्य उदय होगा और उसके तेजसे पृथ्वीका समस्त जल सूख जायगा पृथ्वीपर नद, नदी कुछ भी नहीं रहेगा।

सम्प्रति कालके भौगोलिकोंका मत है कि गङ्गा हिमालय पहाड़से निकली हुई है। हिमालयके शिमला नगरसे दक्षिण-पूर्व इसकी उत्पत्तिका स्थान है। वह गढ़वाल राज्यके अन्तर्गत अक्षा० ३४° ५६' ४" उ० और देशा० ७८° ६' ३०" पू०में अवस्थित है। हिमसे आवृत उसी स्थानको गङ्गोत्तरी कहते हैं। गङ्गोत्तरी समुद्रतलसे ८२०० हाथ ऊंचा है।

उस तुषारमण्डित गहरी खाईके चारों तरफ पत्थरका खण्ड और मृत्तिकाका अंश आधा कोस तक फैला हुवा है। यह स्रोत पर्वतके ऊपरी भागसे क्रमशः अवतरण करके एक गह्वरमें आ गिरा है। उसी गह्वरसे गङ्गा पृथ्वीपर उतरी हैं। इसीका नाम गोमुखी वा गङ्गोत्तरी है। इस स्थानसे ७७८ कोस पथ भ्रमण करके गङ्गा बङ्गोपसागरमें मिल गई है। तुषारमयी गङ्गोत्तरीके निकट गङ्गाका विस्तार १८ हाथसे अधिक नहीं होगी। इस जगह इसकी गहराई एक हाथसे भी कम है। क्रमशः नीचे आते आते दूसरी दूसरी नदियां मिल जानेसे इसका आयतन बढ़ता गया है। उत्तर-पश्चिमसे जाह्नवी और उसके बाद अलकनन्दा आकर मिली है। यहींसे स्नान देवप्रयाग तीर्थ कहा जाता है। उस जगहसे दक्षिण-पश्चिम हरिद्वार है। हरिद्वारसे देहरादून, शाहरान पुर, मुजफ़रनगर और बुलन्द शहर होती हुई फरुखाबादमें रामगङ्गा नामक नदी आकर गङ्गामें गिरी है। गङ्गाके उत्पत्तिस्थानसे ३३४ कोसकी दूरीपर इलाहाबादमें प्रयागतीर्थ है। इस जगह जमुना आकर गङ्गासे मिल गई। यही ३३४ कोस राह गङ्गाने संकीर्ण भावसे चल प्रयाग तीर्थमें विशाल विस्तृत रूप धारण किया है। प्रयागसे वाराणसी होते हुए बिहार आने पर पहले शोण नदी और पीछे गण्डकी और कौशिकी नदी इसमें पतित हुई है। तत्पश्चात् राजमहल होकर प्राचीन गौड़ नगरके भग्नावशेषको धोती हुई गङ्गा पूर्व मुखकी गई है। राजमहलसे दश कोस पूर्वमें इसकी एक शाखा निकलकर मुर्शिदाबाद, बहरामपुर, नदिया, कालना, हुगली, चन्दननगर और कलकत्ता होती हुई पश्चिम, दक्षिणकी ओर बङ्गोपसागरमें मिल गई है। यही शाखा गङ्गा या भागीरथी नामसे प्रसिद्ध है। मूल नदी सङ्गम स्थानसे पदमा नाम धारण कर पावना और गोआलन्द होती हुई गई है। गोआलन्दके निकट ब्रह्मपुत्रकी यमुना नामक शाखा आकर इसमें गिरी है। उसके बाद मूल नदीने ब्रह्मपुत्रके साथ मिल कर 'मेघना' नाम धारण किया है और नोआखालीके निकट समुद्रमें मिल गई है। अंगरेज लोग इस मूल नदीको Ganges और जो शाखा कलकत्ता होकर गई है, उसे हुगली कहते हैं। मोहानासे ४३० कोसकी दूरी पर यमुना, ३०३ की दूरी पर घर्घरा २४१ की दूरी पर गोमती २२२॥० कोस दूर शोण, २२५ कोस दूर गण्डकी, १८६॥० की दूरी पर रामगङ्गा, १६२ की दूरी पर कोशी, १२० का दूरी पर महानदी, ७० की दूरी पर कर्मनाशा, ११५ की दूरी पर यमुना, ४० की दूरी पर अलकनन्दा, २० की दूरी पर भीलङ्ग ये सब नदियां मूल गङ्गामें मिली हैं

अंगरेज जिसको हुगली नदी कहते है, हम लोग

उसे प्रकृत गङ्गा कहते हैं। जिस स्थानमें गंगा और पद्मा विभिन्न मुखको गई हैं, वहांसे गंगाका बद्वीप (डेल्टा) आरम्भ हुआ है। इस डेल्टामें गङ्गाने भिन्न भिन्न मुखसे समुद्रमें प्रवेश किया है। उसमें गङ्गा पश्चिम प्रान्तमें और मेघना पूर्व प्रान्तमें अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल २८०८० वर्गमील है। गङ्गाका मुहाना सागर-तीर्थसे पूर्व चट्टग्राम तक १२५ कोस होगा। इस स्थानके बीच ८ प्रधान शाखायें समुद्रमें पतित हुई हैं यथा गङ्गा मेघना, वा ब्रह्मपुत्र हरिणघाट पुस्कर, मुर्जाटा वा काग्ना बडपुंग, मलिञ्च, रायमंगल वा यमुना, हुगली। सिवा इसके अनेक शाखाएं भूखण्डमें प्रविष्ट हो गयी हैं और नदीमुख न होनेसे अपेक्षाकृत गभीर हैं। गङ्गाको प्रकृत लम्बाई सागरतीर्थसे ७५४॥ कोस तथा मेघनाके मुखसे ८४० कोस है। ग्रीष्मकालमें साधारणतः गंगाका विस्तार कहीं पर आध मील, कहीं पर एक मील और कहीं पर, दो मीलसे कुछ अधिक रहता है। समुदाय गङ्गा जिस स्थान पर अपना अधिकार जमाये हुए है, उसका क्षेत्रफल ३८९१०० वर्गमील है। वर्षाकालमें नदीका जल कितना ही बढ़ा करता है। समुद्रके निकटवर्ती प्रदेशमें ज्वार और भाटा होता है। समय समय जिस स्थानमें जितना जल बढ़ता, उसका परिमाण निम्नलिखित है।

	वर्षाकाल		ग्रीष्मकाल	
	फु०	इ०	फु०	इ०
इलाहाबाद	४५	६	२८	
वाराणसी	४५	०	३४	
कहलगांव	२८	६	२८	३
जैलंघी	२६	०	२५	६
कुमारखाली	२२	६	२२	
अग्रद्वीप	२३	८	२१	
कलकत्ता (भाटाके समय)	७		६	७
ढाका	१४			

हरिद्वारमें गङ्गाकी चौड़ाई बहुत कम है। वहां ७००० वाराणसीमें १८००० राजमहल सब समय २०७००० पर ज्वारके समय १८००००० घनफुट जल प्रति सेकेण्ड निकलता है। परीक्षा करके देखा गया है कि इलाहाबादसे वाराणसी तक १५५ कोस पर्यन्त प्रति कोस १ फुटके हिसाबसे निम्न हुआ है। वाराणसीसे कहलगांव तक प्रति कोस १० इञ्च, कहलगांवसे हुगली नदीके आरम्भ तक प्रति कोस ८ इञ्च वहांसे कलकत्ता तक प्रति कोस ८ इञ्च और कलकत्तासे समुद्र पर्यन्त २से ४ इञ्च तक जल नीचा पड़ गया है।

अन्यान्य नदियोंकी भांति गङ्गा अपने उत्पत्ति स्थानसे जितनी दूर गई हैं उनका वेग घटा है। प्रथम उनका वेग प्रस्तर खण्ड और मृत्तिकाको बहा कर ले जाता है। वेगकी न्यूनता और माध्याकर्षणके प्राबल्यसे प्रस्तरखण्ड और मृत्तिका तलदेश पर गिरता है। इसी कारण नदी जितना समुद्रके समीप पहुंचती है, गभीरता घटती है, बीचमें रेत पड़ जाती है। वर्षा समय उसके ऊपर रेत जम जाती है। इसी प्रकार रेत इतनी उठ आती कि नदी वहां तक नहीं पहुंच पाती, उसके पार्श्व होकर अपना राह बनाती और एक ओरकी राह तोड़ करके दूसरी ओर दिखाती है। इसी प्रकार नदीके मुखमें सागर वक्ष पर प्रकाण्ड भूखण्ड निर्मित होता है और डेल्टा कहलाता है। भूतत्त्वविद् अनुमान करते हैं, जिस स्थानमें गङ्गा पद्मासे स्वतन्त्र होकर प्रवाहित हुई हैं, उसी स्थानसे गङ्गाके डेल्टा आरम्भ हैं। उसी स्थानसे आजतक जहां समुद्र है समस्त प्रदेश पहले समुद्र ही था। वही समुद्र आजकल मनुष्योंके वासोपयोगी भूमि बन गया है। इस समस्त जनपदकी सृष्टि गङ्गाकी ही कृपाका फल है। हिमालय अञ्चलकी मट्टीसे उनका निर्माणकार्य सम्पन्न हुआ है। कलकत्तेमें नदीकी मृत्तिकाके २५० हाथ नीचे जीवकङ्काल काष्ठ, कोयला आदि निकलते हैं। प्राय ८६ वर्ष पहले गाजीपुरमें एक समय परीक्षा करके देखा गया कि वहां पर प्रति वर्ष गङ्गा ६३६८०००० टन मृत्तिका लाकर जमा करती हैं। एक टन (२७ मन १८ सेर) के बराबर है। इसीसे समझ पड़ता, कितनी मृत्तिका गंगासे प्रतिवर्ष बहती है। गंगाकी उत्पत्तिकाल से यह काम चला आता है। इसमें कितने स्थान पर कितनी नवीन भूमि निर्मित हुई, यह कौन वर्णन कर सकता है! गंगा जिस राहसे चली है उसका पार्श्वस्थ प्रदेश सम धिक उर्वरा है। गंगाका रेतीला जल दूसरा प्रवा-

हित होकर जमीनको उर्वरा बना देता है। अथच अन्यान्य नदियोंको तरह इसकी प्रबल बाढ़ ग्राम, नगर बहा करके मनुष्योंका सर्वनाश नहीं करती है। रेलवे होनेके पूर्व गंगा समस्त देशीय वाणिज्यके समुदय द्रव्यादि वहन करती थीं। रेलवे होने पर भी वह काम बिलकुल बन्द नहीं है। पहले युक्तप्रदेशका पण्यद्रव्य गंगापथसे ही समुद्रको जाता था। अब भी चावल, दाल, तीसी, सरसों आदि द्रव्य गंगा वक्षसे रेलमें रफ्तनी होता है।

अंगरेजोंके समयमें गंगासे कई एक नहरें निकाली गई हैं। वे नहर गंग (Ganges Canal) कहलाती है। गंगाकी नहरें प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त हैं—उत्तर (Upper) और निम्न (Lower)। गङ्गा तथा यमुनाके मध्यवर्ती प्रदेशको दोआब कहते हैं। १८३७-३८ ई० में इस दोआबमें एक भयानक दुर्भिक्ष हुआ था जिससे प्रजाकी अधिक हानि हुई रही। भविष्यत्में इस तरहका अकाल न पड़े और कृषिकार्यके लिये प्रचुर जल पाया जाय, इसके लिये मनुष्योंने नहरोंका होना परमावश्यक समझा।

१८४२ ई०में हरिद्वारके निकटसे नहर काटना आरम्भ हुवा। १८५४ ई०के ८वीं अप्रेलको यह काम सम्पूर्ण हो गया। हरिद्वारके उत्तर गणेशघाटमें यह नहर गंगासे निकल सहारनपुर, मुजफरनगर होती हुई फतेहगढ़ तक चली गई है। वहां फिर उसीसे एक शाखा निकाल पश्चिममुख होती हुई, मीरट लाई गई है। बेगमाबादके पास दक्षिण-पूर्वमुख बुलन्दशहर और अलीगढ़ होती हुई, अकबराबादमें आ यह दो शाखाओंमें विभक्त हो गई है। एक शाखा इटावा और दूसरी कानपुरको गई है। इस नहरकी लम्बाई २२२॥- कोस है। इसके बनानेमें २ कोटि २४ लाख २४ हजार रुपये व्यय हुये थे। इस खाड़ीके तैयार होने पर इंजिनियर कटली साहबके सम्मानार्थ तोप छोड़ी गई थी

गंगाकी दक्षिणी नहर भी उपरोक्त नहरसे बड़ी है। यह नहर नदरई स्थानमें काली नदी और एटाके पश्चिममें ईशास स्थान होकर गोपालपुर, कानपुर, शाखा और जेरा नामके स्थानमें इटावासे मिल गई है। तत्पश्चात् शिकोहाबाद पार होकर दक्षिण-पूर्वमें इष्ट इण्डियन रेलवेके साथ समान्तर भावमें जाकर कानपुर जिलाके दक्षिण शिकन्दरा और भगिनीपुर होती हुई यमुनामें मिली है

बिहारमें शोण और गङ्गाके बीच कुछ नहरें हैं। कलकत्ताके पूर्व दिशामें एक नहर गई है। इन नहरोंसे हम लोगोंको यथेष्ट लाभ है। जहां जलके अभावसे उपज नहीं होती वहां नहरों द्वारा कृषिकार्यमें सुविधायें होने लगी हैं। वृष्टि नहीं होने पर भी नहरका जल कृषिकार्यमें लाभ पहुंचाता है।

गंगाका माहात्म्य इसी तरह क्रमशः बढ़ा है। पृथ्वीके किसी नदीतीर पर उतने तीर्थस्थान नहीं हैं, जितने गंगाके किनारे देखे जाते हैं।

जिस स्थान पर गङ्गा समुद्रसे मिली है उसीका नाम गंगासागरसंगम है। अत्यन्त प्राचीन कालसे ही यह स्थान हिन्दुओंके अतिपवित्र तीर्थस्थान माना गया है। (भारत ३।८५ च: हरिवंश १०८ च.) किन्तु पहले इस सागरसंगमकी स्थितिके विषयमें बहुतोंका मतभेद रहा। भूतत्त्वविद् पण्डितोंका अनुमान है कि एक समय समुद्रका स्रोत राजमहल तक प्रवाहित हुआ था। ऐसी दशामें स्वीकार करना पड़ेगा कि, वर्तमान स्थानसे प्रायः १५० कोस उत्तरमें सागरसङ्गम था। २४ परगना, नदिया, यशोर वर्धमान प्रभृति जिला गंगा नदीके गर्भमें उत्पन्न हुए थे।

महाभारतके तीर्थयात्रापर्वाध्यायमें लिखा है कि "कौशिकी तीर्थ में (गंगा और कोशी नदीके संगम स्थान राजा युधिष्ठिरने पवित्र होकर क्रमशः सभी मन्दिरोंमें गये थे। उसके बाद उन्होंने पञ्चशत नदीयुक्त गंगासागर-संगम देखा और तब सागरके किनारे कलिङ्गदेश था।" (वनपर्व० ११३ अ०)

रघुवंशमें रघु राजाके दिग्विजय-वर्णनके पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि उस समय वङ्गदेशके पश्चिम भागमें गङ्गाजी बहती थी और इनके बीचमें कई एक बड़े बड़े द्वीप थे। (रघु ४।३५-३७)

सातवीं शताब्दीमें एनचुयाङ्ग कामरूपसे १०० कोस दक्षिणकी ओर समतट नामक स्थानमें गये थे। उनके वर्णनसे यह मालूम होता है कि वह स्थान वर्तमान ढाका जिला के उत्तरीय भागमें है और समुद्रके किनारे अवस्थित है।

वङ्गवासी जिसको आजकल गङ्गा कहते हैं उसीका प्रकृत नाम भागीरथी है। भौगोलिकके मतमें यह मूल गङ्गा नहीं है वरन् गङ्गाकी एक शाखामात्र है। गौड़नगरके दक्षिणमें गङ्गासे यह शाखा निकली हुई है। वर्तमानके मानचित्रसे देखा जाता है कि गौड़के दक्षिण हो कर पूर्व मुख होती हुई जो नदी पहले पद्मा कहलाती और पीछे कीर्तिनाशा कहला कर समुद्रमें मिल गई है, वही नदी आजकल प्रकृत गङ्गा नदी कहकर पुकारी जाती है। • ८ वर्ष पहले जिस स्थान हो कर गङ्गा बहती थी, आजकल वहां जल नहीं है। कुछ दिन पहले ठीक वही स्थान सागरसङ्गम था, आजकल वह स्थान भूभाग है।

२४ परगनामें इस तरहका परिवर्तन बहुत जगह देखा जाता है। आजकल जिस कालीघाट हो कर क्षुद्राकार आदिगङ्गा प्रवाहित होती है, किसी समय वह स्थान हो कर विस्तीर्ण भागीरथी बहती थी। आजकल कालीघाटके थोड़ा दक्षिण जानेसे बोध होता है कि वहां गङ्गाके गर्भके अतिरिक्त और कोई दूसरा चिह्न नहीं रह गया है। किन्तु दो सौ वर्ष पहले उस स्थान हो कर स्रोतस्वती गङ्गा बहती थी। समुद्रके साथ गङ्गाका संसर्ग था। बड़ी बड़ी नावें वहां होकर जाती आती थीं। कालीघाट कुछ दूर दक्षिण यद्यपि आदि गङ्गा अदृश्य हो गई है तथापि आजकल उस स्थानके रहनेवाले अपनेको गङ्गातीरवासी बतलाते हैं। गङ्गागर्भ कट जानेसे जो सब तालाब बन गये हैं, उन्हींके जलको गङ्गाजल समझ कर पूजादि सकल कार्यमें व्यवहार करते हैं।

आजकल आदिगङ्गा अर्थात् वङ्गदेशकी प्रकृत गङ्गा समुद्रसे मिली नहीं है। इस आदिगङ्गाके इसतरह अपूर्व परिवर्तन देख कर प्रसिद्ध स्मार्त रघुनन्दनने लिखा है—

"प्रवाहमध्ये [illegible]

[illegible]"

आजकल जहां गङ्गाका प्रवाह नहीं है वहां गङ्गाको अन्तःसलिला जैसा स्वीकार करनेमें कोई दोष नहीं है। नहीं तो वर्तमान समयमें गङ्गाका सागरमें जाना यह असिद्ध बोध होगा।

२ हिमवत् और मेनाकी बड़ी लड़की। ३ शान्तनुकी स्त्री और भीष्मकी माता या धर्मकी स्त्रियोंमेंसे एक। ४ आकाशगङ्गा। ५ पाताल गङ्गा। ६ नीलकण्ठकी स्त्री और शङ्करकी नानी। (क्षि० मु०) ७ नारायणका पुत्र जो बृहदारण्यकोपनिषद्की टीकाके रचयिता थे।

गङ्गाका (सं० स्त्री०) गङ्गा एव गङ्गा स्वार्थे कन टाप् आकारस्य विकल्पेन ह्रस्वत्वम् [illegible] गङ्गा।

गङ्गाकूट—विजयार्द्ध पर्वतके कूटों (मन्दिरों) मेंसे एक कूट।

गङ्गाक्षेत्र (क्लो० क्ली०) गङ्गाया क्षेत्र, ६ तत् पु०। गङ्गातीरसे दोनों पार्श्वकी दो कोस तककी जमीन।

"तीरात् [illegible] परितः क्षेत्रमुच्यते।" (स्कन्दपु०)

गङ्गाखेर—हैदराबादराज्यके परभनी जिलाकी एक जागीरका सदर। यह अक्षा० १८ ५८ उ० और देशा० ७६ ४५ पू० में गोदावरीतीर पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ५००७ होगी। यहां दो विद्यालय, एक स्थानीय डाकघर और एक सरकारी डाकघर तथा पुलिस इन्सपेक्टर और सब रजिष्ट्रारका आफिस है।

गङ्गागोविन्द सिंह—पाइकपाड़ा राजवंशके प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध वारेन हेष्टिंगसके दीवान। उनके पिताका नाम गौराङ्ग था। गङ्गागोविन्द उत्तरराढ़ीय कायस्थ समाजके मान्यगण्य कुलीन लक्ष्मीधरके वंशीय थे। वे १७६८ ई०के पहले अपने बड़े भाई राधागोविन्दसिंहके स्थलाभिषिक्त होने पर वङ्गदेशके नायब सूबादार महम्मद रेजा खांके अधीन कानूनगोका काम करते थे। महम्मद रेजा खांके पदच्युत होने पर उनकी भी नौकरी छूट गई थी। उसके बाद वह कलकत्ता आकर कार्यलाभकी आशासे रहने लगे। क्रमशः लाट हेष्टिंगसकी कृपादृष्टि उनपर पड़ी। बहुत थोड़े ही दिनोंमें कार्यदक्षता और चतुरता गुणके कारण वे हेष्टिंगसके दीवान हो गये। कोई कोई कहते हैं कि कान्त बाबूके यत्नसे गङ्गागोविन्द हेष्टिंगसके दीवान हुए थे।

दीवान होनेके बाद राजस्व विभागके समस्त कार्योंका भार उन्हींके ऊपर सौंपा गया। वे देशी मनुष्योंसे घूस लेने लगे। उन्हींके द्वारा बड़े लाट हेष्टिंगसको भी यथेष्ट घूस मिलने लगा। १७७५ ई०के पहले मई मासमें घूस लेनेके अपराधसे उनकी नौकरी छूट गई।

किन्तु शीघ्र ही उनका भाग्य फिर भी चमक उठा। मौनसन साहबके मृत्युके बाद हेष्टिंगसका एकाधिपत्य बढ़ गया और उनने फिर भी १७७६ ई०को आठवीं नवम्बरको गंगागोविन्दको दीवानके पद पर नियुक्त किया। इस समय गंगा गोविन्दकी ही चलो बनी थी। बड़े बड़े देशीय जमीन्दार तालुकदार और जमीन्दारके नायब गुमस्ता भेंट ले जाकर उनके निकट सर्वदा खड़े रहते थे। उस समय इस तरहका दशसाला बन्दोबस्त नहीं था, पांच ही वर्षका मियादी बन्दोबस्त रहा। इस तरह पूर्ण होने पर जिसके साथ नया बन्दोबस्त करनेकी इच्छा होती थी, गंगागोविन्द उसीके साथ कर देते थे। ऐसी उच्च क्षमता हाथमें पाकर वे जिस तरहका अत्याचार और स्वजातीयका जैसा अनिष्ट कर गये हैं उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। उन्हींके प्रबल प्रताप के समय दिनाजपुरके राजाका देहान्त हुवा था। उनके नाबालिग पुत्रका रक्षाभार गवर्णमेंटके हाथ रहा। गङ्गागोविन्दके यत्नसे देवीसिंह उनके राज्यके कार्यकर्त्ता बनाये गये। उस समय देवीसिंह दिनाजपुरराजकी कई एक जमीन्दारियोंका अन्यायसे दखल कर गंगा गोविन्दको भेंट देने लगे इस तरह बहुत थोड़े ही दिनोंमें गंगा गोविन्द बंगदेशमें एक मान्यगण्य और प्रसिद्ध व्यक्ति गिने जाने लगे। उनकी प्रभुता यहां तक बढ़ गई कि राजा कृष्णचन्द्र भी उनके भयसे कांपते थे।

१७८१ ई०को कलकत्तामें एक राजस्व-समिति (Committee of Revenue) स्थापित हुई। इस समयसे लार्डकानवालिसके आगमनकाल पर्यन्त राजस्व विभागमें गङ्गागोविन्दहीकी प्रधानता थी। उत्कोचप्रिय हेष्टिंगस बिना गङ्गागोविन्दकी अनुमतिसे कोई कार्य नहीं करते थे। उन्होंने नानाप्रकारके अन्याय पथ अवलम्बन कर प्रचुर धन उपार्जन किया। ऐसा सुन जाता है कि उन्होंने अपनी माताके श्राद्धमें लगभग बारह तेरह लाख रुपये व्यय किये थे। उस तरहका महाश्राद्ध बङ्गदेशमें और कभी भी नहीं हुआ था। उस श्राद्धमें बङ्गदेशके सभी राजे और प्रधान जमींदार उपस्थित थे तथा कृष्णनगराधिपति राजा शिवचन्द्र उनके घरमें भोजन करनेके लिये बाध्य किये गये थे। (कान्दी देखो)

हेष्टिंगस नौकरी छोड़कर स्वदेश लौट गये। गङ्गागोविन्द भी कर्मच्युत हुए। प्रसिद्ध वाग्मी एडमण्ड बार्क जिससमय विलायतको पार्लियामेन्ट-महासभा में हेष्टिंगसके विपक्ष वक्तृता देते थे, उस समय वे गंगागोविन्दकी खूब निन्दा करते थे। गङ्गागोविन्दने बहुतसे जमींदारोंका नाश भी किया और अन्तमें अच्छी सत्कीर्ति भी स्थापकर देहत्याग किया।

गङ्गाचिल्ली (सं० स्त्री०) गङ्गास्थिता चिल्ली। चिल्लविशेष, काला सिरवाला एक जलपक्षी, एक जल चिड़िया जिसका सिर काला होता। इसका पर्याय देवह', जलवक और जलकुक्कुड़ी है।

गङ्गाज (सं० पु०) गङ्गाया जायते, जन+ड। १ भीष्म. २ कार्तिकेय।

गङ्गाजमुनी (हिं० वि०) १ मिला हुवा, दो रंगा। २ सोने चांदी, पीतल तांबे दो धातुओंके सुनहले रुपहले तारोंका बना हुआ। ३ काला उजला, स्याह सफेद।

गङ्गाजल (सं० क्ली०) गङ्गाया जलं ६-तत्। १ गङ्गाका जल। २ एक कपड़ेका नाम जिसका रंग उजला और सूत महीन होता है।

गङ्गाजली (सं० स्त्री०) जल भरनेकी शीशी, वह शीशी जिसमें यात्री गङ्गाजल भरते हैं।

गङ्गाजली (हिं० पु०) मछली पकड़नेका जाल, जो रोहा घासका बना हुआ रहता है।

गङ्गाटेय (सं० पु०) गङ्गातटे याति पृषोदरादिवत् तकारलोपे साधुः। मत्स्यविशेष, एक तरहकी मछली जो चिड़ी मछली भी कहलाती है।

गङ्गातीर (सं० क्ली०) गङ्गायास्तीरं ६-तत्। गङ्गा गर्भसे १५० हाथ तककी जमीन।

"सार्द्धं हस्तशतं यावत् गर्भं तत्तीरमुच्यते।" (दायधर्म)

गङ्गादत्त (सं० पु०) गङ्गया दत्तः ३-तत्। १ भीष्म।

"मत्प्रसूतं विजानीहि गंगादत्तमिमं सुतम्। (भारत १।९८ अः)

२ एक प्राचीन संस्कृत कवि। ३ चातुर्वर्ण्य विचार नामक ग्रन्थप्रणेता।

गङ्गादयाल दुबे—हिन्दीके एक कवि। युक्तप्रदेशस्थ रायबरेलीके निसगर ग्राममें किसी कान्यकुब्ज ब्राह्मणके घर इनका जन्म हुआ। १८८३ ई०को यह जीवित थे।

गङ्गादास—१ छन्दोगोविन्द नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता। २ उक्त छन्दोगोविन्द नामक ग्रन्थप्रणेताका शिष्य गोपाल दासका लड़का, अच्युतचरित काव्य और छन्दोमञ्जरी नामक ग्रन्थ बनानेवाला। ३ वेदान्तदीपिकाके प्रणेता। ४ वाक्यपदी नामक व्याकरण रचयिता। ५ पोविरका पुत्र दूसरा नाम ज्ञानानन्द। इन्होंने संस्कृत भाषाको तिलकखण्डप्रशस्तिकी रचना की है। ६ हिन्दीके एक कवि। इनकी भक्तिरसविषयक कविता मिलती है।

"भजन बनत नाहीं मन चोखानो।
खानेको तो अच्छा भोजन और ठण्डा पानी॥
पानको गिलौरी चहिये और पीकदानी।
हाथी घोड़ा रथ चहिये और तख्त आसमानी॥
सेज तो चमकती चहिये रूपवती रानी।
किला तो मजबूत चहिये और महलानी॥
पूत तो सपूत चहिये कुलको निशानी।
कहै गङ्गादास दुनिया मायामें भुलानी॥"

७ दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्ता। इनकी रचा १६ पुस्तकोंमेंसे पञ्चक्षेत्रपाल पूजा, सुगन्धिदशम्युद्यापन, सम्मेदशिखर पूजा, सम्मेदविलास—ये पुस्तकें मिलती हैं।

गङ्गादित्य (सं० पु०) काशीमें विश्वेश्वरके दक्षिणस्थित आदित्यविशेष। इनके दर्शन करनेसे समस्त पाप-विनष्ट होते हैं।

"दृष्ट्वा गङ्गादित्यं तु मानवो विश्वे साद्विषि पियत" (काशीखण्ड ४१ अ०)

गङ्गाद्वार (सं० क्ली०) गङ्गाया भूम्यवतरणद्वार, ६ तत्। इसका दूसरा नाम मायापुरी और हरिद्वार नामसे प्रसिद्ध है। इसी स्थानसे गङ्गा भारतवर्षमें प्रविष्ट हुई है। किसीके मतसे इस स्थान पर दक्षयज्ञ होता था। ऋषिगण सर्वदा इस स्थान पर वास करते थे।

गङ्गाधर (सं० पु०) गङ्गां धरति, धृ, अच्। १ शिव सूर्यवंशीय भगीरथके प्रार्थना करने पर शिवजीने गङ्गाको मस्तक पर धारण किया था इस लिये इनका नाम गङ्गाधर पड़ा। २ एक प्राचीन कोषकार। ३ एक प्राचीन माध्यन्दिनीय शाखाध्यायी स्मार्त पण्डित रामाग्निहोत्रका पुत्र। इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। ४ काठकाह्निक नामक गृह्यसंग्रहकार। ५ द्वन्द्वप्रकाश नामक शब्देन्दुशेखरका टीकाकार। ६ एक उणादिवृत्तिकार। ७ आचारतिलक नामक स्मृतिसंग्रहकार। ८ चन्द्रमानतन्त्र नामक ज्योतिःशास्त्रकार। ९ तर्कदीपिकाका एक टीकाकार। १० कायस्थोत्पत्ति और चातुर्वर्ण्य विवरण नामका संस्कृत ग्रन्थकार। ११ तिथिनिर्णय और सर्वलिङ्ग। सन्न्यासनिर्णयप्रणेता और दायभागका एक टीकाकार। १२ न्यायकुतूहल और न्यायचन्द्रिकाप्रणेता। १३ निर्णयमञ्जरी नामक ग्रन्थकार। १४ एक विख्यात वैयाकरण, इन्होंने संस्कृत भाषामें व्याकरण परिभाषा, छन्दोदर्पण नामक छन्दोग्रन्थ और शब्दपाठकी रचना की है। १५ प्रतिष्ठाचिन्तामणि और प्रतिष्ठानिर्णय नामक ग्रन्थकार। १६ बदरिकामाहात्म्य संग्रहरचयिता। १७ योगरत्नावली प्रणेता। १८ भास्वतीका टीकाकार।

१९ रसपद्माकर नामक अलङ्कारशास्त्ररचयिता।

२० वसुमतीचित्रासन नामक संस्कृत काव्यकार।

२१ विधिरत्न नामक धर्मशास्त्रकार।

२२ विश्वेश्वरस्तुतिपारिजात नामक ग्रन्थकार।

२३ वेदान्तस्मृतिसारसंग्रह नामक दर्शनशास्त्र—रचयिता।

२४ विद्याश्रमरचित व्याकरणदीपका "व्याकरणप्रभा" नामको टीका बनानेवाला।

२५ 'शाकुनीप्रश्न' नामका एक शकुनशास्त्रप्रणेता।

२६ षोडशकर्मपद्धति और संस्कारभास्कर नामका संग्रहकार।

२७ सङ्गीतरत्नाकरका 'सङ्गीतसेतु' नामका टीकाकार।

२८ किसी नैयायिक पण्डित, इन्होंने सामग्रीवाद नामसे न्यायग्रन्थ प्रणयन किया है।

२९ सूर्यशतकका एक टीकाकार।

३० स्मार्त्तपदार्थसंग्रह और स्मृतिचिन्तामणि-रचयिता।

३१ डाहलराज कर्णकी सभाके एक कवि, विद्यापतिने इनकी कवित्वमें पराजय किया था।

३२ भैरव दैवज्ञका पुत्र, इन्होंने प्रश्नभैरव और मुहूर्त्तभैरव नामका ज्योतिःशास्त्रकी रचना की है।

३३ रामचन्द्रका पुत्र और याज्ञिकनारायणका भाई। १६०६ ई०से पहले स्तम्भतीर्थमें ये रहते थे। इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ बनाये हैं।

३४ शिवप्रसादका पुत्र, सेतुसंग्रह नामका मुग्धबोधका टीकाकार।

३५ एक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थकार ये वीरेश्वर महाड़कके पौत्र, मदाशिवके पुत्र और अद्वैतानन्द यतिके शिष्य थे। इन्होंने बहुतसी संस्कृत पुस्तकें बनाई हैं। जिनमेंसे कुछ निम्नलिखित हैं—आरामादिप्रतिष्ठापद्धति, गङ्गास्तोत्र, तर्कचन्द्रिका, तोथ काशिका, तैत्तिरीयसारार्थचन्द्रिका, ध्यानवल्लरी, नामकौमुदी, नारायणतत्त्ववाद, प्रपञ्चसारविवेक, भावसारविवेक, मणिकर्णिकास्तोत्र, मन्त्रवल्लरी, मन्त्रमहोदधिटीका, रामस्तुति, विष्णुसहस्रनाम, शारीरकसूत्रसारार्थचन्द्रिका।

३६ हिन्दी भाषाके एक कवि। इन्होंने 'बिहारी सतसई'को एक उपसतसैया नाम्नी टीका कुण्डलियो और दोहोंमें लिखी है। यह भजन आदि भी बनाते थे। यथा—

"रसना क्यों भजो हरिनाम।
या देहियाकी गर्व न कीजै ज्यों बादलकी घाम॥
खट रस भोजन स्वाद बतावे क्रोधी कपटी काम।
गंगाधरके चलतोंमो सोधे आतम राम॥"

३७ देवताचनविधिरचयिता। ३८ इनका दूसरा नाम लक्ष्मीधर है। ये जम्बुसर नगरवासी दिवाकरके पौत्र गोविन्दके पुत्र और विष्णुके कनिष्ठभ्राता थे। इन्होंने संस्कृत ग्रन्थ रचना की है।

गङ्गाधर कविराज—वङ्गदेशके एक असाधारण पण्डित। इन्होंने १७२० शताब्दके आषाढ़ कृष्ण पचीय अष्टमी तिथिमें यशोर जिलाके मागुरा ग्राममें जन्मग्रहण किया था। इनके पिताका नाम भवानीप्रसाद राय था। गङ्गाधर पांच ही वर्षकी अवस्थासे जन्मभूमिस्थ गोपीकान्त चक्रवर्तीके निकट विद्याध्ययन करते थे और दश वर्ष तक उन्हींसे शिक्षा लाभ करते रहे। चक्रवर्ती महाशय उस छात्रकी मेधा और स्वभाव-चरित्र देख कर विस्मित हो गये और भवानीप्रसादसे बोले, "गङ्गाधर एक कविराज और पण्डित होगा।" तत्पश्चात् गङ्गाधर अपने पितृव्यश्रेय नन्दकुमार सेनके निकट मुग्धबोध व्याकरणके बहुतसे अंश पाठ करने लगे और अवशिष्ट भाग माणिकचन्द्र विद्यासागरसे समाप्त किया। इसके बाद ये यशोरके वारुइखालो ग्रामनिवासी रामरत्नचूड़ामणिके निकट अभिधान, अलङ्कार, काव्य इत्यादि पढ़ने लगे। अठारह वर्षकी अवस्थामें ये राजशाही वेलवरिया ग्रामनिवासी रामकान्त सेनसे आयुर्वेदीय चरकादि ग्रन्थ पाठ करते थे। वे प्रत्येक दिन १० पृष्ठ पाठ लेते थे और उसे अभ्यास कर मनमें दृढ़ाङ्कित करनेके लिये तथा लिपिकार्यमें पटुता सम्पादनके लिये प्रतिदिन उन दश पृष्ठोंको लिपिबद्ध करते थे। वे रामकान्त अध्यापकके दूसरे शिष्योंको व्याकरण, अभिधान और साहित्यादिमें पाठ देते थे। इस समय उन्होंने मुग्धबोध व्याकरणकी एक टीका की थी।

यहां आयुर्वेदका पाठ समाप्त करके ये नाटोर नगरको चले गये उस समय इनका पिता कविराज भवानीप्रसाद राय नाटोर महाराजाके प्रधान चिकित्सक थे। नाटोर राजधानीमें उस वक्त लब्ध नामके प्रसिद्ध अध्यापक आये थे। उन्होंने गङ्गाधरकी बाल्यावस्थाकी लिखित टीका पढ़ कर भवानीप्रसादसे कहा कि आपने यह प्राचीन टीका कहां पाई? इस टीकाका तो प्रचार नहीं है। यह सुन कर भवानीप्रसाद कुछ मुसकुराये। इस पर अध्यापकको विरक्त होते देख उन्होंने हास्यका प्रकृत कारण प्रकाश किया। जब अध्यापकने जाना कि वह टीका उनके पुत्रका प्रणीत है तो वे अवाक् हो गये और गंगाधरको अनेक आशीर्वाद देने लगे। गङ्गाधर नाटोरमें अपने पिताके पास बहुत थोड़े दिन रहनेके बाद कलकत्ता चले गये। उस समय कलकत्ता अंगरेजोंके अनुकरणमें संलग्न था और पाश्चात्य डाक्टरीकी भरमार थी। इस लिये वहां इन्हें विद्यावर्धन तथा व्यवसाय विस्तारकी विशेष सुविधा दीख न पड़ी जब इन्होंने सुना कि पुरानी राजधानी मुर्शिदाबादमें दुर्दशाग्रस्त होने पर भी प्राचीनकालसे ही बहुत अध्यापकोंका वास है। संस्कृतकी चर्चा और आयुर्वेदोक्त चिकित्साका समादर प्रचुर है तो वे वहीं चले गये। उस समय उनकी अवस्था सिर्फ २१ वर्षकी थी।

गङ्गाधर उसी अल्पवयसमें प्रधान प्रधान चिकित्सक और अध्यापकके साथ वादानुवाद द्वारा अपना मत स्थापन कराते गये और अनेक तरहके कठिन रोगग्रस्तको आरोग्य करते हुए नाना स्थानोंमें उनकी ख्याति फैल गई।

इन्होंने बाल्यकालकी पाठावस्थामें मुग्धबोधकी जो टीका रची थी उसे देख कर नाटोरके एक प्रसिद्ध अध्यापकने उनकी अमित प्रशंसा की। उस टीकाकी श्लोकसंख्या दशसहस्र थी। इसके बाद बोपदेव गोस्वामी मुग्धबोध-व्याकरणके जितने अंशको अपूर्ण छोड़ गए थे, उसको इन्होंने पूर्ण किया और फिर सम्पूर्ण मुग्धबोधकी टीका की। व्याकरणमें इन दो टीकाओंसे इनकी बुद्धि, विद्या और अद्भुत कीर्ति और अधिक बढ़ गई।

उस समय इन्होंने दो महाकाव्य लिखे थे, एकका नाम "लोकालोकपुरुषीय' और दूसरेका नाम "दुर्ग-बधकाव्य' था।

बुद्धिमान् और मेधावी मनुष्य जिस ओर बुद्धि चलाया करते हैं उसी ओर वे पारदर्शिता और उन्नति प्रदर्शन में समर्थ हो सकते हैं। गङ्गाधर चित्रविद्याकी भी सेवा कर उसमें कृतकार्य हुवे थे। देवदेवीकी मूर्ति बनानेमें भी इनकी सुपटुता थी। इनका पिता दुर्गोत्सव करते थे। प्रतिमा निर्माताकी मृत्यु होनेके बाद गङ्गाधरने अपनेसे ही एक मूर्ति बनाई थी।

गङ्गाधरक्काथ (सं॰ पु॰) औषधविशेष। कण्टकशाक, अनार, जामुन, सिंघाड़ा, बेलगूठ, आम्र, मोथा और सोंठका क्वाथ तैयार करनेकी प्रणालीसे इनका क्वाथ करनेसे जलकी तरहके जो दस्त होते हैं वे भी मिट जाते हैं।

गङ्गाधरचूर्ण (सं॰ स्त्री॰) जीर्णातिसाररोगनाशक औषध विशेष, एक तरहकी दवा जिससे पुराना अतिसार रोग जाता रहता है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली—धायफूल, आम लकी, यक्षोधर, आकनादि, श्योनाक, यष्टिमधु, श्री बिल्व, अम्बु, और आम्रबीज, सोंठ, बिष, वाला लोध, कुटज प्रत्येकका समभाग लेकर अच्छी तरह चूर्ण करनेके बाद खिला देना चाहिये। इसीको गङ्गाधरचूर्ण कहते हैं। चावलके धोये हुए जलके साथ इसका सेवन करनेसे जीर्णातिसाररोग नाश होता है। (वैद्यक)

गङ्गाधरचक्रवर्ती—बङ्गदेशका एक स्मार्त पण्डित। इन्होंने व्यवहारतत्त्वभावार्थदीपिकाकी रचना की है।

गङ्गाधरदेव—उड़ीसाके एक राजा। उत्कल देखो।

गङ्गाधरनाथ—रससारसंग्रह नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गङ्गाधरभट्ट—१ विज्ञप्तिकौमुदी नामक जटापटलका टीकाकार। २ भाट्टचिन्तामणि नामक मीमांसाग्रन्थका टीकाकार। ३ कालरचित सप्तशतीका सप्तशतकभाव-लेशप्रकाशिका नामक टीकाकार।

गङ्गाधर यति—एक प्रसिद्ध वेदान्तिक। रामचन्द्र सरस्वतीके शिष्य सर्वज्ञ सरस्वतीके प्रशिष्य और योग वाशिष्ठतात्पर्य प्रकाश रचयिता आनन्दबोधेन्द्र सरस्वतीके गुरु। ये गङ्गाधर भिक्षु, गङ्गाधर सरस्वती अथवा गङ्गाधरेन्द्र यति नामसे विख्यात हैं। इन्होंने कई एक संस्कृतकी किताबें रचना की हैं। जिनमेंसे कुछ ये हैं —चन्द्रिकोद्धार नामक वेदान्तसिद्धान्तचन्द्रिका-की टीका, प्रणवकल्पप्रकाश, वेदान्तसिद्धान्तसञ्जरी और प्रकाश नामक उसकी टीका स्वाराज्यसिद्धि तथा मोक्ष नामकी उसकी टीका, सिद्धान्तसंग्रह और उसकी टीका, स्वाराज्यसिद्धि एवं कैवल्यकल्पद्रुम नामक उसकी टीका

गङ्गाधर वाजपेयी—अर्थदिकदशनसंग्रह और रसिकरञ्जनी नामके अलङ्कारशास्त्र रचयिता।

गङ्गाधर शर्मा—मुग्धबोधके एक प्रसिद्ध टीकाकार।

गङ्गाधर शास्त्री—कृष्णराज चम्पू के प्रणेता। इनकी कार्य दक्षता देख बरोदाके राज्य-परिचालक (Regent) और गायकवाड़के भाई फते सिंहने इनको अपना प्रधान कार्य-कारी बनाया। इनकी प्रखरबुद्धि और दक्षतासे सम्राट् को रेसीडेण्ट लेफ्टिनेण्ट कर्णेल वाकरने इन्हें बरोदाके प्रधान मन्त्रीके पदसे आभूषित किया। १८१४ ई॰में पेशवा बाजीराव पूनाके गायकवाड़ एजेण्टसे गड़बड़ी होनेके कारण वे ठीक ठीक हिसाब किताब देनेके लिये पूना गये। गायकवाड़ने पेशवाके चरित्र और विश्वास घातकतासे सन्दिग्ध हो गवर्णमेण्टको सचेत किया। गङ्गाधरके पूना पहुंचने पर पेशवाने आदर पूर्वक उनका सत्कार किया और कुछ दिन पूनामें रहनेके लिये अनु-

रोध किया। बाद १८१५ ई०के जुलाई सन्धिमें पेशवा गङ्गाधरको साथ लेकर तीर्थ यात्राके लिये पुरन्धरपुरको गये। वहां १४वीं जुलाईके सन्ध्या समय त्रिम्बकजी पेशवाके साथ मिलनेके लिये उन्हें विठोवाके मन्दिरमें ले गये आराधना करनेके बाद गंगाधर पेशवासे मिले इसके बाद जब वे दोनों अपने डेरे पर लौटे आरहे थे, तो रास्तेमें त्रिम्बकजीसे रखे हुए गुप्त हत्याकारियोंके हाथ इनकी मृत्यु हुई।

गङ्गाधर सरस्वती (गंगाधर यीत देखो)

गङ्गाधर सूनु—राघवभ्युदय नामक संस्कृत काव्यप्रणेता।

गङ्गाधरेन्द्र (गंगाधर यीत देखो)

गङ्गानदी—जैनमतानुसार जम्बूद्वीपकी गङ्गा, सिन्धु आदि चौदह नदियोंमेंसे एक नदी। यह नदी भारतक्षेत्रमें बहती हुई पूर्व समुद्रमें जा मिली है। इस नदीसे चौदह हजार शाखाएं निकली हैं; जो भारतक्षेत्रके तीन खण्डमें प्रवाहित हैं। (ता० सू० ३ अ०)

गङ्गापति—१ हिन्दी भाषाके एक धार्मिक कवि। १७१८ ई०को इनका अभ्युदय हुआ। इन्होंने विज्ञानविलास नामक ग्रन्थ बनाया है। उसमें विभिन्न भारतीय शास्त्रोक्त धर्मोंका सन्निवेश है और वेदान्तदर्शनकी प्रतिष्ठा की गयी है। गुरु और शिष्यके संवाद द्वारा यह धर्मोपदेश प्रदान करता है।

२ हिन्दीके कोई कवि। १८८७ ई०को इनका जन्म हुआ था।

गङ्गापत्री (सं० स्त्री०) गङ्गावत् पवित्रम् पत्रमस्याः, बहुव्री०। वृक्षविशेष, एक तरहका पेड़ जिसके पत्ते अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। इसका पर्याय—पत्री, सुगन्धा और गन्धपत्रिका है। इसका गुण कटु उष्ण, वातनाशक और व्रणका क्षतशोधनकारी है। (राजनि:)

गङ्गापथ (सं० पु०) गगन, आकाश।

गङ्गापाट (हिं० पु०) घोड़ेके तंगके नीचेकी भौंरी। बहुतोंका ख्याल है कि यदि वह भौंरी तंगसे बाहर हो जाय तो शुभ माना जाता और यदि तंगके नीचे पड़े तो अशुभ होता है।

गंगापुत्र (सं० पु०) गंगायाः पुत्रः, ६-तत्। १ भीष्म। २ कार्तिक। ३ वर्णसङ्कर जातिविशेष। इसे मुर्दाफरोश कहते हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराणके अनुसार यह जाति लेट जातीय पुरुषके औरससे और तीवर जातीय कन्याके गर्भसे पैदा हुई है।

"लेटात् तीवर कन्यायां गङ्गापुत्र इतिस्मृत." (ब्रह्मवैवर्त)।

इस जातिके लोग सर्वदा गंगा किनारे रहते और घाटों पर दान लेते हैं। इसी लिये ये गंगापुत्र कहे जाते हैं। ४ काशी प्रभृति स्थानोंमें गङ्गातीरपर रहनेवाला होन ब्राह्मण जब कोई क्रिया करनी होती है तो ये ही ब्राह्मण उस कार्यको करा देते हैं। इसी लिये गङ्गापुत्र कहलाये। ये तीर्थयात्रियोंको हमेशा बतलाया करते हैं कि किन स्थानोंमें कैसी २ क्रियायें करनी चाहिये। उस तीर्थ स्थान पर कोई यात्री विना गङ्गापुत्रको पूछे कोई धर्म कभी नहीं कर सकता है। गङ्गा स्नानके समय गङ्गापुत्र यात्रियोंके हाथमें जल और कुश देकर मन्त्र पढ़ाते हैं। इसके बाद वे स्नान करते हैं। स्नान करनेके बाद वे यात्रियोंके सिर पर चन्दन लगाते हैं। यात्री ब्राह्मणको यथाशक्ति कुछ द्रव्य देकर विदा करते हैं। काशीमें गङ्गाघाट पर सभी गंगापुत्रोंका अपना २ स्थान निर्दिष्ट किया हुआ है। दूसरे दूसरे ब्राह्मण भी गङ्गापुत्रके कार्य करते हैं। गङ्गापुत्र दूसरे ब्राह्मणोंकी अपेक्षा निम्न श्रेणीके गिने जाते हैं।

गङ्गापुर—१ राजपूतानाके अन्तर्गत जयपुर राज्यका एक नगर। इसकी जनसंख्या प्रायः ५८८० है।

२ राजपूतानाके जयपुर राज्यमें इसी नामके तहसील और निजामतका सदर। यह अक्षा० २६° २८´ उ० और देशा० ७६° ४४´ पू०, जयपुर शहरसे ७० मीलकी दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५१५५ है। यहां दो विद्यालय और एक अस्पताल है।

३ सारन जिलाके अन्तर्गत एक नगर। लोकसंख्या लगभग २६६६ है। ४ हैदराबादके औरंगाबाद जिलाका दक्षिण-पूर्वीय तालुक। भूपरिमाण ५१४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ५१४१३ है। इस तालुकमें १८० ग्राम लगते हैं जिनमेंसे १५ जागीर हैं। गंगापुर इसका मुख्य सदर है। तालुककी आमदनी प्रायः तीन लाख रुपये है।

५ युक्तप्रदेशमें बनारस जिलाका पूर्वीय तहसील।

यह अक्षा० २५° १०´ से २५° २४´ उत्तर और देशा० ८२° ४२ से ८३ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ११८ वर्गमील तथा जनसंख्या प्राय ८६७०३ है। इसमें २८० ग्राम लगते हैं लेकिन शहर एक भी नहीं है। तहसीलको आमदनो लगभग १२५०००) है। वरना नदी तीर पर अवस्थित होनेके कारण यहां उपज बहुत होता है।

गङ्गापूजा (सं० स्त्री०) विवाहके बादकी एक रोति। इसमें ग्रामकी स्त्रियां वर और वधूके साथ गीत गाती, किसी तालाव पर जाती हैं और ग्रामके देवताकी पूजा कर लौट आती हैं। इसी दिन दम्पतीके हाथोंसे विवाह-कगन खोला जाता है।

गङ्गाप्रसाद - हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्धकवि। साधारणतः इनको गङ्गकवि कहते है। १५३८ ई०को इनका जन्म हुआ। यह युक्तप्रदेशस्थ इटावा जिलेके इकनौरवासी एक ब्राह्मण थे और अकबर बादशाहका सभामें उपस्थित रहते थे। वीरबल खान् खानान् और दूसरोंसे इन्हें बहुतसा पुरस्कार मिला। परन्तु आईन अकबरीमें इनका उल्लेख नहीं।

२ युक्तप्रदेशस्थ सीतापुर जिलेके एक हिन्दी कवि। इन्हें भी गङ्गकवि हो कहा जाता है। १८२१ ई०को ब्राह्मणवंशमें इनका जन्म हुआ। अपने उत्कृष्ट काव्यके कारण इन्हें सुपौली ग्राम निष्कर मिला था। इन्होंने दूतीविलास नामक शृङ्गार रसकी पुस्तक रचना की।

गङ्गाप्राप्ति (सं० स्त्री०) गङ्गाया प्राप्तिः ६ तत्। १ गङ्गा-लाभ वा गङ्गामें जाना। आजकल गङ्गाप्राप्तिसे मृत्युका हो बोध होता है।

गङ्गाबाई—एक विख्यात महाराष्ट्र महिला। यह पेशवा नारायण रावको पत्नी रहीं। १७७३ ई० ३० अगस्तको कई एक सिपाहियोंने वेतन न मिलनेसे क्रोधमें उन्मत्त हो अष्टादश वर्षीय नारायण रावको मार डाला। लोगों को विश्वास है कि रघुनाथ राव और राघवाकी उत्तेज नासे हो उक्त काण्ड हुआ था। कोई कोई कहता कि रघुनाथको पत्नी आनन्द बाईके कौशलसे वह निष्ठुर कार्य किया गया। नारायण राव देखो। नारायण रावके मरने पर रघुनाथ राव पेशवा हो वहि शत्रुओंके साथ युद्धविग्रहमें व्यापृत हुए। उनके बहुतसे प्रधान व्यक्ति कई बहाने करके युद्धस्थलसे फिर लौट पड़े। सखाराम बापू, त्र्यम्बक राव मामा, नाना फड़नवीस, मरोबा फड़-नवीस, बजाबा पुरन्दर, आनन्द राव जीवाजी, हरिपन्थ फड़के आदिको ले करके फिर एक मन्त्रिसभा बनी थी। उसमें नाना फड़नवीस और हरिपन्थ फड़के प्रधान रहे। वह रघुनाथके विपक्ष थे। थोड़े दिनमें प्रकाश हुआ कि नारायण रावके मरनेसे पहले उनको पत्नी गङ्गाबाई गर्भ-वती हुई थीं। मन्त्रियोंने परामर्श करके उन्हें पुरन्दर भेजनेका प्रबन्ध किया, पीछेको जिसमें कोई उनका अनिष्ट न करे। १७७४ ई० ३० जनवरीको नाना फड़न वीस और हरिपन्थ फड़के इन्हें पुरन्दर ले गये। सदाशिव रावकी विधवा प्रभावती लोगोंमें श्रद्धास्पद रहीं। वह भी गङ्गाबाईके साथ भेजी गयीं। पुरन्दरका दुर्ग ११२२ हाथ ऊंचे एक पर्वत पर अवस्थित है। इसमें उन्हें पहुंचानेके नाना कारण थे। पूनाकी चारों ओर रघु-पक्षीय लोग थे। उनीसे विधवा गङ्गाबाई पर अनिष्ट-पातकी आशङ्का रही। इनके निकट कई एक सद्यप्रसूता रमणीको रख दिया गया। क्योंकि उनको यदि पुत्रसन्तान हो और स्तनसे यथेष्ट दुग्ध न निकले, तो इनके स्तन्य-दुग्धसे बालककी जीवनरक्षा होगी। फिर गङ्गाबाईके कन्या सन्तान होने पर चुपके चुपके अन्यका पुत्रसन्तान इनकी कन्याके साथ परिवर्तित कर दिया जावेगा। गङ्गाबाईके गर्भसे पुत्र सन्तान होने पर वही प्रकृत पेशवा ठहरेगा। ऐसा होने पर रघुनाथ रावकी क्षमता घट जावेगी। मन्त्री लोग इसी पुत्रकी आशा पर निर्भर करके गङ्गा बाईके नामसे पेशवाका काम चलाने लगे।

रघुनाथ राव उस समय कर्णाटमें थे। वहीं सब सवाद पा करके वह पूनाके अभिमुख चल पड़े। राह पर एक लड़ाईमें इनको जीत हुई। किन्तु यह पूनाके सामने न आ करके उत्तराभिमुख चले गये। १७७४ ई० १८ अप्रेलको इन्होंने सुना कि गङ्गाबाईको पुत्रसन्तान हुआ था। फिर यह मलवार चले गये। गङ्गाबाईका वही पुत्र ४० दिनका होने पर माधवराव नारायण या मधु राव नारायण नामसे अभिहित हो पेशवाके पद पर अभि-

यित हुआ। पीछेको इसीका नाम सवाई माधवराव रखा गया।

माधव राव जन्म समयको रामोसियोंके अत्याचारसे विषम उत्पीड़ित हुए। रामोसियोंके दलमें अश्वारोही सेना रही। वह वणिकवेशमें जा करके हैदराबाद और बरार लूटते थे। जेजूरीके दादाजी उनके अधिनायक रहे। उन्होंने किसी ब्राह्मणकन्याका धर्म बिगाड़ा था। उसी ब्राह्मणकन्याने पुरन्धरमें गंगाबाईके निकट अपनी अवस्था बतला करके कहा कि मेरे अपमानसे समस्त ब्राह्मणोंका अपमान हुआ था, यहां तक कि आपके सम्मानमें भी बट्टा लगा—जब मेरा धर्म ही चला गया, जीनेसे क्या मिलेगा। यही बात कह करके ब्राह्मणीने जोरसे अपनी जीभ खींच करके उखाड़ डाली। बातकी बातमें वह मर मिटी थी। गंगाबाई यह देख करके स्तम्भित हुईं। इन्होंने प्रतिज्ञा की कि दादाजी रामोसीके जीते जागते मैं जलग्रहण न करूंगी। मन्त्रियोंने उन्हें शान्त करनेकी चेष्टा की थी। परन्तु वह किसी प्रकार ठण्डी न पड़ीं। मन्त्रियोंने दादा जीको मार डालना ही ठहराया था। किसी विशेष प्रयोजन पड़नेके बहाने उन्हें बुला भेजा गया। दादाजीने अपने ही मुंह स्वीकार किया कि उन्होंने ११०० डाके डाले थे। जो हो, दादाजी अनतिविलम्ब निहत हुए।

उधर मन्त्रियोंमें मतवैषम्य पड़ गया। गंगाबाई नाना फड़नवीसको कुछ अधिक चाहती थीं। यह उन्हींके परामर्शके अनुसार चलता था। परन्तु मन्त्रियोंमें परस्पर मेल न रहा। गंगाबाई भी उसके लिये उत्कण्ठित हुईं। इनके विपक्षोंका कहना है कि (१७७७ ई० सितम्बर) फड़नवीसके साथ अवैध प्रणय रहनेसे उनके गर्भसञ्चार हुआ। इसी बातके पीछे खुलनेसे गङ्गाबाईने विषप्रयोगसे आत्महत्या कर डाली।

गङ्गावासी (सं० पु०) गंगाकिनारे वास करनेवाले, जो गंगाके किनारे रहते हों।

गङ्गाभट्ट—एक विख्यात स्मार्त पण्डित। इनके बनाये हुए आधान-पद्धति, आपस्तम्बप्रयोगसार, धर्मप्रदीप और समयनय नामक कई एक संस्कृत ग्रन्थ हैं।

गङ्गाभास्कर—शकुनावली नामक ग्रन्थप्रणेता।

गङ्गाम्भः (सं०, क्ली०) गंगाया अम्भः, जलम्, ६-तत्। गंगाजल, गंगाका पानी।

"दयशाद्यर्मत' कृत्वा क्त्तं गंगाम्भसाद्यम्।
सर्वं दहति गंगाम्भ... (...पुराण)

गङ्गाम्बु; (सं० क्ली०) गङ्गाजल।

गङ्गायात्रा (सं० स्त्री०) गङ्गामुद्दिश्य यात्रा १ मरणासन्न मनुष्यका गङ्गातीर मरनेके लिये जाना। २ सद्गतिके सद्गति प्राप्तिके लिये पञ्चवटी प्रभृति पवित्र स्थानोंमें जानेको भी गङ्गायात्रा कहते हैं।

गङ्गायात्रिक (सं० त्रि०) १ जो रोगीको गंगायात्रा कराता है, जो रोगीको मरनेके लिये गंगा घाट ले जाता है। २ योगादि उपलक्षमें गंगास्नानके लिये जाता है। (पु०) ३ गंगा देवीका उत्सव।

गङ्गायात्री (सं० त्रि०) जो गङ्गातीर जानेकी यात्रा करता हो, जो गङ्गा किनारे जानेके लिये तैयार हो।

गङ्गाराम—१ एक विख्यात संस्कृत ज्योतिर्विद्। इन्होंने भावफल, युद्धजयोत्सव और रत्नोद्योत नामक ज्योतिर्ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। २ न्यायकुतूहल नामक न्यायग्रन्थ रचनेवाला। ३ भक्तिरसाब्धिकणिका नामक ग्रन्थप्रणेता। ४ गोवर्द्धनसप्तशतीका टीकाकार। ५ बुंदेलखण्डके एक हिन्दी कवि। इनका जन्म १८३७ ई०को हुआ था। ६ तोतेका प्यारका नाम।

गङ्गाराम जड़िन्—एक विख्यात नैयायिक। नारायणके पुत्र और नीलकण्ठके शिष्य। इन्होंने तर्कामृतचषक और उसकी टीका, दिनकरीखण्डन, नीकारसतरङ्गिणीव्याख्या, रसमीमांसा और उसकी टीकाका प्रणयन किया है।

गङ्गारामदास—एक विख्यात कविराज और भवानीदास कविराजका शिष्य। इन्होंने संस्कृत भाषामें शरीरविनिश्चयाधिकार नामक वैद्यक ग्रन्थकी रचना की है।

गङ्गारी—ब्राह्मणजाति भेद। यह लोग पहाड़ी होते और गङ्गाके तट पर रहते हैं। कहते हैं कि सारोला ब्राह्मण नीच कुलमें विवाह कर लेनेसे गङ्गारी कहलाने लगते हैं। इनका एक भेद गङ्गारी गैरोला और दूसरा सारोला गङ्गारी है। विद्वानोंके मतानुसार अलकनन्दाकी उस ओर चारों वर्ण गङ्गारी होते हैं। इनकी कई पदवियां हैं। घिड़ियल वंसमर्दनी और उनयाल महिषमर्दनी, कालिका, राजराजेश्वरी आदि देवियोंकी पूजा करते हैं।

गङ्गाल (हि० पु०) पानी रखनेका बड़ा बरतन, कण्डाला।

गङ्गाला (हि० पु०) गङ्गाका चढ़ाव पहुंचने तकको जमीन कछार।

गङ्गालाभ (स० पु०) गङ्गाया लाभ प्राप्ति, ६ तत्। गङ्गाकी प्राप्ति, मृत्यु, गङ्गागर्भमें पर ज्ञानपूर्वक प्राणत्याग।

गङ्गालहरी (स० स्त्री०) १ गगाया लहरी, ६ तत्। गंगाकी तरंग, गंगाकी लहर। २ प्रसिद्ध पण्डित जगन्नाथ तर्कपञ्चाननका बनाया गंगास्तव।

गङ्गावंश—गाङ्गवंश देखो।

गङ्गावतार (स० पु०) गंगाया अवतार ब्रह्मलोकाद् भूमौ पतनमत्र बहुव्री०। १ तीर्थविशेष, गंगाद्वार। २ गंगाया अवतार, ६-तत्। २ ब्रह्मलोकसे पृथ्वी पर गंगाका आगमन।

"भगीरथ इव ह्रद गङ्गावतार" (का म्बरी)

गङ्गावती हैदराबादमें रायपुर जिलाके इसी नामके तालुकका एक शहर। यह अक्षा० १५ २६´ उ० और देशा० ७६ ३२´ पू० पर आनगुण्डिसे पांच मील उत्तरमें अवस्थित है। शहरसे दो मील पूर्व तुगभद्रा नदी प्रवाहित है। लोकसंख्या प्राय ६२४५ है। यहां एक विद्यालय, एक अस्पताल, एक डाकघर और प्राचीन मन्दिर है। प्रति रविवारको बाजार लगता है।

गङ्गावाली—बम्बई प्रान्तीय उत्तर कनाडा जिलाकी गंगावाली नदीका सुरक्षाश्रित एक बन्दर। यह अक्षा० १४ २६´ उ० और देशा० ७४ २´ पू० पर अवस्थित और अनकोलसे ५ मील उत्तरमें पड़ता है। यहांकी लोकसंख्या लगभग १००० है। प्रतिवर्ष इस बन्दरसे २००००) रुपकी चीजें दूर दूर देशमें भेजी जातीं और ४००० रुपयेकी चीजें यहां उतरती हैं। यहां एक सुन्दर मन्दिर है जिसमें शिवकी स्त्री गङ्गाजीकी मूर्ति स्थापित हैं प्रतिवर्ष आश्विन महीनेकी अष्टमी तिथिमें भिन्न भिन्न जगहके मनुष्य मन्दिरके सामनेकी नदीमें स्नान करनेके लिये आते हैं। मन्दिरके पासही कामेश्वर नामक एक लिङ्ग है जो विश्वकर्मासे स्थापित हुआ कहा जाता है।

गङ्गासागर (स० पु०) गङ्गया सम्गत -सागर मध्यप०। वह स्थान जहां गङ्गा सागरसे मिलती है। पौष संक्रान्तिके दिन बहुत यात्री यहां इकट्ठे होते हैं। इस स्थान पर दान ध्यान करनेसे अनेक फल प्राप्त होते हैं। इसके निकट एक कपिलाश्रम है। (मत्स्यपु० २२।११, ब्रह्मोत्तरख० १० गंगा और सागरसङ्गम देखो।

गङ्गासुत (स० पु०) गङ्गाया सुतः, ६-तत्। १ भीष्म। २ कार्तिकेय।

गङ्गास्नान (स० क्ली०) गङ्गायाम स्नानम ७ तत्। गङ्गामें स्नान करनेकी क्रिया।

गङ्गास्नायी (४० त्रि०) गङ्गायाम् स्नाति स्ना णिनि। जो मनुष्य गंगास्नान करता है, गंगास्नान करनेवाला।

गङ्गाह्रद (स० पु०) गंगाया, ह्रद इव। १ भारत प्रसिद्ध स्वस्तिपुरका एक कूप। इस कूपमें सदा तीन क्रोड़ तीर्थ अवस्थान करते हैं। इसमें स्नान करनेसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है। २ कोटितीर्थके अन्तर्गत एक तीर्थ ब्रह्मचर्य अवलम्बन कर इस तीर्थमें स्नान करनेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल होता है। (भारत ३।८३ अ०) गङ्गायाह्रद, ६ तत्। गंगाका कूप।

गङ्गिका (स० स्त्री०) गङ्गा स्वार्थे कन्-टाप् इत्वञ्च। गङ्गा।

गङ्गिरु—युक्तप्रदेशमें मुजफ्फरनगर जिलाका एक नगर। यह अक्षा० २९ १८´ ६˝ उ० और देशा० ७७ १५´ ३˝ पू० पर अवस्थित है। यह नगर अत्यन्त प्राचीन है। ईंटोंके बने हुए घरोंका भग्नावशेष अवतक भी पड़ा हुआ है। नगरके पूर्व हो कर एक नहर गई है। यहांकी जनसंख्या प्राय ६ हजार है।

गङ्गुक (स० पु०) कगूक पृषोदरादिवत् निपातने साधु। धान्यविशेष, कौनी धान। (सुश्रुत सू० २०४)

गङ्गेटी (हि० स्त्री०) दवाके काममें लानेकी एक बूटी। इसके सेवन करनेसे फोड़ा नष्ट जाती है और मल मूत्र आसानीसे उतरता है।

गङ्गेरन (हि० स्त्री०) औषधविशेष। इस दवाईके पौधेका आकार महदेई पौधेके जैसा होता है। सिर्फ दोनोंमें इतना ही विभिन्नता है कि गङ्गेरनके पत्ते बहुत मोटे और दो अनीवाले होते हैं। इसका फूल गुलाबी रंगका होता है और फल भी महदेईके फलसे कुछ बड़ा होता है। इसके फल पकने पर पांच हिस्सोंमें बट जाते हैं। इसका पौधा मूत्रकृच्छ्र, क्षत और शोथरोग, खुजली, कुष्ठ

आदिके काममें आता है। गंगेरन दो प्रकारकी होती है एक छोटी दूसरी बड़ी। बड़ी अम्ल मधुर, त्रिदोष-नाशक तथा दाह और ज्वरको दूर करती है।

गङ्गेरवा (हिं॰ पु॰) एक तरहका पेड़ जो पहाड़ पर पाया जाता है। इसके फल आँवलेकी तरह छोटे होते हैं। इसका पेड़ दवाईके काममें आता है। वैद्यकमें इस पेड़का फल कफ-वात-नाशक, पित्तकारक, भारी, तथा गरम माना जाता है। इसके फल खट्टे और मीठे होते हैं।

गङ्गेश—एक असाधारण नैयायिक। यह गंगेशोपाध्याय नामसे विख्यात हैं। इनका दूसरा नाम गंगेश्वर था। इन्होंने तत्त्वचिन्तामणि नामक प्रसिद्ध न्यायग्रन्थ लिखा है।

नवद्वीपके कोई कोई नैयायिक कहते हैं कि वंगदेशमें अति दरिद्र ब्राह्मणके घर उन्होंने जन्मग्रहण किया था। बाल्यकालको गंगेशके पिताने उनको लिखना पढ़ना सिखानेके लिये बड़ी चेष्टा की किन्तु इससे उनको कुछ लाभ न हुआ। पिताने नितान्त दुःखित हो गंगेशको उनके मातुलालय भेजा था। गंगेशके मामा एक अच्छे से पण्डित रहे। इनके अनेक छात्र थे। मातुल और इनके छात्र बहुत चेष्टा करने पर भी उन्हें कोई व्याकरण पढ़ा न सके। इससे सबने उनके लिखने पढ़नेकी आशा एक प्रकार परित्याग की थी। गंगेश मामानेमें सहाध्यायियोंका हुक्का भर करके अति दीन भावसे कालयापन करने लगे किसी दिन रातको एक छात्रने जा गङ्गेशको बहुत पुकारके उठाया और तम्बाकू भरनेका हुक्म लगाया था। उन्होंने भयसे आंखें मलते मलते चिलम चढ़ायी, किन्तु उस पर रखनेको आग न पायी। मातुलालयके सम्मुख एक विस्तीर्ण मैदान था। इसी घोरा रजनीको उस प्रान्तरमें आग जलती थी। छात्रने कितनी ही धमकी दे करके उस मैदानसे गङ्गेशको आग लेने भेजा था। गंगेश भयसे रोते रोते आग लेने गये। किन्तु यहां जा देखा, उनकी चेतनता उड़ती बनी। किसी मृतदेह पर बैठा कोई योगी शवसाधना कर रहा था। गंगेश योगीके पद पर विलुण्ठित हुए। इसने गंगेशके मुखसे उनके आनेका कारण और दुरवस्थाकी कथा सुनी थी। योगी उन्हें अपने साथ ले करके चलता हुआ। इसीके अनुग्रहसे गंगेश थोड़े दिनोंमें बहुत कुछ सीख गये।

इधर सब लोगोंने समझा कि गङ्गेश फिर इहजगत्में न थे, उन्हें भूतोंने खा डाला। परन्तु कुछ दिनों बाद वह एकाएक ममानेमें जा पहुंचे। उनको देख करके सब लोग चकित हो गये। किन्तु उन्होंने किसीसे कोई बात बतलायी न थी। मामाने उन्हें गोरू कहके गाली दे डाली। गङ्गेशने इसके उत्तरमें कहा—

"किं गवि गोत्वं किमगवि गोत्वं यदि गवि गोत्वं मयि नहि तत्त्वम्।
अगवि च गोत्वं यदि भवदिष्टं भवति भवत्यपि सम्प्रति गोत्वम्॥"

गोत्व यदि गोमें होता, तो मैं वह नहीं हूं। फिर यदि गोभिन्नमें गोत्व सम्भव है, तो वह बात इस समय सब पर लागू हो सकती है।

उत्तर सुन करके मातुल अवाक् रह गये! उसी दिनसे गङ्गेश "चूड़ामणि" जैसे प्रसिद्ध हैं।

उपर्युक्त जनश्रुति कुछ भी सत्य जैसी नहीं समझ पड़ती। यह वङ्गदेशवासी नहीं थे। जिस समय वङ्गके नवद्वीपमें न्यायका उत्कर्ष न था और जब वासुदेव सार्वभौम तथा उनके गुरु पक्षधर मिश्र आविर्भूत न हुए थे, उससे भी बहुत पहले गङ्गेशउपाध्यायने जन्मग्रहण किया था। यह भी निःसन्देह बतलानेका उपाय नहीं कि वह मिथिलावासी रहे। परन्तु गङ्गेशका ग्रन्थ पढ़नेसे इन्हें नव्यन्यायका जन्मदाता कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं आती।

इनकी अक्षयकीर्ति तत्त्वचिन्तामणि है। उसको "न्यायतत्त्वचिन्तामणि" "चिन्तामणि" और "मणि" भी कहते हैं। यह महान्यायग्रन्थ चार खण्डोंमें विभक्त है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्दखण्ड। इन्होंने प्रत्यक्ष खण्डमें शिवादित्यमिश्र और टीकाकार वाचस्पतिका मत उद्धृत किया है।

तत्त्वचिन्तामणिकी भांति विस्तृत और बहुसंख्यक टीकाएं किसी न्यायग्रन्थकी नहीं हैं। पहले पक्षधर मिश्र, फिर उनके शिष्य रुचिदत्तने चिन्तामणिकी टीका रचना की। एतद्भिन्न वासुदेव सार्वभौम, रघुनाथ शिरोमणि, गंगाधर, जगदीश, मथुरानाथ, गोकुलनाथ, भवानन्द, शशधर, शीतिकण्ठ, हरिदास, प्रगल्भ, विश्वनाथ, विष्णुपति, रघुदेव, प्रकाशधर, चन्द्रनारायण, महेश्वर, हनुमान् प्रभृति प्रधान प्रधान नैयायिकोंको रचित अनेक

टोकाए भी मिलती हैं। फिर इन टोकाओंको शत शत टीका टिप्पणियां हैं। भाष्य देखो।

गङ्गेश उपाध्यायके पुत्रका नाम वर्धमान उपाध्याय है। यह भी एक अद्वितीय नैयायिक थे। वर्धमान उपाध्याय देखो।

२ रामार्याशतक नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता।

गङ्गेशदोचित—तर्कभाषाके एक टोकाकार।

गङ्गेशमिश्र—चतुर्वर्गचिन्तामणि नामक वेदान्तरचयिता।

गङ्गेशमिश्र उपाध्याय—सुमनोरमा नामक संस्कृत व्याकरण रचयिता।

गङ्गेश्वर, गणेश देखो।

गङ्गैकोण्डपुरम्—मन्द्राज प्रेसिडेन्सिके त्रिचिनापल्ली जिलाका उदेयारपालयम् तालुकका एक ग्राम। यह अचा० ११ १२ उ० और देशा० ७९ २८ पू० पर अवस्थित है। यह तालुकके प्रधान सदर जैयमकोंड सोलापुरसे ६ मोल पूर्व में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय २७०२ है। पूर्व्व समय यह एक शहर था जो जिलामें एक प्रसिद्ध स्थान गिना जाता था। प्रवाद है कि जब वाणासुरको गङ्गाजल न मिला तब उसने शिवजीकी तपस्या की थी। महादेवने उसको तपस्यासे सन्तुष्ट हो कर उक्त स्थानके पास ही एक कूपसे गङ्गा बहा दी और इस तरह दैत्य वाणासुरने उसमें स्नान कर मोक्ष पाया था। गङ्गैकोण्डचोल व प्रथम राजेन्द्र चोलने यह शहर स्थापित किया, इसी कारण उन्हींके नाम पर शहरका नामकरण हुआ।

प्राचीनकाल इस ग्राममें एक प्रसिद्ध मन्दिर था जिसका ध्वंसावशेष आज लौं विद्यमान है। मन्दिर बहुत ऊंची दीवारसे आवेष्टित है। मन्दिरके प्रांगणमें एक विशाल विमान है जो बहुत दूरसे दीख पड़ता है, क्योंकि इसकी ऊंचाई लगभग १७४ फीट होगी। उक्त विमानके निम्न भागमें उत्कीर्ण बहुतसे शिलालिपि हैं। मन्दिरमें सत्ताईस फुट गहराईका एक सुन्दर कूप है और जिसके ऊपर सपत्न सर्पोंकी बहुतसी मूर्तियां लगी हैं। कूपमें प्रवेश करनेकी सीढ़ी दी हुई हैं। मन्दिरके बाहर १६ मील विस्तृत एक तड़ाग या ह्रद है जो पोनेरी नामसे प्रसिद्ध है। बहुत वर्षोंसे यह तालाव नष्ट हो गया है और इसकी पूर्णश्री जाती रही है।

इस ग्रामके चारों ओर प्राचीन मन्दिरोंके ध्वंसावशेष आज लौं विद्यमान हैं।

गङ्गोत्तम नरोत्तम—रासपञ्चाध्यायिका पदमरमो नामक टोकाकार।

गङ्गोत्तरी—युक्तप्रदेशमें टेहरी राज्यका एक पुण्यस्थान। यह अचा० ३१ उ० और देशा० ७८ ५७ पू० पर अवस्थित है। इस स्थानमें पहाड़के ऊपर गङ्गाके दक्षिण तट पर गङ्गादेवीका मन्दिर है। सैकड़ों तीर्थयात्री भागीरथीकी मूर्ति दर्शन करनेके लिये आते हैं। हिन्दुओंका विश्वास है कि इसीस्थानसे गङ्गा गोमुखी हो कर भारतवर्ष में प्रविष्ट हुई हैं। यह हिन्दुओंका महापुण्यप्रद स्थान है। सम्प्रतिकाल देवीमन्दिर समुद्रतलसे १८०७८ हाथ ऊंचा है। गङ्गा देखो।

गङ्गोझ्झ (सं० क्लो०) गङ्गया उज्झ्यते, उज्झ कर्मणि घञ्। गङ्गाप्रवाहशून्य अनादि।

गङ्गोदक (सं० पु०) गङ्गाजल, गङ्गाका पानी।

गङ्गोद्भेद (सं० पु०) गङ्गाया उद्भेद प्रथम प्रकाशो यत्र बहुव्री०। तीर्थविशेष। इस स्थानमें पितृदेवताका तर्पण करनेसे वाजपेय यज्ञ करनेका फल होता है और मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है।

"गङ्गोद्भेदं समासाद्य तर्पयेत् पितृदेवता।
वाजपेयमवाप्नोति ब्रह्मभूतो भवेत् सदा" ॥ (भारत ८४।६५)

गङ्गोल (सं० पु०) गोमेदक नामक मणि।

गङ्गोह—युक्तप्रदेशमें सहारनपुर जिलाके नकुर तहसीलका एक शहर। यह अचा० २९ ४७ उ० और देशा० ७७ १७ पू०में अवस्थित है। गङ्गोह परगणामें यह एक मशहूर शहर है। लोकसंख्या प्राय १२८७१ है जिनमेंसे ५७४१ हिन्दू और ७१३२ मुसलमान हैं। सिपाही विद्रोहके समय राजा फतुआके अधीन गुजरोंने इस शहर पर आक्रमण किया था, लेकिन मिष्टर रोबर्टसन (Mr H D Robertson) और लेफटिनेण्ट बोसरागोन (Lieutenant Bo sragen) ने उन पर धावा कर १८५७ ई०के जून मासमें पूर्णरूपसे हराया। यहां तीन प्राचीन मसजिद हैं जिनमेंसे दो अकबर और जहांगीरने निर्माण की थीं। मसजिदके अलावे एक विद्यालय और एक अस्पताल है। यहांकी वार्षिक आय प्राय ३००० रुपये है।

कठिन है। इसी लिये परामर्श अपने आप उतना दिया है—कहीं भी सब लक्षणवाले हाथी देख नहीं पड़ते, अतएव कई प्रधान लक्षणोंसे ही भला बुरा निर्णय कर लेना चाहिये। अनावश्यक समझ करके सब छोटे लक्षणोंका उल्लेख नहीं किया, कई प्रधान प्रधान लक्षणोंको ही लिख दिया है।

हाथीकी सूंड पूंछसे छोटी अथवा पूंछ जैसा, बहुत लम्बी, छोटी, बहुत मोटी, रूखी, व्रणयुक्त या छिद्र अङ्गुलियुक्त होना बुरा है, इससे विपरीत पड़ने पर अच्छा समझना चाहिये। सूंड पूंछको बराबर, छोटी या बहुत बड़ी रहनेसे दुःखप्रद, छिद्र लगनेसे रोगकर और बहुत मोटी होने पर अर्थनाशक है।

हाथीके दोनों मसूड़े रोमहीन, बहुत मोटे, असमान और ढीले रहनेसे प्रभुका अमङ्गल और दण्डदार, सुलक्षणावह तथा कुछ उठे होनेसे स्वामीकी समृद्धि होती है।

हाथीके मुंहको दोनों ओर जो दो दांत निकलते, उन्हींको यहां गजदन्त कह सकते हैं। यही दोनों गजदन्त एक दूसरेसे छोटे बड़े, सङ्कीर्ण, उठे हुए, भस्म जैसे शुभ्रवर्ण, टेढ़े, हलके, मटमैले, रूखे, मृदु, नोचेको झुके हुए, जड़ और बोचमें ढालू, प्रान्त भागमें मोटे, लम्बे या बहुत ऊंचे पूरे होनेसे दोषजनक होते हैं। इससे महावत और मालिकका बहुतसा अमङ्गल लगता है। हाथीके दांत बराबर, चिकने, खुले हुए, भरपूर, व्रणशून्य, कन्नोलैसे, दृढ़ और मृणाल वा कुसुमको तरह शुभ्रवर्ण रहना अच्छा है।

हाथीका तालु श्वेतवर्ण वा कषाय होनेसे अच्छा है। इससे धन और आयुः बढ़ता है। इसके दोनों होठोंके दिनों जोड़ परिमाणमें छोटे पड़नेसे मुखरोग होता है, किन्तु १२ अङ्गुलि रहने पर सब बातोंमें सुख है।

गजके ओठ लोमशून्य शम्बलीयुक्त और थोड़े तांबड़े होनेसे मुंहका रोग लगता है। फिर लम्बे रुएंवाले, भरपूर कमल जैसे लाल, १६ अङ्गुल लम्बे और १२ अङ्गुल चौड़े होंठ स्वामीका आयु बढ़ाते हैं।

हाथीकी दोनों कनपटियां कम-बढ़, बेबाल, देहकी छाया-जैसी बेरङ्ग, बराबर, गले और पीठसे बड़ी, अधूरी, खुली, हलकी, परिमाणशून्य और छोटी लगनेसे अ-नहीं; किन्तु पत्थर समान, ठोस [illegible], विशाल शिखा [illegible], कहीं सूक्ष्म [illegible] विन्दु से, मंगल और [illegible] होनेसे [illegible] है। [illegible] [illegible] या और [illegible], अंग भिन्न हुए, [illegible], विषम, रूखा, [illegible], [illegible] या [illegible] होनेसे [illegible] का आयु घटाता है। [illegible], उसे [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] और [illegible] शब्द निकले, [illegible] जैसा और [illegible] [illegible] समान होना अच्छा है।

हाथीका उदर मोटा, छोटा नहीं और कछुआ जैसा रहनेसे अच्छा है। [illegible] बहुत ऊंचा नीचा या छोटा [illegible] है। [illegible] ८४ अंगुल [illegible] और [illegible] के कछुए जैसा रहनेसे लाभ है। हाथीका शरीर [illegible] या मांसीला, बड़ा उदार, [illegible], [illegible] या [illegible] होनेसे [illegible] पाता है, इससे उलटा [illegible] किसी कामका रहता नहीं।

हाथीके नाखून छोटे, काले, टूटे-फूटे और रूखे होनेसे बुरे हैं, किन्तु [illegible] तरह चमकदार और पतले कहीं लक्षणोंसे उलटे पाने पर अच्छे होते हैं।

हाथीके पैर गिरे हुए, रूखे और तलवोंमें बहुत अच्छे लगनेसे दुःखदायी होते, किन्तु १ [illegible] [illegible] और कछुवे जैसे रहने पर शुभजनक हैं। इसके अलावा और भी कितने ही सूक्ष्म लक्षण ऋषि मुनियोंने निर्णय किये हैं। इस विषयमें अधिक जाननेके लिये "[illegible]" देखो।

मनुष्य जैसे पितामह ब्रह्माको अपना पूर्वपुरुष जैसा बतलाते, बड़े डील डौलवाले हाथी भी ऐरावत आदिको अपना पितामह वा पूर्वपुरुष-जैसा कह सकते हैं। इनके ८ पुरखे हैं—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक। इन सबको दिग्गज कहा जाता है। दिग्गजोंके ही वंशधर महाकाय गजोंने पृथिवीके बड़े जङ्गलमें अपना आधिपत्य फैला दिया है। इनकी कुलीनता भी शायद देख पड़ती और डील डौलमें भेद भी आ जाता है। ८ दिग्गजोंके वंशमें उत्पन्न होनेसे हाथी भी ८ भागोंमें बंटे हैं। इनमें ऐरावत वंशके गज ही श्रेष्ठ गिने जाते हैं। यह शुभ्रवर्ण, लोमशून्य, अल्पभोजी, बलवान्, बहुत बड़े, युद्धके समय विग-

हलेवाले, साधारण अवस्थामें नम्र, शीघ्रजलपायी, बाल और पूछ पतली, सफेद और लम्बी सूड, लिङ्ग छोटा होते भी पुष्ट और शरीरसे प्रभूत तथा उग्र मदजल निकलता है। इन गजोंके मस्तकमें साफ और अच्छी सी गोल मुक्ता होती है। यह राजाओंके अल्प पुण्यसे पृथिवीको नहीं छूते। लड़ाईमें इनके दांत टूट जाने पर भी फिर बढ़ आते हैं।

जिस कुञ्जरका सब अङ्ग कोमल, पूछ डण्डे जैसी न हो, गाल खुरदुरा, सर्वदा मद चुवे और क्रोध बना रहे, देवप्रिय, सर्वभक्ष तथा बलवान् और दांत और जीभ बहुत तीखी हो, पुण्डरीक दिग्गजका वंशसम्भूत है। इनके वीर्यसे कमलका जैसा गन्ध आता और अधिक मदजल या वमन देखा नहीं जाता। यह बहुत पानी पीना नहीं चाहता और अधिक श्रम करने पर भी नहीं थकता है। पुण्डरीक वंशजात हाथी जिस राजाके घरमें रहता, समस्त पृथिवीका शासन कर सकता है।

वामन दिग्गज वंशके हाथियोंका सारा देह बहुत कड़ा और छोटा, कभी कभी मतवाले होते, हमेशा मद टपका करता, आहार करके बलवान् और वीर्यवान् बन जाते, बहुत पानी पीना नहीं चाहते, कनपटीमें बहुत रूए, दोनों दांत भद्दे और पुच्छ तथा कर्ण सूक्ष्म होते हैं।

देह दीर्घ, सूड मोटी न होते भी लम्बी, दोनों दांत खोंढ़े, शरीर सर्वदा मलयुक्त, कनपटी मीठी और भगडालू हाथी कुमुद दिग्गजके वंशजात हैं। यह दूसरे हाथियोंको देखते ही मार डालते हैं। मनुष्य प्राय इनके पास फटक नहीं सकते।

अञ्जन नामक दिग्गजके वंशमें उत्पन्न होनेवाले हाथीका देह चिकना, पानी पीनेका बड़ा अभिलाषी और रूंचा पूरा, दांत और सूड छोटी, दोनों दांत मोटे और श्रमका दुःख उठानेवाले होते हैं।

जो हाथी सर्वदा मदजल और रेत छोड़ता, अनूपदेशका उत्पन्न, पूछ बहुत छोटी और बड़े वेगसे चलता—पुष्पदन्त दिग्गजका वंशसम्भूत ठहरता है।

रूए बहुत, बड़ा, लम्बी राह चलने पर भी न थके, खाने पीनेमें खूब चालाक, मरुभूमिमें घूमना अच्छा लगे,—देह बड़ा और कड़ा दोनों दांत लम्बे नर्म और सफेद होते भी निकम्मा, पेटू, मूत्र वा पुरीष अल्प आवे, कानकी जगह फैली हुई, रूए और गाल हलके होना सार्वभौम दिग्गजके वंशजात कुञ्जरका लक्षण है। इन हाथियोंमें बढ़िया मुक्ता मिलती है।

जिनकी सूड लम्बी, देह ढीला, दौड़ प्रचण्ड, क्रोधी, सर्वदा भक्षणाभिलाषी और हस्तिनीप्रिय, पूछ और दांत पतले, गाल बड़ा, कान प्राय न चले और गालमें छोटे छोटे बहुत रूए हों, सुप्रतीक दिग्गजके वंशसम्भूत है। इन हाथियोंके मस्तकमें बड़े बड़े मोती होते हैं।

प्राचीन ऋषियोंके मतानुसार मनुष्यकी भांति हाथी भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—४ जातियोंमें बंटे हैं। इनमें एक जातिसे उत्पन्न हुआ हाथी शुद्ध कहलाता है। शास्त्रमें अच्छे हाथीके जो लक्षण लिखते, विशुद्धमें सभी मिलते हैं। शूद्र तथा ब्राह्मण जातीय हस्तीसे उत्पन्न होते भी जिस हाथीमें ब्राह्मण जातीय हाथीके लक्षण देख पड़ते और बलवीर्यवान् होता, जारज कहा जाता है। दो द्विजातीय हाथियोंसे उत्पन्न होनेवालेका नाम शूर है। फिर ब्राह्मण जातीय और जारजसे जन्म लेनेवाला हाथी उद्दान्त कहलाता है। इसी प्रकार एक दूसरेके संयोगमें बहुत तरहके हाथियोंकी उत्पत्ति होती है। पराशर कहते हैं, जो हाथियोंकी जातिका भेद भली भांति समझता, वह राजाका अमात्य बन सकता है।

ब्राह्मणजातीय हाथी विशालदेह, पवित्र और अल्पभोजी होता । जो बलिष्ठ, विशालदेह तथा क्रुद्ध रहता, क्षत्रिय जातीय ठहरता है। दूसरी दोनों जातियोंके मिश्र लक्षण हैं।

बिक्री और कामकी दूसरी चीजोंकी तरह हाथीको भी देख भालके लेना चाहिये। सबसे पहले हाथीके बलकी परीक्षा की जाती है। देखने सुननेमें अच्छा होते भी बलहीन हाथी नहीं लेते हैं। जो हाथी १८००० पल सोना या तांबा लाद करके दौड़में ४० कोस चलने पर भी नहीं थकता, सबसे अधिक बलवान् ठहरता है। मध्यबल हाथी १४००० पल सोना या तांबा २८ कोस लाद करके ले जाने पर भी नहीं थकता। १०००० पल भार २० कोस ले जा सकनेवाले हाथीको

कठिन है। इसी लिये पराशरने अपने आप बतला दिया है—कहीं भी सब लक्षणवाले हाथी देख नहीं पड़ते, अतएव कई प्रधान लक्षणोंसे ही भला बुरा निर्णय कर लेना चाहिये। अनावश्यक समझ करके सब छोटे लक्षणोंकी उल्लेख नहीं किया, कई प्रधान प्रधान लक्षणोंको ही लिख दिया है।

हाथीकी सूंड पूंछसे छोटी अथवा पूंछ जैसी, बहुत लम्बी, छोटी, बहुत मोटी, रूखी, व्रणयुक्त वा क्षुद्र अङ्गुलियुक्त होना बुरा है, इससे विपरीत पड़ने पर अच्छा समझना चाहिये। सूंड पूंछकी बराबर, छोटी या बहुत बड़ी रहनेसे दुःखप्रद, क्षुद्र लगनेसे रोगकर और बहुत मोटी होने पर अर्थनाशक है।

हाथीके दोनों मसूड़े रोमहीन, बहुत मोटे, असमान और ढीले रहनेसे प्रभुका अमङ्गल और रूएंदार, सुश्लिष्ट-लावद्ध तथा कुछ उठे होनेसे स्वामीकी समृद्धि होती है।

हाथीके मुंहकी दोनों ओर जो दो दांत निकलते, उन्हींको यहां गजदन्त कह सकते हैं। यही दोनों गजदन्त एक दूसरेसे छोटे बड़े, सङ्कीर्ण, उठे हुए, भस्म जैसे शुभ्रवर्ण, टेढ़े, हलके, मटमैले, रूखे, मृदु, नीचेको झुके हुए, जड़ और बीचमें ढालू, प्रान्त भागमें मोटे, लम्बे या बहुत ऊंचे पूरे होनेसे दोषजनक होते हैं। इससे महावत और मालिकका बहुतसा अमङ्गल लगता है। हाथीके दांत बराबर, चिकने, खुले हुए, भरपूर, व्रणशून्य, कली-जैसे, दृढ़ और मृणाल वा कुसुमकी तरह शुभ्रवर्ण रहना अच्छा है।

हाथीका तालु श्वेतवर्ण वा काषाय होनेसे अच्छा है। इससे धन और आयुः बढ़ता है। इसके दोनों होठोंके दोनों जोड़ परिमाणमें छोटे पड़नेसे मुखरोग होता है, किन्तु १२ अङ्गुलि रहने पर सब बातोंमें सुख है।

गजके ओठ लोमशून्य शम्बलीयुक्त और थोड़े तांबड़े होनेसे मुंहका रोग लगता है। फिर लम्बे रूएंवाले, भरपूर कमल जैसे लाल, १६ अङ्गुल लम्बे और १२ अङ्गुल चौड़े होंठ स्वामीका आयु बढ़ाते हैं।

हाथीकी दोनों कनपटियां कम-बढ़, बेबाल, देहकी छाया-जैसी बेरङ्ग, बराबर, गले और पीठसे बड़ी, अधूरी, खुली, हलकी, परिणामशून्य और छोटी लगनेसे अच्छी नहीं; किन्तु परस्पर समान, दीर्घ रोमयुक्त, विशाल शिखर विशिष्ट, कर्णमूलसे अर्धहस्त पर्यन्त विस्तृत, संयत और स्थूल होनेसे नानाविध सुख देनेवाली हैं। कान बेबाल हलके चमड़े का और छेददार, नर्म मिल हुए, संकीर्ण, विषम, रूखा, कड़ा, ठहरा, छूआ या गोल होनेसे हाथी का आयु घटाता है। नाड़ी शून्य, बड़े छेदोंवाली, चिकने, दुन्दुभिकी भांति बोलनेवाली, कपालके आस्फालनसे दारुण शब्द निकले, चंवर-जैसी और मोर तथा ताड़के पेड़के समान होना अच्छा है।

हाथीका कण्ठ सीधा; छोटा न हो और लम्बा ठीक रहनेसे अच्छा है। पीठकी हड्डी बहुत ऊंची नीची या छोटी खराब है। वह ८६ अंगुल लम्बी और घोड़े के फलक जैसी रहनेसे लाभ है। हाथीका शरीर लगातार ऊंचा या मंसीला, बड़ा उतार, हलका, लम्बा या बालदार होनेसे अमंगल आता है, इससे उलटी अवस्थामें किसी बातका खटका नहीं।

हाथीके नाखून छोटे, काले, टूकड़े-जैसे और रूखे होनेसे बुरे हैं, किन्तु अर्धचन्द्रकी तरह चमकदार और पहले कहे लक्षणोंसे उलटे पड़ने पर अच्छे होते हैं।

हाथीके पैर गिरे हुए, रूखे और तलवेमें बहुत अच्छे लगनेसे दुःखदायी होते, किन्तु १ हाथ लम्बे और कछुवे जैसे रहने पर शुभजनक हैं। इसके अलावा और भी कितने ही सूक्ष्म लक्षण ऋषि मुनियोंने निर्णय किये हैं। इस विषयमें अधिक समझनेके लिये "पराशरसंहिता" देखो।

मनुष्य जैसे पितामह ब्रह्माको अपना पूर्वपुरुष जैसा बतलाते, बड़े डील डौलवाले हाथी भी ऐरावत आदिको अपना पितामह वा पूर्वपुरुष-जैसा कह सकते हैं। इनके ८ पुरखे हैं—ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक! उन सबको दिग्गज कहा जाता है। दिग्गजोंके ही वंशधर महाकाय गजोंने पृथिवीके बड़े जङ्गलमें अपना आधिपत्य फैला दिया है। इनकी कुलीनता भी शायद देख पड़ती और डील डौलमें भेद भी आ जाता है। ८ दिग्गजोंके वंशमें उत्पन्न होनेसे हाथी भी ८ भागोंमें बंटे हैं। इनमें ऐरावत वंशके गज ही श्रेष्ठ गिने जाते हैं। यह शुभ्रवर्ण, लोम शून्य, अल्पभोजी, बलवान्, बहुत बड़े, युद्धके समय विग-

हनेवाले, साधारण अवस्थामें नम्र, शीघ्रजलपायी, कान और पूंछ पतली, सफेद और लम्बी सूंड, लिङ्ग छोटा होते भी पुष्ट और शरीरसे प्रभूत तथा उग्र मदजल निकलता है। इन गजोंके मस्तकमें साफ और अच्छीसी गोल मुक्ता होती है। यह राजाओंके अल्प पुण्यसे पृथिवीको नहीं छूते। लड़ाईमें इनके दांत टट जाने पर भी फिर बढ़ आते हैं।

जिस कुञ्जरका सब अङ्ग कोमल, पूंछ डंडे जैसी न हो, गाल खुरखुरा, सर्वदा मद चुवे और क्रोध बना रहे, देवप्रिय, सर्वभक्ष तथा बलवान और दांत और जीभ बहुत तीखी हो, पुण्डरीक दिग्गजका वंशसम्भूत है। इसके वीर्यसे कमलका जैसा गन्ध आता और अधिक मद जल वा वमन देखा नहीं जाता। यह बहुत पानी पीना नहीं चाहता और अधिक श्रम करने पर भी कम थकता है। पुण्डरीक वंशजात हाथी जिस राजाके घरमें रहता, समस्त पृथिवीका शासन कर सकता है।

वामन दिग्गज वंशके हाथियोंका सारा देह बहुत कड़ा और छोटा, कभी कभी मतवाले होते, हमेशा मद टपका करता, आहार करके बलवान् और वीर्यवान् बन जाते, बहुत पानी पीना नहीं चाहते, कनपटीमें बहुत रूए, दोनों दांत भद्दे और पुच्छ तथा कर्ण सूक्ष्म होते हैं।

देह दीर्घ, सूंड मोटी न होते भी लम्बी, दोनों दांत खोंढ़े, शरीर सर्वदा मलयुक्त, कनपटी मोटी और भगडालू हाथी कुमुद दिग्गजके वंशजात हैं। यह दूसरे हाथियोंको देखते ही मार डालते हैं। मनुष्य प्राय इनके पास फटक नहीं सकते।

अञ्जन नामक दिग्गजके वंशमें उत्पन्न होनेवाले हाथीका देह चिकना, पानी पीनेका बड़ा अभिलाषी और क्षुधा पूरा, दांत और सूंड छोटी, दोनों दांत मोटे और श्रमका दुःख उठानेवाले होते हैं।

जो हाथी सर्वदा मदजल और रेत छोड़ता, अनूप देशका उत्पन्न, पूंछ बहुत छोटी और बड़े वेगसे चलता—पुष्पदन्त दिग्गजका वंशसम्भूत ठहरता है।

रूए बहुत, बड़ा, सम्बी राह चलने पर भी न थके, खाने पीनेमें खूब चालाक, मरुभूमिमें घूमना अच्छा लगे,—देह बड़ा और कड़ा दोनों दांत लम्बे, नर्म और सफेद होते भी निकम्मा, पेटू, मूत्र वा पुरीष अल्प आवे, कानकी जगह फैली हुई, रूए और गाल हलके होना सार्वभौम दिग्गजके वंशजात कुञ्जरका लक्षण है। इन हाथियोंमें बढ़िया मुक्ता मिलती है।

जिनकी सूंड लम्बी, देह ढीला, दौड़ प्रचण्ड, क्रोधी, सर्वदा भक्षणाभिलाषी और हस्तिनीप्रिय, पूंछ और दांत पतले, गाल बड़ा, कान प्राय न चले और गालमें छोटे छोटे बहुत रूए हों, सुप्रतीक दिग्गजके वंशसम्भूत हैं। इन हाथियोंके मस्तकमें बड़े बड़े मोती होते हैं।

प्राचीन ऋषियोंके मतानुसार मनुष्यकी भांति हाथी भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—४ जातियोंमें बंटे हैं। इनमें एक जातिसे उत्पन्न हुआ हाथी शुद्ध कहलाता है। शास्त्रमें अच्छे हाथीके जो लक्षण लिखते, विशुद्धमें सभी मिलते हैं। शूद्र तथा ब्राह्मण जातीय हस्तीसे उत्पन्न होते भी जिस हाथीमें ब्राह्मण जातीय हाथीके लक्षण देख पड़ते और बलवीर्यवान् होता, जारज कहा जाता है। दो द्विजातीय हाथियोंसे उत्पन्न होनेवालेका नाम शूर है। फिर ब्राह्मण जातीय और जारजसे जन्म लेनेवाला हाथी उद्दान्त कहलाता है। इसी प्रकार एक दूसरेके संयोगसे बहुत तरहके हाथियोंकी उत्पत्ति होती है। पराशर कहते हैं, जो हाथियोंकी जातिका भेद भली भांति समझता, वह राजाका अमात्य बन सकता है।

ब्राह्मणजातीय हाथी विशालदेह, पवित्र और अल्प भोजी होता । जो बलिष्ठ, विशालदेह तथा क्रुद्ध रहता, क्षत्रिय जातीय ठहरता है। दूसरी दोनों जातियोंके मिश्र लक्षण हैं।

बिक्री और कामकी दूसरी चीजोंकी तरह हाथीको भी देख भालके लेना चाहिये। सबसे पहले हाथीके बलकी परीक्षा की जाती है। देखने सुननेमें अच्छा होते भी बलहीन हाथी नहीं लेते हैं। जो हाथी १८००० पल सोना या तांबा लाद करके दौड़में ४० कोस चलने पर भी नहीं थकता, सबसे अधिक बलवान् ठहरता है। मध्यबल हाथी १४००० पल सोना या तांबा २८ कोस लाद करके ले जाने पर भी नहीं थकता। १०००० पल भार २० कोस ले जा सकनेवाले हाथीको

हीनवल कहते हैं। २½ हाथ मोटी और मट्टीमें ४ हाथ गहरी गड़ी हुई लकड़ी उखाड़ या तोड़ डालनेवाला हाथी ही सबसे श्रेष्ठ होता है। पहली जैसी मोटी, ३॥ हाथ मट्टीमें गड़ी और ७ हाथ ऊपर निकली हुई लकड़ीको मध्यवल हाथी तोड़ या सहजमें ही उखाड़ करके फेंक सकता है। पहले जिस मोटी लकड़ीकी बात कही है, उससे आधा मोटा ३ हाथ मट्टीमें गाड़ा और ६ हाथ ऊपर उठा हुआ खूंटा तोड़ या उखाड़ करके फेंक सकनेवाला हाथी हीनवल कहलाता है। ऐसे ही बलको देख भाल करके जाँचते हैं, हाथी लड़ाई आदिमें क्या काम देगा और कैसा बल लगावेगा। शुभ दिनको शुभलग्नमें हाथीको गेरूसे रंग करके कानमें चामर, शङ्ख आदि सुन्दर गहने पहना देना चाहिये। महावन पहले पहल जब हाथीको चलाने लगता, उसकी दोनों ओर हजारों लोगोंको हल्ला मचाना पड़ता है। जो हाथी महावतके आंकुसकी मारसे उत्साहित हो करके मुंह उठाता और घूम फिर करके पैर चलाता, जिसके वेगसे कान फटकारने पर दांत बोलने लगते, अङ्कुशके आघातकी जो कुछ भी पीड़ा अनुभव नहीं करता, जो हाथी लड़ाईसे कभी नहीं भागता या डरसे पीछे पांव नहीं रखता, जिसकी चिङ्घाड़से सभी दिशाएं भर जाती और मदजलके स्रावसे जिसका कपोल भर आता, बलशाली हाथी कहलाता है। पैदल सिपाहियों और सवारोंका हल्ला सुनने पर रोषसे आंखें लाल लाल निकाल उन पर टकटकी लगा कान खड़े और फैला करके बड़ी सरपटमें विपक्ष दलके प्रति झपटनेवाले हाथीको भी ऋषियोंने प्रभूत बलशाली जैसा सराहा है। जो हाथी सिंह-जैसे जङ्गली जन्तुको देख करके नहीं डरते और जो बनावटी हाथियोंको बातकी बातमें छिन्न भिन्न कर डालते, उत्तम कहलाते हैं। बड़ी बड़ी चिड़ियोंके झुण्डकी आवाज या दावानलसे न डर करके चुप चाप अपनी धुनमें घुमनेवाला मध्यम और भयसे आरोहीको पीठ पर न चढ़ानेवाला और सदा झुकाये रहनेवाला हाथी बिलकुल निकृष्ट होता है। ऋषियोंने उत्कृष्ट हाथीको रम्य, भीम, ध्वज, अधीर, वीर, शूर, अष्टमङ्गल, सुनन्द, सर्वतोभद्र, स्थिर, गम्भीरवेदी और वरारोह—१२ विभागोंमें विभक्त किया है।

जिस हाथीके शरीरकी बनावट बहुत अच्छी और गंठी हुई, दांत सुहावने, शरीर बड़ा, तेजस्वितापूर्ण तथा देखनेमें अतिशय हृष्टपुष्ट रहता, उसीका नाम रम्यक पड़ता है। यह हाथी सम्पत्ति वृद्धि करता है।

अङ्कुश आदिके दारुण प्रभावसे भी वेदना अनुभव न करनेवाला और शुद्ध लक्षणयुक्त हाथी भीम कहलाता है। यह राजाके सब अर्थोंकी सिद्धि करनेवाला है।

जिस हाथीकी मूंड परसे पूंछ तक एक लकीर देख पड़ती, ध्वज कहा जाता है। यह साम्राज्य और दीर्घजीवन देनेवाला है।

दोनों कुम्भ परस्पर समान, देखनेमें बौना, आवर्तविशिष्ट और आवर्तस्थानमें उन्नत रहनेसे कुञ्जरको अधीर कहते हैं। यह हाथी राजाओंका बुरा करता है।

जिस हाथीको पीठसे तोंदी तक आवर्त और हृष्ट पुष्ट तथा बलशाली होता, वीर कहा जाता है। इससे राजाओंके अभिलषित विषयकी सिद्धि होती है।

डील डौल बड़ा, देह, पुष्ट, दन्त तथा गण्डदेश सब हर, खानेसे थका जैसा मालूम पड़नेवाला और बहुत बली हाथी शूर नामसे अभिहित है। इसके रहनेसे राजलक्ष्मी बढ़ती है।

जिसके दोनों दांत, नख तथा पुच्छ श्वेतवर्ण शरीरमें सफेद धारियां पड़ी हुईं और कुम्भ चक्षु और पुंचिह्न रक्तवर्ण देखा जाता, अष्टमङ्गल कुञ्जर कहलाता है। यह हाथी जिसके घरमें रहता, समस्त पृथिवीमण्डलका अधीश्वर हो सकता है। इस हाथीके निवासस्थानका अरिष्ट वा अनीति मिट जाती और वहांसे ४०० कोस तक अमङ्गल देख नहीं पड़ता। कलियुगके राजाओंका पुण्य अंश बहुत ही कम है, इसीसे अब अष्टमङ्गल कुञ्जर दुर्लभ हो गये हैं।

जो हाथी मांस कटने या लहू गिरनेसे भी समझ नहीं सकता क्या हो रहा है अर्थात् उसकी पीड़ाको अनुभव नहीं करता, गम्भीरवेदी कहलाता है।

दन्तद्वय, शुण्ड, कुम्भद्वय, देह, गण्ड वा गण्डद्वयमें आवत (भौंरी) रहनेसे हस्ती शुभलक्षणाक्रान्त होता है। जिन हाथियोंका गण्डदेश हमेशा मदके स्रावसे भरा रहता, तीक्ष्ण अङ्कुशके प्रहारसे भी जिन्हें हटानेमें

कष्ट पड़ता, जो दूसरे हाथीको देखते ही रागसे फूल उठते और जो पानीसे भरे काले बादल-जैसे चिङ्घाड़ा करते, राजाओंके लिये सुखकर होते हैं।

दुष्ट हाथी बीस भागोंमें विभक्त हैं—१ दीन, २ क्षीण, ३ विषम, ४ विरूप, ५ विकल, ६ खर ७ विमद, ८ धनापक, ९ काक, १० धूम्र ११ जटिल, १२ अजिनी, १३ मण्डली, १४ श्विवी, १५ हतावर्त, १६ महाभय, १७ राहदा, १८ सुपली, १९ भाली और २० नि सत्व।

जिस हाथीका देह बहुत क्षीण और प्रभाशून्य और दन्त क्षुद्र क्षुद्र तथा अत्यन्त क्षीण रहते, उसे दीन कहते हैं। इस हाथीके घरमें रहनेसे राजा दरिद्र हो जाता है।

क्षीण नामक कुञ्जरका शुण्ड खर्व, पुच्छ ह्रस्व और निश्वासवेग क्षीण होता है। यह घरमें रहनेसे धन सम्पत्ति नष्ट होती है।

कुम्भ, दन्त, चक्षु, कर्ण वा दोनों पार्श्व परस्पर असमान होनेसे गजको विषम कहा जाता है। यह सर्प जैसा भयकारक है।

विरूप हस्ती स्कन्धदेशसे मस्तक पर्यन्त क्षीण और पश्चाद्भागमें स्थूल होता है। इसके तबेलेमें रहनेसे राज्य छूटता और बल घटता है।

अनेक भागोंसे भी जिसका मद क्षरण देखा नहीं जाता और युद्धके समय जो वश नहीं लगाता, विकल कहलाता है। ऐसे हाथीको छोड़ देना चाहिये।

शरीरमें खरता स्वाभाविक जैसी लगने और दन्त तथा शुण्ड अपेक्षाकृत छोटी मालूम पड़नेसे हाथीको खर कहते हैं। इसको घरमें रखनेसे कुलक्षय होता है।

जिस हाथीको एक बारगी ही मदस्राव नहीं होता या होता भी है तो अकालमें और जो देखनेसे नितान्त कुत्सित तथा अवश लगता, विमद ठहरता है। इसको परित्याग ही कर देना चाहिये।

ध्यापक हाथी हलका सारे अङ्ग क्षीण, शुण्ड शिरा तथा उदर अपेक्षाकृत छोटा, स्वभावसे अविश्रान्त निश्वास छोड़नेवाला, चक्षु अनवरत मनसे आकुल, कटि और पुच्छके अग्रभागमें आवर्त वा मण्डलयुक्त और लिङ्ग निर्दिष्ट रहते भी सर्वदा अधैर्यान्त होता है। हस्ति-

योंके मध्य यह अतिशय निकृष्ट है। जो राजा अपनी श्रीवृद्धि और शरीरका आरोग्य अभिलाष करे, इस हाथीको देखनेसे भी दूर रहे।

जिस हस्तीका शङ्खदेश अर्थात् ललाटस्थ अस्थिफलकद्वय भग्न और स्कन्धदेश अतिशय उच्च पड़ता, काक ठहरता है। यह प्रभुका मृत्यु कारक है।

दन्तद्वय विषम ललाटास्थिगत शुण्डविरोधी, स्वय भिन्न वा विदीर्ण एवं शून्यान्तर रहनेसे गजको धूम्र कहा जाता है। इसका फल काकहस्तीके ही समान है।

हाथीको मस्तकके केश कर्कश, रुक्ष और जटा जैसे आकारधारी होने पर जटिल नामसे अभिहित करते हैं। यह धनक्षय करता है।

अजिनी गजका स्कन्ध वा गात्रचर्म भूमिलग्न जैसा मालूम पड़ता है। इसके द्वारा राजाका भूमिक्षय और धनक्षय होता है। श्रीवृद्धिके अभिलाषीको इस जातीय हस्तीका स्पर्श वा दर्शन करना मना है।

जिस हस्तीके देहमें एक, दो या बहुतसे मण्डल रहते और वह मण्डल विरूप या उन्नत लगते, मण्डली कहते हैं। यह कुलनायक होता है।

उक्त मण्डल (भौंरी) श्वेतवर्ण लगनेसे हस्तीको श्विवी कहा जाता है। यह गृहमें रहनेसे धननाश होता है।

हृदय, उदर, त्रिकदेश, पुच्छमूल, गुह्यदेश, लिङ्ग या पदके आवर्त नष्ट हो जानेसे हस्तीको हतावर्त कहते हैं। यह राजाको लक्ष्मी विनाश करता और उसे योगी, प्रवासी या उपद्रुत कर डालता है।

जिस हस्तीके गमनकालको गुल्फद्वयका मुहुर्मुहु परस्पर सङ्घर्षण हुआ करता, महाभय नाम पड़ता है। यह हस्ती लक्षणयुक्त और गुणशाली होते भी परित्याग कर देना चाहिये। महाभय हस्ती गृहमें रहने पर राज्य, धन, कुल सैन्य, मित्र, पत्नी और प्रजा दृष्टि मात्रमें ही नष्ट हो जाती है। यह जहां टिकता, लोग भी दिन दिन मिटने लगते और उस स्थानमें वध्यभय व्याधिभय तथा अग्निभय आ उपस्थित होता है।

अत्यन्त ताड़ित होने पर भी गमन करनेकी इच्छा न रखनेवाला वक्षसे उदर पर्यन्त गोलाकार रेखायुक्त

और चलनेमें अग्रपदके स्थान पर पश्चात् पद डालनेवाला हस्ती राष्ट्रहा कहलाता है। जो राजा अपनी श्रीवृद्धि चाहे, इस हाथीको अपने राज्यसे मार भगाये। राष्ट्रहा हाथी जिस राज्य वा प्रदेशमें वास करता अल्प दिनमें हो मिटता है।

जिस हाथीके कई पद परस्पर असमान, दोनों दन्त विषम पञ्जरोंमें एक, दो या समस्त ही भग्न, जिसका दन्तद्वय झुक पड़ता या नहीं चलता और जिसका कुम्भद्वय श्वेतवर्ण लगता, मुषली नाम पड़ता है। यह राजाके पास रहनेसे राज्य, दुर्ग, सैन्य और अमात्योंका विनाश होता है। इस प्रकारका बदजात हाथी एक बारगी ही दूर रखना चाहिये।

कपालका चर्म अतिशय कर्कश जैसा लगनेसे हाथीको भाली कहा जाता है। यह स्वामीका कुल और धनक्षय करता है।

निःसत्व हाथीका शरीर पुष्ट तथा विशाल, दन्तद्वय सुन्दर, वीर, रणसज्जासे सज्जित और वाहक कर्तृक उत्साहित तथा परिचालित होते भी युद्ध करनेका साहस नहीं करता। हस्तियोंके जितने दोष उल्लिखित हुए हैं, उनमें यह दोष सर्वापेक्षा प्रधान है।

राजाओंको दुष्ट हस्तीका कभी अवलोकन करना न चाहिये। उनको पर राज्यमें पहुंचाते वा नगरसे वहिष्कृत रखते अथवा शुद्र ब्राह्मण वा विशुद्ध गणकको प्रदान करते हैं। यदि किसी समय दुष्ट हाथी राजाको देख पड़े तो ब्राह्मणको शत गोदान और नगरी अपने आप वा पुत्र को नीराजित करना चाहिये। देवसूक्त मन्त्र द्वारा १० सहस्र होम वा तत्प्रतीकारके निमित्त अग्निमें तिलहोम किया जाता है। ब्राह्मण आदि जाति भेदसे जो चार प्रकारके होते, ब्राह्मण प्रभृति चार जातियोंके पक्षमें वाहन कार्यको यथाक्रम शुभप्रद हैं।

मनुष्यका आयुः निर्णय करनेको जैसे नानाविध लक्षण रहते, हाथीका आयुः ठहरानेके भी भारतीय चिकित्सक कई लक्षण स्थिर करते हैं। यह लक्षण वाह्य और आभ्यन्तर दो भागोंमें बंटे हैं। आभ्यन्तर लक्षण योगी एक मात्र योगवलसे ही अवलोकन करते हैं। इस स्थल पर हम उन्हें उल्लेख करना निष्प्रयोजन समझते हैं। वाह्य लक्षण बारह हैं। यथा हस्तगत, वदनाश्रित विषाणस्थ, शिरस्थ, नयनगत, कर्णाश्रित, कण्ठ, गात्रस्थित, चरणाश्रित, अपराङ्गस्थित, कान्तिस्थ और सत्वस्थित। फिर इन लक्षणोंको क्षेत्र भी कहा जाता है। भद्रजातीय हस्तीका पूर्ण आयुः १२०, मन्द्रजातीयका ४० वत्सर और मिश्रजातीयका आयुः अनियत है। पूर्वको जो द्वादश लक्षण उल्लिखित हुए, उनके रहनेसे हाथीका पूर्णायु हुआ करता और हीनतामें उसकी न्यूनता आती है। हस्तगत लक्षणोंके अभावमें १० वत्सर आयुः घट जाता है। इसी प्रकार कोई दो लक्षण न मिलनेसे आयुः २० वर्ष, तीनसे ३० और चारसे ४० वर्ष कमो पड़ती है। ऐसे ही एक एक लक्षणके अभावमें दश दश वर्ष आयुः घटता है। यह लक्षण हाथीके दुष्ट लक्षणोंका दोष भी दूर किया करते हैं। पदलक्षण रहनेसे दन्तदोष विनष्ट होता है। इसी प्रकारसे दन्तलक्षण वाहित्यदोष, वाहित्य लक्षण नेत्रदोष, नेत्रलक्षण तालुदोष और तालुलक्षण स्कन्धदोषको नष्ट करते हैं। ऐसे ही अन्यान्य स्थानोंके लक्षण भी अपरापर दोष निवारण करते हैं।

स्थान, देश, आहार और वातपित्त भेदसे हस्तीके शरीरका विभिन्न वर्ण हुआ करता है। उसमें सिन्दूर, शङ्ख, वैदूर्य, विद्युत, सुवर्ण वा इन्द्रनील वर्णका हाथी ही अच्छा होता है। अतिशय श्वेतवर्ण, रक्तवर्ण वा शुक तथा मयूरसदृश वर्ण विशिष्ट हस्ती सर्वापेक्षा श्रेष्ठ है। ऐसा हाथी प्रायः देख नहीं पड़ता, प्राच्य वनमें कभी कभी वैसे दो एक हाथी दिखलायी देते हैं। शृङ्गार, अङ्गार, भस्म, अस्थि, पङ्क, मञ्जिष्ठा वा आम्रपुष्प तुल्य वर्णका हस्ती अशुभ है। उससे नाना प्रकार उत्पात होनेकी सम्भावना है।

मनुष्योंको जो व्याधि लगता, हाथियोंको भी हुआ करता है। इनको चिकित्सा भी मनुष्यको भांति ही कर्तव्य है। गरुड़पुराणके मतमें मनुष्यको जिस मात्रामें औषध खिलाते, हाथीको उससे चौगुना पहुंचाते हैं। वनमें हस्ती वा हस्तिनी पीड़ित होनेसे संस्कार वश वह अपने आप औषध अन्वेषण करके खा लेते हैं। हाथीके उदरमें प्रायः क्रमि रहते और वह समझते है कि कीड़ोंकी दवा कीचड़ है। क्रमि होने पर वह कर्दमके

गोले बना करके खा जाते हैं। गृहपालित हस्तीकी सुचिकित्साकी व्यवस्था भी प्राचीन चिकित्सकोंने निरूपण की है। पालकाप्य रचित गजायुर्वेदमें विस्तृत विवरण लिखा गया है। मनुष्यको पीड़ा होने पर जैसे शान्ति स्वस्त्ययन करना पड़ता, हाथीको दुःख मिलने पर वैसा ही विधान रहता है।

प्राचीन ऋषियोंने हस्तियोंका जो लक्षण, शान्ति और औषध आदि निरूपण किया है, संक्षेपमें इस स्थान पर लिखा गया है। भारत समभ्रमके लिये पराशर, हरमति व दिशा, बुधिकरणक, पालकाप्य, अग्निपुराण प्रभृति द्रष्टव्य हैं।

पहले ही लिख चुके हैं, प्राचीन कालको भारतमें कहीं हाथी मिलते थे। वर्तमान समयमें एशिया और अफ्रीका दोनों स्थानोंका हाथीका आकर कहा जा सकता है। इन दोनों स्थानोंमें हाथियोंका आकार और गठन गत विलक्षण भेद है। हाथियोंको देखते ही आकारगत भेद कितना ही समझा जाता है इनकी आभ्यन्तरिक गठनप्रणालीका तारतम्य रहता है।



एशियाका हाथी।

एशियाके बीच सिंहल, भारतवर्ष, ब्रह्मदेश, श्यामदेश, मलय उपद्वीप और पूर्वद्वीपके पहाड़ों तथा जङ्गली भूभागमें हाथी देख पड़ता है। सिंहलमें समुद्रपृष्ठसे ७।८ हजार फुट ऊंचे और दाक्षिणात्यमें ४।५ हजार फुट ऊंचे पहाड़की चोटी पर हाथियोंका झुण्ड घूमा करता है। भारतके दाक्षिणात्यस्थित दक्षिण तथा पश्चिमभाग, पूर्वहिमालयके निकटवर्ती वनमय स्थान, नेपाल, त्रिपुरा और चट्टग्राम स्थानोंमें हाथी पाया जाता है। इन सभी स्थानोंके हाथियोंमें फिर आकारगठनका तारतम्य होता है। १८ वा २४ वर्षमें हाथी जितना बढ़ना होता—बढ़ आता, फिर उससे अधिक और नहीं। हाथीके अगले पैर डोरीसे दोबार नापने पर जितना आता, उसका उच्चत्व बतलाता है। सिंहलका हाथी प्रायः ८ फुट ऊंचा होता, कोई कोई ८ फुटसे भी अधिक पहुंचता है। जापानमें एक बार १२ फुट १ इञ्च ऊंचा हाथी पकड़ा गया था। भारत और सिंहलको देखते दूसरे उपद्वीपोंमें हाथियोंकी संख्या बहुत अधिक है। उन जगहोंमें मनुष्यकी रहा यश नहीं जैसी होनेसे इन्हें घूमनेमें फिरनेमें कोई अड़चन नहीं पड़ती। वहां हाथियोंकी संख्या इसलिये बढ़ जाती कि स्वच्छन्द विचरण करनेमें सम्पूर्ण सुविधा आती है। रूसजार 'पीटर दी ग्रेट'के समय ईरानके शाहने सेण्टपीटर्सबर्गको १२ हाथ ऊंचा हस्तिकङ्काल भेजा था। आजतक कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता, क्या उससे भी अधिक ऊंचा हाथी हो सकता है। जन्मके समय हाथीकी ऊंचाई लगभग १॥ हाथ रहती है। किसी अंगरेजने हिन्दुस्तानी हाथीका एक बच्चा ७ वर्ष तक पाला था। उन्होंने उसकी बाढ़ इस तरह बतलायी है—एक वर्षमें ३ फुट १० इञ्च, २ वर्षमें ४ फुट ६ इञ्च, ३ वर्षमें ५ फुट, ४ वर्षमें ५ फुट ५ इञ्च, ५ वर्षमें ५ फुट १० इञ्च, ६ वर्षमें ६ फुट १॥ इञ्च और ७ वर्षमें ६ फुट ४ इञ्च

बहुत लोग विश्वास करते कि ७ फुट ऊंचे हाथी काममें लग सकते हैं। किन्तु ८।१० फुटका हाथी लड़ाईके लिये सिखाया जाता है। टीपू सुलतानके समय कप्तान सिड्नीने जो हाथी चलाये, कोई ८॥ फुट ऊंचे थे। हाथकी लम्बाई पूंछसे मुंह तक १५ फुट १२ इञ्च तक देखी गयी है।

हाथीकी पीठमें एक कूबड़ रहता, जो बाल्यकालको बड़ा लगता परन्तु उसकी बाढ़के साथ साथ घटता है। बहुतसे लोग इस कूबड़को देख करके हाथीकी जवानी या बुढ़ापा समझ लेते हैं। सिंहलके हाथीसे मल्लान्नका हाथी कितना ही अच्छा, काममें होशियार और लड़ाका होता है। चटगांवके दक्षिण भाग, मघ

हैं। आजकल दाक्षिणात्यके कोयम्बतूर और बङ्गालके ढाका अञ्चलमें हाथी पकड़नेका बड़ा अड्डा है। महिसुर राज्यमें भी हाथी पकड़े जाते हैं।

वोरनिओ द्वीपके उत्तरपूर्व अञ्चलमें भी जङ्गली हाथी देख पड़ते हैं। किनाजटानगान नदीके किनारे हाथियोंका दल घूमा करता है। यह हाथी भी खड़े खेतोंमें घुस अनाज बिगाड़ डालते हैं। मशाल जला करके इनके सामने रखने पर यह उसका तीव्र आलोक सह न सकनेसे जङ्गलको भाग जाते हैं। वहां हाथी पकड़नेका कौशल है। शिकारी अंधेरी रातको एक छोटी पैनी बरछी ले करके हाथीके दल चलते चलते हाथियोंके झुण्डमें घुस जाते और अति कौशलसे वही बरछी किसी बड़े हाथीके पेटमें घुसेड़ आते है। हाथी इस दारुण आघातसे चीत्कार करने लगता है। उसका चीत्कार सुन करके दूसरे हाथी जङ्गलको चल देते हैं। दूसरे दिन सवेरे शिकारी लहूके चिह्न देख आहत हाथीको ढूंढ़ते हैं। थोड़ी दूर जा करके देखते कि वह बहुत ही दुर्बल हो गया है। शिकारी फिर एकबार बरछी मारते और हाथीको अपने वशमें लाते हैं।

भारत-महासागरके सुमात्रा द्वीपमें भी हाथी मिलता है। इसके पञ्जरमें २० हड्डियां होती हैं। फिर भारतीय हाथीके दांतोंकी मेंड़से इसके मेंड़ चौड़ी पड़ती और बुद्धि भी भारतीय हस्तीकी अपेक्षा बहुत अधिक रहती है।

हाथीका स्वर तीन प्रकार होता है। उसको सुन करके बहुतसी अवस्थाएं समझी जा सकती हैं। हाथीके सूंड उठा करके तुरही-जैसा शब्द करने पर समझते कि उसके मनमें बड़ा ही आह्लाद हुआ है। केवल मुंहसे जो अनुदात्त शब्द निकलता, उससे हाथीका कोई अभाव हुआ समझ पड़ता है। हाथीके किसी कारण वश क्रोधित होने पर कण्ठदेशसे आनेवाला भीषण शब्द क्रोधज्ञापक होता है।

पहले एक एक हाथीका मूल्य १००) से १०००००) रु० तक था। आईन अकबरीको देखते ५०० घोड़ों और १ हाथीकी कीमत बराबर होती है। परन्तु आजकल उतना निर्ख नहीं है। फिर भी अच्छा हाथी ५०००) से १००००) रु० तक बिकता है। पहले आर्यो भारतीय राजाओंको युद्धमें सहायता पहुंचाता था। आजकल केवल ठाटबाटका दिखावा मात्र है। मनुष्यकी भांति सीखा हुआ हाथी गानेका स्वर ताल स्मरण रख सकता और ताल ताल पर नाच सकता है। वह धनुष पर बाण चढ़ा करके चला सकता और कोई कोई शायद बन्दूक भी छोड़ सकता है।

आजकल हाथी पर चढ़ करके लड़नेकी रीति नहीं है। फिर भी दुर्ग आदि आक्रमण करनेको हाथी पर तोप चढ़ा गोले छोड़ा करते हैं। अब हाथी युद्धकालको बोझ ढोनेमें व्यवहृत होते हैं। हाथी २२॥ मनसे ३० मन तक भार वहन कर सकते हैं। वह बोझ लाद करके घण्टेमें १॥ कोस या दिन भरमें ८।१० कोस चल सकते हैं। हाथी २॥ कोस घण्टेसे अधिक नहीं जा सकता है।

हाथीका आहार समस्त गृहपालित पशुओंकी अपेक्षा अधिक है। साधारणतः वह १ मन चावल खा और ३॥ मन पानी पी सकता है। मुगल-सम्राट् अकबरने हाथीको सात भागोंमें बांटा है—१ मस्त, २ शेरगर, ३ सादा, ४ मंझोला, ५ कड़ा, ६ कनड़ुवा और ७ मोकाल। इन ७ भागोंमें प्रत्येक ३ उपविभागोंमें विभक्त है—बड़ा, मंझोला और छोटा। मोकाल १० प्रकारका होता है।

बड़ा मस्त हाथी २ मन ४ सेर आहार कर सकता है। इसी प्रकार मंझोलेकी खराक ३ मन १३ सेर और छोटेकी २ मन १४ सेर है।

बड़ा शेरगर २ मन ८ सेर, मंझोला २ मन ४ सेर, छोटा १ मन ३० सेर, बड़ा सादा १ मन ३४ सेर, मंझोला १ मन २३ सेर, छोटा १ मन १४ सेर, बड़ा मंझोला १ मन २२ सेर, मंझोला १ मन १० सेर, छोटा १ मन १८ सेर, बड़ा कड़ा १ मन १५ सेर, मंझोला १ मन ८ सेर, छोटा १ मन ४ सेर, बड़ा कनड़ुवा १ मन, मंझोला २४ सेर, छोटा २२ सेर, बड़ा मोकाल २६ सेर, मंझोला २४ सेर तीसरा २२ सेर, चौथा २० सेर, पांचवां १८ सेर, छठां १६ सेर, सातवां १४ सेर, आठवां १२ सेर, नवां १० सेर और दसवां ८ सेर खाता है। इन्हींके

क्रमानुसार हस्तिनीके आहारकी भी व्यवस्था थी। सबसे बड़ी हथिनीको १ मन २२ सेर और सबसे छोटीको ६ सेर मात्र आहार मिलता था। गज पर चढ़ करके बहुत दूर घूमनेमें बहुतसे लोग उसको आटेकी रोटी खिलाते हैं।

गज खानेके लिये बड़े बड़े पेड़ोंकी डालियां तोड़ डालते हैं। फिर धीरे धीरे पत्तों और लकड़ोको छोड़ करके वह केवल छाल ही खाते हैं। कैथा खानेमें गज बहुत ही मजबूत होता है। वह समूचा कैथा मुहमें डाल करके निगल जाता है। मलत्याग करने पर देखा जाता कि कैथा जैसेका तैसा पड़ा है, परन्तु उसमें गूदेका कहीं नाम भी नहीं। सन्ध्या सवेरे हाथीको नहलाना पड़ता है। घूमनेको निकलनेसे पहले गजकी मत्थे कान और पैरमें मक्खन लगाते, नहीं तो धूपसे यह सभी स्थान सहजमें हो फट जाते हैं। गज मालिक और महावतके वशमें रहता है। वह महावतके आज्ञ उठाने और उंगली चलाने पर असाध्य साधन किया करता है। पशु होते भी गजमें दया होती और उपकार करने पर वह कृतज्ञता प्रकाश करता है।

जङ्गली गजको अनेक बार सिंह व्याघ्र प्रभृति वन्य जन्तुओंसे लड़ना पड़ता और कभी कभी गजोंमें भी परस्पर युद्ध होने लगता है। सम्राट् अकबरके समय बहुतसे हाथी लड़नेको प्रस्तुत और उनके सिखानेको वेतनभोगी लोग भी नियुक्त रहते थे। आजकल हाथियोंकी लड़ाई बहुत कम देखनेमें आती है। कुछ दिन पहले बड़ोदेमें प्रति वर्ष हाथी लड़ाये जाते थे। जो हाथी युद्ध करते, उन्हें एक प्रकारका मादक द्रव्य खिलाते हैं। इससे हाथी उत्तेजित हो जाते हैं। फिर ३ मास तक उन्हें मक्खन और सोनी खिलानी पड़ती है। इसी प्रकारके दो मतवाले हाथी लड़नेको लाये जाते और लोग उनकी हार जीत पर बाजी लगाते हैं। हस्तियुद्धकी रङ्गभूमि ६०० हाथ लम्बी और ४०० हाथ चौड़ी होती है। दोनों हाथी जञ्जीरमें बांध करके रखे जाते हैं। युद्धका एक सङ्केत है। उस सङ्केतके होते ही दर्शक लोग अपने अपने स्थान पर हट करके खड़े हो जाते हैं। फिर दोनों हाथियोंकी जञ्जीर खोल देते हैं। हाथी तर्जन गर्जन करके अखाड़ेके बीचमें पहुंचते, एक दूसरेके सामने जा करके मत्थेसे मत्था रगड़ते और सूंड़से सूंड़ लपेट करके लड़ने लगते हैं। इसी प्रकार बहुत देर तक लड़ने पीछे जो हाथी हारता युद्धक्षेत्रसे हटा दिया जाता है। फिर जयी हाथी रङ्गस्थलमें खड़ा हो करके आस्फालन किया करता है। उस समय महावत उतर पड़ता और दूसरे दूसरे लोग जा करके होशियारीसे उसको बाध लेते हैं। खिलाड़ियोंको यथायोग्य पुरस्कार मिलता है। हाथीसे आदमीको भी लड़ाई होती है।

हाथी शिकारका बड़ा सहारा है। प्राचीन कालको हाथी पर चढ़ करके राजा लोग शिकार खेलते थे। आज कल भी अंगरेज राजपुरुष प्राय हाथी पर चढ़ करके शिकार करने जाया करते हैं। अशिक्षित हाथी ले करके शिकारमें जानेसे विपद् पड़नेकी सम्भावना है। शिक्षित हाथी पहाड़ पर चढ़ और आवश्यक होने पर उसकी घाटीमें भी उतर निकलता है।

भूतत्वविदोंने पृथ्वीके निम्नस्तरमें प्रस्तरीभूत हस्तिकङ्काल पाया है। उससे समझ पड़ता है कि बहुत पुराने समयको विराट हस्ती विद्यमान थे। समुद्रमें भी एक जलचर हाथी देख पड़ता है। उसका नाम जलहस्ती है। जलहस्ती देखो।

२ स्वर्गके इन्द्रक विमानोंमें से २८वां विमान।

गजइलाही (फा० पु०) ४१ अंगुलका गज। इसे अकबरी गज कहते हैं।

गजक (फा० पु०) १ खाद्य पदार्थ, जो शराब पीनेके बाद मुखको दुर्गन्धिको हटानेके लिये खाया जाता है। २ तिलपपड़ी। ३ जलपान।

गजकच्छप—गजकच्छपीय युद्ध देखो।

गजकच्छपीययुद्ध (सं० क्ली०) गजकच्छपीय गजकच्छप सम्बन्धि युद्धम्, कर्मधा०। गज और कच्छपका युद्ध, हाथी और कछुवेकी लड़ाई। इसका उपाख्यान यों लिखा है— विभावसु नामक कोई महर्षि रहे। इनके छोटे भाईका नाम सुप्रतीक था। सुप्रतीकको विभावसुके साथ एकत्र रहना अच्छा न लगता था, इसीसे समय मिलते ही वह विभावसुसे पैतृक धन बांटनेकी बात उठाते थे। विभावसुका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा था। वह एकाएक बिगड़ पड़ते थे। एक दिन उन्होंने सुप्रतीकको पुकार

करके कहा—'देखो सुप्रतीक! हम तुम्हारे व्यवहारसे बहुत असन्तुष्ट हो गये हैं। तुमने अन्याय रूपसे बाप-का धन बंटा लेना चाहा है, इस लिये तुम गजयोनिको प्राप्त होगे।' निर्दोष सुप्रतीक यह सुनते ही अवाक् रह गये और सोच समझ करके कहने लगे—'मेरा कोई दोष न होते भी आपने दारुण शाप दिया है, इस लिये आप-को भी कछुवा हो करके जन्म लेना पड़ेगा।' उस समयके ब्राह्मणोंकी बात कभी मिथ्या जानेवाली न थी। सुतरां एक भाईने हाथी और दूसरेने कछुवा बन करके जन्मग्रहण किया। विभावसुको कच्छप हो करके गहरे पानीमें रहना पड़ा। सुप्रतोक हाथी हो करके भी थोड़ दिनों अपने वरमें ही रह सके और इसी अव-सर पर पैत्रक धनका बहुतसा भाग संग्रह करके उन्होंने सूंडके बोचमें रख लिया। इनका जन्मान्तर तो हो गया, परन्तु विद्वेष भाव कुछ भी न घटा। दोनों एक दूसरेको दबानेकी चेष्टामें लगे रहे। यह बतला देना उचित है कि हाथीका डीलडौल ६ योजन ऊंचा और १२ योजन लम्बा और कछुवा ३ योजन ऊंचा तथा परिधि-में १० योजन था। कछुवा एक बड़े तलावमें रहता था। भाग्यवश किसी दिन छोटा भाई सरोवरमें पानी पीने पहुंचा। बड़े भाई कछुवेने समय पा करके उसको पकड़ा था। हाथी बलवान् रहा और कछुवा भी उससे कुछ अधिक निर्बल न था। दोनोंकी घमासान लड़ाई होने लगी। उसे देख सुन करके सभी चकरा गये। परन्तु लड़ाईको कोई रोक न सका। किसी दिन पक्षिराज गरुड़ने भूखसे बहुत हो घबरा करके पितासे खानेको मांगा था। उनके पिता काश्यपने कहा कि वह जा करके युध्यमान गजकच्छप दोनोंको खा डालते। गरुड़ पिताके आदेशसे दोनोंको पंजेमें दवा ले उड़े। वह मन हो मन सोचने लगे, कहां बैठ करके हाथी कछुवेको खाते। अन्तको किसी वटवृक्ष पर बैठ करके वह उन्हें खाने लगे। इससे गरुड़को और भी विपद्ग्रस्त होना पड़ा। बरगदका पेड़ टूटा था। पक्षिराज गरुड़ने देखा कि पेड़ गिर पड़नेसे तपस्यानिरत वालखिल्य मुनि मर जायगे। इसीसे उन्हें चोंचमें वह टूटी शाखा दबा करके उड़ना पड़ा। उन्होंने बहुत दूर जा जनमानवशून्य तुषारमय पर्वत पर बैठ करके गजकच्छपको उदरसात् किया था। गज-कच्छपके युद्ध-जैसा भयङ्कर युद्ध सम्भवतः दूसरा नहीं हुआ। (भारत १।२९—३० अ०)

हाथी कछुवेकी लड़ाई झूठ हो या सच, परन्तु भूतत्त्वविद्याके साहाय्यसे इसका प्रमाण मिलता कि अति पूर्वकालको कच्छप भी भारतीय हस्तीकी भांति बड़ा बड़ा होता था। बहुत दिनकी बात नहीं, हिमालयके शिवालिक पहाड़से प्रस्तरीभूत एक प्रकारके कछुवेका कङ्काल निकला था। वह भारतीय बड़े बड़े हाथियोंके कङ्कालसे किसी अंशमें छोटा नहीं।

गजकणा (सं० स्त्री०) गजपिप्पली, गजपोपर।

गजकन्द (सं० पु०) गजो गजदन्त इव। कन्दोऽस्य बहुव्री०। हस्तिकन्दवृक्ष।

गजकर्ण (सं० पु०) गजस्य कर्ण इव कर्णं यस्य बहुव्री०। यक्षविशेष, एक असुरका नाम। (भारत २।१० अ०)

गजकर्णआलू (हिं० पु०) लम्बा कंदवाला अरुवा नामकी लता।

गजकर्णा (सं० स्त्री०) मूलविशेष, एक जड़का नाम। इसका गुण—तिक्त, उष्ण, वात और कफनाशक, स्वादु एवं शीतज्वरविनाशक है। इसके कन्दका गुण—पाण्डु, रोग, कृमि, प्लीहा, और गुल्मरोगनाशक, ग्रहणी, अर्श और विकारघ्न है।

गजकर्णिका (सं० स्त्री०) कर्कटी, कोई ककड़ी।

गजकुमारमुनि—दि० जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध मुनि या ऋषि। इनका जन्म द्वारकामें हुआ था। इनके पिताका नाम वासुदेव और माताका गन्धर्वसेना था। ये बड़े ही वीर पुरुष थे। वासुदेवके राजत्व कालमें पोदनपुरके राजा अपराजितने बहुत ही सिर उठा रक्खा था। वासु-देवने उसको काबूमें लानेके लिए यह प्रसिद्ध किया कि जो कोई अपराजितको पकड़ कर मेरे सामने ला देगा उसे मनचाहा वर मिलेगा। इस पर गजकुमारने ही अपने पितासे अपराजितसे युद्ध करनेकी आज्ञा ली और युद्ध कर उसे पकड़ कर पिताके सामने ले आये। पिताने खुश होकर इनको मनचाहा वर दिया।

वर पाकर राजकुमारका मन अन्यायकी तरफ

दौडा अर्थात् गजकुमार जबरदस्ती अच्छे अच्छे घरोंकी सती स्त्रियोंका सतीत्व नष्ट करने लगे। एक दिन पांसुल सेठकी स्त्री पर इन्होंने दृष्टि डाली और उसे बिगाड भी दिया। सेठको मालूम पडते ही वह क्रोधाग्निसे जल कर उनके विरुद्ध खडा हुआ, परन्तु राजकुमारके सामने उस बेचारेकी कुछ भी न चली। इसी प्रकार जो उनके विरुद्ध खडा होता था, वह जड मूलसे नष्ट हो जाता था।

एक दिन पुण्योदयसे नेमिनाथ भगवान् द्वारकामें आये। बलभद्र, वासुदेव तथा और भी बहुतसे राजेमहाराजे उनकी पूजाके लिए पहुंचे। उनके साथ गजकुमार भी थे। भगवान्‌का उपदेश हुआ। उपदेशका असर गजकुमार पर खूब ही पडा। उन्हें संसारसे घृणा हो गई। अपने किये हुए पापों पर ये बहुत ही पश्चात्ताप करने लगे। उसी समय भगवान्‌के समक्ष उन्होंने दिगम्बरी दीक्षा धारण की और वनमें जा आत्म ध्यानमें लीन हो तप करने लगे।

मुनि होनेका हाल जब पांसुल सेठको मालूम पडा तब वह क्रोधी अपना बदला लेनेके लिये वनमें पहुंचा और उन ध्यानस्थ गजकुमार मुनिके समस्त सन्धिस्थानोंमें लोहेके बडे बडे कीले ठोंक कर चला आया। गजकुमार मुनि पर उपद्रव तो बड़ा ही दुःसह हुआ, पर वे जैनतत्त्वके अच्छे अभ्यासी और विद्वान् थे, इस लिये उन्होंने इस घोर वेदनाको एक कांटे चुभनेके समान भी न समझ बडी शान्ति और धीरताके साथ शरीर छोडा। यहांसे वे स्वर्गमें गये। (आराधनाकथाकोष)

गजकुम्भ (हिं० पु०) हाथीका उभरा हुवा मस्तक, हाथीके माथे पर दोनों ओर उठे हुए भाग।

गजकुसुम (सं० पु०) नागकेशर।

गजकुसुमा (सं० स्त्री०) नागकेशर।

गजकूर्माशिन् (सं० पु०) गज कूर्मौ अश्नाति, अश-णिनि। गरुड। (महाभा०) पक्षिराज गरुडने युध्यमान गजकच्छपको भक्षण किया था, इस लिये इसका नाम 'गजकूर्माशिन्' पडा। गजकच्छपाख्य युद्ध देखो।

गजकृष्णा (सं० स्त्री०) गज इव कृष्णा। गजपिप्पली, बडी पीपर। (भावप्रकाश)

गजकेशर (सं० पु०) नागकेशर, कबावचीनी।

गजकेशरी—उडिसाके केशरीवंशीय एक प्रतापी राजा, बटकेशरीके पुत्र। आपने १२ वर्ष राज्य किया था। उत्कल देखो।

गजकेसर (सं० पु०) एक प्रकारका धान जो अगहन महीनामें तैयार होता है। इसका चावल बहुत दिन तक रहता है।

गजक्रीडित (सं० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका भाव।

गजगति (सं० स्त्री०) १ हाथीकी चाल। २ हाथीकी मन्द चाल (सुलक्षणा स्त्री हाथीकी मन्द चालकी तरह चलती है)। ३ रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रामें शुक्रकी स्थिति। ४ एक वर्णमाला या वर्णवृत्त।

गजगमन (सं० पु०) हाथीकी तरह मन्द गति, वह जो हाथीकी मन्दगति सरीखे चलता हो।

गजगामी (सं० पु०) हाथीकी चालकी तरह चलनेवाला, मन्द गामी।

गजगाह (हिं० पु०) हाथीकी झूल, पाखर।

गजगोहर (फा० पु०) गजमोती, गजमुक्ता।

गजघण्टा (सं० स्त्री०) गजस्य घण्टा ६-तत्। १ हाथीके गलेका घण्टा। २ रङ्गपुर जिलाका एक वाणिज्य-प्रधान नगर। यह अक्षा० २५ ४८´ ४५˝ उ० और देशा० ८८ २०´ पू०में अवस्थित है। यहांसे चूना और पाटकी रफ्तनी अधिक होती है।

गजचक्षु (सं० त्रि०) गजस्येव चक्षुर्यस्य वा गजस्य चक्षुरिव चक्षुर्यस्य इति बहुव्री०। जिसकी आंखें हाथीकी आंखोंकी तरह हो, विस्तचक्षु।

गजचर्म (सं० पु०) १ गजका चमडा। २ एक प्रकारका रोग, जिसमें शरीरका चर्म गजके चमडेकी तरह मोटा और कडा हो जाता है। यह रोग सिर्फ मनुष्य होको नहीं होता किन्तु घोड़ेको भी होता है।

गजचिर्भिट (सं० पु०) गजप्रियचिर्भिट। एक प्रकारका तरबूज।

गजचिर्भिटा (सं० स्त्री०) गजप्रिया चिर्भिटा, मध्यलो०। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन, बडी इन्द्रफला।

गजचिर्भिटी (सं० स्त्री०) गजप्रिया चिर्भिटी। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन।

गजच्छाया (सं० स्त्री०) गजस्य हस्तिनः छाया प्रतिविम्वः, ६-तत्० । १ हाथीकी छाया । २ योगविशेष, यह योग श्राद्धके लिये अच्छा माना जाता है। यह उस समय होता है; जब कृष्णत्रयोदशीके दिन चन्द्रमा मघा नक्षत्रमें और सूर्य हस्ता नक्षत्रमें हो । ३ सूर्यग्रहणकाल । यह समय श्राद्धके लिए प्रशस्त है ।

"सैंहिकेयो यदा भानुं ग्रसते पर्वसन्धिषु ।
गजच्छाया तु सा प्रोक्ता तत्र श्राद्धं प्रकल्पयेत् ।" (वराह)

४ अमावस्याके दिन जिस समय छाया पूर्वमुखी हो उसी कालको गजच्छाया कहते हैं।

"अमावास्यां गते सोमे छाया या प्राङ्मुखी भवेत् ।
गजच्छायेति सा प्रोक्ता तत्र श्राद्धं प्रकल्पयेत् ॥" (मलमासतत्त्व)

गजढक्का (सं० स्त्री०) गजोपरिस्थिता ढक्का । हाथीके ऊपर एक बड़ा ढाक, हाथीके ऊपर रखा हुआ एक बड़ा ढोल ।

गजट (अं० पु०) १ समाचारपत्र । २ भारतीय सरकार अथवा प्रान्तीय सरकारों द्वारा प्रकाशित सामयिक पत्र । उसमें बड़े बड़े कर्मचारियोंकी नियुक्ति, नवीन कानूनोंके मसौदे और भिन्न भिन्न सरकारी विभागोंके जानने योग्य बातें प्रकाशित की जाती हैं ।

गजता (सं० स्त्री०) गजानां समूहः गज-तल् । (गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् । पा ४।२।४३ वार्तिक) हस्तिसमूह, हाथीका झुण्ड ।

गजतुरङ्गविलसित (सं० क्ली०) छन्दोविशेष, इसका दूसरा नाम ऋषभगजविलसित है ।

गजदन्त (सं० पु०) गजस्य दन्ताविव दन्तावस्य, बहुव्री० । १ गणेश । २ नागदन्त, चीजें वगैरह रखनेके लिये दीवारमें लगाये हुए दो खूंटे । ३ दांतके ऊपर जमनेवाला दांत । गजस्य दन्तः, ६-तत् । ४ हाथीदांत । (Ivory)

हाथी दांत पृथिवीका बढ़िया और महंगा पदार्थ है। इससे नाना प्रकारकी बरतने लायक मनोहर और टिकाऊ चीजें बना करती हैं। हाथीकी ऊपरी चौंमें दोनों ओर जो दो तीखे दांत रहते, बढ़ करके सब [illegible]गी गजदन्त बना करते हैं। नीचेकी चौंके [illegible] बढ़ते, हथिनीके दांत भी छोटे ही रहते [illegible] दांत उतने नहीं [illegible] वह [illegible] निकालने या पेड़ काटनेमें जङ्गली हैं। पेड़की छाल[illegible] हाथीके दांत बीच बीचमें टूट जाते हैं। इसीसे वह बहुत बढ़ नहीं सकते। एक बार टूटने पर हाथी दांत फिर भर आते हैं। यह ६ हाथ तक बढ़ते हैं। ऐसे दो दांत तौलमें लगभग ४ मन बैठते हैं। साधारणतः इतने बड़े हाथी दांत देख नहीं पड़ते। ३० सेर या १ मनके हाथी दांत प्रायः देखे जाते हैं। हाथी दांत तिरछा तोड़नेसे भीतरकी गोल गोल रेखाएं देखनेमें आती हैं।

भारतवर्षमें जो हाथी दांत होते, उनसे इस देशका काम नहीं चलता। प्रतिवर्ष अफ्रीकासे इस देशमें हाथी दांत मंगाये जाते हैं। जो हाथीदांत भारतवर्षके कहलाते, अधिकांश आसाम और ब्रह्मदेशसे आते हैं। कहते कि पूर्वकालको आसामके नागा लोग पहाड़ी गांवोंसे हाथी दांत ला करके जङ्गलके बाहर रख देते और अपने आप जङ्गलमें छिप जाते थे। हिन्दू वणिक् वहां पहुंच नागाओंकी प्यारी चीजें बदलेमें रख करके हाथी दांत ले आते थे। वणिकोंके चले जाने पर वनसे निकल नागा वह सारी चीजें उठा करके घर लाते थे। हिन्दुओंका नागाओंके साथ ऐसे ही व्यवसाय वाणिज्य चलता था। हिन्दुओंके गांवमें जा उनसे मिल करके लेन देन करना नागाओंके धर्ममें निषिद्ध है। कह नहीं सकते, वह बात कहां तक ठीक है। नागा बहुत थोड़े हाथी दांत लाया करते हैं। सिङ्गफो और खामती लोग ही यह द्रव्य अधिक परिमाणमें बेचते हैं। प्रतिवर्ष आसामसे मध्य भारतको १०० मनसे भी अधिक हाथीदांत भेजा जाता है।

अफ्रीकासे प्रतिवर्ष प्रायः ५ हजार मन हाथीदांत आता है। जञ्जीबार, मोजाम्बिक और अदनसे ही इसकी ज्यादा आमदनी होती है। यह हाथीदांत पहले बम्बईमें आ करके इकट्ठा होता है। फिर उसका कोई आधा भाग विलायत भेजते हैं। अवशिष्ट इसी देशके व्यवहारको रहता है। अफ्रीकासे बम्बईमें जो हाथीदांत मंगाया जाता, तौलके हिसाबसे बिकता है। बम्बईका सेर २८ रुपये भर है। एक एक हाथीदांत ऐसे सेरसे कोई ४ मन बैठता है। उसका मूल्य २५०) रु० है। दूसरे देशोंको भेजनेसे पहले हाथीदांतको काट करके बम्बईके लोग कई भागोंमें बांट देते हैं। हाथीदांतका अगला

भाग ठोस होता है। काट करके अलग करने पर उसको 'आकाशाश' कहते हैं। यह विलायतको भेजा जाता है। इससे बिलियार्ड खेलनेका गोला बनाते हैं। हाथीदातका विचला भाग पोला रहता, है इसका नाम 'चूड़ीदार' है। चूड़िया बनानेका इसका अधिकांश भारतमें बिकता है। दातका मूलभाग विदेशको प्रेरित होता है। पीले भागकी एक निकृष्ट जाति भी है। उसको 'चीना बाइवरी' कहते हैं। यह चीन देशको भेजा जाता है।

हाथीदातका व्यवसाय दिन दिन घट रहा है। ५० वर्ष पहले बम्बई नगरमें अफ्रीकासे कमसे कम २५००० जोड़ा हाथीदांत आता था। आजकल उसका आधा भी नहीं मगाते। अधिकांश हाथीदांत पहले अफ्रीकाके मध्यवर्ती स्थानसे लाते हैं। फिर वह समुद्रके किनारे जहाजों पर लादा और नाना देशोंको भेजा जाता है।

बहुत पुराने समयसे भारतवर्षमें हाथीदातका कारुकार्य प्रचलित है। बृहत्संहिताके मतमें खाट या पलग बनानेके लिये हाथीदांत जैसी दूसरी चीज नहीं होती। वराहमिहिरने लिखा है कि पलगके पावे हाथीदातके बनाने चाहिये। फिर दूसरा भाग लकड़ीसे बना करके उसके ऊपर हाथीदात जड़ देनेसे भी काम चल सकता है।

राजपूताना, पञ्जाब आदि देशोंमें हिन्दू मुसलमान सभी जातिकी स्त्रियां हाथीदांतकी चूड़िया पहनती हैं। विवाहके समय कन्याका मामा उसको हाथीदातकी चूड़ियां खरीद देता है। सीपकी तरह हाथीदांतकी चूड़ियों पर भी कई रङ्ग चढ़ाते हैं। फिर इन पर अभ्रक आदि चमकीली चीजें भी लगा देते हैं। बड़े घरानेकी स्त्रियां विवाहके पीछे एक वर्ष तक यह चूड़ियां पहने रहतीं, गरीब दुःखी स्त्रियां चिरकाल तक इन्हें नहीं छोड़तीं। राजपूतानेकी रेलवेसे जहा योधपुर जानेकी शाखा फूटी, उसीके पास पाली गांवमें प्रचुर परिमाणसे हाथीदातकी चूड़ियां बनती हैं। हाथीदातकी चूड़ियां नाना प्रकारकी होती हैं। परन्तु साधारणतः यह सीपकी जैसी चूड़ियां दीख पड़ती हैं।

बम्बईमें हाथीदात नाना भागोंमें काट करके देश विदेश भेजा जाता है। बढ़ई ही आरीसे हाथीदांत काटते हैं, इसकी मजदूरी वह नहीं पाते। काटनेमें जो बुकनी निकलती, वही उनको मिलती है। यह बुरादा वह ग्वालोंके हाथ बेंच देते हैं। ग्वालोंको विश्वास है कि गाय भैंसको वह बुकनी खिलानेसे दूध अधिक होता है। मनुष्यके लिये भी गजदन्तका चूर्ण बलकारक औषधोंमें गिना जाता है।

इसके बाद हाथीदात तीन आढ़तोंमें पहुंचता है। फिर वहांसे दूसरी जगहोंको प्रेरित होता है। इन तीनों आढ़तोंका नाम है—पाली, सूरत और अमृतसर। नहरिया सम्प्रदायके माड़वारी हाथीदांतका बड़ा व्यवसाय करते हैं। यह जैन धर्मावलम्बी हैं, हाथीदांत छूनेसे इन्हें महापातक लगता है। इसीसे वह अपने आप हाथीदात नहीं छूते। हाथीदांतको स्पर्श करना, रखना, ढकना, तौलना आदि जो कुछ आवश्यक आता, मुसलमान नौकरोंसे ही करा लिया जाता है। चूड़ियोंको छोड़ करके इस देशमें हाथीदात कंघिया बनानेमें ही अधिक लगता है। कंघियोंकी बड़ी जगह दिल्ली और अमृतसर है। कंघियां बना करके जो हाथीदात बचता, दूसरे लोग खरीद करके ले जाते हैं। वह उस हाथीदांतकी पत्तियां सन्दूक आदि लकड़ीकी चीजोंमें जड़ देते हैं। मुलतान, डेराइस्माइल खां, होशियारपुर, स्यालकोट, सूरत, बङ्गलोर, विशाखपत्तन प्रभृति स्थानोंमें हाथीदांतसे जड़ी लकड़ीकी ऐसी ही बहुत सुन्दर चीजें तैयार होती हैं।

मुर्शिदाबादमें केवल गजदन्तसे प्रस्तुत होनेवाले द्रव्य बहुत अच्छे होते हैं। ऐसा अच्छा कार गरो और कहीं देख नहीं पड़ती। मुर्शिदाबादके कारीगर हाथीदांतसे दुर्गाकी मूर्ति, कालीकी प्रतिमा, हाथी, गाड़ी, मोरपङ्ख, नाव आदि बहुतसी चीजें बनाते हैं। गया, डुमरांव, दरभङ्गा, कटक, रङ्गपुर, वर्धमान, चट्टग्राम, ढाका, पटना आदि स्थानोंमें भी गजदन्तके द्रव्य मिलते हैं। हाथीदांतके बारीक रेशे उतार करके चामरी तैयार करते हैं। फिर उसे बुन करके चटाई भी बनायी जा सकती है। पहले समयमें श्रीहट्टमें हाथीदातकी बहुतसी चटाइयां बनती थीं। ऐसी चटाइयोंका

मूल्य हजारों रुपया होता है। काशीके महाराजने शिल्प-कारोंसे हाथीदांतका एक बग्गी और तख्तपोश [illegible] घाट बनवाया था। महाराजके महलमें और भी कितने ही हाथीदांतकी चीजें रखी हैं। [illegible] हाथीदांतसे बनी है

त्रिवाङ्कुड़के महाराजको हाथीदांतकी चीजें बहुत प्यारी थीं। इस प्रदेशमें जङ्गली हाथी बहुत हैं और हाथीदांत भी मिला करता है। त्रिवाङ्कुड़में आज भी गजदन्तके नाना प्रकार द्रव्य प्रस्तुत होते हैं। ब्रह्मदेशमें भी हाथीदांतकी चीजें बनानेमें बड़े होशियार हैं। वह हाथीदांतका तीन भाग अलग उतार लेते और उसके ऊपरी और बेल बूटे बना देते हैं। फिर इन्हीं बेल बूटोंके बीचसे भीतरका हाथी दांत खुरच खुरच निका-लते हैं। बाहरी बेल बूटोंकी सजावट और भीतरी जाली जैसे बन जाते हैं। इन्हीं छेदोंसे भीतरको औजार चलते हैं। खुरचते खुरचते जब औजार हाथीदांतके बीचमें पहुंचते, उसे काट करके बुद्धदेवकी एक मूर्ति निकालते हैं। बादको ही पूरी मूर्ति बन जाती है। हाथीदांतकी पत्ते जैसा फाड़के उस पर नाना रूप चित्र अङ्कित किये जा सकते हैं। दिल्ली ही इस कामकी बड़ी जगह है। मुसलमान बादशाहों और नूरजहांन् प्रभृति बेगमोंकी सूरतें हाथीदांत पर उतार करके बेचते हैं। कुछ मुसलमान चित्रकार इसी काममें लगे रहते हैं।

युरोपमें जब हाथीदांत जाने लगा, वहांके लोग भी इससे बहुतसा कारुकार्य बनाने लगे। यूनान देशमें गजदन्तनिर्मित प्राचीन मनुष्य मूर्ति और पुस्तक आज भी वर्तमान है। फ्रान्स देशके पेरिस नगरके पुस्तका-लयमें ऐसी ही एक पुस्तक रखी है। वह १२२० वर्ष पहले निर्मित और लिखित हुआ था इसके पत्र १५ इञ्च लम्बे और ६ इञ्च चौड़े हैं। पुस्तक देखनेसे मालूम होता है कि उस समयके लोग हाथीदांतको फैलाना, बराबर करना, बढ़ाना या घटाना जानते थे, अब वह कारीगरी नहीं रही। थियोफिलास नामक किसी पुराने विद्वान्ने लिखा है कि हाथीदांत खार, नमक, गन्धकके तेजाब और सिरकेमें भिगो कर रखनेसे मोम-[illegible] हो जाता है। [illegible] हाथीदांत [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] हाथीदांतके [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

गजदन्तफला (सं॰ स्त्री॰) [illegible] [illegible] [illegible]

गजदन्तमय (सं॰ त्रि॰) [illegible] [illegible] गजदन्त निर्मित, जो हाथीदांतसे बना हो।

गजदान (सं॰ पु॰) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

गजद्रुम (सं॰ पु॰) नन्दवृक्ष, बालिया पीपल। [illegible]

गजनवा (फा॰ वि॰) गजन [illegible] [illegible], गजनी नगरमें रहता हो।

गजनवीपुर—युक्तप्रदेशके महमूदाबाद सरकारके अन्तर्गत एक महल।

गजनाम (फ़ि॰ स्त्री॰) एक प्रकारकी तौल जो प्राचीन समयमें काशीमें माना जाता था।

गजनासा (सं॰ स्त्री॰) गजस्यनासा ६-तत्, हाथीकी सूंड़।

गजनी—अफगानस्तानका एक नगर। यह अक्षा॰ ३३° ३४´ उ॰ और देशा॰ ६८° १८´ पूर्वमें काबुलसे ८२॥ कोस दूर गजना नदीके बाईं ओर समुद्रपृष्ठसे ७७५० हाथ ऊंचे अवस्थित है।

शहर चौकोर है। इसके बीचमें एक सुदृढ़ दुर्ग बना है। डेढ़ कोस तक चहारदीवारी लगी है। यहां सबको कोई ३॥ हजार घर हैं। अधिवासियोंमें अफगान ज्यादे और कुछ हिन्दू दूकानदार भी हैं। गजनीमें कार्तिक-माससे फाल्गुन तक बर्फ गिरता है।

यह नगर बहुत पुराना है। किसी समय यहां बहुतसे लोग रहते और मजेमें अपना गुजर करते थे। गजनीकी पश्चिम ओर तरनाक उपत्यकासे मोस्तानके नगरों और गांवोंका जो ध्वंसावशेष मिलता, इसको प्राचीन समृद्धिशालिताका निदर्शन ठहरता है।

जैसलमेरका इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता कि विक्रमादित्यके आविर्भावसे बहुत पहले यादव लोग गजनीसे समरकन्द तक सारे भूभागमें राजत्व करते थे। कर्नल टाड साहबने विलायतकी रायल एशियाटिक सोसाइटीको हिन्दुओंका एक मानचित्र (नकशा) दिया था। उसमें 'गजनि वन' अर्थात् हाथियोंके जङ्गल नामसे निर्दिष्ट है। बहुतोंके मतमें हिन्दू राजाओंने ही यह नगर बसाया था। फिर कोई कोई कहता कि गजनीमें ही सस्कृत शास्त्रोक्त यवनराज रहता था। टलेमिने 'ओज़ोला (Ozola) और क्रिसोकोकसने सबल या जबल (Sibal or Zibal) नामसे इसका उल्लेख किया है।

८७३ ई०को अलप्तगीनने बोखारेसे आ करके यहां राजधानी लगायी थी। उन्होंके उत्तराधिकारी सुबक्तगीन रहे। इन्हींके पिता सुलतान महमूदने हिन्दुस्थान जीता था। महमूदके शासनकालको गजनीका राज्य पूर्वको गङ्गा, पश्चिम ताइग्रीस नदी, उत्तर आक्सस और दक्षिणको भारतमहासागरके उपकूल तक फैला था। ११५१ ई०को अलाउद्दीन गोरीने गजनी नगर आक्रमण किया। उस समय हजारों बाशिन्दे उनके निष्ठुर अत्याचारसे मारे गये। फिर अरबोंका गजनीमें राज्यशासन हुआ। इ० १३वीं और १५वीं शताब्दीको तातार लोगोंके दारुण दौरात्म्यसे गजनी शहर धूलमें मिल गया था।

१८३८ ई० २२ जुलाई और १८४१ ई०को भी अंगरेजोंके अधीन भारत सेनाने गजनी नगर आक्रमण किया। फिर १८८० ई०को ब्रटिश सेना इस पर परिचालित हुई। अफगानस्तान और भारत आने जानेके लिये यहां चार बडी राहें हैं। नगरकी चारों ओर जमीन खूब उपजाऊ है। वहां अङ्गूर, तम्बाकू, कपास आदि खूब होती है।

शहरकी दोनों तर्फ सुलतान महमूदके दो मीनार हैं। यह ईंटसे बनाये गये हैं। इनकी कारीगरी बहुत अच्छी है। दोनोंमें एक मीनार कोई ८४ हाथ ऊंचा होगा।

गजपति (सं० पु०) गजस्य पति ६ तत्। १ श्रेष्ठ गज बढ़िया हाथी। २ अत्युच्च हस्ती, बहुत बडा हाथी। "गजपति द्वयसी रपि हैमन। (माघ) ३ उत्कल और कलिङ्ग देशके राजाओंकी उपाधि। अन्ध्र, और बेङ्गी देशके बौद्ध राजगण समय समय पर इस उपाधिको धारण करते रहे। वर्तमान समयमें केवल उत्तर सरकारके एक राजा "राजा गजपति राव' की उपाधिसे विद्यमान हैं। ४ वह राजा जिसके पास बहुतसे हाथी हों।

गजपतिनगर, मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलाके अन्तर्गत एक तहसील। यह अक्षा० १८° ११' तथा १८° ३०' उ० और देशा० ८३° ३' एवं ८३° ३२' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ३३३ वर्गमील है। इसमें २२८ ग्राम लगते हैं। लोकसंख्या प्राय १३४११३ है। तहसीलको समस्त पार्वतीय चीजें यहां लाकर बेची जाती हैं। इस तहसीलमें फौजदारी अदालत, रजिष्टरी आफिस, डाकघर और औषधालय है।

गजपति वीरनारायणदेव—एक संस्कृत ग्रन्थकार। यह पद्मनाभके पुत्र तथा कविरत्न पुरुषोत्तममिश्रके शिष्य थे। इन्होंने अलङ्कारचन्द्रिका और सङ्गीतनारायण ग्रन्थकी रचना की थी।

गजपन्था—जैनियोंका सिद्धक्षेत्र। यह नासिक शहरसे करीब चार माइल दूरी पर अवस्थित है। यहां आधा माइल ऊंचा एक पर्वत है। जिस पर कि दो गुफा, दो कुण्ड और पहाड़के पत्थरोंसे बनो हुई तीर्थंकरोंकी अनेक मूर्तियां विराजमान हैं। पर्वत पर चढ़नेके लिये सीढ़ी भी बनी हुई हैं। इस पर्वतसे बलभद्र आदि आठ करोड मुनीश्वर मोक्ष गये हैं। (तीर्थ श्राव। ११)

गजपांव (हिं० पु०) जलपक्षीविशेष। इसके पैर लाल, सिर, गरदन, पीठ और डैने काले तथा शेष अंग सफेद होते हैं। जाडेके दिनोंमें यह हिन्दुस्तानके ठण्ढे मैदानमें चला जाता है। मादा एक बार तीन या चार अण्डे देती है।

गजपादप (सं० पु०) गजप्रिय पादप। स्थालीवृक्ष, बेलिया पीपल।

गजपाल (सं० पु०) महावत, हाथीवान, वह जो हाथीको चलाता हो।

गजपिप्पली (सं० स्त्री०) गजपूर्वा, गजप्रिया वा पिप्पली। पिप्पलीविशेष, एक तरहकी पीपर। इसका पर्याय—करिपिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिल्लिका, श्रेयसी, वसिर, गजाह्वा, कोलवल्ली, इभोषणा, चव्यजा, छिद्रविदेही, दीर्घग्रन्थी, तजसी, वर्त्तूल और स्थूल वैदेही है।

यह मंझोले आकारका एक पौधा है। इसकी पत्तियां चौड़ी होती है। किनारे पर लहरिया नोकीला कटाव होता है। इसमें दो या तीन पत्तोंके बाद एक पतला सीका निकलता है। इसके सिरे पर प्रायः एक इंचकी मोटी मंजरी छोटे छोटे फूलके साथ निकलती है। यही मंजरी सुखाने पर औषधके काममें बाजारमें बिकती है। इसका गुण-कटु, उष्ण, वातनाशक, स्तनकर्णवृद्धिकर तथा वेदना और मलनाशक है। भावप्रकाशके मतसे इसके फलका नाम गजपिप्पली है। इसका गुण—कटु, वात, कफनाशक, अग्निवृद्धिकारी, अतिसार, श्वास, किण्ठरोग और कृमिनाशक है।

गजपीपर (हिं० स्त्री०) गजपिप्पली देखो।

गजपीपल (हिं० स्त्री०) गजपिप्पली देखो।

गजपुङ्गव (सं० पु०) बड़ा और सुन्दर हाथी।

गजपुट (सं० पु०) गजाह्वयः पुटः शाकपार्थिववत्समासः। गर्तविशेष, एक तरहका गड्ढा। यह औषध पाक और लौहमारण प्रभृति कार्यके लिये उपयोगी है। कोई वैद्यक एक हाथ गहरा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ लम्बा गर्तको गजपुट कहते हैं।

"हस्तप्रमाणो गर्तो यः पुटः स तु गजाह्वयः।" (वैद्यक)

भावप्रकाशके मतसे सवा हाथ लम्बा, सवा हाथ चौड़ा और सवा हाथ गहरा-गर्त्तको गजपुट कहते हैं। ऐसा गर्त प्रस्तुत कर उसमें पांच सौ बिनुए कण्डे बिछा कर मध्यमें जिस औषधको रखना होता है, उसे रख कर उपरसे फिर ५०० कण्डे देकर गर्तके मुख पर चारो तरफसे मिट्टी डाल देते है। सिर्फ थोड़ी जगह मध्यमें खुली छोड़ दी जाती है और तब उसमें आग लगा देते हैं, गजपुट इसी प्रणालीसे पाक होता है। सब प्रकारके पुटोंसे गजपुट श्रेष्ठ है। (भावप्र० पूर्व्व० २रा भाग)

गजपुर (सं० क्ली०) गजस्य हस्तिनाम नृपस्य पुरं ६-तत्। युधिष्ठिरको राजधानी हस्तिनापुर।

"स निर्ययौ गजपुरायाग्रकैः परिवारितः।" (भारत अनु० १६७ अ०)

गजपुष्पी (सं० स्त्री०) गजस्तन्मद इव गन्धयुत पुष्पमस्याः बहुव्रो० ततो ङीप्। नागपुष्पलता, नागदौन।

"ततो गिरितटे जातामारुह्य मुदुरामदाम्।
लक्ष्मणो गजपुष्पीं तां तस्य कण्ठे समासजत् ॥" (रामा० ४।१२।३९)

गजप्रिया (सं० स्त्री०) गजस्य प्रिया, ६-तत्। शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।

गजब (अ० पु०) क्रोध, कोप, विलक्षण, अपूर्व, अन्याय।

गजवदन (सं० पु०) गणेश।

गजबन्ध (सं० पु०) एक प्रकारका चित्रकाव्य। इसमें किसी कविताके अक्षरोंकी हाथीका आकार बना कर उसके अङ्ग प्रत्यङ्गको परिपूर्ण कर देते हैं।

गजबन्धनी (सं० स्त्री०) गजा बध्यन्ते ऽत्र बन्ध-ल्युट् ङीप् च। हाथी बांधनेका स्थान, हाथीशाला। इसका पर्याय वारी, वारि और प्रारब्धि है।

गजबन्धिनी (सं० स्त्री०) गजस्य बन्धोऽस्त्यत्र, गजबन्ध-इनि-ङीप्। गजशाला, वह स्थान जहां हाथी रखा जाता हो।

गजबला (सं० स्त्री०) गोरक्षी, एक प्रकारकी बड़ी झाड़ी।

गजबाग (हिं० पु०) हाथीका अङ्कुश।

गजवीथी (सं० स्त्री०) रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्राके समूहका नाम जिसके मध्य होकर शुक्र गमन करे।

गजबेलि (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका लोहा।

गजभक्षक (सं० पु०) गजो भक्षकोऽस्य बहुव्रो०। पीपल वृक्ष, पीपलका पेड़।

गजभक्षा (सं० स्त्री०) भक्ष्यतेऽसौ भक्ष-णिच् कर्मणि अप् ततः टाप्। शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़। (शब्दरत्नावली)

गजभक्ष्या (सं० स्त्री०) गजेन भक्ष्या, ३-तत्। शल्लकी वृक्ष। (अमर)

गजमणि (सं० पु०-स्त्री०) गजमुक्ता, गजमोती।

गजमण्डन (सं० क्ली०) गजस्य मण्डनं, ६-तत्। हस्तिभूषण, हाथीका अलङ्कार।

गजमण्डली (सं० स्त्री०) गजानाम् मण्डली वेष्टनाकारपरिधि, ६-तत्। १ हाथीकी वेष्टनाकार परिधि। २ हस्तिसमूह।

गजमद (सं० क्ली०) हाथीका मद।

गजमदहरणी (सं० स्त्री०) प्रियलिङ्गिनीलता, पञ्च गुरिया।

गजमल्ल—कपूरमल्लका लड़का। इनके पुत्रका नाम कल्याणमल्ल था।

गजमाचल (सं० पु० स्त्री०) गजस्य माचम् शाठाम् लुनाति लू बाहुलकात् ड। सिंह। स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होनेसे गजमाचली होता है।

गजमात्र (सं० त्रि०) गजेन परिमाणमस्य गज मात्रच्। गजपरिमित, हाथी आकारका।

गजमुक्ता (सं० स्त्री०) गजे गजकुम्भे जाता मुक्ता। एक प्रकारको मुक्ता वा मोती जो हस्तीके मस्तकमें पायी जाती है। प्राचीन आर्यगण गज, मेघ, वराह, शङ्ख, मत्स्य, सर्प, शुक्ति और वेण इन आठोंमें मुक्ताका उत्पत्ति-स्थान बतलाते हैं।

'करीन्द्रजीमूतवराहशङ्खमत्स्याहिशुक्त्युद्भववेणुजानि।
मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषान्तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि॥"
(कुमारगीका—अङ्गिरात)

आधुनिक वैज्ञानिक हस्तिकुम्भसे मुक्ताका निकलना स्वीकार नहीं करते क्योंकि आजतक इन्होंने गज कुम्भमें मुक्ता देखी ही नहीं है।

गजमुख (सं० पु० क्ली०) गजस्य मुख मुखमस्य बहुव्री०। १ गणेश। गजानन देखो।

"प्रमथाधिपो गजमुखः।" (हलाo पूर्वख०)

(क्ली०) गजस्य मुखं, ६ तत्। २ हाथीका मुख।

गजमोचन (सं० पु०) विष्णु भगवान्‌का एक आकार, जिसे धारण कर उन्होंने गजको वराहसे बचाया था।

गजमोटन (सं० पु० स्त्री०) गजम् मोटयति पीडयति गज-मुट णिच् ल्यु। सिंह। स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होनेसे गजमोटनी शब्द होता है।

गजमौक्तिक (सं० क्ली०) मुक्ता एव मुक्ता स्वार्थे कन्। गजमुक्ता, गजमोती।

"गजमौक्तिका वलिदुहित वनम।" (विराट १२।४१)

गजर (फा० पु०) पहर पहर पर घण्टा बजनेका शब्द, पारा।

गजरथ (सं० पु०) हाथीके खींचनेका रथ। प्राचीन समयमें राजा इस पर चढ़ कर लड़ाईमें जाते थे।

गजरप्रबन्ध (सं० पु०) स्वर और बाजाका मिलान। यह गायन और नृत्यके आरम्भमें श्रोताओंके सामने सुनाया जाता है।

गजरबजर (हि० पु०) अडबड, घाल मेल।

गजरा (हि० पु०) १ गाजरके पत्ते, जो चौपायोंको खिलाये जाते हैं। २ फूलकी माला।

गजराज (सं० पु०) बड़ा हाथी।

गजराज उपाध्याय—बनारसके एक हिन्दी कवि। १८१७ ई०को इन्होंने जन्म लिया था इन्होंने वृत्तहार नामक एक काव्य और एक रामायणको लिखा है।

गजरी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका आभूषण, जिसे स्त्रियां कलाईमें पहनती हैं।

गजरौट (हि० स्त्री०) गाजरकी पत्ती।

गजल (फा० पु०) एक फारसी और उर्दू में शृङ्गार रसको कविता। इसमें प्रेमियों और प्रेमिकाका विरह वर्णित रहता है।

गजलण्ड (सं० क्ली०) गजस्य लण्डम, ६ तत्। हाथीका लाद। (अमर)

गजलील (हि० पु०) एक तालभेद। जिसमें चार लघुमात्रा और अन्तमें विराम होता है।

गजवत् (सं० त्रि०) गजोऽस्त्यस्य गज मतुप् मस्य व। गज विशिष्ट, जिसमें हाथी रखा जाता हो।

गजवदन (सं० पु० क्ली०) गजस्य वदनम् यस्य, बहुव्री०। १ गणेश। गजस्य वदनम्, ६-तत्। २ हाथीका मुख।

गजवल्लभा (सं० स्त्री०) गजस्य वल्लभा, ६ तत्। १ गिरि कदली, पहाड़ी केला। २ शल्लकी वृक्ष, सलईका पेड़।
(राजनि०)

गजवान (हि० पु०) महावत, हाथीवान।

गजवाजिप्रिया (सं० स्त्री०) कद्दू, लौकी लौवा।

गजवीथी (सं० स्त्री०) रोहिणी, आर्द्रा और मृगशिरा नक्षत्रोंको गजवीथी कहते हैं। नक्षत्र देखो। गजस्य वीथी, ६ तत्। २ हाथीका पंक्ति, हाथीका कतार।

गजवोड़—मानभूमस्थ एक गिरिशृङ्ग। इसका दूसरा नाम गड्डावाड़ी है।

गजव्रज (सं० त्रि०) हस्तीवत् भ्रमणशील, हाथीकी तरह चलना।

है—पूर्वकालको द्रविड़ देशमें पाण्ड्यवंशीय इन्द्रद्युम्न नामक कोई प्रवल पराक्रान्त विष्णुभक्त राजा रहे। किसी दिन नरपति एकाग्रचित्तसे हरिकी आराधना करते थे, उसी समय अगस्त्य मुनि वहां जा पहुंचे। राजाने उनको लक्ष्य न किया, अपनी मानसिक आराधनामें ही लगे रहे। इस पर मुनिको राग लगा। उन्होंने राजाको पुकार करके कहा था—नराधम! तूने ब्राह्मणका अपमान किया है, इसके फलसे तुझे कुञ्जरयोनि प्राप्त होगी। मुनिका वाक्य मिथ्या न निकला। कुछ दिन पीछे ही राजाको हाथीका शरीर धारण करना पड़ा। मृत्युकालको भी उनकी हरिभक्तिका ह्रास न होनेसे पूर्व-जन्मकी सकल कथा उन्हें स्मरण रही। नरपति इन्द्रद्युम्न हाथी हो करके वन वन घूमने लगे। दैवात् किसी दिन वह चित्रकूट पर्वतमें जा करके पहुंचे थे। इस पर्वतमें वरुणोद्यान नामक एक मनोहर उपवन है। राजाके उसी उपवनमें जा करके स्नान करनेको सरोवर अवगाहन करने पर एक कुम्भीरने उनको आक्रमण किया था। उनके सहचर अपर मातङ्ग उनकी साहाय्य पहुंचाने लगे और वह भी कुम्भीरसे खूब लड़े; किन्तु किसी क्रमसे उस महावल कुम्भीरको पराजित कर न सके। इन्द्रद्युम्नने अन्य उपाय न देख करके विष्णुका स्तव किया था। उनके स्तवसे सन्तुष्ट हो विष्णुने जा करके उनकी रक्षा की। राजा उसी दिन शापसे भी मुक्त हो गये। विष्णुने राजाके प्रति सन्तुष्ट हो करके और एक वर दिया था—तुमने जिस स्तवसे हमें सन्तुष्ट किया है, उसको पढ़नेवाला कोई भी व्यक्ति ऐहिक कीर्ति पावेगा, उसका दुःस्वप्नदोष दूर हो जावेगा, दुःख उसके पास न पहुंच पावेगा और परमको यह स्वर्गमें जा करके आनन्द उड़ावेगा। प्रातःकाल उठ करके जो इस गजकृत विष्णुस्तवको पाठ करता, उसकी वुद्धि कभी कलुषित नहीं होती। भागवतके ८म स्कन्ध ४र्थ अध्यायमें उक्त स्तव लिखित हुआ है।

गजेन्द्रकर्ण (सं० पु०) गजेन्द्र इव कर्णौ यस्य। शिव, महादेव।

गजेन्द्रगड़—वम्बई प्रदेशके धारवार जलामें रोन तालुकका एक शहर। यह अक्षा० ४४ उ० और देशा० ७५ ५८ पु० पर कलादगीसे ५१ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ८८५३ है।

महावीर शिवाजीने इस स्थान पर गजेन्द्रगढ़ नामका एक दुर्ग निर्माण किया था, इसी कारण इस नगरका नाम गजेन्द्रगढ़ पड़ा। यहां विरूपाक्षदेवका प्राचीन मन्दिर है और नगरके बाहर दुर्गा, रामलिङ्ग, रामसीता और पाण्डुरङ्ग प्रभृति देवताओंके मन्दिर अवस्थित हैं।

गढ़के निकट ही पहाड़की ओर एक शिवतीर्थ विद्यमान है जहां अनेक यात्री आकर ठहरते हैं। पहाड़के ऊपर वहुतसे तीर्थ और शिवालय हैं जिनमेंसे वीरभद्रका मन्दिर और पातालगङ्गा तीर्थ प्रधान हैं। पातालगङ्गाके पार्श्व होमें नन्दी मूर्ति है। वहुतसी वन्ध्या-स्त्रियां संतानके लिये नन्दीकी पूजा करने आती हैं।

गजेन्द्रगुरु (सं० पु०) सङ्गीतमें रुद्रतालका एक भेद।

गजेन्द्रनाथ (सं० पु०) हाथियोंमें श्रेष्ठ।

गजेन्द्रमोक्षण (सं० क्ली०) १ वामनपुराणके किसी भागकी आख्या। २ महाभारतके किसी भागका नाम।

गजेन्द्रविक्रम (सं० पु०) गजेन्द्र इव विक्रमो यस्य, वहुव्रो०। हाथोके सदृश पराक्रमी, वह जो हाथी सरीखे वलवान हो।

गजेर—भरोच जिलाका एक शहर। यह जंबुसरसे लगभग ६ मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। इसमें १३४८ घर और प्रायः ४०३७ मनुष्य वास करते हैं।

गजेष्टा (सं० स्त्री०) गजानामिष्टा, ६-तत्। भूमिकुष्माण्ड, विलाइकन्द।

गज्जल (हिं० पु०) अञ्जीर

गजोदर (सं० पु०) गजस्य उदरमिवमुदरमस्य, वहुव्रो०। दैत्यविशेष, एक असुरका नाम।

गजोपकुल्या (सं० स्त्री०) गजप्रिया उपकुल्या पिप्पली। मध्यपदलो०। गजपिप्पली, गजपीपर, वड़ी पीपर।
(भैषज्यरत्नावली)

गजोषणा (सं० स्त्री०) गजोपपदा उषणा। गजपिप्पली, गजपीपर। (राजनि०)

गज्भा (हिं० पु०) १ वुलवुलोंका समूह। जो पानी, दूध या किसी तरल पदार्थमें उत्पन्न हो। गाज। २ खजाना, कोश। ३ संपत्ति, दौलत, धन।

गञ्ज (सं० पु०) गजि घञ्। १ अवज्ञा, अपमान, अनादर। २ भाण्डागार, कोष, खजाना। ३ खान। ४ गोष्ठगृह, गोशाला, वह स्थान जहां मवेशी रहते हैं।

गञ्जगदन—बङ्गालमें सार्वकावाट सरकारके अधीन एक महल। (आइन ई अकबरी)

गञ्जभैरव—बम्बई प्रदेशके अहमदनगर जिलाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह 'गञ्जिभैरो' नामसे मशहूर है। यहां हेमाडपन्थियोंका एक बृहत् शिवमन्दिर और इस के निकट बहुतसे प्राचीन ध्वंसावशेष पड़े हैं।

गञ्जन (सं० त्रि०) गजि णिच् ल्यु। १ तिरस्कार, निन्दा।
"नेत्रे खञ्जनगञ्जने सरसिज प्रत्यर्थि पाणिद्वयम्।" (साहित्यद०)
(क्ली०) २ गञ्ज भावे ल्युट्। तिरस्कार, अनादर, निन्दा।

गञ्जवर (सं० पु०) कोषाध्यक्ष, खजानची।

गञ्जा (सं० स्त्री०) गञ्ज टाप्। १ हाट लगनेका स्थान, वह स्थान जहां बाजार लगता हो। २ मद्यभाण्ड, शराब रखने का बरतन। ३ मदिरागृह, शराबकी दुकान। ४ विजया, गांजा। ५ वह स्थान जहां चावल, धान रखा जाता हो, ठेक।

गञ्जाम—मन्द्राज प्रदेशका उत्तर जिला। यह बङ्गाल की खाड़ी किनारे अक्षा० १८° १२´ तथा २०° २६´ उ० और देशा० ८३° ३०´ एवं ८५° १२´ पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ८३७२ वर्गमील है। गञ्जाम शब्दका अर्थ 'सबका भण्डार' है। देखनेमें यह तिकोना लगता है। इसके उत्तर उड़ीसा और देशी राज्य, पूर्व समुद्र और पश्चिमको विशागापटम् जिला है। गञ्जामका अधिकांश पहाड़ी और पथरीला है। परन्तु बीच बीचमें उपत्यकाएं और उपजाऊ मैदान आ गये हैं। यह मन्द्राजका सबसे सुहावना जिला है। जङ्गली पहाड़ों और घने पेड़ोंकी शोभा देखते ही बनती है।

पूर्वघाट पहाड़ गञ्जाममें उत्तरसे दक्षिण तक चला गया है। शृङ्गराज और महेन्द्रगिरिकी चोटियां समुद्रपृष्ठसे प्राय ५००० फुट ऊंची हैं। वस्माकिमेडि के पीछे दक्षिणको देवगिरि ४९७५ फुट तक उठा है। यह पहाड़ गञ्जाम जिलेको पहाड़ी और मैदानी दो भागोंमें बांट देते हैं। पहाड़ी भागको गञ्जामकी एजेन्सी भी कहते हैं। यहांके अधिवासी जङ्गली हैं और कानून के मुताबिक न चलनेसे उनका शासन एक विशेष कलेक्टर द्वारा किया जाता, जो गवर्नरका एजेण्ट कह लाता है। उनके मुकदमोंकी अपील हाईकोर्ट और सकौन्सिल गवर्नरको की जाती है।

गञ्जाम असली झीलें नहीं हैं। परन्तु समुद्र किनारे और कभी कभी भीतरी भागमें भी जो बड़े बड़े तालाब मीठे और खारी पानीसे भर जाते, सागरम् कहलाते हैं। इनमें सबसे बड़ा चिलका झील उत्तर सीमा पर अवस्थित है।

इस जिलेको ऋषिकुल्या, वंशधारा और लाङ्गुल्या तीनों प्रधान नदियोंसे सिंचाईका काम लिया जाता है। यह पूर्वको खाड़ीमें जा कर गिरती हैं। महानदी और गोदावरी ऋषिकुल्याकी सहायक नदियां हैं। लाङ्गुल्या पर चिकाकोलके पास एक बढ़िया पुल बंधा है।

गञ्जाम मन्द्राज प्रदेशका एक आर्द्र प्रदेश है। यहां भालू और लगड़बग्घे साधारणतः देख पड़ते और भेड़िये, तेंदुए और चीते भी मिलते हैं। *पहाड़ियोंके उतारमें कई प्रकार हरिण और नीलगायें पायी जाती हैं। जङ्गली भैंसे और जङ्गली सूअर बहुत कम हैं। जङ्गली कुत्ते शिकारमें आफत डाल देते हैं। गञ्जाम-का जलवायु ज्वरप्रद है। यहां जाड़ा बहुत कम पड़ता और पानी खूब बरसता है

ऐतिहासिक दृष्टिसे गञ्जाम प्राचीन कलिङ्गका एक भाग रहा। परन्तु कभी कभी वेंगी राज्य इसका दक्षिण प्रान्त दबा लेता था। ई०से २६० वर्ष पूर्व मौर्य सम्राट् अशोकने इसको विजय किया था। फिर सम्भवतः यह वेंगीवाले आन्ध्र नृपतियोंके हाथ लगा। यह दोनों राज वंश बौद्ध रहे। जौगड़में अशोक अपना एक राजशासन पत्थर छोड़ गये हैं। ई० तीसरी शताब्दीको आन्ध्र इस प्रान्तसे दूरीभूत हुए और कलिङ्गके गाङ्गराज उनके स्थान पर आ बैठे ई० १०वीं शताब्दीके अन्त और ११वीं शताब्दीके आरम्भको चोलोंने वेंगी और कलिङ्गके साथ गञ्जामका भी कुछ भाग जीता था। महाराज राजेन्द्र० चोल महेन्द्रगिरि पर अपने विजयके लेखप्रमाण छोड़ गये हैं। फिर गाङ्ग राजाओंने ४ शताब्दियों तक यहां

राजत्व किया। १५वीं शताब्दीको उड़ीसाके गजपति वंशीय किसी मन्त्रीने अपने प्रभुको वध करके सिंहासन छीना था। प्रायः १५७१ ई०को गोलकुण्डाके कुतुबशाही घरानेने गजपतियोंको मार भगाया और १८० वर्ष तक चिकाकोलसे मुसलमान गञ्जाम शासन करते रहे। शहर-में मुसलमानोंकी एक मसजिद बनी है।

१६८७ ई०को बादशाह औरङ्गजेबने गोलकुण्डाको अपना राजत्व स्वीकार करने पर बाध्य किया था। फिर उनके दक्षिणी सूबेदार चिकाकोलके शासकोंको नियुक्त करते रहे। १७५३ ई०को इन्हीं दो सूबेदारोंकी सेवा करनेके पुरस्कारमें फरासीसियोंने चिकाकोलकी सरकार पायी, जिसमें वर्तमान जिला भी मिला था। १७७१ ई०को डी बुसी यहां शासन स्थापित करने आये थे, परन्तु दूसरे ही वर्ष लालीने उन्हें दक्षिणकी ओर मन्द्राज-के घेरेमें सहायता करनेको बुला लिया। उनके जाने पर ही क्लाइवने कर्नल फोर्डको दक्षिणकी ओर बङ्गालकी फौजके साथ भेजा था। १७५८ ई० जनवरी मासको उन्होंने डी० बुसीके उत्तराधिकारीको हरा फरासीसी सदर मसूली-पटम अधिकार कर लिया। इस पर दक्षिणके सूबेदारोंने फोर्डसे सन्धि की कि वह फरासीसियोंको कभी उन भागोंमें फिर बसने न देंगे। १७६५ ई०को एक फरमानके द्वारा शाह आलमने इस सन्धिको स्वीकार किया था। १७६६ ई०को सूबेदारसे दूसरी सन्धि भी हुई। इसी प्रकार अंगरेजोंने सारी उत्तर सरकार पायी थी।

परन्तु गञ्जाममें शान्ति स्थापित करते ७० वर्ष लग गये। १८०३ ई०को परलाकिमेदि जमीन्दारीके साथ चिकाकोल विभाग इसमें मिला था। १८१६ ई०को चार पांच सौ पिण्डारी जयपूरसे आ इस जिलेमें घुसे और सारे जिलेको लूटा और जला डाला।

१८३२ ई०को बिसोइयोंके अत्याचारसे इस जिलेमें कड़ा कानून लगा था। बिसोई और उनके किले एक एक करके पकड़े और छीने गये। कुछ लोगोंको फांसी और कालापानी होनेसे देशमें शान्ति विराजने लगी। १८३६ ई०को गुमसुरमें भी यही नीति चलनेसे फिर कोई झगड़ा नहीं हुआ और नरबलिकी प्रथा भी उठ गयी।

जौगड़में अशोकके राजशासन पत्रके सिवा जिलेमें बहुत पुराने मन्दिर खड़े हैं। उनकी बनावट, कारीगरी और शिलाफलकोंसे कलिङ्गका प्राचीन इतिहास खुलता है। मोखलिङ्गम्का विष्णुमन्दिर और महालिङ्गम्का शिवालय देखने योग्य है।

इस जिलेमें कोई ८ नगर और ६१४५ गांव हैं। लोकसंख्या २०१०२५६ है।

ब्रह्मपुर, चिकाकोल और परलाकिमेदिमें म्युनिसि-पालिटी है। जिलेके अर्ध दक्षिण भागमें तेलगु और उत्तरमें उड़िया भाषा चलती है। एजेन्सी प्रान्तमें केवल खोंड बोली बोलते; किन्तु दक्षिणी पार्वत्य प्रदेशमें शबर भाषा ही अधिक व्यवहार करते हैं।

कुछ खोंड़ों और शबरोंको छोड़, करके सब लोग तेलगु या उड़िया हैं। खेतीके सिवा कपड़ा भी बुना जाता है। चिकनी मट्टीमें हलदी बोते हैं। चावल बहुत होता है। जोतने बोने और खेतीके दूसरे कामोंमें बैल और भैंसें दोनों लगाये जाते हैं। गुमसुरके जङ्गलमें बढ़िया सालकी लकड़ी उपजती है।

गञ्जाममें खानें नहीं हैं। हुम्म, सुरला, नवपद और कलिङ्गपत्तनमें नमक खूब बनता है। मैदानके गांवोंमें साधारण कपड़ा और ब्रह्मपुरमें रेशमी माल तैयार होता है। रेशमी वस्त्रको बैंजनी और लाल रंग देते हैं। चिकाकोल अपनी बढ़िया मलमलके लिये प्रसिद्ध है। पहाड़ी भागमें खोंड़ों और शबरोंके पहननेका मोटा कपड़ा बनता है। टसर पहननेकी भी बड़ी चाल है। रसेलकोंडके पास बेलुगुन्तमें बढ़िया पानदान तैयार होते हैं।

गञ्जामसे विशेषतः अनाज, दाल, चमड़ा, सन, तेलहन, हलदी, लकड़ी, नमक और नारियल बाहर भेजा जाता है। मंगायी जानेवाली चीजोंमें चावल, कपड़ा, रस्सी, शीशा, बर्तन, धातु तथा धातुके द्रव्य, मट्टीका तेल, मसाला और बोरे हैं। गोपालपुर, कलिङ्गपत्तन और बरुआ इस जिलेके बन्दर हैं। मैदानोंमें कोमती और पहाड़ोंमें सोंधा व्यापार करते हैं। नरसन्नपेट, बत्तिलि, हिरामण्डलम्, लक्ष्मी नरसुपेट, रायगढ़, चेल्लिगोदी, सरङ्गोदी और तिक्काबलिमें बड़ा बजार लगता है।

बङ्गाल नागपुर रेलवे इस जिलेमें उत्तरसे दक्षिण तक बराबर चली गयी है। मैदानोंमें ७२८ मील पक्की सड़क है। एजेन्सीमें भी कहीं कहीं पक्की और अधिकांश कच्ची सडक लगी है।

मालूम नहीं, हिन्दुओं और मुसलमानोंके समय गञ्जाम जिलेका मालगुजारी क्या थी। हिन्दू राजा सम्भवत खेतकी उपजका आधा भाग कर लेते थे। परन्तु मुसलमानोंने आ करके मालगुजारी लगाया और १८१७ ई०को अगरेजोंने रैयतवारी बन्दोवस्त कर दिया।

तेलगु अगरेजी और उड़िये देशी भाषा अच्छी पढ़ते हैं। यहा के प्रान्तमें शिक्षा बहुत कम है।

२ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेकी एक जमीन्दारी तहसील। यह अक्षा० १८.२३ तथा १८.४८ उ० और देशा० ८४.५६ एव ८५.१२ पू०के बीच पड़ता है। इसमें कल्लिकोत, विरिदि, हुम्म, और पलूर राज्य लगते हैं। गञ्जाम तहसीलका क्षेत्रफल ३०८ वर्ग मील है। यह बड़ा मनोहर स्थान है। आबहवा ठण्डी और जमीन समुद्रकी ओर ढालू है। लोकसंख्या कोई ८८७१४ है।

३ मन्द्राज प्रान्तके गञ्जाम जिलेका एक नगर। यह अक्षा० १८.१३ उ० और देशा० ८५.५ पू०में ऋषिकुल्या नदीके मुहाने पर अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ४३८७ होगी। यहां १७६४ ई०को कटकके मराठोंसे बचनेके लिये जो किला बना, उसका ध्वंसावशेष पड़ा है।

गञ्जिका (स० स्त्री०) गञ्जा स्वार्थे कन्। १ मदिरागृह, शराब रखनेका घर। २ गांजा।

गञ्जिफा (फा० पु०) एक गुच्छा तास।

गझिन (हि ० पु०) १ सघन, घना। २ मोटा।

गटई (हि ० पु०) घोंघा, गला।

गटकना (हि ० क्रि०) खाना, निगलना।

गटगट (हि ० पु०) एक तरहका शब्द, जो कई बारके निगलने या पानी पीनेके समय गलेसे उत्पन्न हो।

गटपट (हि० स्त्री०) दो या दोसे अधिक व्यक्तियों या चोजोंका परस्पर मेल, मिलावट। २ संयोग, प्रसंग सहवास।

गटापारचा (हि ० पु०) में त दुग्धवासे हर्चोंसे निकला हुआ एक तरहका गोंद। यह रबरके जैसा होता है। लेकिन उतना कोमल और लचोला नहीं होता। यदि बहुत दिन तक यह बाहरहीमें धूप और पानीमें छोड़ दिया जाय, तो भी इसमें किसी प्रकारकी खराबी नहीं होती है।

गटो (स ० स्त्री०) ग्रन्थि, गाठ।

गट्टा (हि ० पु०) हथेली और पहुँचेके मध्यका योग, कलाई।

गट्ठो (हि ० स्त्री०) जहाज या नावमें की उस खम्भेके बीचोंको चूल जिसमें पाल लगी रहती है।

गट्ठर (हि ० पु०) बड़ी गठरी, बोझा।

गट्ठा (हि ० पु०) १ भार, बोझ। २ बड़ी गठरी।

गठकटा (हि ० पु०) १ गांठ काट कर रुपये लेनेवाला। २ धोखा या अन्यायसे रुपया लेनेवाला।

गठडण्ड (हि ० पु०) एक प्रकारका दण्ड जो दोनों हाथोंके मध्यके स्थानमें गड्ढा बनाकर किया जाता है। इस तरहकी सजामें अधिक कष्ट होता है।

गठन (हि ० स्त्री०) बनावट।

गठबन्धन (स ० पु०) विवाहमें दुलहा और दुलहिनके कपड़ेके सिरेको परस्पर मिला कर गांठ बांधते हैं इसी को गठबन्धन कहते हैं।

गठरी (हि ० स्त्री०) बड़ी पोटली, बकची।

गठरैवां (हि ० पु०) पशुओंमें एक प्रकारका रोग। इससे होनेसे पशुओंकी जांघ, पसली और जीभके नीचे सूजन हो जाती है। पशुओंमें यह भारी रोग है। इसमें बहुत कम पशु बचते हैं। चिकित्सकोंका मत है कि यह छूतकी बीमारी है। जिस पशुको यह रोग होवे उसे बन्द और साफ सुथरे स्थानमें रखना चाहिये।

गठानी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका कर जो जमींदार आसामियोंसे वसूल करते हैं।

गठाव (हि ० पु०) गठन, बनावट।

गठिबन्ध (स० पु०) गठबन्धन, गठजोड़।

गठिया (हि ० स्त्री०) एक प्रकारका बोरा जिसमें अन्नसे परिपूर्ण कर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर लादते हैं। २ पोटली, छोटी गठरी। ३ कोरे कपड़े की गांठ। ४ एक प्रकारकी बीमारी जिसके होनेसे घुटनोंमें सूजन

और दर्द होता है। जिस अंगमें यह रोग होता है, वह अंग फैलता नहीं है। इस बीमारीमें कभी २ ज्वर और सन्निपात भी हुआ करता, जिससे रोगी शीघ्र ही मर जाता है। यह रोग विशेष कर जोड़ों या गिरहोंमें हुआ करता है। ५ वृक्षमें एक प्रकारका रोग। इसमें डालियोंका फैलना समाप्त हो जाता है तथा पत्तियां सिकुड़ और ऐंठ जाती हैं। यह रोग सिर्फ आम, जामून बड़े बड़े वृक्षोंमें ही नहीं होते, वरन् फसली पौदोंमें भी हुआ करता है। उरद, मूंग तथा कुम्हड़ा, ककड़ी, करैला आदि तरकारियोंमें भी यह रोग उत्पन्न होकर उन्हें नाश कर डालता है।

गठिवन (हिं॰ पु॰) मझोले तरहका एक वृक्ष। इसकी शाखायें पतली और पत्तियोंमें जगह जगह पर गिरह होती हैं। इसमें नीले रंगके फूल लगते हैं। नेपालकी उपत्यकामें यह पेड़ पाया जाता है। इसकी गोलाकार कलियां दवामें उपयोगी है। वैद्यकमें इसे तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निदीपक तथा कफ, वात, श्वास और दुर्गन्धको नाश करनेवाला माना है। खुजली भी इस दवासे जाती रहती है।

गठुरा (हिं॰ पु॰) भूसेकी गांठ जो खलिहानमें फेंक दी जाती है। इसे बुन्देलखण्डमें गेठुआ और अवधमें खूंटी बोलते हैं।

गठुवा (हिं॰ पु॰) १ कपड़ेका एक भाग। जुलाहे इसे करघेमें रखते हैं, जिससे कि उसके तागेसे तानेके तागोंकी गठ कर बुननेके लिये चढ़ावें। २ गेठुरा, गंठरा खूंटी।

गठौंद (हिं॰ स्त्री॰) १ गांठको बंधाई, गिरहबन्दी। २ धरोहर, थाती।

गठौत (हिं॰ स्त्री॰) मित्रता, घनिष्टता, मेल, मिलाप। २ अभिसंधि, आँट साँट।

गठौती (हिं॰ स्त्री॰) १ मैत्री, घनिष्टता। २ षड़यन्त्र, गठी गठाई बात।

गडंक (हिं॰ पु॰) बारूद, गोले और हथियारादि रखनेका स्थान, मेगजीन।

गडंगिया (हिं॰ वि॰) घमण्ड करनेवाला, शेखीबाज।

गडंत (हिं॰ स्त्री॰) टोटके या अभिचारके लिये गाड़नेकी वस्तु। तांत्रिक या प्रेतविद्याके जाननेवाले मारण, मोहन और उच्चाटनके लिये थोड़े पदार्थोंको मंत्र पढ़ कर किसी चौराहेमें गाड़ देते हैं और इस गाड़नेको गड़ंन्त कहते हैं।

गड (सं॰ पु॰) १ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। २ व्यवधान, ओट, आड़। ३ परिवेष्टन, घेरा। ४ खाई। ५ गढ़। ६ अन्तराय, विघ्न, बाधा।

गड़—गुजरातमें रेवाकान्ठाके अन्तर्गत मार्ग रा मेहवासका एक राज्य। इसके उत्तर और पूर्वमें छोटा उदयपुर, दक्षिणमें नर्मदा और खान्देश तथा पश्चिममें पलासिनी और वीरपुर है। इसका क्षेत्रफल २१ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: ३०१८ है। इस राज्यमें १२८ ग्राम लगते हैं। अधिवासी प्राय: भील जातिकी हैं। चौहान राजपुत वंशीय एक सामन्त इस राज्यके अधिवासी है। सालाना आमदनी ८३७१ रु॰ है और इसमेंसे छोटा उदयपुरके राजाको ३६५ रु॰ देना पड़ता है।

गड़क (सं॰ पु॰) गड़ संज्ञायां कन्। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली।

गडक (अ॰ पु॰) १ डुबाव। २ डूबनेका शब्द।

गड़गड़ा (हिं॰ पु॰) एक प्रकारका हुक्का।

गड्ग—१ बम्बई प्रान्तके धारवाड़का पूर्वीय तालुक। यह अक्षा॰ १५° २' और १५° ३८' उ॰ तथा देशा॰ ७५° २६' एवं ७५° ५७' पू॰के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६९८ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: १३७५७३ है। कप्पट पहाड़ सबसे बड़ा है। जलवायु मातदिल और अच्छा है। इसबल तालाबोंसे खेत सींचे जाते हैं।

२ बम्बई प्रान्तीय धारवाड़ जिलेके गड्ग तालुकका सदर, यह अक्षा॰ १५° २५' उ॰ और देशा॰ ७५° ३८' पू॰में दक्षिण मराठा रेलवे पर अवस्थित है। इस नगरकी लोकसंख्या ३०६५२ है। १८५८ ई॰को यहां म्युनिसपालिटी पड़ी। गड्गमें कपास और सूती तथा रेशमी कपड़ोंका बड़ा व्यवसाय रहता और सूत कातनेका एक कारखाना भी चलता है। यहां जिलेके अच्छे अच्छे मंदिरोंका ध्वंसावशेष देख पड़ता है। इनमें कुछकी शिलालिपियां बतलाती हैं कि गड्गमें ८७३से ११७० तक पश्चिमी चालुक्यों, ११६१से ११८२

तक कलचुरियों, १०४७से १२१० तक होयसल वल्लाल, और १२२६से १५६५ ई० तक विजय नगरके राजाओंका गडगमें अधिकार रहा। १६७२ ई०को नसरताबाद या धारवाड़ जिलेकी वहादुर सरकारका प्रधान जिला था। १८१८ ई०को जनरल मुनरोने गडगको घेर लिया। इसमें अदालत, अस्पताल और विद्यालय वर्तमान हैं।

गड़गड़ाहट (हि० स्त्री०) १ गड़गड़ानेका शब्द। २ हुक्का पीनेका शब्द, वह आवाज जो हुक्का पीनेसे निकलती हो।

गड़गड़ी (हि० स्त्री०) नगाड़ा, डुग्गी।

गड़गूदड़ (हि० पु०) चिथड़ा लत्ता, फटे पुराने कपड़ेका टुकड़ा।

गड़गाँ—आसाममें शिवसागर जिलाके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर और गड। यह शिवसागर नगरके दक्षिण पूर्व और दीखु नदीके तीर पर अवस्थित है। एक समय यह अहोम् राजाओंकी राजधानी थी। इसका ध्वंसाव शेष अबतक भी विद्यमान है। राजगृह एक कोस विस्तृत ईंटोंकी दीवारोंसे घिरा था। आजकल उसका कुछ चिह्न दिखाई पड़ता है।

गड़चाँद—बङ्गदेशके अन्तर्गत त्रिहुत जिलाका एक परगना इस परगना होकर छोटी गण्डक, वाघमती और लखनदायी नदी प्रवाहित हैं। यहां बहुतसी पक्की सड़क हैं। इस परगनाकी अदालत मुजफ्फरपुर है। इसके अन्तर्गत सरीफ उद्दीनपुर, धमौर, अकबरपुर और कई एक ग्राम प्रसिद्ध हैं। अकबरपुर ग्राममें चामुण्डा देवीका मन्दिर है जहां प्रतिवर्ष आश्विन मासमें एक बड़ा भारी मेला लगता है।

गड़दार (हि० पु०) मतवाले हाथीके साथ भाला लेकर चलनेवाला नौकर, वह नौकर जो बदमाश हाथीके साथ भाला लेकर चलता हो।

गड़पङ्ग (हि० पु०) पक्षिविशेष, एक बड़ी चिड़िया।

गड़प (फा० स्त्री०) पानी या कीचड़में किसी वस्तुके गिरनेका शब्द।

गड़प्पा (हि० पु०) धोखा खानेका स्थान।

गड़बड़ (हि० स्त्री०) १ असमतल, ऊंचा नीचा। २ अनियमित, वह जो ठीक समय पर न किया जाता हो।

गड़बड़ा (हि० पु०) गर्त्त, खत्ता, गड्ढा।

गड़बड़ी (हि० स्त्री०) अव्यवस्था, गोलमाल।

गडमान्दारण—वर्द्धमान जिलाके जहानाबाद महकुमाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। इसका दूसरा नाम विठुरगड है। मुसलमानोंके समयमें यहां मृत्तिकानिर्मित्त एक बड़ा गड था। यहां इसमाईल गाजी घाणि लस्कर नामक मुसलमान साधुकी कब्र है। स्थानीय मुसलमान अधिवासी साधुको अत्यन्त भक्ति श्रद्धाके साथ देखते हैं।

गडमुक्तेश्वर—उत्तर पश्चिमाञ्चलके मेरठ जिलाका एक प्राचीन नगर यह अक्षा० २८° ४७' उ० और देशा० ७८° ६' पू०में गङ्गाके दक्षिण किनारे बूढ़ीगङ्गा सङ्गमसे दो कोस नीचेमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७६११ है। बहुतोंका कहना है कि यह नगर एक समय प्राचीन हस्तिनापुरका एक महल्ला कह कर प्रसिद्ध था। यहां मुक्तेश्वर महादेवका मन्दिर है। इन्हींके नाम पर नगरका नाम रखा गया है। इसके अतिरिक्त और कई एक पुरातन मन्दिर तथा ८० सतोस्तम्भ हैं। प्रतिवर्ष कार्त्तिक-मासमें एक भारी मेला लगता है। जिसमें एक लाखसे अधिक मनुष्य जुटते हैं।

गडयन्त (सं० पु०) गड जिच भज। मेघ, बादल।

गड़रातवा (हि० पु०) लोहविशेष, एक तरहका लोहा जो प्राचीन काल मध्य भारतवर्षमें निकलता था।

गड़रिया—युक्त प्रदेशकी एक जाति। यह भेड़ बकरी पालते और चराते तथा उनके कम्बल आदि बनाते हैं। गड़रिया अपना परिचय क्षत्रियवर्ण जैसा देते हैं। वे कहते हैं कि गड जाति राजवंशियोंका नाम विगड़ करके गड़रिया हो गया है। दूसरोंका मत है कि गदाधारी हनुमान्‌के उपासकों अथवा भेड़ (गड) पालनेवालोंको गड़रिया कहा जाता है। इनके बहुतसे भेद मिले हैं।

गड़लवण (सं० क्ली०) गडदेशस् लवणं। शाकम्भरदेशोत्पन्न शुभ्र लवण स भर नमक। इसका पर्याय—शुभ्र, पृम्बीज गडदेशज गोदल, मदारक, साम्बर और सम्भरोद्भव है। इसका गुण—उष्ण, लवण, अस्लनाशक, दीपन, कफ, वात, और पत्ताशक तथा कोष्ठपरिष्कारक है। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण-लघु, वातनाशक, अतिशय उष्ण, भेदकारक पित्तवर्द्धक, तीक्ष्ण और कटुपाक है।

गड़वा—बङ्गदेशमें लोहारडङ्गा जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २०° ८' ४५" उ० और देशा० ८३° ५१' १०" पू०में दोड़ा नदीके तीर पर अवस्थित है। पालामऊ और सरगुजा प्रभृति विभागोंका उत्पन्न द्रव्य यहां जमा किये जाते और इसी स्थानसे दूर २ देशोंमें भेजे जाते हैं। यहांसे रेशम, चमड़ा, तिल, तीसी, घृत, रूई और लोहा संगृहीत होकर बाहर भेजे जाते तथा चावल, पीतल और कांसेका बर्तन, विलायती वस्त्र, कम्बल, रेशमी कपड़ा, तम्बाकू और मसाला इत्यादि चीजें दूसरे देशोंसे यहां आती हैं।

गड़बेता—मेदिनीपुर जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यहां बहुत प्राचीन सर्वमङ्गलादेवी और कंसेश्वर शिवके मन्दिर विद्यमान हैं। पूर्व समय यहां एक वृहत् गढ़ था। जिस जिस स्थान पर गढ़का बड़ा द्वार था, आजकल वह लालदरवाजा, हनुमानदरवाजा, पेशा दरवाजा और राउता दरवाजा नामसे प्रचलित है। यहां रायकोटके राजा तेजचन्द्रका राजभवन था। इसके चारों तरफ बड़ी बड़ी तोपें रखी जाती थीं। अङ्गरेजोंके समय वे सब तोपें ले ली गईं।

गड़ह्रद—बम्बई प्रान्तीय काठियावाड़के भावनगर राज्यका एक नगर। इसकी लोकसंख्या प्रायः ५३७५ है। यह स्वामी नारायणकी सम्प्रदायका, जिसे युक्तप्रदेशके सुधारक सहजानन्दने १८०४ ई०को चलाया था, एक प्रधान केन्द्र है। १८३० ई०को वह यहीं बहुतसे काठियों, कोलीं और भीलोंको अपना मतावलम्बी बना चल बसे। गड़ह्रदमें इस सम्प्रदायवालोंके लिये चन्दनकी मालाएं बहुत बनती हैं और उनका एक अच्छासा मन्दिर भी यहां खड़ा है।

गड़हा (हिं० पु०) गर्त, गहरी जमीन, खाता, गड्ढा।

गड़हिङ्गलाज—बम्बई कोल्हापुर राज्यके गड़हिङ्गलाज तालुकका सदर। यह अक्षा० १६° १२' उ० और देशा० ७४° २५' पू०में हिरण्यकेशी नदीके वाम तट पर अवस्थित है। इसकी लोकसंख्या कोई ६३७३ होगी। प्रत्येक रविवारको बाजार लगता, जिसमें बहुतसा चावल और दूसरा अनाज बिकता है। नगरके मध्य कालेश्वरका मन्दिर बना है। शहरसे प्रायः ३ मील उत्तर बल्हिरोका मन्दिर है। वहां माघमें मार्च मासको मेला लगता है।

गड़ही (हिं० स्त्री०) क्षुद्र गर्त, छोटा गड्ढा।

गड़ा—१ मध्यभारतवर्षके जब्बलपुर [जि]लाका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २३° १०' उ० और देशा० ७८° ५६' ३०" पू० पर समुद्रसे ७५ कोस दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। पहले यह गड़मण्डलकी राजधानी था। ११०० ई०को मदनसिंहने निकट [के] पहाड़के ऊपर मदनमहल नामका एक दुर्ग निर्माण किया था इस दुर्गका भग्नावशेष भी आजकल देखनेमें अधिक सुन्दर लगता है। इसके निम्न भागमें गङ्गासागर और बालसागर नामके दो सरोवर हैं। इस शहरमें एक उत्कृष्ट विद्यालय है। पूर्व समय यहां एक टकशाल था, जिसमें बालागाही नामक मुद्रा प्रस्तुत होकर समग्र बुन्देलखण्डमें प्रचलित था।

२ मध्यभारतके ग्वालियर विभागके अन्तर्गत एक सामान्य राज्य। गढ़ा देखो।

गड़ारी (हिं० स्त्री०) मंडलाकार रेखा, वृत्त, घेरा।

गड़ावन (हिं० पु०) लवणविशेष, एक प्रकारका नमक।

गड़ि (सं० पु०) १ वत्सतर, बच्चा, बछड़ा। २ मट्ठर बैल, सुस्त बैल।

"गुणानामेव दौरात्म्याद् धुरि धुर्यो नियुज्यते।
असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गडिः॥" (काव्यप्रकाश)

३ वे दाग जो चेचकके बाद शरीरमें रह जाते हैं।

गड़ु (सं० पु०) १ गलगण्ड, गलेका एक रोग जिसमें गलेमें सूजन हो आती है। २ कुब्ज, कुबड़, कुबरी। ३ शल्यास्त्र, बाण, गांसी, तीर या बरछी आदिका फल। ४ किञ्चुलक, केंचुआ नामका कीड़ा। ५ विषमग्रन्थि, कठिन गांठ। ६ निरर्थक, वह जिसका कोई प्रयोजन न हो। ७ राजपूतानाके एक कवि। इनका जन्म १७१३ ई०में हुआ था। इनके रचित कूट छप्पय तथा अन्य सामयिक कविताएं सुप्रसिद्ध हैं।

गड़ुक (सं० पु०) १ भृङ्गार, कमंडलु। २ ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।

गड़ुई (हिं० स्त्री०) टोंटी लगा हुआ एक छोटा पानी-पीनेका बरतन, झारी।

गड़ुर (सं० त्रि०) कुब्ज, कूबड़ा।

गडुल (सं॰ त्रि॰) गडु, कुब्जरोगोऽस्त्यस्य । कुब्ज, कुबड़ा ।
गडुवा (हि॰ पु॰) एक तरहका लोटा । इसमें जल गिरानेके लिये बत्तखके गलेके जैसा एक नली लगी रहती है, तमहा ।
गडुशिरस् (सं॰ त्रि॰) शिरसि गडुर्यस्य, बहुव्री॰ । सङ्कीर्ण गलेका मनुष्य, जिसका गला तंग हो ।
गडेर (सं॰ पु॰ स्त्री॰) मेघ, बादल ।
गडोत्थ (सं॰ क्ली॰) गडात् गडाख्यदेशात् उत्तिष्ठति, उद् स्था क । शाभर नमक ।
गडोल (सं॰ पु॰) १ गुड़ । २ ग्रास, गांव । ३ ग्रास, कौर ।
गड्ड (सं॰ पु॰) वस्तुओंका समूह, जो एक दूसरेके ऊपर रखा रहता है, गञ्ज ।
गड्डर (सं॰ पु॰) मेष, भेड़ा ।
गड्डरिक (सं॰ पु॰) गडेरिया ।
गड्डरिका (सं॰ स्त्री॰) मेषपंक्ति, भेड़ोंकी कतार ।
गड्डल (सं॰ पु॰) गड्ड शाकुलकात् ड लच् । मेष, भेड़ा ।
गड्डलिका (सं॰ स्त्री॰) गड्डलं अनुसरति, गड्डल ठन् । १ मेषपंक्ति, भेड़ोंकी कतार । २ धारावाही क्रमागत लगातार ।
गड्डलिकाप्रवाह (सं॰ पु॰) गड्डलिकाया प्रवाह इव, ६ तत् । भेड़ियाधसान ।
गड्डाम—नीच, लुच्चा, बदमाश ।
गड्डारिका (सं॰ स्त्री॰) नदीविशेष वह नदी जिसका प्रवाह अधिक प्रबल हो ।
गड्डालिका (सं॰ स्त्री॰) मेषपंक्ति, भेड़ोंकी कतार ।
गड्डी (हि॰ स्त्री॰) ढेर, पुञ्ज ।
गड्डुक (सं॰ पु॰) जलपात्रविशेष एक तरहका पानी-का बरतन ।
गढ़ (हि॰ पु॰) १ खाई । २ किला ।
गढ़कप्तान (हि॰ पु॰) किलेदार, किलेकी फौजका अफसर ।
गढ़त (हि॰ स्त्री॰) आकृति, बनावट ।
गढ़न (हि॰ स्त्री॰) गठन, बनावट ।
गढ़नायक—उड़ीसा प्रान्तके खण्डायतोंका एक भेद । यह पूर्वकालमें गढ़ोंके अधिकारी थे ।
गढ़पति (हि॰ पु॰) १ किलादार । २ राजा ।
गढ़ग्राम, जैनियोंका जन्मकल्याणक-क्षेत्र । यहां जैनियोंके छठे तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभुका जन्म हुआ था । पहिले यहां कौशाम्बी नगरी थी । (तीर्थमाला ११८

गढमण्डल—मध्यप्रदेशके गोण्डवानाके अन्तर्गत एक विस्तृत क्षेत्र । अति प्राचीन कालसे यह भूभाग स्वाधीन हिन्दू राजाओंके अधिकारमें था । उस समय गढा और मण्डल नामके स्थानमें हिन्दू राजाओंकी राजधानी थी । अब भी उक्त दोनों स्थानोंमें प्राचीन खण्डहर और हिन्दू राजाओंके समयके शिलालेख मिलते हैं, जिनसे वहांकी पहिलेकी समृद्धिका काफी प्रमाण मिलता है । पहले समयमें भट, सुहागपुर, छत्तीसगढ, सम्बलपुर, गाढ़पुर, यशपुर इत्यादि जिले भी उक्त गढमण्डलके अन्तर्गत थे । अब वैसी समृद्धि नहीं रही, गढा और मण्डल नामके दो नगरोंसे ही सिर्फ पहलेके नामका परिचय मिलता है । पहिले गढ मण्डलमें जो राजा राज्य करते थे, नीचे उनके नाम उद्धृत किये जाते हैं—

राजाका नाम	राज्यकाल
यादवराय	१८२ ई॰ (?)
माधवसिंह	१८७ ,,
जगन्नाथ	४२ ,,
रघुनाथ	४४५ ,,
रुद्रदेव	५०८ ,,
बिहारीसिंह	५१०
नरसिंहदेव	५६८ ,,
सूर्यभानु	६०१ ,,
वासुदेव	६१० ,,
गोपालसाही	६४८ ,,
भूपालसाही	६६८ ,,
गोपीनाथ	७०६ ,,
रामचन्द्र	७२६ ,,
सुरतानसिंह	७२९ ,,
हरिहरदेव	७५८ ,,
कृष्णदेव	७०१ ,,
जगत्सिंह	७८८ ,,
महासिंह	७९८ ,,
दुर्जनमल्ल	८११ ,,
यशकर्ण	८४० ,,
प्रतापादित्य	८०६ ,,
यशचन्द्र	९०० ,,
मनोहरसिंह	९१५ ,,

गोविन्दसिंह	९४० ई०
रामचन्द्र	९६८ ,,
कृष्ण नाथ रत्नसेन	९८९ ,,
कमलनयन	१०२९ ,,
नरहरिदेव	१०३० ,,
वीरसिंह	१०३९ ,,
त्रिभुवनराय	१०६४ ,,
पृथिवीराय	१०९३ ,,
भारतीचंद्र	१११८ ,,
मदनसिंह	१११६ ,,
उग्रसेन	११४९ ,,
रामशाही	११८९ ,,
ताराचन्द	१२१६ ,,
उदयसिंह	१२५० ,,
भानुमित्र	१२६४ ,,
भवानीदास	१२८१ ,,
शिवसिंह	१२९१ ,,
हरिनारायण	१३१८ ,,
सबलसिंह	१३३५ ,,
राजसिंह	१३५७ ,,
दादीराय	१३८५ ,,
गोरक्षदास	१४४२ ,,
अर्जुनसिंह	१४४८ ,,
संग्रामशाही	१४८० ,,
दलपति	१५३० ,,
वीरनारायण	१५४८ ,,
चन्द्रशाही	१५६६ ,,
मधुकरशाही	१५७५ ,,
प्रेमनारायण	१५९९ ,,
हृदयेश्वर	१६१० ,,
छत्रशाही	१६८१ ,,
केशरीशाही	१६८८ ,,
नरेन्द्रशाही	१६९१ ,,
महाराजशाही	१७३१ ,,
शिवराजशाही	१७४२ ,,
दुर्जनशाही	१७४८ ,,
निजामशाही	१७५१ ,,
नरहरशाही	१७७० ,,
सुमेरशाही	१७८१ ई०

१८०४ ई०में राजा सुमेरशाहीके मारे जानेके बाद इस राजवंशका लोप हो गया। कनिंघम आदि पुराविदोंने उक्त गढ़मण्डलके राजाओंको गोण्डवंश नामसे उल्लेख किया है परन्तु गढ़मण्डलके राजा मदनसिंहके समयके शिलालिपिमें पढ़नेसे मालूम होता है कि—वे हिन्दू थे और क्षत्रिय रूपसे अपना परिचय देते थे।

सुमेरशाहकी मृत्युके उपरान्त गढ़मण्डलका अधिकांश नागपुरके महाराष्ट्रोंके राज्यमें मिल गया था। १८१८ ई०में इस पर वृटिश गवर्मेण्टका अधिकार हुआ है।

गढ़वाल (हिं० पु०) नल जिसके अर्थानमें गड़ढा।

गढ़वाल—युक्तप्रदेशके कुमाऊं विभागका पश्चिम जिला। यह अक्षा० २९° २६' तथा ३१° ५' उ० और देशा० ७८° १२' एवं ८०° ६' पू०के बीच पड़ता है। इसका रकबा ५६२९ वर्गमील है। गढ़वालके उत्तर तिब्बत, दक्षिण-पूर्व अलमोड़ा तथा नैनीताल, दक्षिण-पश्चिम विजनौर और उत्तरपश्चिम टेहरी राज्य है। यह जिला पहाड़ी है और इसकी बड़ी नदी गङ्गा है। गङ्गाकी प्रधान सहायक नदी अलकनन्दा है। अलकनन्दा विष्णुगङ्गा और धौलीगङ्गाके सङ्गमसे बनती और रुद्रप्रयाग पहुंचने पर उसमें मन्दाकिनी आ मिलती है। फिर देवप्रयागमें अलकनन्दा और मन्दाकिनीका सङ्गम होता है। इसी स्थानसे उक्त सम्मिलित धारा गङ्गा कहलाती और गढ़वालको टेहरी तथा देहरादूनसे अलग लगाती है। अलकनन्दाकी दोनों ओर बर्फसे ढकी पहाड़ियां खड़ी हैं। इस जिलेके पहाड़ोंकी बड़ी चोटियां त्रिशूल (२३३८२ फुट), द्रोणगिरि (२३१८१ फु०) कामेत (२५४१३ फु०) बदरीनाथ (२३२१० फु०) और केदारनाथ (२२८२३ फु०) हैं। झीलोंमें गहना बड़ी है।

भावर और उसके पासकी पहाड़ियोंमें घना जङ्गल है। उसमें साल बहुत उपजता है। ४०००से ऊपर ६००० फीट तक सालको जगह चीड़ ही देख पड़ता है। इसी प्रकार ८००० फुट पर तिलोंज और १०००० फुट पर दूसरे कई पेड़ होता है। १२००० फुट पर बड़ी घास जमती जो ग्रीष्म ऋतुमें बहुत अच्छी फूला करती है।

भाबरमें हाथी और निचली पहाडियोंमें चीते मिलते हैं। तेंदुवें गढवालमें सभो जगह है। भालू, गोदड और जङ्गली कुत्ते भी पाये जाते हैं। इस जिलेमें चिडियां बहुत हैं।

गढवालका प्राचीन इतिहास अन्धकाराच्छन्न है। सम्भवत इसका कुछ भाग ब्रह्मपुर राज्यमें लगता था, जिसकी बात ७वीं शताब्दीको चीन परिव्राजकने कही। पुराणानुसार ब्रह्मपुरका कत्यूरी राजवंश जोशीमठका था, जहांसे वह दक्षिणपूर्व और अलमोडाको फैल पडा। स्थानीय वर्णनानुसार ई० १४वीं शताब्दीके शेषभागको अजयपाल नामक नृपति छोटे छोटे राज्योंको तोड करके देवलगढमें बसे थे। परन्तु १७वीं शताब्दीके आदि कालको उनके महीपति शाह नामक किसी उत्तराधिकारीने श्रीनगर पत्तन करके प्रकृत स्वाधीन राज्य स्थापित किया। प्राय १५८१ ई०को गढवालके राजा अलमोडाके चादोंसे लडे, जब रुद्रचन्द्र गढवाल पर चढे थे। वह कई बार विफल हुए। १६५४ ई०को शाह जहानने राजा पृथ्वीशाहको दबानेके लिये अभियान भेजा, जिसके फलमें देहरादून गढवालसे अलग हुआ। फिर कुछ वर्ष पीछे पृथ्वीराजने दारा शिकोहके लडके सुलेमान शिकोहको जो भाग कर गढवालमें जा रहे थे लूट लिया और उन्हें औरङ्गजेबको सौंप दिया। अलमोडाके जगत चन्दने (१७०८ २० ई०) राजाको श्रीनगरसे निकाल उसे किसी ब्राह्मणको प्रदान किया था, परन्तु प्रदीप शाहने (१७१७ ७२ ई०) गढवाल फिर ले लिया। १७७९ ई०को गढवालके ललितशाहने कुमाऊं के राजाको हरा अपने पुत्र प्रद्युम्न शाहको उस राज्य पर अभिषिक्त किया। १७९० ई०को गुरखे अलमोडा विजय करके गढवालकी ओर बढे थे, परन्तु तिब्बतमें चीनाओंसे झगडा हो जानेके कारण लौट गये। १८०३ ई०को उन्होंने फिर चढाई करके गढवालको रौंदा और देहरादून भी अधिकार किया। प्रद्युम्न शाह मैदानोंको भगे और १८०४ ई०को देहराके पास अपने साथियों साथ मरे थे। १८१५ ई०को अंगरेजोंको कुमाऊं अधिकार किया। १८३७ ई०को गढवाल एक उपविभाग और १८९१ ई०को जिला बनाया गया।

इस जिलेमें कितने ही ऐसे मन्दिर हैं, जिनको सभी भारतवासी परम पवित्र समझते हैं। इनमें बदरीनाथ, जोशीमठ, केदारनाथ और पाण्डुकेश्वर प्रधान हैं। गोपेश्वरमें १० फुट ऊंचे एक त्रिशूल पर अनेक मल्लराजाके विजयकी वर्णना अङ्कित है, जो सम्भवत एक नेपाली नृपति थे। यह लिपि ई० १२वीं शताब्दीकी है। मन्दिरों में या लोगोंके पास कितने ही ताम्रफलक सुरक्षित हैं, जो अपनी ऐतिहासिक दिलचस्पीके लिये बहुमूल्य लगते हैं।

गढवालमें ३ नगर और ३६०० ग्राम हैं। आबादी कोई ४२९९०० होगी। इसका सदर पौरी एक ग्राम मात्र है। सैकडे पीछे ९७ लोग गढवाली भाषा व्यवहार करते हैं। प्रत्येक श्वेत पत्थरकी बाहरी दीवारसे घेर दिया जाता है। यहां थोडी बहुत सब चीज उपजती है। ५७९ वर्ग मीलमें सरकारी जङ्गल है। साल और बांस बहुत होता और जलानेकी लकडी तथा घास भी मिलती है। पहले स्थानीय व्यवहारके लिये कुछ तांबा और लोहा निकाल लिया जाता था, परन्तु अब वह काम बन्द है। कुछ नदियोंमें अल्प परिमाण मिलता है। उनसे मोटा कपडा और रस्सी बनाते और कम्बल तैयार किये जाते हैं। दो एक जगह पत्थर पर नक्काशी भी होती है। तिब्बतके साथ गढवालका बडा व्यवसाय चलता है। वहांसे नमक, ऊन, भेड बकरे, टट्टू और सोहागा आते और अनाज, कपडा और नकद रुपया पैसा पहुंचाते हैं। सब काम काज प्राय भाटियोंके हाथमें है। श्रीनगर और कोटद्वारा इस जिलेके बडे बाजार हैं। सड़क लगभग सभी कच्ची है।

गढवालसमस्थान (केशवनगर) १ हैदराबाद राज्यके रायचूर जिलेकी एक खिराज देनेवाली रियासत। इसका क्षेत्रफल ८६४ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८९८४९१ है। यह राज्य हैदराबादसे भी पुराना है। पहले यहां सिक्का ढलता, जो आज भी रायचूर जिलेमें चलता है। कृष्णा और तुङ्गभद्रा इस राज्यके दक्षिण और पश्चिम अञ्चलमें प्रवाहित हैं

२ हैदराबाद राज्य रायचूर जिलेके गढवाल समस्थान राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० १६ १४ उ०

और देशा० ७७° १३´ पू०में अवस्थित है। इसकी लोक-संख्या कोई १०१८५ होगी। गढ़वालका दुर्ग राजा सोमाद्रिने १७१० ई०को बनवा कर तैयार कराया था। इस नगरमें रेशमी साड़ियां, रूमाल और जरदू किनार-की बढ़िया धोतियां बनतो और लाखों रुपयेको हैदरा-बाद आदि निकटस्थ स्थानोंमें जा कर बिकती हैं।

गढ़ा (हिं० पु०) गड्ढा देखो।

गढ़ाई (हिं० स्त्री०) १ गढ़नेका काम। २ गढ़नेकी मजदूरी।

गढ़कोट (गढ़ाकोट) मध्यभारतके सागर जिलेका एक विभाग। इसका प्रधान नगर भी गढ़कोट ही है। यह सोनार और गधेरी नदीके सङ्गम पर अक्षा० २३° ४७´ उ० और देशा० ७९° ११´ ३०´´ पू०में सागर नगरसे १३ कोस पूर्वको पड़ता है। सम्भवतः यह गहर गोंड़ लोगोंका बनाया हुआ है। १६२८ ई०को बुंदेलखण्डके चन्द्रशाह नामक किसी राजपूत सामन्तने गोंड़ोंको निकाल करके गढ़कोट अधिकार किया और एक दुर्ग बना दिया था। पन्नाके बुंदेला राजा छत्रसालके पुत्र हृदयशाहने चन्द्रशाह-वंशीय किसी राजाको देहलीके अन्तर्गत नायगुवान ग्राम अर्पण करके यह नगर ले लिया। उन्होंने नदीके दूसरे पार और एक दुर्ग तथा नगर निर्माण करके उसका नाम हृदयनगर रखा था। १७३८ ई०को हृदय शाहका स्वर्गवास हुआ। पांच वर्ष पीछे शोभासिंह और उनके भाई पृथ्वीसिंह दोनोंके बीच झगड़ा उठा था। पृथ्वीशाह पेशवाके साहाय्यसे अपने आप राजा बन बैठे। १८२० ई०को नागपुरके राजाने जब किले पर धावा किया, पृथ्वीसिंहके वंशीय मर्दनसिंहने लड़ते लड़ते अपना प्राण दे दिया। मर्दन-सिंहके लड़के अर्जुनसिंहने सेंधियाका आश्रय लिया था। कर्नल जियाम वासिस्त नामक किसी युरोपीय सेनापति-के अधिन सेंधियाने एक फौज भेज दी। युद्धमें नागपुर-की सेनाके हारने पर सेंधियाने मालखन और गढ़ाकोट अधिकार करके शाहगढ़ तथा अन्यान्य प्रदेश अर्जुन-सिंहको दे डाले और वासिस्त साहब ससैन्य गढ़ाकोट-में रहने लगे। थोड़े दिनों बाद अर्जुनसिंहने चालाकी-से किला छीना था। परन्तु ६ महीने पीछे जनरल वाटसनने अंगरेजी फौजके साहाय्यसे उन्हें निकाल बाहर किया। यह राज्य सेंधियाके अधिकारमें ही रहा। किन्तु अंगरेज गवर्नमेण्टसे यह अपना पुनः पाने लगा। १८६१ ई०में अंगरेजोंने सेंधियाको दूसरा नगर दे कर इसको अपने आप अधिकार किया था।

आजकल नगर दो भागोंमें विभक्त है। बीचमें सोनार नदी बहती है। नदीके उस पार हृदयनगरमें कारबारकी बड़ी जगह है। यहां किलेके पहननेका अच्छा और पट्टी नामक वस्त्र बनता और प्रति शुक्रवार-को बाजार लगता है। पौषशुक्लमें यहां पांच मासकी एक बड़ा मेला भी होता है। सोनार और गधेरी नदीके सङ्गमके पास ऊंचा भूमि पर किला बना है। उसमें बहुतसे घर हैं। १८५८ ई०में अंगरेज सेनापति सर ह्यूरोजने उसको जीता था। नगरसे एक कोस उत्तरको मर्दनसिंहके प्रकाण्ड प्रासादका भग्नावशेष पड़ा है। इसकी दीवार आज भी नहीं बिगड़ी। यह प्रायः ९० हाथ ऊंचा होगा। एक घुमावदार जीनेसे उस पर चढ़ा जाता है।

गढ़िया (हिं० पु०) गढ़नेवाला, वह जो कोई चीज बनाता हो।

गढ़ोई (हिं० पु०) किलादार, गढ़पति।

गण (सं० पु०) गण् कर्म्मणि अच् कर्त्तरि अच् वा। १ समूह, ढेर।

"गणानां त्वा गणपतिं।" (वाजसनेयस० २३।१९।)
'गणपतिं' गणानां समूहानां पालकं।" (महीधर)

२ प्रमथ, शिव सेवक।

"भर्तुः कण्ठच्छविरिति गणैः सादरं वीक्ष्यमाणः।" (मेघदूत ३५)

३ सेनाकी संख्या। सत्ताइस रथ, सत्ताइस गज, इक्कासी घोड़ा और एक सौ पैंतीस पदाति, सब समेत दोसौ सत्तरको गण कहते है। ४ चोर नामक गन्ध द्रव्य। ५ गणेश। "गणेशेशप्रवर्त्तकः।" (महानिर्वाणत०) ६ विवाहमें लड़का और लड़कीका सद्भाव वा असद्भाव जाननेका उपाय विशेष। ज्योतिषियोंने इसे तीन भागोंमें विभक्त किया है, यथा देवगण, नरगण और राक्षस गण। पूर्व-फल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरफल्गुनी, उत्तराषाढ़ा उत्तर भाद्रपद, भरणी, आर्द्रा, और रोहिणी

इन नक्षत्रोंमें जन्म होनेसे नरगण, चित्रा, मघा, विशाखा, ज्येष्ठा, शतभिषा, मूला, धनिष्ठा, अश्लेषा और कृत्तिकामें राक्षसगण तथा अश्विनी, रेवती, पुष्या, स्वाती, हस्ता, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा और श्रवणामें जन्म लेनेसे देवगण होते हैं।

वर और कन्याका एक गण होना अच्छा है। अगर एकने देवगणमें और दूसरेने नरगणमें जन्म लिया हो तो मध्यम फल है, देवगण और राक्षसगणमें जन्म होनेसे अधम सौहृद्य हो कर रहता है, किन्तु नरगण और राक्षसगणमें होनेसे नरगणवालेकी मृत्यु होती है। (ज्योतिष) ७ ध्रुवादि सप्तक नक्षत्रसमूह।

"धव ध्रुव स्थानस्थ' म गण ।" (ज्योतिष)

८ वाणिज्यकारी वणिक्‌समूह।

"तस्यन्ना स्वं इव मृतमस्थि यव नहुषेन।" (वाचस्पत्य)

९. व्याकरणप्रसिद्ध भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि और चुरादि इन दशोंको गण कहते हैं। १० गणपाठग्रन्थ। ११ पाणिनिरचित स्वरादि स्वरूप प्रतिपादक पाठग्रन्थ। १२ दैत्यविशेष, एक असुरका नाम। स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें इसका उपाख्यान इस तरह है—

किसी समय अभिजित् नामका एक ब्राह्मण अपनी स्त्री गुणवतीके साथ स्नान करनेके लिये समुद्र गये। गुणवतीने तृष्णासे कातर हो समुद्र जल पान किया। इस जलके साथ ब्रह्माका वीर्य उसके उदरमें प्रवेश हो गया। क्रमानुसार उस अमोघ वीर्यसे ब्राह्मण पत्नी गुणवतीको गर्भ रहा। यथा समय गुणवतीने एक पुत्र प्रसव किया। यही पुत्र गण नामसे प्रसिद्ध दैत्य कहलाया। वयस्या आने पर गणने शिवजीकी आराधना की। शिवजीने तपस्यासे सन्तुष्ट होकर उसे वर दिया—तुम स्वर्ग, मर्त्य और पातालके ऊपर अपना आधिपत्य जमा सकते हो। इसका परिणाम यह हुआ कि वह गण दैत्य अत्याचारी हो गया। किसी दिन उसने महामुनि कपिलको अपमानित कर उनकी बहुमूल्य चिन्तामणि को ले लिया। महात्मा कपिलने दुःखित हो कर गणेश की आराधना की। इस पर गणेश सन्तुष्ट हो कर गण दैत्यका विनाश करनेके लिये राजी हुये। थोड़े दिनके बाद पार्वतीनन्दन गणेशजीने उसी दैत्यके गृहमें अवतीर्ण होकर उसका नाश किया।

(स्कन्दपुराण गणेशखण्ड ६।७ अ०)

"गणाय सर्वविघ्नाय साधुभाव समन्वित्वाय स्वाहा नम ।"

(विधान पारिजात)

१४ दूत, सेवक पारिषद। १५ एक संस्कृत चिकित्साशास्त्र रचयिता। ये दुर्लभके पुत्र थे। इन्होंने आयुर्वेद या सिद्धयोगसंग्रह नामक ग्रन्थकी रचना की है।

१६ दि० जैन मतानुसार—आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान, गण, कुल, संघ, साधु और मनोज्ञ इन दश प्रकारके मुनियोंमेंसे एक। जो वृद्ध मुनियोंकी परिपाटीके हों, उनका नाम 'गण' है।

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां।

(तत्त्वार्थ सू, ९ अ० २४ सूत्र)

१७ महावीर स्वामीके एक शिष्य।

गणक (सं० त्रि०) गणयति संख्या करोति गण णिच् ण्वुल्। १ संख्याकारक, जो राशि स्थिर करता हो।

(पु०) २ मातृकादेवीभक्त मुनिविशेष, एक मुनी जो मातृकादेवीके भक्त थे। ३ ज्योतिषी। इसका पर्याय—सांवत्सर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, ज्योतिर्विद, मौहूर्तिक, मौहूर्त, ज्ञान और कार्तान्तिक है।

बहुतोंका मत है कि जो ग्रहणघातादि विषय गणना करते, या ज्योतिषशास्त्र अध्ययन या व्यवसाय करते हैं वे पतित, निन्दनीय और अस्पृश्य हैं। शास्त्रमें भी गणककी निन्दा पाई गई है।

"ये चाप्यपाङ्क्त्याः ... गणकाः ...।

तस्य ... परिवर्जयेत् ।"

(ब्रह्मानन्द ... १६ अध्याय)

धर्मशास्त्रकार सुमन्तुका भी कथन है, 'गणकांश्च ... ।' सांवत्सरिक या दैवज्ञ अपाङ्क्तेय हैं अर्थात् इनके साथ एक पंक्तिमें बैठ कर आहारादि नहीं करना चाहिये। महाभारतमें लिखा है—

"... देवलको ... ।

... विद्वर्जयेत् ।"

नाटक खेलनेवाला, तनख्वाह पानेवाला, देवपूजक और जो नक्षत्र प्रभृति गणना कर जीविका निर्वाह करते हों, उन समस्त ब्राह्मणोंसे परिपूर्ण पर्याय

अपांक्तेय समझना चाहिये । धर्मशास्त्रकार कश्यप कहते हैं कि भ्रूणहन्ता, कुटिलाङ्ग और नक्षत्रसूचक ब्राह्मणोंको समस्त कार्यों में ही परित्याग करना चाहिये । दूसरे दूसरे धर्मशास्त्रमें भी गणकको खूब निन्दा की गई है । किन्तु संग्रहकारगणका मत है कि जो ज्योतिष शास्त्रका अध्ययन वा व्यवसाय करते वे पतित वा निन्दनीय नहीं हैं क्योंकि ज्योतिषशास्त्र वेदका एक अङ्ग है। वेद और धर्मशास्त्रमें ब्राह्मण ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर सकते हैं, ऐसा विधान है। यदि अध्ययन करनेसे ही पतित वा निन्दनीय कहा जाय तो धर्मशास्त्र-का विधान मिथ्या होता है।

इसके अतिरिक्त कई एक शास्त्रमें ज्योतिषीकी बहुत प्रशंसा भी लिखी है—

"विज्ञान्धपारङ्गम एव पूज्यः श्राद्धे सदा भूसुरवृन्दमध्ये ।
नक्षत्रसूची खलु पापरूपी हेयः सदा सर्वशुभेषु कार्ये ॥" (वशिष्ठ)

जिन्होंने ज्योतिःशास्त्रके स्कन्धत्रय अच्छी तरह अध्ययन कर व्युत्पत्ति लाभ की है, वे श्राद्धमें सब ब्राह्मणोंके मध्य पूजनीय हैं, किन्तु जो नक्षत्रसूची अर्थात् ज्योतिःशास्त्रानभिज्ञ तो भी नक्षत्रादि गणना कर जीविका निर्वाह करते वे ही पतित और निन्दनीय हैं ।

"यस्तत्वार्थं सर्वं व कृत्स्नं जानाति स द्विजः ।
अग्रभुक् स भवेच्छ्राद्धे पूजितः पंक्तिपावनः ।
नासांवत्सरिके देशे वस्तव्यं भूतिमिच्छता ॥" (वराह)

जो ब्राह्मण ज्योतिषके समस्त ग्रन्थ अध्ययन कर उसका प्रकृत भाव समझ सकते वे श्राद्धमें अग्रभुक्, पूजित और पंक्तिपावन है। जिस देशमें ज्योतिषी नहीं हैं, जो अपना कल्यान चाहते हों, उन्हें उस देशमें रहना नहीं चाहिये । इसके अलावा सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणिमें ज्योतिषीकी प्रशंसा अच्छी तरहकी गई है।

शास्त्रमें दोनों तरह की बातें लिखी गई हैं। एकमें गणककी प्रशंसा और दूसरेमें निन्दा की गई है। यदि प्रकृत प्रस्तावमें इसकी मीमांसा न की गई तो शास्त्रमें विरोध हो सकता है। इसी कारण संग्रहकारोंका कथन है कि शास्त्रमें गणक विषयमें दोनों तरहसे लिखे गये हैं। जिसने यथार्थमें ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन नहीं किया अथवा अध्ययन करने पर भी व्युत्पत्ति लाभ नहीं की, वे ही नक्षत्रसूची हैं। ये द्वार द्वार घूमते और किसीसे जिज्ञासा नहीं किये जाने पर नक्षत्रोंकी गणना कर गृहस्थोंका शुभाशुभ फल कहा करते हैं। इसी कारण शास्त्रकारोंने इन्हें नक्षत्रसूची नामसे उल्लेख किया है। ये यथार्थमें ज्योतिषी नहीं हैं। ये ही पतित, अपांक्तेय और निन्दनीय हैं। पहले जो सब प्रमाण लिखे गये हैं, वे भी दूसरे वचनोंके साथ मिला कर इसी तरहसे व्याख्या करनी होगी एवं "विज्ञान्धपारङ्गम" इत्यादि वशिष्ठ वचन द्वारा स्पष्टरूपसे ही नक्षत्रसूचीकी निन्दा की गई है। इसके अतिरिक्त दूसरे दूसरे शास्त्रोंमें भी नक्षत्र-सूचीकी निन्दा देखी जाती है। जो प्रकृत प्रस्तावसे ज्योतिःशास्त्र अध्ययन करते, वे निन्दनीय या अपांक्तेय नहीं हैं।

बृहत्संहितामें लिखा है कि जो सद्वंशजात, प्रिय-दर्शन, विनीतवेश, सत्यवादी, जिनका पक्षपात निन्द-नीय हो, जिनकी शरीरसंधि सुविभक्त और उपचित हो, जिनके हाथ, पैर, नख, नेत्र, चिबुक, दांत, कान, ललाट और मस्तक प्रभृति चारुतासम्पन्न हों, जो स्थूलशरीर, गम्भीर और मिष्टभाषी हो, जो देश और कालका तत्त्व जानते हों, जो शास्त्रीय तर्कमें सभा जाकर कभी भी भीत नहीं होते हों, जो निपुण, अव्यसनी, ग्रहगणित जाननेके लिये कौतूहली हों, देवपूजा, व्रत और उपवास करनेकी जिनकी प्रबल इच्छा हो, वे ही ज्योतिःशास्त्र अध्ययन करनेमें उपयुक्त हैं। ग्रहगणित अर्थात् पौलिश, रोमक, वाशिष्ठ, सौर और पैतामह इन पांच सिद्धान्त-शास्त्रोंमें जो युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, अहो-रात्र, याम, मुहूर्त, नाड़ी, विनाड़ी, प्राण, त्रुटि प्रभृति काल और क्षेत्र निर्णीत हुए हैं, उसके सम्यक् वेत्ता तथा सौर, सावन, नाक्षत्र और चान्द्र ये चार तरहके मास, अधिमास और अवम प्रभृतिके कारणाभिज्ञ, षष्टि संवत्सर, युग, वर्ष, मास, दिन और होरा प्रभृतिके अधिपति निर्णय-में तथा सौरादि परिमाणमें अभिज्ञ, ग्रहोंके शीघ्र मन्द याम्य उत्तर और नीच उच्च प्रभृतिके कारण निर्णयमें पटु, इनके अतिरिक्त जो दूसरे दूसरे ज्योतिर्मण्डलके दुरूह विषयोंकी अच्छी तरह मीमांसा कर दूसरेको

समझा सकते हों, शास्त्रकारों के मतानुसार वे ही गणक कहलाते हैं। (ब्रह्म हिता २ अ०)

४ जातिविशेष। इनके आचार व्यवहार ब्राह्मणोंसे मिलते जुलते हैं। किसी किसी देशमें इन्हें ग्रहविप्र या आचार्य कहते हैं। ब्रह्मयामलके १४वां अध्यायमें लिखा है—

"शरद्वीपे च वेदाग्निः शाकद्वीपे च मिहिरः ।
भूमध्ये ब्रह्मचारी च दैवज्ञो द्वारकापुरे ॥
द्राविडे मैथिले चैव ग्रहविप्र इति स्मृतः ।
धर्माङ्गे धर्मवेत्ता च पञ्चाले शास्त्रिसंज्ञकः ॥
सारस्वते शुभमुखो गान्धारे चित्रपण्डितः ।
तीरभुक्तौ च तिथिविल्लाटदेशे च कच्छपः ॥
कश्चाले ज्योतिषी विप्रो ब्रह्माणे विधिकारकः ।
चम्पाटे योगवेत्ता च त्रिगर्ते देवपूजकः ॥
राढदेशे उपाध्यायो गयायां तत्त्वधारकः ।
कलिङ्गे ज्ञानवांश्चैव आचार्यो गौडदेशके ॥" (ब्रह्म १४म अध्याय)

गणक जातिके लोग शरद्वीप और शाकद्वीपमें वेदाग्नि, भूमध्यमें ब्रह्मचारी, द्वारकामें दैवज्ञ, द्राविड और मिथिलामें ग्रहविप्र, धर्माङ्गमें धर्मवेत्ता, पाञ्चालमें शास्त्री, सरस्वती नदीतीरमें शुभमुख, गान्धारमें चित्रपण्डित, तीरभुक्तमें तिथिवित् लाटदेशमें कच्छप, कश्चालमें ज्योतिष, ब्रह्ममें विधिकारक, चम्पाटमें योगवेत्ता, त्रिगर्तमें देवपूजक, राढदेशमें उपाध्याय, गयामें तत्त्वधारक कलिङ्ग देशमें ज्ञान और गौडदेशमें आचार्य कहलाते हैं।

ग्रहदोष शान्तिके लिये जो कुछ दान करना होता है, वह इन्हीं ब्राह्मणों को मिलता है। इस देशके लोगों का विश्वास है कि ग्रहविप्रको दान देनेसे ही ग्रह सन्तुष्ट होता है, ग्रहकी का कोई अमङ्गल नहीं होता है। शब्दकी व्युत्पत्तिके अनुसार अब लगानेसे वे ही गणक कहला सकते जो ज्योतिषशास्त्र अध्ययन करते तथा ग्रहोंके गतिनिर्णय और कोष्ठी गणना कर शुभाशुभ फल निर्णय किया करते हैं। यदि ब्राह्मण, कायस्थ, वैद्य प्रभृति दूसरी कोई जाति ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर उसका व्यवसाय करे तो उनको गणक नहीं कहते वरन वे ज्योतिषिक, ज्योतिर्विद् प्रभृति दूसरे किसी नामसे पुकारे जा सकते हैं। किन्तु पूर्वकथित जातियोंमें कोई कोई ग्रह गणनाकी बात तो दूर रहे अक्षरके नाम नहीं जानने पर भी गणक कहलाता है। दूसरे दूसरे ब्राह्मणोंके साथ इनको कन्याका आदान प्रदान नहीं होता है। इन लोगोंमेंसे बहुतोंने ज्योतिषशास्त्र अध्ययन कर प्रतिष्ठा और उन्नति प्राप्त की है। इन लोगों में जो शिक्षित और धनी हैं, उन्हींका आचार व्यवहार उच्च श्रेणीके ब्राह्मणों जैसा है। इनके साथ उच्चश्रेणीके ब्राह्मणों-का कोई भेद देखा नहीं जाता है, सिर्फ आदान प्रदान की प्रथा प्रचलित नहीं है। दूसरे बहुतसे अशिक्षित वर्ण-विप्र या गणक ब्राह्मण हैं, जो ग्रहदान लेकर ही अपनी जीविका निर्वाह करते हैं, नया वर्ष आने पर ये घर घर घूमते और नूतन पञ्जिकाका फल सुना कर गृहस्थों से दक्षिणा या पारिश्रमिक स्वरूप चावल, दाल, वस्त्र और फल प्रभृति पाते हैं। ऊपर जिन उच्चश्रेणीके गणकों-का उल्लेख हो चुका है, उनके साथ इन लोगों का कोई सम्बन्ध जान नहीं पड़ता है। उच्चश्रेणीके ब्राह्मण भी इन्हें अपनी जातिके समान नहीं मानते हैं। इनका आचार व्यवहार ठीक चण्डाल जैसा है। ये चण्डालका छुआ हुआ जल पीते हैं। इन्हें गलेमें यदि यज्ञोपवीत लटकता न रहता तो ये ठीक चण्डालसे मालूम पड़ते। इनका स्पर्श किया हुआ जल अपवित्र समझा जाता है। ब्राह्मण, कायस्थ और वैद्य प्रभृति उच्चश्रेणीके हिन्दू इन्हें चाण्डालके समान मानते हैं। इनमेंसे बहुत पूर्व-बङ्गाल, फरिदपुर प्रभृति स्थानोंमें रहते हैं। चण्डालके पुरोहितके साथ इनका आहार व्यवहार और आदान प्रदान चला आता है। कहीं कभी उनमेंसे कोई चण्डालों का पौरोहित्य भी करते हैं। ये अपनेको उच्चश्रेणीके गणकों सा समझते हैं। किन्तु कोई विश्वास नहीं कर सकता है कि इनके साथ उच्चश्रेणीके गणकों का कोई सम्बन्ध है।

मनुने जिन समस्त सङ्कर जातियोंका उल्लेख किया है उनमें इन लोगोंका नाम पाया नहीं जाता है। रुद्र यामलोक्त जातिमालामें लिखा है—

"देवलात् [illegible] वैश्यायां समुद्भवः ।
[illegible] ॥"

देवल (पड़ा)के औरस और वैश्याके गर्भसे गणक जातिकी उत्पत्ति है। तिथिवार प्रभृतिकी गणना करना ही इनकी वृत्ति है। इस प्रमाणके अनुसार स्पष्ट

पड़ता है कि वैश्याके गर्भ तथा देवलके औरससे जिस संकर जातिकी उत्पत्ति हुई है, वे ही आजकल आचार्य या गणक कह कर विख्यात हैं। किन्तु परशुरामोक्त जातिमालाके मतसे—

"अम्बष्ठाद् गणको जातो वैश्यायां [illegible]।
[illegible]॥"

अम्बष्ठके औरससे वैश्याके गर्भसे जो संकर जाति उत्पन्न हुई है उन्हींको गणक कहते हैं। नक्षत्र तिथि, योग और ग्रहोंका निर्णय करना ही इनकी उपजीविका है।

कहीं कहीं गणकोंको वर्णविप्र कहा करते हैं, किन्तु पूर्वोक्त दोनों जातिमालामें पतित ब्राह्मणको ही वर्णविप्र कहा गया है, इनमें संकर जातिको वर्णविप्र नामसे उल्लेख नहीं किया है—

"ब्राह्मणः पतितो भूत्वा [illegible]।" (ब्रह्मयाम॰ जातिमा॰)
"ब्राह्मणः पतितो भूत्वा वर्णानां ब्राह्मणोऽभवत्॥" (परशु॰ जाति॰)

किसी कारणसे पतित ब्राह्मणको ही वर्णद्विज या वर्णविप्र कहा करते हैं।

परशुरामोक्त जातिमालामें इनके पतित होनेका कारण भी लिखा है।

"चत्वारिंशत् जातिभेदा अमी पुत्रा विलोमजाः।
एतेषां विंशतेश्चैव पुरोधाः श्रोत्रियो द्विजः।
श्रोत्रियः पतितो भूत्वा वर्णानां ब्राह्मणोऽभवत्॥"
(परशुरामोक्त जातिमा॰)

पहले जिन चालीस संकर जातियोंकी कथा लिखी गई है, वे सबके सब विलोमज हैं। इनमेंसे बीसके पौरोहित्य कार्य करनेसे श्रोत्रिय ब्राह्मण पतित होते हैं एवं उन पतित ब्राह्मणोंको ही वर्णब्राह्मण कहते हैं। इससे साफ साफ जाना जाता है कि वर्णब्राह्मण और गणक एक जातिके नहीं हैं। जो चण्डाल प्रभृति निकृष्ट जातियोंके पुरोहित हैं, वे वर्णविप्र और जो पूर्वोक्त संकर जाति हैं वे गणक माने जाते हैं। कालक्रमसे आचार व्यवहार परिवर्तन हो जानेसे कहीं कहीं दोनों जाति एकमें मिल गई हैं।

फिर भी ब्रह्मयामलमें लिखा है—

"ग्रहज्ञानञ्च [illegible] शाकद्वीपसमुद्भवः।
अग्रवत्[illegible] तु जन्म देवकी ब्राह्मणी ध्रुवम्॥"

गणकोंकी [illegible] लिये [illegible] सुतमें शाकद्वीपमें जन्मग्रहण किया, [illegible] हैं यथा ब्राह्मण हैं।

[illegible] शाकद्वीपी [illegible] अथवा मग्नोक्त शाकद्वीपी ब्राह्मणके जैसा परिचय देते हैं। शाम्बपुराणमें भी शाम्ब कर्तृक शाकद्वीपसे ब्राह्मण लाने की कथा विस्तारस्वरूपसे वर्णित है। [illegible] किन्तु उन पुराणके [illegible] अध्यायमें—

"[illegible]"

इत्यादि वचनोंसे [illegible] इनके काम करनेसे निषेध किया गया है। मालूम पड़ता है कि उक्त पुराणोक्त निषिद्ध कर्म करने पर भी कोई कोई शाकद्वीपी ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मणोंसे नीच एवं गणकजातिके जैसे गिने गये होंगे। ब्रह्मवैवर्तके मतानुसार जो देव ब्राह्मणका धन अपहरण करता है, वह कुम्भान्धकार नरक भोग कर शतजन्म भिन्न भिन्न योनियोंमें भ्रमण करनेके बाद गवर (भोल), स्वर्णकार, सुवर्णवणिक् और यवनसेवी ब्राह्मण हो कर अन्तमें नक्षत्रोपजीवी दैवज्ञ ब्राह्मणमें जन्मग्रहण करता है। (शब्दकल्पद्रुम)

"वसेत् [illegible] तत्र [illegible]।
ततो भवेत् स गणको दैवज्ञ [illegible]॥" (ब्रह्मवैवर्त)

सचमुच गणक जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुतोंका मतभेद है। जातिमाला प्रभृति ग्रन्थोंमें संकर जातिकी जो कथा लिखी गई है, उनमें कहीं भी इतनेके सिवा विशेष किसी प्रकारका संकर जातिका उल्लेख देखा नहीं जाता है। वर्तमान समयमें फरिदपुर अञ्चलमें पूर्वोक्त सङ्करजाति ही गणक नामसे परिचित है। राढ़ प्रभृति अञ्चलके शास्त्रविद् गणकोंका कहना है कि उनके साथ उक्त जातिका कुछ भी संसर्ग नहीं है। जो कुछ हो प्रत्येक ग्रन्थका मत भेद रहनेसे भिन्न भिन्न गणकजातिका रहना असंगत नहीं है। किन्तु वाचस्पत्यने किसीका भी मत ग्रहण न कर चण्डालके औरससे उत्पन्न गणकजातिका एक उल्लेख किया है, तथा प्रमाणके लिये "चर्मकारस्य ही पुत्रो गणको वाद्यपूरकः" यह वाक्य उद्धृत किया है। यह अपूर्ण वचन किस ग्रन्थसे लिया है, इसका कुछ भी उन्होंने उल्लेख नहीं किया है। नूतन संस्करणके शब्दकल्पद्रुममें भी उक्त अपूर्ण अंश उद्धृत हुआ है।

किन्तु उसमें भी किसी ग्रन्थका नाम नहीं है।

गणाचार्य देखो।

५ केतुविशेष। ये आठ होते और तारापुञ्ज जैसे दीखते हैं। बृहत्संहिताके अनुसार ये ब्रह्माके पुत्र माने गये हैं।

'तारापुञ्जनिकाशा गणका नाम प्रजापतेरष्टौ।

(बृहत्सं हिता ११।२९)

गणकपति, गणधर देखो।

गणकर्णिका (सं० स्त्री०) गणस्य गणेशस्य कर्ण इव पत्र मस्याः बहुव्री०। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायणलता।

गणकर्मन् (सं० क्ली०) गणयज्ञ। गणयज्ञ देखो।

गणकार (सं० पु०) गण धात्वादिपाठं करोति, गण कृ अण्, उपपदस०। १ धातुसंग्रहकर्त्ता। २ भीमसेन। गण गणना करोति गण कृ अण्। ३ जो गणना करे, गणक।

गणकारि (सं० पु०) गण धात्वादिपाठं करोति, गण कृ बाहुलकात् इञ्। गणकार, वह जो गणना करता हो।

गणकी (सं० स्त्री०) गणकपत्नी, गणककी स्त्री।

गणकुण्ड—हिमालयस्थ एक पवित्र कुण्ड।

(हिमाद्रिखण्ड ८।४८)

गणकूट (सं० पु०) गणरूप कूट। वर और कन्याका देव, मनुष्य या राक्षस-गण रूप कूट। विवाह देखो।

गणगति (सं० स्त्री०) गणनागति, कोई निर्दिष्ट उच्च संख्या।

गणचक्रक (सं० क्ली०) गणानां धार्मिकानां चक्रमत्र, बहुव्री०। धार्मिकोंका एकत्र भोजन।

गणच्छन्द (सं० क्ली०) पादपरिमित छन्द।

गणजीवविजय—सन्देहसमुच्चय नामक संस्कृत धर्मशास्त्रके संग्रहकार।

गणता (सं० स्त्री०) गणस्य भाव गण तल् टाप्। १ समूहत्व, समूहका भाव। २ समूह, ढेर।

गणतिथ (सं० त्रि०) गणानां पूरक गण तिथुग्। गणपूरक।

गणदास (सं० पु०) नृत्यकार।

गणदीक्षी (सं० पु०) गणान् दीक्षयति दीक्ष णिनि। बहुतोंको यज्ञ करानेवाला, बहुयाजक। (त्रि०) गणस्य गणेशस्य शिवस्य वा दीक्षा विद्यते इनि् यस्य। २ गणेश या शिव मन्त्रमें दीक्षित, जो गणेश या शिवमन्त्रमें दीक्षित हो।

गणदेवता (सं० स्त्री०) समूहचारी देवता। आदित्य १२, विश्वदेवा १०, वसु ८, तुषित ३६, आभास्वर ६४, वायु ४९, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११ इन सबको गणदेवता कहते हैं।

गणद्रव्य (सं० क्ली०) गणानां द्रव्य, ६ तत्। सर्वसाधारणकी सम्पत्ति, वह धन जिस पर बहुतसे मनुष्योंके समान अधिकार हो।

गणद्वीप (सं० क्ली०) गणानां सप्तानां राज्यत्वात् द्वीप। द्वीपविशेष। इस द्वीपमें सात राज्य थे। इस लिये इसका नाम गणद्वीप पड़ा।

गणधर (सं० पु०) आचार्य, अध्यापक, जैनाचार्य।

जैनमतानुसार गणधर वे कहलाते हैं, जो तीर्थङ्करोंकी दिव्यध्वनि (उपदेश) को धारण पूर्वक, आचाराङ्ग आदि ग्यारह अङ्गोंमें विभक्त कर मनुष्योंको भिन्न भिन्न भाषाओंमें उनके उपदेशको समझाते हैं। प्रत्येक तीर्थङ्करोंके गणधर हुआ करते हैं। ये भी नियमसे मुक्त हो जाते हैं। गौतम गणधर देखो।

गणन (सं० क्ली०) गण्यते गण णिच्, भावे ल्युट्। १ गणना, गिनना। २ गिनती। ३ अवधारण निश्चय।

गणना (सं० स्त्री०) १ गिनती। २ हिसाब। ३ संख्या।

"अपि त्रिलोकी गणनापरा स्यात्।

तस्याः समाप्तिर्न गुणस्य स्यात्॥ (नैषध ३।४०)

गणनागति (सं० स्त्री०) कोई निर्दिष्ट उच्चसंख्या।

गणनाथ (सं० पु०) गणानां प्रमथादीनां नाथ, ६ तत्। १ प्रमथाधिपति शिव, महादेव। २ गणेश। ३ गणोंका मालिक।

गणनायक (सं० पु०) गणानां नायक, ६ तत्। १ गणेश।

"सिद्धका भारतस्यास्य भवता गणनायक।" (भारत १।१।७७)

२ शिव, महादेव।

गणनायिका (सं० स्त्री०) गणानां नायक शिव तस्य शक्ति गणनायक-टाप्। दुर्गा, भगवती।

गणनापति (सं० पु०) १ गणेश। २ गणोंका मालिक। ३ शिव, महादेव। ४ ज्योतिषशास्त्रविद्।

गणनामहामात्र (सं० पु०) आय और व्ययका मन्त्री, वह जो खर्च और आमदका हिसाब रखता हो।

गणनीय (सं० त्रि०) १ गिनने योग्य। २ नामी, प्रसिद्ध।

गणप (सं० पु०) गणेश।

गणपति (सं० पु०) गणानां पतिः, ६-तत्। १ गणेश। २ शिव। ३ बृहस्पति। ४ अथर्व उपनिषद्विशेष। ५ मृच्छकटिक नाटकका एक ग्रन्थकार। ६ गोपालके पुत्र रत्नप्रदीप नामक ज्योतिःशास्त्रकार। ७ वीरेश्वरके पुत्र, गङ्गाभक्तितरङ्गिणी नामक संस्कृतके ग्रन्थप्रणेता। ८ राम-उपाध्यायके पुत्र, चोरपञ्चाशिकाके टीकाकार। ९ एक विशिष्ट राजोपाधि। एक राजाकी पदवी। दाक्षिणात्यमें वरङ्गलके राजा इस उपाधिको धारण करते थे।

गणेश देखो।

गणपतिकल्प (सं० पु०) गणेशकी एक पूजाप्रक्रिया। यह विघ्नशान्तिके लिये गणपति उद्देशसे किया जाता है। विनायक नामक कोई अपदेवता या भूत होते हैं। वह समय समय पर सुन्दर नरनारियोंको आश्रय करते या जिस पर उनकी दृष्टि रहती, लोग भूत समझने लगते हैं। विनायकका आश्रय वा दृष्टि होनेसे प्रायः दुःस्वप्न आता है। वह व्यक्ति स्वप्नमें देखता—मानो अगाध जलके तलमें प्रवेश करके गोते खाता और कभी कभी कटा मुण्ड भी देख पाता है। यही विनायककी दृष्टिका प्रधान लक्षण है। इसके व्यतीत स्वप्नमें काषायवस्त्र-आच्छादित हिंस्र जन्तु पर अधिरोहण भी किया जाता है। उस व्यक्तिको सर्वदा चण्डाल प्रभृति निकृष्ट जातियों, गर्दभों या उष्ट्रोंके साथ रहना अच्छा लगता है। जब वह एकाकी कहीं चलता, मालूम पड़ता—मानो उसके साथ कितने ही दूसरे लोग लगे हैं। इससे वह डर करके चौंक पड़ता है। उसके मनकी स्फूर्ति बिलकुल विलुप्त हो जाती है। वह जो कोई भी कार्य करने लगता, उसको विपरीत फल मिलता है। राजकुमारके प्रति विनायककी दृष्टि होने पर वह राजत्वसे वञ्चित रहते हैं। यदि किसी कुमारी पर उनको दृष्टि पड़ जाती, वह स्वामिसुखसे वञ्चित हो करके घोर यातनामें समय बिताती है। गर्भिणीके प्रति विनायकका आविर्भाव होनेसे सन्तान नष्ट होता है। यदि विद्यार्थी पर इनकी दृष्टि पड़ी, वह आचार्य वा श्रोत्रियः नहीं हो सकता। इनको दृष्टिसे वणिक्का वाणिज्य बिगड़ता और कृषककी कृषिमें घाटा पड़ता है। विनायककी शान्तिके लिये याज्ञवल्क्य-ने इस प्रकार विधान किया है—जिसके प्रति विनायक-की दृष्टि हो, शुभ दिनको श्वेतसर्षप शिला पर पेषण करके घृतके साथ उसके शरीरमें लगाना और मस्तकमें सर्वौषधि तथा सर्वगन्ध लेपन चढ़ाना चाहिये। फिर उस व्यक्तिको भद्रासन पर बैठा लेते हैं। अश्वशाला, हस्तिशाला, वल्मीक, सङ्गमस्थान तथा ह्रदकी मृत्तिका, गोरोचना, गन्ध और गुग्गुलु जलमें निक्षेप किया जाता है। इसमें एकवर्ण चार कलसी डुबाके जल लाते और भद्रासनको रक्तवर्ण वृषचर्म पर लगाते हैं। पीछे इसी जलसे उक्त व्यक्तिको स्नान कराना पड़ता है। उसका मन्त्र है—

"सहस्राक्षं शतधारमृषिभिः पावनं कृतम्।
तेन त्वामभिषिञ्चामि पावमान्यः पुनन्तु ते॥
भगं ते वरुणो राजा भगं सूर्यो बृहस्पतिः।
भगमिन्द्रश्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः॥
यत्ते केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नन्तु सर्वदा॥"

इसी प्रकार स्नान करा करके उसके मस्तक पर उडुम्बरके स्रुवसे सर्षपतैल डालना चाहिये। वाम हस्तमें कुश ग्रहण करके इस कार्यका अनुष्ठान करते हैं। मित, सम्मित, शालकटङ्कट, कुष्माण्ड और राजपुत्र नामोंके साथ स्वाहा योग करके चतुष्पथमें सूप पर कुश बिछा करके उस पर बलि दिया जाता है। कृताकृत तण्डुल, पलान्न, नानावर्ण सुगन्ध पुष्प, मूलक, पूरी, कचौरी, एरण्डकी माला, दधियुक्त अन्न, पायस, पिष्टक आदि द्रव्य विनायककी पूजाका उपहार वा बलि है। यह सकल पूजोपहार एकत्र करके मस्तकको भूमि पर रख विनायक-जननीकी आराधना करनी चाहिये। दूर्वा और सरसोंके फूलसे उनको अर्घ्य देना और हाथ जोड़ करके यह मन्त्र पढ़ना पड़ता है—

"रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥"

इसके पीछे शुक्लवस्त्र परिधान करके सफेद चन्दन और सफेद फूलोंकी माला पहन ब्राह्मण भोजन कराना और गुरुको एक जोड़ा कपड़ा पहनाना चाहिये। इसी प्रकार विनायककी पूजा शेष होने पर नवग्रह, लक्ष्मी गया

आदित्यका अर्चन और महागणपतिका तिलक किया जाता है। इससे सकल दोषोंकी शान्ति होती है। विनायक भी सन्तुष्ट हो करके पीड़ित व्यक्तिको परित्याग करते हैं। (याज्ञवल्क्य)

गणपतिदेव—दक्षिणदेशमें वरङ्गल राज्यके एक राजा, प्रतापचन्द्रके पुत्र। शिलालेख पढ़नेसे जाना जाता है कि १२२८ई०में इन्होंने चोलोंको पराभूत कर कलिङ्गदेश पर अधिकार किया था।

गणपतिनाग—समुद्रगुप्तके समसामयिक आर्यावर्त्तवासी एक राजा। ये समुद्रगुप्तसे परास्त हुए थे।

गणपतिरावल—एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार। ये रावल हरिशङ्करके पुत्र और रामदासके पौत्र थे इन्होंने पूर्वनिर्णय, मुहूर्त्तगणपति, शान्तिगणपति, श्रौताधानपद्धति और सम्बन्धगणपति नामक धर्मशास्त्र प्रणयन किये हैं।

गणपतिव्यास—१ एक प्राचीन कवि। १२७२ ई०को इन्होंने धाराध्वंस नामक ऐतिहासिक काव्यकी रचना की है। २ योगसारसमुच्चय नामक वैद्यकग्रन्थरचयिता।

गणपर्वत (सं० पु०) गणानां प्रमथादीनां आयासरूप पर्वत। कैलासपर्वत। इस पर्वत पर प्रमथ वा शिवके गण रहते थे, इस लिये इसका नाम गणपर्वत पड़ा।

गणपाठ (सं० पु०) गणानां स्वरादिगणानां पाठोऽत्र, बहुव्री०। पाणिनि प्रणीत एक ग्रन्थ। इसमें स्वरादि गणोंके विषय लिखे हुए हैं

गणपाद (सं० पु०) गणस्येव पादोऽस्य, बहुव्री०। जिसके दोनों पैर प्रमथ या शिवगणके जैसे हों।

गणपीठक (सं० क्ली०) गणस्य शिवस्य पीठ आसनमिव कायति कै क। वक्षस्थल, छाती।

गणपुङ्गव (सं० पु०) गण पुङ्गव इव उपमितस०। १ गणश्रेष्ठ। २ देशविशेष, एक देशका नाम ३ उस देशके रहनेवाले। ४ उस देशके राजा।

"कौलिङ्गान् गणपुङ्गवानथ त्रिगर्त्तान्वकान् पार्थिवान्।" (हरिवंश पिता ७।२७)

गणपूर्व (सं० पु०) गणानां ग्राम्यादिस्थानीकानां पूर्व प्रधान, ६ तत्। ग्रामणी, ग्रामके अधिनायक, गांवके मुखिया।

गणप्रमुख (सं० पु०) जाति या श्रेणीमें प्रधान, वह जो जाति या समाजमें श्रेष्ठ हो।

गणभर्त्तृ (सं० पु०) गणानां प्रथमादीनां भर्त्ता ६-तत्। १ महादेव, शिव।

'प्रसाद्य पुत्र मजते गणभर्तुः कृपा।' (किरातार्जु नीय ३।४२)

२ गणेश। (त्रि०) ३ बहुजनस्वामी, जो बहुतोंके अधिपति हो।

गणभोजन (सं० क्ली०) साधारण भोज।

गणमुख (सं० पु०) गणानां मुख, ६ तत्। ग्रामणी, ग्रामके अधिनायक, गांवके मुखिया।

"रविरिति शशिरिति हिमिरिति गणमुख्या ग्रस्वजीवित च्यवन्।" (हरिवंश १०।२४)

गणयज्ञ (सं० पु०) गणस्य भ्रातृणां सखीनां वा समूहस्य करणीयो यज्ञ। भ्रातृवर्ग अथवा बन्धुवर्गका अनुष्ठेय मरुत्स्तोम नामक यज्ञ, भाइयों या बन्धुओंके करने योग्य मरुत्स्तोम नामक यज्ञ।

'बेभ्रात्रीयकामेषु गिरो बहुनसामि गणयज्ञो भ्रातृणां सखीनां वा।' (कात्यायनश्रौत २२।११।१२)

गणयाग (सं० पु०) गणोद्देशेन शान्त्यर्थं याग। १ गणपतिकल्प, गणेशके उद्देशसे करने योग्य पूजादि।

गणरत्न (सं० क्ली०) गणाः स्वरादि गणाः रत्नानीव यत्र, बहुव्री०। एक ग्रन्थका नाम। पाणिनिने गणपाठमें जो सब गण निर्देश किये हैं, वे ही इस ग्रन्थमें पद्यरूपसे लिखे हैं। व्याकरणाध्यायीके लिये यह विशेष उपकारी है।

गणरात्र (सं० क्ली०) गणानां रात्रीणां समाहार, समाहार द्विगु, अच्। रात्रि समूह।

गणरूप (सं० पु०) गणा बहूनि रूपाणि यस्य, बहुव्री०। अर्कवृक्ष, अकवनका पेड़।

गणरूपी (सं० पु०) गणा बहूनि रूपाणि सन्त्यस्य गणरूप इनि। श्वेताकवृक्ष, सफेद आकका पेड़।

गणवत् (सं० त्रि०) गणोऽस्त्यास्य गण मतुप् मस्य व। गणयुक्त, जिसमें गण हो।

गणवती (सं० स्त्री०) धन्वन्तरि दिवोदासकी माताका नाम।

गणशस् (अव्य०) गण वीप्सायां कारकार्थे शस्। बहुश दलका दल झुण्डका झुण्ड।

गणाग्नि (सं० पु०) देवताविशेष, कोई देवता जो किसी

एक गणकर्में आश्रय कर रहते हों, मरुत् प्रभृति सात देवता।

गणहास (सं० पु०) १ चोर नासक गन्धद्रव्य। (त्रि०) २ जो बहुत मनुष्योंको हंसा सके।

गणहासक, गणहास देखो।

गणाक्रान्त (सं० त्रि०) गणेन आक्रान्तः। १ किसी पक्षमें स्थित। २ जिस पर बहुत मनुष्योंने आक्रमण किया हो।

गणाग्रणी (सं० पु०) गणानां अग्रणीः, ६-तत्। १ गणेश। २ जो बहुतोंसे सम्मानित हो, जो बहुतोंमें श्रेष्ठ गिना जाता हो।

गणाचल (सं० पु०) गणभूयिष्ठोऽचलः। कैलास पर्वत। इस पर्वत पर गणदेवता रहते हैं, इसलिये इसका नाम गणाचल पड़ा है।

गणाचार्य (सं० पु०) लोकगुरु, शिक्षक।

गणाधिप (सं० पु०) गणानामधिपः, ६-तत्। १ गणेश। २ शिव। ३ गणोंके मालिक।

४ गणाधिप, जैनमतानुसार—साधुओंके संघमें जो सबसे श्रेष्ठ अथवा वृद्ध और बहुज्ञानी हों। मुनिओंके अधिपति। जैसे, श्रीजिनेसेनाचार्य ५०० मुनियोंके संघके गणाधिप थे। (राजवार्तिक)

गणाध्यक्ष (सं० पु०) १ गणेश। २ शिव।

गणान्न (सं० क्ली०) गणानामन्नं, ६-तत्। बहुस्वामिक अन्न, वह अन्न जिस पर बहुतोंका अधिकार हो।

गणाभ्यन्तर (सं० पु०) गणः गणार्थोत्सृष्टमठधनादिः तेन अभ्यन्तर उपजीवी, ३-तत्। वह मनुष्य जो मठादिमें गण उद्देश्यसे दिये हुए धनादिसे प्रतिपालित होता हो, या वह मनुष्य जिसकी रक्षा मन्दिरके धनसे होती हो। भाष्यकार मेधातिथिने 'गणाभ्यन्तर' शब्दका अर्थ दूसरे प्रकारसे किया है। उनके मतसे जो मिलकर एक कार्यका अनुष्ठान करके जीविका निर्वाह करते, वे ही गण कहलाते हैं। इस गणके अन्तर्गत चातुर्विद्य ब्राह्मणोंको गणाभ्यन्तर कहते हैं।

गणि (सं० स्त्री०) गण-इन्। गणन, गणना, गिनती।

गणिका (सं० स्त्री०) गणो लम्पटे गण उपपतित्वे नास्ति अस्याः गण-ठन्-टाप्। १ वेश्या, रंडी। मेधातिथिके मतसे जो कामिनी सिर्फ संभोगकी इच्छासे बहुत मनुष्योंमें अनुरक्त हो जाती हों, उन्हें पुंश्चली कहते हैं। एवं जो अपनेको सजधज कर युवकोंको वशीभूत करतीं और वेश्याके वेशमें रहती हैं और यथार्थमें जिनके हृदयमें संभोग की इच्छा कभी भी नहीं रहती तथा धन देनेपर जो सभोंके प्रति अनुराग करती हैं, उन वेश्याओंको गणिका कहते हैं।

मनुके मतानुसार इनका अन्न खानेसे किसी तरहकी सद्गति नहीं मिलती है। वेश्या शब्द देखो। २ यूथिका।

गणिकारिका (सं० स्त्री०) गणिं गणनं करोति। १ नदीके समीप उत्पन्न वृक्षविशेष, एक गनियारका पेड़। इसका पर्याय—श्रीपर्ण, अग्निमन्थ, गणिका, जया, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, अरणि, वह्निमन्थ, मथन, गिरिकर्णिका, अग्निमथन, तर्कारी, वैजयन्तिका, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, कर्णिका, नादेयी, विजया, अनन्ता और नदीजा है। इसका गुण—कटु, उष्ण, तिक्त, कफ, वायु, शोथ, अग्निमान्द्य, अर्श, मलबन्ध और ग्मनाशक है।

गणिकारी (सं० स्त्री०) पुष्पवृक्षविशेष, गनियारका पेड़। वसन्त कालमें इसके फूल खिल कर चारो ओर सुगन्धित कर देते हैं।

गणित (सं० क्ली०) १ गणन, गणना, गिनती। २ ग्रहोंकी गति, स्थितिकी गणना। ३ अङ्कशास्त्र। गणित दो भागोंमें विभक्त है। व्यक्तगणित या पाटीगणित और अव्यक्तगणित या वीजगणित। (त्रि०) गण कर्मणि क्त। ४ जिसकी गणना हो चुकी हो, जो गिना गया हो। गणितेन गणनया आगतं गणित-अच्। ५ खेतोंका फल।

गणितज्ञ (सं० पु०) गणितशास्त्र जाननेवाला, ज्योतिषी।

गणिताध्याय (सं० पु०) भास्कराचार्य-प्रणीत सिद्धान्तशिरोमणिका एक विस्तृत अध्याय। इसमें ग्रहोंकी मध्यगति और स्फुटादि विषय अच्छी तरह लिखे गये हैं। लीलावती और वीजगणित जान लेने पर इसका मर्मग्रहण करना सहज है।

गणितिन् (सं० त्रि०) हिसावी, जो हिसाब किताब करता हो।

गणिपिटक (सं० क्ली०) जैनोंके द्वादश अङ्ग। १ आचार अङ्ग, २ सूत्रकृत, ३ स्थानाङ्ग, ४ समवाय, ५ व्याख्या प्रज्ञप्ति, ६ ज्ञात, ७ उपासकधायन, ८ अन्तकृद्दशाङ्ग,

८ अनुत्तरोपपादक दशाङ्ग, १० प्रश्नव्याकरण, ११ विपाकश्रुत, १२ दृष्टिप्रवाद इन बारहोंको गणिपिटक कहते हैं।

गणीभूत (सं० त्रि०) जो किसी गण या पक्षमें स्थित हो, गणाक्रान्त।

गणेय (सं० त्रि०) सङ्ख्येय, गिनने योग्य, गिनती लायक।

गणेरु (सं० पु०) १ कर्णिकारवृक्ष। २ वेश्या। ३ हस्तिनी, मादा हाथी।

गणेरुका (सं० स्त्री०) गणेरुं वेश्यां कायति कै क। कुटनी, दूती।

गणेश (सं० पु०) गणानामीश: ६-तत्। पार्वतीनन्दन, गिरिजाके पुत्र। शनैश्चरकी दृष्टि पड़नेसे इनका सिर कट गया था इस पर विष्णुने एक हाथीका सिर काट कर धड़ पर सटो, जिला दिया, इसी कारण इनका नाम गजानन पड़ा। गजानन देखो। सत्रावस कत्रियान्तकारी परशुराम क्षत्रियोंको विनाश कर शिव और पार्वतीको नमस्कार करनेके लिये कैलास गये। उस समय शिव और पार्वती गाढ़ी निद्रामें पड़े थे और गजानन द्वार पर पहरा देते थे जिससे उन्होंकी निद्रामें किसी प्रकारका विघ्न न हो। परशुरामने आकर कहा कि मैं शिव और पार्वतीसे भेंट करना चाहता हूं। किन्तु गणेशने उन्हें बाधा देते हुए कहा, अभी। अभी ये दोनों निद्राके वशीभूत हैं। कृपया थोड़ी देर विलम्ब जाइये, जागने पर उनसे साक्षात् कर सकते हैं। इस पर परशुरामजी सन्तुष्ट न हुए। एक दूसरेकी मीठी बातोंसे कुछ काल तक समझानेकी चेष्टा करते रहे किन्तु निष्फल हुआ। तब परशुरामजी क्रोधित हो पड़े और गणेशको अवहेलना करते हुए भीतर जाने लगे। इस पर ये उनको हाथोंसे पकड़ समस्त त्रिभुवनमें घुमा कर छोड़ दिया। परशुरामने लज्जित हो कर अपने परशुको बाहर निकाला और उन पर निक्षेप किया। परशुके आघातसे तो गणेशका विनाश नहीं हुआ लेकिन एक दांत जड़से उखड़ गया। इसी कारण गणेश एकदन्त कहलाते हैं। (ब्रह्मवैवर्त्त गणेशखण्ड)

गणेश एक प्रसिद्ध लेखक थे। महाभारतमें लिखा है कि सत्यवतीनन्दन व्यासदेव योगबलसे विपुलायतन महाभारत मनही मन रचे थे, किन्तु लेखकके अभावसे जनसमाजमें उसका प्रचार न कर सके। इसलिये वे अत्यन्त चिन्तित और विषम हो गये। एक दिन हिरण्यगर्भसे उन्होंने अपने मनकी व्यथा कह सुनाई। इस पर हिरण्यगर्भने गणेशको लेखक करनेके लिये परामर्श किया। व्यासदेवने गणेशको लिखनेके लिये अनुरोध किया। गणेशने यह कहते हुवे लिखना अङ्गीकार किया कि यदि व्यासदेवको बोलनेमें विलम्ब हो जाय जिस कारण उनके दोषसे मेरी लेखनी विश्रान्त हो पड़े तो मैं कदापि लिख नहीं सकता। गणेशने लिखना आरम्भ किया और व्यास कहने लगे। जब व्यास देखते थे कि अब अधिक कहा नहीं जाता तो उसी समय दो एक कूट श्लोक रचना कर बोलते जाते थे। गणेशको इस कूट श्लोकका अर्थ शीघ्र समझमें न आनेके कारण लेखनीको कुछ कालके लिये रुक जानी पड़ती थी इसी अवसर पर व्यास मनही मन बहुत श्लोक रचना कर डालते थे। (भारत १।१।७०)

जब कोई कार्य आरम्भ करना होता है तो उस समय गणेशकी मूर्तिको स्मरण करनेसे वह कार्य निर्विघ्न समाप्त हो जाता है। इसी कारण गणेशको सिद्धिदाता भी कहा करते हैं। आस्तिक हिन्दु लेखक सबसे पहले गणेशका नाम लिखा करते हैं। उन्होंका विश्वास है कि गणेश एक प्रसिद्ध लेखक और सिद्धिदाता हैं। इसी लिये इनका नाम पहले लिखनेसे किसी प्रकारके विघ्नकी सम्भावना नहीं रहती है।

स्कन्दपुराणके गणेशखण्डमें वक्रतुण्ड, कपिल, चिन्तामणि तथा विनायक प्रभृति रूपोंमें गणेशके अवतारकी कथा लिखी है। गणपति तत्त्व नामक ग्रन्थके मतसे गणेश ही परब्रह्म, श्रुति स्मृति वर्णित परमब्रह्म, परमेश्वर हैं। गणपति तत्त्वमें लिखा है कि गणेश सर्वेश्वर, भूत, भविष्य और वर्तमानका हाल जाननेवाले हैं। मूर्तिभेदसे येही मस्तकके प्रतिपालक हैं, फिर समस्त अन्यपदार्थ इन्हींमें लय हो जाते हैं तथा ये ही प्रधान अर्थात् प्रकृति एवं योवश अयत् जीवात्माके अधिपति हैं। इनकी आराधना करनेसे मुक्तिलाभ होता है। जिस तरह शक्तिके उपासक शाक्त और विष्णुके उपासक वैष्णव कहलाते उसी तरह जो गणपतिके उपासक हैं ये गाणपत्य कहलाते हैं। हिन्दू सिद्धिदाता गणेशकी पूजा सबसे

-पहले करते हैं। गणेश अनेक प्रकारके हैं। तन्त्रमें ५० गणेशका उल्लेख है। यथा—१ विघ्नेश, २ विघ्नराज, ३ विनायक, ४ शिवोत्तम, ५ विघ्नकृत्, ६ विघ्नहर्त्ता, ७ गण, ८ एकदन्त, ९ द्विदन्तक, १० गजवक्त्र, ११ निरञ्जन, १२ कपर्द्दी, १३ दीर्घजिह्वक, १४ शङ्कुकर्ण, १५ वृषभध्वज, १६ गणनायक, १७ गजेन्द्र, १८ सूर्पकर्ण, १९ त्रिलोचन, २० लम्बोदर, २१ महानन्दा, २२ मूर्त्तिमूर्ति, २३ सदाशिव, २४ आमोद, २५ दुर्मुख, २६ सुमुख, २७ प्रमोदक, २८ एकपाद, २९ द्विजिह्व, ३० शूरवीर, ३१ षण्मुख, ३२ वरद, ३३ वामदेव, ३४ वक्रतुण्ड, ३५ द्विरण्डक, ३६ सेनानी, ३७ ग्रामणी, ३८ मत्त, ३९ विमत्त, ४० मत्तवाहक, ४१ जटी, ४२ मुण्डी, ४३ खड्गी, ४४ वरेण्य, ४५ वृषकेतन, ४६ भक्तप्रिय, ४७ गणेश, ४८ मेघनाद, ४९ व्यापी और ५० गणेश्वर। गणेशके उपरोक्त पचास नामोंके फिर पचास शक्तियां हैं। यथा—१ ह्री, २ श्री, ३ पुष्टि, ४ शान्ति, ५ स्वस्ति, ६ सरस्वती, ७ स्वाहा, ८ मेधा, ९ कान्ति, १० कामिनी, ११ मोहिनी, १२ नटी, १३ पार्वती, १४ ज्वलिनी, १५ नन्दा, १६ सुयशा, १७ कामरूपिणी, १८ उमा, १९ तेजोवती, २० सत्या, २१ विघ्नेशानी, २२ सुरूपिणी, २३ कामदा, २४ मदजिह्वा, २५ भूति, २६ भौतिक, २७ सिता, २८ रमा, २९ महिषी, ३० भ्रूङ्गिणी, ३१ विकर्णपा, ३२ भ्रूकुटि, ३३ दीर्घघोणा, ३४ धनुर्द्धरा, ३५ यामिनी, ३६ रात्रि, ३७ कामान्धा, ३८ शशिप्रभा, ३९ लोलाक्षी, ४० चञ्चला, ४१ दीप्ति, ४२ सुभगा, ४३ दुर्भगा, ४४ शिवा, ४५ भर्गा, ४६ भगिनी, ४७ शुभदा, ४८ कालरात्रि, ४९ कालिका, और ५० लज्जा। (शारदातिलकटीकामें राघवभट्ट)

गणेशके शरीर स्थूल तथा खर्व, मुख हाथीसा और उदर लम्बा है। इनके कपालमें मदजल निःसृत होता है, जिसके सौरभसे आकुल हो कर मधुपकुल गण्डस्थलके निकट सर्वदा भ्रमण करते रहते हैं। वृहत् दन्तकी आघातसे अरिकुल निधन हो कर उनका रक्त सिन्दुरकीसी शोभा देता है। गणेश यथार्थमें बहुत सुन्दर है और इनकी आराधना करनेसे विघ्न नाश तथा सिद्धि होती। है (तन्त्र) गणेशका ध्यान। यथा—

"खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्॥
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कर्मसु॥"

प्रायः सब कोई इसी ध्यानसे गणेशकी पूजा किया करते हैं। तन्त्रसारमें गणेशका और दूसरा ध्यान लिखा है। तान्त्रिकगण इसी ध्यानसे गणेश-पूजा करते हैं—

गणेशका तान्त्रिक ध्यान यथा—

"सिन्दूराभं त्रिनेत्रं पृथुतरजठरं हस्तपद्मैर्दधानं।
दन्तं पाशाङ्कुशेष्टान्युरुकरविलसद्बीजपूराभिरामम्॥
बालेन्दुद्योतमौलिं करिपतिवदनं दानपूरार्द्रगण्डं।
भोगीन्द्राबद्धभूषम् भजत गणपतिं रक्तवस्त्राङ्गरागम्॥" (तन्त्रसार)

इस ध्यानसे जाना जाता है कि गणेशके चार हाथ और तीन नेत्र हैं, इनकी मूसेकी सवारी है जिस पर चढ़



कर ये त्रिभुवन भ्रमण किया करते हैं। बहुत स्त्रियोंका विश्वास है कि गणेशकी आराधनासे गृहमें इन्दुरका उपद्रव नहीं रहता है। इसलिये बहुतसी गृहस्थ महिला विजयाके दिन दुर्गाप्रतिमाके पार्श्वस्थित गणेशमूर्त्तिके पद पर मूसेकी मट्टी रख देती हैं और उनका दौरात्म्य निवारणके लिये प्रार्थना करती हैं।

गणेशका बीजमन्त्र :—

गां हृदयाय नमः, गीं शिरसे स्वाहा, इत्यादि क्रमसे अङ्गन्यास और करन्यास करना पड़ता है। गणेशका पौराणिक मन्त्र, 'ओं नमो गणेशाय।' गणेश गायत्री।

"एकदंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमही तन्नो विघ्न प्रचोदयात्।"

(प्राणतोषिणी)

गणेशका नमस्कार मंत्र—

"देवेन्द्रमौलिमन्दार-मकरन्द-कणारुणा।
विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बुजरेणवः॥"

पश्चिम उत्तर अञ्चलमें वक्रतुण्ड और ढुण्ढिराज ये दोनों गणेश अति प्रसिद्ध हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराणके मतसे—

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं गणेश्वराय ब्रह्मरूपाय सर्वसिद्धिप्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः। इसी मन्त्रसे गणेशपूजा करनी उचित है। तुलसीपत्र द्वारा गणेशपूजा करना निषिद्ध मानी जाती है। गणेशके इस मन्त्रको पचास लाख बार जपनेसे मन्त्रकी सिद्धि होती है। गणेशपूजा शेष होने पर स्तवपाठ करना चाहिये। गणेशका स्तव, यथा—

श्रीविष्णुरुवाच।

"ईश! त्वां स्तोतुमिच्छामि ब्रह्मज्योतिः सनातनम्।
निरूपितुमशक्तोऽहमनुरूपमनीहकम्।
प्रवरं सर्वदेवानां सिद्धानां योगिनां गुरुम्।
सर्वस्वरूपं सर्वेशं ज्ञानराशिस्वरूपिणम्॥
अव्यक्तमक्षरं नित्यं सत्यमात्मस्वरूपिणम्।
वायुतुल्यातिनिर्लिप्तं चाक्षतं सर्वसाक्षिणम्॥
संसारार्णवपारे च मायापोते सुदुर्लभम्।
कर्णधारस्वरूपञ्च भक्तानुग्रहकारकम्॥
वरं वरेण्यं वरदं वरदानामपीश्वरम्।
सिद्धं सिद्धिस्वरूपञ्च सिद्धिदं सिद्धिसाधनम्॥
ध्यानातिरिक्तं ध्येयञ्च ध्यानासाध्यञ्च धार्मिकम्।
धर्मस्वरूपं धर्मज्ञं धर्माधर्मफलप्रदम्॥
बीजं संसारवृक्षाणामङ्कुरञ्च तदाश्रयम्।
स्त्रीपुंनपुंसकानाञ्च रूपमेतदतीन्द्रियम्॥
सर्वाद्यमग्रपूज्यञ्च प्राकृतं प्रकृतेः परम्।
त्वां स्तोतुमक्षमोऽनन्तः सहस्रवदनेन च॥
न क्षमः पञ्चवक्त्रश्च न क्षमश्चतुराननः।
सरस्वती न शक्ता च न शक्तोऽहं तव स्तुतौ॥
इत्येवं स्तवनं कृत्वा सुरेशं सुरसंसदि।
सुरेशश्च सुरैः सार्द्धं विरराम रमापतिः॥
इदं विष्णुकृतं स्तोत्रं गणेशस्य च यः पठेत्॥
सायं प्रातश्च मध्याह्ने भक्तियुक्तः समाहितः॥
तद्विघ्ननिघ्नं कुरुते विघ्नेशः सततं मुने।
वर्द्धते सर्वकल्याणं कल्याणजनकः सदा॥
यात्राकाले पठित्वा तु यो याति भक्तिपूर्वकम्।
तस्य सर्वाभीष्टसिद्धिर्भवत्येव न संशयः॥
तेन दृष्टञ्च दुःस्वप्नं सुस्वप्नमुपजायते।
कदापि न भवेत्तस्य ग्रहपीडा च दारुणा॥
भवेद्विनाशः शत्रूणां बन्धूनाञ्च विवर्द्धनम्।
शश्वद्विघ्नविनाशश्च शश्वत्सम्पद्विवर्द्धनम्॥
स्थिरा भवेद् गृहे लक्ष्मीः पुत्रपौत्रविवर्द्धिनी।
सर्वैश्वर्यमिह प्राप्य ह्यन्ते विष्णुपदं लभेत्॥
फलञ्चापि च तीर्थानां यज्ञानां यद्भवेद् ध्रुवम्।
महतां सर्वदानानां श्रीगणेशप्रसादतः॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्त्तपुराणे गणेशखण्डे विष्णुकृतं गणेशस्तोत्रम्॥"

गणेशपूजा सिर्फ भारतवर्षमें ही नहीं होती वरं और भी देशोंमें यथा नेपाल, चीन, जापान और मङ्गोलियामें होती है। नेपालके हिन्दू और बौद्धावलम्बियोंको पूरा विश्वास है कि गणेशको पूजासे अभीष्ट सिद्ध होता है। नेपालमें पशुपतिनाथ मन्दिरके उत्तरमें एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध गणेशमन्दिर है जिसे अशोककी लड़की चारुमतीने निर्माण कराया है। यवद्वीपमें भी गणेशके कई एक स्वरूपकी मूर्तियोंकी पूजा होती है। मन्त्रमहोदधिमें गणेशका ध्यान यों है—

"विषाणाङ्कुशाक्षसूत्रं पाशं दधानं करैर्मोदकं पुष्करेण।
स्वपत्न्या युतं हेमभूषाभराढ्यं गणेशं समुद्यद्दिनेशाभमीडे।"

गणेशके हाथोंमें पाश, अङ्कुश, पद्म और परशु हैं और सूंडके अग्रभाग पर मिठाईयां हैं। ये अपने साथ सह धर्मिणी लिये हुए हैं और अपने सुवर्ण अलङ्कारोंसे ये सूर्यके जैसे दीखते हैं।

२ एक विख्यात ज्योतिर्विद्। इन्होंने आपसम्ब जातक कल्पलता, तिथिचिन्तामणि पञ्चाङ्गसाधन, तिथि-चिन्तामणि, सारणी, पाटीटीका, भावाध्याय, रत्नावली पद्धति, स्त्रीजातक प्रभृति संस्कृत ज्योतिषको रचना की है। ३ हिरण्यकेशिकारिकाके रचयिता। ४ पितृपशु सरणी और महिषोत्सर्गविधि नामक धर्मशास्त्र ग्रन्थकार। ५ भागवततात्पर्यदीपिकाके रचयिता। ६ रसतरङ्गिणीके रसोदधि नामका टीकाकार। ७ स्मृतिचन्द्रोदय-प्रणेता। ८ कृष्णभट्टके पुत्र, ऋग्वेद पाठानुक्रमणदीपिका के रचयिता। ९ गोपालके पुत्र। इन्होंने १६१४ ई०को जातकालङ्कार नामक संस्कृत ग्रन्थकी रचना की है। १० ढुण्ढिराजके पुत्र। इन्होंने गणितमञ्जरी, ताजिकचन्द्रिका विनोद, ताजिकभूषण प्रभृति संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। ११ बल्लालसेनके पुत्र शिवतोषिणी नामक लिङ्गपुराणके टीकाकार। १२ रामदेवके पुत्र नालोदय टीका-रचयिता। १३ बनारसके एक हिन्दी कवि। यह

सञ्जित करते हैं। दिनको कोली और कुरमी जातिकी स्त्रियां आ करके देवीके सम्मुख नृत्यगीत लगाती हैं। तीन दिन अन्नभोगके पीछे देवीके भूषणादि खोल उनके वस्त्रमें कुछ खाद्य और ४ पैसे बांध किसी दास वा दासी-के हस्तमें दिया जाता है। दास उसको ले करके घरसे बाहर निकलता है। गृहणी भी जलकी धारा देती चली जाती है। शेषमें दास देवीको जलमें विसर्जन करके वस्त्र और थोड़ासा जल ले गृह लौट आता है।

गणेशजननी (सं० स्त्री०) गणेशस्य जननी, ६-तत्। दुर्गा।

"गणेशजननी दुर्गा राधालक्ष्मी सरस्वती।" (तन्त्रसार)

गणेशदत्त—क्रमदीपिका तन्त्रका एक टीकाकार।

गणेशदत्तशर्मा—यह "मैथिल गणेशदत्त शर्मा" नामसे ख्यात तथा मालतीमाधवका बनाया "प्रकरणोद्धार"के टीकाकार है।

गणेशदास—द्रव्यादश नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गणेशदीक्षित—एक विख्यात दार्शनिक। ये भावा विश्वनाथ दीक्षितके पुत्र, भावा रामकृष्णके पौत्र तथा विज्ञानभिक्षुके शिष्य हैं। इन्होंने सांख्यसूत्रकी टीका, प्रबोधचन्द्रोदयकी चिचन्द्रिका नामकी टीका, तर्कभाषाकी तत्त्व प्रबोधिनी नामक टीका, तत्त्वसमास यथार्थ दीपन, योगानुशासनसूत्रवृत्ति प्रभृतिको संस्कृत टीकाओंकी रचना की है।

गणेशदेव—सङ्गीतशास्त्रविद् पण्डित। राजा खड्गबाहुके आदेशसे इन्होंने सङ्गीतकल्पतरुकी सुबोधिनी नामकी टीका प्रणयन की है।

गणेशदैवज्ञ—नन्दीग्रामवासी एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्। इनका दूसरा नाम गणेश्वर आचार्य था। ये केशवार्कके पुत्र और नृसिंहदैवज्ञके चचा थे। इन्होंने कई एक ज्योतिःग्रन्थोंकी रचना की है, जिनमेंसे ग्रहलाघव, चाबुकयन्त्र, तर्जनीयन्त्र, प्रतोदयन्त्र, लघूपयन्त्र, वृहत् और लघुतिथिचिन्तामणि, मङ्गलनिर्णय (धर्मशास्त्र), श्राद्धादिनिर्णय, सिद्धान्तशिरोमणिविवृति, चन्द्रोर्णवटीका, पातसारणी, बुद्धिविलासिनी नामकी लीलावतीव्याख्या तथा केशवके मुहूर्ततत्त्व और विवाहवृन्दावनकी टीका पाई जाती है।

उक्त ग्रन्थोंमेंसे ग्रहलाघव ही प्रधान है। गणेशका ग्रहलाघव १४४२ शकमें (१५२० ई०) पातसारणी १४४४ शकमें (१५२२ ई०) और लीलावतीव्याख्या १५४६ ई०में रची गई है।

गणेशपण्डित—हरिविनोद नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गणेशपाठक—निर्णयकौस्तुभ नामक न्याय और प्रयोगकौस्तुभ नामक धर्मशास्त्रप्रणेता।

गणेशपुराण—एक उपपुराणका नाम। इसमें गणेशमाहात्म्य वर्णित है।

गणेशभट्ट—१ उद्वाहविवेक नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता। २ शाकुनदीपकके रचयिता।

गणेशभारती—शिवताण्डवस्तोत्रटीकाके प्रणेता।

गणेशभिषक्—एक विख्यात चिकित्सक। इन्होंने चिकित्सामृत, योगचिन्तामणि, रुग्विनिश्चयार्थप्रकाशिका प्रभृति वैद्यक ग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

गणेशभूषण (सं० क्ली०) गणेशं भूषयति गणेश-भूष-ल्युट। सिन्दूर।

गणेशमहामहोपाध्याय—हरिभक्तिदीपिकाके रचयिता।

गणेशमिश्र—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनका जन्म १५५८ ई०को हुआ था।

गणेशराय—दिनाजपुरके अञ्चलके एक राजाका नाम। ई० १५वें शतकमें गौड़का एकछत्र राजा हुआ था।

गणेश्वमिश्र—प्रायश्चित्त-पारिजात नामक धर्मशास्त्रके संग्रहकार।

गणेशान (सं० पु०) गणानामीशानः, ६-तत्। गणेश।

"ततः सस्मार हेरम्बं व्यासः सत्यवतीसुतः।
स्मृतमात्रो गणेशानो भक्तचिन्तितपूरकः॥" (भारत १।१३ अ०)

२ शिव, महादेव।

गणेश्वर (सं० पु०) गणानां ईश्वरः, ६-तत्। १ गणेश। २ शिव। ३ गणात्मक ईश्वर। ११ रुद्र, १२ आदित्य, ८ वसु और २ अश्विनीकुमार इन तेतीस देवताओंको गणेश्वर कहते हैं।

"एते देवास्त्रयस्त्रिंशत् सर्वभूते गणेश्वराः॥" (भारत अनु १५० अ०)

गणेश्वर बालेश्वर जिलान्तर्गत एक परगना। इसमें चालुनी और पाइकपा नामक दो ग्राम लगते हैं।

गणेश्वरी—एक नदी यह आसामके अन्तर्गत गारो पर्वतके कैलासशृङ्गसे क्रमशः दक्षिणवाहिनी हो कर मैमनसिंह जिला होती हुई प्रवाहित है।

गणोत्साह (सं० पु०-स्त्री०) गणे गण भावे सम्भूयकरणे उत्साहो यस्य, बहुव्री०। गण्डक, गैंड़ा।

गण्ड (स० पु०) गडि वदनैकदेशे, गडि अच। यद्वा गम ड। १ कपोल, गाल। २ हस्तिकपोल, हाथीकी कनपटी। इसका संस्कृत पर्याय—कट, करट, कटक और हस्तिगण्डक है। ३ गण्डक, गैंडा। ४ वीथ्यङ्ग। ५ पिटक। ६ चिह्न, निशान्। ७ वीर बहादुर। ८ अश्वभूषण, घोड़ेका जेवर ९ बुद्‌बुद, बुलबुला। १० स्फोटक, फोड़ा। ११ ग्रन्थि, गांठ। १२ विष्कुम्भ आदि योगोंके मध्य दशम योग।

कोष्ठीप्रदीपके मतसे इस योगमें जन्म लेनेसे मनुष्य स्वार्थपर, दूसरेका अनिष्टकारी, अतिशय धूर्त, कुरूप और आत्मीयवर्गकी यन्त्रणाका कारण होता है। उसके दोनों गाल अपेक्षाकृत स्थूल और कभी कुछ बड़े बड़े होते हैं

१३ अश्विनी प्रभृति कई एक नक्षत्रोंका दुष्ट अंश। इस विषयमें ज्योतिर्विदोंका मतभेद लक्षित होता—किस नक्षत्रके कौन अंशको गण्ड कहते और उसका क्या फल समझते हैं।

अश्विनी, मघा और मूला नक्षत्रके प्रथम ३ दण्ड और रेवती, अश्लेषा तथा ज्येष्ठा नक्षत्रके शेष ५ दण्ड गण्ड कहलाते हैं। इसमें मूला तथा ज्येष्ठा नक्षत्रके गंडको दिवागण्ड, मघा एवं अश्लेषाके गण्डको रात्रिगण्ड और रेवती और अश्विनीके गण्डको सन्ध्यागण्ड कहते हैं। गण्डयोगमें जात बालकका प्राय मृत्यु होता है। उसके बच जानेसे पिता वा माताका मृत्यु निश्चित है। किन्तु दिवागण्डमें बालिका और रात्रिगण्डमें बालकका जन्म होनेसे किसी प्रकारका विघ्न नहीं पड़ता। मूलाके प्रथम पादमें अर्थात् गण्डके मध्य बालक अथवा बालिकाका जन्म होनेसे पिताका विनाश होता है। इसी प्रकार मूलाके द्वितीय पादमें जननीको भयानक रोग, तृतीय पादमें धनहानि और चतुर्थ पादमें सम्पत्तिलाभ है। अश्लेषा नक्षत्रमें इसके विपरीत समझना चाहिये। गण्ड-योगमें जन्म होनेसे बालक वा बालिकाका परित्याग करना ही उचित है। यदि स्नेहवशतः उसका परित्याग न किया जा सके, पिताको चाहिये कि ६ मास तक उसका मुंह न देखे। कारण मुख देख लेनेसे विपद् पड़नेकी सम्भावना है। इसे स्थलमें कुङ्कुम चन्दन, कुष्ठ और गोरोचनादियुक्त साथ मिला चार जलपूर्ण कलसियोंसे बालकको स्नान कराना चाहिये। सहस्राक्ष मन्त्रसे स्नान कराना पड़ता है। बालक दिवागण्ड जात होनेसे अपने पिता, रात्रिगण्ड जात होनेसे जननी और सन्ध्यागण्ड जात होनेसे पिता माता दोनोंके साथ नह-लाया जाता है। घृतपूर्ण कांस्यपात्र, सुवर्ण और धेनु यह विप्रको दान करते और ग्रहगणको पूजते हैं। इसी प्रकार शान्ति करनेसे गण्डदोष मिटता है। (ज्योतिस्तत्त्व)

मुहूर्तचिन्तामणि और पीयूषधारा ग्रन्थमें लिखा है कि नारदके मतानुसार ज्येष्ठा नक्षत्रके शेष चार और मूला नक्षत्रके प्रथम चार कुल आठ दण्ड ही गण्ड कहलाते हैं। इसी प्रकार अश्लेषाके शेष चार और मघाके प्रथम चार दण्ड भी गण्ड है। वशिष्ठके मतमें ज्येष्ठा नक्षत्रका शेष एक और मूलाके प्रथम दो—तीन दण्डोंका ही नाम गण्ड है। बृहस्पतिने ज्येष्ठाके शेष अर्ध और मूलाके प्रथम अर्धदण्डको गण्ड जैसा निर्देश किया है। किसी किसी ज्योतिर्विद्‌के मतमें मूलाके प्रथम आठ और ज्येष्ठाके शेष पांच—१३ दण्डका ही नाम गण्ड है। पीयूषधाराको देखते नारदका ही मत ग्राह्य है। गण्डमें बालक वा बालिकाको जन्म होनेसे परित्याग करते अथवा ८ वत्सर पर्यन्त पिता उसका मुख नहीं देखते।

—१४ कोई जाति। गौड़ देखो।

गण्डक (सं० पु०) गण्ड स्वार्थे कन्। १ गैंडा। २ ज्योतिर्विद्याविशेष। ३ अवच्छेद, भेद। ४ भूषण, अलङ्कार, जेवर। ५ दुष्ट, मूर्ख। ६ सख्या प्रभेद। ७ देशभेद यह देश जिस होकर गण्डकी नदी बहती है। ८ छन्दोभेद, एक छन्दका नाम। ९ ग्रन्थि, गांठ। १० स्फोटक रोग विशेष, एक रोग जिसमें बहुतसे फोड़े निकलते हैं।

"गण्डकैरावार्णमिव बहुगण्डकनाचन्।" (काशखण्ड)

११ नदीविशेष। गण्डकी देखो। १२ अन्तराय, विघ्न बाधा।

गण्डकारी (सं० स्त्री०) गण्ड मन्नास्थियं करोति सयोजयति। गण्ड कृ अण् ङीप्। १ खदिरवृक्ष, खैरका पेड़। २ गद्‌कमल, एक सहर्षी। ३ वराहक्रान्ता, वराहीकन्द। ४ लजालु लजावती।

गण्डकाली (सं० स्त्री०) गण्ड कृ अण् ङीप्। यद्वा गण्डपुष्पे यस्या, बहुव्री०। १ काकजङ्घा। २ गण्डकी वृक्ष। ३ खदिरोहत, खैरका पेड़।

"[illegible] कान्ता सहिती वृन्दि।"

(हंस रत्नमाला)

गण्डकी (सं० स्त्री०) गंडक-ङीप्। १ गंडक जातीय स्त्री, मादा गेंडा। २ कोई नदी, बड़ी गंडकी। इसका दूसरा नाम नारायणी, शालग्रामी और हिरण्यवाह है। यह हिमालयसे नेपाल राज्यके मध्य अक्षा० २७०° २७ उ० और देशा० ८३° ५६ पू० पर समगंडकी शैलसे निकल करके दक्षिण-पश्चिमको चल गोरखपुर और चम्पारन जिलेके बीचसे मुजफ्फरपुरके पश्चिम और सारन जिलेके पूर्व प्रान्त होती हुई पटनाके अपरपार गङ्गासे मिल गया है। गंडकीने पूर्वको गोसाईंथानके पार्वतीय तुषारराशिसे स्रोतस्विनीरूपमें परिणत हो करके चम्पारनके उत्तर-पश्चिम त्रिवेणीघाटसे नदीके रूपमें प्रवाहित होना आरम्भ किया है। यहां पूर्व ओरके तट पर कच्चे पत्थरका एक पहाड़ है। उसमें पेड़ भरे पड़े हैं। इसको दूसरी ओर जङ्गल है। यहांसे हिमालयको तुषारराशि देख पड़ती है। त्रिवेणीघाटसे प्रायः ६ कोस पथ दोनों ओर वनाकीर्ण है। नदी पहाड़ी भूमि पर बहनेसे जल भी परिष्कार है। बाढ़के समय पार्श्वस्थ भूमि दूरस्थ भूमिको अपेक्षा ऊंची हो जाती है। किनारे पर जमीनकी जो जगह नीची पड़ती वहांसे बाढ़का पानी घुस करके निकटस्थ प्रदेशको प्लावित करता है। बाढ़से देशको बचानेके लिये स्थान स्थान पर बांध लगाया गया है। इस प्रदेशकी जमीनका पानी इकट्ठा हो करके नदीमें नहीं आता, दूसरी ओर चला जाता है। पहाड़में जहां नदी निकली, अत्यन्त स्रोत है। फिर बीच बीच भंवरका पानी मिलता, जिसमें नाव चलानेका सुभीता नहीं पड़ता। उससे नेपालको लकड़ी भले हो आया करती है। बर्फ गल करके जल निकलनेसे यह कभी नहीं सूखती वर्षाके पीछे जगह जगह इसमें बालूकी रेत पड़ जाती है। कोई ठिकाना नहीं, कब कहां रेत खुलेगी। बरसातमें गंडकी कहीं [illegible] और कहीं एक कोस चौड़ी हो जाती है। किन्तु [illegible] किसी भी जगह ।३ रसी ज्यादा चौड़ाई नहीं रहती। मस्तरघाट, संग्रामपुर, गोविन्दगञ्ज, बरिआरपुर, [illegible] बगहा, नारायणपुर, मनीचरी, मलीमपुर, मत्तर, सारङ्गपुर, मोहांसी, रेवा, बारवा, सज्जा और सोनपुरमें इसका घाट है।

गंडक नदी अति प्राचीन कालसे पुण्यसलिला जैसी विख्यात है। (स्कन्दपुराण, हिमवत्खण्ड ५४, पातालखण्ड ११३१; भविष्यब्रह्मखण्ड ३५।१—१०) महाभारत-सभापर्वके २०वें अध्यायमें लिखा है कि कृष्ण, अर्जुन और भीमसेन कुरुदेशसे चल कुरुजाङ्गल पार हो करके पद्मसरोवर पहुंचे थे। वहांसे कालकूट पर्वत अतिक्रम करके वह गंडकी, चक्रावर्त और कोई पार्वत्य स्रोतस्विनी पार हुए। बौद्धोंके ग्रंथोंमें भी गंडकी नदीका नामोल्लेख मिलता है। फिर यूनानियोंके पुस्तक भी इसके उल्लेखसे खाली नहीं। मेगास्थिनिसने इसको कंडकेतिस (Kándochates) नामसे उल्लेख किया है। टलेमिने इसका कोई नाम नहीं लिखा, परन्तु प्रकारान्तरसे इसका वृत्तान्त दे दिया है। उनके मतमें वह नदी सलेमपुरसे निकल शैलपुर वा शैलग्राम होती हुई गङ्गाके साथ जा करके मिल गयी है। पहले इसमें शालग्रामशिला मिलती थी। इसीसे गण्डकी शालग्रामी वा नारायणी कहलाती है। कहते हैं कि नारायण शनिके भयमें अपनी मायाके प्रभावसे शैलमय पर्वत बन गये थे। शनिके यह समझने पर कीट रूपसे उसके मध्यमें प्रवेश करके एक ओरसे दूसरी ओर तक उसको खोद डाला। एक वर्ष तक इसी प्रकार उत्पन्न होने पर नारायणके घर्म छूटा था। एक ही गण्डसे कृष्णवर्ण और श्वेतवर्ण दो प्रकारका पसीना निकला। उसी काले पसीने कृष्णा और सफेदसे श्वेतगंडकी प्रवाहित हुई। इनमें एक पूर्व और दूसरी पश्चिमको चली थी। एक वर्ष पीछे विष्णुने अपना रूप धारण करके प्रस्थान किया, परन्तु शालग्रामशिला नारायणरूपसे पूजनेको कह दिया। (शालग्राम देखो।) उसी समयसे शालग्राम-शिला पूजित हुई है। गंडकीके जलमें नारायणका अंश रहनेसे वह हिन्दुओंके निकट अति पवित्र है। ३ गंडकी नदीकी अधिष्ठात्री देवी।

गण्डकी देवीने दश हजार वर्ष पर्यन्त बड़े कष्टमें वायु और पेड़ोंके सड़े गले पत्ते खा करके भगवान् विष्णुकी आराधना की थी। विष्णु गंडकीकी तपस्यासे सन्तुष्ट हो करके उनके पास जा पहुंचे। गंडकीने चतु-

भुज गदा चक्र गदा पद्मधारी विष्णुको देख करके भक्ति सहकारसे नानाविध स्तव किया था। इससे विष्णु और भी प्रसन्न हुए और उससे वर मांगनेको कहने लगे। गडकीने कहा—जगदीश्वर! यदि इस दासी पर आपकी करुणा हुई है, तो आप गर्भगत हो करके मेरे पुत्र बनें। इस पर विष्णु बोल उठे—'गण्डकि! मैं शालग्रामशिला बन करके तुम्हारे गर्भमें वास करूंगा। तुम जगत्में बड़ी होगी। तुम्हारा दर्शन, स्पर्शन, अवगाहन वा स्नान तथा जलपान करनेसे कायिक, वाचिक और मानसिक तीनों प्रकारका पाप छूट जायेगा। इसी प्रकार वर दे करके विष्णु चलते हुए। इसीसे गण्डकी सब नदियोंमें बड़ी है। भारतमें जो शालग्राम शिला भक्ति सहकारसे विष्णु समझके पूजी जाती, गण्डकी नदीसे ही आती है। विष्णुके वरसे भी वह सबकी आदरणीय हुई है। (वराहपुराण)

गण्डकी (छोटी) कोई प्रसिद्ध नदी। बड़ी गण्डकीकी तरह यह भी नेपाल राज्यके पहाड़ोंसे निकल गोरखपुर जिलेमें हो करके बही है। छोटी गण्डकी बड़ी गण्डकीके ४ कोस दूर रह करके समान्तराल भावसे चलती हुई सारन जिलेके बीच सोनारिया नामक स्थान पर (अक्षा० २५° ४१´ उ० तथा देशा० ८४° १४´ ३०´´ पू०) घर्घरा नदीमें गिरी है। इसके उत्पत्तिस्थानका नाम सोमेश्वर पर्वत है। यह चम्पारनके दून पहाड़का टुकड़ा होता है। हरहा नामक गिरिशृङ्ग इसके बहुत निकट है। इसीसे छोटी गण्डकीका प्रथम अंश हरहा ही कहलाता है। आगे चल करके इसको क्रमशः सिकरेना, बुड़ी गण्डक और छोटी गण्डक कहते हैं। रामनगर, बेतिया और सगौलीनगर इसीके तीर अवस्थित है। ग्रीष्मकालको इसमें जल नहीं रहता। उस समय इसका विस्तार ४० हस्तमात्र होता है। किन्तु वर्षाकालको इसमें प्रचुर जल आ जाता है। उड़िया, धोराम, जमुया, पण्डाइ, हरबोरा, बलरया, रामरेखा और ससाड़ नामक उपनदी इसमें आ मिली हैं। किसी किसीके मतमें छोटी गण्डकीका नाम हिरण्यवती है।

गण्डकी—गण्डकी नदीसे निकली एक पयोप्रणाली। यह गण्डकी नदीकी किसी शाखासे निकल करके सारन जिलेके बीच दक्षिणपूर्व भागमें शीतलपुरके पास मही नामसे गङ्गामें मिलित हुई है। गोपालगञ्ज, चौकी हसन, रामपुर, खोवास, गुरखा और शीतलपुर इसके किनारे अवस्थित हैं। गङ्गामें बाढ़ आनेसे पानी गुरखा तक पहुंचता और दिववारा तक सब स्थान जलप्लावित होता है। ग्रीष्मकालको इसमें सामान्य ही जल रहता है। उस समय किसान इसमें बांध लगा कृषिकार्य करते हैं। गण्डकी नदीमें बांध पड़नेसे इसका पानी कम पड़ गया है। बांध डालनेसे पहले गण्डकी नदी तक इसमें बड़ी बड़ी नावें चलती थीं। आजकल बरसातमें हजार मनकी नाव गुरखा तक आ जा सकती है। यह ४५ कोस लम्बी है। इसके बीचमें नदीगर्भ ५२ हाथ उतर गया है।

गण्डकीपुत्र (सं० पु०) गण्डक्याः पुत्रः, ६ तत्। शालग्रामशिला, वह शिला जिसे हिन्दू विष्णु समझ कर पूजा करते हैं।

गण्डकुसुम (सं० क्ली०) गण्डस्य हस्तिकपोलस्य कुसुममिव, ६ तत्। हस्तिमद, हाथीका मद।

गण्डकूप (सं० पु०) गण्डे गण्ड इव उच्चे पर्वतभागे कूप, ७ तत्। पर्वतका उच्चस्थान, पहाड़की चोटी।

गण्डगढ़—पञ्जाबके अन्तर्गत रावलपिण्डी और हजारा जिलाकी एक गिरि श्रेणी। यह अक्षा० ३३° ५७´ उ० और देशा० ७२° ४६´ पू०में अवस्थित है। चच नामक उपत्यकाकी ओर यह पर्वत ढालू होता गया है और सब जगह यह ऊंचा और दुरारोह है।

गण्डगात्र (सं० क्ली०) गण्ड इव उन्नतं गात्रमस्य, बहुव्री०। फलविशेष, शरीफा। इसका गुण—शीतल, हृद्य, वातपित्तनाशक, श्लेष्मवर्द्धक, तृष्णानाशक और वमनके शान्तिकारक है। (भावप्रकाश)

गण्डग्राम (सं० पु०) गण्ड भूयस्त्वरूप प्रशस्त ग्राम। प्रशस्त ग्राम, वह ग्राम जिसमें बहुत मनुष्य रहते हों।

गण्डदूर्वा (सं० स्त्री०) गण्डा ग्रन्थियुक्ता दूर्वा, कर्मधा०। दूर्वाविशेष, गाँडर घास। इसका पर्याय—गण्डाली, ग्रन्थिलोमा, मत्स्याक्षी, वारुणी, सोमपर्णी, सूचीनेत्रा, श्यामग्रन्थि, ग्रन्थिला, ग्रन्थिपर्णी, सूक्ष्मपत्रा, श्यामकाण्डा, अनलप्रभा, शकुलाक्षी, कलाया और शिवा है। इसका गुण—मधुर, वातपित्त, ज्वर, भ्रान्ति और तृष्णा उपशमनाशक

तथा शीतल है। भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—शीतल, लोहद्रावक, ग्राही, लघु, तिक्त, कषाय, मधुर, कटुपाक, वातवृद्धिकर, दाह, तृष्णा, दुर्बलता, श्वास, कुष्ठ और पित्तज्वरनाशक है। (भावप्रकाश)

गण्डदेव—दक्षिणमें गङ्गवंशीय एक प्राचीन राजा। इन्होंने काञ्चिपुरके पल्लवराज और चोल राजाको पराजय किया था। काञ्चिराज गंडदेवको कर देते थे। पांड्य राजाने इनके साथ मित्रता की थी।

गण्डदेश (सं० पु०) कपोल, गाल, कनपटी।

गण्डपाद (सं० त्रि०) गंडस्य पाद इव पादोऽस्य, बहुव्री०। जिसके दोनों पैर गैंड़ाके सदृश हों।

गण्डपोलिका (सं० स्त्री०) कीटविशेष, एक प्रकारका कीड़ा।

गण्डप्रपाली (सं० स्त्री०) कीटविशेष, एक कीड़ा।

गण्डफलक (सं० क्ली०) गंडः फलकमिव, उपमितस०। १ विस्तीर्ण गंडस्थल, बड़ी कनपटी। (त्रि०) २ जिसकी कनपटी बहुत बड़ी हो।

गण्डभित्ति (सं० स्त्री०) गंड भित्तिरिव उपमि०। प्रशस्त कपोल, सुन्दर गाल, अच्छी कनपटी।

"[illegible] गण्डभित्ती विहाय।" (रघु० १२।१०२)

गण्डमाक—अफगानिस्तानके निकट जलालाबादसे काबुल जानेकी राह पर अवस्थित एक ग्राम। यह जलालाबादसे १७॥ कोसकी दूरी पर है। यह ग्राम जलालाबादसे अधिक शीतल है। १८३९ और १८४२ ई०को अङ्गरेज और अफगानिस्तानके बीच इसी ग्रामके निकट लड़ाई हुई थी। १८५७ ई०में जब अङ्गरेजी सेना काबुलसे लौटी आ रही थी तब अवशिष्ट २० सेनानायक और ४५ गोरे इसी स्थान पर कट गये थे।

गण्डमाला (सं० स्त्री०) गंडानां ग्रीवाजातस्फोटविशेषाणां माला सम्बद्धोऽस्यां, बहुव्री०। गलाका एक प्रकारका रोग, गलगंड, कण्ठमाला। गलगण्ड देखो।

गण्डमालिका (सं० स्त्री०) गंडानां ग्रंथीनां माला यत्र, बहुव्री०। १ लज्जालु लता, एक प्रकारकी लता जिसकी पत्तियां छूनेसे सिकुड़ जाती हैं। २ गण्डमाला।

गण्डमाली (सं० त्रि०) जिसको गलगण्ड रोग हुआ हो।

गण्डमूर्ख (सं० त्रि०) गंडः अतिशयितः मूर्खः। अतिशय मूढ़, घोर निर्बोध, घोर मूर्ख, भारी बेवकूफ़।

गण्डयन्त्र (सं० पु०) मेघ, बादल। गडयन्त्र देखो।

गण्डलिख्या (सं० स्त्री०) चर्मकरा, एक सुगन्धि द्रव्य। (वद्यक)

गण्डली (सं० स्त्री०) गंड इव क्षुद्रशैलं तत्र लीयते ली डोप्। १ महादेव, शिव।

"गण्डली मेरुधामा च देवाधिपतिरेव च।" (भारत अनु १७ अ०)

२ क्षुद्र पर्वत, छोटी पहाड़ी।

गण्डलेखा (सं० स्त्री०) प्रशस्तकपोल, सुन्दर गाल, अच्छी कनपटी।

गण्डविन्दु (सं० पु०) कुबेरके सेनापति। विश्रवामुनिके ज्येष्ठ पुत्र धर्मपरायण कुबेरके पिताकी आज्ञासे लङ्कामें राज्य करते थे। दुर्वृत्त रावणने उनको भगा कर लङ्कापर अपना अधिकार जमाया कुबेर उसके भयसे देश छोड़ कैलास पर्वत पर रहने लगे, लेकिन उनका वहां रहना भी रावणको असह्य मालूम पड़ा। इस लिये दुष्ट रावणने कुबेरपुरी पर आक्रमण किया। कुबेरने अपने सेनापति गण्डविन्दुके उत्साह और परामर्शसे रावणके साथ लड़ाई आरम्भ कर दी। उस लड़ाईमें सेनापति गंडविन्दुने अपना भुज विक्रम और युद्धकौशल दिखलाया। इसीके पराक्रमसे रावणके बहुतसे योद्धा मारे गये। अन्तमें मारीचके माया-युद्धसे गंडविन्दुको हार माननी पड़ी। (रामायण उत्तर ५ अ०)

गण्डव्यूह (सं० पु०) बौद्ध सूत्रका एक अंश।

गण्डशिला (सं० स्त्री०) गंडः भूमेरुच्चनप्रदेशः तद्वत् शिला। स्थूलपाषाण, बड़ा पत्थर।

"दृष्टोऽङ्गुष्ठशिरोमात्रः क्षणाद् गण्डशिलासमः।" (भागवत ३।१३।२१)

गण्डशैल (सं० पु०) गंडइव शैलः यद्वा शैलस्य गंड इव राजदंडादिलात्। भूकम्पादि द्वारा पर्वतसे गिरा हुवा स्थूल पाषाण, वह बड़ा पत्थरका टुकड़ा जो भूकम्पसे पर्वतसे गिरा हो। २ क्षुद्र पर्वत, छोटी पहाड़ी। ३ ललाट, भाल।

गण्डसाह्वया (सं० स्त्री०) गंडेन सहित आह्वयो यस्याः, बहुव्री०। गंडकी नदी।

"गंगा च शतकुम्भा च सरयू गण्डसाह्वया।" (भारत ३।२१ अ०)

गण्डस्थल (सं० क्ली०) गंडः स्थलमिव, उपमितस०। १ गंडदेश, समस्त गाल। २ हाथीकी कनपटी।

गण्डस्थली (सं० स्त्री०) गण्ड स्थलमिव, उपमितस०। कपोलस्थल, गण्डदेश, कनपटी।

गण्डा—युक्त प्रदेशका एक नगर। यह अक्षा० २७° ७' ३०" उ० और देशा० ८२° पू०के मध्य फैजाबादसे १४ कोस दूरमें अवस्थित है। यह गण्डा जिलेका प्रधान नगर है। इस जिलेमें अहीर जाति कृषिकार्य करती है। यह प्रदेश पहले उत्तरकोशल राज्यके अन्तर्गत गोंड नामसे मशहूर था। (गण्डो देखो।) श्रावस्ती नगरका ध्वंसावशेष इस जगहसे दीखता है।

गण्डाङ्ग (सं० पु० स्त्री०) गण्ड इव उच्चमङ्गं यस्य, बहुव्री०। गण्डक, गैंडा।

गण्डान्त (सं० क्ली०) तिथि नक्षत्र और लग्नका सन्धि काल।

"स्वर्तिथिविन्यासानां गण्डान्त विविध कल्पत।
नक्षत्रचतुर्थानां वा स्याद् घटिकामितं ॥" (ज्योतिष)

गण्डारि (सं० पु०) १ कोविदारवृक्ष, कचनारका पेड़। कोविदार देखो। २ सस्यविशेष।

गण्डारी (सं० स्त्री०) मञ्जिष्ठा, मजीठ।

गण्डाली (सं० स्त्री०) १ श्वेत दूर्वा, सफेद दूब, गाडर घास। २ सर्पाक्षीवृक्ष, सरहची, गण्डिनिका पेड़। ३ मत्स्याक्षी, मछलीकी आंख।

गण्डाव—बलुचिस्तानके काछी नामक विभागका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २८° ३२' उ० और देशा० ६७° ३२' पू०में बाघ नामक स्थानसे २० कोस दक्षिण-पश्चिममें मूला नामक गिरिसङ्कट जानेके रास्ते पर अवस्थित है। यह एक ऊंची भूमिके ऊपर चहार दीवारोंसे घिरे हुए गढ़ द्वारा सुरक्षित है। यहां खिलात खांका एक घर है। शीत कालमें खां साहब यहां आ कर रहते हैं।

गण्डि (सं० पु०) वृक्षकी जड़से शाखा तकके भागको गण्डि कहते हैं।

गण्डिक (सं० त्रि०) बुद्बुदके जैसा क्षुद्र पाषाणादि, बुद्बुदके समान छोटे छोटे पत्थरके खण्ड। २ एक प्रकारका अमृत।

गण्डिका (सं० स्त्री०) क्षुद्र गण्ड पाषाण, पत्थरके छोटे छोटे टुकड़े।

गण्डिकोट—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत कडापा जिलामें येरमलय नामक पर्वतका एक दुर्ग। यह सुदृढ़ दुर्ग अक्षा० १४° ४८' उ० और देशा० ७८° २०' पू०में अव स्थित है। यहां विजयनगरके राजाओंका एक देव मन्दिर है। प्रसिद्ध ऐतिहासिक लेखक फेरिस्ता लिखते हैं कि यह दुर्ग १५५८ ई०में निर्माण किया गया है। गोलकुण्डाके राजाने एक बार इसे अपने अधिकारमें लाया था। औरङ्गजेबके सेनापति मीरजुम्लाने इसे कई बार दखल किया था। बाद यह हैदराबादके बाला-घाटके पांच सरकारोंमें एक सरकारकी राजधानी हुई। अन्तमें कडापाके पाठान नवाबने इस स्थान-को अपने अधिकारमें लाया। किन्तु १७८१ ई०को टिपूकी लड़ाईके समय अङ्गरेज सेनापति कप्तान लिटलने इसे जीत लिया। १८०० ई०में निजामने इसे अङ्गरेजोंको अर्पण कर दिया। यह दुर्ग रेतीला पत्थरके पहाड़के ऊपर बना हुआ है। इस होकर पेनार नामक नदी प्रवाहित होती हुई कडापा अञ्चल तक चली है।

गण्डी (सं० स्त्री०) वृक्षोंसे रेखा खींच कर सीमाको चिह्नित करनेका नाम गण्डी है।

गण्डीर (सं० पु०) १ समष्ठिला, खीरा। २ शाकविशेष, थोड़ेका साग। ३ वीर, बहादुर, शूरवीर।

गण्डीरी (सं० स्त्री०) सेहुण्डवृक्ष, सेहुण्डका पेड़।

गण्डु (सं० पु०) १ उपधान, तकिया। २ ग्रन्थि, गांठ, गिरहा। (त्रि०) ३ ग्रन्थियुक्त, जिसमें गांठ हो, गिरहदार।

गण्डूपद (सं० पु०) गण्डु ग्रन्थियुक्तानि पदानि यस्य, बहुव्री०। किञ्चुलक, केंचुआ।

गण्डूपदभव (सं० क्ली०) गण्डूपद इव भवति उत्पद्यते। सोसक, सीसा नामक धातु। गण्डु, शब्द देखो।

गण्डूपदी (सं० स्त्री०) १ एक क्षुद्र कीड़ा, छोटा केंचुआ। २ किञ्चुलक जातीय स्त्री, मादा केंचुआ।

गण्डूष (सं० पु०) १ मुखपूरण, कुल्ली। २ मुख भरा पानी। ३ हाथीकी सूंड़का अग्र भाग, हाथीकी सूंड़की नोक। ४ प्रसृति परिमित, सोलह तोलेके बराबरका एक मान, पसर।

गण्डूषविधि (सं० पु०) गण्डूषस्य विधि विधान, ६-तत्। मुखगण्डूष करनेका नियम। मुखधोनेका नियम। भाव

प्रकाशमें लिखा है कि दतुवन और जिभी करनेके बाद शीतल जल देकर बार बार कुल्ली करनी चाहिये। इससे कफ, अरुचि और मुखमल दूर होता है। कुछ गर्म जलसे कुल्ली करने पर कफ, अरुचि, मुखमल और दांतकी जड़ता जाती रहती है। विष, मूर्च्छा, मदात्यय, राजयक्ष्मा और रक्त पित्त इन समस्त रोगाक्रान्त मनुष्योंके लिये गण्डूष धारण अहितकर है। जिसकी आंखें दूषित या मल-कूपित हो गई हो अथवा जो मनुष्य अत्यन्त दुर्बल हों उनके लिये उष्ण जलसे कुल्ली करना प्रशस्त नहीं है।

गण्डूषा (सं० स्त्री०) गण्डूष-टाप्। गण्डूष।

गण्डोपधान (सं० क्ली०) गंडस्य उपधानं, ६-तत्। उपधानविशेष। गालवालिश, वह छोटा तकिया जो गालके नीचे रखा जाता है।

गण्डाल (सं० पु०) १ गुड़। २ ग्रास, कौर।

गण्डोलपाद (सं० त्रि०) गण्डोल इव पादो यस्य बहुव्री०। गण्डोलके जैसा वर्त्तुलाकार पादविशिष्ठ, जिसके पैर गंडोसी पोला हों।

गण्य (सं० त्रि०) १ गिननेके योग्य, गिनतीके लायक। २ प्रतिष्ठित, जिसकी पूछ हो, जिसे लोग संमान करते हों।

गत् (सं० त्रि०) गच्छति गम्-क्विप् मकारस्य लोपः। गमनशील, जो चलता हो। यह शब्द प्रायः दूसरे शब्दोंके साथ प्रयोग किया जाता है।

गत (सं० त्रि०) १ गया हुआ, बीता हुआ। २ प्राप्त, पाया हुआ। ३ समाप्त, पूरा किया हुआ। ४ पतित, गिरा हुआ। ५ ज्ञात, जाना हुआ। ६ लब्ध, पाया हुआ। ७ गमन, जाना, चलना।

गतंड (हिं० पु०) हिजड़ा, नपुंसक।

गतकलुष (सं० त्रि०) गतं कलुषं पापं यस्य, बहुव्री०। निष्पाप, जिसका पाप नष्ट हो गया हो।

गतकल्मष (सं० त्रि०) निष्पाप, जिसे पाप न हो।

गतकल्य (सं० क्ली०) गतकाल, बीता हुआ समय।

गतका (हिं० पु०) लकड़ीका एक डण्डा। इसके ऊपर चर्मकी खोल लगी रहती है। यह ढाई वा तीन हाथका लम्बा होता है। यह प्रायः खेलने हीके काममें आता है।

गतकार्य (सं० त्रि०) १ जिसका कर्त्तव्य कार्य नष्ट हो गया हो। २ अतीत कर्म, जो काम बीत गया हो।

गतकाल (सं० क्ली०) बीता हुआ, काल।

गतकीर्ति (सं० त्रि०) गता अतीता नष्टा वा कीर्ति यस्य बहुव्री०। जिसकी कीर्ति अतीत हुई हो, जिसका यश लिप्त हो गया हो।

गतक्लम (सं० त्रि०) जिसका श्रम दूर हुआ हो, विश्रान्त।

गतकुल (सं० पु०) वह संपत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो, लावारसी माल।

गतचौबीसी,—जैनियोंके भूतकाल सम्बन्धी चौबीस तीर्थङ्कर। नाम—१ नर्वाण, २ सागर, ३ महासाधु, ४ विमलप्रभ, ५ श्रीधर, ६ सुदत्त, ७ अमलप्रभ, ८ उद्धर, ९ अंगिर, १० सन्मति, ११ सिन्धु, १२ कुसुमाञ्जलि, १३ शिवगण, १४ उत्साह, १५ ज्ञानेश्वर, १६ परमेश्वर, १७ विमलेश्वर, १८ यशोधर, १९ कृष्ण, २० ज्ञानमति, २१ शुद्धमति, २२ श्रीभद्र, २३ अतिक्रान्त, और २४ शान्त। (इदहत्तीसी)

गतत्रप (सं० त्रि०) गता त्रपा लज्जा यस्य, बहुव्री०। निर्लज्ज, लज्जाहीन, बेशर्म, बेहया।

गतनासिक (सं० त्रि०) गतनासिका यस्य, बहुव्री०। नासिकाशून्य, जिसके नाक नहीं हो, नकटा।

गतनिधन (सं० क्ली०) पाशभेद, बंधनजाल, एक प्रकारका फंदा।

गतपाप (सं० त्रि०) गतं विनष्टं पापं यस्य, बहुव्री०। निष्पाप, जिसके पाप दूर हो गये हों।

गतपुण्य (सं० त्रि०) जिसका पुण्य नष्ट हो गया हो।

गतप्रत्यागत (सं० त्रि०) पूर्वं गतः पश्चात् प्रत्यागतः कर्मधा०। १ जो जाकर फिर लौट आया हो, गमन और प्रत्यागमन। २ संगीतमें तालके साठ भेदोंमें एक।

गतप्रत्यागता (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने स्वामीके घरसे भाग गई हो और फिर थोड़े दिनोंके बाद लौट आई हो।

गतप्रभ (सं० त्रि०) गता दूरीभूता प्रभा यस्य, बहुव्री०। जिसमें प्रभा नहीं हो, निष्प्रभ, तेज रहित।

गतप्राण (सं० त्रि०) गतः प्राणा यस्य। जिसके प्राणने शरीर त्याग कर दिया हो, मृत।

गतबुद्धि (सं० त्रि०) गता बुद्धिर्यस्य, बहुव्री०। बुद्धिशून्य, निर्बोध, अज्ञान, अनजान।

गतभर्तृका (सं० स्त्री०) गतो नष्टः प्रोषितो वा भर्ता

यस्या, बहुव्री०। १ विधवा। २ जिसका स्वामी दूर देश गया हो।

"किमु सुरम् पुर्नमत का।" (माघ)

गतरस (सं० त्रि०) जिसका रस नष्ट हो गया हो, विरस।

"यातयाम गतरसं पूति पर्युषितञ्च यत्।" (गीता)

गतव्यथ (सं० त्रि०) गता नष्टा व्यथा पीड़ा यस्य, बहुव्री०। व्यथाशून्य, जिसको कोई कष्ट न हो।

गतमर्याद (सं० त्रि०) गतमर्य्यादा यस्य, बहुव्री०। अपमानित, जिसकी मर्यादा नष्ट हो गई हो।

गतरात्रि (सं० स्त्री०) अतीत रात्रि, बीती हुई रात।

गतलज्ज (सं० त्रि०) गता लज्जा यस्य, बहुव्री०। निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया।

गतशोचन (सं० क्ली०) गतस्य शोचन, ६-तत्। अतीत विषयका अनुशोचना वा अतीत बातका ख्याल करना।

गतशोचना (सं० स्त्री०) गतस्य शोचना, ६ तत्। गतानुशोचन, बीते हुए विषयका स्मरण।

गतश्री (सं० त्रि०) गता श्री शोभा यस्य, बहुव्री०। जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो। निष्प्रभ, जिसमें किसी तरहकी चमक न हो।

गतसङ्ग (सं० त्रि०) गत नष्ट सङ्ग आसक्तिर्यस्य, बहुव्री०। निःसङ्ग, जिसने दूसरेको सङ्गत छोड़ दी हो।

गतमद्रक (सं० पु०) मदशून्य हस्ती, वह हाथी जिसके मद न हो।

गतस्पृह (सं० त्रि०) गता नष्टा स्पृहा यस्य बहुव्री०। निस्पृह, किसी चीजकी इच्छा न हो।

"गतस्य शोऽस्मायममनगतोजन।" (माघ)

गतस्मय (सं० त्रि०) १ गर्वशून्य, जिसके अभिमान न हो। २ विस्मयशून्य।

गताक्ष (सं० त्रि०) गतमक्षि यस्य बहुव्री०। नेत्रहीन, अन्धा।

गताङ्क (सं० त्रि०) जिसमें सत्पुरुषके चिन्ह अब न रह गये हों।

गतागत (सं० क्ली०) गत गमन आगत आगमन तयो समाहार, समाहारद्वन्द्व। गमनागमन, आना जाना।

"एवं त्रयी धर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते।" (गीता)

गत ऊर्ध्वगमन आगतमधोगमन यत्र, बहुव्री०। २ पक्षीकी गति, चिड़ियाकी चाल। (पु०) ३ गत विनष्ट आगत पुन संसारगमन यस्मात्, बहुव्री०। महादेव।

"नौविद्या गौतिं प्रहात्मा य हो भीष्मो गतागत।"

(भारत १३।१०।९८)

गतागति (सं० स्त्री०) गमनागमन।

गतागतिक (सं० त्रि०) गमनागमनसे जो निष्पादित हुआ हो।

गताङ्क (सं० त्रि०) जिसमें सत्पुरुषके चिह्न अब रह न गये हों।

गताध्वन् (सं० त्रि०) तत्त्वज्ञ, ज्ञाततत्त्व, जाननेका भाव।

गताध्वा (सं० स्त्री०) चतुर्दशीयुक्त अमावस्या तिथि।

गतानुगत (सं० त्रि०) गतस्य अनुगत, ६ तत्। जो किसी आदमीके पीछे पीछे जाता हो। (क्ली०) गतस्य अनुगत अनुगमन, ६ तत। २ गमनका अनुगमन, एकके पीछे दूसरेका जाना।

गतानुगतिक (सं० त्रि०) गतानुगति अस्त्यस्य गतानुगत-ठन्। गमनानुगमनविशिष्ट।

"एकका कर्म य योवा करोत्यशोऽपि गच्छति।

गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिक।" (पञ्चतन्त्र)

गतान्त (सं० त्रि०) गत उपस्थित अन्त अन्तकालो यस्य बहुव्री०। मुमुर्षु, जिनका अन्तकाल उपस्थित हो गया हो।

गतायात (सं० क्ली०) गतञ्च आयातञ्च तयो समाहारः समाहारद्वन्द्व। गमनागमन।

गतायु (सं० त्रि०) गत गतप्राय आयुर्जीवनकालो यस्य, बहुव्री०। जिसका आयु शेष हो, चरमकाल उपस्थित, मरनेवाला।

वैद्यको चिकित्सा आरम्भ करनेसे पहले रोगीके आयुका विषय अच्छी तरह विवेचना करके देख लेना चाहिये। यह विषय वैद्यशास्त्रमें बहुत ही कठिन है। महात्मा सुश्रुतने आयु प्राय शेष होने पर रोगीके जो लक्षण प्रकाशित होते, उनमें कई एक निर्णय किये हैं— मनुष्यका मृत्युकाल वा पञ्चमेसे उसका शरीर और स्वभाव बदल जाता है। जो व्यक्ति वास्तविक कोई शब्द न होते भी नाना प्रकारके शब्द सुना करता जो समुद्र, पुर या मेघका शब्द सुन करके अन्य प्रकार समझता

अथवा उस शब्दको सुन ही नहीं सकता, जो घने जङ्गलके घोरतर शब्दको ग्राम्य शब्द और ग्रामके जलरवको वन्य जन्तुओं का शब्द-जैसा अनुमान करता, जिसे बन्धु बान्धवोंकी बात सुनना अच्छा नहीं लगता और सुनते सुनाते भी उसको अपना अनिष्टकर समझ करके कुपित पड़ता और शत्रुकी कथा वा उपदेश जिसको बहुत प्रीतिकर जंचता, उसका आयुः शेष हुआ जैसा ठहराना चाहिये। जो व्यक्ति उष्णको शीतल और शीतलको उष्ण जैसा ग्रहण करता, शीतमें शरीर रोमाञ्च होते भी जिसका गात्रदाह नहीं मिटता, शरीर अतिशय उष्ण रहते भी जो शीतसे कंपने लगता, प्रहार वा अङ्गच्छेद करते भी जो वेदना अनुभव नहीं करता, जिसके शरीरमें अकस्मात् वर्णान्तर वा रेखा-जैसा चिह्न निकल पड़ता, चन्दन लगानेसे जिसके शरीर पर नील मक्खिका आश्रय करती, अकस्मात् जिसके शरीरसे सुरभि गन्ध निकल पड़ता, वह शीघ्र ही मरता है। एक प्रकार रस आस्वादन करके अन्य प्रकार समझने और सभी रसों अथवा मिथ्या आहारसे दोष वा अग्निमान्द्य बढ़नेसे, कोई रस वा सुगन्ध दुर्गन्ध मालूम न पड़ने अथवा घ्राणशक्ति एक बारगी ही बिगड़ने; शीत, उष्ण आदि काल अवस्था वा दिक् विषयमें विपरीत ज्ञान रहने, दिनको आकाशमण्डलमें प्रज्वलित नक्षत्र वा चन्द्रकिरण और रात्रिको ज्वलन्त सूर्य, मेघशून्य आकाशमें इन्द्रधनु वा विद्युत् एवं निर्मल आकाशमें कृष्णवर्ण मेघ देख पड़ने, आकाशमण्डल अट्टालिका वा विमानयानसे परिपूर्ण तथा भूमण्डल धूम, नीहार वा वस्त्र द्वारा आवृत-जैसा लगने, समस्त लोक प्रज्वलित अथवा जलप्लावित-जैसा जंचने, अरुन्धती, ध्रुव, आकाश, गङ्गा, उष्णजल तथा ज्योत्स्ना एवं आदर्शमें अपनी छाया न देख पड़ने अथवा अङ्गहीन विकृत वा कुक्कुर, काक, गृध्र, प्रेत, यक्ष, राक्षस वा पिशाचकी छाया-जैसी लगने और निर्धूम अग्नि मयूरके कण्ठ-जैसा लगनेसे सुस्थ शरीर रहते भी पीड़ित होते और पीड़ित होने पर मरते हैं। (सुश्रुत सूत्र ३० अ०)

श्याव, लोहित, नील वा पीतवर्ण छाया जिसका अनुगमन करती, उसकी मौत अवश्य आ पहुंचती है। हठात् लज्जा वा स्त्री विनष्ट होने अथवा तेज, बल, स्मृति वा प्रभा एकाएक बढ़नेसे निश्चय मनुष्यको मरना पड़ता है। जिसका निचला ओष्ठ गिर और ऊपरी ओष्ठ उठ आता अथवा दोनोंका रङ्ग जामन-जैसा काला देख पड़ता, उसका आयुः शेष हो जाता है। दांत शुष्क लाल, नीले अथवा बहुत काले पड़ जानेसे आयुः शेष हुआ समझते हैं। जिसको जिह्वा कृष्णवर्ण, स्तब्ध, अवलिप्त, कर्कश वा स्फीत लगती, जिसकी नासिका वक्र, स्फुटित, शुष्क, अवनत वा उन्नत रहती, जिसके दोनों चक्षुओंमें छोटाई बड़ाई देख पड़ती अथवा उनमें स्तब्धता, निश्चलता, रक्तवर्णता अथवा अधोदृष्टिविशिष्टता रहती और जिसकी आंख लगातार आर्द्र रहती, उसके मरनेमें कोई कसर नहीं पड़ती। बाल दोनों ओर बिखर पड़ने, भौंहें घटने या बढ़ने और आंखोंकी बिरनियां उखड़नेसे रोगी शीघ्र प्राणत्याग करता है। जो व्यक्ति मुखस्थित अन्न ग्रास नहीं कर सकता मस्तक सीधा नहीं रख सकता और एकाग्रदृष्टि तथा अचेतन रहता, शीघ्र ही मरता है। रोगी सबल हो या दुर्बल यत्नपूर्वक उठा करके भी बैठानेसे मूर्छित होने पर बचनेकी आशा न करना चाहिये। जो रोगी चित लेट करके पैरोंको सिकोड़ता या सर्वदा फैलानेका अभिलाष करता, जिसका हाथ, पैर बहुत ठण्डा रहता और ऊर्ध्वश्वास, छिन्नश्वास वा काककी भांति मुख विकृत हो करके श्वास निकलता, उसका आयुः शेष हुआ समझ पड़ता है। निद्रा भङ्ग न होने, सर्वदा जागरित रहने, कोई बात कहने पर मोह लगने, नीचेका ओष्ठ लेहन करने, भारी डकार उठने और प्रेतके साथ बात चलनेसे रोगीका मृत्यु आ जाता है शरीर किसी प्रकारसे विषदूषित न होते भी जिस रोगीके रोमकूपसे लहू निकलता, तत्क्षणात् प्राणत्याग करता है। वाताष्ठीला रोगमें अष्ठीलाके ऊर्ध्वगामिनी हो हृदयमें आ जाने और उसमें घोर यन्त्रणा और अन्नमें अरुचि दिखानेसे मृत्यु निश्चित है। बिना किसी दूसरे उपद्रवके पाद नारीका गुह्यदेश अथवा मुख सूज जानेसे भी रोगीको गतायु समझते हैं। अतीसार, ज्वर, हिक्का, वमी, अण्ड तथा मेढ्रदेशको स्फीतता आदि उपद्रव होनेसे श्वासरोगी वा कासरोगीके जीनेकी आशा करना वृथा है। अतिशय घर्म, दाह, हिक्का और श्वास

आदि उपद्रव उठ खड़े होनेसे बलवान् रोगी भी मर जाता है। जिस रोगीके चक्षुजलसे मुख भर जाता, दोनों पैरोंसे अविरत पसीना चला आता, चक्षु आकुलित दिखाता, जिसका शरीर हठात् बहुत ही हलका या भारी हो जाता या जिसका वमन कीचड़, मछली, चरबी, तेल या घी जैसा गन्ध आता, वह रोगी अवश्य परलोक पहुंचता है। मस्तकमें कपाल तक जूं भर आने, मङ्गल कामनासे प्रदत्त बलि काकप्रभृतिके न खाने और इन्द्रियशक्ति एकबारगी ही बिगड़ जानेसे मृत्यु उपस्थित होनेमें कोई सन्देह नहीं। जिस रोगीको ज्वर, अतीसार और सूजन तीनों धर दबाते और जिसके मांस तथा बलमें क्षीणता पाते, उसकी कभी भी चिकित्सा नहीं चलाते। शरीर अतिशय क्षीण होने पर रुचिकर, मिष्ट और हितकर अन्न पान द्वारा क्षुधा या तृष्णा न मिटनेसे मृत्यु ही आसन्न समझना चाहिये। ग्रहणी, शिर शूल, कोष्ठशूल, अतिशय पिपासा और बलहानि जिसको एक ही साथ आती, उसके बचनेकी कोई आशा नहीं देखाती। (सुश्रुत सूत्र ३१ अ०)

शरीरका जो अङ्ग स्वभावतः जैसा होता, उससे उलटा पड़ने पर मृत्युका लक्षण ठहरता है। शरीर गोरेसे काला तथा कालेसे गोरा पड़ने, रक्त प्रभृति वर्णोंका अन्य प्रकार वर्ण लगने, स्थिरके अस्थिर, स्थूलके कृश, कृशके स्थूल दीर्घके खर्व, और खर्वके दीर्घ बनने अथवा कोई अङ्ग एकाएक ठण्डा, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, विवर्ण या अवसन्न पड़नेसे थोड़े दिनोंमें ही कालकवलित होते हैं। शरीरका कोई अङ्ग अपने स्थानसे स्खलित, उत्क्षिप्त, अवक्षिप्त, पतित, निर्गत, अन्तर्गत, गुरु वा लघु होना भी स्वभावके विपरीत है शरीरमें अकस्मात् मूंगे जैसे चकत्ते पड़ने, ललाटको सभी शिराएं झलकने, नाककी डण्डीमें फोड़ाफुन्सी उठने, सवेरे ललाटसे पसीना निकलने, नेत्ररोग न रहते भी आंसू चलने, मस्तकमें गोबर जैसी धूलि उड़ने अथवा उस पर कबूतर, कङ्क आदि पक्षी गिरने, भोजन न करते भी मलमूत्र पड़ने वा भोजन करनेसे भी मलमूत्र न उतरने स्तनमूल वक्षःस्थल या हृदयमें अतिशय वेदना उठने, किसी अङ्गका मध्यस्थल स्फीत अथवा उभय पार्श्व कृश या मध्यस्थल कृश तथा उभयपार्श्व स्फीत पड़ने, अर्धाङ्गमें शोथ बढ़ने, समस्त अङ्ग शुष्क पड़ने, स्वर नष्ट, हीन, विकृत वा विकल लगने, दन्त, मुख, वा नख प्रभृति स्थानोंमें विवर्ण पुष्प जैसे चिह्न पड़ने कफ, पुरीष वा रेत जलमें मग्न रहने, दृष्टिमण्डलमें भिन्न प्रकार विकृतरूप देख पड़ने, केश वा अङ्ग तैलाक्त जैसा लगने, अतीसार रोगमें अरुचि तथा दुर्बलता बढ़ने, कासके साथ पूयरक्त वमन करने, कासरोगमें तृष्णाके अभिभूत रहने, क्षीणता, वमन तथा अरुचि लगने, भग्नस्वर तथा वेदनासे दबने, हाथ, पैर और मुंह सूज उठने, क्षीण पड़ने वा रुचि हीन रहने, नाभि, स्कन्ध एवं हस्तपद शिथिल पड़ने और ज्वर तथा कासमें अभिभूत रहने पर रोगीका जीना कठिन है। पूर्वाह्नमें आहार करके अपराह्नमें वमन करने और पाकाशयमें अम्लरस उत्पन्न न होते भी अतीसार जैसा मल निकलने, भूमि पर पतित हो बकरीकी तरह बोलने, कोष शिथिल, उपस्थ सङ्कुचित तथा ग्रीवा टूट पड़ने, नीचेका ओंठ दबान वा ऊपरका ओंठ लेहन करते रहने अथवा केश वा कर्ण नोच रखने, देवता, द्विज, गुरु, सुहृद एवं वैद्यको बुरा समझने, पापग्रहोंके अधिकतर मन्द स्थानोंमें जा करके जन्मनक्षत्रको पीड़ित करने अथवा उल्का वा वज्र द्वारा अभिहित पड़नेसे मनुष्य गतायु कहलाता है। स्त्री पुत्र, गृह, शयन, आसन, यान, वाहन और मणि रत्न प्रभृति गृहके उपकरण द्रव्योंका दुर्लक्षण प्रादुर्भाव होते भी आयु को शेष समझते हैं। बल और मांसहीन रोगीकी चिकित्सा करते भी यदि रोग वृद्धि होती, तो यह मरनेका ही लक्षण देख पड़ता है। जिसकी उत्कट पीड़ा एककालको हठात् निवृत्त हो जाती अथवा जिसके शरीरमें आहारकी कोई बात नहीं दिखाती, उसकी मौत शीघ्र ही आती है। (सुश्रुत सूत्र ३२ अ०)

गतार्त्तवा (सं० स्त्री०) गतं नष्टं आर्त्तवं रजो यस्याः, बहुव्री०। १ वृद्धा स्त्री, वह औरत जिसकी अवस्था पचास वर्षसे अधिक की हो। वैद्यकशास्त्रके मतानुसार बारह वर्षसे ५० वर्ष तककी स्त्रियोंका ऋतु या रजोदर्शन होता है।* इसके बाद औरतोंको गतार्त्तवा कहते हैं।

* द्वादशाद्वत्सरादूर्ध्वमापञ्चाशत् समाः स्त्रियः।
मासि मासि भगद्वारा प्रकृत्या वार्त्तवं स्रवेत्॥" (भावप्रकाश)

२ वन्ध्या स्त्री, वह स्त्री जिसे कोई सन्तान न होती हो।

गतार्थ (सं० त्रि०) १ गतो विदितः अर्थो यस्य, बहुव्री०। जिसका अर्थ मालूम हो गया हो, चरितार्थ। २ जिसका प्रयोजन निवृत्त हो गया हो, जिसे अब किसी चीजकी मांग न रह गई हो।

गतासु (सं० त्रि०) गता असवो यस्य, बहुव्री०। १ मृत, मौत २ शव, मुर्दा।

"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।" (गीता)

३ गतायु, जिसकी आयु शेष हो गई हो।

गति (सं० स्त्री०) गम भावे क्तिन्। १ गमन, चाल।

"सखी वक्र मधुरकीर्य्य स्तव्यं याति मे गतिः।" (ऋ १।१४)

२ परिणाम, नतीजा। ३ ज्ञान, पहुँच। ४ प्रमाण, सुबूत। ५ मार्ग, राह। ६ स्थान, जगह। ७ स्वरूप, शक्ल ८ विषय, बात। ९ यात्रा, मुसाफिरी। १० अभ्युपाय, तदबीर। ११ नाड़ीव्रण, रगका जख्म। १२ सरणी। १३ कर्मफल। १४ दशा, हालत। १५ पाणिनिकृत कोई संज्ञा। पाणिनिके १।४।६० सूत्रसे ७५ सूत्र तक गति संज्ञा निरूपित हुई है। १६ मुक्ति, मोक्ष। १७ सितार आदि बजानेमें कुछ बोलोंका क्रमबद्धमिलान। १८ ग्रहों-की चाल जो तीन प्रकारकी होती है, शीघ्र, मन्द और उच्च।

१९ जैनमतानुसार—गतिनामकर्मके उदयसे जीव की पर्याय विशेषको गति कहते है। गतिके मुख्य चार भेद हैं—नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति और देव-गति। (तत्वार्थ सूत्र)

२० जीव जब दूसरा शरीर धारण करने जाता है, तब उसकी विग्रह गति होती है। इसके चार भेद है— ऋजु, पाणिमुक्ता, लाङ्गलिका और गोमूत्र।

गतिक (सं० क्ली०) १ गति, चाल। २ अवस्था, हालत। ३ आश्रय, पनाह।

गतिक्रिया (सं० स्त्री०) गमनक्रिया, जाना, चलना।

गतिताल्लिन् (सं० पु०) कार्तिकेयका एक सैन्य।

गतिनामकर्म—जो कर्म जीवका आकार नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवोंके सामान बनाता है, उसे गतिनामकर्म कहते हैं। (सर्वार्थसिद्धि ८ अ० ११ सू०)

गतिबन्ध—जैनमतानुसार गतिनामकर्मका आत्माके साथ मिल जाना।

गतिसञ्चल (सं० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका अंगहार।

गतिमार्गणा—जैनमतानुसार जीवके स्वरूप वर्णन करनेका एक तरीका। गतिनामकर्म के उदयसे होनेवाली जीवकी पर्यायको गति कहते हैं इसके चार भेद हैं-मनुष्य, देव, तिर्यञ्च और नरक।

गतिया (हिं० पु०) तवलची

गतिता (सं० स्त्री०) १ चंचलता, चैन। २ नदीविशेष ३ परम्परा, सिलसिला।

गतिविधि (सं० पु०) गतिर्विधिः, ६-तत्। १ गतिविधान। २ सामान्य ज्ञान।

गतिशक्ति (सं० स्त्री०) गतेः शक्तिः, ६-तत्। गमनागमन-की क्षमता, आने जानेकी शक्ति।

गतिसत्तम (सं० पु०) गतिर्वाधः स चासौ सत्तमश्चेति कर्मधा०। परमेश्वर।

"आदित्यः गतिसत्तमश्च गतिस्तुभि सत्तमः। (विष्णुसं०)

गतोक (सं० त्रि०) गमन योग्य, जाने लायक।

गत्ता (हिं० पु०) कुट, कागजके कई पर्तोंका बनाया हुआ।

गत्वन् (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गत्वर (सं० त्रि०) १ गमनशील, चलनेवाला। २ क्षणिक।

गत्वरा (सं० स्त्री०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी नाव। यह ८० हाथ लम्बी, १० हाथ चौड़ी और ८ हाथ ऊंची होती थी और प्रायः सागरोंमें चला करती थी।

गथ (हिं० पु०) १ पूंजी, जमा। २ माल। ३ झुंड।

गथना (हिं० क्रि०) एक को दूसरेसे मिलाना। आपसमें गूथना।

गद (सं० पु०) १ रोग।

"समाध्यं कुरुते को नाम काले गतो यथा।" (म ध २ म०)

२ मेघध्वनि, मेघका शब्द। ३ विष ४ कुष्ठ, कोढ़। ५ श्रीकृष्णचन्द्रके छोटे भाई। इनके पिताका नाम वासुदेव और रोहिणी माताका नाम था। ६ राम-चन्द्रजीकी सेनाका एक वानर। ७ एक असुरका नाम।

गदकारा (हिं० पु०) गुलगुला, गुदगुदा।

गदग—बम्बई प्रान्तके धारवाड जिलेका एक ताल्लुका। यह अक्षा० १५° २' तथा १५° ३८' उ० और देशा० ७५°

२६´ एवं ७५ ५७´ पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ६८८ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय १३७५७३ निकलेगी। कप्पट पहाड़ बड़ा है। उसकी चिकनी मट्टीमें सोना होता है। जलवायु संयत और स्वास्थ्यकर है। दम्बल तालाब सींचके लिये ६४००० हजार रुपये लगा करके बनाया गया है।

२ धारवाड़ जिलेके गदक ताल्लुकका हेड क्वार्टर। यह अक्षा० १५ २५´ उ० और देशा० ७५ ३८ पू०में दक्षिण मराठा रेलवे पर अवस्थित है। लोकसंख्या कोई ३०४५२ है। १८५८ ई०को यहां म्युनिसपालिटी हुई। यहां कपास और सूती तथा रेशमी कपड़ोंका बड़ा काम है। सूत कातनेका एक पुतलीघर भी खुला है। गदगमें त्रिकूटेश्वर, सरस्वती, नारायण, सोमेश्वर और रामेश्वरके प्राचीन सुन्दर मन्दिरोंका ध्वंसावशेष विद्यमान है। इसके शिलाफलक पढ़नेसे विदित होता कि गदकका पुराना नाम क्रतुक था और यह (८७३-११७०) चालुक्यों, (११६१ ८३) कलचुरियों, (१०४७ १३१०) होयसल बल्लालों, (११७०-१३१०) देवगिरियादवों और (१३३६-१५६५ ई०) विजयनगर राजाओंके अधीन रहा। १६७३ ई०के समय गदग धारवाड़में बाकापुर सरकारके एक बड़े जिलेकी तरह मिलाया गया। १८१८ ई०को जनरल मुनरोने इसको घेरा था। शहरमें छोटे जजकी अदालत, अस्पताल और कई स्कूल हैं।

गद्गद (सं० क्ली०) गद्गद भाषण, पुलकित वचन।

गदचाम (हि० पु०) हाथीका एक रोग। इसके होनेसे पीठ पर घाव हो जाता है।

गदनकेरो—बीजापुर जिलेके अन्तर्गत कलादगीका एक छोटा ग्राम। यह कलादगीसे ८ मील पूर्व बागलकोट सड़क पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय चारसौ है। ग्रामके पास ही पहाड़ पर बहुतसी मसाजद हैं। जो मल्यप्पा और उनके लड़के मोनप्पाकी कब्र कही जाती हैं। अनावृष्टिके समय मनुष्य इस मसजिदमें वर्षाके लिये आराधन करते हैं।

गदम (फा० पु०) नाव बांधनेके लिये एक प्रकारकी लकड़ी, थाम, पुस्ता।

गदमुरारि (सं० पु०) ज्वर रोगका औषधविशेष। पारा, गन्धक, लौह, अभ्र, ताम्र, हिङ्गुल और सीसक, इन सबका समभाग लेकर मिलाना चाहिये। दो रत्ती प्रतिदिन सेवन करनेसे सद्यज्वर नाश होता है। (रसेन्द्रसार०)

गदमुरारिरङ्क्षामेटो—औषधविशेष। पारा, गन्धक, तांबा, हरिताल, विष, शूंठ, पीपल, मिर्च, हरीतकी, आमलकी, बहेड़ा, सोहाग, इनके समान भागमें उतना ही जयपाल देकर भृङ्गराजके रसमें दो प्रहर तक पीसना चाहिये। इसके सेवन करनेसे सन्निपातादि समस्त रोग जाते रहते हैं।

गदयित्नु (सं० पु०) १ काम, इच्छा। २ शब्द, आवाज। (त्रि०) ३ कामुक इच्छुक ४ वावदूक, मप्पी।

गदराना (हि० वि०) १ परिपक्व होनेके निकट आना। २ जवानीमें अंगोंका भरना। ३ आंखमें कीचड़ आदि आना।

गदरिया—युक्तप्रदेशका मेषपालक जातिविशेष। ये कई एक श्रेणियोंमें बटे हैं। एक श्रेणीके मनुष्य दूसरी श्रेणीके साथ विवाहमें दान ग्रहण नहीं करते हैं। इस जातिकी विधवा स्त्रियां अपने देवरसे विवाह करती हैं। किन्तु ज्येष्ठ मृत कनिष्ठकी विधवासे विवाह नहीं कर सकते। आग्रा और फरुखाबादके अञ्चलमें इस जातिका वास अधिक है।

गदसिंह—एक संस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने अनेकार्थध्वनिमञ्जरी नामक एक संस्कृत अभिधान, तत्त्वचन्द्रिका नामक किरातार्जुनीयटीका और समाधिवेककी रचना की है।

गदला (फा० वि०) मटमैला, गन्दा।

गदहपचीसी (हि० पु०) प्राय १६से २५ वर्ष तककी अवस्था। लोगोंका विश्वास है कि इतने दिन मनुष्य अनुभवी रहते तथा उनकी बुद्धि अपरिपक्व रहती है।

गदहपन (हि० स्त्री०) मूर्खता, बेवकूफी।

गदहपूरना (हि० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो दवाके काममें आता है।

गदहलोट (हि० स्त्री०) कुश्तीका एक पेंच।

गदहलोटन (हि० पु०) १ क्लान्ति दूर करनेके लिये तथा प्रसन्नताके लिये गदहेका जमीन पर लोटना। २ गदहा लोटनेका स्थान। साधारणतः मनुष्योंका विश्वास है कि ऐसी जगह पर पांव रखनेसे मनुष्य थक जाते और पांवमें दर्द होने लगता है।

गदहहेंचू (हिं० पु०) एक प्रकारका खेल । इसमें एक लड़का दूसरे लड़केकी चक्षु बांधकर शेष लड़कोंको छूनेके लिये कहता है । जिन लड़कोंका पता वह कह दे उन्हें "गदही" और जिन्हें न कह सके उन्हें "गदहा" कह कर पुकारते हैं। उसके बाद गदहे गदहियों पर चढ़कर एक जगहसे दूसरी जगह जाते हैं।

गदहा (हिं० पु०) १ रोग हरनेवाला, वैद्य, चिकित्सक । २ गर्दभ । गर्दभ देखो।

गदहिला (हिं० पु०) ईंट और सुरखीसे लदे हुवे गदहे । २ गोबरैलेकी तरहका एक विषैला कीड़ा ।

गदांबर (हिं० पु०) मेघ।

गदा (सं० स्त्री०) गद-अच्-टाप् । लोहमय अस्त्रविशेष। इसमें लोहेका डंडा होता है और डंडेके सिर पर भारी लट्टू लगा रहता है। इसका डंडा पकड़कर लट्टूको ओरसे शत्रु पर प्रहार करते हैं। अस्त्रयुद्धमें गदायुद्ध ही अतिशय कठिन और योद्धाओंका बलसापेक्ष है। अग्निपुराणमें आहत, गोमूत्र, प्रभृत, कमलासन, ऊर्ध्वगात्र, नामित वामदक्षिण, आवृत्त, परावृत्त, पदोद्धृत, अवप्लुत, हंसमार्ग और विमार्ग इन कई प्रकारके गदायुद्धका उल्लेख है। महाभारतमें मण्डल, गतप्रत्यागत, अस्त्रयन्त्र, स्थान, परिमोक्ष, प्रहारवर्जन, परिधावन, अभिद्रवण, आक्षेप, अवस्थान, सविग्रह, परिवृत, संवर्त, अवप्लुत, उपप्लुत, उपन्यस्त और अपन्यस्त इन कई प्रकारोंके गदायुद्धके कौशलकी कथा वर्णित है। गदायुद्धमें निपुण महाबली भीम और दुर्योधनने गदायुद्धसे स्वर्ग-मर्त्य-पातालवासियोंको विस्मयापन्न कर दिया था। टीकाकार नीलकण्ठके मतसे युद्धकालमें शत्रुके चारो ओर घूम कर युद्ध करनेका नाम मण्डल है। जो कौशलसे शत्रुके निकट पहुंच कर फिर हठात् दूर भाग जाता है, उसको गतप्रत्यागत कहते हैं। शत्रुके कठिन मर्मदेशका आक्षेप कर ऊपरकी ओर उठाने या नीचे फेंकनेको अस्त्रयन्त कहते हैं आघात के उपयुक्त मर्मदेश अर्थात् मर्मस्थानमें आघात करनेको स्थान कह कर उल्लेख किया है । अत्यन्त वेगसे घूमने फिरनेको परिधावन, वेगसे शत्रुके सम्मुख उपस्थित होनेको अभिद्रवण, शत्रुके यत्नसे हो उसीके नाश करनेके कामको आक्षेप, युद्धमें किसी तरहकी चंचलता प्रकाश नहीं करनेको अवस्थान, शत्रुके पहुंचने पर फिर भी उसके साथ युद्ध करनेको सविग्रह, शत्रुके चारों ओर विचरण करनेको परिवर्त्तन, शत्रुको इधर उधर टलने न देनेको संवत, शत्रुके प्रहारसे अपनेको बचानेके लिये अवनत होकर भाग जानेको अवप्लुत, विपक्षके आघातसे रक्षा पानेके लिये पीछे हट जानेको उपप्लुत, शत्रुके पास पहुंचकर गदा प्रहारको उपन्यस्त और घूमकर हाथोंसे शत्रुको मारनेका नाम अपन्यस्त है। (शल्य शल्यप० ५७ अध्यायकी नीलकण्ठ टीका देखो) देवताओंके बीच विष्णु भगवान् ही गदायुद्धमें अति निपुण हैं । वायुपुराणमें लिखा है कि गद नामका एक भयङ्कर असुर था जिसकी अस्थि वज्रसे भी कठिन थी। गदासुर देवताओंके ऊपर बहुत अत्याचार किया करता था। अन्तमें ब्रह्माजीने उसके शरीरसे अस्थि ले ली और उसीसे विष्णुकी गदा बनाई गई। (वायुपुराण) २ बुद्धितत्व, महत्तत्त्व, वहुधन।
"मनस्तत्त्वात्मक चक्र बुद्धितत्त्वात्मिकां गदाम्।" (विष्णु०)
३ पाटलवृक्ष । ४ योगविशेष ।

गदाई (फा० स्त्री०) तुच्छ, नीच । २ रद्दी ।

गदाक्षेत्र—विरजाक्षेत्रका दूसरा नाम । विरजा और याजपुर देखो।

गदाख्य (सं० क्ली०) गदा इत्याख्या यस्य, बहुव्री० । कोष्ठ, कोढ़ ।

गदागद (सं० पु०) अश्विनीकुमार, [illegible] चलनेवाला ।

गदाग्रज (सं० पु०) गदस्य अग्रजः, ६[illegible] २ कृष्ण ।

गदाग्रणी (सं० पु०) गदस्य अग्रणी, ६-तत् । क्षयरोग । सभी रोगोंमें श्रेष्ठ होनेके कारण क्षयरोगका नाम गदाग्रणी पड़ा ।

गदाधर (सं० पु०) गदां धरति गदा-धृ-अच् । १ विष्णु। इन्होंने गदासुर नामक राक्षसकी हड्डियोंसे एक गदा बनाकर धारण की, इसीसे इनका नाम गदाधर पड़ा। गदा देखो। गदा विष्णुभगवान्‌को जिस तरह मिली वह वायुपुराणमें लिखा है—एक समय ब्रह्मपुत्र हेतिरक्षने ब्रह्माकी आराधना की। ब्रह्मा उसकी कठिन तपस्यासे संतुष्ट हो कर उसको वर देनेके लिये उपस्थित हुए। हेतिरक्षने निवेदन किया—"प्रभो ! यदि इस अधम पर आपकी कृपा हुई तो मुझे यह वर दीजिये कि मैं त्रिलोकमें अजय रहूं। देवास्त्र, असुरास्त्र या मनुष्यास्त्रसे मुझे किसी प्रकारका अनिष्ट न हो।" ब्रह्माजीने इसे

स्वीकार कर लिया। इस वरको पाकर वह दुर्वृत्त दैतिरव मतवाला हो गया और थोड़े दिनके बाद इन्द्रको भगा कर इन्द्रपुरी अपने अधिकारमें कर लिया। क्रमानुसार समस्त देवताओंको पदच्युत कर भगाने लगा। दैतिरवके इस असह्य अत्याचारको देख कर समस्त देवगण विष्णुके निकट उपस्थित हुए और उन्होंने दैतिके भयङ्कर अत्याचारको कह सुनाया। विष्णु भगवान्‌ने उन पर दया दिखा कर कहा "यदि तुम लोग मुझे एक महास्त्र दो तो मैं दैतिका नाश शीघ्र कर डालूं।" इस पर देवताओंने समयानुकूल देख गदासुरकी वज्रसी कठिन अस्थिसे बनी हुई गदा विष्णु भगवानको अर्पण कर दी। विष्णुने गदाके दृढ आघातसे दैतिरवका विनाश कर डाला। यह गदा उन्हें बहुत अच्छी लगी इस लिये उन्होंने इसे लौटा कर देवताओंको नहीं दिया वर अपने हाथमें ही धारण कर लिया, तभीसे इनका नाम गदाधर पड़ा। (गयामाहात्म्य १ अ०) २ गया तीर्थ स्थित देव मूर्ति विशेष। (त्रि०) ३ जो गदा धारण करता हो। कई एक संस्कृत ग्रन्थकारोंके नाम—

१ क्रियाकल्पद्रुम प्रणेता। २ मह्योगासुल-रहा। ...सिद्धि नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता। ३ एक सरकारके एक वर ...धक ग्रन्थकार। ४ एक धर्मशास्त्र संग्रह १८।८ ई०को अ० ...होंने गदाधरपद्धति, सम्प्रदायप्रदीप और ...ध्वकाण्डिकासूत्रभाष्य प्रणयन किये हैं। ५ हृतस्ता रतम्यस्तोत्रके रचयिता। ६ भगवत्तत्त्वदीपिका नाम भक्तिशास्त्रके प्रणेता। ७ रसिकजीवन नामक संस्कृत अलङ्कारके रचयिता। ८ विवाहसिद्धान्तरहस्य नामक ज्योतिर्ग्रन्थ प्रणेता। ९ एक प्रसिद्ध तान्त्रिक। ये राघवेन्द्रके पुत्र और धीरसिंहके पौत्र थे। इन्होंने तन्त्रप्रदीप नामक शारदातिलककी टीका की है। १० एक प्राचीन कवि।

गदाधरचक्रवर्ती—काव्यप्रकाशके एक टीकाकार।

गदाधरतर्काचार्य—रामतर्कालङ्कारके पुत्र, दर्पणमालाका टीकाके रचयिता। राढ़ीय ब्राह्मणोंके निर्दोष कुलपञ्जिका नामक कुलग्रन्थमें एक नैयायिक गदाधर भट्टाचार्यका नाम पाया जाता है वे भी रामतर्कालङ्कारके पुत्र होते हैं। ऐसी हालतमें दोनों एक ही व्यक्ति हो तो असम्भव नहीं।

गदाधरदास—एक हिन्दी कवि, व्रजवासी प्रसिद्ध हिन्दी कवि कृष्णदासके शिष्य और वल्लभाचार्यके प्रशिष्य।

गदाधर दीक्षित—एक प्राचीन वैदिक सूत्रभाष्यकार। इनके पिताका नाम वामन था। इनके बनाये हुए आश्वलायन गृह्यसूत्रभाष्य और पारस्करगृह्यसूत्रभाष्य पाये जाते हैं।

गदाधरनदी—ब्रह्मपुत्रको एक शाखा नदी। यह भूटानकी गिरिमालासे निकल कर जलपाईगोड़ी और ग्वालपाड़ाको पश्चिम और पूर्व द्वारसे विभक्त करती है। इसकी गति बड़ी ही परिवर्तनशील है। इसी लिये स्थान स्थान पर इसका नाम बदलता गया है। किसीके मतसे यह नदी उत्तरांशमें सङ्कोश, ग्वालपाड़ामें गङ्गाधर तथा इसके निम्नभागमें भी प्राचीन गर्भ गदाधर नामसे मशहूर है। रायनाई नामकी इसकी एक शाखा है।

गदाधरनाथ—एक प्राचीन कवि।

गदाधरपण्डित—चैतन्य देवके एक प्रधान अन्तरङ्ग। चैतन्यभक्तगण इन्हें भी श्रद्धादृष्टिसे देखते हैं।

गदाधरभट्ट—बान्दाप्रदेशके एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इनके प्रपितामह मोहनभट्ट, पितामह पद्माकर और पिता मिश्री लाल ये तीनों कवि थे। किन्तु गदाधरने कविता लिख कर अपने पितृगणसे उच्चासन लाभ किया था। ये राजा भवानीसिंहके यहां रहते थे। अलङ्कारचन्द्रोदय इन्होंका बनाया है।

गदाधर भट्टाचार्य—संस्कृत अध्यापक और विख्यात नैयायिक। ये वारेन्द्रश्रेणीके ब्राह्मणवंशीय पण्डित थे। इनके पिताका नाम जीवाचार्य रहा। ये पावना जिलाके अन्तर्गत लक्ष्मीचापड़ा नामक ग्राममें रहते थे। विद्याभ्यास करनेके लिये नवद्वीप जाकर नैयायिक हरिरामतर्कवागीशके विद्यालयमें न्यायशास्त्र अध्ययन किया था। गदाधरको शिक्षा समाप्त न होने पाई थी कि हरिराम की मृत्यु हो गई। हरिरामके ऐसा कोई सुयोग्य पुत्र न था जो पाठशालामें विद्यार्थियोंको पढ़ा सकता। मृत्यु समय उन्होंने अपनी स्त्रीसे गदाधरको ही पाठशालामें नियुक्त करने कहा था। गदाधर पढ़ानेमें प्रवृत्त हो गये। किन्तु छात्रगण उनसे पढ़नेमें अपनी अनिच्छा प्रगट कर दूसरी दूसरी पाठशालाओंमें अध्ययन करनेके लिये चले गये।

मतसे गद्य चार प्रकारका माना गया है—मुक्तक, वृत्त-गन्धि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक। समासरहित गद्य भागको मुक्तक कहते हैं। यथा—गुरुर्वचसि, पृथु-रुरसि, अर्जुनो यशसि इत्यादि। वृत्तगंधि वह है जिसमें कहीं कहीं पद्यका आभास हो। यथा—

"समरकण्डूलनिबिडभुजदण्डकुण्डलीकृतकोदण्डशिञ्जिनीटङ्कारोज्जागरितवैरिनगर।"

दीर्घ समासयुक्त गद्यको उत्कलिका कहते हैं। चूर्णक वह है जिसमें छोटे छोटे समास हों। यथा

"गुणरत्नसागर जगदेकनागर कामिनीमदन जनरञ्जन।"

छन्दोमञ्जरीके मतसे गद्य तीन प्रकारका होता है—वृत्तक, उत्कलिकाप्राय और वृत्तगन्धि। कठोर अक्षर-शून्य अल्पसमासयुक्त गद्यको वृत्तक कहते हैं। यह वैदर्भी रीतिसे रचा जाता है। कठोराक्षर और बहुत समासयुक्तको उत्कलिकाप्राय तथा वृत्तके एकदेशयुक्तको वृत्तगन्धि गद्य कहते हैं।

काव्यादर्शके मतसे पादलक्षणरहित पदसमूहको गद्य कहते हैं गद्य काव्य प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त है, कथा और आख्यायिका। (काव्यादर्श)

२ संगीतमें शुद्ध रागका एक भेद।

गद्याण (सं० पु०) परिमाणविशेष। भावप्रकाशके मतसे २ जौका एक गुञ्जा, ८ गुञ्जाका एक माष और ६ माष या ४८ गुञ्जाका एक गद्याण होता है।

गद्याणक (सं० पु०) गद्याण एव स्वार्थे कन्। १ गद्याण। २ लीलावती उक्त परिमाणविशेष। लीलावतीके मतसे २ जौका एक गुञ्जा, ३ गुञ्जाका एक वल्ल, ८ वल्लका एक धारण और २ धारणका एक गद्याणक होता है।

गद्यात्मक (सं० त्रि०) गद्यमें रचा हुआ।

गढ़ा—१ बम्बई प्रदेशके काठियावाड़में गोहेलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक नगर। यहांकी जनसंख्या प्रायः छः हजार है। यहां फौजदारी अदालत, बालक और बालिकाओं-के विद्यालय और एक औषधालय हैं। यहां सहजानन्द प्रतिष्ठित स्वामी नारायण-सम्प्रदायका एक प्रधान अड्डा है। इसी स्थानपर १८३० ई०में सहजानन्दका देहान्त हुआ था।

२ सिन्धु प्रदेशके थर और पार्कर जिलाके अन्तर्गत उमारकोट तालुकका एक नगर। यहां प्रायः दो हजार मनुष्य रहते हैं।

गधड़—बम्बईमें काठियावाड़के अन्तर्गत भावनगर राज्यका शहर। यह भावनगर शहरसे ४० मीलकी दूरीपर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५३७५ है। हिन्दूधर्मप्रवर्तक सहजानन्द निर्मित स्वामीनारायण सम्प्रदायका यह एक प्रधान केन्द्र है। यहां चन्दन लकड़ीका गुटिकाकी माला यथेष्ट रूपमें बनाई जाती है। जिसे उक्त सम्प्रदायके अनुयायी पहनते हैं।

गधाली—काठियावाड़के गोहेलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। यह उजलवा रेल स्टेशनसे ३॥ कोस पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या १५३० है। इस राज्यकी आमदनी दस हजार रुपया है और उनमेंसे २०००) रु० गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधिदूभार—युक्त प्रदेशमें मुजफ़रनगर जिलाके अन्तर्गत एक ग्राम। यहां दो हजारसे अधिक मनुष्य रहते हैं। जिनमें बहुत्ति मुसलमानकी संख्या अधिक है। यहां कईएक ईंटके घर, तीन मसजिद और साप्ताहिक बाजार हैं। चीनी और नमकका व्यवसाय यहां अधिक होता है। इस ग्रामके चारों ओर सुन्दर उपवन है।

गधिया—दक्षिण काठियावाड़के अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। इस राज्यके दो ग्राम दो सामन्तोंके अधीन हैं। लोक-संख्या ५२८ है। वार्षिक आमदनी प्रायः ४५००) रु० की है उनमेंसे २८५) रु० गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधीला (हिं० पु०) एक जंगली जात।

गधुल—काठियावाड़के गोहेलवार प्रान्तके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। धोला रेलपथसे २॥ कोस दूरमें अवस्थित है। लोकसंख्या ३६६ है। यह दो सामन्तराजाओंके अधीन है। यहांकी आमदनी तीन हजार रु० है और, उनमेंसे १८६) रु० कर गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको देना पड़ता है।

गधूल (सं० पु०) एक फूलका नाम।

गध्का—काठियावाड़के हलार प्रान्तके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। एक करद सामन्तके अधीन यहां छः ग्राम हैं। यह राजकोटसे पांच कोस पूर्वमें अवस्थित है। राज्यको

आय प्राय १००००) रु० है, जिनमेंसे वृटिश गवर्नमेंट को ४६०) रु० और जुनागढ़के नवाबको २००) रु० कर देना पड़ता है।

गध्य (स० त्रि०) प्राप्य, जो पानेके योग्य हो।

गन (स० पु०) गण देखो।

गनकेरूआ (हि० पु०) एक प्रकारका घास जो गाय भैंसके चारेके काममें आती है।

गनकौर (स० स्त्री०) चैत्र शुक्ल तृतीया। इस दिन गणेश और गौरीकी पूजा होती है।

गनना (स० क्रि०) गिनती करना।

गनतङ्ग—पञ्जाब प्रदेशके असहर विभागमें स्थित कुनावार और चीन साम्राज्यके मध्यवर्त्ती गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३१° ३८ उ० और देशा० ७८ ४७ पू०में अवस्थित है। इसकी ऊंचाई १९२२८ फुट होगी। इसका सर्वोच्च स्थानसमूह बहुत दिन तक बर्फसे आच्छादित रहता है बर्फसे ढका रहनेके कारण यह पर्वत दुरारोह है। यहां एक भी वृक्ष उगने नहीं पाता है। गिरिसङ्कटसे पर्वतशिखरकी ऊंचाई १८२८५ फुट है।

गनिग—महिसुर राज्यस्थ जातिविशेष। यह तेल निकालते और बेचते हैं। इनमें कुछ लोग अपना परिचय माड़ वैश्य जैसा देते हैं।

गनिमर्द—बम्बई प्रदेशके सम्पगाव उपविभागसे १० मील दक्षिण हिरेनन्दीहल्ली ग्रामके निकटस्थ एक पर्वत श्रेणी। यह समतलक्षेत्रसे ६०० फुट ऊंची है।

गनियारी (हि० स्त्री०) पौधाविशेष। यह मखोको तरह होता है। इसकी पत्तियां बबूलकी पत्तियोंसे चौड़ी होती हैं। इस पौधेमें श्वेत पुष्प और करौंदेके बराबर छोटे छोटे फल होते हैं। इसकी लकड़ी रगड़नेसे आग उत्पन्न करती है। वैद्यकमें गनियारी कटु, उष्ण, स्निग्ध दीपक और वातनाशक मानी जाती है।

गनी (अ० पु०) धनी, धनवान्।

गनी—एक मुसलमान कवि। इनका असली नाम मिर्जा मुहम्मद ताहिर था, ये काश्मीरमें पैदा हुये थे। यह शेख मुहसिन फानीके छात्र रहे और अपने विद्याप्रभावसे एक सुकवि हो गये। इन्होंने अपने गुरुसे अधिक प्रतिष्ठा पायी थी। इनका बनाया 'दीवान गनी' नामक काव्य ग्रन्थ बहुत अच्छा है। १०७९ हिजरीको यह इहलोक छोड़ गये। कहते हैं कि दिल्लीके बादशाह आलमगोरने काश्मीरके शासनकर्ता सैफ खांको उन्हें अपने पास भेज देनेके लिये लिखा था। सैफ खांने जब यह सम्वाद सुनाया, वह जानेको अस्वीकृत हुये और कहने लगे—सम्राट्को कह दीजिये कि गनी पागल हो गया है और उस अवस्थामें बादशाहके सामने जाने लायक नहीं। सैफ खांने कहा, यह कैसे उन जैसे ज्ञानी व्यक्तिको उन्मत्त कहते। इस पर उन्होंने बातकी बातमें उन्मादग्रस्त हो करके अपने कपड़े फाड़ डाले और तीन दिन बाद मर गये।

गनीगार—महिसुर राज्यस्थ जातिविशेष। यह स्थूलवस्त्र, टाट, बोरे आदि बुनते हैं। परन्तु बहुतसे गनीगार खेती करते और अपनेका ऊंचा समझते हैं।

गनीम (अ० पु०) १ लुटेरा, डाकू। २ बैरी, शत्रु।

गनुटिया—वीरभूम जिलाके अन्तर्गत रामपुरहाट परगनाका एक नगर। यह अक्षा० २३ ५२ उ० और देशा० ८७° ५० पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या ४०७ है। पहले यहां रेशम बहुत तैयार किया जाता था। रेशमका व्यवसाय ही अधिवासियोंका जोवनाधार था। १७८६ ई०को फ्रास ह्वाड साहबने रेशमके व्यवसायके लिये एक कोठी बनवाई थी और ईष्ट इण्डिया कम्पनीका एजेण्ट होकर यहांसे अपने मुल्कमें प्रस्तुत रेशम रफ्तनी करते थे। आजकल इस नगरमें रेशमका व्यापार नहीं होता है और फ्रास ह्वाल साहबकी बनाई कोठो कलकत्ताके किसी अङ्गरेजने खरीद ली।

गनीमत (अ० पु०) लूटका माल, मुफ्तका माल।

गनेल (हि० स्त्री०) एक प्रकारका घास जो छप्पर छानेके काममें आती है।

गनोद—काठियावाड़ जिलाके अन्तर्गत एक छोटा करद राज्य। यह उपलेटासे ८ मील दक्षिण—पश्चिम और ओसम पहाड़ोसे ६ मील उत्तर—पश्चिम भादर नदीके उत्तरीय तीर पर अवस्थित है। यह गोन्दल भायादके अधीन है। यह एक बड़ा और समृद्धिशाली शहर है। लोकसंख्या लगभग २२१० है।

गनोरिया (अं० स्त्री०) सूजाक।

गनौरी (हि० स्त्री०) नागरमोथा।

गन्तव्य (स० त्रि०) गमनीय, जाने योग्य, चलने लायक।

गन्ता (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गन्तु (सं० त्रि०) गम कर्त्तरि तुन्। १ पथिक, बटोही। २ गमनकर्त्ता, चलनेवाला। (पु०) ३ गमन, जानेकी क्रिया, यात्रा, प्रस्थान।

गन्तृ (सं० त्रि०) गम शीलार्थे तृन्। १ गमनशील, चलनेवाला। २ प्राप्तिशील, पानेवाला। ३ गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गन्त्री (सं० स्त्री०) १ वृषवहनीय शकट, बैलगाड़ी। २ गमनकारिणी स्त्री।

"गन्त्रा वसुमतीनाशमुदधिर्दैवतानि च।" (याज्ञवल्क्य ३।११०)

गन्त्रीरथ (सं० पु०) गन्त्रीरथ इव यद्वा गन्त्रीणां गच्छन्तीनां स्त्रीणां गमनाय रथः, ६-तत्। शकट, गाड़ी।

गन्दिका (सं० स्त्री०) नगरीविशेष, एक नगरका नाम।

गन्दीकोट—मन्द्राज प्रेसिडेन्सिके कड़ापा जिलाका जम्मालमदगू तालुकाका एक प्राचीन दुर्ग। यह अक्षा० १४° ४७ उ० और देशा० ७८° १६´ पू० पर समुद्रतलसे १६७० फुट ऊंचे पर्वतपर अवस्थित है। दुर्गके पास होमें पेन्नेर नदी प्रवाहित है। कहा जाता है कि बोमनपालमें काप नामके एक राजा थे। उन्होंने गन्दीकोट नामका एक ग्राम स्थापित किया और उसी ग्राममें गन्दीकोट नामक दुर्ग उन्हींका निर्माण किया हुआ है। विजयनगरके राजा हरिहरने इस किलामें एक मन्दिर बनवाया था। पूर्व समयमें गोलकुण्डाके सुलताननें इस दुर्ग पर आक्रमण किया था, किन्तु कड़ापाके पठान नवावने सुलतानको पराजित कर दुर्ग अपने अधिकारमें लाया। पठान नवाब फतेह नायक हैदरअलीके पिता उस समय बहुत प्रसिद्ध हो गये थे। मरनेके बाद उनके लड़के हैदरने किलाकी बहुत कुछ उन्नति की और उसमें अनेक सैन्य रहने लगे थे। १७९१ ई०में कप्तान लिटलने हैदरके लड़के टीपूको लड़ाईमें हराकर किला अधिकार कर लिया था।

गन्देवी—बरोदा राज्यके नवसारी प्रान्तमें इसी नामके तालुकका प्रधान सदर। यह अक्षा० २०° ४९´ उ० और देशा० ७३° २´ पू० पर बम्बई, बरोदा और सेण्ट्रल इण्डिया रेलवेके अलमसरसे ३ मील और सूरतसे २८ मील दक्षिण-पूर्व अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग ५९२७ होगी। यहां मजिष्ट्रेटको अदालत, अस्पताल, एक हाई स्कूल और बहुतसे देशी विद्यालय हैं। अनाज, गुड़, घी और मिट्टीतेलका व्यापार यहां अधिक होता है। यहां तांतके उत्कृष्ट वस्त्र प्रस्तुत होते हैं।

गन्ध (सं० पु०) घ्राणेन्द्रियग्राह्य गुण, बास, महक, सुगन्ध और सौरभ। प्राचीन आर्य दार्शनिकोंका मत है कि केवल पृथ्वीमें ही गन्ध है और किसी पदार्थमें नहीं। जल प्रभृति तथा दूसरे दूसरे पदार्थोंमें जो गन्ध मालूम पड़ता है वह यथार्थमें उनका गन्ध नहीं, वरन उनके साथ मिश्रित पार्थिवांशका है। आधुनिक वैज्ञानिक जलमें गन्ध बतलाते हैं। क्योंकि ऊंट बहुत दूरसे जलका गन्ध पाता है। इसमें यही उनका प्रधान प्रमाण है। उनका कहना है कि यदि जलमें गन्ध नहीं रहता तो ऊंट बहुत दूरसे जलका अनुसरण करते हुए वहां तक पहुंच न सकता। आधुनिक मत ठीक प्रतीत नहीं होता है। हम लोग विशुद्ध परिष्कृत जलमें किसी प्रकारका गन्ध नहीं पाते हैं। निकटमें जलाशय होनेसे वायु भी शीतल हो जाती है। जिस प्रकार वायु बहुदूरस्थित पदार्थका गन्ध लेकर हम लोगोंकी नासिकाके निकट आ जाती और हम लोग उस पदार्थका गन्ध अनुभव कर सकते हैं। उसी प्रकार वायु जलके स्पर्शसे शीतल बहने लगती है और तब हम लोग दूरस्थित जलाशयका होना अनुमान कर सकते हैं। हम लोगोंके जैसे ऊंट भी वायुके द्वारा दूरस्थित जल अनुभव कर उसीका अनुसरण करता जाता है। यही प्रमाण ठीक मालूम पड़ता है। वैशेषिक दर्शनके उपस्कारप्रणेता शङ्करमिश्रका मत है कि गन्ध नित्य तथा अनित्य दो भागोंमें बांटा है। पृथ्वीमें जो गन्ध है वही नित्य है उसका विनाश कभी नहीं होता है। द्वयणुक प्रभृतिके लिये पृथ्वीका गन्ध अनित्य है। यह पाक प्रभृतिके कारण यह विनष्ट हो जाता है।

मुक्तावलीकार विश्वनाथके मतमें समस्त गन्ध अनित्य है। वे नित्य गन्ध स्वीकार नहीं करते हैं। दार्शनिकोंके मतसे यहां गन्ध फिर दो प्रकारका है, सुरभि और असुरभि।

महाभारतमें लिखा है कि गन्ध दश भागोंमें विभक्त है—

"इष्टश्चानिष्टगन्धश्च मधुरोऽम्लः कटुस्तथा।

निर्हारी स हत स्निग्धो रूक्षो विशद एव च ।
एव दशविधो ज्ञेय पार्थिवो गन्ध इत्यत।" (भारत १४।५० अ०)

१ इष्ट, २ अनिष्ट, ३ मधुर, ४ अम्ल, ५ कटु, ६ निर्हारी, ७ संहत, ८ स्निग्ध, ९ रूक्ष, १० विशद। इनमेंसे कस्तूरी प्रभृतिका गन्ध इष्ट, विष्ठादिका गन्ध अनिष्ट, मधुयुक्त पुष्पादिका मधुर, मिर्चका कटु, हींगका निर्हारी, मिश्रितका चित्र, तप्त घृतका स्निग्ध, सरसों तेलका रूक्ष, शालीतण्डुलका विशद और इमली प्रभृतिका गन्ध अम्ल माना गया है।

कालिकापुराणके मतसे सुरभिगन्ध पांच भागोंमें विभक्त है—चूर्णीकृत, घृष्ट, दाहाकर्षित, सम्मर्दजरस और प्राणीके अङ्गसम्भवरस। गन्धद्रव्यके चूर्ण तथा गन्धपत्र वा पुष्पके चूर्णको चूर्णीकृत गन्ध कहते हैं। चन्दन, सरल और नमेरुके घर्षणके लिये गन्ध एवं अगुरु प्रभृति घर्षण द्वारा जिसका पङ्क निर्गत करके देवताओंको अर्पण किया जाता है उसीको घृष्ट गन्ध कहते हैं। देवदारु, अगुरु, पद्म, गन्धसार और चन्दनप्रियाको सुखानेसे जो सुगन्धिरस निकलता है उसीका नाम दाहाकर्षित है। सुगन्ध करवीर विल्व, गन्धिनी एवं तिलक प्रभृतिको कूट करके जो रस निकाला जाता है वही सम्मर्दजगन्ध है। मृगनाभि या उसके कोषसे जो गन्ध उत्पन्न होता है उसको प्राण्यङ्गजगन्ध कहते हैं। यह स्वर्गवासियोंका अत्यन्त आमोदप्रद है। (कालिकापुराण ६८ अ०)

तन्त्रसारका मत है कि मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठके अग्रभाग द्वारा देवताओंको गन्ध देना उचित है। गन्धद्रव्य देखो।

२ लेश, छोटाई, कण। ३ सम्बन्ध। ४ गन्धक। ५ गर्व, अहङ्कार, घमंड। ६ शोभाञ्जन, सहिजन। (त्रि०) ७ गन्धयुक्त, जिसमें गन्ध हो। ८ प्रतिवेशी, पड़ोसी। (क्ली०) ९ कृष्णागुरु, काला अगर।

गन्धक (सं० पु०) गन्धोऽस्त्यस्य गन्ध-अच्, तत स्वार्थे कन्। १ गिरि वृक्ष, सजनेका पेड़। २ उपधातुविशेष, पीले रंगकी धातु। पर्याय—गन्धाश्मा, सौगन्धिक, गन्धिक, सगन्धिक, गन्धपाषाण, पामघ्न, गन्धमोदन, पूतिगन्ध, अतिगन्ध, कीटघ्न, शरभूमिज, गन्धी, वर, सुगन्ध, दिव्यगन्ध, रसगन्धक, कुष्ठारि और क्रूरगन्ध है। वैद्यकके मतमें इसका गुण—कटु उष्ण, तीव्र, अतिशय अग्निवृद्धिकर है। यह कृमि, प्लीहा और नेत्ररोगनाशक माना गया है। (राजनिघ॰)

भावप्रकाशमें गन्धककी उत्पत्तिके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है—किसी एक दिन देवी भगवती श्वेतद्वीपमें क्रीडा कर रही थीं। इसी समय उनका परिधेय वस्त्र आर्तव रक्तमें रंग गया। पर्वतनन्दिनी लज्जासे चञ्चल हो उस वस्त्रको परित्याग न कर क्षीरसमुद्रमें स्नान करने लगीं। उस वस्त्रसे रज निःसृत हुआ और इसीने गन्धक॰ की उत्पत्ति हुई। गन्धक वर्णभेदसे चार प्रकारका है यथा—रक्त, पीत, श्वेत और कृष्णवर्ण। स्वर्णसंस्कार विषयमें रक्तवर्ण, रसायन क्रियामें पीतवर्ण और व्रण आलेपन विषयमें श्वेतवर्ण गन्धक प्रशस्त है। कृष्णवर्ण गन्धक स्वर्णसंस्कारादिमें प्रशस्त है, किन्तु वह बहुत कम पाया जाता है। अशुद्ध गन्धक कुष्ठ, पित्तरोग और भ्रान्तिजनक एवं वीर्य, बल और रूपनाशक है। इस लिये गन्धक शोधन किये विना प्रयोगमें नहीं लाना चाहिये।

गन्धक शोधन प्रणाली—एक लौहनिर्मित पात्रमें घृत देकर अग्निमें उत्तप्त करना चाहिये। घृतके गरम होने पर उसके समान परिमाणका गन्धकचूर्ण उसमें डाल देना चाहिये। जब गन्धक जल जाय तो उसे वस्त्रसे छांक कर दुग्धमें मिला देना चाहिये। ऐसा करनेसे गन्धक शोधित हो जाता है। शुद्ध या शोधित गन्धकके गुण—कटु, तिक्त, कषायरस, उष्णवीर्य, पित्तवृद्धिकर, सरगुण विशिष्ट, कटुपाक, रसायन एवं कण्डू (खुजली), विसर्प, क्रिमि कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वायुनाशक है।

(भावप्र० पूर्व० खं०)

रसेन्द्रसारसंग्रहके मतसे गन्धकशोधन प्रणाली—एक मट्टीके बरतनमें दूध और घृत रख कर कपड़ेसे बरतनका मुंह बांध दे और उसके ऊपरमें गन्धक रख एक दूसरे बरतनसे ढांक कर सन्धिस्थानमें लेप लगा दे। इसके बाद उसे मिट्टीमें गाड़ कर ऊपरमें अग्नि उत्ताप दे। गन्धक गल कर दूधमें टपकने लगता। इस विशुद्ध गन्धकको औषध में प्रयोग करना चाहिये। विशुद्ध गन्धकका गुण—रसायन, सुमधुर पाकमें कटु और उष्ण है, ...

मतका खण्डन किया है। तन्मात्र शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

गन्धतुलसी (सं० स्त्री०) सुगन्ध तुलसी, गोलाप तुलसी।

गन्धतूर्य (सं० क्लो०) गंधे हिंसास्थाने, युद्धक्षेत्रे आहन्यमानं तूर्यं। रणवाद्यविशेष, लड़ाईकी तूरी, बाजा। इसका पर्याय—रणतूर्य और महास्वन है।

गन्धतृण (सं० क्लो०) गन्धप्रधानं तृणं मध्यपदलो०। गन्धयुक्त तृणविशेष, रुसावास। इसके पर्याय—सुगन्ध, भूतृण, सुरस, सुरभि और सुखवास हैं। इसके गुण—यह तिक्त, सुगन्धि, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल, कफ, पित्त और भ्रान्तिनाशक है। (राजनि०)

गन्धतैल (सं० क्लो०) गन्धयुक्तस्य चन्दनस्य अग्नियोगेन जनितं तैलं, मध्यपदलो०। १ गन्धयुक्त तैलविशेष। इसको चन्दनका अतर भी कहते हैं।

"प्रदीपैः काञ्चनैस्तत्र गंधतैलावसेचितैः।" (भारत ८।८८ अ०)

२ सुश्रुतोक्त औषध और तैलविशेष। इसको पाकप्रणाली इस तरह है—कृष्णतिलको रात्रिके समय जलमें डुबा देना चाहिये एवं दिनमें सूर्यकी गर्मीसे सुखा कर गोदुग्धमें भावना देनी चाहिये। तीन रात्रि वा सात रात्रि इसी तरह करनेके बाद मधुमिश्रित जलमे भावना देते रहें। अनन्तर गोदुग्धकी भावनासे सुखा कर चूर्ण कर डालें और काकोल्यादिगण, यष्टिमधु, मञ्जिष्ठा, श्यामालता, कुड़धूना, जटामांसी, देवदारु, रक्तचन्दन और शतपुष्प इन सबका चूर्ण पूर्वोक्त तिलके चूर्णमें मिला दें। गुड़त्वक्, इलाची, तेजपात, नागकेशर, कर्पूर, कक्कोल, अगुरु, कुङ्कुम और लवंगको दुग्धमें पाक करें और उस दुग्धमें वह समस्त चूर्ण पाक कर तैल बाहर निकाल लें। उस तैलको फिरसे चतुर्गुण दुग्धमें पाक करें। इसके बाद इलायची, शालपर्णी, तेजपात, जीरक, तगरपादुका, लोध्र, शैलज, सैरेयक, शुष्क भूमिकुष्माण्ड, अनन्तमूल, मधुलिका और शृङ्गाटकको एकत्र पेषण कर उष्ण तैलके साथ थोड़ी आगमें पाक करें। आक्षेप, पक्षाघात, तालुशोष, अर्दित, सामक, वायुरोग, शिरोरोग, कर्णशूल, हनुग्रह, बधिरता, तिमिररोग और चीणता इन समस्त रोगोंमें खाने, मर्द्दन करने, सूंघने और भोजनमें इस तैलका प्रयोग करनेसे उक्त रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके सेवनसे ग्रीवा, स्कंध और वक्षस्थलकी वृद्धि होती है और मुख पद्मसा प्रफुल्ल और निश्वास सुगंधयुक्त होता है। इसीका नाम गंधतैल है।

(सुश्रु त चि० ४ अ०)

गन्धत्वच् (सं० क्लो०) गंधप्रधाना त्वक् यस्य, बहुव्री०। गंधद्रव्यविशेष, सुगंध वृक्षका छिलका, एलवालुक, एलवा।

गन्धदला (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तं दलं यस्याः, बहुव्री०। अजमोदा, अजवायनकी तरहका एक पेड़।

गन्धदारु (सं० क्लो०) गन्धप्रधानं दारु। चन्दन

गन्धद्रव्य (सं० क्लो०) गंधप्रधानं द्रव्यं। १ नागकेशर। २ तैल पाक होने पर जिन द्रव्योंको डाल कर औषधको सुगंधित करते हैं, वैद्यकशास्त्रमें उन्हींको गंधद्रव्य कहते हैं। इलायची, चन्दन, कुंकुम, अगुरु, मुरा, कक्कोल, जटामांसी, श्रीवासच्छद, चोरक, कर्पूर, शैलज, उशीर, कस्तूरी, नखी, रोहिषतृण, मोथा एवं लवङ्गादि गंध द्रव्य कहलाते हैं।

गन्धद्रावक (सं० क्लो०) गंधयुक्तं द्रावकं। प्लीहादि रोगनाशक औषधविशेष, एक प्रकारका अर्क। इसकी प्रस्तुतप्रणाली यों है—गंधक [illegible] जला कर उसका धूम सो[illegible]में जब वह कज्जलवर्ण हो जाश्रित किया जाता है। [illegible] जायगी। उसकी मात्रा एक इसके गुण—अग्निवीर्य, [illegible] मापा और नमक एक मापा [illegible], अग्निवृद्धिकर और [illegible]ना चाहिये। इसके सेवनसे [illegible] हैं रक्तस्राव, अतिशय है। औषध खानेसे ज्वर और अग्निमान्द्यादि रोगोंमें यह विशेष उपकारी है। परिमित द्रावक चौदह गुना जलमें मिला कर १बिन्दु सेवन करना चाहिये। यह अत्यन्त दाहकर होता है। बिना जलके सेवन करना अहितकर है।

गन्धद्रावकको अंगरेजी भाषामें Sulphuric Acid या Oil of Vetriol कहते हैं। यह कभी कभी आग्नेय पर्वतके निकट अल्प परिमाणमे मिलता है। यह गंधक और सोरासे प्रस्तुत किया जाता है। इसकी प्रस्तुत प्रणाली आत्रेयसंहितामें लिखी हुई प्रणालीसे बहुत कुछ मिलता जुलतो है।

गन्धद्विप (सं० पु०) गंधप्रधानो मदगंधयुक्तो द्विपः। मदगंधयुक्त हस्ती, उत्कृष्ट हाथी, मस्त हाथी।

"गंधद्विपस्य व मतङ्गमौघः।" (किरात १७।१८)

गन्धधारी (स० त्रि०) गन्धं गन्धयुक्त द्रव्यं धारयति धारि णिनि। १ जो गन्ध द्रव्यको धारण करता हो। (पु०) २ महादेव।

'अत्र वस्तु धयस्य गन्धधारी कपर्दिने।' (भारत अनु० १० अ०)

गन्धधूमज (स० पु०) गन्धस्य गन्धाद्यस्य धूमात् जायते गन्ध धूम जन ड। स्वादु नामक गन्धद्रव्य।

गन्धधूलि (स० स्त्री०) गन्धयुक्ता धूलिर्चूर्णं यस्या, बहुव्री०। कस्तूरी।

गन्धन (स० क्ली०) गन्ध ल्युट्। १ उत्साह, हिम्मत। २ प्रकाश, ज्योति, चमक। ३ हिंसा, वध। ४ सूचन। ५ तृणभेद, गन्धतृण।

'सा गन्धित धनयो।' (कल्प, धातुपाठ)

गन्धनकुल (स० पु०) गन्ध गन्धप्रधानो नकुल इव। छुछुन्दर।

गन्धनाकुली (स० स्त्री०) गन्धयुक्ता नाकुली। रास्ना विशेष, एक प्रकारका नकुलीकंद। (Ophioxyton Serpentinum) इसका पर्याय—महासुगन्धा, सुवहा, सर्पाक्षी, फणिहन्त्री, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, महाहिगन्धा, नकुलाढ्या और अहिलता है। यह तिक्त, कटु, उष्ण, त्रिदोषनाशक और विषघ्न माना गया है। (भावप्रकाश) २ चविका, चव्य नामको दवा। ३ कन्द विशेष।

गन्धनाम (स० पु०) गन्धेति पदयुक्त नाम यस्य, बहुव्री०। रक्ततुलसी, लाल तुलसी।

गन्धनामकर्म—जैनमतानुसार वह कर्म जिसके उदयसे शरीरमें सुगन्ध और दुर्गन्ध उत्पन्न हो। शुभगन्धनामकर्मसे सुगन्धित और अशुभगन्ध नामकर्मसे दुर्गन्धित शरीर हो जाता है। (सर्वार्थसिद्धि)

गन्धनाम्नी (स० स्त्री०) क्षुद्ररोगविशेष, एक साधारण रोग।

गन्धनालिका (स० स्त्री०) गन्धस्य गन्धज्ञानस्य नालिका इव। नासिका, नाक।

गन्धनाली (स० स्त्री०) गन्धस्य नालीव। नासिका।

गन्धनिलया (स० स्त्री०) गन्धस्य निलयो वासो यत्र, बहुव्री०। नवमल्लिका, चमेलीका फूल।

गन्धनिशा (स० स्त्री०) गन्धेन निशा हरिद्रा इव। गन्धपत्रा, शठीविशेष, कपूर कचूरी।

गन्धप (स० त्रि०) गन्ध पिवति, गन्ध-पा क। देवताविशेष, एक देवताका नाम।

'यामासुरा गन्धपा हविपाश।
नाना मन्त्राश मनोविदश॥" (भारत अनु० १८ अ०)

गन्धपत्र (स० क्ली०) गन्धयुक्त पत्र। तेजपात। इसका गुण वातनाशक, शीतल और अग्निवृद्धिकर है।

'गन्धाढ्या सौरभे बीज गन्धपत्र मधु सकम्।
गन्धपत्र वातहर शीतल वह्निवर्द्धनम्॥" (वैद्यक)

(पु०) गन्धयुक्त पत्र यस्य, बहुव्री०। २ श्वेततुलसी। ३ मरुवकवृक्ष, मरुवा। ४ बर्बर, बबूल। ५ नागरङ्ग, नारङ्गी। ६ बिल्व, बेल।

गन्धपत्रा (स० स्त्री०) गन्धयुक्त पत्र यस्या, बहुव्री० तत टाप्। शठीविशेष, कपूर कचरी। इसका पर्याय—स्थूला, तिक्तकटिका, वनजा, शठिका, वन्या, तवक्षीरी, एकपत्रिका, गन्धपीता, पलाशान्ता, गन्धाढ्या, गन्धपत्रिका, दीर्घपत्रा, गन्धनिशा, वेदमुख्या और सुपाकिनी।

इसका गुण—कटु, स्वादु, तीक्ष्ण, उष्ण, वात, कास, ज्वरनाशक तथा पित्तकोपवृद्धिकर है। (राजनिघण्ट)

गन्धपत्रिका (स० स्त्री०) गन्धपत्रा स्वार्थे कन् टाप्। १ गन्धपत्रा। २ अजमोदा। (राजनि०)

गन्धपत्री (स० स्त्री०) १ अश्वगन्धा, एक लता, पाठ। २ अश्वगन्धा, एक झाड़ी, असगन्ध। ३ अजमोदा।

गन्धपर्ण (स० क्ली०) गन्धयुक्त पर्णमस्य, बहुव्री०। गन्धपत्र, काकपुष्प।

गन्धपर्णी (स० स्त्री०) सप्तपर्णी।

गन्धपलाशिका (स० स्त्री०) गन्धयुक्त पलाशमस्या, बहुव्री० कप् टाप्। हरिद्रा, हल्दी।

गन्धपलाशी (स० स्त्री०) गन्धयुक्त पलाश यस्या, बहुव्री०। शठी, गन्धपत्रा, कपूरकचरी। गम्भ्यायचिन्तामणिके मतसे इसका गुण—कषाय, ग्राही, लघु, तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, सन्ननाशक, काश, व्रण, श्वास, शूल और हिचकीनाशक है।

गन्धपाषाण (स० पु०) गन्धयुक्त पाषाण इव। उप धातुविशेष, गन्धक।

'गन्धपाषाण चूर्णेन ... ॥
... ॥' (... पुराण)

छागसदनवृक्ष ।

गन्धपिण्डीर: (सं॰ पु॰) छागसदनवृक्ष ।

गन्धपिशाचिका (सं॰ स्त्री॰) गंधेन पिशाचान् किरति दूरीकरोति यद्वा गंधेन पिशाचान् कणाति हन्ति पिशाच-हा-ड । धूप । धूपगंधसे पिशाचगण दुःखित हो कर भाग जाते हैं । इस लिये धूपका नाम गंधपिशाचिका पड़ा है ।

गन्धपोता (सं॰ स्त्री॰) गन्धयुक्तं पोतं पत्रं यस्याः बहुव्री॰ टाप् । १ शठीविशेष, कपूर कचरी । २ गन्धपत्रा ।

गन्धपुष्प (सं॰ पु॰) गंधयुक्तं पुष्पं यस्य, बहुव्री॰ । १ वेतसवृक्ष, बेंतका पेड़ । २ अङ्कोटवृक्ष, अंकोल, अकोला । ३ बहुवारवृक्ष, बहुआर-लसोरा । ४ अशोक-वृक्ष । (क्ली॰) गंधश्च पुष्पञ्च, इतरेतरद्वन्द्व । ५ गंध और पुष्प ।

"ममापि गंधपुष्पाणां ..." (...)

६ गन्धयुक्तपुष्प, वह फूल जिसमें गंध हो ।

गन्धपुष्पक (सं॰ पु॰) गंधपुष्प संज्ञायां कन् । वेतस वृक्ष, वेंतका गाछ ।

गन्धपुष्पा (सं॰ स्त्री॰) गंधयुक्तं पुष्पं यस्याः, बहुव्री॰ । १ नीलीवृक्ष, नीलका पेड़ । २ केतकीवृक्ष । ३ गणिकारी वृक्ष, गनियारीका पेड़ ।

गन्धप्रिय (सं॰ त्रि॰) गंधः प्रियो यस्य, बहुव्री॰ । जिसको गंध अत्यन्त प्रिय हो ।

गन्धप्रियङ्गु (सं॰ स्त्री॰) प्रियङ्गुलता, फूलफेन ।

गन्धप्रियङ्गुका (सं॰ स्त्री॰) गंधप्रधाना प्रियङ्गुका । प्रियङ्गुविशेष । प्रियङ्गु देखो ।

गन्धफणिज्झक (सं॰ पु॰) गंधप्रधानः फणिज्झकः । रक्ततुलसीवृक्ष, लाल तुलसीका पेड़ ।

गन्धफल (सं॰ पु॰) गंधयुक्तं फलं यस्य, बहुव्री॰ । १ कपित्थवृक्ष, कैथका पेड़ । २ विल्ववृक्ष, वेलका पेड़ । ३ तेजःफलवृक्ष ।

गन्धफला (सं॰ स्त्री॰) गंधयुक्तं फलं यस्याः, बहुव्री॰ टाप् । १ प्रियङ्गुवृक्ष । २ मेथिका, मेथी । ३ विदारी । ४ शल्लकीवृक्ष, शलईका पेड़ ।

गन्धफली (सं॰ स्त्री॰) १ चम्पाकी कली । २ प्रियङ्गु ।

गन्धवणिक् (सं॰ पु॰) गंधस्य आमोदयुक्त द्रव्यस्य वणिक्, ६-तत् । वङ्गवासी जातिविशेष । इस जातिकी उत्पत्तिके सम्बन्धसे बहुतोंका मतभेद है । ये अपनेको वैश्यजाति-के अन्तर्गत और चांदसौदागरके वंशज बतलाते हैं । इन लोगोंमें कोई कोई पद्मपुराणोक्त गन्धराजको इस वंशका आदिपुरुष मानते हैं । आज कल के वैश्यकी नाईं ये यज्ञोपवीत धारण नहीं करते और शूद्रके जैसा एक मास मृत अशौच मानते हैं ।

"... गन्धपुत्राश्च ... ...
... प्रतिरुद्धिता ... ।"
(... पुराण, ... मल्लिनाथ)

अर्थात्—अम्बष्टके औरस और राजपूत-महिलाके गर्भसे गंधवणिकका जन्म है । गंध, चन्दन और धूपा-दिका क्रय, और विक्रय इनकी उपजीविका है ।

प्रवाद है कि कुब्जादासी कंसराजकी सभामें रहती तथा राजभवनमें फल, चन्दन प्रभृति विविध सुगंधि द्रव्य संग्रह करती थी । एक दिन जब श्रीकृष्णचन्द्रजी मथुरामें कंस-पुर जा रहे थे, मार्गमें ही उन्हें कुब्जादासीसे भेंट हुई । श्रीकृष्णने उस दासीको सुन्दर बना कर अपनी पटरानी बना ली । कुब्जागर्भप्रसूत बालक ही सबसे पहले गंध-द्रव्य विक्रय करते रहे तथा वही गंधवणिक्‌के आदि पिता ठहराये गये । इसके अतिरिक्त एक दूसरा प्रवाद है कि देवादिदेव शिवजीको दुर्गाके साथ विवाहके समय गंधद्रव्यका प्रयोजन पड़ा । इस लिये उन्होंने पहिले अपने कपालसे "देश" गंधवणिक्, बगलसे "दक्षिण" और पादसे "छतिश" इन चार "शत," नाभिसे "आँउत" मनुष्योंकी सृष्टि की ।

गन्धवणिक् जातियोंमें आँउताश्रम, छत्तिशाश्रम, देशा-श्रम और शताश्रम येही चार नामधेय श्रेणी वर्तमान हैं । इनके गोत्र आलम्यान, भरद्वाज, काश्यप, कृष्णात्रेय, मौप-गल्य, नृसिंह, राजर्षि, सावर्ण और शाण्डिल्य है । देशा-श्रमी गंधवणिकोंमें शाह, साधु, लाहा और खाँ एवं आँउताश्रमीमें दत्त, दे, धर, धार, कर नाग, प्रभृति पद-वी पायी जाती हैं । इस जातिमें बाल्यावस्थामें ही लड़-कीकी सादी होती है । वर तथा कन्या पक्षवालेकी सांसा-रिक अवस्थानुसार कन्यापण दिया जाता है । विक्रमपुरके गंधवणिक् उच्चवंशके हैं । इस लिये नीच घरमें कन्याको देनेसे वे अधिक रुपये लेते तथा पुत्रादिके विवाहमें अल्प पण देते हैं । जब लड़का विवाह करने आता है तो उसे

एक चम्पावृक्ष पर बैठना पड़ता है और लड़कीको एक चौकी या पीढ़ी पर बैठा कर सात बार वरका प्रदक्षिण कराते हैं। जहां चम्पावृक्ष नहीं रहता वहां उसकी डाली या उसकी तखता पर लड़कीको बैठाते हैं। विवाहके समय वर कन्या दोनोंको लाल पाट जरद रंगका वस्त्र पहनाया जाता है। लड़कीको दशदिन पर्यन्त वह वस्त्र धारण करना पड़ता है। इन लोगोंमें दो या बहुविवाहकी प्रथा प्रचलित नहीं है, किन्तु प्रथमा स्त्रीसे यदि सन्तान न होने पर द्वितीय बार विवाह करनेमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं है। विवाहच्छेद या विधवाविवाह पूर्णतः निषिद्ध है। किसी स्त्रीके असती वा परपुरुषगामी होने पर वह जाति और हिन्दु समाजसे बहिष्कृत की जाती एवं उसका स्वामी उसकी मूर्त्ति बनाकर दाहकार्य करते हैं और इसके लिये एक मिथ्या श्राद्ध भी होता है। इनके क्रियाकलापादि उच्चश्रेणीके हिन्दुके जैसे हैं। इन लोगोंमें अधिकांश वैष्णव, शाक्त और अल्प संख्यक शैव देखे जाते हैं वैशाखी पूर्णिमाके ये एक पात्रमें सिन्दूर लगा कर उसमें सब खर्वोंमें दण्डी बटखरा और हिसाबकी बही रख कर षोडशोपचारसे अपने अपने इष्ट देवका पूजन करते हैं। गन्धेश्वरी इनकी इष्टदेवी है। ब्राह्मणको बुलाकर गन्धेश्वरी मूर्त्तिकी पूजा कराते हैं। अनेक प्रकारके मसाले, चन्दनादि द्रव्य और भिन्न भिन्न प्रकारके पाथे और औषध विक्रय करना इनका प्रधान व्यवसाय है। अधीतविद्या नहीं होने पर भी ये कवि राजी औषधकी व्यवस्था दे सकते हैं। अल्प स्वल्प रोग होनेपर भी ये औषधका प्रयोग करते हैं। हिन्दुस्थानी भाषामें लोग इन्हें "पनसारी" कहा करते हैं। हरएक पनसारीकी दूकानमें प्रायः चारसौ तरहके औषध रखे जाते हैं। ये लोग अपने ही हाथोंसे बहुत तरहके पाच नादि प्रस्तुत कर विक्रय करते हैं।

गन्धवन्धा (सं० स्त्री०) गन्धस्य वधो ग्रहण यया, बहुव्री० टाप्। नासिका, नाक।

गन्धबन्धु (सं० पु०) गन्ध बध्नाति बन्ध उण्, यद्वा गन्धस्य बन्धुरिव। आम्रवृक्ष, आमका पेड़। (शब्दरत्ना०)

गन्धबहुल (सं० पु०) गन्धो बहुलो बहुलोऽस्य, बहुव्री०। सितार्जक, श्वेतपत्र क्षुद्रतुलसी, श्वेतार्जमला।

गन्धबहुल (सं० पु०) गन्धो बहुलो यस्य, बहुव्री०। गन्धशालि, गन्धयुक्त चावल।

गन्धबहुला (सं० स्त्री०) गन्धो बहुलो यस्याः, बहुव्री० ततः टाप्। गोरक्षीवृक्ष, एक प्रकारकी झाड़ी।

गन्धभद्रा (सं० स्त्री०) गन्धो भद्रः रोगनाशकी यस्याः, बहुव्री०। प्रसारणीलताविशेष, गन्धाली लता।

गन्धभाण्ड (सं० पु०) गन्धस्य भाण्ड इव। गर्दभाण्डवृक्ष, अमड़ाका पेड़। इसका पर्याय—नन्दिवृक्ष, ताम्रपाकी, फलपाकी, पीतक, गन्धमुण्ड और क्षिप्रपाकी है। (वैद्यकरत्नमाला)

गन्धभेदक (सं० पु०) १ कटक, एक प्रकार नमक। २ काचक, काला नमक। ३ लौह, लोहा। ४ तिलक, सिठा तिल।

गन्धमांसी (सं० स्त्री०) गन्धप्रधाना मांसी। जटामांसीविशेष। A kind of Indian spikenard। यह देखनेमें धूसरवर्ण और केशर जटाके सदृश है। इसका पर्याय—केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला और लघुमांसी है। इसका गुण तिक्त, शीतल, कफ, कण्ठरोग, रक्तपित्त, विष और ज्वरनाशक एवं कान्तिप्रद है। जटामांसी देखो।

गन्धमातृ (सं० स्त्री०) गन्धस्य माता जननी, ६ तत्। पृथ्वी।

गन्धमातृका (सं० स्त्री०) गन्धमातेति प्रसिद्ध वैद्यकद्रव्य, द्रव्यविशेष।

गन्धमाद (सं० पु०) १ श्रीरामचन्द्रजीकी सेनाका एक बंदर। (भागवत ६।१०।१८) राम और रावणकी लड़ाईमें इन्होंने अपना युद्धकौशलका अच्छा परिचय दिया था। २ श्वफल्कके औरससे गान्धिनीके गर्भमें उत्पन्न अक्रूरका भाई। (भागवत ९।२४।१८) ३ भ्रमर, भौंरा।

गन्धमादन (सं० पु० क्ली०) गन्धेन मादयति मद णिच् ल्यु। पर्वतविशेष। एक पहाड़का नाम। गन्धमादन शब्दका प्रयोग प्रायः पुल्लिङ्गमें ही देखा जाता है। "तत्रं वासरेण पूर्वे च च माल्यवद् गन्धमादनौ नीलनिषधायतौ।" (भागवत ५।१६।१०) किसी किसी स्थानमें क्लीवलिङ्गमें भी प्रयोग किया गया है। "अथ योऽवनं काश्च गन्धवद गन्धमादन।" (कुमार)

गोलाध्यायके मतमें गन्धमादन पर्वत रोमकपत्तनके

उत्तर केतुमाल और इलाहृतवर्ष के मध्यमें अवस्थित है। यह पर्वत नील और निषध तक विस्तृत है। विष्णुपुराणके मतमें यह सुमेरु पर्वतके दक्षिण भागमें अवस्थित है। इस पर्वतके ऊपर जम्बू नामका एक केतुवृक्ष है। इसके पूर्वमें चैत्ररथ, दक्षिणमें गन्धमादन, पश्चिममें वैभ्राज और उत्तरमें नंदन नामक चार मनोहर उपवन हैं। देवगण इन्हीं उपवनोंमें आनंदसे विचरण किया करते हैं। गन्धमादन किम्पुरुष, सिद्ध और चारणगणके आवासस्थान हैं। इस पर विद्याधर, विद्याधरी, किन्नर और किन्नरीगण सर्वदा विचरण करते हैं। (भारत वन १५८ अ०)

विष्णुपुराणका मत है कि इस पर्वतपर महाभद्र नामका एक वृहत् देवभोग्य सरोवर विद्यमान है।

"अरुणोद महाभद्रं असितोदं समानसम्।
सरांस्येतानि चत्वारि देवभोग्यानि सर्वदा॥" (विष्णुपुराण)

किन्तु सिद्धान्तशिरोमणिके "सरांस्यथैतेष्वरुणञ्च मानसं महाह्रदं श्वेतजलं यथाक्रमं" इस वचनसे स्पष्ट है कि गंधमादन पर्वत पर मानससरोवर है। एकही सरोवरके दो नाम रखे गये ऐसा स्वीकार कर विरोध भञ्जन करते हैं। मानससरोवर हिमालय पर्वके उत्तर तिव्वतके मध्यमें अवस्थित है। मानस देखो।

२ गंधमादन पर्वतस्थित एक वन। ३ गंधमादन पर्वतनिवासी एक वानर, जिसने रामचन्द्रजीको लड़ाईमें सहायता दी थी।

"गन्धमादनवासी च प्रथितो गंधमादनः।" (भारत वन २ अ०)

४ उड़ीसाके केउन्झर राज्यके अन्तर्गत एक पहाड़। यह अक्षा० २१° ३८' १२" उ० और देशा० ८५° ३२' ५६" पू० पर अवस्थित है। इसकी ऊंचाई ३४२८ फुट है।

५ भ्रमर, भौंरा। ६ गन्धक।

७ जैनमतानुसार सुमेरु पर्वतके आसपासके गजदन्तपर्वतोंमेंसे एक।

गन्धमादिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन मादयतेऽनया गन्धमादि-णिनि। १ मदिरा शराब। २ वन्भारु। ३ चोड़ा नामक गन्धद्रव्य। ४ लाक्षा, लाह, लाख।

गन्धमादिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन मादयति गन्ध-मद णिच् णिनि-ङीप्। १ लाक्षा, लाह। २ मुरा नामक गन्धद्रव्य।

गन्धमात्रिका (सं० स्त्री०) सुगन्धि द्रव्यविशेष।

गन्धमात्री (सं० स्त्री०) सुगन्धि द्रव्यविशेष।

गन्धमार्जार (सं० पु०) गन्धप्रधानो मार्जारः। खट्टाश, खटास, गंधविलाव।

गन्धमार्जारवीर्य (सं० क्ली०) गन्धमार्जाराण्डोद्भव कस्तूर्या। खटासी।

गन्धमालती (सं० स्त्री०) गन्धेन मालतीव। लताविशेष। इसका गुण गन्धकोकिल जैसा है।

"गन्धकोकिलया तुल्या विज्ञेया गंधमालती।" (भावप्र०)

गन्धमाला (सं० स्त्री०) क्षुद्ररोगभेद, एक तरहकी साधारण बीमारी। गंधमाली देखो।

गन्धमालिनी (सं० स्त्री०) १ गन्धमाला अस्त्यस्याः गन्धमाला इनि-ङीप्। मुरा नामक गन्धद्रव्य।

२ जैनमतानुसार विदेहक्षेत्रकी नदियोंमेंसे एक नदी।

गन्धमाल्य (सं० क्ली०) गन्धश्च माल्यञ्च इतरेतरद्वन्द्वः। गन्ध और माल्य।

"अथ यदि गंधमाल्यलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य गंधमाल्ये समुत्तिष्ठतः।" (छान्दोग्य उप ८।६।६)

गन्धमासी (सं० स्त्री०) जटामांसी।

गन्धमित्र—अयोध्या नगरके एक राजा। इनके पिताका नाम विजयसेन और माताका नाम विजयवती था। इनके पिता साधु होते समय इनके बड़े भाई जयसेनको राज्य दे गये थे और इनको युवराज बना गये थे। गंधमित्रने कर्मचारियों और प्रजावर्गोंको भड़का कर जयसेनको राज्य भ्रष्ट कर दिया था और खुद राजा बन गये थे। पीछे जयसेनने इन्हें फूलोंके साथ जहर सुंघा कर मार डाला था। (आराधनाकथाकोष)

गन्धमुखा (सं० स्त्री०) गन्धो मुखे यस्याः, बहुव्री०। १ छुछुन्दर। (त्रि०) २ जिसके मुंहमें गंध हो।

गन्धमुण्ड (सं० पु०) गन्धं मुण्डयति निवारयति। लताविशेष। गंधिया भांट। इसका पर्याय—नन्दीवृक्ष, ताम्रपाकी, फलपाकी, पीतक, गर्दभाण्ड और चिप्रपाकी हैं।

गन्धमूल (सं० पु०) गन्धप्रधानं मूलं यस्य, बहुव्री०। कुलञ्जनवृक्ष, अदरककी तरहका एक पौधा।

गन्धमूलक (सं० पु०) गन्धमूलएव गन्धमूल स्वार्थे कन्। १ शठी, कपूरकचूरी। २ कच्छुर, कचूर।

गन्धमूला (सं० स्त्री०) गन्धप्रधान मूलं यस्याः, बहुव्री०। १ शल्लकी, शलई। २ शठी। (राजनि०)

गन्धमूलिका (सं० स्त्री०) गन्धमूला कन् टाप्। १ माकन्दी, एक प्रकारका साग। २ शठी, कपूरकचूरी।

गन्धमूषिक (सं० पु०) गन्धप्रधानो मूषिकः। छुछुन्दर।

गन्धमूषी (सं० स्त्री०) गन्धप्रधाना मूषी। छुछुन्दर।

गन्धमृग (सं० पु०) गन्धप्रधानो मृगः। १ कस्तूरीमृग, वह मृग जिसमें कस्तूरी पाई जाय। २ खट्टाश।

गन्धमृत्युम्ब (सं० पु०) कदम्बवृक्ष।

गन्धमैथुन (सं० पु०) गन्धेन योनिगन्धग्रहणेन मैथुन मैथुनारम्भो यस्य, बहुव्री०। वृष, बैल।

गन्धमोजवाह (सं० पु०) श्वफल्कके पुत्रका नाम।

गन्धमोदन (सं० पु०) गन्धेन मोदयति आह्लादयति। गन्धक।

गन्धमोदिनी (सं० स्त्री०) १ चम्पककली। २ चम्पक पुष्पकली, चम्पा फूलकी कली।

गन्धमोहिनी (सं० स्त्री०) गन्धेन मोहयति मुह णिच् णिनि। चम्पककलिका, चम्पेकी कली।

गन्धयुक्ति (सं० स्त्री०) गन्धानां गन्धद्रव्याणां युक्तिः योग, ६ तत्। गन्धद्रव्यका योगविशेष। इसके सेवन करनेसे शुक्ल बाल कृष्णवर्ण हो जाते हैं। वृहत्संहितामें इसकी प्रस्तुत प्रणाली और गुण इस प्रकार वर्णित है— जिसके बाल सफेद हो जाते हैं, कपड़े और अलङ्कारादि उसे कुछ भी शोभा नहीं देते हैं। बालोंको शोभासे मनुष्य सुन्दर देख पड़ते हैं। यहां तक कि बालही मनुष्यों-के मनोहर और शोभाकर अलङ्कार हैं। किन्तु मनुष्यके यह अनुपम अलङ्कार सर्वदाके लिये नहीं रहते, थोड़े ही दिनोंमें कई एक कारणोंसे सफेद हो कर मनुष्योंको शोभाहीन बना देते हैं इस लिये अञ्जन और भूषणादि को नाईं बालोंको रक्षा करना एकान्त कर्तव्य है।

निम्न लौहपात्रमें कोदों धानका चावल पाक करके लौहचूर्णके साथ पेषण करें। अच्छी तरह पीसने-के बाद अल्प परिमाणमें शुक्त केशके ऊपर प्रक्षेप दें एवं भिंगे हुये पत्रसे बांध रखें। दो प्रहरके पश्चात् उक्त प्रक्षेप को अलग करके मस्तकमें आंवलेका लेप देकर पहलेके जैसा भिंगे हुए पत्रसे फिर भी ढांक दें। दो प्रहरके बाद लेपको सिरसे अच्छी तरह धो डालें। ऐसा करनेसे उजले बाल काले हो जाते हैं। इसके पश्चात् सुगन्ध तैलादि लगा कर स्नान करें और मनोहर गन्ध तथा धूप द्वारा मस्तकको भली भांति सुगन्धित कर लें जिससे इसमें किसी प्रकारकी दुर्गन्ध न रहे।

चम्पकगन्धि तैल—मञ्जिष्ठा, व्याघ्रनख, नखी, दाल-चीनी, कुठ, बोलनामक गन्धद्रव्य और चूर्ण इन सबको तैलके साथ मिला कर धूपमें गरम करना पड़ता है। इसीको चम्पकगन्धतैल कहते हैं।

गन्धद्रव्य प्रस्तुत करनेका नियम—शिलारस वा सिह्ला, बाला और तगरका समान भाग मिश्रित करने पर जो गन्धद्रव्य प्रस्तुत होता है उसीको कामोद्दीपक गन्ध कहते हैं। इस गन्धमें मरास, बकुल और हींगका धूप मिलाने से कटुक नामक द्रव्य बन जाता है। कटुकके साथ कुठ मिलानेसे पद्म, पद्मगन्धके साथ चन्दन योग करनेसे चम्पक, चम्पक गन्धके साथ धनियां, जायफल और दाल-चीनी मिलानेसे अतिमुक्त नामक गन्धद्रव्य प्रस्तुत होता है।

सुगन्धधूप प्रस्तुत करनेकी प्रणाली—शतपुष्पा, कुन्दुरुके चार भागोंका एक भाग, नखी और शिलारस अर्द्धभाग एवं चन्दन और प्रियङ्गुके चौथाई भागको गुड़ और नखके साथ मिलाने पर एक प्रकारका सुगन्धि धूप तैयार होता है। इसके सिवा गुग्गुल, बाला लाक्षा, मोथा, नखी और शर्करा इन सबोंको बराबर मिलानेसे एक प्रकार-का धूप बन जाता है। जटामांसी, बाला, शिलारस, नखी और चन्दन द्वारा पिण्ड करनेसे भी धूप तैयार होता है। हरीतकी, शङ्ख, घनद्रव और बालाके बराबर बरा-बर भागोंको मिलानेसे एक प्रकारका धूप बन जाता तथा उसमें गुड़ और उत्पल मिलानेसे दूसरे प्रकारका धूप तैयार होता है। दूसरे प्रकारके धूपोंके साथ शैलज और मोथा मिश्रित करनेसे एक तीसरे प्रकारका धूप बन जाता है। इन तीन प्रकारके द्रव्योंमें क्रमशः अन्तद्रव्य चौथाई भाग देनेसे एक उत्कृष्ट धूप तैयार होता है। शर्करा, शैलेय और मोथाके चार भाग, श्रीवासक और सज दो भाग, नखी और गुग्गुलके दो भागोंको कर्पूर-

चूर्णके साथ मिला कर मधु द्वारा पिण्ड प्रस्तुत करनेसे कोपचछद नामक धूप बनता है।

दालचीनी और उशीरके पत्तोंके साथ इनका चतुर्थांश परिमाण छोटी इलायची मिला कर चूर्ण करें, इसके साथ अल्पपरिमाण मृगनाभि और कर्पूर मिलानेसे वसन्त नामक अत्यन्त उत्कृष्ट गंधचूर्ण तैयार होता है। पत्र (पत्र), वाला, शैलेय और सर्जुर, उशीर, नागपुष्प, व्याघ्र नख और प्रियङ्गु, अगुरु, दमनक, नख और तगर धनियाँ, कर्पूर, चोर और चन्दन इन चार चार पदार्थोंमें एक एक भाग लेता है, इनके समभागोंमें [illegible] प्रकारका गंधचूर्ण प्रस्तुत होगा। इनके प्रत्येक [illegible] को नाम गंधार्णव है। यह गंधद्रव्य १७४७२० भागोंमें विभक्त हो सकता है। समस्त गंधद्रव्योंमें नखी, अगर और शिलारस मिलाना पड़ता है। इस जाति, कर्पूर और मृगनाभि द्वारा सुगंधित तथा गुड़ और नखी द्वारा धूपित करना होता है, इसीका नाम मदगोत्कट है। इस मिश्रित पदार्थ को जातिफल, मृगनाभि और कर्पूर द्वारा सुगंधित कर आम्रमधु द्वारा सिक्त तथा इच्छानुसार चार भागोंमें बांटनेसे बहुत तरहके पारिजात पुष्प गंध उत्पन्न होते हैं। इसमें मञ्जिष्ठ और व्याघ्रनख मिला कर जितना परिमाण द्रव्य हो, उसमें उतनाही परिमाण वाला और दालचीनी मिला दें, इसके बाद इन समस्त द्रव्यों द्वारा स्नानजल प्रस्तुत करें।

लोध, उशीर, तगरपादुका, अगुरु, मोथा, प्रियङ्गु, घन और पथ्या इन समस्त द्रव्योंको नवकोष्ठ कच्छपुटमें तीन तीन द्रव्योंको मत्स्यरूपमें उद्धार कर चन्दन और शिलारस दो भाग, अर्द्धपरिमाण शुक्ति, चतुर्थ भाग शतपुष्पा, कटु, गुग्गुल और गुड़ दे कर धूपित करनेसे चौरासी प्रकारके केशरगंध प्रस्तुत होते हैं। चन्दनको चूर्णसंयुक्त गोमूत्रमें दन्तकाष्ठ ७ दिन भिगा रखनेके बाद उसका गंधजलमें निक्षेप करें। इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, मधु, मिर्च, नागपुष्प और कुट इन समस्त द्रव्योंको मिलाकर निर्मल जलमें कुछ काल तक रखनेके बाद गंधजल प्रस्तुत हो जाता है। इसके बाद जातिफल, तेजपत्र, इलायची और कर्पूरको यथाक्रम चार, दो, एक और तीन भागों द्वारा अवचूर्णित कर [illegible] मिलानेसे [illegible] है। [illegible] अधिक [illegible] जाता है। [illegible]

गन्धमूलिका (सं० स्त्री०) [illegible] शिलाजतु, [illegible]

गन्धमादन (सं० पु०) [illegible]

[illegible]

गन्धमादनी (सं० स्त्री०) [illegible]

गन्धराज (सं० पु०) [illegible]

गन्धशाली (सं० स्त्री०) [illegible] नामक गन्धद्रव्य।

गन्धराजतैल (सं० क्ली०) [illegible] तैल जिसके लेपनेसे आरोग्य प्राप्त रहता है।

गन्धफला (सं० स्त्री०) रक्तशिरा, कालशिरा, एक प्रकारकी लता। इसका पर्याय—मदयन्ती, मोदयन्ती और सरस्वती है।

गन्धर्व (सं० पु०) [illegible] गीतिरूपा या नाचः [illegible] १ घोटक, घोड़ा।

"[illegible]" (भारत [illegible])

२ मृगविशेष, कस्तूरीमृग। ३ [illegible]। ([illegible]) अमरके टीकाकार रायमुकुटका कथन है कि

प्राणीकी मृत्यु होने पर जब तक दूसरा शरीर प्राप्त नहीं होता है, तब तक वह एक सूक्ष्म शरीर धारण कर यातना अनुभव करते हैं, उनकी इस अवस्थाको अन्तराभवसत्त्व कहते हैं।

टीकाकार रमानाथके मतसे अन्तराभवसत्त्वका अर्थ गुप्त प्राणी है। उन्होंने उदाहरण स्वरूप विराटपर्वका 'गन्धर्वा यथा मम' यह वाक्य उद्धृत किया है।

४ ग्रहविशेष, एक प्रकारका ग्रह, जो समय पाकर मनुष्यके शरीरमें प्रवेश कर अनेक तरहकी अशान्ति उत्पादन करता है। आर्य चिकित्सक सुश्रुतका कथन है कि वद्ध क्षत और आतुर रोगीको निशाचरोंके हाथसे रक्षा करनेके लिये सर्वदा यत्नवान् होवें। चाहे रोगी क्षत हो अथवा न हो किसी तरह अशुचि होनेसे ही ग्रहगण हिंसाभिलाष पूर्ण करने अथवा पूजा पानेकी आशासे रोगीके शरीरमें प्रवेश कर उसे अनेक तरहकी कष्ट देते हैं। यथानियमसे उनकी पूजा अथवा उपयुक्त औषध नहीं देनेसे वे रोगीको मार डालते हैं।

इस प्रकारके ग्रहोंकी संख्या बहुत है। किन्तु प्रधानत ये आठ भागोंमें विभक्त किये जा सकते हैं। यथा—देव, असुर, गन्धर्व, यक्ष, पितृ, रक्ष, भुजङ्ग और पिशाच। इनके आवेश होने पर रोगी भूत भविष्यत्‌का हाल मालूम कर सकता है। उस समय यदि रोगीसे भूत और भविष्यत्‌की घटना पूछी जाय तो वह साफ साफ कह देता है। उस समय रोगीकी सहिष्णुता विलुप्त हो जाती है। जो सब कार्य मनुष्य बुद्धिसे अगम्य है, कभी भी उनमें ये कार्य सम्भव नहीं हो सकते उन्हें रोगी अनायास ही अनुष्ठान करके दर्शकोंको विस्मयापन्न और आत्मीय स्वजनों को भयविह्वल तथा शोककातर बना देता है। आधुनिक वैज्ञानिक जो कुछ कहें लेकिन प्राचीन विद्वान इस अवस्थाको भूत या ग्रहावेश कहते एव ग्रहपूजादि करके रोगीको प्रकृतिस्थ कर देते थे।

गन्धर्व ग्रहके आविष्ट होने पर रोगीका मन सदा हृष्ट रहता और नदीतीर वा निर्जन वनमें भ्रमण करने की यथेष्ट अभिलाष उनी रहती है। इस अवस्थामें रोगी गन्ध, माल्य और गीत बहुत पसन्द करता तथा कभी नाचता और कभी हसता है।

दर्पणमें छाया वा प्रतिबिम्ब, प्राणीके देहमें शीतोष्ण और सूर्यकिरण एव देहमें जीव जिस प्रकार अलक्षित हो कर प्रवेश हो जाते हैं, उसी प्रकार गन्धर्वग्रह भी अलक्षित होकर मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करता है।

इसकी शान्तिके लिये नियमित जप और होम प्रभृति दैवक्रियायें करनी चाहिये। रक्तवर्ण गन्धमाल्य, मधु, घृत अनेक प्रकारके खाद्य, वस्त्र, मद्य, मांस, रुधिर और दुग्ध प्रभृति प्रदान करना उचित है।

इतने करने पर भी यदि रोगीको शान्ति न मिले तो औषध प्रयोग करना चाहिये। छागल, भालु, शल्यक और उष्ट्र इनके चमडे और रोमकी हींग एव छागमूत्रमें मिला कर धूम प्रयोग करनेसे बलवान् ग्रहसे रोगी छुटकारा पा सकता है।

गोमय, नकुल, विडाल और भालुकका पित्त एकत्र कर गजपिप्पलीके मूल, त्रिकटु आमलकी और सरसों देकर भावित करें। इसके नस्य लेने और सेवन करनेसे ग्रहकी शान्ति होती है।

नटकरञ्ज, त्रिकटु, सोणा, वेलमूल, हरिद्रा और दारुहरिद्राको एक साथ लेकर इसकी वत्ती बनावे। पित्तके सहयोगसे इसका अञ्जन सेवन करनेसे ग्रहकी शान्ति होती है।

ये सब औषध या अन्य कोई चिकित्सा देवग्रहमें अयुक्तरूपसे प्रयोग नहीं करनी चाहिये। पिशाचके अतिरिक्त किसी दूसरे ग्रहमें कोई प्रतिकूल आचरण करना निषिद्ध है करनेसे ग्रह क्रुद्ध होकर वैद्य और रोगी दोनों को ही नाश कर डालता है। (सुश्रुत उत्तर० ६० अ)

गन्धर्वग्रहकी कथा वैदिक उपन्यासमें भी वर्णित है। वृहदारण्यक उपनिषद्‌में लिखा है कि किसी समय बहुतसे मुनिकुमार अध्ययनके लिये मद्रदेशको गये थे। विश्रामके लिये वे कपिगोत्रसम्भव पतञ्जलके घरमें जा पहुंचे। वहां उन्होंने उनकी नन्दिनीको गन्धर्वग्रहके वशीभूत देखा।

'मद्रेषु चरका पर्यव्रजाम ते पतञ्चलस्य काप्यस्य गृहानैम,
तस्यासीद् दुहिता गन्धर्व गृहीता।' (वृहदारण्यक, ७ ब्राह्मण)

५ एरण्ड रेंडी।

"गन्धर्व तैलमिश्रां हरीतकी सोऽश्नाति नित्यं।" (भावप्रकाश)

६ देवयोनिविशेष, स्वर्गगायक। ये देवताओंको

सभामें गान, वाद्य और नाट्याभिनय किया करते हैं। ये देखनेमें बहुत सुन्दर होते हैं। स्वर्गलोकमें इनके समान दूसरी कोई जाति रूपवती नहीं है। शब्दार्थ-चिन्तामणिके मतसे गन्धर्व दो भागोंमें विभक्त हैं—दिव्य और मर्त्य। जो मनुष्य इस कल्पके मध्य पुण्यबलसे गन्धर्वत्व प्राप्त होकर गन्धर्व समाजभुक्त हुए हैं उन्हीं-को मर्त्य और जो इस कल्पके आदिसे गन्धर्व हैं उनको दिव्य गन्धर्व कहते हैं। ऋग्वेदमें भी दिव्यगंधर्वका उल्लेख पाया जाता है।

"विश्वावसुरभि तन्नो गृणातु दिव्यो गंधर्वः" (ऋक् १०।१३९।५)

वह्निपुराणके मतसे दिव्य गंधर्व फिर ग्यारह भागोंमें विभक्त हैं—१ अभ्राज, २ अङ्गारि, ३ रम्भारि, ४ सूर्य-वर्चा, ५ कृधु, ६ हस्त, सुहस्त, ८ मूर्द्धवान्, ९ महायशा, १० विश्वावसु और ११ कृशानु। जटाधरने आठ प्रधान गंधर्वके नाम उल्लेख कर गंधर्व-वंशका परिचय दिया है। यथा—हाहा, हूहू, चित्ररथ, हंस, विश्वावसु, गोमायु, तुम्बुरु और नन्दि। ये ही गंधर्वनगरमें गण्यमान्य हैं तथा इन्हीके नाम पर एक एक वंश प्रतिष्ठित है। अथर्ववेदमें ६३३३ गंधर्वोंका उल्लेख है।

मनुष्यके जैसे गन्धर्व भी दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं—मौनेय और प्राधेय। मुनि और प्रधा नामके कश्यप-ऋषिकी दो पत्नी थीं। दक्षकन्या मुनिके गर्भसे १६ गन्धर्व उत्पन्न हुए। यथा—१ भीमसेन, २ उग्रसेन, ३ सुपर्ण, ४ वरुण, ५ गोपति, ६ धृतराष्ट्र, ७ सूर्यवर्चा, ८ अर्कपर्ण, ९ पर्जन्य, १० कलि, ११ प्रयुत, १२ भीम, १३ चित्ररथ, १४ सर्वविद्वशी, १५ शालिशिरा और १६ नारद। इन्हींको मौनेय कहते हैं। प्रधाके गर्भसे १० गन्धर्व हुए--१ सिद्ध, २ पूर्ण, ३ बर्ही, ४ पूर्णायु, ५ ब्रह्मचारी, ६ रतिगुण, ७ सुपर्ण ८ विश्वावसु, ९ भानु और १० चन्द्र। येही प्राधेय कहलाये।

"पश्यन्तो वां प्रमुञ्चन्ता गंधर्वास्तत्र तत्क्षणात्।
पिबन्तो जज्ञिरे वाचं गंधर्वास्तेन ते द्विज।" (विष्णुपुराण १।५।५०)

ब्रह्मासे तत्क्षणात् गंधर्वोंकी उत्पत्ति हुई। यह गो (वाक्य वा गीत) धमन अर्थात् उच्चारण वा गान करते करते जन्मे इस लिये यह गन्धर्व नामसे अभिहित हुए हैं। किसी किसीका मत है कि ब्रह्माकी कान्तिसे इस जाति-की उत्पत्ति हुई। ये रूप दान करते हैं।

हरिवंशके मतसे स्वारोचिष मन्वन्तरमें अरिष्टाके गर्भसे गन्धर्वोंने जन्मग्रहण किया है। (हरिवंश ३ अध्याय)

विष्णुपुराणमें लिखा है कि गन्धर्वगण पाताल जा कर नागोंको पराम्त करके उनके धनरत्नादि बलपूर्वक छीन ले आये। नागगणने विष्णुसे सहायता मांगी। विष्णु-भगवान्ने यह बात स्वीकार किया कि वे पुरुकुत्सरूपसे उन लोगोंको सहायता कर सकते हैं। नागने अपनी बहन नर्मदाको विष्णुके निकट भेजा। नर्मदा पुरुकुत्सको साथ ले कर पाताल आई और पुरुकुत्ससे पातालस्थ गंध-र्वोंका विनाश हुआ।

(त्रि०) ७ गायक, जो गान कर सकता हो। ८ रश्मिधारक, जो रश्मि या किरण धारण करता हो, चन्द्र, सूर्य प्रभृति। ९ द्वीपविशेष।

"नारदोऽन्या धीमान् गंधर्वस्तु च आदृतः।" (ब्रह्माण्डपुराण)

१० दिन, दिवस। "तस्माद्धानीतस्य धर्मः गंधर्वो मारुत कुलाः।"

(भागवत ४।२९।२१)

"मदनं च गंधर्वाः सूतमागधवन्दिनः।
गायन्ति चोत्तमश्लोकचरितान्यद्भुतानि च॥" (भाग० १।११।२०)

११ मरोराधिष्ठातृदेवताविशेष, मरोरके अधिष्ठातृ एक देवताका नाम। इन्होंने अविवाहिता कामिनोके स्वामिसम्भोगके पहले उसका कुछ विकसितयौवन उप-भोग किया था। ऋग्वेदमें लिखा है कि रमणियोंको पहले चन्द्रने उसके बाद गंधर्वने और तब अग्निने उप-भोग किया। इन्होंके उपभोग शेष होने पर मनुष्य-पतिने उन्हें ग्रहण किया।

"सोमः प्रथमो विविदे गंधर्वो विविदे।
उत्तरः तृतीयोऽग्निष्टेपतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।" (ऋक् १०।८५।४०)

१२ प्राणवायु। "पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति तां गंधर्वोऽवदद्-गर्भे अन्तः।" (ऋक् १०।१७७।२)

"गां शब्दात् धारयतीति गंधर्वः प्राणवायु" (सायण)

१३ महाभारतवर्णित भारतके उत्तरवासी जाति-विशेष। १४ श्वेतकरवीर, सफेद कनेर। १५ श्वेत एरण्ड, सफेद रेंड़ी।

१६ जैनमतानुसार व्यन्तर देवोंके आठ कुल होते हैं,—किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच। ये गन्धर्वदेव तीर्थङ्करोंके जन्म-कल्याणमें नृत्य, वादित्रादि कर आनन्दित होते हैं।

गन्धर्वखण्ड (सं० क्लो०) गन्धर्वनामक खण्ड, मध्यपदलो०। भारतवर्षके अन्तर्गत एक प्रदेश गन्धार।

गन्धर्वगढ—बम्बई प्रदेशके बेलगाम् जिलेके अन्तर्गत एक उपविभाग। इस उपविभागमें बेलगामसे प्राय २१ मील पश्चिम सह्याद्रि पर्वतके पाश्व शाखाके समतल क्षेत्रसे ४०० फुट ऊंचे पर गन्धर्वगढ गिरिदुर्ग है। यह दुर्ग १००० फुट चौरस भूमिके ऊपर निर्मित है। यह १७२४ ई०को सावन्तवाडीके राजा फोन्द सामन्तके द्वितीय पुत्र नागसामन्तसे बनाया गया है। १७७८ ई०में कोल्हापुरके राजाने गन्धर्वगढको अपने अधिकारमें कर लिया, लेकिन १७८२ ई०में सिन्धियाराजकी सहायतासे गन्धर्वगड फिर भी सामन्तवाडीके दखलमें आ गया। १७८७ ई०में नैसर्गी सर्दारने अपने स्वामी कोल्हापुर राजाके विरुद्ध युद्ध कर गन्धर्वगढ और दूसरे दूसरे स्थानों पर अपना दखल जमाया। किन्तु थोडे समयके बाद ही राजाने सर्दारको भगा कर गन्धर्वगढ अपने अधिकारमें लाया।

गन्धर्वगृहीत (सं० त्रि०) गन्धर्वेण गृहीत, ३-तत्। जिसको गन्धर्वने ग्रहण किया हो। गन्धर्व देखो।

गन्धर्वग्रह (सं० पु०) शरीरप्रवेशकारी उपदेवविशेष, एक प्रकारका ग्रह जो भूत प्रेतकी नाईं मनुष्यके शरीरमें प्रविष्ट कर जाता है। गन्धर्व देखो।

गन्धर्वतीर्थ (सं० पु०) तीर्थविशेष, एक तीर्थका नाम। (भारत शल्य ३ अ०)

गन्धर्वतैल (सं० क्लो०) एरण्डकतैल। रेंडीका तेल।

गन्धर्वदत्त—पटनाके एक प्राचीन राजा, ये जैनमतावलम्बी था।

गन्धर्वदत्ता—जैनमतानुसार रत्नद्वीपके मनुजोदय नगरके राजा गरुडवेगकी पुत्री। यह दि०जैनधर्ममें अचल श्रद्धा रखती थी। एक दिन वह जिनेन्द्रकी पूजा करके फूलोंका हार पिताके पास लाई। उसे यौवनवती देख कर गरुडवेगको बडी चिन्ता हुई। विपुलमति नामक चारणमुनिसे मालूम हुआ कि, भरतक्षेत्रमें हेमाङ्गद देशके राजाके पुत्रसे इसका वीणा स्वयम्वरमें विवाह होगा। इस पर जिनदत्त नामके एक सेठने भरतक्षेत्रमें इस स्वयम्वरका आयोजन किया। स्वयम्वरमें गन्धर्वदत्ताने वीणा बजानेमें सब राजकुमारोंको पराजित कर दिया। आखिर सत्यधरके पुत्र जीवन्धरकी बारी आई। इन्होंने उसे पराजित कर दिया। इस पर काष्ठाङ्गारके पुत्रोंने ईर्षासे गन्धर्वदत्ताको हरण करनेका उद्यम किया। जीवन्धर कुमारको खबर लगते ही उन्होंने गन्धगज (गन्धजातके हाथी) पर सवार हो कर उन दुष्टोंके उद्यमको नष्ट भ्रष्ट कर दिया। कुमारकी वीरताको देख कर गन्धर्वदत्ता तो फूली न समाई। तुरत ही विवाह हो गया, और दोनों सुखसे रहने लगे। जीवन्धर देखो।

(उत्तरपुराण ६६२ पृ०)

२ जैनोंके २२ वें तीर्थङ्कर नेमिनाथके भाई वासुदेवकी एक पत्नी।

गन्धर्वनगर (सं० क्लो०) गन्धर्वाणां नगर, ६-तत्। १ गगन मण्डलमें उदित अनिष्टसूचक पुरविशेष। खपुर देखो।

२ मानससरोवरका निकटवर्ती एक नगर। गन्धर्वगण इसकी देखभाल करते हैं, इस लिये यह गन्धर्वनगरसे अभिहित है। महाभारतमें लिखा है।—महापराक्रमशाली अर्जुनने गन्धर्वरक्षित गन्धर्वनगरको जय कर तित्तिर, कल्माष और मण्डूक नामके अश्वरत्न प्राप्त किये थे। (भारत २।२७ अध्याय)

३ विजयपर्वतकी उत्तर श्रेणीका एक नगर। ४ मिथ्या भ्रम, संसारकी उपमा गन्धर्वनगरसे दी जाती है।

गन्धर्वभूषण (सं० क्लो०) सिन्दूर।

गन्धर्वराज-रागरत्नाकर नामक संस्कृत सङ्गीतग्रन्थप्रणेता।

गन्धर्वलोक (सं० पु०) गन्धर्वाणां लोक आवासस्थान, ६ तत्। गुह्यक लोकके ऊपर और विद्याधर लोकके नीचे अवस्थित एक स्थान। इस स्थान पर देवगायक गन्धर्वगण वास करते हैं। काशीखण्डका मत है कि जो गीतशास्त्राभिज्ञ गान करके राजाओंको खुश कर सकते एवं धन लोभसे मोहित हो कर धनशाली मानवगणको गान द्वारा तुष्ट करके जो वस्त्र प्रभृति उनसे दान पाते हैं उन्हें वे ब्राह्मणोंको देते हैं और गानमें जिनको अतिशय प्रीति है एवं नाट्यशास्त्रमें भी विशेष पारदर्शिता है, वे ही गन्धर्वलोकको प्राप्त कर परम सुखसे कालयापन करते हैं। (काशीख०)

गन्धर्ववधू (सं० स्त्री०) गन्धर्वस्य वधूरिव। १ शठी, कपूर कचूरी। २ चीड़ा नामक गन्धद्रव्य।

गन्धर्वविद्या (सं० स्त्री०) गन्धर्वाणां विद्या, ६-तत्। सङ्गीत, गानविद्या।

गन्धर्वविवाह (सं० पु०) गन्धर्वमतानुसारी विवाहः मध्यपदलो०। आठ प्रकारके विवाहोंके अन्तर्गत एक प्रकारका विवाह। कन्या और वरके अभिप्रायसे प्रतिज्ञापाशमें बद्ध हो कर जो विवाह होता है उसीको गान्धर्व-विवाह कहते हैं। गान्धर्व देखो,

गन्धर्ववेद (सं० पु०) गन्धर्वाणां वेदः, ६-तत्। सङ्गीतके मूलग्रन्थ सामवेदके उप-वेदविशेष। शौनकोक्त चरणव्यूहके मतसे आयुर्वेद गन्धर्ववेदका उपवेद, यजुर्वेदका धनुर्वेद, सामवेदका गन्धर्ववेद और अथर्वका उपवेद शस्त्र शास्त्र हैं।

गन्धर्वशाखा (सं० स्त्री०) भार्गी गुल्म।

गन्धर्वसेन—हिन्दीके एक कवि। इनकी कविताका निदर्शन नीचे देते हैं—

"दियो तुमको विरचि अटल राज्य छत्रपति विक्रमनरेश।
राज समाजनमें जग न करी कोऊ भुव गह दरप शेष॥
तीनों तुही और न हो भुव सम्पन्न क्ष।
सकल विद्या गुणनिधान दाता विधिसों काढत अग कलेश।
गन्धर्व सेन प्रभु ऐसो दर दुःख भञ्जन।
शकबंध रच्यो करतार ज्यों सुरेश॥"

गन्धर्वसेना—पटनाके राजा गन्धर्वदत्तकी पुत्री। यह गायनविद्यामें बड़ी ही निपुणा थी। इनके गाने और वीणा बजानेके सामने बड़े बड़े गायक हार मानते थे। इनकी प्रतिज्ञा थी कि, "जो वीणा बजानेमें मुझे परास्त कर देगा, उसीके साथ मैं विवाह करूंगी।" न इनको कोई जीत सका और न व्याह ही हुआ। महलके ऊपरसे अचानक पैर फिसल जानेसे इनकी मृत्यु हुई थी। (आराधनाकथाकोष)

गन्धर्वहस्त (सं० पु०) गन्धर्वस्य मृगविशेषस्य हस्तः तुल्यस्य, बहुव्रो०। एरण्डवृक्ष, रेंड़ीका पेड़।

गन्धर्वहस्तक (सं० पु०) गन्धर्वस्य हस्तः पाद इव पत्रं यस्य। एरण्डवृक्ष, रेंड़ीका पेड़। सुश्रुतका मत है कि इससे एक प्रकारका लवण उत्पन्न होता है।

गन्धर्वा (सं० स्त्री०) कोकिल, कोयल।

गन्धर्वी (सं० स्त्री०) गन्धर्व जातित्वात् ङीष्। १ गन्धर्वजातीय स्त्री। गन्धर्वाणां पत्नी गन्धर्व-ङीष्। २ गन्धर्वकी पत्नी, गन्धर्वकी विवाहिता स्त्री। ३ सुरभीकी कन्या। ४ अश्वजातीय जननी, घोड़े सबोंकी माता।

गन्धलता (सं० स्त्री०) गन्धयुक्ता लता, प्रियङ्गु।

गन्धलोलुपा (सं० स्त्री०) गन्धेन लोलुपा, ३-तत्। मधुमक्षिका, मधुमक्खी।

गन्धवत् (सं० त्रि०) गन्धो विद्यते ऽस्य गन्ध-मतुप्, मस्य वः। गन्धयुक्त, जिसमें महक हो।

"गन्धवद्रुधिरचन्दनोक्षिता।" (रघु०)

गन्धवती (सं० स्त्री०) गन्धवत्-ङीष्। १ पृथिवी। २ मत्स्यगन्धा, व्यासकी माता, इनका दूसरा नाम सत्यवती है। महाभारतमें लिखा है कि जालिककी कन्या मत्स्यगन्धा अपने पिताके आदेशसे यात्रियोंको नौका द्वारा नदी पार करती थी। एक दिन जब पराशर मुनि पार हो रहे थे तो वे उस कन्याको देख कर मोहित हो उठे एवं मत्स्यगन्धाके शरीरकी दुर्गन्धको न सहकर उसे सुगन्धयुक्ता बना दिया। उसी दिनसे इसका नाम गन्धवती पड़ा है। (भारत १।६३।७८) ३ सुरा, शराब, मदिरा। ४ नवमल्लिका, चमेलीका फूल। ५ मुरा नामक गन्धद्रव्य। ६ वायुपुरी, यह वरुणपुरीके उत्तरभागमें अवस्थित है।

"इमां गन्धवतीं रम्यां पुरीं वायोर्विलोकय
वायव्यां दिशि भार्गी महाभागानिबोध द्विज॥" (काशी० १३।७०)

७ गङ्गा।

"गङ्गा गन्धवती गौरी गन्धर्वनगरप्रिया।" (काशी० २९।४८)

८ पुरी जिलाके अन्तर्गत पुरुषोत्तम भुवनेश्वरके निकट प्रवाहित एक क्षुद्र नदी। इस नदीके बहुत स्थानोंमें जल नहीं रहता है, सब समय मनुष्य पैदल पार होते है। पहले इसकी चौड़ाई बहुत अधिक थी। नदीके गर्भ पर हिन्दूराज निर्मित अठारहनालाओंके भग्नावशेष आज भी देखे जाते हैं। छोटी होने पर भी यह नदी हिन्दुओंके पवित्र तीर्थमें गण्य है। एकाम्रपुराणमें लिखा है।

"पुरासौ भगवान् रुद्रो पिबन्नी भूतभावन।
भूतनाथ द्वारोत्तर चक्रे गन्धवतीं नदीम्॥...
स्वर्णकूटगिरेः पृष्ठे सरिदेषा सनातनी।
प्रक्षालयन्ती गङ्गा शिरोपार्श्वनतनूपरा॥"

दक्षिणस्याम् मान्धा शैलराजात् परेतरात्।

नाम्ना गन्धवती ख्याता याति गङ्गा सरिद्वरा ॥" १० अ०।

स्वयं भगवान् रुद्रने भूतगणोंके मङ्गल विधानके लिये सर्व पापहारिणी कीर्ति प्रदायिनी प्रकृत्स्वरूपिणी गन्धवती नामकी गङ्गाको स्वर्णकूटमें उत्पादन किया था।

कपिलसंहिताका मत है कि रुद्रके जटाकलापमें भ्रम माणा गङ्गाको भगीरथ लाये थे। वही भ्रममाणा त्रिकोटि कुलतारिणी गङ्गासे हिमालय आदिगङ्गाको निःसारित किया, मुनिगण उस आदि गङ्गाको ही गन्धवती कहते हैं। वही गंधवती स्वर्णकूटाचलमें प्रवाहित होती है।

"जटाकलापे रुद्रस्य भ्रममाणा महातपा।
नीता भगीरथेनैव गङ्गा त्रैलोक्यपावनी ॥ ४८ ॥
तां चैवमध्ये हिमवान् रुरुधे....
आद्या गङ्गां विदुस्तान् त्रिकोटिकुलतारिणीम्।
पुण्यां गंधवतीनाम्ना सुगन्धी प्रवर्षा .... ॥"

(कपिलसंहिता १० अ०)

शिवपुराणके मतसे दक्षिणसमुद्रके निकट विन्ध्य पादसे यह गंधवती नदी निकली है।

"श्रीमद्दुत्तमके संर्वे गन्धिकाख्यसन्निधौ।
....
.... गंधवती स्मृता॥ (उमासंहिता ४६ अ०)

गंधवधू (सं० स्त्री०) गंधयुक्ता वधूरिव। १ शठी, कपूर कचूरी। २ चीडा नामक गंधद्रव्य।

गन्धबन्धु (सं० पु०) गंधस्य बन्धुरिव। आम्रवृक्ष, आम का पेड।

गन्धवल्कल (सं० क्ली०) गंधो वल्कलोऽस्य, बहुव्री०। त्वक्, दालचीनी।

गन्धवल्लरी (सं० स्त्री०) गंधयुक्ता वल्लरी। लताविशेष, सहदेवी।

गन्धवल्ली (सं० स्त्री०) गन्धवल्लरी देखो।

गन्धवह (सं० पु०) गंध गंधयुक्त पार्थिवांश वहति वह-अच्। १ वायु, हवा।

'निमुद्रविवरैर्गंधवहः सुधीनः। (कुमार)

(त्रि०) २ गंधयुक्त नायकविशेष।

"गवाक्षा गंधवहेन पुण्यिता।" (नैषधचरित)

३ गंधधारी, जिसमें गंध हो।

"आकाशात् विकुर्वाणात् सर्वगंधवहः शुचि।" (मनु० १।७६)

४ कस्तूरीमृग, वह मृग जिसकी नाभिसे कस्तूरी निकलती हो।

गन्धवहल (सं० पु०) गंध वहति वह बाहुलकात् अलच्, यद्वा गंधो वहलो यस्य, बहुव्री०। १ सितार्जक वृक्ष, श्वेतार्जक। २ श्वेततुलसी, सफेद तुलसी।

गन्धवहा (सं० स्त्री०) गंध गुणविशेष वहति गृह्णाति वह अच्-टाप्। १ नासिका, नाक। २ भुवनेश्वरके निकट प्रवाहित गंधवती नदीका नामान्तर। गंधवती देखो।

गन्धबहुल (सं० क्ली०) गन्धो बहुलो यस्य, बहुव्री०। १ एक प्रकारका गंधद्रव्य, शीतल चीनीके वृक्षका एक भेद, कक्कोल। २ गंधशालि सुगंधित धान।

गन्धबहुला (सं० स्त्री०) गंधो बहुलो यस्या, बहुव्री०। गोरक्षीका पेड। यह मालवदेशमें बहुत पाया जाता है।

गन्धवाकुची (सं० स्त्री०) लताकस्तूरी।

गंधवारि (सं० क्ली०) गंधद्रव्यवासित वारि। सुगंधि द्रव्यवासित जल, गुलाब जल।

गंधवाह (सं० पु०) वायु, हवा।

"प्रसरन्मसृणाचलगंधवाह।" (गीतगोविन्द)

२ कस्तूरीमृग।

गन्धवाही (सं० स्त्री०) गंधवाह ङीष्। नासिका, नाक।

गंधविह्वल (सं० पु०) गंधेन विह्वलयति विह्वल णिच-अच्। गोधूम, गेहूं।

गन्धवीजा (सं० स्त्री०) गंधो बीजे यस्या, बहुव्री० ततो टाप्। १ कुलिञ्जनवृक्ष, अदरककी तरहका एक पौधा। २ मेथिका, मेथी।

गन्धवीरा (सं० स्त्री०) शल्लकीवृक्ष, शलईका पेड।

गंधवृक्षक (सं० पु०) गंधप्रधानो वृक्षः स्वार्थे कन्। शालवृक्ष, शालका पेड।

गंधवेधिका (सं० स्त्री०) कस्तूरी, मृगनाभि।

गंधवेष्ट (सं० पु०) गंध वेष्टयति स्वगंधेन परगंधमा वृणोति। धूनक, सालका गोंद, धूना।

गंधव्याकुल (सं० पु० क्ली०) गंधेन व्याकुलयति, वि-आ-कुल णिच् अच्। एक प्रकारका सुगंधद्रव्य, कक्कोल।

गंधशठी (सं० स्त्री०) गंधप्रधाना शठी शाकपार्थिव-वत् मध्यपदलो०। शठी, कपूर कचूरी।

गंधशाक (सं० क्ली०) गंधप्रधान शाक पार्थिववत्

गन्धपदलो॰। गौर सुवर्णशाक। चित्रकूटके अञ्चलमें यह शाक बहुत पाया जाता है।

गन्धशालि (सं॰ पु॰) गन्धप्रधानः शालिः। धान्यविशेष, सुगन्धि शालिधान्य, वासफुल धान। इसका पर्याय—कलमाष, गन्धालु, उत्तमोत्तम, सुगन्धि, गन्धबहुल, सुरभि, गन्धतण्डुल और सुगन्धिशालि है। इसका गुण—मधुर, बलकारी, पित्त और श्रमनाशक, स्नायुविदाहनिवारक, अल्पवातनिवारक एवं अल्पपरिमाण काफ तथा बलवृद्धिकर तथा गर्भको स्थिर रखनेवाला है। (राजनि॰)

गन्धशुण्डिनी (सं॰ स्त्री॰) गन्धयुक्ता शुण्डोऽस्त्यस्याः। छुछुन्दर।

गन्धशेखर (सं॰ पु॰) गन्धः शेखरे शिरोदेशे ऽस्त्यस्य, बहुव्री॰। कस्तूरी।

गन्धसम्भवा (सं॰ स्त्री॰) सुगन्धशालि।

गन्धसार (सं॰ पु॰) गंधं गन्धयुक्तं सारः स्थिरांशो यस्य, बहुव्री॰। १ चन्दनवृक्ष २ मुग्दरवृक्ष, मोगरा वेला। ३ शठी कचूर।

गन्धसारण (सं॰ पु॰) गंधं सारयति सृ णिच् ल्यु। १ वृहन्नखी नामक गन्धद्रव्य। २ सुग्दरवृक्ष।

गन्धसूची (सं॰ स्त्री॰) १ आम्रातक, आमड़ा। २ छुछुन्दर।

गन्धसेवि (सं॰ क्ली॰) रोहीषतृण, अगिया घास।

गन्धसोम (सं॰ क्ली॰) गन्धार्थं सोमश्चन्द्रो यस्य, बहुव्री॰। कुमुद, श्वेतकमल।

गन्धहस्तिमहाभाष्य—तत्त्वार्थसूत्र पर स्वामी समन्तभद्राचार्य विरचित भाष्य। आजकल यह उपलब्ध नहीं है। कहते हैं आजतक जितनी टीकायें तत्त्वार्थसूत्र पर मिली हैं उन सबमें यह ही बड़ी और विस्तृत है। इसकी श्लोक संख्या ८४ हजार है, इसका केवल मङ्गलाचरण ११४ श्लोकोंका मिलता है जिसको आप्तमीमांसा कहते हैं।

आप्तमीमांसा अपने ढंगका निराला ही ग्रन्थ है। इसके प्रत्येक श्लोकमें न्यायकी शैलीसे सत्यार्थ देवको मीमांसाकी गई है। इसीके ऊपर श्रीमद्भट्टाकलंकदेव की अष्टशती नामक टीका है और उसके ऊपर स्याद्वादविद्यापति विद्यानंदस्वामीका अष्टसहस्री नामक विवरण है।

इन दो ग्रन्थोंके पढ़नेसे ही गन्धहस्तिमहाभाष्यकी गुरुता और अर्थगंभीरता जानी जा सकती है।

इस ग्रन्थको ढूंढनेके लिये जैन लोग बहुतसा परिश्रम कर रहे हैं। अनेक तो इसके केवल दर्शन करानेवालेको ५००) सौ रुपये तकका पुरस्कार देनेका वचन कहते हैं। मङ्गलमय देवी।

गन्धहस्ती (सं॰ पु॰) गन्धयुक्तो मदगन्धयुक्तो मत्तो हस्ती। मत्तहस्ती, मतवाला हाथी।

"गन्धहस्तीव दुर्धर्षः।" (रामायण ५।७३।२६)

२ बौद्धस्तूपविशेष। यह बोधगयासे आध कोस दक्षिणपूर्वमें लीलाजन नदीके पूर्व तट वर्तमान वाकरर नामक स्थान पर अवस्थित है।

गन्धहारिका (सं॰ स्त्री॰) गन्धं हरतीति हृ-ण्वुल्-क ततष्टाप अत इत्वञ्च। शिल्पनिपुणा, वह स्त्री जो दूसरोंके घर जा कर काम करती हो।

गन्धा (सं॰ स्त्री॰) गन्धयति गन्धं वितरति, गन्ध-णिच्-अच्-टाप्। १ चम्पककली, चम्पा। २ शठी, कपूर कचूरी। ३ शालपर्णी। ४ गन्धयुक्ता स्त्री। ५ वनतुलसी। ६ छुछुन्दर। ७ अजमोदा। ८ वंशलोचन।

गन्धाखु (सं॰ पु॰) गन्धयुक्त आखुः। छुछुन्दर।

गन्धाजीव (सं॰ पु॰) गन्धेन गन्धद्रव्येन आजीवति, आ-जीव-अच्। गन्धवणिक्।

गन्धाढ्य (सं॰ क्ली॰) १ गन्धेन आढ्यं। जवादि नामक गन्धद्रव्य। २ चन्दन। (त्रि॰) ३ गन्धयुक्त, जिसमें गन्ध हो। (पु॰) ४ नारङ्गवृक्ष, नारङ्गीका पेड़। ५ वकुल पुष्प, मौलसरीका फूल।

गन्धाढ्या (सं॰ स्त्री॰) गंधेन आढ्या, ३-तत्। १ गंधपत्ता। २ स्वर्णयुथी, जूहीका फूल। ३ तरुणीपुष्प, घीकुवार, ग्वारपाठा। ४ आरामशीतला। ५ गंधाली, प्रसारणी, गंधपसार। ६ सूरा नामक गंधद्रव्य। ७ शतपत्री। गुलाबका फूल। ८ सुगन्धशाल। ९ नीबू। १० गंधपत्र।

गन्धादि (सं॰ क्ली॰) तृणकेशर।

गन्धाधिक (सं॰ क्ली॰) गंधोऽधिको यस्य, बहुव्री॰। तृण कुङ्कुम, तृणकेशर।

गन्धाधिवास (सं॰ पु॰) गंधेव गंधद्रव्येण अधिवासः,

६ तत्। आभ्युदयिक प्रभृति कर्मोंमें चन्दन और पुष्प माल्य प्रभृति गन्धद्रव्योंमें जो अधिवास किया जाता है उसीका नाम गन्धाधिवास है।

गन्धानी (सं० पु०) सुगन्धशाल।

गन्धान्न (सं० पु०) गन्धशाल, वह धान जिसमें अच्छी गन्ध हो।

गन्धाम्ला (सं० स्त्री०) गन्धयुक्तोऽम्लो रसो यस्याः बहुव्री०। वनवीजपूरक, एक प्रकारके नीबूका पेड़।

गन्धार (सं० पु०) १ देशविशेष। गान्धार देखो।

'अक्षौहिण्यो त्रिपुत्रीवीरा गन्धाराद्यं कारवा ॥'

(भारत भीष्म० ६ अ०)

२ गन्धारदेशके राजा।

गन्धारि (सं० पु०) गन्ध अरच्छति ऋ इन्, ६ तत्। गधार देश।

गन्धारी (सं० स्त्री०) गन्ध लेशरूप गन्ध अरच्छति। गर्भ धारिणी स्त्री, गर्भवती।

'यदा गन्धारेदा गर्भधारिणिका श्रीमां॥'

(चक्र० १।१२।७ भाष्य)

गन्धाल (सं० पु०) १ गन्धशाल। २ दण्डालुक, रतालूका पेड़।

गन्धाला (सं० स्त्री०) गन्धाय अलति पर्याप्नोति अल् अच् तत टाप्। वृक्षविशेष, एक पेडका नाम।

गन्धाली (सं० स्त्री०) गन्धस्य आली श्रेणी यस्याः, बहुव्री०। लताविशेष गन्धपसार। इसका पर्याय—प्रसारणी भद्रपर्णी, गन्धाढ्या, सरणा, कटम्भरा, राजबाला, भद्रबला कटम्भर और सारणी है। इसका गुण—उष्णवीर्य, वात नाशक, तिक्त, गुरु, हृद्य, बलकारक, वात, रक्त और कफनाशक है। (भावप्रकाश) प्रसारणी देखो।

गन्धालीगर्भ (सं० पु०) गन्धाली गन्धश्रेणी गर्भे यस्य, बहुव्री०। छोटी इलायची।

गन्धाश्मन् (सं० पु०) गन्धयुक्तोऽश्मा शाकपार्थिववत्। गन्धक।

गन्धाष्टक (सं० क्ली०) गन्धानां गन्धद्रव्याणां अष्टकं ६ तत्। आठ प्रकारके मिश्रित गन्धद्रव्योंको गन्धाष्टक कहते हैं। तन्त्रमें देवता भेदसे कई प्रकारके गन्धाष्टक निरूपित हैं।

शक्तिगन्धाष्टक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ कर्पूर, ४ चोर नामक गन्ध द्रव्य, ५ कुङ्कुम, ६ गोरोचन ७ जटामांसी और ८ कपियुता।

विष्णुके गन्धाष्टक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ वाला, ४ कुष्ठ, ५ कुङ्कुम, ६ वीरणमूल, ७ जटामांसी और ८ मुरा।

शिवगन्धाष्टक—१ चन्दन, २ अगुरु, ३ कर्पूर, ४ तमाल, ५ जल, ६ कुङ्कुम, ७ रक्तचन्दन और ८ कुष्ठ।

गणेशगन्धाष्टक—१ स्वरूप, २ चन्दन, ३ चोर, ४ रोचना, ५ अगुरु, ६ मृगमद, ७ कस्तूरी और ८ कर्पूर। (शारदाति०)

मेरुतन्त्रके मतसे चन्दन, अगुरु, कर्पूर, गोरोचना, कुङ्कुम, मृगमद और वाला इन आठोंको गाणपत्य गन्धाष्टक कहते हैं। मामादिके यूप प्रस्तुत करनेमें सुगन्धिके लिये आठ गन्धद्रव्य उसमें दिये जाते हैं। इनको भी गन्धाष्टक कहते हैं। नन्द्धानाथके मतमें जातीफल (जायफल), तेजपत्र, लवङ्ग, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, मिर्च और मृगनाभि इन सबको गन्धाष्टक कहते हैं।

गन्धाह्वा (सं० स्त्री०) रक्ततुलसी, लाल तुलसी।

'मालती कटतुम्बी वनध्वजा सुमनस तथा।' (सुश्रुत चि० ८)

गन्धि (सं० क्ली०) तृणकुङ्कुम, रोहित घास।

गन्धिक (सं० पु०) गन्धोऽस्त्यस्य गन्ध ठन। १ गन्धक। २ गन्धवणिक्।

गन्धिन् (सं० त्रि०) प्रशस्तो गन्धोऽस्त्यस्य गन्ध इनि। प्रशस्त गन्धयुक्त, जिसमें अच्छी गन्ध हो।

'अर्द्धेव गन्धिनो रम्या गो हृषितं च मन्दवन्।

मन्ये ते सुमनो बुद्धा तत्प्रधान प्रवक्ष्यते॥' (भारत श्राव ५२७)

गन्धिनी (सं० स्त्री०) गन्धिन्-ङीप। मुरा नामक गन्ध द्रव्य।

गन्धिपर्ण (सं० पु०) गन्धि गन्धयुक्तं पर्णं यस्य, बहुव्री०। सप्तच्छदवृक्ष, सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवनका पेड़।

गन्धिरस (सं० पु०) गोधक, नौसादर।

गन्धिला—जैनमतानुसार विदेहक्षेत्रमें स्थित एक देश।

गन्धी (सं० पु०) कस्तूरीमृग।

गन्धेन्द्रिय (सं० क्ली०) गन्धग्राहक इन्द्रिय शाकपार्थिवादिवत् समास। घ्राणेन्द्रिय, वह इन्द्रिय जिसके द्वारा गन्धका अनुभव हो। इन्द्रिय सम्बन्धके विषयमें दार्शनिकोंका मतभेद लक्षित होता है। न्यायदर्शनका मत है

-कि पृथ्वीके अंशसे गन्धेन्द्रिय वा नासिकाकी उत्पत्ति है इसीके द्वारा हमलोग गन्ध ग्रहण करते हैं। सांख्य और पातञ्जलके मतसे घ्राणेन्द्रिय पृथ्वी अंशसे उत्पन्न नहीं है। वह सात्त्विक अहङ्कारसे आविर्भूत हुआ है। फिर प्रलय समयमें वह उसमें लीन हो जाता है। भाष्यकार विज्ञानभिक्षुने सांख्यप्रवचनके द्वितीय अध्यायमें इन्द्रियके भौतिकत्ववादका अत्यन्त सुन्दर रूपसे निराकरण कर आहङ्कारित्व संस्थापन किया है।

गन्धेभ (सं० पु०) गन्धयुक्तः मदगन्धयुक्तः इभः शाकपार्थिवादिवत् समासः। गन्धगज, मत्तहस्ती, मतवाला हाथी।

"मिन्दराविव गन्धभोगन्धेभैव वाटावम्।" (राजतर० १।३००)

गन्धातु (सं० पु०) गन्धप्रधान आतुः वा वृद्धिः। सुगन्ध-मार्जार, खट्टाश।

गन्धोत्कट—स्वामी जीवन्धरकुमारके पालक और वैश्य जातिके धनाढ्य। जीवन्धरकुमारके पिताको काष्ठाङ्गारने मार डाला था। उनके पीछे जीवन्धरका जन्म हुआ और वे गन्धोत्कटके घर पले थे। जीवन्धर देखो।

गन्धोत्कटा (सं० स्त्री०) गंधेन उत्कटा उग्रा, ३-तत्। दमनकवृक्ष, दौनाका पेड़।

गन्धोत्तमा (सं० स्त्री०) गंधेन उत्तमा उत्कृष्टा ३-तत्। मदिरा, शराब।

गन्धोद (सं० क्ली०) गन्धवासितमुदकं शाकपार्थिववत् समासः उदकस्य उदादेशश्च। गन्धद्रव्य, वासित जल, गन्धजल, गुलाब जल।

"वासक्ति सार्गं गन्धोदैः" (भागवत ८।१२।१८)

गन्धोदक (सं० क्ली०) गन्धवासितमुदकं शाकपार्थिववत् समासः विकल्पपक्षे उदकस्य न उदादेशः। १ गंधद्रव्य वासितजल, गंधजल, गुलाब जल।

२ जैनमतानुसार तीर्थंङ्कर वा अरहन्त भगवान्के स्नानका जल, अथवा उनकी मूर्तिके स्नानके जलको गन्धोदक कहते हैं। श्रावक लोग नित्य दर्शन करके, उसको मस्तक और हृदयसे लगाते हैं। तीर्थङ्करके जन्म होते ही इन्द्रका सिंहासन कम्पायमान होता है इन्द्र तुरतही अवधिज्ञान द्वारा तीर्थङ्करका जन्म जान मध्यलोकमें देवों सहित उपस्थित होता है। नगरमें उत्सव होता है। इन्द्रानी जा कर माताकी गोदमें भगवान्को ले आती है और उनके बदलेमें एक मायामयी बालक रख आती है। यह कार्यवाही गुप्तभावसे की जाती है। फिर उन्हें सुमेरु पर्वत पर पाण्डुक शिला पर विराजमान कर उनका स्नपन किया जाता है। सनत्कुमार और माहेन्द्र तथा अन्यान्य हजारों देव मिल कर १००८ कलशोंसे भगवानको स्नान कराते हैं। उस समय उनके स्नानका जल जिन जिनके देह पर पड़ता है, वे परम्परासे मुक्ति जाते हैं। (जैन आदिपुराण)

कोटिभट्ट श्रीपाल राजाको जब कुष्ठकी व्याधि हुई थी, तब उन्हें प्रजाकी सुविधाके लिये राज्यसे निकल जाना पड़ा था। भाग्यवश वे उस राज्यमें जा पहुंचे जहां मैनासुन्दरीके पिता राजा राज्य करते थे। वे अपनी पुत्रीकी इस बात पर बहुत नाराज थे कि,—"मैं अपने भाग्यसे सुख या दुःख पाती हूं।" बस, इसी बात पर नाराज हो कर उनने मैनासुन्दरी श्रीपालको ब्याह दी। बेचारी मैनासुंदरी धर्म पर श्रद्धा रखती हुई अरहन्त भगवानकी पूजा करने लगी और नित्य प्रति जिनेन्द्रकी प्रतिमाका गंधोदक लाकर पतिके शरीरसे लगाने लगी। सौभाग्यवश, थोड़े ही दिनोंमें श्रीपालने कुष्ठरोगसे मुक्ति पाई और मैनासुंदरीके साथ दिगम्बर जैनधर्मको पूर्णतया पालन करता हुआ आनन्दसे जीवन व्यतीत करने लगा और अन्तिम जीवनमें दिगम्बरी दीक्षा धारण कर, केवलज्ञान पूर्वक मुक्ति लाभ किया। (श्रीपालचरित्र)

गन्धोपजीवी (सं० पु०) गंधं गंधद्रव्यं उपजीवति उप जीव-णिनि। गंधवणिक्।

"दन्तकारा मजूषकाः ये च गन्धोपजीविनः।" (रामा० २.७१।१)

गन्धोपल: (सं० स्त्री०) गंधक।

गन्धोल—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़का एक छोटा राज्य। लोकसंख्या प्राय: १३७ है। राज्यकी आमदनी २०००) रुपयेकी है। जमींदारको २८०) रुपये गायकवाड़ महाराजको कर स्वरूप देने पड़ते हैं।

गन्धोलि (सं० स्त्री०) गंधयति गंध बाहुलकात् ओल ततो जातौ ङीष् निपातनात् ह्रस्वः। भद्रमुस्ता, सुगंधि घास, नागर मोथा।

गन्धोली (स० स्त्री०) गन्धयति अर्दयति । १ इम
२ वरटा बिर्नी ।

गन्ना (हि० पु०) ईख, ऊख ।

गन्ना बेगम—नवाब अली कुली खांकी कन्या । अली कुली खां पाचहजारके मनसबदार थे । इनके क अङ्गुली रहने के कारण लोग इन्हें छङ्गा वा पङ्गुल कहा करते थे । पहले नवाब सफदरजङ्गके पुत्र सुजाउद्दौलाके साथ गन्ना बेगमका विवाह सम्बन्ध स्थिर हुआ था, किन्तु किसी कारणसे पिताकी इच्छासे इसने वजीर इमाद उल्-मुल्क गाजी उद्दीन् खांके साथ विवाह किया । यह मुसलमान समाजमें सम्भ्रान्त व गोको एक विदुषी रमणी थी । बेगमकी बुद्धि और कवित्वशक्ति बहुत दूर तक फैली हुई रही । हिन्दी भाषामें इसकी रचना की हुई बहुतसी कवितायें यद्यपि पश्चिमाञ्चलमें सर्थोंके निकट समादृत हैं । ढोलपुरके निकट नूराबाद ग्राममें सम्राट् आलमगीरके बनाये हुए उद्यानमें ये ११९८ हिजरीको कब्रमें गाड़ी गई थीं । इनकी कवितायें मीरसौदा और मियल प्रभृति कवियोंसे समोचित हुई थीं ।

गप (हि० स्त्री०) इधर उधरकी बातें जिसकी सत्यता का निश्चय न हो । वह बात जो सिर्फ मनको प्रसन्न करनेके लिये की जाय ।

गपकना (हि० क्रि०) चटपट निगलना, झटसे खा लेना ।

गपड़चौथ (हि० पु०) व्यर्थकी गोष्ठी, वह व्यर्थकी बात चीत जो चार आदमी मिल कर करते हों ।

गपना (हि० क्रि०) गप मारना बकना ।

गपिया (हि० वि०) गप मारनेवाला, मिथ्या बात बोलने वाला ।

गपिष्ठा (हि० वि०) [illegible] ।

गपोड़ (हि०) [illegible] ।

गपोड़ा (हि० पु०) मनगढ़त बात, झूठी बात ।

गपोड़ेबाजी (फा० स्त्री०) झूठ बकवाद ।

गप्प (हि०) [illegible] ।

गप्पी (हि० वि०) १ गप मारनेवाला, डींग मारने वाला । २ मिथ्याभाषी, झूठा ।

गप्फा (हि० पु०) बड़ा कौर, जो खानेके समय उठाया जाय ।

गफ (हि० वि०) घना, कठिन, गाढ़ा ।

गफलत (अ० स्त्री०) १ असावधानी, बेपरवाही । २ चेतका अभाव । ३ प्रमाद, भूल, भ्रम ।

गफिलाई (फा० स्त्री०) [illegible] ।

गबड्डो (हि०) [illegible] ।

गबदी (हि० पु०) एक प्रकारका छोटा गाछ । इसकी लकड़ी बहुत नरम होती है और शाखायें पत्तियोंसे ढकी रहनेके कारण छाताके सदृश दीख पड़ती हैं । माघ और फागुन मासमें यह सुनहले पीले रङ्गके फूल लिये रहता है । यह पेड़ सिवालिककी पहाड़ियों तथा उत्तरीय अवध, बुन्देलखण्डमें पाया जाता है । इसकी छालसे एक प्रकारका श्वेत गोंद निकलती है ।

गबद् (हि० वि०) जड़, मूर्ख ।

गबर (हि० पु०) जहाजमें एक तरहका पाल जो सब पालोंसे ऊपर रहता है ।

गबरगण्ड (हि० पु०) मूर्ख, अज्ञानी, जड़ ।

गबरहा (हि० वि०) गोबर मिला, गोबर लगा हुआ ।

गबरू (फा० वि०) १ जवानीकी वह अवस्था जब रेख निकलती हो । २ भोला भाला, सीधा (पु०) ३ दूल्हा पति, स्वामी ।

गबरून (फा० पु०) एक प्रकारका कपड़ा जो चारखानेका होता है । इस तरहका वस्त्र लुधियानेमें बुना जाता है ।

गबोना (देश०) कतोना कतोरा ।

गब्बर (फा० वि०) १ घमण्डी, अहङ्कारी । २ आलसी । ३ बहुमूल्य । ४ धनी मालदार ।

गब्भा (फा० पु०) रूईसे परिपूर्ण एक बिछावन ।

गब्र (फा० पु०) आर्यमका रहनेवाला पारस निवासी अग्निपूजक ।

गभ (स० स्त्री०) भग पृषोदरादिवत् वर्णविपर्यये साधु । भग, योनि ।

"[illegible] । [illegible] १ ११।

"[illegible]" ([illegible])

गभस्ति (स० पु०) गभ्यते आयते गम ड ग विपद म समस्ति सम् लिप् । १ किरण, प्रकाश । २ सूर्य । ३ शिव ।

"[illegible]" ([illegible] ११ १४ १०)

४ स्वाहा, अग्निकी स्त्री । ५ बहु ओ, द सर्गो ।

(स्त्री०) गच्छति प्राप्नोति गम-भ गोऽग्निः तं वभस्त्यनया। वाहुयुगल, दोनों बाँह। "पृथु करसा बहुला गभस्ति" ऋक् ६।१९।३
'गभस्ति बाहु' (सायण) हस्त, हाथ।
"द्वापी वै गभस्ति पाविमशौ वमें पावयति" (शतपथब्रा० ४।१।१।९)

गभस्तिनेमि (सं० पु०) गभस्तय एव चक्रं तस्य नेमिरिव। परमेश्वर।
"गभस्तिनेमिः सत्वस्थः।" (विष्णुस०)

गभस्तिपाणि (सं० पु०) गभस्तिः पाणिरिवास्य रसाकर्षणकर्मणि। सूर्य।

गभस्तिमत् (सं० पु०) गभस्तयो भूम्ना सन्त्यस्य गभस्ति-मतुप्। १ सूर्य।
'विभावसुः सारथिनेव वायुना घनव्यपायेन गभस्तिमानिव।"
(रघु० ३।३७)

(क्ली०) गभस्तयो नित्यं सन्त्यत्र गभस्ति नित्ययोगे मतुप्। २ पातालविशेष, सप्त पातालोंके अन्तर्गत एक। इसका दूसरा नाम तलातल है। (शब्दरत्नावली) पाताल देखो। ३ द्वीपविशेष, एक द्वीपका नाम। (त्रि०) ४ किरणयुक्त, जिसमें प्रकाश हो।

गभस्तिहस्त (सं० पु०) गभस्तयो हस्ता इव रसाकर्षणाय यस्य, बहुव्री०। सूर्य।
"गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।" (शाम्बपु०)

गभस्तीश (सं० पु०) काशीस्थ शिवलिङ्गविशेष।
काशी देखो।

गभि (सं० त्रि०) गच्छति नीरमत्र। गभीर, गहिरा।

गभिषज (सं० त्रि०) गभी सज्जति सञ्ज-क्विप्। गभीर-स्थायी, जो गहरे स्थानमें अवस्थित हो।
"तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियम्।" (अथर्ववेद ७।७।१)

गभीका (सं० स्त्री०) गभीरे कायति कै-क पृषोदरादिवत् लोपे साधु १ वृक्षविशेष, गाम्भार, गभारीका पेड़। गभीकायाः फलं गभीका अण् तस्य लोपः। हरीतक्यादिभ्यश्च। पा ४।३।१६७। २ गाम्भारका फल।

गभीर (सं० त्रि०) गच्छति जलमत्र गम-ईरण भयान्तादेशः। १ निम्नस्थान, गहरा। २ अतलस्पर्श, जिसका तला न मिले। ३ मन्द्रध्वनि, धीमी आवाज। ४ गहन, घना। ५ दुष्प्रवेश, जिसमें जल्दी घुस न सके। ६ दुर्बोध, गूढ़, कठिन। ७ प्रचण्ड, प्रबल, तेज।
"कालेन सर्वं च गभीररंहसा।" (भागवत ११५।१८)

गभीरक (सं० त्रि०) गभीर एव स्वार्थे कन्। गभीर देखो।

गभीरचेतस् (सं० त्रि०) गभीरं दुष्प्रवेशं चेतः चित्तवृत्तिर्यस्य, बहुव्री०। जिसका मानसिक भाव अत्यन्त गभीर या गहिरा हो।

गभीरवेपस् (सं० त्रि०) जिसका कांपना साधारण रूपमें नहीं मालूम पड़ता हो।
"वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद गभीरवेपा असुरः सुनीथः।"
(ऋक् १।३५।७) 'गभीरवेपाः गम्य कम्पनं ...' (सायण)

गभीरा (सं० त्रि०) १ वाक्य। २ पृथिवी।

गभीरात्मन् (सं० पु०) गभीरः दुर्ज्ञेय आत्मा स्वरूपं यस्य, बहुव्री०। परमेश्वर।
"चतुरस्रो गभीरात्मा।" (विष्णुसहस्रनाम)

गभीरिका (सं० स्त्री०) गभीरा संज्ञायां कन्-टाप् इत्वञ्च। १ बृहत् ढाक, बड़ा ढोल या नगाड़ा। २ मन्द्रध्वनियुक्ता स्त्री, वह औरत जिसकी आवाज बहुत धीमी हो। ३ एक तरहकी आंखकी बीमारी। ४ एक नदीका नाम।

गभुआर (हिं० वि०) गर्भका बाल, जन्मके समयका रक्खा हुवा बाल। २ जिसके सिरके जन्मके बाल न कटे हों, जिसका मुंडन न हुवा हो। ३ नादान, बहुत छोटा, अनजान।

गभुवार (वि०) गभुआर देखो।

गभोलिक (सं० पु०) मसूर, एक प्रकारका अनाज।

गम (सं० पु०) गम-अप्। १ पराजयकी इच्छासे गमन। २ पथ, मार्ग, राह। ३ द्यूतक्रीड़ाविशेष, जुवेका एक खेल। ४ गमन, यात्रा। ५ अपर्यालोचित पथ, वह मार्ग जो कभी नहीं देखा हुआ हो। गम्यते गम कर्मणि अच्। ७ गम्यमान। (पु०) ८ उपभोग, मैथुन।
"वस्त्रदन्या गुरुपत्नी गमो यो गुरुतल्पगः।" (मनु० ११।५४)

गम (फा० पु०) १ दुःख, शोक, रंज। २ चिन्ता, फिक्र।

गमक (सं० त्रि०) गमयति गम-णिच्-ण्वुल्। १ गमयिता, जो गमन करता हो, जानेवाला। २ बोधक, सूचक।

"यत् पीठलमुद्रतातः च वचसा यद्वाञ्च तो गौरव।
तत्रैव दमित तत्क्षतेव गमकं पाणिग्रहेनिरंसय॥" (मालतीमाधव)

२ स्वरभेद, एक स्वरके श्रुतिप्रचय प्रकाशको नाम

गमक है। इसके सात भेद हैं। यथा कम्पित, स्फुरित, लीन, भिन्न, स्थविर, आहत और आन्दोलित है। गायकको पौष और माघ मासमें एक प्रहर रात्रिके रहने पर जलमें प्रवेश करना और गमककी साधना करनी चाहिये। (सङ्गीतसारोद्धार)

मतान्तरमें गमकके २३ भेद हैं। यथा—अपूर्वाहत, अस्थित, अयोघर्षण, अस्ताहत, आन्दोलित, आहत, आघर्षित, उत्ताहत, कम्पित, करोरि, कर्णोमस्थान, घर्षित, जयत, ढाला, तुरित, नियत, पुरोहत, प्रत्याहत, वायमि, मुद्रित, शान्त,सुवाला और सोमस्थान। (सङ्गीतदर्पण)

४ तबलेका गम्भीर शब्द।

गमकारित्व (सं० क्ली०) दम्भ।

गमकीला (हिं० वि०) महकनेवाला। सुगन्धित।

गमखोर (फा० वि०) सहिष्णु, सहनशील।

गमखोरी (फा० स्त्री०) सहिष्णुता, सहनशीलता।

गमगीन (फा० वि०) दुखी, खिन्न, उदास।

गमत (सं० पु०) १ रास्ता, मार्ग। २ व्यवसाय, पेशा, रोजगार

गमतखाना (फा० पु०) नावमें एक स्थान जहाँ पानी छेदों द्वारा जमा होता है।

गमतरी (फा० स्त्री०) गमतखाना।

गमता (गामित) भील जातिकी एक श्रेणी। ये नायकवाड़से लेकर खान्देश तथा सूरतके उत्तरपूर्वमें पाये जाते हैं। इनकी संख्या लगभग ५२०१८ होगी। इनमेंसे थोड़े बाल मुड़वाया करते और कुछ लम्बे लम्बे बाल रखते हैं। स्त्रियां अपने अपने बड़े बड़े बालों की मजाए रखती हैं। ये बहुत सकीर्ण झोंपड़ोंमें रहते हैं। झोंपड़ोंकी दिवालें बांसकी पट्टियोंकी बनी रहती और उसमें मिट्टीका लेप दिया रहता है तथा घाससे छायी रहती हैं। इन लोगोंका प्रधान भोजन रोटी है। ये भेड़ा, बकड़ा, खरगोश, तथा चिड़ियां भी खाते हैं। लेकिन ये गोमांस अथवा किसी मृत जानवरका मांस छूते तक भी नहीं हैं। पुरुषके मस्तक पर एक पगड़ी कमरमें सिर्फ एक लंगोटी और बांयकी कलाईमें चांदी या तांबेके आभूषण रहते हैं। स्त्रियां चोली और घघरा पहनती और सिरसे एक दूसरा वस्त्र ढकलेती हैं। ये कानोंमें तांबेकी कनौठिया और गलेमें कांचकी माला पहनती हैं। छोटी छोटी बालिकायें परमें तांबेकी ठोस पैंजनी रखती हैं। ये खेती तथा लकड़ी काट कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। ये बाघदेव, सामलदेव और देवलीमाताकी पूजा करते हैं। ये ब्राह्मणोंकी सेवा टहल नहीं करते यहां तककी ये ब्राह्मणोंको प्रणाम भी नहीं करते हैं। उन्हींमेंसे एक पुरोहितका काम चला लेता है। जब कोई सन्तान जन्म लेती तो उससे छठे दिन ये छठी देवताकी पूजा करते तथा अपने कुटुम्बोंको शराब इत्यादि पिलाते हैं।

वृद्धा स्त्री नवजात शिशुका नाम रख देती है। बारह वर्षकी अवस्थामें अर्थात् जब लड़का ताड़ वृक्ष पर चढ़नेमें समर्थ हो जाता तब इसका विवाह करते हैं। विवाह सम्बन्ध निश्चित हो जाने पर ये चार या पांच रुपयेकी ताड़ी खरीद लाते और अपने जात भाइयोंको पिलाते हैं। सिर्फ २५) रु०में इन लोगोंका विवाह हो जाता है। इनमें बहुविवाह तथा विधवाविवाहकी प्रथा प्रचलित है। ये शवको जला देते हैं। धनीपुरुष चार दिनोंमें तथा गरीब एक या दो मासमें अन्त्येष्टिक्रिया करते हैं।

गमथ (सं० पु०) गम अधिकरणे अथ। १ पथ, रास्ता। गम कर्त्तरि अथ। २ पथिक, बटोही, मुसाफिर। ३ व्यापार, पेशा। ४ आमोद प्रमोद।

गमन (सं० क्ली०) गम भावे ल्युट्। १ क्रियाविशेष।

'इत्युत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चनं प्रसारणं गमनमिति कर्माणि।' (भाषापरिच्छेद ६)

२ पराजयकी इच्छासे गमन, कूच। इसका पर्याय—यात्रा, व्रज्या, अभिनिर्याण, प्रस्थान, गम, प्रयाण, प्रस्थिति, यान और प्रापन हैं। ३ यात्रा।

"न च मे रोचते वीर गमनं दण्डकां प्रति।" (रामायण ३।९।१२)

४ उपभोग, मैथुन।

'अगम्यागमनाच्च' 'अनतपानादमक्ष्यभक्षणात्।' (तिथितत्त्व)

गम करणे ल्युट्। ५ जिसके द्वारा गमन किया जाय, रथ, शकट प्रभृति।

गमनना (पं० वि०) जाना।

गमनपत्र (सं० पु०) वह पत्र जिसके द्वारा एक जगहसे दूसरी जगह जानेका अधिकार मिलता हो, पासपोर्ट।

गमनपुर—वम्बई प्रदेशके महीकान्ताका एक छोटा राज्य, यह कटोसनके सामन्तके अधीन है। ये गायकवाड़ महाराजको १२८) रु० १० आने ८ पाई वार्षिक कर देते हैं।

गमना (अ० पु०) जाना चलना।

गमनाक (फा० वि०) शोकपूर्ण, दुःखभरा।

गमनागमन (सं० क्ली०) गमनञ्चागमनञ्च, इतरेतरद्वन्द्व। जाना और आना।

गमनार्ह (सं० त्रि०) गमनस्य अर्हो योग्यः, ६-तत्। जानेके लिये उपयुक्त।

गमनीय (सं० त्रि०) गम्य, जाने योग्य।

गमयितृ (सं० पु०) गम णिच् तृच्। गमक देखो।

गमला (फा० पु०) एक प्रकारका मट्टी या दूसरे धातुका पात्र। इसमें फूलोंके पेड़ और पौधे शोभाके लिये रखे जाते हैं। २ लोहे या चीनी मट्टीका बना हुवा एक प्रकारका वरतन जिसमें पाखाना फिरते हैं।

३ तैलङ्ग देशीय वैश्य जातिभेद। यह मद्यका व्यापार करते हैं। परन्तु बहुतसे गमले इस कामको छोड़ करके अन्य प्रकारके व्यवसायमें भी लग गये हैं। इन्हें वैश्य-वर्ण माना जाता है।

गमागम (सं० पु०) गमश्च आगमश्च, इतरेतरद्वन्द्व। १ चराचर, संसार। २ गमनागमन, आना जाना।

गमाना (हिं० क्रि०) खोना, गंवाना।

गमार (हिं० वि०) गांवका रहनेवाला। गंवार, देहाती।

गमित (सं० त्रि०) गम णिच् क्त। १ प्रापित, पाया हुआ। २ ज्ञापित, जाना हुआ। ३ अतिवाहित, विताया हुआ।

गमिन् (सं० त्रि०) गमनकर्त्ता, जानेवाला।

गमिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गन्ता गन्तृ-इष्ठन्। शीघ्रसे चलनेवाला, जो वहुत चल सकता हो।

गमी (अ० स्त्री०) १ शोककी अवस्था या काल। २ एक प्रकारका शोक जो किसी मनुष्यके मरने पर किया जाता है। ३ मृत्यु, मरण।

गम्बात—सिन्धुप्रदेशके खैरपुर राज्यका एक नगर। यहांके जुलाहे कपाससे एक प्रकारके देशी कपड़े का थान प्रस्तुत करते हैं।

गम्बोल—पञ्जावके वन्नू जिला हो कर प्रवाहित एक नदी, यह अक्षा० ३२° ३७´ ३०´´ उ० और देशा० ७१° ६´ १५´´ पू०में अवस्थित है। यह नदी अफगानिस्तानमें महसोल जातिके पार्वत्य आवासस्थानसे उत्पन्न हो कर टावाड़ अधित्यकामें पूर्व मुख आकर लक्कीनगरके दक्षिण कुरम-नदीसे आ मिली है। उत्पत्ति स्थानसे मरवत् तहसील पर्यन्त यह टोकोनदी नामसे मशहूर है। इस नदीका जल सुस्वादु और स्वास्थ्यकर है। तहसीलके निकट कई एक झरने हैं। नदीके दोनों तीरोंकी जमीन वालुकामय है, इसलिये खेती करनेकी विशेष सुविधा नहीं है वर्षाकालमें वृष्टिके समय इसकी गहराई ४३ फुटसे अधिक नहीं रहती है।

गम्भन् (सं० त्रि०) गम वाहुलकात् अन् भुगागमश्च। गभीर, गहरा।

"अपां गम्भन् सीद मात्वा सूर्य्योऽभितापसीन्माग्नि र्वैश्वानरः।" (वाजसनेय० १०।१०) 'गम्भन् गम्भसि २ गभीरे स्थाने" (महीधर)

गम्भर (सं० क्ली०) गम-विच्, गमं निम्नगतिं विभर्त्ति-भृ-अच्, ६-तत्। जल, पानी।

"इहन्नेव गम्भरेषु प्रतिष्ठां" (ऋक् १०।१०६।९)
'गम्भरेषु गहनेषु जलेषु।'(सायण)

गम्भार—पञ्जाव प्रदेशका एक पार्वतीय जलस्रोत। यह अक्षा० ३०° ५२´ उ० और देशा० ७७° ८´ पू०में हिमालय श्रेणीसे निकल कर उत्तर-पश्चिमकी ओर वहती हुई सुवाथुके सैनिक-निवासको अतिक्रम करके शतद्रु नदीसे मिल गई है। इस नदीकी गहराई अल्प होनेके कारण नावके लिये सुविधा नहीं है, किन्तु वर्षाकालमें वहुत वाढ़ आ जाती है। सुवाथुसे सिमला पहाड़ पर जानेकी राह पर इस नदीके ऊपर एक पुल निर्मित है।

गम्भारिका (सं० स्त्री०) गम-विच् गमं निम्नगतिं विभर्त्ति भृ-ण्वुल् टाप् अत इत्वं। गंभारीवृक्ष, गमारीका पेड़।

गम्भारी (सं० स्त्री०) गमः गतिभेदं विभर्त्ति अण् उपपदस०। गौरादित्वात् ङीष्। वृक्षविशेष। (Gmelina arborea) इसका पर्याय—सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य, कृष्णवृन्तिका, कृष्णवृन्ता, हीरा, स्निग्धपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोप-

भद्रा, विदारिणी, महाभद्रा, मधुपर्णी, स्वरूभद्रा, कृष्णा, सर्वता, रोहिणी, स्टष्टि, मधुमती, सुफला, काश्मीरी, भद्रा, गोपभद्रिका, कुमुदा, सदाभद्रा, कटफला, सर्वतोभद्रिका, क्षीरिणी, स्थूलत्वचा और महाकुमुदा है। इसका गुण—कटु, तिक्त, गुरु, उष्ण, भ्रम, शोथ, त्रिदोष, विषदाह, ज्वर, तृष्णा और रक्तदोषनाशक है।

इसके फलके गुण-तिक्त, गुरु, ग्राही, मधुर केशहितकर, रसायन, मेध्य, शीतल, दाह और पित्तनाशक है। इसके मूलके गुण—अतिशय उष्ण, कषाय, तिक्त, उष्णवीर्य, मधुर, गुरु, दीपन, पाचन, भ्रम, तृष्णा, आमशूल, अर्श, विषदाह और ज्वरनाशक है। (भावप्रकाश)

गभिष्ठ (सं॰ त्रि॰) गभन् इष्ठन्। गम्भीरतम, बहुत गहरा।

"हृमिष्ठ एव व एतत् पतति।" (शतपथ॰ ४।३।१।८)

गभीर (सं॰ त्रि॰) गच्छति जलमत्र गम ईरन् निपातनात् भ आगम। १ निम्नस्थान, गभीर, गहरा।

"श्वतगभीर यमैश्चनीलिमः" (नैषध)

२ मन्द्र शब्द, मेघकी आवाज।

"ज्ञानगभीरनिर्घोषैकसन्दनमास्थितो।" (रघु॰ १स॰)

(पु॰) ३ जम्बीर, जमोरी नीबू। ४ पद्म, कमल। ५ ऋक् मन्त्रविशेष, ऋग्वेदमें एक प्रकारका मन्त्र।

"अरे सर्वं च मासो च त्रिषु शब्द रसायमा। (श्रुति)

गभीरक (सं॰ पु॰) वृक्षविशेष, कपित्थककाष्ठ, सुगन्ध तुलसीका पेड़।

गभीरज्वर (सं॰ पु॰) एक प्रकारका ज्वर।

"गभीरस्तु ज्वरो ज्ञेयो ह्यन्तर्दाहेन तृष्णया।
आनद्धेन च शोषणे श्वासकासोद्गमेन च॥" (निदान)

गभीरदृष्टि (सं॰ पु॰) नेत्ररोगविशेष, आंखकी एक बीमारी।

गभीरनाथ—एक गुहा मन्दिर। बम्बई प्रदेशके पूना जिलान्तर्गत खण्डाल विभागमें वेरान पहाड़के ऊपर यह स्थित है। खण्डाल नगरसे इस मन्दिर पर पहुंचनेमें प्रायः ६ घण्टे लगते हैं। पहाड़ काट कर यह मन्दिर प्रस्तुत किया गया है।

गभीरपाक (सं॰ पु॰) पक्व पाक।

गभीरमालिनी—जैनमतानुसार विदेह देशकी विभङ्ग-नदियोंमेंसे एक बृहत् नदी।

गभीरराय—एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। इन्होंने सुरपुरके इतिहासको हिन्दी कवितामें रचना की है। १६२८से १६५८ई॰तक मध्यप्रदेशके अन्तर्गत सुमेरके राजा जगत्सिंह और दिल्ली बादशाह शाहजहांके बीच लड़ाई छिड़ी थी। इन्होंने युद्धवृत्तान्त ज्वलन्त भाषाको कवितामें वर्णन किया है।

गभीरवेदिन् (सं॰ पु॰) गभीर गहन बाहुलकात् पर वेत्ति गभीर विद णिनि। १ एक प्रकारका हाथी।

"चिरकालेन यो वेत्ति शिक्षां परिचितामपि।
गभीरवेदी विज्ञेय स गजो गजवेदिभिः॥" (राजपुत्रीय हस्तिशिक्षा)

जो हाथी बहुत देरके बाद परिचय, शिक्षा या उपदेश समझ सकता है उसको गभीरवेदी कहते हैं। इसका पर्याय—अङ्कुशदुर्धरबालक, व्यालक और प्रमत्ताकुश है।

"स प्रताप महेन्द्रस्य मूर्ध्नि तीक्ष्णं न्यवेशयत्।
अङ्कुशं द्विरदस्येव यन्ता गभीरवेदिनः॥" (रघु॰ ४।३९)

२ मोटी बुद्धि।

गभीरवेदित्व (सं॰ पु॰) गभीर विद त्वच्। मत्तहस्ती, असावधान हाथी।

"त्वक्भेदात् शोणितस्रावात् मांसस्य क्षयणादपि।
आत्मानं यो न जानाति स स्यात् गभीरवेदिता॥ (रघु टीका मल्लिनाथ)

अर्थात् जिस हाथीके चर्मसे रक्त निकालने अथवा मांस काट डालने पर भी वह कुछ नहीं जानता हो इसको गभीरवेदिता कहते हैं।

गभीरिका (सं॰ स्त्री॰) १ नेत्ररोगविशेष। इसका लक्षण

"दृष्टिर्विरूपा श्वसनोपसृष्टा सङ्कोचमभ्यन्तरतः प्रयाति।
रुजावगाढा च तमक्षिरोगं गम्भीरिकेति प्रवदन्ति धीराः॥" (भावप्रकाश)

२ वृहत् ढाक, बड़ो ढाक।

गम्य (सं॰ त्रि॰) गम् यत्। १ गमनीय, जाने योग्य, गमन योग्य। २ प्राप्य, लभ्य, पाने योग्य।

"ज्ञान यत् ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।" (गीता १३।१७)

३ गमनयोग्य, गमन करने योग्य, सम्भोग करने लायक।

"रमणीयं न तीर्थानि कोपि ... ..." (भारत ...)

गम्यमान (सं॰ त्रि॰) गम कर्मणि शानच्। १ ज्ञायमान, जानने योग्य। २ जिस ग्राममें जाना हो।

गम्या (सं॰ स्त्री॰) गम यत् टाप्। सम्भोगार्हा स्त्री यह

स्त्री जिसका संभोग शास्त्र विरुद्ध नहीं है।

"अभिकामां स्त्रियं यस्य गम्यां रहसि याचितः।" (भारत १।८३।३५)

गम्यादि (सं० क्लो०) निपातनसे सिद्ध इनि प्रत्ययान्त कई एक शब्द। गमी, आगमी, भावी, प्रस्थायी, प्रतिरोधी, प्रतियोधी, प्रतिबोधी, प्रतियायी और प्रतियेधी इन सबको गम्यादि कहते हैं। इनके योग होनेसे द्वितीया-तत्पुरुष समास होता है।

गयंद (हिं० पु०) १ बड़ा हाथी। २ दोहेका दशवां भेद जिसमें १३ गुरु और २२ लघु होते हैं।

गय (सं० पु०) १ रामायणके अनुसार एक वानरका नाम रामचन्द्रकी सेनाका एक सेनापति था।

(भारत ३।२८२ अ०)

२ हविर्धान राजाके पुत्र। (भागवत ४।२४।७) ३ प्रियव्रत वंशीय एक राजाका नाम। ये अत्यन्त उदारचित्त और धर्मनिष्ठ थे। (भागवत ५।१५।६।१४)

४ एक राजर्षि, इनके पिताका नाम अमुर्त्तरय था। इन्होंने शतवर्ष पर्यन्त केवल आहुतिका अवशेष भक्षण कर अग्निकी उपासना की थी। अग्नि संतुष्ट हो कर वर देनेके लिये उपस्थित हुए, इस पर गयराजने कृताञ्जली हो कहा—"हुताशन ! यदि मुझ अधमके ऊपर आप सन्तुष्ट हैं, तो मुझे वेदका अधिकार प्रदान कीजिये। मुझे वेद पढ़नेकी बहुत अभिलाषा है एवं जिससे मैं धर्मानुसार विपुल धनका अधीश्वर, शत्रुकुलका निहन्ता, धनरत ब्राह्मणोंको दान देनेमें यत्नवान् तथा सुखी बनूं। वैसाही वर प्रदान कीजिये।" 'एवमस्तु' ऐसा कह कर अग्नि चले गये। गयराजने अग्निसे वर पाकर समस्त विपक्षदलोंको निर्मूल करते हुये सारी पृथिवीके ऊपर अपना आधिपत्य फैलाया। गयराजकी धर्मनिष्ठा दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी। एक समय इन्होंने एक वृहद् यज्ञका अनुष्ठान किया। वैसा यज्ञ और किसी राजाने कभी नहीं किया था। उस यज्ञकी सुवर्णमय वेदीकी लम्बाई ३० योजन तथा चौड़ाई ३६ योजनकी बनाई गई थी। इस यज्ञ फलसे एक वटवृक्ष चिरजीवी हुवा जो अक्षयवटसे प्रसिद्ध है। यज्ञकी समाप्ति होने पर ब्रह्म नामका एक सरोवर निर्माण किया गया था। (भारत द्रोण ६६ अ०) ५ धन, दौलत। ६ अपत्य, सन्तान। ७ गृह, घर। (ऋक् १०।६४।३) ८ अन्तरिक्ष, आकाश। (ऋक् ५।४४।७) ९ गृहगत प्राणी। (ऋक् ३।५४।१) १० स्वस्थान, अपनास्थान, खास जगह। (ऋक् १०।८०।५) ११ प्राण। (शतपथ ब्रा० १४।८।१५।७) १२ गया प्रदेश। (भारत अनु० ९२) १३ असुरविशेष, गयासुर। गया देखो।

गयदास—एक वैद्यक ग्रन्थकार।

गयनाल (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी तोप जिसे हाथी खींचता है। गजनाल।

गयरसपुर—मध्यभारतमें भिल्साके निकट एक स्थान। यहां अति प्राचीन मन्दिरका भग्नावशेष देखा जाता है। बहुतोंका अनुमान है यह ग्यारहवीं शताब्दीमें जैनोंसे निर्मित किया गया था।

गयल (फा० स्त्री०) गैल देखा।

गयवली (देश०) एक प्रकारका पेड़। यह मध्यम आकारका होता और अवध, अजमेर, गोरखपुर और मध्य प्रदेशमें पाया जाता है। इसके फल खाये जाते हैं। छिलका चमड़ा सिझानेके काममें लाया जाता है। इसकी लकड़ी खेतीके संग्रहे और गाड़ी बनानेके काममें आती है।

गयवा (देश०) एक प्रकारकी मछली जिसे मोहिली भी कहते हैं।

गयशात (सं० पु०) एक प्रधान बौद्धाचार्य।

गयशिरस् (सं० क्लो०) गयस्य शिरः, ६ तत्। १ गयाके निकटस्थ पर्वतविशेष, एक पहाड़का नाम जो गयाके समीप है। २ गयासुरका मस्तक। भारत, वन, गया देखो। ३ अन्तरीक्ष, आकाश।

गयसाधन (सं० त्रि०) गयस्य साधनं, ६-तत्। गृहका साधन जो घरके धनादिको बढ़ाता हो।

"समो वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्।" (ऋक् ८।१०३।२)

'गयसाधनं' गृहस्य साधनम्। (सायण)

गयस्फान (सं० त्रि०) स्फायी वृद्धौ अन्तर्भूतण्यर्थात् ल्युट् यलोप, गयस्य धनस्य स्फानो वर्द्धकः। धन वर्द्धनकारक, धनका बढ़ानेवाला।

"गयस्फानो अमीवहा" (ऋक् १।९१।१२)

'गयइति धननाम गयस्य वर्द्धयिता।' (सायण)

गया—विहार और उड़ीसा प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २४° १७´ तथा २५° १९´ उ० और देशा० ८४° ०

एव ८६ ३ पू०के बीच विद्यमान है। गयाका क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला, पूर्व मुङ्गेर तथा हजारीबाग, दक्षिण हजारीबाग और पलामू और पश्चिमको शाहाबाद है। गया जिलेका दक्षिण भाग पहाड़ो है। दुर्वासा ऋषि और महावर प्रधान पर्वत है। पुनपुन, मोरन आदि कई नदियां छोटानागपुरके पहाड़ोंमें निकल इस जिलेमें उत्तरको बहती हैं। फल्गु पुनपुनकी सहायक नदी है। यह दोनों धाराएं हिन्दू शास्त्रानुसार परम पावन हैं और गयाके प्रत्येक तीर्थ-यात्रीको इनमें स्नान करना पड़ता है। बारू और डेहरीके बीच सोन नदी पर पत्थरका धरण लगा है। ठीक इसी धरण पर नहरोंका निकास और धरणके नीचे रेलवेका बहुत बड़ा पुल है।

पहले पटना और गया दोनों विहार सूबामें लगते थे। १७६५ ई०को अङ्गरेजोंको मिले। १८६५ ई०को गया पटनासे अलग किया गया। १८५७ ई०के जुलाई मास दानापुरके सिपाहियोंने बलवा करके शाहाबादको राह ली थी। जब एक अङ्गरेजी फौज, जो उनसे लड़ने गयी थी, बुरी तौरसे हारी, पटनाके कमिशनरने अपने सब निम्नस्थ पदाधिकारियोंको दानापुर हट आनेकी अनुमति दी। उस समय गयामें कुछ अङ्गरेज और सिख सिपाही थे। पटना कमिशनरकी आज्ञासे वह गयामें ७ लाखका खजाना छोड़ चल दिए, किन्तु कुछ सोच समझ करके लौट पड़े। दूसरी बार जब लोग खजाना ले करके फिर चलने लगे, उनके ऊपर आक्रमण हुआ। किन्तु वह आक्रमणकारियोंको परास्त करके अफ़ज़ल कलकत्ते पहुंच गये।

बोधगया गया नगरसे ७ मील दूर दक्षिणको अवस्थित है। यहां और पुनावांमें बहुतसी बौद्ध मूर्तियां मिलती हैं। दूसरे दूसरे स्थानोंमें भी बौद्धधर्मके निदर्शन विद्यमान हैं। सीतामढ़ीमें एक प्राचीन गुहा है। कहते हैं, सीताने वहीं वनवासावस्थामें लवको प्रसव किया था। रजौलीके सुन्दर पर्वतों और उपत्यकाओंको भी अनेक गल्प मिलती हैं। अफसरमें एक वराह मूर्ति विद्यमान है।

गयाकी लोकसंख्या प्रायः २०५९८७ है। भाषा विहारी मगही होती है। परन्तु अब हिन्दीका भी प्रचार होने लगा है। सपही, मिहर, बसरौं, पतकरी और बेलममें अबरकको खानि है। पचम्बा आदि कई स्थानोंमें कितना ही लोहा मिलते भी निकाला नहीं जाता। मकान और सड़क बनानेके लिये पहाड़ोंसे पत्थर निकालते हैं। काले पत्थरके गहने, बर्तन और मूर्तियां बनती हैं। जहानाबादमें शोरा तैयार होता है।

इस जिलेमें लाख, चीनी, टसरी तथा सूती कपड़ा, पीतलके बर्तन, सोने-चांदीके गहने, कम्बल, नमदा और कालीन प्रस्तुत किये जाते हैं। पहले ज़मानेमें कागज भी बहुत बनता था। शिक्षामें गया जिला पीछे है।

२ विहार और उड़ीसा प्रदेशके गया जिलेका उप-विभाग। यह अक्षा० २४ १७´ तथा २५ ५´ उ० और देशा० ८४ १७´ एव ८५ २४ पू०के बीच अवस्थित है। इसका रकबा १८०५ वर्गमील और आबादी लग-भग ८३२४४२ है।

३ विहार और उड़ीसा प्रान्तके गया महकमाका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४ ४८´ उ० और देशा० ८५ १´ पू०में फल्गु नदीके वाम तट पर अवस्थित है। गया नगर दो भागोंमें विभक्त है। उनमें एकको पुराना शहर और दूसरेको साहबगञ्ज कहते हैं। पुराने नगरमें जहां विष्णुपदका सुप्रसिद्ध मन्दिर और दूसरे कई पवित्र स्थान हैं, केवल गयावाले पण्डे ही रहते हैं। गयाकी लोकसंख्या कोई ७१२८८ होगी।

भागवतमें लिखा है कि त्रेतायुगको यहां गय नामक एक राजा रहता था। उसने अपने तपोबलसे यह वर पाया—जिसको उसने हाथ लगाया, परलोक पहुंचाया। यमको इस पर डाह लगा और उन्होंने देवता-ओंसे जा करके कहा कि उनका अधिपत्य सङ्कटापन्न था। वह आपसमें विचार करके गयके पास गये और उससे उसका शरीर यज्ञ करनेको मांग लिया। उसका शरीर गिर पड़ा, गया नगर बना है। फिर विष्णुने प्रसन्न हो करके यह वर दिया था—तुम्हारे शिर पर रखो हुई शिला जगत्में परमपावन शिला होगी और देवता, इस पर विश्राम करेंगे इस स्थानका नाम गयापीठ पड़ेगा और जो कोई यहां श्राद्ध तर्पण आदि करेगा, अपने पूर्वजों-

के साथ ब्रह्मलोक पहुंचेगा। भारतके विभिन्न प्रान्तोंसे असंख्य तीर्थयात्री प्रतिवर्ष गयामें श्राद्ध तर्पण करने आते हैं। यहां यात्रीको ४५ स्थानों पर पिण्डदान करना पड़ता है। इनमें आजकल लोग ७ या ३ ही स्थान देख करके चले आते हैं। ठोंस चट्टान पर बना विष्णुपद मन्दिर गयामें सबसे बड़ा है। कहते हैं, ई० १८वीं शताब्दीकी होलकरकी विधवा रानी अहल्याबाईने यह मन्दिर किसी पुराने मन्दिरके स्थानमें बनवाया था। गयावाल पण्डा ही इस मन्दिरके मौरूसी पुजारी हैं। वह यात्रियोंसे यथाप्राप्य धन मांग करके आशीर्वाद देते हैं। विष्णुपाद मन्दिरमें जा पूजा अर्चना न करनेसे गयायात्रा असफल होती है।

प्रत्नतत्त्ववित् कनिङ्हाम, राजा राजेन्द्रलाल और विचक्षण हण्टर साहबके मतमें गयाक्षेत्र पहले हिन्दू-तीर्थ जैसा न गिना जाता था, केवल प्रधान-बौद्ध तीर्थ जैसा प्रसिद्ध रहा, बौद्धोंका अधःपतन होने पर हिन्दुओंने उनकी कीर्तियों पर अपना वर्तमान गयाधाम स्थापित किया। परन्तु उनका मत समीचीन जैसा नहीं समझ पड़ता। कारण बौद्ध प्राधान्य यहां तक कि बुद्ध जन्मके पहलेसे ही गया भारतवासियोंका एक प्रधान प्राचीन तीर्थ है और पितृपुरुषोंको पिण्ड देनेके लिये एक मात्र पुण्यस्थान जैसा प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण (अयोध्या १०७।११-१३) में लिखा है, कि—सुनते हैं कि गया प्रदेशमें किसी धीमान् और यशस्वी यजमानने पितृलोकके प्रति उद्देश करके यह श्रुति गायी थी 'सन्तानको इसी कारण पुत्र कहते हैं कि वह पिताको पुत् नामक नरकसे बचाता और सर्वतोभावसे रक्षा लगाता है।' लोग इसीसे चाहते कि उनके नानाविद्याओंमें पारदर्शी बहुतसे गुणवान् पुत्र हों और उनके कोई न कोई गया जावे। महर्षि याज्ञवल्क्यने (याज्ञवल्क्यस्मृति ११२६०) लिखा है कि गयामें श्राद्धकालको जो दिया जाता, अनन्तफल पहुंचाता है। इसी प्रकार महाभारत (वन ८४ ८७,९५ अ०; अनुशासन २५ अ०) हरिवंश आदि ग्रन्थोंमें भी गयातीर्थका उल्लेख है।

गयाकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें प्राचीन ग्रन्थोंमें भी मतभेद लक्षित होता है। महाभारतके मतमें अमूर्तरयाके पुत्र राजर्षि गयने वहां प्रचुरान्न और भूरिदक्षिण नामक कोई यज्ञ किया था। इस यज्ञमें शत सहस्र अन्नाचल तथा घृतकुल्याएं बनीं, सैकड़ों दधिकी नदियां बहीं और लाखों उत्तमोत्तम व्यञ्जनप्रवाह प्रवाहित हुए। राजर्षि गय याचकोंको प्रति दिन ऐसे ही समारोहसे अन्न देते और ब्राह्मणोंको छोड़ करके दूसरे लोग भी बहुत प्रकारके अन्नव्यञ्जन खा लेते थे। दक्षिणा प्रदान कालको वेदध्वनिने गगन स्पर्श किया, अन्य कोई शब्द कर्णगोचर न हुआ। राजर्षि गयने जिस समारोहसे यज्ञ किया, कभी किसीने किया न था और ऐसा भी नहीं समझ पड़ता आगे कोई करेगा। देवगण गयराज-प्रदत्त हविः द्वारा इतने परितृप्त हो गये थे कि उन्हें किसी दूसरेके द्रव्य ग्रहणकी इच्छा न रही। यह यज्ञ ब्रह्मसरोवरके निकट हुआ। (वनपर्व ९५ अ०) ज्ञात होता है कि राजर्षि गयके यज्ञ करनेसे ही वह स्थान गया और महापुण्यस्थान-जैसा पूर्वकालको प्रसिद्ध हुआ। (महाभारत, द्रोण ६६ अ०) महाभारतमें यह स्थान गयराज-अभिसंस्कृत महीधर तीर्थ-जैसा अभिहित है। (वनपर्व ८४।८-१०) पाण्डव वहां तीर्थ करने गये थे।

हरिवंशके मतमें मनुके यज्ञमें मित्र तथा वरुणके अंश द्वारा इला नाम्नी एक कन्याने जन्म लिया था। वही कन्या पुरुषरूपमें मनुके पुत्र सुद्युम्न नामसे विख्यात हुई। इन्हीं सुद्युम्नके ३ पुत्रोंके मध्य गय नामक कोई पुत्र हुए। उन्होंने गया पुरीमें राजधानी निर्माण की। (हरिवंश १० अ०)

वायुपुराणीय गयामाहात्म्यमें लिखा है—

महाबलशाली गय नामक एक विष्णुभक्त असुर रहे। वह १२५ योजन उच्च और ६० योजन स्थूल थे। आकृति भयङ्कर होते भी उनका चरित्र बुरा न रहा। गयासुर अतिशय धार्मिक और नम्र-स्वभाव थे। अकारण वह किसीका कोई अनिष्ट न करते थे। वह कुछ दिन पीछे कोलाहल पर्वत पहुंच करके विष्णुकी आराधना करने लगे। उनकी कठोर तपस्या देख करके देवताओंके प्राण घबरा गये, वह सब मिल और परामर्श करके पितामहके निकट पहुंच करके कहने लगे—गय यदि इसी प्रकार और थोड़े दिन तपस्या करेंगे, तो सभी देवता

लोग अपने अपने अधिकारोंसे वञ्चित होंगे, अत इसी समय पितामह ! इसका जो हो, विधान कर दीजिये। विरिञ्चि देवगणको ले करके विष्णुके निकट उपस्थित हुए वहाँ एक सभा होने पर ठहरा था—इसी समय सब मिल गयको वर दे करके विरत करें। इसी परामर्शके अनुसार ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति सभी कोलाहल पर्वत पर जा उपस्थित हुए और गयासुरको वर देने लगे। परोपकारी गयासुरने राज्य, ऐश्वर्य प्रभृति कुछ भी न माग करके कहा था—यदि आप लोग मुझ पर सन्तुष्ट हुए हैं, तो ऐसा विधान करें—जिसमें मेरा शरीर ब्राह्मण, तीर्थ-शिला, देवता, मन्त्र, योगी, सन्यासी, कर्मी, धर्मी प्रभृति आदि सभी पवित्र पदार्थोंसे भी पवित्र हो जावे। देवगण असुरकी चालाकी समझ न सके, उसने जो मांगा, स्वीकार करके यथास्थानको चल दिए। गयासुरका शरीर पवित्र हो गया। वह फिर नगर भ्रमणको निकले थे। उनका पवित्र शरीर देख करके सभी जीवजन्तु चतुर्भुज हो वैकुण्ठको चलने लगे। नगर जनशून्य हुआ था। फिर गयासुर जिसी नगर या ग्रामको गये, प्राणिगण चतुर्भुज बनने लगे। उस समय देवताओंने असुरकी चालाकी समझी, परन्तु कोई युक्ति ठहरायी जा न सकी। यमको ही चिन्ता अधिक थी कारण गयासुरका शरीर पवित्र होने पीछे कोई पशुपक्षी यमके घर नहीं पहुंचा। यम और दूसरे देवताओंने साथ साथ पितामहके निकट जा करके कहा था—'प्रभो! सर्वनाश उपस्थित है। गयासुरका पवित्र शरीर देख करके सभी वैकुण्ठ चले जाते हैं। यमपुरी एक प्रकारसे प्राणीशून्य है। आप जो हो, कोई उपाय बतला दीजिये।' ब्रह्मा देवगणको ले करके विष्णुके निकट पहुंचे। विष्णुके परामर्शसे गयासुरका शरीर यज्ञके लिये मांगा और कई ब्राह्मण कल्पना करके उनसे उसका अनुष्ठान कराया गया। समस्त देवगण उस यज्ञमें पहुंचे थे। गयासुरके शरीर पर ही यज्ञ किया गया। ब्रह्माके आदेशसे यमने धर्मशिला ले आ करके गयासुरके ऊपर रख दी और असुरको निश्चल बनानेके लिये सब देवता उसके ऊपर चढ करके खड़े हुए। किन्तु इससे गयासुर निश्चल न हुआ। पीछेको गदाधर विष्णुके आ करके खड़े होनेसे वह ठहरा था। गयासुर देवताओंका उद्देश समझ करके कहने लगा—यदि आप एक बार भी इस अधमसे कह देते, तो मैं कभी न हिलता डुलता। देवगणने इस पर अतिशय सन्तुष्ट हो करके वर मांगने को कहा था। गयासुर तब बोल उठा—आप ऐसा वर दीजिये—जिसमें चन्द्र, सूर्य वा पृथिवीके रहने तक समस्त देवगण इस शिला पर अवस्थिति करें, मेरे नाम पर यह स्थान एक पुण्यक्षेत्र बने, पांच कोस गयाक्षेत्र तथा एक कोस गयाशिर रहे और यह सकल तीर्थोंसे श्रेष्ठ ठहरे। देवगणने वही स्वीकार किया और गयासुर निश्चल हुआ। (गयामाहात्म्य)

देवगणके गयाशिरमें पदार्पण करनेसे गयाक्षेत्रमें देवताओंके पदचिह्न देख पड़ते हैं। गयामाहात्म्यमें लिखा है कि उक्त सभी पदचिह्नों पर पिण्डदान करना चाहिये। आज कल बहुतसे लोग यथोक्त विवरण समझते और गयाके पण्डा भी इसी प्रकार गयातीर्थकी उत्पत्ति कीर्तन करते हैं। किन्तु यह उपाख्यान अधिक प्राचीन जैसा नहीं मालूम पड़ता। महाभारतमें गयाक्षेत्रके मध्यस्थ अनेक तीर्थोंका उल्लेख है। किन्तु उसमें गयासुर अथवा उसके मस्तक पर गदाधर और अन्यान्य देवगणोंके पदस्थापनको कोई बात नहीं। महाभारतमें विवृत हुआ है कि गयामें गयशिर, अक्षयवट, महानदी, धर्मारण्य, ब्रह्मसर, धेनुकतीर्थ, गृध्रवट, उद्यन्त पर्वत, योनिद्वार, फल्गुतीर्थ, धर्मप्रस्थ, मतङ्गाश्रम और धर्मतीर्थ विद्यमान हैं। फिर वायुपुराणीय गयामाहात्म्य तथा अग्निपुराणमें जिन स्थानों, तीर्थों वा देवपदों पर पिण्डदानकी कथा है, महाभारतमें उसका भी कोई उल्लेख नहीं। उसमें इतना ही लिखा है कि गयामें धर्मराज स्वय वास करते और पिनाकपाणि भगवान् शङ्कर निरन्तर सन्निहित रहते हैं।

गयाके तीर्थ दर्शनादि सम्बन्धमें नियम यथा हैं। त्रिस्थलीसेतु और गयायात्रा पद्धतिमें लिखते हैं—जिस दिन गयायात्रा करना, पूर्व पूर्व दिनको एकाहार तथा हविष्य भोजन करके और स्त्रीसंसर्ग छोड़ शुचि भावसे रहना चाहिये। उसके दूसरे दिन प्रात स्नानादि करके देशकाल नियमानुसार गयायात्राक अङ्गरूप उपवास

करके सङ्कल्प करते हैं। फिर गयायात्राके दिनको प्रातः-कृत्यादि समापन तथा इष्टपूजादि करने पीछे मस्तक मुण्डन कराके वंशपरम्पराके अनुसार श्राद्ध किया जाता है। श्राद्धान्तको अपना ग्राम पांच बार प्रदक्षिण करके मृत पितृपुरुषोंसे अपने साथ गया चलनेका अनुरोध करना चाहिये।

गयामाहात्म्यमें बतलाया है—गयामें आ करके सर्व प्रथम सवस्त्र फल्गु तीर्थमें और फिर ब्रह्मकुण्डमें स्नान और तर्पण किया जाता है। पीछे प्रेत पर्वत पर प्राचीनावीती और दक्षिण मुख हो करके निम्नलिखित मन्त्र द्वारा पितृलोकको आवाहन और पूजा करके पिण्डदान करना चाहिये—

"कव्यवालोऽनलः सोमो यमश्चैवार्यमा तथा।
अग्निष्वात्ता बर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः॥
आगच्छन्तु महाभागाः युष्माभीरक्षितास्त्वथा।
मदीयाः पितरो ये च कुले जाताः सनाभयः॥
तेषां पिण्डप्रदानाय आगतोऽस्मि गयामिमाम्।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्राद्धेनानेन शाश्वतीम्॥"

श्राद्धार्थ जल ले करके प्रेतपर्वत पर रखने पीछे सुवर्णरेखाङ्कित शिला पर जा पादशौचादि करके पूर्व-दर्शित 'कव्यवाल' इत्यादि मन्त्रसे आवाहन करते हैं। फिर गायत्री पाठ करके पञ्चगव्य द्वारा श्राद्धस्थान शोधन किया जाता है। इसके पीछे प्रेतपर्वतमें श्राद्ध वा पिण्ड-दान करके पितृगणके और अपने प्रेतत्वकी मुक्तिकामनासे सङ्कल्प करके तिलमिश्रित सत्तू और तिल अञ्जलि प्रमाण दान करना चाहिये। प्रायः ४०० सिढ़िया चढ़ने पीछे प्रेतशिला पर पहुंचते हैं। यहां पादशौच सङ्कल्प करके 'कव्यवाल' इत्यादि मन्त्रसे आवाहन और उनका श्राद्ध तथा पिण्डदान मात्र करते हैं। फिर प्रेतशिलाके नीचे प्रभासपर्वतमें सङ्गत महानदीके रामतीर्थको जाना चाहिये। महाभारतमें इस रामतीर्थका उल्लेख न होते भी महानदीकी बात लिखी है। इसके मतानुसार महा-नदीमें स्नान करके पितृलोक तथा देवगणका तर्पण करनेसे अक्षयलोक लाभ और निज कुल उद्धार होता है। (वन ८४ अ०) गयामाहात्म्यके मतमें वहां

"जन्मान्तरशतं साग्रं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्सर्वं विलयं यातु रामतीर्थाभिषेचनात्॥"

मन्त्र पाठ करके स्नान किया जाता है। पीछे श्राद्ध तथा पिण्डदान करके—

'राम राम महाबाहो देवानामभयङ्कर।
त्वां नमामात्र देवेश मम नश्यतु पातकम्॥"

मन्त्र द्वारा रामको प्रणाम करना चाहिये। फिर यम-राजके निकट प्रार्थना करके यमबलि और कुक्कुरबलि दिया जाता है।

इसी प्रथम दिवसको उत्तरमानस भी जाना चाहिये। वहां मानस नामक एक सरोवर है। यह गयाका प्रथमतीर्थ ठहरता और मुण्डपृष्ठ पहाड़ पर पड़ता है। यहां—

"उत्तरे मानसे स्नानं करोम्यात्मविशुद्धये।
सूर्यलोकादिसंसिद्धिसिद्धये पितृमुक्तये॥"

मन्त्रपाठपूर्वक स्नान करते हैं। फिर देव प्रभृतिका तर्पण करके पिण्डदान और श्राद्ध किया जाता है। वहां मौनी हो करके दक्षिणमानसको चलते हैं। उत्तरमानस और उदीची नदीके मध्यमें कनखल नामक एक पितृ-मुक्तिदायक तीर्थ है। गयामाहात्म्य और अग्निपुराणके मतसे उस तीर्थमें स्नान करने पर पुनर्जन्म लेना नहीं पड़ता।

विष्णुपद मन्दिरसे थोड़ी दूर पर एक सरोवर और एक सूर्यमन्दिर है। गयामाहात्म्यमें वहां सूर्यमूर्ति मौनार्क नामसे वर्णित हुई है। इस मन्दिरका नाटमण्डप दैर्घ्यमें ३८ फुट और प्रस्थमें साढ़े २५ फुट निकलेगा। इसके पश्चिमांशमें गर्भगृह है। वह प्रायः ८ वर्गफीट पड़ता है। मन्दिरका प्राचीर इष्टकनिर्मित है, परन्तु स्तम्भ पत्थरके लगे हैं। अरुणचालित सप्ताश्वरथ पर द्विहस्त सूर्यमूर्ति विराजमान है। उक्त सरोवर भी चारों ओरों प्राचीरवेष्टित है। वह दैर्घ्यमें २८२ और प्रस्थमें १५६ फुट बैठता है। सरोवरसे पश्चिम नीमका एक पेड़ है। इस स्थानको लोग कनखल कहते हैं। उससे दक्षिण दक्षिणमानस है। यहां भी तीन तीर्थ विद्यमान हैं। इस सरोवरमें—

"दिवाकरकरोमीह स्नानं दक्षिणमानसे।
नमामि सूर्यं ब्रह्मार्थं पितृणां तारणाय च।
पुत्रपौत्र धनैश्वर्यायायुरारोग्यवृद्धये॥"

मन्त्रद्वारा स्नान तथा पूजा करके श्राद्ध और पिण्डदान

करना चाहिये। दानान्तमें यही मन्त्र पढ़ करके मौनार्क-को नमस्कार करते हैं।

उसके पीछे (दूसरे दिन) फल्गुतीर्थ गमन करना चाहिये। यह तीर्थ अति प्राचीन है। महाभारतमें भी लिखा है कि गयास्थ फल्गुतीर्थ जानेसे अश्वमेधका फल और मन्त्रसिद्धि लाभ होता है। (वनपर्व ८४ अ०) वायुपुराणीय गयामाहात्म्यके मतानुसार पूर्वकालको ब्रह्माकी प्रार्थनासे विष्णुने फल्गुरूपी हो जाकर दक्षिणाग्निमें जो होम किया, उसीको रज कणासे फल्गुतीर्थ बना है। गङ्गा विष्णुकी पादजाता हैं। किन्तु फल्गु-तीर्थ स्वयं आदिगदाधरके द्रवीभूत होनेसे बाने पर गङ्गासे श्रेष्ठ है। त्रिभुवनके सकल पवित्र तीर्थ स्नानकालको फल्गुतीर्थमें सम्मिलित होते हैं।

(गयामाहात्म्य ५।१४।१७)

अग्निपुराणके मतमें गयाशिर ही फल्गुतीर्थ है। फल्गुतीर्थमें स्नान करके गदाधर दर्शन करनेसे जो सुकृत लाभ होता, और किसी प्रकार भी मिल नहीं सकता। (अग्निपुराण ११५।११) गयामाहात्म्यमें अन्यत्र कहा है कि नागकूट, गृध्रकूट और उत्तरमानस सबके मध्यवर्ती स्थानका नाम गयाशिर वा फल्गुतीर्थ है। मुण्डपृष्ठ पर्वतके निम्नस्थानमें ही फल्गुतीर्थ पड़ता है। यहां—

"फल्गुतीर्थे विष्णुजले करोमि स्नानमादृतः।
पितॄणां विष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये॥

मन्त्रसे स्नान तथा तर्पण करके प्रेतशिलासलग्न ब्रह्मकुण्डमें नहा स्वशाखाके अनुसार श्राद्ध और पिण्ड-दान करना चाहिये। पीछे—

"नमः शिवाय देवाय ईशान पुरुषाय च।
अघोर वामदेवाय सद्योजाताय शम्भवे॥"

मन्त्रसे पितामहको और फिर—

'ओं नमो वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय श्रीधराय च विष्णवे॥"

मन्त्रसे गदाधरको प्रणाम तथा पूजा की जाती है।

तीसरे दिन धर्मारण्यको गमन करते हैं। इस स्थान पर धर्मराजने यज्ञ किया था। यहां मतङ्गवापीमें स्नानान्त को तर्पण तथा श्राद्ध करना चाहिये। पीछे निम्नलिखित मन्त्रसे मतङ्गेश्वरको प्रणाम करते हैं—

'प्रमाणं देवताः सन्तु लोकपालाश्च साक्षिणः।
मयागत्य मतङ्गेऽस्मिन् पितॄणां निष्कृतिः कृता॥'

धर्मारण्यके पूर्वको ब्रह्मतीर्थ है। महाभारतमें कहा है कि धर्मारण्योपशोभित ब्रह्मसरतीर्थमें गमन करनेसे ब्रह्मलोक लाभ होता है। ब्रह्माने उस सरोवरमें एक यूप-काठ निखात किया था। उस यूपको प्रदक्षिण करनेसे अश्वमेधका फल मिलता है। गयामाहात्म्यके मतमें यहां ब्रह्मकूप और ब्रह्मयूपमें श्राद्ध करनेसे पितृगणका उद्धार होता है। इसीके निकट (बोधगयास्थ) महाबोधि नामक अश्वत्थवृक्ष है। धर्म और धर्मेश्वरको नमस्कार करके महाबोधि तरुको निम्नलिखित तीन मन्त्रोंसे नमस्कार करना चाहिये—

'चलदलाय वृक्षाय सर्वदा स्थितिहेतवे।
बोधिसत्त्वाय वृक्षाय यज्ञाय नमो नमः॥
एकान्योऽसि वृक्षाणां वसूनां पावकस्तथा।
नारायणोऽसि देवानां वृक्षराज इति प्रियः॥
अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्व कालम्।
अत स त्वं सतत तरूणां धन्योऽसि दुःस्वप्नविनाशनोऽसि॥

अग्निपुराण (११६।२७) में भी लिखा है कि महाबोधि तरुको नमस्कार करनेसे धर्म और स्वर्गलोक मिलता है। किन्तु महाभारतमें इस महाबोधितरु अथवा धर्मेश्वरका कोई उल्लेख नहीं। बुद्धदेवके अश्वत्थवृक्ष मूलमें महाबोधि लाभ करनेसे बौद्ध समाजमें यह महाबोधितरु कहलाता है।

ब्रह्मसरके निकट गोप्रचारतीर्थ है। आजकल यहां एक आम्रवृक्ष रह गया है। गयामाहात्म्यके मतमें यह आम्रवृक्ष ब्रह्मप्रकल्पित है। इसके वृक्षमूलको—

"आम्र ब्रह्मसरोद्भूत सर्वदेवमय तरुम्।
विष्णुरूप प्रसिञ्चामि पितॄणां मुक्तिहेतवे॥"

मन्त्र पाठ करके सींचना चाहिये। फिर ब्रह्मयूपको प्रद-क्षिण करके—

"ओं नमो ब्रह्मणेऽजाय जगज्जन्मादिकारिणे।
भक्तानाञ्च पितॄणाञ्च तारणाय नमोऽस्तु ते॥'

मन्त्र पढ़ कर ब्रह्माको प्रणाम करते हैं। इसके पीछे यथाक्रम यमबलि तथा कुक्कुरबलि दिया जाता है। यमबलि चढ़ानेका—

'यमराज धर्मराजौ निश्चलार्थं [illegible] व्यवस्थितौ।
ताभ्यां बलिं प्रदास्यामि पितॄणां मुक्तिसिद्धये॥"

और कुक्कुरबलिका मन्त्र—

'द्वौ श्वानौ श्यामशवलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यां वलिं प्रदास्यामि स्यातां त्वहिंसकौ सर्वदा॥'

है। पीछे निम्नलिखित मन्त्रसे काकवलि दे कर स्नान करना चाहिये—

"ऐन्द्रवारुणवायव्यायाम्या वै नैऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमा पिण्डं मयोज्झितम्॥"

चतुर्थ दिवस फल्गुतीर्थमें स्नान करके गयाशीर्ष पर विष्णुपदकी यात्रा करते हैं। विष्णुपदका मन्दिर ही गयाके मध्य सर्वप्रधान है। इसके नाटमन्दिरका कारुकार्य अति सुन्दर लगता है। गया ग्रामके मध्य ऐसा कारुकार्य तथा गठनप्रणाली अन्य किसी मन्दिरमें देख नहीं पड़ती। महाराष्ट्र रानी अहल्या बाईने यह सुप्रसिद्ध मन्दिर निर्माण करा दिया। इस मन्दिरको निर्माण करनेमें प्रायः ८ लाख रुपया व्यय हुआ था। मन्दिर धूसरवर्ण ग्रेनाइट प्रस्तरनिर्मित है। मण्डप ५८ फुट चतुरस्र पड़ता है। प्रत्येक कोणमें आठ आठ खम्भे लगे हैं। मूलस्थान बुर्ज जैसा अठकोना है। उसका विस्तार कोई ३८ फुट बैठेगा। इसके ऊपर ८० फुट ऊंची चुड़ा है। नाटमन्दिरके मध्यमें मूलमन्दिरके सामने नेपाल-मन्त्री रणजित् पांड़ेकी दी हुई एक बड़ी घण्टा लटकती है। उसका निनाद, यात्रियोंका जयध्वनि और ब्राह्मणोंका गभीर मन्त्रपाठ श्रवण करनेसे मनमें स्वतः भक्ति सञ्चार होता है। यहां लोगोंकी जितनी भीड़ रहती, गयामें और कहीं भी देख नहीं पड़ती। इसी मन्दिरमें हिन्दूओंके आराध्य गदाधरका पादपद्म है। पादपद्मकी चारों ओरों रौप्यमण्डित है। इसी स्थान यात्री लोग पिण्डदान करते हैं। उनको फेंकते ही पिङ्गलवर्णकी गायें खा डालती हैं गयामाहात्म्यके मतमें वहीं गयासुरका साक्षात् मस्तक विन्यस्त है, वही गयासुरका मुख्य स्थान है। वहां श्राद्ध करनेसे अक्षय पुण्य पाते हैं। आदिगदाधर पितृगणकी मुक्तिके हेतु व्यक्त तथा अव्यक्त रूपमें विष्णुपदकी भांति वास करते हैं। वहां श्राद्ध और पिण्डदान करनेसे अपने आप और सहस्रकुल विष्णुलोक पहुंचते हैं।

विष्णुपद मन्दिरके निकट गयेश्वरीदेवीका एक प्रसिद्ध मन्दिर है। साधारण लोग उन्हींको गयाकी अधिष्ठात्री देवी मानते हैं।

विष्णुपदमन्दिरका कार्य शेष करके यात्री नाटमन्दिर छोड़ किसी स्थानमें पहुंचते, जहां ब्रह्मपद, रुद्रपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्यपद, आहवनीयपद, सभ्यपद, आवसथ्यपद, अर्कपद, कार्त्तिकेयपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, काश्यपपद, गजकर्णपद प्रभृति पद मिलते हैं। एतद्व्यतीत दधीचिपद, चन्द्रपद, मातङ्गपद, कर्णपद, क्रौञ्चपद इत्यादि १८ पदों पर श्राद्ध तथा पिण्डदान करनेका विधान है। आजकल अधिकतर लोग उक्त पदोंके मध्य केवल रुद्रपद और विष्णुपद पर ही पिण्ड दिया करते हैं। गयामाहात्म्यमें लिखा है कि एकतम पदमें श्राद्ध करनेसे भी यजमानका मङ्गल होता है।

पञ्चम दिवसको गदालोलतीर्थमें स्नान करके श्राद्ध और पिण्डदान करना चाहिये। फिर सबसे पीछे अक्षय वट पहुंचते हैं। महाभारतमें लिखा है कि राजर्षि गयके यज्ञकालको एक वृक्ष चिरजीव हुआ, जिसका नाम अक्षयवट है। (द्रोणपर्व ६६ अ०) गयामाहात्म्यके मतमें वहां पितृ उद्देशसे जो कुछ भी दिया जाता, अक्षय फल पहुंचाता है।

गयामाहात्म्यके अनुसार जो यह तीर्थयात्रा कथा लिखी गयी है। इसको छोड़ करके गयाके बीच गायत्रीतीर्थ, समुद्रिततीर्थ, सरस्वतीतीर्थ, विशाला नदी, लेलिहान तीर्थ, भरताश्रम, वैतरणी नदी, घृतकुल्या तथा मधुकुल्या, कोटितीर्थ, रुक्मिणीतीर्थ, पाण्डुशिला, मधुस्रवानदी, कर्दमालतीर्थ, आकाशगङ्गा, स्वर्गद्वार, योनिद्वार, ब्रह्मयोनि, धौतपाद, माहेश्वरीतीर्थ, देवदारुवन, देवीरूपा-शला, धर्मशिला वा धर्मप्रस्थ और मुण्डपृष्ठाद्रिका भी उल्लेख है। फिर आधुनिक गयायात्रा-पद्धतिमें रामशिला, रामगया, जीव्यालोल, रामगिर, तामगिर, सातगिर, भीमगया प्रभृतिका भी नाम मिलता है। आजकल जो लोग गयास्थ ४५ वेदियां पर्यटन करना चाहते, १३ दिनमें सब तीर्थोंका स्नान दर्शन कर सकते हैं।

रामशिला पर्वत पर महादेव तथा पार्वतीका मन्दिर और नाटमन्दिर है। इसी पहाड़के पाददेशमें रामकुण्ड अवस्थित है। गयाके मध्य फल्गुनदीके तट पर मुंडपृष्ठ नामक एक छोटा पर्वत है। उसके ऊपर किसी मन्दिरमें अष्टभुजा देवीमूर्ति विराज रही है।

इसीके निकट आदिगया नामक स्थान है। उसके चारों ओर पत्थरके खम्भे लगे हैं। प्रवाद है कि पूर्वकालको वहीं सब लोग आ करके पिण्डदान करते थे। ब्रह्मयोनि* पर्वत पर एक अद्भुत गह्वर है। उसीको भीमगया कहा जाता है। लोगोंको विश्वास है कि यहां भीम घुटने टिका करके बैठे थे। पहाड़में आज भी उनके बायें घुटनेका चिह्न बना है। इसीसे यात्री भीमगयामें बायें घुटनेके बल बैठ करके पिण्डदान करते हैं। इसी ब्रह्मयोनि पर्वत पर पञ्चानना आदिशक्तिका मन्दिर है। यह १६८० सम्वत्‌को बना था। यहां अनेक देवमूर्तियां पड़ी हैं। सम्राट् औरङ्गजेबके दौरात्म्यसे यहांकी बहुत सी देवमूर्तियां भग्न और श्रीहीन हो गयी हैं।

गयावासियोंको विश्वास है—ब्रह्माने गयावालोंको जो गौ प्रदान किया, यह उसीका पदचिह्न है। किन्तु महाभारतमें लिखा है—पुण्यकी पर्वतोपरि सञ्चरण कालमें सवत्सा कपिलाका जो पद चिह्न पड़ा था आज भी नहीं मिटा है। इन समस्त पदचिह्नोंमें स्नान करनेसे सकल प्रकार अशुभ विनष्ट होता है। (वनप० ८४ अ०)

सकल वेदियोंका दर्शन और पिण्डदानादि शेष होने पर यात्री गायत्रीघाटमें जा पहुंचते हैं। यहीं गयावाल आ करके सुफल बोलते हैं। लोगोंको विश्वास है, गयावालोंके जाकर सुफल प्रदान न करनेसे सभी कार्य बिगड़ जाते हैं। इसीसे उस समय गयावाल तीर्थयात्रियोंको दबा करके बैठ जाते और जहां तक हो सकता, उनसे शेष दक्षिणास्वरूप रुपया ले लेनेमें नहीं चूकते। वस्तुतः सुफल बोलनेके समय पर ही गयावाल यात्रियोंके पाससे जोरके साथ अधिक अर्थलाभ किया करते हैं। पहले यहीं सुफल देते समय यात्रियों पर विलक्षण उत्पीड़न होता था। आजकल अङ्गरेज गवर्नमेण्टके शासनगुणसे उतना उत्पीड़न हो नहीं सकता।

पूर्वकालको गयावाल भी तीर्थयात्रियोंके साथ भ्रमण करके श्राद्धकार्यादि कराते थे, परन्तु अब वह बात नहीं रही। आजकल गयावाल बड़े धनी हो गये हैं, अबके लिये किसीको कोई भावना नहीं। सुतरां आजकल वह अपने आप कोई न करके धामिन नामक अधीनस्थ ब्राह्मणों द्वारा ही सब काम कराया करते और केवल सुफल देनेके समय पर ही देख पड़ते हैं। गयावाल देखो।

गयाका दूसरा नाम पितृतीर्थ है। कारण यहां आ करके हिन्दूमात्र पितृपुरुषोंके उद्देश पिण्ड देनेका विधि है। गयामाहात्म्यमें लिखते हैं—

"आत्मजो वान्यजो वापि गयाभूमौ यदा तदा।
यन्नाम्ना पातयेत् पिण्डं तं नयेद्ब्रह्म शाश्वतम्॥" (१।१५)

निज पुत्र किंवा और कोई किसी भी समयको गया आ करके जिसका नाम ले कर पिण्डदान करता, वह शाश्वत ब्रह्मधाम पहुंचता है।

गयायां धनकालेषु पिण्डं दद्यात् विचक्षणः।
अधिमासे जन्मदिने चास्ते च गुरुशुक्रयोः॥
न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पतौ। (१।१००)

मलमास जन्मदिन, सिंहस्थ बृहस्पति और सर्वकाल पर पण्डितोंको गयामें पिण्डदान करना चाहिये।

"अष्टकासु च वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहनि।
मातुः श्राद्धं पृथक् कुर्यादन्यत्र पतिना सह॥
वृद्धिश्राद्धे तु मात्रादि गयायां पितृपूर्वकम्।
[illegible]
तिलाज्यमधुदध्यादि पिण्डद्रव्येषु यः क्षिपेत्॥
पायसेनापि चरुणा सक्तुना पिष्टकेन वा।
गुडे न तण्डुलाद्यैर्वा पिण्डं तत्र विधीयते॥
मुष्टिमात्रप्रमाणेन चार्द्रामलकमात्रतः।
शमीपत्रप्रमाणेन पिण्डं दद्याद्गयाशिरे॥
उद्धरेत् सप्तगोत्राणि कुलान्येकोत्तरं शतम्।
माता पिता च भार्या च भगिनी दुहिता पतिः॥
पितृष्वसा मातृष्वसा सप्त गोत्राणि वै स्मृताः॥
[illegible]
एतान् [illegible] कुलान्येकोत्तरं शतम्॥ (६ अ

अष्टकादिवस, वृद्धिकाल, गयातीर्थ और मृतदिनमें माताका श्राद्ध पितासे पृथक करना चाहिये। वृद्धिकालको पहले मातृगण और पीछे पितृगणके श्राद्ध करने का विधान है। परन्तु गयामें पहले पितृगण और पीछे मातृगणका श्राद्ध करना चाहिये। तिल, घृत, मधु दधि प्रभृतिके साथ मुष्टि प्रमाण सत्तु द्वारा पिण्ड दिया करते हैं। पायस, चरु, सत्तु, पिष्टक गुड़ और तण्डुलादिसे भी पिण्ड दे सकते हैं। गयाशीर्षमें मुष्टि

* [illegible]

प्रमाण, एक ही आमलकी प्रमाण अथवा अन्ततः एक (क्षुद्र) शमीपत्र प्रमाण भी पिण्ड देना चाहिये। यहां पिण्डप्रदान करनेसे पिता, मातामह, श्वशुर, भगिनीपति, जामाता, पितृष्वसृपति और मातृष्वसृपति-सप्तगोत्रका उद्धार होता है। इसमें पिता तथा मातामहके बीस, श्वशुरके आठ, भगिनीके चौदह, जामाताके सोलह, पितृष्वसृपतिके ग्यारह और मातृष्वसृपतिके बारह—१०१ कुलजात लोग मुक्त होते हैं।

गयामें स्त्रीपुरुषको एक योगसे पिण्डदान करनेका नियम नहीं है—

"स्वगोत्रे परगोत्रे वा दम्पत्यो: पिण्डपातनम्।
अपृथक् निष्फलं श्राद्धं पिण्डोदककर्म च ॥"

यहां स्त्री पुरुषके एकयोगसे स्वगोत्रीय वा भिन्न गोत्रीय मृत व्यक्तिके उद्देशमें पिंडप्रदान वा तर्पण करना निष्फल होता है।

गरुड़ पुराणके मतमें—

"तीर्थश्राद्धं गयाश्राद्धं श्राद्धमन्यच्च पैतृकम्।
अब्दमध्ये न कुर्वीत महागुरुनिपातने ॥"

तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध और कोई भी दूसरा श्राद्ध महागुरुनिपात होनेके एक वर्ष मध्य करना न चाहिये।

किन्तु त्रिस्थलीसेतुको देखते—

"अस्थिक्षेपं गयाश्राद्धं श्राद्धं चापरपक्षिकम्।
प्रथमाब्देऽपि कुर्वीत यदि स्याद्भक्तिमान् सुतः॥"

फिर भी पुत्र यथार्थ भक्तिमान् होनेसे अस्थिक्षेप, गयाश्राद्ध और अपरपक्षश्राद्ध एक वर्षके बीच ही कर सकता है।

मैत्रायणीय परिशिष्टमें लिखा है—

"अन्वष्टक्यं गयाप्राप्ती मृताहे च क्षयाहनि।
मातुः श्राद्धं सुतः कुर्यात् पितर्यपि च जीवति॥"

अर्थात् पिता जीवित रहते भी पुत्र माताका श्राद्ध गयामें कर सकता है। किन्तु हारीतके—

"जीवे पितरि वै पुत्रः श्राद्धकार्यं विवर्जयेत्।"

वचनानुसार जीवत्‌पितृका श्राद्धमें कोई अधिकार नहीं। इसी प्रकार भिक्षु वा संन्यासी लोग भी गयामें पिंडदान कर नहीं सकते। गयामाहात्म्य (११२२) के मतमें-

"दण्डं प्रदर्शयेद्भिक्षुर्गयां गत्वा न पिण्डदः।
दण्डं स्पृष्ट्वा विष्णुपदे पितृभिः सह मोदते॥"

भिक्षुको गयामें पिंडदान न करके दंड प्रदर्श न करना चाहिये। दण्डद्वारा विष्णुपद स्पर्श करनेसे ही वह पितृलोकके साथ शान्तिप्राप्त होता है।

गयाकाश्यप—शाक्यसिंहका एक प्रधान शिष्य। गयामें इन्होंने बुद्धदेवसे दीक्षा पाई थी।

गयादास—एक वैद्यक ग्रन्थकार। भावमिश्र और वैद्यवाचस्पतिने इनका मत उद्धृत किया है।

गयादीन—रामगीतगोविन्द नामक संस्कृत काव्यप्रणेता।

गयारी (हिं॰ स्त्री॰) किसी गृहस्थकी वह जीत जिसे वह लावारिस छोड़ कर मर गया हो।

गयाल (हिं॰ पु॰) वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गयाली—गयावासी ब्राह्मण जाति। तीर्थयात्रियोंको पितृपुरुषका पिंड दिलाना और श्राद्धादि क्रिया कराना इन्होंका प्रधान कर्तव्य है। प्रवाद है कि गयासुरके पृष्ठ पर ब्राह्मण भोजन करानेके लिये पद्मयोनि ब्रह्माने चौदह ब्राह्मणोंकी सृष्टि की थी; उन्हीं ब्राह्मणोंसे इन लोगोंकी उत्पत्ति है। इनमें चौदह गोत्र हैं।

आजकल इनके कुल ३०० घर हैं। इन लोगोंमेंसे बहुत थोड़े पढ़े लिखे हैं। यात्रियोंसे रुपया वसूल करना इनका मुख्य कार्य है। ये बाल्यावस्थासे ही अपना समय बैठ कर ही व्यतीत करते हैं। पान, गांजा और भांग प्रभृति मादक वस्तुओंमें इन्हें बड़ी प्रीति है। ये नाच, गान, तमाशा, तास और पाशा प्रभृति खेल बड़े आनन्दसे खेलते हैं। बड़े भाईके साथ आमोद प्रमोद करनेमें इन्हें जरा भी लज्जा नहीं आती है। सन्ध्या समय ये बन्धुबान्धवोंके साथ वायु सेवनके लिये बाहर जाया करते हैं।

बाल्यावस्थामें ही इन लोगोंकी शादी होती है। विवाहमें इनका बहुत व्यय होता है। लड़का एक सुन्दर पालकी पर बिठाया जाता और आत्मीय स्त्रीयां झुंड बांध कर बारातमें जाती है। कन्याके घर पर लड़केको पहुंचा कर विष्णुमन्दिरके निकट सूर्यकुंड सरोवर पर वे इकट्ठा होती हैं। यहां वे दो चार ब्राह्मणोंको बैठा कर रखती और सोहागिनी (नौवर्षकी विवाहिता लड़की) आकर ब्राह्मणोंके पृष्ठ पर अपने हाथसे सिन्दूरका

तलक देती हैं और फूल चन्दनादिसे पूजा करनेके बाद ब्राह्मणोंको दक्षिणा देकर बिदा करती हैं।

विवाहके बाद कन्या श्वशुरकी गोद पर बैठाई जाती और उसके सीमन्तमें सिन्दूर दिया जाता है। तत्पश्चात् वरके आत्मीयगणको नवीन वस्त्रादि दिये जाते हैं। चार दिनके बाद "चौथारि" या 'चतुर्थी होती है और नवदम्पती स्वजन सहित रुक्मिणीकुण्डके तीर पर उपस्थित होते हैं। यहां दिनके समय उन लोगोंके सामने एक छोटा नाटिकाभिनय खेला जाता है। इस समय कन्याके आत्मीय व्यक्ति कन्याके ऊपर थोड़ा चावल और कौड़ी रखते और कन्या इसको धीरे धीरे फेंकती जाती एवं कृत्रिम क्रोध दिखाती है। इस पर वर उसको सान्त्वना देता है। इस प्रकारके अभिनयके समाप्त होने पर वे नृत्यगीत और भोजनादि शेष करके सन्ध्याके समय घर लौट आते हैं।

यात्रियोंसे प्रचुर धन उपार्जन करके ये सम्पत्तिशाली हो गए हैं। इनमेंसे सामान्य मनुष्यको भी पेटकी चिन्ता करनी नहीं पड़ती है। धनके गौरवसे ये अब स्वयं यात्रियोंका पौरोहित्य नहीं करते लेकिन अधीनस्थ दूसरे ब्राह्मणको इस काममें नियुक्त करते हैं। जब यात्रियोंकी तीर्थयात्रा समाप्त हो जाती तो ये उन्हींसे अपना लभ्य यथेष्ट रुपयों वसूल करते हैं। गया देखो।

गयाशिखर (सं० क्लो०) गयाशिरस देखो।

गयाशीर्ष (सं० क्लो०) गयाके निकटस्थ पर्वतविशेष, गयाके समीपका एक पहाड़।

गयाश्वत्थ (सं० पु०) अश्वत्थवृक्ष, पीपलका पेड़।

गयास उद्-दीन—बङ्गालके एक सुलतान। यह सुलतान सिकन्दर शाहके लड़के थे। सिकन्दर शाहके दो बीबियां रहीं। पहलीके पेटसे १७ लड़के हुए। दूसरीके एक सौतेले बेटे गयास उद्-दीन रहे। ये अपने माईयनसे और कई इल्म पढ़ करके दूसरे भाईयोंकी बनिस्बत बहुत बड़े बन गये। उसीसे सिकन्दर शाह इनको बहुत चाहते थे। परन्तु इससे सौतेली माकी जलन धीरे धीरे बढ़ने लगी। वह तरह तरहकी तदबीरें लड़ाती थीं—सुलतान उनसे कैसे बिगड़ते और मुहब्बत न करते। किसी दिन सुलतानको अकेला देख इनकी सौतेली मांने बड़ी आरजू मिन्नतके साथ कहा—जहांपनाह! मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं, परन्तु हिम्मत नहीं पड़ती, कहनेसे आपका दिल दुखेगा और गुस्सा बढ़ेगा। सुलतान उत्सुक हो करके कहने लगे—कहो, मैं बुरा नहीं मानूंगा, तुम अपनी बात कह डालो। इस पर बेगम बोल उठी—पहले आप कसम खायें, किसीसे वह बात न बतायेंगे। सुलतानने वही किया था फिर बेगम कहने लगी—'इस वक्त मुझे बड़ी आफत है। आपने जब कहनेको हुक्म दिया है, मेरा जी न चाहते भी मुझे कहना ही पड़ेगा। बात यह है कि गयास उद्-दीन मेरे लड़कोंका बर्बाद करनेके लिये साजिश कर रहे हैं। सिर्फ यही नहीं—आपको भी मार डालनेकी बात वह कहा करते हैं। मेरी तरह आपकी भलाई कोई नहीं चाहता। मेरा समझमें उन्हें या तो कैदखानेमें डाल दीजिये या उनकी दोनों आंखें निकलवा ऐसी साजिश करनेसे नाकाम बनाइये। सिकन्दर शाह इस बात पर एक बारगी ही बिगड़ कर बोले थे—'बदमाश! परमेश्वरने तुझे इतने लड़के वाले दिये हैं, जो अब आदमी बन गये हैं। इसके लिये परमेश्वरका शुक्रिया अदा न करके तूने क्यों अपनी सौतके एकलौते बेटेको बर्बाद करने पर कमर कसी है! दूर हो, मैं अब तेरी बात सुनना नहीं चाहता।' सुलतानने यह बातें गयास उद्-दीनको नहीं बतलायीं। परन्तु यह रंग ढंग देख करके शिकारके बहाने सुवर्ण ग्राम भाग गये और वहां फौज इकट्ठी करके और बलवाई हो पाडुयाकी तर्फ चल पड़े। ग्वालपाड़े पहुंचने पर सिकन्दर फौजके साथ बलवा दबानेको वहां गये थे। लड़ाई होने लगी। इन्होंने अपने सिपाहियोंको समझा दिया था कि उनके बापके जिस्ममें हथियारकी चोट लगने न पाती। परन्तु लड़ाईमें फरमांबरदारी नहीं चलती। सिकदरके जख्मी होनेकी खबर पा करके यह रोते रोते उनके पास गये और उनका सर अपनी गोदमें रख कर माफी मांगने लगे। उस वक्त सिकन्दरने कहा था—मेरा काम तमाम हो गया है, तुम मजेमें सल्तनत करो। यही बात कहते कहते वह मर गये। १३६७ ई०को यह तख्तनशीन हुए। फिर इन्होंने सौतेली माके लड़कोंकी आंखें निकाल उसीके

पास भेजो थीं। सिवा इसके गयास-उद्-दीनकी वीरह्र-सीका दूसरा सुबूत नहीं मिलता। यह ७ साल सुनसि-फीसे सलतनत करके १३७३ ई०को मरे। इनकी सुनसि-फी पर एक कहानी कहते हैं — किसी दिन गयास-उद्-दीन कमान ले करके तीर चलाते थे। अचानक एक तीर जा करके किसी बेवाके लड़केको लगा। बेवाने काजीके पास उन पर नालिश की थी। काजीने उन्हें अदालतमें हाजिर होनेको कहा। गयास-उद्-दीन एक तलवार अपनी पोशाकमें छिपा करके अदालत पहुंचे थे। काजीने कहा—तुमने इस गरीब बेवाके लड़केको मारा है: इस लिये यातो इसे किसी तरह राजी करो, नहीं तो फैसलेके मुताबिक सजा झेलो। सुलतानने सलाम करके उस बेवाको खूब दौलत दी थी। उसने गयासको माफ कर दिया और काजीके पास राजीनामा दाखिल किया। काजीने जब उन्हें जानेके लिये कहा, सुलतानने तलवार निकाल कर बताया था—'यदि इस फैसलेमें आपकी जरा भी तरफदारी देखता, इसी हथियारसे आपका सर उतार लेता। अपनी सलतनतमें ऐसी सुन-सिफी होने पर मैं परमेश्वरका शुक्रिया अदा करता हूं।' काजी भी अपना आसा देखा करके कहने लगे—आप यदि नटखटपन करते, यह सोंटा आपका जिस्म तोड़ डालता। सुलतानने उस पर और भी राजी हो करके काजीको इनाम दिया था।

और भी एक कहानी है। गयास कुछ खुशतबा थे तीन फूलोंके नाम पर उनकी तीन उपपत्नियां रहीं। एक मरतबा बहुत बीमार होने पर उन्होंने लोगोंसे कह रखा था—मेरे मरने पर यही तीनों औरतें मेरे जिस्मको नहलायेंगी। परन्तु थोड़े दिनों बाद उनकी बीमारी दूर हो गयी। इन तीनों उपपत्नियों पर ज्यादातर मुहब्बत रहनेसे दूसरी उपपत्नियां डाहमें 'गोशाल' कह कर उनका मजाक उड़ाया करती थीं। सुलतान उसकी खबर पा करके सोचने लगे, कैसे उन तीनोंको कद्र बढ़ाना चाहिये। आखीरको उन्होंने तीनोंके नाम एक शायरी बनायी थी। परन्तु उसका पहला मिसरा लिख करके वह आखरी गिरह लगा न सके। पीछेको फारसके मशहूर शायर हाफिजके पास लोग भेजे गये। चिट्ठी-में उनके बङ्गाल आनेका बड़ा तकाजा था। जब लोग हाफिजके पास पहुंचे, उन्होंने बगैर कुछ कहे सुने पहले दूसरा मिसरा सुना दिया। पीछे हाफिजने चिट्ठी पढ़ी। उन्होंने जवाब भेज दिया, परन्तु बङ्गाल जानेसे इनकार किया।

गयास-उद्-दीन लिखने पढ़नेके बड़े शौकीन थे। इन्होंने वीरभूमके नगर नामके शहरके रहनेवाले फकीर हामिद-उद्-दीनसे धर्मनीति सीखी थी। पीर कुतुब-उल्-आलम इनके साथ पढ़नेवाले रहे। सुवर्णग्रामकी टूटी फूटी इमारतोंमें इनकी कब्र आज भी मौजूद है।

गयास-उद्-दीन—बङ्गालके एक सूबेदार। इनका दूसरा नाम इमाम-उद्-दीन एवाज था। यह ईरान-गोर राज्य-के किसी बड़े खानदानमें पैदा हुए और उम्र बढ़ने पर रुपया कमानेके लिये तुर्किस्तान पहुंचे। वहां पुश्तअफरोज नामके किसी पहाड़ पर चढ़नेमें इन्होंने दो फकीरोंको देखा था। फकीरोंने इनसे पूछा—तुम्हारे पास खानेको कोई चीज है। उस वक्त इन्होंने खाना निकाल कर रख दिया, फकीर लोग उसे खाने लगे। फिर यह पानी ले आये थे। फकीरोंने खा पी करके इनसे कहा—तुम हिन्दुस्थान चले जाओ, वहां तुम्हारे लिये तख्त खाली है। यह उस बातको मान करके हिन्दुस्थान पहुंचे और बख्तियारकी मातहतीमें काम करने लगे। बख्-तियारने इन्हें बङ्गालमें ले जा करके गङ्गतरीका हाकिम बनया था। परन्तु आज तक इसका कोई पता नहीं गङ्गतरी कहां थी। जो हो, यह थोड़े दिनों बाद देव-कोटके सूबेदार हो गये। उस वक्त देवकोट एक बड़ी छावनी थी। इनकी मददसे बादशाहके अहलकारोंने मुहम्मद सेवान और दूसरे खिलजी सरदारोंको जीता। दिल्लीके बादशाहने बख्तियार खिलजीके पीछे अली-मर्दान खिलजीको बङ्गालका तख्त सौंपा था। अली-मर्दानके आते वक्त यह कुशी नदी किनारे जा करके उनसे मिले और उनके पीछे पीछे देवकोट पहुंच उनको तख्त पर बैठा दिया। ६०७ हिजरीको बादशाह कुतुब-उद्-दीनके मरने पर अलीमर्दानने दिल्लीकी मात-हती न मान आजाद हो करके अपना नाम अला-उद्दीन् रखा था। परन्तु २ साल बाद ही खिलजियोंने उन्हें

कतुन करके ६०८ हि०को इन्हें सूबेदार बनाया। इमाम उद् दीनने भी पीछेको दिल्लीकी मातहती छोड़ अपना नाम गयास उद्-दीन रख लिया। इन्होंने ६१६ हि०को अपने नामसे रुपया चलाया और गौड़नगरमें बहुतसी अच्छी इमारतों, एक मदरसे और यतीमखानेको बनाया। बाढ़के वक्त मुल्कको पानीमें डुबनेसे बचाने और आने जानेमें लोगोंको तकलीफ छुड़ानेके लिये इनके हुक्मसे देवकोटसे वीरभूमको राजधानी 'नगर' तक दश दिनकी राहमें बाँध लगा था। मुकदमा फैसल करते वक्त यह क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या अमीर क्या गरीब किसी की तरफदारी न करते थे। इन्होंने आसाम, त्रिहुत, त्रिपुरा और उड़ीसाका कितना ही हिस्सा जीत वहांके राजाओंसे खिराज वसूल किया। इनके नजराना दिल्ली न भेजनेसे बादशाह अल्तमास फौजके साथ चढ़ आये। परन्तु इन्होंने नावोंको हटा करके बादशाहकी फौज गङ्गा पार न होने दी। अखीरको सुलहका सदेशा भेजने पर बादशाह ठण्डे पड़े। सुलह हो गयी कि बादशाहके नामसे रुपया चलाया और उन्हींके नाम पर फरमान् सुनाया जावेगा, गयास उद् दीन बहुतसी दौलत और ३८ हाथी बादशाहको देंगे और २ लाख तक बरा बर दिल्लीको खिराज भेजते रहेंगे। इनके उन सभी बातोंमें राजी होने पर बादशाह दिल्ली लौट और अला उद् दीनको विहारका सूबेदार बनाये गये। बादशाहके चले जाने पर इन्होंने गङ्गा पार हो उन सूबेदार और बादशाही फौजको हटा विहारको अपने इख्तियारमें कर लिया।

बादशाह यह खबर पाने पर बहुत बिगड़े। उन्होंने अपने बेटे नसीर-उद् दीनको फौजके साथ बङ्गाल जीतने भेजा था। उस समय गयास उद् दीन बङ्गालके पूर्वी राजाओंसे लड़नेमें लगे थे। इस लिये नसीर उद् दीनने बेलड़े भिड़े अवध पहुंच करके लखनऊ राज धानी ले ली। इन्होंने यह खबर सुनते ही व [illegible] जा करके बादशाहके फौजसे घमासान लड़ाई की थी अखीरको हारने पर (६२४ हि०) यह मार डाले गये। गयास उद् दीनकी तारीफ बादशाह अल्तमास तक किया करते थे।

गयास उद् दीन—बङ्गालके एक नवाब। ये नवाब जलाल-उद् दीनके पुत्रको विनाश कर १५६४ ई०में बङ्गालके सिंहासन पर बैठे थे। इन्होंने कुछ दिनों तक राज्य किये थे।

गयास उद् दीन करत् १म—हिरात् बालख और गजनीके राजा। इन्होंने १३०७से १३२८ ई० पर्यन्त राज्य किया था।

गयास उद् दीन करत् २य-हिरात, मरखस और नैसापुरके राजा। ये १३७० ई०को सिंहासन पर बैठे और बारह वर्ष तक राजा रहे। १३८१ ई०में तैमूरलङ्गने हिरात् प्रदेशको जय करके सपुत्र गयास् उद् दीनको बन्दीकर मार डाला।

गयास् उद् दीन खिलजी—गुजरातके एक सुलतान। ये १४६८ ई०में सिंहासन पर आरूढ़ हुए। ३३ वर्ष राज्य करनेके बाद जब ये वृद्ध हो गये तो उनके दो लड़के उनकी मृत्यु कामना करने लगे। अन्तको दोनों भाइयोंमें विवाद आरम्भ हुआ। ज्येष्ठ नासिर उद् दीनने कनिष्ठ सुजात खांको विनाश कर १५०० ई०के २२वीं अक्तूबरको राज्यभार ग्रहण किया। एक दिन इसने अपने वृद्ध पिताको विष खिला कर मार डाला।

गयास उद् दीन तुगलक—दिल्लीके एक बादशाह। इन का असली नाम गाजीबेग तुगलक था, बाप करानिया तुर्क और मा जाटन थीं। इनके बाप सुलतान गयास उद् दीन बलबनके गुलाम रहे। इन्होंने बड़ी गरीबीमें अला उद् दीन खिलजीके भाई उलग खांकी मातहतीमें मामूली सिपाहीका काम इख्तियार किया था। परन्तु हिम्मत और होशियारको देख करके मालिकने इन्हें ब [illegible] फौजदार बना देवलपुर भेज दिया। बादशाह नसीर-उद् दीन या खुशरूके चालचलन पर बड़े बड़े लोगोंने बिगड़ उनके खिलाफ साजिश करके बलवा उठाया था। यह बलवाइयोंके फौजदार हो करके नसीर-उद् दीनसे लड़े। लड़ाईमें बादशाह हारे और मारे गये। मुल्कके अमीर उमराने इन्हें तखत पर बिठला शाहजहां नामसे श्रद्व बजाया था। यह बादशाह बनना नहीं चाहते थे परन्तु सबके चाहने सुननेसे इन्होंने सल्तनतका बोझ उठा लिया। इन्होंने शाहजहां जैसा ऊंचा खिताब न ले करके अपना नाम गयास उद् दीन रखा और एक ही

हफ्तेके बीच चारों ओर इतनी अच्छी तरकीब लगायी, जो बहुत दिनोंसे देखनेमें न आयी थी। काबिल शख्स समझ करके इन्होंने उसराको खिताब और जागीर भी दे डाली। उस वक्त हिन्दुस्थानमें मुगलोंका जोर जुल्म बढ़ रहा था, इन्होंने सब मुल्कको अच्छी तरह बचानेका इन्तजाम किया और खुसरूके तरफदारोंको दबा दिया। बड़े बेटे उलग खां सल्तनतके वारिस ठहराये गये और दूसरे लड़के ओर ओर मुल्कोंको मुखतार बना करके पहुंचाये गये। इससे बहुतसे मुल्कों और किलों पर बादशाहका दखल हो गया। लखनऊमें बलवा होने पर यह उलग खांको दिल्लीमें छोड़ अपने आप वहां पहुंचे और वहां बलवाइयोंको हरा बहुतसी दौलत जवाहरात ले चले। सितार गांवके हाकिम बहादुर खांने इनका हुक्म न माना था। उनके गलेमें जञ्जीर डाली गयी और उससे वह खींच कर लाये गये।

थोड़े दिनों बाद वरङ्गलमें बलवा उठा था। बादशाहके लड़के उलग खांने जा करके शहरको घेर लिया। राजा लड्डरदेव उनसे बड़े जोरोंमें लड़े थे। गर्मी और लुसे घबरा करके बादशाहकी फौज धड़ाधड़ मरने लगी। सिपाही दिल्ली लौटने पर तुल गये और बहुतसे आदमी फौजदारसे वे कहे सुने रातको भाग खड़े हुए। शाहजादेको लाचार हो घेरा छोड़ करके लौटना पड़ा। लौटते वक्त दुश्मनोंने पीछा करके बहुतसे सिपाही मार डाले। दिल्ली वापस आने पर शाहजादे नई फौज इकट्ठा करके फिर लड़नेको चले थे। इस मरतबा विदर और वरङ्गल पर दखल हो गया। उन्होंने राजाको बांध करके दिल्ली भेजा था।

इसी बीचमें एक बार अफवाह उड़ी—सुलतान मर गये। इस अफवाहके उड़ानेवालोंको सुलताननें पकड़ करके जीतेजी कब्रमें गड़ा दिया। बादशाहने उनसे कहा था—तुमने झूठ ही जीते जी मुझे दफनाया है, मैं सचमुच तुम्हें जीते जी कब्रमें पहुंचा दूंगा।

बङ्गालके लोगोंने अपने सूबेदारकी कुछ शिकायत की थी। ७२४ हि०को यह अपने आप उसकी तहकीकात करने चले और जाते वक्त शाहजादे उलग खांको दिल्लीमें सल्तनतका कामकाज सौंप गये। उस वक्त बहादुर पूर्व बङ्गालके सूबेदार थे। उनकी राजधानी सुवर्णग्राममें रही। उन्होंने बादशाहकी परवा न करके अपने नामसे रुपया चलाया था। उनके जोर जुल्मसे सब जलते रहे। गयास-उद-दीनके आते वक्त तिरहुत पहुंचने पर लखनऊके नवाब शहाब-उद-दीन बबरा शाह या बबरा खांने उनकी मातहती कबूल की। इन्हीं शहाब-उद-दीनने अपने भाई सुवर्णग्रामके बहादुर शाह पर बादशाहके पास नालिश दायर की थी। यह सुवर्णग्राम गये और बहादुरको हरा करके गलेमें रस्सी डाल दिल्ली भेजते हुए अपने आप भी दिल्लीको चल पड़े। राहमें इन्होंने तिरहुत जीता था। राजधानी पहुंचते वक्त शाहजादे उलग खांने इनकी अगवानीको आगे आ अफगानपुरमें लकड़ीका एक मकान बना करके उसमें इनकी अभ्यर्थना की। तरह तरहकी धूमधामके पीछे गयास-उद-दीन वहांसे दिल्लीको चलने लगे। उसी वक्त लकड़ीका मकान इन पर फट पड़ा और यह चल बसे। कोई कोई कहता है कि शाहजादे बहुत दिनोंसे उनके मारनेकी फिक्रमें थे और इसीके लिये यह मकान बनाया गया था। राजावलीग्रन्थमें लिखा है कि उस वक्त दिल्लीमें औलिया नामके एक महापुरुष रहे। उन्हें सब लोग बादशाहसे ज्यादा मानते थे। बङ्गालसे लौटते वक्त राहमें बादशाहने उन्हें लिख भेजा—चाहे आप दिल्लीमें रहें चाहे मैं, दोनों एक जगह नहीं टिक सकते। महापुरुषने इसके उत्तरमें लिखा था—दिल्ली अभी बहुत दूर है। बादशाह यह बात सुन तुगलकाबादके जिस घरमें जा करके रहे, उसीको छत टूट करके उनके ऊपर गिर पड़ी। यह घटना १३२५ ई० (७२५ हि०) को हुई थी। इन्होंने दिल्ली शहर नये सरसे बना करके तुगलकाबाद नामका किला बनाया। 'तारीख मुबारक शाही' नामकी किताबमें लिखा है कि वह किला बनानेमें ३ सालसे भी ज्यादा वक्त लगा था। किला रेतीले पत्थरका बना है। अरब परिव्राजक इब्न बतूताने मुलतानकी जुमा मसजिदमें एक खुदी हुई शिल्पलिपि देखी थी। उसमें बादशाहके बारेमें लिखा है—हमने २८ मरतबा तातारियोंको हमला करके हराया है। इसीसे हमारा नाम मालिक

इमानोर है। गयास उद् दीनने ४ माल २ महीने राजत्व किया।

गयास उद् दीन तुगलक २य— दिल्लीके एक बादशाह। ये बादशाह फिरोज शाह तुगलकके नाती और फते खांके पुत्र थे। फिरोजशाहकी मृत्यु होने पर १३८८ ई०में गयास उद् दीन गद्दी पर बैठे। भोगविलासमें लगे रहनेके कारण राजकार्यमें अवहेला करते थे। इस लिये राज्यके प्रधान प्रधान मनुष्य और सैन्य सामन्तने विद्रोही हो कर १३८९ ई०की १९वीं फरवरीको इन्हें मार डाला। इन्होंने सिर्फ छह मास राज्य किया था। इनके शासन कालके समय मामूद शाह नामक पार्वतीय राजाके साथ इन्हें युद्ध करना पड़ा था।

गयास उद् दीन् बलबन—किसी तुर्की सामन्तके पुत्र। मुगलो ने इन्हें लड़कपनमें चुरा करके बेच डाला था। फिर यह बगदाद पहुंचे और वहांसे दिल्ली लाये गये। दिल्लीके बादशाह अलतमासने इन्हें बड़ी कीमतमें खरीदा था। मिनहाज उस् सराज जूरजानी नामक किसी मुसलमानने उन्हींकी अमलदारीमें तबकात इ नासरी नामक इतिहासकी रचना किया। इस इतिहासमें बादशाहकी अमलदारीके पहले हिस्सेका ज्यादा हाल लिखा है। इन्होंने सम्राटको उलग खां नामसे अभिहित किया है। मिनहाजका मृत्यु हो जानेसे उनके ग्रन्थमें परवर्ती कालका वृत्तान्त लिपिबद्ध नहीं हुआ। पिछले वक्तकी बातें जिया उद् दीन बरनीकी बनायी हुई 'तारीख फीरोजशाही' में आ गयी है। इस किताबमें बादशाहकी तारीफ ही ज्यादा है, बुराईका कोई जिक्र नहीं। दूसरी तारीखो से यह समझा जा सकता है। सुननेमें आता कि बादशाह अल्तमासने पहले पहल उन्हें खरीद करके बाज चिड़ियेका मुहाफिज बनाया था। इनके एक भाई उस वक्त शाही दुनियाके एक ऊंचे ओहदे पर रौनक अफरोज थे। उन्हीं की मददसे गयास उद् दीनने ऊंचा अमीर दरजा पाया था। अल्तमासके लड़के रुक्न उद् दीनकी अमलदारीमें यह पञ्जाबके एक हाकिम मुकरर हुए और थोड़े दिन पीछे दिल्लीकी मातहती न मान करके अपने नामसे ही पञ्जाब पर हुकूमत करते रहे। सुलताना रजियाकी अमलदारीमें कुछ लोगो ने उनके खिलाफ साजिश की थी। गयास उद् दीन उनमें मिल करके फौजके साथ दिल्लीको रवाना हुए। वहां लड़ाईमें हारने पर यह पकड़ लिये गये। थोड़े दिनो बाद कैदखानेसे भाग करके इन्हो ने बहरामको मदद दी थी। बादशाह बहरामके वक्त यह हांसी और रेवाडीके हाकिम मुकरर हुए। इसी वक्त मेरठका बलवा दबानेसे इनकी खूब नामवरी बढ़ी। अला उद् दीन मुसऊदके जमानेमें यह अमीर हाजबके ओहदे पर बिठलाये गये। फिर नसीर-उद् दीन बादशाहकी अमलदारीमें गयास उद् दीन कहनेको तो वजीर रहे परन्तु बादशाहका सभी काम इन्हींको करना पड़ता था। नसीर-उद् दीनके कोई लड़का न रहनेसे यह अपना बलबन नाम रख करके १२६६ ई०के फरवरी महीने दिल्लीके तख्त पर बैठ गये। उस वक्त बहुतसे तुर्की गुलामोंने उमराव बन करके सलतनतके बड़े बड़े ओहदे दबाये थे। गयास-उद् दीन अपने आप गुलामोंसे बादशाही पर पहुंचे थे। फिर यह इस कोशिशमें लगे, उन्हीं की तरह कोई दूसरा तुर्क तख्त पर न बैठ जाय और उन्हीं के घरानेमें बादशाही बनी रहे। पहले इन्होंने तुर्की उमरावोंकी बर्बाद करके फौजी मुहकमा मजबूत कर लिया था। उसके पीछे यह जासूसोंको रख करके चुपके चुपके अहलकारोंका हाल मङ्गाने लगे, जिससे राजधानीको छोड़ करके ज्यादा कहीं आ जा न सके। थोड़े दिनो ऐसे ही हुकूमत करके पीछेको बहुतसी बातों में इन्हो ने सखावत दिखलायी थी। खानदानकी इज्जतका इन्हें बड़ा खयाल था, परन्तु हिन्दुओं का एतबार न करते थे। गयास-उद् दीन हिन्दुओं को कोई बड़ा काम न सौंपते थे। यह आलिमो की बड़ी इज्जत करते और उसीसे इनके दरबारमें बहुतसे आलिम फाजिल मौजूद रहते थे। इतिहास लेखक फरिश्ता कहते कि उनके वक्त दरबारमें बड़ी चहल पहल रही। बादशाहकी टेवारिखो बहुतसे उनकी नकल करते थे। गयास उद् दीन पहले शराब पीते थे, परन्तु तख्त पर बैठते ही इन्होंने उसको छोड़ दिया। उस वक्त शराब पीनेवालेको कड़ी सजा मिलती थी मुल्कमें कोई शराब बनाने न पाता था।

किसी वक्त इन्होंने सलतनतके सब बुड्ढे अहलकारोंको छुट्टी दे करके उन्हें खानेपीनेके लिये आधी तनखाह देनेका हुक्म निकाला। आजकल अङ्गरेज गवर्नमेण्टकी अमलदारीमें ऐसा पेनशन बड़ी इज्जतके साथ लिया जाता है। किन्तु उस समयके लोग इससे बहुत नाखुश हुए। उन सबने मशविरा करके दिल्लीवाले फौजदारके पास पहुंच उसके रोकनेकी कोशिश करनेको कहा था। फौजदार बादशाहके बड़े मुंह लगे थे और सब लोग उन्हें इज्जतकी निगाहसे देखते थे। दूसरे रोज वह बादशाहके पास जा मुंह लटका करके खड़े हो रहे। बादशाहके उसका सबब पूछने पर फौजदारने कहा था, यह सोचते थे—परमेश्वरके पास यदि सब बड़े-बूढ़े परित्यक्त होते, उनकी क्या हालत हो जाती। बादशाह सब समझ गये और बुड्ढोंको अपना अपना काम करनेके लिये कहने लगे।

बलबनके भतीजे शेरखान् लाहोर मुलतान आदि प्रदेशोंकी हुकूमत् मुकरर थे। उस समय वहां मुगलोंको लूटमार जारी रही। १२७० ई०को उनके मरने पर बलबनके बेटे महमूद उनके ओहदे पर बैठाये गये और सलतनतमें ढिंढोरा भी पिटा कि गयास-उद्-दीनके मरने पर उनके बेटे वही महमूद वारिश हो करके तख्त नशीन् होंगे।

बलबनके एक मरतबा बीमार होने पर उनके मरनेकी अफवाह उड़ी। बङ्गालके सूबेदार तुगरल खान्ने यह खबर पा करके अपनेको खुद मुख्तार नवाब जैसा बतलाया था। बलबनने इस बातकी इत्तिला मिलने पर अवधके सूबेदार अलप्तगीन या असीर खान्को बङ्गालका सूबेदार बना बहुत बड़ी फौजके साथ रवाना किया। अलप्तगीनको हारने पर इन्होंने गुस्सेमें बिगड़ करके फांसी पर चढ़ाया था। फिर मल्लिक तिरमती तुर्क नामके कोई दूसरे शख्स बङ्गाल भेजे गये। परन्तु उन्हें भी हार करके पीछे लौटना पड़ा। उस वक्त बलबन अपने आप आगे बढ़े थे। तुगरल राजधानी छोड़ करके त्रिपुराको भाग गये, बादशाह उनके पीछे पड़े। कोल राज्यके सूबेदार मल्लिक मकाबूर थोड़ीसी फौज ले करके चुपकेसे तुगरलके खेमेमें पहुंच 'बलबन बादशाहकी फतह' बोलते बोलते जिसे ही सामने पाया, कत्ल करने लगे। तुगरल आफत आयी देख दरया पार उतरने लगे, परन्तु उसी वक्त मल्लिकके एक तीरका निशाना बन करके गिर पड़े। मल्लिकने उनका सर काट करके जिस्म को दरयामें बहा दिया। फिर बलबनने तुगरलके सभी खानदानियोंको मार डाला। इसके पीछे गयास-उद्-दीन गौड़को लौटे और अपने बेटे नसीर-उद्-दीन बघरा खान्को बङ्गालका सूबेदार बना दिल्ली चले गये। दिल्ली पहुंचने पर उनके बड़े बेटे उनसे मिले। बलबनने उन्हें इस विषयमें समझा बुझा मुलतान भेज दिया, मेरे न रहते तुम्हें किस तरह सलतनतका कामकाज चलना पड़ेगा। उसी समय तैमूर खान् फौजके साथ जा वहां लूटपाट मचाने लगे। महमूदने लड़ाईमें उन्हें हराया था। परन्तु वह थक कर नदी किनारे पानी पीने गये उसी वक्त तैमूरने दबे पावों उनको हमला करके मार डाला। बलबनका यह खबर पा करके दिल टूट गया और वह अपने मरनेका राह देखने लगे। उन्होंने बङ्गालसे बघरा खान्को बुला करके अपना वारिश ठहराया और उनको अपने पास मरते दम तक रहनेको कहा। बघरा खां मरनेमें देर देख बादशाहसे बे कहे सुने बङ्गालको चल पड़े। बलबनने इस पर बिगड़ कर महमूदके लड़के खुसरूको अपना उत्तराधिकारी बनाया और १२८६ ई०को इस दुनियासे कूच किया।

गयास-उद्-दीन बाहमणि—दक्षिणापथमें बाहमणि राज्यका एक राजा वा सुलतान १३९७ ई०का अपने पिता माहमूद शाहकी मृत्युके बाद ये राज-गद्दी पर बैठे। लालचीन नाम एक तुर्की गोलामने सोचा था कि गयास-उद्-दीनके राजत्व लाभ होने पर वह उनका मंत्री नियुक्त होगा, लेकिन जब उसने देखा कि उसकी आशा धूलमें मिल गई तो उसने क्रोधित हो कर अपने छुरासे गयास-उद्-दीनकी दोनों आंखें निकाल डालीं और सागरके दुर्गमें अवरुद्ध कर उनके पितृव्य सामस-उद्-दीनको गद्दी पर बैठाया।

गयास उद्-दीन महमूद—घोर और गजनीके राजा। १२०५ ई०में ये राजसिंहासन पर बैठ कर राजत्व करने लगे। चार वर्ष राजत्व करनेके बाद २१ जुलाई शनिवारको

रात्रिमें मुहम्मद अली शाहके नौकरोंने इन्हें मार डाला।

गयास उद् दीन महमूद घोरि—घोर और गजनीके अधिपति गयास-उद् दीन मुहम्मदके पुत्र। पिताका मृत्यु होनेके बाद उसके पितृव्य शाहाब उद्-दीन सिंहासन पर आरूढ़ हुये और उनके मरने पर गयास उद् दीन महमूदने राजत्व लाभ किया। ये बहुत आलसी राजा रहे। १२१० ई०में इनका देहान्त हुआ।

गयास उद् दीन मुहम्मद—एक ग्रन्थकार। ये युक्तप्रदेशमें लखनऊके अन्तर्गत माहाबाद परगनाके मुस्तफाबाद या रामपुरमें रहते थे। यह जलाल उद् दीनके पुत्र और सरफ उद् दीनके पौत्र रहे। गयास उद् दीनने चौदह वर्ष अनवरत परिश्रम करके १८२६ ई०में "गयास उल लुघात्" नामक अभिधान पारसी भाषामें सम्पूर्ण किया था। इसके अतिरिक्त और बहुतसी किताबें उन्होंने रचना की है।

गयास उद् दीन मुहम्मद घोरि—घोर और गजनीके अधिपति। ११५७ ई०में राजत्व लाभ करके इसने अपने भाई शाहब उद्दीन मुहम्मद पर गजनीका शासनभार अर्पण किया। १२०२ ई०के १२वीं माच बुधवारको इनकी मृत्यु हुई।

गयासाबाद—बङ्गाल प्रान्तके मुर्शिदाबाद जिलेका एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २४ १७ ३२ उ० और देशा० ८८ १९´ ४१´ पू०में आजमगञ्जसे ३ कोस उत्तर भागीरथीके दक्षिण उपकूल पर अवस्थित है। इसका प्राचीन नाम बदरीहाट है। गौडके किसी पठान नवाब गयास उद् दीनके नामसे गयासाबाद कहा जाता है। स्थानीय ध्वंसावशेष देखनेसे यह बहुत पुराना नगर जैसा समझ पड़ता है। उसमें एक दुर्ग, राजप्रासाद, पालि भाषाकी लिपिमें खोदित प्रस्तरस्तम्भ स्वर्णमुद्रा तथा मृत्पात्रादि मिलते हैं। इसका कोई इतिहास नहीं, पहले यहां किस वंशीय राजा राजत्व करते थे। पालि भाषालिखित शिलाफलक देखनेसे अनुमान होता है कि पहले यहां किसी बौद्ध राजाका राजत्व रहा। ध्वंसावशेषकी कुछ चीजें कलकत्तेके अजायब घरमें ला करके रखी गयी हैं।

गयेर (सं० स्त्री०) ग्रेपा (Saliva)।

गरड (हिं० पु०) मट्टीका घेरा जो चक्कीके चारों तरफ आटा गिरनेके लिये बनाया जाता है।

गर (सं० क्ली०) ग्यारह करणोंमें से पांचवां करण। 'ववबालवकौलवतैतिलाख्यगरवणिजविष्टिस ञ्ज्ञानाम।" (बृहत्स०हिता ९८।४)

२ विष, जहर। ३ वत्सनाभ नामक विष। ४ सम्मोहजनित विष। (पु०) गीर्यते इति कर्मादो अच। ५ विष, जहर। ६ सर्पविष। ७ रोग, बीमारी।

गरक (अ० वि०) १ निमग्न, डूबाहुवा। २ विलुप्त, नष्ट, बरबाद। ३ किसी कार्यमें लीन या मग्न।

गरकाव (फा० पु०) १ डूबनेका भाव, डूबाव। (वि०) २ निमग्न, डूबा हुआ। ३ बहुत अधिक लीन।

गरकी (अ० स्त्री०) १ अतिवृष्टि। २ डूबनेकी क्रिया वा भाव।

गरग—बम्बई प्रदेशके धारवार जिलेका एक गण्डग्राम। यह धारवारसे १० मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ४५०० है। मोटे सूती वस्त्रका व्यवसाय यहां अधिक होता है।

गरगज (हिं० पु०) १ तोप रखनेका बुर्ज जो किलेकी दीवारों पर बना हुआ रहता है। २ युद्धकी सामग्री रखी जानेकी कृत्रिम टीला।

गरगरा (हिं० पु०) घिरनी, चरखी।

गरगवा (हिं० पु०) एक प्रकारकी घास जो धानकी फसल बढ़ने नहीं देती। इसे सिर्फ भैंसे खाते हैं।

गरगीर्ण (सं० त्रि०) जिसने विष पान किया हो।

गरगीर्णी (सं० पु०) १ वह जिसने विष पान किया हो। २ एक ऋषि।

गरघ्न (सं० पु०) कृष्णार्जक, कृष्णपत्र क्षुद्रतुलसी। २ विषनाशक। ३ बर्बर, बबूल।

गरघ्नी (सं० पु०) गरघ्न ङीप्। मत्स्यविशेष, गरई मछली। इसका गुण—मधुर,कषाय, वातपित्त और कफनाशक, रुचि और बलवीर्यकर है। (भावप्रकाश)

गरज (हिं० स्त्री०) बहुत गम्भीर और तुमुल शब्द।

गरज (अ० स्त्री०) आशय, प्रयोजन, मतलब।

गरजउल—त्रिहुत जिलान्तर्गत एक विभाग। इसके और छ सर्वविभाग हैं। गण्डक, छोटी गण्डक, धिया, नून और कदाना कई एक नदियां इस विभागमें हो कर प्रवाहित हैं। इस विभागके प्रधान नगर मुजफ्फरपुर और ताजपुर हैं। मुजफ्फरपुरसे हाजीपुर तक दो रास्ते गये

हैं। पुराना रास्ता शाहपुर और नया रास्ता गुडिया होते हुये इटावरमें खाँ सराइ नामक स्थान पर एक दूसरेसे मिल गये हैं। एक रास्ता हाजीपुरसे कन्हौली और महोवा थाना होता हुआ पूसा और दरभङ्गा तक चला गया है। गरजउलके मध्य लालगञ्ज और महोवा नामक ग्राममें बाजार है। कनहौली, घटारु तथा रसुलगंज नामक और कई एक प्रधान ग्राम इसके अन्तर्गत हैं।

गरण (सं० क्ली०) गृ सेचने, गृ निगरणे वा भावे ल्युट्। १ सेचन, सींचन। २ भक्षण, भोजन, खाना।

गरजन (हिं० पु०) १ गंभीर शब्द, गरज, कड़क। २ गरजनेका भाव। ३ गरजनेकी क्रिया।

गरजना (अ० क्रि०) १ बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना। २ चटकना, तड़कना।

गरज़मन्द (फा० वि०) १ जिसे आवश्यकता हो, जरूरतवाला। २ इच्छुक, चाहनेवाला।

गरजी (अ० वि०) १ गरजमन्द, गरजवाला। चाहनेवाला।

गरजुआ (हिं० स्त्री०) एक तरहकी खुमी। यह श्वेत रंग लिये गोलाकार होती है। वर्षा ऋतुके पहला पानी पड़ने पर यह प्रायः साखू आदिके वृक्षोंके निकट वा मैदानोंमें पृथ्वीसे निकल आती है। इसके ऊपर सिर्फ गूदा ही होता है। इसकी तरकारी स्वादिष्ट होती है। बहुतोंका विश्वास है कि यह बादलके गरजनेसे पृथ्वीसे निकलती है। सफरा, गगनफूल इसके भेद है।

गरजू (हिं० वि०) गरजी देखो।

गरट्ट (हिं० पु०) समूह, झुण्ड।

गरडेन रीच—बङ्गालके चौबीस परगना जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २२° ३३' उ० और देशा० ८८° १९' पू०के बीच गङ्गा नदीके पूर्वीय तीर पर अवस्थित है। यहांकी जनसंख्या २८२११ है। जिनमेंसे १२१८१ हिन्दू, १५७७९ मुसलमान और १८७ ईसाई हैं। यह शहर कलकत्ताके आसपास एक प्रसिद्ध वाणिज्य स्थानमें गण्य है। यहांकी आय लगभग ४९०००) रुपया और व्यय ४६०००) रु० है।

गरद (सं० त्रि०) गरं विषं ददातीति गर-दा-क। १ विषप्रद, विषदेनेवाला।

"अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः।" (मनु ३।१५४।)

(क्ली०) गृ भावे अप् गरो भक्षणम्। २ विष, जहर। ३ एक प्रकारका रेशमी कपड़ा।

गरदन (फा० स्त्री०) १ धड़ और सिरका जोड़नेवाला अंग, ग्रीवा। २ लम्बी लकड़ी। यह जुलाहोंकी लपेटके दोनों सिरों पर आड़ी लगाई जाती है, मान, बरतन आदिका ऊपरी पतला भाग।

गरदन-घुमाव (हिं० पु०) एक प्रकारका कुश्तीका पेंच। इसमें खेलाड़ी अपने जोड़का दाहिना वा बायां हाथ धर कर अपने गले पर रखते और उसे सामनेकी ओर पटक देते हैं।

गरदना (हिं० पु०) १ मोटी गरदन। २ वह धौल या झटका जो गरदन पर लगे।

गरदनियां (हिं० स्त्री०) गरदन पकड़ कर किसी आदमीको बाहर निकालनेकी क्रिया।

गरदनी (हिं० स्त्री०) १ कुरते आदिका गला। २ गलेमें पहननेका एक प्रकारका आभूषण, हंसुली। ३ अर्द्धचन्द्र, गरदनियां। ४ घोड़ेकी गरदन पर बांधनेका कपड़ा। ५ कारनिस, कङ्गनी। ६ कुश्तीका एक पेंच।

गरदर्प (सं० पु०) सर्प, सांप, भुजङ्ग।

गरदा (फा० पु०) धूल, मट्टी, खाक, गर्द।

गरदान (सं० क्ली०) दा-ल्युट्। गरस्य दानम्, ६-तत् विषप्रदान, जहरका देना।

गरदान (फा० वि०) २ घूम फिर कर एक ही स्थान पर आनेवाला। (पु०) ३ वह कबूतर जो घूमफिर कर अपने स्थान पर आता हो।

गरदानना (फा० क्रि०) १ शब्दोंका रूप साधना। २ पुनः पुनः कहना। ३ गिनना, समझना, मानना।

गरदुआ (हिं० पु०) पशुओंका एक प्रकारका ज्वर। यह वर्षाऋतुके आरम्भमें बहुत भींगनेके कारण हुआ करता है। इस ज्वरमें पशुके सब अंग जकड जाते और गलेमें घरघराहट होने लगती है।

गरध्वज (सं० क्ली०) अभ्रक, अबरक।

गरधरन (सं० पु०) विषको धारण करनेवाला, शिव, महादेव।

गरनाल (हिं० स्त्री०) एक बहुत चौड़े मुखकी तोप।

इसका मुंह इतना चौड़ा रहता है कि इसमें आदमी सहजसे चला जा सके, घननाल, घननाद।

गरनाग्निनी (सं० स्त्री०) पीतवर्ण देवदालीलता, देवदारु।

गरप्रिय (सं० पु०) वह जिसको विष प्रिय लगता हो, शिव, महादेव।

गरबई (हिं० स्त्री०) अभिमानका भाव।

गरबाना (अ० क्रि०) घमण्डमें आना, अभिमान करना, शेखी करना।

गरबा (हिं० पु०) एक प्रकारका गीत जो प्रायः गुजराती स्त्रियां गाती हैं।

गरबिला (हिं० वि०) जिसे गर्व हो, घमण्डी, अभिमानी।

गरभ (सं० पु०) गीर्यते इति गृ अभच। यद्वा गर्भस्य गरभो देशः। गर्भ, हमल।

गरभदान (हिं० पु०) ऋतुप्रदान, पेट रखाना।

गरभाना (अ० क्रि०) १ गर्भिणी होना। २ धान गेहूं आदिके पौधेमें बाल लगना।

गरभी (अ० वि०) अभिमानी, घमंडी।

गरम (फा० वि०) १ जिसके छूनेसे जलन मालूम हो, तप्त, उष्ण। २ तीक्ष्ण, उग्र, खरा। ३ तेज, प्रबल, प्रचण्ड जोरशोरका। ४ जिसका गुण उष्ण हो। ५ उत्साहपूर्ण, जोशसे भरा।

गरमा गरमी (हिं० स्त्री०) उत्साह, मुस्तैदी, जोश।

गरमाना (अ० क्रि०) १ उष्ण पड़ना, गरम पड़ना। २ उमंग पर आना। ३ क्रोध भरना, आवेशमें आना।

गरमाहट (हिं० स्त्री०) उष्णता, गरमी।

गरमी (फा० स्त्री०) उष्णता, ताप, जलन।

गरमीदाना (हिं० पु०) अंधोरी, अभौरी छोटे छोटे लाल दाने जो गरमी ऋतुमें पसीनाके कारण शरीर पर निकलते हैं।

गरमूर—पूर्वीय बङ्गाल और आसामके शिवसागर जिलाका एक ग्राम यह अक्षा० २६ ५८ उ० और देशा० ८४° ८ पू०के मध्य माजुली द्वीप पर अवस्थित है। यहां गोसाईं सम्प्रदायका वास है जिन्हें आसामके मनुष्य बहुत सम्मान किया करते हैं। इन्हें अहोम राजाओंसे ४०००० एकर शुल्करहित जमीन मिली थी, किन्तु बरमाके राजाओंने उनका यह अधिकार कायम न रखा तथा उक्त जमीन उनसे छीन् ली। उस समय गोसाईं वृन्दावनमें रहते थे और वे अपना अधिकार पुनः पलटानेकी कुछ भी चेष्टा न की। अब इसके विषयमें सरकारकी ओरसे तहकीकात् हो रही थी तोभी सरकारने २३१ एकर शुल्क रहित जमीन उन्हें प्रदान की है।

गरलि नानि—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ प्रदेशका एक ग्राम। यहां स्वतन्त्र एक जमीन्दार हैं जो सिर्फ बरोदा गायकवाडको कर देते हैं।

गरलि मति—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ प्रदेशका एक ग्राम। यह ग्राम एक जमीन्दारके अधीन है। उन्हें बरोदा गायकवाडको और जुनागढ़के नवाबको कर देना पड़ता है।

गररा (हिं० पु०) एक प्रकारका घोड़ा, गर्रा।

गरराना (हिं० क्रि०) भीषण ध्वनि करना, गरजना।

गररी (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी चिड़िया, गलगलिया।

गरल (सं० क्ली०) १ विष, जहर। गरलमिव कलयति (गीतगोविन्द ७।१) २ सर्पविष। ३ घासका मुट्ठा, घासकी चटिया, पुला।

गरलधर (सं० पु०) १ विष धारण करनेवाला, महादेव। २ सर्प, सांप।

गरलारि (सं० पु०) गरलस्य अरि, ६ तत्। मरकतमणि, पन्ना।

गरव्रत (सं० पु०) गर विषयत् सर्प भक्षण व्रत यस्य, बहुव्री०। मयूर, मोर।

गरवा (हिं० वि०) महान, गरुई, भारी।

गरसपुर—मध्यभारतके ग्वालियर राज्यका एक नगर। यह अक्षा० २३ ४० उ० तथा देशा० ७४ ८ पू०में अवस्थित है। यहां एक पक्का प्राचीन घर है जिसमें बहुत तरहके शिल्पकार्य खुदे हुए हैं।

गरह (हिं० पु०) १ ग्रह। २ अरिष्ट।

गरहन (सं० पु०) १ कृष्णार्जक, काली तुलसी। २ बर्व्वर, बबई, ममरी, (त्रि०) ३ विषनाशक।

गरहन (हिं० पु०) एक प्रकारकी मछली।

गरहर (हिं० पु०) वह काठ जो नटखट चौपायोंके गलेमें लटकाया जाता है। कुंदा, ठेगा, ठेकुर।

गरहाजिरी (फा० स्त्री०) अनुपस्थित।

गरा (सं० स्त्री०) गीर्यते भक्ष्यते इति गृ-अप्। १ देवदालीलता, दंदाल। २ भक्षण, भोजन, खाना।

गरागरी (सं० स्त्री०) गरं मूषिकविषं आगिरति गृ-पचादित्वात् अच्। देवताड़वृक्ष, देवदाली, वंदाल, घघरवेल, सोनैया वेल।

गराज (फा० स्त्री०) गम्भीर शब्द, गर्जना गरज।

गराड़ी (हिं० स्त्री०) घिरनी, चरखी।

गराधिका (सं० स्त्री०) गरे विषप्रतीकारे अधिका प्रधाना। लाक्षा, लाह।

गरात्मक (सं० पु०-क्ली०) १ शोभाञ्जनवृक्ष, सोहिञ्जनका पेड़। २ सोहिञ्जनका बीज।

गरारा (हिं० वि०) गर्वयुक्त, प्रवल, प्रचंड, वलवान्।

गरारि—बङ्गदेशके पुर्णिया जिलान्तर्गत एक परगना। इसके मध्य होकर कोशी नदी प्रवाहित है। इस नदीकी वाढ़से अनेक प्रकारकी क्षति प्रतिवर्ष हुआ करती है। यहां चावल, सरसों, तम्बाकू और नील उत्पन्न होते हैं।

गरारिग—जातिविशेष। ये लोग इलाहावादसे फरुखावाद प्रदेशमें रहते हैं। इस जातिकी कई एक श्रेणियां हैं। यथा—इलाहावादी, जौनपुरी, वाकरकाशान, वरफता, भेड़ारिया, चिकावा, धाङ्गड, निखर, पाचेट और तसेलहा। चिकावा मुसलमानधर्मावलम्बी, धाङ्गड़ जौनपुरी और निखरगण कम्बल बुन कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। भेड़ासे भेड़ारिया नाम हुआ है। भ्राताकी मृत्यु होने पर उसकी विधवा स्त्रीका विवाह कराना इन लोगोंमें निषिद्ध नहीं है। इनका आचार व्यवहार ग्वालाके जैसा होता है। गरेरि देखो।

गरारी (हिं० स्त्री०) गरारि देखो

गरांव (हिं० पु०) १ तीन मस्तूलवाला एक प्रकारका वड़ा जहाज। इसका व्यवहार १४वीं और १५वीं शताब्दीको वङ्गाल और उसके आसपासकी खाड़ियोंमें होता था। २ साधारण नाव।

गरावन (पु०) गरावन देखो

गरावा (हिं०) हलकी जमीन। कम उपजाऊ भूमि।

गरिमन् (सं० पु०) गुरोर्भावः। १ गुरुता, गौरव। २ माहात्म्य, महिमा। ३ गुरुत्व, भार। 'गिरि' गरिमा परिमः प्रकम्पयन्।" (भागवत ८।२१।२१) ४ गर्व, अहङ्कार, घमण्ड। ५ आत्मश्लाघा, शेखी। ६ आठ सिद्धियोंमेंसे एक सिद्धि।

गरिया—जातिविशेष। कामरूप अञ्चलमें इनका वास है। ये मुसलमानधर्मावलम्बी हैं। साधारण मुसलमान इन्हें नीचजाति समझ कर घृणा करते हैं। ये गोमांस और शूकर मांस भक्षण करते तथा दरजीका काम करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

गरिया (हिं० पु०) वृक्षविशेष। यह प्रायः मध्यप्रदेश, मध्यभारत, वरार और मन्द्राजमें पाये जाते हैं। इस वृक्षकी पत्तियां शिशिर ऋतुमें झड़ जाती हैं। इसकी लकड़ीसे गाड़ी, तस्वीरोंके चौखटे, मेज तथा कुरसियां बनाई जाती हैं। हिन्दुस्थानसे यह लकड़ी विलायतको वहुत जाती है और वहां अलमारी, कुरसी, मेज, बुरुशके दस्ते आदि बनानेके काममें आती है।

गरियाना (हिं० क्रि०) दुर्वचन कहना, गाली देना।

गरियार (हिं० वि०) वह मनुष्य जो अपनी जगहसे जल्दी न उठे, सुस्त, बोदा, मट्ठर।

गरियालू (हिं० पु०) एक प्रकारका रङ्ग जो काला-सोना होता है। इस रंगसे ऊन रंगा जाता है। इसकी प्रस्तुतप्रणाली यह है कि दो सेर नीलका चूर्ण गन्धकके तेजाबमें मिला कर एक मजबूत वरतनमें रख छोड़ें। इसे सिर्फ एक रात इसी दशामें रहने दें। जिस ऊनको रङ्गाना हो उसे चूनेके पानीमें डुबा कर कई बार स्वच्छ जलसे धोकर घाममें सुखा ले पुनः खौलते हुये पानीमें थोड़ासा रङ्ग वरतनमेंसे लेकर मिला दे और ऊनको उसमें तव तक रहने दें जब तक उसमें रङ्ग नहीं चढ़ जाय। जब रङ्ग अच्छी तरहसे जम जाय तो उसे निकाल कर फिटकिरी मिले पानीमें पका कर डालें।

गरिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन गुरुरिति गुरु-इष्ठन् गरादेशश्च। १ अतिगुरु, अत्यन्त भारी। २ जो पचनेमें हल्का न हो, जो शीघ्र न पचे। ३ अति महत्, वहुत वडा। ४ अति गौरवान्वित, वहुत नामवर। ५ मर्यादाविशिष्ट, प्रतिष्ठित, इज्जतदार। (पु०) ६ एक दानवका नाम।

"गरिष्ठश्च दमायुश्च दीर्घजिह्वश्च दानवः।" (भारत १।६५।२०)

७ एक राजाका नाम। (भारत २।८।१२) ८ एक तीर्थस्थान।

गरी (सं० स्त्री०) ग अच् ङीप। १ देवताडवृक्ष। २ खरा जिससे घर छाया जाता है।

गरी (हिं० स्त्री०) नारियल फलके भीतरका गुदा। यह नरम और स्वादिष्ट होता है।

गरीब (अ० वि०) १ नम्र, दीन, हीन। २ दरिद्र, निर्धन, अकिंचन कंगाल।

गरीबनिवाज (फा० वि०) दीनों पर दया करनेवाला, दुःखियोंका दुःख दूर करनेवाला, दयालु।

गरीबपरवर (फा० वि०) गरीबों को पालनेवाला, दीन, प्रतिपालक।

गरीबाना (फा० वि०) गरीबों की तरहका।

गरीबामऊ (हिं० वि०) गरीबों के योग्य, छोटा मोटा, भला बुरा।

गरीबी (अ० स्त्री०) १ दीनता, अधीनता, नम्रता। २ दरिद्रता, निर्धनता, कंगाली।

गरीयस (सं० पु०) अतिशयेन गुरु गुरु ईयसुन् गरादेश। १ अतिशय गुरु, अत्यन्त भारी। २ अतिगौरवान्वित, वह जिसका बहुत मान हो। ३ मर्यादासम्पन्न, प्रतिष्ठित मनुष्य, इज्जतदार आदमी।

गरीयसी (सं० स्त्री०) गरीयस् स्त्रियां ङीप्। १ अत्यन्त भारीपन। २ अतिमाननीया, वह जिसका मान बहुत होता हो। ३ अतिगौरवान्वित।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। (रामायण)

गरुआई (हिं० स्त्री०) गुरुता, भारीपन।

गरुड (सं० पु०) गरुद्भ्यां पक्षाभ्यां डयते इति, डी ड, पृषोदरादित्वात् तलोप। विनताके गर्भजात कश्यपात्मज पक्षिराज। (रामायण १।३५।१०) इनका नामान्तर—गरुत्मान् तार्क्ष्य, वैनतेय, खगेश्वर, नागान्तक, विष्णुरथ, सुपर्ण, पन्नगाशन, महावीर, पक्षिसिंह, उरगाशन, शाल्मली, हरिवाहन, अमृताहरण, नागाशन, शाल्मलीस्थ, खगेन्द्र, भुजगान्तक, तरस्वी और तार्क्ष्यनायक है।

कश्यपने पुत्रेच्छु हो करके यज्ञ आरम्भ किया। उन्होंने इन्द्र, बालखिल्य और अन्यान्य देवताओंको यज्ञीय काठ लानेमें लगाया था। इन्द्र अपने बलवीर्यके अनुरूप पर्वतप्रमाण काष्ठराशि उत्तोलन करके अनायास पहुंचाने लगे। अङ्गुष्ठ प्रमाण बालखिल्य ऋषि सब मिल करके किसी पलाशपत्रका वृन्त उठाये लिये जाते थे। इन्द्र पथिमध्य उनका उपहास और अवमानना करके शीघ्र ही चल दिए। इस पर बालखिल्य मुनि अन्तरमें अत्यन्त क्रुद्ध हो करके देवराजके भयप्रदर्शनार्थ अन्य व्यक्तिको इन्द्र बनानेके लिये एकान्त यत्न करने लगे। यह समझने पर इन्द्र अत्यन्त सन्तापचित्त हो करके कश्यपके शरणापन्न हुए। प्रजापति कश्यपने इन्द्रकी यह बात सुन बालखिल्योंके निकट जा करके कर्म सिद्धिका विषय पूछा था। सत्यवादी बालखिल्योंने महात्मा कश्यपको प्रत्युत्तर दे दिया। उस समय कश्यपने उनको सान्त्वना पूर्वक कहा था—'देखो, ब्रह्माके नियोगसे यह इन्द्र हुए हैं। आप लोग भी तपस्या करके अन्य इन्द्रके निमित्त यत्न कर रहे हैं। आप सज्जन हैं, इस लिये ब्रह्माके वाक्यमें अन्यथा करनेके योग्य नहीं। फिर आपका भी सङ्कल्प मिथ्या नहीं जा सकता। आप लोगों में यह पक्षियों के इन्द्र बनें। देवराज आप लोगों से याचना करते हैं। आप भी इनके प्रति प्रसन्न हो।' इस पर बालखिल्य बोल उठे—'हमने आपके सन्तान निमित्त सङ्कल्प करके इस कार्यका अनुष्ठान आरम्भ किया है। आप वही कीजिये, जिसमें मङ्गल हो। इसी समय दक्षकन्या विनतादेवीने पुत्रके निमित्त अभिलाष करके अपने स्वामीके निकट आगमन किया था। कश्यप उनसे कहने लगे—हे देवि! तुम्हारा यह अभिलाष सिद्ध होगा। तुम त्रिभुवनके प्रभुत्वसम्पन्न दो पुत्रों को प्रसव करोगी। बालखिल्यों की तपस्या और मेरे सङ्कल्प द्वारा तुम्हारे दोनों पुत्र पक्षियों का इन्द्रत्व करेंगे। फिर विनता सफलकाम हो करके हृष्टचित्त हो गयीं और यथाकाल अरुण तथा गरुड नामक दो पुत्रों को प्रसव किया। अरुण विकलाङ्ग हो करके जन्मग्रहण पूर्वक सूर्यदेवके सम्मुख अवस्थित रहे। गरुड पक्षियों के इन्द्रत्व पद पर अभिषिक्त हुए।

महातेजस्वी गरुडने स्वयं अण्ड विदीर्ण करके जन्म ग्रहण किया था। जन्मकालको इनका रूप—अग्निराशि की भांति प्रभासम्पन्न, अतिशय भयङ्कर, प्रलयकालके अग्नि जैसा प्रदीप्त, विद्युत्की तरह पिङ्गलवर्ण चक्षु विशिष्ट, समुद्राग्नि सदृश घोरतर उग्र, घोर स्वरविशिष्ट और महाकाय था।

गरुड़के विष्णुवाहन होनेकी कथा महाभारतमें इस प्रकार लिखी है—पक्षिराज अमृत ले करके निकले थे। गरुड़के साथ राहमें विष्णु भी रहे। नारायणने उनके प्रति तुष्ट हो करके कहा—मैं तुमको वर दूंगा। गरुड़ने उत्तरमें मांग लिया—मैं आकाशगामी हो करके आपके उपरिभागमें रहूं और अमृत व्यतिरेक भी अजर अमर बनूं। विष्णुने विनतापुत्रको 'तथास्तु' कह करके वही वर दिया था। गरुड़ने उक्त वर ग्रहण करके विष्णुको कहा-मैं भी आपको वर दूंगा, ग्रहण कीजिये। विष्णुने महाबल गरुड़से मांगा था—आप मेरे वाहन बनें और ध्वज पर रह करके मेरे उपरिभागमें अवस्थिति करें।

गरुड़ स्वीय पदनखमें गज तथा कच्छप और चञ्चु-पुटमें महावटवृक्ष धारण करके आकाशमार्गमें उड़े थे। अमृतके लिये देवताओंके साथ इनका घोरतर युद्ध हुआ उसमें इन्होंने जय लाभ किया था। (महाभारत, आदिपर्व)

२ व्यूहविशेष। (मनु ७।१८७) ३ विंशति प्रकार प्रासादों-के मध्य कोई प्रासाद, किसी किस्मकी बड़ी इमारत। (वृहत्संहिता ५६। २४)

४ जैनमतानुसार स्वर्गके इन्द्रक विमानोंमेंसे ३५वां विमान। ५ एक जातिके देव। इनकी १६० देवियां (स्त्री) होती हैं।

गरुड़गामी (सं० पु०) १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

गरुड़गिरि—एक गिरि-शृङ्ग। यह महिसूर राज्यमें कादुर जिलान्तर्गत अक्षा० १३° २८´ उ० और देशा० ७६° १७´ पू०में अवस्थित है।

गरुड़घण्टा (हिं० पु०) ठाकुरजीको पूजामें बजाया जानेवाला एक घण्टा। इसके ऊपर गरुड़की मूर्ति बनी रहती हैं।

गरुड़ध्वज (सं० पु०) गरुड़ो ध्वजो यस्य, बहुव्री०। १ विष्णु।

"गरुड़ध्वजतो वाम समगाद गरुडध्वजः।" (भागवत ३।४।२६)

२ एक प्रकारका खंभ जिस पर गरुड़की आकृति बनी रहती है।

३ जैनमतानुसार प्रथमश्रेणीके विद्याधरोंमेंसे एक। ४ गरुड़कुमार।

गरुड़ नदी—मन्द्राज प्रदेशके अन्तर्गत दक्षिण अर्काट जिला-की एक नदी। यह कल्लकुरचि तालुकमें विगल सरो-वर नामक स्थानसे निकल कर मञ्जना नदीके साथ मिल गई है और ३० कोस जाकर वङ्गोपसागरमें गिरी है। नदीका तलदेश अत्यन्त वालुकामय है।

गरुड़पाश (सं० पु०) एक प्रकारका फन्दा या फांसी। इसे प्राचीन कालमें शत्रुको फंसाने और बांधनेके लिये उस पर फेंकते थे।

गरुड़पुराण (सं० क्लो०) गरुड़ाय उक्तं विष्णुना पुराणम्, मध्यपदलो०। अष्टादश पुराणान्तर्गत सप्तदश महा-पुराण। भगवान् गरुड़ासनने यह पुराण गरुड़से कहा था। इसमें १८००० श्लोक हैं। यह पुराण तार्क्ष्य कल्प-की कथा अवलम्बनसे वर्णित हुआ है। इसमें नीचे लिखा-जैसा विवरण है—सूतनैमिषीय-संवादमें सूतकी गरुड़पुराणकथनजिज्ञासा, गरुड़पुराणकी उत्पत्तिकथा, रुद्रविष्णुसंवादमें सृष्टिकथन, प्रजापतिसृष्टि, कश्यपकृत सृष्टि, सूर्यादिपूजाकथन, विष्णुपूजाकथन, दीक्षाविधि, लक्ष्मीपूजा, नवव्यूहार्चन, पूजाक्रम, विष्णुपञ्जरकथन, संक्षेपमें योगोपदेश, विष्णु सहस्रनाम, विष्णुध्यान तथा सूर्यपूजाकथन, मृत्युञ्जयपूजा, गारुड़विद्या, शिवोक्त सर्पमन्त्र, पञ्चवक्त्रपूजा, शिवपूजा, गाणपत्यादि पूजा, पादुकापूजा, करन्यासादि कथन, विषहरण, गोपालपूजा, श्रीधरादिमन्त्रकथन, विष्णुपूजाका प्रकारान्तर, पञ्चतत्त्वार्चन, सुदर्शनपूजादि, हयग्रीवपूजा, गायत्रीमाहात्म्य, दुर्गादिपूजाविधि, प्रकारान्तरमें सूर्यपूजा, महेश्वरपूजा, नानाविद्याकथन, शिवपवित्रारोहण, विष्णुपवित्रारोहण, मूर्तामूर्तध्यान, शालग्रामलक्षण, वास्तुनिर्णय, प्रासाद-लक्षण, देवप्रतिष्ठाकथन, योगधर्मादि, आह्निकनिर्णय, दानधर्म, प्रायश्चित्तविधि, अष्टनिधिकथन, प्रियव्रतवंश-वर्णनमें सप्तद्वीपादि वर्णन, भूसंस्थानकथन तथा भारत-वर्षका विवरण, प्लक्षद्वीपके राजपुत्रादिका नामकीर्तन, सप्त पाताल और नरकवर्णन, सूर्यादिके प्रमाण और संस्थानका वर्णन, ज्योतिःसार कीर्तनमें नक्षत्राधिप और योगिनी प्रभृतिका वर्णन, इत्यादि विचार, चन्द्र शुद्धादि, लग्नमान, चरस्थिरादि भेदसे कार्यविशेष की कर्तव्याकर्तव्यताका कथन, संक्षेपमें पुरुषों और नारि-योंका शुभाशुभ लक्षण, सामुद्रिक लक्षण, शालग्रामशिला-

भेदकथन, तीर्थ कथन, प्रभमादि षष्टिवर्षकीर्तन, पवन विजयादि, रत्नोत्पत्तिकथन, रत्नपरीक्षा, मुक्ताफलपरीक्षा, पद्मरागपरीक्षा, मरकतपरीक्षा, इन्द्रनीलपरीक्षा, वैदूर्य-परीक्षा, पुष्परागपरीक्षा, कर्कतनपरीक्षा, भीष्मरत्नपरीक्षा, पुलकपरीक्षा, रुधिररत्नपरीक्षा, स्फटिकपरीक्षा, विद्रुम परीक्षा, संक्षेपमें बहुतीर्थ कथन, गयामाहात्म्य, गयातीर्थ की उत्पत्ति प्रभृतिका कथन, गयामें स्नानभेद और क्रिया-भेदसे फलभेदकथन, फल्गु नदीमें स्नान और रुद्रपदादि में पिण्डदानमाहात्म्यादि कथन, विशाल नृपतिका इति-हास, प्रेतशिलादिमें पिण्डदानकथन, प्रेतशिलादिमें श्राद्धकर्ताका फल, चतुर्दश मनु और तत्पुत्र तथा उनके मन्वन्तरके सप्तर्षि और देवादि कीर्तन, मार्कण्डेय क्रोष्टकिसंवादमें रुचिका उपाख्यान, रुचकृत पितृस्तव, पितृगणके निकटमें रुचिको वरप्राप्ति, रुचिका प्रणय, रौच्य मनुको उत्पत्ति, हरिध्यान, प्रकारान्तरमें हरिध्यान, याज्ञवल्क्योक्त धर्मकथनमें धर्मदेशादि कथन, उपनयन तथा स्वाध्यायकीर्तन, गृहस्थ धर्मनिर्णय, सद्योऽशौचा‌दि, पञ्च महायज्ञ सन्ध्योपासनादि कथन, स्त्रीका धर्म और वर्णधर्मादि कथन द्रव्यशुद्धि, दानधर्म, श्राद्धविधि, विनायकशान्ति, ग्रहशान्ति, वानप्रस्थाश्रमविवरण, यतिधर्म, पापचिह्नकथन, प्रायश्चित्तविधि, अशौचादि निर्णय, पराशर धर्मशास्त्र, नीतिसार, नीतिसारमें धनरक्षादिका उपदेश, नीतिसारमें ध्रुवपरित्याग निषेधादि नीतिसारमें राजलक्षण, भृत्यलक्षण गुणनियोगादि, मित्रामित्र विभाग, कुमार्यादि परित्यागादिका उपदेश, व्रतकथनारम्भ, अनङ्गत्रयोदशीव्रत, अखण्डद्वादशीव्रत, अगस्त्यार्घ्य व्रत, भीष्मपञ्चकादि व्रतविधि, शिवरात्रिव्रत, एकादशी माहात्म्य विष्णुपूजन भीमैकादश्यादि कीर्तन, व्रतावलम्बीको नियमावली, प्रतिपदादिव्रत, षष्ठीसप्तमीव्रत, रोहिण्यष्टमीव्रत, बुधाष्टमीव्रत, अशोकाष्टमीव्रत, महानवमीव्रत, महानवमीव्रतप्रसङ्गमें कौशिकमन्त्रकथन, वीरनवमीव्रत, दमननवमीव्रत, दिग्दशमीव्रत, एकादशीव्रत, श्रवणद्वादशीव्रत, मदनत्रयोदशीव्रतादि, सूर्यवंशकीतन, चन्द्रवंशवर्णन, पुरुवंशकीर्तन, जनमेजयका वंशकथन विष्णुकी अवतारकथा, पतिव्रता-माहात्म्य, रामायणकथन, हरिवंशकथन भारतकथन, आयुर्वेद कथनमें सर्वरोगका निदान, ज्वरनिदान, रक्तपित्तनिदान, कासनिदान, हिक्कारोगनिदान, यक्ष्मानिदान, अरोचकनिदान, हृद्रोगादि निदान, मदात्ययादिनिदान, अर्शोनिदान, अतिसारनिदान, मूत्राघातनिदान, प्रमेहनिदान, विद्रधिनिदान, उदरनिदान, पाण्डुशोथनिदान, विसर्पादिनिदान, कुष्ठनिदान, क्रिमिनिदान, वातव्याधिनिदान, वातरक्तनिदान, सूत्रस्थान, अनुपानादि कथन, ज्वरादि रोगोंकी चिकित्सा, नाडीव्रणादिकी चिकित्सा, स्त्रीरोगादिकी चिकित्सा, द्रव्यनिर्णय, घृततैलादिकथन, नानायोगादिकथन, नानारोगौषधकथन, वशीकरणादि, दन्तसवतीकरणादि, स्त्रीवशीकरण और मशकमारणादिकथन, नेत्रशूलादिका औषधकथन, रक्तशक्तिवृद्धिका उपाय, ग्रहणीरोगका औषध, कटिशूलका औषध, गणेशपूजा, प्रमेहका औषध, मेधावृद्धिका औषध, रक्तपात निवारणका औषध, पटलदन्तव्यथादिका औषध, गण्डमालादिका औषध, सर्पाघातादिका औषध, योनिव्यथाका औषध पशुचिकित्सा, पाण्डुरोगादिका औषध, बुद्धिनिर्मलकारकका औषध, विष्णुकवच, विष्णुविद्या, विष्णुधर्मनामक विद्या, गारुडविद्या, त्रिपुराकल्प, प्रश्नगणना, वायुजय, अश्वचिकित्सा, औषधिका नामनिर्देश, व्याकरणके नियम, उदाहरण, छन्द शास्त्रारम्भ, मात्रावृत्तकथन, समवृत्त, अर्धसमवृत्त, विषमवृत्त, प्रस्तारादि निर्देश, धर्मोपदेश, स्नानविधि, तर्पण, वैश्वदेवविधि, सन्ध्याविधि, श्राद्धविधि, नित्यश्राद्ध, सपिण्डीकरण, धर्मसारकथन, शूद्रोच्छिष्ट भोजनादिका प्रायश्चित्त युगधर्मकथन, नैमित्तिक प्रलय, संसारकथनमें पापपरिमाण, अष्टाङ्गयोग, विष्णुभक्ति, नारायणनमस्कार, नारायणकी आराधना, नारायणका ध्यान, विष्णुमाहात्म्य, नृसिंहस्तव, ज्ञानामृत, मार्कण्डेयप्रोक्त नारायणका स्तव ब्रह्मप्रोक्त विष्णुस्तव ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान,गीतासार, अष्टाङ्गयोगका प्रयोजन, वैकुण्ठमें नारायणके प्रति गरुडका विविध प्रश्न, और्ध्वदेहिकादिविधि, नरकके स्वरूपका वर्णन, गर्भावस्थाकीतन,देशाटनादिकथन यमलोकवर्णनदानविधि,अशौच लक्षणका कालनिरूपण, वृषोत्सर्गकथन, पञ्चप्रेतोपाख्यान, और्ध्वदेहिककर्माधिकारी, बभ्रुवाहन प्रेतसंवाद, श्राद्धका नानारूप वृत्तिकीर्तन, मनुष्ययोन्यादि [illegible]कारण, मनुष्यकी

तत्त्वकथा, प्रेतत्वनाशक कर्मकथन, आतुर मुमुर्षु का दानकृत्य, यमनगरपथकथा, याम्यपुरादि गमनावस्था, यममार्ग निष्कृतिकथन, चित्रगुप्तपुरगमनकीर्तन, प्रेतका वासस्थाननिर्णय, प्रेतका लक्षण, प्रेतमुक्तिका उपाय प्रकारान्तरमें, पञ्चप्रेतका उपाख्यान, प्रेतस्वरूप निरूपण, मनुष्योंका आयुनिरूपण, बालकोंका पिण्डदानादि, शैशव आदि भेदोंमें कुमारकालसे कर्तव्यका उपदेश, सपिण्डीकरणविधि, विशेष ज्ञानार्थ नारायणके प्रति गरुड़की जिज्ञासा, और्ध्व देहिक क्रियाकथन, दानविधि, दानमाहात्म्यादि, जीवोत्पत्तिकथन, यमलोकका विस्तारादि, युगभेदसे धर्मकार्यकी व्यवस्था, दाहकारियों और सगोत्रोंके प्रति कर्तव्योपदेश, अशौचादि निरूपण, सपिण्डीकरणमें विशेषविधि और श्रवविधि, अनशनादि द्वारा मरणका फल, जलकुम्भप्रदानादि, अल्पघातसे मृत व्यक्तियोंकी गति और उद्धारका उपाय, कार्तिकादिमें वृषोत्सर्गका विधान, पूर्वकृत कर्मके कर्ताका अनुवन्धित्व कथन, विशेष दानका प्रकार, जलाग्निवन्धनभ्रष्टोंका प्रायश्चित्तकथन, आत्मघातीका श्राद्धादि निषेध, वार्षिक श्राद्धादि, पापभेदमें चिह्नभेद तथा जन्मभेदकथन, मृतके प्रति अनुताप और मोक्षका उपाय।

गरुड़प्लुत (सं० पु०) नृत्यमें एक प्रकारका भाव। इसमें हाथोंको लताके जैसे और पैरोंको बिच्छूके जैसे विस्तृत कर छाती ऊपरकी ओर उभारते हैं।

गरुड़भक्त (सं० पु०) सम्प्रदायविशेष। यह गरुड़की उपासना करते हैं। ईसाके जन्मके पूर्व यह सम्प्रदाय भारत वर्षमें प्रचलित था।

गरुड़मन्त्र (सं० पु०) गरुड़स्य मन्त्रः, ६-तत्। गरुड़ दैवत मन्त्रविशेष।

"सम्वर्तको नेवयुतः पाश्र्व स्वाराऽग्निसुन्दरी।
गारुडो मनुराख्यातो विषद्वयविनाशनः।
स्मरन् गरुड़मात्मानं मन्त्रमेनं जपेन्नरः॥
विषमान्नोघनेनेवहन्यान्नागभयं कुतः॥"

मन्त्र यथा—क्षिप ओं स्वाहा (तन्त्रसार) इस मन्त्रसे विष नष्ट होता एवं सर्पका भय जाता रहता है।

गरुड़मुद्रा (सं० स्त्री०) विष्णुपूजाका अङ्गभूत-मुद्राविशेष।

"हस्तौ तु विमुखौ कृत्वा ग्रथयित्वा कनिष्ठके।
मिथस्तर्जनिके श्लिष्टे श्लिष्टावङ्गुष्ठकौ तथा।
मध्यमानामिकायेतु द्वौ पक्षाविव चालयेत्।
एषा गरुड़मुद्रा स्याद् विष्णोः सन्तोषवर्द्धिनी॥" (तन्त्रसार)

गरुड़यान (सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

गरुड़रुत (सं० क्ली०) गरुड़स्य रुतमिव। १ छन्दोविशेष।

"गरुड़रुतं नजौ भजतगा यदा स्यु स्तदा।" (छन्दोमञ्जरी)

इसके प्रत्येक चरणमें नगण, जगण, भगण, जगण और तगण तथा अन्तमें एक गुरु होता है। गरुड़स्य रुतः ६-तत्। २ गरुड़का शब्द।

गरुडवेगा (सं० स्त्री०) गरुड़स्य, वेग इव वेग उत्पत्तौ अस्याः। लताविशेष।

"बोरुधयो वारुणी ज्योतिष्मती च गरुड़वेगा।" (वृहत्सं० ५५.८७)

गरुड़व्यूह (सं० पु०) गरुड़ इव आकारेण व्यूहः। गरुड़ाकृति सैन्यरचनाविशेष। इसमें सेनाका मध्यभाग अधिक विस्तृत तथा आगे और पीछेका भाग पतला होता है। गरुड़ देखो।

गरुड़शालि (सं० पु०) स्वनामख्यात शालिधान्यविशेष पक्षिराज धान।

गरुड़शिला—कुमाऊं प्रदेशस्थ हिमालय पहाड़के निकट वदरीनाथ तीर्थके वैष्णवक्षेत्रके अन्तर्गत १२ क्षेत्रोंमेंसे एक क्षेत्र।

गरुड़ाग्रज (सं० पु०) गरुड़स्य अग्रजः। विनताके ज्येष्ठ पुत्र अरुण। ये सूर्यके सारथी हैं।

"विनता चापि सिद्धार्था बभूव सुदिना तथा।
अनयामास पुत्रौ द्वावरुणं गरुड़ं तथा॥" (भारत १।३१।२९)

गरुड़ाङ्कित (सं० क्ली०) गरुड़ इव अङ्कितम्। मरकतमणि।

गरुड़ाचल—मन्द्राज प्रदेशमें राजमहेन्द्र सरकारके अन्तर्गत एक पर्वत।

गरुड़ाश्मान् (सं० पु०) गरुड़ वर्ण इव वर्णवान् अश्मा प्रस्तरः। मरकतमणि।

गरुड़ासन (सं० क्ली०) आसन वशेष।

"गरुडासनमाख्यातं येन ध्यानस्थिरो भुवि।
सर्वदोषाद् विनिर्मुक्तो भवतीह महाबली॥
एकपादस्थुरो बद्धा एकपादे च दण्डवत्।
जङ्घापादसन्निविष्टो जान्वोरग्रं व्यवस्थितम्॥" (रुद्रयामल)

अर्थात् एक पैर छाती पर रख कर दूसरा पैर दण्ड-

के जैसा रखते हैं, तत्पश्चात् जङ्घा और पादके सन्धिस्थान पर जानुका अग्रभाग स्थिरभावसे स्थापित किया जाता है। इसीको गरुडासन कहते हैं।

गरुडाहृत (सं० पु०) सोमलताभेद।

गरुडोत्तीर्ण (सं० क्ली०) गरुडो वर्णेन उत्तीर्णो ऽतिक्रान्तो ऽनेन। मरकतमणि।

गरुडोपनिषद् (सं० स्त्री०) अथर्ववेदान्तर्गत एक उपनिषद्।

गरुत् (सं० पु०) गृणाति शब्दायते वायुवेगेनेति। १ पक्ष, पङ्ख, पर। २ निगरण, गला। ३ भक्षण, भोजन।

"सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे" (यजुर्वे० १७।७२)

गरुत्मत् (सं० पु०) गरुत प्रशस्तपक्षा सन्त्यस्य गरुत्-मतुप। १ गरुड।

"तथाह लोमशा प्राप्तो गरुत्मानिव पन्नगम।" (भाग० ६।१८।११)

२ पक्षिमात्र। ३ त्रिविष्टपक अग्नि। (यजुर्वे० १०।७२)

गरुदास—गुजरातमें रहनेवाली एक जाति। ये नीच जातियोंका पौरोहित्य करते और अपनेको ब्राह्मण समझते हैं। लेकिन ब्राह्मण इन्हें कई एक कारणोंसे घृणा-दृष्टिसे देखते हैं। पहला कारण यह है कि किसी गरु-दासने अपने गुरुकी लड़कीसे विवाह किया था। २रा इन्होंने धेढ़ोंका पौरोहित्य स्वीकार किया था, ३रा—एक यज्ञमें इन्होंने यज्ञपशु खाया था और ४था—ये ब्राह्मण पुरोहितके वंशज हैं। इनकी उपाधि देव, जोशी, नागर, ओझाली और शकुन हैं। कोई कोई राजपूतकी उपाधि गोहेल और गम्भीर धारण किये हुए हैं। इनमेंसे थोड़े खेतीबारी कर और थोड़े कपड़ा बुन कर अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं। ये बहुत थोड़े पढ़े लिखे हैं। ये अपने लड़कोंको स्कूल पढ़ने नहीं भेजते वरं घर परही थोड़ी बहुत संस्कृतकी शिक्षा देते हैं। ये राम, तुलसीदास तथा देवीकी पूजा करते हैं। इनमेंसे बहुत रामानन्दी और परिनामी सम्प्रदायके अनुयायी हैं। भूत प्रेतोंमें इन्हें अधिक विश्वास है। चन्द्रमा और सूर्यकी भी ये अर्चना करते हैं। जन्म उपलक्षमें ये किसी तरह का उत्सव नहीं मनाते हैं। ब्राह्मणोंकी नाईं ये भी अपने लड़केको आठ या नौ वर्षकी अवस्थामें यज्ञोपवीत देते हैं। इनमें बालविवाह तथा विधवाविवाहकी प्रथा प्रचलित है। ये शवको जलाते हैं। ब्राह्मणोंके जैसे ये भी श्राद्ध कर्म करते हैं। जब गरुदास किसी तरहका अपराध करता है तो उसे पञ्चायतसे दण्ड मिलता है।

गरुद्योधिन (सं० पु०) गरुद्भ्यां पक्षाभ्यां युध्यतीति, युध णिनि। भारतो नामक पक्षी, लावपक्षी।

गरुयारि—आसामके अन्तर्गत दरङ्ग जिलाका एक वन। इस वनसे मूल्यवान शालकाष्ठ लाये जाते हैं।

गरुल (सं० पु०) गरुड रस्य लो वा। गरुड।

गरुहर (हिं० पु०) भारी, बोझ।

गरूर (अ० पु०) घमण्ड, अभिमान।

गरूरत (अ० पु०) गरूर देखो।

गरूरी (अ० वि०) घमंडी, अभिमानी।

गरेबान (फा० पु०) १ अङ्गे, कुरते आदि कपड़ाको गले परकी काट। २ गले परको पट्टी, कालर।

गरेरना (हिं० क्रि०) १ घेरना। २ छेकना, रोकना।

गरेरी (हिं० स्त्री०) गराड़ी घिरनी।

गरेरो—विहारमें रहनेवाली एक जाति। भेड़ बकरियोंका रखना और उनके रुएँसे कम्बल बुनना ही इनकी उपजीविका है। इस जातिकी उत्पत्तिका कोई प्रवाद या विशेष विवरण नहीं मिलता। सिर्फ इतना ही मालूम पड़ता है कि वह पश्चिम अञ्चलसे गये हैं। यह खानोंके साथ व्यञ्जन आदि खानेमें कोई बुराई नहीं समझते। सम्भवत यह ग्वाला जातिकी एक शाखा है। कहीं कहीं इन्हें 'गदारिया' और कहीं कहीं भेंडिहर कहते हैं। भेड़ देखो।

विहारमें इनकी चार श्रेणियां हैं—धेनगड फरु-खाबादी, गङ्गाजली और निकर। धेनगढ़ोंमें पटैल, चौधरिया, काश्यप और नानकर ४ गोत्र होते हैं। यह अपने गोत्रमें विवाह नहीं करते। दूसरी श्रेणियोंके गरेरो 'ममेरा' 'चचेरा' आदि ६ पुरुषोंके बीच कन्यापुत्रका विवाह करनेमें हिचकिचाते हैं। इनमें कम्बलिया, कम्पाली, सरार और रावत ४ पदवियां चलती हैं।

लड़कपनमें ही इनका विवाह हो जाता है। स्त्री वन्ध्या होनेसे पुरुष फिर विवाह कर सकते हैं। गरो-रियोंमें विधवाविवाह प्रचलित है। स्वामीके अपथ

उठा त्याग करनेसे स्त्री विधवाको तरह विवाह कर सकती है। परपुरुषमें आसक्त रहनेसे स्त्रीको जातिच्युत और समाजसे वहिष्कृत कर देते हैं। पुरुषको कोई कुकर्म करने पर गांवकी पञ्चायत और मण्डलसे बंधी सजा मिलती और अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। फिर वह स्वजातिको भोज दे करके समाज-भुक्त होता है।

इनमें सभी वैष्णव हैं। दो-एक लोग शैव भी देख पड़ते हैं। गरियादास नामक किसी गरेरीने पहले अपनी जातिमें वैष्णवधर्म चलाया था। उनके शिष्य उनकी धर्मगुरु-जैसी भक्ति करते हैं। मांस मछली कोई नहीं खाता। कनौजिया या जोशी ब्राह्मण ही इनका पौरोहित्य करते और वैरागी अथवा 'दशनामी' संन्यासी इनके मन्त्रदाता गुरु रहते हैं। बन्दो, गौरैया धर्मराज, नरसिंह, पांचपीर और कालीमाता इनकी कुलदेवता हैं। श्रावण मासके अन्तिम दिनको घरके लोग नाना वध उपचारोंसे इन सभी देवदेवियोंकी पूजा किया करते हैं। शैवोंमें कोई कोई बकरी आदि बेचते समय एक भेड़ रख छोड़ता है। फिर उसको 'वनजारी'के सामने बलि दे आमोदमें भोजन करते हैं।

यह अपनेको अहीरोंसे ऊंचा और मजरोतियों तथा कृष्णायतोंकी बराबर समझते और उनका दिया हुआ अन्नजल आदि ले लेते हैं। परन्तु अपने आप बकरों और भेड़ोंकी वधिया करनेसे इनका पानी मजरोती और कृष्णायत नहीं छूते और साथ ही इन्हें और भी बुरा बतलाते हैं। विहार और बङ्गालके ब्राह्मण इनका छूआ पानी पीते, परन्तु पुर्णिया जिलेमें यह बहुत बुरे माने जाते हैं। अपनी जातिवालोंको छोड़ करके किसी दूसरे के पास गड़रियेका काम करनेसे इनकी जाति जाती है।

गरेली (हिं०) गरेरा देखो।

गरयां (हिं० स्त्री०) पगहा।

गरोत—मध्यप्रदेशमें इन्दोर राज्यके रामपुर-भानपुर जिले और इसी नामके परगनेका एक शहर। यह अक्षा० २४° १९´ उ० और देशा० ७५° ४२´ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३४५६ है। ऐसा कहा जाता है कि पहले इस शहरमें भीलोंका वास था और यह १६वीं शताब्दीमें रामपुरके चन्द्रावत राजपूतोंके हाथ आया। यह शहर ऐतिहासिक घटनाके लिये प्रसिद्ध है। १८०४ ई०में कर्नल मोनसन और यशवन्तराव होलकरके साथ इसी स्थान पर लड़ाई छिड़ी थी। मोनसन प्राण लेकर भागा, लेकिन सुकुन्दद्वारमें रोक रखा गया था। गरोतसे ४ मील उत्तरपूर्व पियलायाममें जब मोनसनकी सेना ल्युमन और अमरसिंहके अधीन पहुंची तो मोनसन मराठाके बन्धनसे मुक्त हुए। इस जगह यशवन्तराव पूर्ण रूपसे पराजित हो भानपुरसे भगने जानेको बाध्य हुए। थोड़े समयके बाद यशवन्त रावकी मृत्यु हो गई। उस समय सोनधिया नामकी एक जाति चारों ओर ऊधम मचा रही थी, इसलिये १८३४ से १८४२ ई० तक एक सैन्यदल इस शहरमें रखा गया था।

गरोथा—युक्तप्रदेशके झांसी जिलाकी एक तहसील। यह अक्षा० २५°२३ तथा २५° ४९ उ० और देशा० ७९° १´ एवं ७९° २५´ पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ४६६ वर्गमील है और लोकसंख्या प्रायः ८८८२६ है। इसमें १५३ ग्राम लगते हैं लेकिन शहर एक भी नहीं है। यहांकी आय १२५०००) रु० की है। इस तहसीलकी जमीन काला दीख पड़ती है।

गरोदि—मुसलमान जातिविशेष।

गरोल—वम्बई प्रदेशमें रेवाकान्ता विभागके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। इसका कर रेवाकान्ता एजेन्सी द्वारा बड़ौदा गायकवाड़के निकट भेजा जाता है।

गरोला—मध्यप्रदेशमें मनार जिलान्तर्गत एक लाखराज ग्राम। इसका क्षेत्रफल प्रायः १६००० वीघा है। दिल्ली बादशाहने राव रामचन्द्रको यह स्थान अर्पण किया था। १६४६ ई०को पेशवाने इसका अधिकांश अपने अधिकारमें कर लिया था। इस ग्राममें प्राचारवेष्टित एक छोटा दुर्ग है। इसके पूर्वमें एक ह्रद है। इस ह्रदके चारों तरफ जमीन उपजाऊ है। इस ग्राममें एक विद्यालय वर्तमान है।

गरोह (फा पु०) समूह, झुंड, जत्था।

गर्ग (सं० पु०) गृणाति वेद शब्देन स्तौति। गृ-ग। १ वृहस्पतिके वंशजात मुनिविशेष। ये वितथके पुत्र थे। इन्होंने शिवकी आराधना करके चौंसठ अङ्ग ज्योतिषादिमें ज्ञान लाभ किया था।

"ततु यद्याहमन्दत् कला ग्राम समाश्रुतम्।
सरस्वत्यास्तटे तुष्टो मनोयज्ञेन पाण्डव॥ (भारत १३।१८।१८)
"वहन्ती गर्गादीनां सत वर्षो॥" (बृहत्स० १३।२।१३)

इन्होंने अश्वायुर्वेद, केरलप्रश्न, केरलपाशावली, गर्ग संहिता नामक ज्योतिष और गर्ग मनोरमा नामक उसकी टीका, प्रश्नमनोरमा, प्रश्नविद्या, षोडशप्रश्न, ज्योतिगर्ग, पल्लीसरट विधान, कात्यायनश्रौतसूत्रभाष्य तथा गर्गपद्धति प्रभृति ग्रन्थ प्रणयन किये हैं। (पु० स्त्री०) गर्ग अपत्ये घञ्। २ गर्ग के गोत्रापत्य, गर्ग के वंशज। गर्गा शत भौत्राणाम्। (महाभाष्य) ३ मुनिविशेष। ये वृष्णिगर्ग नामसे ख्यात हैं। (भारत) किसीके मतसे इन्होंने गर्गस्मृति रचना की है। माधवाचार्य, हेमाद्रि, कमला कर प्रभृति स्मार्तोंने गर्गस्मृति उद्धृत की है। ४ ब्रह्माके एक मानसपुत्रका नाम। इनकी सृष्टि गयामें यज्ञके लिये हुई थी।

"गर्ग कौशिकगालवौ।" (वायुपुराणमें १०६।३५ अ०)

५ संगीतमें एक ताल। इसमें चार द्रुत और अन्त में एक खाली या विराम होता है। (संगीत दामोदर) ६ बैल साँड। ७ एक कीड़ा जो पृथ्वीमें घुसा रहता है, गंगोरो। ८ वृश्चिक, बिच्छू। ९ किंचुलक, केंचुआ। १० एक जैन ग्रन्थकार। इन्हीं ने मागधी भाषामें कर्मविपाक प्रणयन किया है। ११ एक पर्वतका नाम। १२ नन्दके एक पुरोहितका नाम। १३ एक प्राचीन कवि।

गर्ग-त्रिरात्र (सं० पु०) कात्यायनश्रौतसूत्रके अनुसार एक प्रकारका योग जो तीन दिनों में होता है।

(कात्यायनश्रौतसू० २२।११।१८)

गर्गभूमि (सं० पु०) एक राजकुमार।

गर्गर (सं० पु०) गर्ग इति शब्द राति रा-क। १ मत्स्यविशेष, एक मछली। इसका गुण—मधुर, स्निग्ध और पित्तनाशक है। (राजवल्लभ) इसके पृष्ठ पर बहुत रेखायें और शल्क रहती हैं। (राजनिघण्टु) यह पित्तकर, वात, कफनाशक तथा कोपकर है। (भावप्रकाश) २ भंवर। ३ एक प्रकारका प्राचीन बाजा। यह वैदिक कालमें बजाया जाता था। गागर।

गर्गरक (सं० पु०) गर्गर स्वार्थे कन्। समुद्रजात गर्गर मत्स्य, समुद्रमें होनेवाली गर्गर मछली (*Pimelodus gagora*)

"मकर गर्गरक चन्द्रक महामीन राजीव प्रभृतय ॥१६॥"

(सुश्रुत, सूत्रस्थान ४६ अ०)

गर्गरी (सं० स्त्री०) गर्गर जातौ ङीप्। १ दधिमन्थनपात्र वह बर्तन जिसमें दही मथा जाता है। माठ, दहेड़ी। २ मन्थनी। ३ गगरी, कलसी।

"मैनाकी प्रमथा दिया वारिपूर्णा च गर्गरी।" (तिथितत्त्व)

गर्गवंशी—राजपूत जातकी एक श्रेणी। ये आजमगढ़ और गोरखपुरमें रहते हैं।

गर्गशिरस् (सं० पु०) दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम।

"गर्गशिरा यथा। (हरिवंश ३ अ०)

गर्गसंहिता (सं० स्त्री०) गर्गेण कृता संहिता, मध्यपदलो०। कालज्ञानार्थ गर्गकृत संहिता, ज्योतिषग्रन्थविशेष, गर्गका बनाया हुआ एक ज्योतिष ग्रन्थ इससे कालका ज्ञान होता है।

गर्गस्रोतस् (सं० क्ली०) गर्गेण आश्रितम् उषित वा स्रोत। १ तीर्थ विशेष। गर्ग मुनिके नामानुसार इसका नाम करण हुआ है। यह तीर्थ सरस्वतीतीर्थमें अवस्थित है। (भारत ९।३८ अ०)

गर्गाट (सं० पु०) गर्ग इति शब्देन अटति अट अच् शकन्ध्वादित्वात् अलोप। मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। इसका दूसरा नाम योगनाविक है।

गर्गादि (सं० पु०) पाणिनीय गणविशेष। गर्गादि गण यथा—वत्स, संस्कृति, अज, व्याघ्रपाद, विदभृत, प्राचीनयोग, अगस्ति, पुलस्ति, चमस, रेभ, अग्निवेश, शङ्ख, शट, शक, एकट धूम, अवट, मनस, धनञ्जय, वृक्ष, विश्वावसु, जरमाण, लोहित, संशित, बभ्रु, मण्डु, गण्डु, शङ्कु, लिगु, गुहलु, मन्तु, मङ्क्षु, अलिगु, जिगीषु, मनु, तन्तु, मनायी, सूनु, कथक, कन्थक ऋक्ष तरु, तलुक्ष, तण्डु, वतण्ड, कपि, कत, कुरुकत अनडुह्, कण्व, शकल, गोकक्ष, अगस्त्य, कुण्डिनी, यज्ञवल्क, पर्णवल्क, अभयजात विरोहित वृषगण, रहूगण, शण्डिल, चणक, चुलुक, मुद्गल, मुसल, जमदग्नि, पराशर, जातूकर्ण, महित, मन्त्रित, अश्मरथ, शर्कराक्ष, पूतिमाष, स्थूरा, अररक, एलाक, पिङ्गल, कृष्ण, गोलन्द, उलूक, तितिक्ष, भिषज, भिष्णज, भडित, भण्डित, दल्भ, चेकित, चिकित्सित, देवहू, इन्द्रहू, एकलू, पिप्पलू, वृहदग्नि, सुलोहिन्, सुत्थाभिन्, उक्थ और कुटीगु।

गर्ज (सं० पु०) गर्ज भावे घञ्। हाथीका शब्द, चिघाड़। २ गर्जन, मेघादिका शब्द।

"आषाढ़ि चतुरो मासान् गर्जभावं विवर्जयेत्॥" (स्मृति)

गर्जक (सं० पु०) गर्जति इति गर्ज-ण्वुल्। मत्स्यविशेष, एक मछली। इसका पर्याय—शाल और शालज है।

गर्जन (सं० क्ली०) गर्ज भावे ल्युट्। १ शब्द, आवाज। २ क्रोधित पशुका शब्द। ३ सिंहादिकी आवाज।

"वारणगर्जन" (रामायण ५।२४।) ४ क्रोध, गुस्सा। ५ वृक्ष-विशेष, एक पेड़। ६ तैलविशेष। एक प्रकारका तेल।

गर्जनतैल, गर्जनवृक्षजात (Dipterocarpus turbinatus) निर्यास विशेष, गर्जन वृक्षका गोन्द। आसाम, त्रिपुरा, चट्टग्राम, ब्रह्मदेश, पेगू और मलयद्वीप समूहमें यह वृक्ष बहुत उपजते हैं। इस वृक्षकी ऊंचाई प्रायः २५० फुट और चौड़ाई १५ फुट होती है। वर्षाकालमें इसमें फूल और बीज लगते हैं। इससे धूना संयुक्त गाढ़े कृष्ण और श्वेतवर्णके दो प्रकारके गोंद निकाले जाते हैं। इसीको गर्जनतेल कहते हैं। इसकी गन्ध बहुत तीव्र होती है। पृथ्वीतलसे तीन चार फुट ऊपर वृक्षके धड़में चार या पांच इंचका एक गड्ढा बनाया जाता है। उस गड्ढेमें अग्नि दे कर दग्ध करने पर तेल पिघलने लगता है। तेलको नीचेके बरतनमें लानेके लिये वृक्षमें नला काटी रहती है। प्रति सप्ताह उस गड्ढेको फिरसे नया काट कर अग्निद्वारा दग्ध करना पड़ता है। किसी किसी वृक्षमें दो वा तीन गड्ढे काटने पर भी वृक्ष नहीं मरता है। अगहनसे फाल्गुन मास तक इसी तरह तेल बाहर निकाला जाता है। एक वृक्षसे प्रतिवर्ष तीनसे पांच मन तेल निकलता है। इसका तेल बहुत उपयोगी है। किसी काष्ठमें यह तेल लगा देनेसे वह बहुत दिन तक चलता है। वारनिस इत्यादि काममें भी इसका व्यवहार किया जाता है।

गर्जमान (सं० त्रि०) जो गर्जन करता हो।

गर्जर (सं० क्ली०) गर्ज बाहुलकात् अरच्। गृञ्जन, गजरा। इसका पर्याय—पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक, स्वादुमूल, सुपीत, नारङ्ग और पीतमूलक है। इसका गुण—मधुर, रुचिकर, किञ्चित्कटु, कफ आध्मान, क्रिमिशूल, दाह, पित्त, और तृष्णानाशक है।

गर्जा (सं० स्त्री०) गर्ज-टाप्। गर्जन, मेघादिकी ध्वनि, गरज।

"गम्भीरगर्जा आरम्भ उत्कोल ज्वाल वर्तःघोषो।
उत्कण्ठ मठ विराटक वभसाः क्लीवे तु टाबन्ताः॥" (त्रिकाण्ड)

गर्जाफल (सं० पु०) गर्जया गर्जनेन फलं यस्य। १ विकण्टकवृक्ष, जवासा, धमासा। २ युद्ध, लड़ाई। ३ उत्तेजन, उत्साह। ४ भर्त्सन, कुत्सा, निंदा।

गर्जि (सं० पु०) गर्ज-इन्। मेघका शब्द।

गर्जित (सं० क्ली०) गर्ज भावे क्त। १ मेघादिका शब्द, मेघकी गरज।

"मदान्धघन गर्जित प्रतिरवानुकारी मुहुः।" (वैदोसंसार)

२ रणादिमें आस्फालन, लड़ाईकी मारकाट।

"एको हि युध्यस्व रणे किं वृथा गर्जितेन ते।" (हरिवंश १८२।४०)

(त्रि०) कर्त्तरि क्त। ३ कृतशब्द, जो शब्द किया गया हो।

"सन्ध्यायां गर्जिते मेघे शास्त्रचिन्तां करोति यः।
चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुर्विद्यायशोबलम्॥" (स्मृति)

(पु०) गर्जो जातोऽस्य तारकादित्वात् इतच्। ४ मत्तहस्ती, मतवाला हाथी।

गर्ज्य (सं० क्ली०) गर्ज-ण्यत्। गर्जनीय, गरजने योग्य।

गर्त (सं० पु०) गिरति गृ-निगरणे तन्। १ भूमिछिद्र, दरार। इसका पर्याय—रन्ध्र, विल, गह्वर, अवट, भूरन्ध्र, दर, श्वभ्र और पृथिवीरन्ध्र है।

"न ससत्वेषु गर्त्तेषु न गच्छन् नापि च स्थितः।" (मनु ४।४७)

२ त्रिगर्तदेश। ३ गृह, घर। ४ रथ ५। सभास्थान। ६ एक नरकका नाम। ७ स्त्रीके नितम्बका कुकुन्दर, औरतके चूतड़ पर गड्ढा। ८ रोगप्रभेद। ९ वह जलाशय जिसको गतिका प्रवाहस्थान आठ हजार धनुसे अधिक नहीं हो।

गर्तसद् (सं० त्रि०) गर्ते सीदतीति सद्-क्विप्। रथस्थित, जो रथ पर बैठा हो।

गर्ताटक (सं० पु०) वनमूषिक, जंगली मूसा।

गर्ताश्रय (सं० त्रि०) जो गर्तमें रहकर अपनी जीविका-निर्वाह करता हो।

गर्तिका (सं० स्त्री०) गर्तोऽस्त्यस्याः ठन्। तन्तुशाला, तांतका घर।

गर्त्य (सं० त्रि०) गर्त्तमर्हति यत्। गर्तविशिष्ट देश। वह देश जिसके चारों ओर खाई हो।

गर्द (फा० स्त्री०) धूल, राख, खाक।

गर्दखोर (फा० वि०) जिसका रंग मिट्टी आदिमें पड़नेसे खराब न हो, खाकी रंग।

गर्दतोय—जैनमतानुसार ब्रह्मस्वर्ग (पाचवें स्वर्ग)के आठो दिशाओंमें रहनेवाले आठ प्रकारके लोकान्तिक देवोंमेंसे पाँचवें देव।

"सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च।"

(तत्त्वार्थ० सू० ४ अ० २५ सू०)

ये ब्रह्मचारी होनेके कारण देवर्षि कहलाते हैं। ये निरन्तर ज्ञान-चर्चामें ही लीन रहते है। तीर्थङ्करके तप-कल्याणके समय अर्थात् जब तीर्थङ्कर राज्यादि क्षणभङ्गुर पर पदार्थोंको त्याग कर दिगम्बरी दीक्षा धारण करनेका विचार करते है तब ये देवर्षि आ कर उनके विचार-को दृढ़ करनेके लिए उन्हें संसारकी असारता दिखलाते हुए उनके विचारोंकी अनुमोदना करते हैं। ये देवर्षि मनुष्य दो जन्म धारण कर नियमसे मोक्ष पाते हैं। अर्थात् तीसरी बार इनको जन्म नहीं लेना पड़ता।

(तत्त्वार्थराजवार्त्तिक ४ अध्याय)

गर्दन (हिं० पु०) गरदन देखो।

गर्दभग (हिं० पु०) एक प्रकारका गांजा जो काश्मीरके दक्षिण भागोंमें उत्पन्न होता है।

गर्दभ (सं० पु०) गर्दति कर्कशशब्दं करोति, गर्द अभच्। शॄदृभसोऽदिः। उण् ३।१२२। पशुविशेष, गधा। इसका संस्कृत पर्याय—चक्रीवान्, बालेय रासभ, खर, रासभ, शङ्कुकर्ण, भारग, स्मृरिगाम, धूसराह्वय, वेशव, धूसर, खरस्य, चिरमेही पशुचरि, चारपुह, चारट और ग्राम्याश्व है। तामिलमें गधेको 'कल्द' और तैलगूमें 'गुर्धि' कहते हैं।

यह पशु दूधपीनेवालोंमें एकशफश्रेणीभुक्त है।

गधा देखनेमें कितना ही घोड़े जैसा होता है इस की पूछके ऊपरी भाग और पिछले भागके बाल कुछ कुछ कम पड़ते हैं। रङ्ग खाकी लगता है। फिर किसी किसीका रङ्ग सैन-जैसा भी होता है। गुद्दीकी जड़में पीठसे काले रङ्गके रोए एक सीधी धारो जैसी बन कर गलेके नीचे तक चले जाते हैं। फिर ऐसी ही दूसरी धारो स्कन्धसे पूछ तक पड़ती है।

गधेका रङ्ग यदि ज्यादा सफेद रहता, तो यह धब्बा कुछ अधिक साफ उतारता है। नहीं तो बहुत अधिक लक्ष्य नहीं ठहरता। पावके खुरमें भी घोड़ेसे थोड़ासा प्रभेद पड़ता है।

गधेका सूम शरीरको देखते ज्यादा बड़ा और बगल ओर भी ढालू होती है। बीचमें एक गड्ढा जैसा रहता है। पहाड़ी राहमें जहां घोड़ा जा नहीं सकता, वहां यह उसके सहारे बेखटके पहुंचता है। चिकनी जमीन पर चलनेमें भी उसमें सुभीता पड़ता है। मैदानमें घोड़े, जङ्गलमें हाथी और रेतमें ऊंटकी तरह पहाड़ पर बोझ ढोनेके लिये गधा उपयोगी है। इसके कान लम्बे होते हैं। मत्था शरीरको देखते कुछ बड़ा लगता है। पाव छोटे पड़ते हैं। पैरके खुरों पर एक एक काला धब्बा रहता है। गधा शान्त और सहिष्णु होता, परन्तु निर्बोध नहीं। किसी राहसे एक बार ले जाने पर यह सुगमतासे उसको पहचान लेता है। भीड़ भाड़में यह अपने मालिकको भी नहीं भूलता। पीठका बोझ ज्यादा होनेसे यह नहीं झुकता और बराबर चला करता है। गधेकी बोली कड़ी है। इसी लिये किसी गानेवालेका स्वर कर्कश होनेसे उसको गधा कहा जाता है। साधारणतः लोग गर्दभ जैसा निर्बोध दूसरा पशु नहीं समझते और इसीसे गंवार आदमीको भी गधा कहा करते है। गधेका दूध यक्ष्मके लिये बहुत मुफीद है। माका दूध न मिलने पर गधेका दूध पी पी कर कितने ही बच्चे जी जाग गये है। भारतमें साधारणतः धोबियोंके कपड़े ढोनेको गधा काम आता है। यह थोड़ेमें ही थक जाता है। घासपात आदि खा कर ही इसको तृप्ति हो आती है।

११ मास गर्भधारण करके गर्दभी सन्तान प्रसव करती है। बच्चा तीन चार सालमें बढ़ जाता है। गधा २०, २२ या २४ वर्षतक जीता है। इसका चमड़ा टिकाऊ है। उससे पार्चमेण्ट, ढोल, जूता, किताबकी तख्ती आदि चीजें बनती हैं। पालू गधेसे जङ्गली गधा अधिक बलिष्ठ होता है। उसका चमड़ा भी कुछ

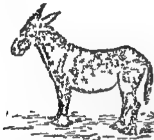
ज्यादा चिकना लगता है। तुर्कीके सिरिया अञ्चलका गधा देखनेमें बहुत अच्छा रहता है। वहां स्त्रियां इसको बड़ी होशियारीसे पालती हैं। अरब लोग गधे पर चढ़के घूमते और खेतीका काम भी लेते हैं। यरूसलमसे पहले बड़े बड़े आदमी और पुरोहित गधे पर चढ़ करके चलते थे। परन्तु मिसरके रहनेवाले इसको बुरा समझके बड़ी ही घृणा करते थे। वही पहले गंवारोंको गधा बतला हंसी उड़ाने लगे। भारत और अफ्रीकाके गधे नाटे और दुबले होते हैं। अफ्रीकाके कायरो, लिबिया, नउमिड़िया आदि जङ्गलोंमें बहुतसे गधे हैं। वहां लोग इसका मांस खाते हैं। परन्तु मध्यएशियामें भी गधोंका जमघट ज्यादा है। ग्रीष्ममें यह दल उत्तरको यूराल पहाड़ तक जाता, फिर जाड़ेमें भारतको आता है। इस झुण्डका एक सरदार रहता, जो सबसे चटकीला, जल्द चलनेवाला और चतुर लगता है। शिकारी उसको पकड़ सकने पर फूले नहीं समाते। पहले युरोपमें गधा न रहा। इसको वहां गये थोड़े ही दिन हुए हैं। इङ्गलैण्डके गरीब आदमी इसकी ज्यादा कद्र करते हैं। लोगोंके विशेष आदर करने अथवा आबहवा अच्छी रहनेसे स्पेनके गधे मजबूत और खूबसूरत होते हैं। वहां गधेका दाम भी ज्यादा नहीं। एक घोड़ेकी कीमत २० गधोंके बराबर है। घोड़े और गधेके जोड़से दो तरहके खच्चर निकलते हैं। इनमें एक गर्दभके औरस और अश्विनीके गर्भ तथा दूसरा अश्वके औरस और गर्दभीके गर्भसे उत्पन्न होता है। अङ्गरेजी पहला म्यूल (Mule) और दूसरा हिनी (Hinny) कहलाता है। म्यूल बड़ा, बलवान् और सुगठित रहता है। गधेकी हड्डीसे पहले किसी प्रकारकी बंशी बनती थी। भारतके कच्छ, गुजरात, जैसलमेर और बीकानेर प्रदेशमें एक तरहका जङ्गली गधा देख पड़ता है।

गधेकी प्राणशक्ति अतिशय प्रबल है। चमड़ा मोटा होता है। इसीसे कोड़ा मारने पर भी गधेको कोई बड़ी तकलीफ मालूम नहीं पड़ती। हिन्दुस्थानी गधा भूरा होता है। परन्तु अरब आदि देशोंके गधे कुछ कुछ लाल रहते हैं। पहले युरोप और अफ्रीकामें गधा न था। यह अरबसे मिसर, मिसरसे यूनान, यूनानसे इटली, इटलीसे फ्रान्स और फ्रांससे जर्मनी, इङ्गलैण्ड, स्वीडेन आदि नानादेशोंमें फैल गया। ठण्डे देशमें गधा दुबला और ठिंगना होता है। यह अपने आप जल्द चलनेवाला और डरावना है। परन्तु पकड़े जानेसे थोड़े दिन पीछे ही स्वभाव बदलता है। फिर यह निरीह हो जाता है। सब चौपायोंसे गधा बहुत जल्द हिलता है। यह रोज वही पानी पीता, जो इसको अच्छा समझ पड़ता है। पानी पीते समय गधा घोड़ेकी तरह पानीमें नाक नहीं डुबाता। इसको घास पर लोटना बहुत अच्छा लगता है। पानीमें उतरते गधा बहुत डरता है। लड़कपनमें गधा देखनेमें खूबसूरत होता है। उस समय स्वभावमें भी कितनी ही चतुरता रहती है। परन्तु उस समयसे न सिखाने पर बढ़ते बढ़ते यह काम समझ और बेकाबू पड़ जाता है। इसको लड़केका प्यार बहुत रहता है। गधे और गधीकी मुहब्बत भी कुछ कम नहीं। यह पीठ पर ज्यादा बोझ लाद देनेसे कान और सिर झुका लेता और मुंह फैला करके दोनों होंठ सिकोड़ने पर बहुत भद्दा जंचता है। आंख ढांप देनेसे गधा नहीं चलता। जमीन पर लिटा करके एक आंख घास और दूसरी पत्ते या डीलेसे ढांक देने पर यह जैसेका तैसा सुनसान पड़ा रहता है। गधा घोड़ेकी तरह कूदफांद और दौड़ सकता, परन्तु बहुत जल्द थकता है। एक बार थकजानेसे कितना ही मारने पर भी यह न उठेगा।

गिनी देशका गधा वहांके घोड़ेसे बड़ा और खूबसूरत होता है। ईरानमें दो तरहका गधा देख पड़ता है। उसमें एक मोटा और मन्दगामी होता और बोझ ढोता है। फिर दूसरा साफ सुथरा गधा है। उस पर चढ़ कर लोग इधर उधर आया जाया करते हैं। ईरानी उसकी नाक फाड़ कर छेदको बढ़ा देते, जिसमें लम्बी सांस चल सके और वह जल्द न थके। यह गधा कभी कभी चार पांच सौ रुपये तक बिकता है।

गधा घोड़ेसे ज्यादा मिहनत कर सकता है। इसका चमड़ा सूखा और बहुत कड़ा होता है। इसीसे कोड़ आक्रमण कर नहीं सकते। गधा घोड़ेसे कम सोता है। अरब और मिसरका गधा जितना ही जल्द चलता, होशि-

यार भी रहता है। कायरो नगरकी बडी सडक पर गधोंको किराये पर देनेके लिये जीन और लगाम लगा करके तैयार रखते हैं। किरायेदार गधे पर चलता और गधेवाला उसको पोछेसे हाकते चलता और सामने लोगो को हटानेके लिये चिल्लाया करता है। मसलमान हाजो गधे पर चढके मक्का पहुचते हैं। ल्यूबिया देशके बडे बडे महाजन गधे पर चढ मिसर देशको जाते हैं। राहमें लगभग २ महीने लगते हैं। गधा इतने दिन चल करके भी नहीं थकता। अमेरिकामें पहले गधा न रहा, स्पेनके लोगो ने भेज दिया। आजकल वहां वंशवृद्धि होनेसे कितने ही गधे देख पडते हैं। वह जगह जगह झुण्ड बाध करके घूमते हैं। फन्दा डाल करके उन्हें पकडना पडता है।



पालू गधेका मांस कडा होता है। खानेमें अच्छा न लगते भी बहुतसे लोग उसे खा जाते हैं। गालेन साहब-के मतमें वह मांस खानेसे बीमारी हो सकती है। यूनानी पहले गधेके दूधसे बहुतसी दवाइयां बनाते थे। परन्तु अब उसकी कमी पड गयी है। मोटी छोटी अच्छी गधीका ही दूध, जो हालकी ब्याई हो और उठी न रहे, सबसे अच्छा होता है। उसको बच्चेसे अलग दाना घास खिला करके रखना पडता है। ऐसी गधीका दूध बोमारके लिये बहुत अच्छा है। यह दूध ठण्डा पडने और हवा लगनेसे बिगड जाता है। गधेका दूध दवाईमें लगने जैसा लोगो को जो विश्वास रहा, आजकल उठ गया है।

युरोपके आल्पस पहाडसे उतरते समय गधा जो होशियारी दिखलाता, लोगोंको अचम्भा आ जाता है। पहाड पर चढनेको राह बहुत डरावनी है। एक ओर ऊंचा और दूसरी ओर खब गहरा है। कहीं चढाव और कहीं उतार है। सिवा गधेके वहां दूसरा कोई चौपाया उतर नहीं सकता। उतरते समय गधा थोडी देर ठहर करके खडे खडे देखा करता है—किस तरह कहांसे उतरूंगा। उस मौके पर सवारके हजार बार मारते भी गधा नहीं सरकता, सिर्फ उसी गहरे गड्ढेकी तरफ देखा करता है। डरसे कम करके बीच बीच वह रेंकने भी लगता है। जब वह उतरना आरम्भ करता, सामनेके पैर इस तौरसे रखता—मालूम पडता—मानो खडा होने चाहता है। फिर पीछेके पैर साथ साथ ला करके वह सामनेके पैर सामने फैलाता है। इसी हालतमें रह करके गधा एक बार नीचेको देखता है। फिर वह जल्द जल्द नीचे उतरने लगता है। उस वक्त सवार लगाम ढील देता है। लगाम खींचनेसे एकाएक उसकी चाल रुक जाती है। उसमें गधा और सवार दोनो नीचे गिर करके मर सकते हैं। सवार लगामको निकाल जीनसे अपनी कमर बाध लेता है। ऐसी पहाडी राहमें गधेको उतरते देख चौकन्ना होना पडता है।

गधेके बारेमें कितनी ही अनोखी बातें सुन पडती हैं। १८१६ ई०में कप्तान उण्डाम माल्टा उपद्वीपमें रहे। उनके लिये जिब्राल्टरसे एक गधा खरीद जहाज पर चढा करके माल्टा लिये जाते थे। समुद्रकी ऊंची लहरोंमें जहाज किसी रेतसे जा करके भिड गया। वहांसे किनारा बहुत दूर न था। जहाजके लोगो ने गधेको यह देखनेके लिये पानीमें धकेल दिया, वह तैर करके किनारे पहुंच सकता है या नहीं। सबने सोचा कि गधा वहीं मरा था। परन्तु गधा मजेमें किनारे पहुंच उसीके पास जा करके खडा हुआ, जिससे वह खरीदा गया था। किनारेसे वह जगह एक कोस दूर होगी। उस राहसे गधा कभी चला न था।

कायरो नगरके भी एक गधेकी बात कही जाती है। वह नाचता और बहुतसे तमाशे करता था। जब उससे कहा जाता कि सुलतान उसे घर बनानेको सुर्खी और ईंट लेने भेजेंगे, वह पैर उठा आंख मूंद करके मुर्देकी तरह जमीन पर पड रहता था। परन्तु जब वह सुलतान-के अपने ऊपर चढके कोई जलसा देखनेको और खूब खिलाये जानेकी बात सुनता, खुशीसे नाचने लगता था। यह कहने पर कि उसे उस बदमाश औरतको ले जाना पडेगा, वह लडखडाने लगता था। बहुतसी स्त्रियां इकट्ठी

होने पर उससे पूछा जाता था—इसमें कौन सबसे अच्छी है, उसको दिखला दो। वह उसी समय एकके पास पहुंच मत्था झुका करके उसको छू लेता था। ऐसा गधा सरकसोंमें कई बार देखा गया है वह आवाजको समझ और सिखलानेसे सीख सकता है। किसी समय एक आदमीने कुत्तेको गधे पर ललकारा था। कुत्तेके पास पहुंचते ही गधेने उसको लातें फटकारीं, फिर दांतोंसे उसको पकड़ पासकी नदीमें ले जा करके डुबा दिया और जब तक वह मर न गया, उसको दबाये ही रहा। इससे मालूम पड़ता है कि गधेकी प्रतिहिंसा कम नहीं होती। गधेकी मोठी आवाज सुननेमें अच्छी लगती है। चाड़े नगरमें एक स्त्री बहुत अच्छा गाती थी। पास ही एक गधा भी रहता था। उनके गाना शुरू करते ही गधा वहीं पहुंच झरोखेके पास खड़ा हो करके सुना करता था। फिर एक दिन तो वह उनके घरमें ही जा खड़ा हुआ। गाना बन्द होने पर गधा अपने आप चिल्ला करके उनकी नकल उतारने लगता था। इससे समझ पड़ता है—गधेको जितना वेसमझ ठहराते, हरगिज नहीं पाते हैं।

पौराणिकोंके मतमें गर्दभ शीतलादेवीका वाहन है। शीतला देखो।

जैनशास्त्रानुसार—गधा पंचेन्द्रिय मनसहित जीव है। इसको शिक्षा देनेसे मनुष्यकेसे अनेक अद्भुत कार्य कर सकता है यहां तक कि स्थूल चोरी आदिका भी त्याग कर अणुव्रत पाल सकता है।

वैद्यशास्त्रके मतमें उसका मांस कुछ भारी और ताकतवर होता है। गधेका मूत्र—कड़ुवा, गर्म, तीता, खारी और कफ, महावात, भूतकम्प तथा उन्माद-नाशक है। (राजनिघण्टु)

बराबर बोझ ढोना, गर्मी सर्दी सहना और हमेशा खुश रहना—तीन गुण गधेसे सीखना चाहिये। (चाणक्य)

(क्लो०) गर्दते। गर्द-अभच् २ श्वेतकुमुद, सफेद कोई।

"कैरवं चन्द्रकान्तश्च गर्दभं कुमुदं कुमुन।" (रत्नमाला) ३ विड़ङ्ग, वाय विड़ंग। ४ भ्रमरभेद, गदहोला नामका कीड़ा।

गर्दभक (सं० पु०) गर्दभ सञ्ज्ञायां कन्। १ कीटविशेष यह श्लेष्माका प्रकोपकारक है।

गर्दभगद (सं० पु०) जालगर्दभ नामक रोगविशेष। जालगर्दभ देखो।

गर्दभनादी (सं० त्रि०) गर्दभ इव नदति नद् णिनि। जो गदहाके जैसा शब्द करता हो।

गर्दभमांस (सं० क्लो०) गर्दभस्य मांसम्, ६-तत्। गर्दभ-मांस, गदहाका मांस।

गर्दभमूत्रभ (सं० क्लो०) खरमूत्र, गदहाका मूत।

गर्दभयाग (सं० पु०) गर्दभेन यागः। यागविशेष, अवकीर्ण याग। (मनु० ११।११८-२२)

ब्रह्मचर्यभ्रष्ट व्यक्तिको रात्रि समय चतुष्पथ पर पाक-यज्ञ विधानमें काणा गर्दभ द्वारा नैऋत देवताका याग करना चाहिये। इसमें विधिपूर्वक अग्निमें होम करके 'समासिञ्चन्तु मरुत.' इस मन्त्रसे घृत द्वारा वायु, इन्द्र, वृहस्पति और अग्निको आहुति देनी चाहिये। ब्रह्मवादी व्यक्तिगण कहा करते हैं कि व्रतस्थित द्विजगण यदि इच्छाकर्मसे स्त्री-योनिमें वीर्य सेक करें तो व्रतभङ्ग हो जाता है। उस व्रतभ्रष्टका ब्रह्मतेज मारुत, इन्द्र, वृहस्पति और पावकमें जाकर वास करता है।

कात्यायनश्रौतसूत्रमें इसका विशेष विवरण देखो।

गर्दभरूप (सं० पु०) गर्दभस्य रूपोऽस्य गर्दभरूपधारणात् तथात्वम्। विक्रमादित्य राजा।

गर्दभशाक (सं० पु०) गर्दभगन्धः शाको यस्य। गर्दभाख्यः शाको वा। ब्रह्मयष्टि, भारंगी, बरंगी।

गर्दभशाका (सं० स्त्री०) गर्दभशाक-टाप्। ब्रह्मयष्टि, बरंगी।

गर्दभशाखी (सं० स्त्री०) गर्दभगन्ध शाखा यस्याः। भार्गी, भारंगी।

गर्दभा (सं० स्त्री०) श्वेतकण्टकारी, सफेद कटैया।

गर्दभाक्ष (सं० त्रि०) गर्दभस्य वाक्षिणी यस्य। गर्दभ-तुल्य चक्षुविशिष्ट, जिसकी आंखें गदहेसी हों। (पु०) २ बलिराजाके एक पुत्रका नाम।

गर्दभाण्ड (सं० पु०) गर्दभं गन्धविशेषममति। प्लक्षवृक्ष, पाकरका पेड़। इसके पत्ते, काण्ड और फलादि पीपल वृक्षके जैसे होते हैं। इसका पर्याय—कन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक, प्लक्ष, शृङ्गी, प्लव, कमण्डलु, प्लक्षेश, कान्दरालक और प्लक्षवृक्ष है।

गर्दभाण्डक (सं० पु०) गर्दभाण्ड स्वार्थे कन्। गर्दभाण्ड-वृक्ष, पाकरका पेड़।

गर्दभाह्वय (सं० पु०) गर्दभ आह्वय आख्या यस्य। कुमुद-विशेष, एक प्रकारकी कुईं।

गर्दभि (सं० पु०) विश्वामित्रका एक पुत्र।
(महाभारत १३।४।५६)

गर्दभिका (सं० स्त्री०) क्षुद्ररोगविशेष। इस रोगमें वात पित्तके विकारसे गोल ऊंची फुंसियां निकलती हैं। इन फुंसियोंका रंग लाल होता है और इनमें बहुत पीड़ा होती है। पैत्तिक विसर्प रोगकी नाईं विवृता, इन्द्रवृद्धा, गर्दभी और जालगर्दभ इन सब रोगोंकी चिकित्सा करनी चाहिये। पाककालमें पाक किये हुए घृत और पक्व मधुके औषधसे इसे शुष्क करनेका विधान है। (भावप्रकाश)

गर्दभिल्ल—गुजरातके अन्तर्गत वल्लभीपुरके एक राजा। जैनग्रन्थके मतसे ये ५२३ सम्वत्में राज्य करते थे।

गर्दभी (सं० स्त्री०) १ कीटविशेष।
'पद्मानक पाककस्य कपतुण्डी इव गर्दभी।' (सुश्रुत)
२ अपराजिता नामकी लता। ३ श्वेत कण्टकारी, सफेद भटकटैया। ४ कटभी, गर्दभिका नामक रोग।
'या विद्या वातपित्ताभ्यां तामाहुर्गर्दभी।
सदाहा पिपीलिकाभि सराग पिड़काचिता॥' (चा० ट चिकित्सास्थान २१अ०)
६ गर्दभपती, गदही। इसके दूधका गुण बलकारक, वातश्वासनाशक मधुराम्लरसविशिष्ट, रूक्ष, दीपन और पथ्य है। दधिका गुण—रूक्ष, उष्ण, लघु, दीपन, पाचन, मधुराम्लविशिष्ट, रुचिकारक और वातदोषनाशक है। मक्खनका गुण—कषाय कफवातनाशक, बलकर, दीपन, उष्ण और मूत्रदोषनाशक है। (राजनि०)

गर्दावाद (फा० वि०) १ जो धूल या राखसे भरा हो। २ ध्वस्त, उजाड़। ३ बेसुध, बेहोश।

गर्दालू (फा० पु०) आलू बुखारा।

गर्दिश (फा० स्त्री०) १ घुमाव, चक्कर। २ विपत्ति, आपत्ति।

गर्दोख—भारतवर्षके उत्तरमें एक राज्य। यह अक्षा० ३१ ४०´ उ० और देशा० ८० २५´ पू०में सिन्धु और शतद्रु नदीके उत्पत्तिस्थान पर अवस्थित है। गर्दोखसे तिब्बतके लासा पर्यन्त एक रास्ता गया है। १८२६ ई०को चम्पा जातिने इसे जय किया था, किन्तु थोड़े वर्षोंके बाद यह महाराज गुलाबसिंहके अधिकारमें आ गया। यहां पर दुशाले बुननेको पशम बेची जाती है।

गर्द्ध (सं० पु०) गर्द्धते इति गृध भावे घञ्। १ स्पृहा, लोभ। २ गर्दभाण्डवृक्ष, पाकरका पेड़।

गर्द्धन (सं० त्रि०) गृध्यति गृध युच्। लुब्ध, लोभी, लालची।

गर्द्धभि (सं० पु०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम।
(महाभारत १३।४।५६)

गर्द्धित (सं० त्रि०) गर्द्धो जातोऽस्य, तारकादित्वात् इतच्। लुब्ध, लोभी।

गर्द्धिन (सं० त्रि०) गर्द्धोऽस्यास्तीति गर्द्ध णिनि। अत्यन्त लोभी। "अथाग्राभिषगर्द्धिन।" (मनु ४।२८)

गर्नाल (हिं० स्त्री०) गरनाल देखो।

गर्भ (सं० पु०) गीर्यते इति, गॄ भन्। "अर्तिस्तृ भन्।" उण् ३।१५२। १ भ्रूण, देहजन्मकारक शुक्रशोणितसंयोगजन्य मांस पिण्ड, हमल। २ शिशु, बच्चा। ३ कुक्षि, कोख। ४ पनस, कण्टक, काटाल। ५ नाटकका सन्धिभेद। ६ अभ्यर्ण्ट है मोयर। ७ उदर, पेट। ८ अभ्यन्तर, भीतरी हिस्सा। ९ नदीका कोई अन्तर्भाग, दरयाका कोई भीतरी हिस्सा। भाद्रकृष्ण चतुर्दशीको जितना पानी चढ़ आता, नदीगर्भ कह लाता है। १० अन्न। ११ अग्नि। १२ पुत्र।

गर्भाशयके शुक्रशोणितका नाम जीव है। विकार विशिष्ट प्रकृति प्रभृति समस्तको ही गर्भ कहा जाता है। कालवश जब अङ्गों और उपाङ्गोंके साथ गर्भ बढ़ता, मुनि-गण उसको शरीरी जैसा निर्देश करता है। जब स्त्री और पुरुष परस्पर संयोगकामी हो शुक्र त्याग करते, अस्थि शून्य गर्भ उत्पन्न होता है। जो स्त्री ऋतुस्नाता हो स्वप्नमें मैथुन करती, उसका ऋतुशोणित वायुयोगसे कुक्षिमें जा करके गर्भ बनता और महीने महीने बढ़ता है। क्रमश वह इन्द्रिय आदि पैतृक गुणवर्जित हो करके निकलता है।

विगुण वायुसे गर्भ भग्न हो करके सङ्ख्या अतिक्रम पृथक बहुत प्रकारसे विभक्त हो योनिमें पहुंचता है। कोई गर्भ

मस्तक और जठर द्वारा योनिद्वार निरोध करता, कोई शरीरको बदल करके कुब्जदेह निकलता है। कोई गर्भ एक हाथ, कोई दोनों हाथ टेढ़ा करके तिरछा लगता, कोई अधोमुख, कोई आस पास घूम करके ठहरता है। गर्भकी यही अष्टप्रकार गति है। दूसरी भी चार प्रकारकी चाल-सङ्कीलक, प्रतिखुर, परिघ और बीज कहलाती है। जो गर्भस्थ शिशु हाथ पांव ऊपर उठा करके मस्तक द्वारा कीलक-जैसा योनिद्वारमें आ मिल जाता, कीलक कहलाता है। इसी बच्चेको खुर जैसा देख पड़ने पर प्रतिखुर कहते हैं। दोनों हाथ और माथेके साथ योनिगत होनेसे बच्चेको बीज कहा जाता है। परिघकी तरह योनिमें पहुंचनेसे शिशुको परिघ बतलाते हैं। (माधवकर)

जिस गर्भिणीके अङ्ग ठण्डे रहते, जिसे लज्जा नहीं आती और जिसकी सभी शिराएं नीलवर्ण लगतीं और उठी रहतीं, वह मानसिक तथा आगन्तुक सन्तापसे तथा व्याधिसे बहुत पीड़ित होती और उसके पेटमें ही गर्भ गल जाता है।

जिस स्त्रीका गर्भ नहीं हिलता डुलता, जिसके देहका वर्ण काला तथा पीला लगता, जिसको शोथ उठता और जिसके सांस छोड़नेसे पूतिगन्ध आता उसका गर्भस्थ शिशु मरा हुआ समझा जाता है। (माधवकर)

कामहेतु स्त्री-पुरुषके संयोगसे विशुद्ध शुक्रशोणित द्वारा उत्पन्न होनेवाला स्त्रियोंका गर्भ कलल कहलाता है। शोणितके आधिक्यसे कन्या, शुक्राधिक्यसे पुत्र और शुक्र तथा शोणित दोनोंकी बराबरीसे नपुंसक उत्पन्न होता है। (शार्ङ्गधर)

जीवात्मा अपने पहले किये हुए कर्मोंके क्लेशोंसे प्रेरित हो करके विशुद्ध शुक्र और शोणितके सम्मेलनसे अरणि घर्षण द्वारा अग्न्युत्पत्तिकी तरह गर्भके आकारमें जन्म ग्रहण करता है। फिर माताके आहार-रसजात बीजरूपी सूक्ष्म जीवनीशक्ति समन्वित महाभूतसमूह द्वारा गर्भमें धीरे धीरे वह बढ़ता है। स्फटिक पर सूर्यका रश्मि जैसे चलता, जीव भी गर्भमें हिला डुला करता है। सभी कार्योंमें कारण लगा रहता है। इस लिये जीव गले लोहेकी तरह बहुतसे आकारोंमें परिणत हो करके तरह तरहकी निराली सूरतें बनाता है। हवासे बहुत तरह पर बंटनेमें कई बच्चे निकलते हैं। विकृत कफ आदि मलोंसे विजातीय और विकृतगर्भ सन्तान उपजता है। (वाभट)

सुश्रुतके मतमें पूरे १६ वर्षकी स्त्री २० वर्ष वाले पुरुषके साथ सङ्गत होने पर गर्भाशय, हृदय, रक्त, शुक्र, वायु, और पथ विशुद्ध रहनेसे बलवीर्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है। स्त्री पुरुषकी उम्र इससे कम पड़ने पर रोगी, अल्पायु और अल्पबुद्धि शिशु उपजता अथवा एकबारगी ही गर्भ नहीं उठता।

स्त्रियोंका रेत: रजोमय और पुरुषोंका वीर्य बीजविशिष्ट होता है। इसीसे संयोग द्वारा गर्भकी उत्पत्ति होती है। पहले दिन शुक्र शोणितके योगसे कलल बनता है। दश दिन पीछे वही खून बुलबुला-जैसा बन जाता और १५ दिनमें गाढ़ा पड़ करके २० दिनमें मांसके 'पगड जैसा दिखाता है। एक मासके मध्य उसमें सूक्ष्म पञ्चभूत तथा पञ्च इन्द्रिय उत्पन्न होते हैं। ५० दिनमें अङ्ग आदिके अङ्कुर, तीसरे महीने हाथ पांव और साढ़े तीन महीनेमें मस्तक आता और उसमें सार भर जाता है। चौथे महीने रूए, पांचवें महीने सजीवता, छठें महीने चाल, आठवें महीने जठराग्नि और नवें महीने चेष्टादि होते हैं। फिर वह गर्भमें नहीं रहना चाहता और दशवें या ग्यारहवें महीने यही गर्भ प्रसूत हो जाता है। (हारीत)

सुश्रुतके मतमें पहला अङ्ग, मस्तक और उसका उपाङ्ग केशसमूह है इसीके बीचमें मस्तिष्क वा छत्रिका होती है। फिर ललाट, दोनों भौहें और दोनों आंखें हैं, जिनके भीतरी भागमें दो पुतलियां रहती हैं। दोनों आंखोंके दो डीले काले और उनके किनारे दो सफेद भाग होते हैं। आंखोंके नीचे और ऊपर बिरनियां, उसके बाद अपाङ्ग या कोरें हैं। फिर क्रमश: दो शङ्ख, दो कान और उनके दो छेद और कानकी लौरें आती हैं। उसके बाद लगातार नाक, होंठ, अधर, गलफड़े, होंठोंका किनारा, मुंह, तालू, दो जबड़े, दांत, दांतोंकी मेंड़, जीभ, ठड्डी और गला है। दूसरा अङ्ग ग्रीवा या गर्दन है। यह ग्रीवा मस्तकसे मिली हुई है। दोनों हाथ तीसरा अङ्ग है। उसका उपाङ्ग—ऊपरी भागमें दोनों कन्धे, उसके नीचे दो प्रगण्ड, उसके निम्नभागमें दो कुहनियां,

उसके नीचे दो प्रकोष्ठ, फिर पहुंचा, दो हथेलियां, दो हाथ, दोनों हाथोंकी १० उंगलियां और उनमें १० नख होते हैं। चौथा अङ्ग वक्षःस्थल है। उसका उपाङ्ग दो स्तन हैं। पुरुषोंसे स्त्रियोंके दोनों स्तनोंमें प्रभेद पड़ता है। जवानीमें स्त्रियोंके दोनों स्तन उठ आते हैं। गर्भवती और प्रसूतिके दोनों स्तनोंमें दूध भर जाता है। हृदय कमलकी तरह और नीचेको मुंह किये हुए अवस्थित है। जागते रहनेमें वह खिलता और सो जानेमें सिकुड़ता है। यही हृत्पद्म जीवात्मा और चेतनाका स्थान है। इसीसे उसके तमोगुणसे भर जाने पर प्राणी सोया करते हैं। उसके बाद दो कोखें, छातीके दो जोड़ और दो हंसलियां और उसके बाद वक्षण (चढ़ा) है। पेट पांचवां और दोनों बगलें छठा अङ्ग हैं। रीढ़के साथ सभी पीठ सातवां अङ्ग है। उसका उपाङ्ग प्लीहा ठहरती, जो खूनसे उपजती और हृदयके अधोभागमें बाईं ओर रहती है। कोई लोग उसको रक्तवाही शिरा समूहकी जड़ कहा करते हैं। हृदयके अधोभागमें बाईं ओरको फेफड़ा है। वह खूनके झागसे पैदा होता है। उसके बाद हृदयकी दक्षिण ओरके लहूसे उत्पन्न यकृत् अवस्थित है। वह रक्त और पित्तको जगह है। उसके नीचे हृदयकी दाहनी ओर क्लोम (तलखा) है। वह जलवाही शिराको जड़ ठहरता और प्यासको रोक रखता है। उसकी उत्पत्ति वातरक्तसे है। मेद और शोणितके सारसे दोनों वुक्क बनते हैं। आयुर्वेदवित् पण्डित पुरुषोंकी आंत साढ़े ३ व्याम (चार हाथका एक माप) और स्त्रियोंकी तीन व्याम परिमित बतलाते हैं। फिर उण्डुक अर्थात् फेफड़ेकी ढाकनेवाली झिल्ली है। उसके बाद यथाक्रम कमर, त्रिक (रीढ़के नीचेकी जगह), वस्ति और दो वक्षण आते हैं। वस्तिदेश (पेड़ू) से बड़ी बड़ी नसें निकली हैं और वह वीर्य तथा मूत्रस्थान भी है। स्त्रियोंकी योनि शङ्खनाभिकी तरह तीन आवर्त विशिष्ट होती है। इसी योनि द्वारा स्त्रियोंके पेटमें गर्भाधान लगता है। योनिकी तीसरी लपेटमें गर्भ रहता है। दोनों अण्डकोष कफ, रक्त तथा मेदके सारसे उत्पन्न हैं। यही दोनों अण्ड वीर्यवाही शिराका आधार हैं, इन्हींमें पुरुषत्व प्रतिष्ठित है। गुह्यका परिमाण साढ़े ४ अङ्गुल है। उसमें शङ्खावर्तकी तरह ३ वलय पड़े हुए हैं। इनमें पहलेका नाम प्रवाहिनी है। उसकी नाप डेढ़ अङ्गुल होती है। उसके नीचे डेढ़ ही अङ्गुलको उत्सर्जनी है। उसके निम्नभागमें एक अंगुलकी सम्वरणी रहती है। गुह्यदेशका मुंह आध अङ्गुल पड़ता और मलत्यागका पथ ठहरता है। पुरुषोंका प्रोथ ही स्त्रियोंका नितम्ब कहलाता है। उसके बाद दो ककुन्दर (कूले) हैं। उसके बाद दो सक्थि आते, जो आठवां अङ्ग कहलाते हैं। इसका उपाङ्ग—दो घुटने और पिंडलियां, दो जांघें, दो घण्टिकाएं, दो पार्ष्णि, दो तलवे और दो पदाग्र हैं।

यह शरीर अपरापर जिन जिन अवयवीभूत कारणोंसे बनता, वह है—वात, पित्त, कफ और धातुसमूह। गर्भ ग्रहणके पीछे ही योनिसे शुक्रशोणित बहता, श्रम मालूम पड़ता, जांघें सुस्त हो जातीं, प्यास बढ़ती, ग्लानी आती, योनि फड़कती, दोनों स्तनोंका मुंह काला होता, रोंगटे खड़े हो जाते आंखें तथा पलकोंके बाल सिकुड़ते, अनिच्छामें वमन उठता, मनोहर गन्धसे जी बिगड़ता, कफ गिरता और अवसाद लगता है। उपर्युक्त सभी चिह्न गर्भिणीके हैं।

बाल, दाढ़ी, मूछ, रुएं नख, दांत, शिरा, धमनी, स्नायु, साद, शुक्र और रक्त पितासे उत्पन्न होता है। फिर मांस, मज्जा, मेद, यकृत्, प्लीहा, अन्त्र, नाभि, हृदय और गुह्यदेशकी उत्पत्ति मातासे है। शरीरकी बाढ़, रङ्ग, बल और देहकी स्थिति रससे निकलती है। ज्ञान, विज्ञान, आयु, सुखदुःख आदि और इन्द्रिय जीवात्माकी ही हुआ करते हैं। स्त्रीकी रसवाहिनी नाड़ीसे गर्भकी नाभि मिल जाती है। इसीसे गर्भ नित्य नित्य बढ़ता है। यही गर्भ माताकी निश्वास, उच्छ्वास, संक्षोभ और स्वप्राश प्राप्त होता है।

गर्भस्थ सन्तानकी नाभिमें ज्योति स्थान प्रतिष्ठित है। वायु इसी ज्योति द्वारा चालित होता और उसीसे गर्भका देह बढ़ा करता है। वायु उष्माके साथ मिल करके शरीरके जिस जिस स्थानमें पहुंचता, गर्भस्थ सन्तानका वही अङ्ग बढ़ता है। हवाकी कमी और पेटकी थैलीमें हवाके न पहुंचने—दोनों कारणोंसे पेटका बच्चा न तो सांस लेता और न मलमूत्र छोड़ता है।

गर्भघातिन् (सं० त्रि०) गर्भं हन्ति णिनि। जो गर्भ-विनाश करता हो।

गर्भघातिनी (सं० स्त्री०) गर्भं हन्ति स्रावयतीति हन-णिनि-ङीप्। लाङ्गलिकावृक्ष।

गर्भचिन्तामणिरस—वैद्यकोक्त औषधविशेष। इसकी प्रस्तुत-प्रणाली इस तरह है—पारा, गन्धक और स्वर्ण को जम्बीरी नीबूके रसमें तीन दिन तक घोंट कर सोंठ, पीपर और मिर्चके क्वाथके साथ तीन बार भावना देनी पड़ती है। बाद चार रत्ती प्रमाणकी हर एक गोली बनाकर सेवन करनेसे गर्भिणीके शूल, विष्टम्भ, ज्वर और अजीर्ण प्रभृति रोग विनष्ट होते हैं।

एक प्रकारका और गर्भचिन्तामणि रस है। इसकी प्रस्तुत-प्रणाली यों है:—रससिन्दूर, रौप्य, और लौह प्रत्येकका दो तोला, कर्पूर, वङ्ग, ताम्र, जातिफल, जावित्री, गोखुर, शतमूली, बेड़ेला और गोरक्षचाकुलिया प्रत्येकका एक तोला ले कर सभोंको जलके साथ पीसना चाहिए। दो रत्ती प्रमाणकी हर एक गोली बना बना कर सेवन करनेसे गर्भिणीका ज्वर, दाह, प्रदर, सन्निपात और आदिसूतिका प्रभृति रोग शीघ्रही दूर हो जाते हैं। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गर्भच्युति (सं० स्त्री०) गर्भस्य च्युतिः क्षरणम्। गर्भ-स्राव, गर्भपात, हमलका गिरना।

"यथा कालप्रकर्षेण मुक्तो नाडीनिबन्धनात्।
गर्भाशयस्थो यो गर्भो जननाय प्रपद्यते॥
कृमिवाताभिघातैस्तु तदेवोपद्रुतं फलं।
पतत्यकालेऽपि तथा तथा स्याद् गर्भविच्युतिः॥" (सुश्रुत)

गर्भाशयस्थित गर्भके यथासमय नाड़ीबन्धनसे मुक्त होनेको जन्म कहते हैं। किन्तु जब यह कृमि और वातादि द्वारा उपद्रुत हो कर अकालमें पतित होता है तो उसे गर्भच्युति कहते हैं।

गर्भज (सं० त्रि०) गर्भ-जन-ड। १ गर्भसे उत्पन्न, संतान।

जैनमतानुसार जो शरीर स्त्रीके उदरमें, माताके रुधिर (रजः) और पिताके वीर्यके मिश्रणसे उत्पन्न होता है। जैसे—मनुष्य, हाथी, घोड़ा आदिका जन्म, ये सब गर्भसे जन्म लेते हैं। गर्भजन्म देखो। (सर्वार्थसिद्धि, २ अ०)
२ जो जन्मसे हो-जैसे गर्भजरोग, गर्भजगुण।

गर्भजन्म—जैनमतानुसार मातापिताके शोणित शुक्रसे जिनका शरीर बने। उपपाद, गर्भ और सम्मूर्च्छन जन्म-मेंसे दूसरा जन्म। जरायुज (मनुष्यादि), अण्डज (जो अण्डे से पैदा होते हैं) और पोत (जो योनिसे निकलते ही दौड़ने लगते हैं और जिनके ऊपर जेर आदि किसी प्रकारका आवरण नहीं रहता। जैसे—सिंह, घोड़ा आदि) जीवोंके गर्भजन्म ही होता है। गर्भज देखो। (जैनसिद्धान्तप्रवेशिका अ० २)

गर्भगण्ड (सं० पु०) गर्भस्य अण्ड इव। नाभिके स्फोट।

गर्भत्व (सं० क्ली०) १ गर्भका धर्म, गर्भका भाव। २ मेघमें जलकी गर्भभाव प्राप्ति। (सायण)

गर्भद (सं० पु०) गर्भं ददाति सेवनेनेति। १ पुत्रजीव-वृक्ष, पतजिव। २ पुत्रोत्पादक औषधविशेष। (त्रि०) ३ गर्भ देनेवाला जिससे गर्भ रहे।

गर्भदा (सं० स्त्री०) गर्भ-दा-क-टाप्। श्वेतकण्टकारी, सफेद भटकटैया।

गर्भदात्रिका—गर्भदात्री देखो।

गर्भदात्री (सं० स्त्री०) गर्भं ददातीति गर्भदा तृच्-ङीप्। श्वेतकण्टकारी, सफेद भटकटैया। इसका पर्याय-पुत्रदा, प्रजादा, अपत्यदा, सृष्टिप्रदा, प्राणमाता और तापसद्रुम-सन्निभा इसका गुण—मधुर, शीत, स्त्रीयोंके पुष्पादि दोष, पित्त, दाह और श्रमनाशक एवं गर्भोत्पादक है।

गर्भदास (सं० पु०) गर्भात् गर्भमारभ्य दासः, ५-तत्। वह जो जन्मसे दास हो, दासीपुत्र।

गर्भदासी (सं० स्त्री०) गृहस्थित दासीसे उत्पन्न दासी।

गर्भदिवस (सं० पु०) गर्भाय गर्भधारणाय दिवसः। गर्भधारणका उपयुक्त दिन।

"केचिद्वदन्ति कार्त्तिकस्य शुक्लमतीत्य मैत्रस्य गर्भदिवसाः स्युः।"
(बृहत्संहिता २१।५)

गर्भदोहद (सं० क्ली०) गर्भस्य दोहदम्, ६-तत्। गर्भ-के लिये अभिलषणीय द्रव्य।

गर्भद्रुह (सं० त्रि०) गर्भं द्रुह्यति, द्रुह-क्विप्। गर्भपात करनेवाली स्त्री। (कुल्लूक)

गर्भध (सं० त्रि०) गर्भं ददातीति धा-क। गर्भधारण करनेवाला, गर्भधारक। 'गर्भध गर्भधारकं रेत'।' (वेददीप)

गर्भधरा (सं० स्त्री०) गर्भस्य धरः टाप्। गर्भधारिणी स्त्री। (भारत १।१८८।७०)

गर्भधान (सं० क्ली०) गर्भस्य धानमाधानम्। गर्भाधान। (भारत १।६१।२०…११)

गर्भधारण (स क्ली०) गर्भस्य धारणम्, ६ तत्। गर्भमें सन्तान धारण, गर्भिणी होना। गर्भधारणके चिह्न मिताक्षरामें इस तरह लिखा है—यनादि लक्षण द्वारा गर्भधारण मालूम किया जा सकता है। जिसे गर्भ रह गया हो उसके श्रम, ग्लानि, पिपासा, अशक्ति, अवसन्नता, शुक्रशोणितका अनुबन्ध और योनिस्फुरण होते हैं। पारस्करका मत है कि यदि स्त्री गर्भधारण न करे तो उपाधान करके निदिग्धिका, सिंही और श्वेत पुष्पके मूल पुष्या नक्षत्रमें उखाड कर ऋतुस्नान करने पर चौथे दिनकी रातको जलसे बांट कर दाहिनी नासिकामें नस लिया जाय तो स्त्रीको गर्भ रह जाता है। आयुर्वेदीय ग्रन्थमें भी लिखा है कि शृङ्गवेर, मरिच, नागकेशर और पीपलको घृतके साथ खाने पर वन्ध्या स्त्री भी गर्भधारण करती है।

गर्भधि (सं० स्त्री०) गर्भं दधातीति, गर्भ-धा इन्। गर्भधारिणी, वह औरत जिसके हमल रह गया हो।

गर्भनाडी (सं० स्त्री०) गर्भस्य गर्भोत्पादनस्य योग्या नाडी। गर्भधारण करनेकी उपयुक्त नाडी। (सुश्रुत शारीर १० अ०)

गर्भनाल (सं० स्त्री०) फलीके भीतरकी वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है।

गर्भनाश (सं० पु०) गर्भपात।

गर्भनाशना (सं० स्त्री०) अरिष्टकवृक्ष, रीठेका पेड।

गर्भनिःसृत (सं० त्रि०) गर्भात् निःसृतम्। गर्भसे निर्गत, गर्भसे गिरा हुआ।

गर्भनिस्रव (सं० पु०) वह झिल्ली आदि जो बच्चेके उत्पन्न होने पर पीछेसे निकलती है।

गर्भनुद् (सं० पु०) गर्भं नुदति पातयतीति नुद क्विप्। कलिकारीवृक्ष।

गर्भपत्र (सं० पु०) १ शाखा, कोमल पत्ता कोंपल। २ फूलके अन्दरके पत्ते जिनमें गर्भकेसर रहता है।

गर्भपरिस्रव (सं० पु०) गर्भस्य परिस्रव चरणशोषयाश। सन्तान होने पर उसके साथ जो झिल्ली बाहर होती है उसीको गर्भपरिस्रव कहते हैं।

गर्भपाकी (सं० पु०) गर्भस्य पाको परिणतिः साध्यत्वेनास्त्यस्य इनि। षष्टिधान, साठी धान।

गर्भपात (सं० पु०) गर्भस्य पात, ६ तत्। १ गर्भका पांचवें या छठे महीनेमें गिर जाना।

'तत स्त्रियाः … गर्भपात पञ्चमषष्ठयोः।' (माधव) गर्भम १२ ई…।

२ गर्भका गिरना।

गर्भपातक (सं० पु०) गर्भं पातयतीति पत् णिच् ण्वुल्। रक्तशोभाञ्जनवृक्ष, लाल सोहिञ्जनका पेड।

गर्भपातन (सं० पु०) गर्भं पातयतीति, पत णिच ल्यु। १ रीठा करञ्ज, बडारीठा। २ गर्भका नष्ट होना।

गर्भपातिनी (सं० स्त्री०) गर्भं पातयति पत णिच् णिनि। १ विशल्यावृक्ष, गुरुच या गिलोयका पेड। २ कलिकारीवृक्ष, कलिहारीका पेड।

गर्भपोषण (सं० क्ली०) गर्भस्य पोषणम्, ६ तत्। १ यत्नपूर्वक गर्भ पालन। २ गर्भकी पुष्टि सम्पादक विधि।

गर्भवती स्त्रीको चाहिये कि वह प्रथम दिनसे हृष्ट, पवित्र और अलङ्कृत हो कर शुभ्रवस्त्र परिधानपूर्वक शान्तिकर्म और मङ्गलजनक कार्य करे एवं देवता, ब्राह्मण और गुरुके प्रति श्रद्धान्वित बने। मलिन, विकृत और हीनगात्र कदापि स्पर्श न करना चाहिये। दुर्गन्ध ग्रहण, दूषितद्रव्य दर्शन और उत्तेजक वाक्य परित्याग करे। शुष्क, बासी और क्लेदयुक्त अन्न भोजन करना निषिद्ध है। टहलनेके लिये बाहर जाना, शून्य घरमें रहना, श्मशानमें जाना, वृक्ष पर चढना, क्रोध और भय करना एवं भारवहन तथा उच्चशब्द करना, इन सबोंका परित्याग कर्तव्य है। ऐसा तैल कदापि सेवन नहीं करना जिससे गर्भ नष्ट हो। अथवा शरीरको किसी प्रकार कष्ट नहीं देना चाहिये। जो अधिक ऊंचा न हो अथवा जिसमें किसी प्रकारको बाधा न पहुंचे ऐसी शय्या और मृदु आस्तरण व्यवहारमें लाना उत्तम है। तृप्तिजनक, द्रव, मधुर, रसप्रचुर स्निग्ध, दीपनीय और सुसंस्कृत अन्न भोजन करना चाहिये। ये सब कार्य प्रसवकाल तक कर्तव्य है। विशेषतः गर्भवती स्त्रीको प्रथम, द्वितीय, और तृतीय मासमें प्रायः मधुर और शीतल द्रव्य आहार करना चाहिये। तृतीय मासमें दुग्धके साथ साठी चावलका भात, चतुर्थ मासमें दधिके

माघ और पञ्चम मासमें घृतके साथ भोजन करना चाहिये। चतुर्थ मासमें दुग्ध और मक्खनके साथ अन्न एवं जाङ्गल-जात जीवके मांसके साथ हृसिकर अन्न, पञ्चम मासमें दुग्ध और घृतविशिष्ट उक्त समांस अन्न, छठे मासमें गोक्षुरक सिद्ध क्षाथ घृतके साथ सेवन करना लाभदायक है। सप्तम मासमें पृश्निपर्णी आदि सिद्ध करके घृतके साथ खाना चाहिये। ऐसा करनेसे गर्भ परिपुष्ट होता है। अष्टम मासमें वेरके जलके साथ वला, अतिवला, शतपुष्प, तिलकुटा, दुग्ध, तैल, लवण, मदनफल, मधु और घृतामिश्रित अन्न भोजन करना चाहिये। इससे पुराने मलको शुद्धि और वायुका अनुलोमन होता है। इसके वाद दुग्ध, मधुर और कषाय द्रव्य सिद्ध करके तैल-के साथ शरीरमें लगानेसे वायु सरल होती है और उप-द्रवशून्य हो करके बच्चा सुखसे बाहर निकलता है।

गर्भप्रसव (सं॰ पु॰) गर्भस्य प्रसवः। गर्भस्थ शिशुके भूमिष्ठ होनेके लिये वहिर्गमनरूप क्रियाविशेष, गर्भस्थ सन्तानके बाहर आनेकी क्रिया।

गर्भभर्मन् (सं॰ क्ली॰) १ शिशुसन्तानका भरणपोषण। २ गर्भस्थ शिशुका भरण पोषण। (रघु ३।१२)

गर्भभवन (सं॰ क्ली॰) गर्भस्य भवनम्। १ घरके मध्यकी कोठरी। २ प्रसूतिका गृह, सौरो।

गर्भभाण्डक (सं॰ पु॰) प्रचवच, पाकरका पेड़।

गर्भभार (सं॰ पु॰) गर्भ एव भारः। गर्भरूप भार, गर्भका भारीपन। (कथासरित्सागर २६।११६)

गर्भमण्डप (सं॰ पु॰) गर्भस्थितः मण्डपः। घरके अन्तर्गत मण्डप।

गर्भमास (सं॰ पु॰) गर्भस्य गर्भारम्भस्य मासः। १ गर्भा-रम्भक मास, वह महीना जिसमें गर्भाधान हो। २ गर्भ सहित मास।

गर्भमोचन (सं॰ क्ली॰) गर्भस्य मोचनम्, ६-तत्। प्रसव-करण।

गर्भयोषा (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्था योषा। गर्भस्थानोया स्त्री, गर्भिणी स्त्री। (भारत १३२ अ॰)

गर्भरक्षण (सं॰ क्ली॰) गर्भस्य रक्षणम्। गर्भपालन।

गर्भरस (सं॰ त्रि॰) गर्भे रसमस्या। १ जिसके गर्भमें रस हो। २ गर्भोत्पत्ति निमित्त रस।

गर्भरा (सं॰ स्त्री॰) प्राचीनकालकी एक प्रकारको नाव। यह ११२ हाथ लम्बी, ५६ हाथ चौड़ी और ५६ हाथ ऊंची होती थी।

गर्भरूप (सं॰ त्रि॰) गर्भस्य नवोत्पन्नशिशोः रूपमस्य यथा गर्भे दैत्यकोपि रूपमस्य तरुण।

गर्भलक्षण (सं॰ क्ली॰) गर्भो लक्ष्यते येनेति करणे ल्युट्। गर्भसूचक चिह्न, गर्भकी पहचान। (सुश्रुत ११४ अ॰)

गर्भलम्भन (सं॰ क्ली॰) गर्भरक्षणार्थ क्रिया, वह क्रिया जो गर्भकी रक्षाके लिये की जाती है।

गर्भवती (सं॰ स्त्री॰) गर्भो विद्यते यस्याः मतुप् मस्य वः। गर्भिणी, वह औरत जिसके पेटमें बच्चा हो। इसके नामान्तर—अन्तर्वत्नी, गुर्विणी, गर्भिणी, ससत्त्वा, आपन्न-सत्त्वा, दौहदवती, उदारिणी और गुर्वी है।

जिस स्त्रीको गर्भधारण किये अल्प दिन हुए हों, उसकी योनिसे शुक्र और शोणितक्षरण, श्रमवोध, अव-सन्नता, पिपासा, ग्लानि और योनिस्फुरण होते हैं। गर्भधारणके बाद क्रमश दोनों स्तनके मुख कृष्णवर्ण और आंखके पल वंद हो जाते हैं। गर्भदेखो।

गर्भमें पुत्र होनेसे द्वितीय मासकी गर्भाशयमें पिण्डा-कार गर्भ और दाहिनी आंखका भारीपन मालूम पड़ता है। सबसे पहले दाहिने स्तनमें दुग्ध निकलता, दाहिना ऊरु सुपुष्ट होता और मुखका वर्ण प्रसन्न रहता है। स्वप्नमें भी पुत्रके निमित्त वासना होती है। स्वप्नमें आम्र-फल और पद्मादि प्राप्त होते हैं।

जिसके गर्भमें कन्याकी उत्पत्ति हो, द्वितीय मासमें उसके गर्भमें पेशी दीख पड़ती है एवं पुत्रको जन्म लेने पर जो जो चिह्न दिखाई पड़ते उसके विपरीत लक्षण इसमें प्रकाशित होते हैं।

नपुंसक होने पर गर्भ पिंडके सदृश मालूम पड़ता, गर्भके दोनों पार्श्व उन्नत होते और उदरका अग्रभाग विस्तृत दीखता है। (भावप्रकाश)

यमज होने पर जिस मासमें उदरको जितना बढ़ना चाहिये तदपेक्षा द्विगुण और उससे अधिक परिमाणमें वड़ा दिखाई देता है। उदरका सम्मुख चौड़ा और उस-के ऊपरसे नीचे तकका भाग दबा हुवा तथा उदर सम-द्विभागमें विभक्त मालूम पड़ता है। उदर स्थान स्थान

पर ऊंचा नीचा होता है तथा दोनों भ्रूणोंकी विषम चलन क्रियासे गर्भिणीको अधिक कष्ट पहुंचता है। पेट खूब भारी होकर चलने गर्भिणीके दोनों पैर सूज जाते हैं। ये सब लक्षण रहने पर भी किसी समय यमज गर्भका स्थिरनिश्चय नहीं किया जा सकता है। युरोपीय चिकित्सक ष्टेथस्कोप यन्त्र या कर्ण द्वारा दोनों हृत्पिण्डकी सङ्कोचिता और प्रसारिका क्रियाका शब्द सुन कर यमज गर्भ स्थिर करते हैं।

गर्भवसति (सं॰ स्त्री॰) गर्भं कुक्षिरेव वसति वास स्थान। १ कुक्षिरूप वासस्थान। (रघिवन्‌ ६०,५०) २ गर्भमें अवस्थिति, गर्भमें रहना।

गर्भवास (सं॰ पु॰) वसति अस्मिन्‌ वास, गर्भ एव वास वासस्थान। १ गर्भागार। २ गर्भके भीतरकी स्थिति।

गर्भविच्युति (सं॰ स्त्री॰) गर्भात्‌ विच्युति, ५ तत्‌। रोगादिके कारण गर्भका अकाल पतन। गर्भस्राव देखो।

गर्भविनोदरस—सूतिका रोगकी वैद्यकोक्त औषध। हिङ्गुल ८ तोला, सोंठ, पीपल, मरिच, जैत्री, लवङ्ग प्रत्येकका ५ तोला, स्वर्णमाक्षिक ४ तोला, इन सभीको जलमें पीसकर मटर परिमाणकी कर एक गोली बनाई जाती है। इस के सेवन करनेसे समस्त प्रकारके सूतिकारोग नाश होते हैं।

गर्भविपत्ति (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य विपत्ति, ६ तत्‌। रोग, स्राव और पातादिके लिये गर्भका आपद्‌।

गर्भविलासतैल (सं॰ क्ली॰) गर्भस्थापन करनेका तैल।

गर्भविलासरस (सं॰ पु॰) गर्भिणीज्वररस। पारा, गन्धक और मृतताम्रमका समान भाग ले कर अघोर रस के साथ तीन दिन तक गर्भिणी स्त्रीको सेवन करना चाहिये।

गर्भविद्राविणी (सं॰ स्त्री॰) छोटी इलायची

गर्भवेदना (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य वेदना। सन्तानोत्पत्ति के लिये व्यथा, बच्चा उत्पन्न करनेके समयका कष्ट।

गर्भवेश्मन्‌ (सं॰ क्ली॰) गर्भं एव वेश्मन्‌। गर्भरूप गृह वह घर जो गर्भके जैसा बना हो।

गर्भव्याकरण (सं॰ पु॰) चिकित्साशास्त्रका एक अंश जिसमें गर्भकी उत्पत्ति तथा वृद्धि आदिका वर्णन होता है।

गर्भव्यापद्‌ (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य व्यापत्‌, ६ तत्‌। गर्भकी विपत्ति, गर्भका क्लेश।

गर्भव्यूह (सं॰ पु॰) गर्भ इव गूढो व्यूह। लड़ाईमें पद्माकृति सैन्य रचनाविशेष। युद्धमें सेनाको एक प्रकारकी रचना, जिसमें सेना कमलके पत्तोंकी तरह अपने सेनापतिको चारों ओरसे घेर कर खड़ी होती और लड़ती है।

गर्भशङ्कु (सं॰ पु॰) गर्भस्य गर्भचिकित्सार्थं शङ्कु। चिकित्साशास्त्रानुसार एक प्रकारका यन्त्र जिसके द्वारा मरा हुआ बच्चा पेटके भीतरसे निकाला जाता है। इस के मुहका घेरा आठ अङ्गुलका होता है।

गर्भशङ्कुक (सं॰ पु॰) गर्भशङ्कु स्वार्थे कन्‌। मूढगर्भाकर्षणार्थ यन्त्रविशेष, वह औजार जिससे मरे हुए बच्चे का पेटसे निकालते हैं।

गर्भशय्या (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य गर्भस्थितियो शय्या इव स्थानम्‌। गर्भकी उत्पत्तिका स्थान।

"[illegible]।
[illegible]।
[illegible]।
[illegible]" (भगवद्गीता)

गर्भशल्य (सं॰ क्ली॰) गर्भवेदना, गर्भशूल।

गर्भशातन (सं॰ क्ली॰) भेषज द्वारा गर्भपात, दवाईसे गर्भपात।

गर्भशोष (सं॰ पु॰) गर्भका सूखता रोग।

गर्भस्राव (सं॰ पु॰) गर्भस्राव देखो।

गर्भसंक्रमण (सं॰ क्ली॰) गर्भे संक्रमणं अन्यदेहादि त्यागेन [illegible] प्रवेश। देहान्तरग्रहणार्थ कुक्षिप्रवेशरूप जन्म।

"[illegible]।
[illegible]" (भगवद्गीता १०७०)

गर्भसम्भव (सं॰ पु॰) गर्भस्य सम्भव। गर्भोत्पत्ति, गर्भका उत्पन्न।

गर्भसम्भूति (सं॰ स्त्री॰) गर्भस्य सम्भूति। गर्भोत्पत्ति। ([illegible])

गर्भसमय (सं॰ पु॰) गर्भस्य समय। १ गर्भकाल, ऋतुस्नानके बाद सहवास काल। २ दृष्टिका अनुत्पत्ति निर्दिष्टकाल काल। ([illegible])

गर्भसुभग (सं० त्रि०) गर्भ सुभगः। १ गर्भकालावधि सौभाग्यशाली। गर्भधारणात् सुभगा। २ गर्भधारणके लिये सौभाग्यशालिनी।

गर्भसूत्र (सं० क्लो०) बौद्धसूत्र विषयका नाम।

गर्भस्थ (सं० त्रि०) गर्भे तिष्ठति स्था-क। जो गर्भमें स्थित हो। (सुश्रुत १।३ अ०)

गर्भस्थान (सं० क्लो०) गर्भाशय।

गर्भस्थली (सं० स्त्री०) गर्भ एव स्थली स्थानम्। गर्भरूप स्थान, गर्भाशय।

गर्भस्राव (सं० पु०) गर्भ-स्रु-घञ्। गर्भस्य स्रावः, ६-तत्। प्रसवकालके पहले गर्भकालसे चार मास पर्यन्त शोणितरूपसे गर्भका पतन, गर्भच्युति।

यदि गर्भवतीके गर्भसे बार बार रक्तस्राव होता हो, तो उसको बन्द करनेके लिये सुस्निग्ध उत्पलादि सिद्ध करके क्वाथ पिलाना चाहिये। नील, उत्पल, रक्तवर्ण कुमुद, कह्लार, श्वेतपद्म और यष्टिमधुको उत्पलादिगण कहते हैं।

गर्भस्राव होने पर दाह, पार्श्व-वेदना, प्रदर, पृष्ठ वेदना, आनाह और मूत्रसङ्ग होते हैं। गर्भके एक स्थानसे दूसरे स्थानको सञ्चालन होने पर आमाशय और पक्वाशयमें क्षोभ तथा दाहादि उपरोक्त उपद्रव हुआ करते हैं। गर्भस्रावमें दाहादिके होने पर स्निग्ध और शीतल क्रिया कर्तव्य है।

कुशमूल, काशमूल, भेरोण्डामूल और गोक्षुर इन सभोंको दुग्धमें पाक कर चीनीके साथ गर्भिणीको पीनेके लिये दें। गोक्षुर, यष्टिमधु, कण्टकारी और बाणपुष्प इन सभोंके साथ दुग्धपाक कर चीनी और मधुके साथ पिलानेसे गर्भिणीकी गर्भवेदना जाती रहती है।

कोष्ठागारिका मृत्तिका, नवमल्लिका, लज्जालुलता, धाइफूल, गेरूमट्टी, रसाञ्जन और धूप इन समस्त पदार्थोंका चूर्ण कर मधुके साथ सेवन करनेसे गर्भपात नहीं होता है।

गर्भस्रावाशौच (सं० क्लो०) गर्भस्रावका अशौच। जितने महीनेका गर्भ रहता है उतने दिन तकका सूतक लगता है। जिसे स्रावशौच कहते हैं। कूर्मपुराणमें लिखा है कि छह मासके पहले यदि गर्भस्राव हो तो, गर्भस्रावाशौच उतनेही दिन तक रहेगा जितने मासमें गर्भस्राव होता है। छह मासके बाद गर्भपात होनेसे स्त्रियोंको दश रात्रि और सपिण्डयोंका सद्यशौच रहता है।

गर्भस्रावी (सं० पु०) गर्भं स्रावयतीति स्रु णिच् णिनि। हिन्तालवृक्ष, ताड़, खजूरकी जातिका पेड़।

गर्भहत्या (सं० स्त्री०) भ्रूण हत्या, गर्भपात।

गर्भागार (सं० क्लो०) गर्भ इव आगारम्। १ गर्भगृह, वह कोठरी जो घरके मध्यमें हो, घरके बीचका कमरा। २ आंगन। ३ गर्भस्थान, गर्भाशय।

गर्भाङ्क (सं० पु०) अभिनयके अंकका एक भाग। इसमें केवल एक दृश्य होता है। इसके समाप्त होने पर पहली यवनिका उठाई अथवा दूसरा गिराई जाता है और तब दूसरा दृश्य आरंभ होता है (सा०द० ६।२८०)

गर्भाट (सं० त्रि०) गर्भं अत्ति-अद्-घञ्। गर्भभक्षक।
"गर्भाटं अव मायद हविरति म..." (ऋक् १०।१६२।३)

गर्भाधान (सं० क्लो०) गर्भ आधीयते अनेन, आ-धा करणे ल्युट्। १ दशविध संस्कारोंमें प्रथम संस्कार। प्राचीन धर्मशास्त्रकारोंके मतमें प्रतिबन्धक न रहनेसे विवाहित स्त्रीके प्रथम ऋतुमें ही गर्भाधान संस्कार करना चाहिये। गोभिलका कहना है कि ऋतुमती स्त्रीका शोणितस्राव रुकते ही सङ्गमकाल होता है। (२।५।८) सांख्यायन ऋषिके मतमें (१।१८।१) नवोढ़ा वा चिरकाल परिणीता भार्याके साथ ऋतुकाल उपस्थित होने पर अभिगमन करना चाहिये मनुसंहितामें (३।४५) ऋतुकालको अभिगमन करनेकी बात कही है। फिर गौतम, याज्ञवल्क्य प्रभृति संहिताओंमें भी ऐसा ही विधान देख पड़ता है। प्रदर्शित प्रमाणों द्वारा निश्चित न होते भी कि प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कार पड़ेगा, संग्रहकारोंने दूसरे दूसरे वचनोंके साथ सामञ्जस्य लगा करके प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कारका विधान किया है। यह मानी हुई बात है कि धर्मशास्त्रका विधि पालन न करनेसे प्रत्यवाय वा पाप पड़ता है। जब सांख्यायनीय गृह्यसूत्र और मनु प्रभृति प्रायः सभी धर्मशास्त्रोंमें ऋतुकालको गमन करनेका विधान है, प्रथम ऋतुको अभिगमन न करनेसे इसमें सन्देह नहीं कि प्रत्यवाय वा पाप लग जावेगा

पराशरने स्पष्ट ही कह दिया है—जो व्यक्ति दृष्टा कहा रहते भी ऋतुमती भार्याको अभिगमन नहीं करता, उसको बालकहत्याका पाप लगता है। इससे साफ समझ पड़ता है कि प्रतिबन्धक न रहनेसे प्रथम ऋतुको ही गर्भ संस्कार करना चाहिये, नहीं करनेसे पाप चढ़ता है। आश्वलायन गृह्यपरिशिष्टमें प्रथम ऋतुको ही गर्भाधानकी बात है—

"अथर्तुमत्या प्राजापत्यवती प्रथमे ऋतुश्री इति शुभातयाम्भारम्भ प्राजापत्यस्य स्थालीपाकस्य हुत्वा पाणिग्रहणी कुर्यात्।"

विवाहके पीछे ऋतुमती स्त्रीके प्रथम ऋतुमें ही शुभ दिनको गर्भाधान कार्यके अनुष्ठानमें प्रवृत्त हो प्रजापति देवताके उद्देशसे चरु पाक करके घृताहुति देना चाहिये। गृह्यपरिशिष्टके इस विधानसे साफ मालूम पड़ता है कि विवाहके पीछे प्रथम ऋतुको ही गर्भाधान संस्कार कर्तव्य है। गर्भाधानकी यह प्रथा हिन्दुओंके समाजमें चिर दिनसे चली आती है। देशमें इसीका नाम पुनर्विवाह, पुष्पोत्सव, फलशोभन फूलचोक आदि पड़ा है। सब देशोंमें सभी श्रेणियोंके हिन्दू विशेष प्रतिबन्धक न रहनेसे गर्भाधान संस्कार किया करते हैं। प्राचीन स्मृतिग्रन्थकारों और उनके परवर्ती रघुनन्दनने प्रथम रजस्रावको ही गर्भाधानका विधान किया है।

सुश्रुतके मतमें बालिकाका गर्भाधान निषिद्ध है। पचीस वर्षसे नीचेका पुरुष १६ वर्षसे छोटी स्त्रीका गर्भाधान करनेसे वह गर्भ पेटमें ही विनष्ट हो जाता अथवा जात बालक अधिक नहीं जी पाता, किसी प्रकार से बचने पर भी दुर्बल दिखाता है। इसी कारणसे बहुत छोटी रमणीका गर्भाधान न करना चाहिये। कोई कोई बतलाता है कि भिषकशास्त्र या ज्योतिष शास्त्रका सिद्धान्त धर्मशास्त्र विरुद्ध होनेसे अग्राह्य है। अतएव सुश्रुतका यह मत धर्मशास्त्र विरुद्ध जैसा आदरणीय नहीं। फिर किसीके मतमें देशभेद तथा कालभेदसे सुश्रुतका मत चलता था, सब देशों और सब समयोंके लिये यह कब आदरणीय रहा। इसी प्रकार अपर अपर स्थानोंमें भी पूर्वप्रदर्शित धर्मशास्त्रके विरुद्ध जो दो एक मत देख पड़ते, हिन्दू उनका अन्यरूप तात्पर्य रखते या उनकी दूसरी व्याख्या करते हैं। (विवाह देखो।)

धर्मशास्त्रके मतमें रजोदर्शनकी पहली तीन रातोंके बाद शुभ वार तिथि और नक्षत्रमें गर्भाधान संस्कार करना चाहिये। किन्तु गोभिलने ऋतुमती स्त्रीका शोणित स्राव बन्द होने पर ही सङ्गमकाल बतलाया है, किसी रात या दिनकी गिनती नहीं। इससे स्पष्ट ही समझ पड़ता है—ऋतुके पीछे जितने दिन शोणित गिरता, सङ्गम वा गर्भाधान करना अनुचित ठहरता है—करनेसे सन्तानका अनिष्ट उठता है। दूसरे धर्मशास्त्रकारोंने प्रायश तीन रातोंके पीछे रक्त पतन बन्द हो जानेसे तीन रातोंका उल्लेख किया है। रजोदर्शनके प्रथम दिनसे सोलह रात तक ऋतुकाल कहलाता, इसीके बीच गर्भाधान किया जाता है। युग्म रात्रिको गर्भाधान करनेसे कन्या और अयुग्मको उससे पुत्र उत्पन्न होता है। चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और संक्रान्ति दिवसको गर्भाधान करना निषिद्ध है। फिर ज्येष्ठा, मूला, मघा, अश्लेषा, रेवती, कृत्तिका, अश्विनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद और उत्तर फल्गुनी नक्षत्रमें भी गर्भाधान करना न चाहिये। हस्ता, श्रवणा, पुनर्वसु और मृगशिरा कई नक्षत्रोंको पु नक्षत्र कहते हैं। यह गर्भाधान कार्यको शुभ है। इसके लिये रवि, मङ्गल और बृहस्पति वार तथा वृष, मिथुन, कर्कट, सिंह, कन्या, तुला, धनु और मीन लग्न प्रशस्त होते हैं।

भरद्वाजके मतमें रजस्वला स्त्री प्रथम दिन चण्डाली, द्वितीय दिन ब्रह्मघातिनी और तृतीय दिनको रजकीकी भांति अपवित्र और अस्पृश्य रहती है। वह चतुर्थ दिवसको शुद्धिलाभ करती है। चौथे दिनसे सोलह दिन तक गर्भाधानका योग्य काल है।

वृहज्जातकके निषेकाध्यायमें लिखा है कि गर्भके प्रथम मासको शुक्र और शोणित मिलता है। उसीका नाम कललावस्था है। उक्त समयका अधिपति शुक्र होता है। द्वितीय मासको गर्भ अपेक्षाकृत कठिन पड़ जाता है। उसका अधिपति मङ्गल है। तृतीय मासको हस्तपदादि उत्पन्न हुआ करते हैं। उसका अधिपति बृहस्पति है। चतुर्थ मासको अस्थिका सञ्चार होता है। उसका अधिपति सूर्य है। पञ्चम मासको

दस उपजता है। उसका अधिपति चन्द्र है। षष्ठ मासको रोम आते हैं। उसका अधिपति शनि है। सप्तम मासको चेतनाका प्रादुर्भाव होता है। उसका अधिपति बुध है। अष्टम मासको भोजनशक्ति आती है, उसका अधिपति लग्नाधिपति ही है। नवम मास उद्वेग उठता है। उसका अधिपति चन्द्र है। दशम मासको प्रसव होता है। उसका अधिपति सूर्य है। जिन ग्रहोंका उल्लेख किया गया है, गर्भाधान कालको उनमें कोई ग्रहपीड़ित रहनेसे उसी ग्रहके मासमें गर्भपातादि होता है। फिर उनके बलवान् रहनेसे उसी उसी महीने गर्भकी पुष्टि हुआ करती है।

स्मृतिके मतमें अतिशय वृद्धा, चिररोगिणी वा अन्य किसी प्रकारकी विकारयुक्त रमणीका गर्भाधान करना एकान्त निषिद्ध है। अतिशय वृद्ध, चिररोगग्रस्त वा किसी प्रकारके दूसरे विकारयुक्त पुरुषके लिये भी गर्भाधान करना अनुचित है। प्रथम ऋतुमें गर्भाधान संस्कार कर लेनेसे फिर किसी ऋतुकी वह आवश्यक नहीं होता। केवल कहते हैं कि रमणियोंका एक बार संस्कार होनेसे सभी गर्भोंका संस्कार हो जाता है। अतएव गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन एक ही साथ करना चाहिये।

गोभिल गृह्यसूत्र (८।१०।५) में गर्भाधान-प्रणाली इस प्रकारसे लिखी है—रजःस्रावके प्रथम तीन दिनके बाद शुभ मुहूर्तको किसी प्रकारका दोष वा प्रतिबन्धक न रहनेसे गर्भाधान किया जाता है। गर्भाधान दिवसको सायं सन्ध्या अतीत होने पर पतिको पवित्र भाव और पवित्रवेशसे "नमा विवस्वते विप्रः" इत्यादि मन्त्र द्वारा सूर्यार्घ प्रदान करना चाहिये। फिर "विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु वा सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥" (मन्त्रब्राह्मण १।४।६) और "गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वती। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ॥" (मन्त्रब्रा० १।४।७) मन्त्र उच्चारण करके दाहने हाथसे पत्नीका योनिदेश छूते और उसके बाद सङ्गत होते हैं। इसीका नाम गर्भाधान संस्कार है।

पद्धतिप्रणेता भवदेवभट्टके मतमें योनिदेश स्पर्श करके ऊपरके दोनों मन्त्र पढ़ना पड़ते हैं। कोई कोई विवाहकी भांति गर्भाधानके दिन भी आभ्युदयिक श्राद्ध करनेको कहता है। * छन्दोग-परिशिष्टके अनुसार विवाह और गर्भाधान संस्कारके बीच एक श्राद्ध करनेसे हो काम चल सकता, प्रत्येक कर्मके पहले आभ्युदयिक नहीं करना पड़ता। लौकिक प्रथा अथवा विलुप्त शास्त्रीय विधिके अनुसार गर्भाशयकी शुद्धिको मन्त्रपूत पञ्चगव्य भक्षण करनेका नियम है।

आश्वलायन-गृह्यपरिशिष्टमें गर्भाधान विषयपर इस प्रकार लिखित हुआ है—

विवाहके बाद ऋतुमती नवोढ़ाके मङ्गलार्थ प्रजापति देवताके उद्देशसे होम करना चाहिये। उसकी रीति यह है कि प्रथम ऋतुके १६ दिनोंमें शुभ मुहूर्तको पवित्र तथा मनोहर वेशधारिणी नवोढ़ा रमणीके साथ गर्भाधान कार्यके अनुष्ठानमें लग स्थालीमें विधिके अनुसार चरुपाक करके उसका कियत् अंश प्रजापति देवताके उद्देशसे अग्निमें आहुति देते हैं। अवशिष्ट चरु दम्पतीके भोजनको रख छोड़ा जाता है। फिर "विष्णुर्योनिं कल्पयतु" इत्यादि मन्त्रसे घृताहुति प्रदान करना चाहिये। स्थानान्तरमें यह भी लिखा हुआ है, उसके पीछे क्या करना पड़ेगा। प्राजापत्य होमके बाद जिस क्रिया द्वारा गर्भ लाभ होता, करना उचित है। इसीका नाम गर्भलम्भन है। उसकी रीति यह है कि कई एक निषिद्ध रात्रियां परित्याग करके दम्पतीका शरीर सुस्थ रहनेसे सुन्दर सुसज्जित तथा सुगन्धि कुसुम प्रभृति द्वारा सुवासित गृहमें नानाविध आभरणोंसे विभूषित, अङ्गरागरञ्जित, माल्य चन्दन द्वारा परिशोभित और शुक्ल वस्त्रधारिणी रमणीको पलंग पर लेटा करके अपने आपभी सुस्नात और माल्यादि पवित्र वेशभूषित हो करके शयन करना चाहिये। फिर थोड़ीसी दूर्वा पीस करके उसका रस "उदीर्ष्वातः पतिवती ह्येषा विश्वावसुं नमसा गीर्भिरीळे। अन्यामिच्छ पितृषदं व्यक्तां स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि॥" (ऋक् १०।८५।२१) और "उदीर्ष्वातो विश्वावसो नमसेळामहे त्वा। अन्यामिच्छ प्रफर्व्यं सं जायां पत्या सृज।" (ऋक् १०।८५।२२) दोनों मन्त्र पढ़ करके दम्पतीकी नासिकामें सेचन करते अथवा अश्वगन्धाका चूर्ण झीने कपड़ेमें बांध बत्ती बना लेते और पूर्वोक्त दोनों मन्त्र उच्चारण करके दम्पतीके

---

* "निषेककाले सोमे च सीमन्तोन्नयने तथा। ज्ञेयं पुंसवने चैव श्राद्धं कर्माङ्गमेव च॥" (संस्कारतत्त्वधृत भविष्यपुराण)

नासिका रन्ध्रमें आघ्राण द्वारा पहुंचा देते हैं। उसके पीछे—'न यर्तोऽसि दिवा स्तृर्त्वमसि' इत्यादि मन्त्र पाठ करके उपस्थेन्द्रिय मर्षण करना चाहिये। फिर 'विष्णुर्योनिं कल्पयतु' इत्यादि मन्त्रद्वय पढ़के आदिरसका आविर्भाव और "यो सम मोधयोनाम्" मन्त्र बोलके सङ्गम किया जाता है।

धर्मकी अवनति और श्रद्धाका ह्रास होनेसे प्राय सभी वैदिक कार्य विलुप्त हो गये हैं। आजकल परिशिष्ट प्रदर्शित नियम बिलकुल नहीं चलते।

२ गर्भ निषेक मात्र।

'गर्भाधानमपरिचय न कृत्वाहमाना।
ईप्सितो मयन्मुदर्भं से अवम बलाका॥ (मेघदूत ८)

गर्भाधानक्रिया—जैनोंकी त्रेपन क्रियाओंमेंसे प्रथम क्रिया। (विशेष विवरण जानना हो तो आदिपुराण देखना चाहिये)

गर्भाम्बु (सं० पु०) गर्भस्य जल।

गर्भावक्रान्ति (सं० स्त्री०) गर्भस्य अवक्रान्ति। गर्भोत्पत्ति, जीवका गर्भाशयमें प्रवेशरूपमें अवतरण। (सुश्रुत शा० अ०)

गर्भाशय (सं० पु०) आशेतेऽत्र ति, आ शी आधारे अच्। गर्भस्य आशय, ६ तत्। गर्भका आधारस्थान, गर्भशय्या, स्त्रियोंके पेटका वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

"पुक्ष आविशत सह जिवा गर्भाशय गतम्।
येव कर्मगर्भगाप्ति न ध या यदि वाम मम्॥ (भारत १३।८८।४)

जिस तरह पुरुषों को अण्डकोष होता है उसी तरह स्त्रियों को भी गर्भकोश या गर्भाशय है। यह गर्भाशय स्त्रियों की भीतरमें और पुरुषों को बाहर रहता है। इसी गर्भकोशमें रजोण्ड या गर्भाण्ड रहते हैं। स्त्री जीव जितनही बच्चे देते हैं उतनेही उनके गर्भाशय बड़े होते हैं। स्त्रियों का गर्भकोश १½ इञ्च लम्बा, ½ इञ्च चौड़ा और ½ इञ्च मोटा होता है। इस गर्भाशयमें एक सूत्र या नाड़ी लगी रहती है। जिसके द्वारा बच्चा बाहर निकलता है।

गर्भाष्टम (सं० पु०) गर्भात् गर्भकालात्, अष्टम.। गर्भकी अवधिसे अष्टम मास और वर्षादि।

गर्भास्पन्दन (सं० क्ली०) गर्भस्य आस्पन्दनम्, ६-तत्। गर्भ सम्बन्धी चिह्नविशेष, गर्भकी विकृति।

गर्भास्राव (सं० पु०) गर्भस्य आस्राव। गर्भस्राव देखो।

गर्भिणी (सं० स्त्री०) गर्भोऽस्त्यस्या, इनि ङीप्। गर्भवती नारी, अन्तःसत्वा, आमिन्ना, जिसके पेटमें बच्चा रहे

"सुवासिनी कुमारीश्च रोगिणो गर्भिणीस्तथा।
अतिथिभ्यो ग्र एवैतान् भोजयेदविचारयन्॥" (मनु ३।११४)

काश्यपका कहना है—गर्भिणीको हस्ती, अश्वादि, पर्वत तथा अट्टालिकादि पर आरोहण, व्यायाम, वेगसे गमन, शकटका चढ़ना, शोक, रक्तमोचण, भय, कुक्कुट-भोजन, मैथुन, दिवानिद्रा और रात्रिजागरण परित्याग करना चाहिये। स्कन्दपुराणमें लिखा है कि गर्भिणी नारी स्वामीकी आयु वृद्धि करती है। इसीसे उसको हरिद्रा, कुङ्कुम सिन्दूर, कज्जल, कञ्चुकी, ताम्बूल, मङ्गलजनक आभरण, केशसंस्कार, चोटी बंधाना और कर तथा कर्णभूषण छोड़ना उचित नहीं। बृहस्पतिने बतलाया है कि गर्भिणीको षष्ठ वा अष्टम मास विशेषतः आषाढ़में यात्रा न करना चाहिये। आश्वलायनके मतमें—गर्भवतीके स्वामीको केशादि कर्तन, मैथुन तथा तीर्थयात्रा परित्याग करना उचित है। मुहूर्तदीपिका और कालविधानमें लिखा हुआ है कि क्षौरकर्म, शवानुगमन, नखकर्तन युद्धादिस्थलको गमन, बहुत दूर जाने उद्वाह, उपनयन और समुद्रमें अवगाहन करनेसे गर्भिणीके स्वामीका आयु क्षय होता है।

गर्भिणी जो जो भोग करना चाहती, न देनेसे गर्भको पीड़ा उठती और अभिलाष पूर्ण हो जानेसे वह गुणवान् पुत्र प्रसव करती है। अभिलाषके अनुसार भोग न मिलनेसे गर्भिणी अपने आप चौंक पड़ा करती है। गर्भिणीके जिस इन्द्रियका अभिलाष पूर्ण नहीं होता सन्तानके भी उसी इन्द्रियमें पीड़ा उठती रहती है। राजदर्शनका अभिलाष लगनेसे सन्तान महाभाग्यवान् और धनवान् होता है। पट्टवस्त्रादि अथवा अलङ्कारका अभिलाष उठनेसे लड़का मनोहर और अलङ्कारप्रिय निकलता है। आश्रम देखनेकी जी चाहनेसे सन्तान धर्मशील और संयतचित्त होगा। देवप्रतिमादिमें अभिलाष होनेसे सभासद्, सर्पादि दर्शनको जी लगा रहनेसे हिंसक, गोमांसका अभिलाष उठनेसे बलिष्ठ तथा कष्टसहिष्णु, महिषमांसके अभिलाषसे शौर्यान्वित, रक्तलोचन और लोमश, वराहमांसकी चाहसे निद्रालु तथा वीर अहालमांसकी इच्छासे वनेचर, स्मर अर्थात् मृग

विशेषके मांसका लालच रहनेसे उद्विग्न और तित्तिर मांस खानेकी जो चाहनेसे बच्चा भीरु होता है। इसको छोड़ करके अन्य जन्तुके मांसका अभिलाष लगनेसे उस जन्तुका जैसा स्वभाव और आचार रहता, बच्चेका भी वैसा ही स्वभाव और आचार हुआ करता है। गर्भिणी देवता ब्राह्मणादिसे भक्ति तथा श्रद्धायुक्त होने और शुद्धाचारिणी तथा दूसरेके साथ हितसाधनमें निरत रहनेसे अति गुणवान् सन्तान प्रसव करती है। इससे विपरीत पड़ने पर लड़का गुणहीन होता है। (सुश्रुत ३।३)
२ खोगरी वृक्ष।

गर्भिणीदोहद (सं० क्लो०) गर्भिण्या दोहदम्, ६-तत्। गर्भिणीकी अभिलषित द्रव्य। गर्भिणी देखो।

गर्भिण्यवेक्षण (सं० क्लो०) गर्भिण्या अवेक्षणम्, ६-तत्। गर्भिणीकी परिचर्या, गर्भिणीकी देखभाल।

गर्भित (सं० त्रि०) गर्भो जातोऽस्येति तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच्। (पा० ५।२।३६) इति इतच्। १ जातगर्भ, जिसके गर्भ रहा हो, गर्भयुक्त। २ पूर्ण, पूरित, भरा हुवा। ३ काव्यका एक दोष। दोष देखो।

गर्भिन् (सं० त्रि०) गर्भोऽस्यास्तीति गर्भ-इनि। गर्भविशिष्ट, गर्भवती।

गर्भी (सं० पु०) पुत्रजीववृक्ष, पतजिवका पेड़।

गर्भेतृप्त (सं० त्रि०) गर्भे शिशौ अन्ने वा तृप्तः। पात्रे समितादयश्च। (पा २।१।४८) इति अलुक् समासः।
१ जो लड़का पाकर तृप्त हुआ हो। २ अन्नमें तृप्त, जो अन्नसे संतुष्ट हो गया हो।

गर्भेश्वर (सं० पु०) गर्भावधि ईश्वरः गर्भादारभ्य ईश्वरो वा। गर्भ कालसे ही राजा, वह जिसके पूर्वपुरुषसे राजा होना आ रहा हो।

गर्भेश्वरता (सं० स्त्री०) गर्भेश्वर-तल्, टाप्। गर्भकालसे ही ईश्वरत्व वा राजत्व, वह जिसकी प्रभुता बहुत दिनोंसे चली आ रही हो। (राजतरङ्गिणी ५।२०३)

गर्भपाकशिक (सं० पु०) यष्टिक धान्य, साठीधान।

गर्भोत्पत्ति (सं० स्त्री०) गर्भस्य उत्पत्तिः। गर्भका जन्म, गर्भ रहना।

गर्भोपघात (सं० पु०) गर्भस्य उपघातः। १ गर्भका नाश। २ बादलमें जल उत्पन्न करनेकी शक्तिका नष्ट होना।

गर्भोपपातिन् (सं० त्रि०) गर्भ उपपतन्ति उप-पत् णिनि। गर्भ ना शनी शिशुप्रभृति, हमलका बरबाद करनेवाला।

गर्भोपनिषद् (सं० स्त्री०) गर्भविदिका उपनिषत्। अथर्ववेद सम्बन्धी एक उपनिषद्। इसमें गर्भकी उत्पत्ति और उसके बढ़ने आदिका वर्णन किया गया है।

गर्मली-नानी—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत काठियावाड़का एक क्षुद्रराज्य। यह सामन्तकके अधीन है। यहांकी जनसंख्या प्रायः ३४०) और राजस्व २४००) रुपये हैं। गायकवाड़ महाराजको १८४) रुपये कर देने पड़ते हैं।

गर्मली मोती—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़ जिलेका सामन्तकके अधीन एक छोटा राज्य। यहांकी लोकसंख्या प्रायः ३८५ है। राज्यकी आय ४७०० रु० की है जिनमेंसे २२०) रुपये गायकवाड़ महाराजको करके लिये देने पड़ते हैं।

गर्मुच्छद (सं० पु०) गर्मुती नडस्य छद इव छदो यस्य। धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गर्मुटिका (सं० स्त्री०) गर्मुत इव उटं पर्णं यस्याः कन् टाप् अत इत्वम्। १ धान्यविशेष, एक धान। २ एक प्रकारकी घास जिसका स्वाद नमकसा होता है, जरड़ी।

गर्मूटी (सं० स्त्री०) गर्मूटिका धान्य, जरड़ी धान।

गर्मूत (सं० स्त्री०) गीर्यते इति-गृ-उति। (गोत्र्व। उण् ११८) तृण धान्यविशेष, मयनाघास। २ सुवर्ण, सोना।

गर्मूच्छद (सं० पु०) गर्मूच्छद-निपातनात् दीर्घः। एक प्रकारका धान।

गर्मूटिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका धान।

गर्मोटिका (सं० स्त्री०) तृणविशेष, एक प्रकारकी घास।

गर्रा (हिं० वि०) १ लाखके रङ्गका, लाही। (पु०) २ लाखीरङ्ग। ३ घोड़ेका एक रङ्ग। ४ लाखके रङ्गका घोड़ा। ५ लाही रङ्गका कबूतर। ६ बहते हुए पानीका थपेड़ा। ७ सतलज नदीका एक नाम।

गर्री (हिं० स्त्री०) तार लपेटनेका एक यन्त्र।

गर्व (सं० पु०) गर्व मदे घञ्। १ अहङ्कार, घमण्ड। २ अवज्ञाविशेष, एक प्रकारका अपमान या अनादर।

"ऐश्वर्यरूपतारुण्यकुलविद्याबलैरपि।
इष्टलाभादिनान्येषामवज्ञा गर्व ईरितः॥"

२ व्यभिचारि भावविशेष। साहित्यदर्पणके मतसे गर्वका दूसरा नाम 'मद' है, यह प्रभुत्व, धन, विद्या, सत्कुलजातत्व प्रभृति द्वारा उत्पन्न होता है।

गर्वण (सं० पु०) एक पर्वतका नाम।

गर्वप्रहारी (सं० वि०) गर्वका नाश करनेवाला, घमण्ड चूर्ण करनेवाला।

गर्ववत (हिं० वि०) घमडी, अभिमानी।

गर्वर (सं० पु०) गोयते इति गृ निगरणे वरच्। १ अहङ्कार, घमण्ड। २ नायक। (त्रि०) ३ अहङ्कारी, घमण्डी।

गर्वाट (सं० पु०) गर्वेण अटति अट्-अच्। द्वारपाल, वह जो दरवाजे पर रक्षाके लिये नियुक्त हो, दरवान।

गर्वाना (हिं० अ० क्रि०) गर्व करना, अभिमान करना, घमण्ड करना।

गर्वालाव (सं० स्त्री०) पाताल गरुडी।

गर्वित (सं० त्रि०) गर्व-कर्तरि क्त। गर्वयुक्त, अभिमानी। (स्त्री) वह नायिका जिसको अपने रूप और गुणका घमण्ड हो।

गर्विन् (सं० त्रि०) गर्वोऽस्त्यस्येति इनि। गर्वयुक्त, घमण्डी।

गर्विष्ठ (सं० त्रि०) गर्वयुक्त, घमण्डी, अहङ्कार करनेवाला।

गर्वी (हिं० वि०) घमण्डी, अहङ्कारी।

गर्वीला (हिं० वि०) अहङ्कृत, घमण्डसे भरा हुआ।

गर्सी—बम्बई प्रान्तकी एक जाति। इनका काम ढोल बजाना है।

गढ़ (गढ)—ग्वालियरके अधीन सेण्ट्रल इण्डिया एजेन्सीमें खीचीवंशका एक क्षुद्रराज्य। भूपरिमाण ४४ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८४८१ है। पहले यह राघुगढ राज्यके अन्तर्गत था, किन्तु आपसी झगडाके कारण खीची परिवारके बहुतोंको अलग अलग जागीर दी गई, और १८४३ ई०में विजयसिंहने ५२ ग्रामोंकी एक सनद ली जिसकी आय लगभग १५००० रु० थी। यह राज्य छोटी छोटी पहाडियोंमें विभक्त है, इसलिये यहां उपज अच्छी होती है। पोस्ता भी यहां बहुत उपजाया जाता है। और इससे अफीम प्रस्तुत कर उज्जैन भेजी जाती है। रघुगढवंशके प्रधान खीची चौहान राजपूत हैं जिन्हें राजाकी उपाधि मिली है। वर्तमान राजा १८०१ ई०में राज्यसिंहासन पर बैठे थे। राज्यकी आमदनी लगभग २०००० रु० और कुल खर्च १३००० है। जामनेरमें राज्यका सदर है जहां एक अस्पताल और एक विद्यालय है।

गढ़चिरोली (गढचिरोली)—मध्यप्रदेशमें चान्दा जिलाकी तहसील। यह ब्रह्मपुरीके जमीन्दारी स्टेट और चान्दा जिलाका कुछ अंश ले कर बनी है। भूपरिमाण ३७०८ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १५५२१४ है। इस तहसीलमें १०८८ ग्राम लगते हैं। इसका सदर गढ़चिरोली ग्राममें है जो चान्दा शहरसे ५१ मीलकी दूरी पर बसा है और जहां २०७७ मनुष्य वास करते हैं। इसमें १८ जमीन्दारी पडती है जिसका भूपरिमाण २२५१ वर्गमील और जनसंख्या प्राय ८२२२१ है। क्षेत्रका अधिकांश पहाडी और जङ्गलमय है। जमीन्दारीके बाहर ८४८ वर्गमील क्षेत्रका सरकारी जङ्गल है।

गर्हण (सं० क्ली०) गर्ह कुत्सने भाव ल्युट्। निन्दा, शिकायत। (भारत १२।५१ अ०)

गर्हणा (सं० स्त्री०) गर्ह भाव युच् टाप्। निन्दा, अपवाद, बदगोई

गर्हणीय (सं० त्रि०) निन्दनीय, निन्दा करने योग्य। (भारत वनप०)

गढ़दिवाल (गढदिवाल)—पञ्जाबके होसियारपुर जिले और तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० ३१ ४५´ उ० और देशा० ७५ ४६ पू० होसियारपुरसे १७ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ३६५२ होगी। गुडके व्यापारके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है। यहांकी आय २३०० रु० और कुल खर्च २१०० रु० है। यहां एक सरकारी अस्पताल भी है।

गढ़शङ्कर—१ पञ्जाबमें होसियारपुर जिलाकी एक तहसील। यह अक्षा० ३० ५८ से ३१ ३१ उ० और देशा० ७५ ५१ से ७६ ३१´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ५०८ वर्गमील है। लोकसंख्या लगभग २६१४६८ होगी। गढ़शङ्कर शहर इसका मुख्य सदर है, इसमें सिर्फ ४७२ गांव लगते हैं। तहसीलकी आय-

दनी प्राय: चार लाख रुपयेकी है। तहसीलके दक्षिण-की ओर सतलज नदी प्रवाहित है।

२ पञ्जावके होसियारपुर जिलामें इसी नामकी तह-सीलका एक शहर। यह अक्षा० ३१° १२' उ० और देशा० ७६° ८' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: ५८०२ है। शहरमें एक किला है जिसको महमूद गजनी अपने अधिकारमें लाया था, किन्तु थोड़े समय-के बाद ही महमूद घोरीने उनसे छीन कर जयपुरके राजा मानसिंहके लड़कोंको सौंप दिया। यहां राज-पूतोंकी संख्या अधिक है। तम्बाकू और गुड़का व्यव-साय यहां बहुत होता है। इस शहरमें एक हिन्दी स्कूल तथा एक सरकारी अस्पताल है।

गर्हा (सं० स्त्री०) गर्ह्यते इति गर्ह-अ। (गुरोश्च हलः। पा ३।३।१०३) ततष्टाप्। निन्दा, शिकायत।

"पुण्यं प्राप्यान धारयति पुण्यं प्राप्यसूच्यते।
येन येनाचरेदर्मं तस्मिन् गर्हा न विद्यते।" (भारत १।१४४ अ०)

गर्हा (गढ़ा)—मध्यभारतके गूणा उपविभागके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। क्षेत्रफल ४४ वर्ग मील है। लोकसंख्या प्राय: ८४८१ होगी। पहिले यह राज्य राघोगढ़ जागीरके अन्तर्गत था।

गर्हाकलां (गढ़ाकलां)—उत्तर-पश्चिम अंचलके वान्दा जिलान्तर्गत एक ग्राम। यहांके अधिकांश अधिवासी ब्राह्मण और चमार हैं। इस ग्रामको स्थापित हुए लगभग ५००-वर्ष हुए होंगे। सिपाही विद्रोहके समय यहांके मनुष्य अंगरेजोंको रसद पहुंचाते थे इस लिये करवीर नारायणरावने इसे ग्रामको दग्ध कर डाला था।

गर्हाकोट रमणा (गढ़ाकोट रमना)—मध्य भारतवर्षके सागर जिलेमें एक सागुन काष्ठ (Timber) का जंगल।

गर्हि (गढ़ी) मध्य भारतके भोपावर एजेन्सीमें एक ठकु-रात (देवोत्तर)। भूपरिमाण ६ वर्ग मील और लोक-संख्या प्राय: ५६४ है। इसकी आमदनी ३००० रु० है।

गर्हि-इखतियार खाँ (गढ़ी इखतियार खाँ)—पंजावमें बहवलपुर राज्यमें खानपुर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २८° ४०' उ० और देशा० ७०° ३९' पू० बहवल-पुर शहरसे ८४ मील दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित है। लोक-संख्या प्राय: ४९३९ है। यह सिन्धुके कलहोर-ग्रामकोंसे स्थापित किया गया था, लेकिन १७५३ ई०में यह राज्य दाउद-पुत्रके प्रधानने उनसे छीन लिया। फिर १८०६ ई० में बहवलपुरके द्वितीय नवाब बहवलखाँने इसे अपने राज्य में मिला लिया। शहरके चारों ओर खजूरका जंगल है। यहांसे बहुत दूर दूर तक खजूरकी रफतनी होती है।

गर्हित (सं० त्रि०) गर्ह-क्त। निन्दित, जिसकी निंदाकी जाय, दूषित, बुरा।

गर्हितव्य (सं० त्रि०) गर्ह-तव्य। निन्दनीय, शिकायत कर-ने लायक।

गर्हिन् (सं० त्रि०) गर्ह-णिनि। निन्दक, निन्दा करने-वाला।

गर्हियासिन (गढ़ीयासिन)—बम्बई प्रदेशमें सक्कर जिले के नौसह्रो अवो तालुकाका एक शहर। यह अक्षा० २०° ५४' उ० और देशा० ६८° ३३' पू०में अवस्थित है लोक-संख्या प्राय: ६५५४ होगी। तिलहनका व्यवसाय यहां अधिक होता है। इस शहरको आय लगभग २५००० रु० की है। यहां एक असपताल और दो विद्यालय हैं।

गर्ह्य (सं० त्रि०) गर्ह-ण्यत्। अधम, निन्दनीय, नीच।

गर्ह्यवासिन् (सं० त्रि०) गर्ह्ये वसतीति वस-णिनि। कुत्सितवासी, निन्द्यस्थानवासी, खराब स्थानमें रहने-वाला।

गल (सं० पु०) गलति भक्षयत्यनेन गल-करणे अप। १ कण्ठ, गला, गरदन। २ सर्ज्जरस, राल। ३ एक प्राचीन बाजेका नाम। ४ मत्स्यविशेष, गड़ाकू नामकी मछली।

गल—१ समितिक जातिकी एक विस्तृत शाखा। ये अफ्रिकाके अन्तर्गत आविसिनियाके 'सोया' प्रदेशमें रहते हैं। सोया प्रदेशकी जलवायु अति उत्तम है। यहां पर शीत या ठण्ड अधिक नहीं पड़ती है। जलवायुके प्रभाव-से ये लोग देखनेमें सुश्री और सुन्दर लगते हैं। इनकी बोली भी बहुत मीठी होती है। इनमेंसे थोड़े ईसाई वा मुसलमान हैं किन्तु इनके अधिकांश जड़ोपासक भौतिक धर्मावलम्बी हैं। यह जाति सर्पको मानव जातिकी माता समझ कर पूजा करती है। ईश्वर और परकालमें भी इन लोगोंका विश्वास है। इन्होंने ईश्वरके तीन स्वरूपोंको स्वीकार किया है १म "उयाक" वा "उयाका" अर्थात् सर्व प्रधान,

२य 'उगलि' वा पुरुष, ३य "अतेलि" अर्थात् स्त्री वा शक्ति। शनि और रविवारको ये लोग किसी तरहका कार्य नहीं करते हैं।

२ सिंहलके दक्षिण पश्चिममें समुद्र उपकूलस्थ एक नगर। यह एक पहाड़के ऊपर अवस्थित है। पर्वतकी लम्बाई समुद्र तक चली गई है। इस पर्वतके ऊपर एक दुर्ग भी विद्यमान है। कलम्बोसे यह ३५ कोस दक्षिण पश्चिम है। अतिप्राचीन कालसे ही यह वाणिज्य स्थान होनेके कारण बहुत प्रसिद्ध हो गया है। फिनिकके वणिक् यहां आकर वाणिज्य करते हैं।

गलगा (हिं० स्त्री०) वह सम्पत्ति जिसका मालिक मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गलकवल (हिं० पु०) झालर, जो गायके गलेके नीचे लटका रहता है।

गलक (स० पु०) गलतीति गल अच स्वार्थे कन्। गड़ाक नामकी मछली।

गलका (हिं० पु०) एक प्रकारका फोड़ा। यह हाथकी अङ्गुलियोंके अग्र भागमें होता और बहुत कष्ट देता है।

गलकोण्डा वा गलि पर्वत—मन्द्राज प्रदेशके विशाखपत्तन जिलेकी एक पर्वतश्रेणी। यह अक्षा० १८° २०´ उ० और देशा० १८. ५०´ पू० पर अवस्थित है। इस पर्वतकी दो चोटियां हैं जिनकी लम्बाई क्रमशः ३५६२ और ३५१४ हाथकी है। ऊपर चढ़नेका एक रास्ता भी चला गया है। १८६० ई०को इस स्थानकी जलवायु उत्तम समझ कर यहां अंगरेजी सेना रखी गई थी, किन्तु बार बार ज्वरसे पीड़ित रहनेके कारण उन्होंने यह स्थान छोड़ दिया। विजयनगरके राजाका यहां एक विस्तृत क्षेत्र है।

गलकोड़ा (हिं० पु०) १ कुश्तीका एक पेंच। २ एक प्रकारका कोड़ा या चाबुक।

गलगण्डिन् (स० त्रि०) गलगण्डोऽस्यास्तीति इनि। गलगण्डरोगी, गलेमें जिसको गलगण्ड रोग हुआ हो। (सुश्रुतनिदान ११ अ)

गलगण्ड (स० पु०) गले गण्ड: स्फोटक इव गलरोग विशेष, गलेकी एक बीमारी। चलती बोलीमें इसको गण्डमाला कहते हैं। गलगण्डके लक्षण और निदान आदि भावप्रकाशमें इस प्रकारसे लिखे हैं—गलेमें बड़ी या छोटी अण्डकोष जैसी लम्बी और कड़ी सूजन उठनेसे गलगण्ड कही जाती है। भोजराजके मतमें गाल, कर्णकी जड़ और गलेको आश्रय करके उठनेवाला अण्डकोष जैसा बढ़ा हुआ शोथ ही गलगण्ड है। वायु, कफ, वा मेद बिगड़ करके गलदेश और मन्याद्वय (कांधे की दोनों नसें) आश्रय करनेसे क्रमशः गलगण्डरोग लगा करता है।

गलगण्ड चार प्रकारका है—वातज, श्लेष्मज, कफज और मेदोज। वातज गलगण्ड श्याम वा अरुणवर्ण वेदना युक्त और कड़ा होता है। वह कृष्णवर्ण शिराजालमें व्याप्त रहता और कालविलम्बसे बढ़ता है। वातज गलगण्ड प्रायः न पकते भी कभी कभी बिना कारण ही पक जाता है। रोगीका मुह फीका और तालू तथा गला सूखने लगता है। कफज गलगण्ड स्थिर, गुरु, शीतल, अत्यन्त कण्डू तथा अल्प वेदनायुक्त और शरीरके वर्ण-जैसा होता है। यह काल पा करके बढ़ता और पकता है। रोगीके मुह भीतर मधुर रसयुक्त और बाहर चिकना जैसा रहता, गलेकी नालीमें सर्वदा शब्द हुआ करता और तालू तथा गला कफसे भरा जैसा लगता है।

मेदोज गलगण्ड चिकना, कोमल, पाण्डुवर्ण, दुर्गन्ध युक्त और कण्डू तथा वेदनाविशिष्ट होता है। यह कद्दू जैसा लम्बा पड़ता और शरीर दुबला रहनेसे छोटा और मोटा रहनेसे बड़ा लगता है। रोगीका मुख चिकना उठता और गलेमें हमेशा शब्द हुआ करता है। गलगण्ड के रोगीको यदि सांस लेनेमें बड़ा कष्ट पड़े और अरुचि, स्वरभङ्ग वा क्षीणता लगे, तो चिकित्सक उसको परित्याग करदे—वह असाध्य होता है। रोगीका शरीर मृदु किंवा एक वत्सर अतीत होनेसे भी गलगण्ड असाध्य समझा जाता है। (भावप्रकाश)

गलगण्ड रोगकी चिकित्सा इस प्रकार चलती है। सरसों, सहिजना तथा सनका बीज, अलसी, जौ और मूलीका बीज खट्टे मट्ठे के साथ पीस करके प्रलेप देनेसे बहुत पुरानी गण्डमाला नष्ट हो जाती है। श्वेत अप राजिताकी जड़को पीस करके स्वयं घीके साथ लगा तार खानेसे भी गलगण्ड मिटता है। बड़ी कड़वी लौकी-

में पानी भर करके सात दिन तक रख छोड़ते हैं। फिर वही जल पीने और हितकर द्रव्य खानेसे भी इस रोग-का प्रतीकार होता है। जो, मूंग, परवल आदि और कटु, तथा रूक्ष द्रव्य भोजन, वमन और रक्तमोक्षण गलगण्ड रोगमें हितकारक है। घनी और पीपलके चूरनमें सैन्धव डाल करके प्रतिदिन खानेसे यह रोग कटता है। अमृतादितैल पीनेसे भी गलगण्ड आरोग्य होता है।

सुश्रुतके मतानुसार वायुजन्य गलगण्ड रोग पर मूत्रसंयोगमें विविध प्रकार अम्लरस और उष्ण दुग्ध वा तैलके साथ मास वा पलाशी लताके रससे पहले नाड़ी स्वेद प्रयोग करना चाहिये। पीछे विधावित करके नियत स्वेद देते हैं। इसी प्रकार व्रण साफ होने पर सनका बीज, अलसी, मूली, सहिजना और सुरावीज और प्याजका गूदा सब चीजें तिलोंके साथ उसमें बांध देनी चाहिये। नोनका पेड़, गुड़च, सहिजना, पुनर्णवा आकनादि, चकौड़िया, मैनफल, अगस्त्य, खैर, निम्ब और कुड़—सब चीजें शराबकी सिरकेमें पीस करके लेप चढ़ाने-से वायुजन्य गलगण्ड रोग नष्ट होता है।

कफसे हुए गण्डमालामें स्वेद प्रयोग करके नश्तर लगवा देना चाहिये। पीछे अजगन्धा, अतिविषा, गुलेचीन, मेढासींगी, कुष्ठ, गण्डवन और घुंघची पलाश-चार उष्ण जलके साथ पीस करके प्रयोग करनेसे कफजन्य गलगण्ड रोग दब जाता है।

मेदोजन्य गलगण्ड रोगमें विधानके अनुसार शिरा-ओंको विद्ध कर देना चाहिये। श्यामालता, कलईका चना, लोहेकी कीट, दन्ती और रसौंत—सब चीजोंको मिला करके लेप चढाते हैं। शालवृक्षका सार मूत्रके साथ आलोड़ित करके पिया जाता है। अथवा नश्तरसे फोड़ा चीर करके भीतरसे मवाद निकाल डालना चाहिये। मज्जा, घृत वा वसाकी मधुके साथ डाल करके उसमें घृतमधु प्रयोग करते हैं। रोगीका शरीर चिकना रहनेसे ऐसी चिकित्सा करना उचित है। इससे मेदजन्य गल-गण्ड रोग निवारित होता है। (सुश्रुत)

भावप्रकाशकारने गण्डमाला नामक किसी प्रकार-का रोग निर्णय किया है। किन्तु सुश्रुत प्रभृतिमें उसका कोई उल्लेख देख नहीं पड़ता। सुश्रुतने ग्रन्थि नामक जिस रोगका लक्षण लगाया, भावप्रकाशमें प्रायः उसीको गण्डमाला ठहराया है। प्रसिद्ध अभिधानप्रणेता हेमचंद्रने गण्डमाला और गलगण्डका एक पर्याय रखा है। इसे स्थलपर कहा जा सकता है, भावप्रकाशोक्त गण्डमाला कोई पृथक् रोग नहीं। वह या तो गलगण्डके अथवा ग्रन्थिरोगके अन्तर्गत आवेगा।

भावप्रकाशमें गण्डमालाके लक्षण आदि यों कहे हैं— कांखकी जड़, मन्या वा कोखमें बेर या आंवला जैसी गांठ उठनेसे गण्डमाला कहलाती है। यह काल बलसे पकती और दूषित कफ तथा मेद ही उसका कारण है। गण्डमालाकी चिकित्सा गलगण्डकी तरह होती है।

कचनारवृक्ष या वरुण मूलकी छालका काढ़ा बना करके सोंठका चूरन और शहद डालकर पीनेसे बहुत दिनकी गण्डमाला भी शीघ्र आरोग्य होती है। कचनार-की छाल ४ या ८ तोले चावल धुले पानीके साथ पीनेसे गण्डमाला मिटती है। उसमें कचनार और गुग्गुलु भी प्रयोज्य है।

वैद्यजीवनको देखते तेलाकी गुठलीका गूदा, कमीस, लाल चीतकी जड़, गुड़, आकनादिका चीर, मनसासिज-का चीर, सब द्रव्य एकत्र पेषण करके प्रलेप लगानेसे थोड़ी देर बाद ही गण्डमाला दब जाती है।

(वैद्यजीवन)

युरोपीय डाक्टरोंके मतसे गण्डमाला और गलगण्ड दोनों स्वतन्त्र रोग हैं।

गलेकी गांठका सूज जाना ही गण्डमाला (Scrofula) रोगकी प्रकृत अवस्था है। यह कौलिक रोगोंमें गिना जाता है। किन्तु शारीरिक दौर्बल्य, रक्ताल्पता आदि कारणोंसे बहुत अवस्थाओंमें गण्डमालारोग उठ खड़ा होता है। युरोपीय चिकित्सक भी गलगण्ड और गण्डमालाको किसी किसी समय एकजातीय जैसा ही रोग समझते हैं। उनके मतमें गण्डमाला रोगकी ३ अव-स्थाएं हैं। प्रथम अवस्थामें चोषक ग्रन्थि (Lymphatic gland) तथा त्वक्, दूसरीमें श्लैष्मिक झिल्ली (Mucous membrane) अथवा कोषमय पदार्थ (Cellular tissue) और तीसरीमें अस्थि तथा शारो-

रिक यन्त्र सकल (फेफड़ा, श्वासनाली, यकृत्, श्रीहा और वृक्कक) आक्रान्त होता है। अतिसामान्य कारणसे पहले गलेमें या मत्थे पर क्षत हो करके फिर गर्दनकी गाँठें फल उठती हैं।

पूर्व कालको युरोपमें गण्डमाला रोगकी चिकित्सा निराले उपायसे होती थी। बाइबिल पढ़नेसे समझ पड़ता है कि याजक लोग सिर्फ छू करके ही उस रोगको आरोग्य करते थे। प्लिनि, टासीटास, सिडटोनिआ आदिके ग्रन्थोंमें भी स्पर्श द्वारा गण्डमाला आरोग्यको बात लिखी है। २०० वर्ष पहलेके स्काटलाण्ड तथा जर्मन भाषाके दूसरे बहुतसे ग्रन्थोंमें राजस्पर्शसे इस रोगके अच्छे हो जानेको कथा दृष्ट होती है। उसीसे चलतो अंगरेजीमें इसको राजरोग (King's evil) कहते हैं।

शिशुको गण्डमाला होने पर यदि माता या पिताका रोग हो तो धात्री रख करके उसका स्तन्यपान कराना चाहिये। बच्चोंके लिये १५।२० बूंद काडलिवर आयल महोपकारी है। एलोपैथीके मतमें गण्डमाला रोग पर थोड़ासा आयोडाइन लगाया जा सकता है और उससे विशेष फल भी मिलता है। किन्तु उसके लगाने बाद यदि मूत्रमें माण्ड्यक दिख पड़े, तो फिर व्यवहार करना न चाहिये। औषध खानेमें—आयोडाइड अव पोटासियम, १ ग्रेन सिरप फेरी आयोडाइड, १० बूंद सिरप जिञ्जवेरिस २० बूंद और अनन्तमूल या सालसा का काढ़ा २ ड्राम मिला करके ४से ६ ड्राम तकको मात्रामें दिनमें २।३ बार ग्रहण करना चाहिये। इस रोग के रोगीको सर्वदा साफ सुथरा रहना, विशुद्ध वायु सेवन करना और हलका तथा बलकर पथ्य खाना एकांत कर्तव्य है।

गलग्रन्थिका एक या उभय सूक्ष्मभाग (lobes) फूल करके स्थायी हो जानेसे गलगण्डरोग कहलाता है। उनके मतमें पहाड़ी और सर्द जगहमें यह रोग अधिक उठता है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें यह रोग कुछ अधिक देख पड़ता है। रीतिके अनुसार ऋतु न होनेसे अनेक समय स्त्रियोंको यह रोग लग जाया करता है। डाक्टर पहले उस पर आयोडाइन लगानेको कहते हैं। उससे कोई फल न मिलने पर अस्त्रचिकित्सा करनेका परामर्श दिया जाता है। होमिओपाथिके मतमें दिनमें और रात को पहले ३ दिन तक एक एक बूंद स्पनजिया और सात दिन पीछे फिर एक एक बूंद वही सेवन कराना चाहिये। इससे फायदा न पहुंचने पर सवेरे प्रति दिन १ बूंद आयोडाइन सात दिन व्यवहार करके फिर सात दिन तक खाली जाने देते हैं। इससे भी लाभ न होने पर रातको एक बूंद काला हाईड्रिड देना चाहिये। गलगण्डमें चर्मखण्ड निकलनेसे इस रोगको असाध्य समझना चाहिये।

गलगनाथ—बम्बई प्रदेशके अन्तर्गत धारवार जिलेका एक ग्राम। यह करजगिरिसे १० कोस उत्तरपूर्व तुङ्गभद्रा नदीके वामपार्श्व पर अवस्थित है। यहां गर्गेश्वर और हनुमानके मन्दिर हैं। ग्रामके उत्तर वहां और तुङ्गभद्रा नदीके सङ्गमस्थान पर गर्गेश्वरदेवका मन्दिर अवस्थित है मन्दिर कृष्णवर्ण ग्रेणाइट पत्थरसे निर्मित है। इसकी लम्बाई ५३ हाथ और चौड़ाई प्राय २७ हाथकी है और इसकी छत चार बड़े बड़े खम्भोंके ऊपर रक्षित है। दीवारमें नाना प्रकारकी मूर्तियां खुदी हुई हैं।

गलगल (हिं० पु०) एक प्रकारका पक्षी। यह मैना जातिका है। यह सुर्खी लिये काले रंगका होता है। इसके गर्दन पर दोनों और लालधारियां होती हैं और पृच्छ श्वेत वर्णकी होती है, गलगलिया। २ एक प्रकारका अम्लत बड़ा नीबू। पकने पर इसका रङ्ग बसन्ती रंगसा हो जाता है। इसका स्वाद बहुत अम्ल होता है। ३ पर्वोंकी बत्तीका एक खण्ड। यह जहाजमें समुद्रकी गहराई नापनेवाले औजारमें सीसेकी एक नलीमें लगा रहता है। ४ एक प्रकारका मसाला जो अलसी और चूनेके तेलको मिलाकर बनाया जाता है। यह किसी पदार्थको जोड़ने या छेद बन्द करनेके काममें आता है।

गलगला (हिं० वि०) आर्द्र, भींगा हुआ।

गलगलाना (हिं० क्रि०) गीला होना। तर होना, भीगना।

गलगलि—बम्बई प्रदेशके बीजापुर जिलान्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह कलादिगिसे ६ कोस उत्तर कृष्णानदीके तीर पर अवस्थित है। पहले यह प्राचीन दण्डकारण्यके अन्तर्गत था। गालव ऋषि इस स्थान पर रहते थे। इसलिये यह गालवक्षेत्रसे मशहूर है। गलगलि ग्रामसे पश्चिम दक्षिण

पहाड़ पर गालव स्थान और छह ऋषियोंके आश्रम कह कर गये हैं। लोग कहा करते हैं कि इस ग्रामके उत्तर कृष्णानदीके गर्भ पर एक मंदिर है और उस जगह नदी-के जलमें रुपये पाये जाते हैं। १८७६ ई०की नदीके जल सुखाये जाने पर मन्दिरके ऊपरका भाग प्रकाशित हुआ था जो अंश प्रकाशित हुआ था उसकी लम्बाई तथा चौड़ाई ६० हाथकी होगी। नदीके तीर पर यल्लमादेवीका मन्दिर है। इसके अतिरिक्त गलगलि ग्राममें और चार छोटे छोटे मन्दिर हैं। १६८८ ई०की महाराष्ट्रोंके साथ लड़ाईके समय सम्राट् औरंजेब अपना सैन्य सामन्त लेकर इसी जगह पर टिके रहे। इटाली देशके परिव्राजक केरी साहबने इस स्थान पर आकर उनसे मुलाकात की थी।

गलगलिया (हिं० स्त्री०) सिरोही नामकी एक चिड़िया।

गलगाजना (हिं क्रि०) खुशीसे गरजना, गालबजाना।

गलगुच्छा (हिं० पु०) गलमुच्छा देखो।

गलगुथना (हिं० वि०) हृष्ट पुष्ट मोटा ताजा, जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों।

गलगोड़िका (सं० स्त्री०) विषयुक्त जन्तुविशेष, एक विषैला जानवर। इसके काटनेसे दाह, परिताप, खेद और शोथ हो जाता है।

गलग्रह (सं० पु०) गलं कण्ठदेशं गृह्णाति, ग्रह-अच्। व्यञ्जनविशेष, एक प्रकारकी पकी हुई मछली। २ तिथि-विशेष, एक तिथिका नाम।

"कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादि दिनत्रयम्।
त्रयोदशी चतुष्कञ्च अष्टावेते गलग्रहाः॥"

अर्थात् ज्योतिषके अनुसार कृष्ण पक्षकी चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, अमावस्या, और प्रतिपदा, इन आठों तिथियोंको गलग्रह कहते हैं। ३ आरम्भके बाद जिसका प्रत्यारम्भ इष्ट नहीं होता गर्गादि मुनिगण उस-को गलग्रह कहते हैं। ४ कण्ठरोध रोगविशेष। ५ अप-रिहार्य आपत्ति परित्याग नहीं की जा सकती ऐसा जानकर अनिच्छासे जिसका भार लिया जाता और जिस-में किसी प्रकारका गुण नहीं हो केवल बैठ कर अन्नध्वंस करता हो उसे भी गलग्रह कहते हैं।

गलग्राह (सं० पु०) मकर।

गलघसिया—बङ्गदेशके २४ परगना होकर प्रवाहित एक नदी। बाँगतला और गुंटिया इन दोनों खालोंके सङ्गम स्थान पर गलघसिया नदीकी उत्पत्ति है। उसके बाद दक्षिण-पूर्व दिशा होकर बहती हुई खुलना जिलेके कल्या-णपुर ग्रामके निकट खोल पेटुआ नदीमें आ गिरी है।

गलचा—अफगानिस्तानमें बदकशान प्रदेशकी अधिवासी एक जाति। ऐसा कहा जाता है कि इरानी और हिन्दू जातिसे 'गलचा' जातिकी उत्पत्ति है। एक समय गलचा-के सिरकी खोपड़ी परीक्षाके लिये फ्रान्सके पेरिस नगरमें भेजी गई थी। वहां पर टोपनार्ड साहबने मस्तक जांच कर आर्यके मस्तकके जैसा ठहराया। फरासी उजफ-लवी साहबने इन्हें गलचा नामसे अभिहित किया है।

गलछल (हिं० स्त्री०) मछलीके अंगका एक भाग। यह गलफड़ेके दोनों और कुरी अस्थियोंका बना हुआ है। इस भागके ऊपर लाल सूइयोंकी झालर लगी रहती है। इसीके द्वारा जलमें मिली हुई वायुको वह भीतर खींच कर सांस लेती है।

गलजंदड़ा (हिं० पु०) १ सदा साथ रहनेवाला, गलेका हार। २ रूमाल या कपड़ेकी पट्टी। यह हाथकी चोट या घाव पर बाँधनेके लिये रखी जाती है।

गलजोड़ (हिं० स्त्री०) गलजोत देखो।

गलजोत (हिं० स्त्री०) १ एक बैलको दूसरे बैलके गलेमें लगाकर बांधनेकी रस्सी या पगही, गलजोड़। २ गले-का हार।

गलतंग (हिं० वि०) अचेत, बेसुध, बेखबर।

गलतंस (हिं० पु०) १ मनुष्य जो कोई संतति न छोड़ कर मरा हो। २ ऐसे मनुष्यकी जायदाद जिसे कोई संतति न हो।

गलत (फा० वि०) १ अशुद्ध, भ्रममूलक। २ असत्य, मिथ्या, झूठ।

गलतकिया (हिं० पु०) गालोंके नीचे रखनेका तकिया।

गलत्कुष्ठ (सं० क्ली०) गलत् रसादिक्षरणशीलं कुष्ठम्। रस रक्तादि क्षरणशील कुष्ठविशेष। एक प्रकारका कोढ़ रोग जिससे लोहू इत्यादि निकलता है।

गलत्कुष्ठारिरस (सं० पु०) गलत्कुष्ठरोगकी औषध। पारा, गन्धक, ताम्र, लौह, गुग्गुल, चितामूलचूर्ण,

गिलाजतु, कुचिला, और वच प्रत्येकके चार चार भागको घृत और मधुके साथ मर्द्दन कर दो तोला परिमाण प्रति दिन सेवन करनेसे गलत्कुष्ठ, 'कलास, वातरक्त, जलोदर और मलवद्धादि रोग नष्ट होते हैं।

गलता (फा० वि०) [illegible]।

गलता (अ० पु०) १ एक प्रकारका बहुत चमकीला वस्त्र। इसका ताना और बाना क्रमशः रेशम और सूतके होते हैं। यह सादा धारीदार और भिन्न भिन्न तरहके होते हैं। २ मकानकी कारनिस।

गलताड (हि० पु०) जूएकी खूंटी जो भीतरकी ओर होती है।

गलतान (फा० वि०) लुढ़कता हुआ, चक्कर मारता हुआ।

गलती (फा० स्त्री०) १ भूल, चूक। २ धोखा।

गलथना (फा० पु०) बकरियोंकी गरदनमें दोनों ओर लटकी हुई थैलिया।

गलथैली (सं० स्त्री०) बन्दरोंके गालके नीचेकी थैली। इसमें वे खानेकी वस्तु भर लेते हैं।

गलदश्रु (स० वि०) जिसका अश्रु गल रहा हो जिसका आँसू बह रहा हो।

गलद्वार (स० स्त्री०) गलेका रास्ता, जहां हो कर अन्न भीतर जाता है।

गलदेश (स० पु०) गल एव देश। गला, ग्रीवा, गरदन।

गलन (स० क्ली०) गल भावे ल्युट। क्षरण, गल कर गिरना।

गलनहाँ (हिं० पु०) हाथियोंका एक रोग। इसमें उनके नाखून गल गल कर निकला करते हैं। (वि०) वह हाथी जिसे गलनहाँ रोग हो।

गलना (अ० क्रिया) १ किसी पदार्थके घनत्वका नष्ट होना। यह विश्लेषण किसी द्रव्यके बहुत दिनों तक जल तेजाब आदिमें पड़े रहने, गरमी लगने अथवा किसी और प्रकारके संयोगके कारण हो जाता है। २ बहुत जीर्ण होना, किसी कामके योग्य न रहना। ३ शरीरका दुर्बल होना। ४ बहुत ज्यादे ठण्डके कारण हाथ पैरका ठिठुरना। ५ वृथा या निष्फल होना।

गलनीय (स० वि०) गल अनीयर्। गलनेके योग्य, सड़ने लायक।

गलन्तीका (स० स्त्री०) गलतीति गल-शतृ ङीप् ततः स्वल्पार्थे कन्। स्वल्प वारिधानिका, वह बरतन जिससे कम पानी निकलता हो, गड़ुवा। (काशीखण्ड ५ अ०)

गलफड़ा (हि० पु०) १ जल जन्तुओंके पानीमें सांस लेनेका अवयव। यह मस्तकके उभय ओर होता है। भिन्न भिन्न जल जन्तुओंका गलफड़ा भिन्न भिन्न आकारका होता है। मछलीके गलेमें सिरके दोनों ओर दो अर्द्ध चन्द्राकार छिद्र होते हैं जिनके मध्यमें चार चार अर्द्ध चन्द्राकार कमानियां होतीं हैं जिन्हें गलछट कहते हैं। २ गालोंके दोनों जबड़ेके बीचका मांस।

गलफरा (हि० पु०) गलफड़ा देखो।

गलफांस (हि० स्त्री०) मालखम्भकी एक कसरत। इस कसरतमें बेतको गलेसे लपेट कर उसके एक सिरेको छाती परसे ले जा कर अंगूठेके नीचे दबाते हैं और सिर्फ गलेके जोरसे अपने मस्तकको पेट तक झुकाते हैं।

गलफांसी (हि० स्त्री०) १ गलेकी फांसी। २ कष्टदायक वस्तु वा कार्य, जंजाल।

गलफूट (हि० स्त्री०) बकवकानेकी आदत।

गलफूला (हि० वि०) जिसका गाल फूल गया हो। (पु०) एक रोग जिसमें गलेमें सूजन होती है।

गलफड़ (हि० पु०) गलेकी गिलटी।

गलबन्दी (हि० स्त्री०) एक प्रकारका पहिरावा जो गलेमें पहना जाता है, गुलबन्द।

गलबदरी (हि० स्त्री०) ऐसा बादल जिसके साथ हाथ पाव गलानेवाला जाड़ा पड़े यह अवस्था प्राय जाड़ेके मौसिममें होती है।

गलबल (हि० पु०) कोलाहल, गड़बड़ी, खलबली।

गलबांही (हि० स्त्री०) कण्ठालिङ्गन, प्रेमसे गलेमें बांह डालना।

गलभङ्ग (स० पु०) गलस्य कण्ठ स्वरस्य भङ्ग, ६ तत्। स्वरभङ्ग, जिसका स्वर ठीक नहीं हो।

गलमुदरी (हि० स्त्री०) गलमुद्रा जो शिवजीके पूजन और शयनके समय उन्हें खुश करनेके लिये की जाती है। २ गाल बजाना, व्यर्थ बकवाद या गप्प करना।

गलमुच्छा (हि० पु०) दोनों गालों परके बढ़ाये हुए बाल। लोग इसे शौकसे रख लेते हैं।

गलमुद्रा (सं० स्त्री०) गलमंदरी देखो।

गलमेखला (सं० स्त्री०) गलस्य मेखला इव । १ कण्ठाभरणविशेष, गलसूत्र । इसे सूत्रवली भी कहते हैं । २ हार, माला ।

गलरोग (सं० पु०) गलजातः रोगः । गलदेश जात रोग, गल व्याधि, गलेका एक रोग ।

गलवय—उत्तरपश्चिमाञ्चलमें बुलन्दशहर जिलेका एक नगर । यह बुलन्दशहरसे ६ कोस उत्तर और मेरठसे १४ कोसकी दूरी पर अवस्थित है । अकबर बादशाहने सैयद जातिके थोड़े मनुष्योंको यहांकी थोड़ी जमीन निष्कर दान दिया था, किन्तु १८५७ ई०को यहांके अधिकारीगण अंगरेजोंके विद्रोही हो गये इस लिये अंगरेज गवर्मेण्टने उनसे वह स्थान ले लिया । यहां आजकल सैन्यका वास, सरकारी डाक बंगला, डाकघर और थाना है। प्रत्येक सप्ताहमें यहां एक बड़ी हाट लगती है ।

गलवाना (हिं० प्रे० क्रि०) गलानेका काम कराना, गलानेमें लगाना ।

गलविद्रधि (सं० पु०) गलरोगभेद, गलेकी एक प्रकारकी बीमारी ।

गलरोहिणी (सं० स्त्री०) गले रोहिति रुह-णिनि ङीप् । कण्ठगत रोगविशेष । वायु, पित्त और कफसे गलदेश वर्द्धित हो कर रक्त और मांस दूषित हो जाते तथा समस्त अंग पर अङ्कुर उत्पन्न होते हैं इसीको गलरोहिणी कहते हैं । इस रोगमें रोगी शीघ्र ही मर जाता है ।

गललग्न (सं० त्रि०) गले लग्नः । गलदेशमें लग्न, गलेसे लिपटना ।

गलवस्त्र (सं० त्रि०) जिसने प्रणामादिके लिये अपने गलेमें वस्त्र दिया हो ।

गलवार्त (सं० त्रि०) गले गलव्यापारे आर्त्तः निरामयः समर्थः । यथेष्ट भोजन योग्य निरामय व्यक्ति, अधिक भोजन खानेवाला, नीरोग मनुष्य । (पञ्चतन्त्र)

गलव्रत (सं० पु०) गरो गरणं गिलनं सर्पादिभक्षणं व्रतमस्य । मयूर, मोर ।

गलशुण्डिका (सं० स्त्री०) स्वल्पाशुण्डा-कन् । तालु ऊर्ध्वस्थित सूक्ष्म जिह्वा, तालूके ऊपरकी छोटी जीभ, गलेका कौवा । इसका पर्याय—सुधास्रवा, घण्टिका, लम्बिका, कण्ठिका, प्रतिजिह्विका, माध्वी और अलिजिह्विका है । (शब्दरत्ना)

२ तालुगत रोगविशेष । जिसकी श्लेष्मा प्रकुपित हो कर गलेमें अवस्थित हो जाती है, शोथ ही उसके गालमें शोथ हो कर गलशुण्डिका रोग उत्पन्न हो जाता है । (सुश्रुत १६ अ०)

चिकित्सक गण शस्त्र द्वारा शुण्डिकाको सुगमतासे काट देते हैं । उसके बाद पीपर, मरीच, हरीतकी, वच, धान्य और यवानिका इन सभीका क्वाथ और रस स्वेद देते हैं । दिवारात्र मुखमें जवाखार रखा जाता है । कंठदेश मर्दन करना चाहिये. इससे रोगी स्वस्थ होता है । श्वेत सरसों, वच, कुड़, हरिद्रा, भूल और लवण एकत्र करके कण्ठ पर लेप देनेसे रोग आराम हो जाता है । इस बीमारीमें तेल तथा कड़ुआ पदार्थ सेवन नहीं करना चाहिये । (शालोक्तचिकि० ५४ प०)

गलशुण्डी (सं० स्त्री०) १ गले शुण्डीव । गलशुंडिका रोग । २ जीभके आकारका मांसका एक छोटा खंड । यह प्राणियोंके गलेके भीतर जीभकी जड़के पास रहता है । शब्द उच्चारण करनेमें यह बहुत सहायता देता है । गलशुण्डिका देखो।

गलशोथ (सं० पु०) गलेका फूलना ।

गलसिरी (हिं० स्त्री०) कंठश्री नामका एक आभूषण, यह गलेमें पहना जाता है ।

गलसुआ (हिं० पु०) एक रोग जिसमें गालके नीचेका भाग फूल जाता है ।

गलसुई (सं० स्त्री०) एक छोटा, गोल और कोमल तकिया, जो गालोंके नीचे रखा जाता है ।

गलस्तन (सं० पु०) १ गलगण्ड रोग । २ बकरेके टांगों और लटकती हुई स्तनाकार पतली थैली, गलथन ।

गलस्तनी (सं० स्त्री०) गले स्तनौऽस्याः पचे अलुक् । बकरियोंकी एक जाति ।

गलस्वर (हिं० पु०) एक प्राचीन कालका बाजा, जो मुखसे फूंक कर बजाया जाता था ।

गलहंड (हिं० पु०) गलेका रोग । इसमें गला फूल जाता है, घेघा ।

गलहस्त (सं० पु०) गले न्यस्तो हस्तः । गले पर हाथ देकर अलग कर देना, गलधक्का । (कथासरित्)

गलहस्तित (स० वि०) जिसके गलेपर हाथ-दिया गया हो। (२४४।२५५।)

गलही (हिं० स्त्री०) नावका वह अगला और उपरका भाग, जहां उसके दोनों पार्श्व आकर समाप्त होते हैं।

गला (स० स्त्री०) गलतीति गल-अच् टाप। १ अलम्बुषा, लज्जालुलता। २ शरीरका वह अवयव जो सिरको धड़से जोड़ता है, गलदेश।

गलाऊ (हिं० वि०) जो गलता हो, गलनेवाला।

गलाङ्कुर (स० पु०) गलजात अङ्कुर। गलदेशजात मांसाङ्कुर विशेष। एक प्रकारका गलेका रोग जिसमें गाल फूल जाता है।

गलाध:करण (स० क्ली०) निगलनेकी क्रिया।

गलाना (हिं० क्रि०) किसी वस्तुके संयोजक अणुओंको पृथक् पृथक् करके उसे नरम गीला करना।

गलानि (हिं० स्त्री०) दुःख या पश्चात्तापके कारण खिन्नता। २ खेद, दुःख।

गलानिक (स० पु०) गले अनिको प्राणो यस्य। झींगा, एक प्रकारकी मछली।

गलानिल (स० पु०) गले अनिल। प्राणवायु, प्राण। २ मत्स्यभेद, एक प्रकारकी मछली।

गलायुक (स० पु०) गलरोगभेद। एक प्रकारकी गलेकी बीमारी।

गलार (हिं० पु०) एक पेड़का नाम।

गलारी (हिं० स्त्री०) गिलगिलिया नामकी चिड़िया।

गलावट (हिं० स्त्री०) १ गलनेका भाव या क्रिया। २ वह वस्तु जो दूसरी वस्तुको गलावे सोहागा नौसादर आदि।

गलाविल (स० पु०) गलानिक मछली।

गलार्बुद (स० क्ली०) एक प्रकारकी बीमारी जो सदा गलेमें हुआ करती है।

गलि (स० पु०) गिरति ग्रसमुत्क्षेव भक्षयतीति गल इन्। वह बैल जो सामर्थ्य होने पर भी बोझ खींच न सके, दुष्ट या सुस्त बैल। २ अन्य परिसर पथ वह रास्ता जिसमें शीघ्र पहुंचा जाय।

गलित (स० त्रि०) गल-क्त। १ पतित, नीतिभ्रष्ट, महापापी। इसका पर्याय—स्रस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न और च्युत हैं। २ द्रवीभूत, गला हुआ।

गलितकुष्ठ (स० क्ली०) गलित कुष्ठम्, कर्मधा०। गलित कुष्ठ रोग, इसमें शरीरके सब अंग सड़ने और कटकट कर गिरने लगते हैं तथा उसमें कीड़े पड़ जाते हैं।

गलतकुष्ठ देखो।

गलितदन्त (स० त्रि०) जिसे दांत न हो।

गलितयौवना (स० स्त्री०) वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो, ढलती जवानीकी स्त्री।

गलिया (हिं० स्त्री०) चक्कीके छेद जिसमें पीसनेके लिये दाना डाला जाता है। (हिं० वि०) मट्ठर, सुस्त। यह सिर्फ बैल आदि चौपायोंके लिये आता है।

गलियारा (हिं० पु०) सङ्कीर्ण राह, तंग छोटी गली।

गलियारा—रंगरेजोंकी एक जाति। ये अहमदाबाद और सूरतमें पाये जाते हैं। ये बहुत छोटे छोटे घरमें रहते हैं, और कपड़ेको रंगाकर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। स्त्रियां भी मर्दको वस्त्र रंगनेमें सहायता पहुंचाती हैं। इनमेंसे बहुत थोड़े अपने लड़केको पढ़ाते हैं।

गलियारी (हिं० स्त्री०) मार्ग, गली।

गली (स० स्त्री०) दो घरोंकी पङ्क्तियोंके बीचमें छोड़ गया हुआ तंग रास्ता, खोरी।

गलीचा (फा० पु०) एक प्रकारका बिछौना। यह बहुत मोटा और भिन्न भिन्न रङ्गोंका बना रहता है। इसमें घने सान्नीकी तरह सूत निकले रहते हैं।

गलीज (अ० वि०) १ गंदला, मैला। २ अशुद्ध, अपवित्र, नापाक।

गलीत (अ० वि०) गंदा, मैला, कुचैला।

गलु (स० पु०) गल-उन्। मणिविशेष, एक प्रकारका रत्न।

गलू (स० पु०) एक प्रकारका पत्थर, जिसमें प्राचीन कालमें मर्दाके बरतन बनाये जाते थे।

गलून (स० पु०) काश्मीरके एक राजमन्त्री।

(राजतरङ्गिणी ५।७८।१८७)

गलेगण्ड (स० पु०) गलेगण्ड इवास्य। पक्षिविशेष, कड़गिल।

गलेचोपक (स० त्रि०) गले चुप्यते,सो चुप कर्मणि ण्वुल्, अलुक् समास। कण्ठ-कर्णजोष, काटनेके योग्य गला।

गलेफ (हिं० पु०) गिलाफ देखो।

गलेबाज (हिं० वि०) अच्छा गानेवाला।

गलेस्तनी (सं० स्त्री०) छागी, बकरी। गलस्तनी देखो।

गलैचा (हिं० पु०) गलीचा देखो।

गलोद्य (सं० क्ली०) गलेन लोद्यं, पृषोदरादित्वात् ललोपे साधुः। धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गलोद्देश (सं० पु०) गलस्य उद्देशः समीपम्। गलेके निकट स्थित अवयवविशेष, गलेके पासका एक अंश।

गलोद्भव (सं० पु०) गले अश्वगलदेशे उद्भवति उद् भू-कर्तरि अच्। अश्वगलदेशजात गोचसान नामक रोमावर्त विशेष, घोड़ेके गलेका बालकुल।

गलोन (हिं० पु०) एक प्रकारका सुरमा जो काबुल और कंदहारसे आता है।

गलौ (सं० पु०) चन्द्रमा।

गलौआ (हिं० पु०) बंदरोंके गालोंके भीतरकी थैली, जिसमें वे खानेकी वस्तु भर लेते हैं।

गलौघ (सं० पु०) गले उघ इव। रोगविशेष। कफ और रक्तके प्रकोपसे गालमें एक प्रकारकी सूजन हो जाती है। इसमें बहुत जलन होती तथा सांस लेनेमें कठिनता पड़ती है।

गल्दा (सं० स्त्री०) गल-क्विप् गलेन दीयते दा-क। १ वाक्य। २ निःसृत। (ऋक् ५।८।१०) ३ धमनीविशेष, शरीरके भीतरकी एक प्रकारकी नली।

गल्प (हिं० स्त्री०) १ मिथ्या प्रवाद। २ डींग, शेखी। ३ मृदङ्गके बारह प्रबन्धोंमेंसे एक। ४ छोटी छोटी कहानियां।

गल्भ (सं० त्रि०) गल्भ-अच्। १ सङ्कोचशून्य, निर्भय। २ गर्वकारी, अहङ्कार करनेवाला।

गल्या (सं० स्त्री०) गलानां कण्ठानां समूहः। गलसमूह।

गल्ल (सं० पु०) गल्-ल। कपोल, गाल।

गल्लई (हिं० वि०) गल्लेके रूपमें। (पु०) वह खेत जिसका लगान लिया जाता हो, बटाई।

गल्लक (सं० पु०) गल्ल स्वार्थे कन्। १ कपोल, गाल। २ मद्यपानपात्र। शराब पीनेका प्याला। ३ इन्द्रनील मणि, मरकतमणि, नीलम।

गल्लचातुरी (सं० स्त्री०) गल्ले चातुरी यस्याः। उपधानविशेष, तकिया।

गल्लदासार—मारवाड़ प्रदेशमें रहनेवाली एक जाति। यह लोग देखनेमें काले और लम्बे होते हैं। इनकी आंखें छोटी, नाक उठी हुई, होंठ पतले, कनपटी नीची, शिरके बाल बारीक और दाढ़ी घनी रहती है इन्हें पकाना तो ठीक मालूम नहीं, परन्तु खाना खूब जानते हैं। रोटी, तरकारी और दही इनका प्रधान आहार है। यह मांस ग्रहण नहीं करते। इनके पैरमें खड़ाऊं, मत्थे पर पगड़ी, कमरमें धोती और शरीरमें जामा रहता है। स्त्रियां सांड़ी और अंगिया पहनती हैं। सभी गल्लदासार शान्त और परिश्रमी होते हैं। खेती इनका बड़ा सहारा है। त्यौहारको छोड़ करके दूसरे दिन यह सवेरेसे शाम तक मैदानमें काम किया करते हैं। घरकी स्त्रियां और लड़के भी हार बाहर जा करके पुरुषोंको काममें सहायता देते हैं। तिरुपतिके हनुमान्‌जी और व्यङ्कटरमण इनके उपास्य देवता हैं। कभी कभी यल्लमा और दुर्गा देवताकी भी पूजा होती है। जादूटोने पर इन्हें बड़ा विश्वास है। किसीको पीड़ा होनेसे ओझा जा करके रोगकी व्यवस्था करते हैं। सन्तान भूमिष्ठ होने पर नाड़ी काट फूलकी मट्टीके बर्तनमें रख करके साफ जगह पर मट्टीके भीतर गाड़ देते हैं। फिर पांचवें दिनको जीवती देवीकी पूजा तथा ज्ञातिभोज और बारहवें दिनको नवजात शिशुका नामकरण होता है। विवाहके दिन वर और कन्या दोनोंको तेल और हलदी लगा करके नहाना पड़ता है। इसके बाद दोनों जब एक वेदी पर बैठते, ग्रामस्थ दैवज्ञ मन्त्र पाठ करके धान्यसे आशीर्वाद करते हैं। फिर सबको पान सुपारी बांटते और अन्तमें आत्मीय कुटुम्बको खिलाते पिलाते हैं। इन लोगोंमें विधवाविवाह और बहुविवाह चलता है। समाजशासन गल्लदासारोंमें बहुत प्रबल है। यह लड़कोंको स्कूलमें पढ़ने नहीं भेजते। गल्लदासार धीरे धीरे मिट रहे हैं। यह कर्णाटी भाषामें बातचीत करते हैं। इनमें श्रेणी विभाग नहीं है।

गल्ला (हिं० पु०) १ शोर, हौरा शब्द। (फा० पु०) २ झुंड, दल। (अ० पु०) ३ उपज, फसल, पैदावार। ४ अन्न, अनाज।

गल्लाफरोश (फा० पु०) अनाजका व्यापारी।

गल्लिका (सं० स्त्री०) गल्लक टाप् अत इत्वम्। गाल, कपोल।

गल्लिर (सं० पु०) एक प्रकारका रोग।

गल्वर्क (सं० पु०) गलुर्मणिभेदस्तस्य ऽर्कः दीप्तिर्यस्य। १ चषक, मदिरा पीनेका प्याला। २ मारविशिष्ट मणि। ३ पद्मराग मणि, लाल नामक रत्न।

गव (हि० पु०) एक बन्दरका नाम जो रामचन्द्रजीकी सेनामें था।

गवची (सं० स्त्री०) गां भूमिमञ्चति, गो-अनच्-क्विप्। इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण।

गवत्र (सं० क्ली०) गा त्राति इति त्रै ड। गोभक्ष्य पयाल खड।

गवन्दी—दाक्षिणात्यवासी एक जाति। साधारणतः छप्पर छाना और राजगरी करना ही इन लोगोंका पेशा है। बीजापुर जिले और उसके इलाकेके बागवाड़ी उपवि भागमें इनकी रहायस ज्यादा है। यह कनाड़ीकी टूटी फूटी गवारू बोलीमें बात चीत करते, परन्तु काम पड़ने पर हिन्दी और मराठी भी बोल लेते हैं। गवन्दी देखनेमें बिलकुल कुनबियों जैसे समझ पड़ते, केवल देखनेमें कुछ ज्यादा काले और लम्बे लगते हैं। इनमें किसी प्रकारका श्रेणीविभाग वा गोत्र अथवा कुलकी विभिन्नता नहीं। परन्तु परस्पर एक उपाधिधारी होनेसे वर और कन्याका विवाह रुक जाता है।

यह पत्थर और मट्टीसे रहनेके लायक घर बना लेते हैं। खड़ पतवार या वैसी ही किसी चीजसे घरकी छत छायी जाती है। अपने कामके लिये गाय बकरी आदि जन्तु और कुत्ते पालते और अपने आप उनका प्रतिपालन किया करते हैं। कोई काम काज करानेके लिये यह नौकर नहीं रखते। दाल, रोटी और भाजी इनका साधारण खाद्य है। पार्वणादिको अनपान करके खाया जाता है। भेड़, हिरन, खरगोश हंस, मुर्गा आदि पालतू चिड़िया और मछली इनकी प्यारी चीज है, दूसरे मांसको यह अपवित्र और अखाद्य समझ करके नहीं छूते। मद्य पीनेका इन्हें कुछ ज्यादा शौक है। त्योहारके दिन शराब बहुत पी जाती है। मद्यके कारण प्राय सभी ऋण ग्रस्त रहते हैं। गवन्दियोंका पहनावा सीधासादा और साफ सुथरा होता है। स्त्रीपुरुष दोनों कानों और हाथों में गहने पहनते हैं। स्त्रियोंको लाल और काला कपड़ा कुछ ज्यादा अच्छा लगता है।

सभी गवन्दी आज्ञाकारी, आतिथेय, कर्मठ, मितव्ययी और नम्र हैं। परन्तु वह मैले कुचैले रहते हैं। पहले यह नमक बना करके बेचते थे, परन्तु उक्त व्यवसाय आजकल बन्द हो जानेसे मजदूरी और खेती करके जीविका निर्वाह करते हैं। इनमें स्त्री, पुरुष, बालक—कोई अवस्थाके अनुसार यथासाध्य जीविकाके लिये चेष्टा करनेसे नहीं चूकता।

गवन्दी बहुत धर्मभीरु होते हैं। देवद्विजमें इनकी बड़ी भक्ति रहती है यह ब्राह्मणोंसे मुहूर्त पूछ करके प्रस्य कर्तन, गर्भाधान, विवाह आदि शुभकर्म करते और ब्राह्मणको उसमें नियुक्त रखते हैं। 'श्रोष्ठम्' नामक निम्नश्रेणीके तैलङ्गो ब्राह्मण ही इनके पुरोहित हैं। हनुमन्तदेव, तुलजा भवानी, व्यङ्कटरमण और यल्लमा देवीको कुलदेवता जैसा पूजते हैं। आर्काट नगरके उत्तर वेङ्कटगिरि और निजाम राज्यके अन्तर्गत तुलजापुरको इनकी तीर्थयात्रा होती है। आश्विन मासमें दशहरेको तुलजाभवानी देवीके प्रीत्यर्थ भेड़ बलि दिया करते हैं। यल्लमा देवीके पूजा समय निमन्त्रित ज्ञातिको खिलाया जाता है। देवमूर्तियां प्राय मनुष्य, हय और वानरके आकारकी बनती हैं।

गवन्दी लोग सवेरे नहा धो करके गृहदेवताकी पूजा करते हैं। जिनके गृहदेवता नहीं, वे मारुतिके मन्दिरमें आह्निक समापन किये विना अन्न ग्रहण करनेसे विरत रहते हैं। पर्व आदिको यथारीति उपवास प्रभृति किया जाता है। श्रोष्ठम् ब्राह्मण परम्परानुसार दीक्षा देते हैं। इनके गुरुको ताताचार्य कहते, जो एक मात्र धर्मोपदेष्टा रहते हैं। उनके भरणपोषणको सबसे चन्दा लिया जाता है। गवन्दी ग्राम्य देवता या किसी उपदेवताको नहीं पूजते।

भूतप्रेत, डाइन, जुदुन और भविष्यत् वाक्यमें इनका बड़ा विश्वास है। औषधसे रोग शान्ति न होने पर ओझा आ करके झाड़ फूक करते हैं। इसमें मृतको खाना कपड़ा देने पर वह उतर जाता है। किसी रोगीको देवता

विशिष्टके सामने लिटा देनेसे ही समझते हैं कि भूत उसको छोड़ जावेगा। इनको विश्वास है कि ओझा मन्त्रसे लोगोंको मार तक सकते हैं।

सन्तान भूमिष्ठ होने पर गवन्दी नवजात शिशु और प्रसूतिको नहलाते और चारपाई पर लेटा करके गर्मी पहुंचानेको उसके नीचे कण्डेकी आग सुलगाते हैं। फिर प्रसूतिको गरी और गुड़ खिलाया जाता है। सन्तान प्रसूत होनेसे आध घण्टे पीछे माताको चावल और मक्खन देते और पांच दिन तक बराबर वैसा ही किया करते हैं। पांचवीं रातको धात्री आ करके जीवतीकी पूजा करती और नैवेद्य आदि अपने आप ग्रहण करके उसीके साथ एक प्रदीप ढांक करके चल देती है। इनको विश्वास है कि उक्त दीपकको किसीके देख लेनेसे पुत्र और प्रसूतिको पीड़ा होती है। बारहवें या तेरहवें दिन बच्चेका नाम रखा जाता है। इसी दिनको प्रसूति शुचि होती है

विवाहसे पहले फलदानके समय वरकर्ता कन्याको पान, सुपारी, नारियल, शक्कर और कपड़ा पहुंचाते हैं। एक नारिकेल कन्याको कुलदेवताके सामने रखना पड़ता है। कन्या यही कपड़े पहन करके एक कम्बल पर आ बैठती है। फिर वरकर्ता अपने आप वधूमाताके कपाल पर सिन्दूर चढ़ाते और उसके मुखमें शक्कर छुआते हैं। गणकके विवाहका दिन स्थिर करने पर कन्याकर्ता वरको आदमी और सवारी भेज करके बुलाते और उसके आ जाने पर वरकन्या दोनोंको हलदी लगा करके नहलाते हैं। स्नानके स्थान पर जलपूर्ण ४ कलस रख करके चारो ओर सूतसे लपेट देते हैं। एक अविवाहित व्यक्ति चारों कलसोंसे एक एक करके जल निकाल दम्पतीके मस्तक पर छिड़कता है। स्नानके पीछे कन्या पचिया पहनती है। सम्प्रदानके समय वर किसी टोकरी पर खड़ा होता है। पुरोहित उसी समय धान्यसे उसको आशीर्वाद देता और कन्याके गलेमें मङ्गलसूत्र बांधता है। कन्याका पुष्पोत्सव होनेसे गर्भाधान संस्कार किया जाता है।

गवन्दी मृत्युके पीछे शवदाह करते हैं। तीसरे दिनको दाह स्थान पर पहुंच करके मृतके लिये पिण्डदान किया और पानीमें फेंक दिया जाता है।

गवन्दियोंमें विधवाविवाह और बहुविवाह चलता है। मारवाड़के गवन्दी अपनेको 'सागरचक्रवर्ती' बतलाते हैं। इनका कोई गोत्र वा उपाधि नहीं। फिर भी हटगुम, दहानापुर, कहानापुर, सिनामधागी और पाकुतरा पांच श्रेणी विभाग विद्यमान हैं। यह बीजापुरके गवन्दियोंमें अधिक मैले कुचैले और भ्रष्टाचार होते हैं। इनमें कोई मृतदेहको जलाता और कोई समाधि लगाता है। यह पुत्रादिके जन्म, ऋतुकाल और मृत्युको यथाक्रम १०, ४ और १० दिन अशौच ग्रहण करते हैं

गवय (सं० पु०) गोजातिका एक पशु। इसके गलेमें झालर नहीं होता है, नीलगाय। इसका नामान्तर गवाशुक, वनगो, बलभद्र और महागन्ध है। इसका मांस कर्कश और पुष्टिकर होता है।

२ रामचन्द्रजीकी सेनाका एक बन्दर। यह वैवस्वत हनुमानका पुत्र था। ३ एक छन्दका नाम। इसके प्रथम चरणमें १९ मात्राएं होती हैं और ११ मात्राओंपर विराम होता है। दूसरे चरणमें दोहा होता है।

गवयी (सं० स्त्री०) गवय-जाति ङीप्। गवयस्त्री, नीलगाय। इसका पर्याय वन धेनु, और गिल्लीगवी है।

गवर्नमेण्ट (अं०) १ राज्य, शासनपद्धति। २ शासकमण्डल।

गवर्नर (अं०) १ शासक, हाकीम। २ किसी प्रांतका राजा वा प्रजासे चुना हुवा हाकिम। ३ वह प्रधान शासक जो देशमें शासन करनेके लिये राजा वा मंत्रि-मंडलसे नियुक्त किये गये हों। ४ भारतमें किसी प्रेसिडेन्सीके प्रधान हाकिम जो गवर्नरजेनरलके अधीन रहते हैं। यह इङ्गलैंडके बादशाहका मन्त्रिमण्डल द्वारा नियत किये जाते हैं। भारतवर्षमें बम्बई, मद्रास, युक्तप्रदेश, आसाम, ब्रह्मा और बंगालमें गवर्नर रहते हैं। लाट।

गवरीदाद—बम्बई प्रदेशके काठियावाड़का एक छोटा राज्य। भूपरिमाण २७ वर्गमील तथा लोकसंख्या लगभग दो हजार है। राज्यकी आय २४१२६ रुपयेकी है। १६२१ रुपये वृटिश सरकार और जूनागढ़को कर देना पड़ता है।

गवर्नर जनरल (अं० पु०) राजा या मन्त्रिमण्डल द्वारा

नियुक्त किया हुआ सबसे बड़ा हाकिम। इनके अधीन कई एक गवर्नर और लफ्टेंट गवर्नर रहते हैं। इङ्गलैण्ड-के बादशाह गवर्नरोंको नियुक्ति स्वयं करते हैं। पर लफ्टेंट गवर्नर गवर्नर-जनरलसे नियुक्त होते हैं। गवर्नर जनरल एक कौंसिल या मन्त्रिमण्डल द्वारा शासन करते हैं, वाइस राय, बड़े लाट।

गवर्नरी (अ० स्त्री०) १ वह प्रान्त जहां पर गवर्नर शासन करता हो, प्रेसिडेन्सी। २ शासन, अधिकार।

गवराज (सं० पु०) गवेन शब्देन राजते राज अच। वृष, बैल, सांढ़।

गवल (सं० पु०) गव शब्द लाति ला क। वनमहिष, जङ्गली भैंसा, अरना। (रघुवंश० २।१६)

गवल (सं० क्लो०) गव ला क। महिषशृङ्ग, भैंसेका सींग।

गवलगण (सं०पु०) सञ्जयके पिता।

'सञ्जयो मुनिकल्पस्तु जज्ञे सूतो गवल्गणात्।' (भारत १।६३ अ०)

गवलो (सं० पु०) महिष, भैंसा।

गवहियां (हिं० पु०) अतिथि, मेहमान।

गवाक्ष (सं० पु०) गवामक्षीव। यद्वा गावः सूर्यकरा जलानि वा अश्नुवन्ति व्याप्नुवन्तीति अनेनेति। अक्ष घञ्। १ वातायन, झरोखा, छोटी खिड़की। इसका पर्याय वधु-दृगयन, जाल और जालक है। (कुमार)

२ वानरविशेष, वैवस्वतमनुका पुत्र, राम रावण युद्धमें यह रामचन्द्रजीके सेनापतिके पद पर नियुक्त किया गया था।

गवाक्षिका (सं० स्त्री०) अपराजिता।

गवाचित (सं० त्रि०) प्रणयन किया हुवा, रचना किया हुवा।

गवाक्षी (सं० पु०) गा भूमि अश्नोति अक्ष अण् गौरा दित्वात् ङीष्। १ गोडुम्बा, एक प्रकारकी ककड़ी या तरबुज। २ इन्द्रवारुणी, इन्द्रायण। इसका पर्याय—ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाची, गजचिर्भटा, मृगेर्वारु, पिटङ्कोटी, विशाला और मृगादनी है। ३ गावोटहस, महोराणपेड़। ४ अपराजिता। (रत्नमाला)

गवाची (सं० स्त्री०) गवि भूमौ अञ्चति। अन्चु क्विप् ङीप्। (अच्. स्त्रीयामव्य। पा ४।१।११) इति अपड़।

मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। यह अजीर्णकारक, गुरु, श्लेष्माका प्रकोपकर है।

गवादन (सं० क्लो०) गोभिरद्यते अद् कर्मणि ल्युट् अयन। तृण, घास।

गवादनी (सं० स्त्री०) गवादन गौरादित्वात् ङीप्। १ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण। २ नील अपराजिता। ३ एक तरह-का बरतन।

गवादि (सं० पु०) पाणिनीका एक गण। गो, हविस्, अक्षर, विष, वर्हिस्, अष्टका, सखदा, युग, मेधा, स्रुच, कूप, खद, दर, खर, असुर, अध्वन वेद, बीज और दीस, इन सभीको गवादि कहते हैं।

गवाधिका (सं० स्त्री०) गवा करणेन अधिकायति कै क टाप्। लाक्षा, लाह, लाख।

गवानृत (सं० क्लो०) गवि गोविषये अनृतम्। गोविषय-में मिथ्याकथन, गौके बारेमें झूठ बोलना। (स्मृति)

गवान महमूद—दक्षिणापथके बहमानी राजाओंके एक मन्त्री। १४६१ ई० ३ सितम्बरको नवाब हुमायूंके मरने पर उनके अष्टमवर्षीय पुत्र निजामशाह राजपद पर अभिषिक्त हुए। उनकी मांने इनको विश्वस्त और विच-क्षण देख करके मन्त्री बना लिया। १४६३ ई०को निजामशाहके मर जाने पर उनके भाई मुहम्मद राजा हुए। उन्होंने भी गवानको ही मन्त्री बनाया था। १४८१ ई०को निजाम-उल मुल्क भैरो नामक किसी व्यक्तिने षड़यन्त्र करके राजासे उनको विश्वासघातक-जैसा बत लाया और राजाने भी विश्वास करके उनके प्राणवधका आदेश दिया इन्हींके मृत्युसे बहमानी राज्यका अधः-पतन होने लगा।

गवामयन (स० क्लो०) दशमास या द्वादश मासमें साध्य एक यज्ञ। ताण्ड्यब्राह्मणमें इसका विषय ऐसा लिखा हुआ है—पूर्वकालको कई एक वन्य पशुओंने मिल करके संवत्सर पर्यन्त किसी यज्ञका अनुष्ठान किया था। फिर दूसरोंके भी अनुष्ठान करनेसे इस यज्ञका नाम गवामयन पड़ गया। वन्य पशुका साधारण नाम गो है। जो यज्ञ करने लगे, दशमास पर्यन्त अनुष्ठान होने पर उनमें कुछ गोपायोंके सींग निकल पड़े। उन्होंने परस्पर कहना आरम्भ किया कि यज्ञके फलसे यह सम्वर्द्धिगामी बने और

उनको शृङ्ग भी उठे थे। उससे यज्ञकी कोई आवश्यकता न रही, उसके समापन करनेको सम्मति हुई। उनके १० मासमें फल लाभ करनेसे ही यह यज्ञ दश मास साध्य हुआ है। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।१) यज्ञ करनेवाले पशुओंमें जो फल लाभ कर न सके, कहने लगे—हम लोग संवत्सरके अवशिष्ट और दो मास अनुष्ठान करके प्रारब्ध यागका समापन करेंगे। संवत्सर यज्ञका अनुष्ठान करनेसे उनको भी शृङ्ग उठे थे। किसीके मतमें शृङ्ग आनेके बाद अश्रद्धासे यज्ञ करने पर फिर गिर पड़े। यज्ञके फलसे उन सबको ऋतुसुलभ आहारीय द्रव्य मिला था। मालूम पड़ता है कि उसी समयसे उनके घास खानेकी व्यवस्था हुई। इसीसे शृङ्गहीन पशु सभी ऋतुओंमें हृष्टपुष्ट रहते और विचरण किया करते हैं। किन्तु शृङ्गयुक्त महिष प्रभृति पशु शीत तथा धूपके प्राबल्यसे क्षश पड़ जाते हैं। (ताण्ड्यब्राह्मण ४।१।२) उनके द्वादश मास अनुष्ठान करके फल पानेसे यह यज्ञ द्वादश मास साध्य हुआ है। भाष्यकारके मतमें—ज्योतिष्टोम तथा दर्शपूर्णमासादि यज्ञके विधान स्थलमें किसी प्रकारके फलका उल्लेख न रहते भी जिस प्रकार स्वर्ग मिला करता, वैसे ही गवामयनमें भी किसी फलका उल्लेख न रहनेसे स्वर्ग लाभ ही फल ठहरता है। किन्तु इसके पीछे समृद्धिप्राप्तिकी कथा रहनेसे इस यज्ञका फल स्वर्गलाभ नहीं, समृद्धिप्राप्ति ही है। तैत्तिरीयक ब्राह्मणमें गवामयन यागका फल म्‌ट अन्नदोंमें समृद्धि लाभ लिखा हुआ है।

चैत्रमासीय शुक्लपक्षका एकादशी तिथिको इस यज्ञकी दीक्षा लेनी पड़ती है। चैत्रमास संवत्सरके चक्षु जैसा सर्वप्रथम अवयव है इसलिये उसीमें यज्ञकी दीक्षाका विधान बंधा है। सभी यज्ञोंमें १२ दीक्षाएं होती हैं। शुक्लपक्षीय एकादशीको प्रथम दीक्षा होनेसे कृष्णपक्षीय सप्तमी पर्यन्त द्वादश रात्रियोंमें बारहो दीक्षाएं पूरी पड़ जाती हैं। कृष्णपक्षकी अष्टमीको एकाष्टका कहते हैं। उसमें राजक्रय हो सकता है। उसदिनकी प्रातःकाल ही प्रायणीय प्रभृति दो यज्ञके अवयवोंका अनुष्ठान करना पड़ता है। सिवा इसके दूसरा भी फल है शुक्लपक्षीय एकादशीको दीक्षा मिलनेसे सोमयाग पूर्वपक्षमें ही समाप्त हो जाता है। फिर सभी यज्ञोंसे दीक्षाके पीछे द्वादश अनुष्ठेय उपसद रहते हैं। ऐसे स्थल पर द्वादश दीक्षाओंके पीछे कृष्णपक्षीय अष्टमीसे शुक्लपक्षको चतुर्थी तक १२ दिनमें द्वादश उपसद शेष हो जाते और शुक्लपक्षीय पञ्चमीको प्रथम अतिरात्रका अनुष्ठान लगाते हैं। इस प्रकारसे ३० दिनको पूर्वपक्षमें ही मास समाप्त होता है। यथाविधान द्वादश मास पर्यन्त याग करके कृष्णपक्षमें ही उसको समापन करते और यज्ञस्थलसे उठते हैं। इसके पीछे यजमानका पशु धान्य आदि बढ़ने लगता और उसका वाक्य भी कल्याणजनक निकलता है। गवामयन यज्ञके फलसे अल्पकालमें ही यज्ञकारी विपुल समृद्धिशाली हो जाता है। (ताण्ड्यब्राह्मण ५।९।१४)

गवांना (हिं० क्रि०) नष्ट करना, खोना।

गवामृत (सं० क्ली०) गोरमृतमिव अवडादेशः। गोदुग्ध, गायका दूध।

गवाम्पति (सं० पु०) गवां पतिः अलुक्समासः। वृषभ, सांड़, बैल।

'मिं हैनेव गवापतिम्।' (भारत ३।१९ अ०)

२ गोपालक, ग्वाला। ३ गोस्वामी, गौके मालिक। ४ रुद्र। ५ किरणप त. सूर्य और अग्नि प्रभृति।

(भारत ४।२२० अ०)

गवार (फा० पु०) १ जो मुसलमान जातिके नहीं हो, साधारणतः अग्नि उपासक पारसी जाति। २ पहले काबुलअञ्चलमें गवार नामकी एक जाति रहती थी। बाबरके समयमें उसको अकार्य्यवार कहलाती थी यह जाति अब कहीं नहीं देखी जाती है।

गवारा (फा० वि०) १ मनभाता, अनुकूल, पसंद। २ सह्य, अंगीकार।

गवालीक (सं० पु०) जैन शास्त्रानुसार वह मिथ्याभाषण जो गो आदि चौपायोंके लिये किया जाय।

गवालूक (सं० पु०) गवाय शब्दाय अलति अल-बाहुलकात् उकञ्। गवय, बैल इत्यादि।

गवाविक (सं० क्ली०) गौश्च अविश्च। (गवाश्वप्रभृतीनि च पा २।४।११) द्वन्द्वः समाहारः। गोमेषका समाहार, मवेशी और भेड़ाका झुंड।

गवाशन (सं० पु०) गामश्नाति अश भोजने ल्यु। गोभक्षक, मूची, चमार।

गवाशिरा (सं० त्रि०) गोभिः क्षीरैः उदकैर्वा आशिर मिश्रित । क्षीरमिश्रित या उदक मिश्रित, दूध या पानी मिला हुआ। (ऋग्वे ८।११२।१)

गवाश्व (सं० क्ली०) गौश्च अश्वश्च तयो समाहार अवडा देश । गो अश्वका समाहार, गाय और घोड़े का समूह ।

गवाश्वादि (सं० क्ली०) पाणिनीय गणपाठोक्त समाहार-द्वन्द्वनिमित्तक शब्दसमूह । यथा—गवाश्व, गवाविक, गवैडक, अजाविक, अजैडक, कुब्जवामन, कुब्जकिरात, पुत्रपौत्र, श्वचण्डाल, स्त्रीकुमार, दासीमाणवक, शाटीपटीर, शाटीप्रच्छद, शाटीपट्टि, उष्ट्रखर, उष्ट्रशश, मूत्रपुरीष, यकृन्मेद, मांसशोणित, दर्भशर, दर्भपूतीक, अर्जुनशिरीष तृणोपल, दासीदास, कुटीकुट, भागवतीभागवत ।

(गवाश्व गौण यथाश्वादितानि साधूनि। सिद्धान्तकौमु०)

गवाषिका (सं० स्त्री०) लाक्षा, लाह ।

गवाश (सं० पु०) गोनाशक, कसाई, हत्यारा ।

गवाह (फा० पु०) वह मनुष्य जिसने किसी घटनाको साक्षात् देखा हो, साक्षी, साखी ।

गवाह्निक (सं० क्ली०) अह्निभव दिनभोजनाय पर्याप्त अहन् ढक् आह्निकम्, गो आह्निकम् ६-तत् । गौके एक दिनके भोजन निमित्त पर्याप्त घासादि, मवेशीका एक दिनका चारा ।

जो मनुष्य पापासक्ति परिहारपूर्वक एक मास गवाह्निक प्रदान तथा एकभक्तव्रत करता है, उसका धर्म दिनोदिन बढ़ता जाता है। (भारत १३।१२२ अ०)

गवाही (फा० स्त्री०) किसी ऐसे मनुष्यका कथन जिसने साक्षात् घटना देखी हो, साक्ष्य, साक्षीका प्रमाण ।

गविजात (सं० पु०) गवि गोनामिकायां पुलस्त्यभार्यायां जात अलुक्समास । १ ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम ।

"तत्र सप्तो वसवः कश्चित् ऋष्यागमाः ।
मनुपम समीदत्वो गविजात इमवन् मुनि ॥"
(भारत १३।५१ अ०)

२ वैश्रवण, ये भी पुलस्त्यकी गोनाम्नी भार्यासे उत्पन्न हैं ।

"पुलस्त्यो नाम तस्यासीन्मानसोदयित सुत ।
गवि गोत्र यायां भार्यायां ॥" (भारत शान्तिपर्व ३३८० अ०)

गविन (सं० पु०) कोषक नामक मृगविशेष, एक प्रकारका हिरन ।

गविनी (सं० स्त्री०) गवां समूह खलादि इनि ङीप् । गो समूह, गायका झुण्ड ।

गविपुत्र (पु०) वैश्रवण, ये पुलस्त्यकी गोनाम्नी भार्याके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं ।

गविष् (सं० त्रि०) गा स्तुतिवाचमिच्छति इष्-क्विप् । स्तोत्रादि वाक्य इच्छा ।

'गविष स्तुतिवाचमिच्छत मम ।' (सायण)

गविष (सं० त्रि०) गामिच्छति इष क । गौके प्रति इच्छा विशिष्ट, जो गाय पालनेकी इच्छा करता हो । (सायण)

गविष्टि (सं० त्रि०) इष क्तिन । गवामिष्टिरन्वेषोऽस्ति अस्य । गौका अन्वेषण करनेवाला, मवेशीका खोजने वाला । (ऋक् ५।६१।१५)

गविष्ठ (सं० त्रि०) गवि स्वर्गे भूमौ वा तिष्ठति स्था क अलुक् स० । १ स्वर्ग स्थित । २ भूमिस्थित ।

"यत्र सैषो दिव यथाह गविष्ठो वा गतक्लमः ।" (भागवत ३।११।१६)

(पु०) ३ दैत्यविशेष, एक असुरका नाम ।

"गविष्ठश्च वनायुश्च दीर्घजिह्वश्च दानव ।" (भारत १।६५ अ०)

गविष्ठिर (सं० पु०) गवि वाचि च स्थिर यत्व अलुक् समास । १ गोत्र प्रवर्त्तक एक ऋषिका नाम ।

(ऋक् ५।१।१२)

गवी (सं० स्त्री) गो ङीष् । गाभि, गो, गाय ।

गवीधुका (सं० स्त्री०) गवेधुका पृषोदरादित्वात् साधु । धान्यविशेष, एक प्रकारका धान । (तैत्तिरीय ५।४।३।२)

गवीश (सं० पु०) गवामीश । १ गोस्वामी । २ विष्णु । ३ वृष, साँढ़ ।

गवीश्वर (सं० पु०) गवामीश्वर, ६-तत् । गोस्वामी । इस का पर्याय—गोमान् और गोमी है ।

गवेङ्गित (सं० क्ली०) गवामिङ्गितम्, अवङादेश या गोगणकी शुभाशुभसूचक एक चेष्टा । बृहत्संहिता में कहा है—गायोंके दीन भावापन्न होनेसे राजाओंका अमङ्गल, पाद द्वारा भूमि कुट्टन करनेसे रोग, चक्षु अश्रुपूर्ण होनेसे स्वामीका मृत्यु, और भीत हो करके शब्द करनेसे तस्करोंका मृत्यु होता है । यदि गोगण अकारण वैसा ही शब्द करता, तो अनर्थ पड़ता और रात्रिको वैसी ही दशा रहनेसे अमङ्गल बढ़ता है । फिर गोगणके मक्षिकाओं द्वारा व्याप्त अथवा कुक्कुरों द्वारा वेष्टित होनेसे शीघ्र ही

दृष्टि पड़ती है। घर आते आते गायोंके हम्बारव करने (रांभने) से गोष्ठ बढ़ता और आर्द्र देह, हृष्ट अथवा रोमाञ्चित होनेसे गोसकल मङ्गल प्रदान करता है। (वृहत्संहिता ८२ अ०)

गवेडु (सं० स्त्री०) गवे दीयते दा मृगव्यादित्वात्-कु पृषोदरात् दस्य डः अलुक् समासः। धान्य भेद, एक प्रकारका धान।

गवेड़ुका (सं० स्त्री०) गवेड़ु देखो।

गवेधु (सं० स्त्री०) गवे धीयते धा कु अलुक्समासः। धान्यविशेष, कसेई धान (भावप्रकाश)

गवेधुक (सं० पु०) गवेधु-कन्। १ सर्पविशेष, साँप जातिका एक जन्तु। (क्ली०) २ गैरिक, गेरू मट्टी। ३ तृणधान्यविशेष, गाडर धान।

गवेधुका (सं० स्त्री०) गवेधु-कन्-टाप्। तृण धान्यविशेष, गवेड। (विष्णुपु० १।६५०) इसका पर्याय—गवेड़ु, गवेधु, गवेड़ुका, क्षुद्रा, गोजिह्वा, गुन्द्रा, गुल्म, नागबला, गार्ङ्गरुकी, भाषा, ह्रस्वगवेधुका खरवल्लरिका, विश्ववेदा और गोरक्षतण्डुली है।

गवेधू (सं० स्त्री०) गवेधुका देखो।

गवेन्द्र (सं० पु०) गोरिन्द्र इव नित्य-अवङ्। १ श्रेष्ठ गौ, बढ़िया बैल। २ गौकी स्वामी।

गवेरिक (सं० क्ली०) गैरिक, एक प्रकारकी लाल मट्टी।

गवेरुक (सं० क्ली०) गां भूमिं ईर्ते उत्पत्तये प्राप्नोति ईर उकञ्। गैरिक, गेरू मट्टी।

गवेल (हिं० वि०) गंवार, देहाती।

गवेलगढ़—वरार अञ्चलका एक ग्राम। १८०३ ई०को इस ग्रामके निकटस्थ आरगाँव नगरमें अंगरेज सेनापति जेनेरल वेलेस्लीने नागपुरके राजा भोंसलाके सेनापति वेङ्काजीको परास्त किया था। इसीसे अंगरेज सेनापति ष्टिभिनसनने गवेलगढ़को अपने अधिकारमें कर लिया।

गवेश (सं० पु०) गवामीशः। १ गोस्वामी, गोरक्षक।

गवेशका (सं० स्त्री०) गवेश संज्ञायां कन्-टाप्। वृक्षविशेष, गोरक्षीका पेड़।

गवेष (सं० त्रि०) गवेष अन्वेषणे अच्। अन्वेषण, खोज, तलाश।

गवेषण (सं० त्रि०) इष् कर्तरि ल्यु, गौरिषणः, ६-तत्। १ गोका अन्वेषण करनेवाला। २ जलान्वेषणकारी, जलकी खोज करनेवाला। ३ अन्वेषणकर्ता, तलाश करनेवाला। (ऋक् १।१३२।३)

(पु०) ४ चित्रकके एक पुत्रका नाम। (हरिवंश ३४ अ०)

गवेषणा (सं० स्त्री०) गवेष-भाव युच्-टाप्। १ अन्वेषण, खोज। २ गो अथवा जलकी तलाश।

गवेषणीय (सं० त्रि०) गवेष-अनीयर्। अन्वेषणके योग्य, तलाश करने लायक।

गवेषित (सं० त्रि०) गवेष-क्त। अन्वेषण, खोज किया हुआ।

गवेषिन् (सं० त्रि०) गवेष-णिनि। अन्वेषणकर्त्ता, खोज करनेवाला। (भारत ३।१४२ अ०)

गवेष्ठिन् (सं० पु०) दैत्यविशेष, एक राक्षसका नाम।
"अष्टकर्णो विरोधश्च गवेष्ठी दुन्दुभिस्तथा।" (हरिवंश ३ अ०)

गवैडक (सं० क्ली०) गौश्च एडकश्च। गौ और मेष, गाय और भेड़।

गवैया (हिं० वि०) गायक, गानेवाला।

गवैहाँ (हिं० वि०) ग्रामीण, गांवका रहनेवाला, देहाती।

गवोद्घ (सं० पु०) प्रशस्तो गौः। प्रशस्त गौ, बढ़िया मवेशी।

गव्य (सं० त्रि०) गोरिदं गोर्विकारो वा यत्। (गोपयसोर्यत्। पा ४।३।१६०) गोसे उत्पन्न, जो गायसे प्राप्त हों, जैसे दूध, दही, घी, गोवर, गोमूत्र आदि। (मनु ३।०१)

२ गायका हितकर। ३ गायका झुंड। ४ रागद्रव्य। ५ पंचगव्य। ६ ज्या, धनुषकी डोरी।

गव्यघृत (सं० क्ली०) गायका घी।

गव्यतक्र (सं० क्ली०) गायका मठा।

गव्यदधि (सं० क्ली०) गायका दही। इसका गुण—अति पवित्र, शीतल, स्निग्ध, दीपन, बल्य, मधुर, अरोचकघ्न और वातरोगनाशक है।

गव्यनवनीत (सं० क्ली०) गायका मक्खन, पनीर।

गव्यमांस (सं० क्ली०) गोमांस।

गव्ययी (सं० स्त्री०) गोरिदं बाहुलकात् अयट् युडागमश्च। त्वक् प्रभृति, चमड़ा इत्यादि। (ऋक् ८।७०।७)

गव्ययु (स० त्रि०) गामिच्छति गो क्यच् उण यादा वेदे-दीर्घयलोपाभावो। जो गाय लेनेकी इच्छा करता हो।

गव्या (स० स्त्री०) गवां समूहः। गो समूह, गायका झुंड। २ धनुषका गुण, धनुषकी डोरी। ३ गव्यूति, दो कोस। ४ गोरचना।

गव्यु (स० त्रि०) गामिच्छति, इष क्यच् उण्। जो गो ग्रहण करनेकी इच्छा करता हो।

गव्यूत (स० क्लो०) गव्यूति पृषोदरादित्वात् अवडादेश। १ एक कोस। २ दो कोस।

गव्यूति (स० स्त्री०) गोर्यु ति। १ दो हजार धनुषकी दूरी। २ दो कोस। इसका पर्याय— क्रोशयुग, गव्यूत, गोरुत, गोमत, वाचस्पति और गव्या है।

गश (अ० पु०) मूर्च्छा, बेहोशी।

गशी (अ० स्त्री०) बेहोशी।

गश्त (फा० पु०) १ टहलना, घूमना, दौरा, चक्कर। २ पुलीसका चक्कर, रौंद, दौरा। ३ एक प्रकारका नृत्य जिसमें नाचनेवाली वेश्यायें बरातके आगे नाचती हुई चलती हैं।

गश्त सलामी (फा० स्त्री०) भेट या उपहार जो हाकिम को दौरा समय मिला करता है।

गश्ती (फा० वि०) भ्रमण करनेवाला, घूमनेवाला।

गसना (हि० क्रि०) १ जकड़ना, गाँठना। २ कपड़ा बुनावटमें बानेको कसना।

गसीला (हि० वि०) जकड़ा हुआ, गुथा हुआ, गफ।

गस्सा (हि० पु०) ग्रास, कौर।

गह डिल (हि० वि०) गदला, मटमैला।

गहगहाना (अ० क्रि०) १ चाहसे भरना, लालसासे पूर्ण होना, ललकना। २ उमगसे भरना।

गहकोड़ा (हि० पु०) गाहक, खरीदार।

गहगड्ड (स० वि०) गहरा, भारी, घोर।

गहगह (हि० वि०) प्रफुल्लित, प्रसन्नतापूर्ण, आनन्दसे भरा हुआ।

गहगहा (हि० वि०) गहगह देखो।

गहगहाना (अ० क्रि०) १ आनन्दमें मग्न होना, बहुत प्रसन्न होना। २ फसल वाटिका बहुत अच्छो तरह तैयार होना, लहलहाना।

गहड़वार—युक्तप्रदेशवासी राजपूतोंकी एक शाखा। डेरा-मङ्गलपुर, बिठूर, जाजमऊ, कन्नौज, बिल्हौर, इसलाम-गञ्ज, वर्देलखण्ड, गोरखपुर, कटिहर, बनारस तहसील, गाजीपुरके पश्चोतर तथा मझगच, खैरागढ़, कान्तित आदि स्थानोंमें इनका वास अधिक है।

इस जातिके सम्बन्धमें कोई वंशगत इतिहास नहीं मिलता, फिर भी आजकलके गहड़वार अपनेको कन्नौजका पूर्वतन राजवंशी जैसा बतलाते हैं। राजपूत इतिहासमें भी यह ३६ राजवंशोंके अन्तभुक्त है। किसीके मतमें गहड़ वारोंसे ही राठौर वंशकी सृष्टि है। केवल बिसौर और गोरखपुरके गहड़वारोंको छोड़ करके और कोई राठौरवंशमें दान ग्रहण नहीं करता। राठौर और राजपूत देखो।

हादी कतुल अकालीम नामक फारसीकी एक 'कताब-में लिखा है कि वह वाराणसीसे (१११५ ई०) कान्तिमें जा करके बसे थे। किसी दूसरे ऐतिहासिकके कथनानु-सार राठौरवंशीय जयचन्द्रके भतीजे गहनदेवने १२वीं शताब्दीके शेष भागकी काश्मीरसे जा भरपत्तोंको गङ्गाके उपकूलसे निकाल दिया और अपने वंशको गहड़वार नामसे आख्यात करके कान्तिमें राज्यस्थापन किया। साधारणतः काशीधाम ही गहड़वारोंका आदिनामस्थान-जैसा निरूपित हुआ है। उपर्युक्त दोनों लेखकोंके मत में गहड़वारोंने एक ही समय स्वदेश परित्याग और कान्ति-में जा करके निवास किया था। सुतरां काश्मीर शब्द सम्भवत भ्रमसे 'काशी' के बदले लग गया होगा। गोरख-पुरमें इस जातिकी उत्पत्तिके और भी दो प्रवाद प्रचलित हैं। पहला यह कि वह नलराजके वंशसम्भूत हैं और ग्वालियरके निकटवर्ती नरवर नामक स्थानसे काशीमें जा करके बसे हैं। दूसरा यह कि काशीराज बसन्तदेवने मगधराज कर्तृक ताड़ित होने पर स्वराज परित्याग पूर्वक काश्मीरराज त्रिपुरके अधीन कर्मग्रहण किया, पीछे स्वीय प्रभुके विरुद्ध लोगोंको उभाड़ करके काश्मीर राज्यके अधीश्वर बन बैठे। उनके वंशधरोंके १२१ पीढ़ी राज्य करने पर ईरान तुर्किस्तान और रूम देशाधिपतिने काश्मीर पर आक्रमण किया था। वहांसे यवनकर्तृक ताड़ित होने पर बसन्तदेवके वंशधर कन्नौज भाग आये और वहां जयचन्द पर्यन्त ५० पुरुष राजत्व रहा। राजा

बलदेवके तृतीय पुत्र राजा बनार गहड़वार सामन्तोंके आदिपुरुष थे। किसीके मतमें 'बनार' से ही काशीका नाम बनारस पड़ा है। ११६१ संवत्को प्रदत्त जो शासनलिपि बसाहीसे प्राप्त हुई है, पढ़नेसे समझ पड़ता है कि वस्तुतः कन्नौजके राठौरराज जयचन्द्रसे ऊर्ध्वतन पञ्चम पुरुषके चन्द्रदेव और महीपाल आदि कन्नौजके राजा गहड़वार वंशीय रहे। कन्नौज देखो।

चन्द्रदेवके पिता महीपाल बङ्गाल, विहार और काशीके राजा होते हुए भी बौद्धमतावलम्बी थे। शिलालिपि-पाठसे विदित होता कि उनके राजत्वकालको कन्नौजका आधिपत्य कलचुरि राजाओंके हाथमें रहा। महीपालके कनिष्ठ पुत्र चन्द्रदेवने कलचुरिराज कर्णके निकटसे बन्धुताका चिह्नस्वरूप कन्नौज पाया था। हिन्दू धर्मपर चन्द्रदेवकी बड़ी आस्था रही। अपने आत्मीय होते हुए भी उन्होंने विहार और काशीके पालवंशीय बौद्धराजाओंका संस्रव एककाल ही यहां तक परित्याग किया कि उनका वंशगत 'पाल' उपाधि छोड़ करके 'चन्द्र' उपाधि ले लिया था। यही चन्द्रदेव कन्नौज राठौरके राजवंशके प्रथम राजा रहे। फिर विहार और काशीके गहड़वारोंने पाल और कन्नौजके राठौरोंने चन्द्र उपाधि ग्रहण किया। एतद्भिन्न बुंदेलखण्डके बुंदेला भी उसी वंशसम्भूत हैं।

गहड़वारोंके कन्नौजका होने पर और भी एक प्रमाण मिलता है। गौतमगोत्रीय राजपूतोंका कहना है कि उन्हें कन्नौजवाले गहड़वार राजाओंके अनुग्रहसे अपने रहनेको निम्न दोआबका अधिकार मिला था।

हबीब-उज-सैर, ताल-अल मुतस्सर, तबकात अकबरी, फरिश्ता आदि ग्रन्थोंमें लिखा है कि महमूद गजनवीने कन्नौजके राजा गौड़को आक्रमण किया था। जब वह कन्नौजके अभिमुख पहुंचे, जयपाल राजा थे। अतएव स्पष्ट ही समझ पड़ता है कि मुसलमान इतिहासवेत्ताओंने भ्रममें पड़ गहड़वार जातिके बदले गौड़ जातिका उल्लेख कर दिया होगा।

१७५८ ई०को गहड़वार सामन्तोंने गौतम भूमिहारोंके अत्याचारसे उत्यक्त और काशीसे ताड़ित होने पर अङ्गरेजोंके अधीन आश्रय लिया। आजकलके यह मिर्जापुरके पश्चिम विजयपुरमें गवर्नमेण्टकी वदान्यता पर राजसम्मानसे वास करते हैं।

गहन (सं० क्ली०) १ वन, जंगल। २ गंभीर, गहरा। ३ दुःख, तकलीफ। (त्रि०) ४ कठिन, कड़ा। ५ दुर्गम, घना। ६ निविड़, घना। ७ दुष्प्रवेश। (पु०) ८ विष्णुपरमेश्वर। (विष्णुसं०) ९ जल, पानी। १० गहराई, थाह।

गहना (सं० स्त्री०) १ आभूषण, जेवर। (हिं० पु०) २ रेहन, बंधक। ३ खेतकी घास निकालनेका गहन नामक यन्त्र (हिं० क्रि०) ४ पकड़ना, धरना।

गहनि (हिं० स्त्री०) टेक, जिद, हठ।

गहनी (हिं० स्त्री०) पशुओंका एक रोग जिसमें उनके दाँत हिलने लगते हैं।

गह्वर (सं० त्रि०) १ दुर्गम, विषम। २ व्याकुल, उद्विग्न। ३ किसी ध्यानमें मग्न या बेसुध।

गहर (फा० स्त्री०) देर, विलम्ब।

गहरना (हिं० क्रि०) देर लगाना।

गहरवार (पु०) एक क्षत्रियवंश। गोरखपुर और गाजीपुरसे कन्नौज पर्यन्त इस वंशके मनुष्य पाये जाते हैं। ये अपना पूर्व वास काशी बतलाते हैं। कन्नौजके राजा चन्द्रदेव और महीपाल राजा भी गहरवार वंशकेही थे। बुंदेलखण्डके बुन्देले क्षत्रिय भी अपनेको गहरवार वंशोद्भव बतलाते हैं।

गहरा (हिं० वि०) १ जिसमें जमीन बहुत नीचे जा कर पाई जाय, गंभीर। २ जो पृथ्वीके तलसे भीतर बहुत दूर तक चला गया हो। ३ प्रचण्ड, बहुत अधिक, ज्यादा, भारी। ४ दृढ़, मजबूत, भारी। ५ गाढ़ा, जो हलका या पतला न हो।

गहराई (हिं० स्त्री०) गहराका भाव, गंभीरपन।

गहराना (हिं० क्रि०) गहरा करना।

गहराव (हिं० पु०) गहराई।

गहरु (हिं० स्त्री०) देर, विलंब।

गहरे (हिं० क्रि० वि०) अच्छी तरह, खूब, यथेच्छ।

गहरेबाजी (हिं० स्त्री०) इक्केके घोड़ेकी बहुत जोरकी कदम चाल।

गहलोत—राजपूतोंकी एक शाखा। वर्तमान सिसोदिया और अहेरिया राजपूत इनकी विभिन्न शाखा है। सिसोदिया जैसा अपना परिचय देते भी इनकी गहलोत आख्या दूर

नहीं हुई है। भोंगी परगने, खांपुर, निजामाबाद, बिल्होर, विठूर, रसूलाबाद, मैयदाबाद, तिरुआ, रामिया, हाथरस, शाहपुर, जलेश्वर और बुलन्दशहरमें यह अधिक रहते हैं।

बुलन्दशहरवासी गहलोतोंमें ऐसा प्रवाद है कि सम्राट् अकबरने चित्तौर आक्रमण करनेके पीछे राजा खोमानके राजत्वकालको वह दसनाके निकटवर्ती टेहडा और धामना नामक स्थानोंमें जा करके बसे। किन्तु वास्तविक यह बात ठीक नहीं है। कारण, आईन अकबरी पढ़नेसे समझ पड़ता है कि सम्राट् अकबरके समय गहलोतवंशीय दसनाके जमींदार थे। युक्तिसिद्ध और सम्भवपर जैसा यही विदित होता है कि सम्राट् अलाउद्दीन खिलजीके चित्तौर आक्रमण अथवा खोमानके राजत्वकालको मामूके आक्रमण पीछे वह दसनामें जा करके रहे। खोमान देखो।

कोई कोई कहता है कि वर्तमान गहलोतोंके किसी पूर्वपुरुष गोविंदरावने दिल्लीपति पृथ्वीराजकी बहनको व्याहा और वह उनके अन्तरङ्ग मित्र तथा युद्धविग्रहमें सहकारी थे। कवि चन्द्र बरदाईने अपने पृथ्वीराज रासो काव्यमें लिखा है कि गोहिलवंशीय सामन्त गोविन्दराव चौहान राजपूत पृथुके सहकारी रहे। उन्होंने इस जातिको सखा और वीर जैसा कहा है। सम्भवतः सस्कृत गोभिल गोत्र शब्दका अपभ्रंश होते होते हिन्दीमें 'गहलोत' बन गया है। किन्तु मेवाड़में सर्वत्र इस जातिके उत्पत्ति सम्बन्धका निम्नलिखित प्रवाद यथार्थ जैसा माना जाता है—मेवाड़ राणाके जब पूर्वपुरुष गुजरातसे ताड़ित हुए, पुष्पवती नामक किसी राजमहिषीने मलय पर्वतके ब्राह्मणी के निकट जा करके आश्रय लिया और अनतिकाल पीछे ही एक पुत्ररत्न प्रसव किया और पर्वतकी गुहामें जन्म होनेसे उसका नाम गहलोत अर्थात् गहरोत्पन्न रख दिया। उदयपुरके वर्तमान राणा इन्हीं गहलोतोंके वंशधर हैं।

गहवा (हि० पु०) सड़सी।

गहवारा (हि० पु०) झूला कि डोला।

गहाइ (हि० स्त्री०) ग्रहण करनेका भाव, पकड़।

गहागड्ड (हि० वि०) गहगड्ड देखो।

गहागह (क्रि० वि०) गहगह देखो।

गहादि (स० स्त्री०) छ प्रत्यय निमित्तक पाणिनीय गण विशेष। (पाणिनिभाष्य ।४।२।१३८।) गह, अन्तस्थ, सम, विषम, उत्तम, अङ्ग, वङ्ग, मगध, पूर्वपक्ष, अपरपक्ष, अधमशाख, उत्तमशाख, एकशाख, समानशाख, समानग्राम, एकग्राम, एकवृक्ष, एकपलाश, इष्वग्र, इष्वनीक, अवस्यन्दन, कामप्रस्थ, खाडायन, काठेरणि, लावेरणि, सौमित्रि, शैशिरि, आसुत, दैवशर्मि, श्रौति, आहिंसि, आमित्रि, व्याडि, वैजि, आध्यश्वि, आनृशंसि, शौङ्गि, आग्निशर्मि, भौजि, वाराटकि, वाल्मीकि, क्षैमवृद्धि, आश्वत्थि, औद्गाहमानि, ऐकबिन्दवि, दन्ताग्र, हंस, तन्त्वग्र, उत्तर और अनन्तर, इन्हींको गहादि कहते हैं। ये आकृतिगणके हैं।

गहिरदेव (स० पु०) काशीके एक राजाका पुत्र। इन्हें गहरवार अपना पूर्वपुरुष मानते हैं।

गहिराव (हि० पु०) गहराव देखो।

गहिरो (हि० वि०) गहरा देखो।

गहिला (हि० वि०) पागल, उन्मत्त।

गहीला (हि० वि०) १ गर्वयुक्त, अभिमानी। २ मदोन्मत्त, पागल।

गहु (हि० स्त्री०) छोटा रास्ता, गली।

गहुआ (हि० पु०) छोटा मुंहवाला, एक प्रकारकी सड़सी। इसके द्वारा लोहार अग्निसे तप्त लोह बाहर निकालता है।

गहरी (हि० स्त्री०) किसी दूसरेकी चीजको हिफ़ाजतसे रखनेकी मजदूरी।

गहेजुआ (हि० पु०) छुछुंदर।

गहेमरा (हि० वि०) १ पागल। २ मूर्ख, अज्ञानी गर्वार।

गहेला (हि० वि०) १ हठी, जिद्दी। २ अहंकारी, घमण्डी, मानी। ३ पागल। ४ मूर्ख, अनजान।

गहैया (हि० वि०) १ पकड़नेवाला। २ अङ्गीकार करनेवाला, स्वीकार करनेवाला।

गहोई—वैश्य जातिभेद। यह बुन्देलखण्डके बड़े बड़े नगरोंमें व्यापारादि करते हैं। पिण्डारियोंके आक्रमणसे उत्पन्न हो गहोई गुप्तमण्डलमें भी आ बसे हैं। यह शब्द 'गुह्य' का अपभ्रंश है। इनमें १२ गोत्र होते हैं।

गह्व (सं० क्लो०) गह्व वाहुलकात् भावे कर्मणि वा वः। १ गाम्भीर्य। २ गहिरा। (त्रि०) ३ गह्वरयुक्त।
गह्वर (सं० क्लो०) गाह्यते गाह्व विलोडने। १ गर्त, विल। २ गिरिगुहा, पहाड़की कंदरा।
"गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश।" (रघु० २।२६)
३ दम्भ, पाखण्ड। ४ वन। ५ रोदन, रोना। ६ निगमस्थान। ७ वह वाक्य जिसके बहुत अर्थ हो सकते। (पु०) ८ निकुंज, लतागृह। ९ जल १० गुप्तस्थान। ११ भाड़ो। १२ दुर्गम।
गह्वरा (सं० स्त्री०) विडगज, वायविडंग।
गह्वरो (सं० स्त्री०) गुहा, कंदरा, गुफा। (हरिवंश)
गह्वरित (सं० त्रि०) गह्वरं जातमस्य इतच। १ गुप्त। २ क्षुब्ध, निस्तब्ध।
गह्वरेष्ट (सं० त्रि०) गह्वरे तिष्ठति स्था-क। जो गुफामें छिप गया हो।
गा (सं० स्त्री०) १ गीत। २ शरीर, देह।
गाँकर (हिं० स्त्री०) १ अङ्गाकड़ी, लट्टी। २ अहरको लिट्टी।
गांछना (हिं० पु०) गाँथना, गूंथना।
गांज (फा० पु०) १ राशि, ढेर। २ लकड़ीका ढेर।
गाँजना (हिं० क्रि०) १ राशि लगाना। २ घास या लकड़ी तले ऊपर रखना।
गाँजा—एक पौदा और उसका फूल। (Cannabis Sativa, Cannabis Indica) इसको अंगरेजीमें Hemp, फरासीसीमें Chanvre, जर्मनमें Hanf, इटालीमें Canape, रूसीमें Conopolia, स्पेनीयमें Canamo, डेनमार्कीमें Hamp, काश्मीरीमें वङ्गो और मराठीमें भांगाछा झाड़ कहते हैं। गाँजाका संस्कृत पर्याय—गञ्जिका, वज्रदारु, भङ्गा, भरिता, गञ्जाशन, गञ्जाकिनी, मतकुणारि, मातुली, मातुलानी, मादिनी, शक्राशन, त्रैलोक्यविजया, इन्द्राशन, जया, वीरपुत्रा, गञ्जा, चपला, अजया, आनन्दा, प्रकाशिनी और हर्षिणी है। यह कटु, कषाय, उष्ण, तिक्त, वात तथा कफनाशक, संग्राही, वलकर, मेधावृद्धिकारी, दीपन और वाक्यवृद्धिकर होता है। (राजनिघण्टु) भावप्रकाशके मतमें वह कफनाशक, तीता, ग्राही, पाचक, हलका, तीखा, उष्ण और पित्त, मोह, मत्तता, वाक्य तथा अग्नि बढ़ानेवाला है।

राजवल्लभ बतलाते हैं कि यह समुद्र मन्थनके समय पीयूष रूपमें उत्पन्न हुआ था। विजय प्रदान करनेसे उसका एक नाम विजया पड़ा। उसके सेवनसे आतङ्क मिटता और हर्ष बढता है।

यह रसायनविशेष है। भारतीय चिकित्सक अनेक औषधोंमें इसका व्यवहार करते हैं।

बृहत्संहिताके मतमें विजया एक माङ्गलिक पदार्थ है। पुष्पस्थानमें वेदिके कोणस्थित कुम्भपर अपर माङ्गलिक द्रव्योंके साथ वह भी अर्पित होता है। (बृहत्सं० ४८।२९)

सुश्रुतने भांग या गांजेके वृक्षको स्थावर विषोंमें उल्लेख किया है। उनके मतानुसार उसके मूलमें जहर रहता है। (सुश्रुत कल्प २ अध्याय) प्रतिश्याय रोगमें उसको सेवन करनेका विधान है। (सुश्रुत उत्त० २४ अ०) कटुकी, द्राक्षा, मुस्ता और क्षेत्रपर्पटीके साथ उसका क्वाथ बना करके पीनेसे पित्तश्लैष्मिक ज्वरमें उपकार होता है। इस देशमें बहुत दिनोंसे वह प्रचलित है। पाणिनिसूत्र (५।२।२९)-के वार्तिक और पाणिनिसूत्र (५.५।४) में उसके पर्यायान्तर भङ्गा शब्दका उल्लेख विद्यमान है।

गांजेसे कीडे मकोडे मर जाते हैं। इसी विश्वास पर उसका मतकुणारि नाम पड़ा है। ग्रीक ऐतिहासिक हिरोदोतासके ग्रन्थमें भी कानाबिस नामका उल्लेख मिलता है। युरोपियोंने गांजे और सनका पौदा एकजातीय मान करके दोनोंको केनाबिस वा हेम्प नामसे अभिहित किया है। परन्तु हमारे देशमें गांजा शणसे स्वतन्त्र है। हिरोदोतासने लिखा है—सिथीय लोग गांजेका बीज सनके भीतर भर करके जलते पत्थर पर रख देते और उसके निर्गत धूमसेवनसे जो सुखानुभव करके उल्लासध्वनि करते थे, हसनकी अरबी किताबमें कहा है कि शेख जाफर सिवानी नामके एक फकीर मिसावार पहाड पर अकेले इबादत (उपासना) में लगे थे। वह किसी रोज जङ्गलमें गांजेकी पत्ती खा कर खूब खुश हुए और अपने चेलोंको उसे देखाने लगे। मिसरमें गांजा नशेके काम आता है। वहां लोग एक नलीसे गाजा पीते हैं। गांजेसे तरह तरहका अचार और मिठाई बनती है। भारतमें भी गांजेका धुआं पीया जाता, भांग खाते और उसकी माजून बनाते हैं।

भागके पेडका फूल गाजा, पत्ती भाग ही और उस का दूध चरस कहलाता है। इसमें सभी चोजे नशोली है।



क—पुष्प। ख—स्त्रीपुष्प। ग—गांजेको बी।

फिर भी गांजेका नशा भाग और चरसके नशेसे निराला है। असली गोंद ही गाजेको मादकताका मूल कारण है। गाजा डाक्टरी चिकित्साम औषधकी तरह व्यवहृत होता है। अङ्गरेजी भैषज्यतत्त्वमें वह उत्तेजक, वेदनानिवारक, स्निग्धकारक, अवमादक, आक्षेपघ्न वा धनुष्टङ्काररोगनाशक, म दक, मूत्रकारक, और प्रसवका सहकारी जैसा बतलाया गया है। उसका धनुष्टङ्कार, जलातङ्क वा अलर्करोग, कम्प, प्रलाप, धडकन, स्नायवीय वेदना प्रभृतिमें प्रयोग करनेसे सुफल मिलता है। सिवा इसके हैजे, अधिक रज,, जरायुके रक्तस्राव, वातरोग, दमे, हृत्पिण्डके वैलक्षण्य, क्लेशकर चर्मरोग और खुजली आदि बीमारियोंमें भी वह व्यवहृत होता है। प्रसव-कालकी जरायुके अवसादमें अधिक क्षण व्यथा होने पर इसके प्रयोगसे वह सङ्कुचित पड जाता और प्रसव साहाय्य पाता है। इसका सत (Extractum Cannabis Indicae) निम्नलिखित रूपसे प्रस्तुत होता है—४ पिण्ट विशुद्ध स्पिरिटमें आध सेर गांजेकी बुकनी मिला ७ दिन तक भिगोकरके रख छोडना चाहिये। फिर उसको दबा या निचोड करके अरक निकालते हैं। इसको टपका और स्पिरिट उडा करके उक्त औषध बनता है। अवस्था विशेषमें आधे ग्रेनसे २ ग्रेन तक यह रोगीको दिया जा सकता है। यह सत एक पिण्ट खालिस स्पिरिटमें मिला देनेसे चरसका टिञ्चर (Tinctura Cannabis Indicae) तैयार होता है। हालतको देख करके ५से २० बूंद तक उसका प्रयोग कर सकते हैं। डाक्टर ओसफ नेसीने सबसे पहले गाजेकी भलाई बुराई समझ करके उसको विलायती दवाइयोंमें डाला था। (Johnwaring's Pharmacopaeia of India, p 464)

अङ्गरेजी हेम्प (Hemp) शब्दसे शण (सन) और गाजे दोनो का अर्थ निकलता है। एनसाइक्लोपेडिया ब्रिटेनिका प्रभृति ग्रन्थो में भी यही गडबडी है। दोनो वृक्ष एक जातीय होते भी गाजेके आकारमें कुछ विशेषत्व है। इस पेडमें लकडीका भाग अधिक रहता है। फिर यह सनके पेडसे मोटा भी होता है। इसके डण्ठल सोधे निम्नदेश फैला हुआ और ऊपरी भाग ढालू लगता है। यह साधारणत चार और कभी कभी ६ हाथ तक बढ जाता है। ऊपरी पत्तिया खूब हरी और फूल हरापन लिये हुए सफेद होते हैं। इसको फुनगो बीचमें मोटो और दोनो ओर ढालू पडतो है। उसमें बहुतसा रेशा रहता है। पेडो तथा सोधी ऊर्ध्वग होतो और उसका परिधि ६से ८ इञ्च तक बैठता है। तलदेशसे डालियां कभी मिले हुए तौर पर कभी अलग अलग फूटती हैं। सभी जगह रूआ छाता है। डालियोंके भीतर एक प्रकार की कोमल श्वेत मज्जा या गूदा भरा रहता है। इस मज्जा पर बुहदविशिष्ट सूक्ष्म भङ्गप्रवण कोई आवरण है। इसी आवरण पर छाल लगी है। यह त्वक् लम्बे लम्बे रेशोंसे बनती है। रेशे समान्तराल भावसे अवस्थित हैं। पत्तिया किसी सीधी डालकी दोनों ओर निकलती हैं। पत्तिया जडसे मोटी होती हुई सूईकी नोक जैसी ढालू पड जाती हैं। उनका पार्श्व देश आरे जैसा कटा कटा रहता है। ५।७ पत्तियां एकही साथ निकलती हैं। गांजेका कोई फूल पुरुष जातीय और कोई कोई स्त्री जातीय होता है। पुरुष जातीय पुष्प निराले पेडमें लगता है। वह एक एक बोटमें एकत्र उपजता और प्राय अधिक झुक पडता है। उसकी जडमें नई नई टेहनियां निकला करती हैं। उनका लगा न होनेसे भारतके किसान लोग फेंक देते हैं। फल

गुच्छोंमें बांध कर सोये ही जाते हैं। इसी के बीचमें अर्ध गोलाकार डिम्बकोष होता है। उसमें एकमात्र उद्भिद् भ्रूण रह सकता है। फूलमें बीज उठते ही पेड़ मर जाता है।

स्त्री जातीय फूल ही भारतवर्षमें नशाके लिये गांजेके तौर पर काम आता है। परन्तु किसान उसको पुंजातीय जैसा समझते हैं। इसी विश्वाससे वह पुंपुष्पोंको छांट करके खेतसे फेंक देते हैं। पुंपुष्प होनेसे अच्छा मादक द्रव्य नहीं निकलता, गांजेमें बीज भर पड़ता है

रायल साहब कहते कि एक पौदेमें दोनों जातीय फूल फूटा करते हैं। किन्तु वह अनुमान ठीक नहीं। पहले यह ठहराना बहुत कठिन है, कौन पौदा नर और कौन मादा है। किसान लोग ही इस भेदको समझ सकते हैं।

गांजेमें राल-जैसी एक चिपचिपी चीज होती है। उनमें भी खूब नशा रहता है। यह गोंद कभी कभी अपने आप निकल आती और चरस कहलाती है। भारतवर्षके पौदोंसे यह दूध कम निकलता,किन्तु हिमालय प्रदेशमें ग्रीष्मकालको प्रचुर परिमाणसे मिलता है। चरसकी भी मादकताशक्ति यथेष्ट है। उसको पीनेको तमाखूमें मिला गांजेकी तरह चिलम पर रख करके नशेबाज पीया करते हैं। भारतमें गांजे पौदेके फूलमें चरस होता है। परन्तु फूलके बीचमें डिम्बकोषके भीतर बीज पड़ कर गर्भसञ्चार होनेसे रस सूख जाता है। उसीसे किसान लोग गर्भ निवारणको उतनी चेष्टा किया करते हैं। स्त्री और पुरुष उभय जातीय वृक्ष भी होते हैं। उसमें अधिक पत्तियां आनेसे झाड़ बन जाता और फूल नहीं आता। परन्तु इस श्रेणीका पौदा रहनेसे गांजेकी खेतीको कोई हानि नहीं पहुंचती। ऐसे पेड़ोंको खस्सी कहा जाता है।

इधर उधर प्राय: गांजेका पेड़ सभी समयको उपजा करता है। फिर भी खेती करनेवाले आश्विन वा कार्तिक मासमें ही इसका बीज वपन करते हैं। पौष माघ मासको पेड़ फलने लगता है।

जिस जमीनपर किसी बड़े पेड़की छाया पड़ती, गांजा इसके लिये उपयोगी नहीं ठहरती माघ वा फाल्गुन मासके ही गांजेका खेत जोता जाता है। किसी किसी जगह कुछ पीछे भी भूमिकर्षण करते हैं। ३।४ दिनके अन्तर पर एक ही खेतको कमसे कम ४वार जोतना जरूरी है, उसमें किसी किस्मका घास फूस न रहे, खूब साफ कर डालना चाहिये। निम्न भूमिसे मट्टी ले जा करके उसमें एक या २ हाथके फासले पर टोकरी टोकरी डाल देते हैं। थोड़े दिनों बाद खेतको बगल पर कुदाल या खुरपीसे घास और दूसरे छोटे छोटे पौदे काट करके खेतमें फेंके जाते हैं। फिर पासकी जमीनसे मट्टी ला करके मेंड ऊंची उठाते हैं। समय समय पर गोबरको खाद और उस पर मई देनी पड़ती है। इससे चिमड़ी मट्टी टूट जाती और घास जग आती है।

वृष्टिका जल बहा देनेके लिये नाली बनाते हैं। गोबर आदि खाद इकट्ठो करके भाद्रमासको खेतमें डालते हैं। आश्विन मासको आकाश परिष्कृत रहनेसे और एक बार वही खेत अच्छी तरह जोता और मईसे बराबर किया जाता है।

एक ओर खेत वपनोपयोगी बनता और दूसरी ओर बीज स्थानान्तरमें अङ्कुरित हुआ करता है। जमीन तैयार होनेपर बीजोंको चतमें.रोपण किया जाता है बीज तैयार करनेमें कोई डेढ़ मास लगता है। उस समय टेहनियां ८ से २० अङ्गुल तक बढ़ती हैं। बीजमें जो छोटा आता, रोपण नहीं किया जाता। अपेक्षाकृत छोटा पौदा ऊंची और बड़ी आर्द्र भूमिमें रोपित होता है। १०।१२ अङ्गुलके अन्तर पर प्रत्येक वृक्षको रखते हैं। आश्विनमासको ८।१० दिनके अन्दर यह वपन कार्य न कर लेनेसे पैदावार बिगड़ जाती है। बोनेके बाद दो तीन दिन पानी न बरसना अच्छा है। कारण वृष्टि होनेसे जड़ भीगती और पौदा भी अखीरको सूखता है। ऐसा होने पर फिर दूसरा बीज लाकर डालना पड़ता है।

जिस जगह पर बीज तैयार होता, उसका हिसाब अलग है। वृष्टिकी २।१ भरनोंके बाद ज्येष्ठ माससे आरम्भ करके भाद्र मास पर्यन्त उसको ३ ४ वार जोतते हैं। फिर मई देकर जमीन बैठाते और मट्टीको खूब बुकनी डाल करके धूपके वक्त बीज गाड़ आते हैं। फिर मई दे करके मट्टी बराबर की जाती है। एक बिस्वा जमी-

नमें कोई ४।६ सेर बीज तैयार होता है। उसको एक घीघे जमीनमें मजेमें लगा सकते हैं। खेतमें रोपित होने के ४ दिन पीछे ही बीजसे अङ्कुर फूटता है। ६।७ दिन पीछे यही हरी पत्ती जैसा लगने लगता है।

जिस जमीनमें मोथा होता, अच्छा बीज निकलता है। फूटनेके समय वृष्टि पड़नेसे बीज बिगड़ जाता है। खेत खुले स्थानमें रहना आवश्यक है। उसमें घास जगनेसे उपकार ही है, अपकार कभी नहीं। प्रत्येक खेतमें ४।५ वसर बीज प्रस्तुत हो सकता है।

रोपणक्षेत्रमें जहां जहां मट्टी ऊंचो उठाते अङ्कुर लगाते हैं। रोपणके ३।४ सप्ताह पीछे आश्विनके अन्त वा कार्तिकके आदिमें पोदेकी जड़को छोड़ करके ऊंची मट्टीका दूसरा अंश निकाल डाला जाता है। फिर पोदे की जड़में खली या खलीमें गोबर मिला करके दिया करते हैं। इसके बाद मट्टी उच्च की जाती है। अग्रहायण मासके आरम्भमें पोदेके नीचेकी दो एक डालिया काट या तोड़ डालते हैं। ऐसा करनेसे वृक्षका तेज ऊपरको चढ़ता है। फिर क्यारीकी मध्यस्थित निम्न-भूमि हलसे जोतनी पड़ती है।

अग्रहायण मासको १०।१२ दिन पीछे या उससे पहले ही गांजेका परीक्षक आता, जो पोतदार कहलाता है। उसको दो तीन बार परीक्षा लेनी पड़ती है। वह सूर्योदयसे पहले फूलोंकी जांच करता है। जो फूल स्त्री जातीय समझ पड़ती, उनसे वृक्ष वह तोड़ देता है। पीछे कृषक जा करके उनको उखाड़ डालता है। इसी प्रकारसे अगहनमें तीन और पूषमें एक मरतबा परीक्षा हुआ करती है। इसका नाम 'यकाई' है। फिर भी मादा पेदा बिलकुल नष्ट नहीं होता, कितने ही पेड़ बच जाते हैं। वह ।६ हो जाने पर किसान अपने आप एक बादर पोदे देखने आते और जहां जहां पीले पत्ते पाते, तोड़ जाते हैं। फिर घने वृक्षोंमेंसे कुछ उखाड़ करके खाली जगह पर लगा देते हैं। रोपण कार्य समाप्त होने पर भूमिकी अवस्था देख एक बार मार्गशीर्ष और एक बार पौषमें दो बार सिञ्चन करना पड़ता है। फिर पौषमास के शेष या माघमासके प्रारम्भको पेड़में फूल आने लगते हैं। माघमासके बीचो बीच यह भरपूर ही जाते हैं। फूल जितना ही पकता, उतना ही अरुणवर्ण निकलता है। उस समय यह खाली या खोखला कहलाता है। पुं जातीय गांजेके फूलको 'कली' कहते हैं। माह बीतते या फागुन लगते लगते गांजेका पेड़ कटता है।

गांजा दो प्रकारका होता है—चपटा और गोल। चपटा गांजा तैयार करनेको एक सामदार जगह साफ की जाती है। सवेरे ८ बजेके समय गांजेको जटा काट लाते अर्थात् प्रात कालको ओससे उसको बचाते हैं। जो वृक्ष खूब पूर्णता पाते, पहले ला करके घास पर १ दो बजे तक सुखाये जाते हैं। फिर फूलको ओर एक हाथमें कुछ ज्यादा छोड़ करके उसका बाकी हिस्सा काट डालते हैं। उसीके साथ जिन डालियोंमें फूल नहीं आते, छाटते चले जाते हैं। फिर उसको सारी रात ओस में रखते हैं। कहीं कहीं जाड़ेको ज्यादत हो जाने पर कटाई होती है। दूसरे दिनको २।३ बजे उनको पुड़िया बांधी जाती है। मोटाईके अनुसार एक एक पुड़ियामें कभी तीन चार, कभी ८।१० कलिया रहती हैं। इस प्रकार बध जाने पर एक चटाई डाल करके उस पर वही पुड़िया पैरेकी सूरतमें अर्थात् कलियोंका सिरा एक दूसरे के सामने रख करके जमा देते हैं। उसके ऊपर दूसरी रख दी जाती है। फिर ४।५ आदमी एक दूसरेका कन्धा पकड़ करके पैरोंसे उनको कुचला करते हैं। बायें पैरसे टाजेको दबाते और दाहनेसे चोट चलाते हैं। थोड़ी देर ऐसा करने पर गांजा चपटा पड़ जाता है। फिर एक दूसरी पुड़िया ला उस पर और रख देते और वैसे ही कुचल लेते हैं। उस पर चटाई ढांक करके २।३ आदमी बैठते हैं। इससे कली अपने लगे हुए दूध जैसे निर्यासमें लिपट जाती और पत्र तथा बीजको विच्छिन्नता देखाती है। फिर कोई दूसरी चटाई बिछा दोनों हाथमें एक एक पुड़िया ले परस्पर आघात किया करते हैं। इसमें बीजो और पत्तियोंके झड़ जाने पर जटाओं को अलग किसी चटाईमें गोल गोल जमा करके रख छोड़ते हैं। इसमें जो जटाए पहले ऊपर रहीं, नीचे आ पड़ती हैं। इस तरतोबके बाद मड़ाई और कुटाई होती है। दो तीन वैसा करके जटाओंको अलग रख देते हैं। फिर बीजो और पत्तियोंको अञ्जलिमें ले कृषक

खड़े हो करके थोड़ा थोड़ा छोड़ते हैं। इससे वीज नीचे गिर पड़ते और पत्ते उड़ चलते हैं। वही वीज इकट्ठा करके दूसरे सालके लिये रख लिया जाता है। फिर एक चटाई डाल करके किसान उस पर खड़े खड़े जटाओंको वाम पदसे दवाते और दक्षिण पद द्वारा नीचेसे ऊपर तक कुचल फिर झाड़ करके अलग रखते हैं। ऐसा ही कई वार करके घास पर चटाई दवा देते, दूसरे दिन जा करके चिपटे हुए अंशको स्वतन्त्र कर लेते हैं। दो-तीन दिन वैसा ही करने पर गांजा धूपमें डाल दिया जाता है। फिर वीज और शुष्क पत्र संग्रहीत होते हैं। इसीका नाम खोंचा है। फिर गांजेकी कलि-यां अलग रख करके मांडी जाती हैं। इसके पीछे १०।१० कलियां एक वण्डलमें बांधते हैं। किसान उन्हें घर ले जा धूपमें २।१ दिन सुखा वांसके माचे पर उठा करके रखते हैं।

गोल गांजा वनानेकी भी यही प्रणाली है। उसको भी काट करके ले आते और वण्डल बांध करके धूपमें जमाते हैं। रातको ओस भी खिलायी जाती है। दूसरे दिनको जिसमें वड़े वड़े फूल रहते, उनमे किसीको तीन, किसीको चार और किसीको ५ टुकड़े तक करते हैं। फिर जिस जिस पौदेमें फूल नहीं आता, छोड़ दिया जाता है। चपटे गांजेकी वनिस्वत इसमें और भी वंछाई करना जरूरी है। इसके मनोनीत पुष्प रौद्रमें सुखाते हैं। तीसरे पहरको एक कतारमें २।४ खूंटे गाड़ तिरछा वांस वांध उसकी दोनों ओर दो चटाइयां डालते और उस पर गांजेको २ हिस्सोंमें सिल सिलेवार लगाते हैं। १०।१२ आदमी खुंटोंकी दोनों ओर खड़े हो गांजेको पैरकी दावसे मल करके गोल वना लेते हैं। इसीका नाम 'पहली मलाई' है। छोटे छोटे वण्डल हाथ हीसे मरोड़ लिये जाते हैं। इस प्रकार कलियां गोल पड़ जानेसे एक एक करके धूपमें सुखाना पड़ती है। कुछ देरके वाद उन्हें उठा करके दूसरी मलाई की जाती है। वीच वीच हाथसे मरोड़ना पड़ता है। इसीका नाम 'हथमुट्ठा' है। दूसरे दिन फिर सुखा करके वैसा ही किया जाता है। इसके वाद अति सावधान हो कौशलपूर्वक पूले बांध करके रखते हैं। इसीको 'सरवन्दी' कहा जाता है। पूलोंको नीचेकी तरफ जमीनमें काम वारके वांधना पड़ता है। दूसरे दिन धूपमें सुखा करके किसान गांजेके पूले हाथसे एंठते हैं। इसमें कुछ गांजा टूट करके गिर जाता है। उसको चूरा कहते और अलग वेचते हैं। वीच वीच उंगली या चपकसे कलीको सब सूखी पत्तियां झाड़ दी जाती हैं। फिर कलीको ढंका करके डण्ठल धूपमें रखते हैं। इसी प्रकार गांजा तैयार होता है।

गांजा वनानेमें धूप वहुत जरूरी है, उसके अभावमें आग पर गर्म कर लेनेसे भी काम चल सकता है। यह तरह तरहसे विगड़ सकता है। असमय पानी वरसने पर कीचड़मट्टी लगनेसे पेड़ विगड़ जाता है। फिर वरसा-तमें एक कीड़ा निकलता जो कलीको काटा करता है। घुण जैसा कोई दूसरा कीड़ा भी इसको मारता है। पेड़में काले काले धब्बे पड़ जानेसे कीड़ा लगा हुआ समझा जाता है। गांजेका एक रोग होता है। उसमें डण्ठल और पत्तियां पीली पड़ जाती हैं।

युक्त प्रदेशमें गांजेकी खेतीको निषिद्ध समझते; परन्तु दूसरे प्रदेशोंमें किया करते हैं। हिमालयके पास गढ़-वालमें खूव चरस होता है। उधर वहुतसे लोग गांजेके वीज भून करके खाते हैं। आसाममें भांगका एक पानीय वताया जाता, जो गुण्टा कहलाता है। पञ्जावमें गांजा नहीं होता।

पहले सव लोग विना रोकटोक गांजेकी खेती कर सकते थे। परन्तु १८७६ ई०को गवर्नमेण्टकी अनुमति लेनेका कानून चला। गांजा तैयार होने पर सरकारी गोदामको भेज दिया जाता है। इसके महसूलसे सर-कारको वड़ा फायदा होता है। समय समय गांजेका मूल्य वढ़नेका यही कारण है।

गांजेड़ी वायें हाथमें गांजा ले करके दाहने हाथके अंगूठेसे अच्छी तरह मलते हैं। उससे गांजा लस पकड़ लेता है। फिर उसमें तम्वाकू मिला किसी कड़ी चीज पर रख करके चाकूसे वारीक वारीक काटते हैं। अखीर-को चिलममें कङ्कर लगा गांजा भर देते और उस पर आग चढ़ा करके पी लेते हैं। वातकी वातमें नशा आता, आंखका रंग सुर्ख पड़ जाता और मत्था मानो चकराता है। तुर्किस्तानमें और तरहसे गांजा पीते हैं। वहां इस

का एक तम्बाकू डाल करके चिलमोसे पीया जाता है। इसमें बड़ा नशा होता है। अपने देशमें भांग पी करके लोग वैसे ही मतवाले बन जाते हैं। गांजा पीनेसे मानसिक अवस्था कैसी हो जाती, धूर्तसमागम नामक संस्कृत प्रहसनमें निरूपित हुई दिखलाई है—

"[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]"

किसी किसी डाक्टरके कथनानुसार गांजा पीनेसे लोग पागल पड़ जाते हैं। इससे जो अनिष्ट आता, उसको निवारण करनेके लिये गांजिस समुदाय संघटित किया जाता है। परन्तु खेद है—सरकार इसका व्यवहार नहीं रोकती। लोग गांजा पी पी करके उन्मत्त हो रहे हैं। किसी कविने कहा है—

"[illegible]
[illegible]।"

गांठ (हि॰ स्त्री॰) गिरह।

गांठकट (हि॰ पु॰) वह चोर जो पासके कपड़ेमें बंधे हुए रुपये उठा लेता है, गिरहकट। २ उचितसे अधिक मूल्य पर सौदा बेचनेवाला, ठग।

गांठगोभी (हि॰ स्त्री॰) एक प्रकारकी गोभी। इसमें गूदेदार गांठ होती है। इसकी तरकारी बनाई जाती है।

गांठदार (हि॰ वि॰) जिसमें बहुत गिरहें हों।

गांठना (हि॰ क्रि॰) १ गांठ देना। २ जीर्ण वस्त्रोंमें चीप देना। ३ मिलाना, योगकरना।

गांठी (हि॰ स्त्री॰) १ स्त्रियोंके हाथोंकी कुहनीका एक प्रकारका गहना। २ भूसे या डंठलका गांठदार छोटा छोटा भाग।

गांड़ (हि॰ स्त्री॰) १ गुदा। २ किसी पदार्थके नीचेका भाग जिसके आधार पर वह खड़ा रह सके पेंदी, तला।

गांडर (हि॰ स्त्री॰) दाभ या मंजा जाय जैसी एक तरह की घास। जहां जल बहुतायतसे मिलता है, उसी स्थान पर यह घास उपजती है। विशेष कर यह मैदान की तराईमें पाई जाती है। इसकी पत्ती सरपतसे पतली तीन चार आधार मालमें इसकी पूर्णा जड़में वह र होते और चार पांच वर्षमें लगती है। इसकी सींकमें फूल रहता है। मनुष्य सींकेसे झाड़ू तथा छोटी टोकरी बनाते और पौधेको काटकर छप्पर छाते हैं। इसका मूल सुगन्धित होता। फारसी भाषामें इसे खस और संस्कृतमें उशीर कहते हैं। २ गिरहदार एक प्रकार की दूर्वा। यह बहुत फैलती तथा स्थान स्थान पर जा पकड़ती है। मवेशी इसे बहुत पसन्द करते। यह कड़ई, कसैली तथा मीठी होती है। यह दाह, तृष्णा, कफ-पित्तको दूर करता और लोहूके विकारको नष्ट करता है। गण्डदूर्वा।

गांडा (हि॰ पु॰) १ किसी हल या पौधेका कटा हुआ भाग। २ जखका वह भाग जो कोल्हूमें देकर रस निकालते हैं। ३ जख, ईख, गंडेरी।

गांडी (हि॰ स्त्री॰) चौपायोंके खानेकी एक तरहकी घास। इसकी जड़ सुगन्धित होती है। इस घास में विशेषता इस बातकी है कि सुखा कर दश या बारह मास रख देने पर भी इसका स्वाद नहीं बदलता।

गांडू (हि॰ वि॰) १ जिसे गांड मरानेकी आदत पड़ गई हो। २ निकम्मा। ३ जिसे साहस नहीं हो, कायर, डरपोक।

गांती (हि॰ स्त्री॰) गाती देखो।

गांथना (हि॰ क्रि॰) १ ग्रन्थन करना, गूथना। २ योग करना।

गांधिल—पञ्जाब प्रान्तकी एक जाति। यह लोग व्यापार करते और युक्तप्रदेशमें भी अल्पसंख्यक मिलते हैं।

गांव (हि॰ पु॰) वह जगह जहां बहुतसे गृहस्थ रहते हों। छोटी बस्ती।

गांस (हि॰ स्त्री॰) १ ग्रन्थन, बंधन। २ प्रतिरोध, रोक टोक। ३ बैर, द्वेष, ईर्षा। ४ हृदयकी गुप्त बात। ५ तीर या बरछीका फल, अस्त्रका अग्रभाग। ६ अधिकार, शासन।

गांसना (हि॰ क्रि॰) १ ग्रन्थन करना। २ गठना, कसना, ठस करना।

गांसी (हि॰ स्त्री॰) तीर या बरछीका फल, किसी अस्त्र का अग्रभाग।

गाइक—गाहक देखो।

गाइड (अं॰ पु॰) १ पथदर्शक, रास्ता दिखानेवाला।

२ वह मनुष्य जो दूसरेको किसी स्थानके प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थानोंको दिखाता हो।

गाउन (अं० पु०) १ यूरोप तथा अमेरिका आदि देशोंकी स्त्रियोंके एक प्रकारका पहनावा। २ एक प्रकारका लंबा ढीला वस्त्र जिसके परिधानके अधिकारी सिर्फ ईसाई धर्मके आचार्य, येसुइट, बड़े बड़े न्यायकर्त्ता तथा थोड़े विशिष्ट मनुष्य हैं।

गाउखप्प (हिं० वि०) १ दूसरोंकी चीजको पचानेवाला, बेमान, जमामार। २ बहुत व्यय करनेवाला।

गाकर—पञ्जाब प्रदेशकी एक जाति। यह लोग सिन्धु और वितस्ता नदीके बीच सिन्धुसागर दोआब नामक स्थानके उत्तरांशवासी तूरानी हैं। इन्हें कहीं कहीं गाक्कर या गागर भी कहा जाता है।

इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता है कि वह बहुत दिनों से भारतके उत्तर पश्चिमांशमें रहते हैं। परन्तु उनके भारत आनेका ठीक पता नहीं।

ऐतिहासिकोंके मतानुसार पुरुष और तक्षशिला राज्यके उत्तर वर्तमान सुहां नदीके उत्पत्ति स्थान मूरी तथा मार्गल गिरिसङ्कटके निकट प्राचीन अभिसार राज्य था। वही स्थान वर्तमान गाकरोंकी वासभूमि और वही अभिसार राज्यकी पूर्वतन प्रजाके वंशधर जैसे अनुमित होते हैं। वह भारतवासी हिन्दू नहीं हैं। इतिहास पढ़नेसे यह भी ज्ञात होता है कि अभिसारराज उत्तर मद्र (Media) तथा पारदनिवासी सर्पापामक शक रहे। पुरवित्ता एरियानने उक्त मतको सम्भवपर और यथार्थ जैसा ठहराया है। फिर मुसलमान लेखक लिखते और यह अपने आप भी कहते हैं कि वह अफ्रेसियाके कयान देशसे जा करके पञ्जाबके उत्तरपश्चिमांशमें बसे और मङ्गल नगरके उस पार वितस्ता किनारे अन्नीयान नगरमें राजधानी स्थापन करके रहे। पुरातत्त्ववित् कनिङ्गहाम साहब इन दोनों प्राच्य नामोंसे अनुमान करते कि वह पुराने अरबी या अरफी लोगोंकी शाखा ठहरते हैं। किसी समय वह सौभाग्यवान् और बलवान् थे, पूर्वाभिमुखी हो करके भारत जा पहुंचे। खुरासानके अन्तर्गत वर्तमान निशापुरमें उनकी राजधानी रही। इतिहासवेत्ता ष्ट्राबोने उक्त स्थानवासी लोगोंको 'अपर्णी' जैसा उल्लेख किया है। यह भी टाली शाखान्तर्भुक्त तूरानी जाति हैं। कनङ्गहामके सिद्धान्तानुसार हरकनियाके रहनेवाले अरबोंने दरायु हयस्ताम्पस अथवा तत्पूर्ववर्ती किसी शक राजाके राजत्वकालको वितस्तातीर अन्नीयान नगरमें जा करके उपनिवेश स्थापन किया और हिरोदोटास वर्णित "सागर" वा "साकर" शब्दसे गाकर नाम निकला। शब्द-तत्त्ववेत्ता बतलाते कि शाक, साकर और गाकर शब्दसे किसी लोहास्त्रका बोध होता जो अवर नामधेय लोगोंका जातीय अस्त्र है। सुतरां देश और कालभेदसे सागर वा आवर अस्त्रधारी ष्ट्राबोल्लिखित अपर्णियों (हरकनियावासी अवरों) ने गाकर जैसा नाम धारण किया।

सिवा इसके डिओनिसियास, प्रिसकियानास प्रभृति ऐतिहासिकोंके ग्रन्थोंमें किसी समृद्धिशाली गागर जातिका उल्लेख है। पञ्जाब प्रदेशकी शतद्रु और असिक्नी नदी निकटवर्ती तक्षशिला राज्यके पहाड़ोंमें उनका वास था। सम्भवतः वही वितस्ता-नदीतीरवर्ती गाकर जाति हैं। वह बेकस हियाक्रिसका उपासना करते थे। (Dionysius orbis descriptio, V.1143. Priscianus, V. 1050) कोई अनुमान करता कि सिन्धु और वितस्ता नदीके मध्यवर्ती गन्धगड़ पर्वत पर 'मसवानी' अफगान रहते हैं। वहां उनको 'गन्धगड़िया' कहा जाता है। यही गन्धगड़ पर्वत किसी कालको गाकर वा गागर जातिका सुरक्षित आवासस्थान रहा। एतद्व्यतीत और भी मालूम पड़ता कि स्यालकोटके यादववंशीय राजा रसालुके साथ गन्धगड़वासी दस्युओंकी विशेष शत्रुता रही। पीछेको उनके वंशधरों कर्तृक अभिसारके गागर सदल दमित हुए और दो शताब्दियोंतक निस्तेज रहे। सुतरां अनुमान लगता है कि गन्धगड़वासी 'गन्धगड़िया' और पाश्चात्य इतिहासगत गार्गर (Gargaridae) शब्द गाकर जातिका नामान्तर मात्र है।

'फरिश्ता'में लिखा है कि उन्होंने पञ्जाबके अन्तर्गत भेरा और जम्बु प्रदेशके कक्कवाहवंशीय राजा केदारको राज्यसे निकाल बाहर करनेमें तदीय आत्मीय राजा दुर्गाका साहाय्य किया। ६२ हिजरीको गाकरोंने अफगानोंसे सन्धि करके लाहोरके राजाको वशीभूत किया और

उनके राज्यका कुछ अंश अपने आप ले लिया। १००८ ई०को जब महमूद गजनवीने भारत आक्रमण किया, कोई ३०००० गाकरोंने पेशावरके पास हिन्दू राजाओंको साहाय्य दिया। उस युद्धमें महमूदकी प्राय ५००० सेना विनष्ट हुई। १०७९ ई०को इब्राहीम गजनवीने युध पर्वतका दारपुर दुर्ग अधिकार किया। यह दारपुर जलालपुरसे कुछ उत्तरको वितस्ताके तीर पर अवस्थित है। नगरके लोग खुरा सानियोंक वंशधर हैं। अफासिया कातक स्वदेशसे ताड़ित होने पर वह उक्त स्थानमें जा बसे हैं। यह भी इनको ही तरह अपने अपने घरमें विवाह करते और किसी अपर जाति वा श्रेणीसे सम्बन्ध नहीं रखते। कितने ही लोगोंके अनुमानमें गाकर और दार-पुरके खुरासानी एक जाति हैं। चन्द बरदाई कविके पृथ्वीराजरासो नामक ग्रन्थमें लिखा है कि ११८० ई०को मुहम्मद गोरीके भारत आक्रमण करने पर उनके सरदार मलिक हयातने पृथ्वीराजको सहायता दी।

कहते हैं कि मुहम्मदगोरीके शेष राजत्वमें गाकर सरदार सर्व प्रथम इसलाम धर्ममें दीक्षित हुए। परन्तु इस-से पहले ही उन्होंने विजातीय उपाधि 'मलिक' ले रखा था।

१२०५ ई०को इन्होंने पञ्जाबके लाहोर राज्य पर्यन्त आक्रमण किया। १२०६ ई०को यह मुसलमान सुल-तानके खेमेमें घुस पड़े और छातीमें छुरी भोंक उनको मार डाला। परन्तु १२२५ ई०को इन्हें मुगल सम्राट बाबरकी अधीनता माननी पड़ी। १७६५ ई०को रावल पिण्डीके समतल क्षेत्रसे सिखों द्वारा खदेड़े जाने पर यह मूरी पर्वत पर पहुंच करके स्वाधीन भावसे राज्य करते रहे। यहीं १८३० ई०क, सिखोंमें इनसे लड़ाई हुई। बहुत रक्त पातके पीछे इन्होंने पराभव माना था। १८४९ ई०को रावलपिण्डी सिखोंके हाथसे अंगरेजोंके अधि-कारमें आने पर यह परवर्ती ४ वर्ष तक उनसे लड़ते रहे और १८५७ ई०को पञ्जाबकी राजधानी मूरी नगर पर चढ़ धमें।

आजकल यह पञ्जाब प्रदेशके रावलपिण्डी, वितस्ता तीरवर्ती प्रदेश, गुजरात और हजारा नामक स्थानमें रहते हैं।

फरिश्तामें लिखा है—कन्यासन्तान होनेसे कोई भी गाकर उसको बाजार ले जाता और एक हाथमें कन्या और दूसरे हाथमें पैनी छुरी ले करके चिल्लाता है, यदि उस कन्याका कोई प्रार्थी हो, शीघ्र आ जावे। किसीके आकर न पहुंचनेसे तत्क्षणात् नवजात कन्याको दो टुकड़े कर डालते हैं। उसी कारणसे इनमें एक स्त्रीके बहुतसे स्वामी देख पड़ते हैं। ई०से ३२७ वर्ष पहले यूनानियोंके भारत आक्रमणके समय रावलपिण्डी प्रदेशमें शक जातीय 'तक्क' शाखाका वास था। सम्भवत यह 'तक्क' संस्कृत तक्षक शब्दका अपभ्रंश है। कारण शकोंमें सर्पोपासक कोई दूसरा नागवंश भी होता है। बहुत लोग अनुमान करते कि तक्कवंशीय शक लोगोंको मुसलमानोंने गाकर या गाकर जैसा कहा है।

गागर (हि० स्त्री०) गगरी, घड़ा।

गागरा (हि० पु०) १ गगरा देखो। २ भंगियोंकी एक जाति।

गागरी (हि० स्त्री०) घड़ा, गगरी।

गागरौन—राजपूताना कोटा राज्यके कनवास ज़िलेका एक ग्राम और दुर्ग। यह अक्षा० २३ ३८ उ० और देशा० ७६ १२ पू०में आहू और कालीसिन्ध नदीके सङ्गम स्थान पर झालरापाटन छावनीसे ढाई मील उत्तर-पूर्व अवस्थित है। गागरौनका किला राजपूतानामें एक बहुत मज़बूत किला है। कहते हैं—उसे डोड राजपूतोंने बनाया था। ई० १२ वीं शताब्दीके अन्त तक उनका इस पर अधिकार रहा, फिर खीची चौहानोंने आकर दखल किया। १३०० ई०को खीचियोंने सफलतापूर्वक अपने राजा जैत सिंहके अधीन अला उद्दीनका अवरोध रोका था। किन्तु प्राय १४२८ ई०को राजा अचलदासने मालवके गङ्गशाहसे गागरौन अधिकार किया। १५१९ ई०को मुसल-मान ऐतिहासिकोंके वर्णनानुसार भी इसके अधिकारी थे, परन्तु महमूद खिलजीने उनको आक्रमण करके पकड़ लिया और मार डाला। इसके थोड़े ही दिनके पीछे मेवाड़के राणा संग्राम सिंहने मुहम्मदको हराया और १५३२ ई० तक गागरौनको अपने अधिकारमें रखा। फिर गुजरातके बहादुर शाहने इसे अधिकार किया था। तीस वर्ष पीछे मालव जाते हुए अकबर बादशाह यह

आ पहुंचे। दुर्गके सेनापति उनको भेंट देकर मिले थे। १८वीं शताब्दीके आरम्भ तक यह मुगलोंके अधिकारसें रहा। फिर बादशाहने कोटाके महाराव भीमसिंहको गागरौन प्रदान किया था। अन्तको युवराज जालिमसिंहने किलेको बना और बढ़ा दिया।

ग्रामसे दुर्ग पृथक् है। दोनोंके बीच एक मजबूत ऊंची दीवार खड़ी और चटानोंमें गहरी खाई खुदी है। आने जानेके लिये पत्थरका एक पुल बना है। यहांके तोते बहुत सुहावने होते और सिखानेसे बहुत जल्द पढ़ने लगते हैं। पहले कोटा महाराजकी गागरौनमें टक साल रही इसकी आबादी कोई ६०१ होगी।

गागला—बङ्गालके रङ्गपुर जिलेका एक वाणिज्यप्रधान गण्डग्राम। यह अक्षा० २५° ५९ उ० और देशा० ८९° ४०' पू०में धरला और गङ्गा नदीके मध्य अवस्थित है। यहां प्रतिवर्ष उत्पन्न द्रव्योंमें सन, तम्बाकू और अदरककी रफ्तनी अधिक होती है।

गागाभट्ट—दिनकर भट्टके पुत्र, रामेश्वरके पौत्र और सुप्रसिद्ध कमलाकर भट्टके भ्रातुष्पुत्र। इनका प्रकृत नाम विश्वेश्वर भट्ट रहा। १६१२ ई०को यह विद्यमान थे। इन्होंने अशौचदीपिका, दिनकरोद्योत, निरूढ़पशुबन्धनप्रयोग, (बौद्ध), पिण्डपितृयज्ञप्रयोगसार, जैमिनीसूत्रकी भट्ट चिन्तामणिनाम्नी टीका, मीमांसाकुसुमाञ्जलि, चन्द्रालोककी राकागम नाम्नी टीका, श्लोकवार्तिककी शिवार्कोदय नाम्नी टीका, सुज्ञानदुर्गोदय और आपाजी पुत्र बल्लाल वर्माके आदेशसे कायस्थधर्म प्रकाश नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया।

गाङ्ग (सं० पु०) गङ्गायां अपत्यम्। १ गङ्गापुत्र, भीष्म। २ कार्त्तिकेय। ३ स्वर्ण, सोना। ४ धुस्तूर, धतूरा। ५ केशर। ६ हिलसा मछली। (त्रि०) ७ गङ्गासम्भूत जलादि, गङ्गाका निकाला हुआ जल। (क्ली०) ८ मेघ निसृत जलविशेष, वर्षाका पानी। सुश्रुतके मतसे यह गङ्गाजल समस्त दोषोंका नाशक, बलकर, पवित्र, रसायन, श्रम, क्लान्ति और पिपासानाशक, कण्डुदोष निवारक, लघु, मूर्च्छा, तृष्णा, वमि तथा मूत्रस्तम्भ निवारक है। दिन और सन्ध्याके समय यह जल पड़ता है। ९ नदीका तट, नदीका किनारा। (पु०) १० महालक्ष्मीके भक्त च्यवनमुनि गोत्रके एक चन्द्रवंशीय राजा आयान्तिके पुत्र। ११ वागीश्वरी देवीके भक्त अत्रिगोत्रीय एक राजा, प्रसाविके पुत्र १२ एक राजवंश। गाङ्गेय देखो।

गाङ्गट (सं० पु०) गाङ्गं नदीतटादिकमटति अट-अच्। मत्स्यविशेष, झींगा मछली।

गाङ्गटक (सं० पु०) गाङ्गट स्वार्थे कन्। गाङ्गटमत्स्य, झींगा मछली।

गाङ्गटेय (सं० पु०) गाङ्गट स्वार्थे ढक्। गाङ्गट मत्स्य, झींगा मछली।

गाङ्गताक—बङ्गालमें सिक्किम राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २७° २०' उ० और देशा० ८८° ३८' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७४८ है। सिक्किममहाराजका यहां एक वासभवन है।

गाङ्गदेव (सं० पु०) सूक्तिकर्णामृतमें उद्धृत एक कवि।

गाङ्गपुर—१ छोटा नागपुरके अन्तर्गत एक देशीय राज्य। किसीके मतसे गङ्गवंशायसे प्रतिष्ठित होनेके कारण इसका नाम गंगापुर, गंगपुर या गांगपुर पड़ा है।

२ बङ्गालमें उड़ीसाका एक करद राज्य। यह अक्षा० २१° ४७' से २२° ३२' उ० और देशा० ८३° ३३' से ८५° ११' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण २४८२१ वर्गमील है। इसके उत्तरमें जशपुर राज्य और रांची जिला; पूर्वमें सिंहभूम, दक्षिणमें बोनाई, सम्बलपुर और बामरा राज्य तथा पश्चिममें समुद्र पृष्ठसे ७०० फीट ऊंचे पर एक विस्तृत समतल क्षेत्र है। यहांकी प्रधान नदियां इब, संख और कोइल हैं। 'इब' जशपुरसे निकल कर उक्त राज्य होती हुई संबलपुरके निकट महानदीमें गिरी है; संख रांचीसे और कोइल सिंहभूमसे निकली है। संख तथा कोइल नदियां गांगपुरके निकट एक दूसरीसे मिल कर उड़ीसा होकर प्रवाहित है। यहांके जंगलमें बाघ, चीताबाघ, भेड़िया, तरक्षु (लगरबग्गा), भिन्न भिन्न तरहके हिरण और पक्षी पाये जाते हैं।

प्राचीन समय यह राज्य नागपुरके मराठा राजाओंके अधीन था, किन्तु १८०३ ई०में देवगांवकी सन्धिके अनुसार वृटिशके हाथ आया। १८०६ ई०में वृटिश सरकारने यह राज्य फिर उन्हें लौटा दिया था।

राज्यकी आमदनी कुल २४०००० रु० है, जिनमेंसे

ब्रुटिश सरकारको १२५० रु० कर देना पड़ता है। यहां के प्रधान मनन्के अनुसार अपना राज्यकार्य चलाते हैं। प्रति पांचवर्षमें सरकारसे कर घटाया या बढ़ाया जाता है। उड़ीसाके कमिश्नरके अधीन राजाको चलना पड़ता है। करका घटाना या बढ़ाना, अच्छी तरहसे राज्य कार्य चलाना, उचितरूपसे न्याय करना तथा अफीम, नमक और शराब पर टैक्स लगाना, ये सब कार्य कमिश्नरकी देख भालमें है। राजा कैदियोंको दो वष कारागार और ३०० रु०का दण्ड दे सकते हैं। उक्त दण्डसे यदि कुछ अधिक दण्ड देनेकी इच्छा हो तो राजा विना कमिश्नर-को अनुमतिसे नहीं कर सकते हैं।

इस राज्यमें ८०६ गांव लगते हैं। लोकसंख्यामेंसे १४६५४८ हिन्दू, ८८८४८ आदिम जाति, १६३० मुसल मान और १७५८ ईसाई हैं। नदियोंसे परिवेष्टित रह नेके कारण यह राज्य बहुत उपजाऊ है।

यहांकी प्रधान उपज धान, ईख और तेलहन है। यहांके जंगलमें लाख, धूना (धूप) और कत्था यथेष्ट पाये जाते हैं। हिंगोरराज्यमें कोयलेकी खान है। यहां चूर्ण कङ्कड़ और लोहे भी अधिक परिमाणमें मिलते हैं। इस राज्यमें १२ पुलिस ष्टेसन हैं जिनमें कुल २४ पुलिस इन्स पेक्टर और १३४ कोन्सटेबल रहते हैं, पुलिस विभागमें २०००० रुपये खर्च होते हैं। इसके अलावा चौकीदार हैं जिन्हें जागीर दी जाती है। सुआड़ामें एक कारागार है जिसमें सिर्फ ५० कैदी रह सकते हैं। इस राज्यमें एक अस्पताल, १ मिडिल स्कूल, ७ प्राइमरी स्कूल और ८ लोअर प्राइमरी स्कूल हैं।

गाङ्गवश, गाङ्गेयवश देखो।

गाङ्गायनि (सं० पु०) गङ्गाया अपत्यम्। १ भीष्म २ कार्त्तिकेय। ३ एक प्रवर ऋषि।

गाङ्गिनी (सं० स्त्री०) गङ्गाकी एक धारा। यह बङ्गमें गाड़ नगरके निकट गङ्गामें आ मिली है।

गाङ्गेय (सं० पु०) गङ्गाया अपत्य ढक्। १ भीष्म। 'गाङ्गेयेन महात्मना...' (देवीभागवत ...)

२ कार्त्तिकेय। (भारत ...) ३ हिलसा मछली। ४ भद्रमुस्ता भद्रमोथा। (क्ली०) गङ्गाया अपत्य ढक्। ५ स्वर्ण, सोना। (...) ६ धुस्तूर, धतूरा। ७ कशेरु, भद्रमोथा। ८ मुस्त, मोथा। इसका पर्याय—मेघाख्य, मुस्ता, गाङ्गेय और भद्रमुस्तक है। (त्रि०) ८ गङ्गा जलादि।

गाङ्गेयवश—दक्षिणापथका पराक्रान्त राजवंश। दाक्षिणा-त्यके दक्षिणांशमें इनको कोङ्गु या कोङ्गनो और उत्तरां शमें गङ्ग या गाङ्गेय कहते हैं। यह ठीक जाननेका कोई उपाय नहीं है, किस पूर्व कालको उनका प्रथम अभ्युदय हुआ। महाराज गोरचोडके ताम्रशासन पाठसे समझ पड़ता है कि चालुक्यराज प्रथम विजयादित्यके पुत्र विष्णुवर्धनने गङ्गों और कादम्बोंको पराजय करके दक्षिणापथमें राज्य विस्तार किया। इन्हीं विष्णुवर्धनके प्रपौत्र कीर्तिवर्मदेव ४८८ शकको राजत्व करते थे। इसे स्थल पर कीर्ति वर्मदेवसे अन्तत एक शत वर्ष पूर्व विष्णुवर्धनका आविर्भाव मान लेते भी प्राय ३८८ शक (४६७ ई०) को गङ्गवंशका अस्तित्व ठहरता है। किसी किसी ऐतिहासिकके मतसे राक्रान्त आन्ध्रभृत्य राजाओंके अवसान पर ई० द्वितीय शताब्दीको गङ्ग और पल्लव राजा दाक्षिणात्यके कोल्हापुर, धारवाड़, वनवासी आदि स्थानों का राजत्व करते थे।

गांगेयराज अनन्तवर्मा (चोडगङ्ग)के १०४१ शकको प्रदत्त ताम्रशासनमें लिखित हुआ है—

'तनो ययातिरि... नाहुष ... ।
... ।
... ।
... ।
... ।
... इति ॥"

चन्द्रसे बुध, बुधके पुत्र पुरूरवा तत्पुत्र आयु आयुके पुत्र नहुष, नहुषके लड़के ययाति, ययातिके बेटे तुर्वसु और तत्पुत्र गांगेय थे। तुर्वसुने गङ्गादेवीकी आराधना करके गांगेय नामक पुत्र लाभ किया था। उन्हींके वंश धर गङ्गान्वय या गांगेय कहलाते हैं। उक्त ताम्रशासन और कटक जिलेसे सवाविष्कृत उन्नतराज और ओमर 'महदेवके ताम्रशासनसे भी गांगेयको पर पुत्रादिक्रमसे वंशावली इस प्रकार दो गयो है—विरोचन, अभेद्य या साम्बेद्य, भानुमान्, दत्तसेन, सोम या सोम्य अपरदत्त, शालीम सिवानद गोवर्धन, धर्मयो पराशर, जयसेन,

विजयसेन, वृषध्वज, शक्ति, प्रगल्भ और फिर तत्पुत्र कोलाहल। इन्होंने गङ्गवाड़ी राज्यमें कोलाहलपुर नामक नगर स्थापन किया। उत्कलराज नरसिंहदेवके तीनों प्रस्थ ताम्रफलकोंमें लिखा है कि उन्हीं कोलाहलका नाम अनन्तवर्मा था। उनके पुत्र पौत्रोंने बहुकाल कोलाहलपुरमें राजत्व किया।

चोड़गङ्गका उक्त ताम्रशासनपत्र देखते कोलाहलके पुत्रका नाम विरोचन था। फिर ८१ राजाओंके कोलाहलपुरमें राजत्व करने पीछे उनके वंशमें वीरसिंह नृपतिने जन्म लिया। वीरसिंहके कामार्णव, दानार्णव, गुणार्णव, मारसिंह और वज्रहस्त पांच लड़के हुए। ज्येष्ठ कामार्णव पितृव्यको* गङ्गवाड़ी राज्य प्रदान करके चारों भाइयोंके साथ अन्य राज्य जीतने चल दिये।

गङ्गवाड़ी और कोलाहलपुर कहां है? यह दोनों स्थान बम्बई प्रेसिडेन्सीमें हैं। कलभाविका शिलाफलक पढ़नेसे अनुमित होता, किसी समय वर्तमान बेलगांव, धारवाड़ और कोल्हापुर गङ्गवाड़ी देशके अन्तर्गत था।† नरसिंहदेवके बड़े ताम्रफलकमें १म कामार्णवके प्रसङ्ग पर समुद्रतटको गोकर्णस्वामीका उल्लेख है। चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें लिपिबद्ध हुआ है—महीपति कामार्णवने कलिङ्गजयसे पहले गोकर्णस्वामीकी आराधना करके प्रसादसे साम्राज्य चिह्नरूप वृषभलाञ्छन‡ पाया था।

सह्याद्रि पर्वत किनारे समुद्र तट पर अक्षा० १४° ३२′ ५० और देशा० ७४° २२′ ३०″ पू०में गोकर्णनामक प्रसिद्ध तीर्थ है।* वहां गोकर्णस्वामीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। इन्हीं गोकर्णसे ७ कोस उत्तर गंगावालि नदीके तीर गंगवालि नामक कोई बन्दर देख पड़ता है। वहां इस समय भी गंगादेवीका पुरातन मन्दिर विद्यमान है। सम्भवतः यह स्थान गंगवंशीयोंकी बहुत पुरानी राजधानी गंगवाड़ी है। गंगावालि-प्रवाहित समुदय भूभाग पहले गंगवाड़ी राज्य जैसा प्रसिद्ध था। फिर कोलाहल (अनन्तवर्मा) के आधिपत्य काल यही क्षुद्र राज्य उत्तरको कोल्हापुर, धारवाड़ और बेलगांवके कुछ अंश पर्यन्त विस्तृत हुआ। मालूम होता है कि उसी समयसे गङ्गवाड़ि राज्य ८६ सहस्र ग्रामविशिष्ट जैसा गण्य हुआ। गांगेयराज १म अनन्तवर्माने अपने नाम पर जो कोलाहलपुर नामक नगर बसाया, आजकल कोल्हापुर कहलाया है। वर्तमान कोल्हापुर नगरकी अवस्था पर्यवेक्षण करनेसे अतिशय पुरातन जैसा समझ पड़ता है। यहां बहुत पुराने लाट अक्षरोंमें खोदित शिलालिपि विद्यमान है। महालक्ष्मीका मन्दिर अतिप्राचीन और प्रसिद्ध है। करवीर देखो। चोड़गंग प्रभृतिके विस्तृत ताम्र शासनमें पहले ही लक्ष्मी देवीका स्तव दृष्ट होता है। मालूम पड़ता है कि उक्त महालक्ष्मी ही गांगेय राजाओंकी इष्ट देवी थीं।

प्रत्नतत्त्वविद् राइस साहबके मतानुसार महिसुर राज्यके पूर्वांशमें अवस्थित कोलार जिलाके प्रधान नगर वर्तमान कोलार नामक स्थानमें प्राचीन कोलाहलपुर था।

पश्चिमीय वंश।

गाङ्गवंश दो शाखाओंमें विभक्त है, पूर्वीय और पश्चिमीय। पश्चिमीय शाखाका विवरण इस तरह है—कहा जाता है कि पूर्व कालको गंगवंशके राजा कदम्बराज मृगेशवर्मासे पराजित किये गये थे। महाकूट-शिलालेख पढ़नेसे जाना जाता है ये विपक्ष जनताके अन्तर्गत रहे

---

* नरसिंहदेवके बृहत् ताम्रशासनमें लिखा है—जब कामार्णव प्रभृति भिन्न राज्य जय करने चले, नरसिंह नृपति सिंहासन पर अधिष्ठित थे। क्या वही कामार्णवके पितृव्य थे?

† धारवाड़का पुरातत्व देखनेसे समझ पड़ता कि १०५५ ई०को गङ्गवाड़ी देशमें चालुक्यराज सोमेश्वरके पुत्र षष्ठ विक्रमादित्यका शासन था। बम्बई प्रान्तीय बेलगांव जिलेके कलभावि ग्राममें राममन्दिरके सम्मुख किसी शिलाफलक पर एक खोदित लिपि है। उसमें लिखा है कि गङ्गवाड़ी विषयके अन्तर्गत कादलवल्लीके कुसुदवाड़ ग्राममें गङ्गराज सेगोड़ पेर्म्मनदिने जिनेन्द्रभवन बनाया था। यह गङ्गवाड़ी बहुत दिनसे गङ्गराजाओंकी लीलाभूमि रहा। उक्त खोदित लिपिमें गंगमहामण्डलेश्वर कञ्चरसकी कथा भी उल्लिखित है। कादलवल्लीका वर्तमान नाम कादरल्ली और कुसुदवाड़का कलभावि है। दोनों स्थान सम्पगांवसे प्रायः ४ कोस दक्षिण अवस्थित हैं।

‡ गांगेयराजाओंके ताम्रशासनमें कड़ेसे लगी हुई तांबेकी वैसी ही वृषभमूर्ति है।

* सम्भवत: उक्त समुद्रतीरवर्ती गोकर्णके आदर्शसे १म कामार्णवने गञ्जाम जिलेके महेन्द्रगिरि पर स्वतन्त्र गोकर्णस्वामीकी प्रतिष्ठा की होगी। क्योंकि चोड़गंग और अपरापर गांगेय राजाओंके ताम्रशासनमें महेन्द्रगिरिस्थ गोकर्णस्वामीकी स्तुति लिखी हुई है। महेन्द्र गिरि देखो।

और ५८७ ई०से प्रथम कीर्त्तिवर्मासे पराजित हुये थे। लेकिन ऐहोल शिलालिपिसे ज्ञात होता है कि ६०८ ई०में ये द्वितीय पुलिकेशीसे पराजित हुए थे। विनयादित्यके हरिहरस्तम्भसे मालूम पड़ता है ये पश्चिमीय चालुक्य राजाओंके परम्परागत भृत्य थे। इसी चालुक्य वंशमें प्रथम कीर्त्तिवर्मा पुलिकेशी तथा विनयादित्य राजा हुए थे। परन्तु यह निश्चय है कि प्राचीन समय भारतके पश्चिम भागमें गङ्गय वंशके राजा राजत्व करते थे। उनमें से प्रधान प्रधान राजाके नाम और राजत्वकाल इस तरह हैं—हरिवर्मा २४८ ई०से, विष्णुगोप २५१ई०से, अविनीत कोंगनी ४५४से ४६६ ई०तक, दुर्विनीत कोंगनी ७६२से ७७६ तक।

महिसुरके तलकाड़, सिवार और शिवरपत्तन शिलालिपियोंसे ज्ञान पड़ता है कि गंगवंशके प्रथम राजा श्रीपुरुष पृथ्वीकोंगणी रहे। लेकिन ये किस कालमें राजा हुए थे, इसका पूरा पूरा हाल पता नहीं लगता है। श्रीपुरुषके बाद इस वंशमें सिवमार नामके एक और राजा हो गये हैं। इन्हीं दोनों राजाओंके समयसे गंगवंशका विवरण आरम्भ हुआ है। इन दोनोंमेंसे एक राष्ट्रकूटके राजा ध्रुवसे पराजित हो कर ७८३ ई०में बन्दी हुए थे। ध्रुवके मर जाने पर भी उनके लड़के तृतीय गोविन्दने उन्हें बहुत दिनों तक कारागारहीमें रखा था। जब ये छोड़ दिये गये तब पूर्वी चालुक्य राजा नरेन्द्रमृग राजने गंगवंशके राजाओंके साथ बारह वर्ष घनघोर लड़ाई की, अन्तमें चालुक्य राजाकी जीत हुई। महिसुरकी इगली शिलालिपिसे जाना जाता है कि सत्यवाक्य कोंगनीवर्म गंगवंशमें एक वीर राजा हो गया था। इरिया नामके एक कोई प्रसिद्ध राजा उस समयमें राजत्व करते थे। सत्यवाक्यसे इरियाको बहुत काल तक लड़ना पड़ा था। इरियाके बाद उनका लड़का राचमल उत्तराधिकारी हुआ। महिसुरके आतकुर शिलालेखसे पता लगता है कि ८४० ई०में सत्यवाक्य कोंगुनीवर्माने राचमल पर चढ़ाई की और उसे मार डाला था।

धारवार जिलेको हेयाल शिलालिपिसे ज्ञात होता है। बूतग नामके एक वीर राजा गङ्गय वंशमें हो गये थे। इन्होंने राष्ट्रकूटके राजा अमोघवर्षकी लड़कीसे विवाह किया था। दहेजमें उन्हें पुलीगड जिला मिला था। कुछ कालके बाद राष्ट्रकूटके राजा तृतीय कृष्णकी अनुमतिसे बूतगने चोलवंशके राजा राजादित्यका प्राणनाश किया, क्यों कि राजादित्य उस समय तृतीय कृष्णका कट्टर शत्रु हो गया था। इस पुरस्कारमें कृष्णने बूतगको चार और जिले प्रदान किये। इस समय बूतगने अपनी उपाधि 'महाराजाधिराज' की रक्खी। बूतगको अमोघवर्षकी लड़कीसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम रक्कगङ्ग रखा गया। बूतगको 'कल्लब्बे' दूसरी स्त्रीमें भी सत्यवाक्य कोंगुनीवर्म नामक एक पुत्र था। गङ्गवंशमें य बहुत प्रभावशाली राजा हो गये थे। ये ८६४ ई०में राजगद्दी पर आरूढ़ हुए थे। इन्हें परमेश्वर और महाराजाधिराजकी उपाधि मिली थी।

इनके समयमें गङ्गराज्य बहुत दूर तक फैल गया था। इस समय चालुक्यराजाका भी प्रताप बहुत बढ़ गया था। इन्होंने राष्ट्रकूट और गंगवंशके राजा पर आक्रमण किया। इस बार इन्होंने सफलता प्राप्त नहीं की, फिर दूसरी बार ८७३ ई०में चतुर्थ इन्द्र कृष्णके पोतेने उन पर धावा किया और राष्ट्रकूटके राजा द्वितीय कक्कको पराजय किया। गंगवंशके राजा सत्यवाक्यवर्मने चालुक्य राजाके साथ घमसान युद्ध कर उन्हें हरा दिया और राष्ट्रकूटके राजाके बहुतसे राज्य भाग अधिकार कर स्वतन्त्र हो गये। सत्यवाक्यवर्मको चामुण्डराय नामक एक प्रधान मन्त्री थे जिन्होंने 'चामुण्डराय पुराण' लिखा है और जिनकी प्रार्थनासे जैनसिद्धान्तका प्रसिद्ध ग्रन्थ गोम्मटसार योमटाचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्तीने लिखा।

महिसुरके सेन्गूर शिलालेखसे पता लगता है कि गंगवंशके अन्तिम राजा गंगापरमर्दी थे। ये १०२२ ई०में राजत्व करते रहे। इनके समयमें चोल राजाने पुनः आक्रमण कर गंगराजाको इस बार पूर्णरूपसे पराजित किया और उनके बहुतसे देश अपने राज्यमें मिला लिये। क्रमशः इस वंशकी आशा तथा स्वाधीनता सदाके लिये जाती रही।

बेलगावके अन्तर्गत कलमावि ग्रामकी खोदित लिपि देख करके प्रवतत्वविद् फ्लिटसाहब अनुमान करते कि वह ख्रृष्टीय ११वीं शताब्दीकी लिखी हुई है। सुतरां

यह भी माना जा सकता है कि दाक्षिणात्यके उत्तर-पश्चिमांशमें ई० ११वीं शताब्दी तक गंगमहामण्डलेश्वर विद्यमान थे। उक्त शिलाफलक पढ़नेसे मालूम पड़ता कि उन्होंने शेष दशामें जैन धर्म अवलम्बन किया था

पूर्वीय शाखा।

सम्भवतः नरेन्द्रमृगराजके पूर्व ही कामार्णव प्रभृति पांचों भाई गंगवाड़ी विषय परित्याग करके कलिंग-राज्यमें उपस्थित हुए। चोडगंगके ताम्रशासनमें लिखा है—

कामार्णवने चारों भाइयोंके साथ चालुक्यराज बालादित्यको पराजय करके कलिङ्गराज्य लिया और 'जन्तवुरम्' नामक स्थानमें राजधानी स्थापन करके राजत्व किया। उन्होंने अनुज दानार्णवको कण्टकवर्त्तुरकन्धर, गुणार्णवको आम्बवाड़ि, मारसिंहको सोदामण्डल और वज्रहस्तको कण्टकवर्तनो दी थी।

१म कामार्णव जिस जन्तापुर-नगरमें राजत्व करते थे, सम्भवतः वह स्थान मन्द्राज प्रेसिडेन्सीके विशाख-पत्तन जिलेमें गजपतिनगरके अन्तर्गत "जयन्ती अग्रहार" नामक ग्रामके निकट होगा। जन्तावुर संस्कृत जयन्ती-पुर शब्दका अपभ्रंश है। वर्तमान जयन्ती अग्रहारमें अनेक प्राचीन शिलालिपियां दृष्ट होती हैं। वर्तमान विशाखपत्तनके नाना स्थानोंमें गांगेयराजाओंकी कीर्तियां विद्यमान हैं।

वर्तमान गञ्जाम जिलाके अन्तर्गत श्रीमुखलिङ्गम्, श्रीकूर्मम् प्रभृति नानास्थानोंसे इस वंशीय नृपतियोंकी बहुतर शिलालिपियां निकली हैं। सिवा इसके विशाख-पत्तनसे आविष्कृत चोड़गङ्गके तीन ताम्रशासन, कटक जिलाके अन्तर्गत कन्दु पटनासे आविष्कृत २य नृसिंहदेवके २ ताम्रशासन और पुरीसे आविष्कृत ४थं नृसिंहदेवके भी ३ ताम्रशासन मिले हैं। फिर समसा-मयिक मुसलमान इतिहाससे इस गङ्गराजवंशका जो परिचय चला है, उसीके साहाय्यसे पूर्व शाखाका संक्षिप्त इतिहास लिखा गया है।

पहले ही लिखा जा चुका है, कि १म कामार्णवने दानार्णवको "कण्टकवर्त्तुरकन्धर" नामक स्थान प्रदान किया। यह स्थान गोदावरी जिलाके तनुकु तालुकके अन्तर्गत कण्टेरु जैसा अनुमित होता है। आज भी कण्टेरु नामक प्राचीन ग्राममें प्राचीन देवालय और खोदित शिलाफलकादि देख पड़ते हैं। दानार्णवके पुत्र २य कामार्णव "नगरम्" नामक स्थानमें राजत्व करते थे। गोदावरी जिलाके नर्सापुर तालुकमें पुरातन दुर्ग वि-शिष्ट 'नगरम्' नामक एक पुराना गांव है। सम्भवतः यही पहले कामार्णवकी राजधानी थी। मुसलमानोंके उपद्रवसे वह नगर छिन्नभिन्न बिगड़ गया है, किलेको छोड़ करके पूर्व गौरवको कोई भी चीज नहीं।

बोध होता है कि कामार्णवके समय कलिङ्ग राज्य उत्तरकी गञ्जाम् और दक्षिणको कृष्णा नदीके उत्तर तीर पर्यन्त विस्तृत था। चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें १म कामार्णवके पुत्रादिका उल्लेख नहीं है। किन्तु उत्कल-राज २य नरसिंहदेवके बड़े ताम्रफलक एवं शाठग श्लोकमें लिखा है कि कामार्णवके पुत्र पौत्रोंने बहुदिन राजत्व किया था। वह यदि प्रकृत हो, तो अनुमान किया जा सकता है कि १म कामार्णवके पुत्रपौत्र गोदावरीके उत्तरांश और दानार्णवके वंशधर प्रथम गोदावरीके दक्षिणांशमें राजा थे। १०४० शकाङ्कित चोड़गङ्गके ताम्रशासनमें लिपिबद्ध हुआ है—

"स राजराजः प्रथमं जयश्रियं, पतिंवरां द्रमिलराजगोत्रजे।
द्विराजमानानघ राजसुन्दरीमुद्वहन्नर्थ्यतमं भुजस्ममाम्॥
यस्मा वेंगी सपदि परिभ्रांशोऽधीन्दिराधाम्
चौडस्यासन्नति विजयादित्यस्मी निमग्नम्।
कापन्नानां परमशरणं राजराजो विधिनं
लक्ष्मीभाजं सुचिरमकरोन्नपश्चिमायां दिशायाम्॥"
(१०४० शकाङ्कित ताम्रशासन ८४।८८ श्लोक)

(चोड़गङ्गके पिता) उक्त राजराजने प्रथम द्रमिल युद्धमें जयश्रीरूप कामिनीको लाभ किया था। फिर (राजेन्द्र) चोड़राजकी कन्या राजसुन्दरीका पाणिग्रहण किया। हठात् भाग्यविप्लव उपस्थित होने पर द्वितीय सुरपुरी जैसी वेङ्गी छोड़ करके चोड़राजरूप विपुल समुद्र-में निमग्नप्राय विजयादित्यको शरणागतवत्सल राज-राजने पश्चिम दिक्में लक्ष्मीयुक्त किया था।

उक्त प्रमाण द्वारा समझ पड़ता कि पहले राजराज सुरपुरी जैसे वेङ्गी नगरमें राजत्व करते थे। फिर विज-यादित्यको राजधानी छोड़ गये।

राजराजके श्वसुर महाराजाधिराज राजेन्द्र चोल (अपर नाम कुलोत्तुङ्ग) प्रदत्त शिलाफलक और ताम्रशासनमें लिखा है कि उनके सदीय पितृव्य (पद) विजयादित्यने वेङ्गी राज्य पाया था। इन विजयादित्यने ९९५से १००० शक पर्यन्त वेङ्गीमें राजत्व किया।* सुतरां सम्भवतः ९९५ शकके पूर्व गङ्गवंशीय राजराज और उनके पितृपुरुष वेङ्गी राज्यमें राजा रहे होंगे। गोदावरी जिलामें ऐलार तालुकके अन्तर्गत 'वेंगी' नामक स्थानमें जो ध्वंसावशेष पड़ा है, उसमें "सुरपुरी महत्" राजराजकी परित्यक्त वेंगीका कुछ परिचय मिलता है। उसीसे ३ कोस दूर प्राचीन कीर्तिशाली तड़िकल पूति ग्राममें अति पुरातन खोदित शिलालिपि शोभित गांगेय स्वामी या "गङ्गेश्वर" स्वामीका मन्दिर † है। वह देवालय आज भी गङ्गवंशीयोंका परिचायक स्वरूप वर्त्तमान है।

प्राचीन ताम्रशासन और पुरातन खोदित शिलाफलक पढ़नेसे समझ पड़ता, किसी समय कलिङ्गनगरमें गङ्गवंशी राजाओंकी राजधानी रही। गञ्जाम प्रदेशमें वंशधरा नदी जहां जा करके समुद्रसे मिली है, ठीक उसी स्थान पर कलिङ्गपत्तन ‡ नामक नगर और बन्दर है। प्राचीन कीर्ति और ध्वंसावशेष देखनेसे वही कलिङ्ग राजाकी राजधानी प्राचीन कलिङ्गनगर जैसा स्थिरीकृत हुआ है। ताम्रशासनसे कलिङ्गनगराधिष्ठित निम्नलिखित कई एक गांगेय राजाओंका नाम और परिचय मिला है—

५१ संवत्सरमें अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, ८७ से १४२ संवत्सर तक राजसिंह इन्द्रवर्मा, १८३ संवत्सरमें गुणार्णवके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, २५४ संवत्सरमें अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा, ३०॥ संवत्सरमें राजेन्द्रवर्माके पुत्र अनन्तवर्मा, ३५१ संवत्सरमें देवेन्द्रवर्माके पुत्र सत्यवर्मा।

उक्त संवत्सर मानो कोई विशेष अब्दवाचक है और उक्त राजाओंका "वृषभलाञ्छन" चिह्नित ताम्रशासन पाठ करनेसे यह कलिङ्गविजेता १म कामार्णवके वंशधर जैसे समझ पड़ते हैं। पहले बतला चुके हैं कि दानार्णवके वंशधर कलिङ्गके दक्षिणांश वेंगी राज्यमें राजत्व करते थे। अब मालूम होता है कि २य कामार्णवके वंशधर कलिङ्गके उत्तरांशमें अधिष्ठित रहे। किन्तु इसका कोई भी प्रामाणिक निदर्शन नहीं, यह संवत्सर किस समयसे आरम्भ हुआ। केवल इतना ही अनुमान लगता है कि १म कामार्णव कर्तृक बालादित्यके पराजय और उन्हीं के राज्यारम्भसे "गांगेय शक" चला होगा।*

चोडगङ्गके १०४० शकाङ्कित ताम्रशासनसे गङ्गवंशीय राजाओंका शासनकाल मिलाने पर साधारणतः २६० शक अथवा ७२८ ई० निकलता है। उस समय १म कामार्णवका राज्याभिषेक हुआ और सम्भवतः गांगेय संवत्सर चला होगा। ऐसा होने पर कह सकते कि १म कामार्णव ७२८से ७६४, देवेन्द्रवर्माके पिता ७७८, देवेन्द्रवर्मा ७७८, तत्पुत्र सत्यवर्मा ७७८, राजसिंह इन्द्रवर्मा ८१८, इन्द्रवर्मा § ८५२से ८७४ और दूसरे अनन्तवर्माके पुत्र देवेन्द्रवर्मा ९८७ ई०को विद्यमान थे। देवेन्द्रवर्माके बाद संवत्सराङ्कित दूसरे किसी भी गांगेयराजका ताम्रशासन आज तक आविष्कृत नहीं हुआ। किन्तु इतना अनुमान किया जाता है कि देवेन्द्रवर्माके वंशधर बहुत दिनों फिर कलिङ्ग नगरके सिंहासन पर टिक न सके। उत्कलराज ३य नरसिंहदेवके बृहत्ताम्रफलक (१४ श्लोक) में लिखा है—चोडगङ्गके पितामह भिन्न राज्य जय करके त्रिकलिङ्गनाथ हुए। चोडगङ्गने १०४० शकाङ्कित ताम्रशासनानुसार ९९९ शक या १०७८ ई०को वज्रहस्तने राज्यारोहण किया। सम्भवतः उसी समय अथवा उससे अनतिकाल पीछे इन्होंने कलिङ्ग

* Hultzsch, South Indian Inscriptions Vol I p 32

† Sewell's List of the Antiquarian Remains in the Presidency of Madras Vol I p 30

‡ यह कलिङ्गपत्तन अक्षा० १८° ३′ उ० और देशा० ८४° ९′ १०″ पू०में चिकाकोलसे १८ कोस उत्तर अवस्थित है। आजकल यह नगर एक बन्दर जैसा प्रसिद्ध है। यहां एक बालेश्वर भी है।

* मालूम होता है कि दानार्णवके वंशधरोंने इस संवत्सरको ग्रहण नहीं किया।

§ इन्द्रवर्माके १२८ संवत्सराङ्कित ताम्रशासनमें लिखा है कि माघ और पूर्णिमाके चन्द्रग्रहणोपलक्षमें यह मिलान हुआ। ज्योतिष शास्त्रकी गणना द्वारा मालूम पड़ता है कि ८५६ ई० १९ जनवरीको माघकी पूर्णिमाके दिन यह चन्द्रग्रहण लगा था।

नगर अवधि अपने राजामें मिला लिया। राजा वज्रहस्तके पुत्र राजराज वेंगी छोड़ करके कलिंगनगर गये। इसी स्थान पर उनके पुत्र अनन्तवर्मा चोड़गंग ९९९ शक कुम्भराशि, शुक्लपक्ष, रविवार, रेवती नक्षत्र और मिथुन लग्नमें राजपद पर अभिषिक्त हुए। (अनन्तवर्मा चोड़गंगका राजशासन)

माटला पञ्जीके साहाय्यसे देशीयों और विदेशीयोंने उड़िया, बंगला तथा अङ्गरेजी भाषामें उड़ीसाका जो इतिहास छपाया, उसमें लिखा है कि १०५४ शकमें १२ आश्विनको 'चोड़गंगने उत्कल जीता था।' परन्तु वह बात ठीक नहीं।

१०४० शकाङ्कित ताम्रशासनमें लिखित है—चोड़गङ्गने पश्चिममें वङ्गी और पूर्वमें उड़ीसा तक जय किया।

चोड़गंगके १००३ शकको प्रदत्त ताम्रशासनमें वेंगी और उत्कलकी कोई बात नहीं। इससे समझ पड़ता कि १००३ शक अर्थात् १०८१ ई०के पीछे और १०४० शक वा १११८ ई०के पहले चोड़गंगने उक्त दोनों प्रदेश जय किये होंगे। यही उत्कलके गङ्गवंशीय प्रथम नरपति थे।*

अंगरेजी भाषामें उड़ीसाका इतिहास लिखनेवाले हण्टर साहबने कहा है—

वंशावलीके मतानुसार महादेवके औरससे अपर गंगा (गोदावरी) के गर्भमें चुरंग वा सारंगदेव† ने जन्म ग्रहण किया था।

इनके मतमें गंगवंशीय उन्हीं राजाने पुरीके जगन्नाथ मन्दिरमें मादलापञ्जी लिखनेकी रीति चलायी। यह देवीके एकमात्र उपासक थे। परन्तु इसके मूलमें कुछ भी सत्य नहीं। चोड़गंगके तीन और कटक जिलासे नवाविष्कृत ३ प्रस्थ सुवृहत् ताम्रफलकोंमें चोड़गंगके पिताका नाम राजराज लिखा हुआ है। चोड़गंगके पूर्व पुरुष और चोड़गंग अपने आप शैव थे तो, किन्तु पीछे यह एक परम वैष्णव हो गये—उक्त ताम्रफलक पाठसे स्पष्ट प्रमाणित होता है। उत्कलराज २य नरसिंहदेवके सुवृहत् ताम्रशासनके २७वें श्लोकमें ऐसा लिखा है—यह विशाल भूमण्डल जिसका चरण, अन्तरीक्ष नाभि, दशदिक् कर्ण, सूर्यचन्द्र नयनयुगल, और स्वर्गलोक मस्तक है—उस त्रिलोकव्यापी परमेश्वर पुरुषोत्तमके वासयोग्य मन्दिर बनानेको कौन व्यक्ति समर्थ होगा! यही विचार करके मानो पूर्वतन नृपतियोंने पुरुषोत्तमका मन्दिर निर्माण करनेमें हस्तक्षेप नहीं किया। महाराज गंगेश्वर (चोड़गंग) ने पुरुषोत्तमका मन्दिर बना अपना कीर्तिस्तम्भ चिरस्थायी किया है। फिर इन्होंने मन्दराधिपतिको पराजय करके उनका नगर जला डाला।

ष्टार्लिङ्ग, हण्टर तथा राजा राजेन्द्रलालके मतमें और उत्कल भाषामें रचित उड़ीसाके सब इतिहासोंको देखते राजा अनङ्गभीम देवने ही जगन्नाथका प्रसिद्ध मन्दिर बनाया। किन्तु अब देखते हैं कि राजा अनङ्गभीमसे बहुत पहले उत्कलके प्रथम गांगेयराज चोड़गंगने उत्कलविजयकीर्ति स्थायी करनेके लिये सर्वप्रथम जगन्नाथ देवका सुप्रसिद्ध मन्दिर निर्माण कराया था। पुरी मन्दिरके तत्कर्तृक मादलापञ्जी संरक्षणकी कथा आज तक प्राप्त किसी ताम्रशासन वा तत्सामयिक ग्रन्थमें नहीं है। उपर्युक्त ऐतिहासिकोंने मादला पञ्जीका प्रमाण दे करके जो बातें लिखी हैं, गांगेयराज द्वितीय नरसिंह देवके नवाविष्कृत २१ ताम्रफलक संयुक्त ३ प्रस्थ शासनपत्रों और अपरापर प्राचीन शासन शिलालिपियोंमें क्या वंशावली, क्या राजत्वकाल, क्या घटना वैचित्र्य किसीके भी साथ कोई ऐक्य नहीं। गांगेय राजाओंने स्व स्व ताम्रशासन* और शिलालिपिमें जिस समय और जिस राजसंक्रान्त कथाको लिखा है, सामयिक प्रमाणकी भांति अपरापर प्रमाण अपेक्षा समधिक प्रामाण्य है। किन्तु ऐतिहासिकोंने

* चोड़गंगके ताम्रशासनकी मिकले बहुत दिन हो गये। परन्तु कोई स्थिर कर न सका कि वही उत्कलके गंगवंशीय प्रथम राजा थे। अब कटक जिलेके २य नरसिंह देवके ताम्रफलकयुक्त तीन ताम्रशासन आविष्कृत हुए हैं। उनसे समझ सके कि उक्त अनन्तवर्मा चोड़गंगदेव उत्कलके १म गांगेयराज-जैसे रहे।

† यह भ्रमात्मक सारंग नाम पदके दाक्षिणात्यके पुरातत्त्वविद् राबर्ट सिवेल छन्द' सारंगधरचरितवर्णित राजराजपुत्र सारंगधर जैसा अनुमान करते हैं। किन्तु यह अनुमान भी सम्पूर्ण भ्रमात्मक है।

* उत्कल शब्दमें ष्टार्लिंग, हण्टर प्रभृतिके इतिहास साहाय्यसे गंगवंशीय राजाओंका जो विवरण और राजत्वकाल लिखा है, अब उसका भाव जैसा समझ पड़ता है। इस गांगेय शब्दमें जो लिखते, समधिक प्रामाणिक जैसा वाध्य समझते हैं।

मादलापञ्जी और वंशावलीके माहात्म्यसे जो बातें कही हैं, किसी अंशमें सामयिक लिपिसे नहीं मिलतीं। ऐसी अवस्थामें उन्हें आधुनिक अथवा अप्रामाणिक जैसा अवश्य मानना पड़ेगा।

२य नरसिंहदेवके ताम्रशासन (३७ श्लोक) मतानुसार महाराज चोड़गङ्गके स्वर्गारोहण करने पर १०६४ शक (११४२ ई०)को तत्पुत्र महावीर कामार्णव* सिंहासन पर अभिषिक्त हुए थे। इन्होंने १० वर्ष राजत्व किया। फिर गङ्गराज राघवने राज्य पाया। महाराज चोड़गङ्गने सूर्यवंशकी राजकन्या इन्दिराका पाणिग्रहण किया था। उन्हींके गर्भमें राघवका जन्म हुआ। महाराज राघव† १५ वर्ष राजा रहे। फिर २य राजराजका राजत्व हुआ। इन्होंने चोड़गङ्गकी अपर महिषी चन्द्रलेखाके गर्भसे जन्म लिया था। उनका शरीर अतिशय प्रकाण्ड रहा। इनके सम्बन्धमें जो कुछ घटित हुआ, मानव प्रकृतिके पक्षमें नितान्त असम्भव है। राजराजने २५ वर्ष प्रबल प्रतापसे राजत्व किया।

उक्त राजराजके पीछे कनिष्ठ सहोदर अनियङ्क वा अनङ्गभीम सिंहासन पर बैठे। उनका राजत्वकाल १० वर्ष मात्र था।‡ फिर ३य राजराज राजा हुए। अनियङ्क वा अनङ्गभीमके औरस और वामलदेवीके गर्भसे उनका जन्म था। यह यौवनकालको ही राज्यके अधीश्वर हुए। उन्होंने ११ वर्ष मात्र राज्यलक्ष्मीका उपभोग किया। §

३य राजराजके मरने पर सहुण देवी गर्भजात तत्पुत्र अनङ्गभीम राजपद पर अभिषिक्त हुए।* ऐतिहासिक हार्लिङ्ग, हण्टर और राजा राजेन्द्रलालके मतमें इन्हीं अनङ्गभीमने ११९६ ई०को पुरीमें प्रसिद्ध जगन्नाथ देवका मन्दिर निर्माण कराया। किन्तु यह बात ठीक नहीं। क्योंकि उस समय अनङ्गभीम उत्कलके राजा नहीं हुए, इनके पितामह अनियङ्क वा अनङ्गभीम उत्कलमें राजत्व करते थे। उन्होंने भी प्रसिद्ध जगन्नाथ देवका मन्दिर नहीं बनाया, उनसे बहु पूर्व चोड़गङ्गने यह मन्दिर निर्माण कराया था।

कटक जिलाके अन्तर्गत महासिंहपुरमें चाटेश्वर मन्दिरसे बृहत् शिलाफलक निकला है। इसमें लिखा है कि चोड़गङ्गके एक पुत्र अनङ्गभीमने उक्त शिव-मन्दिर प्रतिष्ठित किया। शिला फलकके २१वें छन्दमें लिखा है—

"[illegible]"

इससे अनुमित होता है कि चोड़गङ्गके पुत्रने, जो उस शिलाफलकमें अनङ्गभीम लिखे गये हैं, पुरातन मन्दिर संस्कार कराके नया करा दिया था। सम्भवतः इन्हीं अनङ्गभीमके समय पुरुषोत्तमका मन्दिर संस्कृत अथवा सम्पूर्ण हुआ होगा। राजराजपुत्र ३य अनङ्गभीमके समय यह नहीं बना।

राजराजके पुत्र ३य अनङ्गभीम विद्वान्, शास्त्रदर्शी, महावीर, पण्डितप्रिय और परम वैष्णव थे। समस्त कलिङ्ग राज्य उनका अधिकारभुक्त रहा। इनके राज्यमें कलिका दबदबा न था (मानो सत्ययुगका आविर्भाव हो गया था)। उन्होंने प्रबल पराक्रमसे ३४ वर्ष राजत्व किया। २य नरसिंहदेवके ताम्रशासनको छोड़ कटकके सम्भ्रामके अन्तर्गत कन्तपन्तनसे ३ कोस पश्चिम अवस्थित "श्रीकूर्मम्" नामक ग्राममें श्रीकूर्मस्वामीके प्रसिद्ध मन्दिरके १०म स्तम्भ पर ११३४ शकको खोदित अनङ्गभीमकी अनुशासन लिपि है।† उसमें भी महाराज

*ऐतिहासिक हार्लिङ्ग और हण्टर साहबके मतानुसार चोड़गङ्गके पीछे तत्पुत्र [illegible] ११४२ ई०को राजा हुए। [illegible] [illegible] ११ वर्ष मात्र राजत्व किया। किन्तु [illegible] [illegible] नहीं है।

†[illegible] राजराजका नाम नहीं मिलता। [illegible] [illegible] है। [illegible] नहीं लिखते, दोनों [illegible] है।

‡[illegible] अनियङ्क वा अनङ्ग भीमका नामोल्लेख नहीं है।

§[illegible] राजराजके [illegible] २८ वर्ष राजत्वकाल लिखा है।

* हार्लिङ्ग साहबके मतसे इन्हीं अनङ्गभीमने ११९० ई०को राज्यारोहण किया।

† दुःखका विषय है यह अनुशासन लिपि भी अब तक किसी जगहसे प्रकाशित नहीं हुई।

अनंगभीमके शौर्य, वीर्य और दानादिकी विस्तर प्रशंसा लिपिबद्ध हुई है।

२य अनंगभीमके औरस और कस्तूरादेवीकी गर्भसे महाराज नरसिंह देवने जन्म ग्रहण किया था। उनका "प्रतापवीरश्री" उपाधि रहा।* यह बाल्यकालसे ही एक योद्धा हो गये थे। गञ्जामके अन्तर्वर्ती श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके निकट ११७२ शकके उत्कीर्ण शिलाफलक पढ़नेसे समझ पड़ता कि प्रतापवीरश्री नरसिंहदेवका शत्रुविनाशी बाहुयुगल सुदृढ़ रखनेको साहनमल्ल नामक एक व्यक्ति देवोद्देशसे भूमिदान करते थे। मालूम होता है कि उसी समय महावीर नरसिंह देव युवराज पदपर अभिषिक्त हुए। अपने पिता अनङ्गभीमके मरने पर नरसिंह देवने ३३ वर्ष तक राजत्व किया।

प्रसिद्ध मुसलमान ऐतिहासिक मिनहाज उद्-दीनका 'तबकात-इ-नासरी' नामक सामयिक इतिहास पढ़नेसे समझ पड़ता है—

६४१ हिजरी (१२४३ ई०) को जाजनगर राजने जब लक्ष्मणावती राज्यमें दौरात्म्य उठाया, (गौड़ाधिप) मलिक तुगरिल तुगान् खांने जाजनगरके अभिमुख अपना पैर बढ़ाया। इस युद्धयात्रामें ऐतिहासिक मिनहाज उद्दीन उनके सहचर थे। जाजनगरकी सीमा कतासिनमें युद्ध हुआ। पहले हिन्दुओंने पृष्ठप्रदर्शन किया था। पीछेको इखुके जंगलसे ५० अश्वारोही और २०० पदातिं आ करके अकस्मात् मुसलमान सैन्य पर टूट पड़े। इसमें विस्तर मुसलमान योद्धा मरे। गौड़ाधिप प्राण बचा करके लक्ष्मणावती नगर भाग गये। उन्होंने दिल्लीके बादशाहसे साहाय्य मांगा था। सुलतान अला-उद्-दीन् महमूद शाहने अयोध्याके सुबेदार तैमूर खां किरान्को ससैन्य जाजनगरके विपक्ष लक्ष्मणावती भेजा। जाजनगरकी फौजने पहले फखर्-उल्-मुल्कको हराया और लखनउ प्रदेश दबाया था, फिर वह लक्ष्मणावती नगरके प्राकारके पार्श्वमें उपस्थित हो घोर युद्ध करती रही। अन्तको अयोध्या-सैन्यके आगमनका संवाद पा करके वह लौट पड़ी।†

मिनहाजने लिखा है कि जाजनगरके सेनापतिका नाम 'सावनता' था। यह जाजनगर राजके जामाता रहे।* मुसलमान ऐतिहासिक वर्णित जाजनगर ‡ उत्कलका याजपुर है। सावन्ता नाम नहीं, उपाधि है। संस्कृत भाषाका सामन्त शब्द चलती उड़ियामें सावन्ता कहलाता है। मिनहाजने सावन्ताको जाजनगरराजका जामाता जैसा लिखा है। परन्तु हमारे विवेचनामें विदेशी लेखकने भ्रमक्रमसे पुत्रको जामाता समझ करके ऐसा लिख दिया होगा। उस समय याजपुर वा समस्त कलिंग राज्यमें महाराज अनंगभीम अधिष्ठित थे। उन्होंके पुत्र प्रतापवीर १म श्रीनरसिंह देव रहे। २य नरसिंह देवके ताम्रशासनमें लिखित है—

"राढावरेन्द्रयवनीनयनाञ्जनाश्रुपूरेण दूरविनिवेशितकालिमश्रीः।
तद्विप्रलम्भकरणात् तरिलतरंगा गंगापि नूनमसुना यमुनाधुनाभूत्॥"

राढ़ और वरेन्द्र प्रदेशको यवनियां स्वामिविरहमें सर्वदा रोदन करती थीं। उनके अश्रुजलसे जो नयनाञ्जन धौत हो करके गङ्गामें मिलता, उससे गंगाका भी पानी काला पड़ जाता था। इस भयानक काण्डको देख करके मानों गंगा तरंगहीन हुई। (वास्तविक उस समय नरसिंहके ही लिये) गंगा यमुना बन गयीं।

उक्त श्लोक द्वारा स्पष्ट समझ पड़ता है कि प्रतापवीर श्रीनरसिंह देवने ही पिताके राजत्वकाल लक्ष्मणावती आक्रमण करके सैकड़ों मुसलमान सिपाहियोंको मारा और वही राढ़ तथा वरेन्द्रको यवनियोंको स्वामिविरहके हेतु थे। इन प्रतापवीरसे और भी कई बार मुसलमान लड़े, किन्तु उनके प्रवल प्रतापसे उड़ीसा जीत न सके। एकावलीरचयिता कविवर महिम भट्ट उन नृसिंहदेवके सभापण्डित थे।

२य नरसिंहदेवके १२१७ शकान्वित दो वृहत् ताम्रशासन पढ़नेसे मालूम पड़ता है कि ११९६ शक वा १२७४ ई०को उत्कल राज्यमें एक नूतन संवत् चला। सम्भ-

* कलिंगपत्तनसे प्राय: २ कोस दूर अवस्थित श्रीकूर्म स्वामी मन्दिरके पास ११७२ और १२०१ शकान्वित खोदित शिला फलकमें प्रतापवीर श्री उपाधियुक्त नरसिंह देवका नाम दृष्ट होता है।

† Raverty's Tabakat-i-Nasiri, p. 738-39

* Raverty's Tabkat-i-Nasiri, 765.

‡ कोई कोई इस जाजनगरको त्रिपुरा राज्य जैसा अनुमान करते हैं, किन्तु वह ठीक नहीं पड़ता S. H. Blochmann's Contribution to the Geography aud History of Bengal (in Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. XLII. pt 1 p. 237.)

यत १म नरसिंहदेवने फिर राढ़ और वरेन्द्राधिपतिका पराजय करके १२७४ ई०में नूतन सवत् चलाया था और अपनी कीर्ति अक्षय करनेको कोणार्कका * प्रसिद्ध सूर्य-मन्दिर बनाया था। मुसलमान ऐतिहासिक फरिश्ताने उक्त घटना न बतला करके लिखा है कि ६७८ हिजरी (१२८० ई०) को तुगरील खाँ जाजनगर आक्रमण करके विस्तर अर्थ और एक शत हस्ती जीत ले गये। बोध होता है कि उन्होंने पहली घटना दबा डालनेके लिये शेषोक्त विवरण कल्पना किया होगा। इन्होंने १६०८ ई०को अपना ग्रन्थ बनाया। किन्तु उनसे बहुत पहले २य नरसिंहदेवके ताम्रशासनमें १म नरसिंहकतृक राढ़ और वरेन्द्र आक्रान्त होनेकी बात लिखी जा चुकी थी। प्रतापवीर श्रीनरसिंहदेवके बाद उनके औरस और माल्यचन्द्रात्मजा सीतादेवीके गर्भजात भानुदेव राजसे अभिषिक्त हुए। इन्होंने १० वर्षमात्र राजत्व किया। इन्हीं भानुदेवकी सभामें साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ पञ्चाननके पिता चन्द्रशेखर कवि रहते थे।

उनके पीछे २य नरसिंहदेव राजा हुए। इन्होंने भानुदेवके औरस और चालुक्य कुलसम्भूता जाकल्ल देवीके गर्भसे जन्म लिया था। २य नरसिंहदेवके ही प्रदत्त २१ ताम्रफलकयुक्त ३ प्रस्थ सुवृहत् ताम्रशासन मिले हैं—

इनमें पहला—

'[illegible]" स्वराजाव्द [illegible] विजयसमये "[illegible] सोमवारे।'

दूसरा—

"[illegible]" "[illegible]" [illegible] दिवारे 'स्वराजाव्द [illegible]'

और तीसरा—

'[illegible]"

प्रदत्त हुआ है।

प्रथम और दूसरे ताम्रफलकमें स्वराजका २१या और २२या अङ्क पढ़नेसे पहले उनका अधिकार काल जैसा समझ पड़ता है किन्तु पहले पहल चोडगङ्ग और तत्पुत्र कामार्णवका अभिषेकशक तथा प्रत्येक राजाका अधिकारवर्ष स्पष्ट लिखा रहनेसे मालूम पड़ता है कि १२१७ शकको २य नरसिंहका राज्यारोहण हुआ। सम्भवत "स्वराज" निर्देशक अङ्क १म नरसिंह देवके समय ११८६ शकको चला होगा। पूर्वोक्त गाङ्गेय शकके साथ इसका कोई भी सौसादृश्य नहीं आता।

२य नरसिंहके प्रथम ताम्रशासनमें नवराज्य विजय की कथा मिलती है। श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके बहुतसे खोदित शिलाफलकोंमें यह वीरारि वीरवर श्रीनृसिंह देव नामसे लिखे गये हैं। इन शिलाफलकोंमें शेष समयकी लिपि १२७१ शकको अङ्कित हुई। साहित्य-दर्पणकार सुप्रसिद्ध विश्वनाथने इन्हीं नृसिंहदेवकी सभाको उज्ज्वल किया था।

२य नरसिंहदेवके मरने पर तत्पुत्र चोडदेवीके गर्भ जात ४य भानुदेव सिंहासन पर बैठे। उनका उपाधि श्रीवीरादिवीरश्री था। पुरीके ताम्रशासनमें लिखा है कि भानुदेवके साथ गयास उद्‌दीनका घोर युद्ध हुआ। गयास उद्‌दीनने स्वीय मुसलमान इतिहासमें लिखा है कि गयास-उद्‌दीन तुगलकके पुत्र अलिफ खाँने औरस जय करके जाजनगर घेरा था।

२य भानुदेवके पीछे लक्ष्मीदेवीके गर्भजात तत्पुत्र ३य नृसिंहदेवने राज्य पाया। इनका उपाधि प्रताप वीर श्रीनरनारसिंह था। ३य नरसिंहके औरस गङ्गा म्बिकाके गर्भसे ३य भानुदेवने जन्म लिया। यह प्रताप वीर श्रीभानुदेव उपाधि ग्रहण करके पितृसिंहासन पर बैठे। उनके राजत्वकालको व गाधिप हाजि इलियसने हाथी पकड़नेके लिये जाजनगर अधिकार किया था। विजय नगर राधिपने वीर भानुदेव पर धावा मारा। उनके मरने पर चालुक्यकुलसम्भूत वीरादेवीगर्भजात प्रिय पुत्र ४र्थ नरसिंहदेवने राज्य लाभ किया। उनका

* २य नरसिंहदेवके सुवृहत् ताम्रफलकमें यह स्थान कोणार्कके नामसे वर्णित है। सम्भवत यह मन्दिर १२०४ ई० आरम्भ और १२७८ को पूरा हुआ।

† पूर्वोक्त श्रीकूर्मस्वामी मन्दिरके ११म शिलाफलकमें खोदित सवत् ११११ शक को प्रथम भानुदेवके मन्त्रीका दानपत्र उट्टङ्कित है। इससे अनुमान लगाते हैं कि ११५२ शक अर्थात् १२३१ ई०को राजा अनङ्गभीमके राज्यारोहणकी पहले दक्षिणांशमें भान [illegible] नामक [illegible] कोई राजा राजत्व करते थे। किन्तु वो यह नरसिंहदेवके पुत्र पूर्ववर्णित भानुदेवसे अलग थे। हानिय और इम्प्रस्तोहवने उक्त नरसिंहके पीछे और नरसिंह या वैसरो नरसिंहका नाम लिखा है। परन्तु यह नाम वर्णित राजाओंके प्रत्न लिपी भी तालव समझ देता नहीं पड़ता है।

उपाधि 'चतुर्द शभुवनाधिपति वीर श्रीनृसिंहदेव' था। आईन अकवरीमें लिखा है कि मालवके २य मारिनृपति खुशाल-उद्-दीन हुसेनने वणिकके वेशमें जाजनगर जा कौशलक्रमसे राजाको पकड़ लिया। फिर राजाको कितने ही वढ़िया हाथी देने पर सम्मत होनेसे उन्होंने छोड़ दिया। फिर इस वंशके किसी दूसरे राजाका नाम शिलाफलक वा ताम्रशासनमें नहीं मिला। मादला-पञ्जीके मतानुसार इसके वाद भानुदेव चतुर्थ राजा हुए। वह मतवाले थे। उनके मरने पर मन्त्री कपिलेन्द्रदेव उक्त राज्य अधिकार किया। २८३ पृष्ठमें गांगेय-वंशको तालिका और उनका राजत्वकाल दिया गया है।

गाङ्गेरुक (सं० क्ली०) गोरख इमलीका वीज।

गाङ्गेरुकी (सं० स्त्री०) गोरक्षतण्डुला। इसका पर्याय—नागवला, झषा, ह्रस्व गवेधुका, खरवल्लरिका, विश्ववेटा और गोरक्षतण्डुली है। इसका गुण मधुर, कषाय, शीतल, पित्त और कफनाशक है। (चरक सूत्रस्थान १० अ०)

गाङ्गेरुही (सं० स्त्री०) गाङ्गे तटादौ रोहति रुह-क। नागवला।

गाङ्गेष्ठी (सं० स्त्री०) गाङ्गे नदीतटे तिष्ठति स्था-क यत्वम् अलुक्समास। लताविशेष, एक प्रकारकी लता जो गङ्गा तट पर प्रायः उत्पन्न होती है। कटशकरा।

गाङ्गोद्य (सं० पु०) गांगो गङ्गा सम्बन्धी उद्यः कर्मधा०। गंगास्रोत, गंगाकी धारा।

गाङ्ग्य (सं० त्रि०) गाङ्गे गंगाकूले भवः यत्। गङ्गाकूलादि सम्बन्धी, गंगासम्बन्धी। (ऋग्वेद ६।४५।३१)

गाच (हिं० पु०) फुलवर सूती कपड़ा।

गाछ (हिं० पु०) १ छोटा पेड़, पौधा। २ वृक्ष। ३ एक तरहका पान जो वंगालके उत्तरमें होता है।

गाछी (हिं० स्त्री०) १ वाग। २ खजूरकी मोलायम कोंपल सुखाने पर यह तरकारीके काममें आता है।

गाज (हिं० स्त्री०) १ गर्जन, गरज। २ विजली गिरनेका शब्द। ३ वज्र, विजली।

गाजना (हिं० क्रि०) १ गर्जन करना, चिल्लाना। २ प्रफुल्ल होना, प्रसन्न होना।

गाजर (सं० स्त्री०) गाजं मदं राति रा-क। शालगम, गजरा, इसके पौधेकी पत्तियां धनियाकी जैसी होती हैं लेकिन लम्बाईमें बड़ी हैं। इसकी जड़ लाल रङ्ग लिये अधिक मोटी होती है। यह उष्ण होती है और घोड़ेको बहुत खिलाई जाती है। दीन मनुष्य और उनके बच्चे छोटी और नरम जड़को बड़े चावसे खाते हैं। इसकी सूखी जड़के आटेसे हलुवा प्रस्तुत किया जाता जो खानेमें बहुत सुस्वादु लगता है। यह कार्तिक और अगहन मासमें बोया जाता है। इसको तरकारी, अचार तथा मुरब्बे भी बनाये जाते हैं।

गांजा (फा० पु०) रोगन, पाउडर।

गाजियावाद—युक्तप्रदेशके मेरठ जिलेकी एक तहसील। यह जिलेके दक्षिणपश्चिम पड़ती है। यह अक्षा० २८° ३२´ तथा २८°५६´ उ० और देशा० ७७° १३´ एवं ७७° ४६´ पू० के मध्य अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: २०६५१८ है। गङ्गा और यमुनाकी नहरसे खेत सींचे जाते हैं। इसका क्षेत्र फल ४८३ वर्गमील है। प्रधान नगर गाजियावाद अक्षा० २८° ४०´ उ० और देशा० ७७° २६´ पूर्वके वीच मेरठ शहरसे ७ कोस दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। इसकी लोकसंख्या प्रायः ११२७५ है। दक्षिणापथके प्रसिद्ध नवाव सलावत जङ्गके भाई गयास-उद्दीनने १७४० ई० को यह नगर स्थापन किया और गाजी-उद्दीन् नगर नाम रख दिया था। रेलवे राह खुलनेके समय वोलनेके सुभीतेको उक्त नाम वदल करके 'गाजियावाद' वना लिया गया है। १८५७ ई०को सिपाहीविद्रोहके समय एक दल अंगरेजी सेनाने यहां विद्रोहियोंको हराया था। यहां दुग्धेश्वरनाथ देवका मन्दिर विद्यमान है। यह मन्दिर २२५ वर्ष पहले वना था। सिवा इसके ६ बड़ी मसजिदें भी हैं। रेल लाइन खुल जाने पर यहां वहुत सराएं वन गयी हैं। दुग्धेश्वरनाथ व्यतीत और भी कई एक मन्दिर खड़े हैं।

गाजी-उद्-दीन खां फीरोज १म, इनका असली नाम मीर शहाव उद्-दीन गोरी था। सम्राट् वहादुर शाहके समय इनको गुजरातकी सूवेदारी मिली। इन्होंने दिल्लीमें अजमेर दरवाजेसे वाहरको एक मदरसा लगाया था। १७१० ई०को अहमदावादमें इनका मृत्यु हुआ। इनकी लाश दिल्ली ले जा करके दफनायी गयी। सुविख्यात निजाम आसफ जाह इनके लड़के थे।

वीरसिंह

- १ कामार्णव (१म) (३६ वर्ष)
- २ दानार्णव (४० वर्ष)
  - ३ कामार्णव (२य) (५० वर्ष)
    - ४ रणार्णव (५ वर्ष)
      - ५ वज्रहस्त (२य) (१५ वर्ष)
      - ६ कामार्णव (३य) (१९ वर्ष)
        - ७ गुणार्णव (गुण्डमहाराज)
          - ८ वज्रहस्त (३य) (४३ वर्ष)
- गुणार्णव (१म)
- मारसिंह
- वज्रहस्त

८ वज्रहस्त (३य) (४३ वर्ष)

- ९ जितांकुश (१ वर्ष)
- (?)
  - १३ कलिगलांकुश (१२ वर्ष)
- १० गुण्डम १म (७ वर्ष)
- ११ कामार्णव ४र्थ (३५ वर्ष)
  - १४ वज्रहस्त (४र्थ) नामान्तर अनियङ्कभीम (३५ वर्ष)
- १२ विनयादित्य (३ वर्ष)

१४ वज्रहस्त (४र्थ) नामान्तर अनियङ्कभीम (३५ वर्ष)

- १५ कामार्णव = महिषी वैदुम्बराजकन्या विनयमहादेवी (½ वर्ष)
  - १८ वज्रहस्त (३य) = रानी नगमा (शक सं० ९६ में अभिषेक, राज्य ३३ वर्ष)
    - १९ राजराज = महिषी राजेन्द्रचोल की पुत्री तथा चालुक्यराज कुलोत्तुंग की भगिनी राजसुन्दरी
      - २० चोडगङ्ग नामान्तर गंगेश्वर (शक सं० ९९८ १०६९)
- १६ गुण्डम (२य)
- १७ मधुकामार्णव (१९ वर्ष)

२० चोडगङ्ग नामान्तर गंगेश्वर

- = १म कस्तूरिकामोदिनी
  - २१ कामार्णव ७म वा मधुकामार्णव (शक सं० १०६१ १०७८)
- = इन्दिरा
  - २२ राघव (शक १०७८ १०९२)
- = चन्द्रलेखा
  - २३ राजराज २य (शक १०९२ ११२२) = महिषी अहिरमदुहिता रानी... भगिनी सुरमा
- = ...री
  - २४ अनियङ्कभीम वा अनंगभीम २य
    - २५ राजराज (३य) (शक ११२०-११३३) = ... वा ...देवी
      - २६ अनङ्गभीमदेव = कस्तूरीदेवी (शक ११३३ ११६०)
        - २७ नृसिंहदेव = ... कन्या ...देवी (शक ११६० ११८६)
          - २८ वीरभानुदेव (१म) = ... (शक ११८६ १२०१)
            - २९ नृसिंह वा वीरप्रतापनृसिंह (२य) = ...देवी (शक १२०१ १२२८)
              - ३० वीरभानुदेव (२य) = ... (शक १२२८ १२५०)
                - ३१ नृसिंह वा प्रतापनृसिंह (३य) = ... (शक १२५० १२७५)
                  - ३२ वीरभानुदेव (३य) = ... (शक १२७० १३०१)
                    - ३३ नृसिंहदेव (४र्थ) (शक १३०१ १३४६)
                  - ...
- = ...
  - ... = ... (शक १११२ ११२०)

गाजी-उद्-दीन खाँ फीरोज जङ्ग २य, निजाम-उल-मुल्क आसफ जाहके पुत्र। नादरशाहके ईरान लौट जाने पर यह अमीर-उल्-उमरा उपाधि प्राप्त हुए १७५२ ई० १६ अकतूबरको दिल्ली जाते समय राह पर और गावादमें इनका मृत्यु हुआ। कोई कोई कहता कि विषप्रयोगसे उनका विनाश साधन किया गया।

गाजी उद्दीन खाँ ३य, इमाद-उल्-मुल्क—यह निजाम-उल्-मुल्कके पौत्र और २य गाजी-उद्दीनके पुत्र थे। पर इन्होंने उन्हींका नाम और उपाधि धारण किया, और वजीर हो करके सम्राट् अहमदशाहको अन्धा बना कारामें डाल दिया। पीछेको इनके द्वारा २य आलम-गोरके प्राण विनष्ट हुए। इन्होंने गन्ना बेगमसे शादी की। गन्ना बेगम देखो। १७७५ ई०को गन्ना बेगमकी मृत्यु हुई। फिर इनकी अवस्था भी मन्द पड़ गयी। मसीर-उल्-उमरा नामक ग्रन्थमें लिखा है कि १७७३ ई०को वह दक्षिणापथ गये और मालवमें एक जागीर प्राप्त हुए। फिर सूरत जा और अंगरेजोंके पास थोड़े दिन रह करके उन्होंने मक्काको प्रस्थान किया। गुलजार इब्राहीम नात काव्यग्रन्थमें भी इनका वृत्तान्त वर्णित हुआ है। उसमें इनका नाम निजाम लिखा है। इन्होंने फारसी और रेखता, शायरी, अरबी और तुर्की भाषाकी गजलें और फारसी जबानमें दीवान और मसनवीका रचना किया। कोई कोई कहता कि कालपीमें उनका मृत्यु हुआ।

गाजी-उद्-दीन—एक नगर। गाजियाबाद देखो।

गाजी-उद्-दीन हैदर—अवधके नवाब वजीर। १८१४ ई० ११ जुलाईको अपने पिता नवाब शहादत अली खाँका मृत्यु होने पर यह अवधके नवाबी पद पर प्रतिष्ठित हुए। शहादत अली मरते समय धनागारमें बहुतसा रुपया पैसा छोड़ गये थे। १८१४ ई० १४ अकतूबरको गाजी-उद्-दीन हैदर गवर्नर-जनरल लार्ड मेयरसे मिले। इन्होंने कम्पनीको १ करोड़ रुपया दे डालना चाहा था, परन्तु गवर्नर जनरलने, उसे दान स्वरूप न ले ऋण-जैसा ग्रहण करने पर स्वीकृत हुए और नेपाल युद्धके लिये और भी १ करोड़ रुपया कर्ज मांगने लगे। नवाब साहब यह अतिरिक्त रुपया पहले देने पर राजी न हुए, परन्तु पीछे-को रसीडण्ट लेफटेनेण्ट करनल बेलीके उद्योगसे वह रुपया भी मिल गया। १८१८ ई० १७ अप्रेलके "समाचारद र्पण" में लिखा है—'तीन चार वर्ष हुए अंगरेजों-के नेपाल राजासे लड़ करके नेपाल राज्यका तृतीय भाग ले लेने पर लखनऊके नवाबने कम्पनीसे अपना राज्य-संलग्न नेपालीय देश मांगा था। उसमें कम्पनीको एक करोड़ रुपया दे करके उन्होंने वह नेपालीय देश कम्पनी-से ले लिया।'

१८१४ ई० १२ नवम्बरको इन्होंने तात्कालिक गवर्नर लार्ड मेयर या मारक्विस आफ हेष्टिङ्गस साहबको लिख भेजा था—'आपने मुझे पिटामें शासन पर स्थापन किया है। सुतरां मैं उनकी राज्यसम्पत्तिका अधिकारी हूं। वह राज्य मेरे सम्पूर्ण कर्तृत्वाधीन रहना चाहिये, एक भी परगना या गांव मेरे शासनसे विच्छिन्न न हो। फिर मैंने राजामें सुविचारके लिये ४ अदालतें कायम की हैं। इस लिये मेरे आत्मीय, अनुचर वा भ्रातृवर्गके मध्य कोई यदि कलकत्ते जा करके मेरे सम्बन्धके कोई अभियोग लगावे, तो वह फैसलेके लिये मेरे राजाको ही भेजा जावे। ऐसा न होनेसे मेरा सम्मान प्रतिपत्ति सभी बिग-ड़ेगा।' गवर्नर जनरलने उत्तर दिया कि—न्यायसङ्गत विषयोंमें अंगरेज गवर्नमेण्टकी शर्तें न तोड़ करके उनके अभिप्राय अनुसार काम किया जावेगा। बेली साहब उस समय लखनऊके रसीडण्ट रहे। गवर्नमेण्टके सेक्रे-टरी एडाम साहबने उन्हें लिखा नवाब साहबको बाहर-में स्वाधीन राजा-जैसा बतलाया जावेगा, वस्तुतः उन्हें अंगरेज गवर्नमेण्टके अधीन रहना पड़ेगा। (Dacoity in Excelsis, p. 61.)

नवाब गाजी उद्दीन वजीर थे। १८१९ ई०९अक-तूबरको इन्होंने अबुल मुजफ्फर मैज-उद्-दीन शाह जमान गाजी उद्-दीन हैदर बादशाह नाम धारण किया। उसके उपलक्षमें एक बड़ा दरबार लगा था। इनके अभि-षेक कालको कोई ३० हजार रुपयेके मोती लुटाये गये। फिर अंगरेज इन्हें राजा कहने लगे।

गवर्नर जनरल लार्ड आमहर्ष्टके समय नवाबके साथ अंगरेजोंका अच्छा मेलजोल रहा। उन्होंने १८२५ ई० १४ जुलाई और १८२६ ई० २३ जूनको जो खरीता पहुं-

चाया, पहलेमें राजा और दूसरेमें बादशाह जैसा इनका सम्बोधन आया है। इन खरीतोंके पढ़नेसे समझ पड़ता है कि अफगानिस्तानके युद्धके लिये लखनऊके नवाबने अंगरेज गवर्नमेण्टको एक करोड़ पचास लाख रुपया ऋण दिया था। रेसीडेण्ट रिकेटस साहब और नवाब मातम उद्दौला मुख्तियार उल मुल्क दोनोंके ही उद्योगसे यह कार्य सम्पन्न हुआ। इनके आगामीर नामक मन्त्री पर राजकुमार नसीर उद्दीनकी बड़ी नाराजगी रही। इन्होंने सोचा कि मेरे मरने पर लड़का नवाब हो करके जरूर ही आगामीरको मार डालेगा। इन्होंने अंगरेजोंको अनुरोध किया कि वैसा हो न सके। गवर्नमेण्ट ५) रु० सैकड़े सूद पर १ करोड़ रुपया कर्ज ले करके आगामीरको बचाने पर सम्मत हुई। इन्होंने व्यवस्था की मेरे मरने पर उस रुपयेका आधा सूद आगामीरको मिलेगा और बाकी दूसरे कर्मचारियोंको बंटेगा। मशहूर विशप हैबर साहबने १८२४-२५ ई०को अवध प्रदेश भ्रमण करके एक ग्रन्थ प्रकाश किया है। इसमें उस समयके अनेक वृत्तान्त लिखित हुए हैं। साहबने नवाबकी खूब तारीफ की है। १८२७ ई० १९ अक्तूबरको गाजी उद्दीन हैदरका मृत्यु हुआ। उस समय इनका वयस ५८ चान्द्र वत्सर था। इन्होंने लखनऊमें मोतीमहल, मुबारक मञ्जिल, शाह मञ्जिल, चीनीबाजार, छत्र मञ्जिल, शाहनजफ और कदम रसूल प्रभृतिको निर्माण किया।

गाजीखां—दिल्लीसम्राट बाबरके समयके एक सामन्त। यह लाहौर अञ्चल शासन करते थे। फिर इन्होंने सैन्य संग्रह करके बाबरके विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किया। बाबरने ससैन्य जा जब इनको परास्त करके मिलवतका दुर्ग अधिकार किया, इन्होंने वहांसे पलायन करके पर्वतका मार्ग लिया। इनके पुस्तकागारमें बहु मूल्य पुस्तक संगृहीत रहे।

गाजी खां चक—काश्मीरके एक राजा। इन्होंने अकबर बादशाहके सेनापति कासिम बहादुरको युद्धमें हराया था। मयासरो रहीमी नामक फारसी ग्रन्थमें इनका विस्तृत वर्णन दिया हुआ है।

गाजी खां तनूरी—अकबर बादशाहके एक अफगान कर्मचारी। इन्होंने भाटगढ़के जमीन्दारोंको अकबरके विरुद्ध उभारा था। भाटके राजा रामचन्द्रको कर देने और विद्रोहियोंके आत्मसमर्पण करनेको कहला भेजा था, परन्तु राजाके उस पर राजी न हो युद्धका उद्योग करने पर अकबर फौजके साथ उन पर चढ़ चले। उन्होंने राजाको परास्त करके इनको मार डाला।

गाजी खां बदख्शी—एक मुसलमान सेनापति और कवि। इनका प्रकृत नाम गाजी निजाम था। यह मुल्ला इसाम उद्दीन इब्राहीमके पास कानून पढ़ने पर अपेक्षाकृत बड़े विद्वान् हो गये। बदख्शाके सुलतान सुलेमानने खुश हो करके इनको 'गाजीखां' उपाधि दिया था। हुमायुंके मरने पर सुलेमानने फौजके साथ काबुल जा करके उनके नोकर मुनीमको घेर लिया। फिर उन्होंने इनको मुनीमके पास भेज उनको आत्मसमर्पण करनेको कहलाया था। मुनीम खांने इन्हें कई रोज अपने पास रख करके खूब मजेसे खिलाया पिलाया। इन्होंने तुष्ट हो सुलेमानको प्रतिनिवृत्त होने पर अनुरोध किया था। वह तदनुसार बदख्शा चले गये। फिर यह सुलेमानका काम छोड़ भारत आ खांपुरमें सम्राट् अकबरसे मिले। उन्होंने इन्हें नाना उपहार दे करके पहले किसी लेखकके काम पर रखा था। पीछेको बुद्धिमत्ताका परिचय मिलने पर यह एकहजारी फौजदार बनाये गये और कई एक लड़ाइयोंमें वीरत्व देखाने पर 'गाजी खां' उपाधि प्राप्त हुए। इन्होंने मानसिंहके अधीन सामदिकर्की सेनाके नायक बन करके राणा कीकरसे युद्ध किया और उसके बाद बिहारके विद्रोहको दबा दिया। अकबरशाहके बाद २८ पञ्चम राजत्वको (९९८ हजरी) ७० वर्षके वयस पर अयोध्या नगरमें इनका मृत्यु हुआ। इन्होंने बहुतसी किताबें बनायी थीं।

गाजीपुर—युक्त प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० २५° १९´ तथा २५° ५४´ उ० और देशा० ८३° ४´ एवं ८३° ५८´ पू० के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तर आजमगढ़ और बलिया, पश्चिम जौनपुर जिला, दक्षिण शाहाबाद एवं बनारस और पूर्वको बलिया तथा शाहाबाद जिला है। क्षेत्रफल १४९८ वर्गमील लगता है। लोकसंख्या प्रायः ९१३८१९ है।

गाजीपुर शहरमें इस जिलेकी सदर अदालत है। इस-

के बीचसे गङ्गा बहती और उसके दोनों ओर विशेष उर्वरा भूमि देख पड़ती है। इसका उत्तरांश सरयू और गोमती नदीके बीच पड़ता है। उक्त दोनों नदियां जिले के पश्चिम भागमें जा करके मिल गयी हैं। दक्षिण भाग मे कर्मनाशा और गङ्गा है। इसका उत्तरांश दक्षिणांश की अपेक्षा ऊंचा है। इस उच्च भाग पर छोटी छोटी नदियोंने प्रवाहित हो करके पार्श्वस्थ भूमिको कृषि कार्योपयोगी बना दिया है। निम्न भूमिमें करायल नामकी एक मट्टी होती है। उसमें पानी न देनेसे भी रबी तयार हो सकती है। यहां मुसलमानोंमें सुन्नियोंकी संख्या अधिक है। इस जिलेमें कई नगर बसते हैं।

स्थानीय प्रवाद ऐसा है कि यहां गाधि नामक किसी राजाका गाधिपुर दुर्ग बना था। उन्हींने गाधीपुरनगर भी स्थापन किया। किन्तु वर्तमान गाजीपुर नाम मुसलमानोंका रखा हुआ है। पहले उसको गजपुर कहते थे। जो हो—इसमे सन्देह नहीं कि वह अति प्राचीन नगर है। शहरकी बगलमें नदी किनारे मट्टीके भीतर अनेक पुरातन इष्टक तथा मृण्मय पात्र और स्थान स्थान पर बहुत पुरातन खोदित शिलालिपियां देख पड़ती हैं। भितरी नामक ग्राममें समुद्रगुप्तके समयकी शिलालिपि निकली है। उन्होंने कन्नौज तक अपना राज्य बढ़ाया था। यहां पर मिले हुए समस्त मूल्यवान् स्तम्भों और शिलालिपियोंसे समझ पड़ता है कि ई०से बहुत पहले बुद्धदेवके समयकी सैयदपुरसे बक्सर तक समस्त प्रदेश समृद्धिशाली रहा। ईशासे २५० वर्ष पहले प्रसिद्ध अशोक राजाके राजत्व समयको इस देशमें बौद्ध धर्म फैला। अशोक राजाके निर्मित प्रस्तरस्तम्भ और स्तूप देखे जाते हैं। चौथीसे ७वीं ई० शताब्दी तक मगधके गुप्तवंशने यहां राजत्व किया उस वंशीय राजाओंके बनाये हुए स्तम्भ तथा मुद्रादि स्थान स्थान पर मिलते हैं। गाजीपुरसे ६॥ कोस दक्षिण जमुनिया तहसीलके लाटिया नामक क्षुद्र ग्राममें ५०० फुट लम्ब और २०० फुट चौड़े ईंटके टूटे स्तूपकी पश्चिम ओर प्रस्तरका एक खम्भा है। (Fuhrer's Monumental Antiquities and Inscriptions, p. 232) किसी किसी मुद्रा और शिलालिपिमें श्रीगुप्तकुलेन्द्रका नाम मिला है। (Cunningham's Archaelogical Survey Reports, XXII, p. 98.) ६३० ई०को जब चीन-परिव्राजक युएनचुयाङ्ग यह प्रदेश देखने आये, बौद्ध और हिन्दू दोनोंका प्रादुर्भाव रहा। उन्होंने लिखा है कि 'चेनचु' राज्यकी सीमा चारों ओर १६५ कोस है। (Cunningham's ncient Geography of India, p. 439,) गङ्गातीर पर उसकी राजधानी स्थापित है। अधिवासीवर्ग समृद्धिशाली तथा भूमि उर्वरा है।

युएनचुयांगके जाने पीछे हिन्दुओंने युद्ध करके बौद्धोंको देशसे निकाला था। उसी समय भर नामक पराक्रान्त लोगोंने यहां अपना आधिपत्य फैलाया। उत्तर-पश्चिममें जब मुसलमान अपना राज्य बढ़ाने लगे ब्राह्मण और राजपूत भाग करके भर जातीय राजाओंके ही आश्रयमें आ पड़े। वहां धीरे धीरे इन राजाओंके पाससे जमीन ले करके पीछेको जमीन्दार बन गये। ११९३ ई०को कुतुब-उद्-दीनने उत्तर-पश्चिम प्रान्तसे बङ्गाल तक मुसलमानी राज्य फैला दिया। यह प्रान्त भी अवश्य ही उनके राज्यका अन्तर्भुक्त हुआ। कहते हैं कि १३३० ई०में सम्राट मुहम्मद तुगलकके समय मसऊद नामक किसी सामन्तने गाजीपुरके राजाको रणमें मार डाला। सम्राट्ने खुश हो करके इन्हें 'गाजी' उपाधि और निहत राजाका राज्य दिया था। इन्हीं मसऊदने उसका नाम गाजीपुर रखा। १३९४से १४७६ ई० तक यह प्रदेश जौनपुरके सर्की राजाओंके अधीन रहा सर्की राजवंश दिल्लीके लोदी वंशीय बादशाहोंकी अधीनता परित्याग करके स्वाधीन बना था। १५२६ ई०को सम्राट् बाबरने यह प्रदेश अधिकार कर लिया। फिर बकसरको लड़ाईमें शेरशाहने हुमायुंको हरा इसको हस्तगत किया अकबरके समय यह स्थान मुगलोंके अधिकार पर इलाहाबाद सूबेमें लगता था। उसके बाद इसको लखनऊके नवाबने अपने राज्य अवधमें मिला लिया। १७३८ ई०को नवाब शहादत खांने शेख अब्दुल्ला नामक किसी व्यक्तिको इसका शासनकर्ता बनाया था। यहां पर उनका बनाया हुआ चेहल-सतून (४० स्तम्भयुक्त भवन), इमामबाड़ा, मसजिद, चहारदीवारी, किला और नवाब बाग नामक उद्यान विद्यमान है। (Fuhrer's Monumental Antiquities etc. p. 233.) नवाबबागके

भाग हो उनकी कब्र है। जलालाबाद और कासिमाबाद में उनकी बनी की हुई मसजिदका भग्नावशेष आज भी देख पड़ता है। अब्दुल्लाके मरने पर उनके पुत्र फजल अली राजा शासन करते रहे। वाराणसीके राजा बलवन्तसिंहने उनको निकाल करके गाजीपुर प्रदेश अपने राज्यमें मिलाया था। १७७० ई०की बलवन्त सिंहके मरने पर चैतसिंह राजा हुए। लखनऊ नवाबके सम्मति क्रमसे गाजीपुर चैतसिंहके ही अधिकारमें रहा। १७७५ ई०को नवाब आसफ उद्दौलाने बनारस राज्य अंगरेजोंको भेंट किया था। शेषमें १७८१ ई०को वारन हेष्टिंगसने चैतसिंहको सिंहासनसे उतार दिया। उसी समयसे यह अंगरेजोंके अधीन हो गया। १८०५ ई०को यहां भारतके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिसका मृत्यु हुआ। उसी घटनाके स्मरणार्थ 'कर्नवालिस मानुमेण्ट' नामको इमारत बनायी गयी। इसमें १२ खम्भे और ऊपर एक गुम्बज है। इसकी कुरसी जमीनसे प्राय ८ हाथ ऊंची और सङ्गमरमर पत्थरसे जड़ी हुई है। मध्यस्थलमें प्रस्तरखोदित लार्ड कार्नवालिसकी अर्ध मूर्ति है। उसको एक ओर हिन्दू और दूसरी ओर मुसलमान प्रतिकृति है। उत्तरको एक गोरा और एक सपाही ऐसा बना, मानो शोकाकुल खड़ा हुआ है। सिपाहियोंके बलवेको लहर यहां भी आयी थी, परन्तु शीघ्र हो उतर गयी।

अंगरेजोंके अधिकारमें आने पीछे १७८८ ई०को गाजीपुरमें जमीनका जो बन्दोबस्त किया गया था, आज भी चिरस्थायी रूपमें चला आता है। १८४० ई०को भूमिके स्वत्वास्वत्व और करादिको नूतन व्यवस्था की गयी। बाकी मालगुजारीके लिये कितनी ही जायदाद बिकी थी। १८५८ ई०को जमीनके बारेमें नया बन्दोबस्त होने पर उनके पुराने हकदारोंके साथ नये हकदारोंका कितना ही झगड़ा और मुकदमा लगा।

गाजीपुर ही अपने जिला और तहसीलका प्रधान नगर है। यह २५ ३५ उ० और देशा० ८७ ३८ ३४ पू०में बनारससे २० कोस उत्तर पूर्व पड़ता है। लोकसंख्या प्राय ३८४८२ है। यहां चीनी, तम्बाकू, मोटा कपड़ा और गुलाबजल तैयार होता है। उक्त प्रदेशको सब अफीम यहां लायी जाती है। वहांको गवर्नमेण्टका अहिफेन विभाग यहां अवस्थित है। गाजीपुरमें एक म्युनिसपालिटी भी है। यहांको सज्जीमट्टीसे 'कारबोनेट अव सोडा' बनता है। गाजीपुरमें शोरा भी प्रस्तुत होता है। चोचाकपुरमें कार्तिकी पूर्णिमाको गङ्गा आनोपलक्ष पर प्राय १०००० मनुष्य समवेत होते हैं।

युक्तप्रदेशके गाजीपुर जिलेकी सदर तहसील। यह अक्षा० २५ २३ एवं २५ ५३ उ० और देशा० ८३ १६ तथा ८३ ४३ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ३८१ वर्ग मोल और लोकसंख्या प्राय २६६८७० है। इसमें एक नगर और ८२४ ग्राम हैं। मालगुजारी कोई २६६००० और सेस ४८००० होगी। गङ्गा आदि कई नदियां उत्तरपश्चिमसे दक्षिण पूर्वको बहती हैं।

युक्त प्रदेशके फतेहपुर जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २५ ४१ तथा २५ ५५ उ० और देशा० ८० ३१ एवं ८१ ४ पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल २७७ वर्ग मील है। असोथर राजाके पूर्व पुरुष घरत्सिंहने इस नगरको स्थापन किया था। यहां एक किला भी बना है। लोकसंख्या प्राय ८१२२२ है।

गाजीबेग तरखां मिर्जा—सिन्धुदेशके एक मुसलमान शासनकर्ता। यह मयहर बड़ोज खांके वंशसम्भूत थे। मुहम्मद जानीबेग इनके पिता रहे। पिताके मरते समय इसका वयस १७ वत्सरमात्र था। इन पर बादशाह अकबरको बड़ी मिहरबानी रही। उन्होंने छोटी उम्रमेंही इन पर सिन्धुदेशका शासनभार डाला। परन्तु मिर्जा ईसातरखां नामक आत्मीयके इनके विरुद्ध खड़े हो जाने पर यह शासन कार्य न कर सके, उनके लिये चेष्टा करने लगे। फिर खुसरु खां चिगरीसके साहाय्यसे इन्होंने प्रतिवादी ईसातर खांको परास्त करके सिन्धुदेशसे निकाल दिया। इन्होंने उसी सूत्रसे अनेक सैन्य संग्रह किया और फिर सम्राटके विपक्षमें अस्त्र धारण करनेका उद्योग लगाया। १०११ हिजरीको बादशाहने इनका विद्रोह दबानेके लिये विहारके शासनकर्ता सैयद खां और शाहजादे शाद उल्लाको भेजा था।

यह जब सम्राट्की अधीनता स्वीकार करके दिल्ली पहुंचे, अकबरने इनको क्षमा करके फिर सिन्धुदेशका

शासनकर्ता बना दिया। अकबरके मरने पर शाहजहांने बादशाह हो करके सिन्धु प्रदेशके साथ साथ मुलतानका शासनभार भी अर्पण किया। फिर उन्होंने इन्हें सातहजारी सेनापतिका खिताब बख्शा था। हिरात शासनकर्ता हुसेन खाँके कन्दहार घेरने पर यह उनसे लड़नेको भेजे गये। उसी समय इनको 'फर्जन्द' उपाधि मिली थी। ईरानके सुलतान शाह अब्बासने इन्हें अपने पक्षमें लानेकी विशेष चेष्टा की और कितनी ही खिलअत भेज दी। परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि उन्होंने अपने प्रभुका पक्ष छोड़ा था। ७ वत्सर राजशासन करके १०१८ फसलीको यह एकाएक मर गये। कोई कोई उस घटनाको जहांगीर राजत्वके ७म वर्षमें हुई बतलाता है। खुसरो खाँके पुत्र लुत्फ उल्लाके साथ इन्होंने किसी कारणसे निर्दय व्यवहार किया था। वह तो के अनुमानसे उन्हींके जहर देनेसे इनका प्राण गया। इनके सन्तानादि नहीं हुआ। पिताकी भांति यह भी एक कवि रहे। सङ्गीतमें भी इन्हें विशेष अनुराग था। यह सब प्रकारके बाजे बजा सकते थे। इनके पास कई कवि रहते थे। यह बड़े पान खानेवाले और विलासी थे।

गाजी मिहदी—मुसलमानोंका एक धर्मसम्प्रदाय। इनकी अपनी सम्पत्ति नहीं रहती। सम्प्रदायस्थ लोग स्त्री तथा परिवार छोड़ अपनी अपनी सम्पत्ति ले करके एक साधारण भाण्डार बनाते हैं। उसीसे इनका खर्च चला करता है। यह धर्ममें इतने उन्मत्त रहते, किसीको कोई बुरा काम करता देखते तो मार डालने तकमें नहीं चूकते।

गाजी मियां—मुसलमानोंके उपास्य देवता। यह पांच पीरोंमेंसे एक होते हैं। युक्त प्रदेशके निम्नश्रेणीस्थ मुसलमान इनकी विशेष भक्ति करते हैं। कहीं कहीं इन्हें गजनी दूल्हा और सालाका-चिनोला भी कहते हैं। बहुतसे स्थानों पर ज्येष्ठमासको इनके उद्देशसे नानाविध उत्सवादि हुआ करते हैं। किसी लम्बे बांसको सिरे पर कुछ बाल बांध करके उठाये घूमते फिरते और उन्हें इनका छिन्नमस्तक कहते हैं। सुननेमें आया है कि विवाहके दिवसको धर्मके लिये उन्होंने अपना प्राण गंवाया था। इसीसे उस उत्सवको 'गाजी मियांकी शादी' भी कहा जाता है। बहुतसे हिन्दू भी इस उत्सवमें सम्मिलित होते हैं। ठीक तौर पर कोई नहीं बतला सकता वह किस समयके व्यक्ति थे। कोई कोई कहता कि वह महमूद गजनवीके भतीजे थे, ४०५ हिजरीको अजमेरमें उत्पन्न हुए। ४२४ हिजरीको १८ वर्षकी अवस्थामें बहरायच नगरके हिन्दू राजा साहबदेवके साथ लड़नेमें वह मारे गये।

गाञ्जावदर—भोलपुरी नदी पर अवस्थित एक छोटा करद राज्य। यह आजकल जूनागढ़के अधीन है। बाबरिया वंशके अहीरोंका वास यहां अधिक है। लोकसंख्या लगभग १५० है।

गाञ्जिकाय (सं० पु०) वर्तिक पक्षी।

गाटर (हिं० स्त्री०) जुआठेकी एक लकड़ी जिसके दोनों ओर बैल जोते जाते हैं।

गाड़ (हिं० स्त्री०) १ गर्त्त, गड़हा। २ अन्न रखनेके लिये पृथ्वीके भीतर खुदा हुआ गड़हा। ३ नोल आदिके कारखानेमें पानी रखनेका गड्ढा। ४ कूएंकी ढाल। ५ खत्ता। ६ खेतकी मेंड़। ७ आड़।

गाड़ना (हिं० क्रि०) १ पृथ्वीमें गर्त्त खोद कर किसी पदार्थको उसमें रखकर मट्टी डाल देना, तोपना। २ जमाना। ३ धसाना। ४ छिपाना।

गाडर (हिं० स्त्री०) १ भेंट। गाडर देखो।

गाडरवारा—१ मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलेकी पश्चिमी तहसील। यह अक्षा० २२° ३८' तथा २३° १५' उ० और देशा० ७८° २७' एवं ७९° ४' पू०के बीच पड़ता है। इसका क्षेत्रफल ८७० वर्गमील और लोकसंख्या कोई १८४२२५ है।

२ मध्यप्रदेशके नरसिंहपुर जिलेकी गाडरवारा तहसीलका सदर। यह अक्षा० २२° ५५' उ० और देशा० ७८° ४८' पू०में शक्करके वाम तट और ग्रेटइण्डियन पेनिनसुला रेलवे पर अवस्थित है। यहांसे मोहपानी कोयलेकी खानको जानेकी राह लगी है। कपड़े बुनने और रंगनेका खूब काम चलता है। भूपाल, भेलसा और सागरसे जितना अनाज इधरको आता, सभी इस शहरके बाचसे हो करके दूसरी जगह जाता है। यहांसे

इन सभी राज्योंकी शस्यके बदले गुड़, नमक और शकर की रफ्तनी होती है। महाराष्ट्र अभ्युदयके समय किसी गोंड राजपूतने गादवाडेमें एक छोटा किला बनाया था। उक्त दुर्गका भग्नावशेष अभी विद्यमान है। १८७४ ई०तक उसमें सरकारी दफ्तर लगता रहा उसके बाद किसी दूसरी जगहको उठ गया। मराठोंके समय यह नगर अपने जिलेको राजधानी थी। इसकी आबादी लगभग ८१९८ है। १८६७ ई०को यहां म्युनिसपालिटी बनायी गयी। यहांसे घी और अनाज बाहर बहुत जाता है।

गाडा—युक्त प्रदेशस्थ क्षत्रक जातिविशेष। इनमें कुछ मुसलमान भी हैं। कहते हैं कि वास्तविक गाड़े चन्द्रवंशीय क्षत्रिय हैं। इनका आदिनिवास दिल्लीके आस पास था।

गाड़ी (हि॰ स्त्री॰) एक जगहसे दूसरी जगह पर माल असबाब या मनुष्यों को पहुंचानेका यन्त्र। यान, शकट, गाड़ी कई प्रकारकी होती है। यथा रथ, बहली इक्का, तांगा, बग्घी, जोड़ी, फिटन, टमटम आदि।

गाड़ीखाना (हि॰ पु॰) गाड़ियोंके रखनेका स्थान।

गाड़ीवान (स॰ पु॰) जो गाड़ी चलाता है, कोचवान।

गाढ (स॰ क्ली॰) गाह क्त। १ अतिशय, दृढ़रूप।

'आतुरस्यो गाढं निपीड़। (रामा॰ २।१२।२)

(त्रि॰) २ घना, गाढा। ३ गभीर, गहरा, अथाह ४ विकट, कठिन, दुरूह, दुर्गम। ५ सेवित।

"तपस्विगाढां तमसां प्राप।" (रघु॰ ८।७२)

गाढलवण (स॰ क्ली॰) सम्भर नमक।

गाढमुष्टि (स॰ पु॰) गाढा दृढा मुष्टिरस्य। १ खड्ग। (त्रि॰) २ कृपण, कंजूस।

गाढा (स॰ त्रि॰) जो जमकर अच्छा पतला न हो।

गाढापुरी—बम्बई बन्दरके पासका एक क्षुद्र द्वीप। अगरेज इसको Elephanta Island अर्थात् हस्तिद्वीप कहते हैं। प्राचीन दर्शकोंमें कोई कोई गाढापुरीको 'गाडीपुरी', गाम्नीपोरी और 'घारापुरी भी लिख गया है। डा॰ विलसनने 'घारापुरीका अर्थ पुरादायक पर्वत लगाया था। किन्तु डा॰ ष्टिवेन्स बतलाते कि उसका नाम 'गाढापुरी अर्थात् गुहामन्दिरपूर्ण नगरी ठहराते हैं। यह शेष नाम ही युक्तिसंगत जैसा समझ पड़ता है। गाढापुरी द्वीप अक्षा॰ १८ ५७´ उ॰ और देशा॰ ७२´ पू॰में बम्बई शहरसे ६ मील दूर भारतीपकूलके बाहर अवस्थित है। यह थाना जिलेके पनवेल उप विभागमें लगता है। इसका परिधि चारसे साढ़े ४ मीलके बीच है। दो लम्बी पर्वत श्रेणियां यहां विद्यमान हैं। उनके मध्यमें सङ्कीर्ण उपत्यका है। इस द्वीपका परिमाण भाटेके समय छह और ज्वारके चढ़ते ४ वर्गमील रहता है।

पोर्तगीज जब इस द्वीपके दक्षिण भागमें उपस्थित हुये, अपने प्रथम अवतरणके स्थान पर ही पत्थरके हाथी की एक बड़ी मूर्ति देखी। उसीसे इस द्वीपका नाम उन्होंने हस्तिद्वीप (Elephanta) रख दिया है। इसी मूर्ति १३ फुट २ इञ्च लम्बी और ७ फुट ४ इञ्च ऊंची थी। १८१४ ई॰को मस्तक और फिर चारो पैर टूट जानेसे १८६४ ई॰को उसको उठा करके बम्बई नगरके विक्टोरिया उद्यानमें रखा गया। सिवा इसके उक्त दोनों पर्वतमालाये जहां मिल जैसी गयी हैं, घोड़ेकी एक मूर्ति रही। मि॰ ओविङ्गटन १६८८ ई॰में इसको देख लिख गये हैं कि वह बहुत ही स्वाभाविक साहश्यविशिष्ट थी, थोड़ी दूरसे सब लोग उसको जीवित प्राणी जैसा समझते थे। अब इसका कोई चिह्न भी नहीं मिलता। १७१२ ई॰को कप्तान पायकने यह घोटकमूर्ति देखी थी, परन्तु तत्परवर्ती दर्शकोंके लिखित विवरणमें इसका कोई उल्लेख नहीं।

द्वीपके उत्तर पूर्व और पूर्व भागको छोड़ करके दूसरे सब पहाड़ लताओं और झाड़ियोंसे भरे हैं। पहाड़के बीचकी जमीनमें आम, इमली और करौंदा खूब होता है। पर्वतोंके ऊपर तालवृक्ष और नीचे धान्यक्षेत्र है। समुद्रका किनारा बालू और कीचड़से भरा हुआ है। उस पर कोई पेड़ पत्ता नहीं। जमीनका रंग काला है। इसमें घासके बाग लगे हुए हैं।

ई॰ ३य शताब्दीसे दशवीं तक सम्भवतः इस द्वीपमें एक समृद्धिसम्पन्न नगर रहा, जो देवालयादिके लिये प्रसिद्ध था। कई एक पुरातत्त्ववित् बतलाते कि उसी स्थान पर मौर्य राजाओंकी 'पौरी' नगरी रही। १५७८

ई०की जन हुगेन भन लिन्स सोटेनने अपने भ्रमण वृत्तान्तमें इसी गाढ़ापुरीको 'पुरीद्दीप' लिखा और यह भी कहा था कि उस गुफाओंसे भरे स्थानको पोर्तगोज हस्तिद्दीप (Elephante) नामसे अभिहित करते हैं। यहां छह गुहामन्दिर हैं। एलोरा और अजण्ठाके गुहामन्दिरोंकी तरह यह भी बहुत विख्यात है। गुहामन्दिर व्यतीत उत्तरांशको सेठवन्दरसे पूर्वमें खेतोंके बीच इष्टक प्रस्तरादि निर्मित भित्ति, स्तम्भादि, शिवलिङ्गादि तथा अन्यान्य नानाविध भग्नावशेष देखते हैं और इन्हीं भग्न स्तूपोंसे अनुमित होता, किसी समय वह सुन्दर समृद्धिसम्पन्न नगर था।

छह गुहामन्दिरोंमें चार पूर्ण रूपसे खोदित और प्रस्तुत हुए जैसे मालूम पड़ते हैं बाकी दोमें एककी गुहा बनी थी; परन्तु खम्भे, दीवार, छत या फर्श पर कोई नक्काशी नहीं हुई। अवशिष्टका केवल प्रवेशद्वार मात्र बना था, गुहा तक पूरे तौर पर तैयार न हो सकी। बनी हुई ४ गुफाओंमें बड़ी देखने लायक है। यह पश्चिम ओरको पहाड़ खोद करके प्रस्तुत हुई है। इसको पूर्वसे पश्चिम तक पत्थर काट करके पहुंचाया गया है। उसीसे इसमें दोनों ओरको प्रवेश कर सकते हैं। मि० फर्गुसनका कहना है कि वह चोरघरके नमूने पर बनायी गयी है। इसका बड़ा फाटक उत्तरमुखी है। चढ़नेको २॥ फुट चौड़ी कई सिढ़ियां लगी हैं। दरवाजा ३ दराजोंमें है। यह तीनों दराजें ४ खम्भों पर सधी है। प्रान्त भागके दोनों



स्तम्भ पर्वत संलग्न होनेसे आधे गोल हैं। गुहा पूर्वद्वारसे पश्चिम द्वार पर्यन्त १३० फुट है। प्रवेशपथके सम्मुख ५४ फुट लम्बा और साढ़े १६ फुट चौड़ा मण्डप है। इसी मण्डपके सामने तीन खोदित शिल्पबहुल घर हैं। इनका परिमाण भी मण्डप-जैसा ही है। मण्डप और इन तीनों घरोंको निकाल डालनेसे गुहाका अवशिष्ट अंश केवल ८१ फुट परिमित चतुरस्र मात्र रह जाता है। इस स्थानकी छत खम्भोंकी ६ कतारों पर खड़ी है। फिर एक एक कतारमें छह छह खम्भे लगे हैं। केवल पश्चिमदिक्के कोणमें पीठ स्थान बनानेकी जगह छोड़ दी गयी है। उधरको ३।४ खम्भे लगे हुए हैं। सब मिला करके यहां २६ खम्भे रहे। उनमें सोलह आधे गोल हैं। बाकी १० पूरे गोल खम्भोंमें आठ टूट पड़े हैं। छह कुरसी सब जगह बराबर न रहनेसे खम्भोंकी ऊंचाईमें भी अन्तर आता है। १५से १७ फुट तकके ऊंचे स्तम्भ संलग्न हैं। पिछवाड़ेको दालानकी दोनों बगलोंमें २ घर हैं। वह १७॥ फुट लम्बे १६ फुट चौड़े पड़ते हैं। पूर्वदिकका मण्डप अति क्रम करनेसे चबूतरे-जैसी कोई जगह मिलती है। इस चबूतरेसे दो-एक कदम दक्षिणमुख चलने पर और एक क्षुद्र गुहा देख पड़ती है। यह ८८ फुट दीर्घ और ५६ फुट चौड़ी है। इसमें एक खुला बरामदा बना है। उसके पीछे एक देवगृह या "आदित्यम्" और दोनों पार्श्वोंको २ पूजागृह हैं। इन देवगृहोंके चारों ओर प्रदक्षिणाको ८॥ फुट चौड़ी घुमावदार राह लगी है। इसीको 'प्रदक्षिणा' कहा जाता है।

पहली गुहाके अभ्यन्तर भागमें सबसे पीछे प्रस्तर खोदित एक त्रिमूर्ति है। इस प्रतिमाका वक्षःस्थल आधा तक खुदा हुआ है। ३ मुख और ६ हाथ देख पड़ते

हैं। तीनों मुख हरिहर ब्रह्माके मुखों जैसे ही प्रतीय मान होते हैं। उसीसे इसका नाम त्रिमूर्ति है। यह एक दीवारके पीछे च घेरे छोटे गृहमें स्थापित है। यह गृह १०॥ फुट प्रशस्त है। इसके सामने २॥ फुट व्यासके २ खम्भे लगे हैं। मूर्तिके मुखत्रय समवन्धमें कोई तो कहता कि वह शिव, शक्ति और रुद्रकी प्रतिकृति है। इसका कारुकार्य अतीव सुन्दर हैं। मध्यस्थलका शिव मुख देखनेसे ब्रह्माका मुख जैसा मालूम पड़ता है। कारण इसके वाम हस्तमें ब्रह्माके प्रयोजनस्वरूप दाड़िमव फलका मन्नाश या योगियोंके पानपात्र जैसा कमण्डलु दृष्ट होता है। दक्षिण हस्तमें एक सर्पमूर्ति रही, जो टूट गयी है। दोनों कान कच्छ देशके कनफटे योगियों-जैसे लम्बे हैं। मस्तकका मुकुट अर्धचन्द्राकृति जैसा बना हुआ है। दक्षिणस्थ मुख रुद्रदेवका है। इसके दाहने हाथमें एक सांप लटक रहा है। वाम ओरका मुख महादेवका जैसा देख पड़ते भी विष्णुका ही मुख ठहरता है। कारण इसके दाहने हाथमें कमल है। इसी विष्णु भावापन्न मुखको कोई कोई शक्तिमूर्तिका मुख जैसा बतलाता है। इस त्रिमूर्ति रक्षित स्थानके बाहर खम्भेके दोनो ओर द्वारपालों की २ मूर्तियां हैं। उनमें प्रत्येक १२ फुट ८ इञ्च लम्बी है। इनकी बगलमें एक एक पिशाचमूर्ति है।

त्रिमूर्ति दर्शन करनेको जानेसे लिङ्गमन्दिरका गर्भगृह लांघना पड़ता है। इस गर्भगृहमें प्रवेश करनेको चारो ओर ४ दरवाजे लगे हैं। दरवाजों पर चढ़नेको ६ सिढ़ियां हैं। इसी कारण मन्दिरसे पीठस्थानकी ऊंचाई ३ फुट ८ इञ्च ऊंची है। दरवाजोंकी दोनों ओर दो दोके हिसाबसे ८ द्वारपाल हैं। उनमें कोई १४ फुट १० इञ्च और कोई १५ फुट २ इञ्च पड़ता है।

त्रिमूर्तिके पूर्वदिक्‌स्थ गृहमें अर्धनारीश्वर मूर्ति है। इसमें महादेव और पार्वतीका अर्धाङ्गमिलन दिखलाया है। इस गृहमें अपरापर और भी अनेक देवमूर्तियां खोदित हैं। अर्धनारीश्वरकी पु मूर्तिके दाहने पीछेको गरुड़ासीन विष्णु मूर्ति, साथ ही ऐरावत पृष्ठपर इन्द्र मूर्ति और उसके पश्चात् पद्महंसपृष्ठ पर पद्मासन ब्रह्म मूर्ति प्रतिष्ठित है।

त्रिमूर्तिके पश्चिम दिक्‌स्थ गृहमें १६ फुट ऊंची शिव मूर्ति है। इसके मस्तक पर गङ्गाकी ३ मुखवाली एक मूर्ति बनी है। इस नारीदेहके दोनों हाथ टूटे और शिवमूर्तिके भी वामदिक्‌स्थ दोनो हस्त भग्न हो गये हैं। वामदिक्‌को १२ फुट ४ इञ्च ऊंची पार्वतीमूर्ति है। शिवके दाहने चतुर्हस्त ब्रह्मा और ऐरावतासीन इन्द्रकी मूर्ति विराजती है। पार्वतीके बायें गरुड़ासीन विष्णु मूर्ति हैं। गरुड़के गलेमें मालाकार सर्प लिपटे हुए हैं। सिवा इसके ब्रह्माकी मूर्तिके ऊपरि भागमें जो मेघराशि खोदित हुई, उसके बीचमें ६ मूर्तियां बनी हैं। शिवमूर्तिके मत्थे पर एक मुनि और दूसरी किसी पुरुष की मूर्ति है। पार्वतीके मत्थे पर भी मेघमें छिपी हुई ६ स्त्रियां और पुरुषोंकी खोदित मूर्तियां देख पड़ती हैं।

इस गुहामन्दिरके दक्षिण ओरसे जाने पर पश्चिम दिक्‌के प्रवेशद्वारकी चांदनीके पास एक घरमें शिव दुर्गाका विवाह खोदित हुआ है। शिवकी मूर्ति १० फुट १० इञ्च और पार्वतीकी ८ फुट ७ इञ्च ऊंची है। शिवका यज्ञोपवीत वामस्कन्धसे दक्षिण हस्त पर होता हुआ दक्षिण जानु पर्यन्त फैल गया है। शिवके वाम भागमें एक त्रिमुख मूर्ति है। यह सम्भवत ब्रह्माकी मूर्ति होगी। कारण स्वय पद्मयोनि ही इस विवाहके पुरोहित हैं। उसके पश्चात् भागमें ४ हाथकी विष्णुमूर्ति है। इसके एक हाथमें पद्म, एकमें चक्र और अन्य दो हाथ भग्न हैं। उमाके दक्षिण उनकी माता मेनकाकी मूर्ति है। उमाके मस्तक पर हाथमें चामर लिये वेद माता सरस्वती विराजित हैं। पार्वतीके दाहने ओर भी सोममूर्ति हाथमें एक चामर लिये हुए खड़ी है। इसके पीछे घुंघरवाले बाल और मस्तक पर शिरस्त्राणविशिष्ट चन्द्रदेवकी मूर्ति है। इसकी गर्दन पर भी एक चन्द्रार्ध बना हुआ है। शिवके मस्तक पर भृङ्गीकी मूर्ति है। फिर दूसरी दीवारोंमें मुनि ऋषियोंकी मूर्तियां खुदी हैं।

इसके बाद शिव और पार्वतीका कैलासविहार है। इसमें उनके पुत्र कार्तिकेय तथा गणेश और शिवके दक्षिण भृङ्गीकी मूर्ति विद्यमान है। हरपार्वतीके नीचे वृषभ तथा सिंह और चारो पार्श्वों पर पिशाचगण हैं।

पूर्वदिक्‌के मण्डपमें उत्तर ओरकी शैयोत गृहके

बिलकुल सामनेवाले घरके बीच कैलास पर्वत पर हरपार्वती आसीन हैं। नीचे लङ्काधिपति रावण स्तुति कर रहा है। शिवकी वामदिक्‌की गरुड़ासीन विष्णु और अनेक पिशाच मूर्तियां खुदी हुई हैं।

बड़ी गुहाकी पश्चिम सीमाके शेषभागमें मण्डपकी उत्तर दिक्‌की शिवविवाह-गृहके सामनेवाले घरमें शिवको भैरव महाकाल वा कपालभृत् मूर्ति खोदित है।

उत्तर दिक्‌के मण्डपसे भीतर जाने पर दक्षिण प्रान्तके किसी घरमें १० फुट ८ इञ्च ऊंची एक चतुर्हस्त शिवमूर्ति है। रुद्रदेव इस स्थान पर ताण्डव नृत्य कर रहे हैं। पास ही ६ फुट ८ इञ्च ऊंची पार्वती, गरुड़ पर विष्णु, ऐरावत पर इन्द्र, गणेश, ब्रह्मा और भृङ्गीकी मूर्ति है।

इस मण्डपको पूर्वसीमाके सामनेवाले घरमें शिवकी महायोगी वा धर्मराज मूर्ति है। गृहमें सामने दोनों ओरकी २ अनुचर हैं। उनमें एकके गलेमें रुद्राक्षकी माला पड़ी और दूसरा पैर पर पैर रख करके बैठा है। शिवके वाम भागकी केलेका एक पेड़ है। वह इस प्रकारसे तराशा गया है, मानो ३पत्ते टूट पड़े हैं और एक नया पत्ता गोल हो करके निकल रहा है। इसी कदली-वृक्षके निकट विष्णु और ब्रह्माकी मूर्ति है। शिवके दोनों पार्श्वों पर चामरव्यजनकारिणी दो सखियां खड़ी हैं।

इस वृहत् गुहामन्दिरका पूर्वद्वार अति सुन्दर और सुचारु रूपसे खोदित है। मन्दिरके मध्य प्रवेश करनेकी १० फुट १० इञ्च प्रशस्त ८ सिढ़ियां लगी हुई हैं। ऊपरी सोपानके दोनों पार्श्वोंपर दो दो सिंहमूर्तियां हैं। भीतरी मण्डप ५८ फुट ४ इञ्च लम्बा और २४ फुट २ इञ्च चौड़ा है। चारों कोण पर ४ घर हैं। इसके पश्चाद्भागमें गर्भगृह है। पश्चिमदिक्‌का प्रवेशपथ उतना सुन्दर नहीं लगता, परन्तु सम्मुख स्तम्भ और उसके पीछे दीवारकी खोदित मूर्तिका कारुकार्य देखते ही बन पड़ता है।

इस गुहामन्दिरसे थोड़ी दूर दक्षिण-पूर्व दिक्‌की ओर एक गुफा है। इसकी लम्बाई १०८॥ फुट है। उत्तर सीमामें गर्भगृह विद्यमान है। वह सम्मुखस्थ मण्डपसे अपेक्षाकृत उच्च लगता है। भीतरी स्तम्भोंका व्यास २ फुट ८ इञ्च है। मण्डपके पीछे ३ घर हैं। उत्तर-दिक्‌का गृह १५ फुट ८ इञ्च दीर्घ और १६ फुट ५ इञ्च चौड़ा है। गुहा मध्यभागके घरका अगवारा २० फुट ८ इञ्च और पिछवारा २२ फुट पड़ता है। इसी पिछवाड़ेकी दीवारसे ३ कदम दूर ७ फुट ४ इञ्चको एक चतुरस्र वेदी है। वेदीके उत्तरको प्रणालिका और वेदीके ऊपर भग्न लिङ्गमूर्त विद्यमान है।

इसी द्वितीय गुहामण्डपके दक्षिण भागके पर्वतमें कोई दूसरी गुफा है। उसका प्रवेशद्वार दक्षिणमुखी बना है। वह उक्त दोनों गुहाओंकी अपेक्षा पुरातन और भग्न है। उसको वर्तमान अवस्था देख करके मण्डपकी दीर्घताका परिमाण अनुमान नहीं कर सकते। गुहा भीतरमें १० फुट २ इञ्च लम्बी है। उत्तर और दक्षिण सीमा पर २ गर्भगृह हैं। दोनों गर्भगृहोंके सामने कतारके कतार आठ पहलू खम्भे लगे हैं। उसके पश्चिम ओर भी एक दूसरा घर है। मण्डपसे गर्भगृहको जानेकी राहका दरवाजा ४ फुट ८ इञ्च प्रशस्त है। इसके दोनों पार्श्वों पर द्वारपालोंकी २ बड़ी मूर्तियां और चारों किनारों पर पिशाच तथा अन्यान्य मूर्तियां खुदी हुई हैं। भीतरका गर्भगृह १९ फुट १० इञ्च लम्बा और १८ फुट १० इञ्च चौड़ा है। बीचमें ६ फुट ११ इञ्चकी एक चौकोर वेदी है। उस पर एक लिङ्गमूर्ति बनी है। परिधि ६ फुट और ११ इञ्च तथा व्यास २३ इञ्च है। इसकी दोनों ओरको १५ फुट चौकोर २ घर हैं।

इस पर्वतकी उपत्यकाको अतिक्रम करके उक्त तीनों गुहामन्दिरोंकी विपरीत दिक्‌में अवस्थित दूसरे पर्वतके उपरि भाग पर ४था गुहामन्दिर विद्यमान है। यह १म गुहामन्दिरसे प्रायः १०० फुट उच्च और उसके उत्तरपूर्व कोणमें अवस्थित है। डि कूटो (De Couto) साहबने १६०३ ई०को यह मन्दिर देख करके लिखा कि उसमें एक दालान और ३ घर थे। दक्षिण दिशाके घरमें अब कुछ भी नहीं रहा है। द्वितीय गृहके मध्यमें किसी बड़ो चौकोर जगह पर २ प्रतिमूर्तियां हैं। इनमें एकके ६ हाथ हैं। इस मूर्तिका नाम उक्त साहबने 'विकला चण्डी' लिखा है। सम्भवतः यह दोनों मूर्तियां वेताल और चण्डीकी होंगी। परन्तु अब इनका चिह्नमात्र भी नहीं देख पड़ता। इस देशके अधिवासी उस गुहा-

मन्दिरको सीताबाइका देवालय कहते हैं। मण्डपके चारो ओर ४ खम्भे हैं। फिर ८ फुट ५ इञ्च ऊंचे रोडों के भी दो खम्भे लगे हैं। मण्डप ७२ फुट ६ इञ्च लम्बा और उत्तरको २७ फुट ४ इञ्च तथा दक्षिणको २५ फुट ७ इञ्च चौड़ा है। इसके दोनो पार्श्वों पर २ अन्तराल-गृह हैं। मध्यस्थानका गृह गर्भगृह होता है। इसके प्रवेशद्वारकी ऊंचाई ७ फुट ११ इञ्च और चौड़ाई ४ फुट ११॥ इञ्च है। भीतरमें ५ फुट ४ इञ्च लम्बी और ३ फुट ५ इञ्च चौड़ी वेदी बनी है। इसके उत्तरको प्रणालिका है।

वृहत् गुहामन्दिरसे पश्चिमको पर्वतशिखर पर एक भग्न व्याघ्रमूर्ति है। द्वीपवासी इसको वमाव्याघ्रेश्वरी वा देवीकी व्याघ्रमूर्ति जैसी भक्ति और पूजा करते हैं। यह ३ फुट ऊंची है।

ठीक निरूपण किया जा नहीं सकता कितने दिन पीछे किस राजाके राजत्वकालको ओर किसके द्वारा उसके गुहामन्दिर खोदे गये। स्थानीय अधिवासियोंमें तीन विभिन्न प्रवाद प्रचलित हैं। कोई कोई कहता कि पाण्डवोंने ही वह मन्दिर बनवाया था। फिर किसीके मतमें कनाड़ाके राजा बाणासुर और किसीके कथनानुसार सिकन्दर बादशाह उसके निर्माता रहे। किन्तु उपर्युक्त प्रवादों का सत्यासत्य समझ नहीं पड़ता।

बर्गेस (James Burgess) साहबने विशेष पर्यालोचना करके इस गुहामन्दिरोंका निर्माण काल ई० ८म शताब्दीका शेषभाग अथवा ६म शताब्दीका प्रारम्भ ही ठहराया है।

आजकल इस मन्दिरमें अपर कोई खोदित शिलालिपि दृष्ट नहीं होती। १५४० ई०को पोर्तगीज गवर्नर डमजोयाव दि क्रास्ट्रो इस पहाड़ी गुफासे १ शिलालिपि अपने देश ले गये थे। सम्भवत उसीमें उसके निर्माण काल और निर्माताका नाम होगा। यह प्रस्तरलिपि खो गयी है। भविष्यत्में उसके पुन प्राप्त होनेसे इसके काल निर्णयकी आशा की जा सकती है।

किसी शैवपर्वको हिन्दूवणिक् इस बड़े गुहा-मन्दिरमें आ करके पूजा और उत्सवादि किया करते हैं। शिवरात्रिको यहां बड़े धूमधड़ाकेसे मेला लगता है।

गाढावटी (सं० स्त्री०) गाढा वटी घटिका यत्र बहुव्री०। चतुरङ्ग क्रीडाओंमें एक प्रकारकी क्रीडा।

"नौके वटिका यत्र विपत तिष्ठन् यदि।
गाढावटीति विख्याता ... तत्र न दुर्यात् ॥" (तिथितत्त्व)

गाणकार्य (सं० त्रि०) गणकारीभव गणकारि ष्यञ्। कुर्वादिभ्यो ण्य (पा ४।१।१५१) गणकारिका अपत्यादि, गणकारि ऋषिके वंशज।

गाणगारि (सं० पु०) गणगारस्यापत्य इञ्। मुनिविशेष। "पुनर्दीक्षा गाणगारि।" (आश्वलायनश्रौत० ।१०।१८)

गाणपत (सं० त्रि०) गणपतिर्देवता अस्य, गणपति-अण्। १ गणपति सम्बन्धीय। २ गणपति उपासक।

गाणपत पञ्चप्रकार उपासकोंमें एक होते हैं। शैव, शाक्त वा वैष्णवोंकी भांति यह भी अपने इष्टदेवता केवल गणपतिको सब देवताओंका प्रधान समझ करके उपासना करते हैं। आजकल गाणपत सम्प्रदाय बहुत घट गया है। और आचार व्यवहारमें भी अन्यान्य उपासकोंके साथ इनका कोई भेद लक्षित नहीं होता। परन्तु किसी समयको इस सम्प्रदायने विशेष उन्नतिलाभ किया और वैष्णव सम्प्रदायकी तरह एक पृथक् मत चला दिया था। ऋक्संहिता (२।२३।१) के मन्त्र और वाजसनेयसंहिता (१६।२२ २३) के अध्यायमें गणपतिकी स्तुति मिलती है। इससे मालूम पड़ता कि प्राचीन कालसे ही गणपतिकी उपासना चल रही है।

तन्त्रशास्त्रमें शिव आदिकी उपासनाकी तरह गणपतिकी उपासना भी प्रधान जैसी निर्णीत हुयी है। सिवा इसके तन्त्रशास्त्रमें और एक विधान देख पड़ता कि किसी भी देवताकी उपासना क्यों न की जावे सर्व प्रथम गणपतिको पूजना पड़ेगा। जो गणपतिकी पूजा न करके अन्य देवताको पूजता, वह पूजाफलसे वञ्चित रहता है। हिन्दू लेखक किसी ग्रन्थको लिखना आरम्भ करने पर सर्व प्रथम "नमो गणेशाय" वा "श्रीगणेशाय नम" लिपिबद्ध करते हैं। इन्ही समस्त कारणोंसे बहुतसे लोग अनुमान करते कि किसी समय गाणपत सम्प्रदाय अतिशय प्रबल रहा। उनकी युक्ति और उपदेश शास्त्रसङ्गत तथा सबको आदरणीय था। गाणपत्य धर्मने सम्पूर्णरूपसे न सही, आंशिक रूपसे प्राय सभी सम्प्रदा

ओंमें संक्रमण किया था। कालके प्रबल वेगमें इस सम्प्रदायका ह्रास होते भी हिन्दू लोगोंमें गणपतिकी ऐसी उपासना चलती और भक्ति मिलती है। वास्तविकपक्षमें कोई सन्देह नहीं कि वह सम्प्रदाय अपर सम्प्रदायोंकी तरह बलवान् था।

"गं यानि गाणपत्यानि शास्त्राणि व धवाणि च।
साधनानि च घोराणि चाम्याणि यानि कानिचित्।
श्रुतानि तानि देवेश त्वदवक्त्राद्विःसृतानि च॥" (तन्त्रसार)

गाणपत सम्प्रदायके मतमें गणपति ही परब्रह्म हैं। समस्त जगत् गणेशसे उत्पन्न हुआ, गणेशमें स्थित है और गणेशमें ही लीन हो जावेगा। गणेशाथर्वशीर्ष प्रभृति उपनिषद्में भी "तत्त्वमसि" आदि वाक्योंसे गणेशकी ही वर्णना की गयी है। गणेश—ब्रह्मा, विष्णु, शिव प्रभृति सब देवताओंके ही अधिपति, गुणत्रयातीत, अवस्थात्रयशून्य, देहत्रयरहित और त्रिकालके अधिकारी हैं। वह सभी प्राणियोंके मूलाधारमें अवस्थिति करते हैं। गणेशको ३ शक्तियां हैं। उन्हींके द्वारा गणराज जगत्की सृष्टि, पालन और नाश किया करते हैं। वह सगुण और निर्गुण भेदसे दो प्रकार है। योगी सगुण गणपतिकी उपासना करते हैं। उस उपासनासे अविवेक नष्ट हो जाता और बादको उपासक मुक्ति पाता है।

(गणेशाथर्वशीर्ष उप० ६ म०)

गाणपत उपासक शाक्त वा शैवकी तरह गणपतिमन्त्रमें दीक्षित होता है। गणपति उनके इष्टदेव हैं। चिरजीवन वह गणेशकी ही उपासना किया करते हैं। वे किसी अपर सम्प्रदायके प्रति ईर्ष्या या दूसरे देवताका द्वेष नहीं रखते, साथ ही अपने इष्टदेव गणेशकी भक्तिमें अधिक लीन रहते हैं। गणेशका मन्त्र "ॐ गं" है। गाणपत लोगोंको इसी मन्त्रकी दीक्षा दी जाती है।

गणेशके उपासकोंमें भी सन्ध्या आदिका विधान है। "एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्" गणेशकी गायत्री है। गणेशके मन्त्रमें ऋषि गणक, निचृद् गायत्री छन्दः और देवता गणपति है। उपासनाकी अन्यान्य प्रणालियां अपरापर देवताओंके समान हैं। गाणपतोंके मतमें मृत्युकालको गणेशकी चिन्ता करते करते प्राण छोड़नेवाला मुक्ति पाता है।

(गणेशगीता) गणेश देखो।

गाणपत्य (सं० त्रि०) गणपतिरुपास्योऽस्य यत्र:। १ गणेशका उपासक। २ गणपति सम्बन्धीय। (क्ली०) ३ गणपतिका भाव। गाणपत्य देखो।

गाणिक (सं० त्रि०) गणं वेत्ति अधीते वा उक्थादित्वात् ठक्। १गणसूत्रादि पाठक। २ गणसूत्रादि वेत्ता। ३ गण सूत्रकुशल।

गाणिक्य (सं० क्ली०) गणिकानां वेश्यानां समूहः गणिका ष्यञ्। गणिकायायाञ्ज्ञानि वक्तव्यम्। पा ४।२।४० वा.र्त क। गणिकासमूह, वेश्याका झुंड।

गाणितिक (सं० त्रि०) गणितं शास्त्रं वेत्ति ठक्। १ गणितशास्त्रवेत्ता, गणितशास्त्र जाननेवाला। २ गणितसंबन्धीय।

गाणिन (सं० पु०-स्त्री०) गणिनाऽपत्यादि गणिन्-अण् इनो न लोपः। गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च। पा ६।४।१६५ १ गणीका अपत्य। २ गणीका छात्र।

गाण्डव्य (सं० पु०) गण्डोरपत्यं। गर्गादित्वात् यञ्। गण्डुका अपत्य, गण्डुका वंशज।

गाण्डव्यायन (सं० पु०) गण्डोर्युवापत्यं गण्डु-यञ, ततः फक्। गण्डुका युवा अपत्य।

गाण्डव्यायनी (सं० स्त्री०) गंडोरपत्यं स्त्री गंडु-यञ्। सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः। पा ४।१।१८। गण्डुका स्त्री अपत्य, कन्या।

गाण्डि (सं० स्त्री०) गाड़ि-इन्। ग्रन्थि, गिरह।

गाण्डिव (सं० पु० क्ली०) गण्डिर्ग्रन्थिरस्यास्ति वः। गाण्ड्यजगात् संज्ञायाम्। पा ५।२।११०। १ अर्जुनके धनुषका नाम। (भारत १।२२६।४) पहले पहल ब्रह्माने इस धनुषको निर्माण कर प्रजापतिको दिया, प्रजापतिने इन्द्रको, इन्द्रने सोमको एवं सोमने वरुणको प्रदान किया था। तत्पश्चात् अग्निने वरुणसे प्रार्थना कर यह धनुष अर्जुनको दिलाया था। (भारत १।२२५ अ०) २ धनुष मात्र।

गाण्डिवी (सं० पु०) गांडिवोऽस्यास्ति इनि। १ अर्जुन। २ अर्जुनवृक्ष, आकाका गाछ।

गाण्डी (सं० स्त्री०) गांडि-ङीप्। गाण्डि देखो।

गाण्डीर (सं० त्रि०) गण्डीरस्येदं गण्डीर-अण्। शाकविशेष, शमठ नामका साग।

गाण्डीव (सं० पु० क्ली०) गाण्डी ग्रन्थिरस्यास्ति गांडी-वः। १ अर्जुनका धनुष।

'तत् चवकोमत गौत्र रत्ध वत्पितचवम्।
काल च सुमदत् पार्थो गाण्डोवेन करिष्यति॥" (भारत १।२२४।७)
इस धनुषको ब्रह्माने एक हजार वर्ष प्रजापतिने पाचसो तोन वर्ष, इन्द्रने पचासी वर्ष सोमने पाचसौ वर्ष, वरुणने सौ वर्ष और अर्जुनने पैंसठ वर्ष धारण किया था। भारत देखो। २ धनुष।

गाण्डीवधन्वा (सं० पु०) गाण्डीव धनुर्यस्य समासे अनङ्। अर्जुन।

गाण्डीवी (सं० पु०) गाण्डीवमस्त्यस्य इनि। अर्जुन। (भारत १।१४६ अ०) २ अर्जुनवृक्ष, आकका पेड़।

गात (हिं० पु०) १ शरीर, अंग। २ गुप्त, लज्जाका अंग। ३ स्तन, कुच। ४ गर्भ।

गातलीन (अ० स्त्री०) जहाजमें एक डोरी जो मस्तूलके चरखेमें लगी रहती है।

गातव्य (सं० वि०) गै गाने गा गतौ वा तव्य। १ गन्तव्य, जाने योग्य। २ गेय, गाने योग्य।

गाता (हिं० पु०) गानेवाला, गवैया।

गातागतिक (सं० वि०) गतागतेन निर्वृत्तम् अध्यात्मता दित्वात् ठक्। गमनागमन द्वारा निष्पन्न।

गातानुगतिक (सं० वि०) गतानुगतेन निर्वृत्तम्। गतानुगत निष्पन्न।

गाती (हिं० स्त्री०) गलेमें लपेटनेका एक प्रकारकी चादर। छोटे बच्चोंको जो गलेमें कपड़ा पहनाया जाता है इसे भी गाती कहते हैं।

गातु (सं० पु०) गायति गै गाने तुन्। १ कोकिल। कोयल। २ भ्रमर, भौंरा। ३ गन्धर्व। ४ पथिक मुसाफिर। गै गाने भावे तुक्। ५ गमन, जाना। ६ जानेका रास्ता। ७ उपाय। ८ पृथ्वी। ९ स्तव। (वि०) १० क्रोधी। गुस्सावर। ११ गायन, गानेवाला। (स्त्री०) १२ धन, दौलत।

गातुविद् (सं० वि०) गातु मार्ग वेत्ति विद् क्विप्। पथज्ञ, रास्ता जाननेवाला।

गात्र (सं० वि०) गै गाने तृच्। गायक गानेवाला।

गात्र (सं० क्लो०) गच्छति गम् त्रन् आकारादेश। १ अंग, देह, शरीर। इसका पर्याय—कलेवर, वपु, संहनन शरीर, वर्ष्म, विग्रह, काय, देह, मूर्ति, तनु, तन्, अङ्ग, चेत, भूघण, सत्कारण, वेर, सञ्चर, घन, वध, पुर, पिण्ड, पुद्गल, भूतात्मा, स्वर्गलोकेश, स्कन्ध, पञ्जर, कुल और बल हैं। (अमर) २ हाथीके अगले पैरोंका उपरी भाग। (त्रि०) गायक सम्बन्धीय।

गात्रक (सं० क्लो०) गात्र स्वार्थे कन्। गात्र देखो।

गात्रकण्डु (सं० स्त्री०) गात्रजाता कण्डुः। गात्रविवर्षी, खुजली।

गात्रगुप्त (सं० पु०) श्रीकृष्णके एक पुत्र जो लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न हुवे थे।

गात्रघर्षण (सं० क्लो०) शरीर मार्जन, देहका मलना।

गात्रभङ्गा (सं० स्त्री०) गात्रस्य भङ्गोऽस्मादो यस्याः बहुव्री०। १ एक प्रकारका पेड़, केवाच, कौंच। २ गम्भशठो।

गात्रमार्जनी (सं० स्त्री०) गात्र मृज्यतेऽनया मृज करणे ल्युट् ङीप्। शरीर मार्जनार्थ क्षुद्र वस्त्र, गमछा तौलिया।

गात्ररुह (सं० क्लो०) गात्रे रोहति रुह-क, ७ तत्। लोम, बाल। (भारत १३।१४)

गात्रवत् (सं० पु०) १ लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र। (त्रि०) २ प्रशस्त गात्रविशिष्ट। सुन्दर शरीरवाला।

गात्रवती (स्त्री०) लक्ष्मणागर्भज श्रीकृष्णकी कन्या।

गात्रवर्ण (सं० पु०) स्वर साधनकी यह प्रणाली जिसमें सात स्वरोंमेंसे प्रत्येकका उच्चारण तीन तीन दफा किया जाता है।

गात्रविचय (सं० पु०) अङ्गचालन, शरीर सञ्चालन।

गात्रविन्द (सं० पु०) लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र।

गात्रशोष (सं० पु०) पूतना, बालरोगविशेष।

गात्रसङ्कोची (सं० पु०) गात्र सङ्कोचयति सं कुच णिच् णिनि। १ आहक नामक जन्तुविशेष, जोंक। २ कृष्णकृकलास, काला गिरगिट। ३ गोनसमर्प।

गात्रसम्प्लव (सं० पु०) गात्रेण सम्प्लवते सम् प्लु, अच् ३ तत्। प्लवजातिके पक्षी, जलमुर्गाबी।

गात्रसम्मित (सं० त्रि०) गात्रं सम्मितं सम्पूर्णं यस्य बहुव्री०। सोम मासके ऊपरका गर्भ, जिसका शरीर बन गया हो।

गात्रसाद (सं० पु०) १ शरीरावसाद। २ पित्तरोग।

गात्रस्पर्श (सं० पु०) गात्रस्य स्पर्शः ६-तत्। अङ्गस्पर्श, शरीरका छूना।

गात्रानुलेपनी (सं० स्त्री०) गात्रमनुलिप्यते यया करणे ल्युट्-ङीप्। अनुलेपनवर्त्तिका, सुगन्धि द्रव्यसे शरीरका लेपन।

गात्रावरण (सं० क्ली०) गात्रमा वृणोति, आ-वृ-ल्यु। वर्म, कवच।

गात्रोत्सादन (सं० क्ली०) गात्रानुलेपन।

गात्रिका (सं० स्त्री०) गात् संज्ञायां कन्-टाप्, अत इत्वम्। गमछा, तौलिया।

गाथ (सं० त्रि०) गै-थन्। १ गान। २ स्तोत्र। (सायण)

गाथक (सं० त्रि०) गायति गै गाने थकन्। गायक, गानेवाला।

गाथपति (सं० त्रि०) गाथायाः पतिः ६-तत्। वाक्पति, स्तोत्रपालक रुद्र।

गाथा (सं० स्त्री०) गै-थन्-टाप्। उषिकुषिगार्तिभ्यस्थन्। उण् २।४। १ स्तुति। २ प्राचीन कालकी एक प्रकारकी रचना जिसमें लोगोंके दानधर्मादिका वर्णन होता था। ३ श्लोक विशेष, किसी प्रकारका छन्द। इसमें स्वरका नियम नहीं चलता और सुननेमें गद्य-जैसा लगता है। ४ गीत। ५ कोई मात्रावृत्त। जिसके प्रथम तथा तृतीयमें बारह, द्वितोयमें अठारह और चतुर्थपादमें १० मात्रा लगाते, गाथा छन्द बतलाते हैं। इसीका नाम आर्या है। ४ प्राकृत भाषा। ६ संस्कृत प्राकृत मिश्रित श्लोक।

बौद्धोंकी ग्रन्थावलीमें गाथा-जैसे अनेक श्लोक दृष्ट होते हैं। लङ्कावतार, तथागतगुह्यक, ललितविस्तरप्रभृति ग्रन्थोंकी रचनाका कुछ अंश गद्य और कुछ पद्य है। गद्यांशकी भाषा व्याकरण शुद्ध संस्कृत है, किन्तु पद्यमें कुछ संस्कृत अशुद्धियां मिलती हैं। उसीसे इस विषयमें बहुतसी आलोचना हुई, गाथा वा पद्यांश अशुद्ध संस्कृत अथवा कोई स्वतन्त्र भाषा है। संस्कृत भाषा लिखनेकी वैसी भूल क्रमागत समानभावसे हो नहीं सकती। एक ही शब्दकी बार बार अशुद्धि दृष्ट होनेसे बहुतसे लोगोंने उसको स्वतन्त्र भाषा-जैसा निर्देश किया है। परन्तु बात तो यह है, ललितविस्तर प्रभृति बौद्ध ग्रन्थोंमें पद्यांश व्याकरण शुद्ध और गाथा वा गद्यांश अशुद्ध संस्कृतमें पृथक् रीतिसे क्यों रचित हुआ? यह नहीं कहा जा सकता कि गद्यांश अशुद्धियोंसे रहित हैं, घटना क्रमसे लेखककी अनवधानतासे छूट-जैसा गया मालूम पड़ता है। दूसरी बात यह कि गद्यांशको भाषा पाण्डित्यपूर्ण और जटिल है। कर्ताकी क्रिया अपने स्थानको छोड़ करके बहुत आगे दृष्ट होती है। किन्तु गाथा की भाषा उसके सम्पूर्ण विपरीत है। इसकी भाषा नितान्त सरल होती है। वाक्य छोटे छोटे आये और उन्हींमें भाव बहुत अच्छी तरह खोल करके दिखलाये हैं। गाथाकी भाषामें सरल कथाका ओजोगुण और कल्पनाका प्राचुर्य्य प्रचुर है। कविता सरल अनुष्टुप्से शार्दूलविक्रीड़ित प्रभृति नानाप्रकार छन्दोंमें रचित हुई है। विशेष अनुधावन करनेसे प्रतीत होता कि रचनाको मिष्ट करनेके लिये शब्दोंको स्थान स्थान पर बढ़ा दिया है। यथा—

संस्कृत भाषा	गाथाकी भाषा
नच	नाच
सच	सोच
प्रयात:	प्रयातो
रुदमान	रोदमान
ता:	ते
स्मितमुखी	स्मितामुखि इत्यादि

कहीं पर स्वरोंका सङ्कोच करनेसे ऐसा बन गया है—

यामि	यमि
भावि	भवि
मिथ्याप्रयोग	मिथ्यप्रयोग इत्यादि।

कहीं तो स्वर और व्यञ्जन एकबारगी ही परित्यक्त हुए हैं—

नर्मास	नमि
प्रणिध्यायन्ति	प्रणिध्येन्ति इत्यादि

किसी किसी स्थल पर सन्धि वा युक्त वर्णकी बांट करके सरल और सुमिष्ट बनानेकी चेष्टा की गयी है—

ग्लानो	गिलानो
स्त्री	इस्त्रि
क्लेश	किलेश

थ्यो	थिरिं
पद्मानि	पदुमानि इत्यादि

लिङ्ग, वचन, कारक और क्रियाकी बहुतसी अशुद्धिया हैं—

तावपि	तानपि
आमनात्	आमनिना
त्रिलोकी	तृलोक
मह्य	मम, मस
तव, त्वा	तुभ्य
कुत्र, केन	कहि
ददामि	देमि वा दद॑मि
भवसि	भोसि
भविष्यसि	भोष्य इत्यादि

वाक्यादि रचना पर सस्कृत भाषामें जिस स्थानको जो रखनेका नियम है, गाथाकी भाषामें अनुसरण करते हैं। परन्तु समास और सन्धिमें यह नियम नहीं लगता। फरासीसी विद्वान सोशियें बरनूफ साहबका कहना है पुस्तक पढनेसे उसका कोई कारण अनुभूत नहीं होता। शाक्यमुनिके पीछे और पालि भाषा बननेसे पहले क्या उसी भाषाको सृष्टि हुई? लोग सस्कृत न जानते थे, परन्तु उसमें लिखनेको इच्छा होनेसे उन्होंने ऐसा कर लिया, सम्भवत यह अश भारतके बाहर अर्थात् पश्चिम प्रान्त या काश्मीरमें लिखा जाता होगा। भारतके मध्य जैसी यहा सस्कृतको चर्चा न थी। परन्तु साहबको बातसे समझ पडता है कि उन्होंने गाथाकी भाषा पढनेमें त्रुटि की। इसमें बडा गुणीपन और पण्डिताई है। न्याय शास्त्र और मनोविज्ञानके जटिल विषय अतिपरिष्कृत और सुललित भाषाके आर्या और तोटक छन्दोंमें लिपि बद्ध हुए हैं। कैसे कहेंगे—सस्कृत भाषा पर जिनका उतना अधिकार रहा, उसे ही लिखनेमें भूल गये। पञ्जाब आदि देशोंमें रचित हुआ होनेसे सस्कृत व्याकरणके अनुसार गद्यांश विशुद्ध और पद्यांश अशुद्ध कैसे निकला। राजा राजेन्द्रलाल मित्रने बतलाया है कि शाक्यमुनिके समय या अव्यवहित पीछे भाट लोग उसको गाते घूमते थे। ललितविस्तर प्रभृति ग्रन्थोंके रचयिता ओंने गद्यांश लिख करके उसकी पोषकता करनेके पीछे गाथाकी कविता यथायथ उद्धृत कर दी। वैसा करनेका कारण यह था कि उस समयको लोगोंमें वह बहुत आदरणीय रही। गद्यरचनाके पीछे "तत्रेदमुच्यते" लिख करके पद्यको उद्धृत किया है। मोक्षमूलर और वेवर साहबने उक्त मित्र महोदयका मत समर्थन किया है। लासेन बरनूफ फेर भी उसको पोषकता करते हैं। डाक्टर म्योर कहते कि पीछेको गाथाको भाषा कोई लिखित भाषा थी। बेनफी साहबने राजेन्द्रलालकी पोषकता करके लिखा है कि पेशेदार गानेवालोंका निम्नश्रेणीके लोग जैसा मान लेने पर उनका मत ठीक समझा जा सकता है। राजेन्द्रलालने उसका खण्डन करके कहा है—यद्यपि बौद्ध धर्ममें जातिभेद कम रहा तथापि यह कैसे सम्भव हो सकता कि ब्राह्मण क्षत्रिय जातीय रचयिता अपने आपको उच्च श्रेणीस्थ जैसा न समझते? । वह कविताको नोचजातिरचित होने पर उद्धृत करनेसे सदा विरत ही रहते। गाथाए जबानी बननेसे उनकी शुद्धि अशुद्धिकी ओर उतना मनोयोग नहीं किया गया। अनेक समयको शुद्ध हो वा अशुद्ध कोई सरल कथा चित्तको जितना आकर्षण करती अच्छे शुद्ध सस्कृत उच्च अङ्गको भाषा नहीं कर सकती। भारत वर्षके भाट तथा कुलज्ञ मूर्ख नहीं होते, परन्तु उनकी सस्कृत भाषा ग्राम्य अशुद्धता आदि नाना दोषोंसे लिप्त है। फिर भी सभास्थलमें उनकी वक्तृताका विशेष आदर है। गाथाके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। लेखकोंके विद्वान होते हुए भी यह सम्भव नहीं कि सब श्रोता सस्कृतके सुपण्डित रहे। श्रोताओंके मनोरञ्जनको पण्डि तोंकी अपेक्षा भाट लोगोंकी ही इज्जत ज्यादा थी। बौद्धोंके महासङ्घ समयको गाथाका बडा आदर होता रहा। गद्यके मध्य उसके प्रवेश लाभका यही कारण था। अच्छी तरह अनुमित होता कि बौद्धोंके प्रथम महा सङ्घमें शुद्ध गाथा ही कही गयी। फिर पण्डित लोगोंने बुद्धदेवका विवरण विशुद्ध सस्कृत भाषामें लिखना अपना कर्तव्य समझ करके उसकी पोषकताके लिये गाथाको उद्धृत किया।

गाथाके पद २ भागोंमें विभक्त जैसे ठहराये जा सकते हैं। इसके कई पदोंका प्रकृति अश सस्कृत है, केवल

विभक्ति, वचन और लिङ्ग ही विकृत हो गया है। किन्तु कुछ पदोंके प्रकृति, विभक्ति, वचन और लिङ्ग प्रभृति सभी अंश विकृत हैं—किसीका संस्कृतके साथ कोई सम्बन्ध नहीं। वैसा ही देख करके पूर्वोक्त भाषातत्त्ववेत्तावोंने उसको एक नयी भाषा बना लेनेकी चेष्टा की है। (किसी किसीने उसको विकृत संस्कृत जैसा भी ठहराया है।) परन्तु इन मतोंमें किसीका पक्षपाती हुवा नहीं जाता। वस्तुतः गाथाकी भाषा संस्कृत मिश्रित प्राकृत है। उसको कोई स्वतन्त्र नयी भाषा मान नहीं सकते। उसका जो अंश संस्कृत व्याकरणके अनुसार सिद्ध हो सकता और प्रकृति, विभक्ति, वचन वा लिङ्गाशमें कोई व्यतिक्रम नहीं पड़ता—संस्कृत है। इसी प्रकारसे जो प्रकृति, विभक्ति प्रभृति अंशोंमें वा सम्पूर्ण रूपसे विकृत आती—प्राकृत या अपभ्रंश कहलाती है। वर्तमान समयमें भी वैसी अनेक रचनाएं देख पड़तीं, जिनका थोड़ा अंश संस्कृत और थोड़ा हिन्दी या कोई दूसरी भाषा है। गाथाका जो अंश संस्कृत नहीं ठहरता, प्राकृत भाषाके व्याकरणा-नुसार बनता है। दृष्टान्त स्वरूप गाथाके कई पदोंकी साधनप्रणाली प्राकृत व्याकरणके अनुसार नीचे प्रदर्शित हुई है—

चण्डप्रणीत "आर्ष प्राकृतलक्षण" नामक प्राकृत व्याक-रणका स्वरविधानके "स्वरोऽव्ययम्" (२।४६) चतुर्थ सूत्रका अर्थ संस्कृतयोनि, संस्कृतसम और देशी है। (इसमें संस्कृतयोनि प्राकृत संस्कृतसे किसी अंश पर बिगड़ करके बनता है।) प्राकृत भाषामें संस्कृतके किसी स्वरस्थान पर दूसरे स्वरका आदेश होता है। इसी नियमके अनुसार गाथामें व्यवहृत नीचेके शब्द संस्कृतसे निकले हैं—

गाथामें व्यवहृत प्राकृत	संस्कृत
रोदमान	रुदमान
करोथ	कुरुथ
गेहि	गृह्ये
मय	मया
उदरि	उदरे। इत्यादि

"संयोगस्थे स्वरागमो मध्ये।" (प्राकृतलक्षण ३।३०)

इच्छानुसार संयोगके मध्य किसी एक स्वरका आगम हो सकता है। इस नियमके अनुसार निम्नलिखित प्राकृत शब्द सिद्ध होते हैं—

गाथाका प्राकृत	संस्कृत
रतन	रत्न
अभुजिय	आभुज्य
अकम्पिय	आकम्प्या
वियूह	व्यूह
पदुमानि	पद्मानि इत्यादि।

"ओत्वमवापयोः।" (प्राकृ० लक्ष० २।२१)

अव और अप उपसर्गोंके स्थानमें ओकार होता है। यथा—ओरुह्य, ओकहिला।

"यवयोरिदुतौ।" (प्राकृत लक्षण ३।३)

यकार और वकारके स्थानमें यथाक्रम इकार और उकार आदेश होता है। यथा—जनयन्ति, जनेन्ति; दर्शयन्ति, दर्शेन्ति; उपयन्ति, उपेन्ति इत्यादि। गाथाके अनेक अंशोंमें द्विवचनके स्थान पर बहुवचनका प्रयोग देख पड़ता है। प्राकृत भाषामें द्विवचन नहीं होता, उसकी जगह बहुवचन लगता है—

"द्वित्वं बहुत्वेन।" (प्राकृत ल० २।१२)

"क्वचिद् व्यत्ययः" (प्राकृतलक्षण १।४) सूत्रके अनुसार स्थान स्थान पर लिङ्गका व्यत्यय भी हुआ करता है। यथा—देवाः, देवाणि इत्यादि।

इस स्थल पर अनावश्यक समझ करके और अधिक नहीं लिखा। गाथाके संस्कृतको छोड़ करके दूसरा सभी अंश प्राकृत व्याकरणके अनुसार साधित हो सकता है। अतएव उक्त गाथाकी भाषाको संस्कृत मिला हुवा प्राकृत कहना ही उचित है।

इसका निश्चय नहीं, वह कितने समयकी पुरानी है। भाषाकी सृष्टिके पीछे मानवने जब व्याख्या करना सीखा, गाथा बनी होगी। उसके बाद स्वर और लयके संयोगसे इसकी क्रमशः उन्नति हुई। बुद्धदेव अपने आप गाथा पढ़ते थे। धर्म विषयके सूत्रोंने पद्यमें ग्रथित हो करके गाथा नाम धारण किया। बौद्ध प्रधान काश्यपने कहा था कि भिक्षुलोग सूत्रान्त, विनय, अभिधर्म प्रभृति याद रखें या भूल जावेंगे। क्योंकि उनकी गाथा न थी। पाठकको अपराह्नमें सूत्रकी गाथा पढ़नी चाहिये। बुद्ध-

टेवने उसको ४र्थ शास्त्र जैसा उल्लेख किया है। यथा—१म सूत्रान्त, २य गेय, ३य व्याकरण, ४र्थ गाथा, ५म उदान, ६ष्ठ निदान, ७म अवदान, ८म इतिवृत्तक, ९म जातक १०म वैपुल्य, ११श अद्भुतधर्म, १२ उपदेश। इससे समझा जाता कि उस समयको गाथा शिक्षणीय वस्तु थी।

पारसिक जाति (पारसियों) के धर्म ग्रन्थमें 'गाथा' शब्दका उल्लेख मिलता है। उसमें ५ गाथाएं हैं—१ अहुनवैती, २ उष्टवैती, ३ स्पेन्ता मैन्यू, ४ वहुखषथ्र और वहिश्तोइस्टी। यह गाथाएं छोटे छोटे पदोंका रचनामात्र हैं। उसमें प्रार्थना, गान, स्तोत्र और मनोविज्ञान सम्बन्धीय नानाविध कथा लिखित हुयी है। हमारी संस्कृत वा पालि भाषाकी गाथाएं भी वैसी हैं। वह पारसियोंके गीत हुआ करती हैं। उनके धार्मिक ग्रन्थ जन्दअवस्तामें भी बहुतसी गाथाएं हैं। फिर भी पारसी जन्द अवस्ताके सभी शब्द गानकी तरह स्वर लगा करके पढ़ते हैं। उनकी गाथा रचना हमारी वैदिक रचनाके ही अनुरूप है। छन्दोबद्ध ग्रथित होते भी उसके शेष अक्षरोंका अनुप्रास नहीं मिलता। उपर्युक्त ५ गाथाओंमें प्रत्येक स्वतन्त्र प्रकार छन्दमें रचित हुई है। अहुनवैती गाथाको प्रत्येक श्लोकमें ४८ वर्ण हैं। वह ३ पंक्तियोंमें विभक्त है। प्रत्येक पंक्तिमें १६ वर्ण लगे हैं।

पारसियोंको विश्वास है कि गाथामें ७ अध्याय होते हैं। देवता उस गाथाको गाते थे। स्पीतम जरथुस्त्रको ध्यानयोगमें वह देवताओंके पाससे मिल गयी। अस्तवैती गाथा उन्होंने अपने आप बनायी थी। उस प्रत्येक पंक्तिमें ५ अक्षर हैं। वह छन्दोबद्ध वैदिक त्रिष्टुभ् छन्दसे बहुत मिलती है। सदन्ता मैन्यू गाथाका छन्द प्राय: त्रिष्टुभ्के अनुरूप ही है। प्रथम दोनों गाथाओंकी अपेक्षा इसमें श्लोकोंकी संख्या बहुत कम है फिर ४र्थी वहखषथ्र और ५मी वहिश्टो इष्टी नामक गाथामें श्लोकोंकी संख्या और भी अल्प देख पड़ती है।

म्यूनिकके संस्कृताध्यापक मार्टिन होग अनुमान करते कितनी ही गाथाएं रहीं, जो पीछेको लुप्त हो गयीं। उन सभी रचनाओंमें स्पीतम जरथुस्त्रके मतामत और उपदेशादि विद्यमान थे। पीछेको अपने पूजाकारियों (ब्राह्मणों)को अनिष्टसे निष्कृति और जरदस्त धर्मावलम्बियोंका मङ्गल करनेवाला ही रचित हुई। होग साहब और भी बतलाते कि वह गाथाएं सामवेद जैसी ही वह ऋग्वेदका अंश होती हैं। ब्राह्मणों ने उन्हें यत्न करके रखा और पारसियोंने बिगाड़ दिया है। वेष्ट साहबके अनुमानमें ई०से १२०० वत्सर पूर्वको महापुरुष स्पीतम जीवित रहे। गाथा उसी समयकी रचना है।

वैदिक कालके हिन्दू धर्मसे पारसिक धर्मका विशेष सम्पर्क रहना जैसा समझ पड़ता है। दोनोंके आदि ग्रन्थोंमें देव और असुर लोगोंको कथा है। फिर भी यह देवताओं और वह असुरोंके उपासक हैं। यजुर्वेदमें आसुरी नामक कोइ छन्द दृष्ट होता है। यथा—गायत्री आसुरी, उष्णिक् आसुरी, पंक्ति आसुरी। जन्द अवस्ताको गाथामें उसका प्रचुर प्रयोग देखते हैं। जन्द अवस्ता अहुरी या असुरीका धर्म है। गायत्री आसुरी अहुनावैती, उष्णिक् आसुरी वहुखषथ्र, और पंक्ति आसुरीछन्द उस्तवैती और स्पेन्ता मैन्य गाथामें मिलता है। समझ नहीं पड़ता कि घटनाक्रममें वैसा सादृश्य लगा होगा। वर अनुमित होता कि यजुर्वेदको गाथा ऋषियों की समझी बूझी थी। जन्दअवस्ताग्रन्थमें हिन्दू देवदेवियोंके बहुतसे नाम और वैदिक शब्द पाये जाते हैं।

पाश्चात्य विद्वान् यह सभी देख करके अनुमान लगाते कि भारत जानेसे पहले हिन्दू और पारसी एक समाजभुक्त ही थे।

पारसिक गाथामें एकेश्वर धर्म मतका उल्लेख है।

गाथाकार (सं० पु०) गाथा करोति कृ-अण्। १ गाथाकारक, गाथारचयिता, श्लोक रचनेवाला। गायक गानेवाला।

गाथानी (सं० त्रि०) गातव्य, गानेके योग्य। (सायण)

गाथान्तर (सं० पु०) एक कल्पका नाम। ब्रह्माके महिनेका चतुर्थ दिन।

गाथिका (सं० स्त्री०) गाथा स्वार्थे कन्। टाप्, तत इत्वञ्च। स्तुतिके निमित्त श्लोक।

गाथिन (सं० पु०) गाथिनो ऽपत्यम् गाथि अण्। १ सामवेद। २ गायकका अपत्य। ३ तच्छात्र।

गाथी (सं॰ त्रि॰) गाथा स्तोत्रादि अस्यास्ति इनि। सामवेद गानेवाला।

"इन्द्रमिद् गाथिनो बृहत्।" (ऋक् १।७।१)

'गाथिनो गीयमान सामयुक्ता" (सायण)

गाद—बम्बई प्रान्तीय सतारा जिलेके सह्याद्रिका एक अन्यतम गिरिवर्त्म। यह वाई और कोरीगांवके बीच खण्डाला नामक क्षुद्र राज्यमें अवस्थित है। खण्डाला और भोर राज्यके मध्यस्थ पर्वतमें भोरसे पूना और बेलगांव जानेकी गाद सबसे सीधो राह है।

गादड़ (हिं॰ वि॰) १ सुस्त बैल। (पु॰) २ गीदड़, सियार। ३ मेष, भेंड़ा, मेढ़ा।

गादर (हिं॰ वि॰) १ भीरु, डरपोक, कायर। २ सुस्त, मट्ठर। (पु॰) गादड़ देखो।

गादा (हिं॰ पु॰) १ कच्चा अन्न, अधपका अनाज। २ कच्ची फसल। ३ महुएका फूल जो पेड़से टपका हो। हरा महुआ।

गादि (सं॰ पु॰-स्त्री॰) गदस्य अपत्यं इञ्। यदुवंशीय गदका अपत्य।

गादित्व (सं॰ त्रि॰) गदितेन निर्वृत्तम्। वाक्यद्वारा निर्वृत्त, जो वाक्य द्वारा सिद्ध हो गया हो।

गादी (हिं॰ स्त्री॰) एक पकवानका नाम।

गादुर। (हिं॰ पु॰) चमगीदड़।

गाद्गद्य (सं॰ क्ली॰) गद्गदस्य भावः ष्यञ्। गद्गदत्व, गद्गदका भाव।

"गाद्गद्यं सगद्गदस्वरत्वेन कुहम्।" (सुश्रुत कल्पस्थान ४ अ॰)

गाध (सं॰ पु॰) गाध प्रतिष्ठायां लिप्सायाञ्च भावादौ घञ्। १ स्थान, जगह। २ लिप्सा, पानेकी इच्छा, लोभ। ३ तलस्पर्श (त्रि॰) ४ थाह, जलके नीचेका स्थल। "सरितः कुर्वति गाधाः" (रघु॰ ४।२४) ५ नदीका बहाव, कूल। ६ जिसे तैर कर पार कर सके। ७ थोड़ा।

गाधवती – जैनमतानुसार विदेह क्षेत्रकी बत्तीस नदियोंमेंसे एक बृहत् नदी।

गाधा (सं॰ स्त्री॰) गाध-टाप्। गायत्रीस्वरूपा महादेवी।

"गौतमी गामिनी गाधा।" (देवीभागवत १२।६।४०)

गाधि (सं॰ पु॰) गाधते गाध-इन्। कान्यकुब्जके एक चन्द्र वंशीय राजा। (भारत १३।११५ अ॰)

ये कुशिक राजाके पुत्र रहे। इनके पुत्रका नाम विश्वामित्र था। हरिवंशमें लिखा है कि कुशिकने इन्द्रके समान पुत्र पानेको तपस्या की। तब इन्द्र भयभीत होकर उनके निकट आये और चले गये। एक हजार वर्षके बाद फिर भी इन्होंने कुशिकको दर्शन दिया। उनकी उग्र तपस्या देख कर इन्द्रने पुत्रोत्पादनके लिये अपना अंश उन्हें प्रदान किया। कुशिककी स्त्री पौरकुत्सीके गर्भमें इन्द्रके अंशसे गाधि उत्पन्न हुए।'

गाधिज (सं॰ पु॰) गाधेर्जायते जन-ड। महर्षि विश्वामित्र।

"गाधेः पुत्रो महातेजाः विश्वामित्रो महामुनिः।" (रामायण)

विश्वामित्र शब्दमें विस्तृत देखो।

गाधिनगर (सं॰ क्ली॰) कान्यकुब्ज।

गाधिनन्दन (सं॰ पु॰) गाधेर्नन्दनः। विश्वामित्र ऋषि।

गाधिपुत्र (सं॰ पु॰) गाधेः पुत्रः। विश्वामित्र।

गाधिपुर (सं॰ क्ली॰) गाधेः पुरम्। गाधिराजाका पुर, कान्यकुब्ज।

गाधिभू (सं॰ पु॰) गाधिः भूरुत्पत्तिस्थानमस्य। विश्वामित्र ऋषि।

गाधिसुत (सं॰ पु॰) गाधेः सुतः। विश्वामित्र ऋषि।

गाधिसूनु (सं॰ पु॰) गाधेः सूनुः। विश्वामित्र ऋषि।

गाधी (सं॰ पु॰) गाधः प्रतिष्ठाऽस्त्यस्य इनि। गाधी नामक राजा।

गाधेय (सं॰ पु॰) गाधेरपत्यं, गाधि-ढक्। विश्वामित्र प्रभृति। गाधेय स्त्रियां ङीप्। २ गाधिकी कन्या, सत्यवती। यह भार्गवपुत्र ऋचिककी पत्नी थीं।

गाध्यण्डा (सं॰ स्त्री॰) भूम्यामलकी, भुइं आंवरा।

गान (सं॰ क्ली॰) गीयते गै भावे ल्युट्। गीत, सङ्गीत। इसका पर्याय गेय, गीति और गान्धर्व है। जपसे कोटि गुण ध्यान, ध्यानसे कोटिगुण लय, लयसे कोटिगुण गान है' अतएव गानके तुल्य उत्कृष्ट फल और किसीमें नहीं है। गीत देखो।

गानविद्या (सं॰ स्त्री॰) सङ्गीतविद्या।

गानिग—दाक्षिणात्यके बीजापुर प्रदेशमें रहनेवाली एक जाति। तैलविक्रय ही इनकी एकमात्र उपजीविका है। आजकल इनमें बहुतसे तेल बेचना छोड़ कर खेतीबारीसे अपना काम चलाते हैं।

इनमें 'सज्जन' और 'कारीकुल' दो श्रेणियां हैं। विधवाविवाह करनेवाले कारोकुल और उससे अलग रहनेवाले सज्जन कहलाते हैं। कारोकुल गानिगोंको काना होनेसे ही सम्भवत उस नामसे पुकारा जाता है। परन्तु इनके वृद्ध लोग बतलाते कि खरकुल शब्दके परिवर्तमें करिकुल नाम लगाते हैं। कोल्हार और बाघल कोट जिलामें इनको रहायश ज्यादा है। वंशवाचक कोई नाम नहीं होता, स्थानीय या बोलनेके नामसे ही एकमात्र परिचय मिलता है। यह बलिष्ठ, श्यामवर्ण, लम्बे चौड़े और सुन्दर मुखाकृतिविशिष्ट हैं। घरमें कनाड़ी भाषा बोलते, परन्तु कुछ न कुछ सभी मराठी और हिन्दी समझते हैं। यह सब निरामिषाशी हैं, मद्यमांस नहीं छूते। आसन पर बैठ करके खानेसे पहले लिङ्ग उपासना करते हैं। यह आतिथेय, सत्यवादी, शान्त स्वभाव, धीर, कर्मठ और चतुर हैं। इनमें बहुतसे धनी अपनेको लिङ्गायतोंका समकक्ष जैसा समझते हैं। बाल विवाह और विधवाविवाह प्रचलित है। परन्तु सज्जन गानिग विधवाविवाह नहीं करते।

धारवाड़में गानिगों की ५ श्रेणियां हैं। यहां इनको गानिगाड़' कहा जाता है। विभिन्न श्रेणियों के गानिग एकत्र बैठ करके आहारादि करते, परन्तु परस्परमें वैवाहिक दानग्रहणसे विरत रहते हैं। ब्राह्मणों के प्रति इनकी विशेष भक्ति है। सोमवार पवित्र दिन माना जाता, कोई काम काज नहीं चलाता। यदि कोई स्त्री केशोंको आलुलायित रखके तेल लेने आती, खुवा उभर आती है। इनमें बाल्यविवाह, बहुविवाह और विधवाविवाह चलता है। सभी कनाड़ी बोलते हैं।

गानिन् (सं० त्रि०) गान इन। १ गीतयुक्त। २ गीतियुक्त। ३ स्तुतियुक्त।

गानिनी (सं० स्त्री०) गानिन् स्त्रियां ङीप्। वाक्, बोली।

गान्तु (सं० त्रि०) गच्छति गम तुन्, हश्चि। १ गन्ता, जानेवाला। २ पथिक, मुसाफिर। ३ गायक, श्लोक का गान करनेवाला।

गान्त्र (सं० क्ली०) गम ष्ट्रन्। शकट, गाड़ी।

गान्त्री (सं० स्त्री०) गन्त्री एव स्वार्थे अण् ङीप्। द्वय वाह्य शकट, बैलकी गाड़ी।

गान्दिक (सं० त्रि०) गन्दिकाया भव सिन्ध्वादित्वात् अण्। गन्दिका नदीजात, गन्दिका नदीसे उत्पन्न।

गान्दिनी (सं० स्त्री०) गां धेनु ददाति प्रतिदिन गो दा णिनि पृषोदरात् साधु। १ अक्रूरकी माता। ये काशीराजकी कन्या और श्वफल्कको भार्या थी। हरिवंशके मतसे—इनका नाम निरुक्ति था। ये प्रति दिन विप्रोंको धेनुदान करती थी, इस लिये इनका नाम गान्दिनी पड़ गया। ये माताके गर्भमें बहुत वर्ष तक रही थी, इससे इनके पिताने कहा—"पुत्री! तुम शीघ्रही जन्म लो, तुम्हारा मङ्गल हो, इतने दिनों तक तुम क्यों उदरमें रह रही हो?" उत्तरमें कन्याने कहा—"यदि प्रतिदिन गोदान कर सकूं, तो जन्म लेती हूं।" पिताने इस बातको स्वीकार कर उनका मनोरथ पूर्ण किया। इन्हीं गान्दिनीके गर्भ और श्वफल्कके औरससे अक्रूर नामक एक पुत्र पैदा हुआ। पीछे इनके गर्भसे उपमद्गु, मदगु, मुदर, अरिमेजय, अविचिप, उपेच, शत्रुघ्न, अरिमर्द्दन, धर्मभृग, यतिधर्मा, गृध्रमोजान्तक, आवाह और प्रतिवाह ये तेरह पुत्र और सुन्दरी नामक एक रूपवती कन्या हुई थी। कोई कोई गान्धिनी भी पढ़ते हैं। किन्तु निरुक्ति नाम पर विवेचना करनेमें गान्दिनी पाठही उपयुक्त जान पड़ता है। गां भूमिं दायति शोधयति दै णिनि पृषोदरात् साधु। २ गङ्गा। (मेदिनी)

गान्दिनीसुत (सं० पु०) गान्दिन्या सुत, ६ तत्। १ भीष्म। २ कार्तिकेय। ३ अक्रूरादि। गान्दिनी देखा।

गान्दी (सं० स्त्री०) गां ददाति, दा क-ङीप्। अक्रूरकी माता गान्दिनी।

"स्यमन्तकमणी धन्यो गान्दिपुत्रो महायशाः।" (हरिवंश ३० अ०)

गान्धपिङ्गलेय (सं० पु० स्त्री०) गन्धपिङ्गलाया अपत्यम् ढक्। (शुभ्रादिभ्यश्च। पा ४।१।१२३) गन्धपिङ्गलका अपत्य, गन्धपिङ्गलकी सन्तान।

गान्धलो—खान्देशके अन्तर्गत एक छोटा ग्राम। यह अमलनेरसे ६ मील उत्तरपूर्वमें बसा है। लोकसंख्या प्राय १०५३ है। पिण्डारियोंके नायक चीदजी गो मला ने यह ग्राम कई बार लूटा था।

गान्धवी—कम्भालिया महालके अन्तर्गत कल्याणपुर उपविभागका एक ग्राम। यह वरतू नदीके उत्तरी तीर पर

अवस्थित है। लोकसंख्या लगभग २४० होगी। ग्रामके पास ही कोयल नामक एक पहाड़ी है। प्रवाद है कि एक समय पार्वती और शिवजीमें कुछ विवाद हुआ। इस पर पार्वती रुष्ट हो कर इसी पहाड़ पर भाग आई थीं और कोयलका रूप धारण कर रहने लगीं। तभीसे उस पहाड़का नाम कोयल पड़ा है।

गान्धर्व (सं॰ क्ली॰) गन्धर्वस्येदं गन्धर्व-अण्। १ गान।

"अथ प्रहृष्टो गानधर्वं दिव्यं ऋषिरुपाविशत्।" (भारत १३।१८।४६)

गन्धर्वो देवतास्य अण्। २ गन्धर्वदेवतात्मक मन्त्र। (रघु॰ ५।८०) (पु॰) गन्धर्व एव प्रज्ञादित्वात् अण्। ३ गन्धर्व। ४ भारतवर्षीय उपद्वीपविशेष।

"नागद्वीपस्तथा सौम्यो गान्धर्वस्त्वथ वारुणः।" (विष्णुपुराण)

५ आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक विवाह। अपनी अपनी इच्छासे वर और कन्याके परस्पर मिलनको गान्धर्व विवाह कहते हैं। यह विवाह क्षत्रियोंमें धर्मानुगत है। इनमें परस्पर मिलनके बाद अग्निसाक्षिक मन्त्रपाठ करना कर्तव्य है।

"गान्धर्वो राक्षसश्चैव धर्म्यौ क्षत्रस्य तौ स्मृतौ।" (मनु ३।२६)

गन्धर्व स्वार्थे अण्। ६ अश्व, घोड़ा। ७ सामवेदका उपवेदविशेष।

"गान्धर्वं भूमिष्ठतया समानता।" (माघ)

(त्रि॰) तस्येदं अण्। ८ गन्धर्वसम्बन्धीय। ९ गन्धर्व देशोत्पन्न। (भारत १।२२६।१०) (स्त्री॰) १० दुर्गा।

"क्रां श्रीं गार्गीं च गान्धर्वा।" (हरिवंश १७८ अ॰)

११ वाक्, वाचन।

"अग्र गान्धर्वीं पथ्यारतस्य।" (ऋग्वेद १०।८०।६)

'अग्नि गान्धर्वीं वाङ्नामैतत्।' (सायण)

गान्धर्व—युक्तप्रदेशीय जातिभेद। यह लोग गाते बजाते और प्रयाग, वाराणसी तथा गाजीपुर जिलोंमें अल्प संख्यक पाये जाते हैं। कहते हैं कि पूर्वकालको गान्धर्व सामवेदकी श्रुतियोंका गान करते थे।

गान्धर्ववेद (सं॰ पु॰) सङ्गीत सम्बन्धीय वेद।

गान्धर्वशास्त्र (सं॰ क्ली॰) सङ्गीतशास्त्र।

गान्धर्विक (सं॰ त्रि॰) गन्धर्वे कुशल ठक्। सङ्गीतशास्त्रकुशल, जो अच्छी तरह सङ्गीतशास्त्र जानता हो।

"गान्धर्विकेषु" (बृहत्संहिता ८६ अ॰)

गान्धार (सं॰ पु॰) गन्ध एव स्वार्थे अण्। १ सिन्दूर। २ देशभेद।

गान्धार एक प्राचीन जनपद है। ऋग्वेद (१।१२६।७), अथर्ववेद (५।२२।१४) और छान्दोग्य उपनिषदमें (६।१४।१) इस जनपदका उल्लेख है। अति प्राचीन कालमें यहां हिन्दू राजा वास करते थे, इसका विस्तर प्रमाण पाया जाता है। सिन्धु नदीके पश्चिम तीरसे वर्तमान अफगानिस्तानका अधिकांश पूर्व समयमें गान्धार नामसे प्रसिद्ध रहा। आजकल कन्दाहार उस प्राचीन गान्धार नामका परिचय दे रहा है।

वैदिककालमें यह स्थान लोमपूर्ण और पूर्णावयव मेषोंके लिये प्रसिद्ध था। (ऋक् १।१२६।७) ब्रह्माण्डपुराणके मतसे गान्धार देशमें उत्कृष्ट घोड़े मिलते हैं। महाभारतमें लिखा है कि महाराज धृतराष्ट्रने गान्धारपति सुवलकी कन्या गान्धारीसे विवाह किया था। भारतयुद्धके समय सुवलके पुत्र शकुनि गान्धारके राजा रहे। कर्णपर्वमें लिखा है कि आरट्ट देशके जैसा गान्धार देशमें भी नितान्त कुत्सित व्यवहार प्रचलित है।

(वनप॰ ४५ अ॰) आरट्ट शब्दमें विस्तृत विवरण देखो।

स्कन्दपुराणके प्रभासखण्डके मतसे गान्धार देशमें शोभनादित्य नामके देवता विद्यमान हैं

बौद्धगणके धर्मशास्त्रोंसे तथा जैनोंके अरिष्टनेमिपुराणान्तर्गत हरिवंशके मतमें गान्धार एक पुण्यस्थान कहा गया है। पाश्चात्य प्राचीन पुराविद् ष्ट्राबोने इस स्थानको गान्दारिटीस् (Gandarites) नामसे तथा हेरोदोतस, हेकतेयस और टलेमिने यहांके अधिवासियोंको "गान्दारी" (Gandaii or Gandarai) नामसे उल्लेख किया है ऋग्वेदमें भी यहांके रहनेवाले गान्धारी कहलाते हैं। चीनपरिव्राजक फाहियन 'कि-एन-तो वेग्' और युएनचुयाङ्ग् "कि-एन तो-लो" नामसे गान्धार राज्यकी वर्णना कर गये हैं। चीनपरिव्राजक सुङ्गयुन्ने लिखा है—गान्धारका दूसरा प्राचान नाम ये-पो-लो है। चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्गके वर्णनसे मालूम पड़ता है कि चीनपरिव्राजक गान्धार राज्य पूर्वपश्चिममें १००० लि, एवं उत्तरदक्षिणमें ८०० लि, तक विस्तृत रहा। उनके वर्णनानुसार गान्धार राज्यके पश्चिममें लमघन और

जलालाबाद, पूर्वमें सिन्धुनदी, उत्तरमें स्वात और बुनिका पहाड़ एवं दक्षिणमें कालवाघ है।

गान्धार राज्य सर्वदा हिन्दु राजाओंके अधीन रहा। राजा अशोकके समय यहां बौद्धधर्म प्रचार हुआ था। चीन परिव्राजकोंके भ्रमण वृत्तान्तमें लिखा है कि यहां बुद्धदेवने बोधिसत्वरूपमें एक व्यक्ति पर दया कर अपना नेत्र उसे प्रदान किया था। उनके स्मरणार्थ अशोक राजाने गान्धारके नाना स्थानोंमें बौद्धस्तूप निर्माण किये थे। सगयुनने अपने भ्रमण वृत्तान्तमें लिखा है कि अशोकके पुत्र धर्मवर्द्धन यहांके राजा रहे और यहांके मनुष्य हीनयान बौद्धमतावलम्बी कहलाते थे।

खृष्टीय प्रथम शताब्दीमें प्रबल पराक्रान्त महाराज कनिष्क गान्धारमें राज्य करते थे, वे यहांके नाना स्थानोंमें बौद्धकीर्त्ति स्थापन कर गये हैं।

सुगयुन ५२० ई०को गान्धारराज्यमें आकर अपने भ्रमण वृत्तान्तमें लिखा है कि 'येथा' (हूण) जातिने गान्धारके बहुतसे स्थानोंको विध्वंस कर डाला था और इसे अपने अधिकारमें लाकर लयलिको (मालवराजको) प्रदान किया। सुगयुनके समयमें यहां मालवराज राजत्व करते थे और पेशावर राजधानी रही। मालवराज बौद्धधर्मको नहीं मानते थे।

युएनचुयाङ्गने लिखा है कि गान्धार राज्यकी प्राचीन राजधानी पुष्कलावती थी। रामायणके मतसे भरतके पुत्र पुष्कलने अपने नाम पर यह नगर स्थापित किया। युएनचुयङ्गके समयमें कपिश राजाके अधीनमें एक शासनकर्त्ता आकर गान्धार देश पर राज्य करते थे। चीन परिव्राजकके वर्णनसे मालूम पड़ता है कि इस राज्यमें नारायणदेव, असङ्गबोधिसत्व, वसुबन्धु बोधिसत्व, धर्मत्रात, मनोहित और पार्श्व प्रभृति बौद्धशास्त्रकारोंका जन्म हुआ था।

मुसलमान जातिके अभ्युदयके समय यहांके बहुतसे हिन्दुओंने इस्लामधर्म ग्रहण किया था और बहुतसे अपने धर्मकी रक्षाके लिये भारतवर्षको भाग आये।

कान्दहार, काबुल, पेशावर, पुष्कलावती प्रभृति शब्द देखो।

गान्धारोऽभिजनोऽस्य। ३ पित्रादिक्रमसे गान्धारदेशवासी व्यक्तिमात्र। ४ गान्धारदेशके राजा। ५ सप्तस्वरान्तर्गत तृतीय स्वर। सङ्गीतशास्त्रके मतसे मयूरका शब्द षड्ज, गौका शब्द ऋषभ, छागका शब्द गान्धार और क्रौञ्चका शब्द मध्यम माना गया है। भरतके मतानुसार नाभिसे वायु उठ कर कण्ठ और मस्तक तक चली गई है इन समस्त स्थानोंसे नानाप्रकारकी पवित्र गन्ध वहन करती है, इसलिए इसका नाम गान्धार पड़ा है। सङ्गीतदर्पणमें लिखा है कि यह स्वर देवकुलसे उत्पन्न वैश्यजाति है। इसका वर्ण सुवर्णके सदृश पीत और उज्ज्वल है। करुणरसमें इसका प्रयोग उत्तम है। ६ स्वरग्रामविशेष। इसका लक्षण यथा,—यदि गान्धार स्वर, रि और सकी एक एक श्रुति, ध, प की एक श्रुति और निषाद ध और म की एक श्रुति आश्रय करे तो उसे गान्धार ग्राम कहते हैं। यह ग्राम स्वर्गलोकमें प्रयुक्त होता है, पृथिवीमें इसका प्रयोग नहीं होता। ७ रागविशेष। सङ्गीतदामोदरके मतसे इसके मस्तकमें जटा, अङ्गमें भस्म भूषण, पहिरावेमें गेरुआ वस्त्र, देह क्षीण और नयन मुद्रित हैं। यह योगपट्टधारी और तपस्वी भैरवरागके पुत्र हैं। प्रातःकाल इसके गानेका समय है। (क्ली०) ८ गन्धरस, गन्धबोल। (पु० स्त्री०) गान्धारस्यापत्य अञ्। ९ गान्धारिकी सन्तान। (त्रि०) गान्धारे भव, तस्य राजा वा कच्छादिभ्योऽण्। १० गान्धारदेशजात, गान्धारदेशमें उत्पन्न होनेवाला। (भारत १२।८४ अ०)

गान्धारक (सं० त्रि०) १ गन्धारदेशके मनुष्य। गन्धारदेशस्थित। "गांधारके समयते (भारत ७।८६ अ०)

गान्धारपञ्चम (सं० पु०) रागविशेष, षाड़व नामका एक राग। करुणरस और अद्भुत हास्यमें इसका प्रयोग किया जाता है। यह मङ्गलजनक समझा जाता है। इसका स्वरग्राम इस प्रकार है,—स प ध नि स ग म। इसमें ऋषभ नहीं होता, किन्तु प्रमथ, मध्यम, अलङ्कार और काकलीका होना जरूरी है। इसका अपर नाम केवल गान्धार भी है।

गान्धारभैरव (सं० पु०) रागविशेष, एक रागका नाम। यह देवगान्धारके मिलने पर होता है। यह प्रातःकालमें गानेसे अच्छा लगता है, तथा इसमें सातों स्वर लगते हैं। इसका स्वरग्राम यों है—ध नि स रि ग म प ध।

गान्धारराज (सं० पु०) गान्धारस्य राजा समासान्त टच्। गान्धारके राजा सुबल। (भारत ५।११।१४)

गान्धारि (सं० पु०) गन्धमेव अण् गांधं ऋच्छति ऋ-इन्। १ गांधारदेश। गांधारस्य तद्देशवाभिनृपस्यापत्यं। २ गांधारदेशीय नृपतिका अपत्य, गांधारदेशके राजेकी सन्तान।

"गांधारिभिः समनान्तैः पार्थं नीठेय दुर्मदैः।" (भारत ८।७६ अ०)

गान्धारिका (सं० स्त्री०) गान्धार-कन्-टाप्-अत-इत्वम्। मादक द्रव्यविशेष, गाँजा। गांधारी देखो।

गान्धारी (सं० स्त्री०) गान्धारस्य अपत्यं स्त्री इञ-ङीप्। १ धृतराष्ट्रराजपत्नी, धृतराष्ट्रकी स्त्री। यह राजा सुवल की कन्या तथा दुर्योधनादिकी माता थी। गान्धारीने शिवजीकी आराधना करके शत पुत्र प्राप्त किये थे। महाभारतमें लिखा है जब भीष्मने सुना कि गान्धारीको शत पुत्र लाभका वर मिला है तो उन्होंने शीघ्र ही सुवलके निकट दूत प्रेरण किया। सुवलने विचार कर देखा कि यद्यपि वर अन्धे हैं तो भी कुलख्याति प्रभृतिके अनुसार उन्हींको कन्या देना उचित है। जब गान्धारीने सुना कि धृतराष्ट्र अन्धे हैं एवं पिता माताने उन्हींको सम्प्रदान करनेकी इच्छा की है तो उसने एक वस्त्र लेकर उसको कई गुना करके अपनी आँखके ऊपर वान्ध लिया। इस तरह उन्होंने पतिव्रता धर्मकी पराकाष्ठा प्रदर्शन की थी।

२ अजमेरकी कन्या। ३ नाड़ीविशेष, एक नाड़ीका नाम। "इडा पृष्ठे तु, गांधारी।" (तन्त्र) ४ जिनके एक शासनदेवताका नाम। ५ लताविशेष, यवास। ६ लताविशेष, दुरालभा, धमासा। ७ पार्वतीकी एक सहचरीका नाम। (भारत ३।२३ अ०) ८ गायत्री। (देवी भागवत १२।६।४।४०) ९ कण्टकारी, भट कटैया।

गान्धारीतनय (सं० पु०) गान्धार्यास्तनयः ६-तत्। १ दुर्योधनादि स्त्रियां टाप्। २ दुर्योधनादिकी भगिनी, दुःशला।

महाभारतमें गान्धारीसे दुर्योधनादिका उत्पत्ति-विवरण इस प्रकार लिखा है—"एक समय व्यास क्षुधा और श्रमातुर हो गान्धारीके निकट उपस्थित हुए। गान्धारीने उन्हें परितुष्ट किया। इस पर व्यासने कहा कि वर मांगो। गान्धारीने स्वामीके अनुरूप शत पुत्रके लिये प्रार्थना की, व्यासने भी मनोनीत वर स्वीकार किया। थोड़े दिनके अनन्तर धृतराष्ट्रसे गान्धारीको गर्भ रहा किन्तु दो वर्ष पर्यन्त कोई सन्तान भूमिष्ठ नहीं हुई। एक दिन कुन्तीको सूर्यतुल्य सन्तानकी उत्पत्ति सुन कर गान्धारी दुःखित हुई और अपने गर्भको यत्नपूर्वक निपातित किया, उससे लौह सदृश कठिन मांसपिण्ड निकला। उसने उस मांसपिण्डको फेंक देनेकी इच्छा की, उसी समय व्यासने आकर जिज्ञासा की और गान्धारीने समस्त सच्ची बातें कह सुनायी। व्यासजी बोले कि—इस मांसपिण्डको एक शत घृतपूर्ण कुम्भमें रख छोड़ो। ऐसा करने पर हृदाङ्गुलिके गिरहके सदृश पृथक् पृथक् एक सौ भाग उसमें प्रकाश हुए और यथासमय एक शत पुत्र हो गये ज्येष्ठानुक्रमसे उनके नाम इस तरह है—दुर्योधन, दुःशासन, दुःसह, दुःशल, जलसन्ध, सम, सह, विन्द, अनुविन्द, दुर्द्धर्ष, सुवाहु, दुष्प्रधर्षण, दुर्मर्षण, दुर्मुख, दुष्कर्ण, कर्ण, विविंशति, विकर्ण, सल, सत्व, सुलोचन, चित्र, उपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, दुर्मद, दुर्विगाह, विवत्सु, विकटानन, ऊर्णनाभ, सुनाभ, नन्द, उपनन्दक, चित्रवाण, चित्रकर्मा, सुवर्मा, दुर्विमोचन, अयोवाहु, महावाहु, चित्राङ्ग, चित्रकुण्डल, भीमवेग, भीमवल, वलाकी, वलवर्द्धन, उग्रायुध, भीमकर्मा, कनकायुः, दृढ़ायुध, दृढ़वर्मा, दृढ़क्षत्र, सोमकीर्ति, अनूदर, दृढ़सन्ध, जरासन्ध, सत्यवन्ध, सदःसुवाक, उग्रश्रवाः, उग्रसेन, सेनानी, दुष्पराजय, अपराजित, कुण्डशायी, विशालाक्ष, दुराधर, दृढ़हस्त, सुहस्त, वातवेग, सुवर्चाः, आदित्यकेतु, वह्वाशी, नागदत्त, अग्रयायी, कवची, निषङ्गी, कुण्डी, कुण्डधार, धनुर्द्धर, उग्र, भीमरथ, वीरवाहु, अलोलुप, अभय, रौद्रकर्मा, दृढ़रथ, अनाधृष्य, कुण्डभेदी, विरावी, दीर्घलोचन, प्रमथ, प्रमाथी, दीर्घरोम, वीर्यवान्, दीर्घवाहु, महावाहु, वुचोरु, कनकध्वज, कुण्डाशी और विरजा। गान्धारीको शत पुत्रके अतिरिक्त दुःशला नामकी एक कन्या भी थी।

गान्धारेय (सं० पु०) गांधार्या अपत्यं ढक्। दुर्योधनादि। स्त्रियां ङीप्। गांधारेयी, गांधारीकी कन्या, दुःशला।

गान्धिक (सं० पु०) गंधो गंधद्रव्यं, पण्यमस्य ठक्। १ गंधवणिक। गन्धवणिक देखो। २ लेखक। ३ कीटविशेष, एक कीड़ाका नाम। (क्लो०) स्वार्थे ठक्। ४ गंधद्रव्यमात्र।

'पण्यानां गान्धिकं पण्यं।" (पञ्चतन्त्र)

गाम्भिनी (स ० स्त्री०) गाम्भीरी देखो।

गाम्भी (स ० स्त्री०) ग ध एव स्वार्थे प्रज्ञादित्वात् अण्। ग धोऽस्या अस्तीति अच् गौरादित्वात् ङीष्। १ कीटविशेष। एक कीड़ा। २ तृणविशेष, एक घास।

गाफ—भारतवर्षके प्रसिद्ध अङ्गरेज सेनापति। ये आयरलैंड-वासी जार्ज गाफके पुत्र थे। १७७९ ई०को इनका जन्म हुआ था, और १७९४ ई०में ये अङ्गरेज सैनिक विभागमें प्रविष्ट हुए। थोड़े वर्षोंके पश्चात् ये अंगरेजी सेनाके साथ रह कर अफ्रीका तथा अमेरिकाके नाना स्थानोंमें लड़े। १८०८ ई०को यूरोपके पेनिनसुला युद्धमें ये भयानक रूपसे आहत हुए और १८३७ ई०में भारतके अंगरेजी सेनाविभागमें नियुक्त हो कर मन्द्राज पधारे, जहां वे महिसुरके सैनिक विभागमें नियुक्त किये गये। १८४०-४१ ई०में जब अंगरेजी सेना चीनदेश भेजी गयी, गाफ साहब भी उस दलके सेनापति हो कर गये। उस युद्धमें अपनी दक्षता दिखला कर उन्होंने जी० सी० बी० और Baronet की उपाधि प्राप्त की और १८४३ ई०के ११ अगस्तको वे भारतवर्षके प्रधान सेनापतिके पद पर नियुक्त हुए। १८४३ ई०के २८ दिसम्बरको महाराजपुरमें महाराष्ट्रोंको १८४५ एवं १८४८ ई०में मुदकी, फेरोजसा और सोब्राउन नामक स्थानमें सिक्ख लोगोंको इन्होंने पूर्णरूपसे पराजित किया। विलायतके पार्लियामेंट महासभाने इनके वीरत्वसे तुष्ट हो कर इन्हें लार्डकी उपाधि दी। इष्ट इण्डिया कम्पनी और पार्लियामेण्टने दो दो हजार पौण्ड इन्हें पेन्सन-रूपसे दिया। १८४८ ई०को जब चिलियनवाला लड़ाईमें गाफके अधीन बहुतसी सेना नष्ट हो गई तो इङ्गलैण्डसे सर चार्लस नेपियर भारतवर्षको उन्हें सहायता देनेके लिये भेजे गये, किन्तु उनके पहले ही गाफ साहबने सम्पूर्ण सिक्खोंको १८४९ ई०को २२वीं फरवरीको पञ्जाबके अन्तर्गत गुजरात नामक नगरमें पराजित कर दिया था। इस लड़ाईमें नेपियर साहबसे तनिक भी सहायता न मिली थी। थोड़े दिनोंके बाद वे देश लौट गये।

गाफ साहब अति साहसी पुरुष थे। जेनेरल हैम साहबका कहना है कि विपद् आने पर उन्हें एक तरहका आनन्द मिलता था।

गाफिल (अ० वि०) १ बेसुध, बेखबर। २ असावधान, बेपरवाह।

गाब—एक पेड़का फल। (Diospyros embryopteris) यह देखनेमें ठीक नारङ्गीके जैसा होता और ऊपरमें काला काला दाग रहता है। इसके भीतर आठ आठिया रहती हैं। इसको गिरी चाटायुक्त और स्वाद कषाय है। इस फलसे जो निर्यास बाहर होता है, वह उदरामय और अजीर्ण रोगमें विशेष उपकारी है। एक पाइण्ट जलमें दो ड्राम परिमाणका निर्यास मिलाकर पिचकारी द्वारा इस जलको प्रक्षेप करनेसे श्वेतप्रदररोग आरोग्य हो जाता है। एकसे पांच ग्रेन मात्राका निर्यास दिनमें तीन बार खानेके लिये दिया जा सकता है। इसकी छालके क्वाथसे बहुत दिनके अजीर्ण, उदरामय और स्वाभाविक दुर्बलतासे उत्पन्न रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके फलसे एक प्रकारका रस निःसृत होता जो नावके पेंदे तथा जालमें मांझा देनेके काममें आता है।

गावलीन (फा० स्त्री०) एक प्रकारका यन्त्र जिसके द्वारा जहाज पर पाल चढ़ाया जाता है।

गाविलगढ़—१ दाक्षिणात्यके बरार प्रान्तका एक पहाड़ी जिला। यह अक्षा० २१° १०´ तथा २१ ° ४६´ उ० और देशा० ७६° ४० एवं ७७° ५२ पू०के बीच एलिचपुरसे कोई १५ मील उत्तर पश्चिम पड़ता है। मेलघाटके निकट वैराटशृङ्ग ३९८७ फुट ऊंचा है। इस जिलेके पूर्व मल्हार और पश्चिम दुलघाट तथा चिखलदा गिरिसङ्कट है। एतद्भिन्न और भी कई गली राहें हैं। पर्वतके निम्नदेशमें वन्यजात द्रव्य तथा काष्ठ विक्रयके लिये तङ्ग दुर्गम पार्वतीय पथ निकला है। एलिचपुर जिलेके मेलघाट उपविभागमें तासी और पूर्णा नदीके मध्यवर्ती पर्वतकी उच्च भूमि पर गाविलगढ़ दुर्ग अवस्थित है।

पहले यहां 'गौली' या 'गायली' लोग रहते थे। मालूम होता है, उन्होंने यह किला बनाया था। सम्भवतः गायली जातिके नाम पर ही यह स्थान तथा दुर्ग गाविलगढ़ कहलाया है। इस समय भी यहां उक्त जातीय बहुसंख्यक लोगोंका निवास है। कोई कोई कहता कि १४२० ई०को अहमद शाह बहमानीने यह दुर्ग निर्माण किया। काम पा करके यह किला निज़ाम राज्यमें मिल

गया था। फिर गोंड़ सरदारने उसे अधिकार किया। १७२४ ई०को महाराष्ट्र सामन्त १म रघुजी भोंसलेने उस-को निजामके हाथसे निकाला था। १८३३ ई०को जेन-रल वेलेसली और कर्नल ष्टीवेन्सन बरारराज रघुजी भोंसलेके विरुद्ध गाविलगढ़ दुर्ग अवरोध करके गोले बरसाने लगे। ३ दिन गोले चलने पर १५ दिसम्बरको किला अंगरेजोंको मिला और १८५३ ई०को तोड़ा गया।

बरारमें अमरावती जिलेके अन्तर्गत मेलघाट तालुक-के सातपुराका एक पहाड़ी दुर्ग। यह अक्षा० २१ २२ ० और देशा० ७७ २३ पू०के बीच पूरण और ताप्ती नदीके सङ्गमस्थान पर अवस्थित है। यह दुर्ग कब और किससे निर्माण किया गया है इसका पूरा पता नहीं लगता है। लेकिन फिरिस्ताके ग्रन्थसे जाना जाता है कि बाह्मनीके राजा अहमद शाह वलीने १४२८ ई०में यह दुर्ग निर्माण किया था। थोड़े समय तक यह दुर्ग कुछ नष्टसा हो गया था, तब १४८८ ई०में फत उल्लाह-इमादुल-मुल्कने इसे पुनर्वार सुधारा। १५७७ ई०में जब अहमदनगरके मुर्तजा निजाम शाहने सुना कि अकबर दक्षिण देश जीतने आ रहा है तो उसने फिरसे किलेकी मरम्मत की थी। १५९८ ई०में सैयद युसुफ खाँ मश-हदी और शेख अबुल फजलने यह दुर्ग अहमदनगरके निजामशाहसे छीन लिया था।

महाराष्ट्रकी दूसरी लड़ाईमें यह दुर्ग राघोजी भोंसला-के हाथ आ गया था; किन्तु उसी साल १८०३ ई०के १५ दिसम्बरमें जेनरल आर्थरने इसे नष्टभ्रष्ट कर डाला था।

किलामें एक सुन्दर मस्जिद आज तक विद्यमान है। मस्जिदके सामने सात गुम्बज लगे हुए हैं जिनमेंसे मध्य-का गुम्बज सबसे बड़ा है। मस्जिदके शिल्प कार्य देखने योग्य हैं।

गाभ (हिं० पु०) १ पशुओंका गर्भ। २ गाभा देखो। ३ बर-तनका साँचा।

गाभा (हिं० पु०) १ नवीन पत्ता जो नरम और हलके रंगका होता है, कोंपल। २ केले आदि पेड़के भीतर-का भाग। ३ लिहाफ तथा तोसकके मध्यकी निकाली हुई पुरानी रूई, गुदड़। ४ कच्चा अनाज।

गाभिन (हिं०) गाभिनी देखो।

गाभिनी (हिं० स्त्री०) जिसके उदरमें सन्तान रहे, गर्भिणी।

गाम (हिं० पु०) ग्राम, गाँव।

गामचा (फा० पु०) घोड़ेके पैरका वह अंग जो सुम और टखनेके बीचमें होता है।

गामवक्कल—बम्बई प्रदेशके कनाड़ा जिलामें होनावर और कुमत ग्रामको रहनेवाली एक जाति। इनकी संख्या १०५७२ है जिनमेंसे ५२८७ पुरुष और ५२८५ स्त्रियां हैं। ग्राम शब्दके अपभ्रंशसे 'गाम' निकला है। गङ्गावली और शिरावतीमें भी इन लोगोंका वास अधिक है। हालवक्की वक्कलसे ये बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। ये काले, मजबूत और लम्बे होते हैं। स्त्रियां भी पुरुषकी नाईं लम्बी और काली होती हैं, किन्तु वे कुछ कुछ दुबली पतली हैं। इस गामवक्कलकी मातृभाषा कनाड़ी है। इनका प्रधान भोजन चावल और मछली है। गो और पालतू सूअरका मांस छोड़ कर ये प्रायः सभी जानवरोंको शिकार कर खाते हैं। पुरुष और स्त्रियां चन्नी नामकी देशीय शराब अधिक पीती है। पुरुष भिन्न भिन्न अङ्ग पर तरह तरहके कपड़े पहनते हैं, और औरतें 'हालवक्की' का नाईं वस्त्र परिधान करती हैं, गले-में ये लाल और काले काँचकी माला धारण करती हैं। ये परिश्रमी, मितव्ययी, गंभीर और व्यवस्थित होते हैं। खेती बारी करके ये अपनी जीविका निर्वाह करते हैं।

गामिक (सं० त्रि०) गामिन् स्वार्थे कन्। गमनकारी, जानेवाला।

"अयोध्यागामिको शोषः पन्थाः।" (रामायण ६।१०६)

गामिन् (सं० त्रि०) गम भविष्यति णिनि। २ भावि-गमन-कारक, जो यात्रा करेगा।

"द्वितीयगामी न हि शब्द एव।" (रघु ५।४९)

२ गमनकर्त्ता, जानेवाला।

"दयं द्विरदगामिना।" (रघु० ९।२०)

गामिनी (सं० स्त्री०) पूर्व समयकी एक प्रकारकी नाव। इसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई क्रमशः ८६ हाथ, १२ हाथ तथा ८ हाथकी रहती थी। यह नाव प्रायः समुद्रमें चलती रही, इस नाव पर यात्रा करनेमें बड़ी कठिनाईयां झेलनी पड़ती थीं।

गामुक (सं० त्रि०) गमनशील, गमनकारी जानेवाला।

गाम्भारी (सं० स्त्री०) गम्भारीवृक्ष।

गाम्भीर (स० त्रि०) गम्भीर-अञ्। गम्भीरद्वारा निर्वृत्त।

गाम्भीर्य (स० क्लो०) गम्भीरस्य भाव, गम्भीर यञ्। १ अगाधत्व, गम्भीरता, गहरा।

"समुद्र इव गाम्भीर्ये" (रामायण १।१।१८)

२ अविकारित्व, विकारका अभावपन।

"निरवग्राम्भीर्य मपामबुधेरम्।" (माघ)

सात्त्विकगुणविशेष। भय, शोक, क्रोध और हर्षादि द्वारा कोई विकार नहीं होनेको गाम्भीर्य कहते हैं।

विकारास्तदना न यत्र क्रोधभयादिषु।

भावेषु नीयन्महतां तद्गाम्भीर्यमिति स स्मृ ॥" (साहित्यदर्पण)

४ अचापल्य, दृढता, धैर्य।

"गाम्भीर मनोहर वपु" (रघु० ३।३२)

गाम्मन्य (स० त्रि०) गामिव मन्यते खश्, तत मम्। जो अपनेको गोतुल्य समझे।

गाय (स० पु०) गै भावे घञ्। १ गान।

यथाविधानेन पठन् सम गायमविच्छ नम्।" (याज्ञवल्का)

गाय (हि० स्त्री०) १ गो, इसके नरको साँड वा बैल कहते हैं। २ बहुत सीधा सादा मनुष्य।

गायक (स० त्रि०) गानकर्त्ता गानेवाला।

'तथा गायकि गायका। (भागव १११२१ च)

गायकसव—कसाइयोंकी एक जाति। ये सतारा और महाबलेश्वरमें पाये जाते हैं। कहा जाता है कि ये हावसी गुलाम तथा काबुल पठानोंके वंशज हैं जिन्हें हैदर अलीने महिसुरमें गाय और भैंस कतल करनेके लिये नियुक्त किया था। ये १८०३ ई०में जेनेरल वेलेस्ली और १८१८ ई०में सर थोमस मनरोके साथ दाक्षिणात्यमें आये थे। ये आपसमें हिन्दुस्थानी भाषा और दूसरेके साथ मराठी बोलते हैं। ये बहुत कुछ यहांके मुसल मानोंमें मिलते जुलते हैं। ये परिश्रमी, क्रोधी और भग डालू होते हैं। इन्हें शराब पीनेकी आदत अधिक है।

गायकवाड—बड़ोदाके राजवंशका उपाधि या नाम। जो राजा रहता, इसी नामसे अभिहित हुआ करता है। 'सेन खास खेल शमशेर बहादुर' इनका दूसरा उपाधि है। फिर १८७० ई० १ जनवरीको दिल्लीके दरबारमें इन्हें 'फरजन्द खास दौलत इङ्गलिशिया' उपाधि भी मिला था। अंगरेज सरकार गायकवाडको २१ तोपोंकी सलामी देती है।

दामाजी गायकवाडसे इस वंशकी उत्पत्ति है। वह महाराष्ट्रराज साहूके अधीन कर्म करते थे। उनके सेनापति खण्डेराव धाबाडे बालापुरके युद्धमें इनका वीरत्व देख करके सन्तुष्ट हुए और इनको पदोन्नति करनेके लिये राजाको अनुरोध किया। उसीके अनुसार इन्होंने द्वितीय सेनापतिका पद और 'शमशेर बहादुर' उपाधि पाया था। दामाजीके मरने पर उनके भ्रातुष्पुत्र पिलाजी राव गायकवाड पद पर अभिषिक्त हुए। खण्डेरावके पुत्र त्राम्बकराव धाबाडे और पिलाजी दोनोंने मिल करके अन्यान्य महाराष्ट्र सामन्तों के साथ पेशवाके विरुद्ध युद्धयात्रा की थी। १७३१ ई०को बड़ोदा नगरके निकट एक लड़ाई हुई। उसमें त्राम्बकराव पराजित और निहत हुए। पेशवाने उनके शिशु सन्तान यशोवन्त रावको सेनापतिके पद पर नियुक्त करके पिलाजी गायकवाडको पहले ही जैसा सहकारी सेनापति बना 'सेन खास खेल' उपाधि दिया और यशोवन्त रावके प्रति गुजरातका समस्त कार्यभार अर्पण किया। शर्त यह थी कि राजस्वका प्राय अर्धांश पेशवाको देना पड़ेगा। उस समय दिल्लीके बादशाह इस प्रदेशके कई एक राज्योंका कर पेशवाको देते थे। उन्होंने पिलाजीको कर्मच्युत करके योधपुरराज अभयसिंहको उस पद पर बैठा दिया। इसी झगड़ेमें पिलाजी गायकवाडने सम्राट्के विरुद्ध अस्त्र धारण किया और उनकी सेनाओंको युद्धमें परास्त करके अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया। अभयसिंहने देखा कि पिलाजी लोगोंके प्रियपात्र रहे, उनको लड़ाईमें जीतना सहज न था। यह विवेचना करके १७३२ ई०को गोपनसे दस्यु द्वारा उन्होंने पिलाजीको मरवा डाला। फिर उनके पुत्र दामाजी गायकवाड बनाये गये। इधर सेनापति यशोवन्त राव यद्यपि होते भी कार्यसम्पादनको असमर्थ थे। उसीसे गायकवाड घराने पर भी वह भार डाला गया। १७३२ ई०को पिलाजीके भाई महाजीने बड़ोदा नगर अधिकार किया। उसी समयसे उक्त नगर गायकवाड वंशकी राजधानी बना हुआ है। तारावाईने जब अपने पौत्र सताराके राजाको बालाजी बाजीराव पेशवाकी अधीनतासे छुड़ाया, दामाजी गायकवाड़ने उन्हें

साहाय्य पहुंचाया था। पेशवाने इसीसे उनको विश्वासघातकता पूर्वक पकड़ रखा। शेषमें गुजरातकी बाकी मालगुजारी १५ लाख रुपया देनेकी स्वीकृत होने पर पेशवाने उन्हें छोड़ दिया। उसी समय यह भी लिखा पढ़ी हुई—राज्यका जो अधिकार है और जहां उसका अधिकार होगा, उसके आयका आधा भाग पेशवाको देना पड़ेगा। काठियावाड़में गायकवाड़ने जो स्थान अधिकार किये थे, दूसरे वर्ष पेशवाने उसका कितना ही अंश ले लिया। गावकवाड़ पेशवाको सैन्य साहाय्य करने पर भी प्रतिश्रुत हुए। फिर पेशवा और गायकवाड़का मिलित सैन्य ले करके राघव गुजरात अधिकार करने चले थे। १७५५ ई०को अहमदाबाद दिल्लीके शासनसे पृथक् हुआ। पेशवा और दामाजी दोनोंने उसका राजस्व बांट लिया था। किन्तु राज्यका अधिकांश पेशवाके हाथ लगा।

१७६१ ई० ७ जनवरीको अहमदशाह अबदालीके साथ पानीपतमें जो लड़ाई हुई, महाराष्ट्र पक्षमें दामाजीने अपना सैन्य ले करके विलक्षण वीरत्व देखाया था। इस युद्धमें कितने ही महाराष्ट्रवीर धराशायी हुए और दामाजी अल्पसंख्यक सैन्य ले करके घरको लौट पड़े। उसी समयसे वह फिर अधिक युद्धविग्रहमें न लगे, अपने राज्यकी ही रक्षा करते रहे। इसी समय उन्होंने गुजरातकी उत्तरदिक्के बधानपुरको छोड़ करके समस्त स्थान जुवान् मर्द खाँके पाससे अधिकार किया और ईडरके राठौरवंशीय राजाओंको करद बना लिया। इसी प्रकार दामाजी एक पराक्रान्त नरपति हो गये। पेशवा मधुरावके सेनापति रघुनाथ राव या राघवने अपने प्रभुके विपक्षमें अस्त्रधारण किया था। दामाजीने राघवकी सहायता करनेके लिये अपने पुत्र गोविन्दरावको ससैन्य भेज दिया। दोनों पक्षोंमें घमासान लड़ाई हुई, किन्तु अन्तमें राघव हार गये। पेशवाने गोविन्दरावको पकड़ रक्खा था। फिर दामाजोको ५२५०००) रु० दे करके पेशवासे सन्धि करनी पड़ी। वह शान्तिके समय ३००० और युद्धके समय ४००० अश्वारोही देने पर स्वीकृत हुए। एतद्व्यतीत कई एक प्रदेश भी पेशवाने अधिकार कर लिये। यह ठहर गया कि २५४०००) रुपया और मिलने पर वह लौटा दिये जावेंगे। इसके पीछे दामाजीके राज्य कालमें दूसरी कोई बड़ी घटना नहीं हुई। सन्धिकी शर्त पूरी होते न होते ही वह मर गये। उनके ३ पत्नियां रहीं। प्रथमाके गर्भसे गोविन्दराव, द्वितीयाके गर्भसे सभाजी तथा फतेहसिंहजी और तृतीयाके गर्भसे मानिकजी नामक पुत्रने जन्म लिया था। इन लड़कोंमें द्वितीयाके गर्भजात सभाजी राव सर्वज्येष्ठ रहे। पिताके मृत्युकालको प्रथमाके गर्भजात गोविन्दराव पूनामें कैद भुगते थे। वहां उन्होंने पेशवा मधुरावको बहु मूल्य उपढौकनसे तुष्ट करके और पूर्ववत् सन्धिके अनुसार कार्य करने पर स्वीकृत हो उनसे अपने नामपर राज्य करनेको अनुमति ली। उन्हें 'सेन खास खेल' उपाधि भी मिला था। गोविन्दरावको इस उपलक्षमें ५०४८९१४॥) निम्नलिखित रीतिसे देना पड़ा—

गत वर्षका कर	५२५०००)
१७६८ ई०की अनुपस्थितिका दण्ड	२३३५०००)
सेन खास खेलकी उपाधिके लिये	
नजराना और जागीर	२१०००००)
हिसाब खाते ··· ···	१०००००)
मुकुन्द काजीको अतिरिक्त कर देने पर	२६६३०)
	५०५८६३०)
नकद सोना ··· ···	३७१५॥)
कुल ··· ···	५०८४८१४॥)

इधर फतेहसिंहने बुद्धिहीन बड़े भाई सभाजीका बड़ोदेके सिंहासन पर बैठा करके राजकार्य परिचालनका भार अपने हाथमें लिया और पेशवाको राजी करनेके लिये पूना गमन किया। उसी समय मधुरावके वंशमें विवाद उपस्थित हुआ था। लोभमें पड़ करके पेशवाने सभाजीका अधिकार स्वीकार कर लिया और 'सेन खास खेल' उपाधि दे करके फतेहसिंहको उनका अधीनस्थ बना दिया। इससे गोविन्दरावके साथ उनका झगड़ा लगा था। फतेहसिंहने मधुरावसे कहा कि गोविन्दराव सम्भवतः युद्धका उद्योग करेंगे। सुतरां जो सैन्य उस समय पेशवाके पास रहा, गुजरातमें रखना अच्छा था और उसके खर्चको वह वात्सरिक ६७५०००) रु० देनेको

प्रस्तुत थे। फतेहसिंहने पेशवाकी अभिसन्धि भली भांत समझ ली थी। वह जानते थे—पेशवा किसी समय उन्हींको आक्रमण करके विपर्यस्त कर डाले गे। १७७२ ई०को उन्होंने बम्बईमें अंगरेज सरकारके पास सन्धिका प्रस्ताव करके भेजा। किन्तु विलायतके 'कोर्ट अव डिरेक्टर्स'ने उक्त प्रस्ताव पर अपनी असम्मति प्रकाश की थी। परन्तु १७७३ ई० १२ जनवरीको भड़ोंचके राजस्व सम्बन्धमें एक सन्धि हो ही गयी।

उधर नारायण रावके प्राणविनाशके बाद राघव पेशवा हुए और गोविन्द रावको 'सेन खास खेल' उपाधि मिला था। इस बार गोविन्द रावका साहस बढ़ गया। वह 'फतेहसिंहके हाथसे बड़ोदा राज्य निकाल लेने गुजरातको चले थे। वहां पहुंचते ही गोविन्द रावने बड़ोदा अवरोध किया। राघवने नरोत्तमदास नामक किसी व्यक्तिको गोविन्दरावकी ओरसे सुरतके दक्षिण प्रदेशोंका राजस्व चुकानेको रख लिया था। फतेहसिंह जा करके उसको पकड़ लाये। राघव उसीसे गोविन्द रावके साथ घेरा डालनेमें मिल गये। इधर फतेहसिंहने झोलकर और सेंधियाकी फौज ले करके राघवकी फौज पर हमला किया था। राघव पराजित हो करके भाग खड़े हुए। गोविन्द राव खण्डेराव प्रभृतिने प्रथमतः कप्पड़वञ्ज और फिर पहलानपुरको पलायन करके आत्मरक्षा की। आखोरको राघवने अंगरेजोंका सहारा पकड़ा। (फतेहसिंह गायकवाड़ देखो।) १७८० ई० २० जनवरीको फतेहसिंहके साथ एक सन्धि हुई। पीछे उसके बातिल ठहरने पर १७८२ ई०को दूसरी सन्धि की गयी। १७८९ ई० ११ दिसम्बरको फतेहसिंहके मरने पर दामाजीके अपर पुत्र मानाजी राज्यभार ग्रहण करके पहलेकी तरह सभाजीके नाम पर राजा चलाने लगे। १७९३ ई० अगस्त मासको उनके मरने पर पूर्वोक्त गोविन्दराव गायकवाड़ बड़ोदाके सिंहासन पर बैठे थे। १८०० ई०के सितम्बर महीने गोविन्द राव भी मर गये। गोविन्द रावके ११ पुत्र रहे। उनमें ज्येष्ठपुत्र आनन्द राव सिंहासनारूढ़ हुए। किन्तु उनमें वैसी बुद्धि न थी। सहजमें ही गोविन्द रावके दूसरे पुत्र कानोजी राव राजाको सभी क्षमता अपने हाथमें लेने लगे। बड़ोदा राजाके पूर्वतन मन्त्री रावजी अप्पाजीने आनन्द रावको सहायता करके कानोजी रावके हाथसे सरकारी खजाना निकाल लिया था। उभय पक्षोंमें संग्राम होने लगा। रावजीकी ओर उनके भाई बाबाजी, उनके अधीन गुजराती अश्वारोही दल और सात हजार अरबी सेना थी। उस समय महम्मद पारिख और सामुएल विचर नामक दो कारिन्दे जाटा सूद पर रुपया दे उक्त सेनादलको पालन करते थे। सिपाही तनख्वाह पाने पर अपना देना चुकाते थे। सुतरां वह कारिन्दों के विशेष वशीभूत रहे। यह दोनों कारिन्दे बाबाजीकी ओर रहनेसे आनन्द रावका ही पक्ष बलवान् हुआ। उधर कानोजीका पक्ष भी नितान्त सहायशून्य न था। उनके पितृव्य मल्हार राव कड़ी नामक स्थानके जागीरदार रहे। उन्होंने यह प्रतिश्रुत होने पर कानोजीका पक्ष लिया कि कानोजी राजा होने पर उनको बाकी मालगुजारी छोड़ देंगे और आगे कोई कर न लेंगे। उन्होंने अविलम्ब ही सैन्य सङ्गठन करके बड़ोदा राज्य आक्रमण किया। आनन्दरावकी ओरसे रावजीने "अनन्योपाय" हो करके बम्बईको अंगरेज गवर्नमेण्टको लिख भेजा—मल्हार रावके विपक्षमें यदि अंगरेज साहाय्य करें तो हम ५ दल अंगरेजी फौजका खर्च देनेको तैयार हैं। "बम्बईके शासनकर्ता डनकन साहबने इस पर भारत गवर्नमेण्टको अनुमति मांगी थी। परन्तु बहुत दिनों अपेक्षा करने पर भी जब कोई मतामत न मिला, तो आखीरमें उन्होंने मेजर अलगजेण्डर वाकरको सेनापति बना १६०० सिपाहियोंके साथ रवाना किया और उनको कह दिया, पहले वह निबटारेकी चेष्टा करेंगे, निबटारेका सुभीता न पड़नेसे रावजीके साथ मल्हार रावसे लड़ेंगे। मल्हार रावने भी गतिकको समझ बूझ करके प्रथमतः बहुत भयभीत जैसे बन गये और अधिकृत स्थानों को छोड़ देने पर तैयार हुए। शान्तिकी बात चल रही थी कि मल्हार रावने एकाएक १७ मार्चको अंगरेजी फौज पर आक्रमण किया। परन्तु अन्तमें इन्होंको पराजित हो करके भागना पड़ा। इस लड़ाईमें अंगरेजोंके ५० आदमी मारे गये। फिर मल्हार राव चुपके चुपके बाबाजीका कितना ही सेना

दल तोड़ने लगी। वाकर साहबने अवस्था देख करके बम्बईको संवाद भेजा था। बम्बई गवर्नमेण्टने उस पर और भी कितनी ही फौजके साथ मर विलियम क्लार्क साहबको रवाना किया। ३० अप्रेलको उन्होंने बड़ोदा पहुंच मलहार राव पर आक्रमण मारा था। मलहार रावने अखीरमें अपनेको उनके हाथ सौंप दिया। अंगरेज गवर्नमेण्टने वाकर साहबको बड़ोदेका पोलिटिकल एजेण्ट नियुक्त किया था। फिर स्थिर हुआ कि मलहारराव नड़ियाद नामक स्थानमें रहेंगे और उनको खर्चके लिये १२५०००) रु० मासिक मिलेंगे। अच्छा व्यवहार करने पर उनको और भी ज्यादा रुपया दिया जावेगा। कानोजी बड़ोदामें कैदीके तौर पर रखे गये। बात यह हुई—आनन्दराव अंगरेज गवर्नमेण्टको एक दल सेना रखेंगे और सूरत तथा ८४ जिलाओंकी चौथ अंगरेज गवर्नमेण्टको देंगे। रावजी अप्पाजो यावज्जीवन मन्त्री रहेंगे, अंगरेज गवर्नमेण्ट उनके पुत्र, भ्राता भ्रातुष्पुत्र, भागिनेय और बन्धुबान्धवोंके प्रति यथेष्ट उदारता दिखलावेगी।

उधर बड़ोदा राजकोषके अर्थ सम्बन्धमें बड़ी गड़बड़ी पड़ी थी। मन्त्री रावजी अप्पाजी अपनी शृङ्खला स्थापन करनेमें असमर्थ थे, उन्हें अंगरेज गवर्नमेण्टका साहाय्य ले करके काम करना पड़ा। गायकवाड़-वंशीय गणपति नामक कोई व्यक्ति मल्हाररावका पक्ष अवलम्बन करके खेरा दुर्ग दबा बैठा था। भूतपूर्व गोविन्दराव गायकवाड़के मुरारिराव नामक पुत्रने गणपतिके साथ योगदान किया था। उन्हें दमन करना एकान्त आवश्यक समझ करके एक दल सेना भेजी गयी। गणपतिराव और मुरारिरावने पलायन करके धार राज्यमें पंवारोंका आश्रय ग्रहण किया।

अपर दिकको और एक विभ्राट् उपस्थित था। अरबी फौज बहुत दिनोंसे तनखाह न पाने पर मनमानी करने लगी। उनको दमन करना कठिन पड़ा था। चाहे शृङ्खला स्थापनका उद्योग देख करके अथवा अपने निकाल दिये जानेकी आशङ्कासे उन्होंने विद्रोही हो गायकवाड़ आनन्दरावको पकड़ लिया और कानोजोको छोड़ दिया। मल्हाररावने भी उसी सुयोग पर नड़ियाद नामक स्थानसे गोपनमें पलायन किया।

पोलिटिकल एजेण्ट मि० वाकरने पहले मीठी बातोंमें अरबोंको समझाना चाहा था। परन्तु उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। उन्होंने बम्बईसे अंगरेजी सैन्य मंगा बड़ोदा घेरा था। अवरोधके समय अरब लोग घरोंके भीतरसे गोली मार कितने ही अंगरेज सिपाहियोंको गिराने लगे। १० दिन घेरे पीछे उन्होंने कहा कि उनका प्राप्य अर्थ मिलने पर वह देश छोड़ करके चले जाने पर प्रस्तुत थे। उनका १७ लाख ५० हजार रुपया पावना था। राजकोषमें उतना रुपया न रहा। उसीसे ४१ लाख २८ हजार रुपया ऋण लेना पड़ा। ईष्ट इण्डिया कम्पनीने अपने आप उसका आधासा रुपया दिया और बाकी अपनी जमानत पर देशी कोठीवालोंसे लिया था। सैकड़े पीछे ८) रु० सूद रहा। ७ वर्षमें रुपया चुकानेकी बात थी।

इस प्रकारसे वेतनका बाकी रुपया लेकर अरबी फौज ज्यादातर देश छोड़ करके चली गई। सिर्फ अबुद नामका जमादार कानोजोकी साहाय्य करनेके लिये उनसे जा कर मिला था। कानोजो बड़ोदेसे भाग कर महाराष्ट्रकी उत्तर सीमा पर राजपिप्पली नामक पार्वत्य प्रदेशको चले गये और वहां फौज इकट्ठी करने लगे। बड़ोदा अवरोधके समय वह राहमें बाबाजीके एक सैनादलको पराजय करके बड़ोदाकी ओर जा रहे थे। १८०३ ई० जनवरी मासको अंगरेजोंने अरबी सिपाहियोंको ... करके मेजर होम्सको ससैन्य कानोजीके विपक्षमें प्रेरण किया। कानोजी शौरीगांवके पास पहाड़ी राह अधिकार करके गुप्त भावमें अंगरेज फौज पर हथियार फटकारने लगे। अंगरेजी सेनाने पीठ दे खानेका उपक्रम उठाया ही था कि मेजरहोम्सने सिपाहियोंको उत्तेजित करके प्रबल वेगसे शत्रुका अनुसरण किया। कप्परवंज नामक स्थानमें कानोजीका दलबल छिन्न विछिन्न हुआ था। वह उज्जयिनीको भाग गये। अवशेषमें १८०८ ई०को उन्होंने अंगरेजोंके हाथों आत्मसमर्पण किया। अंगरेजोंने उन्हें छोड़ उनके निर्वाहका प्रबन्ध बांधा था। परन्तु शेषमें १८१२ ई०को विश्वासघातकता करनेके अभियोग पर वह मन्द्राज भेजे गये। वहीं उनका मृत्यु हुआ। उनके सहकारी मल्हारराव भी नड़ियादसे भाग इधर-उधर घूमते फिरते थे। वैसे ही समय बाबाजीके सिपा-

हियो ने उन्हें पकड़ करके अंगरेजों के हाथ सौंप दिया। अंगरेजों ने उन्हें बम्बईके दुर्गमें कैद करके रखा था। वहीं मल्हारराव मर गये।

अंगरेजों के साहाय्यसे आनन्दराव गायकवाड़ बड़ोदा राज्य शासन करने लगे। रावजी अप्पाजी मन्त्री, बाबाजी सेनापति और लेफटिनेण्ट कर्नल वाकर अंगरेजों रेसीडेण्ट वा पोलिटिकल एजेण्ट थे। उस समय राज्यका आय ५५ लाख, परन्तु व्यय ८२ लाख रुपया रहा। सुतरां ऋणपरिशोधका कोई उपाय देख न पड़ता था।

१८०५ ई०को अंगरेज गवर्नमेण्टने गायकवाड़के साथ एक नयी सन्धि की। पहले वह २००० फौज रख सकते थे, इस सन्धिके अनुसार ३००० पैदल और गोलन्दाजों की एक फौज रखने लगे। और उनके व्ययनिर्वाहको ११७०००० रु० आयकी सम्पत्ति* अलग की गयी। चौरासी, चिकली और कैरा प्रदेश तथा सूरतकी चौथ और सिवा इसके १२ लाख ८५ हजार रुपयेकी जायदाद कर्ज अदा करनेके लिये अंगरेज गवर्नमेण्टको दी थी। सन्धिके ७ वर्ष पीछे अंगरेज गवर्नमेण्टने देखा कि फौज रखनेके लिये जो सम्पत्ति निर्दिष्ट थी, उससे व्यय न निकलता रहा। उसीसे गायकवाड़को और जायदाद छोड़नी पड़ा। १८०८ ई०को मालूम हुआ कि ऋण जैसाका तैसा रहा और सूद बढ़ता था। सन्धिमें किसीको सुभीता न पड़ा। अंगरेज गवर्नमेण्ट सम्पत्ति ले करके फौजका खर्च चला न सकी, गायकवाड़का भी कर्ज बना रहा। १८११ ई०को रेसीडेण्ट मेजर वाकरके काममे छुट्टी लेने पर कप्तान रिवेट कार्नाक रेसीडेण्ट हुए। १८१२ ई०को बम्बई सरकारने प्रस्ताव किया था गायकवाड़के एक करोड़ रुपया देने पर उनको समस्त अन्य सम्पत्ति लौटा देनी चाहिये परन्तु इस प्रस्तावमें गवर्नर जनरल सम्मत न हुए। १८१३ ई०को बड़ोदेमें भयानक दुर्भिक्ष पड़नेसे राजस्वकी तहसीलमें बड़ी अड़चन लगी। उससे ऋण और भी बढ़ा था। दूसरा वर्ष पेशवाके बारेमें दूसरा झगड़ा उठ खड़ा हुआ। इससे पहले अहमदाबाद और काठियावाड़ प्रदेश ४॥ लाख रुपया सालाना आमदनीकी जायदाद मान करके कई वर्षके लिये पेशवाको दी गयी थी। निर्दिष्ट काल शेष होने पर पेशवाने फिर उसको लिखा पढ़ी करा लेनी चाही। गायकवाड़के पक्षसे कहा गया कि उन्होंने गायकवाड़के अधिकृत भूभागकी मालगुजारी नहीं दी और गायकवाड़से बिना पूछे ही अंगरेज गवर्नमेण्टको पहुंचा दी। दोनों ओरका हिसाब साफ करनेके लिये गायकवाड़की ओरसे गङ्गाधर शास्त्री पूनेको भेजे गये। गङ्गाधर शास्त्री देखो। अंगरेज गवर्नमेण्ट उनकी रक्षाके लिये दायी हुई थी। गङ्गाधरके निहत होने पर अंगरेजोंने पेशवाको लिखा कि वह हत्याकारी त्र्यम्बकजी डङ्गियाको उनके हाथ सौंप देते। अनिच्छा रहते भी पेशवाने उन्हें पकड़ करके उपस्थित किया। किन्तु त्र्यम्बकजी रक्षियोंके हाथसे निकल सेनासंग्रहपूर्वक पेशवाके साहाय्यसे युद्धका उद्योग करने लगे। १८१७ ई०को अङ्गरेजोंके पूना घेरने पर पेशवाने सन्धिका प्रस्ताव किया। अङ्गरेजी पक्षपर एलफिनष्टोन साहबके प्रस्तावसे सन्धि हुई।

इतने दिनों तक पेशवा महाराष्ट्रों के अग्रणी जैसे समझे जाते थे, अब उस सम्मानसे वञ्चित हुए। स्थिर हो गया कि उनको सब मांगे चुकानेके लिये उन्हें प्रति वर्ष ४ लाख रुपया दिया जावेगा। वह फिर गायकवाड़ राजामें किसी प्रकारका हस्तक्षेप न कर सकेंगे। अहमदाबाद पिछली सन्धिके अनुसार उन्होंके पास रहेगा। काठियावाड़ प्रदेशका राजस्व अंगरेज गवर्नमेण्टको देना पड़ेगा।

पेशवाके साथ सन्धि हो जाने पर गायकवाड़से इस शर्त पर अंगरेजी गवर्नमेण्टकी दूसरी सन्धि हुई कि कोई बड़ा युद्ध उपस्थित होने पर उभयपक्षको सैन्य दे करके एक दूसरेका साहाय्य करना पड़ेगा। गायकवाड़के ३००० सवार अंगरेजों के अधीन रहेंगे। दोनों ओरके कैदी परस्पर छोड़ देने पड़ेंगे। अंगरेज गवर्नमेण्ट गायकवाड़के साहाय्यको और भी सैन्यसंख्या बढ़ावेंगी। उसके व्ययनिर्वाहार्थ गायकवाड़ने अंगरेज गवर्नमेण्टको गुजरातका अंश छोड़ दिया। फिर अंगरेजों

* इस सम्पत्तिमें ढोलका ४२[illegible]), नड़ियाद १०२०००), माताहुर ११०००), महुधा ११०[illegible]), थसरा ११०[illegible]), कपड़वंज ९१०००), विजापुर [illegible]), और काठियावाड़की चौथ ११०००) रु०।

गवर्नमेण्ट और गायकवाड़ने कई एक स्थान आपसमें परिवर्तन किये।

इस सन्धिके पीछे आनन्दरावके समयमें कोई विशेष घटना नहीं हुई। १८१८ ई० २ अकतूबरको वह मर गये। इससे पहले ही उनके भ्राता फतेहसिंहका भी मृत्यु हो चुका था। यह १२ वत्सरकाल राजकार्यके अध्यक्ष रहे। फतेहसिंहके मरने पर उनके कनिष्ठ भ्राता शिवाजी राव वही कार्य करने लगे। आनन्द रावका मृत्यु होने पर उनके दो लड़के रहते भी यही शिवाजी राव राजा बन बैठे।

आनन्द रावको बुद्धिहीन समझ करके अङ्गरेज गवर्नमेण्ट सब विषयोंमें हस्तक्षेप करती थी। परन्तु शिवाजी बुद्धिमान् रहे, उनके समयको वैसी दस्तन्दाजीकी ज़रूरत न पड़ी। फिर भी रेसीडेण्ट जैसे थे, बने रहे। १८२० ई०को बम्बईके गवर्नर एलफिनष्टोन साहब बड़ोदेमें जा करके सब विषयोंमें सुशृङ्खला स्थापनको नया प्रबन्ध कर आये और स्थिर हो गया कि राज्यका कार्यकलाप वृटिश गवर्नमेण्टके हाथमें रहेगा। आभ्यन्तरिक बातोंमें गायकवाड़का सम्पूर्ण कर्तृत्व चलेगा। फिर भी कोठीवालोंके साथ देनेको जो व्यवस्था हुई थी, उसमें किसी प्रकारकी त्रुटि न आती और वात्सरिक आयव्ययकी व्यवस्था रेसीडेण्टका दिखला ली जाती। रेसीडेण्ट चाहनेसे बहीखाता देख सकते। किसी विषयमें अधिक खर्च करनेको रेसीडेण्टसे परामर्श ले करके कार्य करना पड़ेगा। वृटिश गवर्नमेण्टने मन्त्री और अन्यान्य कर्मचारियोंके प्रति जो अभयदान किया था उसकी रक्षा करनी पड़ेगी। गायकवाड़ अपने आप मन्त्री नियोग करेंगे, किन्तु नियोग करनेमें पहले रेसीडेण्टसे उसके सम्बन्धमें परामर्श लेना पड़ेगा। समय समय पर वृटिश गवर्नमेण्टको परामर्श देनेका अधिकार रहेगा। यह सब नियम हुए तो सही, परन्तु शिवाजी तदनुसार चल न सके। ऋण परिशोधके लिये समय समय पर रुपया देनेकी जो व्यवस्था हुई थी, उसको भी वह पालन करनेमें असमर्थ हुए। इसी प्रकारसे १८२० ई०को उन पर १ करोड़ ७ लाख रुपया ऋण चढ़ गया। वृटिश गवर्नमेण्टने कहला भेजा था यदि वह रुपया न दे सकें, तो कर्ज़ चुकानेके लिये महाजनोंको उन्हीं हिसाब से अपनी ज़मीन सौंप दें। किन्तु शिवाजी यह न कर सरकारी राजस्वका रुपया इधर उधरमें इकट्ठा करके उड़ाने और वृटिश गवर्नमेण्टने जिन लोगोंकी रक्षा करनेको कहा था, उनको नानाविध अत्याचारोंसे सताने लगे। एलफिनष्टोन साहबके बाद सर जॉन मेलकम बम्बईके गवर्नर हुए थे। उन्होंने शिवाजीको बहुत समझाया परन्तु कोई फल न पाया। अन्तमें १८२८ ई०को कई एक जायदादें अलग करके महाजनोंके साथ बन्दोबस्त कर लिया गया। अंगरेज़ गवर्नमेण्टका जो सैनादल उपस्थित रखनेकी बात थी, शिवाजीने बाहर राज्योंमें पहरेके काम पर नियुक्त किया। परन्तु उन्होंने रीतिके अनुसार वेतन पाया न था। उससे १८३० ई०को इङ्गलिश गवर्नमेण्टने फिर १५ लाखकी सम्पत्ति निकाल ली। १८३२ ई०को लार्ड क्लेयर बड़ोदे जा करके गायकवाड़से मिले थे। स्थिर हो गया कि गायकवाड़ महाजनोंका देना चुकावेंगे। महाजनों पर किसी प्रकारका अत्याचार न होनेको वृटिश गवर्नमेण्टने जिम्मा लिया था। गायकवाड़ने सवारोंको तनख्वाह वक्त पर देना मञ्जूर किया और अपनी बातको ज़मानतके तौर पर गवर्नमेण्टके पास १० लाख रुपया रख दिया। गवर्नमेण्टने उनसे १५ लाख रुपयेकी जायदाद जो पहले ले ली थी, वापस कर दी। परन्तु शिवाजीके लिये प्रतिज्ञा पालन करना असाध्य हो गया। वह बहुतसी बातोंमें सरकारी हिदायतोंके खिलाफ काम करने लगे। इसके बाद गवर्नमेण्ट और चुप रह न सकी। गायकवाड़के कई एक स्थान अंगरेजी अधिकारमें थे। वह उन्हें उसकी मालगुजारी देती थी। १८३७ ई०को गवर्नमेण्टने गायकवाड़को वह रुपया देना बन्द किया और उसके दूसरे वर्ष नौसरी नामक स्थान भी ले लिया। शिवाजी फिर भी न सुधरे और शर्तके मुताबिक काम कर न सके। उनके विपक्षमें क्रमशः कितने ही अभियोग लगे थे। गवर्नमेण्टने अपना असन्तोष प्रकाश करनेके लिये पिपलावद नामक ज़िलेमें शिवाजीका हिस्सा दखल कर लिया। उसकी आमदनी ७०२०००) रु० थी। फिर उन्हें राजच्युत करके दूसरेको राजा बना

टेनेका भय दिखलाया गया, परन्तु किसी बात पर उनकी आज्ञ न उठी। अन्तमें जब १८३९ ई०को गवर्नमेण्टने सताराके राजा प्रतापसिंहको सिंहासनसे उतारा, शिवाजी न जाने क्या समझ वश्यता स्वीकार करके दो ग्रवको छोड सब बातों में गवर्नमेण्टकी आज्ञाके अनुसार कार्य करने पर अङ्गीकृत हुए। अंगरेज गवर्नमेण्टने उस पर राजी हो करके पिपलानदका अंश छोड दिया और जमानतके तौर पर रखा हुआ १० लाख रुपया भी प्रत्यर्पण किया। १८४७ ई० दिसम्बर मासको शिवाजीका मृत्यु हो गया। उनके ज्येष्ठपुत्र गणपति राव गायकवाड पद पर प्रतिष्ठित हुए। इनके राजत्वकालमें कोई बडी बात नहीं पडी। प्रजाको सुखस्वच्छन्दता पर उनकी दृष्टि कम थी। वह अपने विलासमें ही काल यापन किया करते थे। १८५६ ई०को बम्बई बडोदा रेलवेके लिये उन्होंने अंगरेज गवर्नमेण्टको जमीन दी। शर्त यह थी—यह रेलवे खुलने पर गायकवाडकी आमदनी रफ्तनीका जो महसूल घटेगा, पूरा कर दिया जावेगा। प्रतिवर्ष उसका हिसाब लगता और घाटा पूरा करना पडता है। १८५६ ई० १८ नवम्बरको गणपति रावका मृत्यु हुआ। सन्तान न रहनेसे उनके कनिष्ठ खण्डेरावने सिंहासन पर आरोहण किया था। खण्डेराव गायकवाड देखो। अंगरेज गवर्नमेण्टने उन्हें जी० सी० एस० आइ० (G.C.S.I.) उपाधि दिया। १८७० ई० २८ नवम्बरको खण्डेरावके मरने पर उनके भ्राता मल्हार राव गायकवाड बडोदामें सिंहासनारूढ हुए। खण्डेरावकी विधवा पत्नी यमुना बाई उस समय गर्भवती थीं। अंगरेज गवर्नमेण्टने मल्हार रावको कह रखा—यदि यमुना बाईके गर्भसे पुत्र सन्तान उत्पन्न होगा, तो उसीको राजत्व मिलेगा। कई महीने बाद यमुना बाईने एक कन्यासन्तान प्रसव किया था। सुतरां मल्हार राव निष्कण्टक राज्य करने लगे। यह पहले खण्डेरावके प्राणविनाशकी चेष्टा करने पर कारागारमें निक्षिप्त हुए थे, परन्तु वहांसे निकल कर आप ही सिंहासन पर बैठ गये। यह कोई आशा नहीं करता कि वैसे लोग अच्छी तरह राजकार्य चला सकेंगे। १८७० ई०को प्रजाके विरक्त हो अंगरेज सरकारमें आवेदन करने पर तहकीकात करनेके लिये एक कमीशन बैठाया गया। उसने आवेदनकी बात छोड करके राजस्व, राजनीति और विचार प्रभृति नाना विषयों का तदन्त ले करके अपना मन्तव्य लिख भेजा। इस मन्तव्यको पढ करके अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके प्रतिनिधि लार्ड नार्थब्रुकने उन्हें १८७५ ई० तक शासनसंस्कार करनेका समय दिया था। उसके बीच यदि वह अच्छा इन्तजाम न कर सके तो उन्हें सिंहासनच्युत करनेकी बात थी। किन्तु १८७५ ई०को यह खबर फैल पडी कि अंगरेज रेसीडेण्ट कर्नल फेयरको विष देनेकी चेष्टा की गयी। अनुसन्धानमें मल्हार राव पर ही सन्देह उठा। गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुकने एक घोषणा निकाली—जब गायकवाडके विषयमें सन्देह है, तो जांचके लिये एक अदालत बैठेगी और जितने दिन वह अदालतके विचारमें बेगुनाह जैसे साबित न होंगे, रियासतका काम करनेसे अलग रहेंगे। फिर तब तक अंगरेज गवर्नमेण्ट अपने आप यह भार ग्रहण करेगी। मल्हार राव भी उसी बीच अपने दोषचालनके प्रमाणादि देंगे। मल्हारराव देखो।

कलकत्ता हाईकोर्टके बडे जज, ग्वालियरके महाराज, जयपुर महाराज, महिसुरके चीफ कमिशनर, सर दिनकार राव (ग्वालियरके मन्त्री) और पञ्जाबके कमिशनर कई लोगोंने बैठ कर अदालतमें गायकवाडका विचार किया। १८७५ ई० २३ फरवरीको यह अदालत लगी थी। विचारक मल्हार रावके दोष सम्बन्धमें एक मत न हो सके। उनको तीन आदमियोंने दोषी और तीनने निर्दोष बतलाया था। किन्तु गवर्नमेण्टने उनको पिछला अपराध स्मरण करके १८७५ ई० २२ अप्रेलको पदच्युत किया और मन्द्राज भेज दिया। खण्डे रावने सिपाही विद्रोहके समय गवर्नमेण्टको सहायता दी थी। इसीसे सम्मानके लिये उनकी पत्नी यमुनाबाईको एक दत्तक लेनेका अनुमतिपत्र मिला। तदनुसार पिलाजीरावके पुत्र दामाजीके कनिष्ठ प्रतापरावके वंशीय सयाजी (सर्माजी) राव मनोनीत हुए। १८७५ ई० २७ मईको सयाजी गायकवाड १२ वर्षकी अवस्थामें बडोदेके सिंहासन पर बैठे थे। होल्करके मन्त्री सुविख्यात सर टी० माधवराव

के० सी० एस० आई० बड़े टेकी सन्ती बनाये गये। बालक सयाजी पहले जब सामान्य ग्राम्य बालकोंके साथ खेला करते, लोग नहीं समझते थे कि उनके अदृष्टमें राजसिंहासन रहा। १८७५ ई० ८ नवम्बरको जब 'प्रिन्स अव वेल्स' (राजकुमार) बम्बईमें उतरे, बालक गायकवाड़ उनसे मिलने गये। फिर १८ नवम्बरको युवराजने बड़ोदा जा करके उनका आतिथ्य ग्रहण किया। जो लोग युवराजके साथ आये, बालक गायकवाड़के गाम्भीर्य तथा राजोचित व्यवहारसे आश्चर्यमें दाँतों तले उङ्गली दबा करके रह गये। १८७७ ई० १ जनवरीको महारानी विक्टोरियाके भारतेश्वरी उपाधि ग्रहणोपलक्षमें दिल्लीमें दरबार लगा था। उसमें सयाजी भी जा करके उपस्थित हुए। दरबारसे उन्हें 'फरजन्द खास दौलत इङ्गलिशिया' उपाधि मिला था। १८७८ ई०में यमुनाबाईको भारत-मुकुट या सी० आई० ई० उपाधि दिया गया। और सयाजी गायकवाड़ भी के० सी० एस० आई० उपाधि प्राप्त हुए। पीछे जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई० उपाधि भी प्राप्त हुये। सयाजी देखो।

गायगोठ (हिं० स्त्री०) गोशाला।

गायघाट-चकशी-खाल—एक उत्कृष्ट प्राकृतिक झील, जो बङ्गालमें हावड़ा जिलाकी दामोदर और रूपनारायण नदियोंके मध्य अवस्थित है। इसकी लम्बाई लगभग ७½ मील होगी। १८८४ ई०में जलविभागने हावड़ाके डिस्ट्रिक्टबोर्डसे यह झील वार्षिक ४५००) रु० जमाबन्दी पर ली थी।

गायत (अ० वि०) बहुत, अधिक, अत्यन्त, ज्यादा।

गायताल (हिं० पु०) १ बैलोंमें निकृष्ट, निकम्मा चौपाया। २ खराब पदार्थ।

गायत (सं० त्रि०) गायत्र्याः गायत्रीच्छन्दसः इदम्-अण। गायत्री छन्द।

"ता गायत्रे षु गायत।" (ऋग्वेद ८।२।१४)

'गायत्रे षु गायत्रीच्छन्दस्केषु मन्त्रे षु।' (सायण)

गायत्रिन् (सं० पु०) गायन्ते त्रायते शब्द, गायत्-त्रै-णिनि आलोपात् साधुः। १ खदिरवृक्ष, खैरका पेड़। गायत्र स्तोत्रं अस्त्यस्य इति। २ उद्गाता, सामगायक।

"गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्ति।" (ऋक् १।१०।१)

गायत्री (सं० स्त्री०) गायन्तं त्रायते, गायत्-त्रा-क-ततो गौरादित्वात् ङीष्। "गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती" इ०। पा ४।१।४१। यद्वा गया एव गायाः, गय स्वार्थे अण्, गायान् प्राणान् त्रायते। वेदमाता, द्विजोंका उपास्य एक वैदिक मन्त्र।

लौकिक छन्दःशास्त्रमें 'जिस समवृत्तका प्रत्येक चरण ६ अक्षर या स्वरवर्ण युक्त आता, गायत्री कहा जाता है। वेदमें समवृत्त या ४ चरण-जैसा कोई भी नियम नहीं, २४ अक्षरवालेको गायत्री कह सकते हैं। कात्यायनकृत यजुः सर्वानुक्रमणिका और ताण्ड्यब्राह्मणके मतानुसार वैदिक गायत्री छन्दमें आठ आठ अक्षरके ३ चरण लगते हैं। इस नियमसे तो अनेक वैदिक मन्त्र गायत्री कहला सकते हैं। परन्तु यहां गायत्री शब्द योगरूढ़ है, केवल "तत् सवितु-र्वरेण्य" इत्यादि मन्त्र ही समझ पड़ता है। यह नहीं कि वास्तविक पक्षमें गायत्री छन्दका लक्षणाक्रान्त होनेसे ही वह गायत्री कहलाता, वरं अपने गायकों और पाठकोंका त्राण करनेसे भी यह नाम पाता है।* बृहदारण्यक उपनिषद् (५।१४।४)में गायत्री शब्दकी अन्यप्रकार व्युत्पत्ति प्रदर्शित हुयी है। उसको देखते गाय शब्दका अर्थ प्राण है, प्राणरक्षा करनेवालेको गायत्री कहते हैं। यह ऋक्, यजुः और साम तीनों वेदोंमें एक ही जैसी मिलती है।

"तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥"

(ऋक् ३।६२।१०, साम २।३।१२।१०, वाजसनेय ३।३५।२२।९)

गायत्रीछन्द समुदायके अक्षर गणना करनेसे सब मिला करके चौबीस होने चाहिये। परन्तु दर्शित "तत्सवितुर्वरेण्य" इत्यादि मन्त्र देखनेसे तेईस मात्र अक्षर वा स्वरवर्ण निकलेंगे। एक अक्षर घट जाने से वह गायत्रीछन्द लक्षणाक्रान्त नहीं होता। इसीसे उपनिषद्में "वरेण्य" पद विश्लेष करके 'वरेणीय' जैसा कल्पित हुआ और चतुर्विंशति संख्याका पूरण पड़ा है। बृहदारण्यकके मतमें भी गायत्री त्रिपाद है। लौकिक छन्दकी तरह ४ चरण न रखते भी २४ अक्षर होनेसे वह गायत्री कहलाती है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य यथाकालको यथानियमसे पारदर्शी आचार्यके निकट गायत्री मन्त्रमें दीक्षित होते हैं। उस समय इनका पुनर्जन्म होता और द्विज

* "गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता।" (व्यास०)

जैसा नाम पड़ता है। यह त्रिसन्ध्याको पवित्र भावमें गायत्री जपरूप उपासना करने पर बाध्य है। यह नियम वर्णत्रयमें चिरदिनसे चलता है। इसका कोई ठिकाना नहीं, कौन समयको किस महात्माने प्रथमतः यह नियम चलाया। प्रत्येक वैदिक मन्त्रका कोई न कोई ऋषि होता है। किसी किसी पद्धतिकारके मतमें वेदमन्त्र अनादि होते भी जो ऋषि सर्वप्रथम जिस मन्त्र द्वारा कोई कार्य करके चरितार्थ हुआ, अपने मन्त्रका ऋषि कहलाया। गायत्रीमन्त्रके ऋषि विश्वामित्र हैं। इस स्थल पर उनके मतानुसार कहना पड़ेगा कि विश्वामित्रने ही सबसे पहले उसको जप करके सिद्धि पायी। वेदके टीकाकार सायणाचार्यने ऋग्वेदभाष्य की भूमिकामें लिखा है कि युगान्तको इतिहासादिके साथ समस्त वेद अन्तर्हित हो जाता। ऋषियोंके उसको प्राप्तिके लिये तपस्या करने पर ईश्वर अनुग्रहसे फिर निकल आता है। इस प्रकार वेद पुनर्वार प्रकाशित होता है। युगान्तको वेद अन्तर्हित होने पर जो ऋषि सर्वप्रथम उसको पाता, उसका वो ऋषि कहलाता है। (ऋक् १।१।१ भाष्य) अतएव सायणके मतानुसार भी सबसे पहले न सही, इसी युगमें पहले पहल विश्वामित्र ने ही गायत्री मन्त्र पाया था उसके जप करनेकी प्रणालीको चलाया था।

गायत्री मन्त्रके प्रतिपाद्य अर्थात् गायत्री मन्त्र द्वारा वर्णित होनेवाले हो इसको देवता हैं और इससे उन्हींकी उपासना की जाती है। उपनिषद्के मतसे गायत्री रूप उपाधिधारी ब्रह्म ही उसके प्रतिपाद्य हैं। गायत्रीसे उन्होंकी उपासना होती है। सभी वैदिक उपासनाओंमें गायत्रीकी उपासना श्रेष्ठ है। (छान्दोग्य उप० ३।१२।१)

गायत्रीका अर्थ—

१ जो सवितृदेव हमारा कर्म (कर्मेन्द्रिय अथवा धर्मादि विषय बुद्धि) प्रेरण करते हैं—हम उन्हीं सर्वान्तर्यामी, जगत्स्रष्टा, परमेश्वर, सबके सेवनीय, अविद्या तथा तत् कार्यनाशक और परब्रह्मस्वरूप ज्योतिकी चिन्ता करते हैं।

२ इस सवितृदेवताकी अविद्या और तत् कार्यनाशक उस ज्योतिको चिन्ता करते, जो हमारी कर्म या धर्मादि विषय बुद्धिको चलाते रहते हैं।

३ जो सविता सूर्यदेव हम लोगोंका समस्त कर्ममें प्रेरण किया करते, हम उन्हीं जगत्प्रसविता द्योतमान् सूर्यदेवके सबको प्रत्यक्ष, उपास्य तथा पापनाशक तेजोमण्डलके ध्यानमें रहते हैं।

४ अथवा भर्ग शब्दका अर्थ अन्न है। जो सविता हमारी धीशक्तिको प्रेरण करते, हमें उन्हीं सवितादेवके प्रसादसे प्रशंसनीय अन्नादिरूप फल मिलते हैं।

(ऋक् ३।६२।१० भाष्य, साम उत्तर ६।३।१ भाष्य)

५ द्योतमान प्रेरक अन्तर्यामी, विज्ञानानन्दस्वभाव हिरण्यगर्भ वा आदित्यरूप उपाधिभेदसे ब्रह्मके प्रार्थनीय, पाप तथा संसारबन्धननाशक तेजको चिन्ता करते हैं। वह सविता हमारी बुद्धि सत्कर्मानुष्ठानको प्रेरण करते हैं। (शुक्लयजुर्वेद ३।३५ महीधर)

इसको छोड़ करके गायत्रीको और भी अनेक प्रकार व्याख्या सुन पड़ती है। कोई कालीपक्ष, कोई विष्णु और कोई शिवपक्षमें भी उसकी व्याख्या करता है।

गायत्री उपासनाप्रणाली—मनुके मतानुसार गायत्री मन्त्रमें दीक्षित होनेसे उपासक पुनर्जन्म पाता है। इस जन्ममें आचार्य पिता और सावित्री ही माता है। गायत्री और तत्प्रतिपाद्य ब्रह्मको अभेदचिन्तासे उपासना करनी पड़ती है। याज्ञवल्क्यके मतमें प्रणव ॐ और व्याहृति (भूर्भुवःस्वः) योग करके गायत्री उपासना करनी चाहिये। विष्णुधर्मोत्तरमें लिखा है कि पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चविषय, पञ्चभूत, मन, बुद्धि आत्मा और प्रकृति २४ पदार्थोंको गायत्रीके चतुर्विंशति अक्षरोंमें यथाक्रम चिन्ता करते हैं। अग्नि, वायु सूर्य, विद्युत् यम, वरुण, बृहस्पति, पर्जन्य, इन्द्र, गन्धर्व, पूषा, मैत्रावरुण, त्वष्टा, वासव, मारुत सोम अङ्गिरा, विश्वदेव, अश्विनीकुमार, प्रजापति, सर्वदेव, रुद्र ब्रह्मा और विष्णु यथाक्रम गायत्रीस्थ २४ अक्षरोंके अधिपति हैं। जपकालको इनको चिन्ता करनी पड़ती है। प्रणवको ईश्वर भावना करते हैं।

काशीखण्डमें गायत्रीका विषय इस प्रकार लिखा है—अष्टादश विद्याओंमें मीमांसा प्रधान है। मीमांसासे तर्कशास्त्र, तर्कशास्त्रसे पुराण, पुराणसे धर्मशास्त्र और धर्मशास्त्रसे वेद बड़ा होता है। वेदोंमें फिर उपनिषद्

प्रधान है परन्तु गायत्री उपनिषद्से भी बहुत श्रेष्ठ हैं। गायत्रीसे अधिक और कोई मन्त्र नहीं। वह वेदमाता और ब्राह्मणप्रसवकारिणी है। जो व्यक्ति उनका गान करता, विघ्नबाधाओंसे बचता रहता है। इसीसे उन्हें गायत्री कहते हैं। सवितृदेव ही इस मन्त्रके वाच्य हैं। गायत्रीके ही प्रभावसे राजर्षि कौशिकने ब्रह्मर्षि पद और एक जगत्सृष्टि करनेकी शक्तिको पाया था। गायत्रीकी उपासना करनेसे सब कुछ हो सकता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर प्रभृति सभी गायत्रीस्वरूप हैं। वेद वा अनन्त-शास्त्रपाठसे नहीं, केवल त्रिसन्ध्याको गायत्रीकी उपासना करनेसे ही ब्राह्मण बना जाता है। (काशीखण्ड)

प्रायः सभी पुराणोपपुराणोंमें थोड़ी बहुत गायत्रीकी प्रशंसा है। याज्ञवल्क्यसंहितामें लिखा है, किसी समय परीक्षा करनेके लिये एक ओर सामवेद और दूसरी ओर गायत्रीको तुला पर चढ़ाया गया था। इससे साम-वेदकी अपेक्षा गायत्रीका ही भार अधिक निकला। जो गायत्री समझता, वही ब्राह्मण ठहरता है। गायत्री न जाननेवालेको वेदपारग होते भी शूद्र जैसा ही समझना चाहिये। त्रिसन्ध्याको सन्ध्यारूपिणी गायत्रीकी उपासना करना उचित है। व्यासके मतमें प्रातःको उसका नाम गायत्री, मध्याह्नको सावित्री और सायाह्नको सरस्वती है।

पद्मपुराणमें गायत्री ब्रह्माकी स्त्री जैसी वर्णित हुई हैं। उसका उपाख्यान इस प्रकार है—एक समय ब्रह्माने किसी यज्ञका अनुष्ठान किया। इन्होंने सावित्रीको यज्ञस्थानमें लानेके लिये उनके निकट इन्द्रको भेजा था। देवराजके उनके पास पहुंच करके ब्रह्माका आदेश बत-लाने पर सावित्रीने कहा—कि लक्ष्मी आदि सखियां उस समय उपस्थित न थीं, वह एकाकिनी कैसे जा सकतीं। आप विरिञ्चिसे कह देते कि सखियोंके मिलते ही वह उपस्थित हो जावेंगी। यही कह करके सावित्री गृहकार्यमें व्यापृत हुईं। देवराजने जा करके ब्रह्माको उक्त सूचना दी थी। ब्रह्माने पत्नीके व्यवहारसे नितान्त असन्तुष्ट हो करके इन्द्रको कहा कि—देवराज उनके लिये कोई दूसरी रमणी लाते, वह उसी समय यज्ञ कर-नेको प्रस्तुत थे। ब्रह्माके आदेशसे इन्द्र अन्वेषण करते करते धरातल पहुंचे। उसी समय ग्वालेकी कोई सुन्दरी कन्या दूध और दही बेचने जाती थी। देवराज उसको पकड़ लाये। महाविष्णुके आदेशसे ब्रह्माने उसके साथ गान्धर्व विवाह किया था। उन्हींका नाम गायत्री है। गायत्रीका वर्ण शुभ्र, दो हाथ, एक हाथमें कोई मृगशृङ्ग और दूसरेमें पद्म है। उनका उरु-द्वय अतिशय विशाल, परिधेय वसन रक्तवर्ण, वक्षस्थल पर मनोहर मुक्ताहार, कर्णमें कुण्डल और मस्तक पर नानाविध रत्नखचित मुकुट है। ब्राह्मण लोग पुष्करमें स्नान करके गायत्री जपने पर असत् प्रतिग्रहजनित पापसे विमुक्त हो सकते हैं। गायत्री जप करनेसे दश, शत वा सहस्र जन्मोंमें भी जो ब्रह्महत्यासदृश पाप रहे हैं— मिट जाते हैं। वह वेदमाता हैं और स्वर्ग, मर्त्य तथा पाताल त्रिलोकमें व्याप्त हो करके अवस्थिति करती हैं। ब्राह्मण गायत्रीग्रहणके पीछे सप्ताह पर्यन्त त्रिकालको उसकी उपासना न करनेसे पतित होते हैं। (पद्मपुराण)

सन्ध्याविधिमें कहा है कि प्रातःमें गायत्रीको रक्तवर्ण, हंसवाहिनी, द्विभुजा, यज्ञोपवीत तथा कमण्डलुधारिणी ब्राह्मणीसदृश चिन्ता करना चाहिये। मध्याह्नमें वह श्वेतवर्ण, चतुर्भुजा, शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्मधारिणी गरुड़वाहिनी विष्णुशक्ति जैसी और सायंकालको नील-वर्ण, वृषभवाहिनी त्रिशूल, तथा डमरुधारिणी, अर्धचन्द्र विभूषिता जैसी चिन्ता की जाती है।

गायत्रीतन्त्रमें बतलाया है कि न्यास व्यतीत गायत्री जप करनेसे कोई फल नहीं मिलता। उसीसे गायत्रीके पूर्वको न्यास करना पड़ता है। यतियोंको पञ्चमुद्रा और गृहियोंको केवल तत्त्वमुद्रामें न्यास करना चाहिये। पाद-से मस्तक पर्यन्त ७ वार "भूर्भुवः स्वः" अंश न्यास करना पड़ता है। फिर योगीको चित्त स्थिर करके पादाङ्गुष्ठमें तत्, अङ्गुलीके मध्य स, जङ्घामें वि, जानुके मध्यमें तु, मध्यदेशमें र्व, गुह्यमें रे, वृषणमें ण, कटिदेशमें यं, नाभिमें भ, उदरमें र्गो, स्तनद्वयके मध्य दे, हृदयमें व, कण्ठमें स्य, मुखमें धी, जानुमें म, नासिकाग्रमें हि, चक्षुमध्यमें धि, भ्रूमध्य यो, ललाटमें यो, मुखमें नः, दक्षिणमें प्र, पश्चिममें चो, उत्तरमें द, मस्तकमें यात् वर्णद्वय न्यास करना चाहिये। न्यास पूरा हो जाने पर "तत्" वर्णद्वयको चम्पक कुसुम जैसा पीतवर्ण स को श्यामवर्ण

और वि वर्णके कपिलवर्ण चिन्ता करते हैं। इसी प्रकारसे तु इन्द्रनीलमणि जैसा, वं अग्नि तुल्य, ण निर्मल, य विद्युत्—जैसा, भ कृष्णवर्ण, र्गो रक्तवर्ण, दे श्यामल वर्ण, य शुक्लवर्ण, स्य श्यामलवर्ण, धी कुन्दपुष्पसदृश म शुक्लवर्ण, हि चन्द्रसदृश, धि पीतवर्ण, यो विद्युत्नाभ, यो धूम्रवर्ण, न तप्तकाञ्चन जैसा, नकारके दोनों विन्दुओंमें ऊपरवाला रक्तवर्ण तथा नीचेवाला कृष्णवर्ण, प्र नीलवर्ण, च गोरोचना जैसा पीतवर्ण, द शुक्लवर्ण और यात् वर्णद्वयको ब्रह्ममन्दिर चिन्ता किया जाता है। इसी प्रकारसे गायत्रीके प्रत्येक वर्णको चिन्ता कर लेनेपर गायत्रीको चिन्ता करनी चाहिये। परमदेवता गायत्री मृणालके सूत जैसी अतिशय सूक्ष्म, विद्युत् पुञ्जकी भांति प्रभायुक्त मूलाधार पद्ममें सुप्त भुजगीकी तरह अवस्थिति करती है ब्राह्मणोंको वैदिक गायत्री तीन और क्षत्रिय वैश्योंको २ प्रणव मिला करके जपनी चाहिये। गायत्रीतन्त्रके मतमें तान्त्रिक लोग इष्टमन्त्रकी गायत्री पुटित करके जपते हैं। जो गायत्री भिन्न जपकी पूजा करता, शतकोटि जप में भी फललाभ कर नहीं सकता। प्राणायाम करके गायत्री जपनी पड़ती है। तन्त्रके मतानुसार सभी समयों और अवस्थाओंमें गायत्री जप किया जा सकता है उस में अशुच या शुचि जैसी कोई व्यवस्था नहीं। गायत्री को त्रिसन्ध्यामें जपना चाहिये। जनन और मरणा शौचको भी गायत्री मन ही मन स्मरण कर सकते हैं, अन्य वैदिक कार्यकी तरह अशौचमें उसका निषेध नहीं है। ब्राह्मण गायत्रीको छोड़नेसे चण्डाल, व्याघ्र वा शूकर योनि पाता है।

गायत्रीतन्त्रका देखते कलिकालके ब्राह्मण शूद्र जैसे आचार व्यवहार-सम्पन्न हो करके अशुद्ध बन गये हैं। अत एव गायत्री मन्त्रको दीक्षा मिलने पर गायत्रीका प्रत्येक अक्षर १०८ बार जपना चाहिये, फिर प्रणवयुक्त योग कर के गायत्री जपनेसे फलप्राप्ति हुआ करती है। नहीं तो अरण्यरोदनकी भांति गायत्रीजपसे क्या फल मिल सकता है। (गायत्रीतन्त्र १म और २य पटल) तन्त्रशास्त्रमें गायत्रीको पूजा करनेका विधान विद्यमान है। (तन्त्रसार) अपरा पर जपप्रणालियां सन्ध्याविधि और ब्राह्मणसर्वस्व प्रभृति ग्रन्थोंमें विस्तृत भावसे लिखी हैं। तन्त्रके मतमें प्राय समस्त देवताओंको एक एक गायत्री और उसके जपकी विस्तर फलश्रुति है।

जिस देवताके उद्देश्यसे बलि दिया जाता, पूजक उसी देवताकी गायत्री वध्य पशुके कर्णमें सुनाता है। यह एक प्रकार पशुदीक्षा है।

२ छन्दोविशेष। इसके प्रत्येक चरणमें ६ अक्षर रहते हैं। चरणमें लघुगुरुभेदसे यह ६४ प्रकारका होता है। उसमें तीन प्रकारका प्रधान है—तनुमध्या, शशिवदना और वसुमती। यह सब लौकिक है। लौकिक गायत्रीके ४ चरण होते हैं। परन्तु वेदमें ३ चरण ही लगते हैं। वेदमें ३ चरण होनेसे ही गायत्रीका नाम त्रिपदा है। लौकिक छन्दके ६ अक्षरवाले ४ चरणोंमें और वैदिक गायत्रीछन्दके ८ अक्षरवाले ३ चरणोंमें २४ होते हैं। लौकिक और वैदिक गायत्रीमें इतना ही प्रभेद है।

'अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋक् १।१।१)

उपर्युक्त मन्त्र वैदिक गायत्रीछन्दका उदाहरण है। ताण्ड्यब्राह्मणके मतमें गायत्रीके अष्टाक्षर चरण होनेका कारण यह है कि साध्यनामक देवगण उपकरणसम्पन्न यज्ञके साथ स्वर्गलोक पहुंचे थे। वसु प्रभृति देवोंने प्रथम स्वर्गसाधन यज्ञके निमित्त चतुरक्षरविशिष्ट गायत्री आदि सभी छन्दोंको कहा था कि वह स्वर्गलोकसे सोम आहरण करने जाते। छन्दोंने भी उसको अङ्गीकार किया। सबसे पहले जगती छन्द भेजा गया। वह सोम रक्षकोंसे युद्ध करके अपने ३ अक्षर खो एकाक्षर हो लौट आया। फिर त्रिष्टुभ् चली, परन्तु वह भी अपना एक अक्षर खो करके ३ अक्षरविशिष्टा हो वापस हुई। अनन्तरको गायत्रीकी बारी आयी, वे जा करके कृशा प्रभृति सोमरक्षकोंके पाससे जगती तथा त्रिष्टुभके चार अक्षर ले स्वयं अष्टाक्षरा बन लौट पड़ी। ३ खदिर। ४ दुर्गा। ५ गङ्गा।

गायत्रीसार (स० पु०) गायत्र्या सार। खदिर वृक्षका सार, खैरके पेड़का गूदा

गायत्रा (स० पु०) सोमलताविशेष।

गायन (स० त्रि०) गायति गै शिल्पिनि ल्युट्। १ सङ्गीतव्यवसायी, गानेका व्यवसाय करनेवाला, जो गीत गा कर अपनी जीविका निर्वाह करता हो।

"स्तेन गायनयोश्चान्नं तत्तोर्वाद्धं 'पिकस्य च।" (मनु ४।२१०)

२ कार्तिकेय। (भारत ८।१४४ अ०) स्त्रियां ङीप्। गायनी, गान करनेवाली। ३ गान।

गायन—मुसलमान जातिकी एक शाखा। साधारणतः जनसमाजमें इस जातिके मनुष्य गाना गाते और बाजा बजाते हैं, इसलिये इनका नाम गायन पड़ा। किन्तु मोल्लासे जाना जाता है कि जिस समय शाहजमालने चौहट पर आक्रमण किया था, उस समय जिहाद गायन नामक एक मनुष्य उनके साथ था। वर्तमान गायन उन्हीं जिहादके वंशधर प्रतीत होते हैं। किसीका मत है कि पहले ये 'सान्दार' जातिके थे। ये कृषिकार्य करके अपनी जीविकानिर्वाह करते हैं। पुरुषोंकी अनुपस्थिति पर स्त्रियां शस्यक्षेत्रकी रक्षा करतीं तथा गोमेषादि चराती हैं। ये स्थानीय बेदिया जातिसे कोई संसर्ग नहीं रखते। इनकी स्त्रियां बड़ी लज्जाशीला होती हैं और अन्तःपुरमें अकेली रहना पसन्द करती हैं।

गायत्तिका (सं० स्त्री०) हिमालयस्थ एक स्थान, हिमालय पहाड़ परका एक स्थान।

गायत्नी (सं० स्त्री०) गे-शतृ। १ गयपत्नी, गयकी स्त्री। (भागवत ५।१५।१२) २ वह स्त्री जो गान करती हो, गान करनेवाली स्त्री।

गायब (अ० वि०) गुप्त, अंतर्धान। (पु०) शतरंजमें एक प्रकारका खेल।

गायबाना (अ० क्रि०) १ गुप्तरीतिसे। २ अनुपस्थितिमें।

गायबगला (हिं० पु०) एक प्रकारका बगला। यह धानके खेतमें तथा पशुओंके समूहमें रहता है।

गायबांधा—बङ्गालमें रंगपुर जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २५° ३´ से २५° ३९´ उ० और देशा० ८९° १२´ से ८९° ४२´ पू० ब्रह्मपुत्र नदके दाहिने तीर पर अवस्थित है। भूपरिमाण २९२ वर्गमील है। यह विस्तृत समतल उपविभाग है जिसमें बहुतसे ह्रद मिलते हैं। यहांकी जनसंख्या लगभग ५२०१८४ होगी। जिलेका यह एक समृद्धशाली भाग है।

गायबांधा—बङ्गालमें रंगपुर जिलेके गायबांधा उपविभागका प्रधान सदर। यह अक्षा० २५° २१´ उ० और देशा० ८९° ३४´ पू० घावट नदी पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय: १९३५ है। यहां एक छोटा कारागार है जिसमें सिर्फ १८ कैदी रक्खे जाते हैं।

गायरोन (हिं० पु०) गोरोचन।

गायिनी (सं० स्त्री०) १ वह स्त्री जो गान करती है। २ एकमात्रिकछन्द।

गार (सं० पु०) १ ग्रामभेद। २ जातिभेद एक जातिका नाम। (गार' जाति देखो।)

गार (अ० पु०) १ गड्ढा, गड्ढा। २ गुफा कंदरा।

गारगोती—बम्बई प्रांतके भुधरगड़ उपविभागका सदर। यह कोल्हापुरसे बत्तीस मील दक्षिणमें अवस्थित है। जनसंख्या प्राय: १९२२ है प्रति रविवारको यहां हाट लगती है, जिसमें हर एक जगहसे अन्न और साधारण वस्त्र बिकने आते हैं। यहां पुलिस सब इन्सपेक्टर और सब रजिष्ट्रारके आफिस हैं। इसके अलावा डाकघर और विद्यालय भी है।

गारत (अ० वि०) नष्ट, बरबाद।

गारद (अ० स्त्री०) १ सिपाहियोंका समूह जो एक अफसरके अधीन हो। २ मनुष्य वा किसी वस्तुकी रक्षाके लिये सिपाहियोंका झुंड।

गारना (हिं० क्रि०) दबा कर पानी निःसृत कर देना, निचोड़ना।

गारनेली (हिं० स्त्री०) जंगली फालसा। यह भारतके उत्तर और पूर्व तथा हिमालयकी तराईमें चार हजार फीटकी ऊंचाई तक पाई जाती है। इसका पेड़ बहुत छोटा होता है और इसके छिलके भूरे रंगके होते हैं। इसकी शाखाओंके रेशेसे रस्सियां बनायी जाती हैं। यह कार्त्तिक या अगहन मासमें फूलता और पूषसे वैशाख तक फलता है। इसके फल खानेके काममें आते हैं।

गारा (हिं० पु०) १ मट्टी अथवा चूना सुर्खी आदिको जलमें मिलाकर बनाया हुआ लेप। इस लेपसे ईंटोंकी जुड़ाई होती है।

२ छिछली भूमि जिससे जल अधिक दिन तक ठहर नहीं सकता।

गारा काह्नड़ा (हिं० पु०) एक सम्पूर्ण जातिका राग, जो संध्याके अतिरिक्त गाया जाता है।

गारित्र (सं० क्ली०) गीर्यते गृ-णित्रन्। १ अन्न, अनाज। २ धान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गारी (हिं० स्त्री०) १ दुर्वचन, गाली। २ कलङ्कजनक आरोप।

गारुड (सं० क्लो०) गरुडाय उक्त विष्णुना यद्वा तस्य इम अण्। १ गरुडपुराण। २ विषहर मन्त्रविशेष, वह मन्त्र जिससे विष उतरता है। ३ गरुडाकृति व्यूहभेद, गरुडके आकारकी व्यूहरचना।

"गारुडच महाव्यूह चक्र शान्तनवस्तदा (भारत ६।५६ अ०)

४ मरकतमणि, पन्ना।

"राजित कोमालिस गारुडाश्मम्।" (रघु १३।५३)

५ स्वर्ण, सोना। गरुडो देवतास्य अण्। ६ अस्त्र-विशेष, एक हथियार। (रामा० ६।७८।१०) (स्त्री०) ७ पातालगरुडलता। ८ मन्त्रसे सर्पका विष झाड़नेवाला।

गारुडि (सं० पु०) आठ प्रकारके तानोंमेंसे एक।

गारुडिक (सं० पु०) गारुडेन विषमन्त्रेण जीवति ठक्। १ विषवैद्य, सर्पका विष झाड़नेवाला।

"सर्पान् गारुडिको यथा। (शांति शतकवृत्तिका)

२ मन्त्रसे सर्प पकड़नेवाला, सँपेरा।

गारुत्मत (सं० क्लो०) गरुत्मान् गरुडो देवतास्य अण्। १ गरुडजीका अस्त्र। २ मरकतमणि, पन्ना। ३ नव रत्नराज मृगाङ्क।

गारुत्मतपत्रिका (सं० स्त्री०) गारुत्मतमिव वर्णेन पत्रमस्य कप् अत इत्वम्। लताविशेष, एक प्रकारकी लता, गङ्गा-पत्ती।

गारुलिया—बङ्गालमें २४ परगनेके अन्तर्गत बारीकपुर जिले का एक शहर। यह अक्षा० २२ ४८´ और देशा० ८८ २२ पू० हुगली नदीके पूर्व तीरपर अवस्थित है। लोक संख्या प्राय ७३७५ है। यहां पाट और रुईका व्यव साय अधिक होता है। शहरकी आय ६००० रुपया और कुल व्यय ८००० रु० है।

गारो (हि० पु०) १ गर्व, अहङ्कार, अभिमान, घमण्ड। २ प्रतिष्ठा, सम्मान।

गारो—आसामकी एक दक्षिणपश्चिमस्थ गिरिश्रेणी। यह अक्षा० २५ ८´ तथा २६ १ उ० और देशा० ८९ ४८ एवं ९१ २ पू०के बीच पड़ती है। इसके उत्तर ग्वाल पाड़ा जिला, पूर्व खासी और जयन्ती पहाड़, पश्चिम तथा दक्षिण बङ्गालका रङ्गपुर तथा मैमनसिंह जिला अव स्थित है। क्षेत्रफल ३१४० वर्गमील है। इसमें तुरा और अरबेला पहाड़ बड़ा है। यह दोनों गिरि समान्तराल भावमें पूर्वपश्चिमको विस्तृत है। तुरा पर्वतमें २ उच्च चूड़ाएं हैं। उनकी उच्चता ४६५० फुट निकलेगी। इन दोनोंके बीच बीच उपत्यकाएं भी हैं। गारो पहाड़ जङ्गलसे प्राय परिपूर्ण है। जङ्गलमें अच्छी अच्छी लकड़ी मिलती है। तुरा नामक चोटी पर चढ़नेसे ग्वाल पाड़ा, मैमनसिंह तथा रङ्गपुर जिला और ब्रह्मपुत्रनदीकी गति ५० कोस तक देख पड़ती और हिमालय तक भी दृष्टि पहुंचती है। स्थान स्थान पर उप त्यकाके भीतरसे नदीको बहता देख नयन मन चरितार्थ होता है। तुरा पर्वतके ऊपर चड़ाको हिन्दू कैलाश कहते हैं। परन्तु गारो और खासिया लोगों द्वारा, वही चिकमङ्ग, भीम तुरा या मानराई कही जाती है। अन्यान्य स्थानोंके पर्वत समग्र ढालू हैं, कहीं कहीं ऊंचे भी पड़ गये हैं। किन्तु कैलाश नामक चूड़ाके पास पहाड़ एक बारगी ही ऊंचा उठ गया है। आकृति कुछ कुछ शूकरके पृष्ठ-जैसी है। यह पार्श्ववर्ती सभी पहाड़ोंकी अपेक्षा ऊंचा है।

इस पर्वतके सभी स्थानोंमें पश्वादि चरते हुए घूम सकते हैं। इसमें दो प्रकाण्ड गह्वर देख पड़ते हैं। सोमेश्वरी और गणेश्वरी नदीके बीच जहां चूनेका कङ्कड़ मिलता, एक गुहा है। रायक नामक स्थानके निकट जो गह्वर पड़ता, सबसे बड़ा लगता है, उसका प्रवेश स्थान प्राय १२ हस्त उच्च और १० हस्त विस्तृत है। भीतरको प्राय ६० हाथ जानेसे देख पड़ता किसी छोटी कुल्हड़ जैसी जगहसे एक नदी बहती है। वह इतनी छोटी है कि मनुष्य उसमें प्रवेश कर नहीं सकता। पहाड़के भीतर सम्भवत कहीं न कहीं जलाशय या ह्रद विद्यमान है। इस गुहामें चिमगीदड़ रहा करते हैं।

गारो पर्वत पर उष्णप्रस्रवण नहीं। परन्तु लोनी मट्टी रहनेसे बोध होता, कभी यहां लवणाक्त प्रस्रवण विद्यमान रहे। उसीसे लवणाक्त मट्टी हो गयी है। यहां हस्ती और हरिणका दल आ करके विचरण करता है। गारो लोग उस जगहसे नमक नहीं निकालते। गारो पहाड़के बीच सोमेश्वरी, गणेश्वरी, नेताई और महादेव

नदीके उत्पत्तिस्थानमें भग्नपर्वत दृष्टिगोचर होता है। यहां स्वभावकी शोभा अत्यन्त चमत्कृत है।

२ गारो पहाड़के उपरका एक जिला। अधिवासी उसको गारोयाना या गवाना कहते हैं। यह आजकल आसाम चीफ कमिश्नरके अधीन है। उसका क्षेत्रफल ३१४० वर्गमील होगा। लोकसंख्या कोई डेढ़ लाख है। तुरा नगरमें अदालत लगती है। गारो जिलाके उत्तर ग्वालपाड़ा, पूर्व खसिया पहाड़ तथा सङ्गसाली नदी, दक्षिण मैमनसिंह और पश्चिमको ग्वालपाड़ा जिला है। पूर्व सीमाकी स्थिर हुए अभी बहुत दिन नहीं बीते।

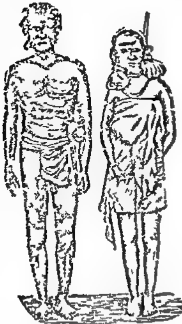
यह जिला पहाड़ी है। इसकी कृष्णाई, कालू, भोगाई, नेताई और सोमेश्वरी कई नदियोंमें नौका गमनोपयोगी पानी रहता है। कृष्णाईनदी अरबेला पर्वतके मध्यस्थित मण्डलगिरि नामक ग्रामके निकटसे निकल उत्तराभिमुख रङ्गगरनगिरि, दाण और सहमा गावोंको पार करके ग्वालपाड़ा जिलाके जीरा नामक ग्राममें जा गिरी है। तुरासे वाराणसी नदी बह करके कालूनदीमें पतित होती है। गारो लोग उसको रङ्गकान कहते हैं। हरिगांवसे दामालगिरि तक कालू नदीमें नाव चलती है। परन्तु उसके जलमें बड़े बड़े वृक्ष रहनेसे नौकाओंके यातायातमें बड़ी ही असुविधा है। भोगाई नदी तुरानगरके दक्षिण-पूर्वसे उद्भूत हो दक्षिणको बहती हुई अनाई, लुगा, सोरापाड़ा, रैसराङ्गपाडा, मोवनोपाड़ा, चेलीपाडा, जमदङ्गगिरि, चन्द्रपाड़ा और बुदरपाड़ा गाव पार करके डालू ग्रामसे मैमनसिंहके नसीराबाद ग्राम पर ब्रह्मपुत्रनदीके पुरातन गर्भमें जा मिरी है। नोयरांगा नाम्नी उपनदी रैसराङ्गपाडा ग्राममें इसीसे आ मिली है नेताई तुराकी दक्षिण दिक्से निकल वक्रगतिमें दक्षिणमुख चल रङ्गन, बुदूगिरी, गरोङ्गियी, फापा, दसिङ्गगाङ्गचङ्ग, अदिपरिरी तथा बोगाझोड़ागिरी ग्राम हो मैमनसिंहके सफूरकोट या घापगांवसे काङ्गस नदीमें जा करके मिलित हुई है। सोमेश्वरी नदीको गारो लोग सङ्गसाङ्ग कहते हैं। इस जिलेमें यही नदी सर्वापेक्षा वृहत् है। तुरा नगरके उत्तरांशसे उसकी उत्पत्ति है। फिर सोमेश्वरी उत्तरवाहिनी हो १५ कोस दक्षिण जा मैमनसिंहके सुसङ्ग परगनेमें गिरी है। नदीके निम्नप्रदेशमें बीच बीच पहाड़ रहनेसे नाव आने जानेका रास्ता नहीं है। उत्तर प्रदेशसे मिन्नू तक नौका आदि चलते हैं। रङ्गकाई, रुगाई और चिदुक नामक उपनदियां उसमें जा करके मिलित हुई हैं।

३ पर्वतवासी जाति। आजकल गारो पहाड़की जो सीमा निर्धारित हुई, उसमें गारो, मिच, हाजङ्ग, कोच, राजवंशी, डालू, मेच और मुसलमान जाति भी बसी है। दाण नामक ग्राममें राभा नामक एक जातीय लोग देख पड़ते हैं। गारोजाति उनमें प्रधान है।

गारोजातीय लोग देखनेमें कछारी और कोचोंकी एक मध्यवर्ती जाति-जैसे समझ पड़ते हैं। कछारियोंकी अपेक्षा कोचजातिके साथ इनका सादृश्य अधिक है। प्रवाद है कि पहले समस्त गारो पहाड़ कोचोंके अधिकारमें था, पीछे गारोओंने प्रबल हो करके उनको उत्तरांशमें खदेर दिया। मिष्टर डालटनने अपने 'भारतके असभ्यजाति' नामक पुस्तकमें गारोओंको लक्ष्य करके लिखा है कि उस श्रेणीके लोग अपना निज जातीयत्व खो करके पूरे बङ्गाली बन गये हैं और अपनी निज भाषा भी भूल बैठे हैं। गारो पहाड़के बाशिन्दे राभा लोगोंकी भाषा अलग है। डालू जातीय डालू नामक ग्राममें वास करते हैं। पूर्वकालमें उनकी भाषा निराली रही, परन्तु अब उसका चिह्नमात्र मिलता है। हाजङ्ग जातीय इन्हीं-जैसे हैं।

गारो लोग दृढ़काय, नातिदीर्घ, कर्मठ, मांसल और कष्टसहिष्णु होते हैं। इनका ललुदेश उच्च, नासिका बड़ी, चक्षु ईषत् रक्ताभ, कर्ण दीर्घ, ओष्ठाधर मोटे, श्मश्रु क्षुद्र और गात्रवर्ण कृष्णाधिक्ययुक्त ताम्रवर्ण है। इनमें क्या स्त्री क्या पुरुष कोई सुश्री नहीं। यह भारवहनमें इतने पटु होते कि कपि द्रव्यका जैसा बोझा उठा करके पहाड़के ऊपर आते जाते, दूसरा कोई वैसा करनेका साहस नहीं देखाते। इनकी दाढ़ी मूंछ इतनी अल्प आती कि किसीके मुख पर प्रायः नहीं जैसी दिखलाती है। आजकल स्वाधीन गारोओंमें कोई कोई दाढ़ी रखता; नहीं तो जिसके श्मश्रु देख पड़ता, लोम खींच खींच करके उखाड़ा करता है। यह मस्ते पर लम्बे लम्बे वाल रखते, उन्हें कभी भी काटा नहीं करते।

गारो लोग साधारणतः साहसी और सत्यवादी हैं। यह स्वभावतः शान्त हैं, परन्तु अल्प चेष्टामें ही चिढ जाते हैं।



गारो पुरुष १॥ गजी धोती पहनते हैं। इस धोती को वह अपने आप बुना करते हैं। धोती छोटी होते भी यह उसको ऐसे कौशलसे परिधान करते कि उससे बहुत अच्छी तरह मलम गी बचती है। स्त्रियोंकी धोती पुरुषों-की धोतीसे बडी होती है। वह कोई वक्षाच्छादन व्यव हार नहीं करतीं। अपेक्षाकृत धनशाली स्त्रीपुरुष एक प्रकार कम्बल बरतते हैं। गरीब आदमी किसी प्रकारके वृक्षकी छाल जलमें भिगो कूट पीट बड़ा करके धूपमें सुखा लेते और उसीको गात्र पर वस्त्रकी भाँति लपेट देते हैं।

गारोजातीय स्त्रीपुरुष बहुत ही अलङ्कारप्रिय है।' पीतलकी माला पहनके लोग फूले नहीं समाते। दामरा गांवके गारोओंका खासियोंके साथ विवाह आदि होते हैं। इनकी स्त्रियोंके कानका बाला इतना भारी रहता कि लोर ठुड्डीतक लटक पडती है। पुरुष अपनी पोशाक कौडिया लगा करके बनाते हैं। खासो पहाडके गारो कौडियोंके कई प्रकारके गहने तयार करते हैं। इनमें गणमान्य लोग कुहनी पर लोहे या पीतलका कडा पहनते हैं। कोई क्रीतदास उसे व्यवहार नहीं कर सकता, फिर भी किसीके वैसा चाहने पर रुपये दे कर गांवके मुखियेसे पूछना पड़ता है। पुरुषोंमें पीतलके पत्तरोंका मुकुट पहन बांधता, जो युद्धमें अपने हाथसे शत्रुको मार डालता है। परन्तु अंगरेजोंके अधिकारमें एकबारगी ही वशीभूत हो जानेवाले लोगोंमें वह विलासिता प्रकाशक साधारण भूषण बन गया है। यह गोदना कभी नहीं गुदाते।

इनके अस्त्रशस्त्रोंमें बर्छा, तलवार और 'पाञ्जी' (तूणीर-जैसी क्षुद्राकार तीक्ष्णमुख व शलाकाकार) प्रधान हैं। बांसका भाला साधारण हथियार है। इनकी तल-वार दोधारी होती है। ढाल कई तरहकी बनाते हैं। यह छिप बांसके भाड़ोसे शत्रु पर आक्रमण करनेमें बहुत पटु होते और तोप बन्दूक न रहते भी पत्थर आदि लुढ़का करके शत्रुको मारा करते हैं।

गारोजाति कलहप्रिय है। इनमें सदा परस्पर दङ्गा फसाद हुवा करता है। युद्धमें प्रवीण होते भी यह शिकार नहीं कर सकते और जाल बिछा करके पशु पक्षी पकडनेमें कम होशियार देख पड़ते हैं। इनका प्रधान और साधारण खाद्य अन्न है। यह प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्याको तीन बार आहार करते हैं। अफीम, गांजा, चरस आदि नशा इनमें नहीं चलता। यह घरमें पशु कम पालते और खासियोंकी तरह गोदुग्धको गोमूत्र जैसा अखाद्य मानते हैं।

गारो लोग खेतीबारीसे ही जीविका निर्वाह करते हैं। फसल कट जाने पर बिना एक उत्सव भोज हुए नया अन्न कोई नहीं खाता। इनमें हल और कुदालका चलन कम है। यह जहां खेती करते, झोपड़ा डालके रहते हैं। खेत कट जाने पर उक्त कुटीरको तोडफोड करके गांव जा अपने घरमें रहने लगते हैं।

केलेके पेडको जला करके एक प्रकारका खार बनाते जिसको नमकके बदले काममें लाते हैं। धनी लोगोंके पास पीतलके बर्तन हैं। लोहार, कुमार या बढ़ईका काम कोई नहीं जानता। विवाहमें दहेज लेने देनेकी चाल कम है। विवाह हो जाने पर वर कन्याके साथ रह करके श्वशुर व शमें मिल जाता है। इनका अपने वंशमें विवाह नहीं होता। बहुविवाह प्रचलित होते भी दोसे अधिक विवाह निषिद्ध है। व्यभिचार दोषमें अपराधीको अर्थदण्ड लगता है। पूर्वकालको इस अप-राधके दोषी स्त्री पुरुष फांसी पाते थे। इनमें किसी

आदरिगो कन्याका विवाह करनेसे श्वशुरके मरने पर सासके साथ भी विवाह करना पड़ता और उनकी समस्त सम्पत्तिका अधिकार मिलता है। इसी प्रकार स्त्री परम्परासे उनका उत्तराधिकार ठहरता है। स्त्री ही घरकी सर्वमयी कर्त्री है।

किसीके मरने पर यह मृतदेहको उत्तमोत्तम वेश भूषासे सजा करके १।२ दिन रख छोड़ते और मृतके आत्मीय रातको रोते पीटते जाग करके शव रक्षा करते हैं। फिर तीसरे या ४थे दिनको लाश जलायी जाती है। भस्म राशिको बांसके बाड़ेसे घेर लेते और उस पर खाद्य तथा पानीय छोड़ देते हैं। इनको विश्वास है कि मृत व्यक्तिका आत्मा मरणके पीछे चिकमाङ्ग पर्वत (सुमङ्गके उत्तर) पर अवस्थान करता है। भोज, पान और आनन्द उत्सवसे श्राद्धकर्म समाप्त होता है। एक सप्ताह पीछे शवभस्मको मृतव्यक्तिके गृहद्वारसे गाड़ करके उस पर एक ध्वजा लगा देते हैं। गांवमें ऐसी असंख्य ध्वजाएं दिखलाती हैं।

यह 'मालजाङ्ग' नामक एक आदिदेवको स्वीकार करते हैं। सूर्य ही उनका आधार है। इनका विश्वास है कि शारीरिक मानसिक पीड़ा आदि कई अपदेवताओंके क्रोधसे उठ खड़े होते हैं। उनकी प्रीतिके लिये नानाविध उपहारादि देने पड़ते हैं। यह साधारणतः किसी हृहद्वृक्षतल, ग्रामके मध्य वा वाहरमें किसी स्तूप पर प्रदत्त होता है। कभी कभी अपदेवताओंको भय देखानेके लिये गांवकी राहसे पेड़की डालियों या पतीदार बांसोंमें अण्डे लगा गाड़ देते हैं। वह भूतप्रेतको मानते और यह भी विश्वास करते, कोई कोई मनुष्यदेह त्याग करके व्याघ्र प्रभृति हिंस्र पशुरूप भी बना सकता है। इनके पूजक 'कमाल' नानाविध लक्षणोंसे स्थिर करते, किस अपदेवताके क्रोधसे पीड़ा हुई और फिर उसके पूजा, वलि इत्यादिकी व्यवस्था बतलाते हैं।

इनमें जातिभेद और खाद्यविचार नहीं है। पितृपुरुषके नाम वा श्रेणीके अनुसार इनका वंश विभक्त हुआ है।

१८७२-७३ ई०की जो गारोविद्रोह लगा, नीचेमें उसका संक्षिप्त विवरण लिखा है—

१८७० ई०को ग्रामो पहाड़की पैमायश हुई। फिर मेजर गडविन अष्टेन नामक सेनानीके अधीन अमीन लोग गारो पर्वतमें जरीब लगानेको आगे बढ़ उत्तरपूर्व अञ्चलमें जा पहुंचे। संसर्नसिंह और ग्वालपाड़ेके बीचका यह अंश उस समयको बृटिश अधिकारमें रहा। उसके पीछे स्थानीय डिपटी कमिश्नर विलियमसनने मेजर अष्टेनके साथ साथ गारोओंके स्वाधीनदेशमें प्रवेश किया। वाङ्नगिरि ग्राममें एक छोटा युद्ध होनेवाला था, परन्तु मेजर अष्टेनके कौशलसे रुक गया। गिलिश्वरी उपत्यका तक जरीब निर्वाद चलता रहा। फिर १८७२ ई०को अमीन मांक्लिमेराम नामक पर्वत पर उपस्थित हुए। इसी स्थानमें फागसगिरि और रङ्गमागिरि नामक २ ग्राम हैं। उनमें एक तो स्वाधीन रहा, दूसरा कुछ कुछ समझकी अधीनता मानता था। गारो भाषा न जाननेवाले दो कुली उक्त ग्रामोंको माङ्गमनराम गिरि परिष्कार करनेके लिये मजदूर बुलाने भेजे गये। रामागिरि ग्राममें जब यह पहुंचे, वहां अविवाहितोंके आश्रममें पानभोजनका कोई उत्सव हो रहा था। दोनों कुलियोंको सम्भवतः आमोदमें बाधा डालनेमें मुखियाके कहने पर पकड़ करके मारडालनेका उद्योग किया। एक तो काट डाला गया, परन्तु दूसरा भाग खड़ा हुआ और तुरा जा करके अपने साथीके गारोंओंके हाथ मरनेका संवाद दिया। कपतान लाटुनीके अधीन एक पुलिससैन्य पहुंचा था। उक्त दोनों ग्रामोंके लोग पराजित हुए। १८७२ ई० मई मासमें कपतान लाटुनीने फरामगिरि गांवके मुखिया और एक गारोको हत्याकारी जैसा पकड़ करके रखा था। इससे कई गावोंके लोगोंने अंगरेजोंका अधिकृत दामाकचीगिरि नामक ग्राम आक्रमण किया। कपतान लाटुनीको अधिकृत ग्रामसे माहाय्य मिला था। दामाकचीगिरि आक्रान्त होनेके बाद कपतान साहब फरामगिरिपर चढ़ गये। उस समय सभी स्वाधीन ग्रामोंमें आतङ्क हुआ और क्रमशः वह गारो लोगोंमें फैल पड़ा। डिपटी कमिशनर विलियमसनने और एक दल पुलिससैन्यके साथ ग्वालपाड़ेके सुपरिण्टेण्डेण्टको फरामगिरि भेजा था। इन्होंने वावईगिरि और काकवागिरि ग्रामोंको आक्रमण किया। गारो लोग दो वार युद्ध करके

भाग खड़ हुए। अंगरेजोंने कुछ लोगोंको वन्दी बनाया और दोनों गावों पर अपना अधिकार जमाया।

१८६६ ई०को पहले पहल गारो पहाड़ अंगरेजोंके अधीन आया था। कप्तान विलियमसन डिपटी कमिश्नरकी भांति तुरामें रहे। १८७२ ई०तक गारो शान्त थे। जमींनोंके साथ उक्त विवाद हो जानेसे बङ्गालके छोटे लाटने स्थिर किया कि गारो पर्वतमें और कोई ग्राम स्वाधीन रखना उचित नहो। फौज भेजी गयी। कोचविहारके कमिश्नर और गारो पहाड़के डिपटी कमिश्नरको सैन्य परिचालनका भार मिला था। कपतान विलियमसन पुलिसके सिपाही ले तङ्गवलगिरि, दिलमागिरि प्रभृति बड़े बड़े स्वाधीन ग्राम अधिकार करते हुए खासी पर्वतके मायोदुदान नगरसे पश्चिममुखको चल पड़े। आसाम विभागका एक दल सेना उसी शहरमें रह गया। कपतान विलियमसनके रङ्गरणगिरि ग्राम पहुंचने पर सुसङ्ग दुर्गापुरसे कप्तान डाली भी जा करके उनसे मिले थे। दोनों दल मिलकरके सोमेश्वरी नदीके तीर और अस्मानगिरि ग्राममें लड़नेको तैयार होने लगे। इससे पहले कप्तान डालीके साथ रङ्गरणगिरिमें गारोओंकी एक छोटी लड़ाई हुई थी, जिससे यह हार गये। उधर कप्तान डेविस निकरिहार ग्रामकी ओरसे आ रहे थे। बड़ी देरके बाद वह आ करके रङ्गरणगिरिमें मिलित हुये। क्रमश एक ग्रामके बाद दूसरा मानने लगा, प्राय युद्ध करना ही न पड़ा। बहुतसे ग्रामोंके सरदारोंने क्षति पूरणार्थ दण्ड दिया था। कप्तान डाली पश्चिम पहाड़ और कप्तान डेविस उत्तर पहाड़ देखने गये और ग्रामादि अधिकार करके शासनके लिये लश्कर उपाधि दे सरदार नियुक्त करने लगे। प्रति घरके हिसाबसे सब लोग कर देने पर बाध्य हुए। तदवधि गारो शान्त बने हुए हैं।

इनकी भाषा एक नहीं है। दिक्‌भेद और भाषा भेदसे चिकमङ्ग पर्वतके लोग तुरावालोंकी बोली समझने में असमर्थ हैं। यह स्वदेश छोड़ करके प्राय कहीं नहीं जाते।

गारोदो—दाक्षिणात्यकी एक पर्वतगुहा। यह तेलगांव दाभाड़ेसे १० मील दक्षिण और समतलक्षेत्रसे ४५०।५०० फुट ऊंची है। इस पर्वतमें ई० प्रथम शताब्दीके खोदित कई एक बौद्ध गुहामन्दिर देख पड़ते हैं। पहले गुहामन्दिर पर्वतके सर्वोच्च स्थानमें एक क्षुद्रशिखर बना हुआ है। इसका द्वार दक्षिण-पश्चिम मुखी है और सामनेका कुछ अंश टूट गया है। यहां चढ़नेका कोई सहज उपाय नहीं। द्वितीय गुहा इसकी अपेक्षा कुछ नीची है। उसके मण्डपका परिमाण २९ फुट×८ फुट ८ इञ्च×८ फुट×८ इञ्च है। पश्चाद्भागमें ४ अन्तरालगृह दृष्ट होते हैं। प्रत्येक द्वारद्वयके मध्यमें दृ टोंके अठपहलू दो खम्भे जलपात्र पर स्थापित हैं। स्तम्भके मस्तक पर सिंह, व्याघ्र किंवा हस्तीकी मूर्ति खुदी हुई है। एतद्भिन्न स्तम्भमस्तकके मध्य स्थानका कारुकार्य भी अति सुन्दर है। उसके पश्चाद्भागमें निम्नदेश पर २ फुट चौड़ी और १ फुट सात इञ्च ऊंची एक एक प्रस्तरवेदी है। इससे ज्ञात होता कि काल पाकरके बौद्ध कीर्ति लुप्त और ब्राह्मण्यधर्मकी प्रबलता प्रसारित हुई। मन्दिर वामभागके तृतीय कक्षमें एक लिङ्गमूर्ति विराजमान है। मन्दिरके मध्यमें शिववाहन वृषभमूर्ति और गुहाके बहिर्देशमें देवाइशसे प्रदत्त आलोकस्तम्भ तथा तुलसीमञ्च है। इसी कक्षद्वारके पार्श्वस्थ स्तम्भ पर एक अस्पष्ट शिलाफलक उत्कीर्ण है। वह १४३८ ई०के श्रावण मास शुक्लपक्षको लिखित हुई।

द्वितीय गुहासे उत्तर पश्चिम दिक्‌को कुछ दूर जाने पर एक शुष्क दीर्घिका मिलती है। उसको लांघ करके थोड़ा चलने पर और एक छोटी गुहा देख पड़ती है। इसके सामने बरामदेमें लकड़ीके ४ खम्भे पत्थरमें घर बना करके लगाये गये हैं। उसकी वामदिक्‌के शेष भागमें एक अन्तरालगृह और पीछेको किसी घरमें प्रवेशके लिये एक द्वार है। तत्पश्चात् पर्वत पर एक बृहत् कूप और उसीके निकट चतुर्थ गुहामन्दिर अवस्थित है। इस गुफाके सामनेकी दीवार अपरापर गुहाओंकी अपेक्षा ४।५ फुट चौड़ी है। घुसनेके लिये दो गोल दरवाजे लगे हुये हैं। भीतरी दालानके दाहने और बायें ४।४ घर हैं। उसमें वामदिकका एक घर टूट पड़ा है। मन्दिरके पश्चाद्भागमें २ अन्तरालगृह और उसके सामने गर्भगृह है। इस घरके बीचमें किसी मृतव्यक्तिके नाभि अस्थिका समाधि है। इसी समाधिस्थान पर छत तक ऊंचा खम्भा लगा था। अब उस स्तम्भको गिरा करके एक छोटी शैव-

वेदी बनायी गयी है। इस गुहामन्दिरको वामदिक्से संलग्न एवं तोपरि गुहागृह है। उसके सामने दीवार-की बायीं तट पर आन्ध्रराजाओंके सामयिक दाक्षिणा-देशीय ब्राह्मी अक्षरोंमें खोदित शिलाफलक पर एक प्रशस्ति दृष्ट होती है।

इस गिरिश्रेणीको लांघ पश्चिमाभिमुख चलने पर जहां एक दूसरी पर्वत मिला, बौद्ध यतियोंके आवासको और भी दो दुरारोह गुहामन्दिर हैं।

गार्ग (सं० पु०) गार्गस्य संघ अङ्को वा यञन्तात् अण्। १ गार्ग्य संघ। २ तदङ्क। (क्ली०) ३ गार्ग्य लक्षण। (त्रि०) ४ गार्ग्यसे आगत। (पु० स्त्री०) गार्ग्याः कुत्सितमपत्यम् णः। ५ गार्गीके कुत्सित पुत्र, गार्गीके नटखट लड़के।

गार्गक (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग्याः कुत्सितापत्यादिकं वुञ् यलोपः। गार्गीकी कुत्सित सन्तान।

गार्गि—एक प्राचीन ज्योतिःशास्त्रकार।

गार्गिक (सं० पु०-स्त्री०) गार्ग्या अपत्यं ठक्। गोत्रस्त्रियाः कुत्सने च। पा ४।१।१४७। गार्गीकी कुत्सित सन्तान।

गार्गिका (सं० स्त्री०) गार्गस्य कर्म भावो वा गार्ग्य वुञ्। १ गार्गका धर्म। २ गार्गका कर्म।

"गार्गिकया श्लाघते गार्ग्यत्व नविकत्थने।" (सि० कौ०)

३ गार्गकी सन्तान।

गार्गी (सं० स्त्री०) गर्गस्य गोत्रापत्यं स्त्री यञ् ङीप्। १ गर्ग गोत्रमें उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री।

"अथैनं गार्गी वाचक्नवी पप्रच्छ।" (बृहदारण्यक उपनिषद्)

२ दुर्गा।

"त्रीं श्रीं गार्गीं च गानृधवीं।" (हरिवंश १०८ अ०)

३ याज्ञवल्क्य ऋषिकी एक स्त्रीका नाम।

गार्गीपुत्र (सं० पु०) गार्ग्याः पुत्रः, ६-तत्। १ गार्गीके पुत्र, शुक्लयजुर्वेदोक्त एक मुनि। (शतपथब्राह्मण १४।९।४।३०)

गार्गीपुत्री (सं० पु० स्त्री०) गार्गीपुत्रस्य अपत्यं वा फिञ् वा लुक् च पक्षे इञ्। पुत्रान्तादन्यतरस्याम्। पा ४।१।१५९ गार्गी पुत्रका अपत्य, गार्गी पुत्रकी सन्तान।

गार्गीय (सं० त्रि०) गार्ग्यस्येदं। १ गार्ग्यसम्बन्धीय। २ गार्ग्य प्रोक्त, गार्गका कहा हुआ।

गार्गीय (सं० पु०-स्त्री०) गर्ग-छञ्। गर्गगोत्रोत्पन्न, जो गर्गगोत्रमें उत्पन्न हुआ हो।

गार्ग्य (सं० पु० स्त्री०) गर्गस्य अपत्यं यञ्। १ गर्ग गोत्रमें उत्पन्न पुरुष वा स्त्री। २ एक प्राचीन वैयाकरण। इनके मतका उल्लेख पाणिनि और यास्कने किया गया है। इन्होंने सामवेदके पदपाठकी रचना की है। ३ एक प्राचीन ज्योतिर्विद्। इनका बनाया हुआ गार्ग्यस्मृति नामका एक धर्मशास्त्र भी है।

गार्ग्यगोपालयज्वन्—एक वैदिक पंडित। इन्होंने "वैदिकाभरण" नामक व्याख्यान रचना की है।

गार्जर (सं० क्ली०) गर्जरमूल।

गार्ड (अ० पु०) १ रक्षक, पहरा देनेवाला मनुष्य। २ रेल-का प्रधान उत्तरदाता कर्मचारी। यह सदा पीछेकी कमरामें रहता है। इसीकी आज्ञानुसार ड्राइभर गाड़ी चलाता और रोकता है। ३ निरीक्षक।

गार्डेन (अ० पु०) बाग, बगीचा।

गार्डेन-पार्टी (अं० स्त्री०) नगरके बाहर किसी बागका भोज।

गार्त्तक (सं० त्रि०) गर्तदेशे भवः। गर्त-वुञ्। धूमादिभ्यश्च। पा ४।२।१२१। गर्तदेशजात, जो गर्तदेशसे पैदा हुआ हो।

गार्त्समद (सं० पु०) गृत्समदस्यापत्यं अण्। शिवादिभ्योऽण्। पा ४।१।११२। १ गृत्समदके पुत्र। २ शुनकगोत्र केतीन प्रवरों-के अन्तर्गत एक ऋषि।

"शुनकानां गार्त्समदेति त्रिप्रवरं वा भार्गवशौनहोत्रगार्त्समदेति।

(आश्वलायनश्री० १२ १०।१३)

गार्दभ (सं० त्रि०) गर्दभस्येदं अण्। गर्दभसंबन्धीय, गदहेके सम्बन्धका।

"शोफनं गार्दभं मूत्रं क्रिमिवातदरापहम्।" (सुश्रुत १२५ अ०)

गार्दभरथिक (सं० त्रि०) गर्दभयुतं रथमर्हति ठक्। गदहा-से युक्त रथगमनयोग्य, गदहेके रथ पर जाने योग्य।

गार्ध (सं० त्रि०) आद्यून, क्षुधित।

गार्धपक्ष (सं० पु०) गृध्रस्यायं अण् गार्ध्रः, गार्ध्रः पक्षो यस्य। गृध्रपक्षविशिष्ट बाण, गृध्रके पंखका बाण।

गार्ध्य (सं० क्ली०) गर्ध भावे घञ्, गर्ध एव स्वार्थे ष्यञ्। लोभ, अधिक तृष्णा।

गार्ध्र (सं० त्रि०) १ गृध्रसे उत्पन्न। २ लालची, लोभी। ३ बाण।

गार्ध्रपत्र (सं० पु०) गार्ध्रं गृध्रसम्बन्धीयं पत्रं पक्षोऽस्य। गृध्रपक्षविशिष्ट। जिसमें गिद्धका पंख हो।

"गाध्रपत्रा विनाशिता ।" (भारत ३।३०० अ)

गार्ध्रवाजित (सं० पु०) गार्ध्रवाज क्षत गार्ध्रवाज करोत्यय णिच् कर्मणि क्त । क्षतगृध्रपक्षवाण, जिस वाण में गृध्रका पङ्ख दिया गया हो।

गार्ध्रवासस् (सं० वि०) गार्ध्र पत्रो वास इवास्य । गृध्र पक्षयुक्तवाण।

'शरावो गार्ध्रवाससान ।' (भारत ३।३० अ०)

गार्भ (सं० त्रि०) गर्भ गर्भशुद्धौ साधु अण् । १ गर्भ शुद्धिके निमित्त जिसका अनुष्ठान किया जाय । २ गर्भ सम्बन्धीय।

गाभि—व बई प्रदेशस्थके टांगसका एक क्षुद्र राज्य । भू परिमाण ३०५ वर्ग मील और जनसंख्या प्राय ४६८८ है। इसमें सिर्फ ५३ ग्राम लगते हैं। राज्यकी आमदनी ६५००) रुपयेकी है।

गार्भिक (सं० क्लो०) गर्भ ठक् । गर्भसम्बन्धीय।

गार्भिण (सं० क्ली०) गर्भिणीना समूह अण् । गर्भिणी-समूह, गर्भवती स्त्रीका झुंड।

गार्मुत (सं० त्रि०) गर्मुत इदम् अण् । १ गर्मुत् धान्य सम्बन्धीय।

'शासावय गार्मुत चरू निर्वपेत्।' (तैत्ति० स २।३।३।०)

२ मधु, शहद

गार्या—बङ्गालमें पलामु जिलेके अन्तर्गत एक शहर । यह अक्षा० २४ १०´ उ० और देशा० ८३ ५०´ पू०के बीच दानरो नदी पर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय २६१० है। लाख, धूप, कथ, रेशमके कीए, चमड़े, तैलहन, घी, रूई और लोहे प्रभृति चीजोंकी रफतनी यहांसे होती हैं, और अनाज, तांबेके बरतन, कम्बल, रेशम, नमक, तम्बाकू मसाले तथा बहुत तरहके औषध पदार्थ दूसरे दूसरे देशसे यहां आते हैं।

गार्ष्टेय (सं० पु० स्त्री०) गृष्टेरपत्य पुमान् ठञ् । गृष्टि अर्थात् एक वार प्रसूत धेनुका अपत्य, वृषभ।

गार्हपत (सं० वि०) गृहपतेरिदं गृहपतेर्भावो वा अश्व पत्यादित्वात् अण् । १ गृहपतिसम्बन्धीय। (क्ली०) गृहपतिका भाव, घरके स्वामीको इज्जत और प्रतिष्ठा।

गार्हपत्य (सं० पु०) गृहपतिना यजमानेन नित्य संयुक्त स ञ्यः । १ यजमानरूप गृहपतिके सहित संयुक्त अग्नि-विशेष।

२ वह स्थान जहां यह पवित्र अग्नि रखी जाती है।

गार्हपत्यागार (सं० पु०) गार्हपत्यस्यागार, ६ तत्० । गार्हपत्य अग्निका घर।

गार्हपत्याग्नि (सं० स्त्री) छः प्रकारकी अग्नियोंमें पहली और प्रधान अग्नि । पूर्व समय यज्ञों में पाकतपन आदि काम इसी अग्निमें किये जाते थे। प्रत्येक गृहस्थ-को शास्त्रानुसार इस अग्निकी रक्षा करनी चाहिये।

गार्हमेध (सं० पु०) गृहमेधाय अण् गार्ह मेध कर्म-धातु । गृहसम्बन्धीय यज्ञ । पंचयज्ञ आदि गृहस्थोंका मुख्यकर्म।

गार्हस्थ्य (सं० क्लो०) गृहस्थस्य कर्म गृहस्थ यत् १ गृहस्थ कर्त्तव्य पञ्च यज्ञादिकर्म, गृहस्थोंके मुख्य पांच काम (पु०) २ गृहस्थाश्रम।

चतुर्थमायुषोभागं हि गार्हस्थ्य च समाचरत्।" (रामायण २।११०।१२)

गार्ह्य (सं० वि०) ग्राम्य, घराऊ।

गाल्न (सं० पु०) मदनवृक्ष।

गाल (हिं० पु०) गंड, कपोल।

गालगूल (हिं० पु०) व्यर्थबात, गपशप।

गालन (सं० क्ली०) गल चालने भावे ल्युट् । १ चारण, निस्रावण । २ वस्त्रपूतकरण, कपड़ेसे छानना।

गालफल (सं० क्ली०) मदनफल।

गालमसूरी (सं० स्त्री०) एक तरहको पकवान वा मिठाई।

गालव (सं० पु०) गल घञ् । १ लोध्रवृक्ष लोधका पेड़। २ केन्दुकवृक्ष, तेंदूका पेड़ । ३ श्वेतलोध्र, सफेद लोद । ४ एक ऋषिका नाम । ये विश्वामित्रजीके पुत्र थे । ५ विश्वामित्रके एक शिष्य। इन्होंने भक्ति और सेवा शुश्रूषा से अपने गुरु विश्वामित्रको अत्यन्त सन्तुष्ट किया । विद्या समाप्त होने पर गालवने विश्वामित्रको गुरुदक्षिणा देनेके लिये बहुत अनुरोध किया किन्तु विश्वामित्रने दक्षिणा मांगनेसे अस्वीकार किया। विश्वामित्रने इनके हठसे क्रोधित होकर आठ सौ ऐसे घोड़े मांगे जिनका वर्ण श्याम और एक कान हो। गुरुजीसे ऐसी आज्ञा पाकर वे शीघ्र ही गरुड़-को प्रसन्न कर अपने साथ ले राजा ययातिके निकट पहुंचे ययातिके पास घोड़े तो नहीं थे किन्तु उन्होंने गालवको अपनी कन्या माधवी देकर कहा "गालवजी ! जो दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देवें उन्हें इस कन्याको देकर एक

पुत्र उत्पादन करने दीजिये । इसी तरह आप गुरुदक्षिणा चुकानेमें समर्थ होंगे" गालव माधवीको लेकर हर्य्यश्व-नृपके निकट उपस्थित हुए । प्रतिज्ञानुसार हर्य्यश्वने माधवीसे एक पुत्र उत्पन्न कर दो सौ श्यामकर्ण घोड़े, गालवको दिये । इसी प्रकार दिवोदास और उशीनरने भी एक एक पुत्र जन्मा कर दो दो सौ घोड़े, उन्हें प्रदान किये । शेष दो सौ घोड़ोंके लिये गालवको ऐसा कोई राजा न मिला जो उसकी इच्छाको पूरी कर दे । अन्तमें छह सौ घोड़े, और माधवीको साथ ले कर गालवजीने विश्वामित्रके निकट लौट कर उन्हें सब हाल कह सुनाया। विश्वामित्रने उन छह सौ घोड़ोंको ले लिया और उस कन्यासे एक पुत्र उत्पन्न कर गालवको गुरुदक्षिणाऋणसे उद्धार किया । (भारत उ।१०६-१०८ अ०) ६ एक प्रसिद्ध वैयाकरण । इनका मत पाणिनिके अष्टाध्यायीमें उद्धृत किया है । ७ एक धर्मशास्त्रकार । हेमाद्रि और माधवाचार्यने गालवस्मृति उद्धृत किये हैं ।

गालवक्षेत्र—एक पुण्य क्षेत्र । गलगलि देखो।

गालवि (सं० पु०) गालवस्य अपत्यं इञ् । गालवके पुत्र प्राक्शृंगवत् । इन्होंने कुनीगर्गको एक वृद्धा कन्यासे विवाह किया था । (भारत शल्य० ५२ अ)

गालवाद्य (सं० क्ली०) मुख पर हाथ दे कर वम् वम् शब्द करना । यह गालवाद्य शिवजीका अतिशय प्रिय है ।

गाला (हिं० पु०) १ धुनी हुई रूईका गोला, जो चरखेमें कातनेके लिये बनाया जाता है । २ जतु, लाह, लाख ।

गालि (सं० पु०) गाल्यते विक्रियते मनो येन यद्वा गाल्यते बुद्धामनेन गल-घञ् । दुर्वचन ।

गालित (सं० त्रि०) गल णिच् कर्मणि क्त । द्रवीकृत, गलाया हुआ ।

"गालितस्य सुवर्णस्य षोडशांशेन सोमकम् ।" (रत्नावली

गालिनी (सं० स्त्री०) गालयति द्रवी करोति गल-णिच्-णिनि ङीप् । मुद्राविशेष । पूजाके समय जिस शङ्खमें अर्घ्य स्थापन करना हो उसके ऊपर यह मुद्रा प्रदर्शन करना चाहिये । बायें हाथके ऊपर दाहिना हाथ आधा खोल कर रखे और बायें हाथकी कनिष्ठाके साथ दाहिने हाथका अंगुष्ठ एवं दाहिने हाथकी कनिष्ठा अंगुलीके साथ बायें हाथके अंगुष्ठसे योग करें । बायें हाथकी तर्जनीके साथ दाहिने हाथकी तर्जनी और दोनों हाथोंकी मध्यम अङ्गुलियां सरल भावमें परस्पर मिला दें, इसीको गालिनीमुद्रा कहते हैं । (तन्त्रसार)

गालिब (अ० वि०) विजयी, जीतनेवाला, श्रेष्ठ ।

गालिब—एक मुसलमान कवि । इनका असल नाम मिर्जा असाद उल्ला खां रहा । ये अलीबक्श खांके पुत्र और फिरोजपुर तथा लोहारोके नवाब अहमदबख्श खांके भ्रातुष्पुत्र थे । इन्होंने पारसी भाषामें एक "दिवान" एवं भारतवर्षके मोगल सम्राटोंके इतिहासकी रचना की है । १८६५ ई०में दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई ।

गालिम (अ० वि०) प्रबल, दृढ़, प्रचंड ।

गालिमत् (सं० त्रि०) गालिर्विद्यतेऽस्य गालि-मतुप् । गालियुक्त, आक्रोशयुक्त ।

"ददत् ददत् गालिं गालिमन्तः भवन्तः ।" (सिद्धान्तकौ०)

गाली (हिं० स्त्री०) १ दुर्वचन, निंदा । २ कलंकसूचक आरोप ।

गालीगलौज (हिं० स्त्री०) दुर्वचन, परस्पर गाली प्रदान ।

गाली गुफ्ता (फा० स्त्री०) १ परस्पर गाली प्रदान । २ दुर्वचन, गाली ।

गालोड़न (सं० क्ली०) गालोड़ित माचष्टे गालोड़ित णिच् इत भागस्य लोपे, गालोड़ि धातुः । १ उन्माद । २ रोग । ३ मूर्खत्व ।

गालोड़ित (सं० त्रि०) गालोड़ः सञ्जातोऽस्य गालोड़-इतच् । यद्वा गाव इन्द्रियाणि आलोड़िता विकलीकृता यस्य, बहुव्रो० । १ उन्मादशील । २ रोगार्त । ३ मूर्ख ।

"उन्मादशीला रोगार्ता मूर्खो गालोड़ितः स्मृतः।" (शब्दरत्नावली)

गालोड्य (सं० क्ली०) गलोड्य-स्वार्थे-अण् । १ धान्यविशेष, एक धान । २ पद्मबीज, कमलगट्टा ।

गावित—दाक्षिणात्यके बेलगाव प्रदेशान्तर्गत मांपगांव ग्रामवासी धीवरजाति । प्रवाद है कि रत्नगिरि, वेनगुरला और तन्निकटवर्ती स्थानमें उनका आदि वास रहा, किन्तु इसकी कोई स्थिरता नहीं कितने दिनसे वह वहां रहते हैं । यह देखनेमें बिलकुल कोलिजाति जैसे हैं । सभी लोग मराठी भाषामें बातचीत करते हैं । मछली पकड़ करके बेचना ही इनका घराऊ व्यवसाय है, परन्तु अब कुछ लोग खेतीबारी करके जीविका चलाने लगे हैं ।

ब्राह्मणों के प्रति इनको विशेष भक्ति है। इनका जन्म, मृत्यु, विवाह और अपरापर व्रतकर्म ब्राह्मण द्वारा ही सम्पन्न होता है। यह सभी देवदेवियोंका उपासना करते हैं। परन्तु उसमें वेतालकी पूजा सबसे बड़ी है। सब हिन्दू पर्वोंको पालन करते भी यह कोई उपवास नहीं मनाते और भूत, प्रेतात्माका आगमन शुभाशुभ चिह्नदर्शन प्रभृति इष्टानिष्टदायक घटनाओं पर विश्वास लाते हैं। किसीके भी मरने पर शवदाह नहीं करते।

इनमें विधवाविवाह प्रचलित है। जातीय एकता सूत्रमें सभी आबद्ध होते हैं।

गाव (फा० पु०) गाय, बैल।

गावकुशी (फा० स्त्री०) गोघात, गोवध।

गावकुम (फा० पु०) लगाम।

गावकोहान (फा० पु०) एक तरहका घोड़ा, जिसको पीठ पर बैलकी तरह कूबड़ निकला हो। इस तरहके घोड़े पर चढ़ना दोष माना गया है।

गावखाना (फा० पु०) गोशाला।

गावखुर्द (फा० वि०) १ अन्तर्धान, गायब। २ नष्टभ्रष्ट, बरबाद।

गावजबान (फा० स्त्री०) फारस देशके गीलान प्रदेशमें उत्पन्न एक प्रकारकी बूटी। इसके पत्ते रंग लिये मोटे होते हैं और इनके ऊपर छोटे छोटे दाने निकले रहते हैं। इसके फूल लाल रंगके छोटे छोटे होते हैं। इस बूटीके सेवन करनेसे ज्वर तथा खांसी जाती रहती है।

गावजोरी (फा० स्त्री०) १ बलप्रदर्शन। २ हाथापाई, भिड़न्त।

गावट—बम्बई प्रदेशस्थ महीकाण्ठा विभागके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। इसका क्षेत्रफल १० वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः २४५४ है। कोलिवंशीय ठाकुर यहांके राजा हैं। राजाकी वार्षिक आमदनी प्रायः तीन हजार रु० है जिनमेंसे ४३) रु० ईडरके राजाको कर देना पड़ता है।

गावड (फा० स्त्री०) गला, गर्दन।

गावतकिया (फा० पु०) कमर लगाकर बैठनेका एक बड़ा तकिया।

गावदी (हि० वि०) अबोध, जड़, नासमझ, बेवकूफ।

गावदुम (फा० वि०) १ जो बैलकी पूंछकी तरह पतला हो। २ चढ़ाव, उतार ढालू।

गावपछाड़ (हि० स्त्री०) कुश्तीका एक पेंच।

गावल (हि० पु०) दलाल।

गावल्गणि (स० पु०) धृतराष्ट्रके मन्त्री और साथी, सञ्जय।

गावली—दाक्षिणात्यके ग्वाला जाति। बीजापुर, मुहम्मदपुर, बागलकोट, कलकल, कालादगी, तालीकोट और सिन्धगी प्रभृति स्थानोंमें यह रहते हैं। शोलापुरके निकटवर्ती पण्ढरपुरमें इनका आदिवास रहा। सम्भवतः गाय दूहनेसे ही इनको गावली कहा जाता है।

इनमें २ श्रेणियां होती हैं नन्दगावली और लिङ्गारी। वर कन्या दोनों एक पदवीके होनेसे विवाह नहीं होता।

यह बहुत गरीब होते और देखनेमें मराठा कुनबियों जैसे लगते हैं। मराठी पगड़ीके बदले इनमें कनाड़ियों जैसा रूमाल व्यवहृत होता है। यह गांवमें रहना नहीं चाहते और उसीसे मैदानमें झोपड़े बना अपने अपने गोमेषादिके साथ निवास किया करते हैं। इनमें सभी लोग प्रायः निरामिषभोजी हैं। सप्ताह या पक्षान्तरको एकबार मात्र स्नान किया जाता है। कोई कोई प्रति रविवारको स्नानान्तमें स्वगृहस्थित खंडोबाकी प्रतिमूर्ति पूजते और उसको दुग्ध आदि निवेदन करते हैं।

यह लोग स्वभावतः धीर, परिश्रमी, सच्चे और मितव्ययी होते हैं। गाय भेड़ आदि पालन और दुग्ध, दधि, मक्खन प्रभृति विक्रय ही इनकी उपजीविका है। लिङ्गायत या नन्दगावली स्वजातिस्पृष्ट अन्न व्यतीत किसी दूसरे व्यक्तिका अन्न भोजन नहीं करते। परन्तु लिङ्गारी सभीके हाथका खा लेते हैं। तुलजापुरके खण्डोबा और अम्बाबाई इनके प्रधान देवता हैं। यह पण्ढरपुर, जेजुरी, तुलजापुर और सिङ्गनापुरकी तीर्थयात्रा करते हैं।

ब्राह्मणों पर इनकी प्रबला भक्ति है। पण्ढरपुरके निकटवर्ती मादलगांवमें इनके गुरु रहते और सब लोग उनको चन्द्रशेखराप्पा कहते हैं। वह अविवाहित होते और मृत्युके पूर्व एक शिष्य रख लेते हैं। गुरुके मरने पर शिष्यको चन्द्रशेखराप्पा पद मिलता और चिरजीवन अविवाहित रहना पड़ता है।

यह भविष्यद्वाणीमें विश्वास करते और उसीसे प्राय अपनी अदृष्टपरीक्षाके लिये दैवज्ञ अथवा सामुद्रिक शास्त्राध्यायीके निकट पहुंचते हैं। चुड़ैल या भूत चढ़ने पर इन्हें विश्वास नहीं है।

यह ५ दिन जन्माशौच मानते हैं। १२वे दिनको ५ सधवा स्त्रियां बुलायी जाती हैं। वह सन्तानको गोदमें ले करके नामकरण करती हैं। नौसे १२ मासके बीच शिशुका मातुल जा करके भागिनेयका मस्तक मुण्डन करता है। इनमें बाल्यविवाह, विधवाविवाह और बहुविवाह प्रचलित है। लिङ्गायत गावली मृतदेह जमीन्में गाड़ देते हैं। द्वादश दिवसको अशौच दूर होता है। यह लोग प्रति वर्ष वैशाख मासमें मृतके उद्देश श्राद्ध करते हैं।

मराठी गावलियोंमें बड़ी जातीय एकता है। यह सभी मराठी बोलते हैं।

गावली (हिं० स्त्री०) टकाली।

गावल्गणि (सं० पु०) गवल्गणस्यापत्यं गवल्गण-इञ्। गवल्गणके पुत्र सञ्जय।

"गावल्गणे क्व नस्तातो हृद्यो गौनथ नैवयोः॥" (भागवत १।१३।३२)

गावसुम्मा (हिं० पु०) फटे हुए खुरका घोड़ा, वह घोड़ा जिसके खुर फटे हों।

गाविष्ठिर (सं० पु०-स्त्री०) गविष्ठिरस्यापत्यं गविष्ठिर अञ्। गविष्ठिर ऋषिका अपत्य, गविष्ठिरकी सन्तान

गाविष्ठिरायण (सं० पु०-स्त्री०) गाविष्ठिरस्य युवापत्यं गविष्ठिर-फक्। गविष्ठिर ऋषिकी युवा सन्तान।

गावीधुक (सं० त्रि०) गवीधुकाया विकारः गवीधुक-अण्। गवीधुकाका विकार, इसके द्वारा प्रस्तुत चरु प्रभृति।

"अष्टाकपालं निर्वपति रौद्रं गावीधुकं चरुमेन्द्रं।"

(तैत्तिरीयसंहिता १।८।७।१)

गावेधुक (सं० त्रि०) गवेधुकाया विकारः गवेधुका-अण्। बिल्वादिभ्योऽण्। पा ४।३।१३६। गवेधुका द्वारा प्रस्तुत चरु प्रभृति। 'रौद्रं गावेधुकं चरुं निर्वपति।" (शतपथ ब्रा० ५।३।२।७)

गास (हिं० पु०) दुःख, संकट, आपत्ति।

गासिया (हिं० पु०) जीनपोश।

गाह (सं० पु०) गह कर्मणि घञ्। १ गहन, दुर्गम।

"मही गाहादिव भानिरधुपत।" (ऋक् ८।११।८)

'गाहात् गहनात्।' (सायण)

२ अवगाहन करनेवाला मनुष्य।

गाहक (सं० त्रि०) गाह वुण्। १ अवगाहन करनेवाला। २ जो अच्छा गाना गा सकता हो।

गाहक (हिं० पु०) १ लेनेवाला, खरीदनेवाला, खरीदार। २ कदर करनेवाला, चाहनेवाला।

गाहकी (हिं० स्त्री०) १ बिक्री। २ गाहक।

गाहन (सं० क्ली०) गाह-ल्युट्। विलोड़न, स्नान, गोता लगानेकी क्रिया।

गाहा (हिं० स्त्री०) १ कथा, वर्णन, चरित्र, वृत्तान्त। २ आर्या छन्दका एक नाम।

गाहनीय (सं० त्रि०) विलोड़नीय। जिसको स्नान करना उचित है।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-क्त। १ आलोड़ित, मथा या मला हुआ। २ अवगाहित, भीतरमें गया हुआ। ३ कम्पित, काँपता हुआ।

गाहितृ (सं० त्रि०) गाह-तृच। १ अवगाहनकर्त्ता। २ आलोड़न करनेवाला, मथनेवाला।

गाही (हिं० स्त्री०) पाँच चीजोंका समूह।

गाहू (हिं० स्त्री०) उपगीति छन्दका नाम।

गिंजना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका हाथ लगने या उलटे पुलटे जानेके कारण खराब हो जाना।

गिंजाई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कीड़ा जो प्रायः वर्षाकालमें देखा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग दोसे चार अङ्गुल तककी होती है। एक ही स्थान पर झुंडके झुंड पाये जाते हैं। इसके बहुतसे पैर होते हैं, और शरीरमें विष रहता है। यदि कोई पशु इसे खा जाय तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह कीड़ा वर्षाऋतुके आरम्भमें जन्म लेता और हस्ती नक्षत्रमें मर जाता है।

गिंड़नी (हिं० स्त्री०) एक तरहका शाक। इसकी पत्तियां दो अंगुल परिमाणकी लम्बी और जौ परिमाणकी चौड़ी होती है। इसकी गाँठों पर श्वेत फूलोंके गुच्छे लगते हैं।

गिंदर (हिं० पु०) फसलको नुकसान पहुंचानेवाला एक तरहका कीड़ा।

गिंदौरिया—युक्त प्रदेशके बनियोंकी एक शाखा। गिंदौरा बेचनेसे ही उनका यह नाम रखा गया है। मेरठमें गिंदौरिया बहुत हैं।

गिंदौरा (हिं० पु०) चीनीप्रभेद, चीनीका एक भेद। यह मोटी रोटीके आकारमें गलाकर ढाला जाता है। इस तरहकी चीनीकी रोटीका प्राय विवाहादिमें व्यवहार होता है।

गिउ (हिं० पु०) गला गरदन

गिचपिच (हिं० वि०) अस्पष्ट, एकमें मिला जुला।

गिचगिचिया (हिं० स्त्री०) कचपचिया देखो।

गिचिरपिचिर (हिं० वि०) गिचपिच देखो।

गिजगिजा (हिं० वि०) अस्पष्ट, गीला।

गिजा (अ० स्त्री०) खाद्यवस्तु, भोजन, खानेकी चीज।

गिजाली (मौलाना) एक राजकवि। इन्होंने अपने एक कसीदेमें लिखा है कि मेरा जन्म १५२४ ई०को हुवा। पहले यह अपनी जन्मभूमि मशहदसे दाक्षिणात्य आये, परन्तु वहां आशा पूरी न होने पर जौनपुर चले गये और जौनपुरके सूबेदार खां जमा अलीकुली खांके नीचे कई वर्ष कार्य करते रहे। उसी समय इन्होंने 'नकशबदीय कविता लिखी थी। उसीके लिये पृष्ठपोषक नवाबने इन्हें प्रति शेर (दोहा) एक अशरफी इनाम दी। १५६८ ई०को अकबर बादशाहके साथ लड़ाईमें खां जमानके मारे जाने पर यह सम्राट्के हाथों पड़ गये। बादशाह अकबरने इन्हें नौकर रखा और 'मालिक उश शुआरा' (कविराज) उपाधि प्रदान किया। भारतमें इन्हें ही पहले पहल यह उपाधि मिला था। यह अकबरके साथ गुजरात जीतने गये और वहीं १५७२ ई० ५ दिसम्बरको रोगग्रस्त हो चल बसे। अहमदाबादके सरकीज नामक स्थानमें इन्हें गाड़ा गया। इन्होंने एक दीवान् और किताब असरार', 'रशहात् उल हयात' और 'मिरत उल कायनात' नामकी ३ मसनवियां लिखी हैं।

गिजियानी—अफगानस्थानके रहनेवाले 'कयाई' पठानोंकी एक शाखा। ई० ५वीं शताब्दीके शेष भागमें तैमूरके समयको भी इनका कोई निर्दिष्ट वासस्थान न था। उलग बेगके राजत्वकालमें इन्होंने उनको बड़ा साहाय्य दिया, परन्तु उन्होंने कृत-उपकार भूल विश्वासघातकता पूर्वक काबुलसे इनको निकाल बाहर किया। पीछेको यह पेशावर उपत्यकामें आ करके बस गये। आजकल काबुल और स्वात नदीकी मध्यवर्ती उर्वरा भूमिमें इनका निवास है।

गिञ्जिहल्ली—दाक्षिणात्यके धारवाड़ जिलाका एक गण्ड-ग्राम। यह हानगल नगरसे २ मील दक्षिण अवस्थित है। यहां वासवेश्वरका एक मन्दिर है। इसी मन्दिरके मध्यमें वासवमूर्तिके टीना पार्श्व पर ११०३ ई०को उत्कीर्ण २ शिलालिपियां लगी हैं।

गिञ्जी—मन्द्राज प्रान्तीय दक्षिण अर्काट जिलेके तिण्डि-वनम् तालुकाका एक पर्वतमय भूभाग और गिरिदुर्ग। यह अक्षा० १२° १५´ उ० और देशा० ७९° २५´ पू०में मन्द्राज नगरसे दक्षिण पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ५२४ है। यहांकी किला बहुत पुराना है। उसी पर बहुकालसे यह स्थान इतिहासप्रसिद्ध है। कुछ दिन पहले पर्वतके निम्नदेशमें अल्पसंख्यक गृह व्यतीत कोई भी मनुष्यवाली ग्राम न रहा। गवर्नमेण्टने यह नाम स्थिर रखनेको निकटवर्ती बगाया ग्रामको भी गिञ्जी नामसे अभिहित किया है। दुर्गकी तीन ओर राजगिरि, कृष्णगिरि और चन्द्रायण दुर्ग नामक—३ पर्वत हैं। यह तीनों पहाड़ परस्पर सुदृढ़ प्राचीर द्वारा संलग्न हैं। सुतरां कोई शत्रु इस किलेको सहजमें ही दखल कर नहीं सकता। पर्वत और प्राचीरको ले करके दुर्गका परिधि ७ मीलसे अधिक पड़ता है। इसका कोई प्रकृत प्रमाण नहीं मिलता, कब किसने उसे बनाया था। कोई कहता कि चोल राजाओंके समयको वह सब प्रथम स्थापित हुवा। फिर किसीके मतमें १४४२ ई० पर तञ्जोर शासनकर्ता विजयरङ्गनायकके पुत्र उसे बनवाने लगे थे। किन्तु विजयनगरराजकर्तृक १३८३ ई०को प्रदत्त एक प्रशस्तिमें लिखा है कि दुर्गसे ही उस प्रदेशका नाम गिञ्जी पड़ा। अतएव कोई सन्देह नहीं कि इनके पहलेसे ही उसका निर्माणकार्य सम्पूर्ण हो गया था। इस किलेमें कल्याणमहल, जिमखाना, शस्यागार, ईंट गाह, बारिक, मण्डप और एक ८ मञ्जिला गुम्बज है। इस गुम्बजके पहले ६ खण्डोंमें ८ फुट चौकोर घरके चारों किनारे बरामदा और प्रत्येक तलसे ऊपर चढ़नेकी

यह भविष्यद्वाणीमें विश्वास करते और उसीसे प्राय अपनी अदृष्टपरीक्षाके लिये दैवज्ञ अथवा सामुद्रिक शास्त्राध्यायीके निकट पहुंचते हैं। चुड़ैल या भूत चढ़ने पर इन्हें विश्वास नहीं है।

यह ५ दिन जन्माशौच मानते हैं। १२ वें दिनको ५ सधवा स्त्रियां बुलायी जाती हैं। वह सन्तानको गोदमें ले करके नामकरण करती हैं। नौसे १२ मासके बीच शिशुका मातुल जा करके भागिनेयका मस्तक मुण्डन करता है। इनमें बाल्यविवाह, विधवाविवाह और बहुविवाह प्रचलित हैं। लिङ्गायत गावली मृतदेह जमीन्में गाड़ देते हैं। द्वादश दिवसको अशौच दूर होता है। यह लोग प्रति वर्ष वैशाख मासमें मृतके उद्देश श्राद्ध करते हैं।

मराठी गावलियोंमें बड़ी जातीय एकता है। यह सभी मराठी बोलते हैं।

गावली (हिं० स्त्री०) टकाली।

गावल्गणि (सं० पु०) गवल्गणस्यापत्यं गवल्गण-इञ्। गवल्गणके पुत्र सञ्जय।

"गावल्गणिः स्तु तत्रागतो भ्रश्नो कौरव सेवयो" (भागवत १।१३।३२)

गावसुल्ला (हिं० पु०) फटे हुए खुरका घोड़ा, वह घोड़ा जिसके खुर फटे हों।

गाविष्ठिर (सं० पु०-स्त्री०) गविष्ठिरस्यापत्यं गविष्ठिर अञ्। गविष्ठिर ऋषिका अपत्य, गविष्ठिरकी सन्तान

गाविष्ठिरायण (सं० पु०-स्त्री०) गाविष्ठिरस्य युवापत्यं गविष्ठिर-फक्। गविष्ठिर ऋषिकी युवा सन्तान।

गावीधुक (सं० त्रि०) गवीधुकाया विकारः गवीधुक-अण्। गवीधुकाका विकार, इसके द्वारा प्रस्तुत चरु प्रभृति।

"रुद्राकपालं निर्वपति रौद्रं गावीधुकं चरुमेके"।"

(तैत्तिरीयसंहिता १।८।७।१)

गाविधुक (सं० त्रि०) गविधुकाया विकारः गविधुका अण्। बिल्वादिभ्योऽण् । पा ४।३।१३६। गविधुका द्वारा प्रस्तुत चरु प्रभृति। "रौद्रं गावेधुकं चरुं निर्वपति।" (शतपथ ब्रा० ५।३।३।७)

गास (हिं० पु०) दुःख, संकट, आपत्ति।

गासिया (हिं० पु०) जीनपोश।

गाह (सं० पु०) गाह कर्मणि घञ्। १ गहन, दुर्गम।

"नदी गाहाइव आविरभूवन।" (ऋक् ८।१।१०८)

'गाहात् गहनात्।' (सा०भा०)

२ अवगाहन करनेवाला मनुष्य।

गाहक (सं० त्रि०) गाह वुण्। १ अवगाहन करनेवाला। २ जो अच्छा गाना गा सकता हो।

गाहक (हिं० पु०) १ लेनेवाला, खरीदनेवाला, खरीदार। २ कदर करनेवाला, चाहनेवाला।

गाहकी (हिं० स्त्री०) १ बिक्री। २ गाहक।

गाहन (सं० क्ली०) गाह-ल्युट्। विलोड़न, स्नान, गोता लगानेकी क्रिया।

गाहा (हिं० स्त्री०) १ कथा, वर्णन, चरित्र, वृत्तान्त। २ आर्या छन्दका एक नाम।

गाहनीय (सं० त्रि०) विलोड़नीय। जिसको स्नान करना उचित है।

गाहित (सं० त्रि०) गाह-क्त। १ आलोड़ित, मथा या मला हुआ। २ अवगाहित, भीतरमें गया हुआ। ३ कम्पित, काँपता हुआ।

गाहितृ (सं० त्रि०) गाह-तृच। १ अवगाहनकर्त्ता। २ आलोड़न करनेवाला, मथनेवाला।

गाही (हिं० स्त्री०) पाँच चीजोंका समूह।

गाहु (हिं० स्त्री०) उपगीति छन्दका नाम।

गिंजना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका हाथ लगने या उलटे पुलटे जानेके कारण खराब हो जाना।

गिंजाई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारका कीड़ा जो प्रायः वर्षाकालमें देखा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग दो-से चार अङ्गुल तककी होती है। एक ही स्थान पर झुंडके झुंड पाये जाते हैं। इसके बहुतसे पैर होते हैं, और शरीरमें विष रहता है। यदि कोई पशु इसे खा जाय तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह कीड़ा वर्षा-ऋतुके आरम्भमें जन्म लेता और हस्ती नक्षत्रमें मर जाता है।

गिंडनी (हिं० स्त्री०) एक तरहका शाक। इसकी पत्तियां दो अंगुल परिमाणकी लम्बी और जौ परिमाणकी चौड़ी होती है। इसकी गाँठों पर श्वेत फूलोंके गुच्छे लगते हैं।

गिंदर (हिं० पु०) फसलको नुकसान पहुंचानेवाला एक तरहका कीड़ा।

गिंदौरिया—युक्त प्रदेशके बनियोंकी एक शाखा। गिंदोरा बेचनेसे ही उनका यह नाम रखा गया है। मेरठमें गिंदौरिया बहुत हैं।

गिंदौरा (हिं॰ पु॰) चीनीप्रभेद, चीनीका एक भेद। यह मोटी रोटीके आकारमें गलाकर ढाला जाता है। इस तरहकी चीनीकी रोटीका प्रायः विवाहादिमें व्यवहार होता है।

गिड (हिं॰ पु॰) गन्ना गरदन

गिचपिच (हिं॰ वि॰) अस्पष्ट, एकमें मिला जुला।

गिचगिचिया (हिं॰ स्त्री॰) कचपचिया देखो।

गिचिरपिचिर (हिं॰ वि॰) गिचपिच देखो।

गिजगिजा (हिं॰ वि॰) अस्पष्ट, गीला।

गिजा (अ॰ स्त्री॰) खाद्यवस्तु, भोजन, खानेकी चीज।

गिजाली (मौलाना) एक राजकवि। इन्होंने अपने एक कसीदेमें लिखा है कि मेरा जन्म १५२४ ई॰को हुआ। पहले यह अपनी जन्मभूमि मशहदसे दाक्षिणात्य आये, परन्तु वहां आशा पूरी न होने पर जौनपुर चले गये और जौनपुरके सूबेदार खां जमां अलीकुली खांके नीचे कई वर्ष कार्य करते रहे। उसी समय इन्होंने 'नकश्बदीय' कविता लिखी थी। उसीके लिये पृष्ठपोषक नवाबने इन्हें प्रति शेर (दोहा) एक अशरफी इनाम दी। १५६८ ई॰को अकबर बादशाहके साथ लड़ाईमें खां जमांके मारे जाने पर यह सम्राट्के हाथों पड़ गये। बादशाह अकबरने इन्हें नौकर रखा और 'मालिक उश शुअरा' (कविराज) उपाधि प्रदान किया। भारतमें इन्हें ही पहले पहल यह उपाधि मिला था। यह अकबरके साथ गुजरात जीतने गये और वहीं १५७२ ई॰ ५ दिसम्बरको रोगग्रस्त हो चल बसे। अहमदाबादके सरकीज नामक स्थानमें इन्हें गाड़ा गया। इन्होंने एक दीवान् और 'किताब असरार', 'रशहात् उल हयात' और 'मिरत-उल कायनात' नामसे ३ मसनविया लिखी हैं।

गिञ्जियानी—अफगानस्थानके रहनेवाले 'कर्राई' पठानोंकी एक शाखा। ई॰ ५वीं शताब्दीके शेष भागमें तैमूरके समयको भी इनका कोई निर्दिष्ट वासस्थान न था। उलग बेगके शासनकालमें इन्होंने उनको बड़ा साहाय्य दिया, परन्तु उन्होंने उत-उपकार भूल विश्वासघातकता पूर्वक काबुलसे इनको निकाल बाहर किया। पीछेको यह पेशावर उपत्यकामें आ करके बस गये। आजकल काबुल और स्वात नदीकी मध्यवर्ती उर्वरा भूमिमें इनका निवास है।

गिञ्जिहल्ली—दाक्षिणात्यके धारवाड़ जिलाका एक गण्ड-ग्राम। यह हानगल नगरसे २ मील दक्षिण अवस्थित है। यहां वामवेश्वरका एक मन्दिर है। इसी मन्दिरके सभामें वामवमूर्तिके दोनों पार्श्व पर ११०३ ई॰की उत्कीर्ण २ शिलालिपियां लगी हैं।

गिञ्जी—मन्द्राज प्रान्तीय दक्षिण अर्काट जिलेके तिण्डि-वनम् तालुकाका एक पर्वतमय भूभाग और गिरिदुर्ग। यह अक्षा॰ १२° १५´ उ॰ और देशा॰ ७९° २५´ पू॰में मन्द्राज नगरसे दक्षिण पश्चिम अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५२४ है। पहाड़ी किला बहुत पुराना है। उसी पर बहुकालसे यह स्थान इतिहासप्रसिद्ध है। कुछ दिन पहले पर्वतके निम्नदेशमें अल्पसंख्यक गृह व्यतीत कोई भी समृद्धिशाली ग्राम न रहा। गवर्नमेण्टने यह नाम स्थिर रखनेको निकटवर्ती बगाया ग्रामको भी गिञ्जी नामसे अभिहित किया है। दुर्गको तीन ओर राजगिरि, कृष्णगिरि और चन्द्रायण दुर्ग नामक—३ पर्वत हैं। यह तीनों पहाड़ परस्पर सुदृढ़ प्राचीर द्वारा संलग्न हैं। सुतरां कोई शत्रु इस किलेको सहजमें ही दखल कर नहीं सकता। पर्वत और प्राचीरको ले करके दुर्गका परिधि ७ मीलसे अधिक पड़ता है। इसका कोई प्रकृत प्रमाण नहीं मिलता, कब किसने उसे बनाया था। कोई कहता कि चोल राजाओंके समयको यह सब प्रथम स्थापित हुआ। फिर किसीके मतमें १४४२ ई॰ पर तञ्जोर शासनकर्ता विजयरङ्गनायकके पुत्र उसे बनवाने लगे थे। किन्तु विजयनगरराजचक्रके १३८३ ई॰को प्रदत्त एक प्रशस्तिमें लिखा है कि दुर्गसे ही उस प्रदेशका नाम गिञ्जी पड़ा। अतएव कोई सन्देह नहीं कि इनके पहलेसे ही उसका निर्माणकार्य सम्पूर्ण हो गया था। इस किलेमें कल्याणमहल, जिमखाना, शस्यागार, हाट गाह, बारिक, मण्डप और एक ८ मञ्जिला गुम्बज है। इस गुम्बजके पहले ६ खण्डोंमें ८ फुट चौकोर घरके चारों किनारे बरामदा और प्रत्येकके खम्भे ऊपर चढ़नेकी

एक एक जीना लगा है। ७वीं मञ्जिलका बरामदा टूट गया है। ऊपरके तलका घर मवर्स कोटा है। ६ठें खण्डसे मट्टीका एक नल प्राचीरके नीचे होता हुआ ६०० गज तक जा करके एक तालावमें पहुंचा है। राजगिरि-में दुर्गसे बाहर स्वच्छसलिला तथा चिरवाही २ प्रस्र-वण हैं। उनका पानी सभी स्थानीय लोग पीते हैं। राज-गिरि और चन्द्रायण दुर्गके बीचमें दोनों पुष्करिणियों और दुर्गका पानी बहानेके लिये एक नहर खुदी है। राजगिरि पर एक बड़ी तोप और १५ फुट चतुरस्र तथा ५ इञ्च मोटा कोई ग्रेनाइट पत्थर पड़ा है। तोप ऐसे धातुकी बनी हुई है कि उसमें कभी भी मोर्चा नहीं लगता। इसके मोहरेकी जड़में ७५६० संख्या खोदित है। स्थानीय लोग बतलाते है कि यहां पहले राजप्रासाद रहा और राजा उसी पत्थर पर खड़े हो करके नहाते थे। पत्थरके पास एक वृहत् कूप भी है। प्रवाद है कि राजा कैदियोंको उसमें गिरा करके अनाहार मार डालते थे। किलेके अर्काटी दरवाजेमें पत्थर पर एक शिलालिपि खुदी हुई है।

बहुत दिन यह दुर्ग विजयनगरके अधीन रहा, पीछे-से मल्लिपुरके नायकोंने अधिकार किया। १५६४ ई०-को तालीकोटकी लड़ाईमें गिञ्जी किला मुसलमानोंके हाथ लगा, १६३८ ई०को विजयपुरके सेनानायकने शिवजीके पिता शाहजीकी सहायतासे इसको उनसे छीना था, किन्तु १६७७ ई०को शिवजीने अपने आप अधिकार कर लिया। उसके पीछे २१ वर्ष यह महा-राष्ट्र-नेताके कर्त्ताधीन रहा। दिल्लीके बादशाह औरङ्ग-जेबने महाराष्ट्र बल उच्छेद करनेके लिये जुल्फिकार खाँ-को भेजा था। ८ वत्सर क्रमान्वयसे युद्धके पीछे १६९८ ई०को मुगल सैन्यने गिञ्जी दुर्ग अधिकार किया। १७५० ई०को फरासीसी सैनिक मार्शल बूसीने इस पर धावा मारा था। ११ वर्ष फरासीसियोंके अधीन रहने पीछे १७६१ ई०को ५ सप्ताह तक घेरा डाल करके कप्तान ष्टीफेन स्मिथने इसे दखल किया। १७८० ई०को यह फिर हैदरअलीके हस्तगत हुआ। मुसलमानी हमलेके समयको इसके देसिंहराज (?) राजा तेजसिंह उनसे खूब लड़े थे। इनके उस वीरत्वका गीत लोग आज तक गाते हैं। राजाके मरने पर तदीय महिषी सहमृता हुईं। रणविजयी नवाब शाहादत उल्ला खाँने मृताकी वैसी स्वामिभक्तिसे सन्तुष्ट हो करके उनके स्मरणार्थ अर्काट-के निकट उन्हींके नाम पर 'रानीपत्त' नामक एक नगर स्थापन किया।

राजगिरिस्थ मन्दिरादिके कारुकार्यमय स्तम्भ फरा-सीसी पुंडीचेरी उठा करके ले गये हैं। वहां जाने पर आज भी इनका शिल्पनैपुण्य दृष्टिगोचर होता है।

गिञ्जीसे १ मील उत्तर पहाड़के 'तिरुनाथ कुण्ड' नामक स्थानमें पर्वतगात्र पर २४ जन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियां खुदी हैं। यहांसे १॥ मील उत्तर-पश्चिमको पर्वतो-परि रङ्गनाथस्वामी नामक कोई विष्णुमन्दिर है। लोग इन देवताकी बड़ी भक्ति करते हैं। यह मन्दिर पहाड़ तोड़ करके बनाया गया है। इससे उत्तरको किसी दूसरे भग्न मन्दिरके बहुतसे खोदित शिलाफलक हैं।

गिटकारी (हिं० स्त्री०) गिटकिरी। तान लेनेमें स्वरका कांपना। यह अच्छा समझा जाता है।

गिटकौरी (हिं० स्त्री०) कंकड़ी।

गिटपिट (हिं० स्त्री०) निरर्थक शब्द।

गिट्टक (हिं० स्त्री०) १ कंकर जो चिलमके नीचे छेदके ऊपर रखा जाता है। (पु०) २ एक कंपमें निकलनेवाला गिटकिरी लेनेका स्वर या तानका छोटा भाग।

गिट्टा (हिं० पु०) ककड़।

गिट्टी (हिं० पु०) १ पत्थरके छोटे टुकड़े, जो छत्त आदि पर फैलाकर कूटे जाते हैं। २ मट्टी बरतनके टूटे हुए खंड। ३ चिलमकी गिट्टक। ४ तागेकी रील।

गिठुआ (हिं० पु०) जुलाईका करघा।

गिठुरा (हिं० पु०) गेठुरा देखो।

गिड़गड़ाना (हिं० क्रि०) अधिक नम्रतासे प्रार्थना करना, बहुत अरजूसे विनती करना।

गिड़गिड़ाहट (हिं० स्त्री०) १ प्रार्थना, विनती। २ गिड़गिड़ानेका भाव।

गिड़राज (हिं० पु०) सूर्य।

गिड़वा—एक नदी। यह हिमालयके एक गह्वरसे निकल नेपाल और अवधके बीचसे कौड़ियाला नदीमें आ करके

गिरो है। उत्पत्ति स्थान पर जल अत्यन्त स्वच्छ रहनेसे इसको 'गोगापानी' कहते हैं। पहले यह एक स्रोतमात्र रही, किन्तु अब प्रकृत नदीका आकार धारण किया है। इसके गर्भमें खण्ड खण्ड पत्थर पड़े हैं। इसकी गभीरता ३१४ फुटसे अधिक नहीं, और प्रस्थमें प्राय ४०० गज होगी। परन्तु स्रोतको गति इतनी वेगवती है कि दो एक स्थानोंको छोड़ करके हाथी भी पार हो नहीं सकता। इसकी तीरभूमि शालवृक्षसे परिपूर्ण है, बीच बीच पहाड़ की घाटीसे छोटे छोटे स्रोते निकल पड़े हैं। इसके मध्य द्वीप जैसे वनमय चरभूमि है। इसी नदीमें सरयू और सारदाका जल मिलनेसे घर्घरा बनी है। कौड़ि-याला हिमालयके गोगापानी स्थानसे फूटती और थोड़ी दूर आगे चल करके दो मार्गोंमें बट जाती है। पश्चिम शाखाका कौड़ियाला और पूर्वशाखाका नाम गिड़वा है। ऊपरकी यह जोरसे बहती है। धनोरामें नावें चलती हैं। इस नदीकी राह नेपालसे अनाज, लकड़ी, अदरक, मिर्च और घी आता है। बहरायचमें भर्थापुरके नीचे गिड़वा कौड़ियालासे मिल जाती है।

गिड्डा (हिं० वि०) नाटा, ठेंगना।

गिद (सं० पु०) ग्रहपालकके एक देवताका नाम।

'[illegible] (ताण्ड्यब्रा० [illegible])

"[illegible]" (भाष्य)

गिद्दा (हिं० पु०) स्त्रियोंके गानेका एक तरहका गीत, लफटा।

गिद्ध (हिं० पु०) १ मांस खानेवाला एक तरहका पक्षी जो प्राय दो हाथ लम्बा होता है। यह बकरियों तथा मुरगियोंको उठा कर आकाशकी ओर ले भागता और किसी वृक्ष पर बैठ कर खाने लगता है। यह मृत जीवका भी मांस खाता है। इसका रंग मटमैला और पर बड़े बड़े होते हैं। किसी मनुष्यके शरीर पर सहसा अथवा मकान पर बैठना इसका अशुभ समझा जाता है। २ एक तरहका दीर्घ कालीया या पतंग। ३ छप्पय छन्दका ५२वां भेद।

गिद्धराज (हिं० पु०) जटायु।

गिद्धौर—बिहार प्रान्तीय मुङ्गेर जिलेके गिद्धौर राजस विभागका एक नगर। यह अक्षा० २४ ५१´उ० और देशा० ८६ १२´पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय १०८० है। पूर्वकालमें यह नगर खूब समृद्धिशाली और बहुजनाकीर्ण था, परन्तु अब क्रमश हीन हो रहा है। नगरके निकट किसी बड़े पुराने किलेका भग्ना-वशेष है दुर्गका प्राचीर और घर पत्थरके बड़े बड़े टुकड़ोंसे निर्मित हुआ है। इसमें किसी किस्मका दूसरा माल असबाब देख नहीं पड़ता। गढ़के मध्य प्रवेशके ४ पथ हैं। यथाक्रममें दक्षिण, पश्चिम और उत्तरका द्वार हस्ती, अश्व तथा उष्ट्र नामसे पुकारा जाता, केवल मात्र पूर्वद्वार महादेव दरवाजा कहलाता है कोई कोई कहता कि शेरशाहने यह किला बनाया था। परन्तु यह बात विशेष प्रामाणिक नहीं, दुर्ग बहुत ही प्राचीन है। सम्भवत सम्राट् हुमायूके साथ युद्ध कालको उन्होंने इसका केवल जीर्ण संस्कार कराया था।

वर्तमान गिद्धौर राजवंशके प्रतिष्ठाता वीरविक्रम सिंह चन्द्रवंशीय क्षत्रिय रहे। उनके पूर्व पुरुष बुंदेल खण्डके अन्तर्गत महोबा नामक विषयके अधिकारी थे। ई० ११वीं शताब्दीको वहांसे ताड़ित होने पर वह रीवा राज्यके अन्तर्गत बर्दी नगरमें जा करके रहे। ११६८ ई०को बर्दीराजके कनिष्ठ भ्राता वीरविक्रमसिंह वैद्यनाथ दर्शनकी कामनासे सपरिवार पहुंचे थे। कहते हैं, वैद्यनाथने उन्हें चारों पार्श्वका समुदाय भूभाग अधिकार करनेको स्वप्नमें आदेश दिया। यह इस राज्यके अधिकार पीछे प्रथम गिद्धौरके राजा कहलाये थे। इसी वंशके दशम राजा पूरणमल्लने वैद्यनाथ देवका मन्दिर बनवा दिया। मन्दिरमें भीतरी दरवाजेके ऊपरी भाग पर संस्कृत भाषासे आज भी उसकी प्रशस्ति खोदित है। वीरविक्रमसे चतुर्दश पुरुष अधस्तन दलनसिंहको बङ्गाल के उद्धृत शेरशाहको दबाने और दिल्ली सम्राटके पौत्र सुलेमानको साहाय्य पहुंचानेसे ११६८ ई०में बादशाह शाहजहांने फर्मानके द्वारा राजा उपाधि प्रदान किया। इस फर्मानमें शाहजहां और दारासिकोहको मोहर मौजूद है। जब बङ्गाल और बिहारका शासनभार अंगरेज गवर्मेण्टने अपने हाथमें लिया, गिद्धौरराज गोपाल सिंह (१८वां पुरुष) को विषय सम्पत्तिकी भी अधिकार किया। १८५५ ई०को सन्ताल विद्रोहके समय राजा

गोपालसिंहके पौत्र जयमङ्गल सिंहने अंगरेजोंको विशेष साहाय्य किया था। इससे बड़े लाटने सन्तुष्ट हो करके १८५६ ई०को उन्हें एक सनद और राजा उपाधि दिया। सिपाहियोंके बलवे पर उन्होंने फिर अंगरेजो गवर्नमेण्टको यथेष्ट साहाय्य किया, जिसके लिये १८५८ ई०को वृटिश गवर्नमेण्टने उन्हें यावज्जीवन महाराज और के० सी० एस० आई० (K. C. S. I.) उपाधि तथा उनके वंशधरोंको लाखाराजमें बड़ो जागोर दी। इनके पुत्र महाराज शिवप्रसाद थे। शिवप्रसादसिंहके पुत्र माननीय महाराज बहादुर सर रावणेश्वरप्रसादसिंह के० सी० आई० ई० गिद्धौरके वर्तमान राजा हैं।

गिद्धौरका भूपरिमाण २२३०२ वर्गमील है। इसमें १४ विषय हैं।

गिद्धौरगल—पेशावर प्रदेशके अन्तर्गत एक गिरिसङ्कट। यह अक्षा० ३३° ५६' उ० और देशा० ७२° १२' पू० पर आटकनगरसे ५ मील उत्तर-पश्चिममें अवस्थित है। यह पथ दश फुट चौड़ा है। कभी कभी इस रास्तेसे सेना भी जाती आती है।

गिनगिनाना (हिं० क्रि०) १ रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना। २ अधिक बल लगाते समय शरीरका काँपना।

गिनजा—युक्तप्रदेशका एक पहाड़। यह प्रयागसे ४० मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। इसका सर्वोच्च शिखर समुद्रपृष्ठसे २००० फुट ऊंचा है। पर्वतका निम्नदेश बहुत ही ढालू और जङ्गलसे भरा है। प्रायः आधी दूर ऊपर चढ़ने पर २०० फुट परिधिकी एक बावड़ी है। इसके आगे पथ अतिशय दुर्गम और कण्टकाकीर्ण है। पहाड़ पर दक्षिण दिक्‌की एक समतल स्थान है। यहां पर्वतने ऊपर छाया करके छतका आकार धारण किया है। यह पर्वतांश १०० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा है। इसी पर्वतके बीचो बीच प्राचीन उत्तर भारतीय गुप्ताक्षरोंकी खोदित एक शिलालिपि मिलती है। शिलाफलकके अक्षरोंमें लाल रंग भरा हुआ है। फिर अक्षरोंके दोनों पार्श्वों पर अनेक मनुष्य और जीव जन्तुवोंकी मूर्तियां खुदी हैं। शकराजोंके राजत्व समयकी उत्कीर्ण शिलालिपियोंमें जैसी भाषा देख पड़ती, इसके मुखपातकी भी वैसी ही लगती है।

यह फलक ५२ संवत्‌की ग्रीष्म ऋतुके चतुर्थ पक्षमें महाराज श्रीभीमसेन कर्तृक प्रदत्त हुआ। प्राचीन गुप्त अक्षर और शक भाषा देखनेसे इसको समधिक प्राचीन-जैसा समझते हैं।

गिनती (हिं० स्त्री०) १ गणना, किसी पदार्थकी संख्या निश्चित करना। २ संख्या। ३ हाजिरी। ४ एकसे सौ तककी अंकमाला।

गिनना (हिं० क्रि०) १ गणना करना। २ गणितकरना, हिसाब लगाना। ३ सम्मान करना, प्रतिष्ठा करना। ५ कदर करना।

गिनाना (हिं० क्रि०) गिननेका काम किसी दूसरेसे कराना।

गिनी (अं० स्त्री०) सुवर्णकी मुद्रा। इसका व्यवहार इंगलैंडमें सन १६६३में प्रारम्भ हुआ वहां और सन १८१३से इसका बनना बन्द हो गया। २१ शिलिंग या १५॥ रु० की एक गिनी मानी जाती थी। प्राचीन समयमें यह अफ्रीका महाद्वीपके गिनी नामक देशसे आये हुए स्वर्णसे बनाया जाता था इसलिये प्रस्तुत सिक्काका नाम गिनी पड़ा है।

गिनीग्रास (अं० स्त्री०) अफ्रीकाके गिनी नामक देशको एक प्रकारकी लम्बी घास। यह घास अब भारतवर्षमें बहुत होती है।

गिन्नी (हिं० स्त्री०) चक्कर, घिरनी।

गिन्दुक (सं० पु०) गेन्दुक पृषोदरादिवत् साधुः। वृक्षविशेष, एक पेड़।

गिब्बन (अं० पु०) सुमात्रा, जव आदि द्वीपोंके एक प्रकारका बंदर। इसे पूंछ तथा गलथैली नहीं होती। इसकी भुजा इतनी लम्बी होती है कि खड़े होने पर पृथ्वीको छू लेती है। इसका आकार प्रायः मनुष्य जैसा होता है।

गिमटी (हिं० स्त्री०) वेलबूटेसे युक्त एक प्रकारका मजबूत कपड़ा। यह सिर्फ किसी यज्ञादिमें बिछानेके काममें आता है।

गिय (हिं० पु०) गिव देखो।

गियासपुर—लक्ष्मणावतीके अन्तर्गत एक नगर। गौड़के मुसलमान राजाओंके समय इस नगरमें एक टकशाल था।

गियाह (हिं० पु०) एक प्रकारका घोडा।

गिरट (अ० पु०) १ तरहका रेशमी कपडा जो गोट लगानेके काममें आता है। २ एक प्रकारकी सूती मलमल जो बस्ती जिलेमें प्रस्तुत होती है।

गिर (सं० स्त्री०) गृ क्विप्। वाक्य।

"गोभिष्टरा वयं महेशमानि अयोर्भ्य।" (ऋक् ११८१।११)

गिर (हिं० पु०) १ पर्वत, पहाड। २ सन्यासियों के १० भेदों मेंसे एक भेद। ३ एक तरहका भैंसा जो काठिया वाड देशमें पाया जाता है।

गिर—बम्बई प्रदेशस्थ काठियावाड विभागके अन्तर्गत एक गिरिश्रेणी। यह दिउ द्वीपसे २० मील उत्तरपूर्वमें आरम्भ हो कर प्राय ४० मील तक फैली हुई है। इस वनमय पर्वतमें दस्युपति हनावालने भारतीय नौ सेना ध्यक्ष कप्तान ग्राण्टकी १८१२ ई०में अठाई मास तक बन्द किया था।

गिरई (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी मछली जो सौरोसे छोटी होती है।

गिरगिट (हिं० पु०) छिपकलीकी जातिका एक प्रकारका जन्तु। यह एक बित्तस्त लम्बा होता है और अपने शरीरका रङ्ग सूर्यकी ज्योतिसे अनेक प्रकारमें बदल लेता है। इसका चमडा स्पर्श करने पर बहुत ठण्डा मालूम पडता है। यह कीट पतङ्गको खा कर अपनी जीविका निर्वाह करता है। संस्कृतमें इसे कृकलास या सरट कहते हैं।

गिरगिटान (हिं० पु०) गिरगिट देखो।

गिरगिटी (हिं० स्त्री०) एक तरहका छोटा पेड जो उत्तर भारत, चीन और आस्ट्रेलियामें पाया जाता है। इसके पत्र गहरे रंग लिये छोटे तथा पतले होते हैं और ऊपर का अग्र अत्यन्त चमकीला होता है। ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतुमें इसमें श्वेत रंगके पुष्प लगते हैं। इस वृक्षकी लकडी नरम होती है। बागानमें शोभाके लिये यह लगाया जाता है। आष्ट्रेलियाके रहनेवाले चन्दनके बदले इसीकी काम काममें लाते हैं।

गिरगिरी (हिं० स्त्री०) सारंगीके आकारका एक तरहका लडकोंका खिलौना।

गिरजा (हिं० पु०) एक किस्मका पक्षी जो कीडे मकोडे खाकर रहता है। यह पंजाब तथा राजपूतानेके अतिरिक्त समस्त भारतवर्षमें होता है। यह मिजाजके सरोवरके निकट रहता और जैसे जैसे ऋतु बदलता जाता यह भी अपना स्थान परिवर्तन करता रहता है। यह उडनेमें बहुत तेज है और वृक्षों पर घोसला बनाकर रहता है। इसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है इसलिये मनुष्य इसका शिकार करते हैं।

गिरदा (फा० पु०) १ घेरा, चक्कर। २ तकिया, बालिश। ३ मिठाई बनानेकी हलवाईकी थाली। ४ दरबारके समय राजाओंके हुक्केके नीचे बिछाये जानेका एक तरह का गोलाकार कपडा। ५ ढाल परी। ६ ढोल वा तबलेका मेंडरा।

गिरदान (हिं० पु०) गिरगिट।

गिरदानक (फा० पु०)करघेकी लकडी जो उसे घुमानेके लिये लगी रहती है।

गिरदाना (फा० पु०) तूरके छिद्रमें एक हाथकी लम्बी चौपहल लकडी।

गिरदागीर (फा० स्त्री०) कच्चा लोहा एक करनेकी एक लम्बी अंकुसी।

गिरदावर (फा० पु०) गिर्दावर देखो।

गिरदावरी (फा० स्त्री०) १ गिरदावरका काम। २ गिरदावरका पद।

गिरधर (सं० पु०) १ पर्वत उठानेवाला मनुष्य। २ कृष्ण, वासुदेव।

गिरधरोत व्यास—राजपूतानाके मारवाड प्रदेशमें पुष्करणा ब्राह्मणोंकी एक शाखा। यह बाडे और झुका करके पगडी बांधते और प्रतिष्ठित समझे जाते हैं। कहते हैं, इनके पूर्व पुरुष गिरिधर राव अमरसिंहके पास नौकर थे। आगरेकी लडाईमें वह मारे गये। अग्निदाह न करके अशान्तिके कारण इनको यहां समाधिस्थ किया था। इसीसे उनका नाम गिरिधर और पडा। श्रावण शुक्ल तृतीया उनकी स्मृतिका दिवस है। उस दिन कोई भी व्यास नवीन वस्त्र नहीं पहनते। १६३८ ई०को उनका स्वर्गवास हुआ। गिरिधर राव कवि थे। इनका समाधिस्थान 'चोनोंका रो' कहलाता है।

गिरधारी (सं० पु०) गिरधर देखो।

गिरना (हिं० क्रि०) किसी पदार्थका ऊपरसे नीचे आधार के अभावसे आ जाना। २ किसी पदार्थको स्थिरता न रहना। ३ अवनति पर होना। ४ किसी नदीका जलाशयमें जा मिलना। ५ प्रतिष्ठा वा शक्तिकी कमी होना। ६ किसी पदार्थको लेनेके लिये टूट पड़ना। ७ जीर्ण या दुर्बल होना। ८ हठात् किसी पदार्थका आ जाना। ९ लड़ाईमें मारा जाना, खेत रहना। १० कबूतरका एक छतसे दूसरे छत पर जाना।

गिरनार—काठियावाड़ प्रान्तका पवित्र पर्वत। यह अक्षा० २१° ३०' उ० और देशा० ७०° ४२' पू०में हेलमट नदीके दक्षिण तट पर जूनागढ़ नगरसे १० मील पूर्व अवस्थित है। ऊंचाई कोई ३५०० फुट है। इसकी पांच चोटियां है—अम्बामाता, गोरखनाथ, अगाध शिखर, गुरु दत्तात्रेय और कालिका। अम्बामातासे अम्बा देवीका मन्दिर अवस्थित है। कालिकाको अघोरी और सुर्दाखोर तीर्थयात्रा करने जाते रहे है। दुर्ग और सुड़ामसाओंके राजप्रासादका कुछ अंश भी खड़ा है। गोमुख, हनुमान धार और कमण्डलुकुण्ड तीन प्रधान कुण्ड हैं। भैरवजय चटानका दृश्य अतीव विचित्र है। गिरनारसे थोड़ी दूर प्राचीन राजधानी वामनस्थली और नीचे वनिस्थान (वर्तमान विलख) है। इसका प्राचीन नाम उज्जयन्त वा गिरिनर' है। यह जैनोंका पवित्र तीर्थस्थान है। एक चटानमें (ई०से २५० वर्ष पूर्व) अशोककी कई लिपियां अङ्कित है। १५० ई०का दूसरा शिलाफलक पढ़नेसे ज्ञात होता है कि स्थानीय राजा रुद्रदामाने दाक्षिणात्यके नृपतिको किस प्रकार पराजित किया। ४५५ ई०की शिलालिपिमें सुदर्शनकुण्डके बांध टूटने और पुनः सेतुनिर्माणका उल्लेख है। ब्राह्मण नवदम्पती अम्बा माताकी बड़ी भक्ति करते हैं। जैन मन्दिर नेमिनाथ जानेकी राहमें ६ पर्व (विश्रामस्थान) हैं

गिरनार—जैनियोंका एक पवित्र तीर्थ, जो गुजरातमें जूनागढ़के निकट उक्त पर्वत पर है। इस पर्वतसे जैनियोंके बाईसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथ स्वामी मोक्ष गये हैं। इस पर्वतका दूसरा नाम ऊर्जयन्त भी हैं। इसकी ऊंचाई करीब ४॥ मील होगी। नीचेसे २॥ मीलकी ऊंचाई पर एक सोरठका महल और २७ मन्दिर हैं। पालहीमें उग्रसेनकी पुत्री और तीर्थङ्कर नेमिनाथकी पत्नी राजीमतीकी एक गुफा है, जहां पर कि उन्होंने तप किया था। इस गुफामें राजमतीकी एक चरणपादुका है। इस स्थानसे १ मील चढ़ने पर दो टोंकें मिलती हैं; जिन पर कि, नेमिनाथने तप किया था। यहां वैष्णवोंके मन्दिर भी है। हिन्दू लोग दत्तात्रेयो मानकर इस पर्वतको पूजते हैं। मुसलमान इसे आदमबाबाके नामसे पुकारते हैं। यहांसे १ मीलकी ऊंचाई पर और दो टोंकें हैं, इनमेंसे पहिली टोंक पर नेमिनाथ स्वामीने केवलज्ञानको प्राप्त किया था: और दूसरी टोंक पर वे अष्ट कर्मोंको नष्ट कर मोक्ष गये थे। यहां एक प्रतिमा और एक चरणपादुका अत्यन्त सुन्दर विराजमान है।

इस पर्वतसे नेमिनाथ, शाम्ब, प्रद्युम्न (श्रीकृष्णके पुत्र), आदि ७२ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं। इस पर्वतका प्रबन्ध वहांके गुसांई और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटीके हाथमें है।

गिरनार—गुजराती ब्राह्मण भेद। यह दो प्रकारके है—जूनागढ़ गिरनार और चोरवटा। गिरनार पर्वतस्थ गिरनार गढ़ ग्राम पर ही उनका यह नामकरण हुआ है। तीसरे अजग्य गिरनार भी होते हैं। इन तीनों शाखाओंमें भोजन पान होते भी आदान प्रदान नहीं चलता। गिरनार साम तथा शुक्ल यजुर्वेद मानते हैं।

गिरनारी (हिं० वि०) गिरनार पहाड़का रहनेवाला।

गिरफ्त (फा० स्त्री०) ग्रहणकी क्रिया या भाव, पकड़।

गिरफ्तार (फा० वि०) १ जो पकड़ा या कैद किया गया हो। २ ग्रस्त, ग्रसा हुआ।

गिरफ्तारी (फा० स्त्री०) गिरफ्तार होनेकी क्रिया या भाव।

गरबूटी (हिं० पु०) अंगूर-शेफा।

गिरमिट (हिं० पु०) बढ़ईका एक औजार, बड़ा बरमा।

गिरवर (हिं० पु०) श्रेष्ठ पर्वत, बड़ा पहाड़।

गिरवां—युक्त प्रदेशके बांदा जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २४° ५९' एवं २५° २८' उ० और देशा० ८०° १७' तथा ८०° ३४' पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल ३३४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ७७७०६ है। इसमें एक नगर और १७९ गांव बसते हैं। मालगुजारी कोई ११९०००

और शेष १८००० हैं। पश्चिममें केन नदी प्रवाहित है, भूमि उर्वरा है।

गिरवान (हि० पु०) देवता, गीर्वाण, देव, सुर।

गिरवाना (हि० क्रि०) दूसरे द्वारा गिरानेका काम कराना।

गिरवी (फा० वि०) बन्धक, रेहन।

गिरवीदार (फा० पु०) बन्धक लेनेवाला मनुष्य, महाजन।

गिरवीनामा (फा० पु०) बन्धकका नियम लिखा हुआ पत्र, रेहननामा।

गिरवीपत्र (फा०) गिरवीनामा देखो।

गिरह (फा० स्त्री०) १ ग्रन्थि, गांठ। २ वह गाँठ जहां दो चीजें आकर जुटी हों। ३ एक गजका सोलहवां भाग जो सवा दो इंचके समान होता है। ४ जयब, कीसा, खरीता। ५ कुश्तीका एक पेच। ६ कलैया, उलटी।

गिरहकट (फा० वि०) जेब या गाठका रुपया चुरानेवाला।

गिरहदार (फा० वि०) जिसमें ग्रन्थि हो, गांठवाला, गठीला।

गिरहबाज (फा० पु०) एक तरहका कबूतर, जो सरको नीचे पृथ्वी पर रखकर चारों ओर घूमता है।

गिरहर (हि० वि०) पतनो मुख, जो गिरनेवाला हो।

गिरही (हि० पु०) गृहिन्, गृहस्थ।

गिरां (फा० वि०) १ अधिक मूल्यवाला, महंगा। २ भारी। ३ अप्रिय।

गिरा (सं० स्त्री०) १ गिर् वा टाप्। वाक्य।

"नौ गिरां भवतां युधा। (भट्टविलास)

२ जिह्वा, जबान। ३ बोल, वचन। ४ सरस्वती देवी।

गिराना (हि० क्रि०) १ पतन करना। २ पृथ्वी पर डाल देना। ३ घटाना, ह्रास करना। ४ जलका ढालू ओर बहना। ५ शक्ति या प्रतिष्ठाको कमी कर देना। ६ किसी पदार्थको नियत स्थानसे हटा देना। ७ सहसा उपस्थित होना।

गिरानी (फा० स्त्री०) १ महंगापन, महंगी। २ अकाल। ३ अभाव, कमी। ४ किसी पदार्थसे पेटका भारीपन।

गिरापति (सं० पु०) ब्रह्मा।

गिरापितु (सं० पु०) सरस्वतीके पिता, ब्रह्मा।

गिराव (फा० पु०) तोपका गोला, जिसमें छोटी छोटी गोलियां और छर्रे भी होते हैं।

गिरास (फा० पु०) ग्रास देखो।

गिरासन—ग्रसन देखो।

गिरासी (हि० स्त्री०) एक प्राचीन जाति। इस जातिके मनुष्य बड़े डकैत होते थे, इनका वासस्थान गुजरात में रहा।

गिराह (अनु० पु०) जलजन्तु ग्राह।

गिरि (सं० पु०) गॄ इ किच्। १ पर्वत, पहाड़।

"गिरेरिव शाश्वतेमुन्नतम्। (रघु ११४०१३)

गिरि चञ्चलम्। (माघ)

२ तान्त्रिक सन्यासी विशेष।

"वासश्च वाहुनीं घोर मुक्तकेशी दिगम्बर।

सर्वत्र समभावेन भावयेद् यो नरोत्तम॥

इष्टदेवी स्त्रियो जानो स गिरि परिकीर्तितः॥" (तन्त्र)

अर्थात् जो सवदा लम्ब वाहु, वीराचारी, मुक्तकेश और नग्न रहते तथा सर्वत्र समभावसे अवलोकन करते हैं एवं अपनी इष्टदेवी समझ कर समस्त स्त्रियोंके ऊपर अनुराग प्रकाश करते वे ही गिरि कहलाते हैं। ३ परिव्राजकोंकी एक उपाधि। शङ्कराचार्यके प्रधान शिष्य आनन्द इस उपाधिके अधिकारी रहे। ४ नेत्ररोगविशेष, आंखकी एक बीमारी। ५ गेन्दुक छोटे छोटे लड़कोंके खेलनेका लकड़ीका गेन्द। ६ मेघ।

"गिरयोऽश्च पयो वर्षम्।" (भाग ६।११।११)

"गिरयो मेघा" (स्वामी)

७ पारेका एक दोष जिसका शोधन यदि न किया जाय तो खानेवालेका शरीर जड़ हो जाता है।

"मल विष वह्निगिरो च चापल नैसर्गिक दोषमुशन्ति पारदे।"

(भावप्रकाश)

८ दशनामी सम्प्रदायके अन्तर्गत एक प्रकारके सन्यासी। दशनामी देखो। मण्डनमिश्रके शिष्य 'गिरि' से इस सम्प्रदायका नामकरण हुआ है। उनमें कुछ लोग मठधारी महन्त हैं जो उस सम्प्रदायके प्रधान गिने जाते हैं। वर्तमान समय इस सम्प्रदायके बहुत मनुष्य वैष्णव धर्मावलम्बी हो गये हैं जो गिरिवैष्णवसे ख्यात हैं। उत्कलमें इस तरहके गिरि वैष्णव देखे जाते हैं।

ये गृहस्थ तथा शिष्यसे दान ग्रहण कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। यशोर जिलेमें ये योगी वैरागसे प्रसिद्ध हैं। ये विवाह नहीं करते। (त्रि०) ८ पूज्य, श्रेष्ठ।

(स्त्री०) गृह भावे ई क्तिन्। १० निगरण, भक्षण। खाना। ११ वालमूषिका, चुहिया।

गिरिक (सं० पु०) गिरौ कैलासे कायति कै-क। १ शिव, महादेव।

"गिरिको हिम...धौ हव: जीव: पुरुषस्य एव स..." (भार० १३।१९८ अ०)

(त्रि०) गिरौ भव: गिरि-कन्। २ पर्वतजात, वह जो पर्वतसे उत्पन्न हो।

गिरिकच्छप (सं० पु०) गिरौ पर्वतस्थदरीषु कच्छप:। कच्छपविशेष, एक प्रकारका जलचर कछुआ। इस तरहका कच्छप सदा पर्वतके गह्वरमें रहता है। इस कच्छपको गृहमें रखनेसे पिशाच प्रभृति अपदेवताका उत्पात निवारण होता है।

'...तथैव गिरिकच्छप:।
...विडालय छाग. ...
येषामेतानि तिष्ठन्ति गृहे च गृहमेधिनाम्।
तान्...राणि विशन्ति...: भूटाकर्षे: ॥' (भारत अनु० १२१ अ०)

गिरिकण्टक (सं० पु०) गिरौ कण्टक इव तद्भेदकत्वात्। वज्र, विजली।

गिरिकदम्ब (सं० पु०) गिरे: समुत्पन्न: कदम्ब मध्यलो०। नीप, धाराकदम्ब, कदम।

गिरिकदम्बक (सं० पु०) गिरिकदम्ब स्वार्थे कन्। नीप, धाराकदम्ब, कदम।

"...गिरिकदम्बकम्।" (सुश्रुत १२ अ०)

गिरिकदली (सं० स्त्री०) गिरिजाता कदली मध्यलो०। पार्वतीय कदली, पहाड़ी केला। इसका पर्याय—गिरिरम्भा, पर्वतमोच, आरण्यकदली, बहुवीज, वनरम्भा, गिरिजा और गजवल्लभा है। इसका गुण—शीतल, मधुरस, वल और वीर्य्यवृद्धिकर; तृष्णा, पित्त, दाह और शोषनाशक है।

गिरिकन्दर (सं० पु०) गिरे: कन्दर:, ६-तत्। पर्वतगह्वर, पहाड़की कन्दरा।

गिरिकर्णा (सं० स्त्री०) गिरिकर्ण-टाप्। अपराजिता लता।

गिरिकर्णिका (सं० स्त्री०) गिरि: कर्ण इव यस्या: बहुव्री०। गिरिकर्ण-रूप टाप्, अत इत्वं च। १ पृथ्वी। गिरेर्वालमूषिकाया: कर्ण इव कर्णोऽस्त्यस्या: गिरिकर्ण-ठन्-टाप्। २ श्वेतकिणिही वृक्ष, लटजीरा ३ अपराजिता लता। ४ श्वेतकटभी, छोटा वनजात। ५ आरग्वध, अमलतास।

गिरिकर्णी (सं० स्त्री०) गिरेर्वालमूषिकाया: कर्ण इव कर्ण: पत्रमस्या बहुव्री०। गिरिकर्ण-ङीप्। १ अपराजिता लता।

"विफला गिरिकर्णी च ...।" (भावप्रकाश)

२ यवास, जवासा। (...)

गिरिका (सं० स्त्री०) गिरि स्वार्थे कन्-टाप्। १ वालमूषिका, चुहिया। २ पुरुवंशीय वसु राजाकी स्त्री। महाभारतमें इसकी कथा इस प्रकार है—पुरुवंशमें वसुनामके एक प्रवल पराक्रमशाली राजा रहे। इनका दूसरा नाम उपरिचर था। महाराज वसुने समस्त शत्रुओंको पराजित करनेके बाद कठोर तपस्या आरम्भ की देवतागणने इनकी कठोर तपस्यासे भयभीत होकर तपस्या निवृत्त करनेको उनसे प्रार्थना की, एवं उसी समय देवराज इन्द्रने नरराज वसुको एक आकाशगामी रथ प्रदान किया। महाराज वसु उस रथ पर चढ़कर आकाशको आने जाने लगे। उनकी राजधानीके निकट शुक्तिमती नामकी एक नदी प्रवाहित थी। कोलाहल नामके एक सचेतन पहाड़ने कामान्ध हो शुक्तिमती पर आक्रमण किया। महाराजने उस पर्वतका इस तरह अन्याय व्यवहार देखकर उसे पदाघात किया। राजाके पदाघातसे वह दुष्ट पर्वत विदीर्ण हो गया और उस प्रहारमार्गसे वेगवती शुक्तिमती नदी कल कल शब्द करती हुई वह निकली। समयानुसार नदीके गर्भसे कोलाहलकी एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुए। उस कन्याका नाम गिरिका पड़ा। महाराज वसु कन्याको रूप-लावण्य देख मुग्ध हो गये और उससे विवाह कर लिया। यह गिरिका महाराजकी अतिशय प्रियतमा रही।

गिरिकाण (सं० पु०) गिरिणा अक्षिरोगविशेषेण काण: एकनयनहीन: ३-तत्पु०। गिरिनामक चक्षुरोगसे जिसकी एक आँख नष्ट हो गई हो।

गिरिकानन (सं० पु०) पहाड़ी जङ्गल।

गिरिकूट (सं॰ पु॰) पहाड़की शिखर, चोटी।

गिरिकोटजफल (सं॰ क्लो॰) इन्द्रयव।

गिरिचित् (सं॰ त्रि॰) गिरिणा चियति अवतिष्ठते चि क्विप् तुगागमश्च, अलुक्समास यद्वा गिरौ गिरिवदुन्नतप्रदेशे चियति आतिष्ठते गिरि चि क्विप्। १ जो वाक्यमें अवस्थित है विष्णु। २ जो पर्वतके जैसे ऊंचे स्थान पर वास करते हों।

"प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।" (ऋक् १। १५४।३)
"गिरिर्वाच गिरिवाचि गिरिवदुन्नतप्रदेशे वा तिष्ठते।" (सायन)

गिरिक्षिप (सं॰ त्रि॰) गिरिं क्षिपति गिरि क्षिप क। १ जिसको पर्वत उठानेकी शक्ति हो। २ श्वफल्क राजाके पुत्र और अक्रूरके भाई। (हरिवंश)

गिरिगङ्गा (सं॰ स्त्री॰) नदीविशेष, एक नदी जो पहाड़से निकलती है।

गिरिगुड (सं॰ पु॰) गिरौ गुड इव। कन्दुक, गेन्दुक, गेन्द।

गिरिगैरिकधातु (सं॰ पु॰) गिरिस्थित गैरिकधातु, मध्यपदलो॰। पर्वतस्थित गैरिक धातु। एक तरहकी लाल खड़ी।

"पहाड़मेंऽधश्चार गिरिगैरिकधातुवत्।" भारत)

गिरिगोचर (सं॰ क्लो॰) श्वेतमर्कट, उजला बन्दर।

गिरिचर (सं॰ त्रि॰) गिरौ चरति चर ट। १ पर्वतचारी, जो पहाड़ पर विचरण करता है।

गिरिचर इव नाग प्राक्कार बिभर्ति" (शकुन्तला)

(पु॰) २ चोर। ३ चोरगणोंके अधिपति रुद्रदेव।

'नम वञ्चते गिरिचराय। (वाजसनेय॰ १६।२१)

गिरिचारिन् (सं॰ त्रि॰) गिरौ चरति अविदित भ्रमति गिरिचर णिनि। पर्वतचारी, पर्वत पर भ्रमण करनेवाला।

गिरिज (सं॰ क्लो॰) गिरौ जायते गिरि जन ड। १ शिलाजतु, शिलाजीत। २ लौह, लोहा। ३ अभ्र, अबरक। ४ गैरिक, गेरू। (पु॰) ५ पार्वतीय मधुकवृक्ष, एक प्रकारका पहाड़ी महुआ। इसका पर्याय गौरशाक, और स्वल्पपत्रक है। ६ काञ्चनारवृक्ष। (त्रि॰) गिरि वाचि जायते गिरि-जन ड अलुक्समा॰। ७ जो वाक्यसे उत्पन्न हो, वाक्यजात। ८ पर्वतजात, पहाड़से उत्पन्न होनेवाला।

गिरिजधातु (सं॰ पु॰) गैरिक, गेरू।

गिरिजा (सं॰ स्त्री॰) गिरौ जायते गिरि जन ड टाप्। १ पार्वती, हिमालय पर्वतकी कन्या, दुर्गा।

"यत्र यत्र च गिरिजा मदु नाममपरानतम्।" (काशीखण्ड ६६।७०)

२ गङ्गा। ३ चकोतरा। ४ मातुलुङ्गवृक्ष, बिजौरा। ५ श्वेतबुह्ना। ६ त्रायमाण लता। ७ मल्लिका, चमेली। ८ गिरिकदली, पहाड़ी केला।

गिरिजाकुमार (सं॰ पु॰) १ कार्त्तिकेय। २ शङ्कराचार्यके एक शिष्य।

गिरिजातनय (सं॰ पु॰) गिरिजाया, पार्वत्या तनय, ६ तत्। पार्वतीनन्दन, कार्त्तिकेय।

गिरिजातेज (सं॰ क्लो॰) अभ्रधातु, अबरक।

गिरिजापति (सं॰ पु॰) गिरिजाया पति, ६ तत्। पार्वतीपति शिव।

गिरिजामल (सं॰ क्लो॰) गिरिजेषु अमल, ७ तत्, यद्वा गिरिजाया मल बीजरूप, ६-तत्। अभ्रक, अबरक।

अबरक देखो।

गिरिजाबीज (सं॰ क्लो॰) १ गन्धक। २ अभ्रक, अबरक।

गिरिजाल (सं॰ क्लो॰) गिरिर्जाल, ६ तत्। गिरिसमूह, पर्वतकी पंक्ति।

'गिरिजालावृत्तां [illegible] (रामा॰ ४४३।११)

गिरिजाश्म (सं॰ क्लो॰) शिलाजतु, शिलाजीत।

गिरिज्वर (सं॰ पु॰) गिरिं ज्वरयति गिरिज्वर णिच् अच्। वज्र।

गिरिणख (सं॰ पु॰) गिरेर्णख खण्ड, ६ तत्। पर्वतका एक अंश।

गिरिणदी (सं॰ स्त्री॰) गिरिसम्भूता नदी, मध्यपदलो॰। पार्वतीय नदी, पहाड़से निकली हुई नदी।

गिरिणद्ध (सं॰ त्रि॰) गिरौनद्ध आवद्ध, ७-तत्॰। पर्वतसे आवद्ध हो, जो पहाड़से छिपा हो।

गिरिणितम्ब (सं॰ पु॰) गिरेर्णितम्ब ६ तत्। पर्वतके पार्श्व देश।

गिरित (सं॰ त्रि॰) गिल क्त। भक्षित, खाया हुआ।

गिरित्र (सं॰ पु॰) गिरौ कैलासे स्थित त्रायते गिरि त्रै-क। १ रुद्र, शिव।

"शिवा गिरित्र तां कुरु मा हि सी पुरुष जगत्।" (वाजसनेय॰ १३।३)
गिरौ कैलासे स्थितो भवानि [illegible] त्रायते इति गिरित्र।" (महीधर)

२ समुद्र, जब इन्द्रने पर्वतोंके पर काटे गये थे तब

मैनाक पर्वत समुद्रमें जा छिपा था, इसोसे समुद्रका नाम गिरित्र पड़ा।

गिरिदुर्ग (सं० क्लो०) गिरौ दुर्ग, ६-तत् यद्वा 'गिरिरेव दुर्ग'। पहाड़ पर बना हुआ किला। पर्वतके ऊपर और मध्य हो कर प्रवाहित नदी या प्रस्रवणादि युक्त स्थान पर यह दुर्ग निर्माण करना चाहिये, और ऊपर जानेके लिये एक क्षुद्र रास्ता भी रहे। दुर्गस्थानमें भांति भांतिके शस्यादिसे पूर्ण खेत और उद्यान प्रभृति भी प्रस्तुत करना उचित है। सर्व प्रकारके दुर्गसे गिरिदुर्ग ही प्रशस्त माना गया है। (मन ७।७० कुल्लूक)

गिरिद्वार (सं० क्लो०) गिरे द्वार ६-तत्। पर्वत हो कर जानेका रास्ता।

गिरिधर (सं० पु०) १ विष्णु। २ एक वेदान्तिक। इन्होंने संस्कृत भाषामें ब्रह्मसूत्राणुभाष्यविवरण और शुद्धाद्वैतमार्त्तण्डको रचना को है। ३ एक संस्कृत वास्तुशास्त्र-रचयिता। ४ विभक्त्यर्थनिर्णय नामक संस्कृत व्याकरण-प्रणेता, इनके पिताका नाम वागीश रहा। ५ एक वैष्णव कवि। इन्होंने १६७८ शकको आषाढ़ मासमें गीतगोविन्दका पद्यानुवाद वंगला भाषामें रचा था। जो अत्यन्त सरल और मधुर जान पड़ता था।

गिरिधर—हिन्दी भाषाके एक कवि। उनकी कविता इस प्रकार है—

"लोचन हम रहे हरिसंग रजनी जागत।
कमल प्रफुल्ल छीन भये डगमगात ढहे दूर दूर देखत लाज लागत॥
रति रस बस कीनी चसकी चाखे हंस हंस कानन कोने लागत।
जोवन गिरिधरके प्रभु समुद्र स्वच्छ झकोरन काजत॥"

गिरिधर कविराय—हिन्दी भाषाके एक कवि। १७१३ ई० को बाराबंकी जिलेके हौलपुर ग्राममें इनका जन्म हुआ। इन्होंने नीतिविषयक अच्छी कविता लिखी है। गिरिधर कविरायकी कुण्डलियां लोकप्रसिद्ध है।

गिरिधर गोस्वामी—ऊर्ध्वपुण्ड्रमाहात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथकार।

गिरिधरदास—१ रामकथामृत नामक संस्कृत ग्रन्थकार। २ दिल्लीनिवासी एक भारतवर्षीय कवि। इन्होंने १७२२ ई०को हिन्दी भाषामें रामायणकी रचना की है। इनकी भाषा सरल, मधुर और ओजोगुणविशिष्ट है। इन्होंने तुलसीदास एवं अपने ग्रन्थके प्रमाण ले कर हिन्दी भाषामें एक व्याकरण प्रणयन किया है।

गिरिधरण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

गिरिधरमिश्र—दृग्गोलवर्णन नामक संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार।

गिरिधरलाल—हिन्दी भाषाके कोई कवि। उनकी कविता नीचे लिखी जैसी होती थी—

"यहै बड़ नम ला[illegible] [illegible] [illegible] कारि कारि [illegible] कीके [illegible]।
अति रस चातुर भयी [illegible] नियकिवस [illegible] दृग [illegible] [illegible] [illegible]।
कीनों देखियत [illegible] [illegible] पाश्यत मुख [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मिटि [illegible]
[illegible] गिरिधर पिय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भरे [illegible]"

गिरिधर सिंह—एक राजपूत सामन्त। ये सम्राट मुहम्मद शाहके राजत्व समयमें मालवदेशके शासनकर्त्ता थे। १७२८ ई०को पेशवा बाजोरावके साथ लड़ाईमें इनकी मृत्यु हुई। महाराष्ट्र इतिहासमें ये गिरिधर बहादुर नामसे प्रसिद्ध है

गिरिधातु (सं० पु०) गिरेर्धातुः, ६ तत्। उपधातुविशेष, गैरिक, गेरूमट्टी।

गिरिधारण (सं० पु०) श्रीकृष्ण।

गिरिधारी—हिन्दी भाषाके कोई कवि १८४७ ई०को बैजवाड़ेके सातनपुर-ग्राममें उनका जन्म हुआ। यह जातिके ब्राह्मण थे।

गिरधारी भाट—हिन्दी भाषाके एक कवि। वह झांसी जिलाके मऊ-रानीपुरामें रहते थे १८८३ ई०को यह विद्यमान थे।

गिरिधि(डी)—छोटा नागपुरके हजारीबाग जिलान्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २३° ४४′ तथा २४° ४८′ उ० और देशा० ८५° ३८′ एवं ८६° ३४′ पू०के मध्य अवस्थित है। ईष्ट-इण्डियन रेलवे कम्पनीको मधुपुर शाखा गिरिधि तक फैली है। यहां उक्त कम्पनीका एक ष्टेसन है। गिरडीके निकट करहरवाड़ी नामक स्थानमें कोयलेकी एक खान है। इस उपविभागका भूमिपरिमाण २००२ वर्गमील है। लोकसंख्या प्रायः ४१७७८७ है। यहां २४०८ ग्राम और प्रायः मनुष्योंके गृह है। उस उपविभागमें एक दीवानी और दो फौजदारी अदालत एवं

उसके अन्तवर्त्ती पचम्बा, गवान, करन्दी, कोदर्म और दुमुर्ही स्थानोंमें एक एक थाना है। यहांकी जलवायु उत्तम होनेके कारण बहुत मनुष्य स्वास्थ्यकी उन्नतिके लिये यहां आकर रहते हैं। यह उपविभाग गिरिडी नामसे भी मशहूर है।

गिरिध्वज (स० पु०) गिरिनाशक ध्वज वज्ररूप यस्य बहुव्री०। इन्द्र।

गिरिनख (स० पु०) गिरिनख देखो।

गिरिनगर (स० क्ली०) गिरनार पर्वत पर बसा हुआ एक नगर। यह स्थान जैनियोंका पवित्र तीर्थ माना गया है।

"गिरिनगरमस्य ..." (बृहत्० १४ अ०)

गिरिनदी (स० स्त्री०) गिरिनदी देखो।

गिरिनद्यादि (स० पु०) गिरिनदी आदिर्यस्य गणस्य बहुव्री०। गिरिनदी, गिरिनख, गिरिनद, गिरिनितम्ब, चक्रनदी, चक्रनितम्ब, तूर्यमान प्रभृति शब्दको गिरिनद्यादिगण कहते हैं।

गिरिनन्दिनी (स० स्त्री०) गिरेर्हिमालयस्य नन्दिनी। १ पार्वती, दुर्गा। २ गङ्गा। ३ नदी।

"...गिरिनन्दिनी..." (रत्नाकर)

गिरिनाथ (स० पु०) महादेव, शिव।

गिरिनितम्ब (स० पु०) गिरिनितम्ब देखो।

गिरिनिम्नगा (स० स्त्री०) गिरिसम्भवा निम्नगा। पार्वतीय नदी, पहाड़से निकली हुई नदी।

गिरिनिम्ब (स० पु०) गिरिसम्भूत निम्ब। १ महानिम्ब वृक्ष बकायनका गाछ। २ कैटर्यनिम्ब।

गिरिपत्र (स० पु०) महानिम्ब, बकायन।

गिरिपादिका (स० स्त्री०) कपिकच्छु।

गिरिपीलु (स० पु०) गिरिसम्भूत पीलु। पुरुषकवृक्ष, फाल्सा

गिरिपुर (स० क्ली०) आनर्त्त देशान्तर्गत एक नगर।

चोलम देखो।

गिरिपुष्पक (स० क्ली०) गिरिजात पुष्पक। शैलज, पथरफोड़ नामका एक पौधा।

गिरिपृष्ठ (स० क्ली०) गिरेः पृष्ठ, ६-तत्। पर्वतके ऊपरका भाग।

गिरिप्रस्थ (स० पु०) गिरेः प्रस्थ, ६ तत्। पर्वतके ऊपरिस्थ समतल स्थान।

गिरिप्रपात (स० पु०) गिरेः प्रपात ६ तत्। पर्वतके भृगु, उच्चस्थान।

गिरिप्रिया (स० स्त्री०) गिरिः प्रियोऽस्याः, बहुव्री०। चमरीगाय, सुरागाय।

गिरिबान्धव (स० पु०) गिरिर्बान्धव यस्य, बहुव्री०। शिव, महादेव।

गिरिवृध (स० त्रि०) पहाड़के ऊपर रहनेवाला। पहाड़ पर जमा हुआ।

गिरिवृधा (स० स्त्री०) गिरिवृध इव यस्याः बहुव्री०। तत टाप्। जल, पानी।

"गिरिवृधा ..." (शतपथब्राह्मण ...)

गिरिभट्ट—संस्कारकौमुदी नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गिरिभिद् (स० पु०) गिरिं भिनत्ति भिद् क्विप्। १ वृक्षविशेष, पाषाणभेदक। २ इन्द्र। (त्रि०) ३ पर्वतको विदीर्ण करनेवाला। (काव्या० श्री० ...)

गिरिभू (स० स्त्री०) गिरौ भवति भू क्विप्। १ पर्वतसे उत्पन्न क्षुद्र पाषाणभेदक। २ पार्वती। ३ गङ्गा। गिरेः भूः, ६ तत्। ४ पर्वतभूमि, पहाड़ी जमीन।

(कार्यालयगी ...)

(त्रि०) ५ पर्वतोत्पन्न, जो पर्वतसे उत्पन्न हो।

गिरिभेद (स० पु०) गिरिं भिनत्ति गिरि भिद् अण्। पाषाणभेदकवृक्ष, हिमसागर।

गिरिमनोहर (स० पु०) आरग्वधवृक्ष, अमलतास।

गिरिमल्लिका (स० स्त्री०) गिरिजाता मल्लिकेव मध्यपदलो०। कुटजवृक्ष, कोरैया।

गिरिमान (स० त्रि०) गिरेरिव मान परिमाण यस्य, बहुव्री०। १ जिसका परिमाण पर्वतके सदृश हो। (पु०) २ हस्ती, गज।

गिरिमाल (स० पु०) गिरौ माल सम्बन्धी यस्य बहुव्री०। बाधकवृक्ष।

गिरिमालपञ्चक (स० क्ली०) आरग्वधादि पाचन।

गिरिमृत् (स० स्त्री०) गिरेर्मृत्, ६-तत्। १ गैरिक, गेरूमट्टी। २ पार्वतीय मृत्तिका, पहाड़ पर की मट्टी।

गिरिमृद्भव (स० क्ली०) गेरूमट्टी।

गिरिमेद (स० क्ली०) गिरेर्मेद इव सारोऽस्य बहुव्री०। विटखदिर, बबूलवृक्ष।

गिरियक (सं॰ पु॰) गिरिं याति गिरि-या क ततः संज्ञार्थे कन्। गैरूक, एक प्रकारकी जड़।

गिरिया—बङ्गालके मुर्शिदाबाद जिलेमें जङ्गीपुर सब डिविजनका रणक्षेत्र। यह अक्षा॰ २४° ३०´ उ॰ और देशा॰ ८८° ६´ पू॰में सूतीसे दक्षिण अवस्थित है। १७४० ई॰को अलीवर्दी खाँ तथा नवाब सरफराज खाँ और १७६३ ई॰को नवाब मीर कासिम और ईष्ट इण्डिया कम्पनीसे वहां बड़ी लड़ाई हुई।

गिरियाक (सं॰ पु॰) १ गिरियक देखो।

२ पटना जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा॰ २५° २´ उ॰ और देशा॰ ८५° ३२´ पू॰में पञ्चान-नदीके उपकूल पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः २४३ है। इस नदीके पूर्व तीर ग्रामके निकट एक पर्वतके उत्तर पूर्वमें बहुतसी प्राचीन कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष देखे जाते हैं। यहां १२ फुट प्रशस्त एक प्रस्तरमय रास्ता आज तक भी वर्त्तमान है जिस रास्तेसे गाड़ी घोड़े आदि आसानीसे आ जा सकते हैं। इस क्षुद्र पर्वतके पश्चिम भाग पर प्रस्तर निर्मित बहुतसे स्तम्भ और मन्दिरके भग्नावशेष दृष्टिगोचर होते हैं। पर्वतके पूर्व भागमें ४५ फुट चतुरस्र एक वेदी है जो "जरासन्ध चबूतर" नामसे विख्यात है। इस वेदीके ऊपर ५५ फुट ऊंचाईका एक इष्टकनिर्मित स्तम्भ है जिसकी परिधि ६८ फुट है। बहुतोंका कहना है कि प्राचीन समयमें इस स्थान पर जरासन्धका प्रमोदगृह रहा। प्रवाद है कि भगवान् श्रीकृष्ण जरासन्धसे लड़नेके लिये इसी स्थान पर नदी पार हुए थे, इसी कारण आजकल भी बहुत मनुष्य कार्त्तिक मासमें इस नदीमें स्नान करने आते हैं। उक्त पञ्चान् नदीके दूसरे पारमें गिरियाक पर्वत है। इस स्थान पर जरासन्धकृत बहुतसी कीर्त्तियोंके ध्वंसावशेष देखे जाते हैं।

गिरिरम्भा (सं॰ स्त्री॰) गिरौ समुत्पन्ना रम्भा मध्यपदलो॰। गिरिकदली, पहाड़ी केला।

गिरिराज (सं॰ पु॰) गिरिषु राजते राज-क्विप् ७-तत्। १ पर्वतश्रेष्ठ ऊंचा पहाड़। २ हिमालय।

गिरिराज—युक्त प्रदेशके मथुरा जिलेमें गोवर्धननगरका निकटस्थ पर्वत। यह अक्षा॰ २७° २८´ तथा २७° ३१´ उ॰ और देशा॰ ७७° २६´ तथा ७७° २८´ पू॰के मध्य पड़ता है। इसका संस्कृत नाम अन्नकूट है।

गिरिवर्तिका (सं॰ स्त्री॰) गिरिसमुत्पन्ना वर्तिका मध्यपदलो॰। पार्वतीय पक्षिविशेष।

गिरिवासी (सं॰ पु॰) गिरिं वासयति सुरभी करोति गिरि-वासि-णिनि। १ हस्तिकन्द वृक्ष २ पर्वतवासी।

गिरिव्रज (सं॰ क्ली॰) गिरीणां पञ्चानां व्रजो यत्र, बहुव्री॰। १ मगध देशान्तर्गत एक प्राचीन नगर। कुशात्मज वसुने यह नगर स्थापन किये रहे। यह नगर गङ्गा तथा शोण नदीके सङ्गमस्थल पर अवस्थित था। जरासन्धके समय यह मगधकी राजधानी थी। यह चारो ओर वैभार, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नामक पर्वतसे घिरे रहनेके कारण शत्रुओंका वहां जाना असम्भव था।

(भारत सभा २० अ॰) राजगृह शब्दमें इसका विस्तृत विवरण देखो।

२ केकयराज अश्वपतिकी राजधानी। केकय देखो।

गिरिश (सं॰ पु॰) गिरौ शेते गिरि-शी-ड, यद्वा गिरिरस्त्यस्य वस तत्वेन गिरि अस्त्यर्थे श। (लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः। पा ५।२।१००) अथवा गिरिं तत्सदृशं कर्माशयं श्यति तनू करोति गिरि शो-ड। शिव।

गिरिशचन्द्र घोष—कलकत्ता नगरके बागबाजारमें वसुपाड़ापल्लीस्थ सम्भ्रान्त कायस्थ कुलोद्भव स्वर्गीय नीलकमल घोषके संझले पुत्र। सुप्रसिद्ध नाट्याचार्य तथा एक महाकवि।

१८४४ ई॰ (फाल्गुन शुक्लाष्टमी सोमवार)को इनका जन्म हुआ। पूर्ववर्ती कई एक कन्याओंके पीछे पुत्र होनेसे गिरिशचन्द्रका अत्यन्त आदर था। स्थानीय पाठशालामें प्राथमिक शिक्षा पूरी करके यह ७वर्षकी अवस्था पर गौरमोहन आढ्यकी ओरिएण्टल सेमिनारीमें भर्ती हुए वहां बङ्गला विभागमें थोड़े दिनमें ही पारदर्शिता लाभ करके इन्होंने अंगरेजी विभागमें योग दिया और शीघ्रही शिक्षकोंके प्रियपात्र बन गये। कुछ दिनमें ही उनके पिता और माता दोनोंका मृत्यु हुआ। उस समय इनका वयस १४ वर्ष मात्र था। संसारमें अन्य कोई पुरुष अभिभावक जैसा न रहनेसे १७ वर्षकी उम्रमें ही प्रवेशिका श्रेणी पर्यन्त पाठ करके उन्हें विद्यालयका संस्रव छोड़ना पड़ा। इसी बीच १६ वर्षकी अवस्थामें उनका विवाह हो चुका था। परन्तु यह लिखने पढ़नेमें लगे

रहे। अपने 'मत जज भाई व्रजविहारी सोमके कहनेसे यह किताबके कीड़े बन गये, विश्वविद्यालय परीक्षाको छोड़ अपने मनके पुस्तक पढ़ने और बराबर ज्ञानसञ्चय करने लगे। अंगरेजी कविताका मातृभाषामें अनुवाद करनेकी क्षमता इनमें बहुत थी। अन्यान्य विषयोंकी अपेक्षा साहित्य, इतिहास और दर्शन में अधिक प्यार था। मरते समय तक इनकी ज्ञानार्जनप्रवृत्ति प्रबल रही। यह अच्छे नाटककार तथा अभिनेता भी थे। किन्तु नाट्यालयके असंख्य कार्योंमें यह जब कभी भी समय पाते कोई न कोई पुस्तक वा सामयिक पत्रिकादि पढ़नेमें लग जाते थे। गिरिशचन्द्र बहुत वर्ष तक एशियाटिक सोसाइटीके सदस्य रहे। शहरमें यह कई पुस्तकालयोंको चन्दा देते थे। बाल्यकालसे ही मातृभाषा पर इनका बड़ा अनुराग था। पितामहीसे किस्सा सुनना और रामायण तथा महाभारत पढ़ना इनको बहुत अच्छा लगता था। वैष्णव भिक्षुकोंका धर्मसङ्गीत उनके मनमें अमृत धारा बहाता था। कवि होनेकी वासना उनके मनमें अल्प वयसकी ही उठी थी।

२० वर्षकी उम्रमें गिरिशचन्द्रने एटकिनसन टिलटन कम्पनीकी उम्मेदवारीको और थोड़े दिन बाद ही हिसाब किताबमें होशियार हो गये। फिर उन्होंने कितने ही सौदागरी दफतरोंमें खजाञ्चीका काम किया। वहां भी मौका मिलने पर यह पढ़ने लिखनेसे चूकते न थे। १८६७ ई०को २४ वर्षकी उम्रमें पहले इन्होंने शौकीनोंकी एक नाटकमण्डली बनायी उसमें माइकेल मधुसूदन दत्तका 'शर्मिष्ठा नाटक अभिनयके लिये मनोनीत हुआ। इन्होंने उसके जो गाने बनाये, पहले छपाये थे। उसके बाद नाटक लिखनेकी ओर यह झुके। १८६८ ई०को इन्होंने अवैतनिक नाट्यसम्प्रदाय (Baghbazar Amateur Theatre) बागबाजारमें प्रतिष्ठित किया। इन्हींकी तालीमसे 'सधवाकी एकादशी खेल हुआ। कलकत्तेके कितने ही गण्यमान्य सज्जनोंने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। फिर 'लीलावती आदि दूसरे अभिनय होने पर इनकी सुख्याति उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। इन्होंने मणालिनी, 'मेघनादवध 'पियव्रत' आदि कई अच्छे अच्छे पुस्तक वा नाटक लिखे हैं। इस समय तक यह आफिसमें बुक कीपरी (बही खातेका काम) करते रहे। फिर भागलपुर गये, वहां भी यह कविता बनाते थे। फिर कलकत्ता आ करके पार्कार कम्पनीमें १५०) रु० मासिक पर नोकरी की। किन्तु इस बार उनकी मति पलटी और उन्होंने नामके लिये डेढ़ सौ की नोकरी छोड़ सौ रुपये माहवारकी थियेटरकी मनेजरी कर ली। इस समयसे वह एक बारगी ही नाट्यालयके काम काजमें पड़ गये और नयी नयी चालके नाटक बनाने लगे। 'रावणवध' प्रमुख इनके बनाये नाटक सुप्रसिद्ध हैं।



गिरिशचन्द्र घोष।

१८८३ ई०की उन्हीं ने कलकत्तेकी बीडन ष्ट्रीट पर विख्यात 'ष्टार थियेटर खड़ा किया। इन्हीके सदुद्योगसे नाट्यशाला धर्मप्रचारका स्थान जैसी परिगणित हुई और जन साधारणकी श्रद्धा उस पर आकर्षित होने लगी। 'विल्वमङ्गल आदि ग्रन्थों ने उन्हें अमर जैसा बना रखा है। यह कोई ५० वर्ष नाट्य जगत्में पड़े रहे। इन्हों ने कलकत्तेकी प्राय सब नाट्यशालाओंमें काम किया था नाट्यकलाकी उन्नति करना, उनके जीवनका व्रत और एकमात्र लक्ष्य रहा।-

कई पौराणिक नाटक लिखने पीछे यह सामाजिक खेल बनाने लगे। इन्होंने प्रायः सीता वनवास, दक्षयज्ञ, चैतन्यलीला, निमाई संन्यास, बुद्धदेवचरित, विल्वमङ्गल, रूपसनातन, नसीराम, प्रफुल्ल, हारानिधि, कालापहाड़, करम तिवाड़ी, फणीमणि, बलिदान, शीराज-उद्-दौला, मीरकासिम, छत्रपति शिवाजी, अशोक, गृहलक्ष्मी आदि अस्सी नाटक, नाटिका प्रहसन लिपिबद्ध किये हैं। उनके निम्न लिखित कई एक भागोंमें बांट सकते हैं— १ पौराणिक, २ ऐतिहासिक, ३ सामाजिक इत्यादि। इनके बनाये गीत भले बुरे सब लोग गाया करते हैं। गिरिशचन्द्रका उपाधि नाट्यसम्राट है।

यही नहीं कि उन्होंने नाट्य जगत्में ही परमोच्च पद पाया, वरन् प्रतिभाशाली व्यक्ति-जैसा नाम भी खूब कमाया। यह समाजके परम हितैषी, उपदेष्टा और पथप्रदर्शक थे। श्रीरामकृष्ण देवके संस्रवसे उनकी प्रतिष्ठा और भी बढ़ गयी। शेक्स पीयरका 'माक वाथ' बङ्गलामें उल्था करके इन्होंने जो कमाल किया है, अंगरेज लोग भी दांतके नीचे उंगली दबाते हैं। विज्ञानकी चर्चामें भी यह बहुत दिन लगे रहे। अपने महल्लेमें वह होमिओपाथिक चिकित्सक-जैसे प्रसिद्ध थे।

१९१२ ई०८ फरवरीको उन्होंने परलोक गमन किया।

गिरिशचन्द्रराय—बङ्गाल प्रान्तीय नवद्वीपाधिपति राजा कृष्णचन्द्र रायके प्रपौत्र और ईश्वरचन्द्रके पुत्र। १८०२ ई०को पिताके मरने पर इनका वयस षोड़श वर्ष मात्र रहा। उसी समयसे इनके हृदयमें धर्मज्ञान बढ़ने लगा। वयः प्राप्त होने पर कुछ काल विषयकार्य पर्यालोचना करके इन्होंने कर्मचारियोंको कार्य भार सौंपा। अपने आप धर्मानुष्ठानमें प्रवृत्त हुए और प्रथमतः नवद्वीपमें गङ्गा किनारे तृणाच्छादित कुटीरमें अवस्थान करके अनेक पुरश्चरण किये। कृष्णनगरमें आनन्दमयी काली और आनन्दमय शिवका मन्दिर इन्होंने बनाया था। फिर इन्होंने उक्त मन्दिरोंके व्ययनिर्वाहार्थ कितनी ही निष्कर भूमि दे डाली। कुछ समय पीछे इन्होंने किसी रजनीको स्वप्नमें देखा, मानो कोई देवता उनसे कहता था—"हम नवद्वीपके भागीरथीतीर पर मगर्भमें रहते हैं, हमको अपने निकेतनमें ले जा करके स्थापन करो।" दूसरे दिन इन्होंने अमात्यों और कर्मचारियोंके साथ सुरधुनी तीर पर उपस्थित हो करके कोई निर्दिष्ट स्थान खोदनेको आदेश किया था। इधर उधर खोदते किसी बालुकामय भूगर्भके ३ तीन हाथ नीचे एक गोपालमूर्ति देख पड़ी राजा बड़े समारोहसे इस विग्रहको अपने घर ले गये और प्रतिष्ठित करके 'नवद्वीपनाथ' कहने लगे। उनके लिये इन्होंने एक मकान दान किया। फिर यह उनकी नित्यनैमित्तिक क्रिया आदिमें अपर्याप्त अर्थ व्यय करने लगे। इसी अमितव्ययिताके दोष और कर्मचारियोंकी कुमन्त्रणासे दिन दिन उनकी सम्पत्ति घटने लगी, मौरूसी जमीन्दारीके ८४ परगनोंमें ७ परगने और थोड़ीसी निष्कर भूमि ही बच गयी। प्रथमा महिषीसे पुत्रादि नहीं हुए। माताका अनुरोधसे उन्होंने १८०८ ई०को फिर दारपरिग्रह किया और द्वितीय पत्नी भी पुत्रवती न होनेसे १८१८ ई०में शास्त्रोक्त विधिके अनुसार श्रीशचन्द्रको गोद लिया। उसी समय विलक्षण अर्थाभाव रहते भी इन्होंने नवद्वीपमें दो वृहत् मन्दिर प्रस्तुत करके एकमें भवतारिणी नामसे पाषाणमयी कालीमूर्ति और दूसरेमें भवतारण नामक शिवकी प्रकाण्डमूर्ति प्रतिष्ठा की। १८४१ ई०को ५५ वत्सर वयसमें इन्होंने मानवलीलाको संवरण किया।

यह अति सुधी रहे और फारसी तथा संस्कृतमें अनर्गल बातें कर सकते थे। इनमें दया तथा धर्मनिष्ठा यथेष्ट थी। सङ्गीतमें इन्हें विशेष व्युत्पत्ति रही। यह शास्त्रालाप और रहस्यमें आनन्द अनुभव करते थे। इन्होंने अपनी सभाके कृष्णकान्त भादुड़ी नामक किसी ब्राह्मणको रससागर उपाधि दिया। इन्हींके आदेश पर लक्ष्मीकान्त न्यायभूषणकर्तृक "स्वप्नपद्धति" रचित हुई।

गिरिशन्त (सं० पु०) शं सुखं तनोति शं तन ड शन्तः गिरौस्थितः शन्तः मध्यपदलो०, यद्वा गिरि वाचि सेवे वा स्थितः शन्तः अलुक्स०, अथवा अम गतौ अमति गच्छति जानाति अम तः अन्तः सर्वज्ञः इत्यर्थः गिरिशश्चासौ अन्तश्चेति कर्मधा०। शिव। (वाजसनेयसं० १६।२)

गिरिशय (सं० पु०) गिरौ कैलासे शेते शी-अच्। शिव। (वाजसनेयसं० १६।२)

गिरिशायी (सं० पु०) पार्वतीय पक्षि, पहाड़की चिड़ियां।

गिरिशाल (स० पु०) गिरौ शालते शोभते शाल। अच्। एक प्रकारका बाज पक्षी। (सुश्रुत)

गिरिशालाह्न (स० पु०) मनुदपक्षी।

गिरिशालिनी (स० स्त्री०) गिरिं शालयति शोभयति गिरि-शाल णिच णिनि, ततो ङीप्। अपराजिता लता। (वामनपुराण)

गिरिशेखर (स० पु०) महावकुल

गिरिशृङ्ग (स० पु०) गिरेः शृङ्गमाकारेण अस्त्यस्य गिरि शृङ्ग अच्। १ गणेश। गणेशके शुण्ड उत्तोलन करने पर पर्वतशृङ्गके आकारके जैसे मालूम पड़ता है। इस लिये गणेशका नाम गिरिशृङ्ग पड़ा। (क्ली०) गिरेः शृङ्ग, ६ तत्। २ पर्वतशिखर।

गिरिषद् (स० पु०) गिरौ सीदति सद क्विप् षत्व। महादेव, शिव।

गिरिष्ठा (स० त्रि०) गिरौ तिष्ठति गिरि-स्था क्विप् षत्वञ्च। १ पर्वतस्थायी। (ऋक् १।१५४।२) (पु०) २ महादेव, शिव।

गिरिसर्प (स० पु०) जितासः। दर्वीकर जातीय सर्प-विशेष।

गिरिसार (स० पु०) गिरेः सार, ६ तत्। १ लोह, लोहा। २ शिलाजतु, शिलाजीत। ३ यशद, राङ्गा। ४ मलयपर्वत।

गिरिसारमय (स० त्रि०) गिरिसारस्य विकारः गिरिसार-मयट्। गिरिसारसे बनाया हुआ।

गिरिसिन्दुक (स० पु०) सन्धानिशु पड़ो।

गिरिसुत (स० पु०) गिरेः सुत, ६ तत्। मैनाकपर्वत।

गिरिसुता (स० स्त्री०) गिरेः सुता, ६ तत्। १ पार्वती। २ गङ्गा।

गिरिस्रवा (स० स्त्री०) गिरेः स्रवति स्रु अच् टाप्। पार्वतीय नदी, पहाड़से निकली हुई नदी।

गिरिस्वेद: (स० पु०) शिलाजतु, शिलाजीत।

गिरिह्वा (स० स्त्री०) गिरिं वालमूषिकाकर्णं, ह्वयति स्पर्द्धते तदाकारेण ह्वे क टाप्। १ अपराजिता लता २ वालमूषिका चुहिया।

गिरी (हि० स्त्री०) १ किसी बीजके भीतरका गूदा। २ 'गिरि' देखो। ३ "गरी" देखो।

गिरीन्द्र (स० पु०) गिरिरिन्द्र इव। १ हिमालय पर्वत। गिरेरिन्द्र, ६ तत्। २ महादेव, शिव।

गिरीयक (स० पु०) गिरियक निपातनात् दीर्घत्व। गिरियक देखो।

गिरीश (स० पु०) गिरेः कैलासस्य ईश, ६ तत्। १ कैलास पति, शिव। गिरोणामीश श्रेष्ठ, ६ तत्। २ हिमालय पर्वत। गिरा वाचा ईशः अधिपति, ६ तत्। ३ बृहस्पति।

गिरेबान (हि० पु०) गलेमें पहननेका कपड़ेका वह भाग जो गरदनके चारो तर्फ रहता है।

गिरेवा (हि० पु०) १ छोटी पहाड़ी। २ चढ़ाईको रास्ता।

गिरेश (स० पु०) १ ब्रह्मा। २ विष्णु।

गिरो (फा० वि०) रेहन, बधक।

गिरोड—बरार प्रान्तके वर्धा जिलेका एक नगर। यह अक्षा० २० ४० उ० और देशा० ७८ ८ ३०" पू०में वर्धा शहरसे ३७ मील दक्षिणपूर्वको अवस्थित है। इसके निकटवर्ती पर्वतमें शेख खाजा फरीद पीरका मकरबा है। स्थानीय हिन्दू और मुसलमान भक्त सर्वदा वहां जाया आया करते हैं। धार्मिक फरीद ३० वत्सरकाल फकीरके वेशमें भारतके नाना स्थान परिभ्रमण करके १२४४ ई०को यहां आ बसे थे इनके सम्बन्धमें अनेक आश्चर्य घटनाएं सुन पड़ती हैं। पांच गांवोंको आय इनसे इस मकरबेका खर्च चलता है। यहां प्रति सप्ताह बाजार लगता है।

गिर्गिट (हि० पु०) गिरगिट देखो।

गिर्जा (फा० पु०) गिरजा देखो।

गिर्द (फा० अव्य०) आसपास, चारों ओर।

गिर्दावर (फा० पु०) १ घूमनेवाला, दौरा करनेवाला। २ कामकी देख भाल करनेवाला।

गिर्यह्वा (स० स्त्री०) गिरिं वालमूषिकाकर्णं आह्वयति स्पर्द्धते तदाकारेण गिरि आ ह्वे क टाप्। अपराजिता।

गिर्वणस (स० पु०) गिरा वाचा वन्यते गिर्-वन कर्मणि असुन् णत्व दीर्घाभावश्च छन्दस। १ देवविशेष। (त्रि०) गिरा वनन्ति स्तुवन्ति गिर वन कर्त्तरि असुन्। २ स्तव-कर्त्ता, स्तव करनेवाला।

गिर्वणस्यु (स० त्रि०) १ जो स्तव करता है।

गिर्वन् (स० स्त्री०) गिरा वनति स्तौति। स्तव करने वाली स्त्री।

गिर्वाहस् (सं॰ त्रि॰) गिरा स्तुति वाचा उह्यते गिर्-वह-असुन् निपातनात् नोपपदस्य दीर्घत्वं। स्तुति वाक्य द्वारा जिसका आह्वान किया जाय इन्द्रादि देवगण।

गिल (सं॰ त्रि॰) गिलति भक्षयति गिल-क। १ भक्षक (पु॰) २ मगर। ३ जंबीरी नीबू।

गिल (हिं॰ स्त्री॰) १ मिट्टी। २ गारा।

गिलकार (फा॰ पु॰) वह मनुष्य जो गारा वा पलस्तर करता है।

गिलकारी (फा॰ स्त्री॰) गारा लगाने या पलस्तर करनेका काम।

गिलरिया (हिं॰ पु॰) एक तरहकी तरकारी, नेनुवाँ।

गिलगिट—काश्मीर राज्यके अन्तर्गत एक जिला और उपत्यका। यह अक्षा॰ ३५° ५५´ उ॰ और देशा॰ ७४° २३´ पू॰में समुद्रपृष्ठसे ४८४१ फुट ऊँचे अवस्थित है। यह हिन्दूकुश पर्वतके दक्षिण-उत्तर दिग् पर अवस्थित है। यसीन या गिलगिट नदी उपत्यकाका समस्त स्थान परिभ्रमण करके बुञ्जी नगरके ६ मील उत्तर सिन्धुनदसे जा करके मिल गयी है। पहले इस नगरमें ८ दुर्गोंसे परिवेष्टित समृद्धिशाली वासभूमि रही। यसीन और चित्रालवाले राजाओंके परस्परमें लड़नेसे यह दुर्ग विध्वस्त हुए और उसीके साथ समस्त गिलगिट उपत्यका सिखोंके अधिकारमें चली गयी। यह जिला प्रायः ४० मील विस्तृत है। इसका सदर गिलगिट शहर सिन्धुनदसे २४ मील दूर है। मध्यस्थानकी उर्वरा और जलवायु शुष्क और स्वास्थ्यकर है। पानी कम बरसता है।

इस स्थानका प्राचीन नाम सर्गिन बदल करके पीछेको गिलित हो गया और सिखोंका अधिकार बढ़ने पर गिलगिट पुकारा जाने लगा। आज भी शीन जातीय स्थानीय अधिवासी उसको 'सर्गिनगिलित' कहते हैं। प्राचीन प्रस्तरमन्दिर और बौद्ध कारुकार्यका ध्वंसावशेष देखनेसे मालूम होता है कि ई॰ १५वीं शताब्दीसे पहले यहां हिन्दू राजाओंका राजत्व रहा लोग उन्हें 'रास' वा 'साही राय' उपाधि द्वारा सम्बोधन करते थे। हिन्दू राजवंशके अन्तिम राजाका नाम श्रीबद्दत था। किसी मुसलमान आक्रमणकारीने युद्धमें उनको निहत करके तदीय कन्याका पाणिग्रहण किया। इसी कन्याके वंशजात पुत्र 'एखर्न' वंशो उससे अभिहित हुए हैं। इस समय एखर्न वंशीय पुत्रगत वा उपाधिधारी किसी राजाका नाम नहीं मिलता

राजा श्रीबद्दतके समयको चित्राल, यसीन, तङ्गीर, दरेल, चिलास, गोर, असतोर, हुनजा, नागर और हरमोज प्रभृति स्थान गिलगिट राज्यके ही अन्तर्गत थे।

इस पार्वत्य प्रदेशमें असंख्य उपत्यकाएं और गिरिशृङ्ग दृष्ट होते हैं। इनमें कोई १८०००, कोई २००००, कोई २२००० और कोई २४००० फुट ऊंचा है। किसी पर्वतमें ७०००० फुटके ऊपर भयानक जङ्गल है। इस वनके निम्नदेशमें फणवाले असंख्य जङ्गली सांप रहते देख पड़ते हैं। इसी पहाड़में ११००० फुट ऊंचे बहुत ज्यादा जङ्गली प्याज पैदा होता है। चाना लोग इस पर्वतको शुङ्गलिङ्ग कहते हैं। गिलगिटमें बहुतसी छोटी छोटी नदियां प्रवाहित हैं। रकीपोश पर्वतसे निकली हुई नदीमें स्वर्ण मिलता है। पहाड़ी लोग शीतकालको उससे सोना निकाला करते हैं।

गिलगिट नगर और सिन्धुनदके मध्यवर्ती स्थानमें बागरोत उपत्यका है। उसमें समृद्धिशाली अनेक ग्राम बसे हुए हैं। यहां सोना और खनिज रत्नादि पाये जाते हैं। गिलगिटके प्राचीन राजा शत्रु कर्तृक आक्रान्त होने पर उसी उपत्यकामें जा करके आत्मरक्षा करते थे। आजकल सभी अधिवासी शीनवंशीय हैं। यह लोग शीन भाषामें ही बात चीत करते हैं।

गिलगिट नगरसे १ मील दक्षिणको हुनजा नदी जा करके गिलगिट नदीसे मिली है। इसीके किनारेसे उत्तरको चापरोत जिला है। यहां चापरोत ग्राममें एक दुर्ग बना हुआ है। यह किला नदीसङ्गम पर अवस्थित और शत्रुकर्तृक दुर्भेद्य है। स्थलपथ भिन्न इसमें दूसरी ओरसे घुसनेकी राह नहीं है। समय समय पर यह गिलगिल हुनजा और नागर राजाओंके अधिकारमें रहा, अब काश्मीरराजके अधिकारभुक्त है।

उत्तर दिक्से रकीपोश पर्वतके अभिमुख टकटकी लगा करके देखनेसे मालूम पड़ता, मानो किसी नदीके किनारेसे क्रमान्वयमें ऊर्ध्वाभिमुखको पहाड़ उठा है। यह पार्वतीय दृश्य अति मनोरम है। यसीन, पोनियाल

और गिल्गिट उपत्यकावासी मिस्र वंशसे उत्पन्न हुए, हुनजा और नागरके लोग भी उसी वंशसे सम्बन्ध रखते हैं। यह शीया सम्प्रदायभुक्त मुसलमान है। इनकी जाति का सरदार 'थुम' कहलाता है। थुमसरदार मगलोत और गरकश नामक २ यमज भ्राताओंके वंशधर हैं। ई० १५वीं शताब्दीके शेष भागको यह दोनों भाई विद्यमान थे। नागरका किला और थुमका घर मतसोल नामक नदीके कूलमें अवस्थित है। गिल्गिटके राजवंशीय राजाओंके अधिकार कालसे थुम सरदारने उनकी अधीनता मानी थी। १८६८ ई०को वह काश्मीरराजके अधीन हो गये। नागर सरदार प्रति वत्सर काश्मीरराजको करस्वरूप २१ तोला सोना देते हैं। इसी पार्वत्य प्रदेश को उत्तर दिकको 'छोटा गुजल' नामक बड़ी बड़ी घाससे घिरी हुई एक जगह है। यहां गोमेषादिके साथ एक भ्रमणकारी जाति रहती है। इसी राज्यके उत्तर पूर्वकी पकपू और शचपू नामक दो जातियां रहती हैं। इनकी संख्या १० हजारसे अधिक होगी। यह हुनजा सरदारको वार्षिक कर देते हैं। यह देखनेमें अतिसुन्दर हैं। गावका वर्ण तांबे जैसा लाला होता है। हुनजाके उत्तरको सिरीकोल नामक पार्वतीय राज्य है। हुनजा सरदारव श 'अएसे' अर्थात् स्वर्गीय कहलाता है। पूर्व-का यह भी साह राजाओंके अधीन थे। हुनजा ८ जिलोंमें विभक्त है और प्रत्येक जिलेमें एक एक किला बना है।

गिल्गिटके शीन लोग हुनजा और नागरके अधिवासियोंको ऐशकुन जातीय बतलाते हैं। परन्तु शेषोक्त देशवासी अपनेको वरोस जातीय जैसा मानते हैं। शीन लोग इसलाम धर्ममें दीक्षित होते भी खूब गोभक्ति दिखलाते हैं। कट्टर शीन तो यहां तक कि जिस पात्रमें गो दुग्ध भी रखा जाता, नहीं छूते। बछड़ा जितने दिन दुध पीता, वह साधारणके लिये अस्पृश्य ठहरता है। इसीसे प्रसूत होते ही सवत्सा गाय ऐशकुनो के पास भेज देते और वत्सके मातृस्तन त्याग करते ही फिर उसको उनके पास से वापस मंगा लेते हैं। यही सब जातिगत आचार व्यवहार आलोचना करनेसे ध्यानमें आता शायद पूर्व कालको दक्षिण देशके किसी हिन्दू राजाने सिन्धुनद पार हो उसी सुन्दर देशमें जा करके हिन्दूकुश प्रान्तमें अपना राज्यस्थापन किया था।

१७६० ई०को अहमद शाह अब्दालीने जब भारत आक्रमण किया, काश्मीरियोंका एक दल जा करके गिल-गिटमें बस गया। आज उन्हें 'कशीरू' कहते हैं। स्थान परिवर्तनके साथ साथ इनका आचार भी बहुत बदला है। यह चिलासके अधिवासियोंमें बिलकुल मिल जुल गये हैं।

गिलगिट नगरसे १८ मील उत्तरको पोनियाल जिला है। यह प्राय २२ मील बढ़ करके चत्रोल राज्यकी सीमा तक चला गया है। गिलगिटके प्राचीन राजाओंके समयमें इसी जिलेके आयसे राजपुत्रों और कन्याओंका भरण पोषण होता था। १८६० ई०को यह भी काश्मीर राज्यके अधीन हो गया।

पहले हुनजा और गिल्गिटके सरदारोंमें हमेशा लड़ाई लगी रहती थी। परन्तु १८६८ ई०का वह विवाद मिट गया। तदवधि थुम सरदार शीनराजको प्रति वर्ष दो घोड़े, २ कुत्ते और ५०॥ तोला सोना कर स्वरूप दिया करते हैं। बलटीत नामक स्थानमें थुमका भवन है।

कोई ३० वर्ष हुए हुनजा नागरोंके साथ वृटिश गवर्नमेण्टका युद्ध छिड़ा था। अब गिल्गिट निकटवर्ती अधिवासी वृटिश गवर्नमेण्टका अधीनता स्वीकार करने पर वाध्य हुए हैं। सरकार गिल्गिटकी फ़ौज बढ़ाने और उसके चारों ओर पोखता किले बनानेमें लगी है।

गिल्गिट वजारतमें २६४ गांव हैं। लोकसंख्या प्राय ६०८८५ है। खेती खूब होती है। गोचरभूमि और पशु कम हैं। ऊनी पट्टू खूब बुना जाता है। नमक-का कारबार बड़ा है। भारतको कई सड़कें आयी हैं। डाक और तारका भी भारतके साथ लगाव है। वजीर वजारत गिल्गिट वजारतका प्रबन्ध करते हैं। यहां सरकारी फ़ौज रहती है। अंगरेजी पोलिटिकल एजेण्टका भी निवास है। वह वजीरके कामोंकी देख भाल रखते हैं।

गिल्गिल (सं० त्रि०) गिल कुम्भीर गिलति गिल गिल क। १ जो कुम्भीरको भी निगल सकता हो। (पु०) २ गिलग्राह, नक्र, नाक नामक जन्तु।

गिलगिलिया (हिं० स्त्री०) एक तरहको चिड़िया, जो आपसमें बहुत लड़ती है, सिरोही।

गिलगिली (हिं० पु०) घोड़ेकी एक जाति।

गिलग्राह (सं० पु०) गिलं गृह्लाति गिल-ग्रह अण् उप-पदस०। गिलगिल देखो।

गिलजाई—अफगान जातिकी एक शाखा। इस जातिके मनुष्य अच्छे शूरवीर और साहसी होते हैं। अष्टादश शताब्दीमें इन्होंने युद्धविद्यामें श्रेष्ठता लाभ कर थोड़े समयके लिये स्पाहन नगरका सिंहासन भोग किया था। कन्दाहारके उत्तर काबुल नदीके तीरवर्ती स्थान जलाला-बाद पर्यन्त आज तक भी इनका राज्य फैला हुआ है। १८३८ ई०में अङ्गरेजके काबुल आक्रमण पर इन्होंने दोस्त मुहम्मदको सहायता दी थी।

ये देखनेमें तुर्कियोंके जैसे होते हैं।

गिलट (हिं० स्त्री०) १ सुवर्ण चढ़ानेका काम। २ श्वेत तथा चमकीले रङ्गको एक प्रकारकी हलकी और कम मूल्यको धातु।

गिलटी (हि० स्त्री०) शरीरके मध्य सन्धिस्थानकी ग्रन्थि। कुहनी, बगल, गला और घुटनेमें ऐसी गाँठ होती है। २ एक प्रकारका रोग। इसमें सन्धि स्थानकी कोई गाँठ फूल जाती अथवा कोई दूसरी ग्रन्थि उत्पन्न हो आती है। रक्त मांसके दूषित हो जानेसे यह रोग जन्म लेता है।

गिलन (सं० क्ली०) गिल भावे ल्युट् गिल गिलने इति निर्द्देशात् न गुणः। ग्रासकरण, निगलना।

गिलन (अं० पु०) एक प्रकारका अङ्गरेजी माप जो प्रायः पांच सेरके बराबर होता है।

गिलबिला (अनु० वि०) अतिशय कोमल।

गिलबिलाना (अनु० क्रि०) स्पष्ट वचन नहीं बोलना।

गिलम (फा० स्त्री०) १ एक तरहका कालीन, जो नरम तथा चिकना होता है। २ अतिशय मोटा तथा कोमल बिछौना।

गिलमिल (हिं० पु०) एक तरहका वस्त्र जो प्राचीन काल-में प्रस्तुत होता था।

गिलसुर्ख (फा० स्त्री०) गेरूमिट्टी।

गिलहरा (हिं० पु०) एक प्रकारका सूती वस्त्र। इस वस्त्रमें मोटी मोटी धारियां होती हैं।

गिलहरी (हिं० स्त्री०) एक किस्मका छोटा जन्तु जो एशिया, युरोप और उत्तर अमेरीकामें पाया जाता है। यह छोटे फल तथा अनाज खाती है और सदा वृक्ष पर रहती है। इसके कान दीर्घ तथा नोकदार होते हैं और पूंछ कोमल बालोंसे ढकी रहती है। इसके पृष्ठ पर बहुत रंगकी धारियां होती हैं। यह स्वभाव होसे चंचल होती है। एक बारमें यह तीनसे चार तक बच्चे जनाती है।

गिला—गिला नामक वृक्षका बीज। (Mimosa Scandens)। इसका गुण—रूक्ष, तीव्र और कटु है।

गिला (फा० पु०) १ उलाहना। २ शिकायत, निंदा।

गिलाई (हिं० स्त्री०) गिलहरी देखो।

गिलान (हिं० स्त्री०) ग्लानि, घृणा, नफरत।

गिलाफ (अ० पु०) अच्छे अच्छे कपड़े ढाकनेका वस्त्र, खोल। २ लिहाफ, रजाई। ३ म्यान।

गिलाय (अ० स्त्री०) गिलहरी।

गिलायु (सं० पु०) एक तरहका रोग। इसमें गलेके भीतर एक तरहकी गांठ हो आती है। यह बहुत दुःखद रोग है। इस रोगमें शस्त्र चिकित्सा करानेकी आवश्य-कता पड़ती है।

गिलावा (फा० पु०) ईंट जोड़नेकी गीली मिट्टी, गारा।

गिलास (हिं० पु०) १ पानी पीनेका एक गोल लम्बा बरतन। २ ओलची नामका एक पेड़ जिसका फल बहुत नरम और स्वादिष्ट होता है। इस तरहका फल श्रावण मासमें सिर्फ १५-२० दिन तक फलता है।

गिलित (सं० त्रि०) गिलि-क्त। भक्षित।

गिलिम (फा० स्त्री०) गिलम देखो।

गिली (फा० स्त्री०) गुल्ली देखो।

गिलेफ (अ० पु०) गिलाफ देखो।

गिलोड्य (सं० पु०) एक तरहका वृक्षविशेष, इसके फल-का रस मधुर होता है।

गिलोय (फा० स्त्री०) गुरुच, गुडुची।

गिलोला (फा० पु०) गुलेलसे फेंके जानेका मिट्टीका बना हुआ छोटा गोला।

गिलौंदा (फा० पु०) गुलौंदा देखो।

गिलौरी (हिं० स्त्री०) कई एक पानोंका बीड़ा।

गिलौरीदान (हिं० पु०) पान रखनेका डिब्बा, पानदान।
गिल्टी (फा० स्त्री०) गिल्टी देखो।
गिश्ता (फा० पु०) गिश्ता देखो।
गिस्सो (फा० स्त्री०) गुस्सो।
गिष्णु (सं० त्रि०) १ गायक, गवैया। (पु०) २ सामवेद-का गानेवाला, सामवेदवेत्ता।
गींजना (हिं० क्रि०) किसी कोमल पदार्थको हाथसे मींडना जिससे वह खराब हो जाय।
गींव (फा० स्त्री०) ग्रीवा, गर्दन, गला।
गी (सं० स्त्री०) १ वाणी, बोलनेकी शक्ति। २ सरस्वती देवी।
गीःपति (सं० पु०) गिरां पतिः, ६-तत्। अहरादित्वात् विकल्पे विसर्गस्य न रेफः। गीष्पति देखो।
गीगासारन—बम्बई प्रान्तमें काठियावाड़का एक क्षुद्र राज्य। इसकी आबादी कोई ५८२ और आमदनी ६६००) है। मालिकवाड़से यह १६ मील दक्षिण पूर्व पड़ता है। लोकसंख्या कोई ६७२ होगी।
गीदम (हिं० पु०) न्यून मूल्यका सादा गलीचा।
गीदर—काठियावाड़ प्रान्तके बांटवा तालुकका एक नगर। जूनागढ़से प्राय १८ मील उत्तर यह नगर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय १६५१ है। बांटवा बाबिस राज्यकी एक पृथक् शाखा उस पर अधिकार करती है।
गीढ़ (फा० पु०) चक्षुका मैल।
गीत (सं० क्ली०) गान, गाना, ध्रुपद तराना आदि। यह नियमित स्वरनिबद्ध शब्दविशेष है। सङ्गीतशास्त्र के मतमें धातु तथा मात्रायुक्तको ही गीत कहा जाता है धातु नादात्मक और मात्रा अक्षरात्मक है। गीत सभी के प्रीतिकर होते हैं। संसारी वनवासी या उदासीन प्रभृति सब लोग इसके पक्षपाती हैं। हरिण आदि वन्य पशुओं और पक्षियोंको भी गाना सुनना अच्छा लगता है यहां तक कि अच्छा गीत सुन पड़नेसे शिशु भी स्थिर चित्तसे अवस्थान करता है और रोदन परित्याग कर टिक लगा गाना सुनने लग जाते हैं। सांसारिक प्राणियोंके लिये इस विनोदका वस्तु दूसरा नहीं है। गीत दुःख की यातना मिटानेका उपाय, सुखोंकी प्रीतिका कारण और योगीको ध्यानका प्रधान अङ्ग है। इसीसे प्राचीन सङ्गीतवेत्ता बतलाते कि प्रभु शङ्करने संसारको दुःखाक्रान्त देख करके सांसारिकोंके दुःख निवारणका प्रधान उपाय गीत और वाद्य प्रकाश किया है। (सङ्गीतदर्पण) धर्मशास्त्रमें भी लिखा है कि गीतज्ञ गीत द्वारा ही मुक्ति पा सकता है और किसी दूसरे कारणसे मुक्ति न मिलने पर वह रुद्रका अनुचर बन करके रुद्रलोकमें तो वास करता ही है।

गीत दो प्रकारका होता है वैदिक और लौकिक। सोमाचार्यने भाष्यमें शबरस्वामीने लिखा है—जिसमें आभ्यन्तरीण प्रयत्नसे स्वरग्रामकी अभिव्यक्ति होती, गीत कहलाता और साम शब्दमें भी उसीका उल्लेख किया जाता है। (शाबर भाष्य) सामवेदमें सहस्र प्रकार गीत का उपाय है। गायक इच्छानुसार उसमें किसी एकके अवलम्बनसे साम गान कर सकता है। (छान्दोग्य भाष्य) लौकिककी तरह वैदिक गानमें भी क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम और षष्ठ सात स्वर होते हैं। सामविधानब्राह्मणसे निश्चित हुआ है कि उन्हीं ७ स्वरोंमें देवता क्रुष्ट, मनुष्य प्रथम, गन्धर्व तथा अप्सरा द्वितीय, पशु तृतीय, पितृलोक चतुर्थ, असुर एवं राक्षस पञ्चम और वनस्पति प्रभृति अपर जगत् षष्ठ स्वरसे परितृप्ति लाभ करता है। (सामविधानब्राह्मण १।१।८)

यही सात मौलिक स्वर अवान्तरमें इसे बहुविध हो जाते हैं।

लौकिक गान प्रथमतः दो भागोंमें विभक्त हुआ है—मार्ग और देशी। जो गीत सर्वप्रथम विरिञ्चिने प्रकाश किये थे और जिसको भरत प्रभृति गायक महादेवको प्रीतिके लिये गाया करते थे, मार्ग कहलाता है। सङ्गीतशास्त्रके मतमें मार्ग नामक गीत सर्वदा ही मङ्गल प्रदान करता है। विभिन्न लोगोंकी रुचि और रीतिके भेदसे विभिन्न रूपोंमें परिणत या उत्पन्न गीतोंको ही देशी कहते हैं।

सङ्गीतरत्नाकर (१।२५) में लिखा है कि सभी गीतोंका मूल सामवेद है। ब्रह्माने सर्व प्रथम सामवेदसे ही गीत संग्रह किया था।

यह गीत मन्त्र और शास्त्रमें इसे फिर दो प्रकार होता है। वेणु, वीणाप्रभृति यन्त्रोंसे जो गीत निस्सृत,

उनको यन्त्र और प्राणीके मुखसे गानेवालोंको गात कहते हैं। किन्तु चलती बोलीमें यन्त्रको गीत न कह करके वाद्य नामसे उल्लेख करते और केवल मुखसे निकलनेवालेको गीत समझते हैं।

सब तरहके गानोंका मूल कारण नाद है। सङ्गीतशास्त्रके मतसे आत्मा वा चेतन जब कोई ध्वनि करना चाहता उसी इच्छासे अन्तःकरण चालित होता है। इससे शरीरस्थ अग्नि चोट खा करके भभक उठता और उसी उद्दीप्त अग्निके तेजसे ब्रह्मग्रन्थिस्थित वायु चालित हो करके ऊर्ध्व पथमें गमन करता है। चालित वायुके आघातसे क्रमशः नाभि, हृदय, कण्ठ, मूर्धा और मुखप्रभृति स्थानोंमें ध्वनि होता है। इसीका नाम नाद वा श्रुति है। नाद—अतिसूक्ष्म, सूक्ष्म, पुष्ट अपुष्ट तथा कृत्रिम पांच भागोंमें बंटा है। किन्तु गीत-व्यवहारमें उसको मन्द्र, मध्य और तार तीन ही भागोंमें विभक्त करते हैं।

हृदय, गलदेश और मूर्धा स्थानमें उत्पन्न नादको यथाक्रम मन्द्र, मध्य और तार कहा जाता है। मन्द्रसे मध्य और मध्यसे तार द्विगुण होता है। यह नियम शरीरमें चलता, वीणायन्त्रमें उसके विपरीत पड़ता है। (भाषा टीका)। कोई सङ्गीतविद् नाद वा श्रुतिको बाईस, कोई छासठ और कोई ३ भागोंमें बांटता है। सङ्गीतरत्नाकरप्रणेता शार्ङ्गदेव लिखते कि ऊर्ध्वनाडी अर्थात् सुषुम्ना संलग्न २२ नाड़िया वक्रभावमें अवस्थित हैं। उनके योगसे २२ प्रकारके नाद वा श्रुतियां निकलती हैं। इसीसे श्रुतिको २२ भागोंमें बांटना उचित है।

इन श्रुतियोंसे षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषाद ७ स्वर उत्पन्न होते हैं।* गीतशास्त्रमें इन सातो स्वरोंको स, रि, ग, म, प, ध, नि—सात संक्षिप्त नामोंसे उल्लेख किया गया है। षड्जमें चार, ऋषभमें तीन, गान्धारमें दो, मध्यममें चार, पञ्चममें चार, धैवतमें तीन और निषादमें २ही श्रुतियां रहती हैं।

सङ्गीतदर्पण (५३।५६) मे इन २२ श्रुतियोंका नाम मिलता है। यथा—तीव्रा, कुमुद्वती, मन्द्रा, छन्दोवती, दयावती, रञ्जनी, रतिका, रौद्री, क्रोधा, वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी, क्षिति, रक्ता, सन्दीपनी, आलापिनी, मदन्ती, रोहिणी, रम्या, उग्रा और क्षोभिणी। इनके मध्य तीव्रा प्रभृति चार षड्जमें, दयावती आदि तीन ऋषभमें, रौद्री तथा क्रोधा नामक दो गान्धारमें, वज्रिका प्रभृति चार मध्यममें, क्षिति आदि चार पञ्चममें, मदन्ती प्रभृति तीन धैवतमें और शेष २ श्रुतियां निषाद स्वरमें लगती हैं। (सङ्गीतदर्पण ५३।५६)

मतङ्गके मतानुसार श्रुति ६६ भागोंमें बंटी है। उनका नाम है—मन्द्रा, अतिमन्द्रा, घोरा, घोरतरा, मण्डना, सौम्या, सुमना, पुष्करा, शङ्खिनी नोला, उत्पला, अनुनासिका, घोषावती, नीलनादा, आवर्तनी, रणदा, एकगम्भीरा, दीर्घतारा, नादिनी, मन्द्रजा, सुप्रसन्ना, निनादा। यह २२ श्रुतियां मन्द्रसप्तकमें हुवा करती हैं। नादान्ता, निष्कला, गूढ़ा, सकला, मधुरा, गम्भी, एकाक्षरा, भृङ्गजाति, रसगीति, सुरङ्गिका, पूर्णा, अल[illegible]रिणी, वांशिका, वैणिका, त्रिस्थाना, सुस्वरा, सौम्या, भाषाङ्गी, वार्तिका, सम्पूर्णा, प्रसन्ना और सर्वव्यापिनिका—२२ श्रुतियां मध्यसप्तकमें लगती हैं। ईश्वरी, कौमारी, सवराला, महार्का, शङ्खिनी, राका, भोगवीर्या, मनोरमा, सुस्निग्धा, दिव्याङ्गा, सुललिता, विद्रुमा, लज्जा, कान्ती, सूक्ष्मा, अति सूक्ष्मा, पुष्टा, सुपुष्टिका, रौकरी, कराली, विस्फोटान्ता और भेदिनी—तार सप्तककी २२ श्रुतियां हैं।

(सङ्गीतरत्नाकरटीका ३।१३)

सङ्गीत-समयसार-प्रणेताके मतमें नासिका, कण्ठ, उर, तालु, जिह्वा और दन्त—षडविध स्थान सम्बन्धसे उत्पन्न होनेवाला स्वर षड्ज कहलाता है। नाभिमण्डलका ऊर्ध्वगत वायु कण्ठ तथा शीर्षदेशमें आहत होने ऋषभ अर्थात् वृषभके निनाद-जैसा स्वर निकलने पर ऋषभ नाम पड़ता है। गन्धर्वोंके अतिशय सुख हेतु जैसे तृतीय स्वरको गान्धार कहते हैं। नाभिका ऊर्ध्वगत वायु आहत हो करके हृदयमें जो स्वर उठता, मध्य ठहरता है। ओष्ठ, कण्ठ, शिर, हृदय और नाभि—पञ्च स्थानोंसे निकलनेवाला स्वर ही पञ्चम है। नाभिका उपरिगत वायु—कण्ठ, तालु, शिर और हृदयदेशमें धृत होने पर धैवत स्वर निकलता है। निषादमें अपर सकल स्वर अवस्थित वा विरत होते हैं। (सङ्गीतरत्नाकर २२३ टीका)

* वेद षडङ्गके छन्दशास्त्रमें भी इन सातो स्वरोंका उल्लेख है।

कथित श्रुतिसमूहकी ५ जातियां हैं—दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु और मध्या। षड्ज स्वरकी ४ श्रुतियां यथाक्रम दीप्त, आयत, मृदु और मध्य जातीय होती हैं। इसी प्रकारसे ऋषभकी तीन करुणा, मध्या और मृदु, गन्धारको दो दीप्ता तथा आयता, मध्यमकी चार दीप्ता, आयता मृदु एवं मध्या, पञ्चमकी चार मृदु, मध्या, आयता, करुणा, धैवतकी तीन करुणा, आयता और मध्या और निषादकी २ श्रुतियां दीप्त और मध्या हैं। दीप्तमें भी तीव्रा, रौद्री, वज्रिका और उग्रा—४ भेद पड़ते हैं। आयता ५ प्रकार है—कुमुद्वती, क्रोधा, प्रसारिणी, सन्दीपनी और रोहिणी। करुणा—दयावती, आलापिनी और मदन्तिका भेदसे तीन प्रकारकी होती है। मृदुके चार भेद हैं—मन्दा, रतिका, प्रीति और क्षिति। मध्या कह प्रकारकी कही है—छन्दोवती, रञ्जनी, मार्जनी, रक्तिका, रम्या और क्षोभिणी।

यही ७ मौलिक स्वर विकृत हो करके १२ प्रकारके बन जाते हैं। इनमें षड्‌स्वर विकृत होने पर च्युत और अच्युत दो प्रकारका ठहरता है। इसकी ४ स्वाभाविक श्रुतियोंमें अन्तिम हीन होनेसे च्युत और और पूर्व श्रुति हीन होनेसे अच्युत कहते हैं। ऋषभको ३ स्वाभाविक श्रुतियां है। परन्तु षड्जकी अन्तिम श्रुति मिल जानेसे चतुःश्रुति विकृत ऋषभ कहलाता है। गान्धार—मध्यमकी प्रथम श्रुति ग्रहण करनेसे त्रिश्रुति विकृत और प्रथम और द्वितीय २ श्रुतियां लेनेसे चतुःश्रुति विकृत होता है। मध्यम भी षड्जकी तरह च्युत और अच्युत भेदसे दो प्रकार है। प्रथम तृतीय श्रुतिमें अवस्थित होनेसे त्रिश्रुति विकृत और यही विकृत मध्यमको अन्तिम श्रुति ग्रहण करनेसे चतुःश्रुति विकृत ठहरता है। पञ्चमकी अन्तिम श्रुति धैवतमें प्रवेश करनेसे चतुःश्रुति विकृत धैवत होता है। निषाद षड्जकी प्रथम श्रुति लेनेसे त्रिश्रुति विकृत और षड्जको श्रुतियां ग्रहण करनेसे चतुःश्रुति विकृत कहलाता है। मौलिक सात और विकृत १२ स्वर मिल करके उन्नीस हो जाते हैं। (सङ्गीतरत्नाकर १।३१-३२) सङ्गीत शास्त्रमें लिखा है कि मयूरका षड्ज, चातकका ऋषभ, छागका गान्धार, क्रौञ्चका मध्यम, कोकिलका पञ्चम, भेकका धैवत और गजका स्वाभाविक स्वर निषाद है। (सङ्गीतरत्नाकर १।४७)

इन्हीं सकल स्वरोंसे सकल प्रकारका राग उत्पन्न होते हैं। पूर्वकथित स्वर फिर वादी, संवादी, विवादी और अनुवादी भी होते हैं। जिस रागमें जो स्वर बार बार लगता, उसका वादी ठहरता है। रागमें वादी ही सर्वप्रधान है। दूसरे स्वर इसके अनुगत रहते हैं। २ स्वर जिस जिस श्रुति पर विश्रान्ति पाते, उसके बीच बारह अथवा ८ श्रुतियां रहनेसे एक दूसरेके संवादी कहलाते हैं। जैसे—षड्जस्वर छन्दोवती नामक चतुर्थ श्रुतिमें समाप्त और मध्यम मार्जनी नामक त्रयोदश श्रुतिमें विरत होने और छन्दोवती तथा मार्जनीके मध्य दयावती, रञ्जनी, रतिका, रौद्री, क्रोधा, वज्रिका, प्रसारिणी और प्रीति ८ श्रुतियां रहनेसे मध्यम षड्जका संवादी है। इसी प्रकार १२ श्रुतियोंका व्यवधान रहनेसे पञ्चम भी षड्जका संवादी ही होता है। ऋषभका धैवत, गान्धारका निषाद, मध्यमका षड्ज, पञ्चमका षड्ज, धैवतका ऋषभ और निषादका संवादी गान्धार है। (सङ्गीतरत्नाकर १।६६)

गीतके अवयवसे जो स्वर कल्पित होता, उसका संवादी स्वर लगानेसे राग बिगड़ता है। पूर्व संवादी स्थलमें उत्तर संवादीके प्रयोगसे रागका अभाव और उत्तर संवादीकी जगह पूर्व संवादी लगानेसे जाति हानि होती है।

निषाद और गान्धार अपर स्वरके विवादी हैं। परन्तु किसी सङ्गीतविद्‌के मतमें यह दोनों स्वर ऋषभ और धैवत स्वरोंके ही विवादी हैं, दूसरे किसीके भी नहीं। फिर कोई कोई सङ्गीतवेत्ता ऋषभ और धैवतको गान्धार तथा निषादका विवादी स्वर बतलाता है। गीतमें निर्दिष्ट स्वरके स्थान पर उसका विवादी लगानेसे रागका वादित्व, अनुवादित्व और संवादित्व नष्ट होता है। परस्पर संवादी वा विवादी न होनेवाले एक दूसरेके अनुवादी ठहरते हैं। गीतमें निर्दिष्ट वादी स्वरके स्थानमें अनुवादीको लगा सकते हैं, इससे जातिरागका कोई अनिष्ट नहीं है। (सङ्गीतरत्नाकर १।७०)

शार्ङ्गदेवके मतानुसार षड्ज, मध्यम और गान्धार तीन देवकुल, पञ्चम पितृकुल, ऋषभ तथा धैवत ऋषि

कुल और निषाद असुरवंशमें उत्पन्न हुआ है। षड्ज, मध्यम तथा पञ्चम ब्राह्मण, ऋषभ एवं धैवत क्षत्रिय, निषाद तथा गान्धार वैश्य और अन्तर एवं काकली शूद्र वर्ण हैं। ७ मौलिक स्वर यथाक्रम—रक्त, ईषत् पीत, अतिपीत, शुक्ल, कृष्ण, पीत तथा कर्बुरवर्ण और जम्बु, शाक, कुश, क्रौञ्च, शाल्मली, श्वेत तथा पुष्करद्वीपमें उत्पत्तिलाभ किये हुए हैं। सङ्गीतशास्त्रमें वेदमन्त्रकी तरह सब स्वरोंके ऋषि, छन्द और देवताका उल्लेख मिलता है।

षड्ज तथा ऋषभ वीर, अद्भुत एवं रौद्रमें, धैवत वीभत्स तथा भयानकमें, गान्धार एवं निषाद करुणमें और मध्यम तथा पञ्चम हास्य अथवा शृङ्गाररसमें समधिक लगाना या वादी बनाना चाहिये।

(सङ्गीतरत्नाकर २५६)

मूर्छना, तान, जाति और जात्यंशयुक्त स्वरसमूहका नाम ग्राम है। स्वरग्राम तीन होते हैं—षड्ज, मध्यम और गान्धार। मनुष्य लोकमें प्रथम तथा द्वितीय ग्राम अवलम्बनेसे ही गीत व्यवहार चलता है। गान्धारग्राम मनुष्योंमें नहीं देख पड़ता, केवल देवलोकमें ही रहता है। जिस स्वरसमूहमें पञ्चम अपनी चतुर्थ श्रुति पर अवस्थित अर्थात् अविकृत होता, षड्जग्राम कहलाता है। इसी प्रकार पञ्चम अपनी तृतीय श्रुतिमें विश्रान्त अर्थात् विकृत पड़नेसे स्वरसमूहको मध्यमग्राम कहते हैं। सङ्गीतदर्पणके मतानुसार स्वरसमूहके मध्य धैवत त्रिश्रुति वा अविकृत रहनेसे षड्जग्राम और उसके पञ्चमकी चतुर्थ श्रुति ग्रहण करके चतुःश्रुति वा विकृत होनेसे मध्यम ग्राम कहा जा सकता है। स्वरसमूहके बीचमें गान्धार ऋषभकी अन्तिम तथा मध्यमकी आदिश्रुति धैवत पञ्चमकी अन्तिमश्रुति और निषाद धैवतकी अन्तिमश्रुति तथा षड्जकी आदि श्रुति ग्रहण करके विकृत होने पर गान्धारग्राम बनता है। दण्डिलके मतको देखते मध्यम ग्राममें पञ्चम, षड्ज ग्राममें धैवत और दोनों ग्रामोंमें मध्यम स्वरकी स्थिति आवश्यक है। इनके लोप वा उच्चारण न होनेसे ग्राम बिगड़ जाता है। परन्तु आवश्यक होने पर इसको छोड़ करके दूसरे स्वरोंका लोप करनेसे भी ग्राम बना रहता है।

(सङ्गीतरत्नाकर ३।७)

षड्ज ग्रामके ब्रह्मा, मध्यमके विष्णु और गान्धार ग्रामके अधिपति महादेव हैं। हेमन्त ऋतुके पूर्वाह्ण षड्ज ग्राम, ग्रीष्मके मध्याह्न मध्यम ग्राम और वर्षाऋतुके अपराह्णको गान्धार ग्राम अवलम्बन करके गाना चाहिये। (सङ्गीतरत्नाकर ३।८)

क्रमानुसार ७ स्वरोंका आरोहण अर्थात् पर पर रूपसे षड्ज प्रभृति सातों स्वरोंका उच्चारण और व्युत्क्रमसे अवरोहण अर्थात् पूर्व पूर्व भावसे निषाद प्रभृति स्वरोंका उच्चारण मूर्छा कहलाता है। वास्तविक पक्षमें उक्त आरोहण और अवरोहणयुक्त स्वरसमूहका नाम मूर्छना है। इसमें राग मूर्छित वा वर्धित होनेसे ही मूर्छना कहा जाता है। (भरतभाष्य, सङ्गीतरत्नाकर ३।९)

षड्जग्राममें उत्तरमन्द्रा, रजनी, उत्तरायता, शुद्ध षड्जा, मत्सरीकृता, अश्वक्रान्ता और अभिरुद्गता नामक ७ मूर्छनाएं हैं। इसी प्रकारसे मध्यम ग्राममें सौवीरी, हरिणाश्वा, कलोपनता, शुद्धमध्या, मार्गी, पौरवी तथा हृष्यका सात और गान्धार ग्राममें नन्दा, विशाला, सुमुखी, चित्रा, चित्रवती, सुखा एवं आलापी नामक ७ मूर्छनाएं लगती है। गान्धार ग्राम मनुष्य लोकमें न चलने या न बननेसे लौकिक सङ्गीतशास्त्रमें उसकी विशेष कथा वा मूर्छना का लक्षण आदि समझ नहीं सकते।

(सङ्गीतरत्नाकर ३।११ टीका)

मध्यस्थानस्थित षड्जसे आरम्भ करके निषाद पर्यन्त यथाक्रम आरोहण और निषादसे ले करके षड्ज पर्यन्त व्युत्क्रममें अवरोहण करने पर षड्ज ग्रामकी प्रथम मूर्छना उत्तरमन्द्रा उत्पन्न होती है। इसी प्रकार मन्द्रस्थानस्थित निषाद प्रभृति ६ स्वरोंसे आरम्भ करके निमित्त रूपमें आरोहण और अवरोहण लगाने पर रजनी प्रभृति दूसरी ६ मूर्छनाएं बनती हैं। मध्यस्थानस्थित मध्यम स्वरसे लगा करके यथानियम चढ़ने उतरने पर मध्यम ग्रामकी प्रथमा मूर्छना सौवीरी निकलती है। इसी प्रकार षड्ज स्थानस्थित निषाद आदि अपर ६ स्वरोंसे शुरू करके आरोहण और अवरोहण करने पर हारिणाश्वा प्रभृति दूसरी ६ मूर्छनाएं हुआ करती हैं। जिस स्वरसे चढ़ना आरम्भ करके जिस स्वरमें रुकना पड़ता और जिस स्वरसे उतरना शुरू करके जिस तक मूर्छना

समाप्त होती, वह स्वरके संक्षिप्त नाम द्वारा नीचे लिखा गया है। सङ्गीतशास्त्रके नियमानुसार मन्द्रस्थानीय पर बिन्दु और तारस्थानीय पर ऊर्ध्व रेखा लगाते और इसको छोड़ दूसरीको मध्यस्थानीय ठहराते हैं। वामदिकके प्रथमसे आरम्भ करके दक्षिण दिकके शेष स्वर पर्यन्त पहुंचनेका आरोहण और दक्षिण दिकका स्वर आदि बना करके वामक्रमसे ग्रामके शेष स्वर तक जानेका नाम अवरोह है। (सङ्गीतर॰ का॰ ११२)

षड्ज ग्रामकी मूर्छना।

१ उत्तरमन्द्रा—स रि ग म प ध नि।

२ रजनी—नि स रि ग म प ध।

३ उत्तरायता—ध नि स रि ग म प।

४ शुद्ध षड्जा—प ध नि स रि ग म।

५ मत्सरीकृता—म प ध नि स रि ग।

६ अश्वक्रान्ता—ग म प ध नि स रि।

७ अभिरुद्गता—रि ग म प ध नि स।

मध्यम ग्रामकी मूर्छना।

१ सौवीरी—म प ध नि स रि ग।

२ हारिणाश्वा—ग म प ध नि स रि।

३ कलोपनता—रि ग म प ध नि स।

४ शुद्ध मध्या—स रि ग म प ध नि।

५ मार्गी—नि स रि ग म प ध।

६ पौरवी—ध नि स रि ग म प।

७ हृष्यका—प ध नि स रि ग म।

मध्यम ग्रामकी ४थ, ५म, ६ष, और ७ मूर्छनाके साथ षड्ज ग्रामकी १म, २य, ३य और ४र्थ मूर्छनाका आपातत कोई भेद नहीं जैसा समझ पड़ता है। परन्तु वास्तविक पक्ष पर षड्ज ग्रामकी पांचवीं चतुःश्रुति और मध्यम ग्रामकी पांचवीं त्रिश्रुति होनेसे इनका परस्पर विलक्षण भेद होता है। मतङ्ग और नन्दिकेश्वरके मतानुसार प्रत्येक मूर्छनामें १२ स्वर रहते हैं। (मतङ्ग नन्दिकेश्वर) ६ विध मूर्छनाका आकार नीचे लिखा जैसा बतलाते हैं—

षड्ज ग्रामकी मूर्छना।

१मा—ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग।

२या—नि स रि ग म प ध नि स रि ग म।

३या—स रि ग म प ध नि स रि ग म प।

४र्थी—रि ग म प ध नि स रि ग म प ध।

५मी—ग म प ध नि स रि ग म प ध नि।

६ष्ठी—म प ध नि स रि ग म प ध नि स।

७मी—प ध नि स रि ग म प ध नि स रि।

मध्यम ग्रामकी मूर्छना।

१ली—नि स रि ग म प ध नि स रि ग म।

२री—स रि ग म प ध नि स रि ग म प।

३री—रि ग म प ध नि स रि ग म प ध।

४थी—ग म प ध नि स रि ग म प ध नि।

५वीं—म प ध नि स रि ग म प ध नि स।

६ठी—प ध नि स रि ग म प ध नि स रि।

७वी—ध नि स रि ग म प ध नि स रि ग।

आदि सङ्गीतशास्त्रप्रणेता भरतमुनिके मतमें गान या वाद्यके समय जिस स्थल पर कण्ठ वा हस्त कम्पित होता मूर्छना कहा जाता है। हनुमान् उसीको मूर्छना बतलाते, जहां षड्जादि स्वरसे प्रथमादिके उत्थान पर विराम दिखलाते हैं।

यह सब मूर्छनाएं फिर चार प्रकारकी होती हैं—शुद्धा, सकाकली, सान्तरा और काकल्यन्तरयुता। मूर्छनाका जो जो स्वर विकृत वा अविकृत उक्त हुवा है, ठीक वैसा ही रहनेसे शुद्ध मूर्छना कहते हैं। निषादस्वर षड्जकी २ श्रुतियां ले करके चतुःश्रुति होने पर काकली कहलाता और जिस मूर्छनामें वह आता उसको 'सकाकली' कहा जाता है। गान्धारस्वर मध्यमको २ श्रुतियां ग्रहण करके चतुःश्रुति होनेसे अन्तर बनता और उसके लगाये जानेसे मूर्छनाका नाम सान्तरा पड़ता है। कोई मूर्छना अन्तर और काकली लगनेसे काकल्यन्तरयुता हो जाती है। यह ५६ प्रकारकी मूर्छना प्रथमादि स्वरके आरम्भ भेदसे फिर सात प्रकारकी बनती है। अतएव सब मिला करके ३९२ प्रकारकी (७×२=१४, १४×४=५६, ५६×७=३९२) मूर्छना है। (सङ्गीतसार ११८)

यक्ष, राक्षस, नारद, ब्रह्मा, सर्प, अश्विनीकुमार और

वरुण यथाक्रम षड्जग्रामकी ७ मूर्छनाओंकी अधिपति हैं। ब्रह्मा, इन्द्र, वायु, गन्धर्व, सिद्ध, द्रुहिण और भानु यथाक्रम मध्यमकी ७ मूर्छनाओंके अधिपति कहे गये हैं। जिस मूर्छनाका जो अधिपति निर्दिष्ट हुआ, उसी मूर्छनासे प्रीति लाभ करता है।

जैसे आरोह और अवरोहक्रमयुक्त स्वर समूहको मूर्छना कहते, केवल आरोहक्रमयुक्त स्वरोंको तान अभिधान करते हैं। तान प्रथमतः २ भागोंमें बंटा है—शुद्ध तान और कूटतान। मूर्छना एक स्वर न रहने षट्स्वर और दो स्वर न रहने पर पञ्चस्वर होनेसे शुद्धतान कहलाती है। षट्स्वर शुद्धतानको षाड़व और पञ्चस्वर शुद्धतानको औड़व कह सकते हैं।

षाड़व शुद्धतान सब मिला करके उन्चास हैं। षड्ज ग्रामकी ७ मूर्छनाएं षड्ज, ऋषभ, पञ्चम वा गान्धार हैं। इनमें किसी एकके हीन होने पर अठाईस और मध्यम ग्रामकी ७ मूर्छनाएं षडज, ऋषभ और गान्धारमें कोई एक न रहनेसे २१ षाड़व शुद्धतान निकलते हैं

औड़व शुद्धतान ३५ प्रकारका होता है। षड्ज तथा पञ्चमहीन सात, गान्धार एवं निषादहीन सात और ऋषभ तथा पञ्चमहीन सात सब २१ तान हैं। इसी प्रकार मध्यम ग्रामकी मूर्छनासे ऋषभ तथा धैवत निकल जाने पर सात और गान्धार एवं निषादके अभावमें सात ये १४ तान लगते हैं। तानोंकी पूरी संख्या ८४ है।

पूर्ण वा असम्पूर्ण मूर्छना व्युत्क्रममें उच्चारित होने पर कूटतान कहलाती है। पूर्ण मूर्छनासे उत्पन्न होनेवालेको पूर्णकूटतान और असम्पूर्ण मूर्छनासे निकलनेवालेको असम्पूर्ण कूटतान कहते हैं। एक ही पूर्ण मूर्छनामें ५०४० कूटतान तक लग सकते हैं। पूर्ण मूर्छनाएं ५६ हैं। अतएव पूर्णकूटतान २८२२४० तक होते हैं।

पूर्ण मूर्छनाका एक भी अन्य न रहनेसे षट्स्वर असम्पूर्ण कूटतान हो जाते हैं। इसी प्रकार दोके अभावसे पञ्चस्वर, तीनके अभावसे चतुःस्वर, चारके अभावसे त्रिस्वर, पांचके अभावसे द्विस्वर और छहो अन्य स्वर न रहनेसे एक स्वर कूटतान कहला सकता है। इसी प्रकारसे प्रत्येक मूर्छनामें छहके हिसाबसे असम्पूर्ण कूटतान लगा करते हैं। षट्स्वरका षाड़व, पञ्चस्वरका औड़व, चतुःस्वरका स्वरान्तर, त्रिस्वरका साचिक, द्विस्वरका गाथिक और एक स्वर कूटतानका नाम आर्चिक है। नाम देखो।

पूर्वकथित स्वरोंमें कोई कोई स्वर दूसरे स्वरका साधारण हुवा करता है। यह दो प्रकारका है—स्वरसाधारण और जातिसाधारण। स्वर साधारण फिर काकली, अन्तर, षड्ज और मध्यम ४ भागोंमें विभक्त हुवा है। काकली और अन्तरका लक्षण पहले ही बतलाया जा चुका है। काकली षड्ज तथा निषाद और अन्तर स्वर गान्धार एवं मध्यमका साधारण होता है। गानक्रियामें षड्जके उच्चारण पीछे अवरोह क्रमसे पहले काकली और उसके बाद धैवतको लगाना चाहिये। इसी प्रकारसे मध्यमके पीछे अन्तर और ऋषभ प्रयोज्य है। शार्ङ्गदेवके मतानुसार जातिराग आदिमें काकली वा अन्तरका अल्प प्रयोग करना उचित है। निषाद और ऋषभ यथाक्रम षड्जकी आदि तथा अन्त्यश्रुति ग्रहण करने पर षड्ज साधारण कहला सकते हैं। गान्धार और पञ्चम क्रमानुसार मध्यमकी आद्य तथा अन्तिमश्रुति अवलम्बन करनेसे मध्यम साधारण होते हैं। षड्ज साधारण, षड्जग्राम और मध्यम साधारण मध्यमग्राममें लगाना चाहिये। कैशिकमें दोनों साधारणोंका प्रयोग किया जा सकता है।

भरतमुनिके मतानुसार एकग्राममें उत्पन्न समान अंश और स्वरयुक्त जातिमें परस्पर समान गानको साधारण कहनेमें कोई बुराई नहीं। (सङ्गीतरत्नाकर ४।६)

सङ्गीतदर्पणके मतमें रागालापयुक्तको ही जाति साधारण कहा जाता है। कोई कोई सङ्गीतवेत्ता कैशिक प्रभृति रागोंको जाति साधारण बतलाते हैं।

स्वरको यथा नियम उच्चारण करनेका नाम वर्ण है। इसीको गान वा गीत शब्दसे उल्लेख करते हैं। यह गानक्रिया वा स्वरका उच्चारण चार प्रकार है—स्थायी, आरोही, अवरोही और सञ्चारी। किसी स्वरके कियत् क्षण पर पर उच्चारणका नाम स्थायी है। जैसे—षड्जका सा सा सा और मध्यमका मा मा मा इत्यादि। जिस उच्चारणमें आरोह और अवरोह आता, यथाक्रम

आरोही तथा अवरोही कहलाता है। इन तीनों लक्षण युक्त उच्चारणको स चारो कहते हैं। कल्लावतीने इन्हीं गीतों और उच्चारणोंके कई एक दूसरे अलङ्कार भी दिखलाये हैं, उससे गानका सौष्ठव बढ़ता है।

गीतके आरम्भमें लगनेवालेको ग्रहस्वर, गीतसमापकको न्यासस्वर और गीतसे अधिक प्रयुक्त होनेवाले स्वरको अंशस्वर कहा जाता है।

सङ्गीतशास्त्रमें जातिके १३ लक्षण कहे हैं—ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, अपन्यास, सन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पता, अन्तरमार्ग, षाडव और औडव। यही त्रयोदश लक्षण जिसमें देख पड़ते, जाति कहते हैं।

पूर्व की जिस ग्रामकी बात लिखी, उसी ग्रामसे राग निकलता है। मनुष्य प्रभृतिका चित्तरञ्जन करनेसे आदि सङ्गीतवेत्ताओंने इसका नाम राग रखा है। सङ्गीतदर्पण (रागाध्याय ८।११) में लिखा है कि शिव तथा शक्तिके योग पर शिवके मुखसे श्रीराग, वसन्त भैरव पञ्चम एवं मेघ और गिरिराजके मुखसे नटराग उत्पन्न हुआ। इससे मालूम पड़ता कि सर्वप्रथम केवल छही राग थे, गानेवालोंने फिर उससे अपर राग, रागिणी, उपराग प्रभृति बना लिये। सङ्गीतशास्त्रमें सब मिला करके छः प्रति प्रकार राग और छत्तीस प्रकार रागिणी निरूपित हुई हैं और रागिणी रागकी भार्या जैसी कही गयी है। राग शब्द देखो। विभिन्न कालको इन्हीं राग रागिणियोंसे शुद्ध तथा मिश्रित भावमें बहुतसे गीत आविष्कृत हुए हैं। प्राचीन तत्त्व पर्यालोचना करनेसे समझ पड़ता है कि भारतवासियोंसे ही सर्वप्रथम सङ्गीतविद्या निकली फिर दूसरे जातीयोंने उसमें उन्नति की। मुसलमानोंके आधिपत्य समयको सङ्गीतविद्याकी विशेष उन्नति हुई। २ बड़ाई, नाम बड़ी।

(त्रि०) गै कर्मणि क्त। ३ शब्दित, गाया हुआ। ४ स्तुत, जिसकी तारीफ की गयी हो।

गीतक (सं० क्ली०) गीतमेव गीत स्वार्थे कन्। गीत।

गीतकण्डिका (सं० स्त्री०) गीतस्य कण्डिका, ६ तत्। सामवेदके परिशिष्ट।

गीतक्रम (सं० पु०) गीतस्य क्रम, ६ तत्। सङ्गीतमें एक प्रकारकी तान। बोल देखो।

गीतगोविन्द (सं० पु०) गीतो गोविन्दो यत्र, बहुव्री०। महाकवि जयदेव कृत एक ग्रन्थ। इसको गीतकाव्य भी कह सकते हैं। जयदेवने इसमें कवित्वकी पराकाष्ठा दिखलायी है। कविता अतिशय मधुर, प्रसादगुणविशिष्ट और शृङ्गाररससमन्वित है। यह ग्रन्थ द्वादश सर्गोंमें विभक्त और उसमें प्राय समस्त कृष्णचरित वर्णित हुआ है। संस्कृतमें ऐसे ठाटका काव्य प्राय देख नहीं पड़ता।

गीतगोविन्दमें शृङ्गाररसका आधिक्य देख करके कोई कहता है—निर्गुण ब्रह्मकी उपासना दुःसाध्य होनेसे जब सगुण रूपमें कृष्ण धार्य हुए, जयदेवको उचित न था कि वह शृङ्गार भावको वर्णना करते। किन्तु क्या स्वदेशीय और क्या विदेशीय बुद्धिमान् तथा सहृदयग्राही पण्डितोंने गीतगोविन्दको सूक्ष्मतत्त्व तथा भक्तत्व इसके प्रणालीसे मोहित हो उक्त कारण पर दोष व्यक्त न करके इसका अशेष गुणकीर्तन किया है। उन्होंने इसकी रूपकरचना भी बहुत अच्छी तरह समझा दी है। इस देशके सुप्राज्ञ भक्तोंको बात छोड़ दीजिये। बहुतसे विदेशीय नाना विद्याविशारद भाषातत्त्वज्ञ प्रत्नतत्त्ववित् यह स्थिर कर न सके, मधुर भाव मधुरच्छन्द निर्मल भक्तिपीयूषसिक्त प्रबन्ध आलोचना करके किस वाक्यविन्यासमें उसका गुण कीर्तन करें। सबसे पहले सर विलियम जोन्सने अंगरेजी भाषा, लासनने लाटिन, रूकर्टने जर्मन और सुकवि एडविन आर्नल्डने अंगरेजी काव्यमें इसको अनुवाद किया और ग्रन्थसम्बन्धीय महाप्रयोजनीय विषयका अल्पाधिक सुन्दर मन्तव्य लिखा। इन सब विद्वानोंने गीतगोविन्दका भागवताध्यात्मसारानुयायिक अर्थ समझने और समझानेकी चेष्टा की है। इसकी अनेक टीकाएं और अनेक देशीय भाषानुवाद दृष्ट होते हैं। गीतगोविन्दके पद मात्रावृत्तिमें बने हैं। इसकी रूपक-वर्णनामें गुह्य भाव पर नायक नायिकाकी कथाके छलसे दिखलाया गया है—जीवात्मा परमात्माका एक रूप होते भी मायावलसे अज्ञभावमें उसको विस्मृत हुवा करता है। यही फिर आराधनासे जाग करके स्मृतिपथारूढ़ होता है। उस समय जीवात्मा परमात्माके विरहमें व्याकुल हो उसको पानेके लिये घूमते घूमते तन्निकट उपस्थित हो पवित्र चित्तसे पवित्र प्रेमरसमें मुग्ध हो जाता

और उसीमें लीन हो करके परमानन्द पाता है। ऐसे ही गुह्य भावसे ईश्वरभक्ति की वर्णना फारसी भाषाके महाकवि हाफिजकी कितावमें मिलती है। बहुतसे विद्वानोंके मतानुसार गीतगोविन्द गौड़ाधिप लक्ष्मणसेनके समयमें रचित हुआ। (कवीन्द्र देखो।)

गीतज्ञ (सं॰ त्रि॰) गीतं जानाति गीत-ज्ञा-क। गीत जाननेवाला। गायक, गीतशास्त्रमें निपुण।

गीतपुस्तक (सं॰ क्ली॰) गीतस्य पुस्तकं ६ तत्। जिस पुस्तकमें गीतका विषय लिखा हुआ हो।

गीतप्रिय (सं॰ त्रि॰) गीतं प्रियमस्य बहुव्री॰। १ गानानुरक्त जिसे गीत अच्छा लगता हो। (पु॰) २ महादेव, शिव।

गीतप्रिया (सं॰ स्त्री॰) गीतं प्रियं यस्या बहुव्री॰। कार्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

गीतमोदिन् (सं॰ पु॰) गीतेन मोदते मुद-णिनि। १ किन्नर। (त्रि॰) २ जो गीत गानेमें आनन्द लाभ करे।

गीतवादन (सं॰ क्ली॰) गीतका गाना।

गीतशास्त्र (सं॰ क्ली॰) जिस शास्त्रमें गीतका विषय निर्णीत हो।

गीता (सं॰ स्त्री॰) गीयते आत्मविद्या यत्र, गै-क्त-टाप्। १ गुरु तथा शिष्यकी कल्पना कर कही गई आत्मविद्या, उपदेशात्मक ज्ञानगर्भ कथा। जैसे—शिवगीता, रामगीता सावित्रीगीता, पाण्डवगीता, भगवद्गीता (अर्जुनगीता), अनुगीता, भगवतीगीता, उत्तरगीता, जीवन्मुक्तिगीता, ब्राह्मणगीता, गोपीगीता इत्यादि।

२ भगवद्गीता। गीता कहनेसे प्रायः भगवद्गीताका ही बोध होता है। शङ्कराचार्यने भी अपने नाना प्रबन्धोंमें जब उसके विविध श्लोकोंको उद्धृत किया, अपने शासनमें कहीं भगवद्गीता 'कहीं' गीता, कहीं बहुवचनान्त गीताः शब्द लिखा है। (शारीरकभाष्य)

कोई कोई उस ग्रन्थका नाम ईश्वरगीता बतलाते हैं। (शारीरकभाष्य २।१।१८, २।१।७५) परन्तु दूसरे लोग इस बातका प्रतिवाद करते हैं। कादम्बरीमें द्व्यर्थ बोधक रचना स्थलमें अनन्तगीता नामसे इसका उल्लेख है। ग्रन्थान्तर और किसी किसी प्राचीन भाषानुवादमें उसको अर्जुनगीता भी लिखा गया है। *

कृष्णद्वैपायनने महाभारतसंहिताकी रचना की है। उसीका षष्ठ वा भीष्म पर्व ५८५६ श्लोकग्रथित और ११८ अध्यायोंमें विभक्त है। इसी पर्वमें अष्टादशाध्यायिनी ७०० श्लोकनिबन्धिता कृष्णार्जुनसंवादगता गीता है। जैसे महाभारत पञ्चम वेदकी भांति वर्णित हुआ, गीता वेदका शिरोभाग उपनिषद्, ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र कही है। शङ्कराचार्यने उसके सर्वोपनिषत्समन्वित विधि निषेध समष्टिको स्मृति जैसा भी ग्रहण किया है।

(गीताभाष्य १।१।१८८)

महाभारतके १८ पर्वोंमें प्रत्येकके मुख्य विभागको पर्वाध्याय कहते हैं। भीष्मपर्वमें ४ पर्वाध्याय हैं—१ जम्बुखण्डविनिर्माण, २ भूमिपर्व, ३ भगवद्गीता पर्वाध्याय और ४ भीष्मवध पर्व। प्रथम २ पर्वाध्याय १२ क्षुद्र अध्यायोंमें बंटे हैं। तृतीय अर्थात् भगवद्गीता पर्वाध्यायकी एक श्रेणी १३से २४ अर्थात् बारह और द्वितीय श्रेणी २५से ४२ अर्थात् १८ क्षुद्राध्यायात्मक हैं। इस प्रकार दोनों श्रेणियोंमें सब मिला करके ३० छोटे अध्याय हैं। प्रथम श्रेणीके २२वें अध्यायका नाम कृष्णार्जुनसंवादपर्व है। उसके बाद २३वें अध्यायमें दुर्गास्तोत्र कहा गया है, जो उक्त संवादके मध्य ही परिगणित हुआ है। द्वितीय श्रेणीके २५वें अध्यायसे उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्रान्तर्गत कृष्णार्जुनसंवाद भगवद्गीता कहलाता है।

गीताके प्रथमावधि १८ अध्यायोंका नाम क्रमशः १ सैन्यदर्शन वा अर्जुनविषादयोग, २ सांख्ययोग, ३ कर्मयोग, ४ ज्ञानयोग, ५ कर्मसंन्यासयोग, ६ ध्यान अभ्यास वा आत्मसंयमयोग, ७ विज्ञानयोग, ८ तारकब्रह्मयोग, ९ राजविद्या राजगुह्ययोग, १० विभूतियोग, ११ विश्वरूपदर्शनयोग, १२ भक्तियोग, १३ प्रकृतिपुरुषविभागयोग, १४ गुणत्रयविभागयोग, १५ पुरुषोत्तमयोग, १६ दैवासुरसम्पद विभागयोग, १७ श्रद्धात्रयविभागयोग और १८ संन्यास वा मोक्षयोग है।

गीताके श्लोकसंख्या गणना सम्बन्धमें नाना मत मिलते

* अकबर बादशाहके समय कई कोई महाभारतका फारसी भाषामें अनुवाद करनेसे पहले अन्यान्य कतिपय ज्ञानविद् मुसलमानोंने उसका और एक अनुवाद बनाया था। उसमें अष्टादश पर्वके अन्तमें "अर्जुनगीता" नामसे गीताका अनुवाद दिया है।

है। साधारणतः अधिकांश ग्रन्थों में ७०० और किसी किसीमें ७०१, ७०२ वा ७४५ गणनाका उल्लेख है। १३ वें अध्यायका प्रथम श्लोक * अधिकांश गीताओंमें नहीं है। इसको जोड़ लेनेसे श्लोकसंख्या ७०१ हो जाती है। एशियाटिक सोसाइटीने देवनागराक्षरों में जो महाभारत छपाया, ७०० श्लोक रहते भी श्लोकोंके विच्छेदानुसार ७०० अङ्क आया है। युक्तप्रदेशके लिखित महाभारतमें गीताके अन्तमें एक श्लोक है। उसमें बतलाया है कि गीतामें कृष्णोक्त ६२०, अर्जुनोक्त ५७, सञ्जयोक्त ६७ और धृतराष्ट्रोक्त १ श्लोक है। इन सभी अङ्कोंको जोड़नेसे ७४५ संख्या आती है। तैलङ्ग काशीनाथ त्र्यम्बकने अपनी गीताके अंगरेजी गद्यानुवादके मुखबन्धमें उक्त श्लोककी बात उठा करके कहा है--"हम ७४५ संख्याका कोई कारण निर्देश कर नहीं सकते हैं।" यह अनुमान लगाते हैं कि यह श्लोक किसी प्राचीन समयको महाभारतमें प्रक्षिप्त हुए होंगे। फैजीने फारसी भाषामें गीताका जो अनुवाद किया है, उसके अन्तमें लिखा है--वैशम्पायनने सञ्जेपमें गीताको प्रशंसा करके कृष्ण, अर्जुन, सञ्जय और धृतराष्ट्रको उक्त संख्याको क्रमानुसार ६२०, ५७, ६७ और १ बतलाया है। उसको जोड़नेसे ७४५ आता है। इस ग्रन्थकी प्रतिलिपि १२२२ हिजरीको लखनऊ नगरमें प्रस्तुत हुई थी। यह पुस्तक राजा सर राधाकान्त देवके पुस्तकालयमें रखी है। परन्तु शङ्करभाष्यमें गीताके ७०० श्लोकोंका ही उल्लेख है।

गीता अपनी महोत्कृष्टताके कारण बहुकालावधि महाभारतसे उद्धृत हो पृथक् रूपमें निकलती आयी है और इसका महोज्ज्वल गभीर भाव और बहुतसा जटिलत्व मिताक्षरोंमें संनिवेशित रहनेसे प्राचीन एवं नव्य विविध साम्प्रदायिक बुद्धिविशारद भक्त परिव्राजक प्रभृति महात्मा गीताके भाष्य, वृत्ति, टीका, टिप्पणी तथा विविध प्रकार व्याख्या स्व स्व भावोदयके अनुसार करते रहे हैं। इन सभी व्यक्तियोंके कृत भाष्यादि नाना देशोंमें विद्यमान हैं और प्रकाशित होते हैं। अनेकव्याख्या विवृतियां जो पूर्वकालको निकली थीं, लुप्त हुई, भविष्यत्में वह आविष्कृत भी हो सकती हैं।

महाभारतके प्राय सभी टीकाकारोंने नाना प्रणालियोंमें गीताका अर्थ सुबोधगम्य और तत्सम्बन्धीय तत्त्व तथा रस साधारणके हृदयग्राही बनानेका विशेष यत्न किया है। फिर भी उसमें अनेक कूट लक्षित होते हैं और कोई कोई कथा अभी भी असीमांस्य हो रह गयी है। महाभारतकी माहात्म्यसूचक रूपकवर्णनामें लिखा है कि व्यासजीके मस्तिष्कमें महाभारत ग्रथित होने पर ब्रह्मा अपने आप उनके उत्साहवर्धनार्थ पहुंचे और गणेशजीने लेखकपद ग्रहण किया था। किन्तु जब गणेशजीने प्रस्ताव किया कि हम चारों हाथोंसे लिखेंगे और व्यासजीके कविता कण्ठोदित करने या रचनानुरोधसे क्षणकाल ठहरनेसे लेखनीका वेग रुकने पर लिखना छोड़ देंगे। व्यासजी मन ही मन कहने लगे--गणेशजी कविताके सकल स्थल बिना समझे बूझे लिपिबद्ध कर न सकेंगे। व्यासजीको कण्ठनिःसृत कवितामें ८८०० कूट श्लोक उच्चारित हुए। उसका प्रकृत अर्थ बोधगम्य करनेके लिये गणेशजीको समय समय पर सोचना और लेखनीका वेग रोकना पड़ा था। उन्हीं श्लोकोंका नाम व्यास कूट है। अतएव कौन कह सकता है कि गीताके मध्यमें भी व्यासकूट नहीं।

अनुपम अनन्यप्राप्य हृदयाकर्षणीय गुण रहनेसे भारतवर्षके प्राय सभी सभ्य स्थानोंमें तत्तद्देशीय विविध सम्प्रदायी हिन्दुओंने स्वदेशप्रचलित अक्षरोंमें गीताका मूल लिख या छाप और अपनी २ देशभाषामें अनुवाद करके रखा है और करते जा रहे हैं। देशी और विदेशी नाना विरोधी धर्मावलम्बी लोग भी (जो हिन्दू नहीं हैं) गीताकी महिमाध्वनि सुन करके अपनी अपनी भाषाके गद्य पद्यमें उसका अनुवाद, रहस्य, व्याख्या, समालोचना, अनुमोदित धर्मालोचना और प्रशंसावाद प्रकाश करते हैं।

किसी निरभिमानी फारसी इतिहासवेत्ताने ११२६ ई०को स्वीय रचित इतिहासमें लिखा है कि अबू सुलह कर्तृक किसी प्राचीन संस्कृत ग्रन्थका अरबी भाषामें एक अनुवाद रहा। १०२६ ई०को यही अरबी अनुवाद अबुल-हुसेन नामक एक व्यक्ति द्वारा फारसी भाषामें अनु-

* "प्रकृतिं पुरुषञ्चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च।
एतद् वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयञ्च केशव॥"

वादित हुवा था। इसी ग्रीपोत ग्रन्थको अनेक कथाएं उक्त इतिहासवेत्ताने अपने इतिहासमें सन्निवेशित की हैं। सुप्रसिद्ध इलियट साहबने उसको देख कर कहा है कि उसमें महाभारतकी बहुतसी कथाएं अविकल मिलती हैं। यदि यह बात सच हो, तो महाभारत-गीताका अनुवाद १००० वर्षसे बहुत पहले किया गया जान पड़ता है। यह विषय पुरातत्त्वविदोंको अनुसन्धेय है।

उन्नतहृदय राजनीतिज्ञ प्रजापालक अकबर बादशाह अपने राज्यमें हिन्दू मुसलमानोंके बीच धर्मसंक्रान्त विरोधजनक नाना प्रकार विप्लव पड़ते देख सर्वदा उसके निवारणके सदुपायकी चिन्ता किया करते थे। शास्त्रज्ञ तथा तत्त्वज्ञ विद्वानोंके साथ मुसलमान, यहूदी और ईसाई धर्मावलंबियोंका तर्क वितर्क उत्थापन तथा तत्तद्धर्मकर्म जिज्ञासा करके उनकी धारणा हो गयी थी—मुख्य रूपमें सभी प्रचलित धर्मोंका मूलतत्त्व एक ही है, स्व स्व धर्मके सारग्राहियोंमें सद्भाव नहीं टूटता। केवल मूढ़ वा वाह्यक्रियारत खण्डग्राही धर्मसांप्रदायिकों किंवा कूट अभिसन्धिसाधक लोगोंमें ही अनर्थक वाद विवाद उठा करता है। इसीसे उन्होंने स्थिर किया कि हिन्दू मुसलमान उभय धर्मावलंबियोंके ज्ञानगर्भ मनोरञ्जन प्रधान प्रधान ग्रन्थ एक दूसरेकी भाषामें प्रांजल रूपसे अनुवाद कराके उनके पाठार्थ व्यवस्था करने पर युक्तिसिद्ध कार्य होगा। १५८४ ई०को उनके आदेशसे संस्कृतज्ञ सुकवि राजमन्त्रि-भ्राता फैजीने महाभारतका फ़ारसी अनुवाद निकाला था। वह मुसलमानोंके पढ़नेको प्रचारित होने लगा। इसीसे गीता पृथक्‌रूपसे पाठ्य ग्रन्थ बन गयी।

१७४४ ई०को अङ्गरेजी राजत्वके प्रारम्भमें (Charles Wilkins) विलकिन्स साहबने मूल गीता पाठमें महानन्द अनुभव करके संस्कृत शास्त्रकी महोत्कृष्टता और भारतवर्षमें पुराकालावधि तत्त्वज्ञान तथा सुनीतिका जो प्रादुर्भाव रहा, उस समयके बड़े लाट वारन हेष्टिङ्गसको समझानेके लिये गीताका प्रथम अंगरेजी अनुवाद करके उपहार दिया था। बड़े लाट हेष्टिङ्गसने तत्पाठसे मोहित हो कोर्ट-अफ-डिरेक्टर्सके अधासको ग्रन्थका मर्म और उसके ज्ञानसे लोगों—विशेषतः भारतके अङ्गरेजी राजपुरुषोंका क्या उपकार होता, दिखला करके कोर्टके अनुमतिक्रमसे १७८५ ई०में उसको प्रकाश कराया। उन्होंने इसो प्रथम संस्करणमें अपने आप गीताकी बहु प्रशंसात्मक मुखबन्ध-जैसी एक प्रस्तावना लिखी है। फिर भी कई गद्य-पद्यात्मक अङ्गरेजी उलथे हुए। १८२३ ई०को सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ तथा तत्त्ववित् जर्मन (A.W. Schlegel) स्लेगेल साहबने देवनागराक्षरोंमें गीताका मूल और लाटिन भाषामें उसका अनुवाद एकही पुस्तकमें प्रकाश किया। इससे पहले उन्होंने अपने तत्त्वावधान पर पेरिस नगरमें देवनागराक्षर बनाये थे, उसीमें गीता मुद्राङ्कित हुई।

१८५८ ई०को सुप्रसिद्ध विद्वान् (H. H. Wilson) विल्सन साहबने लण्डन एशियाटिक सोसाइटीमें एक प्रबन्ध पढ़ा। उसमें कहा गया कि (Galenus Demetrius) देमेत्रिया नामक किसी यूनानी व्यक्तिने ग्रीक (यूनानी) भाषामें गीताका अनुवाद किया था। इन्होंने काशीमें संस्कृत पढ़ा और वहीं गीतानुवाद रचा। उनके मरने पर यह पुस्तक एथेन्स नगरमें छापा गया। फरासीसी (फ्रेञ्च) भाषामें गीताका अनेक प्रकार अनुवाद समय समय पर प्रकाशित हुआ। बहुतसी भाषाओंके ज्ञाता प्रत्नतत्त्ववित् (Eugene Burnouf) बरनूफ साहबने जो श्रीमद्भागवतके एकमात्र अनुवादक थे, १८२५ ई०को गीताका पहला फरासीसी अनुवाद किया था। फिर (Fauche) फोशे साहबने समस्त महाभारतके फरासीसी उलथा बनानेका सङ्कल्प किया और १८६३से १८७२ ई० तक १० वर्षके बीच आदिपर्व अवधि क पर्व पूर्ण करते करते वे कालग्रासमें पतित हुए। इस अनुवादमें गीताका भी उलथा यथास्थान पर छपा है। १८६८ ई०को संस्कृतवित् धर्मतत्त्वज्ञ (Dr. F. Lorinser) लोरिन्सर साहबने जर्मन भाषामें अपने बहुमन्तव्य कथनके साथ गीताका अनुवाद निकाला था। उसमें इसके नाना अनुसन्धेय विषयोंकी जो आलोचना लिखी, वह विशेष कौतुकावह है। बाइबिलके साथ गीताका सौसादृश्य दिखलाया गया है। इसी प्रकार युरोपकी इटालीय, रूसी प्रभृति प्रायः सभी मुख्य भाषाओंमें गीताका अनुवाद प्रकाशित हुआ है। सिवा इसके यवद्वीपके

निकट वलिद्वीपमें 'कवि' नामकी किसी प्राचीन भाषामें महाभारतके अनेक भागों का अनुवाद मिला है। सम्भव है, उसमें गीताका भी अनुवाद हो। काशीके एक विद्याविशारद धर्मपरायण संन्यासीने बतलाया है कि उसने चीन देशीय किसी परिव्राजकके हाथमें गीताका चीना अनुवाद देखा था। अमेरिकाके सर्वप्रधान कवि इमर्सन गीताके अद्वैत भावमें उन्मत्त रहे।

गरुडपुराण, पद्मपुराण वराहपुराण प्रभृति पुराणों और वैष्णवीय तन्त्र आदिमें गीतामाहात्म्य विविध भावमें प्रकाशित हुआ है। दूसरे यह भी सुस्पष्ट समझ पड़ता है कि श्रीमद्भागवतके किसी किसी अध्यायमें गीताके अनेक मनोहर भागों की विवृति की गयी है। श्वेताश्वतर उपनिषद्के भाष्यमें गीताके बहुतसे श्लोक उसके भाव परिचयार्थ उद्धृत हुए हैं।

गोस्वामी, वैष्णव आदि ज्ञान तथा भक्तिमार्गके व इतने ग्रन्थ गीतावलम्बनसे ही प्रकाश किये हैं। अब जिज्ञास्य है—क्या कारण है जो गीता इस प्रकार सर्व-श्रेष्ठ समादरणीय धन बनी हुई है। इसका प्रधान हेतु जो निगूढतत्त्व गूढानुगूढतत्त्व, सूक्ष्मानुसूक्ष्म विषय सकलजातीय ज्ञानियों का आलोच्य एवं चिन्तनीय और जो जीवमात्रका आकाङ्क्ष तथा परित्याज्य है, उसीका साधन और वर्जनीय उपाय तथा फलाफल और जीवन यात्रानिर्वाहका सन्मार्ग विकाश श्रीमद्भगवद्गीतामें अति मनोहर छन्दमें रचना चातुर्यसे संक्षेपतया सदृश उच्च प्रबन्ध सम्भवपर प्राञ्जलताके साथ वर्णित हुआ है। अनन्त जगत्का निदान स्थिति तथा परिणाम जन्म, जीवन एवं मरण, सुख, दुःख, देह, मन, ज्ञान और मूढ़ता धर्माधर्म, पाप, पुण्य, कर्तव्याकर्तव्य, सद्गति एवं अधोगति, आत्मोन्नति, आत्मविषाद, स्वर्ग, नरक प्रभृति विषयों का सदर्थ तथा उसके सम्बन्धमें विविध प्रकार संस्कारापन्न लोगों के लिये आचरणीय सहज सत् उपदेश, कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और भक्तिमार्ग ब्रह्मानन्द, ब्रह्मार्चना और जगत्हितैषिता व्रत इत्यादि विषयक परिचय हृदयग्राही रूपमें गीतामें पाया जाता है।

गीताकी शिक्षा—एक ही ईश्वर है। वह अनादि अनन्त और पूर्ण होता है। उसकी दुर्ज्ञेय आभावत् शक्तिमेंसे प्रकृति वा त्रिगुणात्मिका मायामेंसे यह अनन्त जगत् निकलता और उसीमें मिलता है। इसी प्रकार पुनर्जन्म और पुनर्लय अनन्तकालव्याप्त है। ईश्वर अपने आप निष्क्रिय होते भी मायावृत हो जीवलोकमें देहधारण करता है। वह देही (जीवात्मा) वा पुरुषपदवाच्य है और वही स्वयं पुरुषोत्तम है। प्रकृतिके नियमसे देहका जन्म, वृद्धि, ध्वंस अर्थात् विकार होता है। किन्तु देह नाशसे देही नहीं मिटता, देहान्तर मात्र धारण करता है। देही (आत्मा) अविनश्वर, अजात और अविकारी है। वही विशेष रूपमें परमात्मा वही सत् (एकमात्र विद्यमान) है। सुतरां समस्त जगत् उसीका मूर्ति स्वरूप है। उसका अंश ही अस्फुट भावमें जड़ और क्रमशः उत्तरोत्तर स्फूर्तिमें उद्भिद्, कीटपतङ्ग, पशुपक्षी, सिद्ध, ऋषि, भूमण्डलातीत ब्रह्माण्ड (द्युलोक)वासी दिव्यपुरुष (देवता) और महास्फूर्त भावापन्न अवतार होता है इसीलिये वह सत् तथा असत् (सूक्ष्म और असूक्ष्म) और इन दोनोंसे अतीत है। संसार प्राकृतिक नियमसे बनता और बिगड़ता है। विप्लव उठने पर अवतार आविर्भूत और उसकी क्रियासे यह शोधित होता है। संसारमें प्राकृतिक नियमसे सुखदुःख उद्भावित है। जीवमात्र सुखान्वेषी और दुःखदूरकरणेच्छु होता है। इन्द्रिय और तद्ग्राही विषयके संयोगसे जो सुख दुःख मिलता, उसका अस्तित्व नहीं देख पड़ता। ऐसी अनित्य विषय ईश्वरको आत्मा सौंपने और अभ्यास बल-से मनोविकार ला नहीं सकता। बुद्धिग्राह्य आन्तरिक सुख ही गीताके मतानुसार सेवनीय है।

ईश्वरके ध्यान, ईश्वरके महिमानुभव, तत्कीर्तन और तत्सम्बन्धीय उच्च भाव आत्मसात् करने और उसके बल पर स्वतः सर्वमूलका शत्रु मित्र भाव परित्याग करके हित-साधनमें रत होनेसे उक्त प्रकार अखण्डनीय चिरवर्धन-धर्मी सुख उद्भूत, सर्वदुःख लुप्त और सर्वप्रकार अपर विषयक क्षुद्र सुख इसी महानन्दसे मज्जित होता है। फलाफल ईश्वरको अर्पण करके प्राकृतिक नियमसे जो कार्य अवश्य ही करना पड़ता, उसकी क्रियाके अनुष्ठान में कभी भी दुःख नहीं लगता। परन्तु निज इन्द्रिय

ठमिकर सुखसाधनाके लिये पुख्यादि कर्म अर्थात् सकाम अनुष्ठान करनेसे वैसी सिद्धि कहां मिलती, इससे मुक्तिलाभमें बाधा पड़ती और नानाविध दुर्गति लगी रहती है। किसी अणुके सूक्ष्मानुसूक्ष्म अंशसे अति विशाल ब्रह्माण्ड और उसकी समष्टि तक जो अनन्ताकाशमें अनंतकालावधि ससुद्रवालुकावत् व्याप्त हो रहा है, सभी एक दूसरे पर स्व स्व धर्मानुयायिक कार्य करता है। मनुष्यको गर्भच्युतिसे यावज्जीवन समस्त जगत् उस पर अपना कार्य देखाता और यह कार्यफल यावज्जीवन चला जाता है। अपना अपना नया कार्यगत फल इहलोक और जन्मजन्मान्तरसें भोग करना पड़ता है। सुतरां कर्मबन्धमुक्त हो जीवात्माका परमात्मामें लय होना (निर्वाणप्राप्ति) अनिर्वचनीय दीर्घकालव्यापी जटिल और दुर्ज्ञेय व्यापार है। योग नामक कर्मकौशल इस निर्वाणप्राप्तिका साधक है। योगकी नाना पन्थाएं नाना ग्रन्थोंमें विवृत हुई हैं। किन्तु आहारादिका नियम और अन्यान्य विविध चेष्टाओं द्वारा पिण्डविशुद्धकारी संयमन, सद्गुरुके निकट तत्त्वोपदेशग्रहण और अन्तमें भक्त्युद्दीपनसे आत्मज्ञान लाभ करके तन्मय हो जाना सद्योगका मुख्य उद्देश्य है। ईश्वरको यद्यपि लोग नाना प्रकारसे भजन करते और सर्वप्रकारसें कार्यानुरूप सिद्धि पाते रहते, तथापि आत्मज्ञानानुशीलनमें को जानेवाली भजनाको ही प्रकृष्ट समझते हैं। उस ज्ञानका चरम फल यही दृढ़ोपलब्धि है कि सर्वभूतमें एकमात्र ईश्वर और सर्वभूत ईश्वरमें अवस्थित है। सुतरां साधक सिद्ध होने पर अपने आपको ईश्वरसे भिन्न समझ नहीं सकता। इसी समय 'सोऽहं' (वह मैं हूं), 'अहं सः' (वह मैं), 'ब्रह्ममय' जगत्' (संसार ब्रह्मरूप है) भाव उसका दृढ़ निश्चय हो जाता है। वह ज्ञानचक्षुसे जगत् एवं संसारसृष्टि दर्शन कर नहीं सकता। महाकविका विशाल भावानुभाव अतिक्रम और उसके शोभादर्शनमें महाविज्ञानशास्त्रविदोंको तीक्ष्ण बुद्धिको अपेक्षा भी सूक्ष्मबुद्धिसे अनन्तकौशलका निगूढ़ तत्त्व भेद करके साधक सदानन्दसागरमें डूबा रहता, उसका चित्त कभी भी किसी प्रकारसे विक्षुब्ध नहीं पड़ता और सर्वदा निर्भय लगता है। अपनी उपमामें सबका सुख दुःख समभावसे देख करके वह विश्व-दास्य-व्रतधारी, दयाशील, सत्यपरायण, बालवत् ऋजुस्वभावविशिष्ट, महोन्नतात्मा, मृदुभावापन्न इत्यादि सब उज्ज्वल तथा महोत्कृष्ट गुणोंसे भूषित और सर्वप्रकार क्षुद्र अधम निकृष्ट भावसे अपरिचित हो जाता है। विषय कामनाएं सुबुद्धिको मलिन करती हैं। यही कामनाएं ईश्वरनिष्ठा सुतरां शान्ति और मुक्तिमें बाधा डालनेवाली है। ज्ञान तथा बुद्धिकौशल और अभ्यासबलसे कामना न दबने पर सर्वनाशकारिणी हो जाती है। विश्वमण्डलके भिन्न भिन्न पर्वस्वरूप जो एक एक पृथक् वस्तु पड़ता, उसमें मनुष्य भी ठहरता है। अन्यान्य वस्तु जैसे अपने अपने प्राकृतिक नियम और गूढ़ भावसे परम्परको अनुकूलता करते, मनुष्य नान्नियमवशतापन्न होते भी चित्शक्तिको अपेक्षाकृत स्फूर्ति रहनेसे अपने बल पर स्वशरीर और मनको अन्यप्रकार बदल सकते हैं। मालूम पड़ता, इसीसे उनके पक्षमें उक्त प्रकारका कोई कार्य मानो स्वतन्त्रभावसे किया जा सकता है। परन्तु वास्तविक वह जहां तक बुद्धिमायोत्तीर्ण हो सकते, बुद्धिशक्तिके नियमानुसार कार्य करते हैं और जब माया बुद्धिको महाजड़ीभूत बना डालती, इस मायाबलसे उक्त जञ्जीरकी कड़ी (मानव) अपना तथा अन्यान्य शृङ्खलपर्वोंका प्रतिकूलाचरण लगाती है। ऐसा होने पर भावना ही मायाके प्रतिनिधि-जैसा कार्य करती है। उक्त अनुकूलता ही पुण्य और प्रतिकूलता पाप है। इहलोक वा परलोकमें विषयभोग कामना ही पापका बीज ठहरती है। यह दुष्पूरण अग्निवत् कामना शुद्ध शरीर और शुद्ध चित्तमें केवल ईश्वरके ध्यानसे दमित होती है। तब जीवभूत चिदंश चित्-मध्य (ईश्वर)में लगनेसे इस मायाकी प्रतिनिधि कामना एककालको निर्वापित हो जाती, मनुष्य अपना और दूसरेका कल्याणसाधन करता है। इन्द्रिय, मन और बुद्धि कामनाका आधार हैं। सुतरां इन सबके दमनका कौशल समझना भी एक महत् कार्य है। यह गुरुतत्त्वविशिष्ट गुरूपदिष्ट ज्ञानीको छोड़ कर के किसी दूसरेका बोधगम्य नहीं—मनुष्यकी पापपुण्य विषयमें क्या स्वतन्त्रता और क्या परतन्त्रता है ? इस विषयमें हठात् अज्ञानियोंके बुद्धिभेदकी चेष्टा करनेसे उनका विस्तर अनिष्टोत्पादन सम्भव है। उनके लिये

मीमांसा पर दृष्टि रख करके कहा हुआ है कि अव्यक्त निराकार अनादि अनन्त निर्विशेष, अव्यय इत्यादि केवल अभावसूचक शब्द द्वारा अनिर्देश्य अचिन्तनीय ब्रह्मकी उपासना देहधारीके लिये दुःसाध्य है। फिर अपेक्षाकृत क्वचित् चिन्ताभाव(यथा—तमसः परस्तात्, दिव्यद्योतक भूतेश्वर, भूतभावन, स्थाणु, कवि, सर्वज्ञ, सर्वविद्यानिधाता, समदृष्ट, सर्वभूतका वीज, परम पुरुष, विश्वनियन्ता, विधाता, विश्वपिता, विश्वमाता, स्रष्टा, रक्षक, संहर्त्ता, सुहृत्), मन, बुद्धि, ज्ञान, परिज्ञाता, प्राण, बल, वीर्य, सबका आदि-मध्य-अन्त इत्यादि भाव और सर्वप्रकार उज्ज्वल मनोवृत्तिका भाव (दया, सत्य, शम, दम, अभय, अहिंसा, क्षमा, पवित्रता, ऋजुता प्रभृति) तथा क्रमशः अनुभवातीत ज्योतिः (सूर्य, चन्द्र, अग्नि, प्राकृतिक महोज्ज्वल इन्द्रियगोचर पदार्थादि) और वेद, यज्ञ, तपस्या, दान, प्रणव इत्यादि (उसके पीछे वृहस्पति, शुक्राचार्य, व्यासमुनि तथा कपिलादि ज्ञानी और प्रह्लादादि भक्त पुराणवर्णित पुरुष इत्यादि) मूर्तिनिर्देशसे उपासना सुबोधगम्य बना दी गयी है। किन्तु शब्दोंका गूढ़ार्थ यही है कि निर्गुण ब्रह्मकी अभावसूचक शब्द द्वारा वर्णित उपरि उक्त तथा तदतिरिक्त गुणोंके साथ मिश्रित पूर्णब्रह्म घनीभूत आकारसे कृष्णावतार महासुलभचिन्ता है और उसके ध्यानमें तद्भावाविष्ट हो करके इहलोक और परजन्मान्तरमें उसकी प्राप्ति होती है।

कृष्णोपासक स्व स्व प्रकृति, शिक्षा, बुद्धि, पूर्व पूर्व कर्मफल और इहलोकके विविध सङ्गठनभेदसे नाना भावोंमें उनका ध्यान पूजादि करते हैं। सर्वोच्च श्रेणीके ब्रह्मव्यञ्जक ध्यानयोगसे रूपक भावमें उनकी उपासना उठाते हैं। कोई उन्हें चतुर्भुज नारायणकी एक द्विभुज मूर्ति देवताके भावमें देखता है। कोई उनकी भजना वृष्णिवंशीय यदुकुलोद्भव वासुदेव माधव मधुसूदन योगेश्वर महातेजस्वी पुरुष जगद्गुरु स्वरूप समझ करके ही किया करता है। कोई उन्हें कामदाता समझ करके नाना कामनाओंके पूर्ण होनेके लिये उनके स्तव पढ़ता है। इसी प्रकार उसकी बहुत अर्चना है। इसमें जो इहलोक वा परलोककी सर्व कामना सिद्धिके अभिलाष वर्जित हो मोक्षलाभ पर भी दृष्टि न डाल उनकी भक्ति और उनके प्रेममें मग्न 'तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणा' व्रत ज्ञानयज्ञरत और सर्वभूतहितरत हुआ करते हैं, अति दुर्लभ है। वही सब श्रेष्ठ माने गये हैं। किन्तु अन्यान्य श्रेणियोंके उपासक जो पुष्प पत्र फल जल इत्यादि द्रव्य द्वारा तथा होमादि क्रियासे उनको पूजते, केवल तत् कर्म फलमात्र पाते हैं।

जिस कालको गीता रचित हुई, उस समय भी कृष्णमतकी अवहेला करनेवाले बहुतसे लोग रहे। उनके प्रति करुणाभावकी कथा भी गीतामें कही है। पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा, योगशास्त्र सबके आजकल जो जो ग्रन्थ देख पड़ते उनके मतोंकी अनेक कथाओंका सत्त और नास्तिक मत भी यथायोग्य कृष्णमतके साथ गीतामें प्रकाशित हुआ है।

गीताका पूर्वोक्त विषय—ईश्वर, जगत्, नरत्व, कर्म, ज्ञान, भक्ति, पूजा प्रभृति शब्दोंमें द्रष्टव्य है।

यद्यपि महाभारतके संग्रह कालको तत्पूर्व समयके वेद उपनिषत् प्रभृतिके अनेक मत और उद्धृत वचन गीतामें सन्निवेशित हुए हैं, तथापि कृष्णमत अन्यान्य नूतन उपादानोंके साथ संघटित और विशेष विशिष्टस्थलमें "मे मतं" "मे मतिः" इत्याकारसे सुतेजित और समर्थित किया गया है।

सकल ज्ञानोंका सार और सब शास्त्रोंका मुख्योद्देश्य साधन मानवजातिके लिये सर्व प्रधान कर्तव्य है। गीतारहस्य यही है—आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्त अनन्त विषयका असीम विकास्य ७०० श्लोकगत चित्र कैसे गीतामें कौनसी प्रणाली और किस नियमसे सन्निविष्ट हुआ है। जैसे क्षुद्र वट वा अश्वत्थ बीजसे महाविशाल तरुशाखादि प्रवर्धित होते, गीताके प्रथम अध्यायमें अर्जुनकी विषादसूचक बहुत थोड़ी और द्वितीयाध्यायमें तदानुसङ्गिक सामान्य कथासे उपर्युक्त एक विशाल तत्त्व निकाले है। अर्जुनने कुरुक्षेत्रमे युद्धोत्साही स्वीय तथा विपक्ष सैन्यदलको देख मोह प्राप्त हो करके अपने शरीर, मन और हृदयकी अवस्था तथा अपना उद्भावित मत कृष्णके समक्ष बतलाया था। इसी परिचयमें उन्होंने उपस्थित युद्धकर्म करनेकी अपनी अनिच्छा भी जतलायी और उसके लिये जो सब कारण निर्दिष्ट हुए, उनके

खण्डन पर क्रयोक्ति भी आयी है। इसी उक्तिमें अर्जुन को सीधी रीति पर समझाने लिये अन्य प्रश्न पर एक एक अध्याय है। गीताके रचना समय पर अनेक मतामत मिलते हैं। महाभारत देखो।

३ सङ्कीर्ण रागका एक भेद। ४ २६ मात्राका एक छन्द जिसमें १४ और १२ मात्राओं पर विराम होता है। ५ वृत्तान्त, कथा, हाल।

गीतायन (सं० क्ली०) गीतस्य अयन आश्रय, ६ तत्। गीतयुक्त।

गीतासार (सं० पु०) गीताया सारो यत्र, बहुव्री०। यद्वा गीतास्य सार, ७ तत्। गरुडपुराण पूर्वखण्डके २३२ अध्यायसे २३६ अध्याय पर्यन्त ग्रन्थविशेष। जिसमें गीताका साराश संक्षेपसे कहा अथवा जो गीताकी अपेक्षा उत्कृष्ट हुआ, गीतासार कहलाता है। गीता वेदव्यास-की अमृतमयी लेखनीसे निःसृत पीयूषधारा है। इस गीतासारमें उसीका सारांश कहा हुआ है। इसके वक्ता स्वयं भगवान् हैं। गरुडपुराणमें उसके श्रोताका कोई उल्लेख नहीं है। फिर भी इतना लिख दिया गया है-'भगवान्ने कहा कि उन्होंने पूर्वकालको अर्जुनके निकट जिस गीतासारका प्रकाश किया था,उसे कीर्तन करेंगे। इससे मालूम पड़ता कि भारतयुद्धके आरम्भमें अर्जुनको मोह उपस्थित होने पर भगवान श्रीकृष्णने उन्हें जो विस्तृत उपदेश दिया, मोहग्रस्त अर्जुनने उसको धारण न किया था। पीछेको भगवान् कर्तृक उसका साराश पुनर्वार उपदिष्ट हुआ। इसीको गीतासार कहते हैं। भारतमें उसका कोई प्रसङ्ग नहीं है। गीताका प्रधान उद्देश्य हो प्रतिपादन करना है कि फलका अभिलाषी न हो केवल कर्तव्यता बोधसे लौकिक और वैदिक कार्यका अनुष्ठान करनेसे ही मनुष्य सुखी हो सकता है। किन्तु इस गीतासारमें उसकी कोई कथा उल्लिखित नहीं हुई। इसमें तत्त्वज्ञान मुक्तिका साक्षात् कारण और अष्टाङ्ग योग चित्तशुद्धिका कारण जैसा ठहराया है।

गीति (सं० स्त्री०) गै भावे क्तिन्। १ गान। २ मात्रा वृत्तविशेष। इसके सम चरणोंमें १८ और विषम चरणों-में १२ मात्राएं होती हैं। इसके अन्य नाम—उद्‌गाथा और उद्‌गाहा।

गीतिका (सं० स्त्री०। गीतिरिव कायति कै क टाप्। १ एकमात्रिक छन्द जिसके हरएक चरणमें २६ मात्राएं होती हैं। १४ तथा १२ पर यति होती है और अंतमें लघु गुरु होते हैं। २ एकवर्णिक छन्द जिनके हरएक चरण-में सगण, जगण, भगण, रगण और लघु गुरु होते हैं। ३ गीत, गाना।

गीतिकाव्य (सं० क्ली०) गान-मिश्रितकाव्य।

गीतिन् (सं० त्रि०) गीत गानमस्त्यस्य गीति इनि। गान करनेवाला।

गीतियाँ (सं० स्त्री०) छन्दविशेष, जिसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरणमें १६ लघुपद रहते हैं।

गीतिरूपक (सं० पु०) कम गद्य तथा अधिक पद्यका एक तरहका रूपक।

गीया (सं० स्त्री०) गै यक् टाप्। १ वाक्य। २ गीत, गान।

गीदड़ (हिं० पु०) शृगाल। सियार कुत्तेकी जातिका एक जन्तु जो लोमड़ीके सदृश होता है। यह झुंडके झुंड एशिया तथा अफ्रीकामें हरएक जगह पाया जाता है। दिनके समय पृथ्वीके भीतर मांदमें रहता और रात्रिकाल समूहमें बाहर निकलता और छोटे छोटे जान-वरको पकड़ कर खाता है। यह मृत जन्तुके लाश भी खाता है। गीदड़ बहुत डरपोक जन्तु समझा जाता है।

गीदड़रूख (हिं० पु०) मध्यम आकारका एक तरहका पेड़। यह समस्त उत्तर, मध्य और पूर्व भारतवर्षमें होता है। इसके पत्ते छोटे, बड़े तथा कई आकारके होते हैं और पशु बहुत चावसे इसे खाते हैं। ग्रीष्मऋतुके आरम्भमें इसके समस्त पत्ते गिर जाते हैं। चैतसे ज्येष्ठ मास तक इसमें बहुत छोटे छोटे लालरंगके पुष्प निक-लते हैं और इसमें बेरसे कुछ छोटे फल भी होते हैं जो खानेके काममें आते हैं।

गीदर (हिं०) गीदड़ देखो।

गीदी (फा० वि०) जिसको हिम्मत नहीं, डरपोक, कायर।

गीध (हिं० पु०) गृध्र देखो।

गीधना (हिं० क्रि०) लुब्ध होना, परचना।

गीयत (फा० स्त्री०) १ अनुपस्थिति, गैर हाजिरी। २ विद्व-नता, चुगुलखोरी, चुगुली।

गोर (सं० स्त्री०) वाणी।

गीरथ (सं० पु०) गी-रथ इवास्य, बहुव्री०। १ वृहस्पति। २ जीवात्मा।

गीर्ण (सं० त्रि०) गृ कर्मणि क्त। १ वर्णित, कहा हुआ। २ स्तुत। ३ निगला हुआ।

गीर्णि (सं० स्त्री०) गृ भावे क्तिन्। १ स्तुति। २ वर्णन। ३ ग्रास, निगलनेकी क्रिया।

गीर्देवी (सं० स्त्री०) गिरोऽधिष्ठात्री देवी। सरस्वती, शारदा।

गीर्पति (सं० पु०) गिरां पतिः, ६-तत्। अहरादित्वात् विसर्गस्य विकल्पे रेफादेशः। १ वृहस्पति। २ पण्डित, विद्वान्।

गीर्लता (सं० स्त्री०) गीरिव विस्तीर्णा लता। महाज्योतिष्मती लता, बड़ी मालकंगनी लता।

गीर्वत् (सं० त्रि०) गीरस्त्यस्य गिर-मतुप्। वाक्ययुक्त।

गीर्वाण (सं० पु०) गीरेव वाणः कार्यसाधनत्वात् अस्त्रविशेषो यस्य, बहुव्री०। देवतासुर।

गीर्वाणकुसुम (सं० क्ली०) गीर्वाणप्रियं कुसुमं, मध्यपदलो०। लवङ्ग, लौंग।

गीर्वाणयोगीन्द्र—एक ग्रन्थकार, इन्होंने प्रपञ्चसार नामक एक तन्त्रकी रचना की है।

गीर्वाणेन्द्र सरस्वती—विश्वेश्वर सरस्वतीके छात्र, देवेन्द्र और नृसिंहाश्रमके गुरु। इन्होंने गायत्रीपुरश्चरणविधि और प्रपञ्चसार-सारसंग्रह नामके दो ग्रन्थ रचना किये हैं।

गीला (हिं० वि०) भीगा हुआ, तर, नम।

गीलापन (हिं० पु०) गीला होनेका भाव, नमी, तरी

गीली (हिं० स्त्री०) एक बहुत ऊंचा वृक्ष। इसकी लकड़ी सुर्खी लिये पीले रंगकी होती है जिससे मेज कुरसियां आदि बनाई जाती हैं। इसका पेड़ हिमालय पर्वतकी तराईमें बहुतायतसे होता है। बरमो।

गीष्पति (सं० पु०) गिरां पतिः ६-तत्। १ वृहस्पति। २ पण्डित, विद्वान्।

गुंग (हिं०) गूंगा देखो।

गुंगवहरी (हिं० स्त्री०) एक तरहका दीर्घ मत्स्य जो सर्पकी तरह दीख पड़ता है। बामी मछली।

गुंगा (हिं०) गूंगा देखो।

गुंगो (हिं० स्त्री०) दो मुखवाला सर्प। चुकरैंड़।

गुंगुआना (हिं० क्रि०) १ धुंआ देना, अच्छी तरह न जलना। २ गूं गूं आवाज करना, अस्पष्ट शब्द बोलना।

गुंचा (अ० पु०) १ कली, कोरक। २ नाच रंग, विहार।

गुंची (अ० स्त्री०) घुंघची।

गुंजरना (हिं० क्रि०) १ गुंजार करना। भौरोंका गूंजना, भन भनाना। २ शब्द करना, गरजना।

गुंजाइश (फा० पु०) १ स्थान, जगह। २ समाई।

गुंजान (फा० वि०) घना, अविरल।

गुंजिया (हिं० स्त्री०) एक तरहका आभूषण। इसे स्त्रियां कानोंमें पहना करती हैं।

गुंटा (हिं० पु०) छोटा जलाशय, ताल।

गुंठा (हिं० पु०) एक प्रकारका नाटे आकारका अश्व।

गुंडई (हिं० स्त्री०) गुंडापन, शोहदापन। बदमाशी।

गुंडली (हिं० स्त्री०) १ कुंडली फेरा। गेंडुरी।

गुंडा (हिं० वि०) १ दुर्वृत्ति, पापी। २ छैला, चिकनिया। (पु०) ३ दुष्टमनुष्य।

गुंडापन (हिं० पु०) बदमाशी।

गुंदला (हिं० पु०) दल दलके पास होनेवाली नागरमोथा नामकी घास।

गुधना (हिं० क्रि०) जल मिला कर सानना।

गुंधाई (हिं० स्त्री०) १ गूंधनेका भाव। २ गूंधनेकी मेहनताना या मजदूरी।

गुंधावट (हिं० स्त्री०) १ गूंधनेकी क्रिया। २ गूंधनेका तरीका।

गुंबज (फा० पु०) देवालयोंकी गोलछत।

गुंबजदार (फा० वि०) जिस पर गुंबज हो।

गुंबद (फा० पु०) गुम्बज देखो।

गुंबा (हिं० पु०) मस्तक पर चोट लगनेसे एक प्रकारकी सूजन। गुलमा।

गुंभी (हिं० स्त्री०) अङ्कुर, गाभ।

गुंमी (हिं० स्त्री०) पाल खींचनेकी रस्सी।

गुआ (हिं० पु०) सुपारी, गुवाक।

गुआगुदो—एक जातीयवृक्ष। (Gumsea)

गुआर (हि० स्त्री०) गोराणी, ग्वार।

गुआरपाठा (हि० पु०) ग्वारपाठा देखो।

गुआरी (हि० स्त्री०) ग्वार देखो।

गुआलिन (हि०) ग्वालिन देखो।

गुइयाँ (हि० पु० स्त्री०) साथी, सखा, सहचरी।

गुइयांआवला—स्वनाम प्रसिद्ध वृक्षविशेष।

गुएला—द्राक्षा लताके सदृश एक तरहका वृक्ष (Vitis latiflera)। इसका फल देखनेमें ठीक द्राक्षाके जैसा होता लेकिन भीतर पोल रहता है।

गुखरू (हि०) गोखरू देखो।

गुगरल (हि० पु०) एक तरहकी बतख।

गुगाली (हि० स्त्री०) पानीके ऊपरकी हलकी हिलोर। खलबली।

गुगुलिया (हि० पु०) बन्दर नचानेवाला, मदारी।

गुगेर—पञ्जाबके मोण्टगोमरी जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३०° ३८´ एवं ३१° ३३´ उ० और देशा ७२° ५८´ तथा ७३° ४५´ पू० मध्य रावीको दोनों ओर अवस्थित है। क्षेत्रफल ८२४ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ११८६२२ है। इसमें २४१ गांव बसे हैं। गुगेर ग्राम ही सदर है। मालगुजारी तथा सेस १२३००० रु० है।

गुग्गुर (हि० पु०) गुग्गुल देखो।

गुग्गुल (स० पु०) गोजीत गुज् क्विप्, गुक् रोग ततो गुडति रक्षति गुक गुड कस्य लकार। १ स्वनामख्यात वृक्षविशेष। गुग्गुलु देखो। २ रक्तशोभाञ्जनवृक्ष।

गुग्गुलु (स० पु०) गुक् रोगस्तस्मात् गुडति रक्षति, गुड कु डस्य लकार। १ वृक्षविशेष, कोई पेड़। २ उक्त वृक्षका निर्यास तथा सुगन्धि द्रव्यविशेष, गुग्गुलु पेड़का दूध और कोई खुशबूदार चीज। इसका संस्कृत पर्याय—कुम्भ, उलूखलक, कौशिक, पुर, कुम्भोल, खलक जटायु, कालनिर्यास, देवधूप, मवमद्द महिषाक्ष, पलङ्कषा, यवनद्विष्ट, भवाभीष्ट, निशाटक, जटाल, पुट, भूतहर, शिव, शाम्भव, दुर्ग, यातुघ्न, [महिषाक्षक, देवेष्ट, मरुद्दिष्ट रक्षोहा, कुचगन्धक और दिव्य है। यह कटु, तिक्त उष्ण, रसायनविशेष और कफ, वात, कास, क्रमि, वातरोग क्लेद, शोथ और अर्शोनाशक है। (राजनि०) भावप्रकाशके मतमें गुग्गुलु विशद, तिक्त, कटु तथा कषायरस, उष्णवीर्य, पित्तवर्धक, सारक, कटुविपाक, रूक्ष, अत्यन्त लघु, भग्नसन्धानकारक, शुक्रवर्धक, स्वरप्रसादक, अग्निवृद्धिकारी, पिच्छिल, बलकारक, और कफ, वायु, व्रण, अपची, मेदोदोष, प्रमेह, अश्मरी, आमवात, क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पीडका, गण्डमाला तथा क्रमिनाशक है।

इसके मधुर रससे वायु, कषायसे पित्त और तिक्तरस से कफ नष्ट होता है। नूतन गुग्गुलु मांसवर्धक तथा शुक्रजनक है। परन्तु पुरातन होने पर यह अत्यन्त लेखनगुणयुक्त अर्थात् अतिशय कृशकारक होता है। जो गुग्गुलु पके जम्बुफलको भांति सुगन्धि, पिच्छिल और सुवर्णवर्ण आता, तथा और शुष्क दुर्गन्धयुक्त विकृतवर्ण तथा वीर्यहीन होनेसे पुराना समझा जाता है। गुग्गुलु सेवनकारीके पक्षमें अम्लरस, तीक्ष्णद्रव्य, अजीर्णजनक अर्थात् गुरुपाकद्रव्य, मैथुन, परिश्रम, रौद्र, मद्य और क्रोध अतिशय अहितकर है।

गुग्गुलु जातिभेदसे पांच प्रकारका होता है—महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य। देखनेमें अञ्जन जैसा महिषाक्ष कहलाता है। अतिशय नीलवर्णको महानील, कुमुदकुसुम जैसी आभाविशिष्टको कुमुद, पद्मवर्णको पद्म और सुवर्णवर्ण गुग्गुलुको हिरण्य कहते हैं। इसमें महिषाक्ष तथा महानील हाथीके लिये और कुमुद एवं पद्म घोड़ेके लिये आरोग्यजनक है। केवलमात्र हिरण्य जातीय गुग्गुलुसे ही मनुष्यका उपकार होता है। अवस्थाविशेषमें महिषाक्ष भी आदमीके काम आता है। (भावप्रकाश १ भाग)

बहुत खुशबूदार होनेसे गुग्गुलको भारतवासी धूप जैसा व्यवहार करते हैं। इसको अग्निमें डालने पर खुशबूसे घर भर जाता और बड़ा आनन्द आता है। प्रयोगामृतके मतानुसार ग्रीष्मकालको मरुभूमिमें यह वृक्ष उत्पन्न होता है। पीछे शीत ऋतुको शिशिरके जलसे भीगने पर उससे एक प्रकार रस वा निर्यास निकलता है। इसीका नाम गुग्गुलु है। इसको विशेष परीक्षा करके लेना चाहिये। विशुद्ध गुग्गुलु आगमें डालनेसे जल उठता, धूपमें उड़ता और जलमें निक्षेप करनेसे चिपचिपाने लगता है। पुरातन, अङ्गारवर्ण, गन्धहीन वा विवर्णको

ग्रहण नहीं करते। (प्रयोगामृत) २ मास पर्यन्त गुग्गुलु पूर्णवीर्य रहता, फिर गुण और वीर्य घटने लगता है।

इसकी शोधनप्रणाली यह है कि उसको खण्ड खण्ड करके गुडूची तथा त्रिफलाके क्वाथ और दुग्धमें पाक करते है। शोधित गुग्गुलुको ही व्यवहार करना चाहिये। (रसचन्द्रिका) दशमूलके ईषदुष्ण क्वाथमें उसको निक्षेप करके आलोड़न किया जाता है। फिर बारीक कपड़ेसे छान करके धुपमें सुखा घी मिला देते हैं। ऐसा करनेसे वह शुद्ध होता है। (वैद्यकनिघण्टु)

यह वृक्ष भारतवर्ष और अफ्रीकामें स्थान स्थान पर उत्पन्न होता है। इसके निर्यासको चलती अंगरेजोमें (Bdelium) कहते हैं। देखनेमें यह राल जैसा। लगता है। किसी स्थानका गुग्गुलु पीला-जैसा और कहीं कहीं-का गहरा लाल होता है। इससें थोड़ीसी मीठो महक भी रहती है। अंगरेजी मतानुसार वह तारपीनके तैल जैसा उत्तेजक है, खानेसे श्लेष्माकी झिल्ली विशेषतः फेफड़े पर उसका कार्य होते रहता है। कठिन कफरोग, बहु-कालस्थायी हृद्रोग, जलवत् श्लेष्मास्राव रोग और कण्ठनलीय रोगमें खाने या उसके धुएंका नास लेनेसे विशेष उपकार देख पड़ता है। कठिन व्रणरोग, क्षत और स्फोटकादिके पक्षमें भी वह तेजस्कर औषध है। १५ग्रेनसे २ ड्राम मात्रा तक उसको सेवन कराया जा सकता है।

गुग्गुलुक (सं० त्रि०) गुग्गुलुं पण्यमस्य, गुग्गुलु-ठन्। गुग्गुल-विक्रेता, गुग्गुल बेचनेवाला।

गुग्गुलुगन्धि (सं० पु०-स्त्री०) गुग्गुलुर्गन्धो लेशो यस्य, बहुव्री०। गो, गाय। (त्रि०) गुग्गुलोर्गन्ध इव गन्धो-ऽस्य, बहुव्री०। २ गुग्गुलके सदृश गन्धयुक्त।

गुग्गुलुवटक (सं० पु०) वातव्याधि।

गुङ्गु (सं० पु०) वेदप्रसिद्ध एक जनपद। (ऋक् १०।४८।८)

गुङ्मेरु—जनपदविशेष। ८१६ ई०को इस स्थान पर भोटराज रलपाचन और चीन राजामें सन्धि हुई थी। दोनोंके मैत्रतानिबन्धनमें यहां एक मन्दिर निर्माण किया गया था। इस मंदिरके संलग्न एक प्रस्तरखण्डमें सूर्य तथा चन्द्रमाकी प्रतिमूर्त्तियाँ खुदी हुई है जिसके नीचे इस प्रकार लिखा है "जब तक सूर्य और चन्द्रमा आकाशमें भ्रमण करेंगे तब तक इन दोनों जातियोंमें सख्य-भाव रहेगा।"

गुच (हिं० स्त्री०) पञ्जाबकी डाढ़ीदार भेड़।

गुची (हिं० स्त्री०) मी पानीकी गुच्छ, आधी ढोली।

गुच्चो (हिं० स्त्री०) १ भूमिमें खोदा हुआ गढ़ा। २ छोटे छोटे लड़कोंके गुल्ली खेलनेका गढ़ा। (वि०) ३ बहुत-छोटी, नन्ही।

गुच्चीपाग (हिं० पु०) छोटे छोटे लड़कोंके कौड़ी फेंकने-का गढ़ा।

गुच्छ (सं० पु०) गु-क्विप् गुत् शब्दविशेषः तं श्यति तनु-करोति निवारयति गुत्-शो-क। १ स्तवक। २ घास-की जूरी। ३ वह पौधा जिसमें मजबूत काण्ड वा पेड़ी न हो, सिर्फ पत्ते या पतली लचीली टहनियां फैलें। ४ बत्तीस लड़ीका हार। ५ मोतीका हार ६ मोरकी पूंछ।

गुच्छक (सं० क्लो०) गुच्छ संज्ञायां कन्। १ ग्रन्थिपर्ण, गठीला पत्र। (पु०) गुच्छ स्वार्थे कन्। २ स्तवक। इसका पर्याय—स्तम्ब, कुसुमोच्चय, गुच्छ, गुल्म, गुत्सक, गैठाकरञ्ज और गुलञ्च है। ३ एक प्रकारका वृक्ष। इसका बीज डिम्बके सदृश होता और व्यास (घेरा) ⅓ से ½ तक रहता है। इस वृक्षका बीज दृढ़ तथा मसृण होता और इसके चारो तरफ छाल होते हैं। इसका गुण बल-कारक और पाला ज्वरनिवारक है। पञ्जाबवासी इस-में हिङ्गु मिलाकर खाते हैं। इसका बीज दीर्घकाल स्थायी रहता है। चट्टग्रामके मनुष्य इसमें मरिच मिला-कर वरी प्रस्तुत करते हैं। डाक्टर एनसलि साहबका मत है कि इसके तैलसे आक्षेप और पक्षाघातरोग आरोग्य हो जाते हैं।

गुच्छकाच्छद (सं० पु०) ग्रन्थिपर्ण, गठीला।

गुच्छकणिश (सं० पु०)गुच्छवत् कणिशः, बहुव्री०। धान्य-विशेष, रागी धान।

गुच्छकन्द (सं० पु०) कन्द शाक।

गुच्छकरञ्ज (सं० पु०) गुच्छाकारः करञ्जः। एक प्रकारका करञ्ज। इसके पत्ते अतिशय स्निग्ध और पुष्प गुच्छाकार होते हैं, जो देखनेमें बहुत ही मनोहर लगता। इसका पर्याय-स्निग्धदल, गुच्छपुष्पक, नन्दी, गुच्छी, सानन्द और दन्तधावन हैं। इसका गुण कटु, तिक्त उष्ण, विष, वात-रोग, कण्ड बिचर्चिका, कुष्ठस्पर्श एवं त्वक्‌दोष,नाशक।

इसकी शाखा दन्तधावनके काममें आती है।

गुच्छगुल्मिका (सं० स्त्री०) स्नुहीवृक्षविशेष।

गुच्छदन्तिका (सं० स्त्री०) गुच्छा गुच्छीभूता दन्ता फलरूपा यस्या, बहुव्री०। गुच्छदन्त-कप् टाप्। कदली वृक्ष, केलाका पेड़। इसका फल गुच्छाकारमें होनेके कारण यह गुच्छदन्तिका कहा जाता है।

गुच्छपत्र (सं० पु०) गुच्छाकृतीनि पत्राणि यस्य, बहुव्री०। तालवृक्ष, ताड़का पेड़।

गुच्छपुष्प (सं० पु०) गुच्छाकृतानि पुष्पाणि यस्य, बहुव्री०। १ सप्तच्छदवृक्ष, सनिवन या छतिवनका पेड़। २ अशोक-वृक्ष।

गुच्छपुष्पक (सं० पु०) गुच्छपुष्प स्वार्थे कन्। १ रीठा। २ गुच्छकरञ्ज।

गुच्छपुष्पी (सं० स्त्री०) गुच्छपुष्प जातौ ङीष्। १ धातकी वृक्ष, धाईका पेड़। २ शिगुड़ी नामक क्षुप।

गुच्छफल (सं० पु०) गुच्छाकृतानि फलान्यस्य, बहुव्री०। १ रीठा। २ निर्मली। ३ टौना। ४ गुच्छकरञ्ज वृक्ष। ५ जलवेतस।

गुच्छफला (सं० स्त्री०) गुच्छफल टाप्। १ अग्निदमनी वृक्ष। २ काकामाची मकोय। ३ द्राक्षा। ४ कदली वृक्ष, केलेका पेड़। ५ निष्पावी, लोबिया।

गुच्छबुध्ना (सं० स्त्री०) गुच्छेन बध्नाति बन्ध बाहुलकात् रक् टाप्। गुण्डालिनी तृण, एक प्रकारकी घास, गोंदला।

गुच्छमूलिका (सं० स्त्री०) गुच्छाकृति मूलमस्या, बहुव्री०। कप् टाप्। गोंदला घास।

गुच्छमहा (सं० स्त्री०) धातकी।

गुच्छा (हिं० पु०) १ एक डालमें लगे पत्ते फूलों या फलोंके समूह। २ फूलका झब्बा।

गुच्छातारा (हिं० पु०) कचपचिया नामका तारा।

गुच्छार्द्ध (सं० पु०) गुच्छ इव ऋध्नोति। चौबीस लड़ीका हार। (पु० क्ली०) गुच्छस्य अर्द्ध अर्द्धो वा ६ तत्। २ गुच्छका आधा।

गुच्छाल (सं० पु०) गुच्छमालाति, गुच्छ-आ-ला-क। १ भूतृण, एक तरहको सुगन्धित घास। २ भूकदम्ब।

गुच्छाह्वकन्द (सं० पु०) गुच्छमाह्वयति, गुच्छ-आ-ह्वे-क। गुच्छाह्व कन्दोऽस्य, बहुव्री०। गुलंचकन्द।

गुच्छी (सं० स्त्री०) गुच्छ जातौ ङीष्। १ करज, कंजा। २ रीठा। ३ पञ्जाबके ठंढे स्थानोंमें उपजनेवाला एक तरह का पौधा। इसके फूलोंकी तरकारी बनती है और वे सुखा कर बाहर दूसरे देशमें भेजे जाते हैं।

गुजर (फा० पु०) १ गोत, निकास। २ प्रवेश, पैठ, पहुंच। ३ निर्वाह, कालक्षेप।

गुजरगाह (फा० स्त्री०) १ रास्ता। २ नदीके पार होने-की घाट।

गुजरत् (फा० पु०) हस्त द्वारा।

गुजरना (फा० क्रि०) १ समय व्यतीत करना। २ किसी स्थानसे होकर आना या जाना। ३ नदी पार करना। ४ निर्वाह होना, निपटना।

गुजरवसर (फा० पु०) निर्वाह, कालक्षेप।

गुजरवान (फा० पु०) १ मल्लाह, पार करनेवाला। २ घाटको उतराई वसूल करनेवाला मनुष्य, घटवार।

गुजरात—पञ्जाब प्रदेशका एक जिला। यह अक्षा० ३२° १०´ तथा ३३° १´ उ० और देशा० ७३° १७´ एवं ७४° २८´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके उत्तरपूर्व काश्मीरराज्य, उत्तर पश्चिम झिलम जिला तथा वितस्ता नदी, दक्षिण पश्चिम शाहपुर जिला और दक्षिण पूर्वको गुजरानवाला तथा शियालकोट एवं तावी तथा चन्द्र-भागा नदी पड़ती है। भूपरिमाण २०५ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय ७५०५४८ है चन्द्रभागाके उपकूलसे जमीन क्रमश जलकी भीतरी ओरको ऊंची हुई और जल तथा वृक्षादिविहीन मरु जैसी बन गयी है। पब्बी नामक गिरिश्रेणी ही यहां प्रधान है। छोटे छोटे गुल्मादि-पूर्ण स्थानोंमें ही गोमहिष प्रभृतिके खाद्यका संस्थान है। चन्द्रभागा नदीकी निम्नतर तीरभूमि खूब उर्वरा है। पार्वतीय जलस्रोतसे एक नहर निकली जिससे खेती सिंचती है और भी कई नदियां हिमालयसे निकल कर इस जिलेमें बही हैं। इस जिलेके वनोंमें बहादुरी लकड़ी होती है।

इस जिलेके प्रत्नतत्त्वका बहुत निदर्शन मिलता है। प्राचीन स्तूपादि, मुद्रा और इष्टकादि देखते ही अनु-मित होता कि बहुत पहले यहां हिन्दुओंका वास रहा। आज भी उन्हीं पुराने हिन्दुओंके गृहमन्दिरादि शिल्प

नैपुण्यका परिचय प्रदान करते हैं। कनिङ्गहम साहबने मोंग नामक ग्रामके स्तूपोंमें कोई विहताकार स्तूप देख करके ठहराया है कि वह अलकसन्दरका स्थापित 'निकाया' नगर था। उन्होंने पुरुराजको जय करके अपनी कीर्तिघोषणाके लिये इसको स्थापन किया। यह विहताकार स्तूप पर्वी पहाड़से ६ मील पश्चिमको अवस्थित है। इसकी ऊंचाई ५०, लम्बाई ६०० और चौड़ाई ४०० फुट है। इन सब स्तूपोंके मध्यसे भारतवर्षके शक-राजाओंकी अनेक ताम्रमुद्राएं निकली हैं, यहां जाटों और गूजरोंका अधिक वास हैं।

दिल्लीके बादशाहोंमें सबसे पहले (१४५०-५४ ई०) बहलोल लोदी इस जिलेमें आ करके बसे थे। उन्होंने चन्द्रभागा नदीके तीर बहलोलपुर नगर स्थापन किया। इसके एक शताब्दी पीछे अकबरने यहां पहुंच गुजरात नगर बसा दिया। आज भी इस नगरके पुरुषानुक्रमिक 'काननगो' परिवारमें अकबरके राज्यशासनसंक्रान्त पत्र पाये जाते हैं। इनमें लिखा है कि अकबरके समयको वहां २५९२ ग्राम था मौजा और उसका राजस्व १६२४५५०) रु० था। मुगलोंके सौभाग्यावनतिके समय रावलपिण्डीके गक्करोंने १७४१ ई०को इस प्रदेश पर अधिकार किया। अहमद शाह दुरानीके आक्रमणकालको यातायातके कारण यह स्थान विशेष उत्पन्न हुआ था। १७६५ ई०को गूजरसिंहने इसको अधिकार किया। गुजराँवाला देख। १७८८ ई०को गूजरसिंहके मरने पर उनके पुत्र साहबसिंह पितृसिंहासन पर अधिष्ठित हुए। राज्य-भार मिलते ही गुजराँवालाके सामन्त मोहनसिंह और रणजित्‌सिंहके साथ उनको लड़ाई छिड़ गयी। क्रमागत कई महीने लड़ने पीछे १७९८ ई०को इन्होंने रणजित्‌की अधीनता मानी थी। १८१० ई० तक साहबसिंह स्वराज्यमें प्रतिष्ठित रहे। पीछे सिख सम्राट् रणजित्‌सिंहके राज्यच्युत करने पर वह बिना कुछ कहे, सुने पार्वत्य प्रदेशको भाग गये। शेषको रणजितको वदान्यतासे स्यालकोट जिलेकी कुछ जमीन्दारी उन्हें प्राप्त हुई। १८४६ ई०को यह जिला अङ्गरेजोंके हाथ लगा था। द्वितीय सिख युद्धके समय गुजरात रणक्षेत्र रूपमें परिणत हुआ। मुलतानके अवरोध समय सिख सरदार शेरसिंह अपना सैन्य चन्द्रभागा नदीके उत्तरकूलमें रख करके रामनगरमें लार्ड गफको आनेकी प्रतीक्षा करते थे। १८४८ ई० २२ नवम्बरको लार्ड गफ शेरसिंह कर्तृक पराजित तथा विशेष क्षतिग्रस्त हो भाग खड़े हुए। पीछेसे सैन्याध्यक्ष जोसेफ थाकवेलने वजीराबादके निकट नदी पार हो शेरसिंहको आक्रमण और शादुल्लापुरमें उन्हें पराजय किया था। शेरसिंह भाग करके पर्वी और वितस्ता नदीके मध्यवर्ती स्थानमें अपने आपको बचाने लगे। इसी समय १८४८ ई० १३ जनवरीको चिलियांवालाका युद्ध आ पड़ा। उसमें सिख इतिहासका सौभाग्य और गौरवरवि प्रकाशित हुवा और अंगरेज लोग हारे तथा उन्हें बड़ी भारी क्षति लगी।

६ फरवरीको शेरसिंह फिर लार्ड गफकी आंख बचा गये और लाहोर पर झपट पड़नेको दक्षिण और चल पड़े। परन्तु अंगरेजोंने उन्हें पीछेसे खूब दबाया था। २२ फरवरीको यह गुजरातमें लड़नेको लौटे। इस युद्धमें सिखोंकी शक्ति क्षीण हो गयी। पञ्जाब विजेताओंके हाथ लगा और अंगरेजी शासनभुक्त हुआ।

यहां बहुतसे इसलामधर्मावलम्बी राजपूत हैं। उनमें शुरणादि राजवंश प्रधान है। औरङ्गजेबके समय शुरणादि राजने इसलाम धर्म ग्रहण किया था। सिखराज रणजित् सिंहके बाहुबलसे यह लोग सदा जैसे पराधीन और हीन हो गये। गुजरातके सैयद बतलाते कि अरबसे जा करके हम पहले पहल उसी जिलेमें बसे थे, फिर नाना स्थानोंमें फैल पड़े।

इस जिलेमें नहर नहीं है। केवल कूएंके पानीसे सब काम चलता है। जलवायु खूब स्वास्थ्यकर है।

२ पञ्जाबके गुजरात जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० ३२° २४' तथा ३२° ५३' उ० और देशा० ७३° ४७' एवं ७४° २९' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ५५४ वर्गमील है।

३ पञ्जाबके गुजरात जिलेका बड़ा नगर और सदर। यह अक्षा० ३२° ३५' उ० और देशा० ७४° ७' पू०में चन्द्रभागा नदीके वर्तमान गर्भसे २॥ कोस उत्तरको अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १८०५० होगी।

प्राचीन ध्वंसावशिष्ट नगर पर वर्तमान नगर आबाद

है। प्रत्नतत्त्ववित् कनिङ्गहम साहब अनुमान करते कि यहां जो प्राचीन नगर रहा, १३०३ ई०को विध्वस्त हुआ उसके प्राय २०० वर्ष पीछे शेरशाहने इस अञ्चलकी दिकको दृष्टिपात किया। उन्होंने या अकबरने इस नगरको बसाया होगा। शाहजहान्‌के समयको वहां पीर शाहदौला नामक कोई मुसलमान साधु रहते थे। यह इस नगरमें बहुतसे घर बनाये गये हैं। नगरके मध्यस्थलमें अकबरका निर्मित और गूजरसिंह कर्तृक मरम्मत दुर्ग आज भी खड़ा है। इसी जिलेमें तहसीली और मुनसिफी कचहरी है। सिवा इसके गुजरात नगरमें ६८ मसजिदें, ५२ हिन्दू मन्दिर और ११ सिख धर्मशालाएं भी बनी हैं। यहां बढ़िया शाल दोशाला और सूती तथा ऊनी वस्त्र प्रस्तुत होता है। सोने लोहे और पीतलको गढ़ाईके लिये गुजरात शहर बहुत दिनोंसे मशहूर है। यहां म्युनिसपालिटी विद्यमान है।

४ बम्बई प्रेसिडेन्सीका उत्तर समुद्रकूलवर्ती विस्तीर्ण भूभाग। गुजरात देखो।

गुजराती (हि० वि०) गुजरात देशका, गुजरातका निवासी।

गुजराती—बम्बईके गुजरात प्रान्तकी भाषा। इसकी लिपि देवनागरीके आदर्श पर गठित है। कोई ८०० वर्ष पहले यह चली थी। साहित्य उन्नतिशील है। भील और खान देशके अधिवासी भी टूटी फूटी गुजराती बोलते हैं। गुजराती भाषा प्राचीन सौराष्ट्री प्राकृत पर आश्रित है। गौर्जरी अभ्रंशसे निकली है। यह कोई ८४३८८२५ लोगोंकी भाषा है।

गुजराती जैन—बम्बई प्रान्तके अहमदनगर जिलेमें रहने वाले जैन। इन्हें श्रावक भी कहते हैं। इनकी संख्या प्राय ३०० है। वह अकोला, जामखेड़, कोपरगांव, सङ्गमनेर, शिवगांव और श्रिगोंदमें रहते हैं। अपनी ही वर्णनाके अनुसार यह अवधके रहनेवाले थे। सूर्यवंशीय किसी राजाके साथ उन्होंने जैन धर्म ग्रहण किया। गुजरातमें बस जानेसे वह गूजर कहलाये। मातृभाषा गुजराती और कुलदेवता जिनेन्द्र हैं। यह निरामिष भोजी, परिश्रमी, संयमी, मितव्ययी और आज्ञाकारी हैं। दूकानदारी, महाजनी और जमीन्दारीका काम करते हैं। यह दिगम्बरसम्प्रदाय भुक्त हैं। शवदाह किया जाता है। बाल्यविवाह और बहुविवाह साधारणत नहीं होता। इनमें विधवाविवाह नहीं होता।

गुजराती पेटा—गञ्जाम प्रदेशके अन्तर्गत चिकाकोलके निकट लाङ्गुलिया नदीके दक्षिण तट पर अवस्थित एक नगर। यहां लक्ष्मी तथा नरसिंहस्वामीके मन्दिर हैं। मन्दिर बहुत प्राचीन कालके हैं। ऐसा प्रवाद है कि बलरामने इस मन्दिरको निर्माण किया था। प्रायः दो तीन शत वर्ष हुए होंगे यहां गुजराती व्यापारियोंने आकर उपनिवेश स्थापन किया है।

गुजराती बनिया—दाक्षिणात्यवासी वणिक् जाति की एक शाखा। बम्बई प्रेसिडेन्सीके नाना स्थानोंमें इनका वास है। परन्तु अहमदाबादमें यह अधिक देख पड़ते हैं। इनमें वडनगरी और विशनगरी २ श्रेणियां हैं। यह लोग अपनेको वैश्य जैसा बतलाते हैं। २१२ सौ वर्ष हुए यह गुर्जर देश छोड़ करके दक्षिणापथके नाना स्थानोंमें जा बसे हैं। गुर्जरके उत्तरस्थित वडनगर तथा विशनगरमें इनका आदिवास है। मालूम होता है कि इन दोनों नगरों से ही उनका जातिगत विभाग हुआ होगा।

उभय दल एकत्र भोजनादि करते, परन्तु परस्परके मध्य दानग्रहण अप्रचलित है। यह बहुत सुश्री और सुन्दर होते हैं। स्त्रियां मर्दोंकी अपेक्षा अधिक सुन्दर होती हैं। ये लोग मद्य मांस कुछ भी नहीं खाते। स्वास्थ्य भी इनका अच्छा रहता है। सिर्फ पानके साथ भांग और तम्बाकू खाते हैं। इनकी स्थिति अच्छी है।

ये लोग आचार व्यवहार और वेशविन्यासमें दक्षिण के ब्राह्मणों का अनुकरण करते हैं। सबहीके सिर पर चोटी रहती है और दाढ़ी मुंडी हुई रहती है। इनका स्वभाव भोलेपनको लिये हुए अच्छा है, पर दोष इतना ही है कि, ये लोग प्राय कृपण होते हैं। वाणिज्य करना उनकी जातगत उपजीविका है। जिसके पास पैसा नहीं वे भी दूसरेका दासत्व स्वीकार नहीं करते, परन्तु किसी व्यापारीको दूकानका काम करना मंजूर कर लेते हैं।

ये लोग अपनेको ब्राह्मणोंसे नीचे और मराठी जातिमे

ऊंचे समझते हैं। ये लोग स्वजातीय ब्राह्मण, दाक्षिणात्यवासी शेन्वी ब्राह्मण और पांचालोंके स्पृष्ट अन्नके सिवाय और किसीके भी हाथका अन्न नहीं खाते। हिन्दुओंके समस्त देवता उनके लिए पूज्य हैं। ये लोग उच्च श्रेणीके हिन्दुओंकी भांति उत्सव आदि भी करते हैं। तिरुपतिके बालाजी और पण्ढरपुरके विठोवा इनके कुलदेवता हैं। कभी कभी ये लोग हिन्दुओंके तीर्थोंमें जाकर पूजा आदि भी करते हैं। सब सवेरे शौच स्नान आदिके बाद नियमसे कुलदेवताकी पूजा करते हैं। इनकी गर्भाधान, विवाह और श्राद्धकी क्रिया गुजराती ब्राह्मण ही करते हैं; और उनके अभावमें उस देशके ब्राह्मण भी कर सकते हैं। इनमेंसे सब ही वल्लभाचार्य प्रवर्त्तित सम्प्रदायमें शामिल हैं। ब्राह्मण जातिके दस प्रकारके संस्कारोंमेंसे ये लोग नामकरण, चूड़ाकरण, विवाह, गर्भाधान, श्राद्ध आदि कुछ संस्कारोंका पालन करते हैं। बालकको पहिले पहल विद्यालयमें भर्ती करानेके लिए ये लोग शुभदिनको देख कर गाने बाजेके साथ ले जाते हैं। वहां बालकको ताड़पत्र और पुस्तकादि सरस्वतीके नामसे पूजा होती है। उस समय बालकसे सबसे पहिले "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" लिखाया जाता है। इसके बाद शिक्षकको पान, सुपारी और रुपये दक्षिणामें दिये जाते हैं। बालिकाएं कुमारी अवस्थामें मंगला गौरीकी पूजा करती हैं।

इनमें बाल्यविवाह प्रचलित है। बहुविवाह और विधवा विवाह करनेवालेको जातिसे च्युत कर दिया जाता है। समाजमें कोई प्रकारका विभ्राट् हो जानेसे ये लोग उसे स्वयं ही शान्त कर लेते हैं। सब मराठी और गुजराती भाषामें बात चीत करते हैं। शोलापुरके गुजराती बनियोंमें हुम्बड़, खड़ायत, लाड़, नोध, नागर, पोरवाड़ और श्रीमाली आदि श्रेणियां हैं। तथा उनमें भी दशा और बीशा इस प्रकार दो भेद हैं। जो जातिच्युत हैं उन्हें दशा और जो जातिच्युत नहीं हैं, उन्हें बीशा कहते हैं। इन मूल श्रेणियोंमें एकत्र भोजन वा दान ग्रहण नहीं चलता। ये भी निरामिषभोजी होते हैं। पुत्र प्रसवके पांच दिन बाद छट्ठी या षष्ठीकी पूजा करते हैं। बारह दिनमें पुत्रका नामकरण करते हैं, और एकसे दो मास तक चूड़ाकरण करते हैं।

पूनाके बनियोंमें दो स्वतंत्र नाम हैं। एक तो वल्लभाचार्यकी शिष्य सम्प्रदाय मिश्री और दूसरे दिगम्बर जैन-सम्प्रदायके श्रावक नामसे प्रसिद्ध हैं। मिश्रीओंमें कपोल, खड़ायत, लाड़, मोध, नागर, पाञ्चाल, पोरवाल आदि तथा जैनियोंमें हूमड़, पोरवाल, श्रीमाली आदि कई शाखाएं हैं। मिश्रीओंके विवाहमें "लड्डान् गणेश" की वा गणपतिकी और जैनियोंके विवाहमें "गौतम गणधर" "सिद्ध परमेष्ठी" और "देव-शास्त्रगुरु" की पूजा होती है। ये लोग अशौच दश दिनका मानते हैं। मिश्री लोगोंके १०वें, ११वें और १२वें दिन श्राद्ध होता है और १२वें या १३वें दिन जातिभोज (तेरही) होता है। श्रावकोंके श्राद्ध आदि नहीं होता; वे १२वें दिन दिगम्बर जैनमन्दिरमें जाकर अक्षत पुष्प आदि अष्ट द्रव्योंसे अर्हन्त आदिकी पूजा करते हैं। ये लोग अशौचके ग्यारह दिनोंमें मन्दिरकी कोई भी वस्तु नहीं छूते और न जिनाभिषेक ही लगाते हैं। ये शास्त्र सभामें पृथक् बैठ कर शास्त्र सुनते हैं; तथा शङ्का समाधान भी करते हैं। श्रावकोंके १३वें दिन जातिभोज होता है: इसका नाम तेरही है।

गुजराती ब्राह्मण—किसी श्रेणीके दाक्षिणात्यवासी ब्राह्मण। प्रायः १०० वत्सर गत हुए यह गुर्जर छोड़ करके जगह जगह बस गये हैं। पूना जिलेमें औदीच्य, देशावल, खेड़ावल, नोध, नागर, श्रीगौड़, श्रीमाली प्रभृति देख पड़ते हैं।

यह निरामिषाशी होते, केवल मादकताके लिये अफीम, भाँग और तम्बाकू सेवन करते हैं। यह स्वभावतः परिष्कार, सत्, कर्मठ, चतुर और आतिथेय हैं। इनमें कितने ही लोग वाणिज्य व्यवसायसे पौरोहित्य पर्यन्त किया करते हैं। कोई कोई जमीन खरीद करके जमीन्दार बना और उसको उत्पन्न द्रव्यके आधे बंटवारे पर दूसरे किसानोंके हाथ उठा दिया है।

यह बालाजी, गणपति, मारुती, तुलजाभवानी और शङ्करकी पूजा करते हैं। इन्हें अपदेवता, डाकिनी और भविष्यद्वाणी पर भी विश्वास है।

इनमें बाल्यविवाह और बहु विवाह प्रचलित है, परन्तु विधवाविवाह कोई नहीं करता। कोई सन्तान आदि प्रसूत होने पर मराठी धात्री वा स्वजातीय रमणी उसकी

नाडी चीर देती और फूलको किसी पात्रमें रख करके सूतिकागारमें नावदानके पास गाड रखती है। तलवार, तीर, कागज, कलम और पटीसे षष्ठी माताकी पूजा करते हैं। अशौच १० दिनमात्र रहता है। १२वें दिनको आत्मीय कुटम्बका भोजन होता और सन्ध्याके समय स्त्रियां सन्तानका नामकरण करती हैं। ४० दिन तक प्रसूति घरसे बाहर नहीं निकल सकती, फिर किसी दिनको सुन्दर वेशभूषा करके आत्मीय स्त्रियोंसे मिलती है। ५ माससे ५ वत्सरके मध्य पुत्रका चूड़ाकरण होता है। यदि कोई ठाकुरजीके नाम पर बाल रखता तो, वह थोड़ेसे बाल विवाह पर्यन्त कभी भी कटा नहीं सकता। विवाहके दिन वह बाल बनाते हैं। १२से २५ तक पुत्र और ८से १५ वर्ष तक कन्याका विवाह होता है। विवाहसे पूर्व आत्मीय कुटुम्बको पान सुपारी भेज करके सूचना दी जाती है। इसीका नाम मङ्गनी है। इनका गर्भाधानसंस्कार नहीं होता। यह शवदाह किया करते हैं। शवदाहके ३ दिन पीछे भस्म पर दुग्ध, दधि, घृत, गोमय और गोमूत्र छोड़ आते हैं। अहमदनगरवासी गुजराती ब्राह्मणोंके बीच पितृ तथा मातुलगोत्रमें विवाह नहीं होता। इनकी 'त्रिवडि मेवदास' शाखामें भरद्वाज, शाण्डिल्य और वशिष्ठ तीन गोत्र चलते हैं। यह यजुर्वेदी होते और सब लोग शङ्कराचार्यकी हिन्दू धर्मके प्रधान प्रदर्शक जैसी भक्ति करते हैं। गणपति, महादेव और विष्णु इनके उपास्य देव हैं।

शोलापुर जिलेमें औदीच्य नागर तथा श्रीमाली ३ श्रेणियां हैं। इन विभिन्न श्रेणियोंके लोग एकत्र आहारादि वा परस्पर दान ग्रहण नहीं करते। इनके मध्य आचारमें भट्ट, पाण्ड्या, रावल, ठाकुर और व्यास कई पद विधा प्रचलित हैं। एक पदवीधारी किन्तु विभिन्न गोत्र होनेसे विवाह किया करते हैं। अम्बाबाई और बालाजी इनके कुलदेवता हैं। औदीच्य कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंका पौरोहित्य करते और युक्त प्रदेशके गांव गांव देख पड़ते हैं। बीजापुर जिलेमें इनकी नागर, श्रीमाली और पोकर्ण ३ श्रेणियां हैं।

गुजराती राजपूत—बम्बईके कच्छ जिलामें रहनेवाले क्षत्रिय वा राजपूत। इनकी संख्या प्रायः १६५१० है। प्रधान विभाग दो हैं।

गुजरान (फा० पु०) गुजर देखो।

गुजरान्वाला—पञ्जाबके लाहोर डिविजनका एक जिला। यह अक्षा० ३१ ३१ एवं ३२ ३१ उ० और देशा० ७३ १० तथा ७४ २४´ पू० मध्य रेचना दोआबमें पड़ता है। क्षेत्रफल ३१९८ वर्गमील है। इसके उत्तर-पश्चिम चिनाब नदी, पूर्व स्यालकोट, और पश्चिम झङ्ग है। बागों और फुलवारियोंमें बेर बहुत होता है। जलवायु स्वास्थ्यकर है। बौद्ध कालके मन्दिरोंका ध्वंसावशेष बहुत मिलता है। तत्कालीन मुद्राएं और बड़े बड़े इष्टक आविष्कृत हुए हैं।

मुसलमानों की अमलदारीमें यह जिला बढ़ा। अकबरसे ले करके औरङ्गजेबके समय तक यहां कितने ही कूप बने। दक्षिण उच्च भूमि पर जहां पहले गांव थे, अब घास और झाड़ी है। ६ अरबेज परगने लगते थे। मुसलमान साम्राज्यकी अन्तिम शताब्दीमें बार बार युद्ध होनेसे गुजरान्वाला उजड़ गया। सिखों के अभ्युदय कालको यह उनका सदर बना।

लाहोरके अधिकार कालतक गुजरानवालामें राजा रणजितसिंहको राजधानी रही। यहां रणजितसिंह और उनके पिताका स्मारक बना है। सिखों ने कृषिकी उन्नति की थी। १८४७ ई०को यह अंगरेजों के हाथ लगा। और १८४९ ई०को अंगरेजी राज्यमें मिला।

गुजरांवालाकी लोकसंख्या प्रायः ६९०५७७ है। इसमें ८ नगर और १३३१ गांव बसे हैं। तहसीलें चार हैं। अधिवासियों में जाटों की संख्या अधिक है। गेहूंकी फसल बड़ी होती है। कङ्करकी कोई कमी नहीं। काठ काटके भोजरा, चाटोंकी मूठवाली छड़ियां और गहने मशहूर हैं। सूती कपड़ा बहुत बुना जाता है। रङ्गीली पुतलीघर और कारखाने हैं। गेहूं, दूसरे अनाज रूई, तेलहन, पीतलका सामान और घीकी रफ्तनी होती है। नार्थवेष्टर्न रेलवे चला करता है। ७५ मील पक्की और १३०८ मील कच्ची सड़क है। डिपटी कमिश्नर बड़े हाकिम हैं। मालगुजारी और सेस कोई १२ लाख ८० हजार लगती है। मुनिसपालिटिया है।

गुजरान्वाला—पञ्जाब प्रान्तके गुजरान्वाला जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३१ ४९ एवं ३० २०´ और देशा०

प्रस्तुत होता है। इसको लगानेसे गलग्रह रोग नहीं रहता। (रसरत्नाकर)

गुञ्जाभद्ररस (सं० पु०) वैद्यकोक्त औषधविशेष, एक दवा। १॥ तोला पारा, ६ तोला गन्धक, ३ तोला गुञ्जबीज और आध आध तोले जयन्तीबीज, निम्बुबीज तथा जैपालबीज सबको जयन्ती, धुस्तूरपत्र, जम्बीर एवं काकमाचीके रसमें अलग अलग भावना दे घीमें घोंट करके वटी बना लेना चाहिये। माता ४ रत्ती है। इसके सेवनसे ऊरुस्तम्भ और हृद्रोग नष्ट होता है।
(रसेन्द्रसारसंग्रह)

गुञ्जिका (सं० स्त्री०) गुञ्ज एव स्वार्थे कन्-टाप्। गुञ्जा तीन यव परिमाण।

गुंञ्जित (सं० क्ली०) गुञ्ज भावे क्त। १ गुञ्जन, कल कल शब्द। (त्रि०) २ कल कल शब्दयुक्त।

गुञ्झा (हिं० पु०) गोझा नामकी बाँसकी कील। २ एक प्रकारका काँटायुक्त तृण। ३ गूदा, रेशेदार गूदा।

गुटकना (हिं० क्रि०) कबूतरकी तरह शब्दकरना।

गुटका (हिं० पु०) १ गुटिका देखो। २ छोटे आकारकी पुस्तक। ३ लड्डू। ४ गुपचुपमिठाई। ५ जावित्री, पिस्ता, कत्था, लौंग, इलायची, सुपारी इत्यादिसे मिश्रित मसाला। इस तरहका मिश्रित मसाला कहीं कहीं पानके स्थान पर खाया जाता है।

गुटबेगन (हिं० पु०) एक तरहका कण्टकयुक्त पौधा, एक कंटीला पेड़।

गुटरगूं (हिं० स्त्री०) कबूतरोंकी बोली।

गुटलस्थलम्—मान्द्राज प्रेसिडेन्सीके कदापा जिलान्तर्गत एक ग्राम। यह मदनपल्लीसे ६ कोस उत्तरपश्चिममें अवस्थित है। यहांके सामन्तकों और मुसलमानोंके मध्य इस ग्राममें घोर लड़ाई हुई रही, उसीके स्मरणार्थ यहां रक्त पहाड़ नामका एक वृहत् स्तूप विद्यमान है।

गुटि (सं० स्त्री०) गवते गु-क्विप्, गुतं अव्यक्तशब्दं वटति वेष्टयति, गुत-वट-इ पृषोदरादित्वात् साधु यद्वा कुट्यते वक्रीक्रियते, कुट कर्मणि इ निपा०। १ वटिका, गोली। २ वर्तुलाकार पदार्थ, गोल चीज।

३ कीटविशेष शहतूतका कीड़ा। दूसरा नाम रेशमका कीड़ा है। इस जातीय कीटको अंगरेजोंमें Bombycina कहते हैं। पहले वह छोटा कीड़ा जैसो लगती, फिर धीरे धीरे बढ़ करके रूप बदलती है। उस समय यह ऊपरसे सूखी पत्ती लपेट करके अपना शरीर छिपा लेती है। इसी डिम्बाकार अवस्थामें अंगरेज उसे Cocoon कहते हैं।

गुटि अपने गठनानुसार नाना श्रेणियोंमें विभक्त है। श्रेणीभेदसे यह भी भिन्न प्रकार होती और तरह तरहकी रेशम उत्पन्न करती है। अभी तक ६० किस्मका रेशमी कीड़ा स्थिर किया गया है। कीड़ा कोषमें बड़ा होने पर उसको काट करके कोई १० तितलियोंका आकार बनाता और बाहर निकल आता है। फिर उस कोषसे रेशम नहीं निकलता। इसलिये कीटके गुटिमें रहते ही रेशम खींच लेना आवश्यक है।

गुटिको निम्नलिखित कई एक श्रेणियां प्रधान हैं—

चीन देशका Bombyx mori, बङ्गालमें उसको 'पाट' कहा जाता है। आजकल चीन, श्याम, भारतवर्ष, ईरान, फ्रान्स, अमेरिका और इटली प्रदेशमें इसको बहुत पालते हैं। चीनमें कहावत है कि ई० सन्‌से २६४० वर्ष पहले सम्राट् हीयाङ्गतकी महिषीने सबसे पहले रेशमका कीड़ा देखा था। आज भी नानकिन नगरमें ३२° उत्तर अक्षांश पर उसकी खेती खूब होती है। परन्तु भारतवर्षमें २६° अक्षांशके किसी स्थान पर गुटि तोड़ कर कहीं भी रेशम नहीं निकालते। इङ्गलैण्डके केण्ट नगरमें शहतूतके पेड़ पर वैसी गुटि मिलती है।

चीनके मुल्कमें Saturnia Pyretorum नामक दूसरी भी कोई जाति है।

Bombyx religiosa को हिन्दीमें देवमूंगा या जोड़ी कहते हैं। यह आसाम और कछार प्रदेशमें उत्पन्न होता है। इसका रेशम सबसे अच्छा और चिकना समझा जाता है।

Bombyx Huttoni हिमालय प्रदेशके मसूरी नगरके पास पर्वतमें जमीनसे कोई ७००० फुट ऊंचे और हिमालयके पश्चिम भागमें समुद्रपृष्ठ अपेक्षा कोई ३००० से ८००० फुट ऊंचे तक सब स्थानों पर खूब उत्पन्न होता है। रंग कुछ पीलापन लिये रहता है। रेशम अन्यान्य जातीय रेशमोंसे ज्यादा मुलायम लगता है। यह वर्षमें

टो बार उत्पन्न हुआ करता है। यहां Actias Selene नामको दूसरी भी गुटि है। वह पर्वत पर ५००० से ७००० फुट ऊंचे तक उपजती है।

Bombyx Horsfieldi पत्रद्वीपोय है।

मन्द्राज प्रान्तमें Bombyx lugubris होता है।

जापानमें Bombyx Yamamai उपजता है। अब इङ्गलैण्डमें भी उसकी खेती है। जापान यह रेशम ज्यादा कीमती समझा जाता है। राजपरिवारमें उसके व्यवसायका एकाधिपत्य है।

Bombyx Pernyi, Actias sinensis, A igne scens और A lolo चार जातियां उत्तर चीनमें मिलती हैं।

Bombyx Mylitta भारतीय है। इसका कोवा अन्यान्य भारतीय गुटियोंसे बड़ा होता है। भारतमें B Assamensis, fortunatus sinensis textor प्रभृति कई भिन्न श्रेणीके रेशमी कीड़े हैं।

Cricula trifenestratra उत्तर पूर्व तथा दक्षिण भारत श्रीहट्ट, आसाम, ब्रह्म और यवद्वीपमें उत्पन्न होता है। सिवा इसके C drepanoides भी मिलता है।

Salassa lola और Actias Moenas श्रीहट्टदेश जात है।

Antheraea paphia वीरभूममें होता है। उसका नाम 'बुघी' है। सिंहल ; दक्षिण, उत्तर पूर्व एवं उत्तर पश्चिम भारत, वङ्ग, विहार, आसाम, श्रीहट्ट और यव द्वीपमें भी उसकी उत्पत्ति है। बहुत समयसे इस देशमें उस कीड़ेको रेशम टसरका कपड़ा बनानेको काम है।

Antheraea Pernyi चीन देशीय है।

Antheraea Roylii Antheraea Aelfeii और Attacus Edwardsii दारजिलिङ्गमें उत्पन्न होते हैं।

A Larissa और Antheraea Java यवद्वीपज है।

Antheraea Perotti तिनु द्विचेरोमें होता है।

A Simla शिमला और दारजिलिङ्ग पर्वतजात है।

A Assama आसाममें होता है। आसामी भाषा में उसका नाम मूगा है

Antheraea मञ्चरियाकी गुटि है। फ्रान्सदेशमें उसकी खेती होने लगी है।

Loepa Ratinka आसाम, श्रीहट्ट, भोट और यव द्वीपमें उत्पन्न होता है। सिवा इसके L miranda, L Sikkima और L Sivalika कई जातीय श्रेणीकी गुटि भी देख पड़ती है।

Atticus Atlas का कोवा सबसे बड़ा होता है। सिंहल, चीन, ब्रह्म, यवद्वीप और भारतमें सर्वत्र उसकी उत्पत्ति है।

Attacus Cynthia और Attacus ricini को बङ्गालमें एडी एण्डिया या एरण्डगुटी कहते हैं।

Attacus Guerini एरण्ड गुटीसे आकृतिमें कुछ बैठता है। वङ्गदेशमें ही वह अधिक परिमाणसे उत्पन्न होता है। एतद्व्यतीत A Canningii, A lunula A obscurus, A Silhetica, Caligula, Cachara, C Simla, C Thebeta, Neoris, Huttoni, N Shadulla, N Stolickzkana Oreinara lactea O Moorei, O diaphama, Rhodia newara, Rinaca, Zullika, Theophila, Bengalensis, Th Huttoni, Mandarina, religiosa, Sherwilli प्रभृति कई दूसरी किस्में हैं।

गुटिक (स० पु०) मत्स्याण्डी।

गुटिका (स० स्त्री०) गुटिरेव गुटि स्वार्थे कन् टाप्। १ वटिका, वटी गोली। २ वर्तुलाकार पदार्थ, गोल चीज।

गुटिकाञ्जनम् (स० क्ली०) चक्षुरञ्जनभेद।

गुटिकापात (स० पु०) गुटिकाया पातः, ६ तत्। किसी विषयके निरूपणार्थ गोली निक्षेप, किसी चीज पर निशान कर गोली फेंकना।

गुटिकाश्र्य (स० पु० क्ली०) लवणविशेष, एक प्रकारका नमक।

गुट्ट (हि० पु०) समूह, झुण्ड, दल।

गुट्टा (हि० पु०) लाखाकी बनी चौकोर लड़कियोंके खेलनेको गोटी।

गुट्टिकोण्डा—कृष्णा जिलेके अन्तर्गत दाचिपल्लीसे ६ कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहां एक अति प्राचीन शिवालय है। ग्रामके निकट ही एक गुहा है। ऐसा प्रवाद है कि इस कन्दरामें मुचुकुन्द सोया करते थे।

और श्रीकृष्णके अनुरोधसे इन्होंने कालयवनको मार था। मुचुकुन्द देखो। पर्वतके ऊपर कर्णके समाधिस्थान और शिवमन्दिर विद्यमान हैं। शिवलिङ्गके निकट ही तलङ्ग अक्षरकी एक शिलालिपि विद्यमान है।

गुट्ठल (हिं० वि०) १ बड़ी गुठलीवाला फल। २ मूर्ख, जड़। ३ गुठलीके आकारका।

गुठली (हिं० स्त्री०) किसी फलका बड़ा एवं कठिन बीज।

गुड़ (सं० पु०) गवते अव्यक्तशब्दं करोति, गु-ड़। १ वर्तुलाकार पदार्थ, गोल। २ हस्तिसन्नाह, हाथीको सज्जा। ३ ग्रास, कौर। ४ कड़ाहमें गाढ़ा उबाल कर जमाया हुआ ऊखका रस जो मृत्तिकादिके जैसे कठिनाकारमें परिणत हो जाता है। पर्याय—इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, खण्डज, द्रव्यज, सिद्ध, मोदक, अमृतसार, शिशुप्रिय, सितादि, अरुण, रसज, इक्षुरसक्वाथ, गण्डोल, गुल, स्वादुखण्ड और स्वादु।

गुटकना (हिं० क्रि०

गुड़का साधारण गुण शुक्रवर्द्धक, स्निग्ध, वायुनाशक, मूत्रशोधक, पित्तनाशक एवं मेद, कफ, कृमि और बलवृद्धिकर है।

पुराने गुड़का गुण—लघु, हितकर, अनभिष्यन्दी, अग्निवर्द्धक, पुष्टिकारक, पित्तनाशक, शुक्रवृद्धिकर, वायुनाशक और रक्तपरिष्कारक।

नूतन गुड़का गुण—कफ, श्वास, कास, क्रिमि और अग्निवृद्धिकारी। अदरसके साथ गुड़ खानेसे कफ, हरीतकीके साथ पित्त एवं शोंठके साथ खानेसे अनेक तरहके वातरोग नष्ट होते हैं। ५ स्नुहीवृक्ष। ६ कार्पासी, कपास।

गुड़क (सं० त्रि०) गुड़ेन पक्वः बाहुलकात् कन्। १ गुड़पक्व, गुड़से बनाया हुआ। (पु०) गुड़ एव गुड़ स्वार्थे कन्। २ वर्तुलाकार पदार्थ।

गुड़करी (सं० स्त्री०) गुड़ं गुड़वत् सुमिष्टं श्रुतिसुखकरं करोति। रागिणी विशेष।

गुड़काष्ठ (सं० पु०) इक्षु, ऊख, केतारी।

गुड़कुष्माण्डक (सं० क्ली०) औषधविशेष, एक दवा। किसी पुराने सूखे कुम्हड़ेसे १०० पल अंश निकाल करके आग पर गर्म करना चाहिये। कुम्हड़ा उत्तप्त होने पर उसमें एक प्रस्थ या २ सेर घी और तेल छोड़ते हैं। फिर दालचीनी, तेजपत्र, धनिया, त्रिकटु, जीरा, इलायची, लाल चीत, नागरमोथा, चित्रक, पीपल, सोंठ, सिंघाड़ा, केशर, प्रलम्ब और तालमस्तक प्रत्येक एक पल परिमित ले चूर्ण करना चाहिये। इसके बाद १२॥ सेर गुड़ उक्त चूर्णमें मिला करके पहले तेल और घीके साथ पकाते हैं। गाढ़ा पड़नेसे इसमें ८ पल शहद डाला और सब पक आने पर पाक उतार लिया जाता है। इसीका नाम गुड़कुष्माण्ड है। अग्निमान्द्य रहते भी इस औषधको सेवन कर सकते हैं। इससे कफ, पित्त और वायु प्रशमित होता है। क्षय व्यक्तिके लिये यह बलवृद्धिकर है। अनियम स्त्रीसम्भोगसे जो अतिशय क्षीणवीर्य हो गया है, उसके लिये गुड़कुष्माण्डक विशेष उपकारी है। इसके सेवनसे काम, श्वास, ज्वर, हिक्का छर्दि और अरुचि रोग होते हैं। यह अतिप्राचीन औषध है। अश्विनीकुमारने ही सर्व प्रथम उसका आविष्कार किया था। (चक्रद०)

गुड़खण्ड (सं० पु०) गुड़कृत खण्ड, गुड़की खांड। यह मधुर, सित, वातपित्तनाशक, किञ्चित् शीतल, बल्य, वृष्य और रुचिप्रद है।

गुड़गुड़ (हिं० पु०) जलमें नली आदिके द्वारा वायु प्रवेश होनेका शब्द।

गुड़गुड़ा (सं० स्त्री०) यावनालशर्करा।

गुड़गुड़ापुर—बम्बई प्रान्तके धारवाड़ जिलेमें रानीबेन्नूर तालुकका नगर तथा तीर्थस्थान। यह अक्षा० १४° ४०' उ० और देशा० ७५° २५' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या कोई ८४७ होगी। अक्तूबर मासको मल्लारि (शिव) का जो मेला लगता, हजारों यात्रियोंका समागम रहता है। मल्लारिका एक मन्दिर है। उन्होंने भैरव रूप धारण करके मल्ल राक्षसको मारा था। इनके सेवक वाग्गप कुक्कुरका अवतार बतलाये जाते हैं। वह शेर या भालुके खाल पहन करके यात्रियोंको हंसाते और पैसा कमाते हैं। १८७८ ई०को यहां अस्थायी मुनिसपालिटी हुई।

गुड़गुड़ाना (सं० क्रि०) गुड़गुड़ शब्द होना।

गुड़गुड़ायन (सं० वि०) गुड़गुड़ इत्येवं ... यस्य, बहुव्री०। जिससे गुड़गुड़का शब्द हो।

गुड़गुड़ाहट (हिं० स्त्री०) गुड़गुड़ शब्द होनेका भाव।

गुडगुडी (हि० स्त्री०) फारसी, एक तरहका हुक्का।

गुडगुडो—बम्बई प्रान्तके धारवाड जिलेका कसावा। यहां कलायका मन्दिर है। इसी मन्दिरमें १०३८ और १०७२ ई०के प्रदत्त दो प्रशस्ति खोदित हैं।

गुडग्राम—राजगढके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यह बहुया नदीसे ६ कोश पश्चिममें अवस्थित है।

गुडूची (स० स्त्री०) गुड मिष्टरस चिनोति गुडेन चीयते वा गुड् चि ड डीप्। गुड़ची देखो।

गुडतृण (स० क्ली०) गुडसाधन तत् प्रधान या तृण मध्यपदलो०। इक्षु, ऊख, केतारी।

गुडत्विण (स० क्ली०) गुडप्रधान तृण निपातनसे साधु। गुडतृण देखो।

गुडत्वच् (स० क्ली०) गुडतुल्य त्वक् मध्यपदलो०। स्वनाम ख्यात गन्ध द्रव्य। यह मधुर रस तथा पीतवर्णका होता है। इसका पर्याय—सूत्कट, भृङ्ग, त्वक्‌पत्र, वराङ्गक, त्वच, चोच, त्वचा, पत्र, हृदय, सुरभिवल्कल और त्वक् है। राजवल्लभके मतसे इसका गुण-कफ, शुक्र और आमवात-नाशक, मधुर एवं कटु है। किन्तु भावप्रकाशके मतसे इसका गुण—लघु, उष्ण, कटु, मधुर और तिक्तरस, रूक्ष पित्तवर्द्धक एवं कफ, वायु कण्डू, आमदोष, अरुचि हृद्रोग वस्तिगत रोग, वातजनित अर्श, क्रिमि, पीनस और शुक्रनाशक है।

यह पीतवर्ण सुगन्धि त्वक्‌मलक् 'कैसिया' नामक वृक्षकी छाल है। यह चीन तथा तातार देशमें उत्पन्न होती है। इसमें कुछ मिठास होनेके कारण इसे गुड-त्वक् कहते हैं। यह केशादिको सुगन्धित करनेके लिये व्यवहृत होता है। इस तरहकी एक और पतली छाल होती है। जिसे दालचीनी कहते हैं। किन्तु इसका स्वाद कटुमिश्रित मीठा है। किसी किसी वैद्यक ग्रन्थके मतसे गुडत्वक् शब्दका अर्थ दालचीनी कहा गया है।

गुडत्वन (स० क्ली०) गुडत्वक् राजभोग्य, जायफी।

गुडदारु (स० क्ली०) गुडप्रधान दारु मध्यपदलो० इक्षु, ऊख, केतारी।

गुडधनियां (हि० स्त्री०) गेहूं और गुड मिश्रित एक तरहका लड्डू।

गुडधेनु (सं० स्त्री०) गुडनिर्मिता धेनु, मध्यपदलो०। दानके लिये गुड द्वारा निर्मित धेनु, गुडकी गाय। हेमाद्रि दानखण्डमें उसका विधान इसप्रकार लिखा है जहां गुडधेनु दी जावेगी, गोमय द्वारा अच्छी तरह लीपना पड़ेगा। उस पर कुश वा दर्भपत्र बिछाकर करके चार हाथका कोई कृष्णाजिन पूर्वमुख करके रखना और उसके निकट दूसरा छोटा कृष्णाजिन वत्सके लिये स्थापन करना चाहिये। पहले पर गुडकी एक गाय और दूसरे पर बछड़ा बनाते हैं। चार भार अर्थात् २५ मन गुडसे गौ और एक भार पानी ६। मनसे वत्स प्रस्तुत करना उत्तम है। दो भार (१२॥ मन) गुडकी धेनु और आध भार (३ मन ५ सेर)का बछड़ा मध्यम होता है। दाता अपनी अवस्थाके अनुसार जितने चाहे गुडसे यह काम कर सकता है। धेनु और वत्स दोनोंका मुख घृत द्वारा निर्मित होता और शुभ्रवर्ण सुन्दर वस्त्रसे आच्छादित करके रखना पड़ता है। कान सीपके, नयन मोतीके, शिराए सफेद सूतकी, गलकम्बल श्वेत कम्बलके, ककुत् तथा पृष्ठदेश तांबेके और उजले चामरके रोम लगाते है। इसी प्रकार मूंगेसे भौंहें, नवनीतमय स्तन वत्सके स्तन एवं पुच्छ, कांस्य द्वारा दोह, इन्द्रनीलमणिसे चक्षु-की तारकाए, सोनेसे सींग, चांदीसे खुर और विविध फलोंसे दांत बनाये जाते हैं।

इसी प्रकार गुडधेनु निर्माण करके धूप, दीप आदिसे उसकी पूजा करना चाहिये। प्रत्येक पार्वणश्राद्ध करने की तरह इसका भी विधान दृष्ट होता है। गुडधेनु दानसे समस्त यज्ञका फल मिलता और सब पाप जाता रहता है। विषुवसंक्रान्ति, पुण्याह तिथि, व्यतीपात और ग्रहण समयको गुडधेनु दान करना उचित है।

गुडनई—वासुदेवपुरसे दो योजन उत्तरमें अवस्थित एक प्राचीन ग्राम। (भारत)

गुडना (हि० क्रि०)एक तरहका लड़कोंका खेल। इस में लड़के डण्डे या लाठीको इसतरह फेंकते हैं कि लाठी सिरेके बल पलटा खाती हुई बहुत दूर तक चली जाती है।

गुडपर्वत (स० पु०) गुडेन निर्मित पर्वत, मध्यपदलो०। दानके लिये गुडका बनाया हुआ पहाड़। मत्स्यपुराणमें उसका विधान इस प्रकार लिखा है—तीर्थ, गोष्ठ या गृहके प्राङ्गणमें एक दरवाजी चतुरस्र मण्डप निर्माण

करना चाहिये। उसके बीचमें अच्छी तरह गोबरसे लीप करके कुश बिछा देते हैं। इस पर विष्कम्भ आदि पर्वत युक्त एक गुड़का पहाड़ बनाया जाता है। दश (६२॥ मन) भार उत्तम, पांचका मध्यम और तीन भार गुड़का पर्वत अधम कहा है। दाताकी अवस्था बहुत हीन होनेसे इससे थोड़ेमें भी गुड़पर्वत बनाया जा सकता है। विष्कम्भ पर्वत, सुवर्णवृक्ष आदि धान्याचलके नियमानुसार रखते हैं। होम और लोकपालोंका अधिवास प्रभृति भी वैसा ही होता है। गुड़पर्वत दान करनेसे स्वर्ग मिलता है। धान्याचलके सिवा काम करके यह मन्त्र पढ़ते हैं—

"यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरोऽयं जनार्दनः।
सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम्॥
प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः॥
मम तस्मात् परां लक्ष्मीं गुडपर्वत देहि मे।
यस्मात् सौभाग्यदायिन्या भ्राता त्वं गुडपर्वत।
निवासश्चापि पार्वत्या तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥" (मत्स्य० ८५ अ०)

जो इस नियमसे गुड़पर्वत दान करेगा, पहले गौरी लोकमें रह करके सप्तद्वीपका एकाधिपत्य पा सकेगा।

मेरुदान देखो।

गुड़पाक (सं० पु०) गुडस्य पाकः, ६-तत्। वैद्यशास्त्रोक्त पाकविशेष। चक्रदत्तके मतसे गुड़पाक करनेके समय एक जलपूर्ण पात्र उसके निकट रखना चाहिये। गुड़-पाक भली भांति हुआ या नहीं इसके जाननेके लिये थोड़ा गुड़ उठाकर रखे हुए जलपूर्ण पात्रमें छोड़ दें। यदि निक्षिप्त गुड़ एक स्थानसे दूसरा स्थान न जाय एवं उसका कोई अंश गल न जाय तो जानना चाहिये कि गुड़पाक अच्छी तरह हो गया। यदि गुड़ हाथमें लग जाय अथवा सूतेके सदृश हो जाय तो गुड़का पाक होना नहीं समझा जाता है। (चक्रदत्त)

गुड़पाटक (सं० पु०) इक्षु, ऊख।

गुड़पिप्पलीघृत (सं० क्ली०) गुडपिप्पलीभ्यां सह पक्वं घृतं मध्यपदलो०। औषधविशेष। पीपर, गुड़ और घृतको त्रिगुणित बार चौगुना दूधके साथ पाक करनेको गुड़पिप्पलीघृत कहते हैं। यह अम्लपित्त और शूलरोगका एक महौषध है।

गुड़पिष्ट (सं० क्ली०) गुडयुक्तं पिष्टं मध्यपदलो०। गुड़ मिला हुआ एक तरहका पीठा।

गुड़पुष्प (सं० पु०) गुड़ इव मधुरं पुष्पमस्य बहुव्री०। मधुकपुष्प, मोलसरीका पेड़।

गुड़पुष्पक (सं० पु०) गुड़पुष्प स्वार्थे कन्। मधुक-पुष्पवृक्ष, मोलसरीका पेड़।

गुड़फल (सं० पु०) गुड़ इव मधुरं फलमस्य, बहुव्री०। १ पीलुवृक्ष। २ बदरवृक्ष।

गुड़फला (सं० स्त्री०) इक्ष्वाकुवार्त्ती, छोटा मकोय।

गुड़भल्लातक (सं० पु०) गुडेन पक्वो भल्लातकः, मध्यपद-लो०। औषधविशेष, एक दवा। इसको इस तरह बनाते हैं—एक द्रोण पानीमें दो हजार भिलावें उबालना चाहिये। यह पानी चौथाई घटने पर भिलावें निकाल लेते और उसी पानीमें १२॥ सेर गुड़ डाल करके खौलने देते हैं। फिर फलोंको चार चार टुकड़े करके उसमें निक्षेप किया जाता है। भिलावां खूब पक जाने पर त्रिफला, त्रिकटु, अजयायन, नागरमोथा और सैन्धव एक एक कर्ष डालना चाहिये। फिर दालचीनी, इला-यची, तेजपत्र और केसर छोड़ करके उतार लिया जाता है। इसीका नाम गुड़भल्लातक है। बलशाली व्यक्ति अग्निवृद्धि रहनेसे यह औषध सेवन कर सकता है। इसको सवेरे खाना चाहिये। गुड़भल्लातक लेनेसे प्लीहो-दर, कास, कृमि और भगन्दररोग विनष्ट होता है। (चक्रदत्त)

गुड़भा (सं० स्त्री०) गुड़ इव भाति भाक। शर्करा, शक्कड़।

गुड़मञ्जरी (सं० स्त्री०) १ कृष्णशाल्मली। २ झिंझिनी।

गुड़मण्डूर (सं० क्ली०) १ पुराना गुड़। २ अन्नद्रव शूल।

गुड़मूल (सं० पु०) गुड़ इव मूलं यस्य, बहुव्री०। १ ऊख केतारी। २ खल्पमारिषगस,

गुड़योगफला (सं० स्त्री०) मधुरालाबु, मिठी कद्दू।

गुड़र (सं० त्रि०) गुड़से बना हुआ।

गुड़ल (सं० क्ली०) गुडं कारणतया लाति गुड़-ला-क। १ गौड़ी नामक मदिरा, जो गुड़से प्रस्तुत किया जाता है। (त्रि०) गुड़ोत्पन्न।

गुड़लगी—बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेका एक मौजा।

यहां कादसोध और पादसौध नामक दो लिङ्गायत देव प्रेत बाधा दूर करनेके लिये मशहूर हैं तीन चमार स्वामीको बराबर भूतसे सताया हुआ आदमी वहां ले जानेसे अच्छा हो जाता है।

गुडलिह् (सं० त्रि०) गुड लेढि गुड लिह क्विप्। गुड चाटनेवाला।

गुडबीज (सं० पु०) गुड इव मधुरं बीजं यस्य बहुव्री०। मसूर।

गुडशर्करा (सं० स्त्री०) गुडजाता शर्करा। उत्तम चीनी।

गुडशिग्रु (सं० पु०) गुड इव मधुरः शिग्रुः। रक्त शोभाञ्जन।

गुडशुक्त (सं० क्ली०) अम्ल रसविशेष, किसी किस्मका सिरका। यह तेल, गुड, पानी, कपड़शाक आदि एकत्र मिला करके बनाया जाता है। (भावप्र०)

गुडहर (हिं० पु०) अड़हुलका पेड़ या फूल।

गुडहल (हिं० पु०) गुडहर देखो।

गुडा (सं० स्त्री०) गुड टाप्। १ स्नुहीवृक्ष। २ वटिका गुटिका, गोली। ३ उशीरी तृण, एक तरहकी सुगन्धि घास। ४ गुडूची।

गुडाका (सं० स्त्री०) गुडयति सङ्कोचयति देहेन्द्रिया दीनि स गुड ग आकति प्रकाशयति गुड आ के क टाप। १ निद्रा, नींद। २ आलस्य।

गुडाकू (हिं० पु०) गुड मिश्रित पीनेका तम्बाकू।

गुडाकेश (सं० पु०) गुड स्नुहीव केशा यस्य, बहुव्री०। गुडाकायाः निद्रायाः आलस्यस्य वा ईशः, ६ तत्। अर्जुन। "गुडाकेश अर्जुन" (अमर) (त्रि०) जितनिद्र, जिसने निद्राको वशीभूत कर लिया हो। ३ जितालस्य, आलस्य शून्य। (पु०) ४ शिव, महादेव।

गुडाख्य (सं० पु०) स्नुहीवृक्ष।

गुडाचल (सं० पु०) गुडेन निर्मितोऽचलः मध्यपदलो०। दानके लिये गुड द्वारा निर्मित पर्वत। पर्वतदान देखो।

गुडादि (सं० पु०)पाणिनीका एक गण। गुड, कुल्माष, सक्तु, अपूप, मांसौदन, इक्षु, वेणु, सग्राम, सवात, सकाश, सम्वाह प्रवाह, निवास और उपवास इन सबोंको गुडादि गण कहते हैं।

गुडादिवटिका (सं० स्त्री०) औषधविशेष।

गुडापूप (सं० पु०) गुडेन मिश्रितोऽपूप, मध्यपदलो०। गुडमिश्रित पिष्टक, गुड़पीठा।

गुडापूपिका (सं० स्त्री०) गुडा पूपा प्रायेण यस्यां गुडापूप कन् टाप् अत इत्वञ्च। पूर्णिमा तिथिविशेष।

गुडाम्बु (सं० क्ली०) गुड कृत जल। गुड मिला हुआ जल।

गुडारिष्ट (सं० क्ली०) गुडनिर्मित अरिष्ट, मध्यपदलो०। मदिरा, दारू।

गुडाला (सं० स्त्री०) गुड मधुरस आलाति बाहुलकात् क तत टाप्। गुण्डासिनीवृक्ष। इसका रस गुडके सदृश मीठा लगता है।

गुडाशय (सं० पु०) गुड इव मधुरं रसं आश्रितः अन् आ शी आधारे अच्, ६ तत्। अक्षोटवृक्ष, अखरोटका पेड़।

गुडाश्मक—पुराणोक्त एक जनपद।

"सर्वांश्चैव ओलिविका गौरदोषा गुडाश्मका।"

(मार्कण्डेयपुराण ५७।०)

गुडाष्टक (सं० क्ली०) औषधविशेष, एक दवा। त्रिकटु, पिपरामूल, निशुत्की जड़, दन्तीमूल और चीतकी जड़ बराबर बराबर चूर्ण करके गुडके साथ सबेरे खाना चाहिये मात्रा अग्निबलके अनुसार दी जाती है। यह अजीर्ण और उदावर्त दूर करता है।

गुडासव (सं० पु०) गुडकृत आसव, गुड़की शराब। यह वातनाशक, तर्पण और दीपन है। (चरक)

गुडिका (सं० स्त्री०) गुटिका, गोली।

गुडिमेटला—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेका एक गांव। यह नन्दीग्रामसे ८ मील दक्षिण-पश्चिम अवस्थित है। यहां पहाड़ पर एक भग्न दुर्ग टूटे फूटे मन्दिर आदिके प्राचीर और मण्डप प्रभृतिका ध्वंसावशेष देख पड़ता है। कहते हैं कि १३२८ से १४२० ई०के बीच रेड्डी नायकों ने यह सब मन्दिर आदि बनाये थे। कोई कोई इसे गुरुडरायडु कहा करता है। ११८० शकको दिया हुआ राजेन्द्र चोड़के पुत्र कामनीय चन्द्रमहाराज, १०८६ शकमें प्रदत्त वासुदेव और रुद्राम्बा देवीके राजत्वकाल पर दिया हुआ भिन्न भिन्न शिलाफलक मिलता है।

गुड़िया (हिं॰ स्त्री॰) कपड़ोंकी बनी हुई लड़कियोंके खेलनेकी पुतली।

गुड़िया—उड़ीसेकी एक जाति। यह हलवाईका काम करते हैं। गुड़की मिठाई बनानेसे ही उनको गुड़िया कहा जाता है।

गुड़िलो-ब्रह्मटाचलम्—मन्द्राजप्रान्तके विशाखपत्तन जिलेका एक पहाड़। यह विमलीपत्तन तालुकसे ८ मील पश्चिम पड़ता है। इसकी समावरम राहसे एक मील दक्षिण रङ्गनाथ स्वामीका मन्दिर और उसीके पास पत्थर पर खुदी हुई एक लिपि है। सिवा इसके मण्डपके खम्भे पर पहाड़ और झरनेके निकट दूसरी भी कई एक अस्पष्ट शिलालिपियां देख पड़ती हैं। इसी स्थानसे एक मील दूर १० फुट गहरी और २० फुट चौड़ी एक गुहा है।

गुड़ीवाड़-–मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेका एक सबडिविजन और तालुक। यह अक्षा॰ १६° १६′ तथा १६° ४७′ उ॰ और देशा॰ ८०° ५५′ एवं ८१° ७३′ पू॰ मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १५१८१६ है। इसमें कोलार झील आ गया है। मालगजारी और सेस कोई १०१८०००) रु॰ है। जमीनकी सींच कृष्णा नदीकी नहरसे होती है। एक नगर और २१२ गांव आबाद हैं।

गुड़ीवाड़—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेमें गुड़ीवाड़ तालुकका सदर। यह अक्षा॰ १६° २७′ उ॰ और देशा॰ ८१° पू॰में पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ६७१८ है। गुड़ीवाड बहुत पुरानी जगह है। नगरके मध्यभागमें एक टूटाफूटा बौद्ध स्तूप देखते हैं। कहते हैं, कि उसमें पांच सटके मिले। पश्चिमको एक सुरक्षित जैन मूर्ति है। थोड़ो दूर आगे नगरका प्राचीन स्थान टीला है। यहां मट्टीके बड़े बर्तन, धातु, पत्थर तथा शीशे सब तरहकी मालाएं और आन्ध्र कांस्य मुद्राएं आविष्कृत हुई हैं।

गुडी (सं॰ स्त्री॰) १ स्नुहीवृक्ष। २ गुडूची।

गुड्डी (हिं॰ स्त्री॰) पतंग, गुड्डो।

गुडूची (सं॰ स्त्री॰) गुड बाहुलकात् ऊचत् ङीप्। गुरुच।

गुड्डुक (हिं॰ स्त्री॰) १ किवाड़की चूर। २ मण्डलाकार रेखा। ३ छोटा छिद्र।

गुड्डुवा (हिं॰ पु॰) कपड़ेका बना हुआ लड़कोंके खेलनेका पुतला।

गुडुह—एक देशका नाम। (भ॰ भा॰ ६।९।१८०३)

गुडूची (सं॰ स्त्री॰) गुड़ बाहुलकात् ऊचट् टाप्। गुडूची बाहुलकात् उकारस्य ऊकारादेशः। लताविशेष, एक बेल। चलती बोलीमें गुरुच कहते हैं। (Cocculus cordifolius) इसका संस्कृत पर्याय—वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी गुडूची, गुडुच्या, चक्र, लक्षणा, अमृतवल्ली, ज्वरारि, श्यामा, वरा, सुकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, सोमलतिका, भिषकप्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छिन्निका, चन्द्रहासा, अमृतवल्लरी, मधाजीवन्ती, सोमा, चक्रलक्षणिका, वयस्था, मण्डली और देवनिर्मिता है।

गुडूची कटु, तिक्त स्वादुपाक, रसायन, संग्राही, कषाय, उष्ण, लघु, बलकर, अग्निवृद्धिकारक, और त्रिदोष, आम, तृष्णा, दाह, मोह, कास, पाण्डु, कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, कृमि तथा वमिनाशक है। (भाव॰) राजवल्लभके मतमें यह गुरु, वीर्यकर और श्रमनाशक होती है।

गुरुचकी पत्ती अग्निवृद्धिकर सर्वप्रकार ज्वरनाशक, लघु, कषाय और दूसरे गुणोंमें लताके समान है घीमें मिली हुई गुरुचकी पत्ती वात, गुड़युक्त पित्त, एरण्डतैल योगसे उग्र वातरक्त और सोंठके मेलमें आमवात दूर करती है। (राजवल्लभ)

भावप्रकाशमें बतलाया है कि राम रावण युद्धमें राक्षसाधिपति रावणके हथियारोंकी कड़ी चोटसे रामचन्द्रका बहुतसा वानर सैन्य निहत हुआ। रामने उन्हें बचानेके लिये इन्द्रसे प्रार्थना की थी। सुरपतिके अमृत वर्षण करनेसे मरे हुए वानर जी उठे। उनके शरीरका अमृत चारों ओर मट्टीमें लगा था। उसी अमृतसे सबसे पहले गुरुच उपजी।

भारतवर्षके प्रायः सब वनोंमें गुडूची लता देख पड़ती है। जड़ काट डालनेसे भी यह नहीं जाती।

आमके रूपमें हो वह ज्यादा बढ़ती है। गुर्च दो प्रकार की है,—एकको काटनेसे उसके बीचमें चक्राकार चिह्न झलकता है। दूसरेमें वैसा नहीं होता। चक्राकार चिह्नयुक्त लता पद्मगुडूची भी कहलाती है। यह अपेक्षाकृत कुछ मोटी रहती और चालीस पचास हाथ बढ़ती है। इसकी गांठसे लम्बे लम्बे रेशे निकलते हैं। नीमकी गुर्च सबसे अच्छी समझी जाती है।

युरोपीय चिकित्सकोंके मतमें वह बलकर, मूत्रकर और अल्प ज्वरघ्न है। ह्वाट, कार्बेल आदि डाक्टरोंका कहना है कि सविराम ज्वरमें गुडूची बड़ा उपकार करती है। परन्तु डा० ओसफर्नसी यह बात नहीं मानते। उनके मतानुसार गुर्चके काढ़ेका विशेष गुण यही है कि वह शैत्यनिवारक होते भी उष्ण नहीं। पुराने उपदंश रोगमें यह साल्सेकी तरह काम आती है। ज्वर आदिके पीछे शरीर दुर्बल पड़ जाने पर इसको खानेसे क्षुधा, जीर्ण और बलवृद्धि होती है।

गुडूचीघृत (सं० क्लो०) घृतविशेष, गुर्चका घी। १२॥ शरावक गुर्च ४ श० गायके घी और ६४ श० पानीमें डाल खूब उबालते हैं। जब १६ श० जल बच जाता, १ श० गुर्चका चूर्ण उसमें डाल दिया जाता है। इसीका नाम गुडूचीघृत है। यह वात-रक्तके लिये बहुत उपकारी होता है।

आमवातका गुडूचीघृत इस प्रकार बनता है—४ शरावक गव्यघृत और ६४ श० जलमें ६४ पल गुडूची डाल करके खूब उबालते और १६ श० पानी बचने पर उतार करके उसमें १ श० शुण्ठीचूर्ण मिलाते हैं।

गुडूचीतैल (सं० क्लो०) तैलविशेष, गर्चका तेल। स्वल्प गुडूची तैल इस तरह बनता है—४ शरावक तिल तैल और ६४ श० जलमें १०० पल गुर्च उबाल करके १६ शरावक पानी बचने पर उतारते फिर उसमें १०० पल गुडूची चूर्ण मिलाते हैं।

मध्यम यथा—४ श० तिलतैल, १६ श० गुडूचीक्काथ और ४ श० दुग्ध यथाविधि पाक करनेसे मध्यम गुडूची तैल प्रस्तुत होता है।

बृहत् यथा—८ श० तिलतैल और ६४ श० जलमें १०० पल गुडूची डाल करके १६ श० पानी बचनेसे क्वाथ उतार लेना चाहिये। इसमें शुलफा, हर, त्रिकटु, गुर्च, मोथा, वन अजवायन, हलदी, दारुहलदी, कुट, धनिया, पद्मकाष्ठ, विडङ्ग, तेजपत्र, वच तथा जटामासी चार चार तोले और ८ तोला लालचन्दन डालनेसे बृहत् गुडूची तैल तयार होता है।

दूसरा गुडूचीतैल बनानेकी प्रणाली यह है—१६ श० तिलतैल, ६४ श० दुग्ध और ६४ श० जलमें १२॥ श० गुर्च उबाल करके १६ श० पानी रहनेसे उतारा जाता है। इसमें मुलहटी, मञ्जिष्ठा, ऋद्धि (अभावमें बला), वृद्धि (न मिलनेसे गोरक्ष चाकुल्य), मेदा (न रहनेसे अश्वगन्धा), महामेदा (अभावमें अनन्ता), गुर्च, ऋषभक (न मिलने पर वंशरोचना), काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, कुट, इलायची, अगुरु, द्राक्षा, जटामासी, पद्मनखी, शटी, रेणुक, विकङ्कत, जटा, सोंठ, पीपल मिर्च शुलफा, श्यामालता, अनन्तमूल, गुडत्वक तेजपत्र, चव्य, बराहक्रान्ता, भूम्यामलकी, शालपर्णी, तगरपादुका, नागेश्वर, पद्मकाष्ठ, सौगन्धिक और रक्तचन्दन दो दो तोला पड़ता है। (सारकौमुदी)

यह तैल लगानेसे वातरक्त रोग मिटता है।

गुडूचीपत्र (सं० क्लो०) गुडूचीका पत्र, गुर्चको पत्ती। इसका शाक बनता है। गुण—आग्नेय, सर्वज्वरहर, लघु, कटु, कषाय, तिक्त स्वादुपाक, रसायन बल्य, उष्ण सग्राही और तृष्णा, प्रमेह, दाह, कामला, कुष्ठ तथा पाण्डुघ्न है। (भावप्रकाश)

गुडूचीसत्व (सं० क्लो०) गुडूचीसार, गुर्चका सत।

गुडूच्यादि (सं० पु०) गुडूची आदिर्यस्य, बहुव्री०। वैद्यकशास्त्रोक्त एक गण। गुडूची, निम, धनिया, पद्मकाष्ठ और चन्दन इन सभीको गुडूच्यादि कहते हैं। इसका गुण—हिक्का, अरुचि, छर्दि, पिपासा और दाह नाशक है।

गुडूच्यादिकषाय (सं० पु०) पाचनविशेष। गुडूची, आतइच, धनिया, शुंठ, बिल्वसुखा और वाला इन समस्त द्वारा प्रस्तुत पाचनको गुडूच्यादिकषाय कहते हैं। इस पाचनके सेवनसे ज्वरातिसार, हिक्का, अरुचि, छर्दि, पिपासा और गात्रदाह नष्ट होते हैं।

गुडूच्यादिक्वाथ (सं० पु०) पाचनविशेष। भावप्रकाश

में तीन तरहके गुडूच्यादिक्वाथ निरूपित हैं। १म-गुरुच और आंवला संयुक्त चेतपापड़के क्वाथको एक तरहका गुडूच्यादि क्वाथ कहते है। इसके सेवनसे दाह, शोष और भ्रान्ति उपसर्गयुक्त पित्तज्वरमें विशेष लाभ होता है। २य—गुरुच, चिरौता, वाला, वेणाकी जड़, मोथा, तेउड़ी, आंवला, किसमिस, वासक और चेतपापड़, इन समस्त द्रव्यके क्वाथको भी गुडूच्यादि क्वाथ कहते है। इसके सेवनसे ज्वर विनष्ट होता है। प्रातःकाल मधुके साथ सेवनीय है। ३य—गुलञ्च, निम्बपत्र, धनिया, रक्तचन्दन और कटकी इन समस्त पदार्थसे जो क्वाथ प्रस्तुत होता है उसे गुडूच्यादिक्वाथ कहते हैं। यह पित्तश्लेष्मक ज्वरमें सेवन करना उचित है। इसके सेवनसे पिपासा, दाह, अरुचि और वमि दूर हो जाते है

गुडूच्यादि लौह (सं० पु०) रसविशेष, एक दवा। गुर्चका सत, त्रिफला, विडङ्ग, मोथा तथा चीतको जड़ एक एक तोला और १० तोला लौह मिला करके माषाप्रमाण गोली बना लेना चाहिये। इसीका नाम गुडूच्यादि लौह है। यह रस सेवन करनेसे वातरक्त दूर होता है। (रसेन्द्रचिन्तामणि)

गुडूर—वंबई प्रान्तके बीजापुर जिलेका ग्राम (मन्दिरपुरी)। यह बादामीका एक छोटा गांव है। जनसंख्या प्रायः ११८२ है। ग्रामके मध्यभागमें रामेश्वरका एक प्राचीन मन्दिर है। उसमें लिङ्ग प्रतिष्ठित है। मठकी छोड़ कर के और सब गिर पड़ा है। मन्दिरमें १२ चौकोर और ६ गोल नक्काशीदार खम्भे हैं। द्वारकाष्ठ पर गजलक्ष्मीकी मूर्ति है। हाथी अपनी सूंडमें घड़े लिये उनके मस्तक पर जलधारा छोड़ रहे है। यहां कपड़े, तांवे पीतलके वर्तन और मूर्तियोंका काम होता है।

गुडेर (सं० पु०) गुड-एरक्। १ गुडक, वर्तुलाकार पदार्थविशेष। २ ग्रास, कौर। ३ तृण, घास।

गुडेरक (सं० पु०) गुडेर स्वार्थे कन्। गुडेरक।

गुडोदक (सं० क्ली०) गुड़ मिश्रित जल।

गुडोद्भवा (सं० स्त्री०) गुड उद्भवोऽस्याः, बहुव्री०। १ शर्करा, शक्कर। (त्रि०) २ जो गुड़से बनाया गया हो।

गुडोद्भूता (सं० स्त्री०) गुड़ात् उद्भूता, ५-तत्। शर्करा, शक्कर।

गुड्डुक (सं० पु०) गुड़गाली।

गुड्डा (हिं० पु०) गुड़्डा देखो।

गुड्डी (हिं० स्त्री०) पतंग, कनकौवा।

गुड्डू (हिं० स्त्री०) १ गुड़ुहल देखो। (पु०) २ एक प्रकारका कौट जो धूलमें घर बना कर रहता है।

गुण (सं० पु०) गुण भावे कर्त्तरि वा अच्। १ धनुषकी प्रत्यंचा। इसका पर्याय—मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी, शिञ्जा, ज्यावा, पतञ्चिका और जीवा है। २ रज्जु, रस्सी, डोरा। ३ शौर्यादि धर्म। ४ छह प्रकारकी राजनीति। सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध और संश्रय इन सर्मोको गुण बोलते है। ५ सूत्र। (आदौगुण इत्यादि मार्का० स० ४४८) ६ ज्ञानविद्यादि। ७ अच्छा स्वभाव, ज्ञान, सद्वृत्ति। ८ सांख्यमतसिद्ध पदार्थविशेष, सांख्यमतमें माना हुआ एक पदार्थ। "गुण" शब्दसे साधारणतः द्रव्यके धर्म रूप रस आदि होका बोध होता है, किन्तु सांख्यमतमें गुणको ऐसा नहीं माना है, वे कहते हैं यह एक प्रकारका द्रव्य है और इसके भी कई एक धर्म है। विज्ञानभिक्षु कहते है, कि पुरुष वा आत्मारूप पशुके बन्धनके कारण महत्तत्त्व वा बुद्धिरूप रज्जु जिससे बनती है, उसीको सांख्यप्रणेता कपिलने गुण शब्दसे उल्लेख किया है। (सांख्य १।६१ भाष्य) इस गुणसे ही समस्त पदार्थ उत्पन्न होते है। इसी लिए समस्त जन्य पदार्थको त्रिगुणात्मक कहते हैं। ये गुण तीन प्रकारके हैं-सत्वः, रजः और तमः। सुख, लघुता और प्रकाश आदि जिसका धर्म है, उसे सत्वः, दुःख, उपष्टम्भ और चाञ्चल्ययुक्तको रजः तथा विषाद, गुरुत्व और आवरकत्व आदि जिसमें है उस गुणका तमः नामसे उल्लेख किया जाता है। इनमें एक एक जातीय अनन्त गुण है। सत्वजातीय अर्थात् जिसमें सत्वगुणका धर्म है, उसे सत्व, रजोजातीय सभी गुणोंको रजः और तमोजातीय समस्त गुणोंको तमः कहा जाता है। इन जातियोंको ले कर तीन गुण स्वीकार किये जाते है। वास्तवमें गुण सिर्फ तीन ही नहीं हैं। एक एक जातिके अनेक गुण है। विज्ञान भिक्षुके मतसे—आकाशके कारण जो गुण है, उन्हें छोड़ कर अन्य सभी गुण अणुपरिमाण है। इन गुणोंका कभी भी विनाश नहीं होता। ये समस्त पदार्थोंके रूपमें परि-

गत होती है। नैयायिक वा वैशेषिकगण भौतिक परमाणुओंको निरवयव नित्य मानते हैं। उनके मतसे परमाणु ही चरमद्रव्य हैं, उन्हीं से समस्त जन्य द्रव्योंकी उत्पत्ति होती है, किन्तु परमाणु किसी पदार्थसे उत्पन्न नहीं है। सांख्यप्रणेताने इस मतका युक्ति और प्रमाणों द्वारा खण्डन कर, परमाणुका उपादानकारण वा अवयव तन्मात्र, तन्मात्रके उपादानकारण अहङ्कार अहङ्कारके उपादानकारण महत्तत्त्व और उसके उपादानकारण सत्त्व रज और तमोगुण हैं, ऐसा स्थिर किया है। इनके अवयव वा उपादानकारण नहीं है। ये नित्य हैं। ये गुण परस्पर परस्परके सहचारी और परिणामशील हैं और एक जातीय गुण अन्य जातीय गुणका अभिभव किया करते हैं।

भगवद्गीताके मतसे—सत्त्वगुण निर्मल कलुषादिसे रहित है, ज्ञान (वृत्ति) सुख और प्रकाशकत्व इसका धर्म है। तृष्णा, आसक्ति और रञ्जकत्व रजोगुणके धर्म हैं। मोह, प्रमाद, आलस्य और निद्रा तमोगुणके धर्म हैं। एक गुण दूसरे गुण पर आवरण डाल कर अपना कार्य करता है। (गीता १४ अ०)

ये गुण जब अपरिणत वा अकार्य अवस्थामें रहते हैं, तब इनका कोई भी धर्म उपलब्ध नहीं होता। किन्तु महत्तत्त्व आदि कार्य द्रव्य रूपमें परिणत होने पर इनके पृथक् पृथक् धर्मोंका अनुभव किया जा सकता है। परिणामके तारतम्यके अनुसार जिसमें जिस गुणकी अधिकता होती है, उसमें उसी गुणका धर्म प्रकट होता है।

गुणका सर्वप्रथम परिणाम महत्तत्त्व वा बुद्धि है, इसीसे गुणके पृथक् पृथक् धर्मोंका विशेष परिचय मिलता है। गीताके मतसे महत्तत्त्व या बुद्धिमें सत्वगुणका आधिक्य होने पर ज्ञानमें निरतिशय वृद्धि हो जाती है। बुद्धिमें सत्त्वगुणका आधिक्य होने पर आयुष्कर, बलकर, सुखकर, प्रीतिवर्द्धक रसयुक्त और स्निग्ध आहार करनेकी प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार रजोगुणके आधिक्यसे लोभ प्रवृत्ति, कार्यका उद्योग, सर्वदा कार्य करनेका निरतिशय आग्रह और स्पृहा होती है तथा कटु, अम्लरस, लवण, अतिशय उष्ण, तीक्ष्ण, रुक्ष और दुःख शोक वा रोगजनक द्रव्य खानेकी इच्छा होती है। तमोगुणकी वृद्धि होने पर ज्ञानकी अल्पता वा अभाव, कार्यमें अप्रवृत्ति, अनवधानता और मोह हुआ करता है तथा रसहीन, दुर्गन्धयुक्त, पर्युषित और उच्छिष्ट द्रव्य भक्षण करनेकी इच्छा होती है।

भावप्रकाशमें लिखा है—धर्म, मुक्ति और परलोक आदिमें विश्वास, सत् असत्‌को विवेचन करके भोजन (करना), क्रोधहीनता, सत्यवाक्यप्रयोग, मेधा, बुद्धि, भूतप्रेत, काम क्रोध और लोभ आदिके आवेगका अभाव, क्षमा, दया, विवेकज्ञान, पटुता, अनन्दित कर्मका अनुष्ठान स्पृहाका अभाव, नियम और रुचिके साथ धर्मकर्मका अनुष्ठान ये सब वृत्तियां मानसिक सत्त्वगुणके धर्म हैं। क्रोध, ताडनशीलता, निरतिशय दुःख, अत्यन्त सुखकी इच्छा, कपटता, कामुकता, मिथ्यावाक्यप्रयोग, अधीरता, गर्व ऐश्वर्य, मत्तता, अधिक आनन्द और भ्रमण, ये सब मानसिक वृत्तियां रजोगुणके धर्म हैं। नास्तिकता, अतिशय विषादभाव, अधिक आलस्य, दुष्टबुद्धि, निन्दित कर्मानुष्ठानसे उत्पन्न सुखमें प्रीति, सबसमय निद्रा, सब विषयोंमें ज्ञानकी अल्पता, सर्वदा क्रोधान्धता और मूर्खता, ये सब मानसिक वृत्तियां तमोगुणके धर्म हैं। सत्त्व, रज और तम शब्दमें विशेष विवरण देखना चाहिये।

७ अप्रधान, गौण। (अमर टीका)

१० नैयायिक और वैशेषिक मतसिद्ध द्रव्याश्रित पदार्थ विशेष, नैयायिक और वैशेषिक मतमें माना हुआ एक द्रव्याश्रित पदार्थ। वैशेषिक-उपस्कारके कर्त्ताने गुणका लक्षण इस प्रकार लिखा है—

"सामान्यवत्त्वे सति कर्मान्यत्वे च सति अगुण त्व।"

कर्मसे भिन्न जातिविशिष्ट पदार्थका नाम गुण है।

सूत्रकारने इस तरहसे लक्षण किया है—संयोग और विभागके प्रति अन्यकी अपेक्षा न कर जो पदार्थ कारण नहीं होता और जो गुण शून्य है तथा द्रव्य ही जिसका आश्रय है, उसका नाम गुण है। (वैशेषिकसू० १।८)

संयोग और विभागमें दूसरेकी अपेक्षा छोड़ करके जो पदार्थ कारण नहीं रहता, गुणशून्य रहता और द्रव्य हीको अपना आश्रय रखता, वही गुण कहलाता है।

मुक्तावलीके मतसे समवायि कारणमें अपनी वृत्ति न रखते हुए भी नित्य पदार्थ वृत्ति रखनेवाले और सत्ताके

साक्षात् व्याप्य पदार्थका नाम गुण है। सिवा इसके मुक्तावलीकारने गुणके और भी कई एक लक्षण लिखे हैं। वैशेषिक-सूत्रप्रणेता कणाद सिर्फ १७ ही गुण मानते हैं। यथा—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न। (वैशेषिक १।१०) किन्तु उपस्कारप्रणेता इस सूत्रके चकारसे सात गुण और मिला करके चौबीस बना देते हैं। तदनुसार भाषापरिच्छेद-प्रणेताने भी २४ गुणोंका उल्लेख किया है। नैयायिक भी इसी पक्षको समर्थन करते आते हैं। अतएव नैयायिकों और वैशेषिकोंके मतमें गुण चौबीस हैं—रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व अपरत्व, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, गुरुत्व. द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द। इन्हीं सब गुणोंके अनुसार द्रव्यका विभाग होता है। नैयायिक कई द्रव्योंको मूर्त और कितनों ही को अमूर्त जैसा कहते हैं। इनके मतमें आकाश और आत्माको छोड़ करके बाकी साती चीजें मूर्त होती हैं। पूर्वकथित चतुर्विंशति गुणोंमें रूप, रस, स्पर्श, गन्ध, परत्व, अपरत्व, द्रवत्व, गुरुत्व, स्नेह और वेग (संस्कार विशेष) कई गुण केवल मूर्त अर्थात् आकाश तथा आत्मा भिन्न और द्रव्योंके धर्म हैं। धर्म, अधर्म, भावना (एक संस्कार), शब्द, बुद्धि, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और यत्न गुण अमूर्त द्रव्योंमें होते हैं।

सांख्याचार्य और वेदान्तिकोंके मतमें वह चौवीस गुण द्रव्यसे अलग नहीं। इन्होंने धर्म और अधर्मका अमद मान करके उनको द्रव्यस्वरूप जैसा ठहराया है।

१० वैयाकरणोंके मतानुसार एक आदेश। इईके स्थानमें एकार, उऊकी जगह ओकार, ऋ ॠका अर और लृ लॄसे अल् होनेका नाम गुण है।

११ आलङ्कारिक मतमें अङ्गीभूत रसके उत्कर्ष हेतु माधुर्य प्रभृति धर्म गुण कहलाते हैं। रसमें गुणकी स्थिति बहुत ही आवश्यक है। (काव्यप्रकाश)

साहित्यदर्पणमें ३ गुण कहे हैं—माधुर्य, ओजः और प्रसाद। किन्तु दण्डीके मतमें वह दश हैं। श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, उदारता, अर्थव्यक्ति, सौकुमार्य, ओजः, कान्ति और समाधि। वैदर्भी रीतिमें इन १० गुणोंका रहना निहायत जरूरी है।

१२ आवृत्ति, दुहराव। (मनु) १३ उत्कर्ष, बढ़ती। १४ विशेषण, तारीफ।

१५ पाणिनि भाष्यके मतानुसार द्रव्यको छोड़ करके जो पदार्थ द्रव्यके आश्रयमें रहता, कभी कभी उससे छूट पड़ता, भिन्न जातीय पदार्थ लगता और नित्यानित्य भेदसे दो प्रकार ठहरता, वह गुण है। जैसे घट आदि रूप और आकाश प्रभृतिका परिमाण। (म। १७, ०।१।४४)

१६ देश एवं कालज्ञत्व आदि व दह धर्म। यथा—देश, कालज्ञता, दृढ़ता, सर्व क्लेश सहिष्णुता, सर्व विज्ञानता, दक्षता, ओजस्विता, मन्त्रगोपन, असंवादिता, शौर्य, भक्तिज्ञता, कृतज्ञता, शरणागतवात्सल्य, अक्रोधनस्वभाव और अचञ्चलता। शास्त्रकारोंने इन्हें भी गुण जैसा लिखा है।

१७ भगवद्गीताके मतमें सब प्राणियोंके प्रति दया, क्षमा, अनुसूया, शौच, अनायास, मङ्गल, अकृपणता और अस्पृहा आठ धर्म। १८ सूद, व्याज। १९ इन्द्रिय। २० त्याग। २१ वटी, गोली। २२ दोषभिन्न धर्म, भलाई। २३ मुक्तिसाधनविवेक, वैराग्य और सुश्रुषा प्रभृति। २४ अङ्ग प्रधानका निर्वाहक। (सं मि०३।४) २५ वस्तुके सात्त्विक प्रभृति धर्म। २७ वर्णोत्पत्तिके अनन्तरजात विवार आदि बाह्य प्रयत्न।

२८ सुश्रुतोक्त अष्टविध वीर्य। उष्ण, शीत, स्निग्ध, रूक्ष, विशद, पिच्छिल, मृदु और तीक्ष्ण आठ प्रकारके वीर्यका नाम गुण है। यह सब द्रव्यमें रहा करते हैं।

२९ गणित। ३० भीमसेन। ३१ तन्तु, डोरा। ३२ व्यञ्जन। ३३ गणितविशेष, जरबा। (गुणाद देखो।) ३४ त्रित्व संख्या, तीनकी अदद। ३५ कोई योगीश्वरीभक्त राजा। यह पश्चात् मुनिकुलज थे। उनके पिताका नाम पद्मराज रहा। (सह्याद्रिखण्ड १।३१।२)

३६ जैनमतमें गुण उसे कहते हैं जो द्रव्यके पूरे हिस्सेमें और उसकी प्रत्येक अवस्थामें (सवदा) विद्यमान रहे। यह सामान्य और विशेष इन दो भेदोंमें विभक्त है। जो सर्व द्रव्योंमें व्यापक हो उसे सामान्य और जो सर्व द्रव्यमें व्यापक नहीं हो उसे विशेष गुण कहते

हैं। सामान्य गुणके प्रधानतः ६ भेद हैं—अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व और प्रदेशवत्त्व। (तत्वार्थ सूत्र)

गुणक (स० पु०) गुणयति आवर्त्तयति गुण-ण्वुल्। १ पूरकाङ्कविशेष, वह अङ्क जिससे किसी अङ्कको गुणा करें। २ गुण। ३ इन्द्रिय। ४ लब्धादि धर्म।

गुणकर्णिका (स० स्त्री०) इन्द्रवारुणी लता।

गुणकथन (स० क्ली०) गुणस्य कथन, ६ तत्। १ गुण वर्णन। २ विरहमें कामकृत दश अवस्थाओंमेंसे चतुर्थ अवस्था।

गुणकर (स० त्रि०) लाभदायक।

गुणकरी (स० स्त्री०) गौण्डकिरी देखो।

गुणकर्णिका (स० स्त्री०) इन्द्रवारुणीलता।

गुणकर्मन् (स० क्ली०) गुण गुणीभूत कर्म, कर्मधा०। १ अप्रधान गौण कर्म। द्विकर्मक धातुके अर्थमें जिस कर्मका साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, किन्तु वह अप्रधानीभूत क्रियाके साथ सम्बन्ध रखता है उसीको गुणकर्म कहते हैं। गुणाना कर्म ६ तत्। २ सत्व, रज और तम गुणकी कर्म।

गुणकली (स० स्त्री०) एक रागिणी। गुणकरी देखो।

गुणकामदेव—नेपालके कोई राजा। बौद्ध पार्वतीय वंशावलीके मतमें वह मानदेववर्माके पुत्र थे, ३५ वर्षमात्र राजा रहे। नेपालके स्वयम्भूपुराणमें कहा है—एक बार नेपालमें सात वर्ष बराबर अनावृष्टि रही। उससे राज्यमें दारुण दुर्भिक्ष पड़ा था। अनाहार बहुतसे लोग मरने लगे। उसी समय गुणकाम नेपालके राजा थे। इनके अनुरोधसे शान्तिकर एक अष्टदल पद्म उठा करके अष्ट नागका मन्त्र पढ़ने लगे। अष्टनागने प्रसन्न हो करके प्रचुर वृष्टि की थी। शान्तिकरने अष्टनागका रक्त ले करके किसी जगह रख दिया। जहां वह रक्त स्थापित हुआ, नागपुर नाम पड़ गया।

पार्वतीय वंशावलीमें उनके पुत्रका शिवदेव और पौत्रका नाम नरेन्द्रदेव लिखा है। परन्तु स्वयम्भूपुराण को देखते गुणकामने बुढ़ापेमें अपने लड़के नरेन्द्रको राज्य दे करके संसार परित्याग किया था। स्वयम्भू और शान्तिकरके अनुग्रहसे उन्होंने देहान्त होनेपर सुखावती धाम पाया। (स्वयम्भू ८म अ०)

गुणकार (स० त्रि०) गुण व्यञ्जन पाकजनितरसविशेषरूप गुण वा करोति गुण-कृ-अण्। १ सूपकार, रसोई करनेवाला, रसोईया। (पु०) २ भीमसेन। पाण्डवगणोंके अज्ञातवासके समय भीमने विराट राजाके दरबारमें सूपकारका कार्य सम्पादन किया था। इस लिये इनका नाम गुणकार पड़ा। ३ सङ्गीतविद्याका पूर्णज्ञाता। ४ पाकशास्त्रका ज्ञाता।

गुणकारक (स० त्रि०) लाभदायक।

गुणकारी (स० त्रि०) गुणकारक देखो।

गुणकिरी (स० स्त्री०) एक रागिणी। यह औडव रागिणी है। ऋषभ और धैवत उसमें नहीं लगता। ग्रहांशादि निषाद स्वर है, मतान्तरसे षड्ज भी हो सकता है। यह रागिणी भैरव रागाश्रित है। यथा—

नि स० ग म प० नि।

सा ० ग म प ० नि स॥

किसीके मतमें इसका नाम गुणकेली है।

गुणकीर्त्ति—एक जैन ग्रन्थकर्त्ता। इनकी जाति गोलालारे थी। संवत् १०३७ में आश्विन शुक्ल १ को इनकी मृत्यु हुई।

गुणकेली (स० स्त्री०) रागिणीविशेष। यह गुर्ज्जरी तथा मालवके योगसे बनी हुई भैरवरागकी पत्नी है। मतान्तरमें वह आसावरी, देशकार, गुर्ज्जरी, देश० टोडी और ललितके मेलसे निकली हुई मालकोषकी पत्नी भी बतलायी गयी है। कोई इसे षाडव और कोई षाडव कहता है।

'नि सा ऋ ग म प ध ०। सा ऋ ग म ० ० नि' (पा रि)

'नि सा ग म प ०। (सङ्गीत सा० सङ्गीतरत्नाकर)

गुणकेशी (स० स्त्री०) इन्द्रकी सारथी मातलीकी कन्या तथा सुधर्माकी माता। भोगवती नगरीके अधिपति आर्यक नागके पौत्र और चिकुरनागके पुत्र सुमुखसे इनका विवाह हुआ था। (भारत उद्योग १०४ अ०)

गुणगर्त—नेपालस्थ शान्तिपुरके पूर्वमें अवस्थित एक गुहा। यह राजा शान्तिकरसे निर्माण की गयी थी और एक योजन विस्तृत है। नेपाली बौद्धगणोंका यह एक पुण्यस्थान माना गया है।

गुणगान (स० क्ली०) गुणस्य गान, ६ तत्। गुणकीर्त्तन।

गुणगाङ्कविजयादित्य—एक प्राच्य चालुक्य राजाका नाम जो प्रथम कलिविष्णुवर्द्धनके पुत्र थे। इन्होंने ४४ वर्ष पर्यन्त राज्य किया था।

गुणगृह्य (सं० त्रि०) ग्रह पचार्थे क्यप् गुणस्य गृह्यः, ६-तत्। गुणपक्षपाती।

गुणगौरी (सं० स्त्री०) गुणे गौरी शुद्धा, ७-तत्। १ पतिव्रता स्त्री, सोहागिन स्त्री। २ पार्वतीके सदृश गुणवाली स्त्री। ३ स्त्रियोंका एक व्रत जो चैतमें चौथके दिन किया जाता है।

गुणग्राम (सं० पु०) गुणानां ग्रामः, ६-तत्। गुणसमूह, गुणकी खान।

गुणग्रहण (सं० क्ली०) गुणस्य ग्रहणं ज्ञानं ६-तत्। गुणवान् मनुष्यसे गुण ग्रहण।

गुणग्राहक (सं० त्रि०) गुणस्य ग्राहकः, ६-तत्। १ गुण ग्रहण करनेवाला, गुणग्राही। २ रस्सी धारण करनेवाला।

गुणग्राहिता (सं० स्त्री०) गुणग्राहिणो भावः गुणग्राहिन्-तल्। गुणज्ञता, गुणप्रियता।

गुणग्राहिन् (सं० त्रि०) गुणं गृह्णाति गुण-ग्रह-णिनि। गुणज्ञ, गुणकी खोज करनेवाला, गुणियोंका आदर करनेवाला।

गुणघातिन् (सं० त्रि०) गुणं हन्ति गुण-हन्-णिनि। गुणनाशक, गुण नाश करनेवाला।

गुणचन्द्र—१ एक संस्कृत ग्रन्थकार। ये देवसूरिके शिष्य थे। इन्होंने तत्त्वप्रकाशिका नामक सूत्रटीका और हैमविभ्रम प्रणयन किये हैं।

गुणचन्द्र—१ एक दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता। ये गोलापूरव जातिके थे। सम्वत् १०४८ में भाद्र शुक्ल चतुर्दशीको इनकी मृत्यु हुई। २ जैनोंके एक भट्टारक और ग्रन्थकार। ये संवत् १६०० में विद्यमान थे। इन्होंने जैनपूजापद्धति और अनन्तव्रतोद्यापन नामक दो ग्रन्थ लिखे हैं।

गुणज्ञ (सं० त्रि०) १ गुणका जाननेवाला। २ गुणी

गुणज्ञता (सं० स्त्री०) गुणकी जानकारी, गुणकी परख।

गुणता (सं० स्त्री०) गुणस्य भावः गुण-तल्। १ गुणत्व २ द्रव्य ज्ञानके अधीन ज्ञान। ३ अधीनता।

गुणत्व (सं० क्ली०) गुणस्य भावः गुण-त्व। १ गुणता २ अधीनता। ३ रस्सीकी आकृति।

गुणत्रय (सं० क्ली०) सत्व, रज और तम गुण।

गुणदेव (सं० पु०) गुणाढ्यके एक प्रधान शिष्य। गुणाढ्य देखो।

गुणदेव—हिन्दी भाषाके एक कवि। इनका निवास स्थान बुंदेलखण्ड था। १७८५ ई०को इन्होंने जन्म लिया।

गुणदोषविचार (सं० पु०) गुणदोषयो विचारः, ६-तत्। गुण और दोषका विचार, गुणागुण विवेचना।

गुणधर (सं० त्रि०) गुणं धरति धृ-अच्। जिसको गुण हो, गुणवान्।

गुणधरस्वामी—दिगम्बर जैनोंके एक ग्रन्थकार, आचार्य और ऋषि। इन्होंने जयधवलसिद्धान्त नामक एक प्राकृत भाषाका जैन ग्रन्थ (जिसकी गाथा संख्या ८०० है) और 'चुर्णिसिद्धान्त' की संस्कृत टीका रची थी, जिसकी श्लोकसंख्या प्रायः ६ हजार है।

गुणधर्म (सं० पु०) गुणेन प्रवृत्तो धर्मः। क्षत्रियोंके प्रजा पालनादि रूप धर्म।

गुणन (सं० क्ली०) गुण भावे ल्युट। १ मन्त्रणा। २ अभ्यास। ३ एक अङ्कको दूसरे अङ्कसे गुणा। ४ गुणा। ५ आवृत्ति। ६ वर्णन।

गुणनन्दि—१ एक दिगम्बर जैन ग्रन्थकार। इनकी भट्टारक उपाधि थी। इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमें त्रैकालिक चतुर्विंशतिका उद्यापन, ऋषिमण्डलविधान और रोटतृतीया कथा ये तीन ग्रन्थ पाये जाते हैं। २ उक्त सम्प्रदायके अन्य एक ग्रन्थकर्त्ता, इनकी जाति गोलापूरब थी। सम्वत् ३६३ में जेठ शुक्ला ४थीको इनका शरीरान्त हुआ। ३ जैनेन्द्रप्रक्रिया नामक व्याकरणके रचयिता।

गुणनफल (सं० पु०) वह संख्या जो दो अङ्कोंके गुणासे हो।

गुणनिका (सं० स्त्री०) गुणयति अभ्रेडयति गुण युच् स्वार्थे कन्। १ अभ्यास। २ नृत्य। ३ शून्याङ्क। ४ माला।

गुणनिधि (सं० पु०) गुणस्य निधिः समुद्र इव। १ गुणाधार, गुणका आश्रय। २ पुराणप्रसिद्ध कोई दुर्वृत्त ब्राह्मणकुमार। काशीखण्डमें उसका उपाख्यान इस तरह कहा है—

काम्पिला नगरमें यज्ञदत्त नामक एक दीक्षित रहते थे। उनके पुत्रका नाम गुणनिधि था। लडकपनमें पिताके शासन और उपदेशसे यह सर्व्वशास्त्र पारग हो गये और उपनयनके बाद गुरुगृहमें रह करके लिखने पढने लगे। यौवनके प्रारम्भमें ही गुणनिधिसे नागरिक युवकोंका मेल बढा। उनका हाव भाव देख करके फिर यह रुक न सके, उन्हीं का अनुकरण करते रहे। माके पाससे चुपके चुपके रुपया ले जा करके उन्होंने जूआ खेला था। थोडे दिनमें ही द्यूतक्रीडामें वह अत्यन्त आसक्त हुए। ब्राह्मणका आचार व्यवहार छोड करके उन्हें इस प्र शास्त्रोंकी असारता प्रमाणित करना अच्छा लगता था। गीत, वाद्य आदि कुछ भी गुणनिधिसे जाननेको बाकी न बचा। उनकी जननी उन्हें नाना प्रकार उपदेश यह समझ करके देने लगी कि लडकेका भाग्य फूटा था। किन्तु गुणनिधिने कोई बात न सुनी। वह सिर्फ रुपया लेनेके समय मातासे मिलते और इमेशा फड पर बैठे खेला कूदा करते थे। गुणनिधिके बाप एक सभ्रान्त व्यक्ति थे। सब लोग उन्हें बुलावा भेजा करते थे। वह प्राय घरमें बैठ न सकते थे। जब वह घर जा करके लडकेकी बात पूछते, उनकी सहधर्मिणी कह देती थी—गुणनिधि अभी घरसे बाहर निकल गया है। माताने देखा, कितना ही उपदेश देनेसे भी कोई फल नहीं हुआ। इस पर उन्होंने पैसा देना बन्द कर दिया। फिर गुणनिधि मासे पैसा न मिलने पर भी जूआके लिये छटपटाने लगे। इसीसे उन्होंने अपने घरमें चोरी करना सीखा था। थाली, लोटा, कटोरी आदिके पीछे माकी धोती तक चुरायी गयी। जननी जान बूझ करके भी इकलौते बेटेके वात्सल्यसे कोई बात जाहिर न करती थीं। किसी दिन वह सोती थीं। लडकेने अवसर देख करके उनके हाथकी एक अगूठी चुरा ली। जुआरियोंका कर्ज अदा करनेमें वह अगूठी चली गयी। द्यूतकारोंके पास अपनी जानी मानी अगूठी देख करके जब यज्ञदत्तने पूछा, उन्होंने गुणनिधिकी सब कच्ची बात बतला दी। यज्ञदत्तने यह खयाल करके कि मांके लाड प्यारसे ही लडका बिगड गया है, गुणनिधि और उसकी जननी दोनोंको परित्याग किया।

उस समय गुणनिधि निरुपाय हुए। विद्या बुद्धि भी वैसी न थी। वह यह सोच करके घबरा उठे—कहां जायें, क्या करें, कैसे बचेंगे। एक दिन गुणनिधि भूखे थे। उन्हें दारुण चिन्ता हुई कि सन्ध्या पडती थी। उस पर क्षुधा तृष्णाका जोर था। गुणनिधिका जी घबराने लगा। उसी समय शिवरात्रिव्रतका उपवासी एक शिवभक्त नानाविध उपहार ले करके नगरके बाहर निकला था। उन्होंने इसके हाथमें खाने पीनेकी चीजें देख ठहरा लिया—जब यह व्यक्ति शिवजी पूजा कर मन्दिर सब रखके चला आवेगा मैं चुरा करके खा डालूंगा। इसी प्रकार विचार करके गुणनिधि उसके पीछे पीछे चल दिए। शिवभक्त मन्दिरमें प्रवेश करके आंसुओंसे छाती भिगो भक्ति गद्गद् स्वरसे शिवको आराधना करने लगे। इन्होंने उसके बाहर आनेकी अपेक्षामें दरवाजे पर बैठ समस्त पूजा देखी थी। पूजाके अन्तमें वह मन्दिरसे बाहर न निकल वहीं सो गया। गुणनिधिने इसी सुयोग पर मन्दिरमें जा करके देखा चिराग ठण्ढा पडा है। यह ख्याल करके कि दीप न जलनेसे हमारे काममें अडचन पडेगी अपने वस्त्रके अञ्चलकी उन्होंने बत्ती बनायी और रोशनी जलायी। ब्राह्मणकुमार जब उपहार उठा करके बाहर निकलने लगे, इनके पैरकी आहटसे पूजककी आंख खुल गयी। वह चोर चोर कहके चिल्लाने लगा, चारो ओरसे चौकीदार जा पहुंचे। गुणनिधि नैवेद्य फेंक करके भागे थे। रक्षी गण वह देख करके उनको मारने पर उद्यत हुए। इनके दारुण प्रहारसे गुणनिधिकी जान निकल गयी।

यमराजने ब्राह्मणकुमारको ले जानेके लिये किङ्करोंसे अनुमतिकी थी। "वह गुणनिधिको बांध करके ले चले। इधर शिवने भी अपने अनुचरोंको हुक्म दिया था—'तुम यहां बैठे क्या करते हो। नहीं देखते कि यमदूत गुणनिधिको लिये चले जाते हैं। जल्द जावो और रथ पर चढा करके बडे आदरके साथ उसको यहां ले आवो।' शिवदूत एक रथके साथ वहां जा पहुंचे और यमकिङ्करोंको रोक करके कहने लगे शिवने इसको शिवपुरी ले जानेकी अनुमति दी है। यमदूतोंने भी आसानीसे छोडना न चाहा। वह शिवके अनुचरोंसे

लड़ने झगड़ने लगे। अनेक वादानुवादके बाद स्थिर हुआ ब्राह्मणकुमारने आचारभ्रष्ट और आजन्म कुकार्यरत रहते भी शिवरात्रिव्रतके दिन उपवास, शिवमन्दिरमें निर्वाणोन्मुख प्रदीपकी रक्षा और आद्योपान्त शिवपूजा को दर्शन किया था। इसीसे वह शिवपुरी जायेंगे यमदूतोंका उन पर कोई अधिकार नहीं। तजवीजमें हार करके यमकिङ्कर लौट गये। (काशीखण्ड १३ अ०)

२ कोई विख्यात संस्कृतग्रन्थकार। ये श्रीनिवासके पुत्र थे। उनके बनाये हुए परमात्मविनोद (अलङ्कार), अन्न पूर्णास्तुति, ईशतुष्टिस्तुति, गणपतिस्तुति, भगवतीस्तुति विष्णुस्तुति, व्यासस्तुति और शिवशिखरिणीस्तुति नामक ग्रन्थ मिलते हैं।

गुणनी (सं० स्त्री०) गुण्यतेऽनया गुण-ल्युट्-ङीप्। पाठ्य ग्रन्थके दृढ़तर संस्कारके लिये बार बार अनुशीलन। इसका पर्याय—भविनी और शीलन है।

गुणनीय (सं० पु०) गुण्यते पुनः पुनरनुशील्यतेऽनेन गुण-अनीयर। १ अभ्यास। (त्रि०) २ गुणितव्य, गुणा करने योग्य।

गुणनीयक (सं० पु०) गुणनीय संज्ञार्थे कन्। जिस राशि से दूसरी राशिमें भाग देनेसे भाग शेष कुछ नहीं बचे तो वह राशि दूसरी राशिका गुणनीयक है।

गुणपदी (सं० स्त्री०) गुणौ गुणितौ पादौ यस्याः, बहुव्री० जिस स्त्रीका पद गुणित है।

गुणपूर्ण (सं० त्रि०) गुणेन पूर्णः, ३-तत्। जिसमें अनेक गुण हो, गुणाधार।

गुणप्रत्ययअवधि (सं० पु०) जैन मतानुसार अवधिज्ञानका एक भेद। अवधिज्ञानके प्रधानतः दो भेद हैं—एक भवप्रत्यय और दूसरा गुणप्रत्यय। भवप्रत्यय अवधि देखो। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान आदि कारणोंकी अपेक्षासे अवधिज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम हो कर जो अवधिज्ञान होता है, उसे गुणप्रत्यय अवधि कहते हैं। अवधिज्ञान देखो। यह गुणप्रत्यय अवधिज्ञान पर्याप्त मनुष्यों और मनसहित पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च (पशु आदि) के भी (नाभिके ऊपर शङ्ख आदि शुभ चिह्नोंके आत्मप्रदेशोंमें होनेवाले अवधिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे) होता है।

(गोमट्टसार जीवकाण्ड गाथा ३६९)

गुणप्रवृद्ध (सं० त्रि०) गुणैः प्रवृद्धः, ३-तत्। जो गुणसे वर्द्धित हो।

गुणप्रकर्ष (सं० पु०) गुणस्य प्रकर्षः, ६-तत्। गुणका आधिक्य।

गुणप्रभ (सं० पु०) एक बौद्धआचार्य, श्रीहर्षराजाके गुरु और वसुवन्धुके शिष्य। इन्होंने तत्त्वविभङ्गशास्त्र और तत्त्वसत्यशास्त्र रचना किये हैं। पहले पहल ये महायानमतावलम्बी रहे, किन्तु थोड़े समयके बाद विभाषा शास्त्र अध्ययन-करनेसे इन्होंने हीनयान मत ग्रहण किया। मतिपुरके निकट ये रहते थे। वर्तमान विजनौर जिलाके लालपुर ग्राममें जामा मस्जिदसे आध कोस दक्षिणपूर्वमें गुणप्रभ-सङ्घारामकी भग्नावशेष देखा जाता है।

गुणप्रिय (सं० त्रि०) गुणः प्रियो यस्य, बहुव्री०। गुणानुरागी।

गुणभद्र (सं० पु०) १ एक चीनदेशवासी बौद्ध पण्डित।

गुणभद्र—२ एक जैनाचार्य। 'ज्ञानार्णव' नामक ग्रन्थकी लेखकप्रशस्तिके पढ़नेसे मालूम होता है कि, सम्वत् १५२१ में ये ग्वालियरकी काष्ठासंघ माथुरान्वय और पुष्करगणकी गद्दी पर आरूढ़ थे। ३ भट्टारक उपाधिधारी एक जैन ग्रन्थकार। इन्होंने पूजाकल्प, अनन्तव्रतोद्यापन, धन्यकुमार-चरित्र आदि कई एक ग्रन्थोंका प्रणयन किया था।

गुणभद्र आचार्य—१ त्रिभुवनाचार्यके एक शिष्य और जैन ग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने कुन्दकुन्देन्दुप्रकाश काव्य और हरिवंशपुराण नामक दो ग्रन्थोंकी रचना की थी। यह हरिवंशपुराण जिनसेनाचार्यकृत हरिवंशपुराणसे पृथक् है।

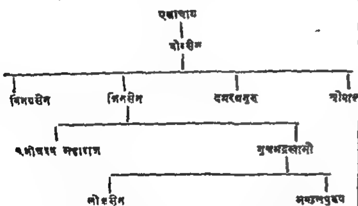
४ दिगम्बर जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध और प्राचीन आचार्य, भगवत् जिनसेन आचार्यके अन्यतम शिष्य। इन्होंने—उत्तरपुराण, आत्मानुशासन, भावसंग्रह, जिनदत्तकाव्य, टिप्पण ग्रन्थ और आदिपुराणके उत्तर भागकी रचना की है। द्राविड़ भाषाके चूड़ामणिनिघण्टुके पढ़नेसे मालूम होता है कि ये दक्षिण अर्काट जिलेके अन्तर्गत तिरुनरुङ्कुण्डम् नामक ग्रामके रहनेवाले थे। इसके अतिरिक्त इनके रचित द्राविड़ भाषाके

ग्रन्थोंके देखनेसे भी यही अनुमान होता है कि ये कर्णाटक देशवासी होंगे।

ये ई० नवम शताब्दमें विद्यमान थे। इनके गृहस्थ अवस्थाके वंशका कुछ परिचय नहीं मिलता। परन्तु मुनिवंशका परिचय उनके ग्रन्थों और दूसरे उल्लेखोंसे भलीभांति मिलता है। महावीर भगवान्के निर्वाणके उपरान्त जब तक श्वेताम्बर सम्प्रदायकी उत्पत्ति नहीं हुई थी, तब तक जैनधर्म संघभेदसे रहित था। पीछे जब विक्रमकी मृत्युके १३६ वर्ष बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय पृथक् हुआ, तब दिगम्बर सम्प्रदाय मूलसंघके नामसे प्रसिद्ध हुआ। फिर इसके चार भेद हुए—१ नन्दिसंघ, २ देवसंघ, ३ सेनसंघ, और ४ सिंहसंघ। इनमेंसे सेनसंघकी परिपाटीमें गुणभद्र अवतीर्ण हुए।

गुणभद्रस्वामीके यों तो बहुतसे शिष्य थे, किन्तु दोका विशेष परिचय मिलता है—एक लोकसेन, जिनके लिये आत्मानुशासन ग्रन्थकी रचना हुई और दूसरे मण्डलपुरुष, जिन्होंने चूडामणिनिघण्टु नामक द्राविड भाषाका कोश बनाया।

गुणभद्रस्वामीके १ गुरुपरम्पराका इस प्रकार पता चला है—



गुणभद्रस्वामीके समयमें अर्थात् विक्रमकी ७वीं शताब्दीमें दिगम्बर मुनि प्रायः भारतवर्षके सर्वत्र विहार किया करते थे और साथ ही धर्मोपदेश देते और ग्रन्थोंका प्रणयन किया करते थे। यही कारण है कि उत्तरपुराणकी समाप्ति धारवाड प्रान्तके अन्तर्गत बंकापुरमें हुई थी। उस समय वहांका राज्य अकालवर्षके सामन्त लोकादित्यके अधिकारमें था।

जैनोंका सबसे बड़ा प्रथमानुयोग (पौराणिक) ग्रन्थ आदिपुराण है, जिसमें कुल ४७ पर्व या अध्याय हैं। इस ग्रन्थके ४२ पर्व और ४३ पर्वके ३ श्लोक इनके गुरु जिनसेनाचार्यके रचे हुए हैं तथा शेषके ५ पर्व (१६२० श्लोक) गुणभद्रस्वामीने रचे हैं। इनकी रचना गुरुकी रचनासे मिल गई है, यही इनकी रचनाशक्तिका काफी परिचय है।

उत्तरपुराण—इनके उत्तरपुराणकी रचना ऐसी मनोहारिणी है कि, एक जैनेतर विद्वान (श्रीयुक्त प० कुप्पूस्वामी शास्त्री) ने इससे जीवन्धरचरित निकाल कर छपा डाला है।

आत्मानुशासन—इस ग्रन्थकी रचना शैली भर्तृहरिके वैराग्यशतकके ढङ्गकी और वैसी ही प्रभावशालिनी है। यथा—

"तस्य बन्धवः यदि जन्मनि न बुद्धा मात त्वया किमपि बन्धुजनाद्धितार्थम्।
तावत् न पश्यसि सततं पश्चात् स्वकाय कायमपि तव बन्धयन्ति ॥ ८२ ॥"

हे भाई (आत्मा)! यदि तूने अपने इस जन्ममें अपने बन्धुजनोंसे कुछ बन्धुताका लाभ पाया हो, तो मुझे 'सच' बता तो सही। हमें तो उनका इतना ही उपकार अनुभव होता है कि, मरनेके उपरान्त वे सब इकट्ठे हो कर तेरे अपकार करनेवाले इस शरीरको जला देते हैं।

"ज्ञानमेव फलं ज्ञाने ननु श्लाघ्यमनश्वरम्।
अहो मोहस्य माहात्म्यमन्यदप्यत्र मृग्यते ॥१७५॥"

ज्ञानका फल ज्ञान ही है, जो सर्वथा प्रशंसा योग्य और अविनाशी है। इसको छोड़ कर, अन्य जो सांसारिक फलोंकी इच्छा की जाती है, वह अवश्य ही मोह या मूर्खताका माहात्म्य है। अभिप्राय यह कि, ज्ञानके रहनेसे जो निराकुलता रूप सुखका अनुभव होता है, उसको छोड़ कर लोग विषयसुखोंको टटोलते फिरते हैं, वह नितान्त मूर्खता है।

गुणभद्राचार्य शक सम्वत् ८२० तक जीवित थे। इनके स्वर्गवासका ठीक समय मालूम नहीं होता।

गुणभर—चोलदेशके एक जैन राजा। कोई कोई इन्हें पल्लववंशीय अनुमान करते हैं। त्रिशिरापल्ली पहाड़के ऊपर खोदी हुई शिलाफलक पर इनकी अनुशासनलिपि देख पड़ती है।

गुणभूषणकवि—जैनसम्प्रदायके एक कवि। इनकी रची हुई पुस्तकोंमेंसे सिर्फ एक ही पुस्तक प्राप्य है,—भव्यजनचित्तवल्लभश्रावकाचार।

गुणभोक्तृ (सं० त्रि०) गुणानां भोक्ता, ६-तत्०। गुणका भोग करनेवाला।

गुणभृत् (सं० त्रि०) गुणं बिभर्त्ति भृ-क्विप्, तुगागमश्च जिसमें गुण हो, गुणाधार। (पु०) गुणान् सत्वरजस्तमांसि बिभर्त्ति अधिष्ठातृत्वेन आश्रयति भृ-क्विप्। २ परमेश्वर।

गुणभ्रंश (सं० पु०) गुणस्य भ्रंशः, ६-तत्। गुणका नाश।

गुणमति (सं० पु०) एक पण्डित इन्होंने अभिधर्मकोषको व्याख्या रचना की है चीनपरिव्राजक युयेन चुयाङ्गने अपनी किताबमें लिखा है कि इन्होंने ही तव शास्त्रमें माधवको पराजय कर बौद्ध धर्मकी श्रेष्ठता प्रतिपादन की थी।

गुणमय (सं० त्रि०) गुणात्मकः गुणप्रचुरो वा गुण मयट्। २ गुणात्मक, गुणस्वरूप। १ गुणाढ्य, गुणयुक्त

गुणमहार्णव—कलिङ्गके एक गङ्गवंशीय राजा गाङ्गेय देखो।

गुणमहोदधि (सं० पु०) वैद्यकोक्त औषधविशेष, एक दवा। पारा, गन्धक, लोहा, मंखिया, गुर्चको छाल, तांबा, वङ्ग एवं अभ्रक एक एक तोला और त्रिकटु, तेजपत्र, मोथा, विरङ्ग, नागकेशर, रेणुक, इलायची तथा पिपरामूल दो दो तोले वालक तथा पिप्पली क्वाथ और विजौरा नीबूके रससे भावना देने पर गुणमहोदधि बनता है। मात्रा चनेके बराबर है। इस औषधको सेवन करनेसे कासरोग विनष्ट होता है। (रसकौमुदी)

गुणयुक्त (सं० त्रि०) गुणेन युक्तः, ३-तत्। गुणविशिष्ट, जिसके गुण हो।

गुणयोग (सं० पु०) गुणेन योगः ६-तत्। गुण गुणीके साथ सम्बन्ध। सम्बन्धीय।

गुणयोनि (सं० पु० स्त्री०) जैनमतानुसार योनि प्रधानतः दो प्रकारकी होती है, आकारयोनि दूसरी गुणयोनि। सम्मूर्छन, गर्भ और उपपाट जन्मकी आधारभूत सचित्त (आत्मप्रदेशोंसे युक्त पुद्गलका पिण्ड) शीत संवृत (ढको हुई) और अचित्त उष्ण विवृत्त (खुली हुई) ये दो गुणयोनि कहलाती हैं। (गोम्मटसार जीवकाण्ड ८१—८१)

गुणरत्न (सं० क्ली०) गुण एव रत्नं। गुणस्वरूप रत्न, रत्नके जैसा प्रशंसनीय वा आदरणीय गुण।

गुणरत्न आचार्य—एक जैन आचार्य, देवसुन्दर सूरिके शिष्य। इन्होंने संस्कृत भाषामें तर्कतरङ्गिणी, षड्दर्शनसमुच्चय-टीका और क्रियारत्नसमुच्चय नामका एक व्याकरण ग्रन्थ रचा है।

गुणराग (सं० पु०) गुणेषु रागो निरतिशयमभिलाषः, ७-तत्०। गुणमें अनुराग या प्रेम, गुणप्रियता।

गुणराज—पद्मावती देवीभक्त मोनल्प मुनिकुलज एक राजा, नागराजके पुत्र। (महाद्रि० ११३३ पृ०)

गुणराजखाँ—बङ्गालके कुलीनग्रामवासी एक कवि। उनका असल नाम मालाधर वसु था। पिताको भगीरथ वसु कहते थे। गुणराज खांने मीठी बङ्गला कवितामें श्रीकृष्णकी लीला पर श्रीकृष्णविजय लिखा है। चैतन्य-चरितामृत पढ़नेसे समझ पड़ता है कि चैतन्य महाप्रभु उस बङ्गला ग्रन्थका बड़ा आदर करते थे। यह पुस्तक १३९५ ई० में आरम्भ और १४०२ ई० में समाप्त हुई। ग्रन्थकारने लिखा है कि गौड़के राजाने उन्हें गुणराज खाँ उपाधि दिया श्रीकृष्णविजय बङ्गला भाषाकी बहुत पुरानी किताब है।

गुणराशि (सं० पु०) गुणानां राशिः, ६-तत्०। १ गुण-समूह। २ शिव।

गुणलयनिका (सं० स्त्री०) गुणाः गुणमयाः पटाः लीयंते ऽस्यां ली आधारे ल्युट् स्त्रियां ङीप् ततः स्वार्थे कन् टाप् पूर्वह्रस्वश्च। वस्त्रनिर्मित गृह, कपड़ेका बना हुआ घर, तंबू। इसका पर्याय केणिका और पटकुटी है।

गुणलयनी (सं० स्त्री०) गुणाः गुणमयाः पटाः लीयन्ते ऽस्यां ली आधारे ल्युट् ङीप्। कपड़ेका बना हुआ घर, तम्बू।

गुणलुब्ध (सं० त्रि०) गुणे लुब्धः, ७-तत्०। गुणग्राही, गुणको चाहनेवाला।

गुणवचन (सं० पु०) गुणमुक्तवान् वच कर्तरि ल्युः। १ गुणवाचक शब्द। २ गुणवद् द्रव्यवाचक शुक्लादि शब्द।

गुणवत् (सं० त्रि०) गुणो विद्यते अस्य गुण-मतुप् मस्य वकारः। १ गुणविशिष्ट, गुणी। (पु०)। २ यदुवंशीय सुनामके दौहित्र।

गुणवती (स० स्त्री०) १ एक अप्सरा। २ यदुवंशीय सुनाभकी एक दौहित्री। ३ गायत्रीस्वरूपा एक महादेवी। ४ गुणवाली, जिसमें कुछ गुण हो।

गुणवतीवर्त्ति (स० स्त्री०) औषधविशेष, एक दवा। धूनक, लोध, सिन्दूर, अतिविषा, हलदी, वहेड़ा, कम्पिल्लक, श्रीवास तथा गुग्गुलु बराबर बराबर घी और तेलसे अच्छी तरह रगड़ लेते हैं। फिर इस पिण्डको तुल्य मोम डाल करके धीमी आंचमें पकाया जाता है। सब चीजें एकमें मिल जाने पर गुणवतीवर्त्ति प्रस्तुत होती है। यह व्रणरोगमें बहुत फायदामन्द है। (रत्नाकर)

गुणवत्तरा (स० स्त्री०) जीवन्तीशाक।

गुणवत्ता (स० स्त्री०) गुणवतो भावः गुणवत् तल्। गुण धारण करनेवाली स्त्री।

गुणवन्तगढ़—एक पहाड़ और पहाड़ी किला। यह मलयसे सह्याद्रि पर्वतके दक्षिणपूर्व तक फैला और सतारा जिलेके पाटन नगरसे ६ मील दक्षिणपश्चिम बसा है। लोग उसे मोड़गिरि भी कहते हैं। किला कोई १००० फुट ऊंचे पर्वत पर है। वह बहुत टूट फूट गया है। इसीसे दक्षिण-पूर्वको पर्वतके नीचे गांव है। यह निरूपण किया जा नहीं सकता, किस समय यह दुर्ग निर्मित हुआ। ई० १८वीं शताब्दीको पन्थके प्रतिनिधिका पक्ष ले करके गुणवन्तगढ़के लोग गवर्नमेण्टसे बिगड़े थे। उसी समय पेशवाने लोगोंको रक्षाके लिये किलेमें फौज रखी। १८१८ ई०को जब महाराष्ट्र युद्ध होता था, यह दुर्ग बिना लड़े भिड़े अङ्गरेजोंको मिल गया।

गुणवर्त्तन (स० क्ली०) गुणे वर्त्तनं, ७ तत्। गुणवृत्ति, गुणका व्यवसाय।

गुणवर्त्तिन् (स० त्रि०) गुणे वर्त्तते वृत् णिनि। गुणवृत्ति अवलम्बन करनेवाला।

गुणवर्मन् (स० पु०) १ तेजस्वतीके पिता। तेजस्वती देखो। २ एक कर्णाटक देशवासी जैन ग्रन्थकार। इन्होंने पुष्पदन्तपुराण नामक एक जिनचरित्रकी रचना की है। ३ इस नामके और एक ग्रन्थकारका पता चलता है, जो जैन कवि थे।

गुणवाचक (स० त्रि०) गुणस्य वाचक, ६ तत्। जो गुणको प्रगट करे।

गुणवाद (स० पु०) गुणस्य वादः, ६ तत्। मीमांसामें अर्थवादविशेष। मीमांसावार्त्तिक प्रणेता कुमारिलके मतसे अर्थवाद तीन तरहका है, गुणवाद, अनुवाद और भूतार्थवाद। जहां विशेषण और विशेष्यके समानाधिकरण पर अन्वय करनेसे ठीक अर्थ सिद्ध नहीं होता है, वहां विशेषणका कुछ दूसरा अर्थ मान लेते हैं उसे अङ्गकथन वा गुणवाद कहते हैं। यथा जयमान प्रस्तर। इस स्थान पर जयमान विशेष्य और प्रस्तर विशेषण है। प्रस्तर शब्दका अर्थ कुशमुष्टि है, यहां विशेषण और विशेष्यका अभेद अन्वय किया नहीं जा सकता, इसी लिये यहां प्रस्तर शब्दका अर्थ प्रस्तरविशिष्ट अर्थात् कुशमुष्टधारी कर लिया गया है। अर्थवाद देखो।

गुणवान्—ब्राह्मणीदेवीभक्त माण्डव्य मुनि वंशीय एक राजा, वैतालकके पुत्र। (स० त्रि०) २ गुणवाला, गुणी।

गुणविजयगणि—एक जैन ग्रन्थकार, प्रमोदमाणिक्यके प्रशिष्य और जयसोमसूरिके शिष्य। इन्होंने खण्डप्रशस्तिटीका विशेषार्थबोधिका नामक रघुवंशकी टीका एवं दमयन्तीकथाटीका प्रणयन की है।

गुणविध (स० त्रि०) गुणस्य विधा इव विधा यस्य, बहुव्री०। गुणतुल्य।

गुणविधि (स० पु०) गुणस्य अङ्गस्य विधि, ६-तत्। मीमांसामें वह विधि जिसमें गुण कर्मका विधान हो। जैसे 'दध्ना जुहोति' दधिसे अग्निहोत्र यज्ञ करना चाहिये। अग्निहोत्र करनेका विधिवाक्य दूसरा है। अतः उसी अग्निहोत्रके अन्तर्गत जो आहुतिका विधान है उसकी विधि इस वाक्यमें है।

गुणविशेष (स० पु०) गुणस्य विशेष ६ तत्। एक प्रकारका गुण।

गुणविष्णु (स० पु०) एक वैदिक पण्डित, दामुकके पुत्र। इन्होंने छान्दोग्यमन्त्रभाष्य नामक सामवेदीय सन्ध्या और दशकर्म पद्धतिकी टीका प्रणयन की हैं। टीका अतिसरल भाषामें लिखी गई है। वर्त्तमान समयके सभी विद्वान् पुरुष उक्त टीकाका आदर करते हैं। रघुनन्दन प्रभृति नव्यस्मार्त्तगणोंने इनका मत उद्धृत किया है।

गुणवृक्ष (स० पु०) गुणाना [नौकाकर्षकरज्जुना

बन्धनाधारः वृक्षः। नौका या जहाजका मस्तूल।

गुणवृक्षक (सं० पु०) गुणवृक्ष स्वार्थे कन्। गुणवृक्ष, मस्तूल।

गुणवृत्ति (सं० स्त्री०) गुणेन वृत्तिः, ३ तत्। १ लक्षण-विशेष। (त्रि०) २ गुणके ऊपर जिसका सामर्थ्य है। (स्त्री०) गुणानां सत्वादीनां वृत्तिः ६-तत्। व्यापार परिणामविशेष, सत्वादि तीनों गुणोंकी वृत्ति। यथा—सत्वगुणकी वृत्ति सुख, रजोगुणका दुःख एवं तमोगुणकी वृत्ति मोह आदि। सत्वादि शब्द देखो।

गुणवैचित्र्य (सं० क्ली०) गुणानां वैचित्र्यं ६-तत। गुणकी विचित्रता, विभिन्नता।

गुणव्रत (सं० पु०) जैनियोंके मूलव्रतोंकी रक्षा करनेवाले तीन व्रत। यथा—दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत।

गुणशब्द (सं० पु०) गुणवाचकः शब्दः, मध्यपदलो०। गुणबोधक शब्द।

गुणशालिता (सं० स्त्री०) गुणशालिनो भावः गुणशालिन्-तल्। गुणाधारता, गुणवत्ता, गुणयोग।

गुणशालिन् (सं० त्रि०) गुणेन शालते शोभते शाल-णिनि। गुणविशिष्ट, गुणवान्।

गुणशील (सं० त्रि०) गुणयुक्तः शीलः स्वभावो यस्य, बहुव्री०। सच्चरित्र, जिसमें अनेक तरहके गुण हों।

गुणश्रेणीनिर्जरा (सं० स्त्री०) जैनमतानुसार—कर्मोंके असम्पूर्ण क्षयको निर्जरा कहते है। निर्जराके एक भेदका नाम गुणश्रेणी है। सातिशय मिथ्यादृष्टि, श्रावक-विरत, अनन्तानुबन्धी कर्मका विसंयोजन करनेवाले दर्शनमोहनीयकर्मके क्षय करनेवाले, कषायों (क्रोध मान माया, लोभ) को उपशान्त करनेवाले, कषायोंको उपशम और क्षपण करनेवाले ८, ९ १०वें गुणस्थानवर्ती जीव, मोहको क्षीण करनेवाले और सयोगी अयोगी दोनों प्रकारके जिन, इन ग्यारह अवस्थामें स्थित जीवोंके द्रव्यकी अपेक्षा कर्मोंकी क्रमसे असंख्यातगुणी अधिक निर्जरा होती है, इसीको गुणश्रेणीनिर्जरा कहते हैं।

(गोम्मटसार जीव० ६६६-७)

गुणश्लाघा (सं० स्त्री०) गुणस्य श्लाघा, ६-तत्। गुणकी प्रशंसा।

गुणसंक्रमण (सं० क्ली०) जैनमतानुसार—ज्ञानावरणादि कर्मोंके समय समयमें श्रेणी (पंक्ति) रूप असंख्यातगुणे २ परमाणु अन्य प्रकृति रूप हो कर परिणमते हैं, उसका नाम गुणसंक्रमण है।

गुणसंकीर्त्तन (सं० क्ली०) गुणस्य संकीर्त्तनं ६-तत्। गुणकथन, गुणानुवाद।

गुणसंख्यान (सं० क्ली०) गुणाः संख्यायन्तेऽनेन संख्या करणे ल्युट्, ६-तत्। सांख्य या पातञ्जल शास्त्र।

गुणसङ्ग (सं० पु०) गुणेषु गुणकार्येषु सुखादिषु सङ्गः आसक्तिः ७-तत्। सुख प्रभृतिमें आसक्ति।

"कारणं गुणसङ्गोऽस्य" (गीता)

गुणसंमूढ (सं० त्रि०) गुणैः संमूढः, ३-तत्। गुणकार्य प्रभृतिमें आत्माभिमानविशिष्ट, जिसे अपने गुणका गौरव हो।

गुणसमुद्र (सं० पु०) गुणस्य समुद्र इव। गुणनिधि, गुणाधार।

गुणसागर (सं० पु०) गुणानां सागर-इव। १ गुणाधार। २ चतुर्मुख ब्रह्मा। ३ हिंडोल रागका एक पुत्र। ४ बुद्धविशेष।

गुणसिन्धु (सं० पु०) गुणस्य सिन्धु-इव। गुणाधार गुणसागर।

गुणसिन्धु—बुंदेलखण्डके एक हिन्दी कवि। १८२५ ई०-को उन्होंने जन्म लिया था।

गुणसू (सं० स्त्री०) कार्पासोत्सुप।

गुणस्थान (सं० क्ली०) जैनमतानुसार—मोह और योग (मन, वचन और शरीरका हलन चलन) के निमित्तसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूप आत्माके गुणोंकी तारतम्य रूप अवस्थाविशेषको गुणस्थान कहते है। गुणस्थान चौदह होते है—१ मिथ्यात्व, २ सासादन, ३ मिश्र, ४ अविरतसम्यग्दृष्टि, ५ देशविरत, ६ प्रमत्तविरत, ७ अप्रमत्तविरत, ८ अपूर्वकरण ९ अनिवृत्तिकरण, १० सूक्ष्मसाम्पराय, ११ उपशान्तमोह, १२ क्षीणमोह, १३ सयोगकेवली और १४ अयोगकेवली। ये नाम मोहनीय कर्म और योगोंके कारण हुए हैं।

मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र और अविरतसम्यग्दृष्टि ये आदिके चार गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मके निमित्तसे

होते हैं। इसके बादके ५वेंसे लगाकर १२वें तक आठ गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके निमित्तसे तथा १३वां और १४वाँ ये दो गुणस्थान योगोंके निमित्तसे होते हैं।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे अतत्त्वार्थश्रद्धानरूप आत्माके परिणामविशेषको मिथ्यात्व गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थानमें रहनेवाला जीव विपरीत श्रद्धान करता है और सच्चे धर्मकी तरफ उसकी रुचि नहीं होती। जैसे पित्तज्वरवाले रोगीको दूध, मलाई, लड्डू आदि मिष्ट पदार्थ भी कड़वे लगते हैं। उसी प्रकार इस श्रेणीके जीवको भी समीचीन धर्म अच्छा नहीं लगता।

२ सासादन गुणस्थान—प्रथमोपशमसम्यक्त्वके समय अधिकसे अधिक ६ आवली और कमसे कम १ समय बाकी रहे उस समय किसी एक अनन्तानुबन्धी कषायके उदयसे सम्यक्त्वके नाश हो जानेसे जीवके भावोंकी जो अवस्था होती है, उसको सासादन गुणस्थान कहते हैं।

३ मिश्र गुणस्थान—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व इन दोनों प्रकृतियोंके उदयसे जीवके जो डमाडोल परिणाम होते हैं। उस अवस्थाका नाम मिश्रगुणस्थान है।

४ अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान—दर्शमोहनीयकी तीन और अनन्तानुबन्धीकी चार इन सात प्रकृतियोंके उपशम वा क्षय, अथवा क्षयोपशमसे और अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उदयसे-व्रतरहित सम्यक्त्वधारी जीवके अविरत सम्यग्दृष्टि नामक ४र्थ गुणस्थान होता है।

५ देशविरत गुणस्थान—जीवके प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभके उदयसे यद्यपि संयम भाव नहीं होता, तथापि अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान माया और लोभके उपशमसे श्रावकव्रतरूप देशचारित्र होता है। इसीको देशविरत गुणस्थान कहते हैं। पांचवें छठे आदि ऊपरके गुणस्थानोंमें सम्यग्दर्शन तथा उसका अविनाभावी सम्यग्ज्ञान अवश्य होता है, इनके बिना पाँचवें छठे आदि गुणस्थान नहीं होते। परिग्रह सहित गृहस्थों वा श्रावकोंके इससे ऊँचे परिणाम नहीं होते।

६ प्रमत्तविरत गुणस्थान—संज्वलन और नोकषायके तीव्र उदयसे संयम भावके हो जानेसे मनुष्यको वैराग्य आता है और वह उस वैराग्यके कारण समस्त परिग्रहको छोड़ कर खुद दिगम्बर (नग्न) मुनि हो जाता है। मुनिके होनेके उपरान्त उस जीवके सम्यक्त्वरूप जो परिणामों की अवस्था है, उसको प्रमत्तविरत गुणस्थान कहते हैं। छठे गुणस्थानसे लगाकर १४वें गुणस्थान तकके परिणाम दिगम्बर मुनिके ही होते हैं, अन्यके नहीं।

७ अप्रमत्तविरत गुणस्थान—संज्वलन और नोकषायके मन्द उदयसे प्रमाद (आलस) रहित संयमभावका नाम अप्रमत्तविरत गुणस्थान है।

८ अपूर्वकरण गुणस्थान—जिस करण (परिणाम)में उत्तरोत्तर अपूर्व ही अपूर्व परिणाम होते जाय अर्थात् भिन्नसमयवर्ती जीवोंके परिणाम सदा विसदृश ही हों और एक समयवर्ती जीवोंके परिणाम सदृश भी हों और विसदृश भी हों उसको अपूर्वकरण कहते हैं। और यही आठवां गुणस्थान है।

९ अनिवृत्तिकरण गुणस्थान—जिस करण (परिणाम) में भिन्नसमयवर्ती जीवोंके परिणाम विसदृश ही हों और एक समयवर्ती जीवोंके परिणाम सदृश ही हों उसको अनिवृत्तिकरण कहते हैं। यही नवमा गुणस्थान है। इन तीनों करणोंके परिणाम प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धता लिये होते हैं।

१० सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान—अत्यन्त सूक्ष्म अवस्थाको प्राप्त लोभ कषायके उदयको अनुभव करनेवाले जीव (मुनि) के परिणामोंकी अवस्थाका नाम सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान है।

११ उपशान्तमोह गुणस्थान—चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशम होने पर यथाख्यात चारित्रको धारण करनेवाले मुनिके परिणामों की स्थितिको उपशान्तमोह गुणस्थान कहते हैं। इस गुणस्थानका काल समाप्त होने पर जीव मोहनीयके उदयसे नीचेके छठे गुणस्थान तक उतर आता है, फिर क्षपक श्रेणीका अवलम्बन कर बड़ी कठिनतासे १२वें गुणस्थानमें पहुँचता है।

१२ क्षीणमोह गुणस्थान—मोहनीय कर्मके अत्यन्त क्षय होनेसे स्फटिक पात्रमें स्थित जलकी तरह अत्यन्त निर्मल अविनाशी यथाख्यात चारित्रके धारक मुनिके परिणामों

की अवस्थाको क्षीणमोह गुणस्थान कहते हैं।

१३ सयोगकेवली गुणस्थान घातिया कर्मोंकी (ज्ञानावरणकी ५, दर्शनावरणकी ८, मोहनीयकी २८ और अन्तरायकी ५ =) ४७ और अघातिया कर्मोंकी १६, कुल ६३ प्रकृतियोंका क्षय होनेसे लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान तथा मनोयोग, वचनयोग और काययोगके धारक अरहंतके शुद्ध परिणामोंकी अवस्थाका नाम सयोग केवली गुणस्थान है। ऐसे परिणाम और ऐसा दिव्यज्ञान ईश्वरको होता है। जैनोंने इन्हींको अरहन्त वा ईश्वर माना है और येही मोक्षमार्गका उपदेश दे कर संसारमें मोक्षमार्गका प्रकाश करते हैं।

१४ अयोगकेवली गुणस्थान—उपर्युक्त अरहन्त मन, वचन और कायके योगोंसे रहित हो कर केवलज्ञान सहित जिस समय मोक्ष प्राप्त करते हैं उस समयसे अन्तर्मुहूर्त्त पहिलेके परिणामोंको अयोगकेवली गुणस्थान कहते हैं। 'अ इ उ ऋ ऌ' इन पाँच ह्रस्व स्वरोंके उच्चारण करनेमें जितना समय लगता है, उतना ही इसका काल है

गुणस्थानकरण—१ जैनोंका एक धर्मग्रन्थ। २ बौद्धोंका एक ग्रन्थ।

गुणहानि (सं० स्त्री०) जैनोंके अनुसार—गुणकाररूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जांय, उसको गुणहानि कहते हैं। जैसे—किसी जीवने एक समयमें ६३०० परमाणुओंके समूहरूप समय प्रवद्धोंका बन्ध किया और उसमें ४८ समयकी स्थिति पड़ी, उसमें गुणहानियोंके समूहरूप नाना गुणहानि ६, जिसमें प्रथम गुणहानिके परमाणु ३२००; द्वितीय गुणहानिके १६००, ३यके ८००, ४र्थके ४००, ५मके २०० और ६ठी गुणहानिके १०० परमाणु हैं। यहां उत्तरोत्तर गुणहानियोंमें गुणकाररूप हीन हीन परमाणु (द्रव्य) पाये जाते हैं, इसलिये इसकी गुणहानि संज्ञा हुई। (जैनसिद्धान्तप्रवेशिका)

गुणहानि आयाम—जैनशास्त्रानुसार एक गुणहानिके समयके समूहको गुणहानि आयाम कहते हैं। गुणहानिका दृष्टान्त देखो। जैसे—४८ समयकी स्थितिमें ६ गुणहानि हैं, उस ४८में ६का भाग देनेसे प्रत्येक गुणहानिका परिमाण ८ हुआ, इसीका नाम गुणहानि आयाम है। (जैनसिद्धान्तप्रवेशिका)

गुणहीन (सं० त्रि०) गुणेन हीनः, ३-तत्। गुणशून्य, किसी प्रकारका गुण न हो।

गुणस्तम्भ (सं० पु०) गुणाधारः स्तम्भः। गुणवृक्ष, मस्तूल।

गुणा (सं० स्त्री०) गुणोऽस्त्यस्याः गुण अच, स्त्रियां टाप्। १ दुर्वा, दूब। २ मांसरोहिणी, एक प्रकारका सुगन्ध द्रव्य।

गुणा—मध्य भारतकी एक मव एजेन्सी। परोन और रघुगढ़ नामक दो विषय इसके अन्तर्भूत हैं। उक्त दोनों स्थानके सरदार ग्वालियरके अधीन रह कर जागीर स्वरूप भोगदखल करते आये हैं। परोन और रघुगढ़ देखो।

गुणा (हिं० पु०) गणितको एक क्रिया।

गुणाकार (सं० पु०) गुणानामाकरः, ६-तत्। १ बुद्धविशेष। २ गुणयुक्त, गुणाधार। ३ महादेव शिव। ४ बुद्धके एक शिष्य। ५ सूक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि।

गुणाकार—हिन्दी भाषाके एक कवि। यह युक्त प्रान्तीय उनाव जिलेके कांठा गांवमें (१८८३ ई०) रहते थे।

गुणाकरसूरि—एक जैन ग्रन्थकार, गुणचन्द्रसूरिके शिष्य। इन्होंने षड्दर्शन समुच्चयटीकाकी रचना की है।

गुणाख्यान (सं० क्ली०) गुणस्य आख्यानं, ६-तत्। १ गुणकीर्त्तन, गुणकथन।

गुणागुण (सं० पु०) द्वन्द्वसमा०। गुण और दोष, अच्छा और बुरा।

गुणाङ्क (सं० पु०) वह अङ्क जिसको गुणा करना हो।

गुणाढ्य (सं० त्रि०) गुणैराढ्यः, ३-तत्। १ गुणयुक्त, गुणवान्, हुनरमन्द।

(पु०) २ कोई ब्राह्मणकुमार। कथासरित्सागरमें उनका उपाख्यान इस प्रकार कहा है—प्रतिष्ठान प्रदेशके सुप्रतिष्ठित नगरमें सोमशर्मा नामक कोई ब्राह्मण रहते थे। उनके वत्सक तथा गुल्मक नामसे दो पुत्र और श्रुतार्था नामकी एक मात्र कन्या थी। श्रुतार्थाके साथ यौवन समयको अलौकिक रूपलावण्यसे मोहित हो नागराज वासुकिके छोटे भाई कीर्तिसेनने गान्धर्व विवाह कर लिया। उन्हीं श्रुतार्थाके गर्भसे गुणाढ्यका जन्म हुआ। इनको शैशवावस्थाकी माता और मातुलद्वय अकाल कालग्रासमें पड़े थे। बालक गुणाढ्य किसी प्रकार उनका ऊर्ध्वदैहिक कार्य सम्पन्न करके विद्याभ्यासके लिये

दक्षिणापथको चले और थोड़े ही दिनमें विख्यात पण्डित हो गये। सब देशोंमें उनका पाण्डित्य फैल पड़ा।

उस समय महाराज शालिवाहन (सातवाहन) प्रतिष्ठान राज्यके अधिपति थे। यह उनकी सभामें पहुंचे। महाराज गुणाढ्यका पाण्डित्य देख परम आह्लादित हुए थे, यह बड़े आदरके साथ मन्त्रिपद पर रखे गये। गुणाढ्य वहां किसी रमणीरत्नका पाणिग्रहण करके शिष्योंके साथ बड़े सुखसे समय बिताने लगे।

राजा शालिवाहन पहले मूर्ख थे, परन्तु उनकी रानी अतिशय विद्यावती थी। एक दिन राजा और रानी जलक्रीड़ामें प्रवृत्त हुये। विदुषी रानीने उनको संस्कृत वाक्यसे किसी विषयके लिये अनुरोध किया था। राजा इसका अर्थ समझ न सके और विपरीत आचरण करने लगे। उस पर रानीने इन्हें डांटा था। राजाको ग्लानोदय हुआ। उन्होंने सोचा था—इस संसारमें विद्या ही मानवका प्रधान धन है, विद्याके अभावमें कोई सुख नहीं। रानीके तिरस्कारसे आज मेरे लिये संसार असार जैसा हो गया। यदि विद्याभ्यास कर न सकूं तो जीनेसे क्या फल है? राजाका संकल्प मालूम होने पर गुणाढ्य ने छह वर्षमें उन्हें व्याकरण पढ़ा देना स्वीकार किया था। उसी समय शर्ववर्मा नामक कोई पण्डित बोल उठे—मैं छह मासमें ही महाराजको व्याकरण सिखला सकता हूं। वह बात सुन करके यह चिढ़ गये और आपेसे बाहर हो कहने लगे-गर्वकारिन्! यदि ६ महीने में आप यह काम कर सकें, स्मरण रखें कि मैं संस्कृत, प्राकृत और देशी भाषा परित्याग करनेको दृढ़प्रतिज्ञ हूं। पण्डितप्रवर शर्ववर्माने असाधारण प्रतिभाबलसे संक्षिप्त कलाप व्याकरण रचना करके ६ मासके मध्यमें ही महाराजको विद्वान् बना दिया। इन्होंने परास्त हो तीनों भाषाएं छोड़ी थीं। बात न करके जनसमाजमें रहना असम्भव समझ अपने प्रिय शिष्य गुणदेव और नन्दिदेव के साथ गुणाढ्यने निविड़ अरण्यमें प्रवेश किया। मनुष्य सम्बन्ध परित्याग करके वह पिशाचोंके साथ रहने लगे। दिन दिन प्रतिवेशी पिशाचों की कथावार्ता सुन करके उन्हों ने पिशाचभाषा सीखी थी। कुछ दिन बाद वह काणभूतिसे मिले। इन्हों ने मधुमय स्तुतिवाक्यसे उनको सन्तुष्ट करके पुष्पदन्तकथित सप्तकथामय उपाख्यान सुना था। फिर गुणाढ्यने उसी उपाख्यानको अवलम्बन करके पिशाच भाषामें सात लाख श्लोकोंकी बृहत्कथा बनायी। इस बड़े ग्रन्थकी रचनामें सात ही वर्षका समय लगा था। इन्हों ने अपने रक्तसे उक्त पुस्तक लिख करके काणभूतिको दिखलाया, वह शापमुक्त हो गये। [काणभूति देखो।]

गुणाढ्यने यह बृहत्कथा मानव समाजमें प्रचार करने के विचारसे दोनो शिष्योंके साथ प्रतिष्ठाननगर पहुंच राजाके पास भेजी थी। किन्तु विद्यामदगर्वित सातवाहनने उस ग्रन्थका विशेष आदर नहीं किया। राजाके व्यवहारसे यह अतिशय क्रुद्ध हो ग्रन्थको आगमें जलाने लगे। वह एक एक पृष्ठ पढ़के जलाते जाते थे। पशुपक्षी अनाहार वह अमृतमयी कथा सुनने लगे। यह संवाद सुन करके महाराज सातवाहनने वह पुस्तक मांगा। उस समय सप्तकथाके ६ खण्ड जल चुके थे। महाराजको बहुत कहने सुनने पर इन्हों ने वह दे डाली।

यह शिवके माल्यवान् नामक एक अनुचर थे, शापसे गुणाढ्य नामसे भूतल पर अवतीर्ण हुए और थोड़े दिन मर्त्यलोकमें रह करके शापसे छूट गये।

क्षेमेन्द्रकी बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेवका कथासरित्सागर दोनो ग्रन्थ इनकी उसी बृहत्कथाके आधार पर रचित हुए हैं। दण्डी, सुबन्धु, त्रिविक्रम, गोवर्धन प्रभृति पण्डितोंने पैशाची भाषामें बनी हुई बृहत्कथाका उल्लेख किया है।

गुणाढ्यक (सं० पु०) गुणाढ्य स्वार्थे कन्। अङ्कोठवृक्ष, अखुरोटका पेड़।

गुणातीत (सं० पु०) गुणान् सत्वादिगुणान् तत्कार्यं सुखादीन् अतीत, २ तत्। १ सुख दुःखादि शून्य परमेश्वर। आत्मज्ञ, स्थितप्रज्ञ, जीवन्मुक्त। भगवद्गीतामें भगवानने प्रिय शिष्य अर्जुनको उपदेशके छलसे बतलाया है, जो त्रिगुण अतिक्रम कर सकते, कभी नहीं जीते मरते और प्रारब्ध शेष होने पर निर्वाण लाभ करते हैं। भक्तिबलसे एकान्त चित्त हो करके ईश्वरकी सेवा करनेवाले ही गुणोंको अतिक्रम कर सकते हैं। ईश्वरकी सेवा छोड़ करके उसका कोई उपाय नहीं। जो गुणातीत हो सके

हैं, अनभिलषित किसी घटनाका द्वेष या अभीष्ट विषयका आग्रह नहीं रखते। वह सब विषयोंसे उदासीन हो जाते हैं, कभी सुख, दुःख वा मोहमें पड़ करके नहीं घबराते। इनको विश्वास है कि वह सब गुणोंका काम है, जो होता है होता रहे। गुणातीत महात्मा सुख या दुःखमें सुस्थ चित्तसे अवस्थान करते हैं। सामान्य लोष्ट्र एवं सद्रार्घ मणि, हिताहित, निन्दास्तुति और मान अपमान उनके लिये बराबर है उनका कोई मित्र अमित्र नहीं। यह सब विषयोंका औत्सुक्य छोड़ देते हैं।
(गीता १४ अध्याय)

गुणादि (सं० पु०) पाणिनीय एक गण। गुण, अक्षर, अध्याय, सूक्त, छन्दस्, मान, इन सबोंको गुणादि कहते हैं।

गुणाधार (सं० पु०) गुणस्य आधारः ६-तत्। गुणवान्, गुणसम्पन्न व्यक्ति।

गुणाधिष्ठानक (सं० क्ली०) वक्षस्थलका वह स्थान जहां मेखला बांधा जाता है।

गुणानन्द विद्यावागीश—एक दार्शनिक, मधुसूदनके शिष्य। इन्होंने न्यायकुसुमाञ्जलीविवेक, शब्दालोकविवेक और आत्मतत्त्वविवेकटीका की रचना की है

गुणानुराग (सं० पु०) गुणेषु अनुरागः ७-तत्। गुणप्रियता, गुणमें आसक्ति, गुणका आदर।

गुणानुरोध (सं० पु०) गुणस्य अनुरोधः ६-तत्। गुणकी प्रतिष्ठा, गुणका अनुसरण।

गुणानुवाद (सं० पु०) गुणकथन, प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ़

गुणान्तर (सं० पु०) अन्यो गुणः, नित्य-सभा। अन्यगुण

गुणान्तराधान (सं० क्ली०) गुणान्तरस्य आधानं, ६ तत्। किसी पदार्थके पूर्व गुण भिन्न अपर गुणके उत्पादन वा प्राप्तिको गुणान्तराधान कहते हैं

गुणान्तरापादन (सं० क्ली०) गुणान्तरस्य आपादनं, ६-तत। भावान्तरकी प्राप्ति।

गुणान्वित (सं० त्रि०) गुणैरन्वितः युक्तः ३-तत्। १ विवेक ज्ञान या वैराग्य और उपशम प्रभृति मुक्तिके उपाय। २ गुणयुक्त, गुणवान्।

गुणापवाद (सं० पु०) गुणस्य अपवादः, ६-तत्। गुणकी निन्दा।

गुणाब्धि (सं० पु०) वृक्षविशेष।

गुणाभरण (सं० क्ली०) गुण एवाभरणं। १ गुणरूप अलङ्कार। (त्रि०) गुण एवाभरणं यस्य। २ गुणरूप भूषणयुक्त, गुणालङ्कृत।

गुणायन (सं० क्ली०) गुणस्य अयनं आश्रयः, ६-तत्। १ गुणका घर, गुणवान्। (त्रि०) गुणोऽयनं आश्रयो यस्य, बहुव्री०। २ गुणान्वित, गुणको धारण करनेवाला।

गुणायननन्दि—एक जैनग्रन्थकार। ये गर्गरी जातिके थे। सम्वत् ११८८ में मार्गशीर्ष शुक्ल ११शोको इनका स्वर्गवास हुआ।

गुणारिया—मन्दार पर्वतसे तीन मील दक्षिण-पूर्व पुनपुन और मुन्हर नदीके सङ्गमस्थान पर अवस्थित एक नगर। इसका प्राचीन नाम श्रीगुणचरित है। पूर्व समयमें यहां एक बौद्धविहार था। वर्तमान समयमें भी बहुत से शिवमन्दिरका ध्वंसावशेष देखा जाता है।

गुणारिष्ट (सं० क्ली०) मद्य, मद, मदिरा।

गुणालङ्कृत (सं० त्रि०) गुणैरलङ्कृतः, ३-तत्। गुणभूषित, गुणवान्।

गुणालाभ (सं० पु०) गुणस्य अलाभः, ६-तत्। गुण अप्राप्ति, फलहीनता, वह पुरुष जिसको गुणका लाभ न हो।

गुणावली (सं० स्त्री०) गुणस्य आवली, ६-तत। १ गुणश्रेणी। २ गुणा करनेकी प्रणाली।

गुणावा,—जैनियोंका एक तीर्थ (सिद्ध) क्षेत्र। यहांसे गौतम गणधर मोक्ष गये हैं। यहां तालाबके बीचमें एक विशाल (दि० जैनियोंका) मन्दिर है; जो कि भागलपुर प्रान्तमें नवादा ष्टेशनसे १॥ मील दूरी पर है।

गुणिका (सं० स्त्री०) गुण-ठन् स्वार्थे कन्-टाप्। शून्याङ्क।

गुणित (सं० त्रि०) गुण कर्मणि क्त। गुणन किया हुआ।

गुणिता (सं० स्त्री०) गुणिनो भावः गुणिन्-तल्। गुणियोंका धर्म, गुण

गुणी (सं० पु०) गुणः ज्या विद्यतेऽस्य गुण-इनि। १ धनुः, धनुष। (त्रि०) गुणो विद्यादिरस्त्यस्य गुण-इनि। २ गुणयुक्त, जिसमें गुण हो, गुणवान्। ३ निपुण मनुष्य, कलाकुशल पुरुष हुनरमंद आदमी। ४ आवर्तकी।

गुणीभूत (सं० त्रि०) अगुणो गुणीभूतः गुण-च्वि-भू-क्त। अप्रधानीभूत, अवस्था या कार्यमें अप्रधान भावसे अवस्थित।

गुणीभूतव्यङ्ग्य (सं० क्लो०) गुणीभूत अप्रधानीभूत व्यङ्ग्य यत्र, बहुव्री०। काव्यविशेष, किसी किस्मकी शायरी। आलङ्कारिकोंके मतमें रसात्मक वाक्यको काव्य कहते हैं। यह काव्य प्रधानत दो भागोंमें बटा हुआ है—ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य। काव्य शब्दो।

आलङ्कारिक शब्दकी तीन शक्तियां मानते हैं। यथा-अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना। शब्दकी अभिधा शक्तिसे निकलनेवाला वाच्य और व्यञ्जनाका अर्थ व्यङ्ग्य कहलाता है। व्यञ्जना देखो।

गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य वही है, जिसमें व्यङ्ग्यार्थ वाच्यार्थसे न्यून वा समान लगे। यह गुणीभूतव्यङ्ग्य आठ प्रकारका है—१ इतराङ्ग, २ काकाक्षिप्त, ३वाच्यसिद्धङ्ग, ४ सन्दिग्धप्राधान्य, ५ तुल्यप्राधान्य, ६ अस्फुट, ७ अगूढ़ और ८ व्यङ्ग्यासुन्दर।

व्यङ्ग्य किसी एक रसका वाच्य और अङ्ग होनेसे इतराङ्ग गुणीभूतव्यङ्ग्य कहलाता है। (साहित्यद० ४ परि०) काव्यप्रकाशकारने उसका नाम अपरांग लिखा है। (काव्यप्र० ५म उल्लास)

जिस स्थल पर वाक्यार्थ काकु द्वारा आक्षिप्त होता, काकाक्षिप्त गुणीभूतव्यङ्ग्य पड़ता है।

व्यङ्ग्यार्थको वाच्यार्थसिद्धिका हेतु होनेसे वाच्यसिद्धङ्ग कहेंगे।

जो प्रस्तावमें उपयोगी और वर्णनीय दिखलाता, प्रधान जैसा माना जाता है। किन्तु व्यङ्ग्यार्थ और वाच्यार्थ दोनों प्रधान लगने अर्थात् उनमें कोई प्रधान जैसा ठहर न सकनेसे सन्दिग्धप्राधान्य कहते हैं।

वाच्यार्थ और व्यङ्ग्यार्थ दोनों ही प्रधान वा प्रकृत रहनेसे तुल्यप्राधान्य होता है।

अस्फुट व्यङ्ग्यार्थका नाम अस्फुटगुणीभूतव्यङ्ग्य है।

जहां वाच्यार्थकी भांति व्यङ्ग्यार्थ सहजमें ही बोधगम्य हो जाता, अगूढ़गुणीभूतव्यङ्ग्य आता है।

व्यङ्ग्यार्थसे वाच्यार्थका चमत्कार अधिक रहने पर व्यङ्ग्यासुन्दर होता है।

दीपक और तुल्ययोगिता प्रभृति स्थलों पर जो उपमा आदि अलङ्कार व्यङ्ग्य लगते, ध्वनिकारादिके मतमें उनको भी गुणीभूतव्यङ्ग्य कहते हैं। आलङ्कारिकोंने इसको छोड़ करके गुणीभूतव्यङ्ग्यके और भी कई भेद निरूपण किये हैं। (साहित्यद० ४ परि०)

गुणीश्वर (सं० पु०) गुणेषु ईश्वर गुणानामीश्वरो वा। १ चित्रकूट पर्वत। २ तीनों गुण पर प्रभुत्व रखनेवाला, परमेश्वर, ईश्वर। (त्रि०) ३ गुणके अधिपति।

गुणोज्ज्वला (सं० स्त्री०) स्वर्णयूथिका, छोटी सफेद जूही।

गुणोत्कर्ष (सं० पु०) गुणस्य उत्कर्षः ६-तत्। गुणातिशय, बहुत गुण।

गुणोत्कीर्त्तन (सं० क्लो०) गुणानामुत्कीर्तनं कथन। नायक या नायिकाका प्रशंसादि कथन।

गुणोपेत (सं० त्रि०) १ गुण, गुणयुक्त, जिसमें गुण हो। २ किसी कलामें निपुण।

गुण्टुनाल—मन्द्राज प्रान्तके करनूल जिलेका एक गांव। यह नन्द्यालसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। इस स्थानमें विजयनगरराज सदाशिवके राजत्व समयकी रामराजवेङ्कटाद्रि देवके आदेशसे १४६८ शकका उत्कीर्ण एक शिलालिपि है।

गुण्टुपल्ली—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेमें इल्लूर तालुकका एक गांव यह अक्षा० १७ उ० और देशा० ८१ ८ पू०में इल्लूर शहरसे २४ मील उत्तर पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः १०८२ है। कहते हैं, पहले यहां जैनपुरम्-नामक कोई नगर था। इस गांवको पूर्व दिक्को पर्वतमें एक सुन्दर गुहामन्दिर है। मन्दिरका मध्य भाग गोल, छत्र महराबदार और भीतरको ८ हाथ चौकोर तथा २ हाथ ऊंचो एक प्रस्तरमय वेदी है। उस पर २ हाथ ८ अंगुल ऊंचा गुम्बज और इसके ऊपर लिङ्गमूर्ति देखते हैं। मन्दिरके उभय पार्श्वको कोई २०० हाथ दूर तक पहाड़ तोड़ करके दोवार और घर वगैरह बनाये गये हैं। दालान ८० हाथ लम्बे और १२ हाथ चौड़े हैं। एक दालानमें छोटी गुहा देख पड़ती है। कहते हैं कि पूर्वकालको महादेवके स्नानार्थ उसी गुहासे जल आया करता था। यहां प्रति वत्सर शिवरात्रिके समय बड़ा उत्सव होता है।

आजकल मन्दिरमें ब्राह्मण धर्मका प्रभाव रहते भी कोई सन्देह नहीं कि पूर्वकालको यहां बौद्ध सङ्घाराम

और चैत्य रहे। इस गोलाकृति मन्दिरको चारों ओर ११ फुट ७ इञ्च प्रदक्षिणा है। प्रदक्षिणासे ७ फुट ऊंचे 'दागोव' दृष्ट होता है। वारगेस साहबने इस गुहा-मन्दिरसे जुन्नारकी बौद्ध कीर्ति तुलजालेनकी तुलना किया। है। चैत्य गुहाके सामने एक भग्न दागोव है। इससे दक्षिण कुछ छोटे छोटे घर देख पड़ते हैं।

उत्तर दिकको विहार-गुहा है। इसके मध्य एक टुकड़े शिलाफलक पर दो छत्र खोदित लिपियां लगी हैं इनके अक्षर ई० प्रथम शताब्दी अथवा उससे भी कुछ पूर्व समयके जैसे अनुमित होते हैं।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रान्तका एक जिला। १८०४ ई०को यह नेल्लूरके ओङ्गोल तालुक और कृष्णा जिलेका कुछ अंश ले करके बना। १८५९ तक इसी नामका एक दूसरा जिला भी था। इसका क्षेत्रफल ५७३३ वर्गमील, लोकसंख्या प्राय: १४९०६३५ और मालगुजारी कोई ५६॥ लाख रुपया है।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रान्तके गुण्टूर जिलेका सबडिविजन।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रांतके गुण्टूर जिलेका तालुक। यह अक्षा० १६° ८' एवं १६° ३५' उ० और देशा० ८०° २०' तथा ८०° ४१' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५०० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: २००५५७ है। इसमें दो नगर और १०८ गांव बसते हैं। मालगुजारी और सेस कोई ५१२०००) रु० पड़ती है। दक्षिणमें काली भूमि बहुत उपजाऊ है। सड़कें अच्छी हैं और दक्षिण-पूर्व कोणसे बङ्किनाल (नहर) निकल गयी है।

गुण्टूर—मन्द्राज प्रांतके पुराने गुण्टूर जिलेका सदर। यह अक्षा० १६° १८' उ० और देशा० ८०° २८' पू०में पड़ता है। १८५९ ई०से गुण्टूर कृष्णाके सब कलक्टरका निवास स्थान रहा और हालमें नये गुंटूर जिलेका सदर हुआ। १८६६ ई०को मुनिसपालिटी पड़ी। सम्भवत: ई० १८वीं शताब्दीके उत्तरार्ध भागमें फ्रान्सीसियोंने इसे बसाया था। तेलगु 'गुण्ट' शब्दसे जिसका अर्थ सरोवर है, गुण्टूर बना है। यह अपने प्रांतमें सबसे अधिक स्वास्थ्यकर स्थान जैसा प्रसिद्ध है। पहले वह सलाबत-जङ्गकी जागीर था। १७७८ ई०को मन्द्राज गवर्नमेण्टने उनसे इसका पट्टा लिखाया और १७८०ई०को फिर उन्हें सौंप दिया। १७८८ ई०को वह अङ्गरेजोंके हाथ लगा और १८२३ ई०को वृटिश गवर्नमेण्टका अधिकार भुक्त हुआ। यहां दूसरी जगहोंकी ५ सड़कें आ करके मिली हैं। रूईका बड़ा कारबार है। कई एक पुतली घर चलते हैं। ईष्ट कोष्ट रेलवेका ष्टेशन बना हुआ है।

गुण्ठ (सं० पु०) वृन्तलग्न।

गुण्ठन (सं० क्ली०) गुठि-ल्युट। १ आवरण, परदा। २ वेष्टन, घेरा।

गुण्ठित (सं० वि०) गुठि कर्मणि-क्त। १ आवृत, आच्छादित, ढका हुआ। २ धूलसे भरा हुआ, धूलमें लिपटा हुआ। ३ गुण्ठित, ढका हुआ।

गुण्ड (सं० पु०) गुड़ि अच्। १ तृणविशेष, एक घास (Scirpus kysoor)। इसका पर्याय—काण्डगुण्ड, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र, नीलपत्र और त्रिच्छदक है। इसके कन्दको कशेरु कहते हैं। इसका गुण मधुर, शीतल, कफ, पित्त, अतीसार, दाह और रक्त नाशक है। यह तृण अनूपदेशमें उत्पन्न होता है। इसका काण्ड चार या पांच हाथ तक लम्बा रहता है। इसका शीर्षभाग छत्रके जैसा और मूल मोथाके सदृश होता है। इसके काण्डसे अच्छी अच्छी चटाईयां बनती हैं। गुड़ि भावे घञ्। २ चूर्णन, पेषण, पीसा या चूर्ण किया हुवा।

गुण्ड—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ एजेन्सीमें नवानगर राज्यके मानवाड़ महालका एक गांव। यह अपने प्राचीन सिंह शिलालेखके लिये प्रसिद्ध है। उसमें लिखा हुआ है—'क्षत्रप राजत्वकालके १०२ वर्षको स्वामी रुद्रसिंह राजा थे। इनके पिताका राजा महाक्षत्रप स्वामी रुद्रदामा, पितामहका राजा क्षत्रप स्वामी जयदामा और प्रपितामहका नाम राजा महाक्षत्रप स्वामी चष्टान था। वैशाख कृष्ण—पञ्चमीको श्रवणा नक्षत्रमें चन्द्रके रहते अहीर सेनापति वाहकके लड़के रुद्रभूतिने रसोपद्र ग्राममें पशुओंके लाभ और सुखके लिये यह कूप बनाया।' यह शिलालेख एक पुराने कूएंमें मिला था। गुण्डको लोकसंख्या कोई १०८६ होगी।

गुण्डक (सं० त्रि०) गुण्ड स्वार्थ कन्। १ मलिन, मैला, कुचेला।

(पु०) २ धूलि, धूर। ३ कलध्वनि, कलकलका शब्द। ४ स्नेहपात्र।

गुण्डकन्द (सं० पु०) गुण्डस्य कन्द ६ तत्। कशेरु, केशर।

गुण्डता (सं० स्त्री०) यावनाल शर्करा।

गुण्डचोलु—मन्द्राज प्रान्तके नेल्लूर जिलेका एक गांव। इसकी दक्षिण दिक्‌को आने जानेकी राह पर तालाब है उसमें एक पत्थरके खम्भे पर तेलङ्ग अक्षरोंकी लिपि है। जलाशयके दक्षिण भी तामिल अक्षरोंमें खुदी हुई लिपि लगी है यह गाव आजकल उजाड़ हो गया है। गांववालोंका कहना है, किसी समय वहां राजप्रासाद था

गुण्डल—मन्द्राज प्रान्तके करनूल जिलेका कसबा। यहा गोपाल स्वामीका मन्दिर बहुत पुराना है। इसी मन्दिरके पास एक पत्थर पर अनुशासनलिपि उत्कीर्ण है।

गुण्डलकम्म दाक्षिणात्यकी एक नदी। यह मन्द्राज प्रान्तीय करनूल जिलेके नल्लमलय पर्वतसे अक्षा० १५ ४८ उ० और देशा० ७८ ५१´ पू०में निकलती है। फिर जमपल्लेरु और एनूमल्लेरु नामक दो पहाड़ी नदियोंका सङ्गम है। उसके बाद यह कम्बमघाटकी राह मैदान पहुंचती है। सींचनेके लिये कम्बम तालाब बनाया गया है। यह करनूल, गण्टूर और नेल्लूर जिला होती हुई पिटदेवरमके पास अक्षा० १५ २४ उ० और देशा० ८० १०´ पू० पर समुद्रमें प्रवेश करती है।

गुण्डलपाड़ु—मन्द्राज प्रान्तके कृष्णा जिलेका एक गांव। यह मार्चलेसे १० मील और तुम्निकोटरसे १८मील दक्षिण पश्चिम पड़ता है। यहा दो प्राचीन मन्दिरोंका ध्वंसावशेष दृष्ट होता है। ग्रामके पश्चिम भाग पर शिवकेशवके मन्दिरमें एक भग्न शिलालिपि है। शिव तथा विष्णु मन्दिरके पास दुर्मति सम्वत्सर १२४३ शककी उत्कीर्ण दूसरी भी शिलाप्रशस्ति मिलती है।

गुण्डलपाडेरु—मन्द्राज प्रान्तके नेल्लूर जिलेका एक गांव। कुन्दुकूरसे यह ७ मील दक्षिण पश्चिम पड़ता है। पर्वत पर तीन और नीचे एक पुराना मन्दिर है। पहाड़ पर रामेश्वर स्वामीका भी मन्दिर विद्यमान है। इस मन्दिरमें ध्वजस्तम्भके निकट १४६२ शककी उत्कीर्ण एक प्रशस्ति है। फिर मन्दिरसे दक्षिणको एक टुकड़े पत्थर पर कोई शिलालिपि भी मिली है। नदीको रेतमें अध प्रोथित दो शिवमन्दिर हैं। कहते कि एक चोलराजने यह दोनो मन्दिर बनाये थे।

गुण्डलपेट—महिसुर राज्यके महिसुर जिलेका दक्षिण तालुक। यह अक्षा० ११ ३६ तथा १२ १ उ० और देशा० ७६ २४´ एवं ७६ ५२ पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५३५ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ७४८९७ है। इसमें एक नगर और १५५ गांव बसे हैं। मालगुजारी कोई १०००) रु० है। पश्चिम तथा दक्षिणको बड़ा जङ्गल है। पास ही पहाड़ी पर घनी बसती है। गौंडल नदी दक्षिणसे उत्तरको प्रवाहित है। सींचनेके लिये बांध है। यहा चावल और पान बहुत अच्छा होता है। नदियोंपर जङ्गली खजूरके बाग हैं।

गुण्डलमऊ—युक्तप्रदेशके सीतापुर जिलेका एक परगना। इसके उत्तर मछरेता तथा करोन परगना, पूर्व सरायन नदी और दक्षिण एवं पश्चिम गोमती नदी है। पहले यहां कछेरा लोग रहते थे। बाछल क्षत्रियोंके तीन सन्तानोंने उन्हें भगा दिया। उनमें एकका नाम गौंडसिंह था। उन्होंने ही अपने नाम पर यह परगना स्थापन किया। इसमें कोई ६७ गांव हैं। उसमें आज भी ५३ गांवों पर बाछल अधिकार रखते हैं। जगह पांडो और ऊंची है। अनाज वगैरह अच्छा नहीं होता। क्षेत्रफल ६५ वर्गमील है।

गुण्डलमाड—मन्द्राज प्रान्तके कड़ापा जिलेका एक गांव। यह सिद्धवटसे १४ मील दक्षिण पश्चिम अवस्थित है। यहा मुक्तिकोटीश्वर स्वामीका एक प्राचीन मन्दिर दृष्ट होता है। प्रवादानुसार महर्षि नारदने वह मूर्ति स्थापन की थी। मन्दिरके पास ही एक अस्पष्ट शिलाफलक भी है।

गुण्डलूरु—मन्द्राज प्रान्तके कड़ापा जिलेमें लुम्बमपेट तालुकका गांव। यह लुम्बमपेटकी सदर अदालतसे ५ मील उत्तर पश्चिम पड़ता है। स्थानीय प्राचीन विष्णुमन्दिरके पास दो पत्थरों पर ग्रन्थ और तेलगु अक्षरोंमें खोदित शिलालिपि हैं। इसके दक्षिण अगस्त्येश्वरके मन्दिरमें और भी कई एक ग्रन्थशिलालिपियां हैं। सन्निकटस्थ वीरभद्रस्वामीके मन्दिरमें कितने ही ग्रन्थ और तेलगु

भाषाके शिलाफलक देख पड़ते हैं। उनमें एक १४७७ और दूसरा १४८० शकको उत्कीर्ण है। ग्रामवासी बतलाते कि ४१५ वर्षके अन्तर मन्दिरके लिङ्गको गङ्गा नह लाति, वह जल निर्दिष्ट दिवसको मन्दिरकी छतसे भूमि पर गिरता है।

गुगडलूरु—मन्द्राज प्रान्तके कडापा जिलेमें बायलपाड़ तालुकका एक गांव। बायलपाडकी कचहरीसे यह १३ मील उत्तर-पूर्व पड़ता है। यहां एक शिलालिपि है, वह १५२१ शकको विजयनगरराज वेङ्कटपतिदेवके राजत्व समय पेन्नकोंडाके सरदार कर्तृक प्रदत्त हुई थी। गुगडलूरुका विष्णुमन्दिर अति प्राचीन है।

गुगड़वा—युक्त प्रदेशके हरदोई जिलेका एक परगना। इसके उत्तर तथा पूर्व गोमती नदी एवं दलिहाद और पश्चिमको संडीला तथा कल्याणमल है। गोमती नदीका तीरवर्ती स्थान बालुकामय है। पहाड़ पर बीच बीच बड़ी खाड़ियां हैं। एक प्राचीन नदी खातमें रेत पड़नेसे अब यह जगह बड़े झील जैसी हो गयी है। कितनी ही छोटी नदियां और पहाड़ी झरने इस परगनेके बीच बहते हैं। खेतीबारीका खूब सुभीता है। क्षेत्रफल १४० वर्गमील है। ११७ गांव बसे हुए हैं।

गुगडस (सं० पु०) सर्पजाति भेद, सांपकी एक जाति।

गुगडा (सं० स्त्री०) काशतृण।

गुगडाफली (सं० स्त्री०) देवदाली, एक प्रकारका पेड़।

गुगडार—मन्द्राज प्रान्तके मदुरा जिलेकी एक नदी। यह अक्षा० ९०° ३६' उ० और देशा० ७८° १४' पू०में अन्दिपत्ति तथा वर्षनाड़ पर्वतोंसे प्रवाहित क्षुद्र क्षुद्र जल स्रोतोंसे मिल करके बनती और दक्षिण-पूर्वको प्राय: १०० मील चल करके किलराई नामक स्थान पर समुद्रमें गिरती है।

गुगडार—मध्य प्रदेशस्थ रायपुर जिलेके सरदारको एक डिही। इसके बीच ५२ गांव हैं। भूमिका परिमाण ८० वर्गमील है। जमीन उपजाऊ है। वर्तमान सरदार कोई ३०० वर्षसे इस स्थानको उपभोग करते आते हैं। गुगडारडिही गांव अक्षा० २०° ५६' ३०" उ० और देशा० ८१° २०' ३" पू०में अवस्थित है।

गुगडारोचनिका (सं० स्त्री०) गुगडा सती रोचना इव। वृक्षविशेष। इसका पर्याय-काम्पिल्लक और रक्ताङ्ग है।

गुगडारोचनी (सं० स्त्री०) गुगडारोचनिका, एक प्रकारका सुगन्ध द्रव्य।

गुगडाला (सं० स्त्री०) गुगडं चूर्णं आलाति आ ला-प-टाप्। १ एक तरहकी जलज लता या झाड़ी। इसका नामान्तर जलोद्भूता, गुच्छपत्रा और जलाशया हैं। इसका गुण कटु, तिक्त, उष्ण, शोथ और व्रणनाशक है। २ गुगडासिनीतृण, गांडर घास।

गुगडासिनी (सं० स्त्री०) गुगडासनो आस्ते आस-णिनि। तृणविशेष, एक प्रकारकी घास। इसका पर्याय-गुगडाला, गुड़ाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, यवासा, प्रगुला और विष्टग है। इसका गुण कटु, पित्त, दाह, शोथ और व्रणदोषनाशक है।

गुगिडक (सं० पु०) गुगडोऽस्त्यस्य गुगड-ठन्। चूर्णीकृत तण्डुलादि, चावलका चूर्ण।

गुगिडचा (सं० स्त्री०) पुरुषोत्तम क्षेत्रका एक मन्दिर। स्कन्दपुराणके उत्कलखण्डमें लिखा है—

जगन्नाथ देव विन्दुसरोवरके तीरवर्ती गुगिडचा मन्दिरमें रथारोहणके बाद ७ दिन तक रहे। पूर्व कालमें जगन्नाथ देवने राजाके प्रति सन्तुष्ट हो यह वर दिया था—हम सात दिन तक स्थिर भावसे गुगिडचा मन्दिरमें वास करेंगे। पृथिवीके समस्त तीर्थ हमारे साथ वहां उपस्थित रहेंगे। जो मानव भक्तिभावसे विन्दु तीर्थमें स्नान करके सप्ताह पर्यन्त गुगिडचा मन्दिरमें बलराम तथा सुभद्राके साथ हमारा दर्शन करेगा वह हमारा सायुज्य लाभ करेगा। इस मन्दिरके दर्शनसे दर्शकोंका सब पाप विनष्ट होता है। सब देवता इसकी पूजा करते है। यह मन्दिर ब्रह्मतेजको अवगुण्ठन जैसा करनेसे ही गुगिडचा कहलाता है।

इसका विशेष प्रमाण नहीं मिलता—वह मन्दिर कितने दिनोंका पुराना है। उड़ीसाके लोग कहते कि महाराज इन्द्रद्युम्नकी एक महिषीका नाम गुगिडचा था, उन्होंने यह मन्दिर बनाया और उन्हींके नाम पर यह गुगिडचा कहलाया। महात्मा चैतन्यदेवने अपने शिष्यों और भक्तोंके साथ उस मन्दिरमें मार्जना की थी। आजकल भी रथयात्राकी बड़ी धूमधामसे जगन्नाथदेव गुगिडचा मन्दिरमें जा करके रहते हैं।

गुण्डित (सं० स्त्री०) गुडि वेष्टने कर्मणि क्त। १ धूलि धूसरित, धूलसे भरा हुआ। २ चूर्णीकृत, चूर्ण किया हुआ।

गुण्डियाली—बम्बई प्रान्तके काठियावाड़ एजेन्सीका एक छोटा राज्य। इसकी आबादी कोई १४६५ और माल गुजारी १०८२५) रु० है। यह राज्य अङ्गरेजोंको १४०८) रु० वार्षिक कर देता है।

गुण्डियाली—बम्बई प्रान्तके कच्छ जिलेका एक गांव। यह मांडवीके निकट सागर तट पर बसा हुआ है। जनसंख्या कोई ४०४६ होगी। एक ऊंचा भूमि पर वट वृक्षोंसे घिरा हुआ रावलपीरका मन्दिर है। १८१७ ई०-को यह सेठ सुन्दरजी तथा शेठा शिवजी कर्तृक पुनर्वार निर्मित हुआ। कहते हैं, कि ई० १४ वीं शताब्दीको रावलने अपनी माताका हथेलीके फोडेसे जन्म लिया था, फिर जखाऊमें उन्होंने धर्मनाथके भक्तोंको सतानेवाले मुसलमान सहार करके सुकीर्ति अर्जन की। वर्षमें एक बार हिन्दू और मुसलमान वहां जाते और पत्थरके घोड़ों को, जो मन्दिरको चारों ओर बने हुए हैं, फूलोंको मालाएं चढ़ा आते हैं।

गुण्डीकोलियाक—बम्बई प्रान्तको काठियावाड़ एजेन्सी का ग्रामद्वय, यह दोनों गांव आमने सामने मालेश्वरी नदीके उत्तर तथा दक्षिण तट पर भावनगरसे ६२ मील दक्षिणपूर्व अवस्थित हैं। इनमें गुण्डी समधिक प्राचीन है। पहले वहां नागर ब्राह्मणोंका उपनिवेश था। आईन ई अकबरीमें इसको बन्दर और मीरात अहमदीमें बारा लिखा है। जनसंख्या प्राय १०३० है। गुण्डी खाडी की मुहाने पर एक प्रस्तरमय नीलकण्ठकी शिवमूर्ति है। कहते हैं कि उसको पाण्डवने स्थापन किया था।

गुण्ड भट्ट—तर्कभाषाके एक टीकाकार।

गुण्य (स० त्रि०) गुण कर्मणि यत्। १ गुणनीय, वह अङ्क जिसको गुणा करना हो। २ प्रशस्त गुणयुक्त, जिसमें अच्छे अच्छे गुण हों।

"गुण्य। गुणक।" (हि० कौ०)

गुण्याङ्क (स० पु०) वह अङ्क जो गुणा किया जाय।

गुतला (हि० पु०) एक प्रकारकी मछली, जो बगु भी कहलाती है।

गुत्तल (गुट्टल)—बम्बईके धारवाड जिलेका एक कसबा। यह कड़जगीसे ६ कोस पूर्वको पड़ता है। १८६२ ई० तक वहां सदर अदालत रही। सप्ताहमें प्रति सोमवारको बाजार लगता है। गांवमें सङ्गमूसासे बना हुआ चूड़शेखरका मन्दिर है। उसमें २४ और ८६ पङ्क्तियोंके दो लिखे हुए शिलाफलक लगे हैं। तालाबमें नहर खोद करके पानी लाया गया है। बांधके मुहाने पर पत्थरको मेहराब बनी है।

११०२ शकको ध्रुव संवत्सरको उत्कीर्ण जो कलचुरि शिलालिपि है, उसमें गुट्टलोलल नगरका नाम मिलता है। इस फलकमें लिखा है कि यह कलचुरिराज यादवमल्लके अधीन (११७६-११८३ ई०) गुट्ट मरदार उस नगरमें राजत्व करते थे। यह गुट्ट भोलल नगर वर्तमान गुट्टल जैसा समझ पड़ता है। फिर १२३७ ई०को देवगिरि यादववंशीय २य सिंहन प्रदत्त प्रशस्ति पढ़नेसे मालूम करते कि गुट्टनायक जगदेवको अनुमति-से गुट्टल नगरके निकट वह शिलालिपि उत्कीर्ण हुई।

गुत्ता (हि० पु०) १ लगान पर जमीन देनेका व्यवहार। २ लगान।

गुत्थ (सं० पु०) गुत्स पृषोदरादिवत् साधु। १ ज्वार नाम का धान्यविशेष। २ गुड़ूची, गुरुच।

गुत्थ (हि० पु०) १ हुक्केके नैचोंको बुनावट। २ चटाई की बुनावटका नैचा।

गुत्थक (सं० स्त्री०) गुत्थेन कायति गुत्थ कै-क, पृषोदरादि त्वात् साधु। ग्रन्थिपर्ण, गठिवन।

गुत्थमगुत्था (हि० पु०) १ उलझाव, फसाव। २ भिड़न्त, लड़ाई।

गुत्थी (हि० स्त्री०) कई वस्तुओंके एकमें गुथनेसे उत्पन्न गांठ, गिरह।

गुत्स (सं० पु०) गुध्यते तृणादिभि परिवेष्टते गुध स। १ ग्रन्थिपर्ण तृण, गठिवन। २ स्तवक, घासका गुच्छा। ३ द्वात्रिंशद्यष्टिकाहार। गुच्छ देखो।

गुत्सक (सं० पु०) गुत्स स्वार्थे कन्। गुच्छ देखो।

गुत्सकपुष्प (सं० पु०) गुत्सक स्तवकीभूत पुष्प यस्य, बहुव्री०। सप्तच्छदवृक्ष, एक तरहका पेड़।

गुत्सपुष्प (सं० पु०) गुत्सकपुष्प देखो।

गुत्साद्धं (सं० पु०) गुत्सस्य अर्द्धः, ६-तत्। चौबीशनर हार।

गुथना (हिं० क्रि०) १ कई चीजोंका तागेके द्वारा एकमें करना। २ भद्दी सिलाई होना टाँकना। ३ एकका दूसरेके साथ लड़नेके लिये भिड़ जाना।

गुथनी—विहारमें सारण जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° ८' ४५" उ० और देशा० ८४° ५' पू०के मध्य छोटी गण्डक नदीके पूर्व उपकूल पर और छपरासे २१ कोस उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहां चीनी स्वच्छ करनेके चार कल हैं। इस स्थानसे दूर दूर देशमें चीनीकी रफतनी होती है।

गुथुवाँ (हिं० वि०) जो गुथकर बनाया गया हो।

गुथवाना (हिं० क्रि०) दूसरेके द्वारा गुथनका काम कराना।

गुद (सं० क्ली०) गोदते खेलति चलतीति यावत् अपान वायुनेन गुद-क। १ मलत्यागद्वार, जिस रास्तेसे मल बाहर निकलता है। इसका पर्याय—अपान, पायु, गुह्य और गुदवर्त्म है। सुश्रुतके मतसे गुह्यदेश पांच अङ्गुल आयतका है। इसमें कई एक स्थूल अन्त्र अर्थात् मलाशयसे मलद्वार पर्यन्त विस्तृत मल बाहर निकलनेकी प्रणालियां हैं। उन समस्त प्रणालियों वा स्थूल अन्त्रयुक्त पञ्चाङ्गुल परिमित स्थानको गुद कहते हैं। गुह्यदेशसे अर्द्धाङ्गुलसे कुछ अधिकको दूरी पर प्रवाहणी, विसर्जनी और सम्वरणी नामकी तीन वली हैं। वे तीनों वलियाँ चार अङ्गुल आयतके हैं। हाथीके तालुके जैसे इसका वर्ण है। गुह्यदेशजात रोएंके अन्तर्भागसे आधा यव परिमित स्थानको गुदौष्ठ कहते हैं। अन्त्र देखो। (पु०) २ वलयाकार गुदस्थान। ३ गुह्यदेशके निकटमें रहनेसे साधारणतः योनि शब्दके अर्थपर गुद शब्द व्यवहृत होता है।

गुदकार (हिं० वि०) गूदेदार, जिसमें गूदा हो। २ गुदगुदा, मोटा।

गुदकील (सं० पु०) गुदे कील इव। अर्शरोग, बवासीर।

गुदकीलक (सं० पु०) गुदकील एव स्वार्थे कन्। अर्शरोग, बवासीर।

गुदकीलहन् (सं० त्रि०) गुदकीलं हन्ति हन्-क्विप्। गुदकीलनाशक, जिससे अर्शरोग नाश हो, जिससे बवासीर अच्छा हो।

गुदकुट्टक (सं० पु०) शिशुका गुदज ताम्रवर्ण व्रणविशेष, बच्चेकी पाखानेकी जगह होनेवाला एक सुर्ख फोड़ा। यह मलके उपलेप वा स्वेदसे रक्त और कफके कारण गुदमें उत्पन्न हो जाता है, इसका रङ्ग लाल है। खुजली बहुत लगती है। कोई उसको मातृकाटोप और कोई पूतन बतलाता है। (वाग्भट)

गुदगुदा (हिं० वि०) १ गूदेदार, मांसयुक्त। २ नरम, जिसकी सतह दबानेसे दब जाय।

गुदगुदाना (हिं० क्रि०) १ छोटे छोटे बच्चेको प्रसन्न करनेके लिये काँख या ठेहुनेमें हाथ टेकर शब्द करना। २ मनबहलाव। ३ चित्तको चलायमान करना।

गुदगुदाहट (हिं०) गुदगुदी देखो।

गुदगुदी (हिं० स्त्री०) काँख और पेट आदि मांसल स्थानों पर अङ्गुली द्वारा सुरसुराहट वा मीठी खुजली।

गुदगुदो—बम्बईके धारवाड़ जिलेका एक क्षुद्र ग्राम। यह हांगलसे ५ मील उत्तरपश्चिम पड़ता है। आबादी कोई २३७ है। यहां काल्लपका एक मन्दिर है उसमें १०३८ और १०७२ ई०के दो शिलालेख लगे हैं।

गुदग्रह (सं० पु०) गुदं तद्व्यापारं गृह्णाति ग्रह-अच ६-तत्। १ उदावर्त रोग। कोष्ठबद्धका रोग। उदावर्त देखो। २ पायुवेदना। मलद्वारमें दर्द।

गुदजघ्न (सं० पु०) कटुशूरण जङ्गली जमीकन्द।

गुदजारि (सं० पु०) देवताड़वृक्ष, राम बांस।

गुदड़—१ गुदड़ी, संन्यासियोंके पहननेका वस्त्र। २ सम्प्रदाय विशेष, ब्रह्मगिरि इस सम्प्रदायके प्रवर्त्तक रहे। लोगोंके कथनानुसार गोरक्षनाथने ब्रह्मगिरिको मन्त्र न देकर कर्णकुण्डलादि प्रदान किये थे। ब्रह्मगिरिने भी गुदड़ प्रभृतिको इसे व्यवहारके लिये दिया। ये सदा गेरुआ वस्त्र परिधान करते हैं, इनके एक कानमें कुण्डल और दूसरे कानमें औधड़के पदचिन्हित ताम्बेको गद्दी रहती हैं। ये अपने कुण्डलोंको खेचरीमुद्रा कहा करते है। ये हाथमें धूपदानी लेकर और उसमें धूप जलाते हुवे इधर उधर भिक्षाके लिये बाहर निकलते हैं। किसी संन्यासीकी मृत्यु होने पर वे उसकी अन्त्येष्टिक्रिया करते हैं।

गुदड़िया (हि० पु०) गुदड़ी पहनने वा ओढ़नेवाला।
गुदड़ी (हि० पु०) फटे हुए वस्त्रका बनाहुआ ओढ़ना या बिछावन।
गुदड़ीबाजार (हि० पु०) जीर्ण पदार्थोंके बिकनेका बाजार।
गुदनहारी (हि०) गोदनहारी देखो।
गुदना (हि०) गोदना देखो।
गुदनी (हि०) गोदनी देखो।
गुदपरिणद (सं० पु०) ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।
गुदपाक (सं० पु०) गदस्य पाक, ६ तत्। गुदस्थानका पाकविशेष, पाखानेकी जगहका पकाव। अतिशय अतीसार होनेसे वह रोग उठता है। इससे पीव बहा करता है।

सुश्रुतके मतमें बालककी गुदपाक रोग उपस्थित होनेसे पित्तघ्न क्रिया और पान तथा आलेपनमें रसाञ्जन व्यवहार करना चाहिये। (शारीर १० अध्याय) कुपथ्य सेवनकारी व्यक्तिको पित्तसे गुदपाक रोग निकलने पर पित्त नाशक द्रव्य सेवन और उसके क्षायसे अनुवासन विधेय है। इस रोगमें वायुका योग रहनेसे दधिमण्ड, मद्य तथा विल्वके साथ तैल पाक करके पिचकारी लगाते हैं। क्षीरणी मूलके साथ दुग्ध पाक करके धोनेसे भी उपकार होता है। गुदपाकमें बहुत खून गिरने या वायु न चलनेसे पिच्छिल वस्तिप्रयोग करना चाहिये। (सुश्रुत उत्तर० ४० अ०)
गुदभ्रंश (सं० पु०) गुदस्य गुदमांसस्य भ्रंशः, ६ तत्। रोगविशेष, एक बीमारी। रूक्ष तथा दुर्बल व्यक्तिके प्रवाहन एवं अतीसार द्वारा मलद्वारका जो मांस बाहर निकल आता, गुदभ्रंश कहलाता है। (सुश्रुत निदान १३ अ)

इस रोगकी चिकित्सा करनेमें पहले बहिर्गत नाड़ी तथा मांस घृताक्त तथा स्विन्न अथवा स्वेद प्रयोग करके गुदमध्य पहुंचा देना चाहिये। फिर मलद्वार चर्म द्वारा बांधा जाता है। चमड़े का जो अंश मलद्वारके छिद्रको आवरण करता, उसमें एक छेद रहता है। वायु निःसरणके लिए वार वार स्वेद प्रयोग करना उचित है।

दुग्ध, महापञ्चमूल, अत्यम्ल मूषिकका देह चार वातघ्न औषध मत्रके साथ तैल पका करके धोने और लगानेमें व्यवहृत होता है। इससे कष्टसाध्य गुदभ्रंश रोग भी आरोग्य हो जाता है। (सुश्रुत चिकित्सित २१ अ०)

अतीसार रोगमें गुदभ्रंश उभरनेसे मधुर एवं अम्ल योगमें तैल वा घृत पाक करके लगाते हैं।

(सुश्रुत उत्तर ४० अ०)
गुदमा (हि० पु०) एक तरहका नर्म और मोटा कम्बल। यह ठण्ढे पहाड़ी देशोंमें प्रस्तुत किया जाता है।
गुदरना (फा० क्रि०) १ त्याग करना, अलग रहना। २ निवेदन करना।
गुदरिया (हि०) गुदड़ी देखो।
गुदरी (हि०) गुदड़ी देखो।
गुदरैन (हि० स्त्री०) १ पढ़ा हुआ पाठ भली भांति सुनाना। २ परीक्षा, इम्तहान।
गुदरोग (सं० पु०) गुदस्य रोग, ६ तत्। गुदस्थानमें उत्पन्न एक प्रकार रोग, पाखानेकी जगह होनेवाली कोई बीमारी। शातातपके मतानुसार देवालय अथवा जलमें पेशाब करनेके पापसे जन्मान्तरको गुदरोग उठता है। यह उसी पापका चिह्नस्वरूप है। एक मास पर्यन्त देवार्चन तथा गोदान करके एक प्राजापत्य यज्ञ करनेसे उस रोगका प्रतीकार होता है।

भगन्दर और अर्श आदि गुदजात रोगोंका अन्यरूप कारण तथा प्रायश्चित्त है। इससे मालूम पड़ता है शातातपने जो गुदरोग लिखा, वह भगन्दर आदि रोगोंसे अलग है। परन्तु प्रचलित भिषग्शास्त्रमें गुदरोग नामका कोई पृथक् रोग लक्षित नहीं होता।
गुदवर्त्म (सं० क्ली०) गुदरूप वर्त्म। मलद्वार, जिस रास्तेसे मल निकलता है।
गुदस्तम्भ (सं० पु०) गुदस्य तद्व्यापारस्य मलनिःसारणस्य स्तम्भ, ६ तत्। मलनिःसारण प्रतिरोधक रोगविशेष। वह रोग जिसमें मल कठिनतासे निकले।

शातातपका मत है कि अन्ययोनिमें गमन करनेसे गुदस्तम्भ रोग उत्पन्न होता है। एक मास पर्यन्त सहस्र कमल द्वारा शिवजीको स्नान करानेसे इसका प्रतिकार होता है।
गुदा (सं० स्त्री०) गुद विकल्पे टाप्। १ नाड़ीविशेष, शरीरकी समस्त नाड़ियां जो समान वायु द्वारा परस्पर धातु स्थानमें ले जाती हैं उन्हींको गुदा कहते हैं।

२ मलद्वार। ३ पक्षीविशेष, एक तरहकी चोड़िया। (Loxia hypoxantha)

गुदाङ्कुर (सं० पु०) गुदे अङ्कुर इव। अर्शरोग, बवासीर।

गुदाज (फा० वि०) गूदेदार, मांससे परिपूर्ण।

गुदाना (हिं० क्रि०) गोदनेकी क्रिया कराना।

गुदाम—जहां पर एक तरहके अनेक द्रव्य रखे जाते हैं, गोला। 'गुदाम' शब्दकी उत्पत्तिमें कुछ मतभेद देखा जाता है। किसीके मतसे 'Godown' शब्दका अपभ्रंश और किसीके मतमें मलयभाषा 'गदोङ्ग' शब्दसे 'गुदाम' निकला है। जिस घरमें माल रखा जाता है, तामिल भाषामें उस घरको 'किदङ्ग' और तेलङ्ग भाषामें 'गिदङ्गि' कहते हैं। सिंहलमें भी उपरोक्त शब्द 'गुदाम' नामसे व्यवहृत होता है। इसीसे मालूम होता है कि तामिल और तैलङ्गसे ही अपभ्रंश गुदाम शब्द निकला है।

गुदामय (सं० पु०) अर्श रोग।

गुदामयहर (सं० पु०) कटु,शूरण, जङ्गली जमीकन्द।

गुदार (हिं० वि०) गूदेदार, जिसमें अधिक गूदा हो।

गुदा (फा० वि०) नदी पार होनेकी घाट।

गुदारा (फा० पु०) नौका द्वारा नदी पार होनेकी क्रिया, उतारा।

गुदियात्तम—मन्द्राजके उत्तर अरकाट जिलेका तालुक। यह अक्षा० १२° ४२' तथा १३° ५' उ० और देशा० ७८° ३५' एवं ७८° १६' पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ४४७ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १८५६६५ है। इसमें एक शहर और १८३ गांव आबाद हैं। मालगुजारी और सेस कोई ३२७५०० है। पालार नदीके उत्तर तटको इसकी भूमि फैली हुई है। पश्चिम विभागमें पहाड़ है। सुखे मट्टीमें बालू मिली है।

गुदियात्तम—मन्द्राजके उत्तर अरकाट जिलेमें गुदियात्तम तालुकका सदर। यह अक्षा० १२° ५८' उ० और देशा० ७८° ५३' पू०में रेलवे ष्टेशन तथा पालार नदीसे कोई २ मील उत्तर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः २१३३५ है। १८८५ ई०को यहां मुनिसपालिटी हुई। सड़कें अच्छी हैं। प्रधान व्यवसाय कपड़ेकी बुनाई है। गुड़, चमडा, इमली, तम्बाकू और घी खूब बिकता है। प्रत्येक मङ्गलवार मवेशियोंके बाजारका दिन है।

गुदियारा (फा०) गुदकारा देखो।

गुदी (सं० स्त्री०) गुद-ङीष्। वह स्थान जहां नौकादि मरम्मत की जाती हैं।

गुदोगर—बंबई प्रान्तके कनाड़ा जिलेकी एक जाति। इनकी संख्या प्रायः ३८० है। यह सिरसी, सिद्दापुर, होनावाड़ और कुमतामें कुछ कुछ मिलते हैं। दूसरा नाम चितार है। प्रत्येक नामके पीछे 'सेठी' उपाधि लगता है। गोवासे पोतगीज राज्य स्थापित होने पर यह कनाड़े आये। उनके क्षत्रिय होनेका दावा किया जाता है। किन्तु ब्राह्मण वह बात नहीं मानते। इनकी घरू बोली कनाड़ी है। परन्तु समुद्र तट पर रहनेवाले कोङ्कणी भी बोलते हैं। पुरुष शिल्पी होते भी चञ्चल, अमितव्ययी, और आलसी हैं, अपने काम पर ध्यान नहीं देते। यहां चन्दन, हाथी दाँत और आबनूस पर अच्छी नक्काशी की जाती है। प्रधान उपजीविका नक्काशी और रङ्गरेजी है। यह हाविग ब्राह्मणोंको छोड़ करके दूसरेका बनाया भोजन ग्रहण नहीं करते। महिसुरस्थ शृङ्गेरिमठके आचार्य इनके गुरु हैं। अपने कुलपुरोहित हाविग ब्राह्मणोंका यह बड़ा सम्मान करते हैं। कन्याओंका विवाह ६ और ११ वर्षके बीच होता है। बालकोंको कनाड़ी भाषा सिखलायी जाती है।

गुदुरी (हिं० स्त्री०) १ मटरकी फली। २ एक तरहका कीड़ा जो प्रायः मटर और चनेकी फसलको नष्ट कर देता है।

गुदौष्ठ (सं० पु०) गुदस्य ओष्ठ इव। १ गुदाके अवयव विशेष। २ मलद्वारका मुख।

गुद्दा (हिं०) १ गूदा देखो। २ वृक्षकी मोटी डाल।

गुद्दी (हिं० पु०) १ किसी फलके मध्यका गूदा, गिरी। २ सिरका पिछला भाग, ल्यौड़ी। ३ हथेलीका मांस।

गुधित (सं० वि०) परिवेष्टित, घिरा हुआ।

गुधेर (सं० त्रि०) गुदयति वेष्टयति रक्षयति इत्यर्थः। गुध-एरक्, रक्षक, बचानेवाला।

गुन (हिं० पु०) गुण देखो।

गुनगुना (हिं० वि०) नाकसे बोलनेवाला।

गुनगुनाना (हिं० क्रि०) १ गुन-गुन शब्द करना। २ अस्पष्ट स्वरमें गाना। ३ नाकसे बोलना।

गुनतकल—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेमें गूतो तालुकका गांव। यह अक्षा० १५ ८´ उ० और देशा० ७२ २३ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ६०५८ है। यहां रेलवेका बड़ा जङ्क्शन है। दक्षिण पश्चिमकी उच्च भूमिपर प्राचीन कालके यन्त्रादि आविष्कृत हुए हैं।

गुनवन्त (स ० वि०) गुणी। जिसमें कोई गुण हो।

गुनहगार (फा० वि०) १ पापी। २ दोषी, अपराधी।

गुनहगारी (फा० स्त्री०) १ पाप। २ दोष, अपराध।

गुनहो (फा० पु०) अपराधी गुनहगार।

गुना (हि० पु०) एक प्रत्यय, जो सिर्फ संख्यावाचक शब्दोंके आखीरमें आता है। यथा दुगुना, चौगुना, दस गुना और बसोगुना। २ गुणा या गुणन्।

गुना—मध्य भारतके ग्वालियर राज्यमें ईसागढ़ जिलेका शहर और अंगरेजी छावनी। यह अक्षा० २४ ३८´ उ० और देशा० ७७ १८ पू०में आगरा बम्बई सड़क और ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवेकी बीना बारा शाखापर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ११४५२ है। पहले वह एक क्षुद्रग्राम था, परन्तु १८४४ ई०की छावनी पड़नेसे बढ़ गया। शहरमें खैराती शफा खाना, रियासती डाकघर, सराय और स्कूल है। छावनी नगरसे कोई एक मील पूर्व पड़ती है।

गुनाह (फा० पु०) दोष, पाप।

गुनाहगार (फा० वि०) १ अनिष्टकारी, बुराई करनेवाला। (पु०) २ दुष्ट।

गुनाही (फा० पु०) १ पापकरनेवाला। २ दोषी, अपराध करनेवाला।

गुनिया (हि० पु०) गुणवान, वह मनुष्य जिसमें गुण हो। (स्त्री०) २ राजों, बढ़इयों प्रभृति कारिगरोंके कोनेकी सीध मापनेका यन्त्र। (पु०) ३ नौकाकी गुण खींचने वाला मल्लाह।

गुनी (हि० वि०) गुणी देखो।

गुनी—सिन्धु प्रान्तके हैदराबाद जिलेका तालुक। यह अक्षा० २४ ३०´ तथा २५ १०´ उ० और देशा० ६८ २०´ एवं ६८ ५०´ पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८८६ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८१५०६ है। इसमें एक शहर और १५८ गांव आबाद हैं। मालगुजारी और सेस २। लाखसे ज्यादा पड़ती है। इसवार मैदानमें सिर्फ दो छोटे छोटे पहाड़ हैं।

गुनुपुर—मन्द्राज प्रान्तके विजगपटम जिलेकी एजेन्सी तहसील। यह गञ्जाम सीमा पर पड़ती है। क्षेत्रफल ६०० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ११२६८२ है। इस में ११४८ गांव आबाद हैं।

गुनोबर (फा० पु०) एक तरहका देवदार या सनोबर। इसका पेड़ उत्तर पश्चिम हिमालय पर्वत पर ६००० से १०००० फुटकी ऊंचाई पर होता है। इसके काष्ठ बहुत मजबूत और कड़े होते हैं। चिलगोजा नामक मेवा इसी वृक्षका फल है।

गुन्द्रफल (स० पु०) नारिकेलवृक्ष।

गुन्दगड़—हिमालयकी पश्चिम सीमा पर अवस्थित एक पर्वत। अङ्गरेजोंके आनेके पहले इस पर्वत पर लुटेरेका दल रहता था। इस पर्वतके उत्तर हरिपुरके सम्मुख भागमें सुरिग्राम है। विद्रोहके समय मेजर एवट इसी पर्वत पर आ छिपे थे।

गुन्द्रगुच्छक (स० पु०) गुच्छकरञ्ज।

गुन्दल (स० पु०) गुन् इति शब्देन दल्यतेऽसौ दल णिच् कर्मणि अच। मर्दलध्वनि, मृदङ्गका शब्द।

गुन्द्राल (स ० पु०) एक तरहका पक्षी, तीतर, दुराज।

गुन्दिकोटा—दाक्षिणात्यमें एक नगर और दुर्ग। यह दुर्ग कड़ापाके मध्यस्थलमें अक्षा० १४´ ५१´ उ० और देशा० ७८´ २२´ पू०के मध्य पर्वतशृङ्गके ऊपर अवस्थित है। इसके दक्षिणकी ओर पर्वत फोड़ कर पेन्ना नदी कड़ापा जिला हो कर प्रवाहित है। १८०० ई०को निजामने यह जिला अङ्गरेजोंको दिया था।

गुन्द्र (स ० पु०) गुद्रि कर्मणि अच्। १ एक तरहकी घास। २ मूलयुक्त वृहत् तृण, जड़वाली बड़ी बड़ी घास। इसका गुण कषाय मधुररस, शीतवीर्य, पित्तघ्न, रक्तनाशक, मूत्रकृच्छ्र, स्तन्य, मूत्र और रजशोधक है। (भावप्रकाश पू १म भाग)

गुन्द्रमूला (स ० स्त्री०) गुन्द्रस्य मूल मिव मूल यस्या बहुव्री०। १ एरका तृण, एक तरहकी घास। (भाव प्रकाश पूर्व० १ भाग) २ मुस्तकतृण।

गुन्द्रा (स ० स्त्री०) गुन्द्र तमाहाय्यमस्त्यस्य मूले गुन्द्र

अच्‌टाप्‌। १ एरका तृण। २ भद्रमुस्तक, एक तरहकी सुगन्धित घास। ३ प्रियङ्गु वृक्ष, यह औषधके काममें लाया जाता है। ४ गवेधुका, एक तरहको घास। ५ देवधान्य। ६ रोचनिका। ७ गुडुची। ८ गिरीपद्मच्छ। ९ दर्भ कुश।

गुन्द्राल (सं० पु०) गुन्द्रं मिथ्यावचनं आलाति आ-ला-क। एक तरहका पक्षी, चकोर।

गुन्ना (गन्ना) बेगम, एक शाहजादी। यह नवाब अली कुली खाँकी लड़की थीं। पहले उनकी शादी नवाब सफदर जङ्गके बेटे शुजा उद्‌-दौलाके साथ हुई थी, परन्तु पीछेको वजीर इमदाद-उल्‌-मुल्क गाजी-उद्‌-दीनको व्याही गयीं। धौलपुरके पास नूराबाद बागमें उनकी कब्र है। वह अपने काम और जहनके लिये मशहूर हैं। कविता बहुत उत्साहपूर्ण होती थी। उन्होंने हिन्दी भाषामें गाने बनाये, आज भी गाये और अच्छे समझे जाते हैं। १७७५ ई०को उनका मृत्यु हुआ।

गुन्नी (हिं० स्त्री०) एक तरहका कोड़ा। इसका व्यवहार ब्रजमण्डलमें होता है। होलीके अवसर पर स्त्री पुरुष इसी कोडेसे एक दूसरेको मारते हैं।

गुन्नौर—युक्तप्रदेशके बदाऊं जिलेकी उत्तरपश्चिम तहसील। यह अक्षा० २८° ६' तथा २८° २९' उ० और देशा० ७८° १६' एवं ७८° ३९' पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ३७० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय: १६२२८१ है। एक नगर और ३१३ ग्राम प्रतिष्ठित हैं। मालगुजारी कोई २१६०००) और शेष २६०००) रु० है। जङ्गल बहुत पड़ता है।

गुन्नौर—युक्तप्रदेशके बदाऊं जिलेकी गुन्नौर तहसीलका सदर। यह अक्षा० २८° १४' उ० और देशा० ७८° २७' पू०में अवध रुहेलखंड रेलवेके बबराल ष्टेशनसे ४ मील दक्षिण पड़ता है। जनसंख्या प्राय: ६६४४ है। अकबरको अमलदारीसे गुन्नौर किसी महाल या परगनेका सदर था। मट्टीके झोपड़े बहुत, परन्तु पक्के मकान थोड़े हैं। १८५६ ई०की २० वीं धाराके अनुसार शहरका इन्तजाम होता है। बबराला ष्टेशनको गुन्नौर हो करके बहुत माल जाता है।

गप्‌ (सं० क्रि०) १ बचाना, रक्षाकरना। (पु०) २ न्यायकरनेवाला, रक्षाकरनेवाला, विष्णु।

गुपचुप (हिं० स्त्री०) १ एक तरहकी मिठाई जो मुखमें देनेसे ही गल जाती है। इस तरहकी मिठाई खोवे और मैदे या सिंघाड़ेके आटेको घीमें पका कर और शीरेमें डाल कर बनाई जाती है। २ लड़कोंका एक खेल। इसमें एक लड़का अपना गाल फुलाता है और दूसरा लड़का उस पर घूंसा मारता है। ३ एक प्रकारका खिलौना।

गुपाल (हिं०) गोपाल देखो।

गुपिल (सं० पु०) गोपायति गुप-इलच्‌-किच्च। राजा।

गुप्त (सं० त्रि०) गुप कर्मणि क्त। १ रक्षित, जिसकी रक्षा की गई हो। इसका पर्याय—त्रात, त्राण, रक्षित, अवित और गोपायित है। २ छिपा हुआ। ३ गूढ़, जिसके जाननेमें कठिनता हो। (पु०) ४ मन्नत। ५ वैश्योंकी उपाधि। ६ परमेश्वर। ७ भारतवर्षके विख्यात प्राचीन राजवंश। गुप्तराजवंश देखो।

गुप्तक (सं० पु०) १ राजा जयद्रथके एक सेनापति। (भारत १ २६९ अ०) (त्रि०) गुप्त स्वार्थे कन्‌। २ गुप्त। (पु०) ३ बौद्धोंकी एक शाखा।

गुप्तकथा (सं० स्त्री०) गुप्ता चासौ कथा चेति कर्मधा०। गूढ़वाक्य, वह बात जो सभीके सामने प्रकाश नहीं की जाती।

गुप्तकाल—गुप्तराजाओंका प्रतिष्ठित एक स्वतन्त्र अब्द। वह गुप्तनृपतिभुक्ति, गुप्तसंवत्‌, गुप्तनृपकाल प्रभृति शब्दों द्वारा भी उक्त हुआ है। यह स्थिर करनेके लिये, किस समय वह गुप्तसंवत्‌ चला, पाश्चात्य और देशीय भारत-प्रेमिक प्रधान प्रधान प्राय: सब प्रत्नतत्त्वविद्‌ने लेखनी उठायी है। परन्तु बहुत दिनके अशेष अनुसन्धान और असाधारण अध्यवसायसे भी कोई असन्दिग्ध प्रकृत गुप्तकाल ठहरा न सका। थोड़े दिन हुए बड़ी चेष्टाके बाद सर्ववादि सम्मत प्रकृत गुप्तकाल निर्णीत हुआ है। अब लिखते हैं, कैसे वह गुप्तकाल ठहराया गया—

१०३० ई०को अल बेरूनीने अरबी भाषामें भारतवर्षके विवरण सम्बन्ध पर एक पुस्तक बनायी थी। फरासीसी विद्वान्‌ रेनोने सबसे पहले उस ग्रन्थका फारसी अनुवाद प्रकाशित किया। (१) उस अनुवादका तात्पर्य यह है—भारतके साधारण लोग श्रीहर्ष, विक्रमा-

दित्य, शक वल्लभी और गुप्तके नामसे सम्वत्‌का व्यवहार करते हैं। शक सम्वत्‌से २४१ वर्ष पीछे वल्लभी सम्वत् चला है। गुप्तकालके विषयमें ऐसा है—गुप्त नामके निष्ठुर और दुर्दान्त कुछ लोग थे उनके उच्छेदके बादसे ही यह सम्वत् चला है। गुप्तोंके बाद वल्लभी सम्वत् चला। इसी तरह जिस समय यजदुजिर्दका सम्वत ४०० था, उस समय खीष्टीय सम्वत् १४८८, विक्रमसम्वत् १०८८ शक ८५३, वल्लभी और गुप्तकाल ७१२ था।

फरासीसी विद्वान् रेनोकी उक्त पुस्तककी पढ़ कर पहिले पहल प्रत्नतत्त्वविदोंने यह निर्णय किया कि, जब गुप्तवंशके ध्वंसके बाद शकसम्वत् (२४१ ३१९ ई०) से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है, तब यह बात निश्चित है, कि गुप्तराजगण उससे बहुत पहले विद्यमान थे। गुप्त सम्राटोंके जितने भी अनुशासन पत्र आविष्कृत हुए हैं, उनमेंसे अधिकांशमें किसी निर्दिष्ट सम्वत्‌के अङ्क लिखे हुए हैं। अब उन अङ्कोंको प्रथम किस समयसे गणना प्रारम्भ होती है, इसका निर्णय करनेके लिये सभीको बड़ी भारी समस्यामें पड़ना पड़ा है। सबसे पहले जेम्स प्रिन्सेप साहब-ने कहाउम स्तम्भ पर खुदे हुए स्कन्दगुप्तके शिलालेखमें इस तरहके १३३ अङ्क देखे थे, उन्होंने भ्रमसे उस लिपिको स्कन्दगुप्तकी समसामयिक न लिख कर उनकी मृत्युके १३३ वर्ष पीछेकी लिखा है। (२)

इसके बाद टमस साहबने फरासीसी विद्वान्‌के मतानुसार और ८४५ वल्लभी सम्वत्‌के वेरावलके शिलालेखके अनुसार ऐसा स्थिर किया—वल्लभी सम्वत् ई० स० ३१८ से प्रारम्भ हुआ है। यह सम्वत् सम्भवतः गुप्तसेन द्वारा चलाया गया है। इलाहाबाद, जूनागढ़ और भितरीके शिलालेखमें वर्णित गुप्तराजाओंने उक्त समयसे पहले राज्य किया था। शकराजाओंके बाद ही सौराष्ट्रमें गुप्त राजाओंका एकाधिपत्य हुआ था। (३)

इसके उपरान्त उक्त टमस साहबने १८५५ ई०में गुप्तकालके विषयका एक निबन्ध प्रकाशित किया, जिसमें आपने लासेनके मत (४)का अवलम्बन कर १५० से १६० ई०के भीतर भीतर (५) गुप्तराजाओंका अभ्युदयकाल स्थिर किया। परन्तु कुछ दिन बाद आपने इस मतको बदल दिया और लिखा कि, गुप्तराजोंके शिलालेखमें उत्कीर्ण सम्वत और शककाल दोनों एक ही हैं। (६)

१८४४ ई०में प्रधान प्रत्नतत्त्वविद् कनिङ्घामने भेलसाके बौद्धस्तूपके विषयमें एक बड़ी पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें लिखा था—"३१९ ई०से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है। मालूम होता है रेनो साहबका अनुवाद ठीक नहीं, अथवा अबूरैहान (अलबेरूनी) ही भ्रममें पड़ गये होंगे। गुप्तवंशके ध्वंससे गुप्तकाल चला है, यह बिल्कुल असम्भव है। क्योंकि हम बातको हम निश्चय जानते हैं कि, इसकी ५वीं या ६ठी शताब्दीमें गुप्तराजगण राजत्व करते थे (७) किन्तु इन्होंने थोड़े दिन बाद ही इस सिद्धान्तको बदल दिया और पीछे गहरी गवेषणाके बाद स्थिर किया कि, १६६-६७ ई०में गुप्तसम्वत् प्रारम्भ हुआ है। (८) इसी तरह फिज एडवर्ड हालने (बापू देवशास्त्रीकी सहायतासे) १९०-९१ ई०से और भारतके सुपण्डित डाक्टर भाऊदाजीने ३१८ ई०से गुप्तकालका प्रारम्भ स्थिर किया है। भाऊदाजीके मतसे वल्लभीराज व शकका अन्त होने पर कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त राजा हुए थे (९)। इसके अतिरिक्त और भी बहुतसे ऐतिहासिकोंने विपरीत मार्गका अवलम्बन कर गुप्तसम्वत्‌के प्रारम्भकालके निर्णयका प्रयत्न किया है।

फार्गुसन साहबने १८६९ और १८८० ई०में गुप्तकाल-के विषयमें दो निबन्ध प्रकट किये थे (१०)। उन लेखोंमें आपने रेनो साहब द्वारा वर्णित अलबेरूनीके मतको

(१) M. Reinaud's Fragments Arabes et Persan p 138 ff

(२) Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol VII p 36-37

(३) Journal of the Royal Asiatic Society, Vol XII (O S) p 1 ff

(४) Indische Alterthum kunde, Vol II

(५) Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol XXIV p 371 ff

(६) Fleet's Inscriptionum Indicarum, Vol III p. 32

(७) Gen Cunningham's Bhilsa Topes, p 138 ff

(८) Indian Era p 53 59

(९) Journal Bombay branch R A S Vol VIII p 36 ff

अभ्रान्त माना है। इनके मतसे ३१८-१८ ई०से गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ है। इनका मत सम्पूर्ण अभ्रान्त न होने पर भी कुछ ठीक है। इसमें सन्देह नहीं है। इसके बाद १८८४ ई०में बंबईके प्रसिद्ध प्रत्नतत्त्वविद् रामकृष्ण-गोपाल भण्डारकरने अपने दाक्षिणात्यके इतिहासमें इस गुप्तसंवत्की समालोचना की, जिससे स्थिर हुआ कि, शकसं० २४१ या ई० सं० ३१८से ही गुप्तसंवत् प्रारम्भ हुआ है (११)।

१८८७ ई०में गवर्मेण्टके आनुकूल्यमें फ्लिट साहबने कठिन परिश्रमसे पहलेके आविष्कृत गुप्तराजाओंके समस्त शिलालेखों और ताम्रशासनोंको एकत्र प्रकाशित किया था (१२)। इन्होंने पूर्ववर्ती लेखकोंके मतोंको एकत्र करके तथा उनका खण्डन कर स्थिर किया कि, ३१८-२० ई०से ही गुप्तसंवत् चला होगा। उसमें यह भी दिखाया कि, रेनो साहबका अनुवाद ठीक नहीं है। अलबेरुनीके मूल अरबी भाषाके वृत्तान्तको पढ़नेसे स्पष्ट मालूम होता है कि, उन्होंने—"गुप्तवंशके ध्वंससे गुप्तकाल प्रारम्भ हुआ"—यह बात कहीं भी नहीं लिखी है उन्होंने सिर्फ इतनाही लिखा है कि, गुप्तवंश दुर्वृत्त और बलवान् था। इस वंशके लोप हो जानेके बाद भी जनसाधारण इनकी गणना करते थे। (१३)

फ्लिट् साहबने शङ्कर बालकृष्ण दीक्षितको सहायतासे शिलालेखोंके आधार पर गुप्तकालका इस प्रकार निर्णय किया है—

१म। एरनके स्तम्भ पर खुदे हुए शिलालेखमें गुप्त सम्वत् १६५=शक सं० ४०६ लिखा गया है।

२य। महात्मा टाड द्वारा प्रकाशित वेरावलके शिलालेखमें वलभी सं० ६४५=शक सं० ११८६ गत।

३य। पण्डित भगवानलाल इन्द्रजी द्वारा प्रकाशित वेरावलके शिलालेखमें वलभी सं० ६२७=शक सं० ११६७ गत।

४र्थ। खेड़ासे प्राप्त ताम्रपत्रमें, वलभी सं० ३३० =शक सं० ८२६ और ८२७ गत।

५म। नेपालसे पण्डित भगवान्लाल द्वारा संग्रहीत मानदेवके (१४) शिलालेखमें, गुप्त सम्वत् ३८६=शक सं० ६२७ गत।

६ष्ठ। मोरवीसे प्राप्त जाइङ्कदेवके ताम्रशासन पर, गुप्त सं० ५८५ गत=शक सं० ८२६ और ८२७।

उपर्युक्त प्रमाणोंसे ज्ञात होता है कि, अलबेरुनी द्वारा कथित २४१ शक, उनके मतसे गताब्द था। इस तरह शकसं० २४१=गुप्त सम्वत् ० और शकसं० २४२= गुप्त सं० १ होता है। इसी तरह उन्होंने शक २४१ गत को और वर्त्तमान २४२ अर्थात् ३१८—२० ई०को गुप्त सम्वत्का प्रारंभ काल बतलाया है। किन्तु यह नहीं बतलाया कि, उन्होंने गुप्त सम्वत्को गताब्द न समझ कर चलिताब्द क्यों समझा है। हमारी समझसे यद्यपि उन्होंने अपने ग्रन्थमें गभीर गवेषणा, प्रगाढ़ अनुशीलन और पुन: पुन: अनुसन्धानका काफी परिचय दिया है, तथापि वे जिस सङ्कल्पमें उपनीत हुए हैं, व भ्रमशून्य नहीं कहा जा सकता।

अलबीरुनीने साफ लिखा है कि—विक्रम सं० १०-८८, शक ९५३, और वलभी या गुप्तकाल ७१२ परस्पर समान हैं। इस प्रकारसे गुप्त सं० १=शकसं० २४१= विक्रम सं० ३७६ हुआ। इस जगह गुप्त सं० ०=शक सं० २४० हुआ। सुतरां जब २४१ शक गताब्द है, तब १ गुप्त सं० भी गत समझना चाहिये, ऐसी दशामें फ्लिटके मतसे ३१९—२० ई०को छोड़ कर ३१८—१९ ई०को ही गुप्तसम्वत्का प्रारम्भकाल माना जा सकता है। इसके माननेका कारण भी है।

५८५ गुप्त गताब्दमें फाल्गुन मासकी शुक्लपञ्चमीके दिन मोरवीका ताम्रशासन उत्कीर्ण हुआ था। यह

(१०) Jour. Roy A. S. Vol IV. p 105 ff. and Vol. XIII p. 281.

(११) R. G Bhandarkar's Early History of Dekan, p. 99 ff.

(१२) इस वृहत् ग्रन्थका नाम है—Corups Inscriptionum Indicarum, Vol III

(१३) Fleet's Inscriptionum Indicarum, Vol. p. III-30.

(१४) फ्लिट साहबने मानदेवके शिलालेखको ३८६ सम्वत्का बतला है, पीछे विचक्षण डाक्टर कीलहर्नने भी इन्हीके अनुवर्ती हुए हैं, Jour. A S. of Bengal for 1889, pt. I. Table Col. 19.) किन्तु दोनोंकाही सिद्धान्त युक्तिसिद्ध नहीं है।

ताम्रशासन सूर्यग्रहणके उपलक्षमें प्रदत्त हुआ था। फ्लिट साहबके मतसे ८०५ ई०में ७ मईको यह ग्रहण हुआ था। उक्त ग्रहणके ८ मास ४ दिन बाद वह ताम्रफलक खोदा गया था। परन्तु ८२६ शक गताब्दमें भी कार्त्तिक या मार्गशीर्षमें, अर्थात् ८०४ ई०में १६ जूनको भी ग्रहण हुआ था। यह ग्रहण उक्त ताम्रशासनके खोदे जानेसे ३ मास ४ दिन पहले हुआ था। ग्रहणके थोड़े समय बाद ही ताम्रशासन लिखे जानेकी बात है। विशेषतः पूर्ववर्त्ती सूर्यग्रहणका उल्लेख न हो कर इस ग्रहणके पूर्ववर्ती ग्रहणका उल्लेख होगा, यह सम्भव नहीं हो सकता। सुतरां जब शक ८२६ गताब्द और गुप्त ५८५ गताब्द मिल रहा है। तब २४१ शक गताब्द=१ गुप्तकाल गत स्वीकार करना पड़ेगा।

गुप्त राजाओंके समस्त शिलालेखोंका मनन करनेसे ३१८ ई०से ही गुप्तकालका प्रारम्भ मानना पड़ता है। डाक्टर पिटर्सन, भाण्डारकर और ओल्डेनवर्गका भी ऐसा ही मत (१५) है। और भी नाना कारणोंसे मि० फ्लिटका सिद्धान्त समीचीन नहीं जंचता है।

गुप्तकाशी—हिमालय प्रदेशके गढ़वाल जिलेके अन्तर्गत नागपुर विभागमें स्थित एक ग्राम। यहां गैर नदी आकर मन्दाकिनीके साथ मिली है। पुण्यधाम काशीक्षेत्रमें जिस प्रकार बहुत शिवलिङ्ग देखे जाते हैं, यह भी वैसा ही है। इस प्रकारसे शिवलिङ्गकी बहुलता और स्थानका माहात्म्य कहते हुए यहांके लोग कहते हैं—"जितने कङ्कर उतने शङ्कर"—अर्थात् यह स्थान शिवमय है। काशीधाममें जिस तरह विश्वेश्वर और भागीरथीकी दो धाराओंमें पूजा होती है, उसी प्रकार यहां भी विश्वनाथ तथा यमुना और भागीरथीकी पूजा होती है। इन दोनों नदियोंका जल विश्वनाथके मन्दिरके सामनेकी पुष्करिणीमें आकर गिरा है। इस मन्दिरको प्रात्यहिक सेवाके लिये गोरखालियोंने रुपये दिये हैं।

गुप्तगति (स० पु०) गुप्ता गतिर्यस्य, बहुव्री०। १ गुप्तचर। (स्त्री०) गुप्ताचासौ गतिश्चेति कर्मधारय समास। २ गूढ़ गमन।

गुप्तगन्धि (स० स्त्री०) एलवालुक, एक प्रकारका गन्धद्रव्य।

गुप्तगोदावरी—एक क्षुद्र नदी। यह बुन्देलखण्ड जिलेमें चित्रकूट पर्वतसे ८ मील दक्षिण पूर्व पहाड़की कन्दरासे निकलकर गोदाईनालामें गिरती है। इसके पवित्र जलमें स्नान करनेके लिये दूर दूर देशके मनुष्य यहां आते हैं। इस गुहामें नागरी अक्षरसे लिखा हुआ एक शिलाफलक है।

गुप्तघाट—सरयूतीरस्थ एक तीर्थस्थान। इसी स्थानसे रामचन्द्रने स्वर्गारोहण किया। इसका वर्त्तमान नाम गोसारघाट जो फैजाबादमें अवस्थित है।

गुप्तचर (स० त्रि०) गुप्तश्चरो यस्य, बहुव्री०। १ जिसको गुप्तचर हो। (पु०) गुप्तश्चासौ चरश्चेति। २ दूतविशेष, जो किसी बातका चुपचाप भेद ले, भेदिया, जासूस।

गुप्तदान (स० पु०) वह दान जिसे दाताके अतिरिक्त और दूसरा कोई जानने न पावे।

गुप्तपत्र (स० पु०) सभ्यालु, एक प्रकारका कन्द।

गुप्तपुष्प (स० पु०) सप्तपर्णवृक्ष, छतिवनका पेड़।

गुप्तबीज (स० क्ली०) तृण, घास।

गुप्तमणि (स० पु०) कुमारियोंकी क्रीड़ाविशेष।

गुप्तमार (हि० स्त्री०) १ इस तरहकी चोट देना जिससे शरीर पर कोई चिह्न दीख न पड़े, भीतरीमार। २ छिप कर किया हुआ अनिष्ट।

गुप्तराजवंश—भारतवर्षका एक महायशी और प्रबल पराक्रमी राजवंश। विष्णु, वायु, ब्रह्माण्ड और मत्स्यपुराणमें इस राजवंशका उल्लेख है। यथा—

> "अनु गङ्गा प्रयागञ्च साकेतं मगधांस्तथा।
> एतान् जनपदान् सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशजाः ॥"
>
> ब्रह्माण्ड उपस० ७४ अ०।

नागवंशीय सात राजा मथुरापुरीका भोग करेंगे, किन्तु गुप्तवंशीय गण मथुरा, अनुगङ्ग, प्रयाग, अयोध्या और मगध इन सभी जनपदोंका उपभोग करेंगे।

वास्तवमें किसी समय गुप्तराजोंने सम्पूर्ण उत्तर-भारतमें अपना आधिपत्य विस्तार किया था और प्रबल पराक्रमी राजचक्रवर्ती रूपसे प्रसिद्ध थे, यह बात गुप्तराजाओंके समयके शिलालेखोंसे भली भांति मालूम हो जाती है।

गुप्तवंशीयोंमेंसे एक वंश राजचक्रवर्ती और भारतका सम्राट् हुआ था, तथा अन्य कई एक वंश केवलमात्र जनपदविशेषके राजा हुए थे। पहले गुप्तसम्राटोंका ही इतिहास लिखा जाता है।

गुप्तसम्राट् गुप्त—गुप्तगण किस जातिके थे, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। अध्यापक उद्ललमनने गुप्त राजाओंकी वैश्य जाति बतलाई है; उनके मतसे 'गुप्त' वैश्योंकी उपाधि है। परन्तु नाना स्थानोंके शिलालेखोंसे यह मालूम हुआ है कि, गुप्त नामके एक राजा हुए थे. वे ही इस वंशके आदिपुरुष थे। सम्भवतः इन्होंके परवर्ती गुप्तसम्राटोंने 'गुप्त' उपाधि व्यवहृत की होगी।

गुप्तवंशका उदयकाल ३१९ ई०से आरम्भ हुआ है। कुशन वंशके अध:पतनके समय उत्तरी विहारके लिच्छवि दक्षिणमें गङ्गाके उस पार तक अपना आधिपत्य जमाये हुए थे और उन्होंने पुरानी राजधानी पाटलीपुत्र भी अपने अधिकारमें कर लिया था। पहले ये लोग मगधके अजातशत्रुसे पूर्णरूपसे पराजित किये गये थे। चन्द्रगुप्त नामक एक स्थानीय प्रधान हिन्दूने लिच्छविकी लड़कीसे विवाह किया। अब ये पाटलीपुत्रके राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त हुए और इन्होंने क्रमशः वहांकी आस पासकी दूसरी दूसरी शक्तियों पर अपना आधिपत्य फैला दिया। इनका प्रभाव यहां तक बढ़ गया कि उसी समय अर्थात् ३१९ ई०से इन्होंने गुप्त नामका एक शक चलाया। इनका राज्य उत्तर तथा दक्षिण विहार, अवध, गङ्गाकी उपत्यका और प्रयाग तक विस्तृत था।

थोड़े समय राज्य करनेके बाद इन्होंने अपने पुत्र समुद्रगुप्त पर राज्यभार अर्पण किया। कहा जाता है कि समुद्र गुप्त सब राजाओंसे उद्योगी, सहनशील और उत्साही थे। राज-सिंहासन पर बैठनेके बाद ही इन्होंने समस्त भारतवर्ष जय करनेकी इच्छा की। इन्होंने अपने असीम उत्साहसे विन्ध्य पहाड़के जङ्गलों और कई एक द्वीपों पर अपना अधिकार जमाया। शीघ्रही ग्यारह राज्य इनके अधिकारभुक्त हुए।

इनकी ख्याति यहां तक फैल गई कि एक दिन लङ्काके अधिपति मेघवर्माने एक दूतको बहुतसे अमूल्य उपहार देकर समुद्रगुप्तके निकट भेजा था। दक्षिणमें इनका आधिपत्य बहुत कम स्थानों पर था।

भारतवर्षके उत्तरमें इनका प्रभुत्व बहुत बढ़ा चढ़ा था। नौ राजा सिंहासन च्युत किये गये और उनके राज्य गुप्त राज्यमें मिला लिये गये। बहुत दूर तक इनका ऐश्वर्य तथा आधिपत्य फैल जानेके कारण ये अपनेको चक्रवर्त्ती समझते थे। इसी गौरवसे इन्होंने प्राचीन अश्वमेध यज्ञ किया था। यह यज्ञ चक्रवर्तीके अतिरिक्त दूसरे राजा नहीं कर सकते थे।

विन्ध्यपर्वतके जङ्गलवासी असभ्य जातियां समुद्रगुप्तके अधीन आ गईं। इस समय इनका राज्य पूर्वमें ब्रह्मपुत्र, उत्तरमें हिमालय, पश्चिममें शतलज, यमुना और वेतवा नदी तथा दक्षिणमें नर्मदा तक विस्तृत था।

राजा समुद्रगुप्त कवि, गायक तथा संस्कृतके सच्चे प्रेमी थे। राजा दरबारके एक प्रसिद्ध कविने एक शिलालेखमें राजाका राज्य विवरण संस्कृतके गद्य तथा पद्यमें सुचारु रूपसे लिखा है।

यद्यपि समुद्रगुप्तकी मृत्युकी नियत तिथिका पूरा पता नहीं चलता है तथापि यह निश्चय है कि इन्होंने कमसे कम ५० वर्ष तक राज्य किया था। इनके मरनेके बाद प्राय: ३७५ ई०में इनके पुत्र चन्द्रगुप्त राजगद्दी पर बैठे। इनके पितामहका नाम भी यही होने कारण इन्होंने विक्रमादित्यको उपाधि ग्रहण की। इनका राज्यकार्यके संचालन की ओर विशेष ध्यान था जिससे इनके पूर्वजोंका यश लुप्त न हो। पश्चिममें समुद्रगुप्तका अधिकार केवल मध्य भारत तक ही था। उन्होंने सुराष्ट्रके शकक्षत्रपके प्रबल राज्योंको जीतनेकी चेष्टा न की थी। इस लिये द्वितीय चन्द्रगुप्तने ३९० ई०में समस्त मालवा तथा सुराष्ट्र (काठियावाड़)के द्वीपोंको अपने राज्यमें मिला लिया। अब इनका राज्य पश्चिममें अरब समुद्र तक फैल गया। क्षत्रपवंश जो एक समय भारतवर्षमें एक बलिष्ठ तथा प्रभावशाली वंश गिना जाता था, वह इनके इस आक्रमणसे सदाके लिये लुप्त हो गया।

दिल्लीके लौहस्तम्भमें इनके सांग्रामिक यशका वर्णन संस्कृत भाषामें अच्छी तरहसे किया गया है। कहा जाता है कि इन्होंने अपने आत्मबलसे समस्त भारतवर्ष

पर आधिपत्य जमा लिया था। बहुत दिन राज्य करनेके बाद ४१३ ई०में इनका प्राणान्त हुआ।

चीनके बौद्धयात्री फाहियनने चन्द्रगुप्तके राज्यका सम्पूर्ण विवरण अपने ग्रन्थ में लिखा है। ये ४०६ ई०में भारतवर्ष आये थे और छह वर्ष तक यहां रहे। इतने दिनोंमें इन्होंने चन्द्रगुप्तका सारा राज्य परिभ्रमण कर जो कुछ देखा या सुना उसे अपनी किताबोंमें लिख लिया था। वे लिखते हैं—प्राचीन राजधानी पाटलीपुत्र अब भी एक उन्नति दशामें है और यहां बहुत मनुष्य वास करते हैं। इसके चारों ओर बड़े बड़े शहर हैं। प्राय सभी मनुष्य सच्चे और धर्मात्मा दीख पड़ते हैं। राजधानीमें दो बौद्धमठ हैं जिनमें कमसे कम छह या सात सौ भिक्षु सन्यासी रहते हैं। कोई भी बौद्ध उत्सव बहुत धूम धामसे किया जाता और उसमें बहुतसा खर्च होता है। राज्यकार्य शान्त और सुचारु रूपसे चलाया जाता है। प्रजा पर किसी तरहका कर निरूपित नहीं। यात्री भी इच्छानुसार जहां तहां यात्रा कर सकते हैं। केवल जमीनकी मालगुजारी ही राज्यकी आमदनी है। अपराधीको साधारण दण्ड दिया जाता और राजकर्मचारियोंका वेतन नियत है। अच्छे कुलके आदमी शिकार नहीं कर सकते, अथवा मछली भी नहीं बेचने पाते। यह सब काम नीच जातियोंके नियत है। अच्छे आदमी किसी प्रकारका मादक द्रव्य तथा मांस, मछली और लहसुन नहीं खाते। शहरमें एक भी कसाई तथा शराबकी दूकान नहीं दीख पड़ती। उस समय नेपालके पहाड़ी स्थानोंकी दशा शोचनीय थी। प्रसिद्ध श्रावस्ती शहर तथा कपिलवस्तु और कुसी नगरका भग्नावशेष दृष्टिगत होता था।

समस्त राज्यमें शान्ति फैली हुई थी। चोर या डकैतका नामोनिशान भी न था। यात्री भयरहित यात्रा कर सकते थे और विद्याकी यथेष्ट उन्नति थी।

ई०के ५३ वर्ष पहले उज्जैनके विक्रमादित्यके समयमें संस्कृतका जैसा आदर था चौथी शताब्दीकी समुद्रगुप्त और उनके लड़के द्वितीय चन्द्रगुप्तके समयमें भी संस्कृतको वैसा ही स्थान मिला था।

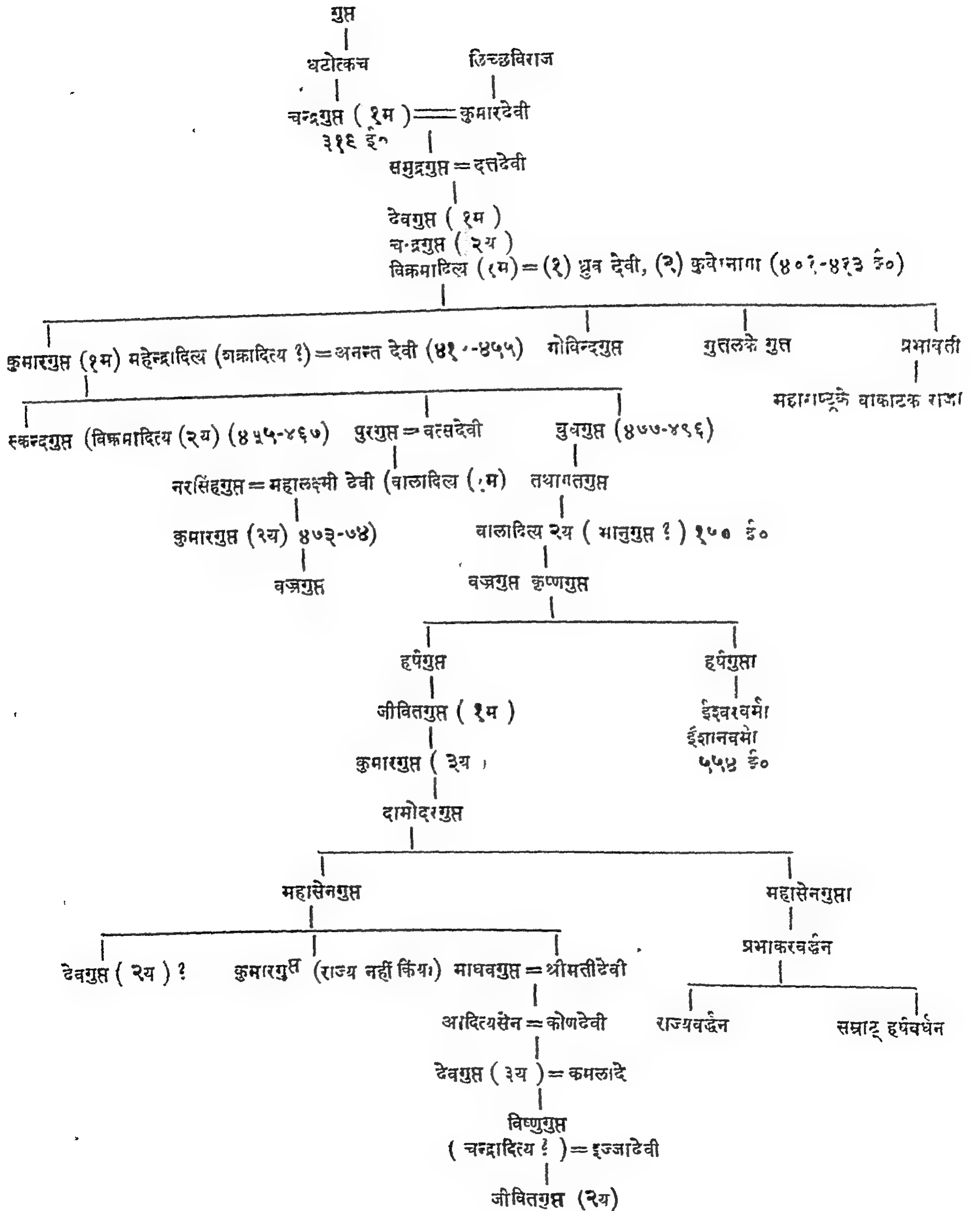
द्वितीय चन्द्रगुप्तकी मृत्युके बाद उनके लड़के प्रथम कुमारगुप्त सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। इनके समयमें कोई विशेष घटना न हुई थी। ये भी पिताकी नाईं बड़े शूर वीर थे। राज्यके अंतिम समयमें विदेशी आक्रमणकारियोंसे इन्हें बहुत कष्ट झेलना पड़ा था।

४३० ई०में ख्वारिज्मके श्वेतहूण मध्य एशियासे रोमन राज्यके पूर्वीय प्रदेशों पर धावा करनेके लिये चले, उस समय वहांके राजा थिउडोस थे। इस बार वे लौट जानेके लिये बाध्य हुए। थोड़े समयके बाद पुष्यमित्रवंशकी सहायता पाकर उन्होंने दूसरे रास्तेसे चलकर भारतवर्ष पर चढ़ाई की।

इस आक्रमणसे कुमारगुप्त बहुत क्षति ग्रस्त हुआ और राज्यका प्राय समस्त भाग नष्ट भ्रष्ट हो गया। गुप्तवंशकी अवनति इसी समयसे आरम्भ हुई। इसी चिन्तासे कुमारकी मृत्यु हुई। बाद इनके पुत्र स्कन्दगुप्तने ४५५ ई०के अप्रैल मास राजसिंहासन पर आरोहण किया। इन्होंने अपने राज्यका खोया हुआ बहुतसा भाग पलटाया और पश्चिमीय तथा पूर्वीय प्रदेश पर पुन अपना अधिकार जमाया था। इनके राज्यशासनके अन्त समय अर्थात् ४८० में इन्हें शत्रुओंसे बहुत तकलीफ झेलनी पड़ी। इनकी मृत्युके साथ साथ गुप्तवंशकी श्री भी जाती रही। इनके मरनेके बाद इनके भाई पुरगुप्त तथा दो और उत्तराधिकारी राज्यके केवल पूर्वीय प्रदेशों पर शासन करते रहे।

पुरगुप्तके बाद इनके पुत्र नरसिंहगुप्त राजा हुए। इन्होंने और दूसरे दूसरे राजाओंकी सहायतासे हूणके प्रधान मिहिरकुलको ५२४ ई०में काश्मीरको मार भगाया। इस तरह राज्यके बहुतसे भागों पर इन्होंने पुन अधिकार जमाया। इनकी मृत्युके बाद उनके पुत्र द्वितीय कुमारगुप्त ४७३ ई०में राज्याभिषिक्त हुए। इन्होंने सिर्फ तीन चार वर्ष तक राज्य किया। इनके बाद इनके उत्तराधिकारी बुद्धगुप्त हुए। इनके समयके बहुतसे शिलालेखोंसे पता चलता है कि इन्होंने २०वर्ष (४७७-४९६) तक राज्य किया था। युएन चुयंगसे मालूम होता है कि ये शक्रादित्यके पुत्र थे। दिनाजपुर जिलेके दामोदरपुर ग्रामके दो ताम्रलेखोंसे पता चलता है कि बुधगुप्तका राज्य पुण्ड्वर्द्धनभुक्ति या उत्तरीय और पूर्वीय

गुप्तराजवंश


गुप्त
घटोत्कच
लिच्छविराज
चन्द्रगुप्त (१म) = कुमारदेवी
३१९ ई०
समुद्रगुप्त = दत्तदेवी
देवगुप्त (१म)
चन्द्रगुप्त (२य)
विक्रमादित्य (१म) = (१) ध्रुव देवी, (२) कुबेरनागा (४०१-४१३ ई०)
कुमारगुप्त (१म) महेन्द्रादित्य (शक्रादित्य ?) = अनन्त देवी (४१ -४५५)
गोविन्दगुप्त
गुप्तलके गुप्त
प्रभावती
महाराष्ट्रके वाकाटक राजा
स्कन्दगुप्त (विक्रमादित्य (२य) (४५५-४६७)
पुरगुप्त = वत्सदेवी
बुधगुप्त (४७७-४९६)
नरसिंहगुप्त = महालक्ष्मी देवी (बालादित्य (१म)
तथागतगुप्त
कुमारगुप्त (२य) ४७३-७४)
बालादित्य २य (भानुगुप्त ?) ५७० ई०
वज्रगुप्त
वज्रगुप्त कृष्णगुप्त
हर्षगुप्त
हर्षगुप्ता
जीवितगुप्त (१म)
ईश्वरवर्मा
ईशानवर्मा
५५४ ई०
कुमारगुप्त (३य)
दामोदरगुप्त
महासेनगुप्त
महासेनगुप्ता
प्रभाकरवर्द्धन
देवगुप्त (२य) ?
कुमारगुप्त (राज्य नहीं किया)
माधवगुप्त = श्रीमतीदेवी
आदित्यसेन = कोणदेवी
राज्यवर्द्धन
सम्राट् हर्षवर्धन
देवगुप्त (३य) = कमलादे
विष्णुगुप्त
(चन्द्रादित्य ?) = इज्जादेवी
जीवितगुप्त (२य)

यहांके स्त्री पुरुष दोनों ही स्वभावसे सुरसिक और सुवक्ता कह कर प्रसिद्ध हैं।

गुप्ती (हि॰ स्त्री॰) एकतरहकी किरच या पतली तलवार जो छड़ीके अन्दर इस तरह रखी हुई रहती है कि आवश्यता हो आने पर बाहर निकाली जा सके।

गुप्तोत्प्रेक्षा (स॰ स्त्री॰) वह उत्प्रेक्षा जिसमें मानो', 'जानो' आदि सादृश्यवाचक शब्द न हो।

गुफ्फा (हि॰ पु॰) १ फुंदना, झब्बा। २ फूलोंका गुच्छा।

गुफा (हि॰ स्त्री॰) कन्दरा, गुहा।

गुफ्तगू (फा॰ स्त्री॰) वार्त्तालाप, बात चीत।

गुबरैला (हि॰ पु॰) एक तरहका छोटा कीड़ा जो सड़ा गोबर या मलमें रहता और उसे खाता है।

गुबार (अ॰ पु॰) १ गर्द, धूल। २ मनमें दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।

गुबारा (हि॰) गुब्बारा देखो।

गुबिंद (हि॰) गोविन्द देखो।

गुब्बा (स॰ पु॰) रस्सोके मध्यमें डाला हुआ फन्दा।

गुब्बाड़ा (हि॰) गुब्बारा देखो।

गुब्बारा (हि॰ पु॰) लम्बे आकारकी कोई चीज जिसमें गर्म वायु या किसी प्रकारकी वाष्प आदि देकर आकाशमें उड़ाते हैं। यह रेशम अथवा और दूसरे तरहके वस्त्रके थैलेमें रबरकी वार्निश चढ़ा कर बनाया जाता है और उसके वायु निकलनेका मार्ग बन्द कर दिया जाता है। उस थैलेके नीचे एक बड़ा सन्दूक या खटोला आदमीके बैठनेके लिये बाँध दिया जाता है। २ गुब्बारेके आकारका एक बड़ा गोला जो कागजका बना हुआ रहता है। इसके नीचे तेलसे भींगा हुआ कपड़ा जला कर रख दिया जाता है। इस कपड़ेके धूएँसे गोला भर जाता और आकाशमें उड़ने लगता है। विवाहादिके उपलक्षमें इसका व्यवहार किया जाता है। ३ एक प्रकारका बड़ा गोला जो आकाशकी ओर फेंकने पर फट जाता है और जिसमेंसे आतशबाजी छूटती है।

गुब्बी—महिसुर राज्यके तुमकुर जिलेका दरमियानी तालुक। यह अक्षा॰ १३ २´ तथा १३ २६´ उ॰ और देशा॰ ७६ ४२ एवं ७७ ०´ पू॰के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ५५२ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ८७४६८ है। इसमें २ नगर और ४२१ गांव बसे हैं। मालगुजारी प्रायः १८२००० है। शिमसा नदीका कदब तालाब मशहूर है। उत्तर पश्चिम सूने पर्वत है।

गुब्बी—महिसुरके तुमकुर जिलेमें गुब्बी तालुकका सदर। यह अक्षा॰ १३ १८´ उ॰ और देशा॰ ७६° ५७´ पू॰में साउदर्न मरहट्टा रेलवे पर अवस्थित है। जनसंख्या प्राय ५५८७ होगी। कहते हैं, प्राय ई॰ १५वीं शताब्दीके समय गोसब बोकलीगकी राजाने उसे बसाया था। यहां व्यापार खूब होता है। बाजारमें सब चीज बिकती है। यहां सुपारी और नारियलकी गिरी बहुत होती है। १८७१ ई॰की मुनिसिपालिटी लगी।

गुभ (हि॰ पु॰) समुद्रकी खाड़ी।

गुभीला (हि॰ पु॰) गोटा, जो मल रुकनेके कारण पेटमें पड़ जाता है।

गुम (फा॰ वि॰) १ गुप्त, छिपा हुआ, अप्रकट। २ अप्रसिद्ध। ३ खोया हुआ।

गुमक (हि॰ स्त्री॰) गमक देखो।

गुमका (हि॰ पु॰) भूसीसे दाना पृथक् करनेका काम।

गुमगा—मध्यप्रदेशके नागपुर जिलेके अन्तर्गत एक नगर यह नागपुर नगरसे १२ मील दक्षिणमें वना नदीके किनारे अक्षा॰ २१ १´ उ॰ और देशा॰ ७८´ २ ३०´ पूर्वमें अवस्थित है। यहांके अधिवासी प्राय सभी कृषिजीवी हैं, सिर्फ कोष्टि जातिके लोग रूईका रोजगार करते हैं। यहां थानेके पास नदीके किनारे एक महाराष्ट्रीय दुर्गका खण्डहर देखनेमें आता है। इसके पास ही एक गणपतिका मन्दिर है। उक्त दुर्ग और मन्दिर दोनों ही राजा २य रघुजीकी पत्नी चीमाबाईने बनवाये थे और इन्हींके समयसे यह प्रदेश भोंसले वंशके अधिकारमें रहता है।

गुमची (फा॰ स्त्री॰) गुंजा, घुमची।

गुमटा (हि॰ पु॰) १ कपासके फूलमें रहनेवाला एक कीट। यह फूलका भारी शत्रु है। (पु॰) २ वह गोल सूजन जो मस्तक पर चोट लगनेसे होती है।

गुमटी (फा॰ स्त्री॰) मकानके उपरी भागकी छत।

गुमनायकन पल्ली-महिसुरके कोला जिलेके अन्तर्गत बागपल्ली तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा॰ १३ १४´ उ॰

और ७७° ५५' पू० तथा वागपली शहरसे १० मील पूर्वमें अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या २०७ है। यह ग्राम १३५० ई०में स्थानीय सरदार गुमनायकसे स्थापित किया गया था और इसलिये उसीके नाम पर इस ग्रामका नाम पड़ा है। गुमनायक तथा उसके भाईने कड़ापासे डकैतोंका दल ला कर इस ग्रामको बसाया था। डकैतोंसे उसने शर्त करा लिया था कि जो कुछ वे लूट पाट लावेंगे उसमें आधा उसको मिलेगा। १४१२ ई०को इस ग्राममें शांति स्थापन करनेका एक नियम बना जिससे वहांके समस्त डकैत ग्राम छोड़ कर भाग चले। थोड़े समयके बाद यह विजयनगरके नायक-वंशके अधीन आ गया। बाद हैदरअलीके समयमें इस वंशका अधःपतन हुआ।

गुमनाम (फा० वि०) अप्रसिद्ध, अज्ञात, जिसे कोई नहीं जानता हो।

गुमर (फा० पु०) १ अभिमान, घमंड, शेखी। २ मनमें छिपाया हुआ क्रोध। ३ धीरे धीरेकी बातचीत।

गुमराह (फा० वि०) १ कुपथगामी, खराब रास्तेमें चलनेवाला। २ भूला हुआ, भटका हुआ।

गुमराही (फा० स्त्री०) १ भ्रम, भूल, कुपन्थ, बुरा मार्ग।

गुमल—गुमलनदीकी एक घाटी। यह दक्षिण वजीरिस्तान एजेन्सीके बीचसे मुरतजा और टोमगडी हो करके अफ़गानिस्तानको चली गयी है। इस विभागमें यह सबसे पुराना कारवारका रास्ता है। हर साल हथियार बन्द काफिलोंका सिल सिला इस राह अफगानिस्तानसे आया करता है।

गुमल—भारतके उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्तकी नदी। यह अफगानस्तानके कोहनाक पहाड़से सरवन्दीके निकट निकलती और दक्षिण-पूर्वको बहती हुई, दोमगडीके पास अङ्गरेजी सीमामें पहुंचती है। यहीं कुन्दर नदीका सङ्गम है। वनातोई, तोईखुसला और जोव इसकी सहायक नदियां हैं। ऋग्वेदमें इस नदीका नाम गोमती लिखा है।

गुमल—विहार प्रान्तके रांची जिलेका दक्षिण-पश्चिम सबडिविजन। यह अक्षा० २२° २१' तथा २३° ३८' उ० और देशा० ८४° ०' एवं ८५° ६' पू० मध्य पड़ता है। क्षेत्रफल ३६२२ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ४३४६८८ है। इसमें एक नगर और ११५७ ग्राम बसे हैं।

गुमल—विहार प्रान्तके रांची जिलेमें गुमल सबडिविजनका सदर। यह अक्षा २३° २' उ० और देशा० ८३° ३३' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः ७११ है। यह वर्द्धिष्णु वाणिज्यका केन्द्र हो रहा है।

गुमसुर—दाक्षिणात्यमें गञ्जाम जिलेके अन्तर्गत एक तालुक और नगर। यह अक्षा० १८° ३५' तथा २०° १७' उ० और देशा० ८४° ८' एवं ८५° ५६' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल ११४१ और लोकसंख्या प्रायः २०० ३५७ है। यह १८३५ ई० तक देशी राजाके अधीन रहा। उसी साल स्थानीय सर्दार अङ्गरेजके विरुद्ध लड़ने लगे। अन्तमें अङ्गरेजने उनका राज्य छीन लिया। उस समयमें भी यहां कन्ध जातिमें नरहत्या प्रचलित था। वृटिश गवर्नमेंटने इस प्रथाको सदाके लिये रोक दिया।

२ उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० १९° ५०' और देशा० ८४° ४२' पू० पर अवस्थित है। यहां १८३५ ई०में एक राजप्रासाद था। यह नगर बहरमपुरसे ३८ मील उत्तर-पश्चिम अवस्थित है। उक्त राजके अधीश्वर रघुनाथ भञ्जराजने यहां एक दुर्ग निर्माण किया था। प्रवाद है कि वे ही गुमसुर राजवंशके आदिपुरुष थे।

गुमान (फा० पु०) १ अनुमान। २ घमंड, अहङ्कार, गर्व।

गुमानसिंह—जैतपुरके एक राजा। इन्होंने बन्दा जिलेके केन नदीके बायें पार्श्वस्थित भूरागढ़ ग्राममें १७४६ ई०को एक दुर्ग निर्माण किया था।

गुमानि—१ सन्ताल परगणा होकर बहती हुई एक नदी। यह राजमहल पर्वतके दक्षिण भागसे निकल कर उत्तर-पूर्वमुख होती हुई बड़ाइत् उपत्यकामें आ मोरल नदीसे मिली है, और उस जगहसे दक्षिण-पूर्वको ओर बहती हुई महादेवनगरके निकट गङ्गामें गिरती है।

२ उत्तरवङ्गके आत्रेयी नदीका दूसरा नाम। यह राजशाही जिलेके चलनविलसे दक्षिणको ओर प्रवाहित होती हुई पावना जिला पर्यन्त चली गई है।

गुमानिकवि—१ एक कवि। त्रिहुत जिलेमें इनकी बनाई हुई बहुतसी कवितायें प्रचलित हैं। यह कहांके रहने वाले एवं किसके पुत्र हैं यह आज तक किसीको कुछ मालूम नहीं है; किन्तु कोई कोई इनका जन्मस्थान

पटनमें बतलाते हैं। इनके बनाये हुए श्लोक चार चरण विशिष्ट हैं, प्रथम तीन संस्कृत भाषामें और शेष एक हिन्दी भाषामें रचित है। गुमानी देखो।

गुमानी (हि० वि०) अहङ्कारी, घमण्डी।

गुमानी—विहार प्रान्तीय पटनाके एक कवि। उनकी बनायी कविता विहारके लोगोंको कण्ठस्थ है। इसके प्रथम तीन पाद संस्कृत और चौथा हिन्दीकी लोकोक्ति है। जैसे—

'यावद्राम शरधारी नायातीह तनय दारो।
तावत्को देहि नारी क्यों मोलै लौ कम्बल भारी॥'

मन्दोदरी रावणसे कहती है—जब तक राम यहां हथियार बांध करके आपसे लड़ने न आवें, उनको जानकी प्रत्यर्पण कर दो, क्यों कि जितना ही कम्बल भीगता, भारी पड़ता है।

गुमानजी मिश्र—युक्तप्रान्तके हरदोई जिलेमें साडीके रहनेवाले एक हिन्दी कवि। १७४० ई०को उनकी खूब चहल पहल थी। संस्कृत और वाक्य रचनामें वह बहुत कुशल थे। युगलकिशोर भट्टके साथ गुमानजी दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें जाते थे। फिर उनका प्रवेश अली अकबर खां मुहम्मदीकी सभामें हुआ। उन्होंने नैषधकी टीका काव्यनिधि, पञ्चनलीय टीका सलिल और कृष्णचन्द्रिका ग्रन्थ लिखे।

गुमश्ता (फा० पु०) कर्मकारक, प्रतिनिधि।

गुमाश्तागिरी (फा० स्त्री०) १ गुमाश्तेका पद। २ गुमाश्तेका काम।

गुमिटना (हि० क्रि०) लिपटना, लपेटा जाना।

गुमूटी (सं० स्त्री०) तृण धान्यविशेष।

गुम्फ (सं० पु०) गुम्फ नञ्। १ ग्रन्थन, गांठ। २ बाहुमें पहननेका आभूषण। ३ श्मश्रु, मूछ।

गुम्फना (सं० स्त्री०) गुम्फ युच् टाप्। १ वाक्यकी सुन्दर रचना, उत्कृष्ट रचना। २ ग्रन्थन, गिरह।

गुम्फित (सं० त्रि०) ग्रथित, गूथा हुआ।

गुम्बज (फा० पु०) मस्जिदका गोलाकार ऊंचा छत, घरका गोल छत।

गुम्मट (फा० पु०) गुम्बद, गुम्बज।

गुम्मा (हि० पु०) अंगरेजी ढङ्गकी इमारतोंमें लगने लायक मोटी ईंट।

गुयासुवा—बङ्गालमें २४ परगनेके अन्तर्गत एक नदी। यह गङ्गाकी एक शाखा है जो अक्षा० २१ ३८ उ० और द्राघि० ८८ ५४ पूर्व पर समुद्रमें आ मिली है। यह नदी विस्तार होने पर भी मुहानाके निकट इतनी वक्र हो गई है कि इसमें प्रवेश करना दुःसाध्य है।

गुयिन्दी—चिङ्गलपेट जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० १३ उ० और द्राघि० ८० १६ पू०में मन्द्राजसे ५ मील दक्षिण पश्चिम पर अवस्थित है। यहां मन्द्राजके गवर्नरके रहनेका एक सुन्दर घर है, और इसके निकट ही रोमनबागमें गवर्नमेण्टकी एक यान्त्रिक एवं गार्हस्थ्य शिक्षाकी एक विद्यालय भी है।

गुरबा (हि० पु०) गुड़बा देखो।

गुर (हि० पु०) १ किसी कार्यकी सिद्धिके मूलमन्त्र। २ तीनकी संख्या।

गुरखई (हि० स्त्री०) एक तरहकी रेहन या बंधक।

गुरखाई (हि० स्त्री०) एक तरहकी रेहन जिसमें रेहन रखनेवाला जमीनकी तत्काल मालगुजारी देता है।

गुरगा (हि० पु०) १ शिष्य, गुरुका अनुगामी, चेला। २ अनुचर, टहलुआ, नौकर। ३ चर, दूत, गुप्तचर, भेदिया।

गुरगाबी (फा० पु०) मुंडा जूता।

गुरच (हि०) गुरुच देखो।

गुरची (हि० स्त्री०) सिकुड़न, बल, बट।

गुरचीं (हि० स्त्री०) आपसमें धीरे धीरे बात करना, कानाफूसी।

गुरज (हि०) गुज देखो।

गुरजा (हि० पु०) लोवा नामक एक तरहका पक्षी।

गुरडा—ब्राह्मण जातिविशेष। यह राजपूतानेमें रहते हैं। इनका प्रधान कार्य अछूत लोगोंकी वृत्ति है। उनका टानपुण्य लेते और विवाह आदि कार्य करा देते हैं। किसी विद्वान्के मतानुसार वह ब्रह्माके पुत्र मेघ ऋषिसे उत्पन्न हुए हैं। दूसरोंका कहना है कि उन्होंने एक मरी हुई गायको उठा करके फेंक दिया था। उसी समय से यह पतित हुए और ब्राह्मणोंमें न रह सके। और प्रवाद है—गर्ग ऋषिके सन्तान पहले अछूत लोगोंका विवाह कराते थे। ब्रह्माने उन्हें केवल विवाह कराने

की आज्ञा दी थी, दक्षिणा लेनेकी नहीं। परन्तु इसके विपरीत वह सूतकी एक लच्छी अपनी पगड़ीमें छिपा करके ले गये। इस पर ब्रह्माने क्रुद्ध हो करके उन्हें जातिच्युत किया था। उसी समयसे इनको लोग गुरड़ा कहने लगे।

गुरदा (फा० पु०) १ रीढ़दार जन्तुके भीतर कलेजेके निकटका एक अङ्ग। इसका रङ्ग भूरा और कुछ कुछ लाल भी है और यह आलूके कदका होता है जिसके चारो ओर चरबी रहती है। साधारणतः जन्तुमें दो गुरदे रीढके दोनों ओर लगे रहते हैं। इनका काम पेशाव-को वहिर्गत करना तथा लोहूको स्वच्छ करना है। इन-में किसी प्रकारकी गड़बड़ी होनेसे ही जीव निर्बल हो जाता है। मनुष्यमें बायाँ गुरदा कुछ ऊपरकी ओर और दाहिना कुछ नीचे रहता है। जो प्रायः ८-९ अंगुल लंबे ५ अंगुल चौड़े और दो अंगुलसे अधिक मोटे होते हैं।

२ साहस, हिम्मत। ३ एक तरहकी छोटी तोप। ४ गुड़ उबालनेका लोहेका बना एक बड़ा करछा या चमचा।

गुरनियआलू (हिं० पु०) रतालू, जमीकन्दकी जातिका एक कन्द। यह बङ्गाल और मधप, पश्चिम तथा दक्षिण भारतमें होता है। यह कंद लाल छिलकाका होता है और इसकी बहुत बड़ी लता होती है।

गुरमकोण्डा—मन्द्राज प्रदेशके कड़ापा जिलेके अन्तर्गत वाइलपाड तालुकका एक दुर्ग और नगर। यह अक्षा० १३° ४७' उ० और ७४° ३६' पू० में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः १७१४ है। यह दुर्ग कड़ापासे सर्व प्रधान है। कहा जाता है कि यह गोलकोण्डाके सुल-तानोंसे निर्माण किया गया था। दुर्ग एक सुन्दर पहाड़ी की ५०० फुट ऊंचाई पर अवस्थित है। इसके तीन ओर की जमीन ढालू है, चौथी ओर ऊपर आने जानेके लिये एक सुगम पथ बना दिया गया है। इसके चारों ओर की पहाड़ियाँ चार दीवारोंका काम करती हैं। दुर्गके नीचे एक प्राचीन राजभवन था, आज कल उसमें राज-कर्मचारी आकर ठहरते हैं।

अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें इस नगरमें कर्णाट के हैदराबाद वालाघाट सरकारकी राजधानी थी। बाद यह पलिगार जातिके कड़ापाके नवाबके अधीन आ गया। १७६६ ई०में मीरसाहब इस नगरको महाराष्ट्रीय जागिररूपमें भोग करने लगे। दो वर्षके बाद इन्होंने इसे अपने बहनोई हैदरअलीको प्रदान किया। १७७१ ई०में हैदरके सेन्याध्यक्ष मयदशाहने यहांके दुर्गको त्र्यम्बक-राव पर अर्पण कर दिया। १७७२ ई०में टीपूने इसे पुनः हस्तगत किया। १७९१ ई०में निजामने ब्रटिश-सैन्याध्यक्ष कप्तान रेडकी सहायतासे गुरमकोण्डाको अपने अधिकारमें कर लिया। १८०० ई०में निजामने समस्त कड़ापा जिला तथा यह नगर अंगरेजोंको प्रदान किया।

गुरमकोण्डाका अर्थ 'घोड़ेका पहाड़' है। इस तरह क्यों नाम पड़ा इसका पूरापूरा पता नहीं चलता है। परन्तु स्थानीय प्रवाद है कि एक घोड़ा दुर्गकी रक्षाके लिये उस पहाड़ी पर रहा करता था। जब तक वह घोड़ा वहां रहता तब तक कोई शत्रु ऊपर नहीं जा सकता था। पहाड़की चोटी पर घोड़ेका अस्तबल था। अन्तमें एक दिन एक मराठा चोर पहाड़ीमें लोहेकी कील ठोक कर उसीके सहारे ऊपर तक चला गया। ऊपर आकर उसने अस्तबलमें प्रवेश किया और उस अद्भुत घोड़े को बाहर निकाला। घोडको साथ लेकर वह किसी तरह नीचेको आया। जब वह विश्राम करनेके लिये जंगलमें बैठा था उसी समय राजकर्मचारियोंने उसे पकड़ा। वे उस चोरके असीम उत्साहसे चकित हो गये और इस दण्डमें उसके दोनों हाथ कटवा लिये। वह घोड़ा पुनः किलेको पहुंचाया गया। थोड़े दिनके बाद वह दुर्ग नष्ट भ्रष्ट हो गया। दुर्गके निकट टीपू सुल-तानके चचा मीर राजा अली खाँकी समाधि तथा और दूसरे दूसरे भवन हैं।

गुरमुख (हिं० वि०) दीक्षित, जिसने गुरुसे मन्त्र लिया हो।

गुरम्मर (हिं० पु०) मीठे आमका वृक्ष।

गुरव—दक्षिण देशके बीजापुर शोलापुर आदि जिलेमें रहनेवाली एक पुरोहित जाति। इनमें किसी प्रकारकी उपाधि नहीं है, सिर्फ स्थानके नामसे जातिगत पार्थक्य देखनेमें आता है। काश्यप और ईश्वर ये दो गोत्र ही इन लोगोंमें प्रधान हैं।

ये स्वर्गीयमें विवाह नहीं करते। देखनेमें ये कनाडियो जैसे लगते हैं। ये मद्य, मांस आदि कुछ भी नहीं खाते फसलके समय ये लोग खेतसे अनाज माग लाते हैं। इनमेंसे कोई शैव और कोई हनुमान्‌के मन्दिरमें पौरोहित्य करते हैं। कोई तो देवज्ञ हैं और कोई ब्राह्मण आदिके विवाहमें बाजा बजाने का काम करते हैं। कोई खेती बारी कर अपनी जीविका चलाते हैं।

मारुती सरस्वती रामेश्वर, शिव, विष्णु और रावलनाथ इनके उपास्य देवता हैं। विवाह या अन्यान्य सामाजिक संस्कार सुनार जातिके समान हैं। ये लोग अपनी जातिके सिवा अन्य किसी भी जातिका छुआ हुआ अन्न नहीं खाते।

बेलगामवोंमें विधवाविवाह प्रचलित है। ये दशवें दिन मरे हुए व्यक्तिको पिण्ड देते तथा ग्यारहवें दिन श्राद्ध और बारहवें दिन जातिभोज करते हैं। इनमें प्रायः सभी लोग कनाडी भाषा बोलते हैं।

गुरवक्र (सं० पु०) गजडग्रालि।

गुरवपिम्प्री—गुजरातके अहमदनगर जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह करजात नामक स्थानसे ७ मील दूरी पर अवस्थित है। यहां हेमडपन्थियोंका पिम्प्रेश्वर महादेवका एक प्राचीन मन्दिर और रामेश्वर मन्दिरका खण्डहर देखनेमें आता है। पिम्प्रेश्वर मन्दिरके आसपासके दलानों पर जो गुम्बजें हैं। मन्दिरकी लिङ्गमूर्त्ति एक गड्ढेमें स्थापित है। इस मन्दिरके प्रवेशद्वारमें और भीतरके एक पृथक् स्तम्भ पर शिलालिप खुदा हुआ है।

गुरवार (हि०) वृहवार देखो।

गुरवी (हिं० वि०) अहङ्कारी, घमण्डी।

गुरसराय—युक्तप्रदेशके झांसी जिलेका राज्य। इसका क्षेत्रफल १५५ वर्गमील है। गवर्नमेण्टको २००००) मालगुजारी और ५५००) रु० शेष देना पड़ता है। राजा जमीन्दारोंसे ५४०००) रु० वसूल करते हैं। यह महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं, १७२७ ई०के लगभग आ करके बसे थे। इसी वंशके एक व्यक्ति पेशवाके अधीन जालौन और दूसरे प्रान्तके सूबेदार थे। बलवेमें सरकारको साहाय्य करने पर "राजा बहादुर" उपाधि और दूसरा पुरस्कार मिला। किन्तु १८९५ ई०की पूरी मालगुजारी देनेका जो झगड़ा लगा, राजा उपाधि छिन गया और अङ्गरेजी इन्तजाम बन्धा। फिर १८९८ और १९०२ ई०को प्रिवी कौंसिलके फैसले पर उजारी माफी बहाल हुई। गुरसराय नगरकी आबादी कोई ४३०४ है।

गुरसल (हि० पु०) गिलगिलिया, सिरोही, किलहटी।

गुरसी (हिं०) गोरसी देखो।

गुरसुन (हि० पु०) सोनारोंको एक तरहकी छेनी।

गुरहा (हि० पु०) १ नौकाके नीचे दोनों सिरों पर जड़ा हुआ तखता। २ एक विलक्षण लम्बे आकारकी एक तरहकी मछली। यह युक्तप्रान्त, बङ्गाल और आसामकी नदियोंमें पाई जाती है।

गुराई (हि०) गोराई देखो।

गुराब (हि० पु०) १ एक तरहकी गाड़ी जिस पर तोप लादी जाती है। २ एक मस्तूलवाली बड़ी नाव।

गुराव (हि० पु०) १ चौपायोंको खिलानेका चारा। २ चारा काटनेका हथियार, गड़ासा।

गुर्ज (फा० पु०) गदा।

गुरिटल (हि० पु०) १ जलाशयोंके निकट रहनेवाला किलकिलाकी जातिका एक पक्षी, यह मछली ही खाकर रहती है। २ कचनारका पेड़।

गुरिया (हि० स्त्री०) १ किसी माला या लड़ीके एक अंशका दाना, मनका या गाठ। २ कटा हुआ गोल छोटा टुकड़ा। ३ दरी बुननेके करघेकी बड़ी लकड़ी। ४ हेंगेमें लगी हुई रस्सी। इसका एक सिरा हेंगेमें और दूसरे जुए के बीचमें बंधा रहता है।

गुरिल्ला (हि०) गोरिल्ला देखो।

गुरु—(सं० पु०) गृणाति उपदिशति धर्मं गिरत्यज्ञानं वा गॄ कु उच्च। (उणादि १।२४) यद्वा गीर्यते स्तूयते देवगन्धर्वादिभिः गॄ कु उच्च। १ बृहस्पति, देवोंके गुरु या आचार्य। (माघ १ स०)

२ प्रभाकर नामक एक सुप्रसिद्ध मीमांसकका दूसरा नाम। प्रभाकर बचपनमें ही शब्दशास्त्रका अध्ययन कर विशेष व्युत्पन्न हो गये थे। पीछे उन्होंने किसी एक प्रधान मीमांसकके पास मीमांसादर्शन पढ़ना शुरू किया। एक दिन इनके गुरु किसी एक छात्रको उस समयमें प्रचलित मीमांसा ग्रन्थ पढ़ा रहे थे। उस ग्रन्थमें "अत्र तनु-

नोक्तं तवापिनोक्तं अतः पौनरुक्त्यं" ऐसा पाठ निकला। अध्यापक महाशय अनेक चेष्टा करके भी इसका कोई सङ्गत अर्थ न लगा सके। इसका तो अर्थ ऐसा होता है कि— यहां भी नहीं कहा गया, वहां भी नहीं कहा गया, अतः पौनरुक्त्य हुआ। परन्तु यह अर्थ बिल्कुल ही असङ्गत था। छात्र और अध्यापक दोनोंने मिलकर बहुत कोशिश की, मगर इसका कुछ सङ्गत अर्थ न निकाल सके इससे अध्यापक अत्यन्त दुःखित हुए और चतुष्पाठीसे निकल घने जङ्गलमें जा कर इसका अर्थ विचारने लगे। प्रभाकरने अपनी प्रतिभाके बलसे इस पंक्तिका अर्थ लगा लेने पर भी उस समय—गुरुजी अपना अपमान समझ कर दुःखित होंगे—इस भयसे कुछ नहीं कहा। पीछे उस पुस्तकमें उन्होंने 'तुना' और 'अपिना' ऐसा एक पद कर दिया। इससे उस पंक्तिका यह अर्थ हुआ कि, यहां तु शब्द द्वारा कहा और वहां भी अपि शब्द द्वारा कहा गया है। इसलिये पौनरुक्त्य होता है। अध्यापक महाशय गंभीर गवेषणा करके भी कुछ निर्णय न कर सके और चतुष्पाठीको लौट आये यहां उन्होंने पुस्तक निकाल कर देखी, तो उसमें पदच्छेद किया हुआ पाया। बहुत ही सन्तुष्ट हुए, पूछने पर उन्हें मालूम हुआ कि, वह प्रभाकर की ही करामात है। अध्यापकने प्रभाकरको अपना गुरु माना और उसी दिनसे इनका 'गुरु' नाम हो गया। प्रभाकर देखो।

३ निषेक आदि क्रियाका कर्त्ता। विधिके अनुसार जो सम्पूर्ण निषेक आदि कर्मोंका अनुष्ठान करते और अन्न दे कर पालते हैं, उन्हें गुरु समझना चाहिये। (मनु २।१४२)

४ शास्त्रोपदेशक, आचार्य। मनुके मतसे—थोड़ा हो चाहे ज्यादा, जो वेदका ज्ञान दे कर उपकार करते हैं, शास्त्रानुसार वे ही गुरु हैं। बालक हो कर भी यदि वेद या शास्त्रका उपदेश दे, तो उन्हें ही गुरु समझना चाहिये, वे वृद्धोंके भी माननीय हैं। प्राचीन समयमें भी शास्त्रज्ञ बालकोंसे वृद्धगण उपदेश लिया करते थे और उसे अपना गुरु मानते थे। मनुमें इस विषयकी एक आख्यायिका भी मिलती है—"अङ्गिराके एक पुत्र बचपनमें ही समस्त शास्त्रोंका पारदर्शी हो गये थे। ये अपने पितृव्योंको शास्त्रसे पराङ्मुख देख, उन्हें शास्त्र अध्ययन कराने लगे। एक दिन शास्त्रोपदेशके समय उक्त बालकने अपने पितृव्योंको पुत्र कह कर संबोधन किया, जिससे उनके हृदय पर बड़ी चोट पहुंची। आखिर अनेक वादानुवादके उपरान्त सबके सब देवसभामें उपस्थित हुए और देवोंसे इस बातकी शिकायत की। समस्त देवताओंने विचार कर उत्तर दिया कि, 'इसमें कुछ दोष नहीं, क्यों कि मूर्ख व्यक्ति वृद्ध होने पर भी बालक है और जो ज्ञानोपदेष्टा हैं, वह बालक होने पर भी पितृवत् पूजनीय है।' (मनु २।१५१-१५३)

मनुका मत है कि, गुरुके पास हमेशा नीच दशामें बैठना चाहिये। गुरुके उठनेसे पहले उठना और सोनेके बाद सोना, यह शिष्यका परम कर्त्तव्य है। सोते हुए या बैठ कर, भोजन करते हुए अथवा दूर खड़े हो कर या दूसरी तरफ मुंह करके गुरुकी आज्ञा ग्रहण या उनके साथ सम्भाषण नहीं करना चाहिये। गुरु यदि आसन पर बैठ कर कुछ आदेश दे, तो शिष्यको चाहिये कि, वह खड़ा हो कर उनकी आज्ञाको ग्रहण करे। परोक्ष भी गुरुका नाम नहीं लेना चाहिये। शिष्य देखो।

५ आचार्य आदि ग्यारह पूजनीय व्यक्तियोंको गुरु कहते हैं। देवलमें लिखा है कि, शास्त्रोपदेष्टा, पिता, ज्येष्ठ भ्राता, राजा, मातुल, श्वशुर, त्राणकर्त्ता, मातामह, पितामह, वर्णज्येष्ठ और पितृव्य इनको गुरु कहा जा सकता है। गुरुतल्पग देखो।

कूर्मपुराणमें—माता, मातामही (नानी), मामी, मौसी, सासु, पितामही (दादी), बड़ी बहन और धात्री इनको भी गुरु कहा गया है

माता आदि अर्थमें गुरु शब्द स्त्रीलिङ्ग है। हिन्दीमें गुरु शब्दका स्त्रीलिङ्ग 'गुरुआनी' होता है।

६ सम्प्रदायप्रवर्त्तक। ७ धर्मोपदेशक ८ कपिकच्छु, कौंच। (राजनि०) ९ वर्णविशेष, दीर्घ अक्षर जिसकी मात्राएं दो समझी जाती हैं, दो मात्राओंवाला अक्षर जैसे—"लाल" का 'ला'। एक बार जानुमण्डल (घुटने) पर हाथ फेरनेमें जितना समय लगता है, उतने समयका नाम मात्रा है जिस वर्णके उच्चारण करनेमें दो मात्रा समय लगता है, उसको दीर्घवर्ण कहते हैं। दीर्घ, अनुस्वार, और विसर्गयुक्त तथा संयुक्त वर्णके पहलेके अक्षरको

(लघु होने पर भी) गुरु कहते हैं। पाद वा श्लोकके चरणका अन्तिम वर्ण विकल्पसे गुरु हुआ करता है। पिङ्गलमें गुरु वर्णका सङ्केत ऽ इस प्रकार है।

१० शिव (भारत १३।१७।१२०) ११ परमेश्वर। (पाञ्च) १२ ब्रह्मा। १३ विष्णु। (भारत १३।१४९।४१) १४ द्रोणाचार्य। १५ पुष्य नक्षत्र। गुरु अर्थात् वृहस्पति इसके अधिष्ठाता होनेके कारण इनका नाम गुरु हुआ है। (ज्योतिस्तत्त्व) १६ वृहस्पति नामका ग्रह। १७ वह व्यक्ति जो अपनेसे विद्या, बुद्धि, बल, पद और उम्रमें बड़ा हो, गुरु जन। १८ किसी कला या विद्याका सिखानेवाला शिक्षक, उस्ताद। १९ सङ्गीतका एक ताल। जिसमें सिर्फ एक ही गुरु वा दीर्घ मात्रा हो, उसका नाम गुरु ताल है। (सङ्गीतदामोदर)

(त्रि०) २० अधिक ज्यादा। (शब्दचिन्ता०) २१दुर्जर, जो मुश्किलसे पचता हो। २२ दुष्पाक, जिसका पाक करना कठिन हो। (भावप्रकाश०) २३ गुरुत्वविशिष्ट, भारी, वजनी। २४ पूजनीय, माननीय। (भाग) २५ गम्भीर। २६ बलवान्।

(पु०) २७ तान्त्रिक मन्त्रोपदेष्टा, जो तन्त्रकी दीक्षा दे। सारदातिलकके मतसे तान्त्रिक गुरुका लक्षण इस प्रकार है जो पवित्र कुलमें उत्पन्न हुए हों, जो शुद्धस्वभाव, जितेन्द्रिय, आगमपारदर्शी, तत्त्वज्ञ परोपकारनिरत, जप और पूजामें तत्पर, सत्यवादी और शान्तिप्रिय हैं, वेद और योगशास्त्रमें जिनका अधिकार है, तथा जो सर्वदा हृदयमें देवताका चिन्तन किया करते हैं। उन्हींको गुरु बनाना चाहिये। इन गुणोंका होना ही गुरुका लक्षण है। अत्यन्त बालक, वृद्ध, पङ्गु, कृश विकृताङ्ग और हीनाङ्ग, ये सब गुरु होनेके लायक नहीं हैं। (२ पटल)

चिन्तामणिके मतसे—क्षयरोगग्रस्त, दुश्चर्मा, कुनखी, श्यावदन्तक, बधिर, अन्धा, कुसुम जैसी आँखोंवाला, खल्वाट (गंजा) और दन्तुर (जिसके दाँत आगे निकले हों) इनको गुरु बनाना उचित नहीं है।

संस्कारहीन, मूर्ख, वेदशास्त्रविवर्जित, वैदिक और स्मार्त क्रियाकलापशून्य, शुष्कभाषी, कुत्सित, याजन कर्मोपजीवीकामी, क्रूर, दम्भी, मत्सरी व्यसनयुक्त, कृपण, खल, मात्सर्यक, असमदृष्कारी, भीरु, महापातकके किसी एक चिह्नसे युक्त, देवता, अग्नि और गुरुपूजा आदिमें श्रद्धाहीन, सन्ध्या, तर्पण पूजा और मन्त्र आदिके ज्ञानसे रहित, अलस विलासी और धर्महीन, इनमें गुरु होनेकी योग्यता नहीं है। मत्स्यसूक्तके मतसे अपुत्रक, गृहिणीशून्य, शक्तिविहीन और ह्रस्वलोपति, ये भी वर्जनीय हैं। (पाप ८९)

ज्ञानार्णवके मतसे—जो गृहस्थ हैं, जनके पुत्र और कलत्र हैं, उन्हें ही गुरु बनाना चाहिये। मुण्डमालामें लिखा है कि, वैष्णव और शैव मध्यम गुरु हैं। जो शक्ति-मन्त्रमें दीक्षित हैं, वे ही उत्तम गुरु हैं।

तान्त्रिकगण गुरु शब्दके प्रत्येक वर्णका अर्थ कर उनका लक्षण करते हैं। उनके मतसे गकारका अर्थ सिद्धिदाता, रेफका अर्थ पापनाशक और उकारका अर्थ शम्भु है अर्थात् जो सिद्धि दे सकते हैं पापोंके विनाश करनेको जिनमें क्षमता है और जो मङ्गलकार हैं, उन्हींको गुरु समझना चाहिये। अथवा गकारका अर्थ ज्ञान, रेफका अर्थ तत्त्वप्रकाशक और उकारका अर्थ शिव तादात्म्यप्रद है। अर्थात् जो तत्त्वज्ञानको प्रकट कर शिवके साथ अभिन्न करा देते हैं, उन्हें ही गुरु समझना चाहिये। (आगमसार

योगिनीतन्त्रमें लिखा है—पिता, मातामह, सहोदर कनिष्ठ और रिपुपक्षीय इनसे मन्त्र लेना उचित नहीं, अर्थात् इनको गुरु नहीं बनाना चाहिये। गणेशविमर्षिणीतन्त्रके मतसे -यति, वनवासी वा आश्रम परित्यागी इनके पास दीक्षित होनेसे अमङ्गल होता है। परन्तु शक्तियामलके मतसे पयावारपरायण, मन्त्री, ज्ञानी, समाधियुक्त और श्रद्धाविशिष्ट यतिसे मन्त्र ग्रहण करनेमें किसी प्रकारका अमङ्गल नहीं होता। रुद्रयामलमें लिखा है—भर्त्ता पत्नीको, पिता पुत्र वा कन्याको और भ्राता भाईको दीक्षित नहीं कर सकता। हां ' स्वामी सिद्धमन्त्र होने पर स्त्रीको दीक्षा दे सकता है।

तन्त्रसग्रहकारोंके मतसे—तन्त्रमें जो निन्दनीय गुरुओं और उनसे दीक्षा लेनेका निषेध किया गया है, वह केवल उन गुरुओंके लिए है जिनको मन्त्र सिद्ध नहीं हुआ हो। सिद्धमन्त्र होनेके उपरान्त फिर कुछ लक्षण देखनेकी आवश्यकता नहीं, जिसके पास जो चाहे उसीके पास दीक्षित हो सकते हैं। (तन्त्रसार)

कोई यदि व्यक्ति अज्ञानवश निन्दनीय वा वर्जनीय गुरुके पाससे दीक्षा ग्रहण कर ले, तो दस हजार गायत्री जपरूप प्रायश्चित्त कर उस मंत्रका परित्याग कर सकता है। (गणेशविमर्षिणी)

मत्स्यसूक्त मतसे निर्वीर्य पिताका मन्त्र शाक्त और शैवोंके लिये दोषावह नहीं है; ये लोग पिताका मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं। कोई संग्रहकार मत्स्यसूक्तके प्रमाणको दीक्षाविषयक कौलिक मन्त्र बतलाते है और कोई कहते हैं कि, मत्स्यसूक्तमें तारामन्त्रके प्रस्तावमें यह बात कही गई है। बहुतसे तन्त्रोंमें पिता ज्येष्ठ पुत्रको अपने मन्त्रमें दीक्षित कर सकता है—ऐसा विधान मिलता है।

(तन्त्रसार)

भारतमें अति प्राचीन कालसे जो दीक्षाप्रणाली चली आ रही है। प्रत्येक दीक्षामें एक न एक गुरुकी आवश्यकता होती है। अस्तु, शस्त्र और मन्त्रदीक्षा आदि सभीके एक एक गुरु होते हैं। गुरुके विना कोई भी दीक्षा नहीं हो सकती। ऋषियों और तान्त्रिकोंने गुरु शिष्यके विषयमें नानाप्रकारके कर्त्तव्याकर्त्तव्योंका निर्णय किया है। उनकी पर्यालोचना करनेसे मालूम होता है कि, जिस समय यह देश धर्मोन्नतिकी पराकाष्ठा तक पहुंच चुका था, उस समय इस देशके लोग गुरुको साधारण मानव न समझते थे, बल्कि उन्हें देवता समझ अपनेको उनके अधीन मानते थे। उन लोगोंका विश्वास था कि, गुरु जो चाहें वही कर सकते हैं। ये ही ईश्वर वा हमारे देवता हैं। गुरुगीतामें गुरुके जो लक्षण और नाम निरुक्तियां लिखी हैं, वे ठीक वेदान्तवर्णित ब्रह्मके लक्षणके समान हैं। दीक्षा, शिक्षा आदि शब्दोंमें विशेष विवरण देखो।

२८ जैनोंके पञ्च परमेष्ठियोंमेंसे ३रे, ४थे और ५वें परमेष्ठी। रत्नकरण्डश्रावकाचारमें गुरुका लक्षण इस प्रकार लिखा है।

"विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।
ज्ञान-ध्यान-तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते ॥ १० ॥"

जो सांसारिक विषयोंके वशीभूत नहीं हों, आरम्भ—(ऐसी क्रिया जिससे हिंसा हो) रहित हों, चौबीस प्रकारके परिग्रहसे रहित हों, ज्ञान, ध्यान और तपमें लवलीन हों, वे ही तपस्वी अर्थात् गुरु प्रशंसा करने योग्य है।

जैनशास्त्रानुसार ये तीन श्रेणियोंमें विभक्त हैं—आचार्य, उपाध्याय और साधु। १ आचार्य—जो मुनियोंके संघके अधिपति हों और संघके मुनियोंको दीक्षा (शिक्षा) प्रायश्चित्त (दण्ड) आदि देते हों तथा १२ प्रकारका तप, १० प्रकारका धर्म, ५ प्रकारका आचार, ६ प्रकारका आवश्यक-कर्म, ३ प्रकारकी गुप्ति इन ३६ गुणोंके धारण करनेवाले हों, उन ऋषियोंको आचार्य कहते हैं। २ उपाध्याय—जो आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग आदि ११ अङ्ग और उत्पाद, अग्रायणी आदि १४ पूर्वके पाठी हों, उन्हें उपाध्याय कहते हैं ये स्वयं पढ़ते और अन्य मुनियोंको पढ़ाया करते हैं। ३ सर्वसाधु—जो मुनि ५ महाव्रतों और ५ समितियोंको भलीभांति पालते हैं, और ५ इन्द्रियोंको संपूर्ण वशमें करते हैं, और जो समता, वंदना आदि ६ आवश्यक कर्म और स्नानत्याग आदि ७ प्रकारका त्याग स्वीकार करते (अर्थात् जो २८ मूलगुणके धारक) हैं, उनको साधु कहते हैं। इनके पुलाक, वकुश आदि और भी दश भेद हैं।

ये तीनों प्रकारके गुरु दिगम्बर (नग्न) अवस्थामें रहते हैं। इस समय ऐसे गुरुओंका प्रायः अभाव हो है।

२९ पिण्डालु, गोल आलू। ३० सीसधातु, रांगा।

गुरिम्मा (हिं०) गौरिम्मा देखो।

गुरुआइन (हिं० स्त्री०) १ गुरुकी स्त्री। २ शिक्षा देनेवाली स्त्री।

गुरुआई (हिं० स्त्री०) १ गुरुका धर्म। २ गुरुका कृत्य, गुरुका काम। ३ धूर्तता, चालाकी।

गुरुक (सं० त्रि०) गुरु स्वार्थे कन्। अतिशय भारयुक्त, भारी।

गुरुकण्टक (सं० पु०) गुरुः कण्टक स्तत्सदृश चिह्न विशेषो गात्रे यस्य, बहुव्री०। एक तरहका मयूर।

गुरुकार (सं० त्रि०) गुरुं भारातिशय-युक्तं करोति गुरु-कृ-अण्। १ अतिशय भारयुक्त करनेवाला मनुष्य। २ (पु०) २ उपासना, गुरु पूजा।

गुरुकार्य (सं० त्रि०) गुरोः कार्यः ६-तत्। १ गुरुका कर्तव्य (क्ली०) २ गुरुका कर्म।

गुरुकुण्डली (सं० स्त्री०) गुरोः वृहस्पतेः कुण्डली, ६-तत्

ज्योतिषमें एक प्रकारका चक्र। इससे जन्मनक्षत्रके अनुसार एक एक वर्षके अधिपति ग्रहका निर्णय किया जाता है। इस चक्रके बीचमें वृहस्पति और उनके आठो तरफ आठ ग्रह स्थापन करने पड़ते हैं। इसमें गुरु प्रधान होनेके कारण इसका नाम गुरुकुण्डली पड़ा है।

गुरुकुण्डली बनानेका तरीका—ऊपरसे नीचेकी तरफ पांच रेखाएं खींच कर उसके बीच एक आड़ी रेखा खींचना चाहिये। फिर उक्त चक्रके प्रथमस्थान अर्थात् ऊर्ध्वमुखी जो रेखाएं खींची गई हैं उनमेंसे बाईं ओरकी रेखाके ऊपरके हिस्से में रवि, द्वितीय स्थान अर्थात आड़ी लकीरें जिस स्थानको भेदती हैं, वहां मङ्गल, तृतीयस्थान अर्थात् उक्त खड़ी रेखाके निम्न भागमें केतु रखना चाहिये। इसी तरह द्वितीय रेखाके मध्य स्थानमें चन्द्र, २य स्थानमें बुध, और ३य स्थानमें सुना, तृतीय रेखाके १म स्थानमें सुना, २य स्थानमें वृहस्पति, और ३य स्थानमें सुना, चतुर्थ रेखाके १म स्थानमें सुना, २य स्थानमें शुक्र और ३य स्थानमें सुना तथा पञ्चम रेखाके १म स्थानमें शनि, २य स्थानमें शून्य और ३य स्थानमें राहु ग्रह रखे जाते हैं। जिस जिस स्थानमें ग्रह बैठाये गये हैं उस उस स्थानमें पुष्य आदि नक्षत्रोंको यथाक्रमसे बैठाना चाहिये। जिस जिस स्थानमें सुना है, उस स्थानमें कोई भी नक्षत्र नहीं बैठाया जाता। पहले रविके स्थानमें पुष्य नक्षत्र स्थापन कर यथाक्रमसे राहुके स्थान पर्यन्त विशाखा नक्षत्र रखना चाहिये। और फिरसे रविके स्थानमें अनुराधा स्थापन कर क्रमसे राहुके स्थानमें पूर्वभाद्र बैठाना चाहिये। इसके बाद रविके स्थानमें उत्तरभाद्र और राहुके स्थानमें पुनर्वसु स्थापित किया जाता है। इसीका नाम गुरुकुण्डली है। जिसका जन्म नक्षत्र जिस स्थानमें पड़ेगा, वही ग्रह उसके प्रथम वर्षका अधिपति है।

केतुकुण्डलीमें जिस तरह वर्षाधिपतिके फलका वर्णन किया गया है, गुरुकुण्डलीमें भी वैसा ही फल जानना चाहिये। किसी किसी ज्योतिषोके मतसे प्रथम स्थानमें रवि, द्वितीयमें मङ्गल, तृतीयमें केतु, चतुर्थमें चन्द्र, पञ्चममें बुध षष्ठमें वृहस्पति, सप्तममें शुक्र, अष्टममें शनि और नवममें राहुग्रहके स्थानमें क्रमसे पुष्य आदि नक्षत्रोंको स्थापन करनेसे उसको गुरुकुण्डली कहते हैं। (१)

पञ्चस्वरके मतसे—प्रथम स्थानमें रवि, २यमें चन्द्र, ३यमें मङ्गल, ४र्थमें बुध, ५वेंमें वृहस्पति, ६ठेंमें शुक्र, ७वेंमें शनि, ८वेंमें राहु और ९वेंमें स्थानमें केतु ग्रहको रख कर रविसे लगा कर प्रत्येक ग्रहके स्थानमें कृत्तिका आदि नक्षत्र यथा क्रमसे स्थापन करने पड़ते हैं। (स्वरशा०)

इन तीन प्रकारकी गुरुकुण्डलियोंमेंसे पहली ही सर्वत्र आदरणोय हैं, इसलिये उसीका चित्र दिया गया है।

गुरुकुण्डली।

८।१७।२६	११।२०।२	०	०		१५।२४।६
रवि	चन्द्र				शनि
३।१२।१०	बुध	वृहस्पति	शुक्र		
मङ्गल	१३।२२।	४ १२।	२२।४।१३।	२३।५	
केतु					राहु
१०।१९।२८	०	०	०		१६।२५।७

गुरुकुल (सं० क्ली०) गुरोः कुलं, ६ तत्। १ गुरुका वंश। २ गुरुका वह स्थान जहां वे विद्यार्थियोंको अपने साथ रख कर शिक्षा देते हैं। प्राचीन समयमें हिन्दुस्थानमें यह प्रथा थी कि गुरु वा आचार्यका निवासस्थान बहुत दूर एकान्तमें रहता और मनुष्य अपने लड़केको पढ़नेके लिये वहीं भेजते थे, जब तक शिक्षा समाप्त नहीं होती थी तब तक बालक लौट कर घर नहीं आते थे। ऐसे ही स्थानको गुरुकुल कहते थे।

गुरुकृत (सं० त्रि०) गुरुणा कृत अनुष्ठित, ६ तत्। गुरुसे जिसका अनुष्ठान किया गया हो।

गुरुकोप (सं० पु०) अतिशय क्रोध, अत्यन्त गुस्सा।

गुरुक्रम (सं० पु०) गुरुरेव क्रमो यत्र, बहुव्री०। परम्परागत उपदेश, एक दूसरेको उपदेश देना।

गुरुगत (सं० त्रि०) गुरु सम्बन्धीय।

गुरुगन्धर्व (सं० पु०) इन्द्रतालके छह भेदों मेंसे एक भेद।

गुरुगन्धिक (सं० क्ली०) १ गुल्मेहदीका पेड़। २ मुसब्बरका वृक्ष।

गुरुगीता (सं० स्त्री०) गुरुस्तवनभूता गीता। गीता-

(१) "रवौ भौमश्च केतुश्च चन्द्र सौम्यो वृहस्पति।
शुक्र शनैश्चरो राहु कुण्डली स्याद् गुरुस्मृता॥"

विशेष, जिसमें गुरुका स्थान, गुरुकी प्रशंसा, गुरुके प्रति शिष्यका कर्त्तव्याकर्त्तव्य एवं भावतत्त्व आदि भली भांति वर्णित है। यह रुद्रयामलका एक अंग है।

गुरुगोविन्दसिंह—सिखोंके दशवें गुरु, तेजबहादुरका पुत्र। इनका जन्म १६६२ ई०को हुआ था। इन्होंने सिखधर्ममें अनेक परिवर्त्तन और खालसा प्रथाको प्रचलन किया था। ये सिखोंमें सिंहोंके प्रवर्त्तक थे। गुरुमुखी भाषामें इनका बनाया हुआ ग्रन्थ-साहब है जो सिखोंका यथेष्ट भक्तिकी चीज समझी जाता है। ये ४८ वर्षकी अवस्थामें १७०८ ई०को गोदावरीके तीर नन्देड़ नामक स्थान पर दो पठानोंसे मारे गये थे। उस स्थान पर इनके स्मरणार्थ बना हुआ सिख मन्दिर आजतक विद्यमान है। उनके मतानुवर्त्ती सिखगण "गोविन्दशाही" नामसे मशहूर हैं। नानक और सिख देखो।

गुरुघ्न (सं० पु०) गुरुं हन्ति हन-टक्। १ गौरसर्षप, उजला सरसों। (त्रि०) २ गुरुनाशक, गुरुको मारडालनेवाला।

गुरुङ्ग (गुरुङ्ग)—नेपाल देशमें रहनेवाली एक जाति। ये लोग बड़े साहसी और युद्धमें निपुण होते हैं। इनमें दसा गुरुङ्ग और बारहा गुरुङ्ग ये दो थोक और प्रायः ५८ वर या येंगो विभाग हैं। इनमें कन्याओंका विवाह बड़ी उमरमें होता है। विवाह बंधन तोड़नेके लिए इनमें कन्याकी माताको रुपये देने पड़ते हैं। वह स्त्री फिरसे ससारीरके साथ विवाह कर सकती है, किन्तु विधवाओंके लिए ऐसा नियम नहीं है। विधवाएं सिर्फ अपने देवरको ही स्वामीरूपमें ग्रहण कर सकती हैं। इस विवाहमें कोई संस्कार नहीं होता।

यह जाति किसी समय बौद्ध धर्मावलम्बी थी, पर अब सब हिन्दू हो गये हैं, पाण्डुके २य पुत्र भीमसेन ही इनके उपास्य देवता हैं। ये लोग गृह सम्बन्धी विपत्तियोंसे मुक्त होने तथा बीमारीसे छुटकारा पानेके लिये पर्वत और नदी आदिको पुष्प और खाद्य पदार्थोंसे उनकी पूजा करते हैं। ब्राह्मण ही इनका पौरोहित्य करते हैं, किन्तु उनके अभावमें गुआबुडो घरका कोई भी व्यक्ति जन्म, मृत्यु और विवाह आदि संस्कार करता है।

ये लोग मुर्दोंको गाड़ देते हैं। इस जातिके [illegible] बड़े लोग पर्वत पर मुर्देको जलाते और [illegible] अस्थि [illegible] देते हैं। मुर्देको गाड़ने [illegible] [illegible] लिये [illegible] देता है। इसके बाद [illegible] होते हैं, ये [illegible] और जातिके समान हैं। ये लोग [illegible] [illegible] हैं।

इनमें [illegible] ग्राम, गुरुङ्ग, [illegible] और [illegible] विभाग हैं। [illegible] गुरुङ्ग लोग [illegible] हैं। [illegible] [illegible] आपसमें [illegible] हैं। [illegible] [illegible] सन्तान गुरुङ्ग [illegible] है, पर [illegible] भी [illegible] नहीं [illegible]। जिसका [illegible] विवाह करते हैं, उससे उत्पन्न हुई सन्तान गुरुङ्ग कहलावेगी। [illegible] पिता और गुरुङ्ग माताके गर्भसे उत्पन्न हुई सन्तान [illegible] कहलाती है, किन्तु [illegible] सब भी गुरुङ्ग है।

ये निम्न श्रेणीके क्षत्रिय हैं। इनका [illegible] तातार जातिके समान और स्वभाव [illegible] है।

गुरुच (हिं० स्त्री०) [illegible]।

गुरचनाप (हिं० पु०) लकड़ी गोल करनेका बढ़इयोंका एक यन्त्र जो रंदाके तरह होता है।

गुरुचांद्री (हिं० वि०) गुरु और चन्द्रमाकृति, जो गुरु और चन्द्रमाके योगसे होता है। गुरुचान्द्रीय।

ज्योतिषके अनुसार कर्कराशिमें वृहस्पति और चन्द्रमाकी स्थितिको गुरुचान्द्री योग कहते हैं। जिसकी जन्मकुण्डलीके लग्न या दशम स्थानमें यह योग पड़ता है, वह भाग्यवान् और दीर्घजीवी समझा जाता है।

गुरुजन (सं० पु०) आदरणीय मनुष्य माता, पिता आचार्य प्रभृति।

गुरुझटक (सं० पु०) गुरुकरायक सुपोटरादिवत् मध्य-

ककारलोपे साधु।) एक तरहका मयूर जो तिलमयूर कहलाता है।

गुरुतण्डुला (सं० स्त्री०) उपसम्यानी, किसी किस्मका धान।

गुरुतम (सं० त्रि०) अतिशयेन गुरु गुरु तमप्। १ अति गुरु। माता पिता और आचार्य इन तीनोंको गुरुतम कहते हैं। २ माता पिता प्रभृति गुरुजन। ३ अतिशय गुरुत्वविशिष्ट, बहुत भारी। (पु०) ४ परमेश्वर, ईश्वर। (भारत १३।१४९।१०)

गुरुतल्प (सं० पु०) गुरोः पितुस्तल्प भार्या यस्य, बहुव्री०। विमातृगामी, विमातासे गमन करनेवाला पुरुष। मनुने ऐसे मनुष्यको महापातकी बतलाया है। उसको या तो जलते हुए तप्त लोहपात्रमें सोकर अथवा ज्वलन लोह मयी स्त्रीमूर्तिको आलिङ्गन कर मरजाना भला है। इस प्रकारसे प्राणत्यागसे भिन्न उसका और दूसरा कोई प्राय श्चित्त भी नहीं है। (मनु ११।१०४) गुरुस्तल्प, ६-तत्। २ गुरुकी भार्या, गुरुकी स्त्री।

गुरुतल्पग (सं०) गुरुतल्प देखो।

गुरुतल्पिन (सं० पु०) गुरोस्तल्प गम्यत्वेनास्त्यस्य गुरु-इनि। विमातृगामी।

गुरुता (सं० स्त्री०) गुरोर्भाव गुरु तल् टाप्। १ गुरुत्व, भारीपन। २ महत्त्व, बड़प्पन। ३ गुरुपन, गुरुका कर्तव्य, गुरुआई। ४ जाड़ा, अङ्गकी जड़ता।

गुरुताप (सं० पु०) अधिक गर्मी, कड़ी धूप।

गुरुताल (सं० पु०) गुरुरेव तालो यत्र, बहुव्री०। ताल विशेष, जिसमें सिर्फ एक गुरु रहे।

गुरुताई (सं० स्त्री०) गुरुता देखो।

गुरुतोमर (सं० पु०) एक तरहका छन्द, जो तोमरछन्दके अन्तमें दो मात्राए और अधिक रख देनेसे बन जाता है।

गुरुत्व (सं० क्ली०) गुरोर्भाव गुरु त्व। १ वैशेषिक मत सिद्ध चौवीस गुणोंके अन्तर्गत एक गुण। भाषापरिच्छेद के मतसे—पतनक्रियाका असमवायिकारण अर्थात् जिस गुणके रहनेसे द्रव्यका पतन होता है, उसको गुरुत्व कहते हैं। यह गुण अप्रत्यक्ष है, किसी भी इन्द्रिय द्वारा इस का प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। इस गुणवाले किसी द्रव्य-को तराजूके एक तरफ रखनेसे उस पलड़ेके झुक जानेके कारण इस गुणका अनुमान कर लिया जाता है। लौकिक व्यवहारमें इस गुणका रत्ती, मासा, तोला सेर, मन इत्यादि भिन्न नामोंसे उल्लेख किया जाता है। (भिक्षरी और कणाग्नूह) वल्लभाचार्यके मतमें स्पर्शविशेषको ही गुरुत्व माना गया है। उनके मतसे इसका प्रत्यक्ष होता है।

नैयायिक और वशेषिकोंने सिर्फ जल मट्टीमें ही गुरुत्व गुण माना है। उनके मतसे—तेज, वायु आदि अन्य किसी भी पदार्थमें गुरुत्व गुण नहीं है। यह गुरुत्व दो प्रकारका है—एक नित्य और दूसरा अनित्य। जल और मृत्तिकाके परमाणुओंमें जो गुरुत्व है, वह नित्य है, कभी भी उसका विनाश नहीं होता। इनके सिवा अन्य द्व्यणुक आदिका गुरुत्व अनित्य है। इनकी उत्पत्ति और नाश हुआ करता है। (भाषापरिच्छेद)

साङ्ख्यमतमें अतिरिक्त गुणका उल्लेख न होने पर भी भाष्याचार्य द्रव्यस्वरूपसे वैशेषिक मतसिद्ध बहुतसे गुणों को मानते हैं। परन्तु द्रव्यके आश्रयके विना गुणका अस्तित्व नहीं इसलिये वैशेषिक मतसिद्ध गुणोंको द्रव्यका स्वरूप ही मानते हैं, उसे द्रव्यके अतिरिक्त नहीं मानते। इनके मतसे मूल कारणके अन्यतम तम गुणका धर्म गुरुत्व है, सत्व वा रजोगुणमें गुरुत्व नहीं है (साङ्ख्यकारिका)

साङ्ख्यमतसे समस्त जन्य पदार्थ त्रिगुणमय अर्थात् सत्व, रज और तम गुणसे उत्पन्न हैं। महत्तत्त्व आदि सभी द्रव्योंमें कारणरूपसे तमोगुण है। साङ्ख्यमतकी पर्यालोचना करनेसे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि, अन्य द्रव्य मात्रमें ही गुरुत्व है, तमोगुणके तारतम्यानुसार किसी द्रव्यमें इसकी अधिकता और किसीमें न्यूनतापाई जाती है। मिट्टी और पानीमें तमोगुणके अंश अधिक होनेके कारण, इन दोनोंका गुरुत्व सहज ही अनुभव होता है। परन्तु तेज आदि पदार्थोंसे तमोगुणके अंश बहुत थोड़े होते हैं, इसलिये उनके गुरुत्वका सहजमें अनुभव नहीं होता। आधुनिक वैज्ञानिकोंने बहुतसे प्रमाणों द्वारा वायुमें गुरुत्व सिद्ध किया है।

वायु और भ गुमाधकर्ष देखो।

जैनदर्शनमें रूपी पदार्थ मात्रमें गुरुत्व माना है।

इनके मतसे गुरुत्व पुद्गलका गुण है; जीवात्मा, धर्म-अधर्म, आकाश और काल इन पञ्चद्रव्योंके अतिरिक्त जगत-में जितने भी पदार्थ हैं, उन सबमें गुरुत्व गुण मौजूद है।

२ महत्त्व, गौरव, बड़प्पन। ३ अध्यापकत्व, उपदेश-कत्व, मुदर्रिसका काम। ४ पूज्यत्व, पूज्यपना। ५ काठिन्य-कठिनता।

गुरुत्वक (सं० पु०) भारीपन।

गुरुत्वकेन्द्र (सं० पु०) पदार्थविज्ञानमें पदार्थोंके बीच वह बिन्दु जिस पर यदि उस पदार्थका सारा विस्तार सिमट कर आ जाय तो भी गुरुत्वकर्षणमें कुछ प्रभेद न हो।

गुरुत्वलम्ब (सं० पु०) किसी पदार्थके गुरुत्वकेन्द्रसे सीधे नीचेकी ओर खींची गई रेखा।

गुरुत्वाकर्षण (सं० पु०) भारी चीजोंके पृथ्वी पर गिरने-का आकर्षण। भास्कराचार्यने १२०० संवत्‌में इस आक-र्षण-शक्तिका पता लगाया था। उन्होंने अपने सिद्धान्त-शिरोमणिमें स्पष्ट लिखा है—

"आकृष्टिशक्तिश्च महीतयात, खस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्त्या।
आकृष्यते तत्पततीव भाति, समे समन्तात्क्वपतत्वियं खे॥"

अर्थात् पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति रहनेके कारण ही वह भारीसे भारी पदार्थोंको अपनी तरफ खींचती है; और यह निश्चय है कि कोई पदार्थ पृथ्वीके आकर्षणसे ही भूमि पर गिरता है। यूरोपके रहनेवाले न्यूटनने भी सन् १६८७ ई०में गुरुत्वाकर्षणके सिद्धान्तका पता चलाया था। एक दिन अपने उद्यानमें बैठे हुए उन्होंने वृक्षसे एक फल नीचे पृथ्वी पर गिरते देखा। उसी समय उन्होंने अनुमान किया कि अगल बगल फल न गिरकर नीचे पृथ्वी पर ही गिरा इसका कारण पृथ्वीकी आकर्षणशक्तिसे भिन्न दूसरा कुछ नहीं है।

गुरुत्वानुभावकता (सं० स्त्री०) गुरुत्वानुभावकस्य धर्मः गुरुत्वानुभावक-तल्-टाप्। जो वृत्ति द्वारा गुरुत्वका अनुभव कर सकता है।

गुरुदक्षिणा (सं० स्त्री०) गुरुप्रदेया दक्षिणा। अध्ययन समाप्त होने पर गुरुको सन्तुष्ट करनेके लिये जो कुछ भेंट दी जाती है उसे गुरुदक्षिणा कहते हैं। इस देशमें बहुत प्राचीन कालसे गुरुदक्षिणा देनेकी प्रथा चली आती थी। उतङ्क प्रभृति कई एक मुनिने गुरुदक्षिणासे उऋण होनेके लिये असाध्य साधन किया था। गुरु शिष्यसे दक्षिणा स्वरूपमें जो कुछ चाहते थे, शिष्य प्राणपणसे उसीको साधन करनेकी चेष्टा करते थे। उस तरहका गुरुदक्षिणा-की प्रथा अब कहीं पर देखी नहीं जाती। विष्णुपुराणमें लिखा है कि कृष्णबलरामने गुरुदक्षिणा चुकानेके लिये सान्दीपनके मृत या अपहृत पुत्रको ला अपने गुरुको दिया था। उतङ्क, कृष्ण प्रभृति शब्द देखो।

गुरुदासपुर—पञ्जाबके लाहौर विभागका एक जिला। यह अक्षा० ३१° ३५′ से ३२° ३०′ उ० और ७४° ५२′ से ७५° ५६′ पू०में अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल १८८९ वर्ग-मील है। इसके उत्तरमें काश्मीर, पश्चिममें सियालकोट जिला, दक्षिण-पश्चिममें अमृतसर, दक्षिण-पूर्व और पूर्वमें विपाशा नदी, कपूरथला राज्य, होशियारपुर और कांगड़ा जिला तथा उत्तरपूर्वमें चम्बाराज्य है।

यह विपाशा और रावी इन दोनों नदियोंके मध्य-वर्ती बारी दोआबके अन्तर्भुक्त तथा इरावती नदीके कूल तक विस्तृत हो कर सियालकोटसे त्रिकोणाकृति में हो गया है। यह जिला छोटी छोटी पहाड़ियोंसे परि-पूर्ण है और बीचमें हिमालय श्रेणीके एक पहाड़के सहारे उत्तरकी ओर जानेसे डलहौसीके पार्वतीय स्वास्थ्यनिवास तक पहुंच सकता है। डलहौसीका शैलावास धवलाधार नामक हिमावृत पर्वतके ऊपर अवस्थित है। पर्वतके नीचे स्थान स्थान पर बहादुरी काष्ठ तथा दूसरे दूसरे वृक्षोंसे परिपूर्ण अधित्यकाका समूह देखा जाता है।

साधारणतः जिलेका सम्पूर्ण क्षेत्र समतल है, केवल पश्चिमका भाग कुछ ढालू है। जिलेमें बहुतसी झीलोंके मध्य जमीन पड़ी है, जहां धान तथा सिंघाड़ेकी फसल अधिक होती है।

मोगल राजाओंके समय बटाला और पठानकोट इसके प्रधान नगर थे। बटाला नगरमें सम्राट्‌के सौतेले भाई समसेर खाँका राजप्रसाद था और वहां उनकी बनायी हुई एक सुन्दर पुष्करणी आज भी विद्यमान है। पठानकोट नगरमें एक समय राजपूत राजाओंकी राज-धानी थी। प्रवाद है कि—१२वीं शताब्दीमें जैतपाल नामक एक राजपूतने दिल्लीसे आकर यह नगर स्थापन

किया। बाद उनके व ग्रधरोंने काङ्गडाके निकटवर्त्ती नूरपुर नगरमें अपना राजभवन निर्माण किया। कलानो नगरमें सम्राट् अकबरने उनके पिताकी मृत्युका सम्वाद पाया और उसी जगह उन्होंने स्वयं सम्राट्की उपाधि ग्रहण की थी। इरावतीकूलस्थ डेरा नामक नगर सिख गुरु नानकका परिचायक था। उक्त नगरके निकटवर्त्ती एक ग्राममें १५३८ ई०में नानकको मृत्यु हुई थी। मोगल राजत्वके समयमें इस जिलेका कुछ विशेष इतिहास नहीं पाया जाता है। परन्तु सिख जातिके अभ्युदय होने पर एक पक्षमें राजकीय शासनकर्त्ता और दूसरे पक्षमें अहमद शाह दुरानीके विरुद्ध युद्ध करके सिख सर्दार क्रमशः अपने अपने आवश्यकतानुसार पञ्जाब और शतद्रुके दोनों पार्श्ववर्त्ती स्थानों पर अधिकार कर रहने लगे थे। कान्हिया दलके अधिपति मान जाटवंशीय अमरसिंहने बारी दोआबका पश्चिमांश हस्तगत किया तथा रामघरिया दलके सर्दार जगतसिंहने दोना नगर कलानोर श्रीगोविन्दपुर बटाला प्रभृति नगर अधिकारमें कर लिये। कान्हिया सर्दारसे जगतसिंह परास्त हो कर भाग चले, फिर भी १७८२ ई०में उन्होंने अपना राज्य पलटा लिया। १८०२ ई०में जगतसिंहकी मृत्यु हुई। बाद उनके पुत्र योधसिंह राजा हुए। ये राजा रणजित सिंहके मित्र थे। १८१६ ई०में इनकी मृत्युके बाद रणजितने यह स्थान अपने राज्यमें मिला लिया। १८०८ ई०में अमरसिंहका अधिकृत राज्य सिख शासनके अधीन आ गया। प्रथम सिखयुद्धकी समाप्तिके बाद १८४६ ई०में सिखोंसे पठानकोट और उसके निकटवर्त्ती पार्वतीय विभाग ईष्ट इण्डिया कम्पनीको अर्पण किये गये। इस समय यह प्रदेश काङ्गडा जिलान्तर्गत था। बाद १८४६ ई०में बारी दोआबका उत्तरांश स्वतन्त्र जिलेमें परिणत हुआ। इस समय बटाला नगरमें इसकी सदर अदालत थी।

१८५५ ई०को राबी नदीके दूसरी पारमें शकारगढ़की तहसील इसके अन्तर्भुक्त हो कर गुरुदासपुर नगरमें सदर अदालत स्थापित हुई। १८६१-६२ ई०में डलहौसी-शैलावास और उसके निकटस्थ समतल नैव समूह पर अङ्गरेज गवर्मेण्टने अपना अधिकार जमाया। कुछ काल तक बटालावासी सर्दार भगवानसिंह गुरुदासपुरके एक प्रधान भूम्यधिकारी थे। ये सिख मन्त्राधाक्ष तेजसिंहके भागिनेय होते थे। १८६१ ई०मे फिरोज शाह और सोब्रावनके युद्धमें तेजसिंहने अङ्गरेजोंसे बटालेका अधिकार पाया था।

इस जिलेमें बटाला, डेरानानक, दीना नगर, सुजनपुर, कलानोर, श्रीगोविन्दपुर और गुरुदासपुर प्रभृति कई एक नगर हैं, जिनमेंसे डेरानानक और श्रीगोविन्दपुर नगर सिखोंके परम पवित्र स्थान हैं। डलहौसीका शैलावास समुद्रपृष्ठसे ७६८७ फुट ऊंचे पर है। ग्रीष्मऋतुमें यहां बहुतसे मनुष्योंका समागम होता है।

यहांके जङ्गलमें चीता, भेडिया, बिलाव, सूअर, नील गाय और हिरण पाये जाते हैं। इस जिलेकी जलवायु अत्युत्तम है। वर्षा भी यहां अधिक होती है। यहां लगभग १५ सेकेन्ड्री, १४२ प्राइमरी स्कूल, ५८ एलिमेण्ट्री स्कूल और ३ ऐङ्गलोवर्नाक्युलर हाई स्कूल हैं। विद्या विभागमें प्रायः ८२००० रुपये खर्च होते हैं, जिनमेंसे गवर्मेण्ट ७००० रुपये देती है।

जिलेकी प्रधान उपज गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, रुई और ईख है। १८६९-७० ई०में जो दुर्भिक्ष पडा था उससे अमृतसरके मनुष्योंको भी असीम कष्ट भोगना पडा था। देशके उत्पन्न द्रव्योंकी रफतनी करनी ही जिलेका प्रधान व्यवसाय है। आसपासके ग्रामोंमें रुईसे एक प्रकारके मोटे वस्त्र प्रस्तुत होते हैं।

२ पञ्जाब प्रदेशके अन्तर्गत गुरुदासपुर जिलेकी तहसील। यह अक्षा० ३१ ४८´से ३२ १३ उ० और देशा० ७५ ६´से ७५ ३६´ पू०में अवस्थित है। क्षेत्रफल प्रायः ४८६ वर्गमील है। इसके पूर्वमें बियास और उत्तर-पश्चिममें राबी है। इन दोनों नदियोंकी अधित्यका जङ्गलसे घिरी और उर्वरा है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः २५८३७८ है। इसमें गुरुदासपुर, दीनापुर और कलानोर शहर तथा ६६८ ग्राम लगते हैं।

३ इसी नामके जिले और तहसीलका सदर। यह अक्षा० ३२ ३´उ० और ७५ २५´ पू० उत्तर पश्चिमीय रेलवेकी अमृतसर पठानकोट शाखा पर अवस्थित है। यह रेल द्वारा कलकत्तेसे १२५२ मील, बम्बईसे १२८३

मील और करांचीसे ८३९ मीलकी दूरी पर है ।

सिपाही विद्रोहके समयका सिखोंके प्रधान बन्दाका बनाया हुआ यहां एक दुर्ग है। इसने बादशाह बहादुरशाहको १७१२ ई०में मार डाला था। अन्तमें मोगलोंने इसे तथा इसके अनुयायियोंको मार डाला और दुर्ग अधिकार कर लिया था। आजकल यह सारस्वत ब्राह्मणोंका विहार बन गया है। शहरकी आय प्रायः १८००० रुपये और व्यय १७७०० रुपये है। यहां एक ईसाई वर्नाक्युलर और एक अस्पताल है।

गुरुदत्त—१ रसरत्नावली नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार। २ हिन्दीभाषाके एक कवि। १८३० ई०को उन्होंने जन्म लिया था। वह जयसिंहपुत्र शिवसिंह सवालकी सभामें उपस्थित रहते थे।

गुरुदत्त शुक्ल—एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण। वह कानपुर जिलेके मकरन्दपुरमें रहते थे। १८१२ ई०को उनका जन्म हुआ। इनके देवकीनन्दन और शिवनाथ दो भाई थे। गुरुदत्तशुक्ल रचित प्रधान काव्यका नाम पक्षीविलास है। वह हिन्दी भाषाके अच्छे कवि थे।

गुरुदत्तसिंह—हिन्दी-भाषाके एक कवि। वह अवध प्रांतमें अमेठीके रहनेवाले राजा थे। उपनाम भूपति कवि था। १७२० ई० उनका अभ्युदयकाल रहा। वह कवि ही नहीं, कवियोंके पृष्ठपोषक भी थे।

गुरुदास (पु०) १ किसी एक गुरुका नाम।

गुरुदास—२ जैनग्रन्थकर्त्ता। इन्होंने प्रायश्चित्तसमुच्चयकी टीका लिखी है।

गुरुदीक्षातन्त्र—(सं० क्लो०) दीक्षाप्रतिपादकं तन्त्रं दीक्षातन्त्रं गुरोरवलम्बनीयं दीक्षातन्त्रं मध्यपदलो०। एक तन्त्र जिसमें गुरुसे शिष्य किस तरह दीक्षित किया जा सकता है उसकी प्रणाली अत्यन्त सुन्दर रूपमें वर्णित है।

गुरुदीनपांड़े—एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण। १८३४ ई०को उनका अभ्युदय हुआ। उन्होंने वाक्मनोहर पिङ्गल नामक एक आवश्यक ग्रन्थ (१८०३ ई०) लिखा था। इसमें केवल छन्द ही नहीं अलङ्कार, ऋतुवर्णन, नखशिख आदि अनेक विषय वर्णित हुए हैं।

गुरुदीनराय (वन्दीजन) युक्तप्रदेशस्थ सीतापुर जिलेके पातैय ग्रामवासी एक भाट। १८८३ ई०को वह जीवित थे खैरी जिलास्थ ईसानगरके राजा रणजितसिंह शाह जांगड़ेकी सभामें इनका आना जाना रहा।

गुरुदेव (सं० पु०) गुरुश्चासौ देवश्चेति कर्मधा०। १ इष्टदेवता। जिसके निकट दीक्षित होनेके लिये जाय उसीको गुरुदेव कहते हैं। २ वीरशैवप्रदीपिका नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गुरुदैवत (सं० पु०) गुरुर्वृहस्पतिर्देवतमस्य, बहुव्री०। पुष्यानक्षत्र।

गुरुद्वारा (हिं० पु०) गुरुका स्थान, गुरुके रहनेकी जगह।

गुरुपण्डित—एक नैयायिक पण्डित। इन्होंने भवानन्दी टीका और गुरुपण्डितीय नामक न्यायग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

गुरुपत्नी (सं० स्त्री०) गुरोः पत्नी, ६ तत्। गुरुः आचार्यः पतिर्यस्याः। १ गुरुकी असवर्णा वा सवर्णा स्त्री। मनुने लिखा है कि गुरुकी सवर्णा स्त्री गुरुके सदृश पूजनीया है, किन्तु गुरुकी असवर्णा स्त्रीको केवल प्रत्युत्थान और अभिवादनसे ही सम्मान करना चाहिए। शिष्यको गुरुपत्नीका अङ्गराग, गात्रमार्जन और केशसंस्कार प्रभृति कार्य नहीं करना चाहिए। उन्हें स्नान भी करना उचित नहीं है। युवक शिष्य युवती गुरुपत्नीका पाद ग्रहण कर प्रणाम भी नहीं कर सकता।

गुरोः पितुः पत्नी, ६-तत्। २ माता। ३ विमाता।

गुरुपत्र (सं० क्लो०) गुरुभारयुक्तं पत्रं पत्राकारफलकं यस्य, बहुव्री०। धातुविशेष, रांगा, शीसा।

गुरुपत्रा (सं० स्त्री०) गुरु गुरुपाकं दुर्जरं पत्रमस्य बहुव्री०, टाप्। तिन्तिड़ीवृक्ष, इमलीका वृक्ष।

गुरुपरिचर्या (सं० स्त्री०) गुरोः परिचर्या ६-तत्। गुरुकी सेवा, गुरुकी शुश्रूषा।

गुरुपाक (सं० त्रि०) गुरुः पाको यस्य, बहुव्री०। दुष्पाच्य, जो सहजसे परिपक्व न हो।

गुरुपादुकागिरि—बौद्ध शास्त्रोक्त एक पवित्र पर्वत। इसका दूसरा नाम कुक्कुटपाद भी है। यह महानदीके पूर्वमें स्थित है।

गुरुपुत्र (सं० पु०) गुरोः पुत्रः ६-तत्। आचार्य प्रभृति गुरुके पुत्र।

मनुका मत है कि गुरुपुत्रको भी गुरुकी नाईं व्यवहार करना चाहिये। टीकाकार कल्लूकभट्टने लिखा है कि यदि गुरुपुत्र अल्प वयस्क वा अपना शिष्य न हो तो उसके प्रति गुरुसा भाव दिखलावे, किन्तु गुरुपुत्र बालक समानवयस्क या अपना शिष्य हो तो उसके प्रति वैसा व्यवहार करना नहीं चाहिए। जो पिताके शिष्यके पास अध्ययन करता है उसे चाहिए कि वह उनको गुरुकी नाईं मान्य करें।

शिष्यको न्यूनवयस्क वा समानवयस्क गुरुपुत्रका गात्र मार्जन, उच्छिष्टभोजन या पदमर्दन करना नहीं चाहिए एवं वैसे गुरुपुत्रको स्नान भी कराना मना है। (मनु २४०।)

तान्त्रिकोंका कथन है कि मनुका यह विधान सिर्फ आचार्य गुरुपुत्रके प्रति उपयुक्त है, किन्तु मन्त्रदाता गुरुपुत्र चाहे कैसा ही क्यों न हो तो भी उन्हें गुरुसा व्यवहार करना चाहिये।

'गुरुवत् गुरुपुत्रेषु।" (तन्त्रसार)

वर्त्तमान सामाजिक नियमसे बहुतसे तान्त्रिक उपासक गुरुके सदृश गुरुपुत्रको पादपूजा और उच्छिष्टादिका भोजन किया करते हैं।

गुरुपुष्प (सं॰ पु॰) क्रमुकवृक्ष, सुपारीका पेड़।

गुरुपुष्य (सं॰ पु॰) वृहस्पतिके दिन पुष्य नक्षत्रके पड़नेका योग। ज्योतिषी इसे शुभ योग मानते हैं।

गुरुपूजा (सं॰ स्त्री॰) गुरो पूजा, ६ तत्। गुरु वा मन्त्रदाताकी पूजा। दीक्षित हो कर जिस तरह प्रति दिन इष्टदेवताकी पूजा करनी पड़ती है उसी तरह गुरु पूजा करनेका भी विधान है। (पूजा प्र॰)

गुरुप्रमाद (सं॰ पु॰) गुरो प्रमोद, ६ तत्। गुरुके प्रति प्रेम या प्रीति। (त्रि॰) गुरु प्रमोदयति गुरु प्र मुद णिच् अण्। २ गुरुका सन्तोषकारक, जिससे गुरु सन्तुष्ट हो।

गुरुप्रमाद (सं॰ पु॰) गुरो प्रमाद, ६ तत्॰। गुरुकी प्रसन्नता।

गुरुप्रिय (सं॰ त्रि॰) गुरो प्रिय, ६ तत्॰। जिसको गुरु चाहते हों, जो गुरुका प्यारा हो। गुरुरेव प्रियो यस्य, बहुव्री॰। गुरुपरायण, गुरुमें जिसकी अचल भक्ति हो।

गुरुभ—जातिविशेष। यह लोग शिवकी उपासना और भस्म धारण करते हैं। रुद्राक्षकी माला पहननेका भी उन्हें अधिकार है। शिवकी पूजामें जो चढ़ाया जाता, उनके घर आता है। टोम साहबने उन्हें शूद्र जैसा लिखा है। यह दाक्षिणात्यके अधिवासी और शिव, मारुती, हनुमान् आदि मन्दिरोंके पुजारी हैं।

गुरुभ (सं॰ क्ली॰) गुरोर्भं, ६ तत्। १ पुष्यनक्षत्र। वृहस्पति इस नक्षत्रका अधिपति होनेके कारण इसे गुरुभ कहते हैं। २ धनुराशि। ३ मीनराशि।

गुरुभाई (हिं॰ पु॰) वैसे मनुष्य जिनमेंसे प्रत्येकका गुरु एक ही व्यक्ति हो।

गुरुभार (सं॰ पु॰) १ गरुड़के पुत्र। २ बहुत भारी।

गुरुभाव (सं॰ पु॰) गुरोर्भाव, ६ तत्॰। गुरुता, भारीपन, गुरुयासौ भावश्चेति कर्म धा॰। १ अतिशय गौरवान्वित अभिप्राय। (त्रि॰) गुरुर्गौरवयुक्त भावोऽभिप्रायो यस्य, बहुव्री॰। ३ जिसका अभिप्राय वा तात्पर्य गौरव युक्त हो।

गुरुभृत् (सं॰ पु॰) गुरु गुरुत्व बिभर्ति गुरु भृ क्विप् तुगागमश्च। गुरुत्वयुक्त, जिसको गौरव हो।

गुरुमत् (सं॰ त्रि॰) गुरु, गुरुवर्णोऽस्य अस्ति गुरु मतुप्। १ जिसमें गुरुवर्ण हो। २ गुरुयुक्त।

गुरुमर्दल (सं॰ पु॰) नित्यकर्मधा॰। वाद्यविशेष, एक तरहका बाजा।

गुरुमुख (हिं॰ पु॰) दीक्षित, जिसने गुरुसे मन्त्र लिया हो।

गुरुमुखी (हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकारकी लिपि, इसे गुरु नानकने चलाया था। आज भी यह लिपि पञ्जाबमें प्रचलित है।

गुरुरत्न (सं॰ क्ली॰) गुरु गौरवान्वितं रत्न। १ पुष्परागमणि। पुखराज नामका रत्न। २ गोमेद नामक रत्न।

गुरुराज—१ एक वैदान्तिक। इन्होंने चन्द्रिका टीका प्रणयन की है। २ वृन्दावनाख्यानस्तोत्र रचयिता।

गुरुरामकवि—सुभद्राधनञ्जय नामक संस्कृत नाटक प्रणेता।

गुरुराहु (सं॰ पु॰) गुरुणा सह राहुर्यत्र, बहुव्री॰। योगविशेष। वृहस्पति राहुके साथ एक नक्षत्रमें आनेसे 'गुरुराहु' योग होता है। इस योगमें विवाह प्रभृति और यज्ञ प्रभृति कार्य निषिद्ध हैं। भविष्यपुराणमें लिखा

[illegible] भिन्न भिन्न नक्षत्रमें रहने पर भी [illegible] हों तो भी यह योग लगता है।

[illegible]

गुरुवर्चोघ्न (सं॰ पु॰) गुरुवर्चो वातादिप्रकोपजनित [illegible] । निम्बाकवृक्ष, कागजी [illegible] ।

गुरुवासिन् (सं॰ पु॰) गुरौ गुरुकुले वर्त्तते व्रत-णिनि । [illegible] । (त्रि॰) = गुरुकुलमें रहनेवाला।

गुरुवर्ष (सं॰ क्लो॰-पु॰) वर्षविशेष, किसी एक वर्षका नाम। [illegible] मासके शेष दिन तकको सौर वर्ष कहते हैं, [illegible] प्रकार बृहस्पति मेष राशिके प्रथमांशसे चलना [illegible] कर जितने समयमें मीन राशिके शेष अंशमें पहुं[illegible] हैं उतने समयको गुरुवर्ष कहते हैं। वर्तमान समयमें मानवका दैनन्दिन व्यवहार सौरवर्षके अवलंबन [illegible] करता है अन्य किसी ग्रहके वर्षको उसमें [illegible] नहीं होता। परन्तु ज्योतिर्विदोंने सभी ग्रहों[illegible] एक एक वर्ष स्थिर किया है। [illegible] । वराह-मिहिरके मतसे बृहस्पतिकी माध्यमिक गतिसे एक राशि-के भोग-कालको गुरुवर्ष कहा जाता है।

बृहत्संहितामें लिखा है कि, बृहस्पति जिस मास और जिस नक्षत्रमें उदित होगा, उसके अनुसार मासके नामकी भांति उस वर्षका नाम होगा। बृहस्पतिके कुल बारह वर्ष हुआ करते हैं, जिसको वार्हस्पत्य मान (12-Years Cycle of Jupiter) कहते हैं। यथा— कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विन कृत्तिका वा रोहिणी नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदय होनेसे कार्त्तिक नामक वर्ष होता है। इस वर्षमें शकटजीवी, अग्निजीवी और [illegible] पीड़ा होती है। बहुतसे लोग व्याधिग्रस्त और [illegible] आघातसे ससांहत होते हैं। लाल और पीले [illegible] वृद्धि होती है।

मृगशिरा वा आर्द्रा नक्षत्रमें बृहस्पतिका उदय हो [illegible] वर्षका नाम मार्गशीर्ष होता है। इस वर्षमें [illegible] के कारण मृग, चूहे, पक्षी, और टिड्डियों आदि[illegible] होता है। मनुष्योंको व्याधिका भय और [illegible] साथ मित्रता होती है।

पुनर्वसु वा पुष्य नक्षत्रमें बृहस्पतिका उदय हो, तो पौष नामका वर्ष होता है। इस वर्षमें धान्यका मूल्य दूना वा तिगुना हो जाता है। राजाको शत्रुका भय नहीं रहता और पौष्टिक कार्योंकी भी वृद्धि हुआ करती है।

अश्लेषा अथवा मघा नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदय होनेसे, उसको माघवर्ष कहते हैं। इसमें पितृगणकी पूजाकी वृद्धि, समस्त प्राणियोंका मङ्गल, आरोग्य, सुवृष्टि धान्य सुलभ, सम्पदकी वृद्धि और मित्रोंका लाभ होता है।

पूर्व फाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी वा हस्ता नक्षत्रमें बृह-स्पतिका उदय होने पर वर्षका नाम फाल्गुन होता है। इस वर्ष मङ्गल, शस्यवृद्धि, स्त्रियोंका दुर्भाग्य, चोरोंकी बढ़ती और राजाओंको सर्वदा उग्रता रहती है।

चित्रा वा स्वाती नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदयसे वर्षका नाम चैत्र होता है। इस साल थोड़ी वर्षा, राजाओंका मृदुस्वभाव, कोष और धान्यकी वृद्धि, परन्तु रूपवान् व्यक्तियोंको पीड़ा होती है। इस वर्ष लोगोंको अन्नका कष्ट नहीं रहता।

जिस वर्षमें विशाखा वा अनुराधा नक्षत्रमें बृहस्पति उदित होता है, उस वर्षको वैशाख कहते हैं। इसमें राजा और प्रजाके धर्मकी वृद्धि और प्रसन्नता होती हैं। किसी तरहका भय नहीं होता।

जिस वर्षमें ज्येष्ठा वा मूला नक्षत्रमें बृहस्पतिका उदय होता है, वह वर्ष ज्येष्ठ कहलाता है। इस साल राजा और धर्मज्ञ व्यक्ति प्राधान्य लाभ करते हैं। कङ्गु और शमीके सिवा और सब धान्योंकी हानि होती है।

पूर्वाषाढ़ा वा उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें बृहस्पतिके उदय-से वर्षका नाम आषाढ़ होता है। इसमें सूखा पड़ती है और अलभ्य वस्तुओंका लाभ तथा लब्ध वस्तुकी रक्षा होती है। परन्तु राजाओंको व्यग्रता होती है।

जिस वर्ष बृहस्पति श्रवणा वा धनिष्ठा नक्षत्रमें उदित होता है, उस वर्षको श्रावण कहते हैं। इसमें सब तरहका अनाज निर्विघ्न पकता है, पर उक्त अनाज-को खानेसे मनुष्य और पाखण्डियोंको पीड़ा होती है।

शतभिषा, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्रपद, इनमेंसे किसी एकमें बृहस्पतिका उदय हो, तो उस वर्षको भाद्रवर्ष

करते हैं। इस वर्ष सिर्फ लताजातीय शस्यकी वृद्धि होती है, और कोई अनाज बिल्कुल हो नहीं होता। कहीं कहीं भयङ्कर दुर्भिक्ष पड़ जाता है।

रेवती, अश्विनी और भरणी इनमेंसे किसी एक नक्षत्र में वृहस्पतिका उदय हो, तो वह वर्ष आश्विन कहलाता है। इस वर्षमें अत्यन्त वर्षा, प्रजाको हर्ष और सम्पूर्ण प्राणियोंको सुख होता है। कहीं भी अन्न कष्ट नहीं रहता। (वृहत्स० ८ अ०) बृहस्पतिचार देखो

गुरुवला (स० स्त्री०) सङ्कीर्ण रागका एक भेद।

गुरुशायड्डेरी—दक्षिण कनाडा जिलेके उप्पिनङ्गडी तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। यह बेलतङ्गरीके पास तालुकको कचहरोसे १२ मोल उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहां एक जैन मन्दिर है। फर्गुसनने उक्त मन्दिरको 'गुरुयड्डरो' बतलाया है। उक्त मन्दिरके मण्डपकी छत पांच स्तम्भों पर डटो हुई है, और भित्तिके पास चारों तरफ पत्थरको सब मूर्त्तियां खुदो हुई हैं। लोगोंका विश्वास है कि, यह मन्दिर बहुत प्राचीन कालका है।

गुरुवायूर—मन्द्राजके मलवार जिलेके अन्तर्गत पोनानी तालुकका एक ग्राम। यह अक्षा० १०° ३५ उ० और ७६° ३ पू० चौवाट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ३३८२ है। यहां नम्बुरि ब्राह्मण, नायर और उच्च श्रेणोके हिन्दुओंका वास अधिक है। यह पोनानोसे १६ मोलको दूरी पर बसा है, यहांके प्राचीन कृष्णमन्दिर तथा नगरके प्रवेशद्वारके गोपुरका शिल्पकार्य अत्यन्त सुन्दर है। १७८४ ई०मे टोपू सुलतानने यहांके बहुतसे मन्दिरोंको नष्ट भ्रष्टकर दिया था। १७८५ ई०मे कालिकटके सामुरिराजने कई एक जीर्ण मन्दिरोंका संस्कार किया था।

गुरुवार (स० पु०) वृहस्पतिका दिन, वृहस्पतिजो देवताओंके गुरु थे इसीसे गुरु शब्दसे वृहस्पतिका ग्रहण हुआ।

गुरुयामी वैष्णव—उत्कलदेशके एक सम्प्रदायका नाम। ये गृहस्थ होते हैं। इनमें न्यारे न्यारे मठ और महन्त हैं। ये महन्त वहांके कर्यो, किसान, मालाकार इत्यादिको मन्त्र दे कर अपना शिष्य बनाते और उनसे खेती बारी करा कर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। इनको पद्धति भो दूसरो तरहको है। ये अन्यान्य वैष्णवोंके साथ एक पंक्तिमें बैठ कर भोजन नहीं करते।

गुरुवीज (स० पु०) मसूर।

गुरुवृत्ति (स० स्त्री०) गुरुषु वृत्तिर्व्यवहार, ७ तत्। गुरुके प्रति शिष्यका कर्त्तव्य व्यवहार। शिष्य देखो।

गुरुशिंशपा (स० स्त्री०) नित्यकर्मधा०। शिंशपावृक्ष, शोसमका पेड़।

गुरुशुश्रूषा (स० स्त्री०) गुरो शुश्रूषा, ६ तत्। गुरुसेवा।

गुरुश्रेष्ठ (स० क्ली०) धातुविशेष, रांगा।

गुरुस (स० पु०) गवडशाली, किसी किस्मका धान।

गुरुसारा (स० स्त्री०) गुरु गुरुत्ववान् सारो यस्य, बहुव्री०। शिंशपा शोसमका वृक्ष। (त्रि०) २ महाभारयुक्त वस्तु, बहुत भारी चोज।

गुरुसिंह (स० पु०) एक पर्व, त्योहार। जब वृहस्पति सिंह राशि पर आता है तो यह पर्व लगता है। इस त्योहारमें मासिक चैत्रको यात्रा और गोदावरी नदीका स्नान पुण्य माना गया है।

गुरुसेवा (स० स्त्री०) गुरो सेवा, ६-तत्। गुरुको शुश्रूषा।

गुरुस्कन्ध (स० पु०) गुरुस्कन्धोऽस्य, बहुव्री०। १ एक पर्वत। २ चीरिवीवृक्ष, खिरनीका पेड़।

गुरुस्वेद (स० पु०) अश्वका स्वेदविशेष, घोड़ेका पसीना।

गुरुह (स० त्रि०) गुरुह देखो।

गुरुहन् (स० पु०) गुरु गुरुपाक हन्ति गुरु हन्-क्विप्। १ उजला सरषों। (वि०) गुरु आचार्यादिक हन्ति क्विप्। २ गुरुहन्ता।

गुरू (हि० पु०) गुरु देखो।

गुरूघटाल (हि० वि०) १ अत्यन्त चतुर, बुजतचालाक। २ चालबाज, धूर्त्त।

गुरूत्तम (स० त्रि०) गुरुषु गुरूणां वा उत्तम। १ पूज्यतम, सबसे अधिक पूज्य। (पु०) २ परमेश्वर।

(काश ६)

पुरुषोत्तम और गुरूत्तम आदि पदोंके समासके विषय में वैयाकरणोंका मतभेद है। किसी किसी वैयाकरणके मतमें गुरूत्तम आदिके स्थान पर गुरुषु उत्तम इस प्रकारका सप्तमी तत्पुरुष समासही होता है, षष्ठी समास

नहीं। पाणिनीय सूत्र भी इन्हींके मतका समर्थन करता है। (न निर्धारणे। पा २।२।१०) कैयटके मतसे—जिस स्थान पर निर्धार्यमाण, निर्धारणका कारण और जिससे निर्धारण किया जाता है—इन तीनोंका उल्लेख रहता है, वहां निर्धारणमें विहित षष्ठीका समास नहीं होता; किन्तु इन तीनोंके न रहने पर हो जाता है। (कैयट)

जैसे—'मनुष्याणां द्विजः श्रेष्ठः' इस जगह निर्धार्यमाण द्विज, निर्धारणका कारण श्रेष्ठत्व और जिससे निर्धारण किया गया है वह अर्थात् मनुष्य, इन तीनोंका उल्लेख है, इस लिये षष्ठी समास नहीं हुआ। किन्तु गुरूत्तम आदिमें तीनोंका उल्लेख नहीं होनेके कारण वहां षष्ठी और सप्तमी तत्पुरुष ये दोनों समास हो सकते हैं।

गुरूपदेश (सं० पु०) गुरोरुपदेशः, ६-तत्। गुरुका वाक्य; गुरुका उपदेश।

गुरूपासना (सं० स्त्री०) गुरोरुपासना, ६-तत्। गुरुकी सेवा।

गुरेट (हिं० पु०) एक तरहका बेलन जिससे कड़ाहमें पकाता हुआ ईखका रस चलाया जाता है। यह लगभग चार या पांच हाथके डंटेमें लगा रहता है।

गुरेरा (हिं० पु०) गुरेला देखो।

गुर्गांव (गुड़गांव) पञ्जावके छोटे लाटके अधीन एक जिला। यह अक्षा० २७° ३९´ से २८° ३३´ उ० और ७६° १४´ से ७७° ३४´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण १९४५ वर्गमील है। इसके उत्तरमें रोहतक, पश्चिम और दक्षिणमें अलवर, नाभा और झिन्द राज्य, दक्षिणमें मथुरा जिला, पूर्वमें यमुना नदी और उत्तरपूर्वमें दिल्ली जिला है। गुर्गांव नगरमें जिलेकी सदर अदालत है। परन्तु जिलेका रेवाड़ी नामक स्थान ही वाणिज्यके लिये प्रधान है।

दो छोटे पहाड़ जिलेके दक्षिणसे ले कर बराबर उत्तरकी ओर समतल क्षेत्रतक फैले हुए हैं। इसके पश्चिममें एक और पहाड़ है जिसने अलवर राज्यको स्वतन्त्र कर रखा है। इस पहाड़की एक शाखा दिल्ली तक चली गई है। दोनों पहाड़ोंमेंसे एक भी ६०० फुटसे अधिक ऊंचा न होगा। यहांकी जमीन वालुकामय है। कहीं कहीं पहाड़ भी है। पार्वतीय छोटे छोटे असंख्य जलस्रोत इस जिलेके मध्य प्रवाहित हो कर नजफगढ़ नामक झीलमें परिणत हो गये हैं। यह झील गुर्गांव सदरसे रोहतक और दिल्ली जिला तक विस्तृत है। यहांके नीचे निकटवर्ती बारह ग्रामोंके कूपोंका जल लवणाक्त है तथा रोहतकके निकटवर्ती नजफगढ़ झीलके समीप भी जलसे लवण प्रस्तुत किया जाता है इस पहाड़के दक्षिणके भागमें लोहेकी खान है जिलाके दक्षिण फिरोजपुरमें एक समय लोहे गलानेका कारखाना था। अन्यान्य खनिज धातुमें तांबा, सीसा, गेरूमट्टी, हरताल प्रभृति पाये जाते हैं। पश्चिम ओरके पहाड़के नीचे एक झरना है जिसका जल गन्धकमिश्रित है। वात, क्षत तथा दूसरे दूसरे चर्मरोगोंके लिये यह जल बहुत उपकारी है। इस जिलेमें जङ्गल अधिक नहीं पाया जाता है, परन्तु पहाड़के ऊपर बाघ, चीता, हरिण, नीलगाय, शृगाल और खरगोस प्रभृति जन्तु देखे जाते हैं।

इस जिलेके प्राचीन इतिहासके विषयमें विशेष पता नहीं चलता है। मुसलमान इतिहासमें इस जिलेका नाम 'मेवात' अर्थात् मेव जातिका वासस्थान कह कर उल्लिखित है। अभी भी गुर्गांवके अधिवासियोंमें मेव जातिकी संख्या ही अधिक है। दिल्लीमें जब मोगल, प्रभाव जाज्वल्यमान था, तब ये मेव दस्युके दलमें दिल्लीके प्राचीर तक आकर लूट पाट किया करते थे। ये पहाड़ोंमें इस तरह छिप कर रहते थे कि मोगल सम्राट् किसी उपायसे उन्हें दमन नहीं कर सकते थे। १८०३ ई०में लोर्ड लेकको जयके बाद यह जिला अंगरेजोंके अधिकारमें आया।

१८३९ ई०से इस जिलेकी अधिक उन्नति हुई है। परन्तु दस्युका उत्पात और दुर्द्धर्ष राजपूत जातिका अत्याचार आज भी नहीं गया है। पहले भरतपुरके राजाने जिलेकी समस्त जमीन इजारे पर लगा दी, बाद १८०४ ई०में भरतपुर युद्धकी गडबडीसे वह समस्त बन्दोबस्त बन्द हो गया।

रेवाडीके निकट भरवा जातिके सैनिकावासमें पहले इसी जिलेकी सदर अदालत थी, बाद १८२१ ई०में यह उठकर गुर्गांव नगरको चली गई। १८३२ ई०में यह जिला तथा दिल्लीका अधिकांश उत्तर-पश्चिम गवर्मेण्टके

अधिकारमें आ गया। १८५७ ई०के मईमासमें सिपाही विद्रोहके समय फरुखनगरके नवाब विद्रोही हो उठे, मेव जाति तथा राजपूत उनके अनुगामी हुए। १८५८ ई०में नवाबको विद्रोहीका सहकारी समझ कर उनकी समस्त सम्पत्ति सरकारने जब्त कर ली।

इस जिलेमें रेवाडी, फिरोजपुर, पलवल फरुखनगर, गुर्गांव, सोहाना, होदल और भी ये कई एक नगर लगते हैं। यहां मेव, जाट, गूजर, अहीर, राजपूत, बेणिया रहर और मीना जातिका वास बहुत है। समस्त गुर्गांव जिलेमें सीतला देवीकी पूजा ही अधिक प्रचलित है।

जलकी विशेष सुविधा नहीं रहनेसे १७८३ ई० १८०३ १८१२, १८१७, १८३३, १८३७, १८६० और १८६८ में सात बार दुर्भिक्ष पड़ा था।

परन्तु १७८३ ई०का महामारी दुर्भिक्ष आज भी हिन्दुस्थानियोंके हृदयमें जाग्रत् है। यहां चार दातव्य चिकित्सालय है।

२ पञ्जाबके गुर्गांव जिलेकी तहसील। यह अक्षा० २८ १२´ से २८ ३२´ उ० और देशा० ७६ ४२´ से ७७ १५ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ४१२ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय १२५८६० है। इसमें गुर्गांव, सोहन और फरुखानगर नामक तीन शहर तथा २०७ ग्राम लगते हैं। तहसीलके उत्तरकी जमीन उर्वरा तथा पश्चिम की बालुकामय है।

३ उक्त जिले और तहसीलका प्रधान नगर। यह अक्षा० २८ २८ उ० और देशा० ७७ २´ पू० राजपूताना मालवा रेलवेके गुर्गांव ष्टेसनसे १ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इस नगरसे प्राय १ मील उत्तर पूर्व वहां दुरगढ़ जानेके रास्ते पर एक स्तम्भ है। जिसकी ऊंचाई ३ फुट, चौडाई १२३ इञ्च और मोटाई ५ इञ्चकी है। यहां सीतला देवीका एक मन्दिर, एक मिडिल स्कूल तथा १ चिकित्सालय है।

गुर्चनी (हिं० स्त्री०) १ गेहूं और चना मिला हुआ अनाज।

२ भारतके युक्तप्रान्तमें रहनेवाली एक अफगानजाति। इनमें कोई कोई समतल भूमि पर खेती बारी करते हैं और सभी लोग पर्वतों पर घूमा करते हैं। उक्त पर्वतोंके दक्षिणमें हुन्दर नामक एक स्थानमें एक दुर्ग है इस जातिको दमन करनेके लिये मजूनमल्लने यह दुर्ग बनवाया है। हुन्दरके पास कन्दाहार जानेके लिए एक गिरिसङ्कट है। १८५०, १८५२ और १८५३ ई०में अफगान सेना यहां दिखाई दी। इस पर वृटिश गवर्मेंटने घोषणा निकाली कि किसी भी अफगानको अङ्गरेजी राज्यमें पानेसे, उसे कैद कर लिया जायगा। १८५५ ई०में गुर्चनी सर्दारके गिरिसङ्कटकी रक्षाके लिये नियुक्त होने पर, अङ्गरेजने उन्हें (खर्चके लिए) वार्षिक हजार रुपये देते थे। इस जातिकी लिसरी शाखा बहुत ही बलवान है, ये लोग हर वख्त मुरीजातिके साथ युद्ध करनेमें लगे रहते हैं। गुर्चनी और लिसरी जाति पर्वतके सामने, तथा छेत्रक जाति हन्दर और सियुनकोटकी बीचकी समतल भूमि पर वास करती है।

गुज (फा० पु०) गदा, सोटा।

गुर्जमार (फा० पु०) एक तरहके मुसलमान फकीर। यह सदा लोहगुज हाथमें लिये इधर उधर घूमता है।

गुर्जर (म = पु०) गुरु जरयति जृ णिच् अण्। १ गुजरात देश। (बहत्संहिता १४।१९)

गुजरात कहनेसे इस समय बम्बई प्रेसीडेन्सीके समुद्र-कूलवर्ती सम्पूर्ण उत्तरांश अर्थात् उत्तरसीमामें राजपूताना, दक्षिणमें कोङ्कण, पूर्व विन्ध्य और पश्चिममें सागर तकका बोध होता है। इसके भीतर सूरत, भडौंच खेडा, पञ्चमहल, अहमदाबाद, बडोदा, महीकांठा, रेवा, पालनपुर, राधनपुर, बालासिनोर, काम्बे दन्न, चौरार, बांसदा, पेठ, धरमपुर धरड, सचीन, वमरवो आ द नगर आते हैं। इसके सिवा इसमें १८० क्षुद्र राज्यविशिष्ट काठियावाड प्रदेश भी आता है। इन सबको लेकर गुजरातका भूपरिमाण प्राय ४१५२१ वर्गमील होता है। यहां गुजराती, मराठी और कनाडी भाषा चलती है।

ऊपर जिस प्रकार गुजरातका आकार लिखा गया है, असली गुजरात राज्य पहले उतना बड़ा नहीं था। उक्त स्थानोंमें गुर्जरवासी गुजरातियोंके धीरे धीरे फैल जानेके कारण अबसे उक्त सभी जनपद गुजरातमें गिने जाने लगे। प्राचीन गुर्जर सुराष्ट्र, आनर्त, भरुकच्छ

(भड़ौंच) आदि जनपदोंसे पृथक् ही था, यह बात पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों और युयेनचुआङ्गके भ्रमण-वृतान्त-से भली भाँति मालूम हो जाती है। प्राचीन गुर्जर वर्त-मान बड़ोदा, खेड़ा और जावरा जिलेके उत्तरसे राज-पूतानाके दक्षिणसीमा तक विस्तृत था। अब भी उक्त प्रदेशको गुजरात कहते हैं। ७वीं शताब्दीमें जब चीन परिव्राजक युयेनचुआङ्ग (क्यू-चे-लो) गुर्जर राज्यमें आये थे, तब इसका भूपरिमाण ५००० ली अर्थात् प्रायः ४०० कोस था। उस समय यहां बीस वर्षकी उम्रवाले एक क्षत्रिय राजा राज्य करते थे, जिनकी राजधानी पि-लो मो-लो अर्थात् राजपूतानास्थ बालमेरमें थी। ईसा-की ८वीं शताब्दीमें गुर्जरमें चापोत्कट राजाओंका अभ्यु-दय हुआ। इन चापोत्कट वंशके राज वनराजने गुज-रातकी राजधानी अनहिलपत्तनमें स्थापित की। ६६८ विक्रमसंवत्में गुर्जरराज्य चालुक्य राजाओंके हाथमें आया। चापोत्कट और चालुक्य देखो।

वि० सं० १३०२ में वघेलावंशीय वीसलदेवने गुर्जर पर अधिकार पाया। उसके बाद इनके पुत्रादि क्रमसे अर्जुनदेव, सारङ्गदेव और कर्णदेवने कुल ५८ वर्ष राज्य किया। पीछे सुलतान अलाउद्दीनने गुर्जर अधि-कार किया। इनके पीछे उदय खाँने २५ वर्ष, सुलतान मुजफ़्फ़रने १८ वर्ष, सुलतान अहमदने ३२ वर्ष ७ महीने ७ दिन (इन्होंने अहमदाबाद बसाया था), सुलतान कुतुब-उद्-दीनने १० वर्ष ५ मास ६ दिन, सुल-तान दाउदशाहने ३६ वर्ष, (सम्वत् १५७८ में) सुल-तान सिकन्दरने ८ दिन, (सं० १५८२ में) बादशाह महमूदने १ मास १० दिन और इनके बाद बादशाह बहादुरने १० वर्ष राज्य किया था। इन बहादुर शाहने गुर्जरराज्य बहुत कुछ बढ़ाया था। इनके बाद मोगल-सम्राट् हुमायूं ८ महीने गुजरातमें आ कर रहे थे। पीछे बहादुरने अधिकार पाया, किन्तु समुद्रमें उनकी मृत्यु हो गई। १५६३ सम्वत्में बादशाह मुहम्मद राजा हुए और उन्होंने १७ वर्ष राज्य किया। बहरा नामक किसी एक घातकके हाथ इनकी मृत्यु हुई। १६१७ सम्वत्में मुजफ़्फ़र शाह राजा हुए। इनके समयमें अक-बर बादशाहने आ कर गुजरात दखल कर लिया। तभीसे यह स्थान दिल्लीके मोगल बादशाओंके अधीन हुआ। सिन्धु-प्रदेशके अधिकार करनेके उपरान्त यह स्थान भी अंग्रेजी राज्यमें शामिल हो गया।

(बहु०) गुर्जरोऽभिजनोऽस्य गुर्जर अण् बहुत्वे तस्य लुक्। २ गुर्जरदेशवासी, गुजरातके रहनेवाले।

३ गुजरातवासी ब्राह्मणोंका एक भेद, पञ्चद्राविड़ोंमें एकतम। (सह्याद्रि ३१।१२) गुर्जर नामक स्थानमें रहनेके कारण इनका गुर्जर नाम पड़ा है। इनमें ८४ श्रेणियां हैं। यथा—

अक्षमाला, अगस्त्यवाल, अनवाल, इतावाल, उने-वाल, उदुम्बरा, कनोजिया, कन्दोलिया, कपिला, करखे-लिया, करोरा, कलिङ्गा, खरयता, खेड़ावाल, गङ्गापुत्रा, गयावाल, गर्गेवी, गिरनारा, गुर्जरगोरा, गुगला, गोमती-वाल, गोमित्रा, गोरवाल, चतुर्वेदीमोड़, चंवेश्र, चित्रोरा, जम्बू, झरोला, तंनोरिया, तलिङ्गा, तिलोक, तिलो-कीय, उदीच्य, त्रिवाड़ीमेवारा, त्रिवेड़ामाड़, दधीच, दाहिया, दोमावाल, द्राविड़ा, नरसामपरा, नादोदरा, नापला, नार्मदिक, निदुवाना, पगोरा, पर्वालिया, पल्ली-वाल, पुरवाल पुष्करणा, प्रेतवाल, भड़मेवावा, सनोरिया, भरडाना, मरोवा, मालवी, मारु, मेरत्वाल, मोतमैश्रा, मोताला, याज्ञिकवाल, राजवाल, रायपुरा, रायकोवाल, रोरवाल, ललाठ, वड़नगर, विमनगर, बयड़ा, बरकारा, बलोदरा, वाल्मीक, विषोदरा, सिहोराउदीच्य, सनो-रिया, सजोदुरा, सयोदरा, सनोविया, सहचोरा, सहस्र-उदीच्य, सारस्वत, सिन्दुवाल, श्रीगोड़ा, श्रीमाला, सोमपरा, सोरठिया और हरसोरा। गुजराती ब्राह्मण देखो।

गुर्जरी (सं० स्त्री०) गुर्जर उत्पादकत्वेन अस्त्यस्य गुर्जर अच्-बाहुलकात् ङीप्। १ रागिणीविशेष। प्राचीन सङ्गीतवेत्ताने इसे भैरव रागकी सहचरी कह कर वर्णन किया है। (सङ्गीतदप० राग० १६) दर्पणकारका मत है कि ग्रीष्म ऋतुमें भैरवरागके साथ यह रागिणी गान करना उचित है। प्रातःकालके एक प्रहरके बाद यह रागिणी गान गाया जाता है। २ गुजरात देशकी स्त्री।

गुर्जाल—कृष्णा जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह दाचे-पल्लीसे ८ मील दक्षिण पश्चिममें अवस्थित है। "पलनाड़-वीर" नामक ग्रन्थमें इसका प्राचीन नाम पलनाड़ लिखा

है। यहा चार मन्दिरोंके खण्डहर पड़े हैं। मन्दिर बहुत ही प्राचीन मालूम होते हैं। यहां तीन शिलालेख मिलते हैं, जिनमेंसे १लेमें वीरेश्वर स्वामीके मन्दिरके प्रतिष्ठाता राजा राजनरेन्द्रकी प्रशस्ति है। २य शिलालेख ध्वजस्तम्भके पूर्वकी तरफ एक पत्थर पर है, इसमें शक १४३०के नन्दराज रामय्यदेवकी प्रशस्ति है। ३य शिलालेख वीरभद्रस्वामीके मन्दिरमें है, इसमें सत्याश्रय-वंशीय चालुक्यकुलतिलक तिरुमलदेवकी प्रशस्ति है। मि० हिमवेलका कहना है कि, इस मन्दिरका मण्डप मुसलमानी ढङ्गका है। परन्तु यह मुसलमानोंके आनेसे पहले बना था। मन्दिर आदिमें बौद्धोंके शिल्पनैपुण्यका बहुत निदर्शन मिलते हैं। यहा एक प्राचीन दुर्ग भी है।

गुर्ण (सं० वि०) चेष्टित।

गुर्द (फा० पु०) गुर्दिस्तानका निवासी

गुर्दिस्तान (फा० पु०) फारसके उत्तरका एक प्रदेश इस प्रदेशका कुछ अंश आजकल रूमराज्यके अधीन है। इसे कुर्दिस्तान भी कहते हैं।

गुर्रो (हि० स्त्री०) भुनेहुए जो।

गुर्वङ्गना (सं० स्त्री०) गुरो रङ्गना, ६ तत्। गुरुपत्नी, गुरुकी स्त्री।

गुर्वादित्य (सं० पु०) गुरुणा सह आदित्यो यत्र, बहुव्रो०। योगविशेष। वृहस्पति और सूर्यके एक नक्षत्र और एक राशि पर मिलनेको 'गुर्वादियोग' कहते हैं। इस योगमें, यज्ञ, विवाह प्रभृति कार्य करना निषिद्ध है। ज्योतिषमें एक और दूसरा ही वचन है। '[illegible]' अर्थात् गुर्वादि योगमें दशदिन मात्र अकाल (कुसमय) रहता है, किन्तु संग्रहकारोंने विचार करके यह निश्चय किया है कि विभिन्न नक्षत्रमें अवस्थित वृहस्पति और रवि एक राशि गत होने पर दशदिन मात्र अयुक्त समय है, किन्तु एक नक्षत्रमें रहनेसे जब तक यह योग रहेगा तब तक अकाल माना जाता है। [illegible]

गुर्वर्थ (सं० त्रि०) गुरु गौरवान्वितोऽर्थो यस्य, बहुव्री०। १ जिसका प्रधान अर्थ हो, दुरवगाह व्याख्यायुक्त। २ समधिक प्रयोजन।

गुर्विणी (सं० स्त्री०) गुरुर्गर्भोऽस्त्यस्या गुरु इनि निपातनात् सिद्ध ततो ङीप्। सगर्भा, गर्भिणी, गर्भवती। गर्भिणी देखो।

गुर्वी (सं० स्त्री०) १ गर्भिणी, गर्भवती। २ गौरवयुक्त स्त्रीबोधक पदार्थ। ३ बड़ी वा श्रेष्ठ स्त्री। ४ गुवाक वृक्ष। ५ गुरुपत्नी। ६ गायत्री।

गुल (सं० पु० स्त्री०) गुड़ डस्य लः। इक्षुका विकार, अस्वच्छ गुड़। २ जलाया हुआ तम्बाकू। ३ कोयलेकी गोटी। ४ विस्फोटक, शीतला। ५ एक तरहका वृक्ष।

गुल (फा० पु०) १ गुलाबका फूल। २ फूल पुष्प। ३ शोर, हल्ला।

गुल—पञ्जाब प्रान्तके करनाल जिलेमें कैथल तहसीलकी छोटी तहसील। इसका क्षेत्रफल ४५५ वर्गमील है। यहा २०४ गाव बसते हैं। गुल गांवमें ही सदर है। मालगुजारी और सेस लगभग १ लाख २० हजार रुपया पड़ती है।

गुल अजायब (फा० पु०) १ एक प्रकारका पुष्प। २ एक पुष्पका पौधा।

गुल-अनार (फा० पु०) एक तरहका दाड़िमका वृक्ष।

गुल अब्बास (फा० पु०) अब्बास नामक पौधा। इसमें वर्षाकालके समय श्वेत या पीत रंगके पुष्प लगते हैं।

गुल अब्बासी (फा० पु०) कुछ काले रंग लिये एक प्रकारका लाल रंग। इस तरहका रंग चार छटांक गहायके फूल १ छटाक आमकी खटाई और आठ मासे नीलको संयोग करनेसे बनता है। इसमें यदि नीलका रंग बढ़ा दिया जाय तो एक तरहका किरमिजी रंग बन जाता है।

गुल अशर्फी (फा० पु०) एक प्रकारका पीले रंगका पुष्प।

गुलअंदर (फा०) गुलौर देखो।

गुल औरंग (फा० पु०) एक प्रकारका गेन्दा।

गुलक (सं० पु०) गुणल्हण, एक तरहकी घास।

गुलकन्द (फा० पु०) १ गुलाबी मिठाई। २ औरक। मिठाय, दूधकी बनी हुई मिठाई।

गुलगुटक (फा० पु०) कपड़े पर बेल बूटे छापनेका शीशमका बना हुआ एक तरहका ठप्पा।

गुलकार (फा० पु०) कपड़े पर बेल बूटे बनानेवाला कारीगर।

गुलकारी (फा० स्त्री०) १ बेल बूटे का काम। २ बेल बूटेदार काम।

गुलकेश (फा० पु०) १ मुर्ग केशका पौधा। २ मुर्ग केशका पुष्प।

गुलखैरू (फा० पु०) १ नीलरंग पुष्पवाला पौधा या उसका पुष्प।

गुलगचिया (फा०) गिलगिलिया देखो।

गुलगपाड़ा (अ० पु०) शोर-गुल, हल्ला।

गुलगीर (फा० पु०) बत्ती काटनेकी कैंची।

गुलगुल (फा० वि०) नरम, मोलायम, कोमल।

गुलगुला (हिं० पु०) १ मैदा और घृत या तेलसे बना हुआ एक तरहका पकवान। २ आंख और कानके मध्यका स्थान, कनपटी।

गुलगुलिया (फा० पु०) बंदर नचानेवाला, मदारी।

गुलगुली (हिं० स्त्री०) हिमालयके झरनोंमें पाये जानेवाली एक प्रकारकी मछली। यह प्रायः दो हाथ तक लम्बी होती है। इसके मांसमें बहुत कांटे रहते है।

गुलगोथना (हिं० पु०) कपोलका फुला हुआ मनुष्य, वह मनुष्य जिसका गाल फूला हो।

गुलचला (फा० पु०) गोलाचलानेवाला, तोपची।

गुलचाँदनी (फा० पु०) पुष्प लगनेवाला एक तरहका पौधा। यह पुष्प श्वेत रंगका होता और प्रायः रात्रि-कालमें ही खिलता है।

गुलचा (फा० पु०) प्रेमपूर्वक तथा धीरे धीरे गालों पर किया हुआ आघात।

गुलची (फा० पु०) बढ़इयोंका एक प्रकारका यन्त्र, जो रन्देकी तरह होता है।

गुलचीन (फा० पु०) कलमसे लगाये जानेवाला एक तरहका वृक्ष जो हर महिनामें फूलता है। इस वृक्षका पुष्प ऊपरसे श्वेत और भीतर कुछ पीले रङ्गका होता है। इस पुष्पमें केवल चार या पांच दल रहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस फूलका अधिक सुगन्ध लेनेसे पीनस रोग हो जाता है।

गुलछर्रा (हिं० पु०) भोगविलास या आराम जो स्वच्छन्दता और अनुचित रीतिसे किया जाय।

गुलजलील (फा० पु०) रेशम रङ्गानेका असबर्गका पुष्प। यह खुरासानमे उपजता है।

गुलजार (फा० पु०) १ वाटिका, बाग, उद्यान। (वि०) २ हराभरा, आनन्द और शोभायुक्त।

गुलजारीलाल—एक जैन कवि, इन्होंने 'आत्मविलास' नामक एक पद्य ग्रन्थ रचा था।

गुलझटी (हिं० स्त्री०) १ तागे आदिका लपेट जो बैठ कर गोलीके आकारकी हो जाती है। २ सिकुड़न, शिकन।

गुलझाड़ी (हिं०) गुलझटी देखो।

गुलञ्चकन्द (सं० पु०) गुलं गुड़ रसं अञ्चति अञ्च-अण्। गुलञ्च कन्दोऽस्य बहुव्रो०। कन्दविशेष, गुलकन्दा। इसका पर्याय—गुच्छाह्वकन्द, वलाह्वकन्द, और निघण्टिका है।

गुलतराश (फा० पु०) १ बत्ती काटनेकी कैंची। २ बत्ती काटनेवाला नौकर। ३ बागके पौधोंको कतरने या छांटनेकी कैंची। ४ पौधोंको छांटनेवाला माली। ५ प्रस्तर पर पुष्प पत्ती बनानेका एक तरहका यन्त्र।

गुलता (हिं० पु०) गुलेलमें छोड़े जानेवाली मिट्टीकी बनी गोली।

गुलतर्रा (फा० पु०) एक तरहका पुष्प, मुर्गेश, जटाधारी।

गुलथी (हिं० स्त्री०) जमे हुए पानीकी गुठली वा गोली।

गुलदस्ता (फा० पु०) १ कई तरहके सुन्दर पुष्प और पत्तोंका समूह जो एक साथ बंधे रहता है। फूलोंका गुच्छा। २ एक तरहका घोड़ा। ऐसे घोड़ेका अगला बाँया पैर गांठ तक श्वेत और दाहिने पैरका रंग पिछले शेष पादोंके रंगके जैसा होता है। इस तरहका घोड़ा दोषी नहीं समझा जाता।

गुलदाउदी (फा० स्त्री०) एक प्रकारका फूलका पौधा। (Chrysanthemum Indicum) कार्त्तिक मासमें इसमें फूल लगते हैं जो देखनेमें बहुत सुंदर होते हैं। वर्षाके पानीमें यह पेड़ नष्ट हो जाता है। इस लिये मनुष्य इसे गमलोंमें लगाकर छायामें रखते है। इस पौधेके पुष्पको भी गुलदाउदी कहते हैं।

गुलदाना (फा० पु०) गुलदस्ता रखनेका चीनी मट्टी या काँचका पात्र।

गुलदाना (फा० पु०) बुंदिया नामकी मिठाई।

गुलदार (फा० पु०) १ एक तरहका श्वेत रंगका कबूतर। इसके शरीर पर लाल या काले रंगके छोटे छोटे बहुतसे चिन्ह होते हैं। २ एक प्रकारका कशीदा।

गुलदावदी (फा०) गुलदाउदी देखो।

गुलटुपहरिया (फा० पु०) १ दो हाथ ऊंचाईका एक प्रकार का पौधा। इस पौधेकी पत्तियां लम्बी और कटावदार होती है। २ इसी पौधेका कटोरेके आकारका पुष्प जो गहरे लाल रंगका होता है। यह पुष्प सूर्यके ऊपर आने पर खिलता है।

गुलदुम (फा० स्त्री०) बुलबुल।

गुलनरगिस (फा० स्त्री०) एक तरहकी लता।

गुलनार (फा० पु०) १ अनारका पुष्प। २ अनारके पुष्प के जैसा लाल रंग। ३ एकतरहका फलहीन अनार वृक्ष। इसमें सिर्फ बड़े बड़े सुन्दर पुष्प ही लगते हैं।

गुलपपड़ी (फा० स्त्री०) एक तरहकी मिठाई जो पपड़ी भी कही जाती है।

गुलप्यादा (फा० पु०) सदा गुलाब, जिसमें सुगन्ध कम होता है।

गुलफानूस (फा० पु०) एक प्रकारका बड़ावृक्ष। यह सिर्फ शोभाके लिये लगाया जाता है।

गुलफिरकी (फा० स्त्री०) गुलाबी रंगके पुष्प लगनेवाला पौधा।

गुलफिरिङ्गि (फा० स्त्री०) एक तरहका फूलका पौधा। (Venca rosea)

गुलफुंदना (हि० पु०) खेतोंमें उगनेवाली एक तरहकी घास।

गुलबकावली (फा० स्त्री०) १ हलदी पेड़, एक प्रकार का पेड़। यह नर्मदा नदीके उद्गमके निकट अमर-कटकके वनमें होता है। २ इसी पौधेका श्वेत और सुगन्धित फूल। आंख आने पर यह फूल पीस कर लगाया जाता है।

गुलबक्सर (फा० पु०) नकामके खेलमें जीतकी बाजी।

गुलबदन (फा० पु०) एक प्रकारका धारीदार बहुमूल्य रेशमी वस्त्र। प्राचीन कालमें यह सिर्फ काशीमें बनता था, किन्तु आज कल पञ्जाबके कई नगरोंमें भी प्रस्तुत होने लगा है।

गुलबर्ग—हैदराबाद राज्यके दक्षिण पश्चिम कोणका डिवि जन। इसको दक्षिण विभाग भी कहते हैं। यह अक्षा० १५ ११ तथा १८ ४०´ उ० और देशा० ७५ १६ एवं ७७ ५१ पू० मध्य अवस्थित है। इसके पश्चिम तथा दक्षिण क्रमश बम्बई और मन्द्राज प्रेसीडेन्सी पड़ती है। क्षेत्रफल १६५८५ वर्गमील और लोकसंख्या प्राय ४६२८३४ है। इसमें ४ जिले लगते हैं। ३२ शहर और ५६५२ गांव है।

गुलबर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलबर्ग डिविजनका जिला। इसके उत्तर उसमानाबाद तथा बटर, पूर्व अतराफ बल्दा एवं महबूब नगर, दक्षिण महबूब नगर, राय चुर तथा लिङ्गसुगूर और पश्चिम उसमानाबाद बीजापुर तथा बम्बई प्रान्तका अक्कालकोट राज्य लगा है। गुलबर्ग जिला अक्षा० १६ ४०´ एवं १७ ४४ उ० और देशा० ७६ २२´ तथा ७८ २० पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्र-फल ४०८२ वर्गमील है। उत्तरसे दक्षिणपूर्वको पहाड़ चला गया है। जमीन उत्तरसे दक्षिण और दक्षिणपूर्वको ढालू है। नदियां कई एक हैं। सिवा पहाड़के दूसरी जगह जङ्गल नहीं। आबहवा कहीं ठण्ढी कहीं गर्म है।

मुसलमानोंके अधिकारसे पहले गुलबर्ग जिला वरङ्गलके काकतीयोंका शासनाधीन था। ई० १४वीं शता-ब्दीके आदि भागको मुसलमानोंने उसे दिल्लीकी बादशा हतमें मिलाया। फिर यह बहमानी और बीजापुरका राज्य भुक्त हुआ। इसके बाद वह फिर दिल्लीकी बादशा हतमें लगा और हैदराबाद राज्य प्रतिष्ठित होने पर अलग हुआ। इसमें कई एक मशहूर किले और ११०८ शहर और गांव हैं। लोकसंख्या प्राय ७४२७४५ है। लोग कनाडी तैलगु, उर्दू और मराठी भाषा बोलते हैं। प्रधान खाद्य जुवार है। पशु बलिष्ठ हैं। १२६ वर्गमील जङ्गल है। खानसे पत्थर निकलता है। सूती और रेशमी साड़ियां, जरदोजी कपड़ा, मामूली सूती कपड़ा और सूत तैयार किया जाता है। शहरिये कम्बल बहुत अच्छे बनाते हैं। दो एक कपास ओटने और कपड़े बनानेके पुतलीघर भी हैं। जुवार, बाजरा आदि अनाज, दाल, चमड़ा रूई, गुड़ तेलहन, तम्बाकू और तरवरके वल्कलकी रफतनी होती है। ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे और निजा मकी गारण्टीड ष्टेट रेलवे चलती हैं। ७८ मील सड़क है। यह जिला ३ सब डिविजनोंमें बंटा है। बुरे समयमें मवेशियोंकी चोरियां और डकैतियां बढ़ जाती हैं। १८७३

ई०को गुलवर्ग जिला हुआ। मालगुजारी कोई १७ लाख ४० हजार है। शिक्षा बहुत कम है।

गुलवर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलवर्ग जिलेका दरमियानी तालुक। इसका क्षेत्रफल ६७४ वर्ग मील और लोकसंख्या प्रायः १०३०५१ है। एक शहर और १४५ गांव आबाद हैं। मालगुजारी लगभग २ लाख ८० हजार रुपया है। जमीन काली है।

गुलवर्ग—हैदराबाद राज्यके गुलवर्ग डिविजन और जिले-का पुराना शहर और सदर। यह अक्षा० १७° २१' उ० और देशा० ७६° ५१' पू०में पड़ता है। आबादी कोई २८२२८ है। पहले वह हिन्दुओंका बड़ा नगर था। १३४७ ई०से अहमद शाह वालीके शासन कालतक यहां बहमानी राजधानी रहा, फिर बहमानी राजाओंकी इमारतें और मसजिदें गिर गयीं। यह काली जमीनके मैदानमें बसा हुआ है। १८७४ ई०के लगभग एक डिविजनका सदर होनेसे इसने तरक्की पायी। आजकल यहां सूबेदारका महल, बहुतसी सरकारी और अहल-कारोंकी इमारतें, सेण्ट्रल जेल, लोगोंकी हवाखोरीका बाग, एक बड़ा तलाव, एक लंबा चौड़ा बाजार, स्कूल, डाकखाना, दूसरे पबलिक दफ्तर और सूत तथा कपड़े-के पुतलीघर हैं। ग्रेट इण्डियनपेनिनसुला रेलवेका ष्टेसन शहरसे २ मील दूर है। वाणिज्य व्यवसायकी बड़ी धूम रहती है। उत्तर-पश्चिमको पुराना किला है। परन्तु उसकी दीवारें, दरवाजे और इमारतें बिगड़ गयी हैं। बाला-हिसार दुर्ग अभी अच्छा है। पुराने किले-की मसजिद, जो पूरे तौर पर नहीं बनी, खूब लम्बी चौड़ी है।

गुलबादला (फा० पु०) एक तरहका पेड़, उदल। इसके रेशेसे मोटे रस्से बनते हैं।

गुलबूटा (फा० पु०) बेल बूटा नकाशी।

गुलबेल (फा० स्त्री०) एक तरहकी लता।

गुलभकमल (फा० पु०) एक प्रकारका पुष्पका पौधा। (Gomphienaslobosa)

गुलमस्त (फा० पु०) औषधविशेष।

गुलमा (फा० पु०) बकरीकी अंतड़ी, दुलमा, लगूचा।

गुलमुहम्मद खाँ—दिल्लीके एक मुसलमान कवि। इनका उपनाम नातिक था। उन्होंने जौहर-उल्-मुय्यजुम नाम-की किताब लिखी है। १८४८ ई०को इनका मृत्यु हुआ।

गुलमेंहदी (फा० स्त्री०) एक प्रकारका पौधा जो आश्विन मासमें फूलता है। इसके पुष्प कई रंगके होते हैं। (Impatiens balsamina)

गुलमेख (फा० पु०) गोलसिरका एक प्रकारकी कील। फुलिया।

गुलरेज (फा० पु०) आतिशबाजीकी फुलझड़ी।

गुललाला (फा० पु०) पोस्तेके पौधेके सदृश एक प्रकार-का पौधा। इसके पुष्पको भी गुललाला कहते हैं जो बहुत सुन्दर और कोमल दीख पड़ते हैं।

गुलशकरी (फा० स्त्री०) एक प्रकारकी गुलाबी मिठाई।

गुलशन (फा० पु०) उद्यान, वाटिका फुलवारी बाग।

गुलशन—फारसी भाषाके एक गुप्त कवि। यह उनका उपनाम है, प्रकृत नाम शेख सैंद-उल्लाह था। कुछ दिनों वह दिल्लीमें रहे और कोई १००००० गजलें छोड़ चले। यह शाह अब्दुल अहद सरहिन्दीके चेले थे और उनके मक्का तीर्थ करने भी गये थे। १७२८ ई०को इन-का मृत्यु हुआ।

गुलशन पीर—हिन्दी भाषाके एक पञ्जाबी कवि।

"यहां कोई लगबाय नजर न आंबा किशन प्रान सुनावां।
ममशो मुराश आते पुरियानो मैं यों चलो गुलशन पीर मनावां॥"

गुलसब्बो (फा० पु०) १ एक प्रकारका पौधा जो लहसुनके पौधे जैसा होता है। इसका हिन्दी पर्याय रजनीगंधा, सुगंधरा वा सुगंधिराज हैं। २ इसी पौधेका श्वेत और सुगन्धित पुष्प। ३ एक खेल जो टोप बुझाकर खेला जाता है।

गुलसुम (फा० पु०) सोनारोंका एक यन्त्र यह नकाशने और फूल आदि बनानेके काममें आता है।

गुलसौशन (फा० पु०) हलके आसमानी रंगका एक प्रका-रका पुष्प। यह पुष्प सिर्फ फारसमें होता है।

गुलहजारा (फा० पु०) एक प्रकारका गुलगुला।

गुलहथी (फा० स्त्री०) गुलथी देखो।

गुला (सं० स्त्री०) गुलः गुड़ इव रसोऽस्त्यस्याः। गुल, सुही वृक्ष।

गुलाब, या गुलाबफूल—स्वनाम प्रसिद्ध एक पुष्पविशेष।

गुलाबके संस्कृत नाम—शतपत्री और पाटलि, आरब-बर्द, पारसी—गुल, चीन थि सि, सियाबे, मुटकाई ह्वा, कोचीन चीन होयाटुड तो, ग्रीक रोडोन, रुष—रोजा, ओलन्दाज रुस् अङ्गरेजी—रोज (Rose), मलय—मवर तामिल—गुलाप्पु, तेलङ्ग—रोजायुवो, गुलपुवो। Rose Centifolia या मिरिया देशका गुलाब-वृक्ष। संस्कृत भाषामें इसे शतपत्री, हिन्दीमें करम कल्ला या कठ गुलाब और अङ्गरेजीमें कैब्बेज रोज (Cabbage Rose) कहते हैं। यूरोपमें, भारतमें सर्वत्र, पारस्य और चीन देशमें इसकी पैदायश होती है। इसी फूलसे गुलाब-का पतर और एसेन्स बनता है। भारतमें इसी फूलसे 'गुलकन्द' बनता है। गुलकन्द खानेमें अत्यन्त सुस्वादु और पित्त शान्त करता है।

इसके पानीको गुलाब जल कहते हैं। इस फूलकी मधुर सुगन्धिसे सब ही का मन मोहित होता है, इसीलिये इसका विशेष आदर है। गुलाबके पेड़की डाली अत्यन्त कांटेदार होती है। पत्ते चिकने होने पर भी उनके किनारे नोकदार खरखरे होते हैं। भारतमें यह फूल घरमें, बगीचेमें और जङ्गलोंमें सर्वत्र पैदा किया जा सकता है और देखनेमें आता है। काश्मीर, लाहुल और भूटान जङ्गलोंमें पीले रङ्गके गुलाब अपने आप पैदा होते हैं। लाधमें समुद्रपृष्ठसे ११००० फीट ऊंचेमें पीले रंगके बड़े बड़े गुलाब देखनेमें आते हैं। चीनमुल्कमें भी ऐसे पीले गुलाब देखे जाते हैं। यह पेड़ दूसरे गुलाबके वृक्षोंसे बड़े और लता-जैसे होते हैं इसी लिये हमारे देशमें इस वृक्षको बोते समय चारो ओर खपचें लगा देते हैं। अङ्गरेज लोग इस फूलको "मासिलनील" कहते हैं। इसका गुच्छा बड़ा आदरणीय और भेंट देनेके काम होता है।

साधारणतः १९ अक्षांशसे ३० अक्षांशके भीतर यह वृक्ष उपज सकता है। सूखी जमीन या मिट्टीमें अगर यह वृक्ष बोया जाय, तो अच्छी पैदा होते हैं। यूरोपके उत्तरांशमें सिर्फ इकहरी पापड़ीवाला फूल पैदा होता है। परन्तु इटाली, ग्रीस और स्पेन आदि देशोंमें बहुत पापड़ीवाले फूल काफी पैदा होते हैं।

Rose Glandulifera—पञ्जाबमें इसे गुल शेवती या शेवती कहते हैं।

हिमालय प्रदेशमें समुद्रपृष्ठसे ४५०० से १०५०० फीट ऊंचो जगहमें एक तरहका गुलाब (Rose Macrophylla) पैदा होता है। इसका फल जब पक कर काला हो जाता है, तब लोग उसे खाया करते हैं। यह खानेमें बड़ा मधुर और मीठा होता है।

पञ्जाबमें और हिमालयसे ५०००से ८५०० फीट ऊंची जमीनमें Rose webbiana नामका गुलाब होता है। इसका भी फल खानेमें मीठा और आदरणीय होता है।

फूल और बीज बेचनेवालोंके सूचीपत्रमें अब सैकड़ों तरहके गुलाबोंके नाम देखनेमें आते हैं। उनमेंसे (१) बसोरा या पारस्य देशका उत्पन्न एक तरहका गुलाब, (२) स्थायीगन्ध दामास्क जातीय, (३) स्थायीगन्ध, मिश्रजातीय (इङ्गलैण्डमें इस फूलका विशेष आदर है), (४) बुर्बुर्देशका गुलाब, (५) चीनिया गुलाब, और (६) चायकी गन्धयुक्त,—ये ही गुलाब प्रसिद्ध हैं। इसके सिवा जितने नामधारी गुलाब हैं, वे सब इन्हीं ६ श्रेणि-योंमें शामिल किये जा सकते हैं।

गुलाब फूल जैसा मनोहर है, उसका अतर और जल भी उतना ही प्रिय और उम्दा होता है। गुलाबका फूल मनुष्यका प्रिय है, इसलिए उसकी पैदायश भी खूब की जाती है और इससे लाभ ज्यादा होनेके कारण गुलाबके पैदायशके लायक जमीनकी कीमत भी ज्यादा है। इटालीमें कैनि नामक तरहटीमें गुलाबके कुछ खेत हैं। उनमें प्रत्येक बीघाका मासिक लाभ तीन सौ रुपये है वहां प्रति वर्षमें अढ़ाई लाख रुपयेके सिर्फ गुलाब फूल ही पैदा होते हैं। गाजीपुरमें भी ऐसे गुलाबके खेत हैं। गाजीपुरमें गुलाबकी खेतीके लिए साढ़े चार सौ बीघा जमीन मौजूद है। वह भी छोटे छोटे खेतोंमें विभक्त है। प्रत्येक खेतके चारों तरफ कांटोंकी झाड़ी और मिट्टीकी दीवार लगी हुई है। प्रत्येक बीघा पर ५ रु०के हिसाबसे कर और इसके अलावा १ हजार पेड़ पर २५) रु० और भी लिया जाता है—इस प्रकार कुल ३०) रुपये जमींदारोंको मिलते हैं। प्रति बीघामें ८) और भी खर्च पड़ता है। जलवायु और उत्तापके अनुकूल होनेसे उन एक हजार वृक्षोंसे लाखसे भी अधिक फल

होते है। आजकल एक लाख फूलोंका दाम ६०) से १००) तक है। इस पर भी कृषकोंको किसी तरहका नुकसान नहीं। फाल्गुनमासके अन्तमें गुलाबकी पैदायश होती है। उन दिनोंमें कृषक प्रातःकाल ही उठ कर स्त्री पुत्रोंको साथ ले फूल तोड़ने जाते हैं। उन फूलोंका व्यवसायी लोग खरीदकर उनसे गुलाब-जल और अतर बनाते हैं।

गुलाबकी कलम बनानेके नियम—पेड़की डालीको काट कर या कलम बाँध कर कुछ ऊंची मिट्टीमें गाड़ देनेसे लता उत्पन्न होती है। ज्यादा पानी देनेसे तथा सूखी जमीनमें कलम उत्पन्न नहीं होती। वर्षातमें अधिक पानी बरसनेके कारण जड़ गल जाती है। इसलिए कलम ऐसी जगह लगानी चाहिये जिससे उसकी जड़में पानी न जम सके। गरमियोंमें ज्यादा घाम होनेसे सूख न जाय, इसलिए कुछ कुछ पानी देते रहना चाहिये। इसके सिवा मार्चके महीनेमें इस वृक्ष पर एक तरहका कीड़ा बैठता है, जो पत्तोंको खाता रहता है। यह कीड़ा वृक्षके लिये बहुत अनिष्टकर है और तो क्या, इससे पेड़ सूख तक जाता है।

किसी किसीका कहना है कि, सूखे पत्तोंको जला कर मिट्टीके साथ मिला देनेसे एक तरहका सार बनता है। कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि, घासके छोटे छोटे टुकड़े करके उसको तवा पर सेक कर मिट्टीमें मिलानेसे अच्छा सार बनता है। अगर महीने महीने फूल उत्पन्न करनेकी इच्छा हो,तो पेड़को छाँटनेसे पहले जड़में ज्यादा मिट्टी लगा कर जमीनसे पेड़को उखाड़ लेना चाहिये। बादमें जब तक उस पेड़के तमाम पत्ते न झड़ जाँय, तब तक उसमें पानी न देना चाहिये। पत्तोंके झड़ जाने पर उस पेड़को पुनः मिट्टीमें गाडकर उसमें उतना पानी देते रहना चाहिये, जिससे कि, वह उठे। फिर उसकी डाली छाँट कर थोड़ा थोड़ा पानी देते रहना चाहिये। ऐसा करनेसे छह सप्ताहमें फूल लगने लगेंगे। गुलाबका पेड़ साल साल भरमें उखाड़ कर गाड़ते रहनेसे अच्छे फूल पैदा होते हैं। यदि पेड़को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना चाहो, तो वर्षातके बाद अक्टोबर मासमें जड़की सब मिट्टी इकट्ठी करके २।३ सप्ताह तक जड़ निकाल रखनी चाहिये, पीछे गोबरके साथ नवीन मिट्टी उस स्थानमें देनी चाहिये। इससे वृक्ष पहलेकी तरह हरा-भरा और फूलोंवाला हो जायगा।

दिसम्बर और जनवरीमें गुलाब-वृक्षकी जड़ साफ करनेसे पेड़ खूब हरा भरा हो जाता है। उस समय उस पेड़की जड़से मिट्टी निकाल कर १ फुटकी दूरी पर चारो तरफ ऊंची मेंड़सी बनानी चाहिये फिर उस मेंड़के भीतर एक पला नया गोबर डाल कर ऊंचेसे पानी डालनेसे, गोबरका पानी सहज ही मिट्टीमें घुस जायगा, यह पानी सारका काम करेगा अथवा कच्चा गोबर डाल देनेसे भी सारका काम चल जायगा।

जमीनमें गड़े हुए पेड़ोंसे जैसे फूल उत्पन्न होते हैं, टबमें गड़े हुए वृक्षोंसे वैसे नहीं होते। इस देशमें अधिकांश लोग टबमें ही गुलाब लगाते हैं। अक्टोबर मासमें टबकी मिट्टीमें खार मिला देनेसे, एक माहमें अच्छे फूल पैदा होते हैं।

कोई कोई ऐसे भी कलम बांधते हैं,—किसी एक पात्रमें सार वाली मिट्टी भर कर उसे जमीनमें गाड़ देते है, बादमें उसमें नियमके अनुसार फर्वरी मासमें कलम बाँध कर जमीनमें गाड़ देते हैं। फिर उस कलमके ऊपर दूसरे एक पात्रको आधी मिट्टी और आधा पानीसे भर कर रख देते हैं। उस पात्रका पानी क्रमशः चूकर कलमको हर वख्त भिजोता रहता है। वर्षातसे पहले उस कलमको काट कर गाड़ देते हैं।

यदि डालियोंको काट कर चारा बांधना हो तो नवम्बर मासमें डाली गाड़नी चाहिये। क्योंकि मार्चमासमें थोड़ी जड़ निकलती है, इस लिये उस समय उखाड़ कर टबमें लगा सकते हैं। गुलाबकी डाली वर्षातमें गाड़नेसे जल्दी जड़ निकलती है। डालीसे जल्दी पेड़ उत्पन्न करना हो, तो पत्थरके कोयलेकी चूरके साथ तिहाई हिस्सा बालूको मिलाकर उसमें डाली गाड़नेसे जल्दी जल्दी पेड़ बढ़ता है और फूल भी खूब लगते हैं। उक्त मिली हुई मिट्टीमें पुराने पेड़को जड़ काटकर कलम बनानी चाहिये, उस कलमको टबमें रख, मिट्टीको ऊपर रख कर उस कमलके ऊपर एक कांचका ढक्कना रख देना चाहिये।

बोतलमें पानी भरकर उसमें गुलाबकी कलम लगाई जा सकती है। इसकी प्रणाली बहुत ही कठिन है। जिस नरम डालीमें पुष्प गिरा हो, इस प्रकारकी नरम एक या दो डालीको काटकर शीत ऋतुमें बोतलमें लगाना चाहिये। बोतलके पानीको साफ रखना चाहिये। रोज पानी बदलते रहना ही उचित है, नहीं तो डाली सड़ जानेकी सम्भावना रहती है। उन बोतलोंको घरके उत्तरकी तरफ या पर्देकी ओटमें ऐसी जगह रखना चाहिये जिससे उसमें सूर्यका प्रकाश और हवा जरा भी न लगने पावे। अथवा बिना ढक्कनके एक बकस उस बोतल पर रख कर सूर्यके उत्तापमें रख देना चाहिये। इसके लिए कमसे कम १० आउन्सकी बोतलकी जरूरत होगी।

एक गुलाबके प्रेमी उद्भिद्‌वेत्ताका कहना है कि एक सालकी पुरानी डालीके एक फुटके नापसे काटनी चाहिये। प्रत्येक डालीको गाड़नेकी तरफ समभावसे कलीकी गांठके पास काटना चाहिये, और ऊपरका भाग कलमकी तरह बनाना चाहिये और उसकी दो एक कलियोंके सिवा और सबको काट देना। चाहिये बाद को माघके महीनेमें ८ इञ्च ऊंची जगह पर वह कलम गाड़ देनी चाहिये, और उसकी जड़ मिट्टीसे ढक देनी चाहिये। सुलाई और अगस्त मासमें यह कलमी पौधा फूल देने लगता है। इसके बाद ऊंची जगहकी समतल करके पौदेकी जड़ जो मिट्टीके भीतर थी उसे निकाल देना चाहिये। ऐसा करनेसे वह पौधा जड़से दो तीन इञ्च ऊंचाईसे ही फूल देने लगता है।

साधारणतः लोग जिस रीतिसे गुलाबकी कलम बनाते हैं, उसके नियम यह हैं—जहां पानी न जम सके, ऐसी जगहमें एक फुट अन्तर पर कुछ गड्ढे खोद करके उसमें सारयुक्त मिट्टी दे कर झुका झुका कर पौधे गाड़ते हैं। फिर उन गड्ढोंको सिर्फ मिट्टीसे ढक देते हैं। दिनमें उन पर सूर्यकी रोशनी न पड़ने पावे, इस लिये उसके ऊपर फूस आदिका छप्पर डाल देते हैं, और रातको उसे उठा लेते हैं।

कहीं कहीं ऐसा भी देखनेमें आया है कि फूलमें केशर और पखड़ियोंका भी कुछ कुछ परिवर्त्तन हुआ है। गुलाबका पेड़ खूब नरम मिट्टीमें गाड़नेसे



गुलाबके फूलके भीतरसे डालीका निकलना।

कभी कभी उसके फूलमें केशर न पैदा हो कर डाली उत्पन्न हो जाती है।

ग्रीक लोगोंके प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है कि गुलाबका फूल डियनिसास देव और अफ्रोडाइट् (Aphrodite) नामक देवीकी अतिप्रिय वस्तु है। पुराने रोमक भी गुलाब उत्सव करते थे, उसका नाम रोसालिया (Rosalia) था। माकिदनमें मिदासका गुलाबका बगीचा पहिले बहुत प्रसिद्ध था वह स्थान अब भी वर्त्तमानके बुलगेरिया नगरमें है। अभी तक बुलगेरियाका गुलाबका अतर जगत् प्रसिद्ध है। पहिले भारतमें भी गुलाबका खूब आदर था, संस्कृत ग्रन्थोंमें शतपत्रीके नामसे गुलाबका उल्लेख पाया जाता है। आत्रेय संहितामें लिखा है—

"शतपत्री तु गन्धाढ्या सौम्यगन्धा शिवप्रिया।
सुशीता च सुरक्ता च सुमना शतपत्रिका॥
शतपत्री हिमा तिक्ता मारदा रोचनी लघुः।
दाहघ्नी वातपित्तघ्नी कुष्ठविस्फोटनाशिनी॥"

शतपत्रीकी दूसरी संस्कृत पर्याय ये हैं—गन्धाढ्या, सौम्यगन्धा, शिवप्रिया, सुशीता, सुरक्ता, सुमना और शतपत्रिका। गुलाबका फूल शीतल, तिक्त, मारक, रोचक, वायुनाशक, दाहनाशक, रक्त, पित्त, कुष्ठ, और विस्फोट नाशक होता है। इस देशके वैद्योंका विश्वास है कि शतपत्री नाम सेवती फूलका है। गुलाब और सेवती दोनों भिन्न भिन्न पुष्प हैं। शतपत्रीका अपभ्रंश सेवती हो सकता

है, और पञ्जाबमें अब भी गुलाबको शेवती ही कहते हैं। शिवप्रिया, शिववल्लभा आदि शब्दोंसे ऐसा ज्ञात होता है कि, पहिले गुलाबका फूल भी शिवका प्रिय था। वास्तवमें शतपत्रीके कहनेसे प्रधानतः पाटलवर्णके गुलाबका और कठगुलाबका बोध होता है। इसको अंग्रेजीमें Damask rose (Rosa Damascena) और Hundred-leaved rose (Rose Centifolia muscosa) कहते हैं। पुराने पारसी ग्रन्थोंमें गुलाबको विशेष प्रशंसा लिखी है।

अरबी और पारसी ग्रन्थोंमें नर्द एल् हमक (अर्थात् बाहरमें पीला और भीतरमें लाल गुलाब। टालिक (Dog rose) आदि पाँच तरहके गुलाब फूलोंका वर्णन पाया जाता है।

प्रसिद्ध पदार्थतत्त्ववित् लिनिने १२ प्रकारके गुलाब और उससे ३२ प्रकारकी औषध बननेका वर्णन किया है।

इस देशमें इस समय नाना प्रकारके गुलाब देखनेमें आते है। गुलाबकी पखुड़ियां बालकोंके लिए मृदुविरेचक (साधारण दस्तावर) औषध रूपमें व्यवहृत होती है।

हकीमी किताबोंमें गुलाबसे बननेवाली कुछ उपादेय वस्तुओंका उल्लेख मिलता है, उनके नाम ये हैं,— दुहनो-वरद-ए-खास, दुहनो-वरद-ए-मतवुख, गुलकन्द, गुलङ्गबिन, गुलाब-जल और गुलाबका अतर।

गुलाबके पत्तोंको चन्दनके तेलमें डालकर उसे घाममें सुखा कर चुआनेसे जो खुशबूदार तेल निकलता है उस तेलको दुहनो-वरद-एखास कहते हैं। इसी प्रकारसे जो भट्टी पर चढ़ाकर चुआया जाता है, उसे दुहनो-वरद-ए- मतवूख कहते हैं। हकीमोंके मतानुसार इन दोनों तेलोंके गुण ये हैं—यह मृदुविरेचक, सङ्कोचक और क्लेद (मवाद)का नाशक है। ऐसा ज्वार जिसमें कि प्राण बचनेका संशय हो शरीरमें प्रविष्ट होनेसे इसका सेवन करना चाहिये। यह बहुत फायदा पहुंचता है।

गुलाबकी सूखी पखुड़िया और मिश्री—दोनोंको आधी आधी मिला कर पीसनेसे गुलकन्द बन जाता है। भारतमें नाना स्थानोंमें हिन्दू और मुसलमान, बूढ़े और जवान, स्त्री और बालक—सब ही गुलकन्द खाना पसन्द करते हैं। प्रसिद्ध मुसलमान हकीम इवनसिनके सिद्धान्तानुसार—गुलकन्द बल और मेदको बढ़ानेवाला होता है। उन्होंने सिर्फ गुलकन्दको खिला कर यक्ष्मा रोगसे पीड़ित एक स्त्रीको आरोग्य कर दिया था। भारतमें बहुतसे लोग भाँगके साथ भी गुलकन्द खाया करते हैं। इसी गुलकन्दमें शहद मिलानेसे गुलङ्गबिन बन जाता है। उसके गुण भी गुलकन्द जैसे है।

गुलाब या गुलाब अ॰—गाजीपुरमें गुलाबसे इस प्रकार अतर बनाया जाता है। जिसमें एक मन पानी आ जाय ऐसा एक तांबेका पात्र (डेगची) होता है, जिसका मुंह सुराई सरीखा लम्बा होता है। उसके ऊपर तसला सरीखा एक तांबेका पात्र रहता है, उसके एक बगलमें एक छोटा छेद रहता है। उस छेदके मुंह पर एक बांसकी नली लगा कर, उसका नीचला हिस्सा भवका नामक पात्रसे जोड़ दिया जाता है। नलीसे भाफ निकलने न पावे, इस लिये नलीको रस्सीसे अच्छी तरह बाँध कर उस पर मैदा थोप दी जाती है। भवकाके भीतर ज्यादा गरम होनेकी सम्भावना है इस लिये वह पात्र पानीमें डुबा कर रखा जाता है। इस प्रकार जब वकयन्त्र (एक खास तरहका वाष्पयन्त्र) तयार हो जाय, तब उस डेगचीमें पानी और गुलाबके पत्ते छोड़ कर उसे चूल्हे पर चढ़ा देना चाहिये। अग्निके उत्तापसे पानी उबलता रहता है और उसकी भाफ जिसमें कि सुगन्धिके परमाणु रहते हैं, बांसकी नलीके द्वारा उस भवका नामक पात्रमें पहुंचती है। उस पात्रमें भाफ पहुंचते ही जल रूपमें परिणत हो जाती है, क्योंकि, वह पात्र ठण्डे पानीमें डूबा हुआ रहता है। इसीको हम लोग गुलाब या गुलाबजल कहते हैं। एक हजार गुलाबके फूलोंसे एक सेर गुलाब-जल जो बनता है, वही सबसे श्रेष्ठ है। इससे भी उत्कृष्ट गुलाब जल बनाना हो तो दस हजार गुलाबोंमें यथेष्ट जल मिला कर आध मन गुलाब-जल बनाना चाहिये, फिर आठ हजार गुलाबके फूलोंमें आध मन गुलाबजल मिला कर १८ अठारह सेर गुलाब-जल चुआना चाहिये। चुआए जानेके बाद २०, २५ दिन धूपमें रखना चाहिये, क्योंकि ऐसा करनेसे

गुलाबके खुशबूका अंश अर्थात् अतर पानीमें अच्छी तरह मिल जाता है, नहीं तो ऊपर ही अतर तैरता रहता है और इसीसे उसकी खुशबू भी स्थायी नहीं रहती। आज कल बाजारोंमें जो गुलाब जल बिकता है, वह एक हजार फूलोंसे दो सेर बनता है। बहुतसे दूकानदार तो अतरके बचे हुए पानीमें जरासा चन्दनका अतर मिला कर उसे ही बढ़िया गुलाब जल कह कर बेचा करते हैं। गाजीपुरमें करीब चालीस जगह गुलाब बनता है, वहाँ गुलाबजलमें खर्च बाद देकर करीब ४० हजार रुपये लाभ होते हैं। इस देशमें गुलाब जल बनाते समय फूलके डण्ठल नहीं तोड़ते, इस लिये उसकी खुशबू भी ज्यादा दिन नहीं रहती, शीघ्र ही खट्टापन आ जाता है। अतएव गुलाब जलको सुगन्धि बहुत दिनों तक स्थायी रखनेवालोंको चाहिये कि, फूलोंके डण्ठल तोड़ कर गुलाब जल बनावें।

अतर बनानेका नियम—गुलाब जलकी तरह इसमें भी तांबेको डेगचीमें फूल और पानी रखकर उबालना पड़ता है, और उसमेंसे भाफ चूकर भवका पात्रमें आती है। इस प्रकारसे जब तमाम पानी जल जाय, तब उस भाफको एक चपटी डेगचीमें ढाल कर उसका मुंह मोटे कपड़ेसे बांध देना चाहिये। बादमें २ हात नीचा जमीन खोद कर उसे ठण्डकमें गाड़ देना चाहिये। सारा रात गड़ी रहनेसे, उस पानीके ऊपर तेल सरीखा अतर तैर निकलेगा। रातमें जितनी ठण्ड पड़ेगी, उतना ही ज्यादा अतर निकलेगा। इसलिये हेमन्त और शीतऋतुमें अतर बनाना चाहिये। सुबह उस तैरते हुए अतरको निकाल कर शीशेमें रखना चाहिये, और फिर घाममें सुखा लेना चाहिये। पहले पहल वह अतर देखनेमें कुछ कुछ हरा सा दीखता है। फिर कुछ दिन बाद असली अतरका वैसा रङ्ग नहीं रहता असली अतर एक सप्ताहके भीतर भीतर कुछ पीला हो जाता है। यही सबसे श्रेष्ठ है। ऐसा अतर एक लाख गुलाबोंसे एकही तोला बनता है और समय समय पर ८०) से १०८) तोले तक बिकता है। ऐसा बहुमूल्य अतर सहजमें नहीं मिलता। बाजारोंमें जो अतर सबसे उत्कृष्ट कह कर बिकता है वह भी इससे बहुत निकृष्ट है।

बजारू अतर ऐसे बनता है,—जिस पात्रमें भाफ आकर जमती है, उसमें पहिले होसे चन्दनका तेल रखा रहता है। सुगन्धयुक्त भाफ पात्रमें भवका पात्रमें आते ही उसका गन्धांश चन्दनके तेलके साथ मिल जाता है, और भाफ अलग हो जाती है। इस प्रकार थोड़ेसे गुलाबसे बहुतसा चन्दनका तेल सुवासित हो जाता है, और वही गुलाबका अतर कह कर बाजारोंमें बेचा जाता है। बेला, चमेली जूही, केवड़ा आदिके अतर भी ऐसे ही बनते हैं। इस प्रकार चन्दनके तेलसे दूसरोंकी सुगन्धि घुसेड़ कर मिश्र अतर बनता है। विलायतमें अतर अग्निके उत्तापसे नहीं चुआया जाता। वहाँ गुलाबके ऊपर साफ चर्बी बिछाकर उसके ऊपर ताजे फूल रखदेते हैं, इससे फूलोंकी खुशबू चर्बीमें मिल जाती है। इसी प्रकार १५—२० बार फूल रखकर बादमें चर्बीको सुरासार (शराब या तेजाब) में घोल कर रख देते हैं, इससे चर्बीकी सुगन्धि सुरासारमें आ जाती है, और चर्बी अलग हो जाती है। इससे बहुत बढ़िया असली अतर बनता है।

ऐसा प्रवाद है कि—सुप्रसिद्ध नूरजहान बेगमने १६१२ ई०में सबसे पहले अतरका आविष्कार किया था। सम्राट् जहांगीरके साथ उनके विवाहके समय गुलाब जलका स्रोत बहा था, बगीचेके नालेमें गुलाब जलके ऊपर तेल सरीखा कुछ तैरते देख नूरजहानने उसे संग्रह करनेका हुक्म दिया। तब ही से फिर अतर बना था।

बम्बईमें गुलाबकी सूखी पखुड़िया ३) रु० सेर बिकती है।

गुलाब—हिन्दीके एक कवि। कविताका नमूना यह है—

"गावत गान लागी सुबद सुधीन लागी
पीन लागी [illegible] हियरौ।
[illegible]
[illegible] लागी कोकिलके हियरौ॥
कहत गुलाब बन फूलन पलास लागी
[illegible]
[illegible]
[illegible]"

गुलाबचश्म (फा० पु०) एक तरहका पक्षी। यह खैर रङ्गका

होता है। इसकी चोंच काली और पैर लाल होते हैं। यह बहुत मधुर स्वरसे गान करता है।

गुलाब-छिड़काई (हिं० स्त्री०) १ विवाहमें एक प्रथा। इसमें दोनों पक्षोंके मनुष्य आपसमें गुलाब जल छिड़कते हैं। २ दान, दहेज।

गुलाबजम (फा० पु०) एक प्रकारकी भाड़ी जो आसामको पहाड़ियोंमें होती है। इसकी छालके रेशेसे रस्सियां बनाई जाती हैं।

गुलाबजामुन (हिं० पु०) १ एक प्रकारकी मिठाई। इसके बनानेमें पहिले आटे और खोयाको मिलाकर छोटे छोटे टुकड़े किये जाते हैं और फिर घृतमें छानकर चाशनीमें डुबो देते हैं। २ एक प्रकारका वृक्ष जो शोभाके लिए उद्यानमें लगाया जाता है। ३ इस पेड़का फल जो खानेमें बहुत स्वादिष्ट होता है, इसके अन्दर एक कठिन बीज रहता है।

गुलाबतालू (फा० पु०) एक प्रकारका हाथी। ऐसे हाथी का तालू गुलाबी रंगका होता है जो शुभलक्षण समझा जाता है।

गुलाबपाश (फ़ा० पु०) गुलाबजल रखनेका एक तरहका पात्र जो भारीके आकारका होता है।

गुलाबपाशी (फ़ा० स्त्री०) गुलाबजल छिड़कनेकी क्रिया।

गुलाबराय—हिन्दीके एक जैन कवि, इन्होंने वि० सं० १८४२ में इटावामें मोतीराम और सिरलालके साथ रहकर 'शिखरविलास' नामक एक पद्य ग्रन्थ रचा था।

गुलाबसिंह—हिन्दी भाषाके एक कवि। वह पञ्जाबी थे। १७८८ ई०को उनका जन्म हुआ। उन्होंने रामायण, चन्द्रप्रबोध नाटक, मोक्षपन्थ आदि कई एक वेदान्त ग्रन्थ लिखे।

गुलाबसिंह—राजपूतवंशीय काश्मीरके महाराज और वर्तमान काश्मीराधीश्वर प्रतापसिंहके पितामह।

१८वीं शताब्दीमें काश्मीरके उत्तरवर्त्ती जम्बुप्रदेशमें रूपदेव और उनके बाद उनके पुत्र रणजित् देव राज्य करते थे। ये अपनेको चन्द्रवंशीय राजपूत बतलाते थे। रूपदेवके कुशदेव और सुरतदेव नामके दो पुत्र थे और कनिष्ठ सुरतदेवके वंशमें विख्यात गुलाबसिंह उत्पन्न हुए थे।

१७८० ई०में रणजितदेवके मृत्युके बाद उनके पुत्र विजयराय, इसके बाद विजयके पुत्र सफरीदेव और विजयके कनिष्ठ भ्रातुष्पुत्र जयसिंह जम्बुके राजा हुए। जयसिंहके अभिषेक वर्ष १७८८ ई०में गुलाबसिंह पैदा हुए थे।

पंजाबकेशरी रणजित्सिंहने मिश्र दीवान चंद नामक एक सेनापतिको जम्बु जीतनेके लिये भेजा था। यहां राजपूत राजाओंके साथ सिखसैन्यका घमसान युद्ध हुआ। उस युद्धमें अठारह वर्षके गुलाबसिंहने जिस तरह वीरत्व दिखलाया था, उससे सिख सेनापति दीवान चन्द मुग्ध होकर पंजाबसिंहके निकट गुलाबसिंहकी अधिक प्रशंसा की थी।

जम्बु सिखराजाके हाथ आ गया। जम्बु-राजपरिवार अत्यन्त विपन्न और विपण्ण हो गया। उस समय गुलाबसिंह और उनके छोटे भाई ध्यानसिंह मीयां मोती बहुत कष्टसे काल क्षेपण कर रहे थे। इस कारण वे थोड़ी ही उम्रमें अपनी अदृष्ट परीक्षाके लिये दशवर्ष-के लड़के ध्यानसिंहको साथ ले बाहर निकले। दीवान चन्दका प्रशंसावाद उन्हें कर्णगोचर हुआ। वे आशा-पूर्ण हृदयसे सिखमहाराजके अनुग्रह प्रार्थी हो लाहोर आ पहुंचे। किन्तु इस बार उनका इतना कष्ट और परि-श्रम निष्फल गया, प्रायः तीन महीने लाहोरमें रहने पर भी महाराज रणजित्का उन्हें दर्शन न हुआ। इस लिये निराश हो अपने छोटे भाईको साथ ले जन्मभूमि लौट गये। यहां आकर भी आत्मीय स्वजनोंका कष्ट देख वे बहुत ही दुःखित हुए। उच्च राजपूतवंशमें जन्म ले घर-में कायर पुरुषको नाईं रहना उन्हें तनिक भी पसन्द न आया। इस समय ये अकेले ही बाहरको निकले। वितस्ता नदीके तीर आ वे बहुत ही श्रान्त हो गये। उस स्थानसे थोड़ी ही दूर पर गुज्जेला नामक दुर्ग अव-स्थित है। संयोगवश किलेदार वहां टहलते हुए आ पहुंचे और गुलाबका सुन्दर और वीरोचित कान्ति देख उनसे परिचय पूछा। युवक गुलाबसिंह उस किलेदार के निकट ३) रु० मासिक वेतन पर एक सामान्य सैनिक पद पर नियुक्त हुए। किन्तु यहां भी अधिक दिन रह न सके। उनका युद्धनैपुण्य और कार्यकुशलता देख किले-

के दूसरे दूसरे सैनिक उनसे ईर्षा करने लगे थे। गुलाब थोड़े दिनके बाद ही मुङ्गेला दुर्ग छोड़ भीमवर सुल तान खांके अधीन काम करने लगे। कुछ काल वे कोटाली दुर्गमें रहते थे। यहांके सरदारसे भी उन्हें अच्छा बनाव न था। इस लिये उक्त कार्य छोड़नेके लिये बाध्य हुए।

इस समय वीर गुलाबको चारो ओर निराशाकी विषादमय छवि दीख पड़ती थी। 'किसकी सहायता लूं? किस तरह भविष्य उन्नत करूं?' इसी तरहकी भावना उनके हृदयमें उत्पन्न होने लगी। हृदयकी व्यथा दूर करनेके लिये इस्लामदनपुरमें पिताके निकट उप स्थित हुए। किन्तु यहां आकर भी संसारकी विषम बेड़ीसे निबद्ध हो अत्यन्त ही कष्ट पाने लगे। यहां उनके पिताने अपने दोनों पुत्रोंको उपयुक्त देख दुर्लभ नामके किसी मनुष्यसे बहुतसे रुपये कर्ज ले उन दोनोंका विवाह करा दिया। इस विवाहसे भी गुलाब कुछ भी प्रसन्न न हुए। उन्होंने देखा कि जिस तरह पिता ऋणजाल में जकड़े हुए हैं, सांसारिक कष्ट भी उसी परिमाणसे बढ़ता है। १८११ ई०के प्रारम्भमें गुलाब एक दिन पितासे बोले—"मुझे यहां रहना अच्छा नहीं लगता है। यदि आप घुड़—सवारका उपयुक्त पोशाक खरीद दें तो मैं एकबार और लाहौर दरबारमें जा अपनी भाग्यकी परीक्षा करूं"। किन्तु उस समय उनके पिता किशोर सिंहके पास एक कौड़ी भी न थी। जो कुछ ही रुपये लौटकर पानेकी कोई सम्भावना नहीं रहने पर भी दयालु दुर्लभने फिर भी कर्ज दे गुलाबकी अभिलाषा पूरी की। गुलाब और उनके भाई ध्यान सिंह मियामोतीसे एक सिफारिशी चिट्ठी ले दीवानचन्द मिश्रके निकट लाहौर जा पहुंचे। दीवानचन्दने चिट्ठी पढ़ दोनों भाइयोंकी बहुत ही खातिर की और उनकी यथासाध्य मदद देनेके लिये कटिबद्ध हुए। उस समय गुलाबसिंहने सुना कि उनके परम उपकारी मिया मोती विद्रोही दामोदरसिंह और ग्वालसिंहसे मारे गये हैं। यह सुन उन्हें जैसा दुःख हुआ था वह अकथनीय है। उनके हृदयमें प्रतिहिंसाकी आग जल उठी थी, किन्तु इस समय उनने मनकी आग मनमें ही शान्त की। इस अवस्थामें प्रतिहिंसावृत्ति दिखलाना उनके लिये अच्छा नहीं होता।

सुयोग पाकर मिश्र दीवानचंद दोनों राजपूत युवकों को महाराज रणजित्‌सिंहके पास ले गये। पञ्जाब केशरी पहलेसे ही गुलाबके वीरत्वकी कथा सुन रहे थे। आज दोनों भाइयोंकी सुश्री सुगठित वीरकान्ति देख बहुत ही सन्तुष्ट हुए, और दोनोंको प्रतिदिन ३) रु० वेतन पर अपना अनुचर बनाकर रखलिया। इसतरह दोनों भाइयोंने कुछ समय राजदरबारमें रह राजकीय अदब कायदा सीख लिया। १८१२ ई०में दोनों अश्वारोही सैन्यमें भर्त्ती किये गये। महाराज रणजित्‌सिंह ध्यानसिंहको बहुत ही चाहते थे। इस समय ध्यानसिंह प्रतिदिन ५) रु० और उनके ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंह सिर्फ ४) रु० पाने लगे। थोड़े ही दिनोंमें दोनोंका वेतन दो गुनासे तीन गुना तक बढ़ गया। इस वर्षके अन्तमें राजपूत वीरने अपने पिताके पास लगभग तीन हजार रुपये भेजे थे। गुलाब और ध्यानसिंहके ऐसे उन्नत समयमें उनके पिता किशोरसिंहकी मृत्यु हुई।

१८१३ ई०में महाराज रणजित्‌के अनुरोधसे गुलाबसिंह अपने बारह वर्षके कनिष्ट भ्राता सुचेतसिंहको दरबारमें लाया। सुचेतसिंहने अपने रमणीय सुकुमार कान्ति-गुणसे रणजित्‌को विमुग्ध कर उनका यथेष्ट अनुग्रह लाभ किया। तीन सामान्य राजपूत युवकोंने लाहोरके दर बारमें शीर्षस्थान पाया। थोड़े ही दिनोंमें तीनों भाई सभोंसे श्रेष्ठ गिने जाने लगे।

उक्त वर्षमें दामोदरसिंह और ग्वालसिंह लाहोरमें आये हुए थे। उनका आगमन सुन गुलाबसिंह और ध्यान-सिंहके हृदयमें प्रतिहिंसा फिर भी जाग उठी। दोनों भाई शालरकुली नामक रास्ते पर घोड़े पर चढ़ कर उप स्थित हुए। इस स्थान पर मियांमोतीके मारनेवालोंसे उनकी भेंट हो गई। गुलाबसिंहने दामोदरको अपना परिचय देते हुए बन्दूकका निशाना मारा। दामोदरने आर्त्तनाद करते हुए पृथ्वी पर गिर अपना प्राणत्याग किया। तब ग्वालसिंहने दोनों भाइयों पर आक्रमण किया। किन्तु गुलाबके दारुण खड्गाघातसे वे भी पर-लोकको सिधारे। राजपथ पर इस तरहकी दुर्घटना

होती देख, बहुतसे मनुष्योंने गुलाबसिंह पर आक्रमण किया। गुलाब और ध्यानसिंहने किसी तरह भाग कर मिश्र दीवानचन्दकी छावनीमें आ आत्मरक्षा की। वह हत्या कहानी महाराज रणजित्के कर्णगोचर हुई। किन्तु वे इससे तनिक भी दुःखित नहीं हुए, वरन् उन दोनों भाइयोंके ऊपर बहुत सन्तुष्ट हुए थे, साथ ही साथ उनकी पदवृद्धि भी की गई। अभी गुलाब विविध पारितोषिकके सिवा प्रतिदिन १८) रु० पाने लगे थे।

जम्बु राज्य सिखोंके हस्तगत होने पर रणजित्सिंहने दीवान भवानीदासको ससैन्य जम्बु शासन करनेके लिये भेजा। सिख सैन्यको देख कर ही जम्बु राजके परिवार शतद्रु नदीके दूसरे पार भाग आये। इसके बाद जम्बु-वासी राजपूतोंके साथ सिखोंका सर्वदा विवाद रहा करता था, किन्तु इससे राजपूत ही अधिक कष्ट भोगते थे। इस समयमें हिद्दू नामके एक मनुष्यने पर्वतसे गुप्तभावमें जंबु आ सिखोंके ऊपर अत्यन्त ही अत्याचार करना आरम्भ किया। धीरे धीरे हिद्दू के उपद्रवसे जम्बु का राजकर तक भी बन्द हो गया। यह संवाद रणजित्सिंहके निकट पहुंचा। उस समय गुलाबसिंह पञ्जाबकेशरीके पास ही मौजूद थे। उन्होंने सिखराजसे कहा कि जम्बु का जमादार कुशियालसिंह स्वयं स्वाधीन होनेके लये पार्वतीय जातिको सिखोंके विरुद्ध उत्तेजित कर रहा है। इसके पहले ही गुलाबने दीवानचंदको समझाया था कि उन लोगोंकी मातृभूमिकी रक्षाका भार यदि उन्हीं पर सौंपा जाय, तो इस तरहकी दुर्घटना कभी भी नहीं हो सकती है। दीवानचंदने भी गुलाबका पक्ष ले महाराज रणजित्सिंहके निकट जम्बु की कथा कह सुनाई। पञ्जाबकेशरीने गुलाबको जंबु और भीमवटके निकटवर्त्ती चालीस हजार रुपये आमदनीको सम्पत्ति जागीरमें दे उन्हें पार्वतीय जातिको दमन करनेके लिये नियुक्त किया।

गुलाबसिंह ५।६ सौ सैन्य साथ ले जम्बु की ओर रवाना हुए। वे बहुत दिनके बाद अपनी जन्मभूमि पहुंचे। यहां राजपूतोंने उनका यथेष्ट सम्मान किया। चतुर गुलाब प्रधान प्रधान मनुष्योंको अर्थद्वारा वश करने लगे। इस तरह घूस देकर हिद्दू के पक्षके बहुत मनुष्योंको अपनी मुट्ठीमें कर लिया। थोड़े ही समयमें वे हिद्दू का छिन्न मुण्ड ले लाहोर पहुंचे। महाराज रणजित्ने गुलाबके कार्यमे संतुष्ट हो उन्हें प्रचुर अर्थ और बहुतसी जागीर प्रदान की। फिर भी रणजित्सिंहके आदेशसे गुलाबसिंह कश्णवा और जम्बु के उत्तरवर्त्ती पार्वतीय भूभाग जीतनेकेलिये बाहर निकले। उनके सौभाग्यक्रमसे दुर्दान्त पार्वतीय जातियोंने सहज हीमें उनकी वश्यता स्वीकार की थी। १८१७ ई०में राजपूतवीर सफलता लाभकर पंजाबकेशरीके निकट लौट आये। इस बार भी इन्होंने यथेष्ट पुरस्कार पाया था।

इस समय ध्यानसिंह देवड़ीवाला अर्थात् सर्वप्रधान द्वाररक्षकके पद पर नियुक्त हुए थे। रणजित्सिंह गुलाबकी अपेक्षा ध्यानसिंह और चेतसिंहको अधिक



गुलाबसिंह

चाहते थे। उन्होंने दोनों भाइयोंको "राजा" उपाधि अर्पण की। किन्तु ज्येष्ठ भाईको ऐसा उच्च उपाधिके न मिलने पर उन दोनोंने रणजित्सिंहसे कहा, "महाराज! हम दोनोंसे जो ज्येष्ठ हैं, सब कामोंमें जो हम लोगोंकी अपेक्षा उपयुक्त तथा वीर और विज्ञ है, जब उनके भाग्यमें ऐसी उपाधि न हुई, तो हम दोनों किस तरह राजाकी उपाधि ग्रहण कर सकते हैं?"

कनिष्ठ भाइयोंके ऐसे कौशलपूर्ण वचनोंसे महाराज रणजित्ने गुलाबसिंहको भी "राजा" उपाधि दी। इस तरह १८१८ ई०में सिख नरपति द्वारा गुलाब जम्बुके राजा, ध्यानसिंह भीमवर और कुशलके राजा तथा सुचेतसिंह रामनगर और चम्बा प्रभृति स्थानोंके राजा बनाये गये।

गुलाबसिंहने उपकारी सिखनरपतिसे बिदा ले बहुत ही समारोहके साथ जम्बु राज्यमें प्रवेश किया जो मनुष्य एक समय सिर्फ ३) रु० मासिक वेतनकी नौकरीके लिये लालायित हुआ था, आज वही मनुष्य जम्बु के एक स्वाधीन राजा है। अदृष्टचक्र किस तरह परिवर्त्त नशील है गुलाबसिंह ही इसका दृष्टान्त बन गये। बहुत धूम धामसे गुलाबसिंह जंबुराज्यमें अभिषिक्त हुए थे। सिख राजके कर्मचारी और उनके अधीनस्थ सभी सैन्य जबु छोड़ पञ्जाब चले आये। गुलाबके साथ रणजित्‌सिंहका अब कोई लगाव न रहा। सिर्फ इतना निश्चित था कि राजा गुलाब प्रतिवर्ष दुर्गापूजाके समय ससैन्य लाहोर आ पञ्जाबकेशरीके आनन्दको बढ़ावें।

गुलाब जम्बुका एकाधिपत्य लाभकर निकटवर्त्ती महींरोंको वशीभूत करने लगे। राज्यलिप्साके साथ उच्चाभिलाष, परश्रीकातरता, परपीड़न और अर्थलाभ ये सब महादोष उनके हृदयमें आगये थे। यहां तक कि जम्बु के बालसे वृद्ध तक सबके सब गुलाबका नाम सुननेसे ही डरते थे।

बाहरसे गुलाब इतने सुखमधुर थे, उनके मुखमण्डलमें ऐसा स्वच्छ सुन्दरआवरण था कि एक बार जो उन्हें देखता और उनके साथ आलाप करता वह उनकी मोहिनी शक्तिमें आकृष्ट हो जाता था।

१८२० ई०में गुलाबसिंहने राजोयारिके राजा अगरखां पर आक्रमण कर उन्हें बन्दी किया था।

१८३८ ई०में पंजाबकेशरी रणजित्‌सिंहकी मृत्यु हुई और इनके पुत्र वीरवर खड्गसिंह सिंहासन पर बैठे। गुलाबसिंह तथा उनके भाइयोंने समझा था कि रणजित्‌सिंहकी मृत्युके बाद उनके भाई ध्यानसिंहके पुत्र हीरासिंह पंजाबके सिंहासन पर अभिषिक्त होंगे, परन्तु उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं होनेसे राजा ध्यानसिंह महाराज खड्गसिंहको नाश करनेके लिये षड्यन्त्र रचने लगे। राजा गुलाबसिंह भी इस निदारुण षड्यन्त्रमें शामिल हुए थे। जब कुमार नवनिहालसिंह खैबरसे पिताके शत्रुरूपमें लाहोरकी ओर आ रहे थे, उस समय राजा गुलाबसिंह रास्तेमें उनसे मिल गये। गहरी रात्रिमें जिन लोगोंने मिल असहाय खड्गसिंहको बन्दो किया था, उनमेंसे गुलाबसिंह भी एक थे।

खड्‌गसिंह देखो।

जब खड्गसिंह कारागारमें और उनके पुत्र नवनिहाल सिंह पंजाबके सिंहासन पर बैठे थे, उस समय गुलाबसिंह प्रभृति तीन भाइयोंका एक तरह पंजाबमें आधिपत्य था। रणजित्‌के पौत्र नवनिहालको यह अत्यन्त असह्य मालूम पड़ने लगा। खड्गसिंहकी अन्त्येष्टिक्रियाके दिन नवनिहालके माथे पर ढाल गिरा था जिससे उन्हें बहुत चोट आई थी। लोग कहते हैं कि उसीसे उनकी मृत्यु हुई। किन्तु किसी किसी ऐतिहासिकने लिखा है—"इस सामान्य आघातसे उनके मृत्यु होनेकी कोई सम्भावना नहीं थी।" सुप्रसिद्ध सिख इतिहास लेखक कानिंहमने लिखा है "जम्बु के राजा नवनिहालके हत्याके काण्डमें शामिल थे इसका यद्यपि कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है तो भी इस घोरतर अपराधसे उन्हें छोड़ देना भी बिलकुल असम्भव है।" सचमुच ध्यानसिंह प्रभृतिके षड्यन्त्रसे ही प्रबल पराक्रान्त सिखराज्यके अधःपतनका आरम्भ हुआ।

नवनिहालकी मृत्युके बाद उनकी माता चांदकुमारी राजगद्दी पर बैठीं। वह ध्यानसिंहको अच्छी तरह पहचानती थीं। उस समय भी ध्यानसिंह राज्यके शासन सचिव थे। महारानी चांदकुमारीने ध्यानसिंहकी उपेक्षा कर सिन्धुवाल उत्तरसिंहको प्रधान मन्त्रीके पद पर नियुक्त किया। रानी प्रबलप्रतापसे राज्य करने लगीं। क्रूरप्रकृति ध्यानसिंह बुद्धिमती विचक्षणा रमणीको सिंहासनसे अलग करनेकी चेष्टा करने लगे। रणजित्‌सिंहका शेरसिंह नामक व्यसनासक्त और मद्यपायी एक जारज पुत्र था। ध्यानसिंहने सोचा कि इसीको सिंहासन पर बैठाकर स्वयं राज्यके हर्त्ता कर्त्ता हो जावेंगे। चतुर गुलाबसिंहने भी भ्राताके साथ इस षड्यन्त्रमें योग दिया था। ध्यानसिंहने शेरसिंहको अपना अभिप्राय प्रगट करते हुए उन्हें ससैन्य लाहोर आनेको लिखा। १८४१ ई०की १२वीं जनवरीको शेरसिंह ससैन्य फतेगढ़ आ पहुंचे। रानी चांदकुमारीने शीघ्र ही सिंहद्वार बन्द करनेका आदेश किया। द्वार बन्द किया

गया सही, किन्तु द्वारके रक्षक शेरसिंहके पक्षमें हो गये थे। मानो गुलाबसिंह और हीरासिंह चांदकुमारीके पक्षसें हो किलासे गोला बरसाने लगे। दुर्वृत्त ध्यानसिंहने फरासीसो सेनापति भेञ्चुराके साथ शेरसिंहका पक्ष अवलम्बन किया था।

अवरोधके सातवें दिन, रानी चाँदकुमारीने देखा कि गुलाबसिंह और डोग्रा सैन्यके सिवा प्रायः सभी उनके विरुद्ध हो उठे हैं। आज महावीर रणजित्‌का पुत्रवधू अपने सम्मानको रक्षाके लिये विकल हो उठीं। चतुर गुलाबसिंहने उनसे कहा, "अब राज्य रक्षाका कोई उपाय नहीं सूझता, अब भी आप उनके भाईके अभिप्रायानुसार शेरसिंहको राज्य छोड़ दें, तो वे आपको इज्जतको रक्षाके लिये प्राणपणसे यत्न करेंगे।" उस समय अबला रमणी हाथ जोड़ रो रो कर कहने लगीं, "मैं समस्त भार आप पर सौंपती हूं, आपही मेरे एकमात्र रक्षक हैं, जिससे मेरी इज्जतकी रक्षा हो, वही कीजिए। दुष्ट शेरसिंह मेरा करप्रार्थी है, परन्तु मैं अपने पवित्र शरीरको बेच कुछ भी कलङ्कित नहीं हो सकती।" गुलाबसिंहने उन्हें बहुत कुछ आशा दी।

लड़ाई बन्द हो गई। महारानी चांदकुमारीने जंबुके निकट ८ लाख रुपये आमदनीका कहिकुदियाली नामक स्थान जागीरमें पाया। गुलाबसिंह महारानी और उनकी सम्पत्तिके रक्षक हुए तथा लाहोर दुर्गमें जो प्रचुर अर्थ रक्खा था वह समस्त उन्होंने चांदकुमारीसे उन्हींकी रक्षा करनेके बहाने अपने साथ कर लिया।

शेरसिंह पञ्चनदके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। गुलाबसिंहने शेरसिंहको राजभक्ति दिखलानेकेलिये जगत्‌ विख्यात कोहिनूर ला उन्हें पहना दिया था। उस समय शेरसिंहके साथ प्रायः ४।५ घण्टे तक गुलाबकी बात चीत हुई थी। उस सम्भाषणका यही कारण था—गुलाबने समझा था कि उनके साथ बहुत थोड़ी सेना हमारे लाहोरमें उपस्थित है। और जो बहुमूल्य मणिरत्न हड़प कर लिया है, उसे ले रास्तेमें जानेसे सम्भव है कि दुर्दान्त सिख-सैन्य लूट ले। ऐसे समय पंजाबपतिकी सहायताके विना दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसलिये ऐसा ही उपाय करना चाहिए कि जिससे वे निरापदसे जम्बु पहुंच जावें। इरावतीके तीर पर उपस्थित हो उन्होंने जम्बुसे दो हजार सैन्य मंगवाये। इस तरह गुलाब प्रायः करोड़ रुपयेको सम्पत्ति ले स्वराज्यको लौट आये।

गुलाबसिंह जम्बु पहुंच स्थिर रह न सके। यहां आकर उन्होंने सुना कि काश्मीरके शासनकर्त्ता मीयांसिंह विद्रोही सैन्यसे मारे गये हैं और विद्रोहीगण बहुत ही ऊधम मचा रहे हैं। गुलाब शीघ्र ही काश्मीर पहुंचे। यहां दो दल राजद्रोही सैन्यके प्रत्येकका शिरश्छेदकर वे हजाराकी ओर अग्रसर हुए। चिनोलके नवाब पैन्द खाँ हजारा अञ्चलमें बहुत ही उपद्रव मचा रहे थे। गुलाबसिंहने जा उन पर आक्रमण कर पूर्णरूपसे पराजय किया। यहां इन्होंने सुना कि बृटिश जातिके साथ काबुलमें लड़ाई हो रही है। बहुत दिनकी बात नहीं है कि वृद्ध अमीर जमानशाहने काबुलसे लौटते समय गुलाबसिंहकी कुछ विश्वस्त सेनाओं द्वारा सहायता पाई थी। उसी समयसे दोनोंमें मित्रता हो गई और हमेशा एक दूसरेको खबर लिया करते। जमानशाहके प्रत्यागमनके थोड़े ही समयके बाद काबुलमें बृटिश सैन्यकी बड़ी दुर्गति हुई। इसके सिवा उक्त लड़ाईके पहलेसे ही बरकजई सदोजई प्रभृति काबुलके सर्दार गुप्तभावसे गुलाबसिंह और ध्यानसिंहको पत्र लिखा करते थे। इसी कारण अङ्गरेज लोग गुलाबसिंहके ऊपर विश्वास नहीं करते थे। चतुर गुलाबने इस संदेहको दूर करनेके लिए बृटिश सेनानायकको कहला भेजा कि वे कभी भी बृटिशके विरुद्ध हो नहीं सकते, परम्‌ युद्धमें वे उनकी सहायता करेंगे। इस समय गुलाबसिंहके कथनानुसार सिख राज्यके सचिवने भी बृटिशको यों कहला भेजा "खैबर गिरिसङ्कटमें सिखसैन्य जा बृटिश सैन्यकी सहायता करेगा, प्रयोजन होने पर जलालाबाद तक जाकर भी साहाय्य कर सकता।

गुलाबसिंह उस समय हजारामें थे। वे भी बृटिश गवर्मेंटको मदद देनेमें कटिबद्ध हुए थे, किन्तु उस समय किसी विश्वासी मनुष्यसे सुना कि बृटिश राजपुरुष उन पर अप्रसन्न है और दोषारोप कर रहे हैं। यह सुन कुछ क्षुब्ध हो तुरत ही ससैन्य आटक लौट आये। यहां नदीके उस पार सिख सैन्य ठहरे थे।

इधर काबुलमें बहुतसे अंगरेजी सैनिक मारे गए। सेनापति पोलक ससैन्य काबुल पहुंचे और गुलाबसिंहको इस लड़ाईमें योग देनेके लिये संवाद भेजा। गुलाबसिंह पहले दुविधामें पड़ गये, क्या करना चाहिए उनकी कुछ समझमें न आया। अन्तमें सेनाके साथ हजारासे पेशावर तकको आये। किसी किसी अंगरेज ऐतिहासिकने लिखा है जिससे वृटिश सैन्य सहजमें ही खैवर पथ पर न पहुंच सके एवं देशीय सैन्य जिससे भयभीत और विचलित हो जाय, गुलाबसिंह गुप्तभावसे वैसाही कार्य करनेकी चेष्टा करते थे। किन्तु जब उन्होंने देखा कि वृटिश सैनिक नानाप्रकारके दुःखोंको दूर करते हुए अपने कार्यमें सफलता दिखला रहे हैं, तब उन्होंने निराश हो वृटिश सेनापतिको कहला भेजा कि "वह यथासाध्य वृटिशकी सहायता कर रहे हैं, किन्तु अभी साहाय्यका कोई प्रयोजन न जान वह स्वराज्यको लौटे जा रहे हैं।"

उक्त विदेशी ऐतिहासिकका कथन विश्वासयोग्य नहीं है। गुलाबसिंहने जिस तरह वृटिश गवर्मेंटको सैन्य द्वारा साहाय्य किया था, उसमें तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। क्योंकि वृटिश राजपुरुषने गुलाबसिंहके कार्यसे सन्तुष्ट हो उन्हें जलालाबादका स्वाधीन अधिकार प्रदान किया था।

इस समय लाहोरमें एक भयङ्कर दुर्घटना हुई। महारानी चान्दकुमारी नयनिहालके घरमें रहती थीं। शेरसिंहने उन्हें पानेकी इच्छासे अनेक तरहके उपाय रचे थे, किन्तु उनका अभीष्ट सिद्ध नहीं हुआ। वर चांदकुमारीने अत्यन्त घृणासे शेरसिंहको इस तरह खबर दी थी "प्रसिद्ध कुलियावंशमें मेरा जन्म है, मैं सुविख्यात जयमालकी कन्या हूं, शेरसिंह जैसे—रजकपुत्रके हाथ आत्मसमर्पण करनेसे मृत्यु अच्छा होती है।" महाराज शेरसिंहने सोचा कि ध्यानसिंह और गुलाबसिंह चांदकुमारीके पृष्ठपोषक हैं, इस लिये अपमानित होने पर भी चांदकुमारीने उनकी अवज्ञा की। वे जानते थे कि चांदकुमारी ही उनके सिंहासनका एक मात्र कंटक है। इसलिये उन्होंने चांदकुमारीकी चार सहचरियोंको जागीरका लोभ दिखाकर वशीभूत किया और उनके द्वारा अत्यन्त कठोरतासे चांदकुमारीका प्राणसंहार भी कराया। शेरसिंहने सोचा कि अब सिंहासनका दावा करनेवाला कोई न रह गया। किन्तु दुष्ट ध्यानसिंह भी जिससे उसके ऊपर किसी तरहका आधिपत्य कर न सके, उसकी भी कोई तरकीब सोचने लगे। सिन्धुवालाके सरदार लेनासिंह और अजीतसिंह राजाका पक्ष अवलम्बन कर ध्यानसिंहके नाशकी चेष्टामें थे।

ध्यानसिंहने जम्बूसे भाईको सब खबर जतला कर उन्हें शीघ्र ही आने लिखा। गुलाबसिंह चांदकुमारीके मृत्युसंवाद पाकर निश्चिन्त हो गये। चांदकुमारीका रखा हुआ लाख रुपयेका मणिरत्न आज उन्हींके हाथ लगा। सर्वदा उन्हें एक यही चिन्ता लगी रहती थी कि यदि चांदकुमारी शेरसिंहके साथ मिल गई तथा उनके पास जो सब धन रत्न रखा हुआ है वह शेरसिंह जान जावें तो उन्हें एक भारी आपत्तिमें गिरनेकी सम्भावना है। जो हो, आज प्रसन्नचित्तसे गुलाबसिंह लाहोर पहुंचे। यहां अधिक दिन रहने पर शायद किसीके मनमें कोई सन्देह हो जाय, इसी लिये वे ध्यानसिंहको उपयुक्त सलाह देकर शीघ्र ही जम्बूराज्यको लौट आये। गुलाबसिंहके आदेशानुसार ध्यानसिंहने रणजित्के एक पांच वर्षके उत्तराधिकारीको राज्यसिंहासन पर बैठाना स्थिर किया। उन्हींका नाम सुविख्यात दलीपसिंह था।

दलीपसिंह देखो।

शेरसिंह ध्यानसिंहके व्यवहारसे भयभीत हुए, इस लिये उन्हें ध्यानसिंहके विरुद्ध कोई कार्य करनेका साहस न हुआ। किन्तु यह उपयुक्त काल समझ दुष्ट सिन्धुवाला सर्दारोंने मदमत्त शेरसिंहसे ध्यानसिंहका शिरश्छेद करनेके लिये आदेशपत्र ले लिया। इधर उन्होंने राजाका दण्डादेश-पत्र दिखा कर ध्यानसिंहको चिन्तामें डाला। उस समय दुष्ट सिन्धुवाला सर्दारने ध्यानसिंहसे कहा "यदि आप आज्ञा करें तो हमलोग अभी उस दुष्ट शेरसिंहका मस्तक दो खण्ड कर सकते हैं" ध्यानसिंह इससे सहमत हुए। दूसरे दिन दुर्वृत्त सिन्धुवालाने महाराज शेरसिंह और ध्यानसिंह दोनोंको मार डाला।

शेरसिंह और ध्यानसिंह देखो।

शेरसिंहके वधसे बालक दलीपसिंह पञ्चनदके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। हीरासिंहने यथेष्टरूपा

पद पाया। थोड़े समयके बाद ही हीरासिंह और उनके चाचा सुचेतसिंहमें द्वेष आरम्भ हुआ। सुचेतसिंहके रूपपर अनेक राजमहिलायें विमुग्ध थीं, यही हीरासिंहकी द्वेषताका कारण था। यहां तक कि दलीपकी माता महारानी चन्दा भी सुचेतको अत्यन्त पसन्द करती थी। पण्डित जल्ला नामके हीरासिंहके एक प्रियपात्र थे, सुचेतसिंहके सदृश राज अन्तःपुरमें वे भी जाते आते थे। संयोगवश एक दिन अन्तःपुरके शयनगृहमें दोनोंकी भेंट हो गई। इससे सुचेतसिंह पण्डितके ऊपर बहुत ही क्रोधित हो उठे। उन्हें मालूम था कि पण्डित इस घटनाको हीरासिंहसे कह देंगे। जो कुछ हो, सुचेतसिंहने राजमाताकी सहायतासे प्रधान मन्त्रीके पद पानेकी चेष्टा की, रानी चन्दाके भाई जवाहिरसिंहने भी इसमें योग दिया। हीरासिंहने ज्येष्ठ भ्राता गुलाबसिंहको सुचेतसिंहके इस व्यवहारके विषयमें लिख भेजा तथा उन्हें एक बार लाहौर आनेकी प्रार्थना की। किन्तु धूर्त्त गुलाबसिंह पहले आनेको राजी न हुए। अन्तमें न मालूम क्या सोचकर वे लाहौर आपसे आप आ पहुंचे। लाहौरवासियोंने उनका यथेष्ट सत्कार किया। यहां आ गुलाबसिंहने सुना कि—जवाहिरसिंह दलीपको ले ब्रिटिश राज्यमें भाग जानेकी चेष्टा करते थे। सुचेतसिंह भी इस षड़यन्त्रमें लिप्त थे। सिख सैन्यके मालूम होने पर उन्होंने दलीपसिंहको जा घेरा। वजीर हीरासिंहके कहनेपर जवाहिरसिंह लोहेके पिंजड़ेमें बंधे हैं।

गुलाबसिंह सुचेतसिंह पर जिससे किसी तरहकी जोखिम न पहुंचे पहले उसीका बन्दोबस्त करने लगे। किन्तु तो भी हीरासिंहने किलेमें सुचेतसिंहके अधीन जो दो सैन्यदल थे, उन्हें भगा दिया और साथ ही साथ यह भी आज्ञा दी कि उनकी अनुमतिके बिना सुचेतसिंह अथवा उनके किसी मनुष्यके साथ किसी तरहका सम्बन्ध न रक्खें"।

गुलाबसिंहने हीरासिंहको बहुत समझा बुझा कर मनोविवाद शान्त कर दिया। सुचेतसिंह उनके साथ जम्बू जानेको प्रस्तुत हुए। तब अर्थ रत्न्लु गुलाबसिंहने हीरासिंहसे कहा, "यह तुम्हारा जो प्रधान प्रतिबन्धक था, उसे मैं अपने साथ ले जा रहा हूं। तिस पर भी तुम्हारे चारो ओर शत्रु हैं। जैसा मैं देखता हूं, उससे कब किस तरहकी आपत्ति आ पहुंचेगी, इसका कुछ ठीक नहीं है। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे पिताकी और मेरी यहां जो समस्त बहुमूल्य अस्थावर सम्पत्ति है, उसे अभी हम लोगोंकी पितृराज्य जंबूमें ले जाकर रखना ही ठीक है। उसमें तुम्हारी क्या सम्मति है?" हीरासिंह ज्येष्ठतातके कौशलपूर्ण वचनों पर किसी तरहका प्रतिवाद कर न सका। इस तरह गुलाबसिंहने कनिष्ठ सुचेतसिंह और असंख्य मणिरत्नादि ले स्वराज्यको प्रस्थान किया। उस समय ऐसा मालूम पड़ने लगा कि, लाहौरके राजभण्डारमें एक प्रकारकी चोरी हो गई है।

जंबूमें आ गुलाबसिंहने सुचेतसिंहसे कहा "भाई! देखो, मुझे तीन चार पुत्रसन्तान हैं, किन्तु तुम्हें एक भी सन्तान नहीं है, मेरी इच्छा है कि तुम मेरे एक पुत्रको दत्तक पुत्र बना लो।" ज्येष्ठ भाईके वचनों पर सुचेतसिंह राजी हो गये। इस तरह गुलाबसिंहके एक पुत्र सुचेतकी समस्त जागीर और भूसम्पत्तिके भावी उत्तराधिकारी हुए।

इस बार गुलाबसिंह अपने स्वार्थसिद्धिका दूसरा उपाय सोचने लगे। रणजित्सिंहके काश्मीरा और पेशौरा नामके दो पुत्र थे। गुलाबसिंहने उनके नामका जाल कर एक पत्र तैयार किया उसमें लिखा गया था कि सिन्धुवालाओंके राजहत्या और मंत्रिहत्याकाण्डमें उन्हीं दोनों भाइयोंका षड़यंत्र था। रणजित्सिंह काश्मीरासिंहको सियालकोट और पेशौरासिंहको चन्द्रभागाके गड़ियावाला दुर्ग दे गये थे। काश्मीराके अधीन मयूरसिंह नामक एक वृद्ध किलेदार थे। उनने भी दोनों भाइयोंके विरुद्ध झूठी गवाही दी। लाहौरसे उन दोनों भाइयोंको बन्दी और उनकी सम्पत्ति जब्त करनेका हुकम आया। लोभी जम्बूराजने सियालकोट और गड़ियावालेमें सैन्य भेजकर दोनों भाइयोंपर आक्रमण किया और उनकी समस्त धन सम्पत्ति लूट ली गई। काश्मीरा और पेशौरा स्वप्नमें भी नहीं सोचते थे कि इस तरहसे अकस्मात् उन दोनोंके ऊपर कोई आक्रमण कर सकेगा। जो हो, अभी उन्होंने निराश्रय अवस्थामें परिवारके साथ एक सिखगुरुका आश्रय ग्रहण किया। इस स्थानसे उन्होंने लाहौर और

जम्बुको एक पत्र यों लिख भेजा—"हम दोनों म पूर्ण रूपसे निर्दोष हैं, हमारे किसी शत्रुने मिथ्या दोषारोपण कर हम लोगोंको कलङ्कित किया है ।" किन्तु दुर्वृत्त गुलाबसिंहने उनके कथन पर कुछ ध्यान न दिया अन्तमें उन दोनों राजपुत्रोंको वशीभूत करनेके अभिप्राय से उन्हें जम्बु नगर आनेको लिखा, और धूर्त गुलाबने वहां उन्हें नजरबन्दी कर कहा "आप लोग यदि मुझे ७५ लाख रुपये दण्ड स्वरूपमें दें, तो भविष्यमें, आप लोगोंके ऊपर किसी तरहका अत्याचार न होगा।" किन्तु वे इतने रुपये कहां पाते ? महावीर रणजित्सिंहके पुत्रोंके प्रति इस तरहका अत्याचार होता देख खालसा सैन्य सबके सब विरक्त हो उठे । उन्होंने गुलाबको खबर दी 'रणजित्सिंहके पुत्रोंके प्रति इसतरहका अत्याचार मानो खालसाका अपमान करना है । यदि आप शीघ्र ही उन दोनोंको सम्मानपूर्वक छोड़ न देंगे तो खालसा सैन्य असाधारण करेगा । इस पर गुलाबसिंहने भयभीत हो सिर्फ ७५ हजार रुपये ले काश्मीरा और पेशोरासिंहको छोड़ दिया।

कुछ दिनके बाद काश्मीरासिंहने उस दुष्ट किलेदार को एक सख्त सजा दी, जिससे उस अभागेकी मृत्यु हो गई । इस संवादको पाकर गुलाबसिंहने लाहोरको एक पत्र लिखा । फिर भी उन दोनों राजपुत्रोंको कैद करनेका आदेश आया । गुलाबसिंहने गढ़ियावाला आक्रमण कर सात सौ सैन्य सियालकोट भेजे । इस समय काश्मीरासिंह पहलेसे ही सतर्क थे । उनने अपने दो सौ सैन्यको दुर्गरक्षाके लिये नियुक्त किया । उनके युद्ध कौशलसे गुलाबका सैन्यदल पराजित और विशेष क्षतिग्रस्त हो रणक्षेत्रसे भाग गया ।

गुलाबसिंहने अपनी सेनाकी बेइज्जती पर क्रोधान्ध हो कई सौ घुड़सवारों और पदाति सैन्य तथा तोपें दुर्ग तोड़नेके लिये भेजीं । किन्तु इस बार भी उनकी सेनायें पूर्ववत् क्षतिग्रस्त हो लौटनेको बाध्य हुई । जब गुलाबसिंहने देखा कि दो हजार अश्वारोही और सात हजार पदातिके जाने पर काश्मीरासिंहका साहस ज्योंका त्यों बना है तब उन्होंने लाहोरसे मित्र सैन्य भेजनेका पत्र दिया । लाहोरसे सेनापति भोगरा और बहुतसे मुसलमानसैन्य आये किन्तु वे भी काश्मीरासिंहका बालबांका न कर सके । गुलाबसिंहने देखा कि अब अपना मान सम्भ्रम रखा ही करना उचित है, जब उनके बहुतसे सैन्य सामान्य सैन्यको पराजय कर न सके, तब उनके इतने गौरव और इतने दम्भ पर धिक्कार है । इसलिये उन्होंने इसका बदला लेनेके लिये हीरासिंहको एक पत्र लिखा—खालसा सैन्य रणजित् सिंहके पुत्रके विरुद्ध युद्ध नहीं करेगा यह जान हीरासिंहने ध्यानसिंहके पराक्रान्त पांच हजार अश्वारोही और घोड़े परसे चलाये जानेवाले कुछ वृहत् कामान सियालकोटके दुर्ग ध्वंस करनेके लिये भेज दिये । इन योद्धाओंके गोला वर्षणसे सियालकोटका दुर्ग कांपने लगा था । काश्मीरासिंहके परिवारको चारों-ओर दावानल—जैसा दीखने लगा । वे सबके सब भयभीत हो गये और काश्मीरासिंहको लड़ाई बन्द कर देनेका अनुरोध किया । काश्मीरासिंहने भी देखा कि बचनेका अब कोई उपाय नहीं है, शीघ्र ही गुलाबका सैन्य दुर्ग अधिकार कर उनके सामनेमें ही उनके परिवारोंका अपमान करेगा, इसलिये वे गुप्तद्वार हो कर मध्य प्रदेशको भाग गये । गुलाबकी सेनाने दुर्ग अधिकार कर लिया

इधर जब लाहोरसे ध्यानसिंहका सैन्यदल भेजा गया था तब खालसा सैन्य महाराज रणजित्के दोनों पुत्रोंपर भावी विपत्ति समझ उत्तेजित हो उठा । उन्होंने तीन दिन तक हीरासिंहको नजरबन्द कर रखा और सुचेतसिंहको मन्त्रीका पद दिलानेके लिये बुलाया । हीरासिंहने भयभीत हो उन्हें खबर दी कि वे रणजित् सिंहके पुत्रोंका कोई अनिष्ट न करेंगे, उनका पूर्व अधिकार लौटा देंगे और खालसा सैन्यके इच्छानुसार वे सब कार्य करेंगे । इस तरह हीरासिंहके साथ खालसा सैन्यका फिर भी मेल हो गया ।

थोड़े ही समयके बाद सुचेतसिंहने लाहोर आ खालसा सेनाको अपने आनेकी सूचना दी । किन्तु उस समय खालसा और हीरासिंहमें मेल था । अत एव सुचेतसिंहकी आशा पर पानी पड़ गया । उस समय सुचेतसिंहके पास सिर्फ ४५ मनुष्य थे । हीरासिंह -अपने चचा सुचेतसिंहका आगमन संवाद पाकर लगभग

चौदह पन्द्रह हजार सैन्य ले उन पर टूट पड़े और अन्तमें उनका प्राणान्त हो गया।

सुचेतसिंहकी मृत्यु संवाद पाकर गुलाबसिंह हीरासिंहके ऊपर बहुत रुष्ट हो गये थे। कुछ दिनके बाद उनने हीरासिंहको कहला भेजा कि ध्यानसिंह और सुचेतसिंहकी सम्पत्तिके वे ही (गुलाब) अधिकारी हैं। पत्र पाकर हीरासिंह बहुत क्रुद्ध हो गए और उनने भी वे समस्त सम्पत्ति और अपनी स्थावर अस्थावर सम्पत्ति जो गुलाबके पास रक्खी हुई थीं, समस्त उन्हींके हाथ सौंप देनी चाही। इस तरह दोनोंमें विवाद प्रारम्भ हुवा। हीरासिंहने लाहोरमें एक महासभा कर उपस्थित प्रधान प्रधान सर्दारोंको गुलाबके स्वार्थपरता की कहानी कह सुनाई और उनकी सम्मति ले कर जम्बुमें एक पत्र भेजा—

१, लाहोर-राजसरकारके अधीन जो समस्त सम्पत्ति गुलाबसिंह भोग करते रहे हैं, इसका चौथा भाग और अधिक मालगुजारी देनी होगी। २, उन्हें राजा सुचेत सिंह और राजा ध्यानसिंहकी जागीर और समस्त जायदाद लौटा देनी पड़ेगी और ३, उन्हें स्वयं लाहोर दरबारमें उपस्थित होना पड़ेगा।

शायद गुलाबसिंह इस पत्रको अग्राह्य करें, इसलिये २२ दल सिखसैन्य उनके विरुद्ध भेजे गये। किन्तु खालसा सैन्यने जाना कि गुलाबसिंहका भी सैन्यबल कम नहीं है। वे भी यदि चाहें तो समस्त पार्वतीय सर्दारोंको उत्तेजित कर सकते, यहां तक कि काबुल, काश्मीर प्रभृति स्थानोंके शासनकर्त्ता ससैन्य आ गुलाबको सहायता अवश्य देंगे। गुलाबसिंहने पत्र पाकर उत्तर दिया कि हीरासिंहके कनिष्ठ भाई मियां जवाहिरसिंहके जंबु आने पर वे समस्त विषयोंकी मीमांसा करेंगे। इस कार्यके लिये जवाहिरसिंहको जंबु आना पड़ा। चतुर गुलाबने उनके साथ परामर्श कर एक तरहकी निष्पत्ति कर ली और सपुत्र लाहोर आ पहुंचे। हीरासिंहने ज्येष्ठतातका स्वागत किया। इस समय गुलाबके निकट दारुण संवाद पहुंचा कि गुजरातमें उनके जितने सैन्य थे, वे सबके सब पेशोरासिंहसे मारे गये और उनका राजभण्डार लूट लिया गया है। ऐसी दुर्घटना होनेका कारण भी था। गुलाब और हीरासिंहमें जब विवाद चला था, उस समय जंबुराज गुलाबने पेशोरासिंहको सैन्यसंग्रह करनेको कहा था। उनके कथनानुसार पेशोराने गुलाबकी सहायताके लिये लगभग दो हजार सैन्य एकत्र किये। किन्तु हीरासिंहके साथ मेल हो जाने पर गुलाबने सेनाओंको कुछ भी तनख्वाह न दे कर सबको भगा दिया था। उन्होंने आ कर पेशोरासिंहसे अपना वेतन मांगा। पेशोराने सेनाओंका प्राप्य चुका देनेके लिये गुलाबको कई बार पत्र लिखा था, अन्तमें गुलाबने उन्हें इस तरह उत्तर दिया था—"दुष्ट सेनाओंका अस्त्र शस्त्र छीनकर उन्हें मार भगावें।" पेशोरासिंहने उस पत्रको उन्हीं उत्तेजित सैनिकोंके सामने पढ़ा। गुलाबके आचरणसे अत्यन्त क्रुद्ध हो उन सेनाओंने गुजरातमें ऐसा भयङ्कर काण्ड कर डाला था. किंतु पेशोरासिंह उस समय वहां उपस्थित नहीं थे।

गुलाबसिंहने अपनेको निर्दोष बतलाते हुए, पेशोरासिंह पर दोष लगा कर लाहोरके दरबारमें उनके नाम पर अभियोग चलाया। परंतु इसका पेशोरासिंहको कोई पता न लगने पर उसने उनके विरुद्ध सेना न भेजी।

इसके थोड़े दिनके बाद ही महाराज दलीपके मामा जवाहिरसिंहने हीरासिंहके विरुद्ध खालसा सेनाओंको उत्तेजित किया। इस षड़यन्त्रमें हीरासिंह शत्रुओंसे मारे गए। इस समय गुलाबसिंह बरकानड़ जातिको खालसा सैनाके विरुद्ध उत्तेजित कर रहे थे। यह संवाद पाकर जवाहिरसिंहने उन पर शासन जमानेके लिये जंबुकी ओर सिख सैन्यको भेजा। लालसिंह, श्यामसिंह अठरवाला, फतेसिंह मान और सुलतान मुहम्मद खाँ नामके प्रधान सर्दार तथा सेनापतिगणने सैन्य परिचालनका भार ग्रहण किया। गुलाबसिंहने सिख सैन्यके आगमनकी खबर पा हीरासिंहके भाई मीयां जवाहिरको सेनाके साथ यशरोता नामक स्थानको भेजा। सिखसैन्यके यशरोता पहुंचनेके बाद सर्दार उत्तरसिंह खालसा सेनामें मिल गये और तब मीयां जवाहिरसिंहके अन्यान्य सैन्य भी छोड़ जाने लगे। अतएव मीयां जवाहिर बाध्य हो कर जंबुको भाग आये। तब खालसा सैन्य बहुतही उत्साहसे जंबु राजधानी पहुंचे। गुलाब-

सिंहने देखा कि अब विपद नजदीक आ गयी। दुर्दान्त सिखसेना सहजमें ही उन्हें छोड़ लौट नहीं जावेगा। उनने कहला भेजा कि यदि श्यामसिंह मेजेतिया, फतेसिंह मान, और सुलतान मुहम्मद खां उन्हें अभयदान दें तो वे लाहोर दरबारका आदेश पालन कर सकते हैं। परन्तु कोई सर्दार पहले पहल उस महाधन्वी जम्बु राजाके निकट जा अपने जीवनको सङ्कटमें डालनेके लिये सम्मत न हुआ। अनेक तर्क वितर्कके बाद रणजित्सिंहके समयका वृद्ध सेनापति फतेसिंह मान गुलाबके पास जानेको राजी हुआ। जम्बुपति गुलाबसिंहने उस वृद्धवीरका यथेष्ट सम्मान किया और कहा, कि हम तीन करोड़ रुपये कहां पावेंगे? हां! हीरासिंह और सुचेतसिंहको जो सम्पत्ति है वह समस्त वे लाहोर दरबारमें अर्पण करनेको प्रस्तुत हैं। गुलाबसिंहने इस तरह फतेसिंहको लालच देकर विदा किया। किंतु वृद्ध सेनापति नगर छोड़ एक कोस भी जाने न पाया था कि कहींसे पांच सौ डोगरा सैनाने आ कर अत्यन्त निष्ठुर भावसे उस वृद्ध सेनापति तथा उनके साथियोंको मार डाला। सिर्फ एक मनुष्य प्राण बचा कर भागा और उसने इस दारुण हत्याकाण्डकी खबर उन सबको कह सुनाई। वृद्धवीरकी अचानक मृत्युसे समस्त खालसा सैनाने धूर्त गुलाबको ही इस हत्याकाण्डका नायक जान प्रबलवेगसे जम्बु नगरपर आक्रमण किया।

चतुर गुलाबने फतेहसिंहकी मृत्यु होने पर बहुतही शोक प्रगट किया और अपनेको निर्दोष साबित करनेके लिए बहुतसे मनुष्योंको कैद किया। अन्तमें जब देखा कि अब रक्षाका कोई उपाय नहीं है तो उन्होंने सिख सेनाओंसे जा घोषण की कि वे सदाके लिए खालसाके क्रीतदास हैं और जो कुछ उनके पासमें है वह खालसाके लिये रख देने तयार हैं। यदि इच्छा हो तो समस्त खालसा सैन्य उनकी धन सम्पत्ति बांट कर ले सकते हैं। पीछे उनके जीवनमें किसी तरहका अनिष्ट हो जाय इसी भयसे वे लाहोर दरबारको नहीं आते हैं। अभी यदि खालसा सैन्य उनकी रक्षा करें तो वे अपनी इच्छानुसार सब कुछ कर सकते हैं। यह कह कर उनने लगभग एक लाखसे अधिक द्रव्य खालसा सेनाओंमें बांटने की आज्ञा दी। गुलाबके ऐसे मीठे वचन और अर्थ मोहिनी शक्तिसे अधिकांश खालसा सैनी उनकी जीवन रक्षा करनेके लिये कटिबद्ध हुए। तब चतुर गुलाब बन्दीरूपसे लाहोर आये और दरबारमें उपस्थित हो अपनी जागीरके सिवा समस्त अधिकृत प्रदेश और दण्ड स्वरूप ६८०००००) रुपये देना स्वीकार किया। यहां थोड़े दिन ठहर कर विपदको आशङ्कासे स्वराज्यको लौट गये।

थोड़े दिनके बाद दुर्दान्त खालसा सैन्यने मन्त्री जवाहिरसिंहको मारडाला। तब प्रधान प्रधान सर्दारोंने गुलाबसिंहको लाहोर आने और मन्त्रीका पद ग्रहण करनेका अनुरोध किया। किन्तु धूर्त गुलाबसिंह स्वाधीनताप्रिय सिख सैन्यों पर शासन करनेमें सहमत हुए।

१८४५ ई०में पहले पहल सिखयुद्धका आरम्भ हुआ। (सिखयुद्ध देखो।) दुर्द्धर्ष वृटिश सैन्यको धीरे धीरे शतद्रु नदी पार होते देख, समस्त प्रधान सर्दार विपन्न और चिन्तित हुए। इस समय सिखसैन्यका प्रधान सेनापतित्व ग्रहण करनेवाला पञ्जाबमें कोई नहीं था। महारानी दलीपसिंहकी माताने सर्दारोंकी सलाह लेकर गुलाबसिंहको बुलाया। १८४६ ई०की २५ वीं जनवरीको जम्बुराज गुलाबसिंह लाहोरके दरबारमें आ मन्त्री तथा प्रधान सेनापतिके पद पर नियुक्त हुए। उस समय शतद्रुनदीके तीर पर वृटिश और सिखसैन्यमें लड़ाई चल रही थी। किन्तु गुलाबसिंहने पञ्जाबके उस दारुण विपत्कालमें सर्वोच्च पद पर रह कर भी किसी तरहकी साहाय्य न किया। वरन् युद्धकालमें जो समस्त अंगरेजी सैन्य बन्दी हुए थे गुलाब उन्हें लाहोरमें डाक्टर साहब हनिग्बर्गके घरमें रख यथेष्ट अभ्यर्थना करने लगे थे। शीघ्र ही गुलाबने सुना कि अलियाल क्षेत्रमें सिखसैन्य पराजित हुए हैं। सेनापतिको उत्साह देना तो दूर रहे, उन्हें निरुत्साह करनेके लिये बहुत गालियां दीं। दुष्ट सर्दारोंके षड़यन्त्र, स्वार्थपरता और अन्याय आचरणसे अनेक सिख सैन्य वृटिशके हाथसे हारने लगे। सोबराउनमें विजय लाभ कर अब बड़े लाट हार्डिञ्ज लाहोरकी ओर अग्रसर हुए। इस बार शीघ्र बड़े लाटका आगमन संवाद पाकर गुलाबसिंह चिन्तित हो गये। जिससे सबसे जन

स्त लाहोर दरवारमें उपस्थित न हो सकें, उसी लिये वे कसूर नामक स्थानमें बड़े लाटसे आ मिले, किन्तु बड़े लाटने उनके कथन पर कुछ भी ध्यान न दिया। तब गुलाव सिंहने अभिमानसे कहा था—"यदि मैं युद्ध करता, तो दूसरे ही प्रकारसे लड़ाई समाप्त हो जाती। वैसा होनेसे अपने ही फंदेमें अपनेको बांधा न रखता। यदि मैं लड़ाईकी इच्छा करता तो दिल्ली और फिरोजपुरमें अस्सी हजार सैन्य जमा कर सकता।"वीरवर हार्डिञ्जने भी कहा था, "पंजावकी राजधानीमें अंगरेजोंके रक्तपातका वदला लिया जायेगा।" गुलावसिंह हताश हो लाहोर लौट आये। गुलाव कोई उपाय न देख वालक दलीपसिंहको ले ललियाना नामक स्थानमें लार्ड हार्डिञ्जको छावनीमें पहुंचे। वड़े लाटने दलीपको अत्यन्त आदरसे ग्रहण किया और सर्दारोंको सम्बोधन कर कहा,"दलीप सिंह पंजावके सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगा तथा युद्धका खर्च डेढ़ करोड़ रुपये देना पड़ेगा। किन्तु विपाशा और शतद्रुके मध्यका प्रदेश वृटिश गवर्नमेंण्टके अधीन रहेगा।"

उसके वाद लार्ड हार्डिञ्जने लाहोर आ दलीपको सिंहासन पर वैठाया। दरवारमें वड़े लाटने कोहिनूर देखना चाहा तब गुलावसिंहने अपनेसे ही कोहिनूर ला अंगरेज राजपुरुषोंको दिखवाया।

८ मार्च १८४६ ई०में वड़े लाटकी छावनीमें एक वड़ा दरवार लगा। उस दरवारमें सिख पक्षके महाराज दलीपसिंह और उनके समस्त प्रधान सर्दार उपस्थित थे। यहीं वृटिश गवर्नमेंण्ट और लाहोर दरवारमें सन्धि पत्र स्वीकार किया गया वड़े लाटने पहले ही से गुलाव सिंहके विषयमें कुछ विचार करनेका निश्चय कर लिया था। अव उन्होंने एक करोड़ रुपये ले गुलावसिंहको काश्मीरके साथ ,विपाशा और सिन्धु नदीके मध्यवर्त्ती पार्वतीय राज्य वेच देनेका प्रस्ताव किया। गुलाव भी इस प्रस्तावमें सहमत हुए। वे उसी दिन एक स्वाधीन राजाके जैसा गिने गये। १५वीं मार्चमें अंगरेजोंने गुलावको 'महाराज' की उपाधि दी। इस दिन स्थिर हुआ कि "सिन्धु नदीके पूर्व इरावती नदी पश्चिममें चम्पाके साथ जो विस्तीर्ण पार्वतीय भूभाग है, वृटिश गवर्नमेंण्टको ७५ लाख रुपये देकर महाराज गुलावसिंह उस विस्तीर्ण भूभागके स्वाधीन राजा हुए। वृटिश गवर्नमेंण्ट तथा लाहोर दरवारमें इनका कोई संसर्ग न रहा। गुलावसिंह तथा उनके वंशधर स्वाधीन राजा हो कर उक्त राज्यका भोग दखल करते रहेंगे।"

जो कुछ हो गुलावसिंह इतने दिनों पर पूर्ण मनोरथ पाकर काश्मीरकी ओर रवाना हुए। उस समय लाहोर दरवारके अधीन शेख इमामुद्दीन काश्मीरके शासनकर्त्ता थे। वे सहजमें काश्मीरराज्य छोड़ने राजी न हुए। वृटिश सेनापति लौरेन्सने व्रिगेडियर ह्वीलरको ससैन्य काश्मीर भेजा। वृटिश सैन्यने इमामुद्दीनको वहांसे भगा दिया। वहुत समारोहके साथ महाराज गुलावसिंह स्वाधीन राजाके सदृश काश्मीरके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। सामान्य ७) रु० मासिक तनखाह पानेवाले सैनिकसे आज गुलावसिंह काश्मीरके स्वाधीन राजा हो गये, यह कम आश्चर्यको वात नहीं है। इस महोच्च पद पर शोभायमान होते हुए उन्होंने जीवनके शेषकाल सुखस्वच्छन्द और शान्तभावसे व्यतीत किया। २री अगस्त १८५७ ई०में गुलाव अपने पुत्र रणवीर सिंहको काश्मीर राज्य प्रदान कर आप परलोकको सिधारे।

गुलावसिंह भङ्गी—पञ्जावके एक विख्यात भङ्गी सर्दार। इन्होंने महाराज रणजित्‌सिंहके विरुद्ध कई वार लड़ाई की थी। १८०० ई०में वालक गुरुदत्तसिंहको अपने स्थानपर रख आप परलोकको चल वसे। उनको मृत्युके संवादसे उत्साहित हो महाराज रणजित्‌ने भङ्गी सर्दारकी विधवा महिषी,रानी सुखासे अमृतसरका लोहगड़ दुर्ग छीन लिया। विधवा महिषी शिशु पुत्रको साथ ले जंगल जा कर आत्मरक्षा करनेके लिये वाध्य हुई थीं।

गुलावसिंह मजेतिया—एक सिख सर्दार। ये महाराज रणजित्‌सिंहके पूर्वपुरुष थे। इन्होंने हो सवसे पहिले सिखधर्म्म ग्रहण किया था। रणजित्‌सिंह देखो

गुलावांस (फा०) गुल अव्वास या अव्वास देखो।

गुलाव वाड़ी (हिं० स्त्री०) एक तरहका उत्सव जिसमें हर एक जगह शोभाके लिये गुलावके फूलोंसे सजाई जाती हैं। यह उत्सव प्रायः चैत्र मासमें हुआ करता

है। इसमें सभी मनुष्य गुलाबी रंगके कपड़े पहनते हैं।

गुलाबा (फा० पु०) एक तरहका पात्र।

गुलाबी (फा० वि०) १ गुलाबके रंगका। २ गुलाब सम्बन्धी। ३ गुलाब जलसे सुगन्धित किया हुवा। ४ थोड़ा हलका। स्त्री०) ५ मद्य रखनेका पात्र। ६ एक तरहकी मिठाई जो गुलाबकी पखड़ियोंसे बनाई जाती है। ७ एक तरहकी मैना। यह मध्य एसिया और युरोपमें पाई जाती है, यह समूहके समूह एक साथ रहती है। ग्रीष्म कालमें यह पर्वतों पर चली जाती है। यह चार पांच अण्डे एक समय देती है।

गुलाम (अ० पु०) १ खरीदा हुआ भृत्य। २ साधारण सेवक। ३ गंजीफेका एक रंग। ४ ताशके पत्तोंमेंसे एक। यह दहलेसे बड़ा और बेगमसे छोटा होता है।

गुलामअली—एक मुसलमान ऐतिहासिक। इन्होंने 'शाह आलम्‌नामा" नामका दिल्लीश्वर शाहआलम और उसके राजत्व कालका इतिहास बनाया है।

गुलामकादर खां—एक रोहिला सर्दार। ये जाविता खांके पुत्र और रोहिला सर्दार नाजिब उद्दौलाके पौत्र थे। यह सम्राट शाह आलमके दरबारमें रहते थे। अन्तमें विश्वासघातकतासे इसने रोहिलाओंकी सम्राट्‌की आंखे निकाल लेनेका आदेश किया था। १७८८ ई०के १० वी अगस्तको वह जघन्य आदेश प्रतिपालन किया गया। दिल्लीश्वरके प्रति ऐसा अत्याचार करनेके बाद गुलाम कादरने मुहम्मद शाहके पौत्र और अहम्मद शाहके पुत्र 'बेदर बकत' को दिल्लीके तख्त पर बैठाया।

बाद एक दिन वे अपने राज्य घोषगढ़की ओर आ रहे थे, रास्तेमें महाराष्ट्रसैन्य उन पर टूट पड़े। उन्होंने गुलामकादरकी नाक कान, हाथ, पांव खण्ड खण्ड कर दिल्ली भेज दिये। थोड़े समयके बाद गुलामका देहान्त हो गया। आगरा जिलाके अन्तर्गत आउल नामक स्थान में गुलामकी कब्र है।

गुलाम कुतबुद्दीन शाह—इलाहाबादवासी एक प्रसिद्ध कवि। यह शाह मुहम्मद फकीरके पुत्र थे। कवितामें इन्होंने 'मुसीबत्' नामसे आत्मपरिचय दिया है। १७२५ ई०के २८ वी अगस्तको ये पैदा हुए थे और मक्का जाकर १७७३ ई०में मरे। इनके बनाये हुए "नान्‌कलेरा" और 'नानहलुवो" ग्रन्थमें प्रत्युत्तर रूपसे लिखा गया है।

गुलाम गर्दिश (फा० स्त्री०) १ एक तरहकी छोटी दीवार जो परदेका काम देती है। यह इस तरह बनी रहती है कि स्त्रियां आंगनमें घूम फिर सकती है और बाहरके मनुष्यकी दृष्टि उनपर नहीं पड़ सकती है। २ नौकरोंके रहनेके लिये महलके चारो ओरका बरामदा।

गुलाम नबी—युक्तप्रान्तके हरदोई जिलेमें बिलग्रामके,रहनेवाले एक हिन्दी कवि। वह मुसलमान थे। उपनाम रसलीन रखा। सिवा अरबी और फारसीमें विद्वान् होने के सैयद गुलाम नबी हिन्दी उर्दू भी खूब जानते थे। उन्होंने (१६१७ ई०) अङ्गदर्पण नख सिख और (१७४१ ई०) रसप्रबोध नामक हिन्दी भाषाका अलङ्कार ग्रन्थ लिखा।

गुलाम महम्मद—टीपू सुलतानके नाती। लगभग १८०१ ई०में ये अङ्गरेजके हाथसे बन्दी हुए थे। इसके बाद १८७१ ई०में इन्हें ब्रिटिश गवर्मेण्टसे नाइट कमाण्डर औफ दी ष्टार औफ इण्डिया (K C S I)की उपाधि मिली थी। ११वीं अगस्त १८७१ ई०को ७८ वर्षकी अवस्थामें इनका देहान्त हुआ।

गुलाम हुसैन खां—१ एक मुसलमान ऐतिहासिक और विख्यात पण्डित। इन्होंने १७८० ई०में जोनस डनी साहबकी अनुरोधसे "रियज उस सलातीन" नामक बङ्ग देशका इतिहास पारसी भाषामें रचना की थी। इनकी बुद्धिमता देख मुग्ध हो नवाब इब्राहिम खांने इन्हें निजामत अदालतके एक सभ्यपद पर नियुक्त किया था।

२ नवाब सैयद गुलामहुसैन नामसे प्रसिद्ध। इनका दूसरा नाम तिवा तिवाई था। ये हिदायत अली खां बहादुर आमदजङ्गके पुत्र थे। पहिले ये मुर्शिदाबादके नवाबके समय अमीर रूपसे गण्य रहे, इसके बाद इष्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें भी बड़े लाटसे सम्मानित हुए। १७८० ई०में इन्होंने "सियार उल मुताखिरीन्" नामक पारसी भाषामें मुसलमान नवाबोंका इतिहास प्रणयन किया था। इस ग्रन्थमें उस समयके बङ्गकी अवस्था अति सुन्दर रूपसे वर्णित हुई है। बङ्गके ऐतिहासिक मात्र ही इस ग्रन्थका आदर किया करते हैं, इसमें अङ्गरेज

राजाओंकी भी यथेष्ट प्रशंसा की गई है। फरासीसी पंडित रेनिगेड वरफे मस्ताफा, व्रग और वाल्फोर साहब ने इस ग्रन्थका अङ्गरेजी अनुवाद प्रकाश किया है। उक्त पारसी ग्रन्थकी सहायतासे गुलाम अली साहब नामक एक मोलवीने १८५६ ई०में हिन्दुस्थानीमें 'खुलासत्-इ-तवारिख-इ सियर उल मुताखिरीम" नामका एक इतिहास प्रणयन किया है।

उस इतिहासके अलावे गुलामहुसेन "वशारत उल् इसानत" नामका एक काव्य भी लिख गये है।

गुलाम-माल (अ० पु०) कंबल, लोई प्रभृति।

गुलामराम—हिन्दी भाषाके एक कवि। कहते हैं कि उनकी कविता अच्छी होती थी।

गुलामी (अ० स्त्री०) १ दासत्व, गुलामका भाव। २ सेवा, शुश्रूषा। ३ पराधीनता, परतन्त्रता।

गुलामी—एक हिन्दी कवि। उनकी कविता अच्छी होती थी।

गुलाल (सं० पु०) भूतृण, कोई घास।

गुलाल (फा० पु०) होलीके दिनोंमें एक दूसरेके मुख पर लगानेका लाल चूर्ण। यह चूर्ण जलमें भी मिलाकर बांस या टीनकी बनी पिचकारीसे एक दूसरे पर छिटकते हैं।

गुलाल—हिन्दी भाषाके एक कवि। १८१८ ई०को उनका जन्म हुआ। गुलालका प्रधान ग्रन्थ शालिहोत्र है, जिसमें पशुओंकी चीरफाड़ बतलायी गयी है।

गुलालसिंह—हिन्दी भाषाके एक कवि। १७२३ ई०को उनका जन्म हुआ था।

गुलाला (फा०) गुल लाला देखो।

गुलिका (सं० स्त्री०) गुलः गोलाकारोऽस्त्यस्या गुल ठन्-टाप्। १ गुटिका, गोली। २ वसन्तरोग। ३ पक्व कुष्माण्डखण्डविशेष, पके कुम्हड़ेका खण्ड। इसकी प्रस्तुत-प्रणाली इस तरह है—पुरातन शुष्क कुष्माण्डको गोलाकार खण्ड करके घृत और गुड़में पाक करते हैं। थोड़े समयके बाद उसमें जीरा और मिर्च डाल देते हैं। भली भांतिसे सिद्ध होने पर वह नीचे उतार लिया जाता है, इसीको गुलिका कहते है।

गुलिकालवण (सं० क्ली०) गुटिकालवण, सांवर नमक।

गुलिङ्ग स(०) कुलिङ्गक देखो।

गुलिया (हिं० वि०) महुएके बीजसे निःसृत।

गुली (सं० स्त्री०) गुलः गुडाकारो ऽस्त्यस्याः गुल-अच् गौरादित्वात् ङीष्। १ गुटिका, गोली, गुम्मी। २ वसन्त-रोग। वसन्तरोग देखो।

गुलुच्छ (सं० पु०) गुच्छ पृषोदरादिवत् साधुः। गुच्छ, स्तवक।

गुलुच्छकन्द (सं० पु०) गुच्छकन्द।

गुलुञ्छ (सं० पु०) गुड क्विप् गुल् गोलाकारं उञ्छति बध्नाति गुल-उञ्छति-अण्। १ गुच्छ, गुच्छा, बहुतसे फलोंका समूह। २ गुच्छकन्द।

गुलुञ्छक (सं० पु०) गुल उञ्छति गुल-उञ्छ-ण्वुल्। स्तवक, गुच्छ।

गुलुफ (फा०) गुलफ देखो।

गुलुह (सं०) गुड़ह देखो।

गुलू (हिं० पु०) १ एक तरहका पेड़ जो नेपालकी तराई, बुन्देलखण्ड और बङ्गालके छोटे छोटे पहाड़ों पर और दक्षिण भारत तथा बरमाके जंगलोंमें पाया जाता है। यह २५से ४० हाथ तक ऊंचा होता है, इसमें लम्बे लम्बे पत्ते होते हैं। जाड़ा ऋतुके आते ही इसके समस्त पत्ते नीचे गिर जाते हैं और माघ फाल्गुन मासमें इससे पुष्प लगते हैं। इसका प्रत्येक अङ्ग औषधमें उपयोगी है। इसकी जड़ और बीजको गरीब मनुष्य खाते हैं जब यह वृक्ष पुरातन हो जाता तो चार पांच हाथ लम्बे टुकडे इसके तनेसे काटे जाते हैं। इसके मध्यमेंसे सुन्दर रेशा निकलता है जिससे रस्सी तथा कपड़े बनाये जाते हैं। इसके काठसे भांति भांतिके खिलौने बनाये जाते। इसी वृक्षसे कतीरा नामका गोंद निकलता है। २ प्रायः एक हाथ लम्बी एक तरहकी मछली। ३ एक प्रकारकी बटेर।

गुलूबंद (फा० पु०) १ एक बिलश्त चौड़ी कपड़ेकी पट्टी। यह सूत, ऊन या रेशमकी बनी होती है, जो सरदीसे बचनेके लिये कानों पर लपेटी जाती है। २ गलेमें पहननेका स्त्रियोंका एक आभूषण।

गुलेंदा (हिं० पु०) महुएका पका फल, कोलिंदा।

गुले (हिं० पु०) उत्तर भारतवर्षमें होनेवाला एक तरहका पेड़। इसके काठ बहुत मजबूत तथा चमकीले

होते हैं। कोई कोई इसके बीजोंको माला बना कर पह नते हैं।

गुलेटन (हि० पु०) मसाला रगडनेका कुरड प्रस्तरका छोटा खण्ड।

गुलेडगढ—बम्बई प्रान्तके बीजापुर जिलेमें बादामी तालुक का नगर। यह अक्षा० १६ २´ उ और देशा० ७५ ४७´ पू०में बादामीसे ८ मील उत्तर पूर्व पडता है। लोक संख्या प्राय १६७८६ है। सूती और रेशमी कपडेका यहां काम होता है। इसके पडोससे पत्थरकी कीमती खानि है। १८६७ ई०को मुनिसपालिटी हुई। १५८० ई०को २य इब्राहीम आदिलके समय किला बना था। वर्तमान नगर १७०६ ई०को एक सूखे हृदकी जगह निर्मित हुआ। १७५० ई०को शास्तिखानोंके एक अफसर ने उसे लूटा था। १७८७ ई०को टीपू सुल्तानने उसे अधिकृत किया। मराठोंके एक बार फिर लूटने पर कुछ दिन तक नगर खाली पडा रहा। परन्तु देसाईने गुलेड गढ दोबारा आबाद किया था। नरसि इने जब बलवा किया, यह फिर लूटा और खाली हुआ। १८१८ ई०को जनरल मुनरोने देसाई द्वारा अधिवासियोंका लौटनेका प्रलोभन दिया था। १८२६ ई०को गुलेडगढ अगरेजोंके हाथ लगा।

गुलेराना (अ० पु०) १ सुन्दर फूल। २ एक तरहका पुष्प जिसका मध्यका भाग लाल और ऊपरका भाग पीला होता है।

गुलेल (फा० स्त्री०) पक्षी मारनेका कमान या धनुष, जिसमें मट्टीकी गोलियां चलाई जाती हैं।

गुलेलची (हि० पु०) जो गुलेल चलानेमें निपुण हो।

गुलेला (फा० पु०) १ कमान या धनुषमें चलाए जानेकी मिट्टीकी गोली जिससे चिडिया प्रभृति मारी जाती है। २ गुलेल।

गुलेंदा (हि०) गु ला देखो।

गुलोह (फा० स्त्री०) गुडुच।

गुलौठी—युक्तप्रदेशके बुलन्दशहर जिले और तहसीलका नगर। यह अक्षा० २८ ३५´ उ० और देशा० ७७ ४८ पू० मेरठकी सडक पर पडता है। आबादी कोई ७००८ ४। कहते हैं कि यह नगर मेवाती या गहलोत राज पूतोंका बसाया हुआ है। यहां प्रधानत सैयद और बनिये रहते हैं। कुछ दिन हुए मिहरबां अली नामक सैयदने कई मकान, एक पुल, एक बडी मस्जिद, अरबी और फारसीकी पाठशाला तथा काली नदी तक पक्की सडक बना गुलौठीकी बडी उन्नति की। १८५६ ई०की २०वीं धाराके अनुसार शहरका इन्तजाम होता है। व्यापार-की चलफिर रहनेसे लोग मजेमें हैं।

गुल्हौर (हि० पु०) वह स्थान जहां रस पकानेका भट्ठा हो।

गुल्गा (हि० पु०) लताकी तरह फैलनेवाला एक तरहका ताड यह सुन्दरबनके पानीके किनारे, चटगांव, बरमा आदि देशोंमें पाया जाता है। गोलफल नामके इसके पुरातन फल बहुत बडे बडे होते हैं, ये इतने हलके कि समुद्रमें बहुत दूर तक बहते बहते चले जाते हैं। इसके पत्ते छप्पर बनानेके काममें आते हैं।

गुल्गुला—बामियानके निकटवर्ती एक प्राचीन नगर। जङ्गीज खांने इस नगरको नष्ट कर दिया। यहां बहुतसे गुहामन्दिर और पहाड काट कर घर बना हुआ है।

गुल्गुलिया—भारतकी एक जाति। कोई इन्हें बेदिया लोगोंकी एक शाखा बतलाते हैं। यह पशु पक्षियोंकी मार, नाना प्रकार औषधियां बेच, भीख मांग और बन्दर का नाच दिखला जीविका निर्वाह करते हैं। गयाके गुल्गुलियोंमें कोई कोई कहता कि कमिणो नामकी उन में एक आदि रमणी रहीं। उन्होंने मोहबाव नामक एक पुत्र प्रसव किया। मोहबावको फिर आठ लडके हुए। इन्होंमें एक गुल्गुलिया भी थे। उन्होंने तालके पेडसे कूद अपने अपने बलकी परीक्षा ली। एक तो फांद करके निकल गया, परन्तु दूसरा गिर पडा। मोहबावने यह देख उनको कूद फांदसे विरत किया था। गुल्गुलिया को यह देख सुन करके आत्माभिमान हुआ कि उनके भाई ताडी बेचते फिरते थे। वह आत्मीय स्वजनोंका छोड बाहर निकल पडे उसो रोषसे इनके घ रबार नाना स्थानों में घूमा फिरा करते, अपना कोई निर्दिष्ट वासस्थान नहीं रखते।

गुल्गुलिया लोग अपनेको हिन्दू कहते हैं। परन्तु उनके देव देवी स्वतन्त्र हैं। पटनेके गुल्गुलिया वनसा यर, राम ठाकुर, अगद भाई, बंसू, मेही गोरैया, बर्मी,

परमेश्वरी आदिकी पूजा करते हैं। हजारीबागमें पत्थरके एक टुकड़ेको पांच बूंदकी सिन्दूर चढ़ा 'दामू' नामसे पूजते हैं।

इनमें बालविवाह प्रचलित है। स्त्रियां बड़ी सच्चरित्रा होती है। व्यभिचार नहीं जैसा है। पुरुष अवस्थानुसार बहुविवाह कर सकते हैं। पतिके मरने पर विधवा अपने देवरसे विवाह कर लेती है। पञ्चायतसे पूछ लेने पर दूसरे आदमीके साथ शादी करनेमें भी कोई अड़चन नहीं।

यह मृत देहको भूमिमें गाड़ देते हैं। गोमांस ग्राह्य समझा जाता है। इनकी स्त्रियां दांतका कीड़ा निकालतीं और बात आदि रोगोंको अच्छा कर सकती हैं।

गुग्गुलु (सं० पु० गुग्गुल।

गुल्फ (सं० पु०) गल-फक् अकारस्य उकारः। १ पादग्रन्थि। एड़ीके ऊपरकी गाँठ।

गुल्फजाह (सं० क्ली०) गुल्फस्य मूलं गुल्फ जाहच्। गुल्फमूल।

गुल्म (सं० पु०) गुड़ति वेष्टयति, गुड़करणे बाहुलकात् मक् तस्य लकारः। १ प्रधान पुरुष वा अधिनायक द्वारा परिचालित सैन्यकी एक संख्या, कोई फौज।

एक रथ, एक हाथी, पांच पदातिक (पैदल) और तीन घोड़ोंके समुदायको पत्ति कहते हैं। तीन पत्तिका सेनामुख और तीन सेनामुखका एक गुल्म होता है। अर्थात् ९ रथ, ९ हाथी, २७ घोड़ा और ४५ पैदलकी फौजका नाम गुल्म है। (भारत १।२।१९—२०)

२ घट्ट देश, थाना, चौकी, घाटी। ३ चौकी या घाटीकी फौज। ४ रक्षासमूह, सिपाहियोंका बेड़ा। (मनु ७।११४) ५ प्लीहा, लरक। एक मूलमें गुच्छाकार उत्पन्न तृणविशेष, जो घास एक ही जड़में गुच्छे जैसी लगती हो। (मनु १।४८) काण्डशून्य वृक्ष जाति, पेड़ जिसमें तना न रहे। ७ आड़ी। ८ ग्रन्थिपर्णवृक्ष, गंठवन। ९ उदरज रोगविशेष, पेटकी एक बीमारी। (A chroionic enlargement of the spleen or glandular enlargement of the abdomen.)

भावप्रकाशके मतमें अनियमित आहार और विहारसे वायु, पित्त तथा कफ अत्यन्त दूषित हो गुल्मरोग उत्पादन करते हैं। इसका कोई ठिकाना नहीं, पेटमें किस जगह गांठ पड़ेगी। हृदयके नीचेसे वस्ति पर्यन्त कहीं भी गुल्म उठ सकता है। यह गोली जैसा निकलता है।

यह गुल्म रोग प्रधानतः पाँच प्रकारका होता है—वातज, पित्तज, कफज, सान्निपातिक और गुल्मविशेष। प्रथमोक्त चार प्रकारका गुल्म तो स्त्री पुरुष दोनोंको हो जाता है, किन्तु शेषोक्त स्त्रियोंको आर्तव रक्त दूषित होनेसे निकलता है। यह पुरुषोंको होना कम सम्भव है। किसीके मतमें पार्श्वद्वय, हृदय, नाभि और वस्ति पाँचो गुल्मस्थान जैसे निर्दिष्ट हैं।

हृदय एवं वस्तिके मध्यस्थलमें सचल वा निश्चल गोलाकार गुटिका निकलने और उसके घटते बढ़ते रहनेका नाम गुल्मरोग है।

गुल्म उठनेसे पहले अधिक उद्गार, मलका कठिनता, आहारमें अनिच्छा, उदरमें वेदनाके साथ गुड़गुड़ाहट, बलका लाघव, उदराध्मान, भुक्त द्रव्यका अपाक और शूल हुआ करता है।

सब तरहके गुल्ममें अरुचि, मल एवं मूत्रका कष्टके साथ निर्गम, पेटमें गुड़गुड़ाहट और अधिक उद्गार होता है।

रूक्ष अन्न पानीय, विषम भोजन, अतिशय भोजन, बलवान्के साथ युद्ध प्रभृति विरुद्ध चेष्टा, मलमूत्रादिके वेगधारण, शोकप्रयुक्त मनःक्षोभ, विरेचन आदि द्वारा अत्यन्त मल क्षय और उपवाससे वायु कुपित हो वातज गुल्मरोग उत्पन्न करता है। यह कभी कभी घटता बढ़ता, गोल या लम्बा पड़ता और पार्श्व आदि वा नाभिदेश पहुंचता है। उसमें जब तब वेदना भी होती है। मल और वायु तथा अधोवायुको वह रोकता और गले या मुंहको सुखाता है। शरीर काला और सुर्ख पड़ जाता, शीतज्वर आता और हृदय, कुक्षि, पार्श्व, अङ्ग तथा शिरोदेशमें वेदनाका प्राबल्य दिखलाता है। भुक्तान्न जीर्ण होनेसे वह बढ़ता और भोजन करनेसे कितनाही अच्छा रहता है। रूक्ष, कषाय, तिक्त तथा कटुरसयुक्त द्रव्य सेवनसे उसकी वृद्धि होती है।

कटु, अम्लरसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, विदाही तथा रुक्ष द्रव्य सेवन, क्रोध, अतिरिक्त मद्यपान, रौद्र एवं अग्निके उत्ताप, लगुड आदिके अभिघात, आम अर्थात् विदग्ध अजीर्ण और किसी भी दूसरे कारणसे रक्त बिगड़ने पर पित्तज गुल्म उठता है। पित्तजन्य गुल्मरोगमें ज्वर, पिपासा, शरीरकी अवसन्नता एवं रक्तवर्णता, घर्म उद्गम और भुक्त द्रव्यकी परिपाक अवस्थामें अतिशय वेदना होती है। यह व्रण जैसा दाहयुक्त और स्पर्शासह भी रहता है।

शीतल, गुरु एवं स्निग्ध द्रव्य सेवन, तृप्ति पूर्वक परिपूर्ण भोजन और दिवा निद्रासे श्लैष्मिक गुल्म निकलता है। वातज, पित्तज तथा श्लैष्मिक गुल्मके जो कारण कहे गये हैं, उनके समुदायसे सान्निपातिक गुल्मकी उत्पत्ति है।

श्लैष्मिक गुल्ममें रोगीको समझ पड़ता, मानो उसकी सारे शरीरमें कोई तर कपड़ा लिपटा है। शीतज्वर, देहका भारीपन तथा अवसन्नता, वमन उद्वेग, खांसी, अरुचि, अग्निमान्द्य और थोड़ा दर्द प्रभृति अपरापर समस्त श्लेष्मज लक्षण देख पड़ते हैं।

सान्निपातिक गुल्म पत्थरके टुकड़े जैसा कड़ा और उठा हुआ रहता है। उसमें बहुत पीड़ा और जलन होती है। शीघ्र विदाह, मनकी व्याकुलता, शरीरका दुबलापन अग्निवैषम्य और कमजोरी आ जाती है। यह असाध्य है।

नवप्रसूता (प्रसवके बाद जिसको अग्नि, बल, वर्ण, मांस आदि स्वाभाविक नहीं होता), आमगर्भ प्रसवा (नौ महीने पूरे होनेसे पहले ही जो प्रसव करती है) और ऋतुमती स्त्री यदि किसी प्रकार अहितजनक द्रव्य भोजन कर लेती उसका वायु रक्तद्वारा गर्भाशयमें गुटिकाकार गुल्मरोग उत्पन्न करता है। उसमें जलन और दर्द होता है। लक्षण लगभग पित्तके गुल्म जैसा है। सिवा इसके रक्तज गुल्ममें गर्भके समस्त लक्षण अर्थात् ऋतु न होना, [illegible] ए पीला पड़ना, स्तनके अग्र भागका कालापन और दोहद प्रभृति देख पड़ते हैं। परन्तु गर्भमें से हस्तादि अङ्ग प्रत्यङ्ग सहायसमपृथक नि गूल स्पन्दित होता है, रक्तज गुल्म वैसा नहीं करता। यह गुल्म या रक्त पित्त बहुत दिन बाद वेदनाके साथ गर्भाशयमें स्पंदित होता है। दश मास बीत जाने पर वैद्योंको उसकी चिकित्सा छोड़ देना चाहिये।

जो गुल्म पत्थरके टुकड़े जैसा कड़ा, ऊंचा, वेदना तथा दाहयुक्त और मनकी व्याकुलता, शरीरकी कृशता, अग्निवैषम्य एवं बल ह्रास करनेवाला हो, असाध्य समझा जाता है। वह गुल्म भी असाध्य है, जो क्रमान्वयसे सञ्चित हो सारे पेटमें व्याप्त होता, धात्वन्तरके साथ मिल करके शिराजालमें लिपटता एवं कछुएकी तरह उठता और रोगीको दुर्बलता, अरुचि, हृल्लास, खांसी, कै, ग्लानि, बुखार, प्यास, तन्द्रा तथा प्रतिश्याय उत्पन्न करता है।

गुल्मरोगीको बुखार, दमा, कै और दस्त तथा दिल, तोंद, हाथ एवं पांवमें शोथ होनेसे फिर जीनेकी आशा नहीं रहती। जिस गुल्मरोगीको दमा, शूल, अवका विद्वेष और दौर्बल्य उपस्थित होता तथा ग्रन्थि जैसा गुल्म एकाएक विलुप्त हो जाता उसके भी जीनेकी उम्मेद कम होती है।

वातजन्य गुल्म रोगमें जुलाबके लिये रेंडीका तेल या दूधके साथ हरे पीना और चिकना भपारा लेना चाहिए। मञ्जीखार ४ माषा, कुट २ माषा और केवड़ेकी बोका क्षार ४ माषा रेंडीके तेलमें मिला करके पीनेसे वातज गुल्म विनष्ट होता है। वात गुल्मके रोगीको तीतर, मोर, मुर्गा, बगला और वर्तक पक्षीके मांसका रस, घी, शालि चावलका भात और शराब देते हैं।

पित्तज गुल्ममें विरेचनके लिये त्रिफलाके क्वाथमें त्रिवृत् चूर्ण अथवा शक्कर और शहदके साथ कमला गुडीका चूर्ण सेवन करना चाहिये। दाख या गुड़के साथ हर खानेसे पित्तज गुल्म दब जाता है। वातज गुल्मको जो औषध बतलायी गयी है, श्लैष्मिक गुल्ममें भी प्रयोज्य है। कफघ्न क्रियासे भी उसका उपशम होता है।

हींग, पीपल, धनिया, जीरा, वच, चीत, आकनादि, शटी अम्लवेतस, सामुद्रलवण, विटलवण, सैन्धव, त्रिकटु, यवक्षार, सर्जिक्षार, अनार, हर, पुष्करमूल, चीमड़, हउआ और काला जीरा सबका बराबर बराबर

चूर्ण ले करके अदरकके रसमें सात तथा विजोरे नीबूके अर्कमें सात दिन भावना दे सबेरे गर्म पानीके साथ खाने पर गुल्मरोग मिट जाता है।

वातज प्रभृति तीन गुल्मोंकी जो चिकित्सा बतलायी है, बुद्धिमान् चिकित्सकको विवेचनाके साथ उसीसे और त्रिदोषनाशक क्रिया द्वारा भी सान्निपातिक गुल्ममें काम लेना चाहिये।

सामुद्रलवण, सैन्धव, काचलवण, यवक्षार, सौवर्चल, सोहागेकी फुली और सर्जिका क्षार सबका चूर्ण समभागमें ले मनसासिजके क्षारसे तीन और आकन्दके क्षारसे भी तीन दिन भावना दे करके धूपमें सुखाते हैं। फिर आकन्दके पत्तेसे इसको लपेट करके एक वर्तनमें रख छोड़ा जाता है। वर्तनका मुंह अच्छी तरह बन्द करके आग पर उसको पकाते हैं। क्षार बन जाने पर इसे उतार लेना चाहिये। ... ...वायन, जीरा और चीत बराबर बराबर ले समस्त चूर्ण जितना पूर्वोक्त क्षार होता, एकत्र मिला पानीके साथ एक एक तोला सेवन करनेसे गुल्मका उपशम होता है।

गुल्मरोगोंके पक्षमें सूखा मांस, मूली, मछली, सूखी सब्जी, दाल, मीठा फल और आलू अनिष्टकारी है। आरोग्य कामना करनेवालेको उन सबका खाना सर्वथा ही छोड़ देना चाहिए।

सुश्रुत टीकाकारके मतमें वैदल निषिद्ध जैसा उल्लिखित होते भी उड़द और करथीको बुरा नहीं समझते।

रक्त गुल्मरोगमें प्रथमतः स्निग्ध स्वेद, उसके बाद विरेचन प्रदान करना चाहिये। गुल्फा, जंगली करौंदेकी छाल, देवदारु, ब्रह्मयष्टि और पीपल सब समभागमें पीस तिलके काढ़े में पीनेसे रक्तगुल्मनिवारण होता है। तिलके क्वाथमें गुड़, त्रिकटु, घृत तथा ब्राह्मणयष्टि डाल करके पीनेसे आर्तव रक्तजनत और रजोवन्ध भी अच्छा हो जाता है। आंवलेका रस मिर्चका चूर्ण मिला करके पान करनेसे रक्त गुल्म मिटता है। रक्त गुल्मके रोगीको कमलागुड़िका चूर्ण शक्कर और शहदके साथ खिलाना चाहिये। पलासका क्षार पानीके साथ घी पका करके पीनेसे रक्तगुल्ममें रक्तस्राव होता है। यवक्षार, त्रिकटु, और घृत एकत्र पान करनेसे रक्त गुल्म नहीं रहता। (भावप्रकाश)

सुश्रुतके मतमें लहसुनका अर्क, पञ्चमूलीका रस, शराब, कांजी, दही और मूलीका रस सबके योगमें घृत पाक करना चाहिये। फिर इसमें त्रिकटु, दाड़िम, आम्लातक, यामानी, चीत, सैन्धव, हिङ्गु, अम्लवेतस और कृष्णाजीरक कई द्रव्योंका कल्क पाक करते हैं। इसके सेवनसे अमृलरोग अच्छा हो जाता है।

गुल्मक (सं० पु०) रक्तकरवीर वृक्ष।

गुल्मकालानल रस (सं० पु०) गुल्मस्य कालानल इव नाशको रसः। गुल्मरोगकी औषध। पारा, लौह ताम्र, हरिताल, गन्धक, यवक्षार, प्रत्येकके दो दो तोले, मोथा, मिर्च, सोंठ, पीपल, गजपीपल, हरीतकी (हरड़), वच, कूड़, प्रत्येकके चूर्णका एक एक तोला, इन सबको अच्छी तरह मिलाकर पितपापड़ा, मोथा, सोंठ, अपामार्ग और परवल इनके रसमें ... ...देकर हरीतकी क्वाथके साथ चार रत्ती परिमाण प्रत्येक दिन सेवन करना ... चाहिये। इसी औषधका नाम गुल्मकालानलरस है। इसके सेवन करनेसे वातिक, पित्तज, श्लैष्मिक, द्वन्द्वज और त्रिदोषज गुल्मरोग नष्ट होते हैं। वातगुल्ममें यह बहुत उपकारी है। (रसेन्द्रसारसंग्रह)

गुल्मकेतु (सं० पु०) गुल्मः केतुरस्य, बहुव्री०। अम्लवेतस। एक तरहका बेंत, सरकण्डा।

गुल्मकेश (सं० पु०) गुल्मकानां गुल्मानामीशः, ६-तत्। गुल्मका अधीश्वर, वह जिसके अधीन गुल्म रहे।

गुल्मगवेधुका (सं० स्त्री०) १ गवेधुका। २ देवधान्य, एक तरहकी घास (Coixbarbata)

गुल्मघ्न (सं० क्ली०) हिंगु, हींग। (Ferula asafoetida)

गुल्ममूल (सं० क्ली०) गुल्म इव मूलं यस्य, बहुव्री०। आर्द्रक, अदरक।

गुल्मवज्रिणीवटिका (सं० स्त्री०) रसेन्द्रसारसंग्रहोक्त एक तरहकी औषध। पारा, गन्धक, तांबा, कांसा, सोहागा, हरिताल प्रत्येकके आठ तोलेको चूर्ण करके शरीरके अवस्थानुसार सेवन करना चाहिये। इसीका नाम गुल्मवज्रिणीवटिका है। इसके सेवन करनेसे रक्तगुल्म, प्लीह,

अष्ठीला, यकृत्, आनाह, कामला, पाण्डु, ज्वर और शूल नाश होते हैं।

गुल्मवल्ली (सं० स्त्री०) गुल्मप्रधाना वल्ली। सोमलता।

गुल्मशार्दूलरस (सं० पु०) गुल्मस्य शार्दूल इव नाशको रस। एक तरहकी औषध। पारा, गन्धक लौह, गुग्गुल, पीप्पल, त्रिवृत् वाला सोंठ, जीरा, धनिया और शठी प्रत्येकके आठतोले और जयपालके बारह तोले सभी को एकत्र करके घृतसे साथ मर्दन कर ६ रत्ती परिमाण की गोली बनाते हैं। इसीको गुल्मशार्दूलरस कहते हैं। अदरकके रस और उष्ण जलके साथ यदि उक्त औषध सेवन की जाय तो प्लीहा, यकृत्, गुल्म, कामला, उदरी, शोथ, वातिक, पैत्तिक, तथा श्लैष्मिक गुल्म नाश होते हैं। रक्तज गुल्मरोग भी इससे दूर हो जाता है। गहना नन्दनाथ नामक किसी योगीने इस औषधका आविष्कार किया था। (रसे-न्द्रसार०)

गुल्मशूल (सं० पु०) गुल्मसमूलक शूलमव। शूलरोग-विशेष। शूल देखो।

गुल्मिक (सं० पु०) राजकरवीर, एक तरहका लालकनेर।

गुल्मिन् (सं० त्रि०) गुल्मोऽस्त्यस्य गुल्म इनि। गुल्मरोगयुक्त, जिसको गुल्मरोग हुआ हो।

गुल्मिनी (सं० स्त्री०) गुल्मोऽस्त्यस्या गुल्म इनि तत ङीप्। विस्तृता लता, लम्बी लता। इसका नामा-न्तर—वीरुत्, उलुप, विरुधा, प्रतत् है।

गुल्मी (सं० स्त्री०) गुल्मोऽस्त्यस्य गुल्म अर्श आदित्वात् अच् ततो गौरादित्वात् ङीप्। १ आमलकी, आंवला। २ इलायची। ३ वस्त्रनिर्मित गृह, तम्बू, खेमा। ४ फलवृक्षविशेष, झरफरी। ५ ग्रहनको वृक्ष। ६ काष्ठ-कपालीयक, ज्योति गरनाका पेड़।

गुल्मुहम्मद खाँ—दिल्लीके एक राजकवि। इनके बनाये हुए ग्रन्थोंमेंसे नाहर उल मुशायिन नामक काव्य ग्रन्थ ही सर्वापेक्षा उत्कृष्ट है। कविताके प्रभावसे इन्हें "नातिक" को उपाधि मिली थी। १८४८ ई०को इनका देहान्त हुआ।

गुल्य (सं० त्रि०) गुड तद्वत् रस अर्हति गुड यत् डस्य लत्व। मधुर मीठा।

गुल्रिह—पयोधारके उन्नाव जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६ २४ उ० और देशा० ८१ १ पू०में अवस्थित है। प्राय पाँच सौ वर्ष पहले गुलारसिंह ठाकुरसे यह नगर स्थापित किया गया था। यहां एक विद्यालय है। जिसमें गवर्मेंटसे भी कुछ सहायता मिलती है।

गुल्लर (हि० पु०) दैनिक आय रखनेका सन्दूक या थैली।

गुल्लर (हि० पु०) गुलर देखो।

गुल्लर—रिचोडमें रहनेवाली एक जाति। इनमेंसे अडवी गुल्लर और गद्दा गुल्लर ये ही दोनों विभाग स्वतन्त्र हैं। इनके सिवा कई एक विभाग और भी देखे जाते हैं। ये हैदराबाद और पूना जिलेके ग्रामसमूहमें तथा कुल वर्गके निकटवर्ती सेलर ग्राममें रहते हैं। ये अपनेको 'गोल' या 'हनमगोल' कहते हैं।

अडवी गुल्लर जातिके पुरुष ग्राम तथा वनके नाना स्थानोंमें जा कर देशीय कविराजोंके लिये फल फूल एवं औषधको लता लाया करते हैं, और उनकी स्त्रियां घर घर भिक्षा मांगती फिरती हैं। इनकी शारीरिक गठन प्रणाली राजपूतानावासियोंके सदृश है, शरीरका वर्ण भी तदनुरूप है, किन्तु ये उनसे पतले तथा छोटे होते हैं। ये हिन्दी, कनाडी और तैलगु भाषा समझ तथा बोल सकते हैं। ये अपने वस्त्रको गेरू मट्टीमें रंगा कर पहनते हैं, और भेड़, छाग, खरगोश तथा गोमांसके भिन्न अन्यान्य जन्तुओंका मांस भक्षण करते हैं। वैद्य जातिको भांई ये भी कछुएका मांस खाते हैं। गद्दागुल्लर जातिके साथ ये अपने पुत्र वा कन्याका विवाह नहीं करते।

गद्दा गुल्लर जातिके मनुष्य कुत्ते तथा गदहे पालते और शिकारके लिये वन वन घूमते हैं। ये शृगाल, कछुए, शम्ब या खुरपुत्तका मांस खाते हैं। पुरुषगण चौर्य एवं दस्युवृत्तिमें पटु हैं।

गुल्ला (हि० पु०) १ गुलेलमें फेंकनेकी मट्टीकी बनी गोली। २ एक तरहकी मिठाई, रसगुल्ला।

(सं० पु०) ३ ऊख का गन्ना। गेरु, हला। ४ ईखका कटा हुआ छोटा टुकड़ा, गंडेरी, गांड़ा। ५ पानी सींचनेके लोटेकी रस्सीमें बंधी हुई छोटी लकड़ी। ६ नैनी-तालमें मिलनेवाला एक पहाड़ी पेड़। इसकी लकड़ी सुगंधित, हलकी और भूरे रंगकी होती है। ७ गोटा पट्टा बननेवालोंका एक डोरा। इसके दोनों सिरों पर सर

कंटेकी लकड़ी लगी रहती है। ८ डेढ़ वालिश्त लम्बो लोहेकी छड़ जो रूई ओटनेकी चरखीमें लगी रहतीहै।

गुलसानी—एक मुसलमान कवि। इनका यथार्थ नाम शेख सैयद उल्ला था। ये गुजरातराजमंत्री इस्लाम खाँके वंशधर और शाहगुलके शिष्य थे। ये सर्वदा दरवेश रूपमें भ्रमण करते एवं 'गुलसन कवि' से मशहूर थे। इन्होंने दिल्लीमें रहकर १००००० गजल रचना की थी। इनकी कवितायें गूढ़ार्थक होती थीं। ये अपने शिक्षा-गुरु शाह अवदुल आहद सरहिन्दके साथ मक्का तीर्थस्थान गये थे। ११४१ हिजरीको दिल्ली नगरमें इनकी मृत्यु हुई।

गुल्लाला (फा० पु०) एक तरहका लाल पुष्प। इसके ... और पुष्प पोश्तके ... पुष्पके जैसे होते हैं।

गुल्ली (हिं० स्त्री०) १ वीज। फलकी, गुठली। २ महुवेकी गुठली। ३ गोलाकार लंवोतरा छोटा टुकड़ा। ४ छोटे छोटे लड़कोंके खेल खेलनेका काठका टुकड़ा। यह चारसे छ: अंगुल लम्बा होता है। इसके दोनों छोर जौकी तरह नुकीले होते हैं और गोल तथा मोटा होता है, अंटी। ५ पत्तेका मधुयुक्त स्थान। ६ केतकी, केवड़ेका फूल। ७ दाने निकाले हुए मकई की वाल। ८ एक प्रकारकी मैना, गंगा मैना। ९ ईखका काटा हुआ टुकड़ा, गांड़ा। १० छोटा गोल पासा।

गुवाक (सं० पु०) गुवति मलवत् त्यागमुत्सृजति गु आक। १ सुपारीका वृक्ष। इसका पर्याय—घोंटा, पूग, क्रमुक, खपुर, गूवाक, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, वल्कतरु, दृढ़वल्क, चिक्कण, पूगी, सुरञ्जन, गोपदल, राजताल और छोटे फल है। इसके फलका नाम क्रमुकफल पूग, चिक्कणी, स्वल्क, उद्वेग, पूगफल और पूगीफलन है। इसके शीर्ष भागका गुण - स्वादु, तिक्त, कषाय, वल, प्राण, शुक्रवृद्धि, भेद और मदकारक एवं मूत्ररोग नाशक है। इसके निर्यासका गुण—शीतल, मोहकद गुरु, उष्ण, क्षार, कुछ कुछ अम्लरस, वातघ्न और पित्तवृद्धिकर है। इसके फलका गुण—गुरु, शीतवीर्य, रूक्ष, कषाय, कफघ्न, पित्तनाशक, मदकारक, अग्निवृद्धिकर, रुचिकारक एवं मुखका विरसतानाशक है। अपरिपक्व सुपारीका गुण—गुरु, अभिष्यन्दी एवं अग्नि और दृष्टिनाशक है। सिद्ध की हुई सुपारी खानेसे त्रिदोष नाश होता है। भिषक्शास्त्रका मत है कि जिस फलका मध्यभाग कठिन होता है वही फल श्रेष्ठ है। (भावप्रकाश)

राजनिघण्टुके मतसे कच्ची सुपारीका गुण—कषाय, मुखमल, रक्ताम्लश्लेष्मा, पित्त और उदराधान नाशक, कण्ठशुद्धिकारक और सारक है। सुपारीका गुण—कण्ठरोग-नाशक, रुचिकारक, पाचन और रेचक हैं, पानके साथ सुपारीका गुण पाण्डु, वात और शोथकारक है। राजवल्लभके मतसे इसकी पीकका गुण—पहली पीक विषतुल्य, दूसरी भेदक और गुरुपाक तथा तीसरी पानकी ...

डाक्टर मर्ट साहवका कहना है कि सुपारीका चूर्ण १०से १५ ग्रेण मात्रामें व्यवहार करनेसे दुर्वल मनुष्यका उदरामय अच्छा हो जाता है। मोरिग साहवने परीक्षा कर देखा है कि सुपारीमें टैनिक और गेलिक एसिडका भाग ही अधिक है (Journ. de Pharm. Vol VII po 449) एसियाके प्राय: समस्तदेशोंमें यह प्रचलित है। सुपारी वृक्षका मध्यभाग शून्य, है, यह तृणसार जातीय तृणमध्यमें गिना जाता है। सुपारीका वृक्ष ४० से ५० हाथका लम्बा देखा गया है। अग्रहायण या पौष मासमें इसकी मुकुल (कली) वाहर निकलती है और चैत्र वैशाख मासमें फल लगते हैं। तथा आश्विन कार्त्तिक मासमें ये फल पक जाते हैं। थोड़ देशोंके मनुष्य सुपारी फलके छिलकेको अलग कर उसे पतले पतले खण्डोंमें काटते और पानके साथ खाते है। बङ्गालमें चार तरहकी सुपारी देखी जाती हैं। पहली 'देशाल' जो देखनेमें वड़ी और काटने पर मध्यभाग शुभ्रवर्णसी होती, दूसरी 'भेटल' जो 'देशाल' सी होती और तीसरी चिक्कणी जो देखनेमें वहुत छोटी होती है। कोई कोई कहते हैं कि अपक्व फलको शुष्क करने पर चिक्कणी सुपारी बनती है चौथी 'रामपुग' जो इस देशमें नहीं होती है। यह सुपारी दक्षिण और पश्चिम प्रदेशमें पायी जाती है। एक तरहकी सुपारी और है जो दक्षिणसे इस देशमें लायी जाती है और जहाजी सुपारी कहलाती है।

गुवार (हिं० पु०) ग्वाल देखो।

गुवारपाठा (हिं० पु०) ग्वारपाठा देखो।

गुवारिच—अयोध्यामें गोण्ड जिलेके अन्तर्गत एक परगना इसके उत्तरमें तोहिं नदी और गोण्डपरगना, पूर्वमें दिगसार परगना, दक्षिणमें घर्घरा नदी एवं पश्चिममें कुरासर परगना है। । यहां राजपूत राजाओंके सेनानायक सुहन्लदेवने १०३२ ई०को मुसलमान विजेता सैयद सालर मुसाउदको पराजित कर देशसे वहिष्कृत कर दिया था। थोड़े समयके बाद यह परगना गोण्डराज्यके रामगढ गौडिया परगनेमें मिलाया गया। वर्तमान गोण्ड, वस्ती और गोरखपुर प्राचीन गोण्डराज्यके अन्तर्गत थे। गोण्डा देखो।

इस परगनेमें बहुतसी नदियां और छोटे छोटे स्रोत उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वमुख हो कर प्रवाहित हैं। इस लिये भूमिका निम्नतर प्रदेश उर्वरा है। भूपरिमाण २६७ वर्गमील या १७०८६२ एकड है। जिनमेंसे ८८१ ४२ एकड जमीनमें फसल होती है।

गुमन (हिं० पु०) गुमान देखो।

गुसाई—वैष्णव सम्प्रदाय विशेष। यह संस्कृत गोस्वामी शब्दका अपभ्रंश है। इन्द्रिय जय करनेवालेका ही नाम गोस्वामी वा गुसाईं है। भारतके सब प्रधान पुण्यनेत्रों, तीर्थस्थानों और बडे नगरोंमें गुसाइयोंके मठ या अखाडे देख पडते हैं। इनके चिरदिन अविवाहित वा संसार निर्लिप्त रहनेकी बात है। परन्तु आजकल उस नियमका कम ख्याल रखते हैं। अखाडोंके महन्त विवाह नहीं करते। दाक्षिणात्यके गुसाईं पृथक्जाति बन गये हैं। यह सब वर्णोंके लोगोंको कुछ रुपया पाने पर अपने दलमें मिला सकते हैं। महाराष्ट्रवीर माधोजी सेंधियाके अभ्युदय कालको उन्होंने असधारण किया था। पेशवाके पास गुसाइयोंकी बहुत फौज रही। मालापरिवर्तन द्वारा ही उनका विवाहकार्य सम्पन्न होता है। बङ्गालके गोसाईं कण्ठी और दाक्षिणात्यवाले रुद्राक्ष पहनते हैं। शिष्यको "श्री सोऽहम्" मन्त्रकी दीक्षा दी जाती है। इनमें जाति भेदकी खटपट नहीं है।

गुसाईं आनन्दघन ब्राह्मण,—एक प्रसिद्ध कवि और पण्डित। इन्होंने फारसी भाषामें ४०००० श्लोकोंमें सम्पूर्ण काण्ड रामायण, १२००० श्लोकोंमें मत्स्यपुराण और सिता-

क्षराका फारसी अनुवाद किया है। इन्होंने अपने अनुवादमें इस प्रकारसे अपना परिचय दिया है—शाहजहानाबादमें उनका जन्म हुआ था। १८२५ सम्वतमें ये काशी गये थे। १८४७ सालमें इन्होंने जोनाथन डङ्कन साहबके अनुरोधसे रामायणका अनुवाद किया था।

गुसाईंकवि,—राजपूतानेके एक प्रसिद्ध कवि। इनके दोहों का राजपूतों में बड़ा आदर है।

गुसाईंगञ्ज—लखनऊ जिलेका एक नगर। यह अमेथी टीनगुरुनगरसे ३ माइल दक्षिणपश्चिममें है और लखनऊसे सुलतानपुर जानेके रास्तेमें पड़ता है। हिम्मतगिरि गुसाईंने १७५४ई०में यह नगर बसाया था। यहां मिट्टीसे बने हुए एक बड़े किलेका ध्वंसावशेष अब भी मौजूद है। यहांके लोग एक प्राचीन मूर्त्तिको चतुर्भुज देवी मान कर उसकी पूजा करते हैं।

उक्त राजा १००० अश्वारोही राजपूत सेनाके नायक थे और सेनाके वेतन स्वरूपमें अमेथी परगनाके जागीरदार हो गए थे। एक समयमें उनका खूब बल था। बक्सर युद्धके बाद नवाब सुजा उद्दौलाने अङ्गरेजोंके डरके मारे इनसे आश्रय चाहा था। इन्होंने आश्रय नहीं दिया। बादमें नवाब और अङ्गरेजोंमें जब सन्धि हो गई तब इनको भाग कर अपनी जन्मभूमि हरिद्वारमें जाना हो पडा। वहां उन्होंने अङ्गरेजोंसे एक छोटीसी जागीर पाई थी।

यह नगर बडा साफ सुथरा है। रास्ता आदिके साफ करनेमें जो खर्च होता है, वह प्रत्येक घरसे कर स्वरूप कुछ कुछ ले लिया जाता है। कासपुर और लखनऊ तक समान रास्ता होनेसे, यहांका रुजगार अच्छा चलता है। यहांकी अधिष्ठात्री देवीके उत्सवके उपलक्षमें सालमें दो बार मेला लगता है। इस मेलेमें करीब पांच सात हजार आदमियोंकी भीड होती है।

गुसा (अ० पु०) गुस्सा देखो।

गुस्ताख (फा० वि०) धृष्ट, ढीठ, बडोंका सङ्कोच न रखनेवाला।

गुस्ताखी (फा० स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई, अशिष्टता, बदवी।

गुस्त (अ० पु०) स्नान।

गुसलखाना (अ० पु०) स्नानागार, नहानेका घर।
गुस्सा (अ० पु०) क्रोध, कोप, रिस।
गुस्सैल (अ० वि०) चिड़चिड़ाहा, जिसको छोटोसी बातमें क्रोध आ जाय।
गुषाण—शक जातिकी एक शाखा। किसी किसीका मत है कि महाराज कनिष्क इसी जातिके थे। कनिष्क देखो।
गुष्टि (सं० स्त्री०) गाम्भारी वृक्ष, गम्भारका पेड़।
गुष्फित (सं० त्रि०) गुम्फ भावे क्त निपातनात् मकारस्य षकारः। १ निर्गत शाखा, निकली हुई डाली। २ गुम्फन-वृक्षके शाखादि निर्गम, गुम्फन पेड़की डालियोंका निकलना।
गुह (सं० पु०) गुहति रक्षति देवसेनां गुह-क। १ कार्त्तिकेय, पार्वतीके पुत्र। इन्होंने देवसेनाको रक्षा की थी और ये गुहा या कन्दरामें रहते थे। इन्हीं दोनों कारणोंसे इनका नाम गुह पड़ा। २ अश्व, घोड़ा। ३ परमेश्वर। ४ शृङ्गवेरपुरके अधीश्वर एक चण्डाल जातीय राजा। महाराज रामचन्द्रजीके साथ इन्होंने मित्रता की थी। यह अतिशय धर्मपरायण और मित्रप्रिय रहे। ५ बङ्गाली कायस्थगणोंकी एक उपाधि। ६ सिंहपुच्छी लता, पिठवन। ७ शालपर्णी, सरिवन। ८ बुद्ध। ९ गुफा, कंदरा। १० हृदय। ११ माया। १२ मेढ़ा।
गुहक (सं० पु०) निषादराज, रामचन्द्रके मित्र।
गुहगुप्त (सं० पु०) एक बोधिसत्व।
गुहचन्द्र (सं० पु०) एक वणिक्पुत्र। कथासरित्सागरमें इनकी कथा वर्णित है। ये धर्मगुप्तकी कन्या सोमप्रभाको देखकर उन्मत्त हो गये थे; फिर अनेक चेष्टा और कष्टके बाद उन्हें प्राप्त किया था। सोमप्रभा देखो।
गुहड़ा (हिं० पु०) चतुष्पद जन्तुका एक रोग। इसमें पशुके मुखसे लार निःसृत होती है और शरीर गर्म हो जाता है एवं चलनेके समयमें वह लङ्गड़ाता है।
गुहदवद्य (वै० त्रि०) प्रच्छन्नावद्य। (ऋक् ३।१९।५)
गुहदेव—एक प्राचीन पण्डित। देवराजने इनका वेदभाष्य और श्रोनिवासदेवने इनका वैदान्तिक मत उद्धृत किये हैं।
गुहर (सं० त्रि०) गुहेन निर्वृत्तः गुह अश्मादित्वात् र। गुह द्वारा निर्वृत्त, सम्पादित।
गुहराज (सं० पु०) प्रासादविशेष। महल जिसका विस्तार १६ हाथका होता है। प्रासाद देखो।
गुहराना (हिं० क्रि०) पुकारना, चिल्लाकर बुलाना।
गुहलु (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक एक ऋषि
गुहल्ल—गोपकपुरके कादम्बराजगणोंके आदि पुरुष।
गुहवाना (हिं० क्रि०) गुंधवाना, गुहनेका काम करना।
गुहशिव—कलिङ्गके एक राजा।
गुहषष्ठी (सं० स्त्री०) गुहप्रिया षष्ठी, मध्यपटला० अग्रहायन मासकी शुक्ल छठ। यह कार्त्तिकेयकी जन्म तिथि मानी जाती है। स्कन्दषष्ठी देखो।
गुहसेन (सं० पु०) १ वलभीके एक पराक्रान्त महाराज। ये महाराज धरपट्टके पुत्र थे। इनके चलाये हुए २४६, २४७ और २४८ गुप्त-वलभी सम्वत् अङ्कित तीन अनुशासनपत्र पाये गये हैं। वलभी राजवंश देखो।

२ ताम्रलिप्तनिवासी वसुदत्त नामक एक विख्यात वणिक्के पुत्र। इनकी स्त्रीका नाम देवस्मिता था। इनका दाम्पत्य-प्रेम ऐसा प्रवल था कि गुहसेन एक क्षण भी स्त्रीको छोड़कर कहीं जा नहीं सकते थे। देवस्मिता भी उनको देखे विना एक क्षण भी रह न सकती थी। गुहसेनके पिताकी मृत्युके बाद उन्हें कटाहद्वीपमें वाणिज्य करनेके लिये जाना पड़ा। संयोग वश उन दोनोंने एक दिन दो कमलके फूल पाये। फूलोंमें विशेष गुण यह था कि यदि दो व्यक्तियोंमेंसे किसी एकका भ्रष्ट हो जाय तो दूसरेके हाथका कमल मलिन हो जाता। गुहसेन अत्यन्त कष्टसे देवस्मिताको परित्याग कर वाणिज्यके लिये चले। कटाहद्वीपमें पहुंचकर वे वाणिज्य करने लगे। एक दिन वहांके वणिक्कुमारोंने उस कमलके फूलका रहस्य प्रकाश करनेके लिये उन्हें कोई मादक वस्तु खिला दी। बाद उसका रहस्य जानने और देवस्मिताका चरित्र दूषित करनेके लिये उनमेंसे चार वणिक्कुमार ताम्रलिप्तिकी ओर रवाना हुए। यहां पहुंचकर उन्होंने योगकरण्डिका नामकी एक परिव्राजिकाकी शरण ली। योगकरण्डिकाके सिद्धिकरी नामकी एक शिष्या (चेली) थी। वह अपनी शिष्याको साथ लेकर देवस्मिताके निकट पहुंची और उसे परपुरुषमें आसक्त होनेको यथेष्ट चेष्टा करने लगी। बुद्धिमती देवस्मिता

जान गई कि कोई उसके स्वामीके हस्तस्थित कमलका रहस्य जानकर उसका सर्वनाश करनेमें उद्यत हुआ है। इस लिये उस पापाशयको उपयुक्त दण्ड देनेका विचार कर उसने अपनी दासीको बुलाया और उसे धतुरा मिला हुआ शराब तथा कुत्तेके पद चिह्नयुक्त एक मोहर संग्रह करनेकी आज्ञा दी। बाद उसने योगकरण्डिकाको उसके पास एक वणिककुमार भेज देनेके लिये कहा। परिव्राजिकाके कथनानुसार एक वणिककुमार देवस्मिताके प्रेममें आसक्त हो गई तस्थान पर उपस्थित हुआ। उस स्थान पर देवस्मिताका वेश धारण कर उसकी दासी वणिककुमारकी अपेक्षा कर रही थी। उसके माया-बलसे वह वणिककुमार धतुरा मिश्रित शराब पीकर अचेत हो पड़ा। अन्तमें दासीने उस कुत्तेके पद चिह्न युक्त मोहरको तपाकर उसके कपालमें छाप दे दी और पासके किसी पानीके गड्ढेमें फेंक दी। इसी तरहसे एक एक कर चारों कुमार अपने कर्मका उपयुक्त दण्ड पाकर स्वदेशको लौट आये, परन्तु किसीने यह गुप्त रहस्य दूसरे के सामने प्रकट न किया।

इसके थोड़े समयके बाद ही देवस्मिताने परिव्राजिका और उसको शिष्याको भी उसी तरह अचेत कर उनकी नाक और कान काट करके उसी जगह फेंक दी। बाद देवस्मिताने सोचा कि शायद वणिककुमार उसके पति का कोई अनिष्ट भी न कर डाले इसी भयसे वह वणिक् वेशमें कटाहद्वीपको रवाना हुई। वहां पहुंच कर उसने राजासे कहा, "धर्मावतार! मेरे चार भृत्य यहां भाग आये हैं, अतः उन्हें मुझे प्रत्यर्पण करनेकी कृपा करें।" राजाने कर्मचारियोंसे उन भृत्योंका अनुसन्धान करनेकी आज्ञा दी। देवस्मिताने उन चार वणिककुमारोंको बतला कर कहा कि ये ही उसके भृत्य हैं। इस पर नगरवासी विशेषकर वणिक पुत्र क्रुद्ध हो उठे। देवस्मिता राज सभामें उपस्थित होकर बोली—'राजन्! इसके कपालमें एक रपद चिह्नयुक्त मुहरकी छाप है, परीक्षा कर देखी जाय।' यह सुनकर सबके सब स्तम्भित हो उठे। सभी को ही उन चारों वणिककुमारोंको देवस्मिताके क्रीतदास स्वीकारना पड़ा। अन्तमें देवस्मिताने राजसभामें आदि से अन्त तक इस रहस्यकी सभी बातें कह सुनाई। यह सुनकर सब कोई उसकी यथेष्ट प्रशंसा करने लगे। महाराजने सन्तुष्ट होकर देवस्मिताके पातिव्रत्यका उपहार स्वरूप उसे अनेक धनरत्न दिये। बाद गुहसेन पत्नीके साथ ताम्रलिप्तमें आकर परम सुखसे कालयापन करने लगे। (कथासरित्सागर)

गुहांजनी (हि० स्त्री०) एक तरहकी फुड़िया जो कभी कभी चक्षुके पलक पर हुआ करती है।

गुहा (सं० स्त्री०) गुह क टाप् च। १ सिंहपुच्छीलता। २ गर्त्त, गड्ढा। ३ गुफा, कन्दरा। ४ शालपर्णी, सरिवन। ५ पृश्निपर्णी, पिठवन लता। ६ हृदय। ७ माया। ८ गुहाधिष्ठात्री देवता। "गुहाभ्य किरात।" (वाजसनेय० ३।१६) ९ बुद्धि। गुह भावे भिदादित्वात् अङ्। १० संवरण, आच्छादन, ढकना। ११ मैठा।

गुहागर—बम्बई प्रान्तके रत्नगिरि जिलेका एक बड़ा गांव। यह समुद्र तट पर अञ्जनवेलसे ६ मील दक्षिण पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः ३४४५ है। पोर्त्तगीज इसे ब्राह्मणोंकी खाड़ी ऐसा समझते थे। १८१२ ई०को पेशवा बाजीरावने ग्रामसे दक्षिण पर्वत पर एक मन्दिर निर्माण किया। १८२० ई०को इसका बहुतसा सामान रत्नगिरि के सरकारी मकानोंमें उठा करके लगा दिया गया, परन्तु ध्वंसावशेष अब भी पड़ा है। ब्राह्मण अधिक रहते हैं। देवालय कई एक हैं।

गुहागृह (सं० क्ली०) गुहा गृहमिव। गुहावास, गुफाके जैसा घर।

गुहाचर (सं० क्ली०) गुहान्ते आवृणोत्यज्ञानपदार्थं अस्यां गुह घञ्,गुहा बुद्धि तस्यां विषयतया चरति गुहा चर ट। ब्रह्म, परमात्मा।

गुहादित्य (सं० पु०) सुप्रसिद्ध बाप्पाके पुत्र। इनका दूसरा नाम गुहिल था।

गुहामुख (सं० क्ली०) गुहाया मुखं, ६ तत्। गह्वरद्वार, कन्दराका द्वार।

गुहार (हि० स्त्री०) रक्षाके लिये पुकार, दोहाई।

गुहाल (हि० पु०) गोशाला। गायोंके रहनेका स्थान।

गुहावदरी (सं० स्त्री०) गुहा गुह्या बदरीव। शालपर्णी सरिवन।

गुहावासा (सं० स्त्री०) गुहावुद्धिर्वासो यस्याः बहुव्री०, ततः टाप्। गायत्री। (देवीभा० १२।६।४२)

गुहाशय (सं० पु०-स्त्री०) गुहायां गर्ते शेते गुहा-शी-अच्। १ मूषिक, मूसा, चूहा। २ जो समस्त जन्तु गुफामें वास करते हैं। भावप्रकाशमें लिखा है कि सिंह, व्याघ्र, हक, भालू, तरच्छु, द्वीपी, वभ्रु, जंबुक और मार्जार प्रभृति जन्तु गुहाशय कहलाते हैं।

इन्होंका—वातघ्न, गुरु, उष्ण, मधुर, स्निग्ध, वलकर एवं नेत्ररोगी और गुह्यरोगीके लिये विशेष उपकारी है।

(पु०) गुहायां हृदि शेते गुहा-शी-अच्। ३ परमात्मा, ब्रह्म। ४ प्राण।

गुहाहित (सं० त्रि०) गुहायां वुद्धौ हृदये वा आहितं, ७-तत्। हृदिस्थ, जो हृदयमें अवस्थान करता है।

गुहिन (सं० क्ली०) गुह वाहुलकात् इनन्। वन जङ्गल।

गुहिल (सं० क्ली०) गुह इलच् किच। १ वन जङ्गल। (त्रि०) २ गुहाके निकटवर्ती देशादि। (पु०) ३ गहलोत् वंशके आदिपुरुष। गहलोत देखो।

गुहेर (सं० त्रि०) गुह-एरक्। १ रक्षाकर्त्ता, रक्षक। (पु०) २ लौहकार, लोहार।

गुहेरा (हिं० पु०) गोध, गोह नामका कीट।

गुह्य (सं० क्ली०) गुह भावादौ यत्। १ गोपन, छिपाव। २ उपस्थ; भग, लिङ्ग आदि गोपनीयअङ्ग। ३ (त्रि०) छिपानेलायक। (पु०) ४ कामठ, कच्छप, कछुआ। ५ दंभ, छल, कपट। ६ विष्णु। ७ महादेव, शिव। ८ उपदेवताविशेष।

गुह्यक (सं० पु०) गूहन्ति रक्षन्ति निधिं धनविशेषं गुह-गवुल्, पृषोदरादिवत् यगागमे साधुः। गुह्यं कुत्सितं कायति कै क। यद्वा गुह्यं गोपनीयं कं सुखं येषां बहुव्री०। १ देवयोनिविशेष, कुवेरके खजानोंको रक्षा करनेवाला यक्ष, निधि-रक्षक यक्ष। इनका आवासस्थान पिशाच लोकके ऊर्ध्व और गन्धर्व लोकके निम्नमें है। ब्रह्मवैवर्तपुराणमें लिखा है कि कृष्णके गुह्य देशसे पिङ्गलवर्ण अनुचरका जन्म हुआ था। इसीलिये वे गुह्यक कहलाये।

(ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्म० ५।६०)

काशीखण्डका मत है कि जो सदुपायसे अधिक धन उपार्जन कर छिपा कर रखते और कभी भी अन्याय पथ पर पदक्षेप नहीं करते और जो अतिशय धनशाली अथच क्रोध वा असूयाशून्य हैं और आपसमें धन विभाग कर निर्विवादसे भोग करते हैं, जो सर्वदा सुखाभिलाषी हैं, किसी पुण्य तिथि, वार, संक्रान्ति वा पर्वदिनमें किसी तरहका पुण्य कार्यका अनुष्ठान नहीं करते या अनुष्ठान करना जानते ही नहीं, सिर्फ ब्राह्मणको ही पूज्य समझते और समय समय पर उन्हें गोदान किया करते एवं कभी भी ब्राह्मणवाक्य उलङ्घन नहीं करते वे ही मनुष्य मृत्युके वाद गुह्यलोकको प्राप्त होते हैं।

२ पक्वान्नविशेष, एक तरहका मधुर खाद्य द्रव्य। मैदा या सूजीको घृतमें भंज कर उसमें चीनी और किशमिश मिश्रित करदें और सुगन्धिके लिये दो एक एलाची, लवङ्ग और कर्पूर भी दे दें। इतना करनेके वाद उसे एक समितालम्ब पात्रमें रखकर घृतसे पाक करें। भली भांति पाक होनेके पश्चात् चीनीका रस उसमें डाल दें। इसीको गुह्यक कहते है। यह अति उपादेय खाद्य है। इसका गुण—वृंहण, अतिशय रुच्यग्राही, वृष्य, पित्त और वायुनाशक, मधुर एवं गुरुपाक है।

३ अङ्गिरा कुलज तमसादेवीके भक्त एक राजा, गोपालके पुत्र। (सह्याद्रि ३१।३।३४)

गुह्यकाली (सं० स्त्री०) नित्य कर्मधा०। कालीमूर्तिविशेष। विश्वसारतन्त्रमें इनकी उपासनाकी कथा, दीक्षाप्रणाली और मन्त्रोद्धार लिखे हुए हैं। इनकी उपासनासे चतुर्वर्ग लाभ होते हैं, साधकका अभीष्ट यह सर्वदा पूर्ण किया करती हैं, दिनोंदिन साधककी भक्ति वृद्धि होती जाती एवं पाञ्चभौतिक देहपात होने पर उसे मोक्षकी प्राप्ति होती है। इनका मन्त्र यथा—(१)

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके।"

अन्य विवरण दीक्षा शब्दमें देखो।

गुह्यकेश्वर (सं० पु०) गुह्यकानां ईश्वरः, ६-तत्। कुवेर।

गुह्यगुरु (सं० पु०) गुह्यो गोपनीयो गुरुः। शिव। तन्त्रशास्त्रमें बहुत जगह 'शिव' का 'गुह्यगुरु' नामसे उल्लेख किया है।

गुह्यग्रन्थ (सं० पु०) गुह्यो गोपनीयो ग्रन्थः। १ गोपनीय ग्रन्थ, गुप्त पुस्तक। २ तन्त्रशास्त्र। ३ वौद्ध शास्त्रग्रन्थ।

गुह्यतन्त्र (सं० क्ली०) गुह्यं च तन्त्रं चेति कर्मधा०

एक तन्त्र। इसमें तान्त्रिक धर्मको बहुतसी गोपनीय कथायें अच्छी तरहसे लिखी हैं। तान्त्रिक मतोंके पक्षमें यह विशेष आदरणीय है।

गुह्यदीपक (सं० पु०) स्वयं गुह्य सन् दीपयति प्रकाशयति दीप णिच् ण्वुल्। खद्योत, जुगनू।

गुह्यदेश (सं० पु०) पायु, मलद्वार।

गुह्यनिष्यन्दन (सं० पु०) गुह्यात् उपस्थात् निःस्यन्दते निष्यन्द अच। मूत्र, प्रस्राव, पेशाब।

गुह्यपति (सं० पु०) गुह्यानां पतिः, ६ तत्। गुह्योंके अधिपति, वज्रधर, कुबेर। वज्रधर देखो।

गुह्यपिधान (सं० क्लो०) गुह्यस्य पिधान, ६-तत्। गुह्यदेशका आवरण, गुह्य देश ढाकनेका वस्त्र।

गुह्यपुष्प (सं० पु०) गुह्यं गोपनीयं पुष्पं यस्य, बहुव्री०। अश्वत्थवृक्ष।

गुह्यभाषित (सं० क्लो०) गुह्यं गोपनीयं भाषितं। १ मन्त्र। २ गुप्तकथा।

गुह्यमण्डल—पुराणोक्त एक पवित्र स्थान।

(ब्रह्मपु० ११०अ०)

गुह्यमय (सं० पु०) गुह्य प्राचुर्यार्थे मयट्। कार्त्तिकेय।

गुह्यबीज (सं० पु०) गुह्यं बीजमस्य, बहुव्री०। भूतृण, गन्धतृण।

गुह्य स्थान—नेपालस्थ एक पवित्र स्थान।

गुह्याष्टक (सं० क्लो०) गुह्यानां तीर्थविशेषाणामष्टक, ६-तत्। आठ तीर्थविशेष। भारभूति, आषाढी, डिंडिल, माकुली, अमरकण्टक, पुष्कर, प्रभास और नैमिष इन आठों तीर्थोंको गुह्याष्टक कहते है।

गुह्येश्वरी (सं० स्त्री०) गुह्यानां ईश्वरी, ६ तत्। १ गुह्यकगणोंकी अधिष्ठात्री देवी। गुह्या गोपनीया अप्रकाश्या ईश्वरी कर्मधा०। २ गोपनीय देवी, इष्टदेवी। ३ काली, आद्या, विद्या।

गूंगा (फा० वि०) जो बोलनेमें असमर्थ हो। मूक, जिसके मुखसे साफ साफ शब्द न निकले।

गूंगा (हिं० स्त्री०) एक प्रकारकी बिछियां जिसे स्त्रियां अपनी अंगुलीमें पहनती हैं।

गूंच (हिं० स्त्री०) एक तरहकी मछली।

गूंछ (हि० पु०) एक तरहका मत्स्य जो लगभग चार हाथ लम्बा होता है इस तरहकी मछली भारतके प्रायः सभी नदियोंमें मिलती है यह अपना मुख सदा नीचेकी ओर रखती हुई गहरे पानीमें चलती है।

गूंज (हि० स्त्री०) १ कलध्वनि, भौरोंके गूंजनेका शब्द, २ प्रतिध्वनि, व्याप्तध्वनि। ३ लट्टूकी कील, जिस पर लट्टू घूमता है। ४ कानमें पहननेकी बालियोंका छोटा पतला तार।

गूंजना (हि० क्रि०) १ गूंजन करना, भौरोंका भिनभिनाना। २ प्रतिध्वनित होना।

गूंठ (हि० पु०) पहाड़ी टट्टू, टांगन।

गूंदा (हि०) गोंदा देखो।

गूंदी (हि० स्त्री०) गिरगिट्टी जातिका गधेला नामक पेड़।

गू (सं० स्त्री०) गच्छति अपानवायुना देहात् गम क्विप् टिलोपश्च। १ विष्ठा। २ मल।

गूगल (हि०) गुग्गुल देखो।

गूजर—पेशवा राघोजी भोंसलाकी लड़कोकी लड़कीके पुत्र वा पौत्र १८१८ ई०को अप्पासाहब जब सिंहासन च्युत हुए, यह मध्यप्रदेशके नागपुर राज्यमें अभिषिक्त हुए।

गूजर—युक्तप्रदेशवासी जातिविशेष। यह लोग शान्तभावसे कायिक परिश्रम करके जीविका चलाते हैं। इनके उत्पत्ति सम्बन्धमें बहुतसे आदमी बहुतसी बातें कहते हैं। कोई कोई कहता है कि गुर्जरदेश अथवा पञ्जाब प्रदेशके गुजरावाला या गुजरात नामक स्थानसे ही उनकी नाम गूजर नाम पड़ा है। नागपुरके गूजर अपनेको राजपूत और श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र राजा लवका वंशधर बतलाते हैं, परन्तु युक्तप्रदेशवाले अपनेको उतना ऊंचा नहीं समझते। पानीपथके रावल गूजर अपनेको खोखर राजपूतोंका वंशधर जैसा अनुमान करते हैं।

आजकल दिल्लीके निकटवर्ती स्थानसमूह, उत्तर दोआब और उत्तर रुहेलखण्डमें इन लोगोंकी संख्या अधिक है। गूजरोंमें ८४ भिन्न श्रेणियां होती हैं। पितृगोत्र, मातुलगोत्र और पितामही तथा मातामहीके गोत्रमें इनका विवाह नहीं होता। पानीपथके मुसलमान गूजरों-

को कनिङ्हम साहब चोना, यूनानो तथा मुसलमानो ऐतिहासिक कथित तोखारी, कुशान या क्युसयाङ्ग (तातार) जाति जैसा अनुमान करते हैं। यह और भी बतलाते हैं कि उन्हींसे गुर्जरराष्ट्र तथा खुरमान दो राष्ट्रोंका नाम पड़ा है। कह नहीं सकते, वह अनुमान कहां तक सत्य है। परन्तु आवयविक गठन देख करके जाटोंसे इनकी तुलना की जा सकती है। १३०३ ई०को प्राचीन गुर्जर नगरध्वंस हुआ था। १५४४ ई०को सम्राट् अकबरके राजत्वसमय इन्होंने उसको फिर निर्माण किया।

शोलापुरके गूजरोंमें बहुतसे गुजराती जैन श्रावकवंशीय हैं। कोई १०० वर्ष हुए, गुर्जर देशसे जा कर वे वहां रहने लगे हैं। इनके बीच स्वगोत्रमें विवाह होता और उसमें बड़ा खर्च पड़ता है। यह बड़े दानशील हैं। शोलापुरमें पार्श्वनाथके दो और कई एक अन्यान्य मन्दिर उन्हींके बनवाये हैं। व्रज भाषाके कवियोंने इस जातीय स्त्रियोंको 'गूजरि,' 'गूजरो' वा 'गुजरेटी' लिखा है।

गूजर (हिं०) गुर्जर देखो।

गूजर खाँ—रावलपिण्डी जिलाके दक्षिणपश्चिम और मूरि पर्वतसे २० मील दक्षिणमें एक तहसील। यह अक्षा० ३३° ४' तथा ३३° २६' उ० और देशा० ७२° ५६' एवं ७३° ३८' ३०" पू० पर अवस्थित है। भूपरिमाण ५६५ वर्ग मील है। यहांके विचारविभागमें एक तहसीलदार और एक मुन्सिफ है।

गूजरसिंह—एक सिख योद्धा। यह भङ्गी जातिके सरदार थे। १७६३ ई०को भङ्गियोंके जातीय एकता सूत्रमें आबद्ध होने पर इन्होंने उनके सैन्यको साथ ले फीरोजपुर आक्रमण और जय किया। फिर वहां पर इन्होंने दुर्ग संस्कार किया और अपना राज्य शतद्रु पर्यन्त बढ़ा दिया। १७६५ ई०को सरदार गूजरसिंहने लाहोरसे गक्कुरराज मुकारब खांके विरुद्ध यात्रा की और उन्हें पराजित करके गुजरातके बहिर्देशमें भगाया था। मुकारबने वितस्ताके पर पारको पलायन किया था। वहां वह स्वजातिकर्तृक निहत हुए। इसी समय गूजरसिंहने जा करके उनको विनाश किया और राज्य पर अधिकार कर लिया।

गूजरो (हिं० स्त्री०) गुर्जरी देखो।

गूझो (हिं० स्त्री०) एक तरहका छोटा काला कीट।

गूझा (हिं० पु०) १ पकवानविशेष। गुझिया देखो। २ गूदा। ३ फलके मध्यभागका रेशा।

गूटा (देश०) १ लीचोका पेड़ रोपनेको एक तरकीब। २ चौपायोंका एक रोग।

गूटो—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेका सब डिविजन। इसमें दो तालुक लगते हैं।

गूटो—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेका उत्तर तालुक। यह अक्षा० १४° ४७' तथा १५° १४' उ० और देशा० ७७° ६' एवं ७७° ४८' पू० के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल १०५४ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १५६१५५ है। तीन नगर और १४२ ग्राम बसते हैं। मालगुजारी कोई ३१६०००) रु० है। दक्षिण और पश्चिम अञ्चलमें भूमि अधिक उर्वरा है। उसके ५से १० फुट नीचे तक चूनेका पत्थर मिलता जो पानीमें घुला करता है। पेड़ जैसे ही उनको जड़ चुनेसे मिलती फिर नहीं फूलते फलते। उत्तर और पूर्वको जमीन पथरीली है। पेवेंर मटो ही अकेले इस तालुकमें बहती है।

गूटो—मन्द्राज प्रान्तके अनन्तपुर जिलेमें गूटो सबडिविजन और तालुकका सदर। यह अक्षा० १५° ७' उ० और देशा० ७७° ३८' पू०में मद्रास रेलवे पर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ८६८२ है। इसका मध्यभाग प्राचीन पार्वत्य दुर्गोंके लिये प्रसिद्ध है। बहुतसी जमीनको चारों ओर पहाड़ घेरे हुए हैं। पहाड़ोंको उस ओर एक मजबूत चहारदीवारी है। उस पर जगह जगह बुर्ज बने हैं। उत्तर और पश्चिम दिक्को शहरमें जानेके लिये इसी दीवारमें दो सूराक हैं। किला जमीनसे १००० फुट ऊंचा है। रक्षाके उपकरणोंमें कोई कमी नहीं। वह विना दुर्भिक्ष या छलनाके टूट नहीं सकता। पानीके लिये पहाड़ पर भी हौज मौजूद हैं। एक पहाड़ी पर 'मुरारी रावका डेरा' नामको इमारत है। कहते हैं, यहां वह शतरञ्ज खेलते और कैदियोंको पहाड़से नीचे धकेला जाता हुआ देखते थे। यहां १८३९ ई०को गञ्जाम विद्रोहके पहाड़ी लोक कैद किये गये थे। जब यह जगह कम्पनी-

को मिलो, वारीकीमें ऐसो पैदल फाज रही। अब किले और इमारतोंका देखभाल सरकार करती है।

शहर बहुत घना है। ग्रीष्म ऋतुमें गर्मी बहुत पड़ती है। इसीसे सब सरकारी दफ्तर मैदानमें उठ गये हैं। किलेका पूरा इतिहास अज्ञात है। वह विजयनगरके राजाओं का एक अति सुदृढ़ दुर्ग था। मुसलमान कितने ही समय तक उसे अधिकृत कर न सके। १७४६ ई०को मुरारिराव नामक महाराष्ट्र वीरने उसको सरगम की। १७७५ ई०को बहुत दिन तक घेरा डालनेके बाद हैदर अलीने उसे अधिकार किया था। १७८८ ई०को टीपूके मरने पर वह निजामके हाथ लगा। १८०० ई०से यह अंगरेजों के अधिकारमें है। १८६० ई० तक यहां दो अङ्गरेजी फौजें रहीं।

गूडी (हिं० स्त्री०) बाजरेकी बालकी प्याली, जिसमें दाना लगा रहता है।

गूडूर—१ कृष्णा जिलामें मसुलीपत्तन तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह मसुलीपत्तन नगरसे ४ मील पश्चिममें अवस्थित है।

२ मन्द्राजमें कर्णुल जिलाके अन्तर्गत एक नगर। यह कर्णुल नगरसे १८ मील उत्तर पश्चिममें अक्षा० १५ ४१ उ० और देशा० ७८ ३४ ४०´ पू०के मध्य अवस्थित है। यहां कार्पास और रेशमी वस्त्र प्रस्तुत होते हैं।

३ विजापुर जिलाके अन्तर्गत एक पुरातन ग्राम। रामेश्वरके प्राचीन मन्दिरके लिये यह प्रसिद्ध है। यहां प्रतिमा और ताम्रके बरतन या पात्र प्रस्तुत होते हैं।

गूढ़ (स० त्रि०) गुह क्त। १ गुप्त, छिपा हुआ। २ अभिप्राय गर्भित, जिसमें बहुतसा अभिप्राय गुप्त हो। कठिन, जटिल अबोधगम्य। ३ संहत। (पु०) ४ स्मृतिमें पांच प्रकारके गवाहों मेंसे एक गवाह। ५ एक अलंकार।

गूढ़कामी (स० पु०) काक, कौवा।

गूढ़गर्भक (स० पु०) गर्भजरोगविशेष।

गूढ़चारिन् (स० त्रि०) गूढ़ सन् चरति चर णिनि। जो गुप्त रीतिसे विचरण करता है। गुप्तचारी।

गूढ़ज (स० त्रि०) गूढ़े गुप्तस्थाने जायते गूढ़ जन ड। गूढ़ोत्पन्न पुत्र। बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र अपने ही गृहमें किसी गुप्त जारसे पैदा किया हुआ पुत्र।

गूढ़ता (स० स्त्री०) गूढ़स्य भाव गूढ़-तल् टाप्। १ गुप्तता, छिपाव। २ अबोधगम्यता, गम्भीरता, कठिनता।

गूढ़त्व (स० क्ली०) गूढ़स्य भाव गूढ़ त्व। १ गूढ़ता, गुप्तता २ गम्भीरता, कठिनता।

गूढ़नामि—वशिष्ठ गोत्रीय चण्डिकाभक्त सूर्यवंशीय एक राजा, कर्मके पुत्र।

गूढ़नीड (सं० पु०) गूढ़ गुप्त नीड' यस्य, बहुव्री०। खञ्जनपक्षी।

गूढ़पत्र (स० पु०) गूढ़ पत्रमस्य, बहुव्री०। १ अङ्कोठेवृक्ष, अखरोटका पेड़। २ करीरवृक्ष।

गूढ़पथ (स० पु०) गूढ़ पन्था यस्य बहुव्री०, समासान्त टच्। १ अन्तःकरण, अन्तात्मा। २ गुप्तपथ।

गूढ़पद (स० पु०) गूढ़ पादयति पद णिच क्विप्। यद्वा गुप्तः पादा यस्य, बहुव्री०। निपातने साधु। सर्प, सांप।

गूढ़पाद (स० त्रि०) गूढ़ आवृतः पादो यस्य, बहुव्री०। आवृत चरण, जिसका चरण आच्छादित हो।

गूढ़पुरुष (स० पु०) गूढ़ चासौ पुरुषश्चेति, कर्मधा०। राजप्रेरित छद्मवेशी पुरुष, गुप्तचर, भेदिया।

गूढ़पुष्पक (स० पु०) गूढ़ानि संवृतानि पुष्पाण्यस्य, बहुव्री०। १ पीपल, बड़ गूलर, पाकर इत्यादि वृक्ष। २ बकुलवृक्ष, मौलसिरी।

गूढ़फल (स० पु०) गूढ़ फलं यस्य, बहुव्री०। बैरका पेड़।

गूढ़फला (स० स्त्री०) रुद्धनखी।

गूढ़मण्डप (स० पु०) देवमन्दिरके भीतरका बरामदा या दालान।

गूढ़मज्जिका (स० स्त्री०) अङ्कोटवृक्ष, अखरोटका पेड़।

गूढ़माय (स० त्रि०) गूढ़ा गुप्ता अन्यैरलक्षिता माया यस्य, बहुव्री०। जिसकी माया दूसरोंसे अलक्षित है।

गूढ़मार्ग (स० पु०) नित्यकर्म०। गुप्तपथ, सुरङ्ग, पृथ्वीके नीचे खोदा हुआ रास्ता।

गूढ़मैथुन (स० पु० स्त्री०) गूढ़ गुप्त कैनाप्यलक्षित मैथुनं यस्य, बहुव्री०। काक, कौवा।

गूढ़लूट—मदुरा जिलाके पेरियकुलम् तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। इस ग्राममें एक पुरातन शिवमन्दिरमें बहुतसी शिलालिपि देखी जाती हैं।

गूढ़वर्चस् (सं० पु०-स्त्री०) गूढ़ं वर्चोऽस्य, बहुव्री०। भेक, मेंढ़क।

गूढ़वल्लिका (सं० स्त्री०) अक्षोठवृक्ष, अखरोटका दरख्त।

गूढ़वल्ली (सं० स्त्री०) १ अक्षोठवृक्ष। २ कृष्णा जिलाके रेपल्ली तालुकके अन्तर्गत एक छोटा ग्राम। यहां लक्ष्मी नरसिंहका पुरातन मन्दिर है।

गूढ़व्यङ्गा (सं० स्त्री०) गूढ़ं गुप्तं काव्यार्थभावनपरिपक्व बुद्धिमात्रवेद्यं व्यङ्गं यत्र, बहुव्री०। ततः टाप्। काव्यमें एक प्रकारकी लक्षणा।

साहित्यदर्पणके मतसे लक्षणा दो तरहकी हैं—गूढ़व्यङ्गा और अगूढ़व्यङ्गा। इनका अभिप्राय: सर्वसाधारणको शीघ्र समझमें नहीं आ सकता।

गूढ़साक्षिन् (सं० पु०) गूढ़श्चासौ साक्षीचति कर्मधा०। साक्षीविशेष। अर्थी या वादी अपनी इष्ट सिद्धके लिये प्रत्यर्थी या विवादीको समस्त कथा जिस साक्षीको सुनाता है वही गूढ़साक्षी कहलाता है।

गूढ़ागूढ़ता (सं० स्त्री०) गूढ़ागूढ़ास्य भावः गूढ़ागूढ़-तल्-टाप्। गूढ़ागूढ़त्व, जटिल, कठिन।

गूढ़ाङ्ग (सं० पु०-स्त्री०) गूढ़ानि अङ्गानि यस्य, बहुव्री०। १ कच्छप, कछुवा। २ उपस्थ, भग, लिङ्ग आदि गोपनीय अङ्ग। (त्रि०) गूढ़ं गुप्तं अङ्गं यस्य, बहुव्री०। ३ गुप्तदेह, जिसका शरीर छिपा हुआ हो।

गूढ़ाङ्घ्रि (सं० पु०-स्त्री०) गूढ़अङ्घ्रि यस्य, बहुव्री०। सर्प, सांप

गूढ़ूमल्लूर—अर्काटसे उत्तर वालाजापेट तालुकके मध्य एक पुरातन ग्राम। यह वालाजापेटसे ३ मील दक्षिणमें अवस्थित है। यहां पाला नदीके तट पर आत्रेयमहर्षिके उद्देशसे चोलराज कर्तृक एक सबूज पत्थरका मन्दिर निर्मित है। मुसलमानोंने शाहदत्-उल्लाकी मस्जिदके निर्माणके लिये उक्त मन्दिरके बहुतसे पत्थर खोल कर अर्काट ले गये थे। किन्तु पीछे ग्रामवासियोंके यत्नसे ग्रेणाइट प्रस्तर द्वारा मन्दिरका पूर्ण संस्कार किया गया।

गूढ़ोक्ति (सं० स्त्री०) एक अलङ्कार। इसमें कोई गुप्त बात तृतीय मनुष्यके प्रति किसी दूसरेके ऊपर छोड़कर कही जाती है।

गूढ़ोत्तर (सं० पु०) किसी गूढ़ अभिप्रायका उत्तर।

गूढ़ोत्पन्न (सं० पु०) गूढ़मुत्पन्नः। द्वादश प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। मनुका मत है कि दूसरेके औरस (वीर्य) से यदि कोई सन्तान उत्पन्न हो और उसका यह प्रछन्न सम्वाद दूसरा कोई नहीं जानता हो तो जिसकी स्त्री उसीका पुत्र कह कर वह गण्य है। इस तरहके गुप्त उत्पन्न पुत्रको शास्त्रकारगण गूढ़ोत्पन्न कहा करते हैं।

गूढ़ात्मन् (सं० पु०) गूढ़श्चासौ आत्माचेति कर्मधा०। परमात्मा।

गूथ (सं० पु०-क्लो०) गू-थक्। विष्टा, मैला।

गूथलक (सं० पु० स्त्री०) गूथे विष्टायां रक्तोऽनुरक्तः, ७ तत्। गूथशालिक, एक तरहका पक्षी। इसका पर्याय-शकमल, चन्द्रचूड़ और मालिक है।

गूथना (हिं० पु०) १ ग्रन्थन, कई चीजोंको एक सूतमें एकत्र करना। २ किसी पदार्थको दूसरे पदार्थमें सूई तागेसे अटकाना। ३ भद्दी सिलाई करना, सीना, गांथना।

गूद (हिं० पु०) १ गूदा, मगज। (स्त्री०) २ गर्त, गड्ढा। ३ निशान, दाग।

गूदगेरी—बम्बई प्रान्तके कर्णाटक जिलेमें छोटी मिराज रियासतका सब डिविजन और इसीका सदर। यह धारवाड़में लक्ष्मेश्वरसे ३ मील दक्षिण-पश्चिम पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः ३१२८ है। सप्ताहमें एक बार बाजार लगता है। यहां मामलतदारका दफ्तर, थाना, बालक और बालिका-विद्यालय, डाकखाना तथा धर्मशाला है।

गूदर—हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्ध कवि। कविताका नमूना यह है—

"जो कोई राम रटे सोई जानै।
जो जो भजो सो सुरपुर गयउ नरक महि पयाने॥
ताको महिमा क्या कहियेको सागर हू न पाने॥
सिय सियवरको सहज भाव है सहज हो दीनता मानो।
आठ जाम तप जाप सदोको वेदहु कहत बखानो॥
ताको गति मति अस पावत है सबै भाग कहु जानो।
गावै गूदर गुरुको दया तब तब हो मनमें उर ध्यानो॥"

गूदलूर—मन्द्राज प्रान्तके नीलगिरि जिलेका पश्चिम तालुक। यह अक्षा० ११° २३' तथा ११° ४० उ० और देशा० ७६° १४' एवं ७६° ३६' पू० मध्य अवस्थित है। मालगुजारीके १२ गांव हैं। लोग मुलायम भाषा व्यवहार करते हैं। कहवा, सोने और अबरकका काम बन्द हो जानेसे गूदलूर बिगड़ा है। लोकसंख्या प्रायः २११३९ और मालगुजारी ५३०००) है।

गूदलूर—मन्द्राजके नीलगिरि जिलेमें गूदलूर तालुकका सदर गांव। यह अक्षा० ११ ३०´ उ० और देशा० ७६ ३० पू०में गूदलूर घाट पर्वतके नीचे अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय २५५८ है। साप्ताहिक बाजार अच्छा लगता है।

गूदा (हि० पु०) १ किसी फलकी छिलकेके नीचेका सार भाग, गरी। २ भेजा, मगज, खोपडीका सारभाग।

गून (स० त्रि०) गू क्त तस्य नकार। कृतविष्ठोत्सर्ग, जिस व्यक्तिने विष्ठा त्याग किया हो।

गून (हि० स्त्री०) १ नाव खींचनेकी रस्सी। २ रोहातरण।

गूना (फा० पु०) पीतल या सोनेका बना हुआ एक तरहका सुनहला रङ्ग।

गूमडा (हि०) गुम देखो।

गूमा (हि० पु०) एक छोटा पौधा। इसके अग्रभाग पर गुच्छासा रहता है, और इसमें श्वेत पुष्प लगते हैं। यह औषधके काममें आता है।

गूरण (स० क्ली०) गूर उद्यमे भावे ल्युट्। उद्यम, उद्योग।

गूरा (हि० पु०) गुल्ला, ढेला।

गूर्ण (स० त्रि०) गूर क्त तकारस्य नकार। १ उद्यमविशिष्ट। २ प्रशस्त।

गूर्त (स० त्रि०) गूरी उद्यमे क्त निपातनात् नत्वाभाव। १ उद्यमविशिष्ट। २ प्रशंसनीय।

गूर्तमनस् (स० त्रि०) गूर्त उद्युक्त मनो यस्य, बहुव्री०। जिसका मन उद्योगविशिष्ट है।

गूर्तवचस् (स० त्रि०) गूर्त उद्यतं वचो यस्य, बहुव्री०। जिसका वाक्य उद्यमविशिष्ट है।

गूर्तश्रवस् (स० त्रि०) गूर्त प्रशंसनीय श्रवो यस्य, बहुव्री०। प्रशस्यान्न, जिसका भोजनीय द्रव्य प्रशंसनीय है।

गूर्त्तवसु (स० त्रि०) गूर्त वसु यस्या, बहुव्री०, साहित्यिकी दीधय। दान करनेके हेतु जिसने अपने धन धारण किया हो।

गूर्ति (स० त्रि०) स्तुवन्ति स्तुवन्ति स्तु कर्त्तरि क्तिच्। १ स्तोता, स्तव करनेवाला। (स्त्री०) गूर भावे क्तिन्। २ स्तुति।

गूलर (हि० पु०) वटवर्ग, पीपल और बरगदकी जातिका एक वृहत् पेड। उडुम्बर देखो।

गूलर कबाब (फा० पु०) एक प्रकारका कबाब। यह सिद्ध मांसको चूर्ण कर उसके मध्य अदरक, पोदीना आदि भरकर भूननेसे बनता है।

गूलू (हि० स्त्री०) पुड्क नामका एक तरहका पेड। कतोरा नामक श्वेत गोंद इसे निःसृत होता है। इसको छिलकासे रस्सिया बनाई जाती है। इसकी पत्तिया और शाखायें चारो ओर औषधका काम आती है। कोई कोई इसको जडको तरकारीके काममें लाते हैं और थोडा गुड मिलाकर खाते हैं। यह उत्तर भारत, मध्य भारत, दक्षिण तथा बर्माके सूखे वनमें तथा पश्चिमी घाटके पर्वतों पर मिलता है।

गूवाक (स० पु०) गुवाक पृषोदरादित्वात् साधु। गुवाक देखो।

गूषणा (स० स्त्री०) मयूरचन्द्रक, मोरकी पूंछ पर बना हुआ अर्द्धचन्द्र चिह्न।

गूह (हि० पु०) गलीज, विष्ठा, मल। गुह देखो।

गूहन (स० क्ली०) गूह ल्युट्। गोपन, गुप्त।

गूहा छीछो (हि० पु०) बुरे रूपका झगडा, बदनामी, कलङ्क।

गूहितव्य (स० त्रि०) गूह तव्य। गोपनीय, जो स्थान छिपाने योग्य हो। यथा—लिङ्ग, कुच (स्तन), भग और गुह्यदेश।

गृञ्ज (स० क्ली०) गृञ्जन।

गृञ्जन (स० क्ली०) गृञ्जाति अभक्ष्यत्वेन कथ्यते गृजि ल्युट्। १ मृत पशुका मांस। २ मूलविशेष शलगम, गाजर। इसका पर्याय—शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द और कन्द है। यूरोप तथा एसियाके नानास्थानोंमें यह पाया जाता है। वैद्यक मतमे इसका गुण—कटु, उष्ण, कफ, वातरोग और गुल्मरोगनाशक, रुचिकर, दीपन, हृद्य और दुर्गन्ध है।

मनुका वचन है कि—जान बूझकर गृञ्जन भक्षण करनेसे ब्राह्मण पतित हो जाता है, और यदि अज्ञानसे गृञ्जन खाय तो कृच्छ्रसान्तपन अथवा यति चान्द्रायण व्रत करके पापसे मुक्त हो सकता है। (मनु ५।१९।१०) (पु०) ३ मूलविशेष, लहसुन, रसुन। ४ लाल लहसुन।

गृञ्जनक (स० पु०) गृञ्जन स्वार्थे कन्। गृञ्जन।

गृञ्जर (स० पु०) गजर, गाजर।

गृञ्जिन (सं० पु०) यदुवंशीय शूरके पुत्र, वसुदेवके भ्राता।

गृणीवन् (सं० पु०) स्तोत्र, स्तव।

गृण्डीव (सं० पु० स्त्री०) बृहत् शृगाल, बड़ा गीदड़।

गृत्स (सं० पु०) गृध्यति लिप्सति अनेन गृध स-कित्, दकारान्तादेशः। १ कामदेव। (त्रि०) २ स्तवकर्त्ता, स्तवकरनेवाला। ३ स्तुत्य, जिसको स्तव करना उचित है। ४ मेधावी, पण्डित, विज्ञ। ५ विषयाभिलाषी।

गृत्सपति (सं० पु०) गृत्सानां विषयाभिलाषिणां मेधाविनां वा पतिः, ६-तत्। १ विषयाभिलाषीगणका प्रतिपालक रुद्र। २ मेधावी प्रतिपालक रुद्र, विद्वानोंके रक्षक रुद्र। गृत्स देखो।

गृत्समति (सं० पु०) एक राजा। इनका जन्म वृहस्पतिवंशीय सुहोत्रके औरससे हुआ था। (हरिवंश २९ अ०)

गृत्समद (पु०) १ एक मुनि, शुनक गोत्रके प्रवर-प्रवर्त्तक। विष्णुपुराणका मत है कि ये चन्द्रवंशीय सुहोत्रके तृतीय पुत्र रहे। इनके पुत्रका नाम शुनक था। (विष्णुपुराण ४।८ अ०)

महाभारतमें लिखा है कि पूर्वसमयमें देवराज इन्द्रने सहस्रवर्षव्यापी एक यज्ञका अनुष्ठान किया था। महर्षि गृत्समद उस यज्ञमें सामवेद पाठ पढ़ते थे। उनका पाठ सम्यक् न होनेके कारण चाक्षुषमनुके पुत्र भगवान् वशिष्ठने उन्हें शाप दिया। इस शापसे उन्होंने मृगयोनिमें जन्म ग्रहण किया। ११८०० वर्ष पर्यन्त मृगरूपमें ये जलवायुविहीन विशाल जङ्गलमें रहे। तत्पश्चात् अपनी दुर्दशाको दूर करनेके लिये इन्होंने महादेवजीका स्तव किया। शिवजीके वरसे इनकी इन्द्रसे मित्रता हुई एवं शास्त्रके पारदर्शी हुए।

२ ब्रह्मर्षि वीतहव्यके पुत्र। ये देखनेमें ठीक देवराज इन्द्रसे मिलते जुलते थे। एक दिन इन्द्रद्वेषी दैत्यगण इन्हें इन्द्र समझ पकड़ कर ले गये, किन्तु अधिक चेष्टा करनेके उपरान्त उन्होंके हाथसे छुटकारा पाया। ऋग्वेदमें इनकी अनेक प्रशंसा की गई है। (भारत अनु० ३० अ०)

गृद्धिन्— गर्द्धिन देखो।

गृधु (सं० पु०) गृध्यत्यनेनास्माद्वा गृध-कु। १ कामदेव कन्दर्प। (त्रि०) २ अभिलाषुक, इच्छुक।

गृध् (सं० पु०) गृध बाहुलकात् क्विप्। १ वृद्धि। २ कुत्सित। ३ अपान।

गृध्न (सं० त्रि०) गृध्नु, पृषोदरादित्वादुकारस्य अकारः। गृध्नु देखो।

गृध्नु (सं० त्रि०) गृध्यति कामयते लिप्सति वा धनमिति शेषः। लुब्ध, लोभयुक्त।

गृध्नुता (सं० स्त्री०) गृध्नोर्भावः गृध्नु-तल्-टाप्। अभिलाष, अतिशय इच्छा, लुब्धता।

गृध्य (सं० त्रि०) गृध कर्मणि क्यप्। १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय। (क्ली०) गृध भावे क्यप्। २ इच्छा, अभिलाष।

गृध्यिन् (सं० त्रि०) गृध्यमस्यास्ति गृध्य-इनि। अभिलाषयुक्त, अभिलाषी।

गृध्र (सं० पु०-स्त्री०) गृध्यति अभिकाङ्क्षति मांसं गृधक्रन्। १ पक्षीविशेष, गिद्ध, गीध। इसका संस्कृत पर्याय—दाक्षाय्य, वज्रतुण्ड, दूरदर्शन है। मस्तकके ऊपर अथवा जिसके घरके ऊपर गृध्र भ्रमण करे उसका मृत्यु निकटवर्ती समझना चाहिये। २ जटायु पक्षी। (त्रि०) ३ लुब्ध, लोभी।

गृध्रकूट (सं० पु०) गृध्रं प्रधानं कूटं यस्य, बहुव्री०। मगधदेशके निकटवर्त्ती एक पर्वत। यह पर्वत गिरिव्रजसे २॥ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। इसका दूसरा नाम शैलगिरि है।

गृध्रचक्र (सं० पु०) गिद्ध और चकवा।

गृध्रजम्बुक (सं० पु०) शिवजीका एक अनुचर।

गृध्रनखी (सं० स्त्री०) गृध्रस्य नखस्तदाकारोऽस्त्यस्याः गृध्र नख-अच्, गौरादित्वात् ङीष्। १ कण्टकपाली वृक्ष, काकादनीका पेड़। २ कोलिवृक्ष, बेरका पेड़।

गृध्रपति (सं० पु०) गृध्राणां पतिः, ६-तत्। गृध्रगणोंके अधीश्वर गिद्धोंका राजा, जटायु।

गृध्रपत्र (सं० पु०) गृध्रस्येव पत्रमिव पत्रमस्य, बहुव्री०। १ वाण, तीर। २ कार्त्तिकके एक सैनिकका नाम।

गृध्रपत्रा (सं० स्त्री०) गृध्रस्य पत्रमिव पत्रं यस्याः, बहुव्री०। धूमपत्रा वृक्ष, तम्बाकूका गाछ।

गृध्रपुरीष (सं० पु०) गृध्र पक्षीकी विष्ठा।

गृध्रमल (सं० पु०) ६-तत्। गृध्र पक्षीकी विष्ठा

गृध्रभोजान्तक (सं॰ पु॰) श्वफल्कके एक पुत्रका नाम।

गृध्रयातु (सं॰ पु॰) गृध्ररूपेण याति या तुन्। अथवा गृध्रैः परिकरभूतैः सह यातयति यात उण्। राक्षसविशेष, जो गृध्र रूपधारण कर आकाशमें परिभ्रमण करता है।

गृध्रराज (सं॰ पु॰) गृध्राणां पक्षिणां राजा, ६ तत्। गरुडके पुत्र जटायु।

गृध्रवट (सं॰ पु॰) गृध्रोपलक्षितो वटोऽत्र बहुव्री॰। तीर्थविशेष, देवस्थान। इस तीर्थमें वृषवाहन शिवजीकी मूर्ति है। इस स्थान पर उपस्थित हो स्नान करके शरीरमें भस्म लगानेसे ब्राह्मणोंको द्वादशवार्षिक व्रतानुष्ठानके समान फल होता है, और दूसरे वर्णके समस्त पाप विनष्ट होते हैं।

गृध्रव्यूह (सं॰ पु॰) गिद्धके (भारत शान्ति॰) आकारकी सेनाकी रचना।

गृध्रसद् (सं॰ त्रि॰) गृध्रे सीदति गृध्रेण सीदति गच्छति वा सद् क्विप्। जो गृध्र पर उपवेशन करता है अथवा जो गिद्ध पर चढ़ कर भ्रमण करता है।

गृध्रसी (सं॰ स्त्री॰) गृध्रमपि स्यति सो क गौरादित्वात् ङीष्। वातरोगविशेष। (Lumbago) भावप्रकाशमें इनका लक्षणादि यों लिखे हैं—कुपित वायु नितम्बदेशमें आश्रय कर स्तब्धता और वेदना उत्पन्न करता, इससे नितम्बस्थान बार बार स्पन्दित हुआ करता है। इसीको गृध्रसी कहते हैं। क्रमसे रोग बढ़ कर गाढ़मूलसे ऊरु, कटि, पृष्ठ, जानु, जङ्घा और पदद्वयमें पहुंच जाता और स्थान स्थानमें स्तब्धता, वेदना तथा स्पन्दन उत्पादन करने लगता है।

यह गृध्रसी रोग दो तरहका है—एक शुद्ध वायुजनित तथा कफसंसृष्टवायुजनित। एक शुद्ध वायुज गृध्रसी रोगमें शरीरमें वेदना, तथा जानु, जङ्घा और ऊरुसन्धिमें स्तब्धता और स्फुरण होते हैं। कफसंसृष्टवायुजनित गृध्रसी रोगमें शरीरकी गुरुता, अग्निमान्द्य, तन्द्रा (उंघाई), मुखसे लालस्राव तथा अरुचि होती है।

गृध्रसी रोगाक्रान्त मनुष्यको सबसे पहले वमन द्वारा शोधन करना चाहिये। यदि रोगीमें आमदोष न रहे अथवा अग्निकी वृद्धि मालूम पड़े तो वस्तिक्रिया द्वारा चिकित्सा करना उचित है। विरेचन या वमनसे शोधन किये विना वस्तिक्रिया करना निषिद्ध है।

प्रातःकाल गोमूत्रके साथ थोड़े परिमाणमें रेंडीका तैल एक मास तक सेवन करनेसे गृध्रसी रोग दूर हो जाता है अथवा आर्द्रकका रस, जम्बीर नीबूका रस, अम्लवेतस (खट्टा साग)का रस और गुड़ बराबर भाग लेकर तैल या घृत प्रक्षेप कर पान करनेसे गृध्रसी रोगका प्रतिकार होता है। रेंडीकामूल, बेलमूल, बृहती और कण्टकारी सब समेत २ तोलाको आधसेर पानीमें सिद्ध करे। आधा पाव या दो छटाक पानी रहने पर उतार ले। इसमें थोड़ा सौवर्चल लवण (सोरानमक) डाल कर पान करनेसे गृध्रसीजनित शूल नष्ट होता है। गोमूत्र और एरण्ड तैल ॥ तोलाके साथ ४ माशा पिप्पली चूर्ण मिश्रित कर पान करनेसे पुराना वात और कफसे उत्पन्न गृध्रसी रोग दूर हो जाता है। वासक, दन्ती और सोंदाल २ तोला आधा सेर पानीमें सिद्ध कर आधपाव पानी रहने पर उतार लें और उसे अच्छी तरह छान कर थोड़ा एरण्डका तैल मिला कर पान करनेसे अचल गृध्रसी रोगीको स्तब्धता दूर होकर गमनशक्तिका सञ्चार होता है। (भाव १४॥)

गृध्राकार (सं॰ पु॰) भाषपक्षी।

गृध्राण (सं॰ पु॰) १ गृध्रके जैसा स्वभाव। २ गृध्रपत्रा वृक्ष, तम्बाकूका पेड़।

गृध्राणी (सं॰ स्त्री॰) गृध्र इवानिति अन् अच् गौरादित्वात् ङीष् संज्ञायां णत्व। धूम्रपत्रावृक्ष, तम्बाकूका पेड़।

गृध्री (सं॰ स्त्री॰) कश्यपकी स्त्री ताम्राकी एक कन्या। (हरिवं॰ ३।१०६)

गृभ (सं॰ पु॰) ग्रह हस्यास्य भकारः छान्दसत्वात्। गृह, घर।

गृभि (सं॰ पु॰) ग्रह कि स प्रसारण छान्दसत्वात् हकारस्य भकार। पकड़नेकी क्रिया, ग्रहण करनेका भाव।

गृभीत (सं॰ त्रि॰) ग्रह क्त छान्दसत्वात् हकारस्य भकार। १ गृहीत, पकड़ा हुआ, ग्रहणयुक्त। २ गृभीतग्रन्थ, जिसने ग्रन्थ ग्रहण किया हो। (ऋक् १०।८०।१०)

गृभीततातिं (सं० स्त्री०) गृभीतानां गृहीतयज्ञानां तातिः, ६-तत्। गृहीतयज्ञसमूह।

गृष्टि (सं० स्त्री०) गृह्णाति सकृद्गर्भं ग्रह कर्तरि क्तिच् पृषोदरादिवत् साधु। १ छोटी गाय जिसने सिर्फ एक बार बच्चा जना हो, एक बार प्रसूत धेनु, इसे सकृत्प्रसूतिका भी कहते हैं। सकृत्प्रसूता स्त्री, युवती स्त्री जो सिर्फ एक बार प्रसव हुई हो। ३ वराहक्रान्ता। ४ वेरका पेड़। ५ काश्मरी या गांभारीवृक्ष।

गृष्टिक्षीर (सं० क्ली०) सकृत्प्रसूतिका गोका दूध।

गृष्या (सं० स्त्री०) वत्सा।

गृष्यादि (सं० पु०) गृष्टिरादिर्यस्य, बहुव्री०। पाणिनीय एक गण। गृष्टि, हृष्टि, वलि, हलि, विश्रि, कुद्रि, अजवस्ति और मित्रयु, इन सभीको गृष्यादिगण कहते हैं।

गृह (सं० क्ली०) गृह्यते धर्माचरणाय ग्रह-क। १ गेह, घर, ईंट या मिट्टीसे बना हुआ वासस्थान। 'गृह' शब्द अर्द्धर्चादि गणान्तर्गत होनेसे दोनों लिङ्ग हो सकता है। पुंलिङ्गमें गृह शब्द बहुवचनांत है। उसका उत्तर एक वचन वा दो वचन नहीं होता।

"गृहैर्विशाले रपि भूरिशालैः।" (माघ)

पर्याय—गेह, उद्वसति, वेश्म, सद्म, निकेतन, निशांत, वस्त्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, निकाय्य, निलय, आलय, वास, कूट, शाला, सभा, पस्त्य, सादन, आगार, कुटि, कुटीर, निकेत, माला, मन्दिरा, ओक, निवास, संवास, आवास, अधिवास, निवसति, वसति, केतन, गय, कुदर, गर्त, हर्म्य, अस्त, दुरोण, नील, दुर्या, स्वसराणि, अमा, दम, वृत्ति, योनि, शरण, वरूथ, छर्दि, छया, शर्म, अज।

गृहस्थीवाले सब ही गृह (घर) में रहते हैं। धनी हो या दरिद्र, सब होके लिये गृहकी आवश्यकता है। गृहके विना किसीकी भी गुजर नहीं हो सकती। इसी लिए आर्योंने गृह-निर्माण करनेकी विधि और उसका शुभाशुभ संस्कृत भाषामें लिखी है। उन सब प्राचीन ग्रन्थोंको देखनेसे मालूम होता है कि, पहिले गृह बनानेके कोई नियम ही नहीं थे। बादमें दिनों दिन उन्नति वा रुचिका परिवर्तन होनेसे आर्योंने बहुत गवेषणापूर्वक गृह-निर्माण करनेकी प्रणाली चलाई; पीछे उनहीकी उन्नति होती आई और नये नये नियम बनते गये। मत्स्यपुराणमें लिखा है कि, "भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजीत्, विशालाक्ष पुरन्दर, ब्रह्मा, कुमार, नन्दीश्वर, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुद्ध, शुक्र और वृहस्पति—ये अठारह ही वास्तुशास्त्रके उपदेष्टा हैं (१)।" इनमेंसे प्रत्येकका बनाया हुआ एक एक वास्तुशास्त्र हैं। उनमेंसे मयकृत मयशिल्प, विश्वकर्मा कृत विश्वकर्मप्रकाश, विश्वकर्मशिल्प, मानवसारशिल्प और राजवल्लभमण्डन—इन ग्रन्थोंमें घर बनानेके नियम विस्तृत मिलते हैं। इनके अलावा मत्स्यपुराण और वृहत्संहितामें भी बहुतसा विवरण मिलता है। उपर्युक्त प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार गृह निर्माण-प्रणाली लिखी जाती है।

जिस जगह घर बनवाना हो सबसे पहिले वहांकी मिट्टीकी परीक्षा करनी चाहिये। विश्वकर्माने मिट्टीकी परीक्षा करनेकी विधि इस प्रकार लिखी है—मिट्टी साधारणतः चार प्रकारकी होती है,—ब्राह्मणी, क्षत्रिणी वैश्या और शूद्राणी। जिस मिट्टीका रंग सफेद हो और अच्छी सुगन्धवाली तथा मधुर रसवाली हो, वह ब्राह्मणी है। जिसका रंग लाल हो, रक्तकी भांतिकी गन्धवाली और कषाय रसवाली हो वह क्षत्रिणी है। जो मिट्टी पीतवर्णवाली, मधुके समान गंधयुक्त और अम्लरसवाली होती है, वह वैश्या है। तथा जो मिट्टी काली, शराब जैसी गंधवाली और कड़ुई होती है, वह शूद्राणी कहलाती है। यह चार वर्णकी मिट्टी यथाक्रमसे चारों वर्णवालोंके लिये प्रशस्त है। चतुरस्र द्वीपाकार, सिंहाकृति, वृषभसदृश, गोलाकार, भद्रपीठ, त्रिशूल वा लिंग सदृश भूमि ही उत्तम होती है। त्रिकोण, शकटाकार, मृदंगतुल्य सर्प वा भेक सदृश, गधा अजगर आदिकी भांतिकी भूमि तथा धनु वा परशु तुल्य, दुर्गन्धयुक्त भूमि वर्जनीय है, ऐसी भूमि पर गृह-निर्माण नहीं करना चाहिये। जो स्थान देखनेमें मनोहर हो, उसी स्थान-

(१) "भृगुरत्रिर्वशिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा।
नारदो नग्नजिच्चैव विशालाक्ष पुरन्दरः॥
ब्रह्मा कुमारो नन्दीशः शौनको गर्ग एव च।
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शुक्र-वृहस्पती॥
अष्टादशैते विख्याता वास्तुशास्त्रोपदेशका॥" (मत्स्यपुराण २५२अ०)

की परीक्षा करानी चाहिये। दृढ़ और नीची भूमि ब्राह्मणोंके लिये अच्छी होती है। क्षत्रियोंके लिए गहरी जमीन वैश्योंके लिए ऊंची और शूद्रोंके लिए समान भूमि ही उत्तम है।

जिस स्थान पर कुश, काश, ब्राह्मी दुर्वा न पैदा होती हो, वह स्थान क्षत्रियोंके लिए, फल और पुष्पयुक्त स्थान वैश्योंके लिए, तथा साधारण तृणयुक्त स्थान शूद्रोंके लिये उत्तम है। जिस स्थानमें बड़े बड़े पत्थर हों, जो देखनेमें मूसल सरीखा हो, अतिशय वायुके वेगसे पीड़ित हो, विकटाकार हो, वल्मीक वा भल्लकयुक्त हो जिस स्थानके आस पास चैत्य, श्मशान, अशोक या धूर्तोंका वास हो, जो स्थान चतुष्पथ हो, देवालय या मन्त्रिभवनके निकटवर्ती हो और जिस स्थानमें बहुतसे गड्ढे हों, वह स्थान मनोरम होने पर भी त्याज्य है।

जिस वर्णके लिए जिस रंगकी और जो गन्धयुक्त मृत्तिका प्रशस्त है उस वर्णवालेको उसीमें धन, धान्य और सुखकी वृद्धि हो सकती है। परन्तु इसके विपरीत होनेसे विपरीत फल होता है। चतुरस्र भूमि पर घर बनवानेसे धनकी वृद्धि, सिंहाकार जमीन पर घर बनवानेसे गुणशाली पुत्रका लाभ वृष सदृश स्थान पर बनवानेसे पशुवृद्धि, वृत्ताकारमें वित्तलाभ, तथा भद्रपीठ और त्रिशूलाकार भूमिमें वीरका जन्म और नाना प्रकारके सुखोंकी प्राप्ति होती है। लिङ्गाभ भूमि लिङ्गीके लिए प्रशस्त है। प्रासादध्वज सदृश स्थानमें पदोन्नति होती है, और कुम्भाकार, त्रिकोण, शकटाकार, तथा सर्प वा व्यञ्जन सदृश भूमि घर बनानेसे यथाक्रमसे धनवृद्धि, सुख सौख्य, अर्थ और धनहानि होती है। मृदङ्गाकार भूमि [illegible]शनाशिनी है, सप या मण्डूकाकार भूमि पर घर बनानेसे भय, गर्दभ सदृश स्थानमें धननाश अजगर सदृश भूमिमें मृत्यु और चिपिटाभूमिमें पौरुषकी हानि होती है। चैत्यके पास घर बनवानेसे गृहस्वामीके लिए भय, धूर्तोंके वासस्थानके पास बनवानेसे पुत्रकी मृत्यु, चतुष्पथमें अकीर्ति और मन्त्रिभवनके पास गृह बनवानेसे धनकी हानि होती है। इस प्रकार निन्दनीय स्थानोंके बुरे फल और उत्तम स्थानोंके अच्छे फल शास्त्रकारोंने लिखे हैं। उन विवरणोंको मूलग्रन्थमें देखना चाहिये।

स्थान मनोनीत होने पर उस जगह एक हाथका एक गड्ढा खोदना चाहिये। उस गड्ढेकी मिट्टी बाहर निकाल कर फिर उसीमें डाल देना चाहिये। मिट्टी अगर ज्यादा हो तो उत्तम, समान हो तो मध्यम और कमती हो तो उस स्थानको जघन्य समझना चाहिये। जघन्य स्थानमें गृह निर्माण करनेसे गृहस्वामीका अमङ्गल होता है। अथवा उस गड्ढेको पानीसे भर कर एक सौ पैर चलना चाहिये, फिर लौट कर अगर गड्ढेका पानी जरा भी न घटे तो उस जमीनका सबसे उत्तम समझना चाहिये या उस गड्ढेमें चार सेर पानी डाल कर सौ पैर चलना चाहिये, और लौटकर यदि उसे ६४ पल पानी मिले तो उस भूमिको भी उत्तम समझना चाहिये। कच्चे मिट्टीके वर्तनमें चार बत्ती जला कर उस गड्ढेमें रख देना चाहिये जिस दिशाकी बत्ती जोरसे जले, उस दिशाका प्रशस्त समझना चाहिये। उस गड्ढेमें श्वेत, रक्त, पीत और कृष्णवर्णके चार फूल रखदेना चाहिये। दूसरे दिन सुबह तक जिस वर्णका फूल म्लान न हुआ हो उसी जाति के लिए वह स्थान मङ्गलकर होता है। वराहमिहिर का कहना है कि शास्त्रकारोंने भूमिको बहुत तरहकी परीक्षाएं लिखी हैं, उसमेंसे गृहस्वामी जिस परीक्षा को पसंद करे उस परीक्षा द्वारा जमीनकी जांच करानेसे ही काम चल सकता है। इससे एक स्थानको बार बार परीक्षा नहीं करनी पड़ती।

जो स्थान घरके लिये मनोनीत किया गया है, उस स्थानमें पहिले हल चला कर सर्वबीज बोना चाहिये। उक्त बीज तीन रात्रिमें अङ्कुरित हो, तो उसे उत्तम और पांच रात्रिमें अङ्कुरित हो, तो उसे अधम समझना चाहिये। व्रीहि, शालि, मुद्ग, गोधूम, सर्षप, तिल, और यव ये सात सब बीज हैं।

इस प्रकारसे वास्तु भूमिकी परीक्षा करके, फिर शुभदिन, शुभलग्न और शुभ शकुनमें गृहस्वामीको राज मजूरोंको साथ लेकर उस स्थानमें जाना चाहिये।

वृहत् संहितामें लिखा है कि, घर बनानेसे पहिले उस जमीनमें हल चलाकर वहां बीजारोपण करना पड़ता है। बादमें उस जगह एक दिवारात्रि ब्राह्मण और गायको

रखना पड़ता है। इसके बाद उस जगह घर बनाना प्रारम्भ करना चाहिये। (हस्त० ५३।८८)

गृहारम्भका शुभाशुभ चिह्न शकुन शब्दमें देखो।

वृहत्संहिताके मतसे—समस्त वास्तु गृह पांच भागोंमें विभक्त हैं, उनमेंसे प्रथम तो उत्तम है, द्वितीय उससे मध्यम और उनसे अधम तृतीयादि हैं। परिमाणके अनुसार घरके ये पांच भेद होते हैं। जिस घरका विस्तार १०८ हाथ हो और दैर्घ्य विस्तारके साथ उसका चतुर्थांश मिलाकर १३५ हाथ हो, वही राजाके लिये उत्तम घर है और उसके विस्तारमेंसे यथाक्रम ८८ हाथ बाद देनेसे दूसरे चार घरोंका परिमाण निकलता है, वे चार घर एक दूसरेकी अपेक्षा परस्पर अधम हैं। २य प्रकारका विस्तार १०० हाथ और दैर्घ्य १ ५ हाथ है। ३य का विस्तार ९२ हाथ और दैर्घ्य ११५ हाथ है। ४थ प्रकारका विस्तार ८४ हाथ और दैर्घ्य १०५ हाथ तथा ५म प्रकारका विस्तार ७६ हाथ और दैर्घ्य ९५ हाथ है। सेनापतिके पांच प्रकारके गृहके १म घरका विस्तार ६४ हाथ और दैर्घ्य ७४ हाथ १६ अंगुलि है। इस विस्तारसे छह छह बाद देनेसे यथाक्रमसे बाकीके चार घरोंका परिमाण होगा। जैसे—२य—वि० ५८, दै० ६७।८; ३य—वि० ५२, दै० ६०।१६, ४र्थ—वि० ४६, दै० ५३।१६ और ५म—वि० ४०, दै० ४६।१६। मन्त्रीके पांच प्रकारके घरोंमेंसे प्रथम घरका विस्तार ६० हाथ होगा और दूसरे इससे चार हाथ कमती कमती होंगे। विस्तारके साथ उसका चौथाई और जोड़ देनेसे ही उसकी लम्बाई हो जाती है। १म—विस्तार ६०, दैर्घ्य ६७।१२ . २य—वि० ५६, दै० ६३; ३य—वि० ५२, दै० ५८।१२, ४र्थ—वि० ४८, दै० ५४ और पञ्चम—वि० ४४, दै० ४९।१२। मन्त्रीके घरसे आधा विस्तार और लम्बाई वाला घर राजमहिषी (रानी) के लिये उपयुक्त है। युवराजके पाँच प्रकारके मकानोंका परिमाण,—१म—वि० ८०, दै० १०६।१६, २य—वि० ७४, दै० ९८।१६, ३य—वि० ६८, दै० ९०।१६, ४र्थ—वि० ६२, दै० ८२।१६ और पंचम—वि० ५६, दै० ७४।१६। युवराजके अनुजोंका निवासस्थान इससे आधे विस्तार और दैर्घ्ययुक्त होना चाहिये। श्रेष्ठ राजपुरुषोंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार ४८, ४४, ४०, ३६ और ३२, उत्तमक्रमसे दैर्घ्य—६७।१२, ६२।०, ५६।१२, ५१।०, और ४५।१२ है। कञ्चुकी, वेश्या और नृत्यगीतादि वेत्ताओंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार २८, २६, २४, २२ और २०, उत्तमक्रमसे दैर्घ्य २८।८, २६।८, २४।८, २२।८ और २०।८ है। अध्यक्ष और अधिकृत व्यक्तियोंके घरका परिमाण कोषगृह और रतिगृहके परिमाणके समान समझना चाहिये। कार्याध्यक्ष और दूतोंके घरका परिमाण उत्तमक्रमसे विस्तार २०, १८, १६ १४ और १२, दैर्घ्य ३५।८, ३५।१६, ३२।४, २८।१६ और २५।४ है। दैवज्ञ, पुरोहित और चिकित्सकोंके घरका माप उत्तम क्रमसे विस्तार ४०, ३६, ३२, २८ और २४, दैर्घ्य ४६।१६, ४२।०, ३६।१६, ३२।१६ और २८ हाथ है। वास्तु-गृहका जितना विस्तार हो, उसकी अगर उतनी ही ऊंचाई हो, तो वह मकान मङ्गलकर होता है। परन्तु जिन घरोंमें सिर्फ एक ही कमरा है, उस घरकी लम्बाई विस्तारसे दूनी होनी चाहिये। कोषगृह और रतिगृहका माप उत्तमक्रमसे विस्तार ४४, ४२, ४०, ३८, और ३६, दैर्घ्य ६०।८, ५७।१६ ५४।८, ५१।० और ४८।८ हाथ है। (वृहत्सं० ५३ अ०)

ब्राह्मण आदि पृथक् पृथक् जातियोंका जिन जिन मकानों पर अधिकार है, उसका भी वर्णन वृहत्संहिता में लिखा है। ये वास्तु भी पूर्वप्रदर्शित घरोंकी भांति पांच भागोंमें विभक्त हैं। ब्राह्मणोंके पाँच प्रकारके गृहोंका विस्तार ३२, २८, २४, २० और १६ हाथ है। क्षत्रियोंके रहने योग्य चार प्रकारके मकानोंका विस्तार २८, २४, २० और १६ हाथ है। वैश्योंके रहने योग्य गृह तीन प्रकार है, उनका विस्तार २४, २० और १६ हाथ है। शूद्रके रहने लायक घर दो प्रकारके हैं उनका विस्तार २० और १६ हाथ है। इसके अलावा अन्त्यज जातियोंको सिर्फ एक प्रकारके १६ हाथके घरमें ही रहनेका अधिकार है। ब्राह्मणके पांच प्रकारके गृहका दैर्घ्य इस प्रकार है,—३५।४।४८, ३०।१८।१२, २६।०। ३६, २२।० और १७।१४।२२ है। क्षत्रियके चार प्रकारके गृहका दैर्घ्य ३१।१२, २७।०, २२।१२ और १८ हाथ है। वैश्यके तीन प्रकारके वास्तुका दैर्घ्य इस प्रकार

है,—२८८०, २३११६ और २८८८। शूद्रोंके दो प्रकारके घरकी लम्बाई २५ और २० हाथ है। अन्त्यजोंके घरकी लम्बाई १६ हाथसे ज्यादा न होनी चाहिये। सब ही जातियोंके लिये अपने अपने परिमाणसे ज्यादा या कम मापके मकान अमङ्गलकर है। परन्तु पशवालय, प्रव्राजिकालय, धान्यागार, अस्त्रागार अग्निशाला और रतिगृह वा बैठकका परिमाण अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं। कोई भी घर हो एक सौ हाथसे ज्यादा ऊंचा अच्छा नहीं और न करना ही चाहिये।

मकानके भीतरी हिस्सेको शाला कहते हैं। कौन से मकानकी शाला किस मापकी होनी चाहिये, उसका परिमाण वृहत्संहितामें इस प्रकार लिखा है—राजा और सेनापतिके मकानके व्यासके साथ ७० को जोड कर २ से भाग देकर जो भागफल हो, उस १४ से भाग देने पर जो उपलब्ध होगा, वही नृप गृहकी शालाका माप शाला भित्तिके बाहिरके हिस्सेके सोपानयुक्त आंगनको प्राचीन वास्तुशास्त्रोपदेष्टाओंने अलिन्द नामसे उल्लेख किया है। पूर्वप्रदर्शित द्विविभक्त अङ्कको ३५से भाग करनेसे जो फल उपलब्ध होगा, वही राजाके गृहके आंगनका परिमाण है। दूसरी जातिके मकानकी शाला और आंगनका परिमाण निकालना हो तो राजा और सेनापतिके घरके व्यासके योगफलके साथ ७० को जोडकर, उसमेंसे अपनी जातिके व्यासांक घटा देना चाहिये। पीछे उसमेंसे आधे अङ्क घटा कर, उसको यथाक्रमसे १४ और ३५ द्वारा भाग करके जो दो अङ्क उपलब्ध होंगे, उसे अपनी जातिकी शाला और आंगनका माप समझना चाहिये।

पहिले ब्राह्मण आदिके पांचप्रकार वास्तुपरिमाण जो कहे गये हैं, उसमें यथाक्रमसे ४।१७, ४।३ ३।१५ ३।१२ और ३ हाथ ४ अङ्गुलकी शालाएं तथा ३।१८, ३।८, ३।२०, ३।१८ और २ हाथ ३ अङ्गुलके आंगन होने चाहिये। शालाका ¾ अंश स्थान भवनके बाहर रखना चाहिये। प्राचीनकालमें वीथिका कहा जाता था। यह वीथिका मकानके पूर्व की तरफ रहनेसे, उस मकान को सोष्णीष पश्चिममें रहनेसे सायाश्रय और उत्तर या दक्षिणमें रहनेसे उस मकानका सावष्टम्भ नामसे उल्लेख कर सकते हैं। यदि किसी मकानके चारों ओर वैसी वीथिका रहे तो उसको सुस्थित कहते हैं। वास्तुशास्त्रमें इस प्रकारके मकानोंकी विशेष प्रशंसा की गई है। ये सब मकानही गृहस्थके लिए मङ्गलजनक हैं।

मकानकी ऊंचाई या उच्छ्राय—उत्तम मकानके विस्तारके —अंशके साथ ४ हाथ और जोडदेनेसे जितना होगा, उस घरकी ऊंचाई उतनी ही होनी चाहिये। बाकीके चार प्रकारके घरोंकी ऊंचाई क्रमशः उससे बारहवें भाग घटती जायगी।

भीतका माप—जो भीतें पकी हुई ईंटोंसे बनाई जाती हैं, उनका परिमाण व्यासके १६ भागमेंका १ भाग करना चाहिये। परन्तु काठसे जो भीत बनाई जाती है, उसका परिमाण अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

द्वारका परिमाण—राजा और सेनापतिके घरके व्यासके साथ ७० जोड कर ११से भाग देनेसे जो फल उपलब्ध होगा उतने हाथका विस्तार उसके दरवाजेका होगा। उस दरवाजेका विस्तार जितने अङ्गुलका होगा उतने ही हाथकी उसकी ऊंचाई होनी चाहिए तथा विस्तारसे आधा दरवाजेका फैलाव करना उचित है। ब्राह्मण आदि दूसरी जातिके लोगोंके गृहव्यासके पञ्चांशके साथ १८ अङ्गुल जोडनेसे जितना हो, उतना ही उनके घरके दरवाजेका माप है। द्वारके मापका अष्टांश, दरवाजेका फैलाव और फैलावसे दूनी ऊंचाई होनी चाहिये। दरवाजेकी ऊंचाई जितने हाथकी होगी, उतने अङ्गुल प्रमाण उसको दोनों शाखा होनी चाहिये और शाखासे छोटी चौखट होनी चाहिये। ऊंचाई जितने हाथकी होगी उतनी संख्याको १७से गुणा करके ८० सेभाग देनेसे जो फल उपलब्ध होगा उतना ही उसके पृथुत्व (मुटाई) का माप समझना चाहिये। (वृ० सं० ५३।२७)

ऊंचाईको ५से गुणा करके ८०से भाग देने पर जितना लब्ध बचा हो उसमेंसे अपना १०वां अंश घटानेसे जो बचे उतने मापकी स्तम्भकी मुटाई करना चाहिये। स्तम्भ यदि समचतुरस्र या चौकुटा हो तो उसे रुचक अष्टास्रि या अठकोन हो तो वज्र, सोलह कोनवाला हो तो द्विवज्र बत्तीस कोनवाला हो तो प्रलीनक और वृत्ताकार वा गोल हो तो उसे वृत्त कहते

है। ये पांच प्रकारके स्थान उत्तम होते हैं। गृहस्वामी इनमेंसे जैसा चाहे वैसा स्तम्भ बनवा सकता है। इनके अलावा दूसरे प्रकारके स्तम्भ नहीं बनाने चाहिये।

विश्वकर्मप्रकाशमें मकानकी लम्बाई चौड़ाईके हिसाबसे, उसका शुभाशुभ फल जाननेका तरीका इस प्रकार लिखा है—गृहके विस्तारको दैर्घ्यसे गुणा करके ८ से भाग करनेसे जो बचेगा, उसके अनुसार ध्वजादि आय होती है। अर्थात् ८से भाग करनेसे यदि १ बचे तो ध्वज, २ बचे तो धूम, ३ बचे तो हरि, ४ बचे तो कुक्कुट, ५ बचे तो गाय, ६ बचे तो गर्दभ, ७ बचे तो हस्ती, और ८ या शून्य बचे तो वायस नामक आय होती है। यह ध्वजादि आठो आय यथाक्रमसे पूर्वादि आठो दिशाओंमें अवस्थित हैं। अपने अपने स्थानसे पांचवां स्थान इनके लिये वैरी है। घरकी आय विषम होनेसे शुभफल और सम होनेसे शोक व दुःख होता है। अग्निशाला और अग्निजोवियोंके लिए धूम आय अच्छी होती है। किसी वास्तुशास्त्रोपदेष्टाका मत ऐसा भी है कि, म्लेच्छादि जातियोंके लिये कुक्कुर आय उत्तम होती है। वैश्यके घरके लिये गर्दभ आय और शूद्रोंके घरके लिये काक आय अच्छी है। वृष, सिंह और गज नामक आयमें प्रासाद और पुरगृह बनवाने चाहिये। हस्ती आयमें वा ध्वज आयमें हस्तिशाला, गर्दभ, ध्वज और वृषभ आयमें वाजिशाला, गज वृष वा ध्वज आयमें पशुशाला बनवानेसे शुभ फल होता है। ब्राह्मणके लिये ध्वज आय अच्छी है। ब्राह्मणोंको पूर्वकी तरफ द्वार करना चाहिये। क्षत्रियोंके लिये सिंह आय प्रशस्त है, दरवाजा उत्तरमें होना चाहिये। वैश्योंके लिए वृष आय शुभ है, दरवाजा दक्षिणमें करना चाहिये। सब आयोंमेंसे ध्वज आय ही सबसे श्रेष्ठ है। बृहस्पतिके मतानुसार ध्वज आय क्षत्रिय और वैश्योंके लिए प्रशस्त है। ब्राह्मणोंके लिए सिंह और वृषभ नामकी आय सर्वथा त्याज्य है। सिंह और कुक्कुर आयसे अल्प आयास, ध्वज आयसे पूर्ण सिद्धि, वृष आयसे पशुओंकी वृद्धि और गज आय होनेसे सम्पद की वृद्धि होती है। इसके सिवाय अन्यान्य आयोंसे दुःख और शोक होता है।

मकानके पिण्डाङ्कको ९से गुणा करके फिर ८से भाग देनेसे जो अवशिष्ट बचेगा, उसके अनुसार आय होती है। उसी प्रकार पिण्डाङ्कको ९से गुणा कर फिर ७से भाग करके जो अवशिष्ट बचेगा, उसके अनुसार रवि, भौम आदि वार होते हैं। पिण्डको ६से गुणा करके फिर उसको ९से भाग देनेसे अंश, ८से गुणा करके १२से भाग करनेसे धन, ३ द्वारा गुणा करके ८से भाग करनेसे ऋण वा व्यय, ८ द्वारा गुणा करके ७से भाग करनेसे नक्षत्र, ८से गुणा करके १५ द्वारा भाग देनेसे तिथि, ४ द्वारा गुणा कर २७से भाग करनेसे योग और गृहपिण्डके ९से गुणा करके फिर १२ द्वारा भाग करनेसे वर्ष जाना जाता है। (विश्वकर्मप्रकाश) इसका फल पोयूषधारामें ऐसा लिखा है कि—विषम आय शुभकारक और सम आय दुःख और शोकजनक होती है। सूर्य और मङ्गलके वार तथा राश्यंश अग्नि भयकर होते हैं। इसके सिवा दूसरे ग्रहोंके वार और राश्यंश अच्छे हैं। पहलेकी प्रक्रियाके अनुसार गृहका नक्षत्र यदि स्थिरात्मक हो तो मकान बनवाना चाहिये।

धन और ऋणका फल प्रक्रियाके अनुसार मकानके ऋणसे धन अधिक होनेसे धनकी वृद्धि होती है, पर धनसे ऋण ज्यादा होनेसे धनकी हानि होती है; इस लिए ऋण अधिक हो; तो घर न बनवाना चाहिये।

नक्षत्रफल—गृहका नक्षत्र गृहस्वामीके लिए विपत्तिकर तारा होनेसे विपत्ति, प्रत्यरि होनेसे अमङ्गल और निधनाख्य होनेसे गृहस्वामीकी मृत्यु हो जाती है। इन नक्षत्रोंमें घर न बनवाना चाहिये। क्योंकि ये नक्षत्र नाना उपद्रव्योंके कारण हैं। किसी किसी ज्योतिर्वेत्ताके मतसे जिस नक्षत्रमें गृहकार्य प्रारम्भ करना हो, वह नक्षत्र गृह नक्षत्रसे जितनी संख्यामें अवस्थित हो, उसको ९ से भाग करनेसे जो बचे उसके अनुसार जन्म सम्पद विपद तारा आदि होते है। इस नियमसे विपद्, प्रत्यरि वा निधन तारा होनेसे उसदिन गृह नहीं बनाना चाहिये। इसके सिवा किसी किसी ज्योतिर्वेत्ताका यह भी कहना है कि, गृहकर्त्ताके नक्षत्रसे गृहनक्षत्रकी गणना करने पर जो संख्या होती है, उसको ९से भाग करनेसे जो अवशिष्ट बचे; उसके अनुसार जन्म आदि तारा होते हैं। घर और गृहस्वामीके एकसे नक्षत्र होनेसे स्वामीकी अकाल-

मृत्यु होती है। परन्तु वशिष्ठने ऐसा लिखा है कि, गृह और गृहस्वामीकी एकसी राशि तथा एकसे नक्षत्र होनेसे ऐसा होता है। भिन्न भिन्न राशिमें एकसे नक्षत्र होने पर भी मकान बनाया जा सकता है। इसमें कोई तरहका विघ्न नहीं आता। व्यवहारसमुच्चयमें ऐसा लिखा है—कृत्तिका आदि तीन तीन नक्षत्रोंके यथाक्रमसे नौ फल होते हैं जैसे,—१ रोगनाश, २ पुत्रलाभ, ३ धनकी प्राप्ति, ४ शोक, ५ शत्रुका भय, ६ राजाका भय ७ मृत्यु, ८ सुख ९ प्रवास।

वास्तुशास्त्रके अनुसार मकानके नक्षत्र अश्विनी, भरणी और कृत्तिका होनेसे मेषराशि, रोहिणी और मृगशिरा होनेसे वृषराशि आर्द्रा और पुनर्वसु होनेसे मिथुनराशि, पुष्या और अश्लेषा होनेसे कर्कट राशि, मघा पूर्वफाल्गुनी और उत्तरफाल्गुनी होनेसे सिंह राशि, हस्ता और चित्रा होनेसे कन्या स्वाती और विशाखा होनेसे तुला, अनुराधा और ज्येष्ठा होनेसे वृश्चिक, मूला, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा होनेसे धनु, श्रवणा और धनिष्ठा होने पर मकर, शतभिषा और पूर्वभाद्र होनेसे कुम्भ तथा उत्तरभाद्र और रेवती नक्षत्र होनेसे मकानकी मीनराशि होती है।

तिथिका फल—पूर्व प्रक्रियाके अनुसार घरकी तिथि रिक्ता वा अमावस्या होनेसे घर न बनाना चाहिये। इसके अलावा दूसरी तिथियोंमें घर बनानेसे मङ्गल होता है।

योगका फल—जो योग शुभ कहे गए हैं घरके लिए वेही योग शुभ हैं। अशुभ योग होनेसे अमङ्गल होता है।

आयुका फल—प्रक्रियाके अनुसार जितने वर्षकी आयु निकलेगी उतने वर्ष तक मकानको स्थित समझना चाहिये।

अंशका फल—द्वितीय अंशमें गृह बनानेसे मृत्युका भय, रोग और शोक उत्पन्न होते हैं। शुभग्रहके अंशको अच्छा और अशुभग्रहके अंशको अनिष्टकर समझना चाहिये।

इसी नियमके अनुसार घरका आय व्यय आदि जाननेका तरीका—कोई एक घर लम्बाईमें २९ हाथ और विस्तार में ७ हाथ है, तो उसकी लम्बाई २९ हाथको विस्तार ७ हाथसे गुणा करनेसे २०३ होगा। यह घरका पिण्ड हुआ। पिण्ड २०३को ९से गुणा करनेसे १८२७ होगा, इसको ८से भाग करनेसे बाकी बचेगा ३। इसलिये उस घरकी सिंह नामक ३री आय हुई।

वार—पिण्ड २०३को ९से गुणा करनेसे १८२७ होगा, उसको ७से भाग देनेसे बाकी ७ या शून्य बचेगा। इस प्रकार उस घरका शनिवार हुआ। (नवांशक) पिण्ड २०३को ६से गुणा करनेसे १२१८ होता है, इसको ९ से भाग करना चाहिये, बाकी बचेगा ३। इस प्रकार उस घरका अंशक ३ हुआ।

धन—पिण्ड २०३×८=१६२४÷१२ अवशिष्ट बचा ४। मकानका धन हुआ ४।

ऋण—पिण्ड २०३×३=६०९÷८=७६ बाकी ४ था। इस प्रकार घरका ऋण १ हुआ।

नक्षत्र—पिण्ड २०३×८=१६२४−२७=६० बाकी बचा ४। गृहका नक्षत्र रोहिणी।

तिथि—पिण्ड २०३×८=१६२४−१५=१०८ अवशिष्ट रहा ४। गृहकी तिथि चतुर्थी हुई।

योग—पिण्ड २०३×४=८१२−२७=३० बाकी बचा २। घरका योग प्रीति है।

आयु—पिण्ड २०३×८=१६२४−१२०=१३ बाकी बचा ६४। मकानकी आयु ६४ वर्षकी हुई।

विश्वकर्मप्रकाशके मतानुसार ११ हाथसे लेकर ३२ हाथ तक ही आयादिकी चिन्ता करनी चाहिये। इससे ज्यादा होने पर आयादिकी चिन्ता करना व्यर्थ है। घरकी मरम्मत करते समय आय, व्यय या मास शुद्धि आदि देखनेकी जरूरत नहीं। वास्तुके ईशान कोणमें देवगृह, पूर्वमें स्नानागार, अग्निकोणमें रसोई घर, दक्षिणमें शयनागार, नैऋत कोणमें अस्त्रशाला, पश्चिमकी ओर भोजनगृह, वायुकोणमें धान्यालय, उत्तरमें भाण्डागार, अग्नि कोण और पूर्व दिशाके बीचमें दधिमन्थघर, अग्निकोण और दक्षिण दिशाके बीचमें घृतशाला तथा दक्षिण और नैऋत दिशाके मध्य भागमें पायुघर वा पैखाना करना चाहिये। नैऋत और पश्चिमके बीचमें विद्यालय, पश्चिम और वायु कोणके मध्यमें रोदनघर वायु और उत्तर दिशाके बीचमें रतिघर या बैठक; उत्तर और ईशान कोणके मध्यमें औषधालय, ईशान और पूर्व दिशाके मध्य भागमें अन्यान्य घर बनवाने चाहिये। सूतिकाघर नैऋत कोणमें बनाना उचित है।

आँगन और दरवाजेके भेदसे घर १६ प्रकारका होता है।

१ ध्रुव—यह ऊर्ध्व मुख होता है। इसके किसी भी तरफ आँगन नहीं रखना चाहिये। ऐसे घरमें गृहस्थके धन, धान्य और सुखकी वृद्धि होती है।

२ धन्य—इसका आँगन और द्वार पूर्व दिशामें रखना चाहिये। इसमें धान्यकी वृद्धि होती है।

३ जय—इसका दरवाजा दक्षिणकी ओर होता है। इसका आँगन भी दक्षिण दिशामें करना चाहिये। इस घरमें रहनेवाला सर्वत्र विजय लाभ करता है।

४ नन्द—इसमें पूर्व और दक्षिणमें दो दरवाजे करना चाहिये, और दोनों ओर दो आँगन भी। इसमें गृहिणीकी अकालमृत्यु होती है।

५ खर—जिस घरका दरवाजा और आँगन पश्चिम दिशामें हो, वह खर कहलाता है। इससे धननाश होता है।

६ कान्त—जिस घरमें पूर्व और पश्चिममें दो द्वार तथा दो आँगन रहते हैं। उसे कान्त कहते हैं। फल—पुत्र और पौत्रकी वृद्धि।

७ मनोरम—जिस घरमें दक्षिण और पश्चिममें दो दरवाजे तथा दो आंगन होते हैं, वह मनोरम है। फल—धनकी वृद्धि।

८ सुमुख—जिस घरमें पूर्व पश्चिम और दक्षिणमें तीन दरवाजे तथा तीन आंगन हों, वह सुमुख कहलाता है। फल—भोगोंकी वृद्धि।

९ दुर्मुख—जिस मकानका दरवाजा और आँगन उत्तर दिशामें हो, उसको दुर्मुख कहते हैं। इसका फल—विमुखता है।

१० क्रूर—जिस गृहमें पूर्व और उत्तरमें दो दरवाजे और दो आँगन हों, वह क्रूर कहलाता है। इसमें रहने वालेको सब तरहका कष्ट रहता है।

११ विपक्ष—जिस घरमें दक्षिण और उत्तरमें दो द्वार और दो आँगन होंगे, उसे विपक्ष कहते हैं। इसमें शत्रुका भय रहता है।

१२ धनद—जिस मकानमें पूर्व, दक्षिण और उत्तरमें तीन तीन दरवाजे और आँगन होंगे, वह धनद कहलावेगा। इसमें धनकी वृद्धि होती है।

१३ क्षय—जिस घरके पश्चिम और दक्षिणमें दो द्वार तथा दो आँगन हैं, उसका नाम क्षयगृह है। इसमें रहनेवालेका सर्वस्वनाश होता है।

१४ आक्रन्द—जिस गृहमें पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशामें तीन तीन दरवाजे और आँगन हैं, उस घरको ऋषिगणोंमें आक्रन्द नामसे उल्लेख किया है। इसका फल—शोकप्राप्ति है।

१५ विपुल—जिस घरमें दक्षिण, पश्चिम और उत्तरमें तीन तीन दरवाजे तथा आँगन होंगे, वह विपुल नामसे उल्लिखित होगा। इसमें वास करनेवाला विपुल अर्थ लाभ करेगा।

१६ विजय—इसमें चारों तरफ दरवाजे और आँगन होते हैं। सब मकानोंमें यही श्रेष्ठ होता है। फल—विजयलाभ।

विश्वकर्माके मतसे-वास्तुकी ऊंचाई विस्तारके समान करना चाहिये। परन्तु यदि एकशाल (एक मजला) मकान करना हो, तो उसकी ऊंचाई विस्तारसे दूनी होनी चाहिये। इस प्रकार चतुःशाल गृहकी ऊंचाई और व्यास समान करना चाहिये। इकमजले मकानकी विस्तारसे दूनी लम्बाई और विस्तारके बराबर ऊंचाई करनेसे भी काम चल सकता है। दुमजले घरकी दूनी, ति-मजलेकी तिगुनी, चौमजलेकी पांचगुनी ऊंचाई करनी चाहिये। इससे ज्यादा ऊंचाई कदापि नहीं करना चाहिये।

किसी मकानमें यदि एक ही कमरा बनवाना हो, तो नागशुद्धि रहने पर उत्तरवालेके सिवाय दूसरी कोई भी शाला बनाई जा सकती है। परन्तु एकमजले मकानमें उत्तरशाला नहीं बनवानी चाहिये। ऐसे ही द्विशाल बनवाना हो तो दक्षिण और पश्चिममें तथा त्रिशाला बनवाना हो, तो दक्षिण पश्चिम और उत्तरमें अथवा पूर्व दक्षिण और पश्चिममें तीन घर बनवाने चाहिये।

पराशरका कहना है कि जिस वास्तुमें घर बनाने हों उसकी पूर्वसीमासे लेकर पश्चिम सीमा तकको पांच भागोंमें विभक्त करना चाहिये। उनमेंसे पूर्वकी तरफके पहले तीन भागोंको छोड़ कर चौथे भागको नाभि कहते हैं। उस जगहमें घर नहीं बनवाना चाहिये।

विश्वकर्मप्रकाशके मतसे—ब्राह्मणको छ मजला

क्षत्रियको ति मजला, वैश्यको दु-मजला और शूद्रको एकमजला मकान बनवाना चाहिये। एकमजला मकान सबहीके लिए अच्छा है। इसमें किसीका भी अमङ्गल नहीं होता।

वृहत्स हितामें जिस प्रकार प्रत्येकके लिए गृहका परिमाण लिखा है, वैसा विश्वकर्मप्रकाश और मयशिल्प आदिमें नहीं है। इसके मतसे प्रक्रियाके अनुसार आय, व्यय, वार च र नक्षत्र आदि शुद्ध होने पर मकान बनाया जा सकता है। इसके सिवाय किसके लिए कैसा मकान अच्छा होता है, इसका संक्षिप्त वर्णन भी लिखा है। वृहत्स हितामें लिखा है कि—जिस वास्तुका आगन प्रद क्षिण क्रमसे दरवाजेके नीचे तक विस्तृत है, उसका नाम वर्द्धमान है। उसका दरवाजा दक्षिण दिशामें नहीं होना चाहिये। वर्द्धमान नामका मकान सबके लिए अच्छा है।

जिस मकानके पश्चिमका एक और पूर्व का दो आँगन आखीरतक विस्तीर्ण होते हैं, और बाकीके दो दिशाओंके आँगन उत्थित तथा शेष पर्य न्त विस्तृत होते हैं, उसे स्वस्तिक कहते हैं।

जिस मकानके पूर्व और पश्चिमके आँगन शेष सीमा तक विस्तृत हैं तथा उत्तर और दक्षिण आँगन उनको सीमाको अवधिमें मिल गये हैं, उस वास्तुका नाम रुचक है। इसका द्वार उत्तर दिशामें करनेसे अमङ्गल होता है। जिस वास्तुके आँगन प्रदक्षिणक्रमसे नीचे तक विस्तृत है उसका नाम नन्द्यावर्त्त है। इस मकानमें पश्चिमके सिवाय और तीन दिशाओंमें दरवाजे बनवाने चाहिये। नन्द्यावर्त्त और वर्द्धमान नामके वास्तु सबहीके लिए प्रशस्त वा उत्तम हैं, स्वस्तिक और रुचिक मध्यम तथा इसके अलावा दूसरे वास्तु राजाओंके वास्ते शुभ होते हैं।

जिस मकानमें उत्तरको तरफ शाला नहीं रहती, उसे हिरण्यनाभ, पूर्व में शाला न होनेसे सुक्षेत्र, दक्षिणको तरफ शाला न रहनेसे चुल्लीविशालक और पश्चिममें शाला न होनेसे पक्षघ्न कहते हैं। इनमें पहलेके दो शुभ हैं। चुल्लीविशालकमें धननाश और पक्षघ्नमें पुत्रनाश तथा शत्रुता बढ़ती है। जिस मकानमें पश्चिम और दक्षिणमें दो ही शालाएं रहती हैं, उसका सिद्धार्थ, सिर्फ पश्चिम और उत्तरमें शाला रहनेसे यमसूर्य, उत्तर और पूर्वमें शाला रहनेसे दण्ड, पूर्व और दक्षिणमें शाला रहनेसे वात, पूर्व और पश्चिमकी ओर शाला रहनेसे घरचुल्ली, तथा सिर्फ दक्षिण और उत्तरकी ओर शाला विशिष्ट दु-मजले मकानको काच कहते हैं। सिद्धार्थ वास्तुमें धन की प्राप्ति, यमसूर्य में मालिककी मृत्यु, दण्डमें दण्ड या वध वातमें कलह और उद्वेग, चुल्लीमें द्रव्यका नाश, और काच वास्तुमें ज्ञातिविरोध उपस्थित होता है।

(वृहत्स० ५३।३१)

विश्वकर्मप्रकाशके मतसे—दक्षिणमें दुर्मुख और पूर्व में खर नामक वास्तु बनवानेसे उस दुमजले मकानको 'वात' कहते हैं। ऐसे घरमें वास करनेसे वातरोगकी वृद्धि होती है। दक्षिणमें दुर्मुख और पश्चिममें धान्य नामक मकान बनवानेसे उसका नाम होगा यमसूर्य। इसमें मृत्युका भय है। पूर्वमें खर और उत्तरमें धान्य नामके घर बनवानेसे उसकी दण्ड संज्ञा होगी। इसमें दण्डका भय रहेगा। दक्षिणमें दुर्मुख और उत्तरमें जय नामके घर बनवानेसे उसको नाम बीची होगा। इसमें वस्तुका विनाश और धनका क्षय है। जिसके पूर्वमें खर नामक घर और पश्चिममें धान्य मत्तक घर है, उसका नाम चुल्ली है। फल—धन धान्यका नाश है। दक्षिणमें आक्रन्द और पश्चिममें धनद घर बनवानेसे, उस दुमजले मकान-का इसु नाम होगा। इसमें पशु और धनकी वृद्धि होती है। जिसके दक्षिणमें विपक्ष और पश्चिममें क्रूर नामक घर रहे, तो उसका नाम शोभन समझना चाहिये। इस का फल—धन और धा न्यकी वृद्धि है। जिस मकानमें दक्षिणकी ओर विजय और पश्चिमकी तरफ भी विजय नामक घर रहेगा उसका नाम कुम्भ होगा। इसमें रहने वालेके पुत्र और कलत्रोंकी वृद्धि होगी। जिसके पूर्वमें धान्य और पश्चिममें भी धान्य मत्तक घर रहेगा उसका नाम नन्द है, फल—धन और गोभादृद्धि। किसी भी दो दिशा में विजय नामके दो घर बनवानेसे उसका नाम सद्वाध्य होगा। इसका शुभ फल है। वास्तुको नौ भागोंमें विभक्त करके उसके शुभाशुभकी चिन्ता करनी चाहिये।

(अथर्वशिरव भाष्य वास्तुकर्मोंमें देखो।)

जिन वृक्षोंमें दूध या गोंद पैदा होता है, उनकी

लकड़ीसे मकानका कोई भी काम न लेना चाहिये। जिस पेड़ पर चिड़ियोंका घोंसला हो, उसकी लकड़ी भी मकानके काममें न लाना चाहिये। गजभग्न, विद्युत् निर्घात अनल वा वायुसे पीड़ित चैत्य अथवा देवालयसे उत्पन्न वज्रभग्न श्मशानजात देवाश्रित कदम्ब, नीम, बहेड़ा, कण्टकयुक्त वृक्ष, असार, बड़, पीपर, नर्गुगडी, कोविदार प्लक्ष, शाल्मली और पलाश इन सब वृक्षोंकी लकड़ियोंसे भी घरका कार्य न लेना चाहिये।

नागका शिरोज्ञान करके जिस स्थान पर घर बनवानेसे किसी तरहके असमंगलकी सम्भावना न हो, वहाँ ही गृह निर्माण कराना चाहिये।

वैशाख, श्रावण, आषाढ़, अगहन, फाल्गुन और कार्तिक इन मासोंमें घर बनवाना अच्छा है। शुक्लपक्षमें गृहारम्भ करनेसे सुख और कृष्णपक्षमें भय होता है। रवि और मङ्गलवारके सिवा अन्य वारोंमें घर बनवाना प्रारम्भ करना प्रशस्त है। पूर्णिमासे अष्टमी तक पूर्वद्वारी घर; नवमीसे चतुर्दशीके भीतर उत्तरद्वारी, अमावस्यासे शुक्ल अष्टमीके भीतर पश्चिमद्वारी और शुक्ल नवमीसे चतुर्दशीके भीतर दक्षिणद्वारी घर नहीं बनवाना चाहिये। वज्र, व्याघात, शूल, व्यतिपात, अतिगण्ड, विष्कुम्भ और गण्ड ये सब योग गृहारम्भमें वर्जनीय हैं। आदित्यद्वय, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, उत्तरात्रय, रेवती, मघा, अनुराधा और श्रवणा नक्षत्रमें, शुभ वारमें, गण्डके सिवा दूसरे योगमें, रिक्ता और विष्टिके सिवा दूसरी तिथिमें गृहारम्भ करनेसे मङ्गल होता है।

वृश्चिक, कर्कट, मेष, कुम्भ और धनु लग्नमें गृहारम्भ करनेसे कार्यमें विलम्ब तथा कन्या मीन और मिथुन लग्नमें गृहारम्भ करनेसे अर्थलाभ होता है किसी किसी ज्योतिर्विद्के मतसे कुम्भ, सिंह और वृष लग्नमें गृहारम्भ करनेसे वृद्धि होती है—ऐसा भी है। गृहारम्भके जो जो नक्षत्र बतलाये गये हैं, उनमेंसे ज्येष्ठा और पुनर्वसुके सिवाय दूसरे नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश किया जा सकता है। कन्या, कुम्भ, वृष, वृश्चिक, सिंह और मिथुन लग्नमें, तथा शुक्र, वृहस्पति सोम और बुध वारमें गृहप्रवेश करना शुभ है। (युक्तिकल्पतरु)

विश्वकर्मप्रकाशके मतानुसार—चैत्रमासमें गृहारम्भ करनेसे व्याधि, वैशाखमें धनरत्न, ज्येष्ठमें मृत्यु, आषाढ़में भृत्य और धनलाभ, श्रावणमें मित्रलाभ, भाद्रपदमें हानि, आश्विनमें युद्ध, कार्त्तिकमें धन और धान्य वृद्धि; अगहनमें धनलाभ, पौषमें चोरभय, माघमें अग्निभय और फाल्गुण मासमें लक्ष्मीवृद्धि होती है। (विश्वकर्मप्रकाश ४ अ०)

गरुड़पुराणमें ऐसा लिखा है,—वास्तुपुरुष बाईं तरफ सोते हैं और तीन तीन महीने बाद एक दिशासे दूसरी दिशामें चले जाते हैं। इनकी गोदमें मकान बनवाना प्रशस्त है। सिंह, कन्या और तुलाराशिमें उत्तरद्वारी और बाकीके यथाक्रमसे वृश्चिक आदि तीन तीन राशिमें पूर्व, दक्षिण और पश्चिमद्वारी मकान बनाये जा सकते हैं। दरवाजेकी लम्बाईसे चौड़ाई आधी करनी चाहिये। दिशाओंके भेदसे मकानके आठ प्रकारके दरवाजे होते हैं। दक्षिणद्वारमें वीर्यहानि, अग्नि दिशाके द्वारसे बन्धन, वायुकोणके द्वारसे पुत्रलाभ और सन्तोष, उत्तरके द्वारसे राजपीड़ा, बन्धन और रोग, पश्चिमद्वारसे राजभय, सन्तान-नाश और विरोध तथा पूर्व द्वारसे अग्निभय, बहुकन्या, धन, सम्मान राजनाश और रोग होता है। ईशान दिशाके दरवाजेसे पूर्वदरवाजे सरीखा और नैर्ऋतके द्वारसे पश्चिमद्वार जैसा फल होता है। (गरुड़पुराण ४६ अ०) गृह प्रारम्भ करते समय याग और वास्तुपुरुषकी पूजा आदि करनी पड़ती है।

वास्तुप्रयोग और वास्तुविद्या शब्दमें इसका विशेष विवरण देखना चाहिये।

वृहत्संहितामें ऐसा लिखा है—वास्तु यदि पूर्व और उत्तरमें ऊंचा हो तो धन क्षय और पुत्रनाश होता है। दुर्गन्ध युक्त होनेसे पुत्रनाश, टेढ़ा होनेसे बन्धुनाश और दिक्भ्रमसे मकान बने तो नारीगणका वंशनाश होता है। वासभवनके चारों तरफ समानभावसे भूमि वर्द्धन करनेसे समस्त पदार्थोंकी वृद्धि होगी। यदि किसी भी कारणसे एक तरफ भूमि वर्द्धित करनेकी आवश्यकता पड़े तो पूर्व या उत्तरमें बढ़ा सकते हैं। वास्तुकी पूर्व आदि दिशा जलपूर्ण रहनेसे यथाक्रमसे सुतहानि, अग्निभय, शत्रुभय, स्त्रीकलह, स्त्रीदोष, निधन, धनवृद्धि और पुत्रवृद्धि ऐसे आठ फल होते हैं। मकानके कामके लिये वृक्ष छेदन करना हो, तो एक दिन पहिले वृक्षकी पूजा आदि करके, दूसरे दिन सुबह प्रदक्षिणपूर्वक वृक्षच्छेदन करना

उचित है। कटा हुआ वृक्ष यदि उत्तर या पूर्व दिशामें गिरे, तो उसे शुभ समझना चाहिये। इसके अलावा दूसरी दिशाओंमें गिरनेवाले वृक्षकी लकड़ीको अशुभ जानना, ऐसी लकड़ी मकानमें लगाने लायक नहीं। पेड़को काटने पर यदि उस कटी हुई जगहका वर्ण विवर्ण न हुआ, तो उस लकड़ीको मकानके लिये उपयोगी समझना चाहिये। काटने बाद यदि वृक्षका सार भाग वर्णान्तरको प्राप्त हो जाय, तो उस लकड़ीसे मकान नहीं बनवाना चाहिये। घरमें प्रवेश करके अनाज, गो, गुरु, अग्नि वा देवताके ऊंचे स्थान पर न सोना चाहिये। जहां बांस या खोंटे पड़ें हों, उससे नीचे सोना निषिद्ध है।

प्राचीन ऋषिगण प्रासाद एकमञ्जल, दुमञ्जला, तिमञ्जल आदि मकान किस प्रकारसे बनाना चाहिये और किस प्रकारसे घरके खम्भ, खिड़किया और भीतें आदि बनानी चाहिये, इसके अच्छे अच्छे नियम बना कर लिपिबद्ध कर गये हैं। उन्हीं नियमोंके अनुसार पहिले मकान बना करते थे। प्रासाद और वास्तु शब्द आदि शब्द देखो।

२ कलत्र, भार्या वा स्त्री। ३ नाम। ४ मेषादि राशि।

गृहकच्छप (सं० पु०) गृहे कच्छप इव। पेषण शिला, पीसनेका पत्थर।

गृहकन्या (सं० स्त्री०) एक तरहका पौधा, घृतकुमारी, घीकुवार, ग्वारपाठा।

गृहकपोत (सं० पु० स्त्री०) गृहे स्थित कपोत। पक्षी विशेष, घराल या पोसाऊ कबूतर।

गृहकरण (सं० क्ली०) घरका काम।

गृहकर्तृ (सं० त्रि०) गृह करोति कृ तृच्। १ घरकारक, घर बनानेवाला। २ एक तरहका पक्षी, चटक, गौरैया। (Sparrow) इसका पर्याय—धानाभक्षण, चम, भोरु, कपिदिष्ट, कणप्रिय है।

गृहकर्मन् (सं० क्ली०) गृहस्य कर्म, ६ तत्। १ घर निर्माण। २ गृहकार्य।

गृहकर्मदास (सं० पु०) गृहकर्मणो दास, ६ तत्। गृहकर्मका भृत्य, जिस नौकरके ऊपर घरका कार्यभार अर्पित है।

गृहकलह (सं० पु०) गृहे कलह, ७ तत्। गृहविरोध, घरका झगड़ा।

गृहकारक (सं० पु०) गृह करोति कृ ण्वुल्, ६ तत्। १ वर्णसङ्कर जातिविशेष। पराशर पद्धतिमें लिखा है कि कुम्भकारकके औरससे नापितकन्याके गर्भमें इस जातिकी उत्पत्ति हुई है। (त्रि०) २ गृहनिर्माणकर्त्ता, घरका बनानेवाला।

गृहकारिन् (सं० त्रि०) गृह करोति कृ णिनि। १ गृहकारक, घरका बनानेवाला। (पु०) २ एक तरहका कीट।

गृहकार्य (सं० क्ली०) गृहस्य कार्य ६ तत्। गृहकर्म, घरका कामकाज।

गृहकुक्कुट (सं० पु० स्त्री०) गृहे कद्ध कुक्कुट। गृहपालित कुक्कुट, घरमुर्गा।

गृहकुमारी (सं० स्त्री०) घृतकुमारी, ग्वारपाठा, घीकुवार।

गृहकुलिङ्ग (सं० पु०) गृहे पुष्ट कुलिङ्ग। पक्षीविशेष, गृहचटक, एक तरहकी चिड़िया, घराल गौरैया। इसके मांसका गुण—रक्तपित्तनाशक और शुक्रवृद्धिकर है।

गृहकूलक (सं० पु०) गृहस्य कूले समीपे भव गृहकूल कन्। कासाक। चिचिण्डा, चचींडा।

गृहकृत्य (सं० क्ली०) गृहस्य कृत्य, ६ तत्। गृहकार्य, घरका काम।

गृहगोधा (सं० स्त्री०) गृहस्य गोधेव। ज्येष्ठी, छिपकली, टिकटिकिया। इसका पर्याय—पल्ली, मुसली, विश्वम्भरा, ज्येष्ठा, कुड्यमत्स्य, पल्लिका, गृहगोधिका, गृहगोलिका, माणिक्या, भित्तिका, गृहालिका।

गृहगोधिका (सं० स्त्री०) क्षुद्रा गोधा अल्पार्थे कन् टाप् अत इत्व गृहस्य गोधिकेव। ज्येष्ठी, छिपकली।

गृहगोलक (सं० पु०) गृहस्थित गोलोक इव। पुआतीय टिकटिकी, छिपकली।

गृहगोलिका (सं० स्त्री०) गृहे गोधिका इव पृषोदरादित्वात् धकारस्य लकार। ज्येष्ठी, घराल छिपकली।

गृहघ्नी (सं० स्त्री०) गृह हन् ङीप्। गृहनाशिका स्त्री, घरको नष्ट करनेवाली स्त्री।

गृहचटक (सं० पु०) गृहस्थित चटक। पक्षीविशेष, घराल गौरैया पक्षी।

गृहचुल्ली (सं० स्त्री०) गृहाणां चुल्लीव। दो घरवाला मकान, दो ऐसी कोठरी जिनमें एकका मुख पश्चिमकी ओर और दूसरेका पूर्वकी ओर हो।

गृहच्छिद्र (सं० क्लो०) गृहस्य च्छिद्रं, ६-तत्। गृहका छिद्र, घरका दोष, कलङ्क।

गृहज (सं० पु०) गृहे दास्यं जायते गृह-जन-ड। मनुकथित सात प्रकारके दासोंमेंसे एक, दासीपुत्र। (मनु० ८।०१५)

गृहजात (सं० त्रि०) गृहे जातः, ७-तत्। गृहोत्पन्न, जो घरमें उत्पन्न होता है।

गृहजालिका (सं० स्त्री०) कपटता, छल, धूर्त्तता।

गृहणी (सं० स्त्री०) १ काञ्जिक, काँजी। २ पलाण्डु, पियाज।

गृहतटी (सं० स्त्री०) द्वारपिंडी, गृहावग्रहणी, घरके सामनेको चबुतरा।

गृहदास (सं० पु०) गृहस्य दासः ६-तत्। गृहभृत्य, घरका नौकर।

गृहदाह (सं० पु०) गृहस्य दाहः, ६-तत्। घरका जलना।

गृहदीप्ति (सं० स्त्री०) गृहस्य दीप्तिः ६-तत्। १ घरकी शोभा। २ साध्वी स्त्री।

गृहदेवता (सं० स्त्री०) गृहे वासो स्थिता देवता। १ वास्तु पुरुषके देहस्थित अग्नि प्रभृति ४५ देवता। २ घरकी देवता।

गृहदेवी (सं० स्त्री०) गृहे गृहकुड्ये विलिख्य पूजा देवी। एक राक्षसी, जिसका दूसरा नाम जरा है। जो घरकी भीत पर इसकी मूर्त्ति अङ्कित कर भक्तिपूर्वक पूजा करता है 'जरा' उसे किसी प्रकारका अनिष्ट नहीं पहुंचाती। यह राक्षसी मनुष्यके गृहमें वास करती जान कर इसका नाम गृहदेवी पड़ा। जरा देखो।

गृहद्रुम (सं० पु०) गृहमिव द्रुमः। १ मेढ़शृङ्गीवृक्ष। २ शाकवृक्षभेद, सोहञ्जनका पेड़।

गृहद्वार (सं० क्लो०) गृहस्य द्वारं, ६-तत्। घरका दरवाजा।

गृहधूम (सं० पु०) गृहगतो धूमः, मध्यपदलो०। १ घरकी दीवार या छतमें धूआँ लगनेसे एक तरहके काले रंगका पदार्थ लग जाता है उसीको गृहधूम कहते हैं, जाला। २ एक तरहका वृक्ष।

गृहधूमाद्यतैल (सं० क्लो०) नासारोगका तेल। तिलतेलके ६० तोलेमें जाला, पीपर, दारुहरिद्रा, यवक्षार, करञ्जबीज, सैन्धव, ब्राह्मणयष्टिका बीज प्रत्येकके दो तोले ४ मासे ६ रत्तीको चूर्ण कर मिला देनेसे उक्त तैल प्रस्तुत होता है।

गृहनमन (सं० क्लो०) गृहं नमयति नम णिच्-ल्यु। वायु, हवा।

गृहनरक (सं० क्लो०) गृहस्य नरकं, ६-तत्। गृहके अपरिष्कृत स्थान, वह स्थान जहां उच्छिष्ट पदार्थ फेंका जाता है।

गृहनाशन (सं० पु०-स्त्री०) गृहं नाशयति नश-णिच्-ल्यु। कपोत, कबूतर।

गृहनीड़ (सं० पु०-स्त्री०) गृहे नीड़मस्य बहुव्री० चटक पक्षी, गोरैया।

गृहप (सं० पु०) गृहं पाति पा-क। १ गृहपालक, घरका मालिक। २ घरका रक्षक, चौकीदार। ३ कुत्ता। ४ अग्नि, आग।

गृहपति (सं० पु०) गृहस्य, पतिः, ६-तत्। गृहस्थ द्वितीयाश्रमावलम्बो, वह जो गार्हस्थ्य धर्मके दूसरे आश्रममें हो, गृहस्थ। २ मन्त्री। ३ धर्म। ४ यजमान। ५ यजमान जो योगका अनुष्ठान करता है। ६ अग्निविशेष। ७ (पु० स्त्री०) गृहस्वामी, घरका मालिक।

गृहपत्नी (सं० स्त्री०) गृहस्य पतिः, ६-तत्। गृहपति ङीष् विकल्पे नान्तादेशः। विभाषा स पूर्वस्य। पा० ४।१।३४। गृहपालिका पत्नी, घरकी रक्षा करनेवाली।

गृहपशु (सं० पु०) कुक्कुर, कुत्ता।

गृहपाल (सं० त्रि०) गृहं पालयति गृह-पालि-अण्। १ गृहरक्षक, जो घरकी रखवाली करता हो। (पु० स्त्री०) गृहे पाल्यतेऽसौ पालि-अच्। २ कुक्कुर, कुत्ता।

गृहपुत्रिका (सं० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुवार, ग्वारपाठा।

गृहपोतक (सं० पु०) गृहे पोतः शिशुरिव यस्य, बहुव्री० कप्। वास्तु, वास, रहनेका स्थान।

गृहप्रवेश (सं० पु०) गृहे प्रवेशः, ६-तत्। १ नये घरके तैयार हो जाने पर शुभदिन और शुभनक्षत्रमें होमादि अनुष्ठान करके उसमें जाना। २ घरके भीतर जाना।

गृहबभ्रु (सं० पु० स्त्री०) गृहस्थितो बभ्रुः। गृहस्थित नकुल, नेवला।

गृहबलि (स० पु०) गृहे देयो बलि । गृहका अनुष्ठेय बलिकर्म, वैश्वदेव कर्म ।

गृहबलिप्रिय (स० पु०) गृहबलिर्प्रियोऽस्य, बहुव्री० । १ बक पक्षी बगुला । २ चटक, गोरैया । ३ काक, कौवा ।

गृहबलिभुज् (स० पु० स्त्री०) गृहे दत्त बलि अन्नादि भक्ष्यद्रव्य भुङ्क्ते, भुज् क्विप् । १ काक, कौवा । २ चटक गोरैया ।

गृहभङ्ग (स० पु०) गृहस्य भङ्ग, ६ तत् । १ वह मनुष्य जो घरसे बहिष्कृत किया गया हो २ गृहको जीर्णता, घरका तहस नहस होना । ३ किसी मनुष्यकी अवनति ।

गृहभञ्जन (स० क्लो०) गृहस्य भञ्जन, ६ तत् । गृहभङ्ग, वर्षादिसे घरकी बरबादी ।

गृहभर्तृ (स० त्रि०) गृहस्य भर्त्ता, ६ तत् । गृहस्वामी, घरका मालिक ।

गृहभूमि (स० स्त्री०) गृहस्य योग्या भूमि । वास्तुभूमि, वासकरने योग्य जमीन । अमरटी० ।

गृहभेदिन (स० त्रि०) गृहं भिनत्ति गृह भिद् णिनि । गृह भेदकारक, घरमें लड़ाई करनेवाला ।

गृहभोजिन (स० त्रि०) गृहे भोक्ता भोजनमस्य भुज णिनि । घरके मनुष्य, एक परिवारके आदमी ।

गृहमणि (स० पु०) गृहस्य मणिरिव । प्रदीप, दीपक, चिराग ।

गृहमाचिका (स० स्त्री०) गृह मचते गुप्तभावेन तिष्ठति मच ण्वुल् टाप् अत इत्वञ्च । चर्मचटी, चमगीदड़ ।

गृहमुधधी (स० त्रि०) गृहाभिलाषे पीड़ित ।

गृहमृग (स० पु० स्त्री०) दृष्टे मृग इव । कुक्कुर, कुत्ता ।

गृहमेघ (स० पु०) गृहसमूह, घरकी पंक्ति ।

गृहमेध (स० पु०) गृहेण दारै र्मेधते सङ्गच्छते मेध अच् ३ तत् । १ वह जिसने स्त्रीको ग्रहण किया है, गृहस्थ । मेध हिंसायां भावे घञ् । २ पञ्चसूना रूपसे हिंसा, पशुके जीवनको नष्ट करनेके लिये प्रत्येक मनुष्यके घरमें पांच अस्त्र सदा मौजूद रहते हैं । यथा—अग्निको जगह झाड़ मूसल, उखली और पानीका बरतन । उसीको पञ्चसूना कहते हैं । गृहे मेधा हिंसाहेतुको यज्ञो यस्य, बहुव्री० । ३ जिसने घरमें पञ्चयज्ञका अनुष्ठान किया है । गृहे कर्तव्यो यज्ञो यस्य, बहुव्री० । ४ देवताविशेष । (ऋक् ७।५९।१०)

गृहमेधिन् (स० पु०) गृहेण दारैर्मेधते सङ्गच्छते मेध णिनि । १ गृहस्थ । २ मरुत्‌विशेष, वायु, हवा ।

गृहमेध्य (स० त्रि०) गृहमेधो देवताऽस्य गृहमेध यत् । गृह-मेधि देवताओंको देने योग्य हवि प्रभृति, घरके देवता ओंको दी अनाज इत्यादिका नैवेद्य ।

गृहयन्त्र (स० क्लो०) गृहे यन्त्र ७ तत । गृहस्थित काष्ठादि निर्मित वस्त्र रखनेका आधारविशेष, कपड़ादि रखनेके लिये लकड़िकी बनी खूंटी ।

गृहयाय्य (स० त्रि०) गृहयते गृह णिच् आय्य । गृहस्थ ।

गृहयालु (स० त्रि०) गृहयते गृह्णाति । गृह णिच् आलु । ग्रहीता, ग्राहक, ग्रहण करनेवाला ।

गृहराज (स० पु०) गृहाणां राजा, ६ तत् । श्रेष्ठ गृह, बड़ा घर ।

गृहलक्ष्मी (स० स्त्री०) गृहस्य लक्ष्मीरिव । सुशीला, सच्चरित्रा स्त्री, सुलक्षणा औरत ।

गृहवाटिका (स० स्त्री०) गृहसमीपे वाटिका इव आराम । गृहके निकटवर्ती उपवन घरके नजदीकका उद्यान ।

गृहवास (स० पु०) गृहस्य वास ६ तत् । १ घरका वास । २ गार्हस्थ धर्म ।

गृहवासिन् (स० त्रि०) गृहे वसति वस णिनि । घरमें वास करनेवाला ।

गृहविच्छेद (स० पु०) गृहकलह, घर झगड़ा ।

गृहवित्त (स० त्रि०) गृहं वित्त यस्य, बहुव्री० । गृह स्वामी, घरका मालिक ।

गृहशायी (स० पु०) पारावत, कबूतर ।

गृहसंवेशक (स० पु०) गृह गृहनिर्माण संविशति उप जीवति सम् विश ण्वुल् । जो घर बना बना कर अपनी जीविका निर्वाह करता है, स्थपति ।

गृहस्थ (स० पु०) गृहे दारेषु तिष्ठति अभिरमते गृह स्था क । गृही, द्वितीयाश्रमस्थ जो विवाहादि कर घरमें वास करे । इसका पर्याय—ज्येष्ठाश्रमी, गृहमेधी, स्नातक, गृही, गृहपति, सत्री, गृहयाय्य, गृहाधिप कुटुम्बी, गृहाय-निक । २ घरबारवाला, बालबच्चोंवाला आदमी । (त्रि०) गृहे तिष्ठति गृह स्था क । ३ गृहस्थित ।

गृहस्थधर्म (स० पु०) गृहस्थस्य धर्म, ६ तत् । गृही या द्वितीय आश्रमीके अवश्य करने योग्य धर्म, गार्हस्थधर्म ।

कोई भी हो, चाहे बड़ा हो और चाहे छोटा, जब तक वह शरीर धारण करेगा, जब तक अज्ञानतिमिरमें आच्छन्न रह कर वास्तविक पथ पहचाननेमें असमर्थ है, तब तक उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। रुचिभेदसे वा प्रकृतिके भेदसे भिन्न भिन्न कार्य भले हो कर, पर कार्य अवश्य करना पड़ेगा। ये काम दो प्रकारके होते हैं— एक मङ्गलकर और दूसरा अमङ्गलकर। मनुष्य अपनी अभिलाषका पक्षपाती हो कर कार्योंका अनुष्ठान किया करता है। मनुष्य अमंगल कार्योंका अनुष्ठान करके नरकोंका दारुण कष्ट स्वीकार करता है। पर अपनी अभिलाषको नहीं छोड़ता। परमकारुणिक परिणामदर्शी आर्य ऋषियोंने मानवकुलके मङ्गलके लिए अनेक गवेषणा और योगलब्ध प्रतिभाके बलसे उन सब कार्योंका फलाफल स्थिर करके कर्तव्याकर्तव्य निर्णय किया था। उन्होंने कर्तव्य कार्योंको चार विभागोंमें विभक्त कर अवस्थाके अनुसार मानवके लिए अनुष्ठेय वा अननुष्ठेय नामसे निरूपण किया है। वे चार विभाग ऐसे हैं,—ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और भिक्षुधर्म। मानवके जीवनकालको चार भागोंमें विभक्त कर यथाक्रमसे चार प्रकारके धर्मका अनुष्ठानाधिकार निर्णीत किया है। (कौनसे वर्णवाले किन किन गुणोंसे युक्त होने पर धर्मके अधिकारी होते हैं, वह उन उन शब्दोंमें देखना चाहिये। इन चार धर्मोंमें जो धर्म वा कर्मान्तर मानवजीवनके द्वितीय विभागमें अनुष्ठेय है, उसे गृहस्थधर्म वा द्वितीय आश्रम कहते हैं। आर्य-धर्मशास्त्रसम्मत गृहस्थके अनुष्ठेय कार्योंकी पर्यालोचना करनेसे उनको तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। तीन विभाग इस प्रकार हैं,— सामाजिक, शारीरिक और पारत्रिक अथवा गार्हस्थिक। जिन कार्योंसे समाजकी उन्नति हो और उसके अनुसार अपना भी कुछ लाभ हो, वह सामाजिक कार्य है। जिन कार्योंके करनेसे शरीर नीरोग रहे, बलवान् और कार्यक्षम हो कर मनुष्यके गार्हस्थिक कार्य तथा धर्ममें सहायता पहुंचावें, वह शारीरिक कार्य है और जिन कार्योंके अनुष्ठानसे जन्मान्तरमें (दूसरे भवमें) सुख और शान्ति मिले, उसे पारत्रिक कहते हैं। आर्य ऋषिगण सांसारिक प्रीतिको सुख नहीं मानते, दुर्बल मानवप्रकृति जिस सुखके लिए सर्वदा लालायित रहती है, विवेकी ऋषियोंके लिए वह घोर दुःखकर और निकृष्ट है। वे मुक्ति (मोक्ष) को ही सुख मानते हैं और सबको उस सुखसे सुखी करनेका उनका अभिप्राय रहता है, (१) इसीलिए उनके प्रवर्त्तित सब धर्मोंका ही अन्तिम ध्येय मुक्ति है। किसी भी प्रकार अनुष्ठित क्यों न हो, आर्योंके किए हुए सारे कामही मुक्तिके अनुकूल हैं। धर्म और मुक्ति देखो। मुक्तिका प्रधान सहाय अन्तःकरण है। गृहस्थाश्रममें वह अन्तःकरण बनता है और मुक्तिका साक्षात् कारण सत्त्वज्ञानको उत्पन्न करके मानव मुक्तिकी प्रथम श्रेणीमें चढ़ता है। सभी आश्रम या धर्मोंमें गार्हस्थ्य प्रधान और प्रशंसनीय है। इसीलिए सारे धर्मशास्त्रोंमें गृहस्थधर्मका थोड़ा-बहुत उल्लेख पाया जाता है। उनमें मनु, काशीखण्ड, महाभारत, गरुड़पुराण, याज्ञवल्क्य, व्याससंहिता और बृहत्पाराशरमें बहुत अच्छा और विस्तृत वर्णन मिलता है।

मनुके मतानुसार ब्रह्मचारीको गुरुकी अनुमति ले कर गृहस्थ धर्म अवलम्बन करना चाहिये। ब्रह्मचर्य समाप्त होने पर गृहस्थधर्मका अधिकारी बनता है। ब्रह्मचारी देखो। गृहस्थधर्ममें सबसे पहिले दारपरिग्रह (स्त्रीका परिग्रह) करना पड़ता है। दारपरिग्रह बिना किये गृहस्थ नहीं बन सकता। भार्या गृहस्थधर्ममें प्रधान सहायक होती है। स्वयं उपयुक्त और कार्याधिकारी होने पर भी स्त्रीके दोषसे धर्ममें व्याघात होता है और वास्तविक मार्गसे विचलित हो कर दुःखकर कुमार्गमें जाना पड़ता है। इसीलिए आर्यगण दारपरिग्रहके बारेमें बहुतसे नियम बना गये हैं। गृहस्थोंको उचित है कि, उन नियमोंको ध्यानमें रखते हुए दारपरिग्रह करें। यदि विवाह न किया जायगा, तो तरह तरहके दोष आवेंगे। विवाह देखो। गृहलक्ष्मी (स्त्री) जिससे सुखसे काल बिता सके, उनका प्रयत्न गृहस्थको करना चाहिये। अलङ्कार और वस्त्र आदि देनेमें भी कभी सङ्कोच न करना चाहिये, जिस घरमें औरतें आनन्दित और आदृत होती हैं, उस घरमें देवताओंका वास

(१) "सुखं हि सर्वदा काम्यं तच्च धर्मसमुद्भवम्।
तस्माद्धर्मोऽत्र कर्त्तव्यश्चातुर्वर्ण्येन यत्नतः॥" (काशीखण्ड)

रहता है। अर्थात् जिस घरमें स्त्रियां सर्वदा प्रफुल्लचित्त रहती हैं, उस घरमें स्वर्गीय सुख विराजता है। विना कारण अबलाओंको यातना देनेसे, उनके शोकनिश्वास से गृहस्थको दिन दिन अवनति होती है।

गृहस्थको पञ्चसूना पापके विनाशके लिए पञ्चमहायज्ञ का अनुष्ठान करना पड़ता है। ब्राह्मणके लिए अध्यापन, पितृयज्ञ, होम, बलि और अतिथिसत्कार ये महायज्ञ करना आवश्यक है। इसको छोड़ देनेसे गृहस्थ मिट्टीमें मिल जाता है। अहुत, हुत, प्रहुत, ब्राह्मण हुत और प्राशित ये पांच यज्ञ भी गृहस्थके करने योग्य हैं। इष्ट मन्त्रका जप करना सो अहुत है, होमका नाम हुत, भौतिक बलिको प्रहुत ब्राह्मणोंको अर्चना करनेको ब्राह्म्याहुत और पितृश्राद्धको प्राशित कहते हैं। गृहस्थों के लिए अतिथिसत्कार एक प्रधान कार्य है, प्राण जाने पर भी गृहस्थको इससे विचलित न होना चाहिये। जब जैसी अवस्था हो, तब तैसी ही चीजोंसे अतिथिका सत्कार करना चाहिये। सबसे पहिले अतिथिको भोजन कराना चाहिये, पीछे गृहस्थको भोजन करना चाहिये।

अतिथि और श्राद्ध देखो।

मनुके मतसे—मानवजीवनका चार भागोंमें विभक्त करना चाहिये। प्रथमभाग—ब्रह्मचारी हो कर गुरुके घरमें रहना और यथाविधिसे शास्त्रोंका अध्ययन करना है। फिर गृहस्थ बन कर गृहस्थधर्म पालन करना यह दूसराभाग है। गृहस्थोंको ऐसा काम करना चाहिये जिससे किसी भी प्राणीकी हिंसा न हो और रुजगार भी वही करना चाहिये, जिससे किसी भी प्राणीका जी न दुखे। विपत्तिमें भी इस बातको ध्यानमें रख कर जीविका निर्वाह करना चाहिये कि जिससे थोड़ी हिंसा हो। सब जातिके गृहस्थोंको अपना अपना कार्य करना चाहिए। कभी भी निन्दनीय कामोंमें हाथ न लगाना चाहिए। जिन कार्योंके करनेसे शरीरको विशेष क्लेश न पहुंचे, ऐसा व्यापार करना चाहिए। शरीरको दुर्बल करके जो धनका सञ्चय किया जाता है उससे पाप होता है। गृहस्थोंके लिए ऋत, अमृत, मृत, प्रमृत और सत्यानृत ये पांच वृत्तियां प्रशंसनीय हैं और नौकरी निन्दनीय है। उञ्छवृत्तिको ऋत कहते हैं। याचना नहीं करना भी अमृत है। भिक्षालब्ध वृत्तिको मृत कहते हैं। कृषिकार्यका नाम प्रमृत और वाणिज्यका नाम सत्यानृत है। इनमेंसे पहिले पहिलेकी वृत्तियां उत्तम और पिछली वृत्तियां मध्यम और जघन्य हैं। सेवा करना नौकरी है गृहस्थको विपत्तियां झेलते हुए भी नौकरी नहीं करनी चाहिए। इसको बराबर दुःखकर, लाघवकारिणी और निकृष्टवृत्ति दूसरी नहीं है। जो गृहस्थ तीन वर्ष तक गृहस्थी चलानेके लिये धन सञ्चय कर रखता है, उसे कुशूलधान्यक कहते हैं। जो एक वर्षके लायक रख कर काम करता है, उसे कुम्भीधान्यक कहते हैं। जो तीन दिनके लायक धन रख कर बाकीमेंसे खर्च करता है, उसे "त्र्यैहिक' और जो दूसरे दिनकी परवाह नहीं रखता उसे अश्वस्तनिक कहते हैं। प्राचीन आर्योंने इनमें पीछे पीछेके गृहस्थोंकी प्रशंसा की है इन चार प्रकारके गृहस्थोंमेंसे प्रथम गृहस्थ अर्थात् कुशूलधान्यकको उञ्छशीलता, अयाचित, याचित, कृषि वाणिज्य और अध्यापन ये छह वृत्तियां धारण करनी चाहिए। कुम्भीधान्यक कृषि और वाणिज्यको छोड़ कर बाकीकी चार वृत्तियोंमेंसे (जो हो) तीन वृत्तियोंको धारण करेगा। त्र्यैहिक गृहस्थ कृषि, वाणिज्य और याचित इन तीन वृत्तियोंको छोड़कर बाकीकी तीन वृत्तियोंमेंसे दो वृत्ति ग्रहण करेगा। और अश्वस्तनिक सिर्फ ब्रह्मसत्र शिलोञ्छकी अन्यतमवृत्ति धारण करेगा।

अकुटिल शठताशून्य और शुद्ध जो वृत्त हो ब्राह्मणको योग्य है। ब्राह्मणको सुखार्थी, संयत और सन्तोषी बनना चाहिए। सन्तोष ही सुखका मूल है बिना सन्तोष छह खण्डका अधिपति चक्रवर्ती भी सुखी नहीं हो सकता वेदमें जिन जिनके लिए जो जो कर्म बतलाये हैं यदि वैसा सब करें तो मनुष्य हो कर भी स्वर्गीय सुखको प्राप्त कर देवोंके समान भोग भोग सकते हैं। तथा इन्द्रादि देवोंके साथ एकत्र वास कर सकते हैं। प्रसंग अर्थात् गीत वाद्य और अविहित या अकुलोचित कार्य करके अर्थोपार्जन भी नहीं करना चाहिए। जीविका निर्वाहके लिए यदि यथेष्ट पैतृक धन मौजूद हो तो अर्थोपार्जन नहीं करना चाहिए। इन्द्रियोंको संयत रखनेके लिए गृहस्थको सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये। इन्द्रियोंकी लालसाकी पूर्तिके लिये उनमें

आसक्त न हो जाना चाहिये। किसी भी विषयमें हदसे ज्यादा आसक्ति रखना ठीक नहीं। अगर किसी कारणसे किसी विषयमें ज्यादा आसक्ति हो गई हो तो उसका शीघ्र ही प्रतीकार कर देना चाहिये। ब्राह्मणोंको वेदाध्ययनके विरुद्ध किसी भी विषयमें अनुष्ठान न करना चाहिये। उमर, कार्य, धन, सम्पत्ति, पाण्डित्य और वंशके अनुसार ही वेश, वचन और बुद्धि ग्रहण करना चाहिये। ज्ञानके विकाश और उन्नतिके लिए प्रतिदिन शास्त्र और वैदिकनिगम अवलोकन करना चाहिए। शास्त्रके अध्ययनसे दिन दिन ज्ञानकी वृद्धि और विज्ञानकी अभिरुचि होती है। (मनु ४ अ० १७)

काशीखण्डमें लिखा है कि, विना क्लेशके कभी भी धन उपार्जन नहीं किया जा सकता। अर्थके अभावसे क्रियालोप और क्रियालोपके अभावसे धर्मकी हानि होती है। धर्म ही सुखका कारण है, विना धर्मके सुखकी प्राप्ति हो नहीं सकती। गृहस्थ आश्रममें धनका उपार्जन, धर्मसाधन और थोड़ा-बहुत सुख होता है, इसीलिए गृहस्थ-आश्रम उत्तम माना गया है। सच्चे मार्गसे उपार्जन किया हुआ धन पारलौकिक सुखके लिए सत्पात्रमें दान करना चाहिये, भूल कर भी कभी असत् पापाचारियोंको दान नहीं देना चाहिये। विपत्तिके समय अपने परिवारवर्गको पालन करनेके लिए और कर्ज चुकानेके लिए पापाचारियोंको दान देनेमें कोई दोष नहीं है। यथासाध्य परिवारवर्गका भरण पोषण करनेसे ऐहिक और पारिवारिक सुख होता है, और नहीं करनेसे पाप होता है। गृहस्थ मात्रका यह कर्त्तव्य है कि, वह अपने पोष्य वर्गका अच्छी तरह भरण पोषण करे। माता, पिता, गुरुपत्नी, सन्तान, आश्रित, अभ्यागत और अग्नि इन सात श्रेणियोंको शास्त्रकारोंने पोष्य वर्ग कहा है। गृहस्थोंका कर्त्तव्य होना चाहिये कि,—वे अनाथोंको दान दें, पोष्य वर्गका समान भावसे प्रतिपालन करें। दयालु व क्षमावान् बन कर देवता और अतिथिकी पूजा करें। घर पर अतिथिके उपस्थित होनेपर गृहस्थको मिष्टवचन बोलना, स्नेहदृष्टि रखना, मन और मुखको प्रसन्न रखना, अभ्युत्थान, स्नेहसम्भाषण, उपासना और अनुगमन करना चाहिये। आसन, पादशौच, यथाशक्ति भोजन, पृथिवी, शय्या, तृण, जल, अभ्यङ्ग (तैल-मर्दन) और दीप ये गृहस्थकी उन्नतिके कारण हैं। ब्राह्मणोंको यथारीतिसे अतिथि और देवोंकी पूजा कर रात्रिमें एक प्रहर बीत जानेके बाद यज्ञ शेष हवि भोजन करके शयन करना चाहिये तथा शेष प्रहरमें पुनः उठ कर सन्ध्यावन्दनादि कार्योंमें लग जाना चाहिये। खलता, परदाराभिलाष, परद्रोह, क्रोध, मिथ्या व्यवहार, अप्रिय आचरण, द्वेष, दम्भ और कपटता ये नौ विकर्म हैं। गृहस्थको ये सब त्याग देना चाहिए। स्नान, सन्ध्या, जप, होम, वेदाध्ययन, देवार्चना, वैश्वदेव, अतिथिसत्कार, और पितृतर्पण—ये नौ आवश्यक कार्य हैं। सत्य, शौच, अहिंसा, शान्ति, ज्ञान, दया, दम, अस्तेय और इन्द्रिय-संयम—ये नौ सब धर्मोंके साधन स्वरूप हैं। [इन बातोंमें किसीका कर्म भोजन व सोवनं न्हीं रखना चाहिये] गृहस्थको सर्वदा इनका अनुष्ठान करते रहना चाहिये। (काशीखण्ड ३८ अध्याय)

व्याससंहिताके मतसे गृहस्थके करने योग्य कार्य तीन हैं,—नित्य, नैमित्तिक और काम्य। गृहस्थको रात्रिके शेषभागमें शय्या छोड़ कर भक्तिपूर्वक विष्णुका ध्यान करना, और मांगलिक द्रव्योंका अवलोकन कर आवश्यक कर्म अनुष्ठान करना चाहिये। पहिले शौचक्रिया करके अग्निसेवन, दंतधावन और स्नान करके पवित्र भावोंसे सन्ध्या और देव देवीको पूजा करनी चाहिये। इसके बाद यथारीति वेद वा वेदाङ्ग अध्ययन और इतिहास आदिका अभ्यासकर ब्राह्मणोंको उपयुक्त अधिकारी शिष्योंको पढ़ाना चाहिये। इसके बाद याग-यज्ञ आदि कर दैनिक व्यापार समापन करना उचित है।

(व्याससंहिता ३ अ०)

धर्मशास्त्रप्रणेता दक्षके मतसे—उदयसे अस्तकाल तक ब्राह्मणोंको क्षणभरके लिए भी निष्क्रिय न रहना चाहिये। सर्वदा कोई न कोई कार्य करते ही रहना उचित है। ब्राह्मणके दैनिक कर्त्तव्य कार्य—उषाकालसे यथाक्रम शौच, स्नान, दन्तधावन, प्रात:स्नान, सन्ध्याको उपासना, होमके अनुष्ठान, देवतार्चन, गुरु और मांगलिक द्रव्योंका अवलोकन, ये सब कार्य दिनके प्रथम भागमें करना उचित है। द्वितीय भागमें करने योग्य कार्य ये हैं—वेदाभ्यास, जप, दान और अध्यापना।

तृतीय भागमें करने लायक काम ये हैं,—परिवारवर्गके प्रतिपालन करनेके लिए अर्थोपार्जन और अन्नदान। चतुर्थ भागमें स्नान और मृत्तिका आहरण, पञ्चम भागमें पितृलोक और देवलोक आदिकी पूजा, तथा यथानियम से पोष्यवर्गको बाँट कर स्वयं बचे हुए भोजनको खाना चाहिये। भोजन करके जब तक न वह परिपाक हो, तब तक सुस्थचित्तसे अवस्थान करना चाहिये। इसके बाद इतिहास और पुराण आदिके प्रसङ्गमें छठा और सातवाँ भाग बिताना उचित है। अष्टमभागमें प्रयोजनीय लौकिक व्यवहारका अनुष्ठान, सन्ध्या, उपासना, होम, भोजन और सांसारिक कार्य यथाक्रमसे करना और फिर वेदका अध्ययन करना उचित है। फिर समय पर सो जाना चाहिये तथा एक प्रहर रात्रि रहते हुए उठना चाहिये। (दक्षस्मृति)

जैनमतानुसार—धर्म दो प्रकारका है, एक सागार या गृहस्थधर्म और दूसरा अनागार या मुनिधर्म। मुनिधर्मका वर्णन मुनिधर्ममें किया जायगा, यहां गृहस्थधर्म वर्णन किया जाता है। गृहस्थ वह कहलाता है जो विवाह करके घरहीमें रह कर अणुव्रत पालता हुआ मुनिधर्मकी अभिलाषा रखता हो और धर्म अर्थ काम इन तीनों पुरुषार्थोंको समान भावसे पालता हो। ऐसे मनुष्य जिस धर्मका सेवन करते हैं, उस धर्मका नाम गृहस्थधर्म है। गृहस्थियोंके बारहव्रत होते हैं—पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत। अहिंसा,—किसी जीव या प्राणीको मन वचन कायसे हिंसा न करना, सत्य दूसरेके लिए लाभदायक मिष्ट वचन बोलना, अस्तेय,—बिना दी हुई वस्तुको ग्रहण न करना, ब्रह्मचर्य—अपनी विवाहिता स्त्रीके सिवाय दूसरी स्त्रीकी मन वचन कायसे इच्छा न करना, परिग्रह परिमाण—जरूरतसे ज्यादा वस्तुओंका संग्रह न करना, तथा आत्मासे भिन्न पर द्रव्योंसे ममत्व भाव न रखना,—ये पाँच अणुव्रत हैं। तीन गुणव्रत ये हैं, दिग्व्रत, देशव्रत, और अनर्थदण्डव्रत। दिशाओंका प्रमाण करना अर्थात् मैं अमुक दिशामें इतनी दूर तक जाऊंगा-ऐसे प्रमाण करना, सो दिग्व्रत है। अमुक देश तक जाऊंगा ऐसे नियम या यम करनेको देशव्रत कहते हैं। पापको बढ़ानेवाले पाँच प्रकारके अनर्थ दण्डके आचरण करनेका त्याग करना है वह अनर्थदण्ड त्याग व्रत नामक तीसरा गुणव्रत है। सामयिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग परिमाण और वैयावृत्य—ये चार शिक्षाव्रत हैं। व्रतोंकी वृद्धिके लिए प्रातः, मध्याह्न और सायङ्काल इन तीनों सन्ध्याओंमें एकाग्रचित्त हो कर उत्तम, मङ्गलस्वरूप, शरण देनेमें अद्वितीय श्रीअर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु (१) इन पञ्चपरमेष्ठियोंकी नुति, स्तुति एवं प्रतिक्रमण आदि आवश्यकोंको करना और द्रव्य क्षेत्र काल भावकी शुद्धि देख कर समस्त आरम्भोंकी निवृत्तिपूर्वक दो आसन (पद्मासन या खड्गासन), बारह आवर्त्त, चार नतिका मन वचन कायसे आचरण करना सामयिक शिक्षाव्रत है। प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशीको उपवास (सप्तमीके दिनमें बारह बजे खा कर नवमीके दिनके बारहबजे खाना बीचमें कुछ न खाना, सो उपवास है) करनेको प्रोषधोपवासव्रत कहते हैं। उपवास कालमें निरन्तर शास्त्र स्वाध्याय करते रहना चाहिए और किसी प्रकारकी मनमें कलुषता न लानी चाहिये। अपनी आत्माके कल्याणके लिए भोग और उपभोगकी सामग्रियोंका जो प्रमाण करना है, वह भोगोपभोग परिमाणव्रत है। संयमी शुद्ध पवित्रात्मा (जो सर्व परिग्रहके त्यागी हों, तथा रागद्वेषसे रहित हों ऐसे दिगम्बर मुनि) अतिथि पुरुषोंके लिए जो श्रेष्ठ प्रासुक चार प्रकारके आहारोंका दान देना है, वह वैयावृत्य नामक गृहस्थोंका उपासनीय चौथा शिक्षाव्रत है। इन बारह व्रतोंको शक्तिके अनुसार गृहस्थोंको अवश्य पालन करना चाहिये। इन बारह व्रतोंमें प्रत्येक व्रतके पांच पांच अतीचार होते हैं। अतीचाररहित जो व्रत पाले जाते हैं, वे निर्दोष हैं और जिन व्रतोंके पालन करनेमें अतीचार लग जाते हैं, वे सदोष हैं।

'यो व्रतानि चरेत् पूतं निरतिचारमन्वितः ।
सर्वान्विहाय स याति शाश्वतं मोक्षमव्ययम् ॥'

(सुभाषितरत्नसन्दोह पृ॰ सं॰ ८६४)

अर्थात् जो पुरुष इन पवित्र व्रतोंको निर्दोष रीतिसे

(१) इसका मन्त्र इस प्रकार है—णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं अथवा 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः' आदि।

पालता है, वह अवश्य ही मनुष्य और देवोंके सुखोंको भोग कर मोक्षसुख प्राप्त करता है। इसलिए व्रतोंका निर्दोष पालना ही सर्वथा उचित है।

गृहस्थोंको चाहिये कि, वे अपने मनमें सर्वदा यही भावना रखें कि, मैं समस्त प्राणियोंसे मैत्री भाव रक्खूं, पूज्य निष्पक्ष विद्वानोंमें प्रमोद रखूं, समस्त प्राणियों पर दया भाव रखूं और शत्रुओंके साथ भी मध्यस्थ भाव रखूं (१)। इससे आत्मामें सदा शान्तिभाव रहता है।

यदि गृहस्थ इतने व्रतोंको पालन न कर सके तो कमसे कम उसे पांच अणुव्रत तो अवश्य ही पालना चाहिये तथा नित्य सुबह उठ कर शौचस्नानादिके बाद जिनमन्दिरमें जा कर सच्चे देव, शास्त्र, गुरुकी पूजा करनी चाहिये। सच्चे देव वह हैं जिनमें रागद्वेष नहीं (वीतरागी) है, सर्वज्ञ हैं और हितोपदेशी है। इन्हींसे कहे हुए जो शास्त्र हैं, वे सच्चे शास्त्र है, और बाह्य आभ्यन्तर परिग्रहसे रहित दिगंबर मुनि सच्चे गुरु हैं। इनकी उपासना करनी चाहिये। इसके बाद शास्त्रोंका स्वाध्याय करना चाहिये। फिर सामयिक करनी चाहिये। गृहस्थ धर्मका विस्तृत वर्णन जानना हो तो "रत्नकरण्डश्रावकाचार" "गृहस्थधर्म" "अमितगति श्रावकाचार" आदि ग्रंथ देखने चाहिये। यहां संक्षेपसे वर्णन किया गया है। गृहस्थ धर्मका और विवरण जानना हो तो उन शब्दोंका तथा श्रावक शब्दको देखो।

गृहस्थान (सं० क्लो०) गृहस्य स्थानं, ६ तत्। वास करने योग्य स्थान, ऐसा स्थान जहां घर निर्माण किया जा सकता है। गृह देखो।

गृहस्थाश्रम (सं० पु० क्लो०) गृहस्थरूपमाश्रमं। गृहस्थके कर्तव्यधर्म चार आश्रमोंमेंसे दूसरा आश्रम।

गृहस्थधर्म देखो।

गृहस्थी (हिं० स्त्री०) १ गृहस्थाश्रम, गृहस्थका कर्तव्य। २ घरबार, गृहव्यवस्था। ३ कुटुम्ब, लड़केवाले, परिवार। ४ घरका सामान, माल असबाब।

गृहस्थूल (सं० क्लो०) गृहस्य स्थूलं, ६ तत्, समासे क्लीवत्वं। गृहस्तम्भ, घरकी खूंटी या खम्भा।

गृहस्वामिन् (सं० त्रि०) गृहस्य स्वामी अधिपतिः, ६-तत्। गृहपति, घरका मालिक।

गृहहन् (सं० त्रि०) गृहं हन्ति हन् क्विप्। गृहनाशक, घरको नष्ट करनेवाला।

गृहाक्ष (सं० पु०) गृहस्याक्षीव समासे टच्। गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की।

गृहागत (सं० पु०) गृहमागतः, २-तत्। १ आगन्तुक, अतिथि। २ जो मनुष्य किसी दूसरेके घरमें आया हो।

गृहाधिप (सं० पु०) गृहस्य अधिपः, ६-तत्। १ गृहस्थ। (त्रि०) २ गृहस्वामी, घरका रक्षक।

गृहापिका (सं० स्त्री०) ज्येष्ठी, छिपकली।

गृहाम्ल (सं० क्लो०) गृहस्थितामम्लं। काञ्जिक, कांजी।

गृहाम्बु (सं० क्लो०) गृहे पर्युषितं अम्बु। कांजिक, कांजी।

गृहायनिक (सं० पु०) गृहरूपमयनं विद्यतेऽस्य गृहायन-ठन्। गृहस्थ।

गृहाराम (सं० पु०) गृहस्य आरामः, ६-तत्। गृहके निकटवर्ती उपवन, घरके नजदीकाकी फुलवाड़ी।

गृहार्थ (सं० पु०) गृहे निष्पाद्योऽर्थः, मध्यपदलो०। गृहकर्म, घरका कामकाज।

गृहालिका (सं० स्त्री०) गृहे आलिरिव कायति कै-क। गृहगोधिका, घराल छिपकली।

गृहावग्रहणी (सं० स्त्री०) गृहं अवगृह्यते अनया अवग्रह करणे ल्युट्-ङीप्। देहरी, दीवार।

गृहावस्थित (सं० त्रि०) गृहे अवस्थितः। गृहस्थित, जो घरमें स्थित है।

गृहाशया (सं० स्त्री०) गृहे इव च्छायायुक्तस्थाने आशेते आ-शी-अच्-टाप्। १ ताम्बूली, पानकी लता। २ पूगीवृक्ष।

गृहाश्मन् (सं० पु०) गृहे स्थतोऽश्मा। पेषणी, मसालादि पीसनेकी शिला।

गृहाश्रम (सं० पु० क्लो०) गृहमेव आश्रमं। १ गृहरूपआश्रम, घरके सदृश रहनेकास्थान। २ गृहस्थके अनुष्ठेय धर्म, गार्हस्थ।

---

(१) "सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव॥"
(अमितगतिआचार्य)

गृहाश्रमिन् (सं० पु०) गृहाश्रमस्यास्ति गृहाश्रम इनि। गृहस्थ।

गृहासक्त (सं० त्रि०) गृहे भार्य्यायां आसक्तः। १ भार्य्यासक्त, घरकेसांसारिक कर्म में लवलीन। २ विषय वासनामें लगा हुआ। ३ गृहस्थित पक्षी, घरान चिड़िया।

गृहिन् (सं० पु०) गृह भार्य्या अस्त्यस्य गृह इनि। गृहाश्रमी, गृहस्थ।

गृहिणी (सं० स्त्री०) गृह गृहकर्तृत्व गृहकृत्य वा अस्त्यस्य गृह इनि ङीप्। १ भार्य्या, पत्नी, जिस स्त्रीके ऊपर घरका समस्त कार्य्यभार अर्पित हो। प्राचीन समयमें आर्य्यगण जिन नियमोंसे गृहिणी द्वारा गृहकार्य सम्पादन करते थे इतिहास और प्राचीन नीतिशास्त्रमें वे सब नियम लिपिबद्ध हैं। शुक्रनीतिके अनुसार आर्य्य गृहिणीका कर्त्तव्य स्वामिसेवा है। इसके अतिरिक्त स्त्रियोंको और कोई दूसरा धर्मानुष्ठान करना निषिद्ध है, किन्तु पति यदि कोई याग यज्ञका अनुष्ठान करे तो उस समय स्त्रीको सहायता देना उचित है। इसके अन्यथा स्वतन्त्र रूपसे दूसरा धर्मानुष्ठान उनके लिये नहीं है। गृहिणीको उचित है कि स्वामीके शय्या परित्यागके पहले उठ जावें। तत्पश्चात् शरीरको शुद्ध कर बिछावन उठा रखना तथा भाड़ूसे घर भली भांति परिष्कार कर लीप देना चाहिये। इसके बाद यज्ञकाष्ठ और जलपात्र नियमपूर्वक शोधन कर उपयुक्त स्थान पर रख दें। इस तरह याज्ञिक कार्यके समाप्त होने पर पाककार्यमें नियुक्त हो जाय। इस कार्यमें सबसे पहले पाकगृहके बरतनोंको बाहर कर घरको लीपना और तब उन्हें मार्जन करना चाहिये। इसके बाद स्नान कर रसोईका समस्त आयोजन करें। ये समस्त गृहिणीके पूर्वाह्न कार्य हैं। श्वशुर तथा श्वश्रूको सेवा करना गृहिणीका मुख्य कर्त्तव्य है सर्वदा स्वामीकी आज्ञानुवर्तिनी हो छायाकी नाईं उनका अनुगमन और दासीकी नाईं उनका आदेश प्रतिपालन करना चाहिये इसके अनन्तर उपयुक्त समयमें पाक कर सबसे पहले गुरुजनोंको और तब घरके दूसरे २ मनुष्योंको भोजन करावें। पश्चात् स्वामीके अनुमतिक्रमसे आप भोजन करें। भोजनके बाद सायंकाल पर्यन्त गृहके आय व्यय और कर्त्तव्याकर्त्तव्य पर ध्यान दें। सन्ध्या उपस्थित होने पर पूर्वाह्नके जैसे समस्त गृहकार्य अनुष्ठान कर पाकमें लग जाय। पूर्ववत् घरके सभीको खिलाकर अन्तको आप भोजन करें, और इसके बाद शय्या प्रस्तुत करें। पतिके शयन करने पर उनकी चरणसेवामें नियुक्त हो जावें। पतिके सो जानेके बाद आप सोवें, एवं रात्रिके शेषको पति उठनेके पहले ही स्वयं शय्योत्थान करें। अनवधानता, मत्तता, रोष, ईर्षा वचन, परकी निन्दा, पिशुनता हिंसा, विद्वेष, मोह, अहङ्कार, धूर्तता, नास्तिकता, साहस और दम्भ इन सबका परित्याग करना साध्वीगृहिणीका एकान्त कर्तव्य है। (शुक्रनीति ४ अ)

एक समय कृष्णपत्नी सत्यभामा स्त्रीधर्म जाननेके हेतु द्रौपदीके निकट गई थीं। द्रौपदीने उन्हें भली भांति गृहिणीका कर्तव्याकर्तव्यका उपदेश दिया, जिसका विवरण महाभारतमें विस्तृतरूपसे वर्णित है। उपरोक्त नियमानुसार चलने पर स्त्रियां आनन्दपूर्वक समय व्यतीत कर सकती और अन्तको मोक्ष पाती हैं। (भा व० प०)। २ कान्त्रिक, कांजी। ३ घरको मालिकिन।

गृहीत (सं० त्रि०) ग्रह कर्मणि क्त। १ स्वीकृत, मंजूर किया हुआ। २ अवगत ज्ञात मालूम। ३ प्राप्त, हासिल किया गया ४ धृत पकड़ा गया। (क्ली०) ग्रह भावे क्त। ५ स्वीकार, मंजूर। ६ ज्ञान, बोध, समझ। ७ प्राप्ति, हासिल, धारण, पकड़।

गृहीतगर्भा (सं० स्त्री०) गृहीतो गर्भो यया, बहुव्री०। गर्भवती, गर्भिणी। (शब्दरत्ना०)

गृहीतदिश् (सं० त्रि०) गृहीता दिक् येन, बहुव्री०। १ पलायित, भगा हुआ। २ पहरा, गायब।

गृहीतनामन् (सं० त्रि०) गृहीत प्रशस्त पुण्यजनक नाम यस्य, बहुव्री०। जिसका नाम प्रशस्त है, मनोहर, प्रशंसनीय।

गृहीतविद्य (सं० त्रि०) गृहीता अधीता विद्या येन बहुव्री०। जिसने विद्या ग्रहण किया हो, शिक्षित, पण्डित, अक्लमन्द।

गृहीतव्य (सं० त्रि०) ग्रह कर्मणि तव्य। १ ग्रहणयोग्य, जो ग्राह्य करनेके लायक है। (क्ली०) ग्रह भावे तव्य। २ ग्रहण, प्राप्त, हासिल।

गृहीतास्त्र (सं० त्रि०) गृहीतमस्त्रं येन, बहुव्री०। अस्त्र-धारी, जिसने हथियार धारण किया हो।

गृहीतिन् (सं० त्रि०) गृहीतं ग्रहणं अस्त्यस्य गृहीत-इनि। कृतग्रहण, जिसने ग्रहण किया है।

गृहु (सं० त्रि०) ग्रह-कु। ग्रहण करनेवाला, ग्रहीता।

गृहेज्ञानिन् (सं० त्रि०) १ अवकुदर्शी, अज्ञान, जिसको समझ नहीं है। २ नितान्त निर्बोध, जिसको बोध नहीं है।

गृहेरुह (सं० पु०) गृहे रोहति रुह-क, अलुकसु०। गृहजात वृक्ष, घरमें जन्मा हुआ गाछ।

गृहेनर्दिन् (सं० पु०) गृहे एव नर्दति नर्द णिनि अलुक्स०। कापुरुष, कायर मनुष्य, डरपोक आदमी, वह मनुष्य जो लड़ाईमें भीरुता दिखलाता और घरमें बैठ कर लम्बी चौड़ी बात बोला करता है।

गृहेश (सं० पु०) गृहस्य ईशः, ६-तत्। १ घरके स्वामी, घरका मालिक। २ राशीश्वर।

गृहेश्वर (सं० पु०) गृहस्य ईश्वरः, ६-तत्। गृहके अधिपति, घरका मालिक।

गृहोत्पात (सं० पु०) गृहस्य उत्पातः, ६-तत्। घरका विघ्न, घरका उपद्रव।

गृहोपकरण (सं० क्ली०) गृहस्य उपकरणं, ६-तत्। गृह-सामग्री, घरको तैयार करनेमें जिन जिन चीजोंका प्रयोजन पड़ता है।

गृहोलिका (सं० स्त्री०) गृहे वलते ग्रह-वल क्वुन् बाहुल-कात् संप्रसारण टाप् अत इत्वञ्च। ज्येष्ठी, छिपकली।

गृह्य (सं० पु०) गृह्यते मानवादिभिः ग्रह-क्यप्। १ गृहा-सक्त पक्षी, घरमें रखनेका पक्षी। २ गृहासक्त मृग। (क्ली०) गृह्यते आक्रम्यते रोगेण ग्रह-क्यप्। ३ गुदा, मलद्वार। (त्रि०) ४ अस्वतन्त्र, पराधीन। ५ आयत्त, वश्य, विनीत, शासनीय। ६ पक्ष्य, पक्षपाती। गृहे भवः गृह-यत्। ७ गृहोत्पन्न, जो घरमें पैदा हो। (पु०) ८ गृह निमित्तक अग्नि। (क्ली०) ९ उस अग्नि सम्बन्धीय काम। (पु०) गृह्यन्ते संगृह्यन्ते वेदविहितानि कर्मकाण्डानात्र ग्रह-क्यप्। १० वैदिक सूत्रविशेष। इसमें गृहस्थके जन्मसे मृत्यु पर्यन्त कार्यकलापकी अनुष्ठान-प्रणाली और कर्त्तव्याकर्त्तव्य भलीभांति वर्णित हैं। हिन्दु गण बहुत दिनोंसे इस ग्रन्थके मतानुसार वैदिककार्यका अनुष्ठान करते आ रहे हैं। वर्तमान समयमें भी इसका मत आदरणीय है। सचराचर व्यवहार-में यह गृह्यसूत्र नामसे उल्लेख किया गया है। वेद एवं शाखाभेदमें बहुतसे गृह्यसूत्र हैं। इनकी भाषा प्राय: वैदिक भाषाकी नाईं है। (सूत्र देखो)।

गृह्यक (सं० त्रि०) गृह्य स्वार्थे कन्। गृहासक्त पक्षी, घरमें रखनेकी चिड़िया। २ घराल मृग। ३ पराधीन।

गृह्यगुरु (सं० पु०) शिव, महादेव।

गृह्यग्रन्थ (सं० पु०) गृह्यसूत्र।

गृह्या (सं० स्त्री०) गृह्य-टाप्। बड़े ग्रामके नजदीक छोटा ग्राम।

गॄ (सं० क्रि०) १ शब्द करना, पुकारना, आह्वान करना, प्रशंसा करना, प्रकाश करना। २ खाना, निगलना, मुखसे गिरा देना। ३ जानना निशान करना, प्रकाश करना, सिखाना।

गेञ्टा (हिं० पु०) कर्कट, केकड़ा।

गेण्ठी (हिं० स्त्री०) गृष्टि, वाराहीकन्द।

गेण्ड (हिं० पु०) १ काण्ड, ऊखके ऊपरका पत्ता, अगौरा। २ गोष्ठ, घेरा जो ऊखके पत्ते, सरसोंकी डण्ठी तथा अरहरके शुष्क काण्डसे बनाया जाता है, इसमें गृहस्थ भूसा देकर अन्न रखते हैं, ठेक।

गेण्डना (हिं० क्रि०) १ पतली छोटी दिवारसे खेत घेरना। २ अनाज रखनेके लिये ठेक बनाना। ३ घेरना। ४ कुल्हाड़ीसे काटना।

गेण्डली (हिं० स्त्री०) कुण्डली, कुण्डल, फेंटा।

गेंडहिया (देश०) नानाप्रकारके रङ्गके रोएं या ऊन।

गेंड़ा (हिं० पु०) १ काण्ड, ईखके शीर्षभागकी पत्तियां। २ ईख, गन्ना, ऊख, केतारी। ३ खेतमें बोनेको ईखके छोटे टुकड़े। ४ पीतल और तांबेको लाल कर पीटने-की पत्थरकी निहाई।

गेंडुआ (हिं० पु०) १ तकिया, बालिश, सिरहना। २ वृहत् कन्दुक, बड़ा गेंद।

गेंडुरी (हिं० स्त्री०) १ कुण्डली, घड़ा रखनेका रस्सीका बना हुआ मेंडरा, बिड़वा। २ फटा। ३ सांपोंका वर्त्तु-लाकार होकर बैठना।

गेंडुली (हि० स्त्री०) गेंडुरी देखो।

गेंती (हि० स्त्री०) अवधमें छोटी २ नदियोंके किनारे और नैपालकी तराईमें होनेवाला एक तरहका पेड़। इसके पत्ते चार पांच अंगुलके चौड़े और लम्बे होते हैं। ग्रीष्म कालमें पीले रङ्गके फूलके गुच्छे भी इसमें निकलते हैं।

गेंट (हि० पु०) गेंडा देखो।

गेंदई (हि० वि०) पीत रङ्गका गेन्दा पुष्पके रङ्गका। (पु०) गेन्दा पुष्प जैसा पीत रंग।

गेंदघर (हि० पु०) १ गेंद, क्रिकेट, टेनिस खेल खेलनेका स्थान, क्लब घर। २ अङ्गरेजके विलियर्ड नामक खेल खेलनेका मकान, बिलियर्ड रूम।

गेंदतड़ी (हि० स्त्री०) एक दूसरेको गेंदसे मारनेका एक प्रकारका खेल। इस खेलमें लड़के आपसमें उसीको चोर बनाते हैं जिसको गेंद लगता है।

गेंदबल्ला (हि० पु०) लकड़ीकी एक पटरीसे गेंद मारनेका एक तरहका खेल।

गेंदवा (हि० पु०) गेण्डुक, तकिया, बालिश, सिरहाना।

गेंदा (हि० पु०) एक तरहका पौधा जो दो ढाई हाथ ऊंचा रहता है और जिसमें पीले रङ्गके पुष्प लगते हैं। गेंदा फूल दो तरहके होते हैं, एक 'जङ्गली' जिसमें सिर्फ चार पांच दल होते हैं, दूसरा 'हजारा' जिसमें बहुत दल रहते हैं। फूलके रंग भी कई तरहके होते हैं, कोई हल्के पीत रंगके, कोई नारंगी रंगके और कोई लाल रंगके होते हैं। गेंदेके पत्तोंको शुष्क कर यदि फिटकिरीके साथ पानीमें उबाला जाय तो गंधकी रंग प्रस्तुत हो जाता है। २ एक प्रकारकी आतिशबाजी (Fire works) जिसके गुल गेंदेके फूलसे निकलते हैं। ३ सुवर्ण या रौप्यका बना एक गोल घुंघुरूदार आभूषण, जो जोशन या बाजूमें घड़ीकी जगह पर रहता और नीचेकी ओर लटकता है।

गेंदुवा (हि० पु०) गेंदवा देखो।

गेंदौड़िया (हि० स्त्री०) वैश्योंकी एक जाति।

गेंदौरा (हि० पु०) एक तरहकी मिठाई, चीनीकी रोटी।

गेगम (देश०) एक धारीदार वस्त्र।

गेगला (देश०) १ एक तरहका पौधा जो मसूरकी जातिका होता और प्रायः ६००० फीटकी ऊंचाई पर उत्पन्न होता है। यह विना बोये उपजता है, किन्तु कभी कभी पशुके चारेके लिये बोया भी जाता हैं। इसमें काले रङ्गके दाने भी निकलते जो देखनेमें गेहूं के सदृश होते हैं।

(वि०) २ मूर्ख, जड़, बेवकूफ।

गेगलापन (हि० पु०) मूर्खता, जड़ता, भोंदूपन।

गेजुनिया (देश०) गुल दुपहरिया।

गेटिस (अनु० पु०) घटनेसे लेकर एड़ी तक पैर ढाकनेका एक आवरण जो कपड़े या चमड़ेका बना रहता है, मोजा। २ मोजा आदि बांधनेका रबर, कपड़े या चमड़ेका फीता।

गेड़ना (हि० क्रिया०) १ लकीरसे घेरना। २ परिक्रमा करना चारों ओर घूमना।

गेड़ी (हि० स्त्री०) १ लड़कोंका एक खेल। २ इस खेलमें रखनेकी लकड़ी।

गेडो—बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ एजेन्सीका क्षुद्र राज्य। राजा झाला राजपूतवंशीय हैं। लोकसंख्या ५७४ और आय ४५००) रु० है। १३३८) रु० वार्षिक कर ब्रटिश गवर्नमेण्ट और जूनागढ़के नवाबको दिया जाता है।

गेण्डु (सं० पु०) गच्छति गम ड, गो गन्ता इन्दुरिव पृषोदरादित्वात् इकारस्य तत्वं साधु। गेण्डुक, गेंद।

गेण्डुक (सं० पु०) गेण्डु स्वार्थे कन्। कन्दुक, कपड़ेका बना हुआ गोलाकार खेलनेका पदार्थ, गेंद।

गेदा (हि० पु०) चिड़ियका छोटा बच्चा जिसे पर न निकले हों।

गेदुर (देश०) पशुओंके चारेके काममें आनेवाली एक तरहकी बारामासी घास।

गेप (सं० क्रि०) कांपना, थरथराना।

गेबा (देश०) तानेकी कंघीकी सीलिया जो लकड़ीकी चिरी हुई पतली फांदियोंकी होती हैं। यह तानेके सूतको एक दूसरेमें मिलजाने या उलझनेसे बचाती है।

गेय (सं० स्त्री०) गा यत्। (पाणिनि ३।१।९७) १ गीत, गान। (वि०) २ गायक, गानेके योग्य, गानेके लायक।

गेयप्रिय (सं० पु०) सुदरपुष्पवृन्त, गन्धराजका पेड़।

गेर (फा० पु०) ग्रन्थि, गांठ, गिरह।

गेरना (फा० क्रि०) १ गिराना। २ डालना। ३ डालना, आरोप करना।

गेरवां (फा० पु०) गेरांव, पशुके गलेमें लपेटनेका बंधन, गरदनी।

गेरसप्पा—बम्बई प्रान्तके उत्तर कनाड़ा जिलेमें होनावाड़ तालुकका एक गांव। यह अक्षा० १४° १४´ उ० और देशा० ७४० ३८ पू०में शरावती नदी पर पड़ता है। इस नामका झरना कोई १८ मील दूर है। नारियलके पेड़ बहुत है। यहांसे कोई १॥ मील पूर्व नगरवस्तिकर नामक गेरसप्पा जैनोंकी राजधानीका ध्वंसावशेष है। कहते है, किसी समय वहां १००००० घर और ८४ मंदिर थे। एक जैनमन्दिरमे आज भी ४ द्वार लगे और ४ मूर्तिया रखी हैं। दूसरे पाच टूटे फूटे मन्दिरोंमें भी कुछ मूर्तियां और शिलालिपियां है। वर्द्धमानके मन्दिरमें २४वें जैनतीर्थङ्कर महावीरस्वामीकी एक काले रङ्गकी मूर्ति है।

कहते है, विजयनगरके राजाओंने (१३३६-१५६५ ई०) गेरसप्पाके किसी जैन वंशको कनाड़ामें शक्तिशाली बनवाया था। १४०८ ई०की मल्लीके पास बुचाननमें गुणवन्ती मन्दिरके लिये गेरसप्पा अधिपति इतचव्वा वोडियारू प्रितानीके भूमिको उत्सर्ग किया। कहा जाता है वहां बहुत दिनों तक स्त्रियोंका राज्य रहा। ई० १७वीं शताब्दीमें बदनूरके वेङ्कटप्पा नायकने भैर देवीको हराया था। इटलीके परिव्राजक डेलावालेने लिखा है कि १६२३ ई०को गेरसप्पा एक प्रसिद्ध राजधानी था, यह देश मिर्चके लिये मशहूर है।

गेरसप्पा—बम्बई महिसुर सीमाका एक जलप्रपात। यह अक्षा० १४° १४´ उ० और देशा० ७४° ४८´ पू०में अवस्थित है। जो गांव पास रहनेसे उसको जोग झरना लोग कहते हैं। यह शरावती नदी पर गिरता है। दिसम्बर महीने झरना देखनेकी बहार है। १० मील ऊंची सड़क जङ्गलके बीच गेरसप्पा गांवसे आवशारको गयी है। भारतमें ऐसा कोई भी दूसरा झरना नहीं और ऊंचाई, लम्बाई चौड़ाई तथा सुघराईमे दुनियामें दूसरी जगह भी इसकी मिसाल कम मिलती है। सन्ध्याको सूर्यास्त समय झरनेमें एक सुन्दर इन्द्रधनुः बनता और रातको चन्द्रमा भी उसकी शोभा बढ़ाया करता है। महिसुर तटसे देखनेमें वह बहुत अच्छा लगता है। नदीके दक्षिण किनारे बांसका एक पुल है।

गेरांई (फा० स्त्री०) गेरांव।

गेरांव (फा० पु०) गेरवां देखो।

गेरुआ (हिं० वि०) १ गेरूके रङ्गका, मटमैलापन लिए लाल रङ्गका। २ गेरूमें रङ्गा हुआ, गैरिक, जोगिया। (पु०) १ गेरूके रङ्गका एक कोट। माघ मासके वर्षाकालमें इस तरहके कोटकी उत्पत्ति होती है। अन्नके खेतोंमें इसके लग जानेसे पेड़ पोले रङ्गके हो जाते हैं। २ गेहूं फसलका एक रोग। इस रोगमें गेहूंके पेड़ कम बढ़ते और क्रमशः कमजोर होते जाते हैं, जिसके कारण अन्न भी पैदा नहीं हो सकता है। इस रोगको गेरुई और कुकुही भी कहते है।

गेरुई (हिं० स्त्री०) गेरुआ देखो।

गेरू (हिं० स्त्री०) गवेरुकखानोंसे निकालनेवाली एक तरहकी लाल कठिन मिट्टी। इसके दो रूप हैं एक जो कड़ी नहीं रहती वरन् भुरभुरी होती है वह कच्ची गेरू कहलाती है दूसरी जो कड़ी होती है पक्की गेरू कहलाती। इस तरहकी मिट्टी बहुतसे काममें लायी जाती है, सोनार सोनेके आभूषणों पर इसके द्वारा रंग देते हैं, रंगरेज भी इसके संयोगसे कई तरहके रंग प्रस्तुत करते हैं। औषधमें भी इसका व्यवहार होता है, इसका पर्याय—लालमिट्टी, गिरमटी, गिरिस्रत, सुरंगधातु, गवेरुक, गैरिक, ताम्रवर्णक और कठिन है।

गेर्द (फा० पु०) घेरा, गिर्द।

गेल (सं० पु०) विशिष्ठ संख्या, खास अङ्क।

गेला (अनु० पु०) छापेखानेमें बड़ी गेली।

गेली (अं० स्त्री०) छापेखानेकी छिछली किश्ती जो धातु या काठकी बनी होती है और जिसपर टाइप रखकर प्रथम बार वह कागज छापा जाता जो पीछे संशोधित किया जाता है।

गेल्हा (देश०) तेलीके तेल रखनेका चमड़ेका कुप्पा।

गेवर (देश०) एक पेड़। गंगवा देखो।

गेवराई—हैदराबाद राज्यके भीड़ जिलेका उत्तर तालुक। इसका क्षेत्रफल ५०६ वर्गमील, लोकसंख्या प्रायः ५८३६१ और मालगुजारी लगभग २ लाख ३० हजार है। उत्तर

को गोदावरी औरङ्गाबाद जिलेसे उसे अलग करती है। १३५ गांव हैं। गेवराई गांवमें कोई ३८६५ आदमी रहते हैं।

गेवोंखाली—बङ्गालके मिदनापुर जिलेमें तमलुक सब डिविजनका एक गांव। यह अक्षा० २२ १० उ० और देशा० ८७ ५७ पू०में हुगली नदीके दक्षिण तटपर पड़ता है। जनसंख्या ५२४ है। यहां व्यापार बहुत होता है। ईष्टर्न बङ्गाल ष्टेट रेलवेके लिए एक जहाज डायमण्ड् हारबर आता जाता है। स्थानीय आलोकगृह को 'कोकोली' कहते हैं।

गेष्ण (सं० पु०) गा इष्ण। १ रङ्गोपजीवी, जो नाचग कर अपनी जीविका निर्वाह करता है, रण्डी, भाँड़। २ सामगानकर्त्ता, सामवेदका गान करनेवाला। ३ पर्व ग्रन्थि अवयवभेद।

गेष्णु (सं० पु०) गा इष्णुच। १ गायग, गानेवाला, गवैया, गायक। २ नट, भाँड़। ३ सामगानकर्त्ता, सामवेद का गायक सामवेदका गान गानेवाला।

गेह (सं० क्ली०) गो गणेशो गन्धर्वा वा ईह ईप्सितो यत्र बहुव्री०। गृह, घर, मकान, निवासस्थान।

गेहदाह (सं० पु०) गेहस्य दाह ६ तत्। गृहदाह घरका जलना। घरमें आग लगना।

गेहधूम (सं० पु०) गृहधूम, झूल।

गेहनी (हि० स्त्री०) घरवाली, गृहिणी, भार्या, पत्नी।

गेहपति (सं० पु०) गेहस्य पति, ६ तत्। गृहपति, घरका मालिक।

गेहभू (सं० स्त्री०) गेहस्य भू, ६ तत्०। गृहस्थान, वह जगह जहां घर निर्माण किया गया हो।

गेहिन (सं० पु०) गेहमस्यास्ति गेह इनि। गृही, घरका मालिक।

गेहिनी (सं० स्त्री०) गेहिन् ङीप्। गृहिणी, घरवाली, भार्या।

गेहेक्ष्वेडिन (सं० त्रि०) गेहे क्ष्वेडते क्ष्वेड इनि पात्रे समितादित्वात् अलुक्समा०। डरपोक, कायर, वह मनुष्य जो लड़ाईमें अक्षम या भीरु रहता किन्तु घरमें बैठ कर अपने पराक्रमकी डींग हांकता है।

गेहेदाहिन् (सं० त्रि०) गेहे दहति दह इनि अलुक्समा०। १ कापुरुष, कायर, डरपोक, भीरु। २ घरमें आगका लग जाना। घरका जलना।

गेहेदृप्त (सं० त्रि०) गेहेदृप्त अलुक्समास०। कापुरुष, कायर, जो सिर्फ घरमें बैठ कर आत्मश्लाघा किया करता है।

गेहेधृष्ट (सं० त्रि०) गेहेधृष्ट अलुक्समा०। जो अपने घरमें धृष्टता प्रकाश करता है, गर्वयुक्त।

गेहेनर्दिन् (सं० त्रि०) गेहे नर्दति गर्जति नर्द णिनि अलुक्समा०। कापुरुष, जो घरमें बैठकर गर्जता है, किन्तु बाहर जानेसे एक बात भी मुखसे नहीं निकलती।

गेहेमेहिन् (सं० त्रि०) गेहे मुह्यति मुह्य णिनि। सुस्त, मट्ठा, आलसी।

गेहेविजितम् (सं० त्रि०) गेहेविजित मस्यास्ति गेहेविजितइनि। कापुरुष। गेहेनर्दिन देखो।

गेहेश्वाड (सं० पु०) दाम्भिक, धूर्त्त, छली, कपटी।

गेहेशूर (सं० पु०) अलुक्समा०। कापुरुष, जो सिर्फ घरहीमें शूरवीर हों। गेहेदृप्त देखो।

गेहोपवन (सं० क्ली०) गेहे समीपवर्त्ती उपवन। गृहके निकटस्थ उद्यान, घरके नजदीकको फुलवाड़ी।

गेह्य (सं० त्रि०) गेहे भव गेहाय हित वा। १ गृहोत्पन्न, जो घरमें उत्पन्न हुआ हो। २ घरके हितकर। (पु०) ३ धन, दौलत, जायदाद।

गेहुअन (हि० पु०) मटमैले रंगका विषधर सर्प।

गेहुआ (हि० वि०) बादामी, गेहुँके रंगका।

गेहुँ (हि० पु०) गेहूँ देखो।

गैंटा (देश०) कुल्हाड़ी।

गैंडा—एक चतुष्पद जन्तु, कोई चौपाया जानवर। यह स्थूलचर्म और विभक्त खुरविशिष्ट पशुओंमें गण्य, अतिशय दृढ़काय और हस्तीकी अपेक्षा भी अधिक बलशाली रहता और भुक्त वस्तुको उद्गीरण करके फिर रोमन्थ नहीं करता। इसकी नासिकाके अग्रभागमें एक या दो शृङ्ग (सींग) निकल आते और चारों पावोंके खुर ३ खण्डोंमें विभक्त हो जाते हैं। यह पालनेसे हिल जाता, परन्तु हठात् किसी कारणसे कुपित होने पर वह सहजमें प्रसन्न नहीं आता। वनमें शावक आदिके साथ विचरण कालको यदि सब आ करके इसको घेर लेता, तो प्राय

भयमें भागनेके वदले अपने उभरे सींगोंसे उसको मारने चल देता है। इसके निम्नलिखित कई एक संस्कृत नाम मिलते हैं—खड्गी, गण्डक, खड्गमृग, क्रोड़ि, भृङ्गमुख, वज्रचर्मा, युग्म, वल्ली, वार्धीनस, स्वनोत्साह, एकचर, गण्डोत्साह और गण्ड। फारसीमें इसको गर्गदन कहते हैं।

भगवान् मनुने इस खड्गधारी जन्तुको पञ्चनखोंमें गिना है। एतद्भिन्न वाईवलके पूर्वभागमें बहुतसे स्थलों पर मिसर राज्यके गैंड़ेका (Rhinoceros unicornis) उल्लेख है। टेसियास (Ctasias) कथित खड्गविशिष्ट वन्य गर्दभका विवरण कुछ कहानी जैसा लगते भी अधिकांश गण्डककी प्रकृतिका परिचायक है। इन्होंने लिखा है कि उसके सींगसे पानपात्र बनते और उनमें पानी पीनेसे वात तथा मृगीरोग छूटते हैं। उसका गुल्फास्थि सुन्दर रूपमें गठित, वृषभका जैसा दृढ़ और खुरविभिन्न होता है। वन्य वा पालित गर्दभ या किसी अपर एक शफ जन्तुको वैसी एड़ी नहीं पायी जाती आरिष्टटल अपने ग्रन्थमें टेसियासके विवरणका प्रतिवाद करके लिखते हैं कि उन्होंने एक खड्ग और एक शफ जीव नहीं देखा और केवलमात्र गुल्फ विशिष्ट एक खड्गी भारतीय गर्दभका उल्लेख किया है।

फिर ई०से १८० वर्ष पहले एगाथारकाइडिसने किसी खड्गी गण्डककर्तृक हस्तीके उदर विदारणकी बात लिखी। उसीसे अंगरेजीमें इसका नाम Rhinoceros पड़ा है। रोमराज्यकी अनेक प्राचीन मुद्राओंमें भी



गैंड़ेकी मूर्ति मिलती है। (Descripve Catalogue of a Cabinate of Roman Imperial large Brass medals) भारतमें एक जातीय गैंड़ा (R. Indicus) है। इसका गात्र ईषत् रक्ताभ पांशुवर्ण, गण्डविशिष्ट तथा लोमविहीन होता है। चर्म अतिशय स्थूल तथा स्वाभाविक रूपमें दृढ़ रहता और स्कन्धोपरि और मामने और पीछेके दोनों पैरोंके ऊपरी भागमें दोपरता पड़ता है। उसीसे इसका शरीर अस्त्र वा गोलीसे अभेद्य है। लांगूलके अग्रभागमें और कानके ऊपर मसृण तथा कठिन लोम निकलता है। नासिका पर एक खड्ग है। मस्तकी करोटीका आकार चूड़ा जैसा लगता है। अपरापर देशीय गण्डक ऐसे नहीं होते। इसके सब मिला कर के २६ दांत होते हैं।

भारतवर्षका गैंड़ा वहिर्भूत देशसमूह—विशेषतः वङ्ग, श्याम और कोचीनके जङ्गल, नदी तीरवर्ती स्थान और अनूप भूमिमें रहता है। यह घास पात और पेड़ोंके डालिया खा करके जीवन धारण करता है।

भारतवर्षमें उसका अपेक्षा और भी एक जातीय छोटा गैंड़ा (R. Sodaicus) देख पड़ता है। सुन्दरवन, मेदिनीपुर, राजमहलके गङ्गानिकटवर्ती पार्वत्य प्रदेश और महानदीके तीरस्थ वन्य भूमिमें इसकी संख्या अधिक है। कोई कोई उसे यवद्वीपवासी गैंड़ेसे उत्पन्न जैसा बतलाता है।

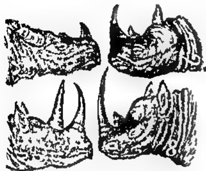
यवद्वीप समूहमें एक प्रकार गैंड़ा R. Javanus) है। इसके गलेकी तह भीतरको छिपी है। नासिका पर एक कचकड़ा निकलता है। यह दलवद्ध हो करके विचरण करता है।

भारतीय गण्डककी तरह इसकी तह नहीं होती, सिर्फ घुटनेके पास परत पड़ता है। सर्वाङ्गमें गोल गोल गण्ड होते हैं। इसका लोम छोटा तथा दृढ़ रहता और कर्णाग्रभाग और पूंछमें निकलता है। युथन नर्म नर्म लगता और बढ़ानेसे बढ़ता है। मस्तक प्रायः त्रिकोणाकृति होता है। पिपरके बाद कचकडे नीचे मुखका आयतन कुछ छोटा और दोनों पार्श्वका मांस गोल जैसा लगता है।

यवद्वीपवासी इस जातीय गण्डकको 'वरक' और मलयवासी 'बड़क' कहते हैं। साधारणतः यह ८ फुट लम्बा और ४ फुट ३ इञ्च ऊंचा होता है।

सुमात्रा द्वीपके गैंड़ाको २ कचकड़े आते और भारतीय तथा यवद्वीप गण्डककी भांति २६ दांत देखे जाते हैं। गात्रचर्म वलियुक्त तथा पिङ्गलवर्ण लोमसे आच्छा-

दित रहता है। स्कन्ध और नितम्ब पर थोड़ा परत देख पड़ता, अपर सकल ही स्थान सरल लगता है। मस्तक



१ सुमात्रा द्वीपके ३ अफ्रीकाके बोरिलो।
२ किटलोया और ४ श्वेत हिरनको रहुन्म।

अपेक्षाकृत लम्बा, चक्षु छोटा तथा धुंधला, ऊपरी होंठ नुकीला और सामनेको लटकता हुआ, कान छोटा, पतला और चारों ओर झालर जैसे काले बालोंसे सजा हुआ सामनेका सींग पीछेका टेढ़ा और दोनों आंखोंके नीचे चूड़ाकृति और एक छोटा खड्ग होता है।

अफ्रीका देशीय गैंडेका (R. Adricanns) वर्ण पीताभ कपिश, मस्तक तथा मुखविवरके पार्श्वमें बैंगन जैसा नीला कोखे लाल, आंखे धुधली और दोनों कक्ष कड़े काले लगते हैं। सामनेका सींग पीछेवालेसे कुछ बड़ा और टेढ़ा पड़ता है। गले और मस्तकके सन्धिस्थल में गोलगोल कटाव रहता और पूंछ तथा कानके अग्र भागमें कृष्णवर्ण लोम निकलता है। अपरापर देशीय गैंडाओंकी तुलनामें यह अलस रहता और अल्पमात्र खाया करता है। इसको केवलमात्र २८ चवर्ण दन्त आते, छेदनदन्त बिलकुल देखे नहीं जाते। यह १० फुट ११ इञ्च लम्बा होता है।

अफ्रीकामें और भी तीन प्रकार गैंडे हैं। इसमें प्रत्येक जातिको ही दो दो खड्ग निकलते हैं। यह कच कड़े भारतवर्षीय गैंडाओंके सींगसे बड़े होते हैं। इन का चमड़ा सीधा रहता और उसमें परत नहीं लगता यह देखनेमें किसी बड़े सूअर जैसे समझ पड़ते हैं।

दक्षिण अफ्रीकाका 'बारिलो गैंडा। (R. Bicornis) खूब काला होता है। यह अति चतुर और दुर्धर्ष है। शिकारी उसको सिंहको अपेक्षा स्वभावतः बलशाली और भयङ्कर जैसा समझते हैं। 'कोटलोया' (R. Keitloa) जातीय गण्डक सर्वापेक्षा भयानक और बलिष्ठ है। इसके दोनों कर्ण बराबर रहते हैं। सम्मुखका पश्चात्को लटकता और पश्चात्का सम्मुखको झुकता है। ऊपरी होंठका अग्रभाग नोकदार और कुछ लटका हुआ होता है। होंठ नुकीला जैसा होनेसे यह छोटी लता, गुल्म और वृक्ष आदिकी ताजी ताजी पत्तियां छांट करके खा सकता है। अन्यान्य गेंडाओंकी अपेक्षा इसकी गुद्दी ज्यादा लम्बी लगती है। जांघमें भीतरीके काले काले धब्बे और नाक पर तथा आंखके चारों पार्श्वों पर छोटे छोटे गड्ढे पड़ जाते हैं। इसका घ्राणेन्द्रिय अतिशय सूक्ष्म है। यह क्रोशाधिक दूरसे भी सूंघ करके शत्रुका आगमन मालूम कर सकता है इसीसे गेंडेके आक्रमण कालको शिकारी वायुगतिको विपरीत दिक्को गमन करने पर बाध्य है। शत्रुको निकटवर्ती देख करके यह पलायन नहीं करता वरन उसको विनाश करके ही शान्त पड़ता है। इसके चक्षु अति क्षुद्र और स्थूलकाय प्रयुक्त है द्रुत गमनकालको यह हठात् पार्श्वमें दृष्टि डाल नहीं सकता। इस गेंडेके द्वारा आक्रान्त होने पर एकाएक किसी ओरको घूम करके ही बच जाना चाहिये। यह ११ फुट आध इञ्च लम्बा और ५ फुट ऊंचा होता है।

श्वेत खड्गी (R. Simus) देखनेमें कुछ कुछ पीत मिश्रित धूसर तथा पिङ्गलवर्ण है। कान और पूंछको जड़में काले काले कड़े बाल होते हैं। मुख कुछ कुछ गोका जैसा लगता है। नाक पर २ खड्ग उठते हैं। अगले भागका कचकड़ा पिछलेको बनिस्बत चौगुना बड़ा होता है। चक्षु पीताभ पिङ्गल लगता है। शरीर १२ फुट १ इञ्च लम्बा और स्कन्ध पर्यन्त ५ फुट ७ इञ्च ऊंचा होता है। अफ्रीकाके गेंडाओंमें यही जाति सर्वापेक्षा वृहत् है। यह अतिशय निरीह और केवलमात्र घास खा कर के जीवन धारण करनेवाला है जहां घास प्रचुर परिमाणमें उपजती इसको रहना अच्छा लगता है। मध्य अफ्रीकाके बेचुयाना लोग इसको मोहुह' कहते हैं। इनमें प्रवाद है कि वही अफ्रीकाका आदि जीव है जो उनको परपुरुषोंके साथ एक ही गुहासे निकला था। सिवा इसके उसकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कोटलोयासे प्रभेद भी देख पड़ता है।

एशियाके द्विखड्गी गैंड़का सींङ्ग सुगमतासे नहीं मिलता। चीनवासी इस सींङ्गको मोल ले करके उससे सुन्दर सुन्दर पानपात्रादि बनाते और उन्हें बिकनेके लिये भारत, श्याम, कोचीनचीन, सुमात्रा आदि निकटवर्ती राज्योंमें पहुंचाते हैं। काले रङ्गके नोकदार सींग विशेष आदरणीय हैं।

चाग्टावाड़ीके वनवासी मनुष्य जिस उपायसे गैंडे का शिकार करते, अति आश्चर्यजनक है। पहले वह किसी ठोंस बाँसका अग्रभाग छील करके पतला बना लेते और उसे आग पर गर्म करके कड़ा कर देते हैं। फिर वनमें प्रवेश करके चीत्कार और करतालि द्वारा गण्डकको ललकारते हैं। यह अपना स्वभावसुलभ मुख फाड़ते फाड़ते उनके प्रति धावित होता है। उस समय शिकारी कौशलक्रमसे वंशफलक इसके मुखविवरमें जोरके साथ घुसेड़ करके चारो ओर भागते हैं। यह यन्त्रणासे अस्थिर हो भूमि पर गिर करके चिल्लाता और प्रचुर रक्तपातके कारण क्रमशः निर्जीव हो जाता है। सिवा इसके वनस्थलसे ग्रामको जानेवाले सभी प्रवेशपथ जालोंसे घेर करके शिकारी जङ्गलमें आग लगा देते और भागनेवाले गैंड़ाओंको गोलीसे मार लेते हैं।

प्राचीन रोम राज्यमें गैंड़की कई बार अनेक अद्भुत क्रीड़ायें देखी गयी हैं। पुस्तकादि पाठसे समझा जाता कि आगष्टस्ने क्लूपेटराको अपनी जयघोषणा करनेको रोम नगरकी क्रीड़ाभूमिमें गण्डक और जलहस्तीकी लड़ाई देखलायी थी। एतद्भिन्न सम्राट् एण्टोनियास हेलोगवेलास और गार्डियानने भी वैसा ही गैंड़का तमाशा दिखलाया।

१५१३ ई०को प्रथम भारतवर्षसे युरोपमें पर्तूगालराज इमानुयेलके निकट एक गैंड़ा भेजा गया। फिर १७७१ ई०को भरसायल नगरमें गैंड़का एक शावक पहुंचा। कुवियार और वोंफों साहब उसका सविशेष विवरण लिख गये हैं। वह जन्तु २६ वत्सर जीता जागता रहा। १७९० ई०को जो गैंड़ा इङ्गलेण्ड ले जाया गया, विङ्गले साहबने लिखा है—'यह जानवर पालू लगता, चालकके मतानुसार चलता, दर्शकोंके देह नोचने पर बिलकुल नहीं बिगड़ता और १० सेर घास १० बिसकूट तथा प्रचुर परिमाणमें ताजो पत्ती उदरस्थ करता है। दिनमें दो या ३ बार इसको ५ घड़ा पानी मिलता, जो एक ही निश्वाससे पेटमें पहुंचता है।'

डाक्टर हर्मफोल्डने १८१६ ई०को यवद्वीपमें रहते समय किसी गैंड़के बारेमें कहा कि वह पृष्ठ पर चढ़नेसे हमें वहन किये रहता और मजेसे गूलरकी डालें और केले खाया करता था।

इसको साधारणतः कीचड़में रहना अच्छा लगता है। स्त्रीसे इसको दूसरे पुरुषोंसे अलग रखते हैं। बहुत दिनों बाद यह एक बच्चा देता है।

वैद्यशास्त्रके मतमें इसका मांस बलकर, बृंहण, गुरु, कफ तथा वायुनाशक, कषाय, पित्तलीक तृप्तिकर, पवित्र, आयुको हितकर, मूत्रवर्द्धकारक और रुच्य है। भगवान् मनुने भी इसका मांस भक्षणयोग्य जैसा लिखा है। (मनु ५। ८) अफ्रीकामें स्थान स्थान पर आज भी यह मांस खाया जाता है।

मुगल सम्राट् बाबर अपने आप पेशावरमें गैंड़का शिकार खेलने निकलते थे। पादरी जर्डनास साहबने भी पञ्जाब और सिन्धुप्रदेशमें जीवित गण्डक होनेका उल्लेख किया है। एतद्व्यतीत भूतत्त्वविद् लोगोंके साहाय्यसे मट्टीके बीच जो समस्त प्रस्तरीभूत गण्डास्थि मिला है, मालुम पड़ता कि परकालकी पृथिवी पर और भी कई प्रकारके गैंड़ोंका अस्तित्व रहा। यथा—(काम्बे उपसागरके मध्यस्थित पेरिम द्वीपमें (१) Acerotherium Perimense, (२) १८७१ ई०को बेलगांव प्रदेशके गोकक तालुकसे ३॥ मील उत्तरपूर्व चिकदोली नालेके पार्श्वस्थानमें एक नाली निकालनेके लिये मट्टी खोदते खोदते ८ फुट नीचे भिन्न जातीय (R. Deccanensis.) गैंड़ाओंका दांत और पञ्जरास्थि. (३) पटवार प्रदेशमें R. Sivalensis (४) हिमालयके निकट शिवालिका गिरिश्रेणीकी उपत्यकामें R. Palaeindicus, R. Platyrhinus तथा R. Planidens. तीन भिन्न जातीय, (५) नर्मदा नदीके उपकूलमें R. Namadicus, (६) ब्रह्मदेशके नाना स्थानों और आवा नगरमे R. Iravadicus, (७) चीन देशमें R. Sinasis, (८) मलक्का द्वीपपुञ्जमें R. Lasiotis और भारतवर्षमे भी किसी स्वतन्त्र गैंड़ा जातिके अस्तित्वका निदर्शन मिलता है।

बयेड डकिनने अपने बनाये प्राणितत्त्वमें कहा है कि टेम्स नदीके ककरोंने उपकूलमें किसी समय तीन भिन्न जातीय गैंडाओंका वास रहा। (Boyd Dawkins' Nat Hist Rev 1860 p 403)

१६६८ ई०को लन्दन नगरकी मुद्रित 'चार्यानन्युज' नामक पत्रिकामें प्रकाशित हुआ कि उस शहरका कोई गिरा हुवा कूवा खोदते समय एक जातीय (R ticho-rinus) गैंडेकी हड्डी निकली थी। प्राणितत्त्वविदूने उक्त जातीय गण्डका अस्थि फ्रान्स, जर्मनी और इटलीमें जगह जगह देखा है।

१७७१ ई० दिसम्बर मासको उत्तर साइबेरियाकी जिमीवे दि-वोलोइसको नदीके वालुकामय उपकूलमें अर्ध प्रोथित किसी गण्डका देह मिला था। बहुत दिनों तक उसका गात्रचर्म नहीं गला। श्रोपेन साहबने उसी जातीय (tichorine) गैंडेका मस्तक और पदको इरकुटस्क नगरमें देखा था और भी मालूम हुआ है कि उस जातिके गैंडे शीतप्रधान लीन नदी किनारे तक पहुंचते हैं। (इसका विस्तृत विवरण Memoirs of the Academy of St Petersburg नामक ग्रन्थमें द्रष्टव्य है।) इसीका प्रदेशके श्रोयाल्टन नगर और नारफोकके क्रोमार बन्दरमें भी किसी स्वतन्त्र जातीय गण्डकका अस्थि मिला। एक समय इङ्गलैण्ड और तन्निकटवर्ती द्वीप समूहमें उसी जातिके बहुतसे हिंस्रको गैंडे रहते थे।

गैंती (देश०) जमीन खोदनेका एक हथियार, कुदाल।

गैं (स० क्रि०) गीतगाना, गानमें प्रशंसा करना।

गैंतो (देश०) हिमालयके किनारे पर होनेवाला एक पेड इसकी लकडी बहुत कठिन और अदरसे सुर्ख होती है। इससे नानाप्रकारके सामान बनते हैं।

गैन (हिं० पु०) १ गैल, मार्ग रास्ता।

गैना (हिं० पु०) छोटा वृषभ, नाटा बैल।

गैफल (फा० पु०) जहाजका एक छोटा पाल।

गैफज कश्ना (फा० पु०) पालकी नीचे और ऊपर करने की रस्सी।

गैब (अ० पु०) परोक्ष, वह जो सामने न हो।

गैबदां (अ० वि०) परोक्षका जाननेवाला, सर्व देश और सर्वकालज्ञ, वह जो समस्त देश और कालका हाल जानता हो।

गैबर (देश०) एक तरहका पक्षी जिसके डैने, छाती और पीठ उजले, दुम काली और चोंच तथा पैर लाल होते हैं।

गैबी (अ० वि०) १ गुप्त, छिपा हुआ। २ अज्ञात, अबोध गम्य, अजनबी।

गैयर (अ० पु०) गजवर, हाथी।

गैया (हि स्त्री०) गो, गाय, गऊ।

गैर (अ० वि०) १ अन्य, दूसरा। २ अपने कुटम्ब या समाजसे बाहरका मनुष्य।

गैर (अ० स्त्री०) अत्याचार, अनुचित कर्म, अंधेर।

गैर (स० त्रि०) गिरौ भव गिरि अण्। १ पर्वतोत्पन्न, जो पर्वतसे उत्पन्न हो। २ एक वृक्षका नाम लाड्डूनीका पेड।

गैरकाबूल (स० क्ली०) नीलकण्ठताजकोक्त वर्ष और लग्न कालिक ग्रह योग विशेष, नवम ग्रह योग।

गैरखी (हिं० स्त्री०) गलेमें पहननेका एक तरह आभूषण, हसुली।

गैरत (अ० स्त्री०) लज्जा, शर्म, ग्लानि।

गैरमनकूला (अ० वि०) स्थिर, अचल, वह पदार्थ जो एक स्थानसे दूसरे स्थान तक उठाकर न ले जा सके। यह शब्द सिर्फ 'जायदाद' शब्दमें व्यवहृत किया जाता है।

गैरमामूली (अ० वि०) १ असाधारण। २ नित्य नियमके विरुद्ध।

गैरमुनासिब (अ० वि०) अनुचित, अयोग्य।

गैरमुमकिन (अ० वि०) असम्भव, न होने योग्य।

गैरवमली (अ० स्त्री०) घरकी छत बनानेकी क्रिया जिसमें बांसकी पतली कमाचियोंको मजबूतीसे केवल बुन देते हैं।

गैर वाजिब (अ० वि०) अयोग्य, अनुचित, बेजा।

गैर हाजिर (अ० वि०) अनुपस्थित, जो मौजूद न हो।

गैरहाजिरी (अ० स्त्री०) अनुपस्थिती, नामौजूदगी।

गैरायण (स० पु० स्त्री०) गिरेर्गोत्रापत्य गिरि फञ्। गिरिका गोत्रापत्य, गिरिगोत्रको सन्तान।

गैरिक (स० क्ली०) गिरौ भव गिरि घञ्। १ उपधातु-विशेष, गेरूमिट्टी। इसका पर्याय—रक्तधातु, गिरिधातु, गवेधुक, धातु सुरङ्गधातु, गिरिसिन्दूर, वनालक, गवेरुक

प्रत्यश्या, गिरिस्थित, लोहित-मृत्तिका, तथा गिरिज है। पीतवर्ण गैरिकका पर्याय—सुवर्णगैरिक, सुवर्ण, स्वर्णगैरिक, स्वर्णधातु, वभ्रुधातु और शिलाधातु है। इन दोप्रकारोंके गैरिकका गुण—मधुर,शीत, कषाय, विस्फोट, अर्श तथा अग्निदाह नाशक, निर्म्मल और स्निग्ध है। २ सुवर्ण, सोना। ३ एक तरहका वृक्ष।

गैरिकंवू (सं० क्ली०) गैरवंवून देखो।

गैरिकाक्ष (सं० पु०) गैरिकमिवाक्षि पुष्पमस्य, वहुव्री० समासान्त टच्। जलमधुक वृक्ष, जल महुआ।

गैरिकाञ्जन (सं० क्ली०) गैरिक निर्मित अञ्जन, गेरू मिट्टीका वनाहुआ अञ्जन।

गैरिक्षित (सं० पु०) गिरिक्षितस्य गोत्रापत्यं गिरिक्षित-अण्। गिरिक्षित वंशोत्पन्न एक अति प्राचीन राजर्षि। इनका दूसरा नाम त्रसदस्यु रहा। ऋग्वेदमें इनका उल्लेख है। (ऋक् ५।३३।८)

गैरी (देश०) १ खरही, खेतसे कटे हुए डंठलोंका ढेर। (सं० स्त्री०) २ लाङ्गली वृक्ष, विषलांगला। (हिं० स्त्री०) ३ गर्त्त, गड्डा, कूड़ा, करकट, गोवर आदि फेंकनेका गर्त्त।

गैरेय (सं० क्ली०) गिरौ भवं-ठक्। शिलाजतु, शिलाजीत।

गैल (हिं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, गली कूचा।

गैलड़ (हिं० पु०) किसी स्त्रीके प्रथम स्वामीका पुत्र जिसे लेकर वह द्वितीय स्वामीके यहाँ जाय।

गैलन (अं० स्त्री०) एक तरहका अङ्गरेजी माप जो तीन सेरके बरावर होता है। इससे जल, दूध प्रभृति द्रव्य या पदार्थ मापे जाते हैं।

गैलरी (अं० स्त्री०) १ नीचे ऊपर बैठनेका सीढ़ीके जैसा स्थान। इस तरहका स्थान थियटरों और व्याख्यानालयों आदिमें वनाया जाता है। २ सौदागरोंका सीढ़ीनुमा स्थान

गैला (हिं० पु०) १ गाड़ीके पहियेकी लीक, पहियेकी लकीर। २ गाड़ीका मार्ग, गाड़ी जानेका चौड़ा रास्ता।

गैलीलिओ—इटालीवासी प्रसिद्ध विज्ञानविद् पण्डित और क्रियासिद्ध विज्ञानके उद्भावक। इन्होंने १५६४ ई०में फरीवरीकी १५ तारीखमें पाईसा नगरमें फ्लोरेण्टाइन् परिवारमें जन्म ग्रहण किया था। पिताके धनाढ्य न होनेमें उन्हें चिकित्साशास्त्र और आरिष्टटल-प्रवर्तित दर्शनशास्त्रका अभ्यास करनेका आदेश मिला। परन्तु थोड़े दिन पढ़नेके वाद दार्शनिक मतोंमें उनका विश्वास हटने लगा।

जव उनकी उमर १८ वर्षकी हुई, तव उन्होंने आविष्कार करना प्रारम्भ किया। एक दिन गैलीलिओने पाईसाके धर्ममन्दिरमें एक जलती हुई वत्ती देखी जिसकी शिखा काँप रही थी। उन्होंने देखा कि नाड़ीकी चालके समयसे शिखाके काँपनेका समय एकसा मिलता है, वस इसीसे उन्होंने समय निरूपणकी एक अपूर्व युक्ति निकाल ली; वादमें ज्योतिर्विद्याके प्रचारके लिए एक वड़ा वनाई और उसमें अपना आनुमानिक "लटकन" (Pendulum) वनाया।

यन्त्र वनानेमें और परोक्षालब्ध विज्ञानशास्त्रमें उनकी नितान्त इच्छा रहने पर भी, एक दिन उनने पितृवन्धु अष्टलिओ रिक्सिओंके साथ वार्त्तालाप करते करते अङ्कविद्या सीखनेके लिए अनुरोध किया। इस पर अष्टलिओने उन्हें अङ्कशास्त्रमें प्रवेश करनेका सरल उपाय वता दिया, पुत्रके इस अनुरागको देखकर पिता वहुत खुश हुए उन्होंने उत्साह दिया। ज्यामितितत्त्वकी उन्होंने विशेष खोज की और कुछ ही दिनोंमें पानीमें किस चीजका आपेक्षिक वजन ज्यादा है, इस वातका निर्णय करनेवाले यन्त्र (Hydrostatic balance) का आविष्कार किया। इस यन्त्रसे भारी चीजका आपेक्षिक गुरुत्व (Specific gravity) सहजहीमें अच्छी तरह मालूम हो जाता है।

१५८९ ई०में इनकी अङ्कशास्त्रमें पारदर्शिताकी वात टास्कानिके ग्रेण्ड डियुकके कानमें पड़ी। उन्होंने उनको पाईसाके विश्वविद्यालयमें अध्यापक नियुक्त किया। इस अवस्थामें भी उन्होंने वहुतसे वैज्ञानिक आविष्कार निकाल कर अपनी ज्ञान-ज्योतिका विकाश किया था। इसी समयमें वे गतिके नियमके (Laws of Motion) अनुधावनमें नियुक्त हुए थे। उन्होंने इस वातका निश्चय कर दिया कि, आकाशसे गिरे हुए छोटे और वड़े पदार्थ दोनों समानतासे नीचे गिरते हैं। इसमेंसे उन्होंने तीन प्रकारके गति नियम' (Three laws of Motion) और

पतित पदार्थ की आकर्षण शक्तिका इसी नियमसे (क ३ फिट २) आविष्कार किया था। इस गति नियमको लेकर ऐरिष्टटल् मतावलम्बियोंसे बहुतसा झगड़ा हुआ, इसलिए उन्हें पाईसाको परित्याग कर पादुआ नामके नगरमें चला आना पड़ा था। यहाँ वे भिनिसियान् विश्वविद्यालयमें अठारह वर्षके लिए गणितशास्त्रकी वक्तृता देनेके लिए नियुक्त किये गये। कुछ दिन बाद उनकी इच्छा हुई कि, जन्मभूमिमें ही रहें। उन्होंने पाईसामें पहिलेके कामके लिए पुन प्रार्थना पत्र भेजा। उनकी इच्छा पूर्ण हो गई; पर शर्त इतनी रही कि, जब तक वे अध्यापकका कार्य करेंगे तब तक अपना निज अभिमत जनतामें न फैला सकेंगे। वे पाईसा पहुंच गये। पादुआमें वे जब तक रहे थे, तब तक उनकी वक्तृता सुननेके लिए युरोपके नाना स्थानोंसे बहुतसी छात्रमण्डली आया करती थीं। उन्होंने पहिले पहिल दर्शनशास्त्रके उपदेशोंको सरल दृष्टान्तोंकी छन्दमें अनुवाद किया था। उनके आविष्कारोंमें एक प्रकारका तापयन्त्र, दिग्दर्शनयन्त्र और सर्व ज्योतिर्विद्याओंका आदरणीय दूरवीक्षणयन्त्र (Refracting telescope) ये तीन ही प्रधान हैं। १६०८ ई०में उन्होंने अपना आविष्कृत प्रथम दूरवीक्षण भिनिसके प्रधान विचारपतिको भेटमें दिया था। इसी सालमें उन्होंने दूसरा एक अणुवीक्षणयन्त्र बनाया था।

इन दिनों वे अपने दूरवीक्षणोंसे ज्योतिष्कमण्डली का परिदर्शन किया करते थे। १६१० ई०में ७ जनवरीकी रातको उन्होंने बृहस्पतिग्रहके ४ पारिपार्श्विक उपग्रह देखे थे। १६११ ई०में वे रोम नगरीमें गये थे। वहां पर उन्होंने खूब सम्मान पाया और "लिन्सियाई एकाडेमी" नामके विश्वविद्यालयके सभासद बनाये गये। इसके कुछ ही दिनों बाद वे कोपर्णिकसके मतके समर्थक बन गये। इससे जनताने उन्हें नास्तिक मतका प्रचारक समझ कर निरादर किया था। उन्होंने किसीकी बात पर ध्यान न देकर 'सूर्यमें कलङ्क' नामक एक पुस्तक लिखी, उसमें उक्त मतका खूब ही समर्थन किया गया था। अपने मतके प्रचारके लिये वे दूसरी बार भी रोममें गये थे। परन्तु वहां पर उनको आसन्न विपद् जान कर धर्म्म टिउकने उन्हें टासकानिमें लौट जानेके लिए—अनुरोध किया था। इसी समय पोपने उन्हें अपना मत छोड़ देनेके लिये आदेश दिया था। इस घटनाके थोड़े दिन पीछे गैलीलिओका एक प्रधान ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, इसमें भी उन्होंने कोपार्णिकस, टलेमि और आरिष्टलके मतका समर्थन किया था। इस पर पोपने ऐसा आदेश दिया कि, जिससे वे फिर कोई भी पुस्तक न प्रकाशित कर सकें। परन्तु गैलीलिओने नाना प्रकारकी कौशलोंसे पोपसे पुन अनुमति ले ली और १६३२ ई०में फ्लोरेन्स नगरमें "Un Dilogo intornoi due massimi Sistemi dal Mondo" नामकी एक पुस्तक प्रकाशित कराई थी। पुस्तकके प्रकाशित होते ही विचारार्थ दण्डनायकोंके हाथमें पड़ी। पोपने पुस्तक पढ़ कर ऐसा समझ लिया कि, 'गैलीलिओने मेरी ही दिल्लगी उड़ानेके लिये यह पुस्तक प्रकाशित की है।"

उस समय गैलीलिओकी उम्र ७० वर्षकी थी। इस बुढ़ापेमें भी उन्हें विचाराधीन होना पड़ा था। उनके ऊपर काफी अत्याचार किया गया, जिससे वे उन्हें तङ्ग हो कर अपना मत परित्याग करना ही पड़ा था। इतने पर भी उन्हें छुटकारा न मिला, जेलकी सजा भुगतनी पड़ी थी। फिर टासकानिके ग्रैण्ड डिउकके बार बार प्रार्थना करने पर पोपने गैलीलिओको मुक्ति प्रदान की थी।

अन्तिम जीवन उन्होंने आर्सेट्री नामक स्थानमें बिताया था। उस समय वे आंखोंसे अच्छा देख न सकते थे। परन्तु तब भी उन्होंने जीवनके आखिरी दिनोंमें वैज्ञानिक चर्चा करते हुए ७८ वर्षकी उम्रमें १६४२ ई०की ८वीं जनवरीमें इह जीवन छोड़ा था। साण्टाक्रूशके मन्दिरमें उनका स्मृतिचिह्न अब भी मौजूद है।

गैस—१ एक प्रकारकी वाष्प विशेष। पहिले रासायनिकोंने दो प्रकारके गैसोंका निश्चय किया था,—एक स्थायी गैस (Permanent Gas) और दूसरी अस्थायी गैस (Nonpermanent Gas)। उनके मतसे, यथेष्ट उत्ताप और दबानेसे जो गैस नष्ट नहीं होती, उसे स्थायी गैस कहते हैं, जैसे अक्सिजन, हाइड्रोजन इत्यादि और जो गैस तरल की जा सके, वह अस्थायी गैस है।

प्रसिद्ध रासायनिक फारैडे साहबसे पहलेसे रासायनिकोंकी ऐसी ही धारणा थी। परन्तु उन्होंने जब स्थायी गैसको भी तरल कर दिखलाया, तब लोगोंकी धारणा पलट गई। उनके बादकी मुख्य मुख्य रासायनिकोंने परीक्षा द्वारा स्थिर किया कि, आक्सिजन, हाइड्रोजन आदि गैस भी यथेष्ट उत्ताप और दाब पड़नेसे तरल और जड़ीभूत हो जाती है।

२ कोयलेसे पैदा हुआ तीव्र गन्धयुक्त आलोकप्रद वाष्पविशेष।

सौ वर्ष पहले कोई भी नहीं जानता था कि, कच्चे कोयलेकी भाफ या गैससे आलोक उत्पन्न होता है। विलियम् मरडक नामके एक अंग्रेज विलायतमें कोयलेकी खानमें काम करते थे, उनने सबसे पहले १७९२ ई०में कोयलेकी खानके कोयलेको लोहेके पात्रमें बन्द करके उत्ताप गैस बनाई थी। इसी समयमें फरासीदेशमें लबेन नामके एक फरासीने ऐसे ही गैस बनाई, और उसके गुण और अवगुणोंका आविष्कार किया था।

परीक्षा करके मरडकने जब देखा कि, उस गैसके आलोकसे घरमें खूब ही उजियाला हुआ, तब उनने अपने इष्ट मित्रोंसे गैसकी उपकारिताकी चर्चा की। पहले तो सबने हंस कर उनकी बातको उड़ा ही दिया। वे निःसहाय दरिद्र थे, इसलिए 'पेटेण्ट' न कर सके। क्रमशः लोगोंको गैसके आलोककी उपकारिता मालूम पड़ने लगी। रासायनिकोंकी सहायतासे विलायतमें गैसका कारखाना खुल गया। परन्तु वह सुचारुरूपसे न चला। तब मरडकके एक शिष्यने उस कारखानेका कम्पनीके साथ योग दिया। फिर गैसके कारखानेमें काफी लाभ होने लगा। इस नफेको देख कर बहुतोंने कोयलेसे और बहुतोंने तिलसे * ही गैस पैदा कर गली गलीमें गैस बत्तियाँ कर दीं। कोई कोई बकसमें भर कर गैसकी आमदनी और रफ्तनी करने लगे। अब विलायतमें प्रत्येक नगर और ग्राममें गैसके कारखाने हो गये हैं।

* तेलसे भी गैस पैदा हो सकती है, परन्तु उसमें खर्च ज्यादा पड़ता है, इसलिए उसमें नफा कम होता है। महाराज रामसिंहने तेलसे गैस बनवा कर जयपुरकी सड़कों पर बत्तियाँ जलवाई थीं।

पत्थरके कोयलेको जलानेसे जो वाफ निकलती है, उसे रोक कर कोयलेकी गैस बनाई जाती है। हाइड्रोजन और अङ्गारके सिवा यह कोई दूसरी चीज नहीं है। सबसे बढ़िया कोयला, जो पत्थरके समान दीखता है और जिसमें अङ्गारका भाग अधिक रहता है, उससे उत्तम गैस बनती है। जिन कोयलोंमें तेलका भाग अधिक हो (Bituminous Coal), उससे ही सबसे अच्छी गैस बनती है। जिन कोयलोंसे गैस बनती है, उनको बाहर न रखना चाहिये। क्योंकि वर्षा होनेसे उनमें पानी लग जायगा, और वह पानी भाफके साथ मिल जायगा। इस पानीको गैससे पुनः निकालना पड़ता है। पत्थरके कोयलेमें आग लगानेसे उसमेंसे जो खूब घना और काला धुआं निकलता है, वही जलानेकी गैस है। परन्तु इसमें बहुतसे कोयलेके सूक्ष्म टुकड़े रहते हैं, और उनसे घरमें कालौंच पड़ती है। कभी कभी तो बत्तीके धुआंके साथ उड़ कर घरसे बाहर जमीन पर भी गिरते हैं। अङ्गरेज लोग जिस मिट्टीके पाइपमें तमाखू पीते हैं, उसमें अगर पत्थरके कोयलेको चूर रख कर ऊपरका भाग मिट्टीसे ढक दिया जाय, और फिर उसको आगमें रक्खा जाय, तो उस पाइपके मुंहसे धुआंसा निकलेगा। यही गैस है। उस धुएंमें आंच लगा देनेसे वह जलने लगेगा। इसी प्रकार बड़े बड़े लोहे या मिट्टीके पात्रोंमें कोयलेकी चूर भर कर नीचे आग जला देनेसे बहुत गैस पैदा होती है, इन पात्रोंको रिटर्ट (Retort) कहते हैं। पहले लोहेके पात्रमें कच्चे कोयले बन्द करके गैस बनाई जाती थी ; अब भी बहुत जगह मिट्टीके पात्र भी काममें आने लगे हैं। क्योंकि, अग्निके उत्तापसे मिट्टीका पात्र जल्दी बिगड़ता नहीं। अब लोग ज्यादा उत्ताप देकर जल्दी जल्दी गैस बना कर बेचते हैं। परन्तु साधारण उत्तापसे जो गैस पैदा होती है, उजियाला उसीका अच्छा होता है।

गैस बनानेके पात्र साधारणतः १०।१२ हात लम्बा होता है। कोई कोई पात्रके ऊपर और नीचे, दोनों तरफ ढकन रखते हैं। कच्चे कोयलोंसे गैस निकल जाने पर वह कोक् कोयला अर्थात् वह रसोई करनेके काममें आता है। दोनों तरफ ढकन रखनेसे कोक्-कोयला

आसानीसे निकल आते हैं, और पात्र साफ करनेमें भी आसानी होती है। इसीलिए दोनों तरफ ढकन बनाये जाते हैं। कोई पात्र बिल्कुल गोल और कोई गोलाई लिए हुए लम्बे होते हैं। गैसके कारखानोंके ये पात्र जमीनसे ऊंचे और सिलसिलेवार लगाये जाते हैं। एक पंक्तिमें बारह पात्र तक लगाये जा सकते हैं। गैस बनाते समय नीचेका ढकन बन्द कर देना पड़ता है, और फिर कोयला भर कर ऊपरका ढकन भी बन्द करना पड़ता है। सिर्फ ऊपरमें दोनों तरफ दो छेद रह जाते हैं। इसमें गैस निकलते रहनेके लिए दो नल लगे रहते हैं। इस प्रकारसे जब पात्र कोयलेसे भर जाते हैं, तब उनके नीचे आग जला दी जाती है। पात्रके पास पास भी आग जलाई जा सकती है। एक पंक्तिके सब पात्रोंमें जिससे समान भावसे आंच लगे, उसका भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। कमती बढ़ती होनेसे किसी पात्रके कोयले तो कच्चे ही रह जाते हैं, और किसीके बिल्कुल जल भी जाते हैं। इसके सिवा और भी बहुतसे दोष उत्पन्न हो जाते हैं। पत्थरके कोयलेमें कुछ गन्धकका भी भाग रहता है। यह गन्धक भाफ रूपमें परिणत हो कर जिस गैसके साथ मिल जाती है, वह गैस बहुत ही अनिष्टजनक होती है।

पात्रोंसे गैस निकालनेके लिए दो नल रहते हैं। गैस बननेके साथ साथ उन नलों द्वारा वह निकलती रहनी चाहिये। देरी होनेसे पात्रके ऊपरसे कणसे झरने लगते हैं, जिससे पात्र शीघ्र ही खराब हो जाता है, और गैसकी आलोकदायिका शक्ति घट जाती है। पात्र या रिटॅर्टके भीतरके कोयले जब पूर्ण पक जाते हैं, तब उन्हें कोक कोयला कहते हैं। कोक कोयलासे वाष्पीय भाग निकल जाता है। इसलिए वह देखनेमें जला हुआसा मालूम पड़ता है। कच्चे कोयलेसे यह हलके होते हैं। इसमें अङ्गारका भाग (Carbon) भी ज्यादा रहता है। जलाते वक्त इनसे धुआं कम निकलता है और दुर्गंध भी कम होती है। इसलिए यह रसोई करनेके काममें लाया जाता है।

समुदय गैसके निकल जाने पर पात्रके दोनों ढकनोंको खोल कर पके हुए कोयले निकाल लेने चाहिये। इस समयमें उन दोनों नलोंके मुंहको बन्द कर देना चाहिये जिससे कि, गैस निकलती है। ऐसा नहीं करनेसे बाहर की हवा उस नलमें घुस जायगी या उसकी गैस बाहर निकल जायगी। बाहरकी हवा नलमें घुस कर गैसमें मिल जानेसे बत्तीका उजाला कम हो जाता है। इसलिए कलकत्तेमें जिस प्रकार इंजन जोड़नेमें S अक्षरके माफिक नलको टेढ़ा कर देते हैं, गैसके नलको भी बहुतसे लोग वैसा ही टेढ़ा कर देते हैं। नलको ऊपरकी ओर चढ़ा कर फिर नीचे झुका देनेसे ऐसा टेढ़ा हो जाता है। इस स्थानका तल भाग नलसे मोटा है इसे एक गड्ढा भी कहा जा सकता है। इसको 'हाइड्रोलिक मेन' (Hydraulic main) कहते हैं। इस गड्ढेके भीतर हमेशा पानी या अलकतरा भरा हुआ रहता है। पात्रसे गैस बन कर पहिले नल द्वारा ऊपर चढ़ती है। फिर वह गैस गड्ढेके पास आजाती है। वहां पर जाकर सामने पानी या अलकतरा देखती है। पात्रमें यदि जल्दी जल्दी गैस न बने और नीचेसे अगर जोरसे धक्का न आवे तो गैस उस अलकतरेको पार कर आगे नहीं बढ़ सकती। परन्तु ऐसा नहीं होता। पात्रमें बराबर कोयले सिकते रहते हैं गैस भी बराबर बनती रहती है और धक्का भी बराबर जारी रहता है। इसलिए पीछेकी गैस आगे गैसको धक्का देती हुई अलकतरेमें प्रवेश करती है। अलकतरासे गैस हलकी होती है। इसलिए अलकतरेमें घुस कर बुदबुदाकारमें ऊपर आजाती है। ऊपरमें आनेसे फिर कोई चिन्ता नहीं। फिर वह नलकी रास्तासे बराबर चली जाती है। कोक कोयला निकालते समय भी वह फिर निकल नहीं सकती क्योंकि, उसके पीछेसे कोई धक्का नहीं लगता। लौटे तो सामने अलकतरा है, उसे पार करनेकी ताकत नहीं, इसलिए पुनः वह लौट जाती है। इसी प्रकार बाहरकी वायु भी अलकतराको पार कर भीतर नहीं जा सकती।

कोयला सिकने पर पहिले पहिले जो गैस निकलती है, वह विशुद्ध नहीं होती। कोयलेमें जो तैलादि पदार्थ रहते हैं, वे ही उत्ताप लगनेसे वाष्पाकार धारण करते हैं और गैसके साथ मिल जाते हैं। इसके बाद ठण्डे होने पर जम जाते हैं। जम कर जो पदार्थ बनता है, उसे अलकतरा कहते हैं। अलकतरा जम कर गैससे अलग

होने पर भी वह गैस विशुद्ध नहीं होती। उस अवस्थामें भी गैसमें अमोनिया, गन्धक, अङ्गाराम्ल (Carbonic acid) आदि पदार्थ वाष्पाकारमें मिश्रित रहते हैं। ये सब कच्चे पत्थरके कोयलेमें भी रहते हैं। कोयला जब उत्तापसे सेके जाते हैं, तब ये वाष्पाकार धारण कर गैस के साथ मिल जाते हैं। गैसके ठण्ढे होने पर अलकतरा-की तरह यह पृथक् नहीं होते। ये वाष्पकी भाँति बराबर गैसके साथ रहते हैं। इसलिए गैससे इनको पृथक् करने-में बड़ी दिक्कत उठानी पड़ती है, और कभी कभी पूर्णतया पृथक् करना असाध्य जान पड़ता है। परन्तु साध्या-नुसार पृथक् करना ही पड़ता है। क्योंकि, वे पदार्थ लोगोंके घरमें जलनेसे नाना तरहके अनिष्ट कर सकते हैं और करते भी हैं। इसलिए गैस नलके भीतर पहुंचने पर जहां तक बने, इसको विशुद्ध करनेका प्रयत्न करना चाहिए। पहिले गैससे अलकतरा निकाल लेनेका प्रयत्न किया जाता है। क्योंकि अलकतरायुक्त गैस ज्यादा दूर तक जानेसे नलमें जम कर नल बंद हो जाते हैं। गैससे अलकतराके पृथक् हो जानेपर अमोनिया, गन्धक आदिको पृथक् करने-का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए गैसको नलोंके और नाना तरहके यन्त्रोंमें घुमाना पड़ता है। जिसप्रकार बांध द्वारा बाढ़ रोकी जाती है, उसी प्रकार ये यन्त्र उस गैसके वेगको रोक देते हैं। जिस प्रकार बाँधके पास बहुतसा पानी इकट्ठा होकर बांधके ऊपरसे पानी निकल जाता है। उसी प्रकार उन यन्त्रोंके पास बहुतसी गैस इकट्ठी होकर फिर आगे बढ़ती है। सामने इस प्रकार विलम्ब होते रहनेसे पीछेकी गैसका वेग क्रमशः घटता जाता है। हाइड्रोलिक मेनके लिए उस अलकतराको पार करना कष्टकर हो जाता है। कोयलाके रिटर्ट पात्रमें भी गैस जम जाती है। ऐसा होनेसे सब तरहसे विपत्तिकी सम्भावना रहती है। इसलिए पीछेसे गैसको जोरसे ढकेलनेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं। साधारणतः बाहरकी वाष्प द्वारा ही यह काम किया जाता है। हाइड्रोलिक मेनके उस अलकतरेके पास गैस पहुंचनेके पहिले वह यन्त्र लगाया जाता है। वाष्पीय बलसे वह यन्त्र गैसको बराबर ठेलता रहता है। इससे वह गैस बड़ी आसानीसे अलकतरेको पार कर जाती है। और सामनेकी अन्यान्य बाधाओंको अतिक्रम करती हुई वेगसे चलती रहती है।

गैस जब नलके द्वारा पहिले पहल ऊपर चढ़ती है, तब उसमें अलकतराका जो अंश रहता है, उसे निकाल कर गैसको साफ करना पड़ता है। गैस जब गरम रहती है, तब उसमें अलकतराके अंश वाष्पा-कारमें मिले रहते हैं, और उसके ठण्ढे होते ही अलक-तरा जम कर पृथक् हो जाता है। नलके भीतर गैसके पहुंचने पर उससे कुछ अलकतरा तो अपने आप ही पृथक् हो जाता है और वह एक होदमें जा करके जमता रहता है। इसके बाद गैस जब ठण्ढी हो जाती है तब उससे अवशिष्ट अलकतरा भी निकल जाता है। उत्तप्त गैसको सहसा शीतल न करना चाहिये। ऐसा करनेसे नलमें नमक सरीखा एक पदार्थ जम कर उसके छिद्रोंको बन्द कर देता है। इस पदार्थका नाम नैफथालिन् (Naphthalin) है। नैफथालिन्का भी मूल्य है। इसे लत्तेमें बांध कर कपड़ोंमें रख देनेसे उनमें कीड़े नहीं लगते। परन्तु गैस बनाते समय नलमें नैफथा-लिन्को जमते देना ठीक नहीं क्योंकि उससे नलके अनिष्ट होनेकी ही सम्भावना रहती है। इसके सिवाय गैसकी कुछ आलोकप्रदायिनी शक्ति जम कर इस नैफ-थालिन्का आलोक सृष्टि होती है। इस लिए जिस गैससे नैफथालिन् निकली हो वह गैस अच्छी नहीं। अतएव उत्तप्त गैसको सहसा ठण्ढी न कर धीरे धीरे शीतल करना योग्य है। कोयलेके रिटर्ट पात्रसे गैस निकलते ही उसे ठण्ढी करना ठीक नहीं बल्कि उसे बहुतसे नलोंमेंसे चलाना ही उचित है। नलोंमेंसे गैस ऊंची नीची होती हुई क्रमशः ठण्ढी होती रहती है। अन्तमें स्निग्ध नल और पात्रोंमें गैसके चलते-फिरते रह-नेसे अलकतरा बिल्कुल पृथक् हो जाता है। बहुतसे खड़े नल जिसमें बाहरकी हवा लग कर भीतरकी गैसको ठण्ढी करती है; उन्हें स्निग्ध नल कहते हैं। किसी किसी कारखानेमें इन नलोंके भीतर कोक-कोयले या ईंटके टुकड़े भी रहते हैं। इनके सहयोगसे गैसका अलक-तरा जल्दी ही पृथक् हो जाता है। और कहीं कहीं ये स्निग्ध नल पानीमें भी बिछा दिये जाते हैं। इससे भी

गैससे अलकतरा जल्दी अलग हो जाता है। इस प्रकार नाना स्थानोंमें अलकतरा जम कर हौदमें इकट्ठा होता है। बादमें फिर वह वहांसे उठाकर बेच दिया जाता है। विलायतमें अलकतरा पहिले बहुत कम कीमतमें बिकता था। अब उससे मंजिष्ठा, नील पीत, लोहित आदि तरह तरहके रंग बनने लगे हैं। इससे इसका मूल्य बढ़ गया है। इसके अलावा इससे सैक्रेरिण नामको एक प्रकारकी चीनी भी बनने लगी है। इससे मीठी दूसरी चीज दुनियामें नहीं है। यह बड़े आश्चर्यकी बात है, इसमें सन्देह नहीं।

अलकतरांके हाथसे बचने पर गैससे आमोनियाको पृथक् करना पड़ता है। गैसके साथ नौसादर नामका पदार्थ वाष्परूपमें मिला हुआ रहता है। घरोंमें अगर गैस और नौसादरवाष्प एक साथ जलें, तो पीतल, कांसे आदिमें दाग पड़ जाते हैं। आमोनिया गैस एक यौगिक पदार्थ है। मूल पदार्थ नहीं। यह एक भाग नाइट्रोजन और तीन भाग अक्सिजनसे बनता है। आमोनिया गैस जिस समय जलती है, अर्थात् जब वह वायुकी अक्सिजनके साथ मिलती है, तब दोनों तरफ नये दो यौगिक पदार्थों की सृष्टि होती रहती है। यवक्षारजन (Nitrogen) के साथ पहिले कुछ अक्सिजेन मिल कर नाइट्रस् एसिड, फिर उसमें और भी अक्सिजेन मिलनेसे नाइट्रिक् एसिड् या सोराका द्रावक बनता है। दूसरी ओर उदजनके साथ अम्लजन मिल कर पानी हो जाता है। पानी हो जाय, तो कुछ हर्ज नहीं पर घरके भीतर नाइट्रिकएसिड उत्पन्न होते रहनेसे विशेष क्षति होती है। घरकी हवा खराब होनेके सिवा पीतल कांसे आदिके बरतन भी बिगड़ जाते हैं। इसलिए आमोनियाका अलग करना बहुत ही जरूरी है।

उक्त आमोनियासे ही नौसादर बनता है। नौसादर कुछ फेंक देनेकी चीज नहीं है, इसकी भी कीमत है। पहिले विलायतमें नौसादरका ज्यादा प्रचार न था। पहिले मिसर देशमें ऊंटकी विष्ठासे नौसादर बनता था। वहीं विलायतमें थोड़ा बहुत पहुंचा करता था। गैस बनाते बनाते विलायतके सुचतुर व्यक्तियोंने देखा कि, गैससे ही बहुत आमोनिया निकलती है। निकालने से ही रुपये आवेंगे। तब उन्होंने उसे पृथक् करनेका प्रयत्न किया। उन्होंने यह भी देखा कि, जलके साथ आमोनियाका खूब ही सद्भाव है। पानी आमोनिया-गैसके साथ इतना मिलता है कि, एक भाग जल ७७० गुणे आमोनियागैसके साथ बिना मिले वह तृप्त नहीं होता।

पहिले पहल लोग बड़े बड़े पानीके हौदोंमें एक तरफ गैस छुवो देते थे, और दूसरी ओर बड़े बड़े बुद बुदोंके साथ गैस तैरने लगती थी। इस प्रकार गैसकी आमोनिया धोई जाती थी, अर्थात् आमोनिया पानीके साथ मिल जाती थी। परन्तु इसमें देर बहुत लगती है। हौदमें जाकर गैसको बहुत देर तक ठहराना पड़ता है। पीछेकी तरफ गैसकी द्रुतगति मन्द हो जाती है। इस प्रकारसे गैसके धोनेमें और भी एक यह दोष है कि, गैसके चारों तरफ पानी नहीं लगने पाता। बड़े बड़े बुदबुदोंके समान जो गैस है, उसमें बाहर तो पानी लग जाता है, पर भीतर नहीं लगने पाता। भीतरमें जो आमोनिया रहती है, वह पानीके साथ नहीं मिलती इसलिए गैसमें आमोनिया रह जाती है।

फिर इसके लिए एक व्यक्तिने कृत्रिम वर्षाकी सृष्टि की। जलकलके द्वारा मूसलधारसे पानी वर्षाया जाता था, और उस वर्षाको भेद कर गैस ऊपर चढ़ती रहती थी। इससे गैस चारों तरफसे धुल जाती था। और आमोनिया गैस भी पानीके साथ मिल जाती थी। इस तरकीबसे कुछ लाभ तो अवश्य हुआ, पर पीछे इसमें भी दोष दीखने लगे। वास्तवमें कोयलेकी गैस एक प्रकारकी हाइड्रोकारबोन है, अर्थात् हाइड्रोजेन और कारबोन (अङ्गार) मिश्रित एक यौगिक पदार्थ है। इस हाइड्रोकारबोनको जलानेसे उत्ताप और प्रकाशकी उत्पत्ति होती है। उस कृत्रिम वर्षासे केवल आमोनिया ही निकल जाती हो ऐसा नहीं, बल्कि उससे हाइड्रोकारबोन भी बहुत नष्ट हो जाया करता था। जिससे गैसकी आलोक और उत्ताप प्रदायिका शक्ति भी घट जाती थी। इसके लिए और एक महाशयने एक नया उपाय निकाला। बहुतसे खड़े किये हुए बड़े बड़े नलों में कोक कोयला रख कर उसमें गैस चला दी। गैसके

चलते समय उन पर थोड़ा थोड़ा पानी छिड़का जाने लगा। उस पानीके साथ सिर्फ आमोनिया तो मिली, पर हाइड्रोकारबॉन नष्ट नहीं हुआ। परन्तु गैससे आमोनिया पृथक् करनेके लिए और एक व्यक्तिने इससे भी बढ़िया युक्ति निकाली। एक नये प्रकारकी कल निकाली गई, जिसके नलोंमें कुछ चक्र लगे हुए हैं। इन चक्रों पर ब्रुस लगे हुए है। चक्र घूमनेके साथ साथ ब्रुस भी पानीमें भीग जाया करते हैं इसके भीतरके गैस जाते समय उसके पानीमें आमोनिया लग जाती है। इसका मूल्य लगभग ४५०००) रुपये हैं। परन्तु मूल्य अधिक होने पर भी इससे लाभ ज्यादा होता है। इससे निकाला हुआ आमोनियाका पानी बाजारोंमें बिकता है। इससे लोग नौसादर बनाते है। जिस कारखानेमें ४५०००) रुपयेकी मशीन काममें लायी जाती है, उस कारखानेमें इतना नौसादर पैदा हो सकता है, जिससे साल भरमें उस मशीनके दाम वसूल हो जाय।

गैससे आमोनियाके पृथक् होने पर इससे फिर गन्धक और कारबोनिक एसिड निकालनी पड़ती है। कारबोनिक एसिड थोड़ी ही रहती है, और वह ज्यादा हानिकर भी नहीं होती। परन्तु गन्धक अत्यन्त अपकारी है। गन्धक होनेसे गैससे बहुत बुरी बदबू निकलती है और उससे घरकी चीजें भी बिगड़ जाती हैं। सर्वथा गन्धक दूर करना तो दुःसाध्य है, परन्तु चूनेके भीतरसे गैस चलाई जाय तो गैसको छोड़ कर, गन्धक चूनेके साथ मिल जाता है, यह निश्चित है। कारबोनिक एसिड भी चूनेके साथ मिल जाती है। इस तरकीबसे भी बहुतसे लोग गैसको साफ किया करते है। लोहेकी चरके भीतरसे गैस पृथक् करनेसे भी गन्धक अलग हो जाता है।

इस प्रकार गैसके साफ होनेके बाद उसे इकट्ठी कर सुरक्षित रखना पड़ता है।

गैस रखनेका पात्र लोहेसे बना हुआ बकस जैसा गोल होता है। इसका नीचेका भाग खुला रहता है। यह पात्र एक जगहसे उठा कर दूसरी जगह भी रखा जा सकता है। इसके तल भागमें एक बड़ा पानीका हौद रहता है। उस हौदके भीतरसे गैसका नल आता है और उसका मुंह पानीसे कुछ ऊंचा रहता है। कारखानोंमें गैस बन कर जब इस नलके मुखसे बाहर निकलती रहती है तब लोहेका पात्र उतार दिया जाता है। इसके चारों किनारे हौदके पानीमें डूब जाते हैं। नलके मुंहसे गैस निकल निकल कर उस पात्रमें भर जाती है। इसके चारो किनारे पानीमें डूबे हुए रहते हैं, इसलिए गैस बाहर नहीं निकलने पाती। यह गैस फिर आवश्यकतानुसार नली द्वारा लोगोंके मकानों और रास्तोंके लिए छोड़ी जाती है।

विलायतमें गैसके लिए प्रतिवर्ष तीस करोड़ मन कोयला खर्च होता है और सिर्फ एक लण्डन शहरमें ही पांच करोड़ रुपयेकी गैस बिकती है। बम्बई और कलकत्ता आदिमें भी गैसका खर्च कुछ कम नहीं है।

गोइंठा (हिं० पु०) गोबरका शुष्क चिप्पड़ जो जलानेके काममें लाया जाता है।

गोइंड़ (हिं० पु०) ग्रामका किनारा, ग्रामकी सीमा, गांवकी आस-पासकी जगह।

गोइंया (हिं० स्त्री०) गोइयां देखो।

गोंई (हिं० स्त्री०) बैलोंकी जोड़ी

गोंगवाल (दे० पु०) वैश्योंकी एक जाति।

गोंच (हिं० पु०) गोचन्दना, जोंक।

गोंछ (हिं० स्त्री०) गलमोछा, गलगोंछा।

गोंटा—उत्तर भारतवर्ष, पेशावर, भूटान, दक्षिणभारत तथा जावामें पाये जानेवाला एक तरहका छोटा पेड़। वर्षा समयमें इस पर छोटे छोटे पुष्प और जाड़ेके समयमें लालवर्णके छोटे मीठे फल लगते है जो खानेमें बहुत मीठे मालूम पड़ते हैं।

गोंठ (हिं० स्त्री०) गोष्ठ, कमर परकी धोतीकी लपेट।

गोंठनी (हिं० स्त्री०) लोहे या पीतलका बना एक हथियार।

गोंड़—मध्यभारतके पहाड़ी देशोंकी बोली। बहुतसे गोंड़ोंने अपनी भाषा छोड़ हिन्दीको अपनाया है। प्रकृत गोंड भाषा द्राविड तथा आन्ध्रकी मध्यस्थानीय है। इसमें कई जबानें है। इसकी लिखा नहीं जाता और न कोई साहित्य ही देखनेमें आता है।

गोंड़—मध्यप्रदेशकी एक असभ्य जाति। वर्त्तमानमें

इनमेंसे बहुतसे मध्यभारतके खानदेशमें और उड़िषाके अधित्यकामें तथा नर्मदा, तापी, वर्दा, वेणगङ्गा आदि नदीप्रवाहित स्थानोंमें तथा वैतूल, छिन्दवाड़ा, सिवनी और मण्डला इत्यादि जिलोंमें भी वास करते हैं।

इस जातिका किसीने गोण्ड और किसी किसीने गण्ड नामसे उल्लेख किया है। हिस्लोप साहबका अनुमान है कि, सम्भवतः तैलगू कोण्ड (पहाड़) शब्दसे मुसलमान ऐतिहासिकोंने "पहाड़ी जाति" ऐसे अर्थके अपभ्रंशमें गोण्ड लिखा है। भूवेत्ता टलेमी भी इन लोगोंको "गोण्डलोइ" (Gondaloi) नामसे उल्लेख कर गये हैं। मुसलमान इतिहासमें इनकी वासभूमि "गोंडवन" लिखी है। गोण्डवन देखो। पहिले उक्त स्थानमें समृद्धिशाली गौड़राज्य था। ७८० ई०से लेकर ८०८ ई० तक राष्ट्रकूटराज गौड़ने मरुदेश पर आक्रमण किया था। मरुदेशाधिपति वत्सराज गौड़राजके धनसे ही धनी थे। ८१२ ई०में लाटेश्वरराज कर्क राष्ट्रकूटने गौड़राजके हाथसे मालवराजको बचाया था। १०४२ ई०में गौड़राज्य चेदिराज कर्णदेवके राज्यमें मिला हुआ था। उक्त प्रमाणोंसे मालूम होता है कि, पहिले एक गौड़देश ही चेदि, मालव, राष्ट्रकूट और बरारराज्य का सीमान्तवर्ती था। सम्भव है कि, वह गौड़देश पञ्च गौड़ोंमेंसे एक हो। गौड़ देखो। गौड़देशवासी होनेके कारण इस जातिका नाम गोंड पड़ा हो,ऐसा भी सम्भव हो सकता है।

गोंड लोगोंमें राजगोंड, रघुवल, दादावे, कतुल्या, पाड़ाल, ढोली, ओझियाल, ठोटियाल, कोलाभूताल, कोकोपाल, कोलाम, मादियाल और नीचपाड़ाल इतनी श्रेणियाँ भी पाई जाती हैं। राजगोंड, रघुवल और दादावे श्रेणीके गोंड खेती करते हैं, इन लोगोंमें रोटीका व्यवहार तो है, पर बेटीका व्यवहार चालू नहीं है। इन लोगोंने हिन्दुओंकी क्रियाओंका बहुतसा अनुकरण किया है और धीरे धीरे हिन्दुओंमें मिलनेका प्रयास भी करते हैं। राजरादाके गोंडराज अपनेको हिन्दू कह कर परिचय देते हैं। ये लोग दरिद्र राजपूत कन्याओंका पाणिग्रहण करते हैं। पाड़ाल श्रेणीके लोग धर्मोपदेशकका काम करते हैं। कहीं कहीं इनको पार्थाडी या राजवहन वा देशाइ भी कहते हैं। ढोली लोग ढोलक बजाते हैं। नागारची या छिरक्या नामसे इनमें एक नीची श्रेणी भी है। इस श्रेणीके मर्द लोग बकरियोंको चराते हैं और इनकी स्त्रियां दाईका काम करती हैं। ओझियाल लोग सजीरा बजाते हुए गाते फिरते हैं। ठोलियाल लोग शीतला देवीके उपासक होते हैं। चेचक फैलनेके समय ये लोग उसको उपशम करनेके लिए घर घर जा कर शीतला देवीके गीत गाया करते हैं। इसीलिए कहीं कहीं इनको मातिपाल, ठाकुर और पेण्डा बढ़िया भी कहते हैं।

कोलाभूताल लोग भी सड़कों पर गाते फिरते हैं। इनकी लड़कियां भी नर्त्तकीका काम करती हैं। कोकोपाल वा गोंडगोपाल लोग ग्वालोंका काम करते हैं। मादियाल गोंड सबसे ज्यादा असभ्य और जङ्गली होते हैं। बैलाडिला पर्वत पर ये लोग कुल्हाड़ी हाथमें लेकर सर्वथा नङ्गे घूमा करते हैं। इनकी स्त्रियां भी कपड़ा पहरना नहीं जानतीं। सिर्फ कुछ पत्तोंको लेकर कमरके आगे पीछे बांध लेती हैं। बस्तारके लोग इनको जोधिया कहते हैं। ये लोग अपरिचित व्यक्तिको देखते ही डरसे भाग जाते हैं। बास्तारके राजाको ये लोग कई तरहसे कर देते हैं। कर बसूल करते समय तहसीलदार गांवके बाहर आकर ढोल बजवा कर कहीं छिप जाता है, पीछे ये लोग उस स्थान पर जाकर अपनी इच्छानुसार कर रख कर भाग जाते हैं। वर्दा नदीके दक्षिणमें पिण्डा पहाड़ पर कोलाम श्रेणीका वास है। ये लोग अपनी जातिके साथ बैठ कर खाते पीते हैं पर ब्याह शादी नहीं करते। ये लोग भीमसेनकी पूजा करते हैं।

इसके अलावा छिन्दवाड़ा और महादेव पर्वतके बीचमें रहनेवाले भादि या गोंड हिन्दुओंकी भाषा और धार्मिक क्रियाकलापोंका बहुतसा अनुकरण करते हैं। बस्तार, भण्डारा, और रायपुर जिलेके इनवा गोंड बस्तार राज मटत्त यज्ञोपवीत धारण कर अपनेको उच्च श्रेणीका मानते हैं। बस्तारके गैति वा कोतोर और माड़िया लोगोंको उपजीविका प्रधानतः खेती पर ही निर्भर है। वेणगङ्गाके किनारेके नैकुड़ोंने हिन्दुओं जैसा अपना वेष बना लिया है। ये लोग शिकार करके अपना

पेट भरते हैं। जङ्गल और घास काटकर भी पड़ोसियोंको बेचा करते हैं। ये गऊका मांस नहीं खाते। समय समय पर चोरी और डकैती करके पड़ोसियोंका धन लूट लेते हैं।

इनकी धार्मिक कार्यप्रणाली शक जातिके समान है। ये लोग जीवित घोड़ेके बदले देवको मिट्टीके घोड़े चढ़ाते हैं। प्रेतलोकके पितृपुरुषोंको तृप्त करनेके लिए मिट्टीका घोड़ा, चावल, उड़द, अण्डा, मुरगा और भेड़ चढ़ाते हैं। भोन्स्ले-राजने इनके प्रचलित गोवधप्रथाको सर्वथा बन्द कर दिया था। लड़के लड़कीयोंके मर जाने पर ये लोग उन्हें जमीनमें गाड़ देते हैं, कहीं कहीं बूढ़ोंको भी गाड़ देते हैं। परन्तु बस्तारको मादिया जाति और हिन्दूधर्मानुसारी गोंड़ लोग मुर्देको दाह क्रिया करते हैं।

ये लोग तीस देव देवियोंकी पूजा करते हैं। इनमें बूढ़ादेव और दुल्लादेवको अधिक सम्मान करते हैं। कभी कभी सृष्टिकर्त्ताको स्तुति द्वारा पूजा करते हैं। और उनके उद्देशसे घी और चीनी द्वारा होम भी किया करते हैं।

ये लोग प्रति वर्ष फसलके समयमें बूढ़ादेव वा बूढ़लपेन (सूर्य)के लिए शूकर उत्सर्ग करते हैं। बूढ़लपेनकी व्याघ्रमूर्त्ति लोहेसे बनी हुई है। मातियाल शीतला देवीको कहते हैं। भण्डारा जिलेके दक्षिणमें परस्पर जुड़ी हुई चौखूंटे काठ पर कुछ मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं, उनका नाम बङ्गरबाई है ऐसी किम्वदन्ती सुननेमें आती है कि बगटराम, चम्पाराम, नैकाराम, पोतलिङ्ग आदि उनके पाँच भाई हैं और दन्तेश्वरी (काली) नामकी एक बहिन है। गोंड़ जातिके लोगोंकी ऐसी धारणा है कि, ये ही देवदेवियां जीवोंकी मृत्युका कारण है। नागपुरके रहनेवाले गोंड़ इन देव-देवियोंकी विशेष भक्ति करते हैं, और बहुत डरते भी हैं।

जगदलपुरसे ६० मील दक्षिण-पश्चिममें शङ्करी और इन्द्रवती नदी है, इन नदियोंकी दक्षिनशाखाके संयोगस्थल पर बस्तारके निकटवर्ती दण्डेवार नामक ग्राममें दन्तेश्वरी (काली) का मन्दिर है। बस्ताररजने किसी कार्यके उपलक्षमें १८३५ ई०में उक्त देवीके सामने २५ आदमियोंकी बलि दी थी। यह सम्वाद धीरे धीरे १८८३ ई०में तक नागपुरके राजाके पास पहुंचा था। बम्बुकदृक्षके नीचे शली, गोङ्गेरा मल, पली, गगड़ावा, खास वा कङ्क, बूढ़लपेन और मानिगाल इन सात देवताओंकी एक साथ "सातदेवल"के नामसे पूजा की जाती है।

इसके सिवा कोटीपेन, मातुआ, फार्सपेन, हर्दल, बङ्गाराम, भीवासु वा भीमसेन, समरकन्द, बाघोब, सुलतान शाकद, शकलदेव वा शकपेन और मान्यालपेन वा सैनल्कादन देवताओंको पूजा भी प्रचलित है।

मण्डलावासी गोंड़ोंमें 'लमूजिना' विवाह प्रचलित है। इस प्रथाके अनुसार वरको विवाहसे पहले कुछ दिनों तक कन्याका आज्ञावाही बनकर रहना पड़ता है। कन्या अपनी इच्छानुसार पुरुषके साथ चली आ सकती है। इनमें जो विवाह जबरदस्ती किया जाता है, उसका नाम है,—'साधवन्धनी'। यदि कन्या वरके घर पर विवाह करने आवे तो उस ब्याहको 'सादिवेयी' कहेंगे। इस जातिकी विधवायें अपने देवरके साथ या और किसी भी पुरुषके साथ अपना ब्याह कर सकती है।

पुरुषके मर जाने पर वह जला दिया जाता है और स्त्रीको गाड़ देते हैं।

बङ्गदेशको गोंड जातिमें राजगोंड, धोकड़ गोंड, दोरोया गोंड वा नायक, भोरा आदि चार थोक है। इनमें राजगोंड ही गण्य-मान्य है। क्योंकि बहुतोंका ऐसा अनुमान है कि, ये असलमें ये ही गोड़राजवंशप्रसूत हैं। धोकड़ लोग रास्तोंपर भीख मांगा करते हैं। सिंहभूममें दोरोया गोंडोंको ज्यादा संख्या है। कर्णल डैल्टन साहबने लिखा है कि, ये दोरोया गोंड ही बामनघाटीके महापात्रको सेनामें भर्त्ती थे। अपने स्वामीके विरुद्ध अस्त्र धारण करनेके अपराधसे ये लोग बामन घाटोसे निकाल कर सिंहभूममें रखे गये थे।

इन लोगोंमें बाल्यविवाह और यौवनमें विवाह अब भी प्रचलित है। हिन्दूधर्मके संसर्गसे ये लोग क्रमशः बाल्यविवाहके पक्षपाती होते जाते हैं। सिन्दूरदान और आम्रवृक्षके साथ विवाह ही इसका प्रधान अङ्ग है। कहीं

कहीं विवाहबन्धनके समय नाई आकर वर और कन्या के ऊपर एक एक गागर पानी ढाल जाता है। विधवाएं अपने देवरसे विवाह कर सकती हैं। परन्तु ऐसे विवाह में कोई क्रिया नहीं होती, और तो क्या ब्राह्मण और नाई तककी भी जरूरत नहीं पड़ती। सिर्फ अपनी जातिके भाइयोंके सामने वर उस विधवाको एक नई साड़ी और चूड़ी देता है, तथा "इस विधवाका भरण-पोषणका भार मेरे ऊपर रहा" ऐसा अङ्गीकार करने पर उपस्थित जातिभाइयोंको अनुमति लेकर विवाह कर दिया जाता है।

विहारके गौड क्रमशः अपनेको कट्टर हिन्दू कह कर अपना परिचय देने लगे हैं। ये लोग हिन्दुओंके बहुत से देव देवियोंको पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त बूढ़ा देव और दुल्हादेवकी भी पूजा किया करते हैं। देव पूजा और विवाह आदिके कार्मोमें निम्न श्रेणीके ब्राह्मण ही पौरोहित्यका काम करते हैं। ये लोग मृतदेहको दाग देते हैं। पातक तीन दिनका मानते हैं। ये लोग दाढ़ी मूछ और सिर मुड़ा कर स्नान करके शुद्ध होते हैं, और मृत आत्माके लिए दूध रोटी चढ़ाते हैं।

पहले लिखा जा चुका है कि, गोण्डवानाके अन्तर्गत भूमि पर प्राचीन गौडराज्य था और उन राजाओंके समय में उक्त प्रदेशमें गढ़ा और मण्डला नामकी दो राजधानियाँ थीं। इन दो स्थानोंके प्राचीन ध्वंसावशेषों और हिन्दूराजाओंके समयके शिलालेखोंसे पहिलेकी समृद्धिकी काफी प्रमाण मिलते हैं। अब वैसी समृद्धि नहीं रही, गढ़ा और मण्डला ये दोनों नगर अपना पूर्व परिचय मात्र दे रहे हैं। पहले जो गौड या गौड़ राजगण गड़मण्डलमें राज्य करते थे, वे अपनेको हिन्दू और क्षत्रिय बताते हैं। गड़मण्डल शब्द देखो।

प्राचीन समयमें मालवके राजपूत राजाओंके साथ इन गौडराजाओंका समय समयपर युद्ध होता था, इस लिए सम्भव है कि, उस समयसे ही दोनों जातियोंमें विवाह सम्बन्ध प्रचलित हुआ हो। उनके वंशके लोग अब भी राजपूत या राजपूतगौंड़के नामसे अपना परिचय देते हैं। गढ़ाके राजा नागदेवके मर जाने पर उनके दामाद यादवराय उस राज्यके उत्तराधिकारी हुए थे और उन्होंने गढ़ानगरको ही अपनी राजधानी बनाया था। ६९८ ई०में यादवरायके वंशधर गोपालशाहोंने मण्डला पर दखल जमाया था। संग्रामशाहोंने जब १४८० ई०में राज्यारोहण किया था, तब वे सिर्फ एक ही जिलेके राजा थे। पीछे उन्होंने ५२ जिलों पर दखल जमा लिया था। १५३० ई०में ये मर गये।

फिरिस्ताके पढ़नेसे मालूम हो सकता है कि, १५६३ ई०में आसफ् खाँने जब गढ़ा पर आक्रमण किया था, तब वहांके राजा वीरनारायण थे। इस युद्धमें इनकी मृत्यु हुई थी। फिर १६१० ई०में हृदयेश्वर वहांके राजा हुए थे। इन्होंने रामनगरमें मोतीमहल नामका एक प्रासाद बनाया था। उस मोतीमहलके १०० फीट दक्षिण पश्चिममें उनकी पत्नी रानीसुन्दरीका बनाया हुआ एक विष्णुमन्दिर है। उस मन्दिरमें विष्णु, शिव, गणेश, दुर्गा और सूर्यदेवकी मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं मन्दिरकी लम्बाई चौड़ाई कुल ५६ फुट है। इसके भीतरमें २८ फीट चतुरस्र एक घर है, उसकी छत पर गुम्बज है। यह मन्दिरकी बनावट मुसलमानोंकी मसजिद जैसी है। बङ्गालके लोग इसे पञ्चरत्न मन्दिर कहते हैं। १७४२ ई०-में शिवराजशाहोंने राज्यभार ग्रहण किया था। महाराष्ट्रीय सर्दार बालाजी बाजीरावके साथ इनका युद्ध हुआ था।

सातपुरा पर्वतके दक्षिणकी तरफ छिन्दवाड़ाके अन्तर्गत देवगढ़में और बैतूलके अन्तर्गत खेरला ग्राममें दूसरे गौड राजा राज्य करते थे। १४३३ ई०में खेरलाके राजा नरसिंहराय मालवराज हुसङ्ग घोरीके युद्धमें पराजित हो कर मारे गये। घोरङ्गजेबके राजत्वकालमें शिवनीगढ़में एक पार्वतीय राजा स्वाधीनभावसे राज्य करता था। महाराष्ट्रोंने ई० स० १७६०में ७५के भीतर भीतर इसकी स्वाधीनता नष्ट कर दी थी। मर्दा नदीके पास चन्दानगर है, इसमें भी गौडवंशके लोग रहते हैं।

गौडकिरी (हि० स्त्री०) एक रागिणी जो गौड रागका एक भेद समझी जाती है।

गौड़रा (हि० पु०) मोटके मुख पर बांधे जानेकी एक गोल लकड़ी या लोहेकी छड़। २ कुण्डलके आकारकी कोई चीज। ३ परिधि, लकीरका गोल घेरा।

गोंडरी (हिं० स्त्री०) कोई गोलाकार पदार्थ ।

गोंडला (हिं० पु०) परिधि लकीरका गोल घेरा ।

गोंड़ा (हिं० पु०) १ बाड़ा, घेरा हुआ स्थान । २ ग्राम, गांव, मोहल्ला, पुरा, बस्ती । ३ खेतोंका उतना घेरा जितना एक किसानका हो और एक ही जगह पर हो । ४ बड़ी चौड़ी सड़क । ५ आंगन, चौक । ६ परकन ।

गोंडा—देहरादून, अवध, गोरखपुर, बुंदेलखंड, बङ्गाल और मध्यभारतके जङ्गलोंमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी लता । थोड़ी ही वर्षामें यह बहुत फैल जाती है । समय समय पर यह काटी नहीं जानेसे जङ्गलोंको बहुत हानि पहुंचाती है । इसके पत्ते बहुत लम्बे चौड़े होते जो चारेके काममें आते हैं । ग्रीष्म कालमें इसकी टहनियोंके शीर्ष पर गुच्छेके पुष्प लगते हैं ।

गोंड़ी—बिहारकी मत्स्य और कृषिजीवी एक जाति । इन्हें गुंड़ी, मल्लाह, मछुआ, आदि भी कहते हैं । गोंडियोंका कहना है कि, "जिन निषादने श्रीरामचन्द्रको नदी पार कराया था, हम लोग उन्हींके वंशके हैं।" निषाद देखो । इनकी आकृति अनार्योंसे कुछ कुछ मिलती है । इनकी उपाधियां ये हैं,—चौधरी, जेथमन, मन्दर, मुखियार, लाखुदा और सहनी । इनमें कुरिन्, खुनौत्, कोल, चाव या चावो, पहाड़ी कुरिन् और बनपर आदि कई एक श्रेणियां हैं । उक्त श्रेणियोंमेंसे कोल और कुरिन् आपसमें रोटी-बेटीका व्यवहार रखते हैं, परन्तु इतर श्रेणियोंके लोग दूसरी श्रेणीके साथ बेटी-व्यवहार नहीं करना चाहते । बालिकाविवाह ही इन लोगोंमें प्रचलित है, परन्तु ऋतुमती होनेके बाद भी लड़कियोंका व्याह होता है, इसे ये लोग निन्दनीय नहीं समझते । पहिली स्त्रीके वन्ध्या या चिररुग्न होने पर ही ये लोग दूसरा विवाह करते हैं, अन्यथा नहीं । इनकी विधवायें अपनी इच्छानुसार दूसरी बार विवाह कर सकती हैं । आपसमें कुछ खट-पट या और कोई कारणसे विद्वेष हो जाय तो ये लोग पञ्चायतकी आज्ञा लेकर विवाह-बन्धनको तोड़ डालते हैं । गोंड़ियोंमें अधिकांश वैष्णव ही मिलेंगे ; और कुछ थोड़ेसे सौर भी देखनेमें आते हैं । निम्न श्रेणीके मैथिल ब्राह्मण लोग इनके पुरोहित हैं । ये लोग पांचपीर, कैलाबाबा, बाराही, जयसिंह, अमरसिंह चन्द्रसिंह, दियालसिंह, केवल, मगह, बन्दी, गोराइया, कमलाजी और हनूमानकी पूजा करते हैं । कैलाबाबाको ये लोग गङ्गाजीका बेलदार बतलाते हैं । बाराहीपूजामें ये लोग ब्राह्मण पुरोहितको बिना बुलाये ही एक शूकरका बच्चा चढ़ा देते हैं । जयसिंह गोंड़ी जातिके थे और वे उज्जयिनीमें रहते थे । किसी समयमें सुन्दरबनके राजाके साथ एक लकड़ीके पीछे इनको झगड़ा चला था, उसमें राजाने सात सौ गोंड़ियोंको कैद किया था । जयसिंहने राजाको मार कर इनका उद्धार किया था । तब हीसे ये लोग जयसिंहकी पूजा करते हैं । ये लोग मुर्देको जलाते हैं । तेरहवें दिन इन लोगोंमें श्राद्ध हुआ करता है ।

मछली मारना और नाव चलाना ही इनकी उपजीविका है । परन्तु अब बहुतोंने यह काम छोड़ दिया है, और वे खेती करने लगे हैं । वे लोग शराब, मछली, चूहे, कछुए और शूकर खाना पसन्द करते हैं । हां, इनमें जो भगत हैं वे मद्य, मांस कुछ भी नहीं खाते । बिहारके उच्चश्रेणीके ब्राह्मण इनके हाथका पानी नहीं पीते । वहां ये कुम्हारोंसे भी नीच समझे जाते हैं । ये लोग केवल, धानुक आदि नीच जातिके हाथका पानी और मिठाई आदि भी खाते हैं । बिहार-बङ्गाल भरमें ६ लाखके करीब गोंड़ी रहते हैं ।

गोंद (हिं० पु०) चिप चिपा या लसादार पसेव जो पेड़ोंके तनेसे निकलता है । यह शुष्क होने पर कठिन और चमकीला हो जाता है ।

गोंदनी (हिं० स्त्री०) गोंदीका पेड़ । गोंदी देखो ।

गोंदपंजरी (हिं० स्त्री०) प्रसूता स्त्रीको खिलानेकी गोंद मिश्रित पंजीरी ।

गोंदपाग (हिं० पु०) गोंद और चीनीके संयोगसे बनी हुई एक तरहकी मिठाई, पपड़ी ।

गोंदमखाना (हिं० पु०) गोंद मिश्रित भूना हुआ मखाना ।

गोंदरा (हिं० पु०) १ मोलायम घास या पोआलका बना हुआ एक प्रकारका बैठनेका आसन । २ गोनरा घास ।

गोंदरी (हिं० स्त्री०) जलमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी घास जो बहुत लम्बी और गर्म होती है । २ इसी दूबकी बनी हुई चटाई । ३ खड़की चटाई ।

गोंदला (हिं० पु०) गुन्द्रा, जलाशयोंके किनारे होनेवाला बड़ा नागरमोथा। इसकी ऊंचाई लगभग एक गजकी होती है।

गोंदा (हिं० पु०) १ भुने चनेका बेसन। यह पानीमें गूंध कर बुलबुलों को खिलाया जाता है। २ गारा मिट्टीका लपसा।

गोंदी (हिं० स्त्री०) एक तरहका पेड़ जो मौलसिरीके सदृश होता है। फागुन चैत मासमें इसमें लाल रंगके छोटे छोटे पुष्प लगते हैं। इसके फल पुष्प छाल आदि औषधके काममें आते हैं। यह जङ्गलों तथा मैदानों में उपजता है।

गोंदीला (हिं० पु०) वह जिसमेंसे गोंद निकलता हो। यथा—बबूल, ढाक प्रभृति।

गो (सं० पु० स्त्री०) गच्छति गम कर्त्तरि डो। यद्वा गच्छत्यनेन वृषस्य यानसाधनत्वात् स्त्रीगवाश्च दानेन स्वर्ग साधनत्वात् तथात्व। गो शब्द योगरूढ़ है। 'रूढ़ा गवाश्च योगा यौगिका वाचकादय।" (वैयाकरण) वाचस्पत्य गोशब्द की व्युत्पत्ति प्रदर्शन स्थल पर आलङ्कारिक प्रधान दर्पण-कार विश्वनाथजी भूल पकड़ कर कहते हैं कि, 'गम धातुके उत्तर करणवाच्यमें डो प्रत्यय होनेसे गोशब्द सिद्ध होता है। उणादि प्रत्यय कर्तृवाच्यमें हो ऐसा कोई नियम नहीं है। किन्तु दर्पणकारका कथन है कि "यदि व्युत्पत्तिलभ्य अर्थको ही केवल मुख्यार्थ कहकर स्वीकार किया जाय तो "गो शेते' इत्यादि स्थलमें भी यह लक्षण हो सकता है। गम धातुके उत्तर डो प्रत्यय होनेसे निष्पन्न गो शब्दके शयनकालमें प्रयोग लक्षण व्यतीत असम्भव है। वाचस्पत्यके मतसे दर्पणकारका ऐसा कहना भूल है, यह अनवधानतासे अथवा बिना समझे बूझे लिखा गया है, क्यों कि करणवाच्यमें डो प्रत्यय होनेसे निष्पन्न गोशब्दका शयनकालमें प्रयोग होनेसे किसी तरहकी बाधा नहीं है। कर्तृवाच्यमें उणादि प्रत्यय हो हो नहीं सकता ऐसा कहीं वचन नहीं है। ताभ्यामन्यत्रोणादयः। पा ३।४।७५। इस सूत्रके अनुसार केवल सम्प्रदान और अपादानवाच्यमें उणादि प्रत्यय नहीं होता, किन्तु इसके अतिरिक्त कर्त्तृकर्म प्रभृति समस्त वाच्यमें उणादि प्रत्यय लगा ही करता है। दर्पणकारने कर्तृवाच्यमें निष्पन्न गोशब्दकी व्युत्पत्ति लभ्यार्थ "गमनकर्त्ता" धर कर ऐसा लिखा है। वाचस्पत्यमें गो शब्द देखो।

१ स्वनामख्यात चतुष्पद पशुविशेष, वृष तथा गो, चौपाया पशु, बैल और गाय, मवेशी। (Bovina) स्त्रीगो-का पर्याय—माहेयी, सौरभेयी, उस्रा, माता, शृङ्गिणी, अर्जुनी, अघ्न्या, रोहिणी, माहेन्द्री, इज्या, धेनु, अघ्ना, दोग्ध्री, भद्रा, भूरिमही, अनडुही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभि मही निलिनाचि, सुरभी, अनड्वाही, इडा, अधमा, बहुला, मही, अदिति, इला, जगती और शर्करी है।

पुं गोका पर्याय अनडुह् शब्दमें देखो। गृहस्थोंके लिए गोके जैसा उपकारी पशु दूसरा कोई नहीं है। वृहत्संहितामें इसका शुभाशुभ लक्षण इस प्रकार लिखा है—जिस गोके दोनों नेत्र रूक्ष और मूषिक सदृश हों तथा उनके कोणोंमें सर्वदा मल देखा जाता हो, तो वह गो अशुभ समझी जाती है। जिन गौओंकी नासिका विस्तृत, शृङ्ग प्रचलनशील वर्ण गधेके सदृश तथा देहकरटा तुल्य हो एवं जिनकी दन्तसंख्या १०, ७ या ४ हो, मुण्ड तथा मुख लम्बमान पृष्ठ विनत, ग्रीवा ह्रस्व और स्थूल रहे, गति मध्यम तथा खुर विदारित हो, वे गो गृहस्थको अमङ्गल उत्पादन करती हैं। जिस गोका जिह्वा कृष्णवर्ण और पीतमिश्र, गुल्फ (एडी) अतिशय सूक्ष्म या स्थूल ककुद (धीला) अपेक्षाकृत वृहत्, देह कृश तथा कोई एक अङ्ग-से हीन हो, तो वह गाय गृहस्थके लिए मङ्गलकर नहीं है। गायके विषयमें जो लक्षण कहे गये हैं, उन लक्षणों के वृष भी अशुभप्रद हैं।

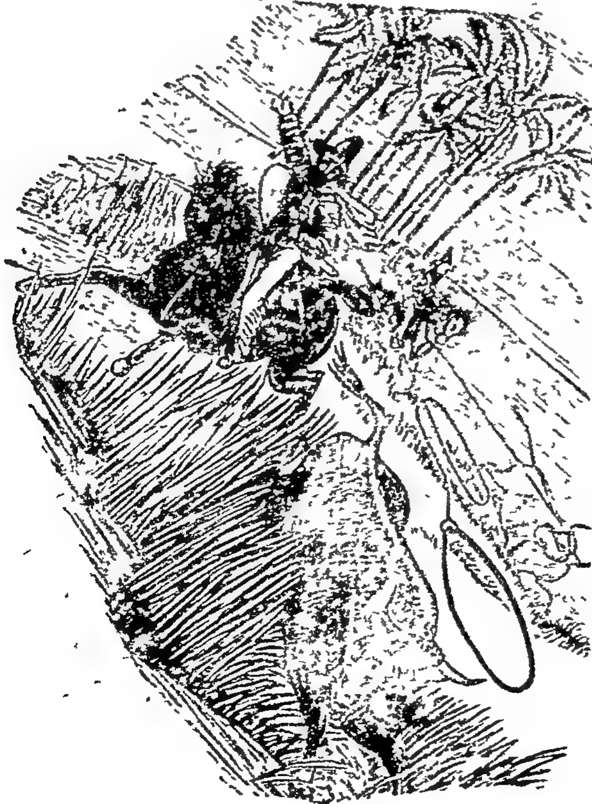
जिस बैलका मुख स्थूल और अतिशय दीर्घ हो, क्रोडदेश शिराजालसे परिव्याप्त हो और गण्डदेशका स्थूल शिरासमूह देखा जाय तथा जो बैल स्थानत्रयमें मूत्रत्याग करता हो, उस बैलको अशुभकर जानना चाहिए। जिसके नेत्र मार्जारके जैसे तथा शरीर कपिल वर्णका हो इसे हो करट कहते हैं। ऐसा बैल अशुभ समझा जाता है। केवल ब्राह्मणोंके लिये उक्त लक्षणका बैल प्रशस्त है। वृषके ओठ, तालु और जिह्वा कृष्ण वर्णके रहें तथा सर्वदा निदारुण श्वास चलता हो तो वह बैल अपने मालिकके सब मवेशियोंकी नाश करता है। जिस बैलका शिश्न, मणि और शृङ्ग स्थूल, उदर श्वेतवर्ण तथा दूसरे अङ्गका वर्ण

कुमारिका अन्तरीपसे हिमालयके प्रान्तदेश पर्यन्त जङ्गलोंमें गो देखे जाते हैं। भारतवर्षके पश्चिम नील-गिरि, वायनाड़, कुर्ग, वावावुदन और महावलेश्वर पर्वतों-में ये झुण्डके झुण्ड रहते हैं। नर्मदा और ताप्ती नदीके मध्यवर्ती वनोंमें पुलने, दुगिड़गल पहाड़, मान्दामङ्गल पर्वत पर तथा वेलुरके निकटवर्ती सर्वरव पर्वत पर गोदावरी और कृष्णा नदीके मध्यवर्ती स्थानमें, कटक, मेदिनीपुर, मध्यभारत, महिसुर, नेलूर, अयोध्या, रोहिल खण्ड, शाहाबाद और मुजफ्फरनगरके निकटवर्ती दोआब-में ये जंगली अवस्थामें देखे जाते हैं।

हिमालय प्रदेशके हिमावृत स्थानोंमें एक तरहका वन्य गो (Poephagus Srunniens) देखा जाता है एवं वहांके रहनेवाले खेतीके काममें लानेके लिए चमरी गो (Yak) पोसते हैं। चमरी गो देखो। ब्रह्मपुत्र नदके पूर्वस्थ पार्वतीय स्थानोंमें, आसाम उपत्यकाके मिश्मि पहाड़ और उसके निकटवर्ती स्थानसे उत्तर और पूर्वमें चीनदेशके प्रान्तसीमा पर्यन्त एक दूसरी तरहका गोजाति देखी जाती है। (Gavocus frontalis) हम लोगोंके देशमें इस तरहके मवेशीको गयाल या मियुन कहते हैं। ये बहुत जल्द हिल जाते हैं। त्रिपुरा, चट्टग्राम प्रभृति स्थानोंमें इनकी संख्या अधिक है। श्रीहट्टमें एक प्रकारका सङ्कर गो (Ros sylhetanus) पाया जाता है। ब्रह्मदेशके 'वेनटेङ्ग' नामक जंगली गाय (Gavacus Sondaicus) उत्तरमें चट्टग्राम तथा दक्षिणमें मलय तक समस्त स्थानोंमें रहती है।

युरोपीय प्राणितत्त्ववेत्ता पालित गोके मध्य जिसे ककुद होता उसे Zabu श्रेणी तथा ककुद्‌विहीन गोलाकार-शृङ्गविशिष्ट गोको Taurees और ककुद हीन चिपटेश्रृङ्ग गोको Gavalus श्रेणीके पशु कहते हैं।

यूरोपके पोलैण्ड, कार्पेथीयपर्वत, लिथुयनीया तथा एशियाके ककेशस् पर्वतके निकटस्थ वनमें एक जातिका गो रहता जिसे वाइसन (Bison) कहते हैं। बहुतों-का अनुमान है कि वर्तमान गृहपालित मवेशी वाइसन-से ही उत्पन्न हुवे हैं। उत्तर अमेरिकामें जो वाइसन देखे जाते उनका शरीर बड़े बड़े महिषोंसे भी वृहत् होता है। इनके मस्तकके लोम विशेषतः गर्दनके जमीन पर लटकते रहते हैं। एक गुच्छा लोम तौलनेमें चार सेर होता है। लोमसे जो सूते प्रस्तुत होते उनसे उत्कृष्ट वस्त्र और दस्ताना बनाये जाते हैं। प्रातः और सन्ध्या समय ये दल बान्ध कर बाहर चरने निकलते। रौद्रमें वृक्षकी छाया में शयन किया करते हैं। मनुष्यका इन्हें बड़ा भय रहता है। आहत होने पर ये क्रोधान्वित हो आक्रमणकारी-



का विनाश करनेके लिए दौड़ते हैं। उक्त देशके असभ्य मनुष्य अग्नि जला कर इन्हें किसी अपरिसर स्थानमें ले जाते और सबके एकत्र होने पर मार डालते हैं।

नियुयेनियाके विस्तृत अरण्यमें इइउरस नामको एक जाति देखी जाती है। ष्यानेम् मैकेञ्जि साहबने लिखा है कि इनका शरीर हाथोके सदृश वृहत् चक्षु उज्ज्वल और रक्तवर्ण ग्रीवा छोटो होती है और सींग मोटे तथा छोटे इनका सम्पूर्ण शरीर कृष्णवर्ण लोमसे ढका रहता और गात्रसे साधारणतः एक तरहका दुर्गन्ध निर्गत होता है।

अमेरिकाके जङ्गलोंमें पहले एक भी मवेशी नहीं था। स्पेनवासी दूसरी जगहसे गो लाकर उसे जङ्गलमें छोड़ दिया करते। आजकल उनसे इतनी वंशवृद्धि हो गई है कि एक पम्पाके वनमें ही लाख लाख गो देखे जाते हैं। शिकारोगण जङ्गल जा इस गोकी शिकार कर घर ले आते हैं।

वैद्यक मतके अनुसार गोमांसका गुण—सुस्निग्ध, पित्त और श्लेष्मवृद्धिकर, वृष्य, बलकर, पीनस और प्रदरनाशक है। (भावप्रकाश) गोदुग्धका गुण—पथ्य, अत्यन्त रुचिकर, स्वादु, स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, पवित्र कान्ति, प्रज्ञा, अङ्गपुष्टि और वीर्यवृद्धिकर है। दधिका गुण—अति पवित्र, शीत, स्निग्ध, दीपन, बलकर, मधुर, अरुचि और वातरोगनाशक एवं ग्राही। नवनीत (मक्खन) का गुण—शीतवर्ण, वर्ण, शुक्र, कफ, रुचि, सुख, कान्ति और पुष्टिकर, अतिमधुर, अग्राही, चक्षुका हितकर, वात, सर्वाङ्गशूल, कास, श्रम और त्रिदोषनाशक है। इसका घृतका गुण—सुखप्रिय, वृद्धि, कान्ति, स्मृति, बल, मेधा, पुष्टि, अग्नि, शुक्र और शरीरको स्थूलता वृद्धिकर, वात, श्लेष्मा, श्रम और पित्तनाशक है। द्रव्यमें गोका घी श्रेष्ठ बहुगुणविशिष्ट है। राजनिघण्टुके मतसे प्रत्यूषकालमें गोदुग्ध गुरु, विष्टम्भी और दुर्जर है। इसी कारण सूर्यास्तके एक प्रहर पीछे दुग्ध ग्रहण करना अच्छा है। यह पथ्य दीपन और लघु है। (इसका विवरण दुग्ध शब्दमें देखो।) सदा शाकके साथ गोदुग्धफेन खानेसे ग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

गोमूत्रका गुण—क्षार कटु, तिक्त और कषायरस, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, लघु, अग्निदीप्तिकारक, मेधाजनक, पित्तवर्द्धक कफ, वायु, शूल, गुल्म उदर, आनाह, कण्डू, नेत्ररोग, किलास रोग, आमवात, वस्ति, वेदना, कुष्ठ, कास, श्वास, शोथ, कामला और पाण्डुरोगनाशक है। सब तरहके मूत्रसे गोमूत्र ही अधिक गुणविशिष्ट है।

(भावप्रकाश पूर्व २ भा०)

गम्यते ज्ञायते अनेन गम करणे डो यद्वा गोश्च गच्छति गम् कर्त्तरि डो। (पु०) २ रश्मि, किरण, प्रकाश। ३ वज्र। ४ हीरक, हीरा। गम्यते बहुदानादिभि गम् कर्मणि डो। ५ स्वर्ग। गम्यते इष्टापूर्त्तादि कर्मणा डो। ६ चन्द्र, चांद। गच्छति प्राप्नोति भुवन स्वतेजसा गम कर्त्तरि डो। ७ सूर्य ८ गोमेधयज्ञ। ९ ऋषभ नामको एक तरहको ओषध। (स्त्री०) गम्यते विषयो यया गम करणे डो। १० चक्षु, आंख। ११ वाण, तीर। गम कर्मणि डो। १२ दिक्, दिशा। १३ वाक्य। गम्यतेऽस्यां गम् अधिकरणे डो १४ पृथिवी जमीन। १५ जल, पानी। १६ पशु, यथा बकरी, भैंस, भेड़ी प्रभृति दुग्ध देनेवाला पशु। १७ माता। १८ पुलस्त्यकी भार्याका नाम। इसका दूसरा नाम गविजाता था। (गविजाता देखो।) १९ नवसंख्या, नौका अङ्क। २० इन्द्रिय। (पु० स्त्री०) गम्यते ज्ञायते स्वर्गसुखमनेन गम करणे डो। २१ लोम, रोम। (पु०) २२ वृषराशि। २३ घोटक घोड़ा। २४ गायक गवैया, गानेवाला। २५ प्रमथगण। २६ आकाश। २७ नदी नामक शिवगण। (स्त्री०) २८ बिजली। ३० सरस्वती। ३१ जिह्वा, जीभ।

गोअग्र (सं० त्रि०) गावो ऽग्रे यस्य, बहुव्री, सन्धिनिषेध। १ जिसके अग्रभागमें गो रहे जिसके आगेमें गाय हो। (पु०) २ गोसमूह, गायका झुण्ड।

गोअजन (सं० त्रि०) अजति चालयति अज ल्यु, गवां अजनः ६ तत्। गोचालक।

गोअर्घ (सं० त्रि०) एक गोका मूल्य, एक गायका दाम।

गोअर्णस् (सं० त्रि०) गावो ऽर्ण उदकमिव प्रवहा यस्मिन् बहुव्री०। जिसमें जलकी नाइं गायकी वृद्धि हो।

गोअश्व (सं० क्ली०) गोश्च अश्वश्च, द्वन्द्व। गो और अश्व, गाय और घोड़ा।

गोअशाय (सं० पु०) सप्तमेद।

गोआ—अनन्तपुर उपकूलमें पोर्तगीज अधिकृत एक भूभाग। यह अक्षा० १४° ५३´ तथा १५° ४८´ उ० और देशा० ७३° ४५´ एवं ७४° ४७´ पू०के मध्य अवस्थित है। उत्तरसीमामें

सैन्य वाध्य हो लौट गये। इस समय पोर्त गीजको एक दूसरा संकट आ पड़ा। पोर्तुगल और स्पेनराज्यमें परस्पर विशेष सम्बन्ध था। यद्यपि ओलन्दाज स्पेनकी अधीनतासे मुक्त हो गये थे तोभी पोर्त गीजों पर उनका अधिक डाह था। ये भारतके उपकूलमें आ पोर्त गीजके ऊपर अनिष्ट करनेकी चेष्टा करने लगे।

ऐसी गड़बड़ी और उत्पातमें भी गोआ श्रीहीन नहीं हुआ। मोगलबादशाहके प्रबल आधिपत्यकालमें दिल्ली और आगराका जैसी श्रीवृद्धि हुई थी और १६वीं शताब्दीमें पोर्तगीजके अधीन गोआ भी वैसी ही समृद्धि और अपूर्व श्री धारण की थी। इनकी समुच्च सौधावली, पृथ्वीके नाना स्थानके वणिकोंका समागम, ईसाई धर्ममन्दिरके नित्य उत्सव और योद्धृगणोंके अस्त्रकी झनझनाहटसे दर्शकोंके लिए यह नगरी सुरपुरी सदृश समझी जाती थी। उस समयके भ्रमणकारियोंने मुक्तकण्ठसे इनके गौरवकी घोषणा की है।

पोर्त गीजोंने जिस तरह अस्त्रबलसे आधिपत्य विस्तार किया था, उसी तरह अपने अस्त्रके जोरसे ही सैकड़ो व्यक्तियोंको इसाई धर्ममें दीक्षित किया था। धर्मप्रचार ही इनके अधःपतनका कारण हुआ। ईसाई देखो।

१६वीं शताब्दीमें जिनके वीरदर्पसे भारतभूमि कंपित हो उठी थी, १७वीं शताब्दीमें वेही वीरतेजा पोर्त गीजगण अत्यन्त विलासी हो गये। विलासिता ही इनके अधःपतनका अन्यतम कारण था। उस समय गोआ नगरमें यद्यपि पान्थनिवास नहीं था तोभी नगरके सर्वत्र जूआ खेलनेके अड्डे और प्रमोदगृह मौजूद थे। जुआ खेलनेका अड्डा आजकलके अच्छे अच्छे बैठकखानोंके सदृश अतिसुन्दर रूपसे सज्जित रहा करता था। पोर्तगीज गवर्मेण्ट उन अड्डाओंसे यथेष्ट कर लिया करती थी। प्रमोदगृहसमूहमें दिन रात गायिका, नर्तकी, नटनटी, बाजीकर और शराब रहा करती थी। सकल श्रेणीके मनुष्य प्रमोदगृहमें आया जाया करते थे।

पोर्त गीजकी स्त्रियां देशीय रमणियोंके जैसे वस्त्र पहन अन्तःपुरमें रहती थीं। पुरुष भी घरमें देशीय वस्त्र पहनते थे, किन्तु बाहरमें ये अपनेको सुसज्जित रखते थे। कोई कोई रास्तेमें घोड़ेकी मणि मुक्ता और स्वर्ण रौप्यके अलङ्कारोंसे सजा कर चलते और भृत्यगण आसा सोटा छत्र चामर और पानका दोना हाथमें ले साथ साथ जाते थे। देखनेसे मालूम पड़ता है कि कोई नवाबपुत्र जा रहे हों। गरीब मनुष्य भी धनी मनुष्यका अनुकरण करते हैं. सुतरां उनका पेट भरे या नहीं, बाहरमें वे सजधज कर रहते थे। थोड़ा अवकाश पानेसे ही अधिकांश मनुष्य जुआके अड्डे या प्रमोदगृहमें जा आमोद करते थे। इधर उनकी स्त्रियां भी विलासितामें डूब कर इतनी मत्त हो जाती थीं कि, उन्हें घरके काम-काजका भी होश न रहता था और कभी कभी वे अच्छी अच्छी पोशाकोंसे अपनेको सजा कर नौजवानोंके साथ सङ्गम करनेकी कोशिश करती थीं।

कोई-कोई अपने पतिको मादक वस्तु पिला अचेतन कर दूसरे पुरुषके साथ सुख भोग करतीं थीं। पोर्त्त गीज राज्यकी ऐसी अवस्था थी। इसी धूमधामके समयमें १६०३ ई०को ओलन्दाजोंने गोआ अवरोध किया था। यद्यपि उस समय उनका उद्यम निष्फल हुआ था, तथापि उन्होंने अपने पैर पीछे न हटाये, क्रमशः पोर्त्त गीजकी बहुतसी रणतरि (फौजी जहाज) हस्तगत कर लीं। इस समय गोआके चारो ओर प्रबल ज्वरका प्रादुर्भाव हुआ। १६३५ ई० तक इस ज्वरसे अधिवासियोंको यथेष्ट कष्ट हुवा। १६३९ ई०को फिर भी ओलन्दाजोंने गोआ अवरोध किया था। इस समय भी उनको पूर्ववत् पृष्ठ प्रदर्शन करना पड़ा था। इन समस्त दुर्घटनाओंसे गोआ धीरे धीरे श्रीहीन होता गया। १६४८ ई०को टावारनियरने गोआकी सौधावलीके शिल्पनैपुण्यकी अधिक प्रशंसा की थी, किन्तु उन्होंने अपने प्रथमागमनमें गोआके थोड़े पोर्तगीज परिवारका जिस प्रकार सुखसे रहते देखा था, इस बार उन्हें संपूर्ण विपरीत पाया। उन्होंने लिखा है—"छह वर्ष पहले जिनकी यथेष्ट सम्पत्ति थी, अभी वे गुप्तभावसे भिक्षाद्वारा जीविकानिर्वाह करते हैं। किन्तु इतना होने पर भी इनका अभिमान घटा न था। अब भी बहुतसी दरिद्र पोर्तगीज रमणियां पालकीमें बैठ नौकरको साथ ले दूसरेके दरवाजे पर जातीं और नौकर उस रमणीकेलिये घरके मालिकसे भिक्षा प्रार्थना करता।" इस समय १६६६ ई०को थेवेनो (Kevenot) ने लिखा है—"गोआ नगरी

में प्रासादमाला सुन्दर सुसज्जित, अत्युच्च गिर्जा और अच्छे अच्छे मठ हैं। भारतमें पोर्तगीजकी नाई धनवान् संसारमें बहुत थोड़े हैं, किन्तु यह धनगौरव ही इन्होंके ध्वंसका मूल है।" १६७५ ई०को एक दूसरे मनुष्यने गोआ दर्शन कर लिखा है,—"भारतमें यह रोम नगरके जैसा सप्तशैलके ऊपर अवस्थित है। चारों ओर विश्वविद्यालय, उच्च भजनालय और बड़ी बड़ी अट्टालिका हैं, किन्तु अधिकांश ध्वंस हो जाने पर यह नगरी लज्जासे अधोवदन की हुई मालूम पड़ती है।"

१६८३ ई०को शम्भाजीने अकस्मात् गोआमें प्रवेश कर नगर लूटा था, उस समय किसीसे सहायता पानेकी आशा न थी। उसी समयमें सह्याद्रिसे बहुतसे मोगलसैन्यने आ महाराष्ट्रोंको पराजय और वशीभूत किया। थोड़े दिनोंके बाद फिर सावन्तवाड़ीसे भोन्सलेने आकर गोआ राज्य पर आक्रमण किया परन्तु वे भी पोर्तगीजोंसे परास्त हो गये।

इस समय पोर्तगीजोंने महाराष्ट्रोंके अधिकृत बिचोलिम् दुर्ग ध्वंस तथा कोर्युवम् और पनलेम् नामक द्वीप अधिकार कर लिया। १७१७ ई०को बारदेश और अपोराकी सीमामें दो दुर्ग निर्मित हुए। १७२२ ई०से १७४१ ई० तक पोर्तगीजोंके साथ महाराष्ट्रका युद्ध होता रहा। इस समय भोन्सलेसे गोआ राज्यके नानास्थानोंमें लूटमार करते थे। अन्तमें नये राजप्रतिनिधि मारक्विस ओफ लरिगालने १२०० यूरोपीय सैन्यके साथ ले बारदेशमें महाराष्ट्रोंको पराजित किया और गोआ राज्यसे उन्हें भगा कर पोराड़ा तथा दूसरे कई एक छोटे छोटे दुर्गों पर अधिकार कर लिया। इस समय भोन्सलेके सर्दार खेमसामन्त पोर्तगीजके करदरूपमें गण्य हुए थे। इस घोर युद्धके बादभी महाराष्ट्र शान्त न हुए, उन्होंने भोन्सलेके साथ मिल पोर्तगीजके साथ फिर भी लड़ाई ठान दी। और मारक्विस ओफ काष्टेलो (Marquis of Castello Novo) ने आलोर्ना, तीरकोल, नितलिम्, रदिम् और सङ्खलिम्को दखल किया। १७६० ई०को पोर्तगीजके प्रतिनिधि मारक्विस ओफ तवोराने सुन्दाके राजाको पराजय कर पोंडा दखल किया। इसके बाद राजप्रतिनिधि साल्दानहके समयमें महाराष्ट्रके साथ घमसान युद्ध हुआ था। इस समय रदिम और दिउलिम् पोर्तगीजके हाथसे निकल गये। पोर्तगीजराज्यके प्रतिनिधि भी दुर्गके अवरोधकालमें मारे गये। पोरो और जिलम् दुर्ग सुन्दाराजाको तथा बिचोलिम्, सङ्कुलिम् और अलोर्णा खेमसामन्तको लौटा देनेके लिए पोर्तगीजने आदेश दिया, उस समय हैदरअलीके हाथसे बचनेके लिए सुन्दाराजाने पोर्तगीजको जाबुली, रामेश्वर और कोणाकोण नामक भूभाग अर्पण किये। एक वर्षके बाद खेमसामन्तने पोर्तगीजके साथ फिर भी विरोध ठाना, अन्तमें पोर्तगीजोंसे परास्त हो, उन्हें आलोर्णा, पर्णम, सङ्खलिम् और बिचोलिम् छोड़ देने पड़े। सैकड़ों आक्रमणों और मरी रोगसे गोआ नगरी धीरे धीरे उजाड़ होने लगी।

पोर्तगीज गवर्नमेण्टने राजधानीका पुनःसंस्कारकी चेष्टा की। अधिक रुपये व्यय होने पर भी कुछ सफलता हाथ न आई। पहलेसे ही अधिवासीगण धीरे धीरे नदीके मुहाने पर अवस्थित पञ्जीम या नये गोआमें बस रहे थे, तब यहां नयी राजधानी स्थापित हुई। १८वीं शताब्दीमें गोआकी अवस्था बहुत शोचनीय हो गई थी, यहां तक कि आयसे भी वहांका खर्च अधिक था, और सेनाध्यक्ष (Captain) ६) रु०से अधिक वेतन नहीं पाते थे। महाराष्ट्रोंसे रक्षाके लिये जो दो हजार यूरोपीय सेना नियुक्त हुई थी, उनका खर्च पोर्तगालके राजाको ही देना पड़ता था। कप्तान हमिल्टन लिख गये हैं कि उस समय भी गोआके निकट पर्वतके ऊपर बहुत गिर्जे और कुमारीमठ तथा प्रायः तीस हजार रोमन कैथोलिक याजक थे।

१७३८ ई०को महाराष्ट्रोंने गोआ राज्य पर बहुत उपद्रव मचाया था। ईसाई यति और सन्यासियोंने भीति हो मार्गाव नामक स्थानमें आश्रय लिया था। जो कुछ हो गोआकी दरिद्रता घटी नहीं। पदस्थ राजपुरुष और सेनाओंकी अमितव्ययिता भी दूर नहीं हुई।

१८०१ ई०को फरासीसियोंके युद्धकालमें अंगरेज पोर्तगीजोंके साथ मिले थे। १८१७ ई०को पोर्तगीजके प्रतिनिधि काउण्ट ओफ रिओपार्दोने उच्चा और रदिमके दुर्ग पर आक्रमण किया था। १८२५ ई०को राणो (रते) डोनासे रियाने मार्ता डी पेरेनान्डा सिनमा नामक एक

गोआके रहनेवाले पोर्त गीजको पोर्तु गालके अधीन को एक तीय राज्यसमूहका शासनकर्त्ता बनाये थे। उन्होंने परराजाका इन्तजाम तो अच्छा किया था। लेकिन इनका शासनकाल १७ दिनसे अधिक स्थायी न रहा। इस समय इनके विरुद्ध कुछ लोगोंके षड़यन्त्र रचने पर इन्होंने वम्बई भाग कर आत्मरक्षा की। इसके वाद १६ वर्ष गोआमें और किसी तरहका उपद्रव न हुआ। १८४५ ई०को सामन्तवाड़ीमें विद्रोह उपस्थित हुवा। वहुतसे विद्रोहियोंने गोआ आ कर आश्रय लिया था। इन्हींके लिए पोर्त्त गीजोंके साथ वृटिश गवर्नमेण्टके विवाद होनेका सूत्रपात हुवा। इस समय पेस्ताना गोआके शासनकर्त्ता थे। १८५२ ई०को दोपजोंके भड़काने पर सतरीकी रानी विद्रोही हुई। १८७१ ई०को गोआके रहनेवाले देशीय सैन्य अपनी प्रार्थनाके अनुसार वेतन न पानेके कारण विद्रोही हो उठे। विद्रोहियोंके दमन करनेके लिये पोर्तु गलके राजाके भाई डोम अगष्टो स्वयं ससैन्य पहुंचे। इन्होंने आकर शान्ति स्थापन और विद्रोहियोंको निरस्त्र किया था।

पहली सेनाका पुनःसङ्गठन हुआ न था और देशी सेनाएं मुट्ठीभर युरोपी फौजके लिए खतरनाक हो सकती थी। फिर समस्त भारतमें अङ्गरेजोंके शान्ति रखनेसे उनकी कोई आवश्यकता भी न थी। १८९५ ई०को जब सरकार गोआ फौजकी जो मोजम्बिक बलवाई काफरोंको दबानेके लिए भेजी जा रही थी, मांग पूरी कर न सकी पैदल सिपाहियोंने बलवा कर दिया। सतारीकी रानी विद्रोहियोंसे मिल गई। जब तक लिसबनसे हिज हाइनेस इनफाण्ड डोम अलफोन्सो हेनरिक कुमक ले कर न आये, अशान्ति बनी रही। १८९७ ई०में साधारण क्षमाप्रदान की गई। १९०१ ई०को रानी फिर बिगड़ी। यह बलवा ६ नवम्बरको वलपाय (सतारी) में एक अफसरको मार डालने पर शुरू हुआ था। हत्यारे और बहुतसे रानीके नेता पकड़े गये और दण्डित हुए। रानी लोग ति-रको निर्वासित किये गये।

गोआके प्रधान नगर (नये) गोआ या पञ्जीम्, सर्गाओं और मयुगा है। डमान, ढिउ, मोजाम्बिक, मकाओ, अलङ्कारोंसे सजा कर चलते और भृत्यगण आसा सोटा छत्र चामर और पानका दोना हाथमें ले साथ साथ जाते थे। देखनेसे मालूम पड़ता है कि कोई नवाबपुत्र जा रहे हों। गरीब मनुष्य भी धनी मनुष्यका अनुकरण करते हैं. सुतरां उनका पेट भरे या नहीं बाहरसे वे सजधज कर रहते थे। थोड़ा अवकाश पानेसे ही अधिकांश मनुष्य शराबके अड्डे या प्रमोदगृहमें जा आमोद करते थे। इधर लमा, ... हैं। चन्द्रनाथ यां भी विलासितामें डूब कर इतनी मत्त हो सह्याद्रिखण्डमें विस्तृतरूपसे वर्णित ... कामकाजका भी होश न का मत—

"पूर्वकालमें किसी समय दश हजार वर्ष तक अनावृष्टि हुई थी। दारुण अनावृष्टिसे पृथ्वी पर हाहाकार मच गया। अन्तमें बहुतसे ऋषि मिल कर अगाध सलिल कुशवती नदीमें उपस्थित हुए एवं जल पानेके लिए देवदेव महादेवका स्तव करने लगे। शिवजी इनके स्तवसे सन्तुष्ट हो वृहत् पर्वत रूपमें अवतीर्ण हुए। इसकी ऊंचाई एक योजन थी। इसके शिरोदेश पर चन्द्रकान्त पत्थर है, इसीसे जल निःसृत हो अनावृष्टिसे पीड़ित समस्त भूमण्डलकी रक्षा हुई। फिर भी अनावृष्टि होने पर क्या उपाय किया जाय। यह सोच कर ऋषियोंने शिवजीको वहीं रहनेका अनुरोध किया। ऋषियोंके अनुरोधसे महादेव उसी पर्वतशिखर पर लिङ्गरूपमें रहने लगे। इसका नाम चन्द्रचूड़ है। इनका दर्शन करनेसे समस्त पाप नाश होते हैं। थोड़े दिनके बाद भूतनायक भैरव शिवजीको देखने आये। शिवजीकी अनुमतिसे ये भी इसी स्थान पर रहने लगे। इसके बाद नानादेशीय ऋषिगण इस स्थानमें आ वास करने लगे। तीर्थके प्रभावसे सब किसीने सिद्धि लाभ की है। जिस स्थान पर जिस ऋषिको सिद्धि मिली है, वह स्थान उन्हींके नाम पर तीर्थ हो गया है। इनके मध्य कपिल, गौतम, सोम, भरद्वाज, चन्द्रोदय, सुशर्मिष्ठ और अम्बष्ठ तीर्थ ही प्रधान हैं।"

"चन्द्रचूड़के पश्चिममें कुशवती प्रभृति कई एक पुण्यसलिला नदियां तथा इसके चारों ओर प्रसिद्ध तीर्थ हैं। कुशवती ब्रह्माके पदसे उत्पन्न हुई है। इस नदीके दोनों कूल पर बहुतसे कुश हैं इस लिये ऋषियोंने इसका नाम

से प्रासादमाला सुन्दर सुसज्जित, अत्युच्च गिर्जा और बड़े बड़े मठ हैं। भारतमें पोर्तगालकी नाईं धनवान् संसारमें बहुत थोड़े हैं, किन्तु वह धनगौरव भी दुर्गन्धके मध्य छिपा हुआ है। १८७५ ई०को एक दूसरे सज्जनने गोआ प्रदेश का लिखा है,—"भारतमें यह रोम नगरके जैसा समुद्रके ऊपर अवस्थित है। चारो ओर धर्मविद्यालय, उच्च मठनालय और बड़ी बड़ी अट्टालिका हैं, किन्तु अधिकांश ध्वंस हो जाने पर यह है। [illegible] से अधोपतन हो गई मानो [illegible] पशुओंका शिकार

१८७७ ई०में [illegible] व्याधको पुत्राया पाया। किसी श्रावणी पूर्णिमा तिथिके सोमवारको देख विदेशसे तीर्थयात्रियोंके झुण्डके झुण्ड [illegible] तीर्थको जा रहे थे, उन्हें कुशावती नदीको टैर कर ही वहां जाना पड़ता। इन तीर्थयात्रियोंको देख [illegible] मनमें एक दूसरा ही भाव उत्पन्न हो आया, और वह यात्रियोंके साथ ही चन्द्रचूड़को चल पड़ा। यात्रियोंका भक्तिभाव, पूजा और आचार व्यवहार देख व्याधको भक्तिका सञ्चार हो गया। उस दिन उसने कुछ भी न खाया। सन्ध्याके बाद शिवजीके उद्देशसे एक दीप जला कर पूजा और शिवनामसे कातर हो उपवास कर जागता रहा। रात्रिके प्रथम याम बीतते बीतते उस व्याधकी मृत्यु हो गई। मृत्युके बाद यमकी आज्ञासे यमदूत उसे लेने आया था, परन्तु शिवानुचर नन्दीने उन्हें रोक दिया। [illegible] बहुत वादानुवाद बाद निश्चय हुआ कि चन्द्रचूड़के आराधनासे पापात्मा होने पर भी व्याध [illegible] और शिवसायुज्यमें इस तीर्थका माहात्म्य होगा। यमदूतने [illegible] पराजित हो [illegible] थे। [illegible] चन्द्रचूड़के साथ चन्द्रमाको बचा [illegible]। इसीलिए यह स्थान चन्द्रतीर्थ नामसे विख्यात है। श्रावणमासके सोमवारको पूर्णिमा तिथि योग पर [illegible] होता है उस दिन यहां पर स्नान दान करनेसे शिवलोककी प्राप्ति होती है।

'कलियुग [illegible] एक राजा [illegible] दाक्षिण्य [illegible] इस [illegible] शिवजीकी आराधना कर [illegible]। [illegible] [illegible] हैं, वह [illegible] है।

इसी चन्द्रचूड़गिरिके दक्षिणकी ओर गौतमतीर्थ है। यहां पर गौतम नामक ब्राह्मणने कठिन तपस्या, व्रत इन्द्रिय संयम एवं अष्टोत्तर मन्त्रसे शिवजीकी आराधना की थी। उनकी आराधनासे शिवजी सन्तुष्ट हो गुहा द्वारसे उनके निकट उपस्थित हुए तथा गौतमकी प्रार्थनासे उसी स्थान पर लिङ्गरूपसे अवस्थान करना अङ्गीकार किया। यही स्थान गौतमतीर्थ नामसे प्रसिद्ध है। इसमें स्नान दान और भक्तिपूर्वक गौतमलिङ्ग दर्शन करनेसे समस्त पाप जाते रहते और सब अभिलाष पूर्ण होते हैं।

'दानवोंके उपद्रवसे सोम हो [illegible] इसके एक गुहामें जा शिवजीकी आराधना करने लगे। उपवासी रह तीन बार स्नान और मृत्युञ्जय मन्त्र [illegible] अभीष्ट वर और एक उत्कृष्ट रथ पाये थे। इसी कारण यह कन्दरा सोमतीर्थ नामसे विख्यात है। इसके प्रशस्त जलमें स्नान करनेसे सर्व यज्ञके फल तथा [illegible] बार वेदपाठ करनेका फल होता है।

'क्षयरोगग्रस्त कोई नरपति इस पर्वतके पश्चिमोत्तरमें मनोहर सोमोदकमें स्नान कर शिवजीकी आराधना करके क्षयरोगसे मुक्त हुए थे। इसीसे यह क्षयरोगतीर्थ कहा जाता है। इसमें स्नान करनेसे क्षयरोगका प्रतीकार होता है।

'पर्वतके उत्तरकी ओर कामप्रद [illegible] नामक एक तीर्थ है। कोई मुनिकन्या यहां रह तपस्या करती थी। तब भगवान्‌के कृपासे मुनिकुमारी पाप मोचन [illegible] हो कैलास गामिनी हो गई।

'[illegible] नामका एक अप्सरा थी। उसने गन्धर्वराज [illegible] ब्राह्मणके साथ विवाह करनेकी इच्छा की। [illegible] ब्राह्मण पुत्रके [illegible] हो गई। [illegible] किसीको भी पसन्द न किया। एक दिन वह [illegible] [illegible] और मुनि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नाई' अलौकिक रूपलावण्य या स्वर्ग को चली गई'। इससे तीर्थ का नाम सुशमि छ हुवा।'

(सह्याद्रिखण्ड सनत्कु' सं० ६ अ०)

'चन्द्रचूड़के ईशान कोणमें मूलगङ्गातीर्थ है। यह शिवजीको जटासे निकली है। एक मास इसमें स्नान करने से समस्त रोगोंका प्रतिकार होता है। इसके स्नानसे साध्वी वीरप्रसविणी, दरिद्र धनवान्, क्षत्रिय राजा और राजा सम्राट् हो जाते हैं। शकुन्तलाने इसमें स्नान कर राजचक्रवर्त्ती पुत्र पाया था। जो मूलगङ्गाके जलमें स्नान कर चन्द्रचूड़ दर्शन करता, वह शिवलोकको प्राप्त होता है।

'चन्द्रचूड़के पश्चिममें मालती नदी है। इसके जलमें स्नान कर चन्द्रचूड़ अवलोकन करनेसे मुक्ति प्राप्त होती है। स्वयं शिवजीने इस तीर्थ को निर्माण किया था।"

(सह्याद्रि सनत्कुमार ८ अ०)

'नागाह्वय या नागेश—इसका मन्दिर गोआवासीके लिए प्रसिद्ध है। सह्याद्रिखण्डमें लिखा है—"क्षत्रिय-कुलान्तक परशुरामने सह्याद्रिके पश्चिममें समुद्रके निकट अघाशी नदीके तीर पर एक मनोहारिणीपुरी निर्माण की थी। गरुड़के भयसे कातर हो नागोंने इस स्थान पर रह एक शत दिव्य वर्ष तपस्या की थी। तपस्यासे सन्तुष्ट हो परशुरामने सर्पोंको गरुड़से रक्षाके लिए कैलास जा शिव और पार्वतीको लाया था। शिवजी और पार्वतीके इस क्षेत्रमें पहुंचने पर नागगण स्तव करने लगे। सर्पोंके स्तवसे तुष्ट हो एवं परशुरामकी प्रार्थना पर शिव और पार्वती इस तीर्थमें रहने लगे। एक दिन खगपति गरुड़ क्षुधार्त हो सर्प खानेकी इच्छासे इस स्थान पर पहुंचे। सर्पोंने सोचा कि अभी शिवजीको आश्रयके सिवा और दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसलिए समस्त सर्प शिवजीके शरीर पर चढ़ उन्हें जोरसे पकड़ा। शिवजीने कहा—"गरुड़! तुम इस तीर्थ स्थित सर्पोंको भक्षण मत करो।" महादेवकी आज्ञासे गरुड़ कुछ न कर सका। सर्प भी निर्भयसे रहने लगे। इसी कारण इस तीर्थ का नाम नागाह्वय या नागेश पड़ा। फणिगण-विभूषित शिव और पार्वती-नियत इस स्थान पर रहने लगे। इसके बाद शान्त नामक कोई मुनि भगवतीकी आराधना करते थे। उनकी आराधनासे संतुष्ट हो भगवती भी वालिकाभयमें आविर्भूत हुई एवं मुनिको अनिरुद्धकी आराधना करनेकी अनुमति दी। ब्राह्मण देवीके आदेशसे अनुरुद्धकी उपासना करने लगे, तब उनकी आराधनासे संतुष्ट हो अनिरुद्ध साक्षात् हुए। मुनिने शान्तादेवीके साथ उन्हें इस स्थान पर रहनेकी प्रार्थना की। तभीसे शान्तादेवी तथा अनिरुद्ध इस स्थान पर अवस्थान करते आ रहे हैं। इन्हें छोड़ विघ्नराज और भूतनाथ ये दो देवता भी इस क्षेत्रमें नियत अवस्थान करते हैं। यहां देवदर्शन, जप और होमादि करनेसे अनन्त फल होते हैं।' (नागाह्वयमा०)

शान्ता अभी शान्ता दुर्गा नामसे ख्यात है।

वरुणापुर—किसी समय वरुणको नगरीमें जा बहुतसे मनुष्य परशुरामकी उपासना की थी। रामजीने संतुष्ट हो वरुणको एक पुरी निर्माण करनेकी अनुमति दी। वरुणने भी अपना पूर्व सदृश एक मनोहर पुर बना दिया। परशुरामने खुश हो उस पुरका नाम वरुणापुर रखा था। किसी एक वर्ष वैशाख मासके शुक्रवारकी नवमी तिथिसे सात दिन पर्यन्त रामोत्सव होता था। वरुणापुरवासी आमोदमें मतवाले हो गये थे। ऐसे समय समुख नामक एक दैत्य मौका पा कर सबको कष्ट पहुंचाने लगा। पुरवासियोंने असुरके हाथसे रक्षा पानेके लिये परशुरामकी उपासना की। परशुरामने दैत्यनाशका उपाय करनेके लिये एक देवमूर्ति स्थापन कर सकल पुरवासियोंको उनकी आराधना करनेकी अनुमति दी थी। इन्होंको उपासनासे संतुष्ट हो देवीने भीषण खड्गाघातसे माघ मासकी शुक्लपक्षीय षष्ठी तिथिमें उस असुरको विनाश किया था। उक्त तिथिमें इस देवीकी आराधना करनेसे मनोभीष्ट पूर्ण होता है। दुर्गा, भद्रकाली, विजया, वैष्णवी, कृष्णा, माधवी, कन्यका, माया, नारायणी, शान्ता, शारदा, अम्बिका, कात्यायणी, वालदुर्गा, महायोगिनी, अधीश्वरी, योगनिद्रा, महालक्ष्मी, कालरात्रि और मोहिनी इन नामोंसे उक्त देवीमूर्तिकी आराधना की जाती है। इस देवी मूर्तिका नाम महालसा है। (स्कन्दपुराण) गोआके रहनेवाले हिन्दू इन्हें "मालसा" कहा करते हैं।

माङ्गीश—किसी समय शिवजी पार्वतीके साथ द्यूत

क्रीडा कर रहे थे। दैवक्रमसे खेलनेमें पार्वतीकी जीत हुई। गृहिणीने द्यूतक्रीडामें पराजित पतिको दो एक उपहास या चाटुवाक्यसे तिरस्कार किया। शिवजीके मनमें बहुत दुःख हुआ। वे घर छोड़ वनवासी हो गए थे। इधर भोला सांसारिक सुखको आशा पर जलाञ्जलि दे वन वनमें घूमने लगी। इन्होंने पहले कृष्णा और वेणीके सङ्गम पर तपस्या की थी। वह स्थान सङ्गमेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुआ। परशुरामसे वह स्थान ब्राह्मणोंको दान दिए जाने पर शिवजी वह स्थान छोड सागरके निकट जा रहने लगी इसके बाद चम्पावतीमें आए अनेक दिन तपस्या की थी। इस स्थानमें रामेश्वर नामके एक लिङ्गजी दक्षिण और स्वय सदाशिव विराजमान हैं। इसके बाद शिवजी गोमन्तक पर्वत पर गए थे। इस स्थान पर शिवजी गोमन्तकेश नामसे सर्वजनप्रसिद्ध लिङ्गरूपमें आविर्भूत हुए। इस लिङ्गको पूर्व और ब्रह्मा विष्णु प्रभृति समस्त देवता विराज करते हैं। लिङ्गके पश्चिममें यमेश, उत्तरमें ब्रह्मवादी ऋषिगण एवं दक्षिणमें भैरवादिगणगण अवस्थित हैं, ऋषियोंने शिवके दर्शन पानेके लिए सातकरोड़ वर्ष तक अघाशी नदीके तीर पर तपस्या की थी। शिवजीके साक्षात् होने पर ऋषियोंने इन्हें लिङ्गरूपमें उस स्थान पर रहनेको प्रार्थना की। उनकी प्रार्थनासे उस स्थान पर सप्तकोटीश्वर नामक एक लिङ्ग स्थापित हुआ। पञ्चनदीमें स्नान कर सप्तकोटीश्वरका अवलोकन करनेसे मनोभीष्ट पूर्ण होता है।

'गोमन्तके दक्षिण भागमें सागरके निकट अघाशी नामकी एक नदी है। यह नदी सह्याद्रिके पादर्देशसे उत्पन्न हुई है। अघाशीके तीर पर प्रसिद्ध कुशस्थलीपुरी है। इस पुरीमें लोमश नामक एक पुण्यात्मा ब्राह्मण रहते थे, लोमश किसी समय चन्द्रग्रहण उपलक्षको सङ्गमस्थलमें स्नान करनेके लिए पहुंचे। ज्योंही उस ब्राह्मणने नदीमें प्रवेश किया त्योंही एक भीषण मगरने उन्हें पकड़ लिया। दारुण विपदसे लोमश शिवजोका स्तव करने लगे। शिवने दर्शन दे उनकी रक्षा की थी। उस स्थान पर लोमश नामका एक लिङ्ग स्थापित हुआ। शिवजीने लोमशको कहा था कि 'इस गोमन्तक पर्वत पर शतसहस्र लिङ्ग हैं, किन्तु उनमें मैं पूर्णांशसे अवस्थित नहीं हूं। कलिकालमें अघाशी नदीके तीर पर इसी लोमश लिङ्गमें हो पूर्ण भावसे वास करूंगा। कलिकालमें यही क्षेत्र मेरा एकमात्र वसतिस्थान होगा।" इसके दर्शन करनेसे समस्त दुःख विनाश होते।

'इधर पतिके वनवासी होनेके बाद पार्वती भी उन्हें ढूंढनेके लिए बाहर निकली थी। किन्तु कहीं भी पतिको न पाया। अन्तमें अघाशी नदीके तीर पर पहुंच शिवकी तपस्या करने लगी। शिवजी पार्वतीको जाँचनेके लिए एक भयङ्कर व्याघ्रमूर्ति धारण कर उपस्थित हुए। व्याघ्रको देख पार्वती भयभीत हो गई। भयसे "मा गिरीश त्रय" ऐसा कहनेमें 'मांगीश' बोल उठी। इसके बाद शिवजीके साक्षात् होने पर पार्वती बोली, "नाथ! आप इस स्थान पर माङ्गीश नामसे प्रतिष्ठित हो वास करें।" शिवजी भी इस पर सहमत हुए। उस स्थान पर माङ्गीश नामसे शिवलिङ्ग और देवी मूर्ति स्थापित हुए। पहले ये दोनों जलके मध्य स्थापित थे। "मांगीश" यह नाम उच्चारण करनेसे समस्त यज्ञका फल होता और इनका दर्शन करनेसे सर्व दुःख दूर होते हैं।

'थोड़े दिनके बाद कान्यकुब्जनिवासी वात्स्य गोत्रीय देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण अपनी स्त्रीके साथ तीर्थयात्रा करते हुए अघाशी सङ्गममें पहुंचे। वहां ब्राह्मणने देखा कि एक गाय जलमें गोता लगा कुछ काल ठहरनेके बाद बाहर निकली। ब्राह्मणने इसका रहस्य न समझ अधिवासियोंसे इसका कारण पूछा, किन्तु कोई भी कुछ कह न सका। इसके बाद दूसरे दिन ब्राह्मणने गोकी पूंछ पकड जलके नीचे जा तेजोमय लिङ्ग और देवीमूर्ति देखे। देवशर्माने भक्तिपूर्वक लिङ्गको पूजा और आराधना की। शिवजीने दर्शन दे अपना माहात्म्य और माङ्गीश नामका कारण कह सुनाया, उन्होंने यह भी कहा कि प्रतिदिन कपिलाधेनु यहां आ मुझे दुग्ध दे स्नान करके लौट जाती है, अतएव इसका नाम कपिलतीर्थ होगा। इस तरहसे जलमग्न तीर्थ और लिङ्गमूर्तिका प्रकाश हुआ। इसके दर्शनसे मनोवाञ्छा पूर्ण होती है।

'गोमन्तके दक्षिणमें समुद्रके निकट शङ्खावली नगरी है। इस नगरमें एक सिद्ध ब्राह्मण रहते थे। सिद्ध सर्वदा शिवजीको उपासना किया करते। राक्षसीरूप

धारिणी सुमुखी नामकी एक ब्राह्मणकन्या वहां जा कर सबोंको कष्ट दिया करती थी। एक दिन कई एक स्त्रियां आ रही थीं, राक्षसीने उन पर आक्रमण किया। स्त्रियां जोरसे चिल्लाने लगीं। सिद्धपुरुषने ऐसा देख और रक्षाके लिए अपनेको असमर्थ समझ शिवजीका आह्वान किया। दीनवत्सल भगवान्‌ने आविर्भूत हो एक ही हुङ्कारसे राक्षसीका विनाश किया; तथा वे लिङ्गरूपसे उस स्थानमें रहने लगे। सिद्धने आराधना की थी इसलिए उनका नाम सिद्धेश्वर हुआ है। इनके दर्शनसे समस्त पाप विनष्ट होते हैं।' (सह्याद्रि० माङ्गेशमा०)

फिर भी सह्याद्रिखण्डके उत्तरार्द्धमें लिखा है कि "परशुरामने त्रिहोत्रपुरसे भारद्वाज, कौशिक वत्स्य, कौण्डिय, कश्यप, वसिष्ठ, जमदग्नि, विश्वामित्र, गौतम और अत्रिगोत्र इन दश ब्राह्मणोंको ला कर याज्ञयज्ञादि निर्वाहके लिए उन्हें पञ्चक्रोशी गोमाञ्चलके मध्य स्थापन किया था। इसके सिवा त्रिहोत्रसे उन्होंने माङ्गिरीश, सहादेव, महालक्ष्मी, महालसा, शान्तादुर्गा, नागेश और सप्तकोटीश्वर प्रभृति बहुतसे देवता ला गोमन्तमें स्थापित किये थे।" (सह्याद्रिखण्ड उत्तरार्द्ध १म अ० ४८-५४ श्लो०)

गोआके देशीय ईसाइयोंको गोआइज कहते हैं। पोर्तगोजोंने गोआ पर अधिकार कर बहुतसे मनुष्योंको ईसाई बनाये थे, उनके वंशधर आजकल गोआइज नामसे मशहूर हैं। ये सफेद जिनके पाजामा और कोट पहनते हैं, सर पर जरीदार टोपी और पनहीं पहनते हैं। स्त्रियां घरमें रंगीन साड़ी और चोली व्यवहार करती, किन्तु गिर्जा जाते समय सफेद साड़ी और ओढ़नी काममें लाती हैं। इनका खान-पान बङ्गालियों और उड़ियोंसे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। प्रातःकालमें काञ्जि, मध्याह्नमें भात और सन्ध्याके बाद भात खाते हैं। इनके ईसाई होने पर भी उनमें अब भी वर्णभेदकी प्रथा पाई जाती है। प्रसिद्ध ईसाई-धर्मप्रचारक सेन्ट-जेभियरको ये विशेष भक्ति श्रद्धा करते हैं। पोर्तगीजोंके प्रथम प्रतिष्ठित प्राचीन गोआमें सेन्टजेभियरका समाधिस्थान है। गोआइज लोग वहां जा हाथ जोड़ कर भक्तिभावसे उस सिद्धपुरुषको पूजा कर आते हैं। इसी सेन्टजेभियरके लिए गोआ ईसाइयोंका महापुण्यस्थानके जैसा गण्य है। १८४२, १८७८ और १८९० ई०को उनका मृतदेह प्रदर्शित हुआ था। उस समय पृथ्वीके नाना स्थानोंसे सर्व सम्प्रदायके ईसाई, विशेषतः लाखों कैथोलिक और बहुतसे हिन्दू भी उनके पवित्र देहकङ्कालको देखनेके लिये आये थे। बहुतोंका कथन है कि, उनके मृतदेहकी ऐसी महिमा रही कि अनेक असाध्य रोगी भी दर्शन और स्पर्शनसे रोगमुक्त हो गये थे सेन्टजेभियरके शवाधारकी एक चाभी गोआके विशप और दूसरी रोमके पोपके निकट है।

यहां एक तिहाई भूमिमें खेती होती है। कितनी ही जगह कङ्कर पत्थर भरा है। खाद बहुत डालते हैं। चावलकी उपज अधिक है। इसकी दो फसलें होती हैं। गर्मीमें सींचसे काम लिया जाता है। नारियल लगानेकी भी बड़ी चाल है। फलोंमें आम और कटहल प्रधान है। बेलहास कनक्विसताम प्रान्तमें कृषकोंका दशा खेतीकी चीजोंका दाम बढ़ने और अङ्गरेजी राज्यको लोगोंके चले जानेसे सुधरी, किन्तु नोवस कनक्विसतासमें कहते हैं जमीन्दारोंके अत्याचारसे बिगड़ी है।

नोवस कनक्विसतासमें ११६ वर्गमील जङ्गल है। कुमरी (परिवर्तनशील) खेतीसे कीमती पेड़ मारे गए हैं। जङ्गलकी आमदनी कोई २५ हजार रुपया सालाना है। कई जगह लोहा निकलता है। अपने अभ्युदयके समय गोआ पूर्व तथा पश्चिमके मध्य व्यवसायका प्रधान स्थान था। ईरानी खाड़ीके साथ घोड़ोंका कारबार अधिक रहा। किन्तु पोर्तगीज साम्राज्यका अधःपतन होने पर गोआमें व्यवसाय कम पड़ गया। कोई बड़ा काम काज नहीं होता। नारियल, सुपारी, आम, तरबूज, कटहल, अन्यान्य फल, मिर्च, गोंद, रस्सीकी चीजें, जलानेकी लकड़ी, चिड़ियों और नमककी खास रफ्तनी है। चुङ्गीसे सालाना कोई ५ लाख रुपया आता है। मरमागोआसे दक्षिण मराठा-रेलवे मिली हुई है। १९ सड़कें चालू हैं।

पोर्तगालके राजा गोआ, दमन और डिउ प्रान्तके लिए एक गवर्नर-जनरल नियुक्त करते हैं। उनका कार्यकाल ५ वर्षमें पूरा होता है। वहाँ जङ्गीलाटका भी काम करते हैं। उनके चीफ सेक्रेटरी नामक मन्त्रीकी भी नियुक्ति पोर्तगाल-नरेश ही करते हैं। गवर्नर-जनरल

प्रधान अधिकारी तो है, परन्तु वह बिना पोर्तगाल सरकारको आज्ञाके नया कर नहीं लगा सकते, वर्तमान कर नहीं उठा सकते, ऋण नहीं ले सकते, नई नियुक्तियां नहीं कर सकते, पुरानी जगहको तोड़ नहीं सकते। नौकरोंकी तनखाहें नहीं घटा सकते, कानूनके खिलाफ कोई खर्च नहीं कर सकते और न किसी प्रकार अपना प्रान्त छोड़ सकते हैं।

प्रबन्धमें गवर्नर जनरलको एक कौंसिल, जिसमें चीफ सेक्रेटरी गोआके बड़े पादरी, हाइकोर्टके जज, गोआके दो बड़े फौजी अफसर, सरकारी वकील, इन्सपेक्टर, स्वास्थ्य विभागके अफसर और म्युनिसपालिटीके सभापति रहते हैं साहाय्य करती है। दूसरी भी पांच कौंसिलें होती हैं। किन्तु गवर्नर जनरल इनके प्रस्तावोंको तब तक स्थगित रख सकते हैं, जब तक पोर्तगाल सरकार से उसके बारेमें पूछ न लिया जावे। गोआ प्रान्त पुराने और नये अधिकार दो भागोंमें विभक्त है। पुराने अधिकार या वेलहासमें ३ जिले और ८५ परगने हैं। पुराना अधिकार ७ भागोंमें बंटा हुआ है। प्रत्येक जिलेमें म्युनिसपालटी है। उसकी सालाना आमदनी लगभग १॥ लाख रुपया होती है। जजका इजलास हफ्तेमें दो बार लगता है। उनकी अपील हाइकोर्टमें होती है।

वार्षिक आय प्राय २० लाख और व्यय भी लगभग उतना ही है। गोआमें टकसाल नहीं है। १८७१ ई०के पहले यहां देशी सेना बहुत थी। किन्तु इसी वर्ष विद्रोह उठ खड़ा होनेसे वह तोड़ दी गयी और पोर्तगालसे केवल युरोपीय फौज भर्ती हो करके आयी। सब मिला कर कोई २७३० फौज और २८० पुलिस है। उसमें कुल १ लाख वार्षिक व्यय होता है।

कुछ कालसे गोआमें शिक्षा प्रचार बढ़ गया है। पोर्तगीज भाषाके कितने ही अखबार निकलते जिन्हें देशी लोग लिखते हैं।

२ पोर्त्तगीजके अधिकृत उक्त गोआ राज्यका एक प्रधान नगर। यह अक्षा० १५° ३०' उ० और देशा० ७३° ५७' पू०के मध्य अवस्थित है। इस नामकी तीन नगरी है, पहली कदम्बराजाओं द्वारा प्रतिष्ठित प्राचीन गोपक पुरी, जो नदीके किनारे अवस्थित है। मुसलमानोंके आक्रमणके पहले यहीं पर राजधानी थी। अभी पूर्व अट्टालिकाओंका चिन्ह मात्र भी नहीं है। २रा पोर्त्तगीजोंकी प्रथम अधिकृत गोआ नगरी, जो अभी पुरातन गोआ नामसे विख्यात है। १४७९ ई०को मुसलमानोंने इस गोआकी स्थापन किया था। यह कदम्बराजधानी गोपक पुरीसे प्राय ५ मील उत्तरमें अवस्थित है। १५१० ई०को आलबुकार्कने इस नगरको अपने अधिकारमें लाया था और एसियाख पोर्तगीजोंकी राजधानी रूपमें परिणत हुआ। १६वीं शताब्दीमें यह उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुंचा था, और यह भारतका एक प्रसिद्ध वाणिज्यस्थान समझा जाता था। इसके बाद पोर्तगीजोंके प्रबल प्रताप खर्व होने पर यह स्थान ईसाई धर्मसंघोंका एक प्रधान अड्डा बन गया। बार बार प्लेग होनेसे यहांके अधिवासियोंने इस नगरको परित्याग कर दिया था। इसके बाद पञ्जीम या नये गोआमें राजधानी आने पर पूर्वतन समृद्धिशाली गोआ नगरी एक बारगी श्रीहीन हो गई थी। इस समय प्रधान गिर्जा और ईसाई मठसमूहमें अति सामान्य मनुष्य रहते हैं। परिव्राजक यहांके प्राचीन अस्त्रागार, बोम जिसकी वृहत् गिर्जा, सेण्ट फ्रान्सिसका मठ, सेण्टजेभियरकी समाधि, सेण्ट काईटानोंका कैथिड्रल, सेण्टमणिकामठ प्रभृति देखने आते हैं। मणिका मठमें कई एक देशीय और पोर्तगीज कुमारी आजीवन ब्रह्मचारिणी हो ईसाकी सेवामें दीक्षित है, जिधर ये रहती है उधर पुरुष जा नहीं सकते। १६०६ ई०को यह मठ बनाया गया था। सेण्टकइटानो कैथिड्रलमें पोर्तगीज शासनकर्त्ताओंका अभिषेक होता और मृत्यु होने पर पोतगाल पठानेकी पूर्वावधि तक मृतदेह रक्षित रहता है। यहांके गिर्जासमूहमें ईसाई याजकोंका जैसा मूल्यवान् पोशाक है, भारतके किसी दूसरे गिर्जामें वैसा देखा नहीं जाता है। एक एक वस्त्रका मूल्य ४।५ लाख रुपये होगा। उपरोक्त गिर्जाके अलावा सेण्टअगष्टिन, सेण्ट जन डि तिडस, और सेण्ट रोजारो भी बड़े बड़े मठ और गिर्जा रहे थे जो अभी भग्न अवस्थामें पड़े हैं। पूर्वोक्त गिर्जाओंको छोड़ प्राचीन गोआमें अब वासगृह नहीं है। अभी चारों ओर नारियलका बागान शोभा दे रहा है।

१७५९ ई०को नदीमुख पर पञ्जीम या नये गोआमें राजधानी स्थापित हुई जो अब गोआ कहलाता है। उक्त वर्षमें येशुट लोग भाग गये, इनके साथ साथ गोआका वाणिज्य जगत् भी अन्धकार हो गया। नये गोआ ही अभी पोर्तगीज भारतकी राजधानी है। पञ्जीम्, रिवन्दर और पुराना गोआका कुछ अंश निकले हुए नगर ६ मील विस्तृत और माण्डवी नदीके वामकूल पर अवस्थित हैं। पूर्व समय पञ्जीम्‌में सिर्फ वीरजातिके मनुष्य रहते थे, युमफ आदिल शाहने यहां एक दुर्ग निर्माण किया था। १८४३ ई०से यह दुर्ग पोर्तगीज राजप्रतिनिधिका सुंदर वासभवन हो गया है। इसके अतिरिक्त यहां उच्च अदालत, सेमनकोर्ट, शुल्कग्रहणालय, पुलिस, डाकघर, टेलीग्राफ आफीस, विश्वविद्यालय, पाठागार, साहित्य और विज्ञानसमिति सैनिक अस्पताल, कारागार, बहुतसे बाजार और नमकके गोले हैं। अङ्गरेज गवर्मेण्टने यहां नमक प्रस्तुत करनेका ठेका लिया है। यहां प्राय: पन्द्रह हजार मनुष्य रहते और लगभग चार हजार घर हैं।

गोआलन्द—१ बङ्गालमें फरिदपुर जिलेके अन्तर्गत एक उपविभाग। यह अक्षा० २३° ३२' तथा २३° ५५' उ० और देशा० ८९° १९' एवं ८९° ४९' पू०के मध्य अवस्थित है। भूपरिमाण ४२८ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय: ३१८२८५ है। इस उपविभागमें ११७८ ग्राम और नगर लगते तथा गोआलन्द, बेलगाछी और पाँगसा नामक स्थानमें तीन पुलिस थाना हैं। इस उपविभागके उत्तर और पूर्वमें पद्मा नदी प्रवाहित है। भूमि उर्वरा है। दूसरे सब-डिविजनोंकी अपेक्षा इसकी कुरसी ऊंची है, परन्तु जलवायु कुछ भी स्वास्थ्यकर नहीं। मलेरिया ज्वरका प्राबल्य रहता है। यहां ईष्टर्न बङ्गाल ष्टेट रेलवेका पूर्व भाग आ गया है। जहाजोंसे भी लोग यातायात करते हैं।

२ उक्त जिलेकी नदीकूलस्थित प्रधान वाणिज्य स्थान और नगर। यह अक्षा० २३° ५१' उ० और देशा० ८९° ४६' पू०में गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदी पर अवस्थित है ५० वर्ष पहले यह सिर्फ मछली बेचनेका स्थान था। उस समय यह एक सामान्य ग्राम रूपसे परिचित रहा डकैत नदी पर आरोहियोंके ऊपर बहुत उत्पात मचाया करता। वर्त्तमान समय गोआलन्द नगरने पूर्वबङ्गालमें वाणिज्यका शीर्षस्थान अधिकार किया है। यहां इष्टर्न बेङ्गाल ष्टेट रेलवेका अन्तिम ष्टेसन और आसाम जाने आनेके लिये ष्टीमर छोड़नेका अड्डा है। नदीकी दुर्धर्ष गतिसे नगरकी अवस्था क्रमशः बदलती जाती है। इस नगरमें रेलवे कम्पनीका ष्टेसन, बाजार और दोनों नदीके सङ्गम स्थान पर बालुकामय जमीनके ऊपर अदालत है। ष्टीमर या नौकासे रेलगाड़ीमें माल लदनेके लिये शीतकालमें नदीके कूल पर रेलपथ दिया रहता है, किन्तु आषाढ़ और श्रावण मासमें जब नदीकी बाढ़में निकटवर्ती ग्राम जलमग्न हो जाते तब वह रेलपथ उठा लिया जाता है। एक सप्ताह पहले जिस नदीके कूल पर सर्वदा माल ले रेलगाड़ी जाती आती थी, कुछ दिनके बाद वह स्थान समुद्रकी नाईं देख पड़ता है। इस समय नदीके उत्तर अथवा पूर्व अंशकी ओर दृष्टि करनेसे लगभग ३।४ माइल विस्तृत अखण्ड जलराशि ही दीख पड़ती। तूफान आने पर देशीय मांझी नौकाओंको किसी दूरवर्त्ती खंतेमें रख छोड़ते हैं। समय समय पर ष्टीमर भी कुष्टिया घाटमें रखे जाते, क्योंकि वहां तुफानसे कोई उपद्रव होनेकी सम्भावना नहीं रहती है। १८७० ई०को गोआलन्दसे कुष्टिया तक रेलपथ खोला गया तथा नदीकूल पर बाँध दे कर ष्टेसनकी रक्षा की गई है। यह बाँध तैयार करनेमें लगभग १३०००००) रु० लगे थे, किन्तु उक्त वर्षके अगस्त मासमें नदीमें इस तरहकी बाढ़ आई कि उस बांधका सुदृढ़ स्तम्भ, रेल ष्टेसन, और निकटस्थ ग्रामके बहुतसे अंश नष्ट हो गये थे।

नदीस्थ नौका या ष्टीमरसे रेलगाड़ी द्वारा माल बोझ कर लाना ही गोआलन्दकी व्यवसाय है। आसाममें होनेवाले द्रव्योंको छोड़ पार्श्वस्थ जिला समूहकी उत्पन्न फसल उक्त रेल द्वारा कलकत्ता भेजी जाती है। गोआलन्दसे कई एक ष्टीमर आसाम, सिराजगञ्ज, ढाका और काछाड़ आते जाते हैं।

गोइंजी (देश०) छिलका रहित एक प्रकारकी मछली जिसका मुख और पूछ एक ही तरहके होते हैं।

गोड़ंठा (हिं०) गोइंठा देखो।

गोड़ंठौरा (हिं० पु०) गोइंठा रखनेका स्थान वह जगह जहां गोइंठा जमा किया जाता है।

गोइंड (हि०) गोंड देखो।
गोइंदा (फा० पु०) गुप्तचर, गुप्त भेदिया, जो गुप्तरूपसे गोपनीय सवाद सग्र‌ह करता है।
गोइनका (देश०) मारवाडो वैश्योंकी एक उपाधि।
गोइया (हि० स्त्री०) साथी, सहचर, साथमें रहनेवाला।
गोइयार (देश०) एक छोटा पक्षी जिसका वर्ण खाकी रंगका होता है।
गोइलवाला (हि० पु०) वैश्योंकी एक उपाधि।
गोइ (हि० वि०) चुरानेवाला, हरण करनेवाला, छिपानेवाला।
गोओपदेश (सं० त्रि०) गाव ओपथा समीपवर्तिन्य यस्य, बहुव्री०। जिसके निकट गाय मोड पडी हो।
गोकण्ट (सं० पु०) गो पृथिव्या कण्ट इव। गोक्षुरवृक्ष, गोखरूका पेड।
गोकण्टक (सं० पु०) गो पृथिव्या कण्टक इव। १ गोक्षुरवृक्ष, गोखरूका पेड। इसका पर्याय—गोक्षुर, गोक्षुरक, त्रिकण्ट स्वादुकण्ट, गोकण्ट, श्वदंष्ट्रा और इक्षुगन्धिका है। २ गो पादके क्षुर, गाय बैलका खुर। ३ गाय या बैल जानेका रास्ता। ४ गो खुरका चिह्नित स्थान। ५ विकण्टक वृक्ष, एक तरहका पेड। ६ माय तैल।
गोकण्टी (सं० स्त्री०) गोपघण्टा।
गोकन्या (सं० स्त्री०) कामधेनु।
गोकर (सं० पु०) सूर्य, भानु रवि।
गोकर्ण (सं० पु०) गौरिव कर्ण यस्य, बहुव्री०। १ सर्प, सांप। गोरिव कर्णं यस्य, बहुव्री०। २ अश्वतर, खच्चर। ३ कृष्णसार, मृगविशेष, गोहरिण।

इसके मांसका गुण – मधुर, स्निग्ध, मृदु, कफनाशक और रक्तपित्तनाशक है। ४ शिवलोकके एक गणका नाम। ५ परिमाणविशेष, बालिश्त बित्ता। ६ काशीस्थ एक शिवलिङ्ग। ७ काश्मीर देशके एक प्राचीन राजा, गोपादित्यके पुत्र।

८ बम्बई प्रान्तके उत्तर कनाड़ा जिलेमें कुमता तालुकका नगर। यह अक्षा० १४ ३२ उ० और देशा० ७४ १८ पू०में कुमता नगरसे १०मील उत्तर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ४८१४ है। यह हिन्दुओंका एक पवित्र तीर्थस्थान है। समस्त भारतवर्षके मध्य देवदर्शनको आते हैं। प्रति वर्ष फरवरी मास मेला लगता है। रामायण और महाभारत दोनों ग्रन्थोंमें गोकर्णका उल्लेख है। इस पुण्यक्षेत्रका उल्लेख कूर्म, गरुड, नारदखण्ड प्रभृति पुराण तथा ब्रह्मोत्तरतन्त्रमें किया गया है। स्कन्दपुराणीय तापीखण्डमें और नारदपुराणमें (उप० ७४ अ०) इसका माहात्म्य सविस्तर वर्णित है। भागवतके मतसे इस तीर्थमें सर्वदा शिव अवस्थान करते हैं। हिन्दू तीर्थयात्रीगण यहांके गोकर्णेश्वर और महाबलेश्वर शिवलिङ्गके दर्शनके लिए आया करते हैं। रावण तथा कुम्भकर्णने इसी स्थान पर तप किया था। १८७० ई०को म्युनिसपालिटी हुई। यहां महाबलेश्वरका मन्दिर, २० क्षुद्र मठ, ३० लिङ्ग और ३० नहानेका घाट हैं। स्मार्त और लिङ्गायत उनको यहां भक्ति किया करते हैं।

९ धुन्धकारीके एक भ्राताका नाम जिससे भागवत सुन कर धुन्धकारी उद्धार हो गया था। १० एक मुनिका नाम। ११ गायका कान। १२ नृत्यमें एक प्रकारका हस्तक। १३ नीलग्राम। १४ अश्वगन्धा (स्त्रि०) १५ जिसके गौके समान लम्बे कान हों।
गोकर्णा (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा।
गोकर्णी (सं० स्त्री०) गौः कर्ण इव पत्रमस्या बहुव्री०। ङीष्। १ मुरहरी, मुरनहार। २ मूर्वालता। मूर्वा देखो। ३ वाजिवलक्षभेद। ४ तृणविशेष।
गोकर्णेश्वर—१ गोकर्ण तीर्थस्थ एक शिवलिङ्ग। तापीखण्ड और नारदपुराणमें इसका माहात्म्य लिखा है। २ नेपालस्थ एक पवित्र लिङ्ग। स्वयम्भूपुराणमें इसका प्रसङ्ग है।
गोका (सं० स्त्री०) गौरिव गो स्वार्थे कन् टाप्। गोरू, गो, गाय।
गोकाक—बम्बई प्रान्तके बेलगाव जिलेका पूर्व तालुक। यह अक्षा० १५-५७ एवं १६ ३०' उ० और देशा० ७४ ३८ तथा ७५ १८ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ६७१ वर्गमील है। इसमें एक नगर और ११७ ग्राम बसे हैं। लोकसंख्या प्राय ११६१२० है। मालगुजारी ११ लाख और सेस १३००० रु० पड़ती है। आबहवा खराब है। जाड़े में मलेरिया बुखार बढता और गर्मी में जी घबराने लगता है। बलुये पत्थरके पहाड़ोंमें गोल

कालको पानी वरस जाता और यहां दुर्भिक्ष पड़ने नहीं पाता। गोकाक नहरसे ३८ वर्ग एकर जमीन् सिंचती है। घाटप्रभा नदी पर गोकाकका सुप्रसिद्ध निर्भर है।

गोकाक—बम्बई प्रान्तके बेलगांव जिलेमें गोकाक तालुकका सदर। यह अक्षा० १६° १०' उ० और देशा० ७४° ४८' पू०में दक्षिण-मराठा-रेलवेके गोकाक रोड ष्टेशनसे ८ मील दूर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः ८८६० है। पहले यहां रंगाई और बुनाईका काम बड़ा होता था। लकड़ी और मट्टीके खिलौने भी खूब बनाये जाते थे। १८५३ ई०को मुनिसपालिटी हुई। नगरके पश्चात् भागमें एक निर्जन पर्वत शिखर पर दुर्ग है। कहा जाता है कि उसको बीजापुरके आदिलशाही सुलतानोंने बनाया था। १६८५ ई०को यह एक सरकारका सदर रहा। १७१७ और १७५४ ई०को सावनूरके नवाबोंने गोकाक अधिकार करके मसजिद गंजीखाना निर्माण किया। १८३६ ई०को गोविन्दराव पटवर्धनके मरने पर यह अङ्गरेजोंके हाथ लगा

नगरसे ३॥ मील दूर गोकाक भरना है। यहां घाटप्रभा नदीका पानी एक चटान पर १७० फीट नीचेको गिरता है। घाटीकी शोभा विचित्र है। वर्षा ऋतुमें उसको देखते ही बनता है। नदीके दक्षिण तट पर रूईका पुतली घर है। १८८६—१८०२ ई०को गोकाक बांध १७ लाखकी लागतसे तयार हुआ था।

गोकाम (सं० त्रि०) गां कामयते गो-कामि अण्। गो इच्छुक, जो गाय लेनेकी इच्छा करे।

गोकामुख (सं० पु०) भारतवर्षस्थ एक पर्वत, हिन्दुस्तानके एक पहाड़का नाम।

गोकार्ण—उत्तर कनाड़ाका एक नगर। यह गोकर्णतीर्थके आस पास अवस्थित है। यहां तीर्थयात्री आकर ठहरते हैं, विशेष-कर माघ महीनेके मेलेमें प्रायः आठ दश हजार संन्यासी साधु और तीर्थयात्री यहां टिकते हैं।

गोकिराटिका (सं० स्त्री०) गां वाचं किरति गो-कॄ-क तथा सती अटति अट ण्वुल् टाप्। सारिकापक्षी, मैना।

गोकिराटी (सं० स्त्री०) गोकिरा वाचं रटन्ती सती अटति अट अच् गौरादित्वात् ङीष्। सारिका पक्षी, मैना।

गोकिल (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कील इव। १ मूसल, २ लाङ्गल, हल।

गोकील (सं० पु०) गोः पृथिव्याः कील इव। गोकिल देखो।

गोकंट (हिं० पु०) भारतकी दक्षिणकी नदियोंमें पाये जानेवाली एक तरहकी मछली।

गोकुञ्जर (सं० पु०) खूब मोटा ताजा और बलिष्ठ बैल।

गोकुल (सं० क्ली०) गोः कुलं, ६-तत्। १ गोसमूह, भुण्ड। २ गोष्ठ, गौओंके रहनेकी जगह, गोशाला, गुहाल। ३ मथुरासे दक्षिण कोण पर और यमुनाके वाम तीरवर्त्ती एक पुण्यस्थान। गोपराज नन्द इसी ग्राममें रहते थे। कृष्ण और बलरामने अपनी बाल्यावस्था इसी स्थानपर बिताई थी। पूतनावध, शकटभञ्जन प्रभृति अलौकिक कार्यका अनुष्ठान भी यहीं पर हुआ था। कृष्णलीलाक्षेत्र समझ कर गोकुल वैष्णवोंका एक तीर्थ है। यहां कई एक देव मन्दिर भी हैं। शिवशतनाम पाठ करनेसे जाना जाता है कि गोकुलमें गोपेश्वर नामक एक शिव विद्यमान है।

गोकुल—एक जैन ग्रन्थकार। इनके ग्रन्थोंमें 'सुकुमालचरित्र भाषा' नामक सिर्फ एक ही ग्रन्थ मिलता है।

गोकुलचन्द्र—१ आह्निकचन्द्रिका नामक संस्कृत ग्रन्थरचयिता। २ भगवद्गीतार्थसारके प्रणेता। ३ रसिकचन्द्रिका नामक गोवर्द्धनकृत आर्यासप्तशतीका एक टीकाकार।

हिन्दीके एक मशहूर कवि। इन्होंने बहुतसी कवितायें रची हैं, जिनमेंसे एक नीचे दी जाती है:—

ए मन मेरो लागोरे श्याम सुन्दरवा सों।
गोकुलचन्द मनोहर मूरत चित चटको वाही नटवरवा सों॥

गोकुलजित् (सं० त्रि०) गोकुलं जयति जि-क्विप् तुगागमश्च। जिसने गोकुल जय किया है।

गोकुलजित्—एक स्मार्त पण्डित। इनके पिताका नाम हीरेलित् था। इन्होंने इलदुर्गाधिपति कल्याणवर्माके आदेशसे १६३२ ई०को संक्षेपतिथिनिर्णयसार नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया था।

गोकुलजी सम्पत्तिराम जाला—सुराष्ट्रके एक विख्यात वैदान्तिक एवं पारस्य संस्कृत और अङ्गरेजी भाषावित् पण्डित। आप एक समय जूनागढ़के प्रधान सचिव थे। लड़कपनसे ही आपको वेदान्तमें अनुराग उत्पन्न हुआ। एक समय जब जूनागढ़में रामबाबा नामक एक वैदान्तिक

सन्यासी आये थे, तब आपने उनके मुखसे वेदान्तका विमल उपदेश सुनकर उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। तत्पश्चात् आपने परमहंस सच्चिदानन्द स्वामीके निकट वेदान्तका गूढ़ तात्पर्य मालूम किया। इसके थोड़े समय के बाद आपने उक्त पदगौरव और विषयसम्पत्ति परित्याग कर वानप्रस्थ अवलम्बन किया। उन्नीसवीं शताब्दीके शेष भागमें आपने ईश्वरके ध्यानमें ही अपना जीवन उत्सर्ग किया।

गोकुलदेव—तीर्थकल्पलता नामक संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार।

गोकुलनाथ—एक विख्यात पण्डित। इन्होंने सुललित संस्कृत भाषामें करणप्रबोध, प्रमाणप्रबोध, भक्तिरसामृत सिंधु, शाण्डिल्यसूत्रकी भक्तिसिद्धान्तविवृति नामक टीका प्रणयन की है।

२ जयविलास नामका संस्कृत ज्योतिःशास्त्रकार।

३ मिथिलाके एक प्रधान पण्डित। यह मैथिल महामहोपाध्याय नामसे प्रसिद्ध हैं। यों तो इन्होंने बहुतसे संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। परन्तु उनमें निम्नलिखित ग्रन्थ ही प्रधान हैं—द्वैतनिर्णयको कादम्बरी नाम्नी टीका मास मीमांसा, रसमहार्णव, शिवशतकस्तोत्र, रश्मिचक्रतत्त्व, चिन्तामणिटीका तत्त्वचिन्तामणिदीधितिद्योत, तर्कतत्त्व निरूपण, न्यायसिद्धान्ततत्त्व और पदवाक्यरत्नाकर।

४ काशीके रहनेवाले एक विख्यात हिन्दी कवि। ये कवि रघुनाथके पुत्र थे। पञ्चक्रोशीके अन्तर्गत चौरागांवमें इनका जन्म हुआ था। काशीराज चेतसिंह कविके प्रतिपालक थे। प्रतिपालकके इतिहास अवलम्बन कर इन्होंने चेतचन्द्रिका नामक ग्रन्थ, गोविन्दसुखदविहार और हिन्दी भाषामें महाभारत तथा हरिवंशका अनुवाद रचना किया।

गोकुलप्रसाद—एक हिन्दी कवि। ये कायस्थ जातिके थे। गोंडा जिलेके अन्तर्गत बलरामपुरमें ये रहते थे। इन्होंने राजा दिग्विजयसिंहसे सम्मानार्थ १८४८ ई०में दिग्विजयभूषणकी रचना की थी, जिसमें प्रायः १६२ हिन्दी कवियोंकी कविताओंका संग्रह है।

गोकुलविहारी—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनका जन्म १६०१ ई०में हुआ था।

गोकुलभट्ट—हरिरायकी वेदान्तकारिका ग्रन्थका एक टीकाकार।

गोकुलस्थ (सं० त्रि०) गोकुले तिष्ठति गोकुल स्था क। १ गोकुलवासी जो गोकुल ग्राममें रहता हो। कृष्ण उपासक सम्प्रदायविशेष। ३ तैलङ्ग ब्राह्मणोंका एक भेद।

गोकुलाष्टमी (सं० स्त्री०) गवां कुलं पूजनीयं यस्या, बहुव्री०। तादृशी अष्टमी, कर्मधा० पुं वद्भावश्च। दाक्षिणात्यमें श्रीकृष्णकी जन्माष्टमी इसी नामसे प्रसिद्ध है।

जन्माष्टमी देखो।

गोकलिक (सं० त्रि०) गोनिवस्य कुलमत्र गोकुल ठन्। १ कंकर, पंचा, भेंगा। गविपङ्कस्थगव्या कुलिक जड़ इव। पङ्कस्थ गव्युपेक्षक, पङ्कमें गिरी हुई गायकी उपेक्षा करनेवाला।

गोकुलेश—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनकी बनाई हुई बहुतसी अच्छी अच्छी कवितायें हैं जिनमेंसे कुछ नीचे दिये जाते हैं—

आली तू भी जात मधुबनको गलियन छल ब्रजराज छ्री वर मैति छोरी।
गुलाल अबीर रंग कुछ ना माजन भरै भरो है भोरो॥
सांझ सकाल ग्वाल सब बालक करत कोलाहल अतिशय भोरी।
यह विधि क्यों सहि है सिय गोकुलेश प्रिय रसिक किशोरी॥
नहु न बक रहे हैं बिहारीनाथ गोवर्द्धनधारी।
ग्वालबाल सब संग सखा लिए और सकल ब्रजनारी॥
नाचत गोवा नन्द घर रूप मोहनको मनहारी।
गोकुलेश प्रभु होरी खेले गावत दे [illegible] तारी॥

गोकुलोद्भवा (सं० स्त्री०) गोकुले उद्भवं यस्या, बहुव्री०। दुर्गा, महामाया।

गोकृत (सं० क्ली०) गोभिः कृत, ३-तत्। १ गोमय, गोबर। (त्रि०) २ गोकर्तृक अनुष्ठित।

गोकोस (हिं० पु०) १ उतनी दूरी जहां तक गौके बोलने का शब्द सुन पड़े। २ छोटा कोस, हलका कोस।

गोक्ष (सं० पु०) जोंक नामक कीड़ा।

गोक्षीर (सं० क्ली०) गवां क्षीरं, ६-तत्। गोदुग्ध, गायका दूध।

गोक्षीरज (सं० क्ली०) गोक्षीरात् जायते जन् ड। १ घृत, घी। २ तवक्षीर, तमसे, खीर।

गोक्षुर (सं० पु०) गो पृथिव्या क्षुर इव। १ गोखरू नामक क्षुप या उसका फल (Tribulus lanuginosus)

इसका संस्कृत पर्याय—त्रिकण्ट, स्थलशृङ्गाट, गोकण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, क्षुर, गोक्षुरक, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टक, गोकण्ट, वनशृङ्गाटक, क्षुरक, भक्ष्यकण्ट, इक्षुगन्धिका, क्षुरङ्ग, श्वदंष्ट्रका, कण्टकी, भद्रकण्ट, व्यालदंष्ट्र, पडङ्ग, गोखूर, त्रिकट त्रिक और इक्षुर है। गोखरू देखनेमें चना या बूंटके सदृश होता है।

इसका गुण—शीतल, बलकर, मधुर, बृंहण, कृच्छ्र, अश्मरी, मोह और दाहनाशक एवं रसायन है। भाव प्रकाशके मतसे इसका गुण—स्वादु, वस्तिशोधक, दीपन, पुष्टिकर, श्वासकास, अर्श और व्रणनाशक है। राजवल्लभके मतमें गोक्षुरका गुण—वायुनाशक एवं हृष्य है। इसके शाकका गुण—तिक्त, हृष्य और स्रोतशोधक है। गोक्षुरके दो भेद है—क्षुद्राकार और बृहत्। इन दोनोंमें बृहत् गोक्षुर ही प्रशस्त है। दुर्भिक्षके समय पश्चिमाञ्चलके मनुष्य गोक्षुरके बीजको चूर्ण कर जीवन पालते है।

२ एक तरहका वृक्ष। (Ruellia longifolia) ३ गोखरूके फलके आकारके धातुके बने हुए गोल कंटीले टुकडे। मस्त हाथियोंको पकड़नेके लिए ये टुकडे उनके रास्तेमें फैला दिये जाते हैं। चलते समय जब ये उनके पैरोंमें चुभ जाते तो ये चल नहीं सकते। ४ एक प्रकार का साज जो गोटे और बादलेके तारोंसे गूथ कर बनाया जाता है। ५ एक प्रकारका आभूषण जो कड़ेके आकारका होता है। यह हाथों और पैरोंमें पहना जाता है। ६ कांटा गड़नेके कारण तलवे हथेली आदिमें पड़ा हुआ घट्टा।

गोक्षुरक (सं० पु०) गोक्षुर स्वार्थे कन्। गोक्षुर देखो।

गोक्षुरादिगण (सं० पु०) गोक्षुर आदिर्यस्य, बहुव्री० ततः कर्मधा०। भैषज्यशास्त्रोक्त एक गण। गोक्षुर, क्षुरक, व्याघ्री, सिंहपुच्छी और कुशिम्बिका, इन सबको गोक्षुरादिगण कहते हैं। इसका गुण वातश्लेष्म नाशक है।

गोक्षुरि (सं० पु०-स्त्री०) गोक्षुर देखो।

गोक्षुरीबीज (सं० क्ली०) गोक्षुर्या बीजं, ६ तत्। गोक्षुरका बीज। इसका गुण-शीतल, मूत्रवृद्धिकर, शोथनाशक हृष्य, आयुष्कर, शुक्र, मेह और कृच्छ्र नाशक है।

(भावप्रकाश)

गोक्षोदक (सं० पु०-स्त्री०) एक प्रकारका पक्षी। पतुर देखो।

गोखग (हिं० पु०) थलचर, पशु, जानवर।

गोखले—दक्षिण प्रान्तके कोंकनस्थ ब्राह्मण सम्प्रदायकी एक उपाधि। ये महाराष्ट्र जातिके अन्तर्गत हैं और पूना, सतारा और कोल्हापुरमें रहते हैं। पूनेमें इस श्रेणीके ब्राह्मणोंकी बड़ी प्रतिष्ठा है। इस जातिमें ऐसी प्रथा है कि हरएक मनुष्यके नामके साथ उसके पिताका नाम भी साथमें ही बोला जाता है। इस जातिमें बडे बड़े भारतके भूषण अनेकों भद्र पुरुष हो गये हैं जिनमेंसे सुप्रसिद्ध लोकमान्य प्रातःस्मरणीय महात्मा गोपाल कृष्ण गोखलेको कौन नहीं जानता।

गोखरू (हिं०) गोक्षुर देखो।

गोखा (सं० स्त्री०) गां भूमिं खनत्यनया खन-ड। १ नख, नाखून।

गोखा (हिं० पु०) १ मोखा, झरोखा।

गोखुर (सं० पु०) खुरति विलिखति खुर-अच्। १ अस्त्रविशेष। गोः पृथिव्याः खुर इव। २ गोक्षुरवृक्ष, गोखरूका पेड़। (क्ली०) गवां खुरं, ६-तत्। ३ गौके खुर।

गोखुरा—एक तरहका तीव्र विषधर सर्प, करैत सांप। इसका फन गौके खुरका जैसा होता है, इसी लिये इसका नाम गोखुरा पड़ा। सर्प देखो।

गोखुरि (सं० पु०) गवां खुरैरिव। गोक्षुर देखो।

गोगा (हिं० पु०) छोटा काँटा, मेख।

गोगा चौहान—१ एक सिद्ध वीरपुरुष। हिमालयसे नर्मदा तक क्या हिन्दू क्या मुसलमान सबके सब इन महापुरुषकी भक्ति श्रद्धा किया करते हैं। हिन्दू इन्हें गोगा चौहान या गोगा वीर तथा मुसलमान "गोगापीर" वा "जाहिरपीर" कहा करते हैं। हिन्दुओंका कथन है कि घर्घरा नदीके तट पर धर्मरक्षाके लिये इन्होंने मुसलमानोंके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था। इसीलिये ये पूजनीय हैं। मुसलमान कहते हैं कि गोगा इस्लाम् धर्ममें दीक्षित होनेके कारण उन लोगोंके सम्मानार्ह थे।

प्रवाद ऐसा है—बागड़ देशसे राजा वत्सराज चौहानने तोमरराज जयमलकी दो कन्यायोंसे विवाह किया था। उन कन्याओंके नाम वाचल और काचल थे। वाचलका दूसरा नाम शीलवती था। यमुना तीरस्थ शिर्शावा नगरमें दोनों कन्यायोंका जन्म हुआ था। बहुत

दिन तक उनके कोई सन्तान न हुई। स योगवश गुरु गोरक्षनाथ वागडदेशको था राजोद्यानमें अवस्थान करने लगे। बहुत दिनों तक बाचल रानीने गोरक्षनाथकी सेवा शुश्रुषा की। एक दिन काचल अपनी बहिनका पोषाक पहन गोरक्षनाथके निकट आकर आशीर्वाद प्रार्थना करने लगी। महापुरुषने उसे दो जो खानेके लिए देकर कहा कि इसीसे दो पुत्र उत्पन्न होंगे। अन्तको बाचल गुरुके सामने उपस्थित हुई। अपनी बहनकी चातुरी तथा अपना दुःख जना कर रोने लगी। अनेक अनुनय विनयके अनन्तर गोरक्षनाथने उसे एक गुग्गुल देकर कहा—तुम्हारे बहनके पुत्रके दास होंगे। यथा समय शीलवती रानीको गर्भ रहा। काचलने उसके गर्भको नष्ट करनेकी बहुत चेष्टायें कीं परन्तु सब निष्फल गईं। ८ मास गर्भधारण कर बाचलने भाद्रमासकी नवमी तिथिमें एक पुत्र रत्न प्रसव किया। गुग्गुलसे जन्म होनेके कारण पुत्र का नाम गुगा या गोगा पड़ा। यथाकाल गोगा वागडदेशके राजा हुए। काचलके दो पुत्र अर्जुन और सुर्जनने दिल्लीके राजाकी सहायता या वागड देश पर अधिकार करनेकी चेष्टा की। किन्तु गोगाने दोनोंको परास्त तथा निहत कर उनके छिन्न मुण्डको अपनी माताके पास भेजवा दिया। रानी बाचल अपने पुत्रके दुर्व्यवहार पर अत्यन्त सन्तप्त और क्रुद्ध हो उठी और शोक प्रगट कर बोली—जिस स्थान में मेरी बहिनके लड़के गये उसी स्थान पर मेरे पुत्र भी जाय। माताको इस वचनसे गोगाके हृदयमें एक भारी आघात पहुंचा और तब प्रार्थना कर पृथ्वीसे बोले—"माता वसुन्धरे! आप विदीर्ण हो जावें और मैं आपकी गोदमें शयन करूं, इस पाप मुखको अब किसीसे दिखानेकी इच्छा नहीं करता।" उनकी प्रार्थना पर पृथ्वी विदीर्ण हो गई और वे जवादिया नामक घोड़े पर चढ भूगर्भमें सदाके लिये छिप रहे।

अवशेषको वे एक दिन जवादिया घोड़े पर चढ पर्वत को छेदते हुए बाहर निकल उठे। उनकी वह अश्वारोही प्रस्तरमय भीममूर्त्ति राजस्थानके मन्दर राजधानी में आज तक भी रक्षित है।

मुसलमानोंका ख्याल है कि गोगापीरको प्रार्थनासे पहले पृथ्वी नहीं फटी किन्तु जब वे मक्का जा रतन हाजीका शिष्यत्व ग्रहण कर लौटे तब वसुन्धराने उन्हें ग्रहण किया था। गोगाको स्त्रीका नाम शिरियाल था। प्रति रात्रिको जाहिरपीर अपनी स्त्रीसे मुलाकात करते तथा उसे भांति भांतिके अलङ्कारसे भूषित करते थे।

पश्चिमाञ्चलकी रमणियां गोगाके जन्म तिथि उत्सवमें उनका स्तुतिगान किया करती हैं। किसी किसीके मत से गोगा दिल्लीपति पृथ्विराजके सम सामयिक थे। राजस्थानके मरुवासी गोगावत् नामक राजपूत उनके वंशधर हैं। इसके अतिरिक्त इसलामधर्मावलम्बी बहुतसे चौहान अपनेको गोगाके वंशीय बतलाते हैं। जाहिर देखो।

२ माचाडाके एक राजा, आसलदेवके पुत्र। फिरोज शाहके राजत्व कालमें १३०४ ई०का उत्कीर्ण इनका एक शिलालेख पाया जाता है। (Cunnigham's Ach. Sur. Report Uol VI Plat IIIX)

गोगापीर (हिं० पु०) एक पीर वा साधु। राजपुताना तथा पञ्जाब देशोंकी नीच जातिके हिन्दु और मुसलमान इनकी पूजा करते हैं। गोगाचौहान् देखो।

गोगृष्टि (सं० स्त्री०) गोश्वासौ गृष्टिश्चेति कर्मधा०। एक बार प्रसूता गाभी, वह गाय जिसने सिर्फ एक बार बच्चा दिया हो।

गोगोयुग (सं० क्ली०) गोर्द्वित्व गो द्वित्वार्थे गो युगच् प्रत्ययः। गौका द्वित्व संख्या। गाय या बैलकी जोड़ी। (मुग्धबोध)

गोगूड—राजपूतानास्थ उदयपुरके गोगूड राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २४ ॥६´ उ० और देशा० ७३ ३२´ पू०में अरावली पर्वत पर समुद्रपृष्ठसे ३७५७ फुट ऊंचे अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः २४६१ है। इस राज्यमें ७५ गांव आबाद हैं। राजा झाला राजपूत वंशीय सरदार हैं। राज्यका आय प्रायः २४०००) रु० है। २०४०) रु० कर उदयपुर दरबारको दिया जाता है।

गोगोष्ठ (सं० क्ली०) गो स्थान गोस्थानार्थे गोष्ठच् प्रत्यय। गोस्थान, गाय रहनेका स्थान।

गोग्रन्थि (सं० पु०) गोभ्यो जातो ग्रन्थिरिव। १ करीष शुष्क गोमय, सूखा गोबर। गोर्ग्रन्थिर्यत्र, बहुव्री०। २ गोष्ठ, गौ रहनेकी जगह, गोशाला। ३ गोजिह्विका, एक तरहकी औषध।

गोग्रास (सं० पु०) मिड अन्न जो खानेके समय वा श्राद्धादिकके आरम्भमें गौके लिये अलग रख दिया जाता है।

गोघरी (हिं० स्त्री०) भडौंच और बरोदामें होनेवाली एक प्रकारकी कपास।

गोघा— बम्बई प्रान्तके अहमदाबाद जिलेमें धनधुक तालुकका नगर। यह अक्षा० २१° ४१´ उ० और देशा० ७२° १७´ पू०में खम्भातकी खाडी पर पडता है। जनसंख्या कोई ४७८८ है। नगरसे पौन मील दूर एक अच्छा बन्दर है। वल्भी राजाओंके समय सम्भवतः उसे गुण्डीगर कहते थे। १३२१ ई०में फ्रियर जोर डानसने उसको Caga जैसा लिखा। गोघाके लोग भारतवर्षमें सबसे अच्छे मल्लाह समझे जाते हैं। यहां जहाज रसद पानी ले और मरम्मत करा सकते हैं। मुंहानेके दक्षिण जो आलोकस्तम्भ बना, १० मील तक देख पडता है। कुछ वर्षसे इसका काम काज बिगड़ गया है। अमेरिकामें जब गृहयुद्ध चलता, यह काठियावाडमें रूईका खास बाजार था। नगरसे उत्तर और दक्षिण नमकके झील हैं। १८५५ ई०को मुनिसपालिटी हुई।

गोघात (सं० पु०) गां हन्ति गो-हन् अण्। गोहन्ता, गोहत्या।

गोघातक (सं० पु०) गवां घातकः, ६-तत्। गोहत्याकारी, गोहिंसक, गायको मारनेवाला, बूचर, कसाई।

गोघातिन् (सं० त्रि०) गां हन्ति गो-हन्-णिनि। गोघातक देखो।

गोघृत (सं० क्लो०) गोः पृथिव्याः घृतमिव शस्यपोषकत्वात्। १ वृष्टिजल, वर्षाका पानी। गोर्घृतं, ६-तत्। २ गव्यघृत, गौका घी। घृत देखो।

गोघ्न (सं० पु०) १ गोको मारनेवाला, गौका वध करनेवाला। २ अतिथि, मेहमान, पाहुना। प्राचीन समयमें किसी अतिथिके आने पर मधुपर्कके लिए गोहत्या करनेको प्रथा थी, इसीसे अतिथिका नाम गोघ्न पडा है।

गोङ्गधिकारी—कनाड़ा जिलेके मेलापुर और सिद्दापुरमे रहनेवाली एक नीच जाति। ये शहर और ग्रामोंमें हिन्दुओंके साथ रहते हैं। कहा जाता है कि, ये महिसुरसे आकर उक्त देशोंमें बस गये हैं। इनकी मातृभाषा कनाड़ी है। ये वीरभद्रको अपना कुलदेवता मानते हैं। इनकी दो शाखायें हैं—हम्सोमरु और मुलजनम। एक दूसरेमे आदान प्रदान चलता है। ये नाटे और मजबूत होते, इनकी नाक चिपटी होती और शरीरका रंग काला होता है। इनका प्रधान भोजन चावल है। ये शराब नहीं पीते लेकिन मांस मछली इत्यादि खाते हैं। इनके कपड़े लत्ते बहुत मैले रहते हैं। ये सच्चे, ईमानदार और शान्त स्वभावके होते हैं। ये ब्राह्मणोंको अपना पुरोहित मानते हैं। नीच जातिके होने पर भी ये कट्टर धार्मिक होते हैं। ये अपने घरमें कुलदेवताकी मूर्त्ति स्थापन करते और प्रतिदिन भक्तिपूर्वक उनकी पूजा किया करते हैं। मृतदेहको ये पृथ्वीमें गाड़ देते हैं और तेरह दिनों तक अशौच मानते हैं।

गोचना (हिं० क्रि०) रोकना छेंकना, किसी चीजको चाल रोकना। (पु०) चना मिश्रित गेहूं।

गोचनी (हिं० स्त्री०) गोचना देखो।

गोचन्दन (सं० क्लो०) गोशीर्षाख्यं चन्दनं, मध्यपदलो०। सुश्रुतके अनुसार एक प्रकारका चन्दन।

(सुश्रुत चिकित्सा० २६ अ०)

गोचन्दना (सं० स्त्री०) एक प्रकारकी जोंक। सुश्रुतका मत है कि जिस जोंकका अधोभाग या पुच्छदेश गोवृषणकी नाईं दो भागोंमें विभक्त एवं मुख बहुत छोटा हो वही गोचन्दना कहलाता है। इसके काटनेसे मूर्च्छा, ज्वर, दाह, वमन, मत्तता या मनकी विकृति और शरीरको अवसन्नता होती है, और काटाहुआ स्थान सूज आता है। ऐसी अवस्थामें 'अगद' नामक औषधका पीना, दंशनस्थान पर लेप देना और उसका नस लेना उपयोगी है।

गोचर (सं० पु०) गाव इन्द्रियाणि चरन्त्यस्मिन् गो-चर अच्। गचर सञ्चर वह व्रज व्यज आपण निगमाश्च। पा ३।३।११९। १ इन्द्रिय जिसे ग्रहण करती है, विषय, रूपरस आदि।

"घ्राणस्य गोचरो गन्धः।" (भाषा-परि०)

२ ज्ञानविषय। "असत्तम शयगोचरोदरो।" (नैषध०)

(त्रि०) गवि भूमौ चरति गो-चर कर्त्तरि अच। ३ भूचर, जमीन पर रहनेवाला।

(पु०) गावश्चरन्त्यस्मिन् पूर्ववत्साधु। ४ गोप्रचारका स्थान, गोष्ठ, चरागाह, चरी।

"[illegible] (किरात० ३।१०)

५ गन्तव्य देश।

'[illegible]' (कठोपनिषत्)

६ नेत्र।

'[illegible]' (रामायण ३।[illegible])

'[illegible]'

गावो व्योमगतयो [illegible] पर्यंवत् साधु।

७ जन्मराशि तक ग्रहाक्रान्त राशिका नाम। फलित ज्योतिषके मतसे ग्रह अपनी गतिके अनुसार जिस राशिमें अवस्थित हो, वह राशि जन्मराशिको अपेक्षा जिस संख्या की राशि होती है, उस संख्यावाली राशिके शुद्ध होने पर ग्रह शुभफल देता है और अशुद्ध होनेसे अशुभफल देता है। ग्रहके लिए कोई भी राशि अशुद्ध या बुरी नहीं है। परन्तु ज्योतिषशास्त्रोंसे जन्मराशिकी अपेक्षा किसी किसी राशिमें ग्रहका रहना शुभ माना गया है और किसी किसी राशिमें अशुभ ऐसा निश्चित हुआ है। जिस स्थान पर जिस ग्रहकी अवस्थिति शुभप्रद है वही ग्रह उस राशिमें रहनेसे उसे गोचर शुद्धि और जिस राशिमें रहनेसे शुभ फल हो, उस स्थानमें ग्रहके ठहरने से गोचर शुद्धि कही जाती है।

वैज्ञानिक मतानुसार—मनुष्य अपने अपने कर्मोंके अनुसार समय समय पर सुखी और दुःखी हुआ करते हैं। ग्रहोंमें से ग्रह उसमें कारण नहीं। परन्तु ग्रहोंके अवस्थान के अनुसार मानव और जन्तुओंका भावी मङ्गल या विप त्तियोंका अनुमान किया जा सकता है। ग्रहोंके अनु सार भविष्यमें विपत्तिकी सम्भावना होने पर, उसको रोकनेके लिए शान्तिका अनुष्ठान करनेसे फिर विपत्पात नहीं होता पड़ता। किसी किसी ज्योतिषिकका मत है कि दूसरे कारणोंसे भी ग्रहोंका अवस्थान भी अथवा है सुख दुःखमें अन्यतम कारण है। कुछ भी हो, ग्रहों के अवस्थानसे भी मनुष्योंके शुभाशुभ कर्मोंकी प्राप्ति होती है, इसे सब ही स्वीकार करते और पाश्चात्योंमें भी देखनेमें आता है। प्राचीन फलित ज्योतिषमें इस विषय में अनेक मतामत हैं। परन्तु प्राचीन आर्योंने ग्रहोंके अवस्थानके अनुसार किस तरहसे ऐसे फलाफलका निरू पण करते थे, उसका कोई भी उपाय उन्होंने प्रकाश नहीं किया। सिर्फ फल होता है—इतना ही निरूपण कर गये हैं।

केतु राहु रवि, चन्द्र, मङ्गल और शनि ये सब ग्रह जन्मराशिसे तृतीय या षष्ठ स्थान पर रहें तो शुभ फल समझना चाहिये और जन्मराशिसे दशम स्थानमें हों तब भी शुभ फल समझना चाहिये। यदि ये ग्रह जन्म राशिसे सप्तम, नवम या पञ्चम स्थानमें रहें तो भी शुभ फल देते हैं। बुधके जन्मराशिमें अवस्थित रहनेसे और शुक्रके षष्ठ, सप्तम और दशमसे सिवा अन्य राशिमें रहने से शुभ फल होता है। एकादश राशिमें कोई भी ग्रह हो वह मनुष्यके लिये शुभ ही है। ग्रहगण वक्र अथवा अतिचार आदि कोई भी अवस्थामें क्यों न हो, सब ही दशामें शुभाशुभ फल देनेवाले होते हैं। सब ही ग्रह वक्री या अतिचारी हो कर जिस राशिमें ठहरेंगे, उसी राशिको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। परन्तु बुध और बृह स्पति जिस राशिमें वक्री या अतिचारी होंगे, उसी राशि का विपरीत फल देते हैं। चन्द्रको राशिमें जाते समय यदि नक्षत्र शुभ हो, तो सब ही राशिमें चन्द्र शुभ फल देता है और रविके चलते समय चन्द्रके शुद्ध रहने पर भी शुभ फल होता है। मङ्गल आदि ग्रहोंके सञ्चारकाल में यदि रवि शुद्ध रहे, तो भी शुभ फल होता है। रवि, मङ्गल और शनिके चलते समय यदि नाड़ीनक्षत्र हो, तो गोचर अच्छा अशुभ फल और क्लेश देता है।

चन्द्रादि और रवि [illegible]।

जन्मराशिमें चन्द्रके रहनेसे मिष्टान्न भोजन, शुक्रके रहने पर आमोद प्रमोद, रवि या मङ्गलके रहनेसे शत्रु- वृद्धि, शनिके रहनेसे धनहानि, बुधके रहनेसे धनलाभ और बृहस्पतिके रहनेसे शत्रुके धनको हानि और क्लेश उत्पन्न होता है।

द्वितीय स्थानमें यदि रवि रहे तो मित्रोंसे भय, चन्द्र रहे तो क्लेश, शनि रहे तो वित्तनाश, बुध हो तो लाभ, मङ्गल हो तो हानि, शुक्र हो तो भोग, और बृहस्पति रहे तो धनकी वृद्धि होती है।

तृतीय स्थानमें रवि, मङ्गल, शनि और शुक्र रहनेसे धनागमके लिए कोई एक स्थानकी प्राप्ति, चन्द्र और बुधके

रहने पर शत्रुनाश तथा वृहस्पतिके रहनेसे मानसिक पीड़ा उत्पन्न होती है।

चतुर्थ स्थानमें वृहस्पतिके रहनेसे मनुष्यमें शास्त्रोंके विरुद्धमें तीव्रबुद्धि पैदा होती है। रविके होनेसे महा दुःख, चन्द्रके रहनेसे उदररोग, बुधके रहनेसे आरोग्यता, शुक्रके रहनेसे रोगका नाश, मङ्गलके होनेसे शत्रुका भय और शनिके रहनेसे वित्तनाश होता है।

चन्द्र यदि जन्मराशिसे पञ्चम स्थानमें रहे तो दौर्भाग्य, मङ्गल होनेसे मानसिक उद्वेग, शनि होनेसे नाना प्रकार के दोषोंकी उत्पत्ति, रवि होनेसे प्रिय व्यक्तिका विच्छेद, बुध होनेसे दौर्भाग्य और वृहस्पतिके पञ्चम स्थानमें रहनेसे मनुष्यको सब विषयोंमें सुखकी प्राप्ति होती है।

छठे स्थानमें रवि, चन्द्र, मङ्गल, बुध और शनि ग्रह रहें, तो बहुत धनधान्यादिकी प्राप्ति होती है। वृहस्पतिके छठे स्थानमें रहनेसे शत्रुवृद्धि और मानसिक कष्ट होता है तथा शुक्र रहे तो नाना प्रकारकी शत्रुता नष्ट हो जाती है।

जन्मराशिकी अपेक्षा सातवीं राशिमें चन्द्र रहे तो स्त्रीलाभ, शनि रहे तो मानसिक उद्वेग, मङ्गल रहनेसे धनक्षय, वृहस्पतिके रहनेसे सम्पत्ति लाभ, शुक्रके रहनेसे रोगोंकी वृद्धि और रविके रहनेसे नाना प्रकारका अनिष्ट होता है।

मङ्गल यदि जन्मराशिसे अष्टम स्थानमें रहे तो अग्नि-भय, बुध रहे तो सुख, शनिसे धन हरण, शुक्रसे अर्थलाभ, रविसे मृत्यु, वृहस्पतिसे स्थानका नाश और चन्द्रके रहनेसे नेत्ररोग होता है।

जन्मराशिसे नौवें स्थानमें शनिके रहनेसे अर्थनाश, बुधसे रोग, मङ्गल या शुक्रसे अर्थलाभ, चन्द्रसे त्रास, रविसे शोक और क्लेश तथा वृहस्पतिके रहनेसे सम्मान और पशु आदिका लाभ होता है।

जन्मराशिसे दशवें स्थानमें बुधके रहनेसे मनमें सुस्थता, रविसे इच्छानुरूप कीर्ति, मङ्गलसे सम्पत्ति-लाभ चन्द्रसे प्रधान पदकी प्राप्ति, रविसे कार्यकी सिद्धि, शुक्रसे मित्रोंके यशकी वृद्धि और वृहस्पतिके रहनेसे प्रीतिकी हानि होती है।

रवि, चन्द्र, मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि—ये जन्म राशिके ग्यारहवें स्थानमें रहें तो मनुष्यके धन, धान्य और मानकी वृद्धि होती है। ग्यारहवें स्थानमें रह कर कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

वृहस्पति, रवि, शनि, राहु, मङ्गल और चन्द्रके जन्म राशिसे बारहवें स्थानमें जानेसे मनुष्यके लिए वध और बन्धनका भय रहता है। बुध या शुक्रके बारहवें स्थानमें रहनेसे धैर्यकी वृद्धि होती है।

किसी किसी ज्योतिषशास्त्रोंमें गोचरोंका फल इस प्रकार लिखा है,—रवि यदि जन्मराशिमें पहुंचे तो मनुष्य स्थानभ्रष्ट होता है। ऐसे हो द्वितीयस्थानमें रहनेसे भय, तृतीय स्थानमें स्त्रीलाभ चतुर्थमें मानहानि, पञ्चममें दैन्य, षष्ठमें शत्रुनाश, सप्तममें अर्थनाश, अष्टममें पीड़ा, नवममें कान्तिपुष्टि, दशममें कार्यकी सिद्धि, ग्यारहवेंमें सम्पत्ति वृद्धि और बारहवें स्थानमें रविके रहनेसे सम्पत्तिका नाश हो कर मनुष्य घोर विपत्तिमें पड़ जाता है।

जन्मराशिमें चन्द्रके रहनेसे अर्थलाभ, द्वितीयराशिमें चन्द्रके रहनेसे वित्तनाश, तृतीयमें द्रव्यलाभ, चतुर्थमें उदर पीड़ा, पञ्चममें कार्यहानि, छठे स्थानमें वित्तलाभ, सातवेंमें स्त्रीलाभ, आठवेंमें मृत्यु, नौवेंमें राजभय, दशवेंमें महासुख, ग्यारहवेंमें धनकी वृद्धि और बारहवें स्थानमें रहनेसे रोग और धनक्षय होता है।

जन्मराशिमें मङ्गलके रहनेसे शत्रुभय, द्वितीय स्थानमें रहनेसे धननाश, तृतीयमें अर्थलाभ, चौथेमें शत्रुभय, पाँचवेंमें प्राणनाश, छठेमें वित्तलाभ, सातवेंमें शोक, आठवेंमें अस्त्राघात, नौवेंमें कार्यहानि, दशवेंमें शुभ फल, ग्यारहवेंमें भूमिलाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे रोग, अर्थनाश और अमङ्गल होता है।

जन्मराशिमें बुध रहनेसे बन्धन, द्वितीयमें धनलाभ, तृतीयमें धन और शत्रुकी वृद्धि, चौथेमें अर्थलाभ, पाँचवेंमें तङ्गी, छठेमें अशुभ फल, सातवेंमें नाना तरहके रोग और विपत्तियां, आठवेंमें धनलाभ, नौवेंमें असाध्य रोग, दसवेंमें शुभफल, ग्यारहवेंमें अर्थलाभ और बारहवें स्थानमें जानेसे वित्तलाभ होता है।

जन्मराशिमें वृहस्पतिके रहनेसे भय, द्वितीय स्थानमें वृहस्पतिके रहनेसे अर्थलाभ, तीसरेमें शारीरिक क्लेश, चौथेमें अर्थनाश, पांचवेंमें शुभ फल, छठेमें अशुभफल,

सातवेंमें राजपूजा, आठवेंमें धननाश, नौवेंमें धनवृद्धि, दशवेंमें प्रीतिनाश, ग्यारहवेंमें धनलाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे शारीरिक और मानसिक पीड़ा होती है।

शुक्र यदि जन्मराशिमें रहे तो शत्रुनाश, द्वितीय स्थानमें रहनेसे अर्थलाभ, तृतीयमें शुभफल, चौथेमें धनलाभ, पांचवेंमें पुत्रलाभ, छठेमें शत्रुवृद्धि सातवेंमें शोक, आठवेंमें अर्थलाभ, नौवेंमें वस्त्रोंकी प्राप्ति, दशवेंमें शुभफल, ग्यारहवेंमें बहुतर धनका लाभ और बारहवें स्थानमें रहनेसे धनका आगमन होता है।

शनि जन्मराशिमें रहनेसे वित्तनाश और सन्ताप, द्वितीय स्थानमें चित्तमें क्लेश, तीसरेमें शत्रुनाश और वित्तलाभ, चौथेमें शत्रुओंकी वृद्धि, पांचवेंमें पुत्र और भृत्यादिका नाश, छठेमें अर्थलाभ, सातवेंमें अनिष्ट, आठवेंमें शारीरिक पीड़ा, नौवेंमें धनक्षय, दशवेंमें मानसिक उद्वेग, ग्यारहवेंमें वित्तलाभ और बारहवेंमें स्थानमें शनि रहनेसे निश्चयत अमङ्गल होता है।

जन्मराशिमें द्वितीय, पञ्चम, सप्तम, अष्टम, नवम, और दशम राशिमें राहु रहनेसे अर्थका क्षय, शत्रु का भय, कार्यकी हानि, रोग, अग्निभय और मृत्यु हुआ करती है। इनके अलावा दूसरे स्थानोंमें राहुके रहनेसे कोई अनिष्ट नहीं होता, बल्कि शुभफल ही होता है।

जन्मराशिमें ग्यारहवीं, तीसरी, दसवीं या छठी राशिमें केतु रहे तो सम्मान, भोग, राजपूजा, सुख और अर्थलाभ होता है और आज्ञाकारी पुरुष या स्त्रीसे सुखभोग और पुण्य सञ्चय होता है।

गोचरके ग्रहोंका फलाफलनिर्णय—रवि और मङ्गल ये दो ग्रह प्रवेश करते समय फल देते हैं। बृहस्पति और शुक्र ये दोनों मध्य समयमें, शनि और चन्द्र आखिरमें तथा बुध ग्रह हरवक्त अपना फल देता रहता है।

रवि चन्द्र आदि शब्दोंमें विशेष विवरण देखो।

मुहूर्तचिन्तामणिके मतानुसार—सूर्य गन्तव्य राशिमें पहले पांचदिन फल देता है। मङ्गल गन्तव्य राशिमें पहिले आठ दिन, बुध गन्तव्यराशिमें पहले सातदिन, चन्द्र गन्तव्य राशिमें पहले तीन दण्ड, राहु गन्तव्यराशिमें पहिले तीन मास, शनि छः मास और बृहस्पति दो मास पहले अपना फल देता है।

रवि और मङ्गल प्रथम दशाओंमें रह कर ही अपना सम्पूर्ण फल दे देता है। इसके सिवा दूसरे अंशोंमें रहते हुए कुछ कुछ फल होता रहता है। इसी प्रकार शुक्र और बृहस्पति बीचके दशाओंमें, बुध तीस अंशोंमें, चन्द्र और शनि चरम दशाओंमें रहते हुए फल देते हैं। इसके सिवा दूसरे अंशमें रहते हुए थोड़ा फल देते हैं। ग्रह यदि गोचरमें विरुद्ध हों, तो शान्तिके लिए दान और ग्रहपुरश्चरणादि करना पड़ता है। इससे फिर किसी तरहके अमङ्गलकी सम्भावना नहीं रहती।

गोचरी (हिं॰ स्त्री॰) भिक्षावृत्ति, भीख मांगनेका पेशा।

गोचर्म (सं॰ क्ली॰) गवां चर्म ६ तत्। १ गौका चमड़ा। तन्त्रमें लिखा है कि स्तम्भनकार्यमें गो चर्म पर बैठना उचित है। २ परिमाणविशेष, एक नाप। बृहस्पति के मतसे सात हाथका एक दण्ड, तीस दण्डका एक निवर्तन एवं दश निवर्तनका एक गो चर्म अर्थात् २१०० हाथ लम्बी और इतनी ही चौड़ी होती है। महाभारतमें लिखा है कि जो एक गोचर्मपरिमित भूमि दान करता है उसका ज्ञान और अज्ञानकृत समस्त पाप विनष्ट हो जाते हैं। (अनुशासन ९९ अ॰)

गोचर्मकर्पटक (सं॰ पु॰) पर्पटक, औषध उपयोगी एक तरहका पौधा।

गोचर्मवसन (सं॰ पु॰) गोचर्म वसनं यस्य, बहुव्री॰। महादेव, शिव। (भारत १३।१७ अ॰)

गोचारक (सं॰ त्रि) गा चारयति घासादि गो चर णिच् ण्वुल्। गोरक्षक, गौकी रक्षा या पालन पोषण करने वाला।

गोचारण (सं॰ क्ली॰) गवां चारणं ६ तत्। गौका चराना, गौको खिलानेकी क्रिया।

गोचारिन (सं॰ त्रि॰) गौरिव चरति चर णिनि। गौके पीछे पीछे चलनेवाला, एक तरहका तपस्वी।

(भारत अनु॰ १०)

गोची (सं॰ स्त्री॰) गामञ्चति अनच् क्विप ङीप् नलोपे अलोप। १ मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली। गां शिवमुतिरूपां वाच अञ्चति अनच् क्विप् ङीप। २ हिमालयपत्नी हिमालयकी स्त्रीका नाम।

गोच्छगल (सं॰ पु॰ क्ली॰) गोमय, गोबर।

गोच्छाल (सं० पु०) गां भूमिं छादयति छद-णिच् अच् पृषोदरादित्वात् साधु। भूकदम्ब, कुकुरमिस नामका पौदा।

गोच्छाला (सं० स्त्री०) गोरक्षतुण्डी।

गोज (सं० पु०) सङ्कर जातिविशेष। उशनाका मत है कि प्रसाद क्रमसे नृपके औरससे नृपाके गर्भमें जो पुत्र उत्पन्न होता है उसे गोज कहते हैं। यह जाति भी क्षत्रियान्तर्गत मानी गई है, क्योंकि इनका आचार व्यवहार क्षत्रियोंकी नाईं है, किन्तु इनमें अभिषेकको प्रथा नहीं है।

(क्ली०) २ गौ वा छागी (बकरी) दुग्धका विकार विशेष। भावप्रकाशमें लिखा है कि, गोदुग्ध या छागी दुग्धसे जो फेन उत्पन्न होता है, उसे गोज वा गोफेन कहते हैं।

इसका गुण—त्रिदोषघ्न, रुचिकारक, बलवृद्धिकर, अग्निवर्द्धक, हितकर, भोजन मात्रमें तृप्तिकारक, लघु, अतीसार, अग्निमान्द्य और जीर्णज्वरमें प्रशस्त है। (भावप्र० पूर्वखण्ड २ भाग)

(त्रि०) ३ गोजात, गायसे जो उत्पन्न हो। यथा—दुग्ध, दही, घृत, मक्खन प्रभृति।

गोज (फा० पु०) अपान वायु, पाद।

गोजई (हिं० स्त्री०) गेहूं और जौ मिश्रित अन्न।

गोजर (सं० त्रि०) गोषु मध्ये जरो जीर्णः। वृद्ध बलीवर्द, बूढ़ाबैल। (भागवत ३।२०।२४)

गोजर—पञ्जाब प्रान्तके लायलपुर जिलेकी तोवटेक नहसीलका नगर। यह अक्षा० ३१° ८' उ० और देशा० ७२° ४२' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या कोई २५५८ होगी। यहां लायलपुर जैसी मण्डी लगती है। रूईके कई कारखाने हैं।

गोजरा (हिं० पु०) जौ मिश्रित गेहूं।

गोजल (सं० क्ली०) गवि जातं जलं। गोमूत्र, गायका मूत।

गोजा (सं० त्रि०) गवि पृथिव्यां व्रीह्यादिरूपेण जायते गो-जन विट् आत्वं। १ व्रीहि प्रभृति। (ऋक् ४।४०।५) धान, चावल, तण्डुल। (स्त्री०) २ गोलोमिका वृक्ष। (राजनि०) (त्रि०) ३ सुरभिजात, जो पृथ्वीसे उत्पन्न हो। ४ जो दूधसे प्रस्तुत किया गया हो।

गोजा (हिं० पु०) १ छड़ी या लाठी जिसके द्वारा चरवाहा गौ हाँकता है।

गोजागरिक (सं० क्ली०) गवि स्वार्थे जागरः अप्रमत्तता अस्य गोजागर-ठन्। १ मङ्गल, आनन्द। (पु०) गवि भूमौ जागरिकः प्रहरीव अस्त्रकण्टकाग्रधारित्वात्। २ कण्टका वृक्ष, एक तरहका पेड़ जो काँटेसे भरा रहता है। (त्रि०) गोषु व्रीह्यादिषु जागरोऽस्त्यस्य गोजागर-ठन्। ३ भक्ष्यद्रव्य रक्षा करनेवाला, पाचक, रसोईया।

गोजात (सं० पु०) गवि जातः। १ गो नामक पुलस्त्यको पत्नीका गर्भजात पुलस्त्यकी स्त्री 'गो'के गर्भसे जो उत्पन्न हुआ हो। (त्रि०) २ गायसे जो उत्पन्न हो। यथा घृत, दही प्रभृति। गोः स्वर्गात् जातः। ३ स्वर्गजात, जो स्वर्गमें उत्पन्न हो, जो स्वर्गमें वास करे। (ऋक् ७।३५।१४)

गोजापर्णी (सं० स्त्री०) गोजा दुग्धफेन इव शुभ्रत्वात् पर्णमस्य, बहुव्री०। गौरादित्वात् ङीप्। दुग्धफेनी वृक्ष, एक तरहका पेड़ जिससे दूधके फेनके जैसा रस निःसृत होता है दूधिया।

गोजि (सं०) गोजी देखो।

गोजिका (सं० स्त्री०) १ गोजिह्वा, गायकी जीभ। २ एक तरहकी लता।

गोजिकाण (सं० पु०) मध्यमाश्व, मध्य आकारका घोड़ा। अश्व देखो।

गोजित् (सं० त्रि०) गां पृथिवीं जयति गो-जि क्विप् तुगागमश्च। १ पृथ्वीको जय करनेवाला। (ऋक् २।२१।१) (पु०) २ राजा बाहुबलसे जो पृथ्वीको जय करता है उसीको गोजित् कहते हैं। ३ (क्रि०) गौका जीतना, गायका प्राप्त करना।

गोजिया (हिं० स्त्री०) गोजिह्वा, गोभी या बनगोभी नामकी घास।

गोजिह्वा (सं० स्त्री०) गोर्जिह्वेव। १ लताविशेष। (Premna Esculenta) औषधके काममें आनेवाली गोभी नामकी घास। इसका संस्कृत पर्याय—दार्विका, दर्विका, दाविपत्रिका, खरपत्नी, वातोना, अधोमुखा, अनडुज्जिह्वा, अधःपुष्पी, दर्वी और गोजिह्विका है।

इसका गुण—कटु, तीक्ष्ण, शीतल, विसर्प, दद्रु और विषार्त्तिनाशक एवं व्रण उत्पादक है। (राजनि०)

भावप्रकाशके मतमें इसका गुण वातवृद्धिकर, शीतल, ग्राही, कफ और पित्तनाशक, प्रमेह, काश, रक्त, व्रण और ज्वरनिवारक, लघु कषाय, तिक्तरस और स्वादुपाक है। २ गुन्द्रा, गटपटेर। ३ देवधान्य।

गोजिह्विका (सं॰ स्त्री॰) गोजिह्वा स्वार्थे कन् टाप् अत इत्वञ्च। गजिह्वा देखो।

गोजी (सं॰ स्त्री॰) १ गोजिह्वालता। (वैद्यक)

गोजी (हिं॰ स्त्री॰) १ गौ हांकनेकी छड़ी या लाठी। २ लट्ठ, बड़ी लाठी।

गोजीत (सं॰ त्रि॰) जितेन्द्रिय, जिसने इन्द्रियोंको जीत लिया हो।

गोजीर (सं॰ त्रि॰) पशुप्रेरक, जो स्तोतृगणके उद्देशमें पशुप्रेरणा करता है। (ऋक् ८।११०।४)

गोझनवट (हिं॰ पु॰) अंचल, पल्ला। स्त्रियोंकी साड़ीका वह अंश जो पीठ और सिर पर रहता है।

गोझा (हिं॰ पु॰) १ गुझिया, एक तरहका पकवान जो मैदे तथा मेवेके संयोगसे बनाया जाता है। २ एक प्रकारका कंटीला तृण। ३ जेब, खीसा, खलीता।

गोञ्जालिस्—एक विख्यात पोर्तगीज दस्यु (डकैत)। इसका यथार्थ नाम—सिवाष्टियाँ गोञ्जालिस था। १६०८ ई॰को आराकानसे जब पोर्तगीज दस्युका अड्डा (डेरा) उठाया गया और जब वे सनद्वीपमें आ बसे थे, उस समय गोञ्जालिस् एक सामान्य सैन्य और लवण-व्यवसायी था। इससे कुछ पीछे एक आराकान राजाने स्वराज्यसे भगाये जाने पर सनद्वीपमें आ आश्रय ग्रहण किया था। यहां राजाकी गुञ्जालिसने सहायता दी एवं मग सैन्योंको पराजय कर उसने अपनेको स्वाधीन राजा के जैसा घोषणा कर दी। उस दुष्टने आश्रित राजाकी बहनसे बलपूर्वक विवाह कर लिया और गुप्त रीतिसे राजाको मार डाला। इसके अनन्तर गोआके पोर्तगीज राजप्रतिनिधिको आराकान पर आक्रमणके लिए बुलाया।

१६१५ ई॰को गोञ्जालिस् ५० हजार सैन्य लेकर आराकान पहुंचा। उसके अत्याचारसे मग जातिने नितान्त उत्पीड़ित हो ओलन्दाजका साहाय्य ग्रहण किया। ओलन्दाज तथा आराकान राजको सेनाओंने एकत्र हो दस्युपति गोञ्जालिस् पर आक्रमण किया। इस युद्धमें पोर्तगोजके नौ सेनापति निहत हुए, बादको गोञ्जालिस् अपनी सहाय सम्पत्ति खोकर बहुत कष्टसे मरा।

गोट (हिं॰ स्त्री॰) गोठ, कपड़े के किनारे शोभाके लिए लगाये जानेवाली फीता, मगजी। २ किसी तरहका किनारा। (पु॰) ३ गोष्ठ, गांव, खेड़ा, टोली। (स्त्री॰) ४ मण्डली, गोष्ठी। ५ नगरके बाहर किसी बाग या उपवनकी सैर या परिभ्रमण।

गोटवस्ती (हिं॰ स्त्री॰) वह जमीन जिस पर ग्राम बसा हो।

गोटा (हिं॰ पु॰) १ सुनहले रंगका पतला फीता, जो वस्त्रके किनारे शोभा बढ़ानेके लिये लगाया जाता है। २ भूनी या सादी धनियाकी गिरी। ३ इलायची सुपारी और खरबूजे तथा बादामके एकत्र छोटे छोटे खण्डोंकी गिरी। ४ सूखा हुवा मल, कंडी, सुद्दा।

गोटी (हिं॰ स्त्री॰) १ लड़कोंके खेल खेलनेके कंकड़, गेरू तथा पत्थरका छोटा गोल टुकड़ा। २ चोपड़ खेलने का मोहरा जो हाथोदांत, हड्डी, लकड़ी इत्यादिका बना रहता है, नरद। इस खेलमें १६ गोलियां होती हैं जिनमेंसे ४ लाल, ४ हरे ४ पीले और ४ काले रंगकी रहती हैं। ३ एक प्रकारका खेल जो आड़ी और सीधी रेखाएं बना कर खेला जाता है। इसमें ८,१५,१८ या इससे ज्यादे गोटियां रख कर खेला जाता है। ४ उपाय, युक्ति, तदबीर।

गोठ (हिं॰ स्त्री॰) १ गोष्ठ, गोशाला, गोस्थान। २ गोष्ठी व्याह। ३ सैर सपाटा।

गोठिल (हिं॰ वि॰) कुण्ठित, जिसकी धार तेज नहीं हो, कुन्द।

गोड़ (सं॰ पु॰) १ उन्नतनाभि, बढ़ी हुई नाभी।

गोड़ (हिं॰ पु॰) पैर, पांव।

गोड़इत (हिं॰ पु॰) १ ग्राममें चौकसी देनेवाला, चौकीदार। २ प्राचीन कालका एक कारिन्दा या कर्मचारी। इस का काम एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें पत्र पहुंचाना था।

गोड़गाव (हिं॰ पु॰) घोड़ेके पिछले पैरमें बांधनेकी रस्सी।

गोडन (हिं॰ पु॰) मिट्टीसे नमक बनानेकी क्रिया।

गोड़ना (हिं॰ क्रि॰) कोड़ना।

गोडम्बी (सं॰ स्त्री॰) भद्राम नामक लताका बीज।

गोड़ली (हिं० पु०) संगीतविद्यामें खास कर नृत्यमें प्रवीण पुरुष या स्त्री।

गोड़वांस (हिं० पु०) पशुओंके पैरमें फंसाकर खूंटेसे बांधनेवाला रस्सा।

गोडवास्तुक (सं० पु०) वास्तुकशाक, एक तरहका शाक।

गोड़संकर (हिं० पु०) एक प्रकारका आभूषण जिसे स्त्रियां पैरोंमें पहनती हैं।

गोडसिहा (हिं० पु०) द्वेषी, डाह करनेवाला, जलनेवाला।

गोडहरा (हिं० पु०) एक तरहका गहना जो पैरमें पहना जाता है, काड़ा।

गोड़ांगी (हिं० स्त्री०) पायजामा।

गोड़ा (हिं० पु०) पैर तथा जांघके मध्यकी सन्धि, घुटना। २ पलंग प्रभृतिका पाया। ३ घोडिया। ४ सैन या दौरीकी रस्सी जिसे पकड़ कर खेतमें पानी फेंका जाता है।

गोड़ाई (हिं० स्त्री०) १ गोड़नेकी क्रिया या भाव। २ गोड़नेकी मजदूरी।

गोड़ारी (हिं० स्त्री०) १ हरीघास। २ पलंगका वह सिरा जिधर पैर रखा जाता है, पैताना। ३ जूता।

गोड़िम्ब (सं० पु०) गोभूंसेडिंम्ब इव। शृगाल, जम्बुक, गीदड़।

गोड़िया (हिं० स्त्री०) १ छोटा पैर। (पु०) २ उपाय लगानेवाला, तरकीब लड़ानेवाला। (पु०) मल्लाह, मांझी।

गोड़ी (हिं० स्त्री०) लाभ, फायदा।

गोडुम्ब (सं० पु०) गां भूवं तुम्बति अर्दति। गोतुम्बक पृषोदरादित्वात् साधु:। कालिङ्गलता, तरबूजकी लता।

गोडुम्बा (सं० स्त्री०) गोडुम्ब-टाप्। गवाटनी, (Cucumis madraspatanus, Cucumis melo.) फलशा लताविशेष।

गोडुम्बिका (सं० स्त्री०) गोडुम्बा स्वार्थे कन् टाप अत इत्वञ्च। गोडुम्बा देखो।

गोडडसड़ि—मान्द्राज प्रदेशके अनन्तपुर जिलामें ताड़पत्रि तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन गण्डग्राम।

गोण (सं० पु०) वृषभ, सांढ़, बैल।

गोणा (सं० स्त्री०) मनःशिला।

गोणिक (सं० क्ली०) एक तरहका ऊनी वस्त्र।

गोणिकापुत्र—१ एक प्राचीन वैयाकरण। २ कामशास्त्र और पारदारिकाधिकरण नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोणी (सं० स्त्री०) गोण आवपनार्थे ङीप्। १ अन्न ढोनेका आधारविशेष, गोन, बोरा। २ छिन्नवस्त्र, झीना कपड़ा। ३ परिमाणविशेष। वैद्यक परिभाषाके मतसे एक गोणी दो सूर्पके बराबर होती है।

गोणीतरी (सं० स्त्री०) ह्रस्वा गोणी गोणी-ष्टरच् षित्वात् ङीप। क्षुद्र गोणी, छोटा बोरा।

गोण्ड—१ नीच जातिविशेष। गोंड देखो।

२ उन्नतनाभि, बड़ी हुई नाभी। (त्रि०) ३ जिसकी नाभि बड़ी हो।

गोण्डउमरी—मध्यप्रदेशमें भण्डारा जिलाके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। यह शानिगड़से १० मील उत्तर-पूर्वमें अवस्थित है। इसके अन्तर्गत १० दश ग्राम हैं जिनमेंसे गोण्डउमीरी नामक ग्राम ही वृहत् है। यहां सिर्फ एक विद्यालय है, अधिवासियोंमें गोंड और घेरजातिकी संख्या अधिक है। यहांके सामन्तगण ब्राह्मण-वंशीय हैं।

गोण्डकिरी (सं० स्त्री०) एक तरहकी रागिणी।

(गीतगोविन्द)

गोण्डकी (सं० स्त्री०) गोण्डकिरी रागिणी।

गोण्डवन—स्थानविशेष। गोण्ड जातिके रहनेके कारण इसका नाम गोण्डवन पड़ा। यह नाम मुसलमानोंने रखा था। इसका वर्तमान नाम मध्यप्रदेश है।

गोंड और मध्य प्रदेश देखो।

गोण्डब्राह्मण—मध्यप्रदेशके ब्राह्मणोंकी एक जाति। पूर्वसमय मध्यप्रदेशमें गोण्डोंका राज्य था। आजकल भी जब्बलपुरसे नागपुर प्रान्तके देशोंमें गोण्डब्राह्मणोंके बहुतसे ग्राम हैं। इसी कारण उस देशका नाम गोण्डवाना पड़ा और वहांके रहनेवाले गोण्डब्राह्मण कहलाये। किसी एक दूसरे विद्वान्‌का मत है कि ये झारा ब्राह्मण भी कहलाते हैं क्योंकि इनका देश सघन वनसे आच्छादित है। फिर किसीका मत है कि ये शुक्ल यजुर्वेदके माननेवाले हैं, अतएव ये पहले शुक्ल या गौर यजुर्वेदी

ब्राह्मण कहलाते थे, पीछे धीरे धीरे गोर या गोड (गौड ब्राह्मण कहलाने लगे हैं। इनकी माध्यन्दिनो और काण्व शोखा हैं तथा आपस्तम्बसूत्र है। इनमेंसे थोड़े ऋग्वेदी आश्वलायनशाखाके अन्तर्गत हैं। ये शास्त्र धारानुसार सदाचारी ब्राह्मण सम्प्रदाय हैं। ये मछली मांस नहीं खाते हैं। इनकी विद्यास्थिति भी अच्छी है।

गोगड़वा—सिंहभूमके अन्तर्गत एक ग्राम। बड़ाबाजार से १६ मील दक्षिण पश्चिम चाइवासा जानेके रास्ते पर अवस्थित है। गोगड़ग्राम तथा धेमनाल्लाके निकट वर्ती बिजक पहाड़के पाददेशमें बहुतसी शिलालिपियां खोदित हैं। इनमेंसे दो शङ्खाकृति अक्षरमें और दो उड़िया अक्षरमें खोदी हुई हैं। शेषोक्त दो शिलाफलक देखनेसे मालूम होता है कि उड़िशाके राजा मुकुन्ददेवके शासनकालमें ये लिपि खोदी गई थीं मुकुन्ददेव हुगली पर्यन्त राजत्व करते थे तथा उन्हींके राज्यकालमें इस ग्राममें दोनों प्रदेशोंका प्रधान व्यवसायस्थान था।

उक्त शङ्खाकृति अक्षर बहुत दिनके हैं। कनिंहम साहबका अनुमान है कि राजा मुकुन्ददेवके बहुत पहले ई० ७म शताब्दमें राजा शशाङ्क राज्य करते थे, उन्हींके समयमें इस तरहका अक्षर प्रचलित था। उस समयसे आजकल ग्रामकी अवस्था सम्पूर्णहियाली है

गोगड़वाना—मध्यप्रदेश और मध्यभारतका एक पुराना मुसलमानी प्रान्त। अबुल फजलने निम्नलिखित रूपसे उसकी सीमाका निर्देश किया है—पूर्व रतनपुर, पश्चिम मालव, उत्तर पन्ना और दक्षिणमें दाक्षिणात्य। यह वर्णन वर्तमान सातपुरा अधित्यकाका बोधक है। मुसल मान गोंड़ोंके देशको गोंडवन समझते थे, परन्तु आज कल यह नाम द्राविड़ोंका है। इस विषयमें कि द्राविडो को गोड कैसे कहा गया पुरातन तत्त्वविद् कनिङ्गहाम साहबने लिखा है—गोंड शब्द "गौड" का अपभ्रंश है। वाराणसीके एक शिलाफलकमें विदित होता है कि तेवार (जबलपुरके निकट) के एक चेदिराज मालव प्रान्तके पश्चिम गौड़ जिलेमें रहते थे और भी चार पांच शिलाफलकोंमें यहीं गोड होनेको कहा गया है।

गोगड़ा—अयोध्याके फैजाबाद विभागका एक जिला। यह अक्षा० २६ ४६ तथा २७ ५० उ० और देशा० ८१ ३३ एवं ८२ ४६ पू०में अवस्थित है। इसकी उत्तरको सीमामें हिमालयके नीचेकी पर्वतश्रेणी है, पूर्वमें बस्ती जिला, दक्षिणमें फैजाबाद, बाराबांकी और घर्घरा नदी तथा पश्चिममें बराइच है। भूमिका परिमाण २८१३ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय १४०३ ८५ है।

तमाम जिला समतल जान पड़ता है। कहीं कहीं थोड़ा बहुत ऊंचा नीचा भी है। यहां कहीं आमकी और कहीं महुआके पेड़ोंकी पंक्ति नजर आती है। इस जिलेकी जमीन तराई उपरहार और तरहार इन तीन भागोंमें विभक्त है। तराई या पानीकी जगह जिलेकी उत्तर सीमासे दक्षिणको तरफ राप्ती नदीसे दो मील दक्षिण तक विस्तृत है, इसी बीचमें बलरामपुर और उतरौला ये दो नगर भी हैं। यहांकी भूमि कीचड़वाली है सिर्फ जिस जिस स्थानोंमें पाव तोय जलस्रोत जिलेमें हो कर राप्ती और बूढ़ी राप्ती नदीमें आ पड़ा है। उन उन स्थानोंमें बाढ़ आनेके समयमें पहाड़की धुली हुई बालू जम गई है जिससे वहां कीचड़ नहीं है। तराई भूमिके बाद गोगड़ा नगरसे दो मील दक्षिण तक ऊंची भूमि है। यहांकी जमीनमें कीचड़ और बालू दोनों हैं। इसके बाद घघरा नदीके किनारे तक तरहार जमीन है। यहांकी तीनों तरहकी जमीन ही ज्यादा उपजाऊ हैं। इस जिलेमें उत्तर पश्चिमसे दक्षिण पूर्वको तरफ बहनेवाली कुछ नदियां हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—बुड़ी राप्ती, राप्ती, सुवावन, कुवाना, बिशूही, चमनाई, मनवर, तिरही सरयू और घर्घरा। इन नदियोंमेंसे सिर्फ घर्घरा और राप्ती नदीमें ही नाव चला करती है। राप्ती नदीमें सिवाय वर्षातके दूसरे महीनोंमें नाव नहीं चलती। जिलेके भीतर भी बहुतसे झील मौजूद हैं। गरमियोंमें ये सूख जाते हैं, और वहां छोटे छोटे महुआ जामुन, आदिके पेड़ पैदा हो जाते हैं। नदीके किनारेके बालू बड़े भयावने होते हैं। जगह जगह छोटे छोटे ह्रद या तालाब भी देखनेमें आते हैं। इन तालाबोंसे खेतवालों को खूब सुविधा होती है। जिलेके उत्तरांशमें पर्वतके सीमान्तवर्ती वनविभागमें, जोकि गवर्मेण्टके अधीन है, शाल आबनूस और बबूल आदिके पेड़ ही अधिक हैं। इस जङ्गलमें शेर, चीता, भालू, भेड़िया,

तरह तरहके हरिण और जङ्गली सूअर देखनेमें आते हैं। नदियोंमें मछली, मगर और कछुए आदि भी असंख्य हैं। यहां दीर्घचञ्चु, वनकुक्कुट, मयूर, कबूतर आदि नाना प्रकारके पक्षियां देखनेमें आते हैं।

इस जिलेका प्राचीन इतिहास श्रावस्ती नगरके पुरातत्त्वसे सम्बन्ध रखता है। कूर्म और लिङ्गपुराणमें इस भूमिका गौडदेशके नामसे उल्लेख मिलता है। सूर्यवंशीय श्रावस्तीके पुत्र वंशकने यहां श्रावस्ती नगरी बसाई थी। * नगर श्रीरामचन्द्रके पुत्र लवकी राजधानी थी। उस नगरीका वर्त्तमान नाम सेटमहेट् है।

श्रावस्ती और गौड देखो।

ईसीकी ३य शताब्दीमें अयोध्याके राजा विक्रमादित्यके राजत्वके समयमें यह राज्य बहुत ही समृद्धिशाली था। परन्तु उनकी मृत्युके कई वर्ष बाद गोण्डाका राजदण्ड गुप्तवंशीय राजाओंके हाथमें आया। ब्राह्मण और बौद्धधर्मके परस्परके विद्वेषसे यह नगर क्रमशः नष्ट हो गया। चीनपरिव्राजक जब श्रावस्ती और कपिलवास्तु नगर देखनेके लिए आये थे, तब उन्होंने उक्त दोनों नगरोंकी बीचकी रास्ताओंमें जङ्गल देखा था। इतिहासके पढ़नेसे मालूम होता है कि, गोण्डाके जैन राजा मोहिलदेवने गजनीवाले मामूदके बहनोई सैयद सलारको सेना सहित मार डाला था। जिस समय मुहम्मद घोरीने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय यहां डोमराजा राज्य करता था और गोरखपुरके पास ही डोमनगढ़में उसकी राजधानी थी, इस वंशके प्रसिद्ध राजा उग्रसेनने महादेव परगणाके डुमरियादि ग्राममें एक छोटासा किला बनवाया था। उन्होंने थारू, डोम, भर, पासी आदि जातियोंको बहुतसे गांव दिये थे।

ई० १४ वीं शताब्दीमें यह डोमराज्य कलहंसी, जनवाड़ और विशेन-वंशीय क्षत्रियोंके अधिकारमें आ गया था। कलहंसी राजाओंने हिसामपुरसे लेकर गोरखपुर तक अपना आधिपत्य फैला लिया था। ऐसा प्रवाद सुनते हैं कि,—दिल्लीके किसी तोगलक सम्राट्की सेनाके साथ कलहंसनिर्गोके सर्दार सहाजसिंह स्वयं टानटोकी तरफसे यहां आये थे। पीछे इनको सम्राट्ने हिमालय और घर्घराके मध्यवर्ती लोगोंको वश करनेके लिए नियुक्त किया। उन लोगोंने पहले वर्त्तमानके कुराशा नगरसे २ मील दक्षिणकी तरफ जो कोण्ला नाला है, उसे अपना वासस्थान बनाया था। प्रत्येक सर्दारको ३५ कोसकी जमीन जायगीर मिली थी।

गोण्डा-राजवंशके पतनके विषयमें ऐसा प्रवाद है कि, राजा अचलनारायणसिंह किसी ब्राह्मण जमींदारकी कन्याको बलपूर्वक चुरा लाये थे। इससे उस लड़काके पिताने उस अत्याचारी राजाके दरवाजे पर बिना कुछ खाये ही अपना प्राण त्यागा और मरते समय "छोटी रानीके गर्भस्थ पुत्रके सिवा समस्त राजवंशका शीघ्र ही नाश हो"—ऐसा अभिशाप दे गये। उनका यह अभिशाप फल गया। शीघ्र ही सरयू नदीने किला और राजप्रासादको डुबा दिया। राजा और उनका परिवारवर्ग भी उसमें डूबकर मर गया। सिर्फ छोटी रानी सपुत्र बच गयी। ई० १५ वीं शताब्दीके अन्तमें ऐसी दुर्घटना हुई थी। बभनीपाईके वर्त्तमान कलहंसी जमींदार लोग उसी छोटी रानीके पुत्रके वंशज हैं। इससे कुछ दिन पहिले जनवाड़ोंने इस जिलेको तराई भूमि पर अधिकार जमाया था। सम्राट् अकबरके समयमें इकौना और उतरौलाके सिवा अयोध्या प्रदेशमें और दूसरी जगह दूसरा कोई बलवान् सर्दार नहीं था। विशेन और बन्दलघोरे ये दो जातियां इस जिलेके अवशिष्ट अंशमें वास करती थीं। गोण्डाके विशेन राजाओंकी उन्नतिके समय, उनका राज्य १००० वर्गमीलके करीब विस्तृत हो गया था, बलरामपुर, तुलसीपुर और माणिकपुरमें भिन्न भिन्न जनवाड़ सर्दार राज्य करते थे।

दिल्लीसे अयोध्या तक स्वातन्त्र्य लाभ करनेसे पहिले सयादत् खांने कुछ दिनों तक स्वाधीनभावसे राजत्वसुखका उपभोग किया था। बराइचके प्रथम शासनकर्त्ता आलावल खां गोण्डाके राजाके विरुद्ध युद्ध करके मर गये थे। फिर गोण्डाराजके विरुद्धमें सेना भेजी गई थी, परंतु इस बार भी उन्होंने मुसलमानोंको परास्त कर दिया था। इनके बाद करीब ७० वर्ष तक विशेन राजाओंने

* "श्रावस्तिश्च महातेजा वंशकस्तु ततोऽभवत्।
निर्मिता येन श्रावस्ती गौडदेशे द्विजोत्तमः॥"
(लिङ्ग पु० ६५।३४)

अपनी स्वाधीनताकी रक्षा की थी और पश्चिम राज्य गोण्डा, पहाड़पुर, दिगसार, महादेव और नवाबगञ्ज इन पाँच परगनाओंका स्वतन्त्रतापूर्वक शासन किया था। अन्तमें राजा इन्दुपत्सिंहकी मृत्यु होने पर पाँडे ब्राह्मणों की सहायतासे गुमान्‌सिंहने गोण्डाराज्य पर आधिपत्य जमाया था, बलरामपुर और तुलसीपुरके सर्दारोंने बहुत युद्ध करके अपनी स्वाधीनताकी रक्षा की थी। परन्तु माणिकपुर और मह्‌नियाईके सर्दार नाजिमको कर दिया करते थे। गोण्डा और उतरोला राज्यके अधःपतनके समयमें नाजिमने सहजमें कर वसूल होनेके लिए कुछ ग्रामोंमें जमींदार नियुक्त किये थे। उतरोला और गोण्डा पदच्युत राजाओंने उक्त जमींदारोंके पानेके लिए प्रयास किया था। उतरौलाके राजाने कई एक बाट जमींदारी पाई थी और गोण्डाके विशेनराज विश्वम्भपुरकी जमींदारी पाकर उसका उपभोग करने लगे थे। नाजिमके कर्मचारी बलपूर्वक कर वसूल करते थे। इसलिए यहाँकी प्रजा बहुत ही नाराज थी। पीछे अयोध्या जब अंग्रेजोंके हाथ में आई तब ये सब अत्याचार दूर हो गये। सिपाही विद्रोहके समय गोण्डाके राजा पहले अंग्रेजोंके पक्षमें थे। पीछे फिर विद्रोही हो कर लखनऊमें जाकर अयोध्याकी बेगमके साथ मिल गये थे। बलरामपुरके राजा बराबर राजभक्त थे। इन्होंने गोण्डा और बराइचके कमिशनर विङ्गफिल्ड तथा अन्यान्य अंग्रेज कर्मचारियोंको अपने किलेमें आश्रय दिया था। गोण्डाराजने सेना सहित जाकर घघराईके तीरवर्ती लम्बतो नगरोंमें तम्बू गाड़े थे। थोड़ासा युद्ध करके वे अपनी सेना सहित नेपालकी तरफ भाग गये थे। जमींदारोंने इस राजद्रोहके लिए क्षमा माँगी थी। परन्तु गोण्डाराज और तुलसीपुरकी रानीने क्षमा नहीं माँगनेसे, उनका राज्य छीन लिया गया था। फिर गवर्मेण्टने यह राज्य बलरामपुरके महाराज दिग्विजयसिंहको और शाहगञ्जके महाराज मानसिंहको बाँट दिया था।

इस जिलेमें गोण्डा, बलरामपुर, कर्नलगञ्ज, नवाबगंज उतरौला, कातरा और सञ्जपुर आदि नगर हैं। देवीपाटन ग्राममें पाटेश्वरीदेवीका मन्दिर, छपियाका ठाकुरद्वारा महादेव परगनाके विश्वेश्वरनाथ, मछलीगाँवके केदारनाथ, बलरामपुरकी बिजलेश्वरी देवी और खड़‌पुरके पचरानाथ व पृथ्वीनाथका मन्दिर ये ही यहाँके हिन्दुओंके महापुरुषके स्थान हैं।

१ तराईमें धान बहुत होता है, परन्तु आब हवा अच्छी नहीं और बाढ़ आनेका भी डर रहता है। ऊपरी जमीन चिकनी है। गेहूं और चावलकी खेती प्रायः और अरहर मिला करके ज्यादाकी जाती है। गाँवोंके पास ईख तथा पोस्त और तालाबोंके करीब जड़हन बोते हैं।

स्थानिक पशु अच्छे नहीं होते। भेड़ और बकरा बहुत हैं। तालाबों और झीलोंसे आब पाशी होती है।

२ उक्त प्रान्तके गोंडा जिलेकी सदर तहसील। यह अक्षा० २७ १´ तथा २७ २६ उ० और देशा० ८१ ३८ एवं ८२ १८ पू० मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ६१८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः ३८४०२१ है। यहां ७८४ गांव और ३ शहर बसे हुए हैं। मालगुजारी कोई ४८१०००) और सेस प्रायः ५००००) रु० है। ऐसा सुभीता बहुत कम गांवोंमें देख पड़ेगा। १६२ वर्गमील सुरक्षित जङ्गल है। इससे सालाना कोई ४००००) रु० की आमदनी होती है। खानसे केवल कङ्कर निकलता जो सड़क पर बिछाने और चूना बनानेमें लगता है।

सिवा खेतीके इस जिलेमें दूसरा खास काज थोड़ा है। कई जगह स्थानिक व्यवहारके लिए मोटा सूती कपड़ा बुना जाता है परन्तु बारीक कम तयार नहीं होता। सहोके खुशनुमा बर्तन भी बनाते हैं। चावल, मटर, ज्वार, अफीम और लकड़ीकी खास करके रफतनी होती है। नेपालके साथ भी थोड़ा कारबार किया जाता है। रेल और सड़ककी कोई कमी नहीं। यहां बङ्गाल और नार्थ वेस्टर्न रेलवेकी प्रधान लाइन जोड़ती है। ६०६ मील सड़कमें ११० मील सख्त पक्की है। अपराध सामान्य प्रकारका होता है।

१८१० ई०में इस जिलेके उत्तरपूर्व अञ्चलकी जमीन अङ्गरेजोंको सुपुर्द की गयी थी, परन्तु १८१२ ई०में उन्होंने यह अवधके नवाबको वापस दी। १८५६ ई०को जब अंगरेजी राज्य भुक्त हुआ, मालगुजारी ६ लाख ७० हजार रही। १८७६ ई०को दूसरा बन्दोबस्त

किया गया। आजकल गोंडा जिलेकी मालगुजारी कोई २३ लाख १७ हजार रुपया है।

यहां २ मुनिसपालिटियां और दो 'नोटीफाइड एरिया' हैं। ४ शहरोंका इन्तजाम १८५६ ई०की २०वीं दफासे होता है। सिवा इसके स्थानिक प्रबन्ध डिष्ट्रिक्ट बोर्ड करते हैं। १७ पुलिस थाने हैं। लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं। सौमें कोई ३ आदमी ही शिक्षित हैं। पाठशालाओं और छात्रोंकी संख्या बढ़ रही है। शिक्षामें कुल ४६०००) रु०का खर्च है। भूमि बहुत उर्वरा है। उत्तरकी ढ़ुवाना पड़ता जहां जङ्गल मिलता है। तिरही दक्षिण और बिसूही उत्तरके आरपार प्रवाहित है। कोई ४२२ एकड़ खेतीमें १८७ एकड़ सींच है

३ युक्त प्रान्तके गोंडा जिले और तहसीलका सदर। यह अक्षा० २७° ८' उ० और देशा० ८१° ५८' पू० में बङ्गाल और नार्थ वेष्टर्न रेलवेकी कई शाखाओंके जङ्कशन पर पड़ता है। आबादी लगभग १५८११ है। यह नाम गोठा (गोठ) शब्दका अपभ्रंश है। कहते हैं, विशेन राजपूत मानसिंहने जो सम्भवतः अकबरके प्रथम राजत्व कालको जीवित रहे, उसे बसाया था। १८५७ ई०के बलवेमें गोंड़ाके राजाने विद्रोहियोंका साथ दिया। उसीसे इनका राज्य जप्त करके अयोध्याधिपतिको सौंपा गया। नगरकी शोभा दो तालावोंसे बढ़ी हुई है। १८६८ ई०से यहां मुनिसपालिटी है। कृषिजात द्रव्योंका अधिक व्यवसाय होते भी कोई उद्योग देख नहीं पड़ता।

४ उक्त जिलेका प्रधान नगर। फैजाबादसे २८ मील उत्तर-पश्चिममें अक्षा० २७° ७' ४०" उ० और देशा० ८२° पू०में अवस्थित है। पहिले यहां जङ्गल ही जङ्गल था, और अहीर लोग यहां रातमें अपनी गायें बांधा करते थे। बादसे फिर कुरासाके राजा मानसिंहने यहां अपना प्रासाद और किला बनाया था। तबहीसे यहां राज-परिवारकी वासभूमि हो गई है। नगर भी तबहीसे बसा है।

यहां दो ठाकुरद्वार, राधाकुण्ड सरोवर, औषधालय, और राजा शिवप्रसादका बनाया हुआ तालाब, विद्यालय और किनारे पर ही अञ्ज मान-ए-रिफा नामका प्रसिद्ध साहित्यमन्दिर है।

५ बदांमा तहसीलमेंका एक ग्राम। बान्दासे ३० मील दक्षिण पूर्वमें अवस्थित है। यहां पर दो चन्देलों मन्दिर हैं। उक्त मन्दिरोंमें गङ्गा, यमुना, शिव, काली, गणेश, ब्रह्मा और विष्णुकी मूर्त्तियां हैं।

६ अयोध्याके प्रतापगढ़ जिलेका एक नगर। यहां अष्टभुजादेवीका मन्दिर है, इसी लिए इसकी प्रसिद्धि है।

गोण्डाल—१ बम्बई प्रान्तकी काठियावाड़ पोलिटिकल एजेन्सीका देशी राज्य। यह अक्षा० २१° ४२' तथा २२° ८' उ० और देशा० ७०° ३' एवं ७१° ७' पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल १०२४ वर्गमील है। सिवा उसमान् पहाड़के बाकी सब देश बराबर है। कितनी ही नदियां प्रवाहित हुई हैं। जलवायु अच्छा है।

गोण्डालके राजा जाडेजा वंशीय राजपूत हैं। इनको ठाकुर साहब कहा जाता है, आईन-अकबरी और सौगात अहमदीमें लिखा कि गोण्डाल सोरठ सरकारकी बघेला रियासत था। १म कुम्भोजीने इसे स्थापित किया था। २य कुम्भोजीने उसे इस हालतको पहुंचाया। १८०७ ई०को अङ्गरेजोंके साथ गोण्डालके राजाकी सन्धि हुई। उन्हें गोद लेनेका अधिकार है। ११ तोपोंकी सालामी होती है।

गोण्डालकी लोकसंख्या प्रायः १६२८५८ है। इसमें ३ नगर और १८८ गांव बसे हैं। सींचने और पीनेके लिये ५॥ लाख रुपया लगा कर पानीका एक कारखाना खोला गया है। घोड़ों और बैलोंकी नस्ल बढ़ानेके लिये कई सांड़ हैं। रूई और अनाजको खास पैदावार है। सूती तथा ऊनी कपड़े, जरदोजी, तांबे पीतलके बर्तन, लकड़ीके खिलौने और हाथी दांतकी चूड़ियां बनाते हैं। ११॥ मील पक्की सड़क है। लाखों रुपयेका रियासतमें पैदा हुआ माल हर साल बाहर भेजा जाता है। यहां भावनगर गोण्डाल-जूनागढ़-पोरबन्दर रेलवे चलती है। जेतलसर-राजकोट रेलवेकी भी एक शाखा है, इन दोनोंमें रियासत हिस्सादार है।

काठियावाड़में गोण्डाल प्रथम श्रेणीका जैसा राज्य है। वार्षिक आय प्रायः १५ लाख है। उसमें १२ लाख मालगुजारी आती है। यह राज्य वृटिश गवर्नमेण्ट, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको ११०७२१)

स० कर देतो है। पाच मुनिसपालिटिया हैं।

२ बम्बईको काठियावाड पोलिटिकल एजेन्सीके गोण्डाल राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २१ ५७ उ० और देशा० ७० ५३ पू०में गोण्डाली नदीके पश्चिम तट पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय १८५८२ है। गोण्डालसे राजकोट आदि कई स्थानोंको अच्छी सडक लगी है। यहा रेलवे ष्टेशन भी है।

गोण्डिया—मध्य प्रदेशके भण्डारा जिलेको तिरोरा तहसील का एक गांव। यह अक्षा० २१ २८ उ० और देशा० ८०° १३´ पू०में बङ्गाल नागपुर रेलवे पर पडता है। यहा सातपुरा-रेलवेका जङ्कशन है। जन सख्या कोई ४४५७ होगी। गोंडियमें दूसरे जिलोंमें कितना हो माल चालान के लिये आ आ करके इकट्ठा होता है। सप्ताहमें अनाज-का बडा बाजार लगता है। हिन्दी पाठशाला स्थापित है।

गोत (हि० पु०) १ गोत्र, कुल, वंश, खानदान। २ समूह, जत्था।

गोतम (स० पु०) गोभिर्ध्वस्त तमो यस्य, बहुव्री०। पृषोदरादिवत् साधु। १ एक मुनि, गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि महाभारतमें इस नामकी व्युत्पत्तिके विषयमें लिखा है कि इनके शरीरके तेजसे समस्त अन्धकार नष्ट हुआ जान कर इनका नाम गौतम पडा। वायुपुराणमें लिखा है कि इन्होंने श्वेतवराहकल्पमें ब्रह्माके मानसपुत्ररूपसे जन्म ग्रहण किया था। (वायु नया० २ अ०)। इन्होंने न्यायदर्शन प्रणयन किया है। न्याय देखो। (पु० स्त्री०) १ अतिशयेन गौ गो तम। अतिशय जड, भारी जड। २ बुद्ध भेद।

गोतमस्तोम, १ सूक्तविशेष। २ एक प्रकारका यज्ञ।

गोतमस्वामिन (स० पु०) जैन धर्मावलम्बी एक ब्राह्मण। ये तीर्थङ्कर महावीरस्वामीके एक प्रधान गणधर थे, इनका दूसरा नाम इन्द्रभूति भी था। भारतके नाना स्थानोंमें तथा सम्मेदशिखर पर्वत पर इनको सुवृहत् पाषाण मूर्त्तियां देखनेमें आती है। इनको मूर्त्ति कर्णाट और मलबार उपकूलमें ही अधिक है। महिसुरस्थ श्रावण बेलगोलामें ५६ फीट, सिमुरम ३५½ फीट और कर्कोला नामक स्थानमें ४१½ फीट ऊंची गोतम स्वामीकी पाषाण मूर्त्तियां हैं। गौतम इन्द्रभूत देखो।

गोतमान्वय (स० पु०) गोतमोऽन्वयो व शप्रवर्त्तको यस्य बहुव्रो०। मायादेवीके पुत्र शाक्यमुनि।

गोतमी (स० स्त्री०) गोतमस्य भार्या गोतम ङोष्। गोतम ऋषिकी स्त्री अहल्या। कृत्तिवासी रामायणमें लिखा है कि अहल्या गौतम ऋषिके शापसे एक शिला हो गई थी, किन्तु वाल्मीक रामायणका मत है कि अहल्या गोतमके शापसे नितान्त कुरूप होकर तपस्या करने लगी थी। तपस्याके बलसे उनका शरीर ज्योतिर्मय हो गया, उस रूपको रामचन्द्रजीने देखा था। (उत्तरकाण्ड)

गोतमोपुत्र (स० पु०) गोतम्या पुत्र, ६ तत्०। अहल्या का पुत्र, शतानन्द।

गोतमेश्वर (स० पु०) गोतम ईश्वरो यस्य, बहुव्री०। तीर्थ-विशेष। (स्कन्दपु०)

गोतर्द—बम्बईमें रेवाकान्ताविभागके मध्यवर्ती एक क्षुद्र राज्य। यह चार स नन्तकोंके अधान है। लोकसंख्या प्राय २२८ है। सालाना आमदनी ४७०) रु० उनमेंसे १२७) रु० बरोदा गायकवाडको कर दिया करते हैं।

गोतल्लज (स० पु०) प्रशस्तो गो नित्यसमास। उत्तम गो, सुन्दर गाय।

गोता (अ० पु०) जल आदिमें डुबनेकी क्रिया, डुब्बी।

गोताखोर (अ० पु०) गोता लगानेवाला, डुबकी मारने वाला।

गोतामार (हि० पु०) गोताखोर देखो।

गोतिया (हि० वि०) अपने गोत्रका, गोती।

गोती (हि० वि०) गोत्रीय अपने गोत्रका, जिसके साथ शौचाशौचका स बन्ध हो, भाई बन्धु।

गोतीत (स० त्रि०) अगोचर, जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके।

गोतीर्थ (स० क्ली०) गवा कृत तीर्थ मध्यपदलो०। १ गोष्ठ, गो रहनेका स्थान। २ कन्नौजके अन्तर्गत तीर्थविशेष। (भागवत १०।१।२१)

गोतीर्थक (स० पु०) वैद्यशास्त्रोक्त एक प्रकारकी छेदन प्रणाली। (सुश्रु०) फोडे आदि चीरनेकी एक तरकीब जिसके अनुसार कई छेदों वाले फोडे चीरे जाते हैं।

गोतेल (स० क्ली०) गोयवा वाम गाय।

गोत्र (स० पु०) गां पृथिवीं त्रायते त्रसति गो त्रै क। पाणिन्युक्तसूत्र अ। पा० ३।२।३। १ पर्वत, पहाड।

"नाद्य नदनदी नातु गोवा नामस्य संहतिः।" (भाग० २।८।१८)

(स्त्री०) गवते शब्दायतेऽनेन गु कारणे त्र। गु-शब्दे पदि वीठ,यमि मदि चदिमा स्त्र.। उण् ४।१६६। २ आख्या, नाम। ३ सम्भावनोयबोध, वह ज्ञान जिसमें कुछ संदेह हो। ४ कानन, वन, जङ्गल। ५ क्षेत्र। ६ मार्ग, सड़क। (मेदिनी) ७ राजाका छत्र। (हेम) ८ सङ्घ, समूह। ९ वृद्धि, बढ़ती। (शब्दचन्द्रिका) १० धन, वित्त, दौलत। (विश्व) गवते शब्दायते पूर्वपुरुषान यत्, पुत्र। (भरत)११ बन्धु, भाई। १२ एक प्रकारका जातिविभाग। १३ वंश, खानदान। संस्कृत पर्याय—सन्तति, जनन, कुल, अभिमान, अन्वय, वंश, अन्ववाय, सन्तान। (अमर०)

अति प्राचीन कालसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंमें गोत्रका नियम चला आ रहा है। प्राचीन आर्य-शास्त्रोंकी पर्यालोचना करनेसे जाना जाता है कि, पहिले गोत्रका नियम नहीं था। क्रमशः मनुष्यसंख्या वृद्धि होते रहनेसे, आर्य ऋषियोंने गोत्रनियम बनाये और उसी समयसे आर्योंमें गोत्र नियम चला आ रहा है। दि० जैन शास्त्रोंमें ऐसा पाया जाता है कि, प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभ देवके पुत्र भरत चक्रवर्तीने जाति आदिके नियम चलाये थे। (आदिपुराण) हिन्दुओंको जात कर्मसे लेकर अन्त्येष्टि तक प्रत्येक कार्यमें जो आत्मपरिचय देते समय गोत्रका उल्लेख करना पड़ता है। गोत्रका उल्लेख करते समय यदि कुछ भूल या गड़बड़ होनेसे किसी भी कार्यको सिद्धि नहीं होती। इसके सिवा विवाहोंमें भी गोत्रकी जरूरत पड़ती है। मनु आदि स्मृतिप्रणेताओंने; बौधायन, आप-स्तम्ब आदि सूत्रकारोंने और मत्स्य आदि पुराणकारोंने समान गोत्रोंमें विवाह निषिद्ध बतलाया है। भ्रम या और किसी कारणसे यदि सगोत्रमें विवाह हो जाय तो नियमानुसार प्रायश्चित्त करना पड़ता है। प्रायश्चित्तके बाद उस स्त्रीसे माताके समान व्यवहार करना पड़ता है। कभी भी उस स्त्रीको ग्रहण करना उचित नहीं और स्त्रीको भी उस पुरुषको पुत्रवत् देखना चाहिये। इस लिए प्रत्येक हिन्दूको अपने गोत्रके विषयमें खूब ज्ञान रखना चाहिये।

मेदिनी और अभिधान-चिन्तामणि आदिके कर्त्ताओं-के मतसे गोत्र शब्दका अर्थ सन्तान या वंश है। इस देशके लोग 'मेरा शाण्डिल्यगोत्र है', 'मेरा गोत्र काश्यप है', 'मैं गर्ग गोत्रका हूं' इस प्रकार भिन्न भिन्न गोत्रोंका उल्लेख करके अपना परिचय दिया करते हैं।

बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ़, कुटिल, भरद्वाज, लौगाक्षि, कात्यायन और आश्वलायन आदिके रचे हुए श्रौतसूत्र, मत्स्यपुराण, महाभारत आदि इतिहास और मनु आदिको रची हुई स्मृतिओंमें थोड़ा-बहुत गोत्रका कथन मिलता है। इनमें परस्परमें कुछ विरुद्ध कथन भी हैं, जिनका वास्तविक अर्थ सर्वसाधारणके समझमें नहीं आ सकता है। इसलिए और शास्त्रोंकी आलोचनाकी शिथि-लता देखकर पण्डितप्रवर पुरुषोत्तमने 'गोत्रप्रवरमञ्जरी' नामका एक संस्कृत ग्रन्थ लिखा था। इसके सिवा धन ञ्जयकृत धर्मप्रदीप, बालभट्ट और महादेव दैवज्ञ द्वारा रचित गोत्रप्रवर, विष्णुपण्डित कृत गोत्रप्रदीप, अनन्तदेव, आपदेव, केशव, जीवदेव, नारायणभट्ट, भट्टोजी, माधवा चार्य और विश्वनाथदेव रचित गोत्रप्रवरनिर्णय, लक्ष्मण-भट्ट कृत प्रवररत्न और गोत्रप्रवरभास्कर तथा कमलाकर-कृत गोत्रप्रवरदर्पण नामक कुछ ग्रन्थ भी मिलते हैं। इनमेंसे 'गोत्रप्रवरमञ्जरी' ही सबसे श्रेष्ठ है। इसमें समस्त पुरातन मतोंकी पर्यालोचना और मीमांसा की गई है।

गोत्रकी आलोचना करनेसे पहिले इस बातका भी निर्णय कर लेना चाहिये कि, गोत्र किस चीजका नाम है और उसका लक्षण क्या है? अभिधानके कर्त्ताओंने गोत्रका लक्षण जैसा लिखा है, उसके अनुसार तो गोत्रोंके भेद असंख्यात हो जाते हैं, अर्थात् सब ही अपने अपने पुरखाओंमेंसे किसी एकका नाम, लेकर अपने गोत्रका परिचय दे सकते हैं। ऐसा होनेसे तो गोत्रका नियम रहना-न-रहना बराबर ही हो जाता है। लौकिक व्यव-हारमें भी ऐसा नहीं पाया जाता, सब ही लोग अति प्राचीनकालसे चला हुआ एक ही नामसे गोत्रका परिचय देते हैं। कोई भी बदल कर दूसरा नाम नहीं कहता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि, अभिधानके अनु-सार गोत्र व्यवहार नहीं होता, अर्थात् इस गोत्र शब्दसे मासूली तौरसे वंश या सन्तानका बोध नहीं होता। "अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्।" (पाणि० ४।१।१६२) पाणिनिको इस

परिभाषाके अनुसार जाना जाता है कि, पौत्र आदि सन्तानोंका नाम गोत्र है। पाणिनीसम्मत अर्थको स्वीकार करने परभी पहिला दोष नहीं छूटता। इसीलिए बौधायन आदि सब ही ग्रन्थकारोंने गोत्र शब्दका दूसरा एक पारिभाषिक अर्थ किया है कि,—

'विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः।
अत्रिर्वसिष्ठः कश्यप इत्येते सप्तर्षयः॥
सप्तानामृषीणामगस्त्याष्टमानां यदपत्यं तद् गोत्रम्॥" (१) (बौधायन)

विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, काश्यप और अगस्त्य इन आठ मुनियोंके पुत्र और पौत्र आदि सन्तानोंमेंसे जो मुनि हो सके हैं, वे ही उनसे पूर्ववर्ती और परवर्ती सब होके गोत्र हैं, अर्थात् उन्हींके नामसे उस वंशका गोत्र चलता है।

अतएव विश्वामित्रकी सन्तान देवरात आदि विश्वामित्रके गोत्रके हैं और जमदग्निकी सन्तान मार्कंडेय आदि जमदग्निके गोत्रके हैं (२)। आश्वलायन श्रौतसूत्रकी नारायणकृत वृत्तिमें लिखा है कि विश्वामित्र आदि आठ ऋषियोंकी सन्तानोंको उनके गोत्र समझना चाहिये। जैसे—जमदग्नि ऋषिके गोत्र वत्स आदि, गौतमके गोत्र आयस्यादि भरद्वाजके दक्ष, गर्ग आदि, (३)। अब बात इतनी ही है कि, बौधायनके "विश्वामित्र" इत्यादि वाक्यमें काश्यप और गौतमका उल्लेख है। इसलिए नारायणकृत वृत्तिको स्वीकार करें तो काश्यप गोत्र और गौतमव ऋषियोंको गौतम गोत्रीय मानना पडेगा। परन्तु प्राचीन समयमें काश्यपगोत्र और गौतमगोत्रका व्यवहार चला आ रहा है। इसके सिवा वशिष्ठ, भरद्वाज आदि वंशमें उत्पन्न लोगोंको यथाक्रमसे वशिष्ठ और भरद्वाज गोत्र कहते हैं।

और फिर कोई कोई कहते हैं कि गोत्र शब्द स्वभावसे ही नपुंसक लिङ्ग है, पूर्वोक्त व्याख्याको स्वीकार करनेसे कहना पडेगा कि, विश्वामित्रगोत्र, वशिष्ठगोत्र और भरद्वाजगोत्र इत्यादिमें षष्ठीतत्पुरुष समास ही को स्वीकार करना पडेगा। व्याकरणके नियमानुसार तत्पुरुष समासका उत्तरपद जो लिङ्ग होगा, समास होने पर भी वह शब्द वही लिङ्ग होता है। तो गोत्रशब्दके नपुंसकलिङ्ग होने पर विश्वामित्रगोत्र आदि शब्द भी नपुंसकलिङ्ग हुए जाते हैं, और "विश्वामित्रगोत्रमहं", "वशिष्ठगोत्रमहं", "भरद्वाजगोत्रमहं" तथा "विश्वामित्रगोत्राणि वयं" इत्यादिका भी व्यवहार किया जा सकता है। परन्तु लौकिक और वैदिक ग्रन्थोंमें ऐसा नहीं पाया जाता। बल्कि विश्वामित्रगोत्रोऽहं, भरद्वाजगोत्रोऽहं और विश्वामित्रगोत्रावयं ऐसा ही देखनेमें आता है। आश्वलायन (१२।१०।१) श्रौतसूत्रकी नारायणकृत वृत्तिमें भी 'मित्रयुवगोत्रोऽहं, मुद्गलगोत्रोऽहं" ऐसा प्रयोग मिलता है। अतएव बौधायन आदि द्वारा कहे हुए गोत्र लक्षणके "यदपत्यं तद्गोत्रं" इस अंशकी व्याख्या दूसरी तरह माननी पडेगी। विश्वामित्र आदि आठ ऋषियोंकी सन्तानोंके गोत्र, विश्वामित्र आदि इस प्रकार होनेसे विश्वामित्रगोत्र, वशिष्ठगोत्र, भरद्वाजगोत्र इत्यादि स्थलमें विश्वामित्रो गोत्रं यस्य-ऐसा बहुव्रीहि समास हो सकता है (४)। बहुव्रीहि समास होनेसे यह शब्द वाच्यलिङ्ग होगा, इस लिये "विश्वामित्रगोत्रोऽहं" इत्यादि लिखनेमें कोई भी बाधा नहीं आती। अगर ऐसा न मानें, तो "भारद्वाजगोत्रस्य अमुकी देव्याः" ऐसा अभूतपूर्व वाक्य भी स्वीकार करना पडेगा। परन्तु इस व्याख्याके अनुसार भी गौतमगोत्र और काश्यपगोत्रका व्यवहार किया जा सकता है। यदि उस जगह गौतम

(१) ग्रन्थोंमें बहुत जगह पाठभेद देखनेमें आता है। उनमें जो पाठ संगत और बहुतसे ग्रन्थोंमें मिला है। वही पाठ लिखा गया है। "विश्वकोष कार्यालय" में संगृहीत हस्तलिखित गोत्रप्रवरमञ्जरी और नारायणकी "गौतम और अत्रि दोनों मुई थाश्वलायन श्रौतसूत्रको वृत्ति और लिखनाथ काया श्रय में संगृहीत हस्तलिखित गोत्रप्रवरमञ्जरी में "गौतम" पाठ मिलता है। इसमें यहां पर "गौतम" पाठ ही संगत मालूम पडता है।

(२) जामदग्न्य भवति जमदग्न्यादयः सम्पूर्णा अर्थे देवरातश्च कुशिक प्रान तस्य गोत्रमुच्यते (गोत्रप्रवरमञ्जरी)

"एवं यदपत्योदरात्रय ऋषिन तत्पुत्र आदिमा जामदग्न्यादिवाद गोत्रनिश्चनिर्णयः। (गोत्रप्रवरदर्पण)

(३) "एतेषामगस्त्याष्टमानामृषीणां यदपत्यं तद्गोत्रमित्युच्यते यथा जम दग्नि वत्सादय तथा गौतमस्यायास्यादय।" (आश्वलायन १२।१० वृत्ति)

४ "अपरे तु विपरीत गोत्रलक्षणमाहुः। सप्तानामृषीणामगस्त्याष्टमानां यदपत्यं तद्गोत्रमित्याहुः। यथा—देवरातादीनां गोत्रं विश्वामित्र इति सा सप्तानामृषीणामगस्त्याष्टमानां गोत्राणीति। (गोत्रप्रवरमञ्जरी)

इस पक्षमें 'यदपत्यं तद्गोत्रं' इस अंशकी संस्कृत व्याख्या ऐसी होनी चाहिये—अगस्त्याष्टमानां सप्तानां ऋषीणां यत् अपत्यं पुत्रपौत्रादि तस्य (तत्) गोत्रं स ऋषिः गोत्रं यस्य तत् तद्गोत्रं भवतीति शेषः।

और काश्यप पाठ कर दिया जाय तो कोई गड़बड़ ही न रहे। छपे हुये आश्वलायनश्रौतसूत्रमें और हस्तलिखित गोत्रप्रवरदर्पणमें गोतम पाठ है।

किसीके मतानुसार वौधायनने गोत्रसंग्राहक श्लोकोंमें जिन आठ गोत्रोंका उल्लेख किया है, उसके अतिरिक्त भी बहुतसे गोत्र देखनेमें आते हैं और अन्यान्य ग्रन्थोंमें उनका उल्लेख भी है। इसलिये उस रचनाको उपलक्षण मानना पड़ेगा और वौधायनने लिखा भी है कि —

"गोत्राणां तु सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च।
ऊनपञ्चाशदेवैषां प्रवरा ऋषिदर्शनात्॥"

अर्थात्—गोत्रोंकी कुल संख्या तीन करोड़ है। व्याख्याकारोंने इस श्लोकका ऐसा अर्थ किया है कि,—वास्तवमें तीन करोड़ गोत्रोंका प्रतिपादन करना—इस वचनका उद्देश्य नहीं है। हाँ, सहस्ररश्मि, सहस्रपाद, सहस्रशीर्षा इत्यादि शब्द जिस प्रकार अनियत संख्याके लिए प्रयोग किये जाते हैं, वैसे ही इसका भी प्रयोग किया गया है। अन्यान्य ग्रन्थोंमें गोत्रोंकी संख्या जितनी लिखी है, वही मान्य है। असलमें बात यह है कि, वौधायन भी उक्त श्लोकमें यह स्वीकार करते हैं कि, इन आठ गोत्रोंके सिवा और भी गोत्र हैं, और इस वचनको उपलक्षण समझना चाहिये। ऐसी अवस्थामें गोतम और काश्यप पाठ होने पर भी कोई हर्ज नहीं, क्योंकि वौधायनने उक्त रचनामें काश्यप और गोतमगोत्र हीका निरूपण किया है। सुप्रसिद्ध काश्यप और गोतमगोत्रका निश्चय अन्यान्य ग्रन्थोंके अनुसार करना पड़ेगा, क्योंकि वौधायनने शाण्डिल्य, सावर्ण आदि दूसरे प्रसिद्ध गोत्रोंकी भांति काश्यप और गोतमगोत्रका उल्लेख नहीं किया।

मञ्जरीके कर्त्ता पुरुषोत्तम शेषोक्त व्याख्याको स्वीकार ही नहीं करते। उनके मतसे यदि वह व्याख्या स्वीकार कर ली जाय तो वौधायनके उस वचनसे यह समझा जाता है कि वे सिर्फ आठ ही गोत्र मानते हैं और फिर "गोत्राणां तु सहस्राणि" इस वचनसे बहुतसे गोत्रोंका उल्लेख करते हैं, इसलिए शेषोक्त व्याख्या स्वीकार कर ली जाय तो स्वयं वौधायनके वचनोंमें ही परस्पर विरोध आता है (१)। वास्तवमें अन्तकी व्याख्या असङ्गत ही प्रतीत होती है। किसी तरह "यदपत्यं तद्गोत्रं" इस अंशको वैसी कूट व्याख्या कर लो तो क्या। परन्तु रघुनन्दन और धनञ्जय आदि ग्रन्थकारधृत "एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते" इत्यादि वचनोंको अन्य किसी प्रकारकी व्याख्या हो ही नहीं सकती। इनके पुत्रपौत्र आदि सन्तानोंको उनके गोत्र समझना चाहिये। ऐसी दशामें यही व्याख्या स्वीकार करनी पड़ेगी।

"बृहस्पति गौतमञ्च संवर्त्तमपि पुङ्गवम्।
मतथ्यं वामदेवञ्च अजास्यमृषिजं तथा॥
इत्येते ऋषयः सर्वे गोत्रकाराः प्रकीर्त्तिताः।
तेषां गोत्रसमुत्पन्नान् गोत्रांश्चान्यान् निबोध मे॥" (मत्स्यपु० १९६।५ ६)

यहां पर जो "तेषां गोत्रसमुत्पन्नान्" ऐसा पाठ है, उससे साफ ही मालूम हो रहा है कि, गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके साथ गोत्र शब्दका षष्ठी समास होता है। आश्वलायनके वृत्तिकार नारायण, मञ्जरीकर्ता पुरुषोत्तम और दर्पणकार कमलाकर आदिके मतसे गोत्र शब्दका अर्थ अपत्य वा सन्तान है। गोत्रप्रवर्तक ऋषियोंके वंशधरोंके साथ गोत्र शब्दका अभेद अन्वय होता है। परन्तु, ऐसा होनेसे तो "काश्यपगोत्रस्य श्रीमतया अमुकीदेव्याः" यह वाक्य भी बन सकता है। इसके अलावा "स गोत्रात् भ्रश्यते नारी विवाहात् सप्तमे पदे। पतिगोत्रेण कर्त्तव्या स्तस्याः पिण्डोदकक्रियाः॥" ऐसा भी देखनेमें आता है। ऐसी दशामें गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके वंशधरोंके साथ गोत्र शब्दका भेदान्वय (अर्थात् पतिका गोत्र यह है) है, वह भी स्वीकार करना पड़ेगा। इसलिए इन विरोधोंकी मीमांसाके लिए उभय लिङ्ग स्वीकार कर लिया जाय तो झगड़ा ही निपट जाय।

१-गोत्र शब्द नपुंसकलिङ्ग है, उसके तीन अर्थ हैं—१म वंश, कुल। * २य वंश परम्परा प्रसिद्ध आदि पुरुष †। ३य अपत्य, सन्तान, पुत्र पौत्रादि ‡। २ - गोत्र

(१) "अत्र ब्रूमः वौधायनमतानभिज्ञस्य आख्यं य", "गोत्राणान्तु सहस्राण्यर्बुदसङ्ख्याके गोत्राणि कोटिवयसंख्याकानि कानीत्याकाङ्क्षायां विश्वामित्रो जमदग्न्यादीन्यगस्त्यान्तान्यष्टौ गोत्राणीत्युक्तेः पूर्वापरविरोधादसङ्गतं स्यात् अस्मदीयपक्षे तु नास्ति कश्चिद् दोषः" (गोत्रप्रवरमञ्जरी)

* 'गोत्रं चाभिजनः कुलं' (अमर)। 'गोत्रा भूगवायोर्गोत्रः शैले गोत्रं कुलाख्ययोः।' मेदिनी।

† "अतएव विज्ञानेश्वरः गोत्रं वंशपरम्पराप्रसिद्धं" (गोत्रप्रवरदर्पण)। "गोत्रं वंशपरम्पराप्रसिद्धमादिपुरुषं ब्राह्मणरूपं।" (शब्दकल्पद्रुम)

‡ "एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यन्ते।" (धनञ्जयकृत धर्मप्रदीप) "अपत्यं पुत्रपौत्रप्रभृतिगोत्रम्"। (पा० ४।१।९२)

शब्द पुत्रादिकी भांति उभय लिङ्ग है, विशेष्यके अनुसार अपने लिङ्गको छोड़ कर स्त्रीलिङ्ग वा पुंलिङ्गमें व्यवहृत होता है। (६) कर्मकाण्डमें जिस वाक्यादिको रचना करनी पड़ती है, उसमें द्वितीय गोत्र शब्दका ही प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त दूसरी जगह अपनी इच्छानुसार कोई भी शब्दका प्रयोग किया जा सकता है। इस अवस्थामें किसी प्राचीन शास्त्रमें विरोध नहीं पड़ता।

गोत्र कितने हैं? प्राचीन मुनि वा ऋषियोंमेंसे किन किनके नामसे गोत्र बने हैं? इन विषयोंका निरूपण प्राचीन शास्त्रों और संग्रह ग्रन्थोंकी ही आराधनासे करना पड़ेगा। परन्तु सम्यक् अनुशीलनके अभावसे अथवा लेखकोंके प्रमादसे उन मूल ग्रन्थोंका तथा संग्रह ग्रन्थोंका पाठ इतना बिगड़ गया है कि उसके वास्तविक पाठका पता लगाना असाध्य है। इसी लिए संग्रहकार पुरुषोत्तमने अपने मञ्जरी ग्रन्थमें आपस्तम्ब आदिके मत को ले कर उनके परस्परके विरोध मिटानेका बहुत प्रयत्न किया है। उनके बादके संग्रहकार कमलाकरने अपने गोत्रप्रवरदर्पणमें ऐसा लिखा है, "कात्यायनापस्तम्बादि सूत्रभाष्यालोचनेन न्यूनाधिक्यभावात् गोत्राणां प्रवराणाञ्च गणेषु व्यामरूपस्य व्याप्रवरविकल्पवादिभिर्विसम्वादात् सर्वसूत्रपुराणोपसंहारेण निर्णयः कार्य्य इत्युक्तं भवति मञ्जर्य्याम्।" अर्थात् पुराणादि सब ग्रन्थोंका साम ञ्जस्य रखते हुए ही गोत्र निर्णय करना चाहिये।

मत्स्यपुराणमें १९५ से २०२ अध्याय तक गोत्र और प्रवरका निरूपण किया गया है। उसमें "गोत्रकारान् ऋषीन् वक्ष्ये" इत्यादि लिख कर पीछेसे जिन ऋषियों का नाम लिखा है शायद वे ही (मत्स्यपुराण अभिमत) गोत्रोंके नाम हैं। यद्यपि यह कल्पना को जा सकती है कि किसी समय उन नामोंके गोत्र प्रचलित थे, तथापि यह मानना पड़ेगा कि, बहुत दिन पहिले ही उन गोत्रों का लोप हो चुका है, अब उनका चिह्न तक नहीं मिलता।

---

(६) "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

बोधायन आदि सूत्रकारोंने कुछ गोत्रगण और प्रवर गणका निरूपण किया है। स्मृत्यर्थसार आदि ग्रन्थोंके मतानुसार ऐसा मालूम होता है कि, गोत्रगणमें जिन जिन ऋषियोंके नाम हैं, उन उन नामके एक एक गोत्र भी हैं। जैसे—वत्स, विद, आर्ष्टिषेण, यस्क, शुनक, मित्रयुव और वैन्यभृगुके ये सात गोत्रगण हैं। इस नामसे ये सात गोत्र और इनके गणसे अन्यान्य दूसरे नामके भी गोत्र प्रचलित हैं। इसी प्रकार अङ्गिरोगण और विश्वामित्रगोत्रगण आदि भी निरूपित हैं। परन्तु वे सब गोत्र अब प्रचलित नहीं।

धनञ्जयकृत धर्मप्रदीपमें गोत्रप्रवर्त्तक ऋषियोंके कुछ नाम लिखे हैं। वे इस प्रकार हैं—१ जमदग्नि, २ भरद्वाज, ३ विश्वामित्र, ४ अत्रि, ५ गोतम, ६ वशिष्ठ, ७ काश्यप, ८ अगस्त्य, ९ सांकाल्पीन, १० मौद्गल्य, ११ पराशर, १२ हृहस्पति, १३ धाम्बन, १४ विष्णु १५ कौशिक, १६ कात्यायन १७ आत्रेय, १८ कण्व १९ कृष्णात्रेय, २० साङ्कृति, २१ कौण्डिन्य, २२ गर्ग, २३ आङ्गिरस २४ धनञ्जय, २५ अत्र्य, २६ जैमिनि, २७ हृद्वि २८ शाण्डिल्य, २८ वात्स्य, ३० आलम्बायन ३१ मैत्रायण्य, ३२ घृतकौशिक ३३ शक्ति, ३४ कात्यायन, ३५ वासुकि, ३६ गोतम, ३७ शुनक और ३८ मौधायन। बोधायन, आपस्तम्ब और आश्वलायन आदि सूत्रकार और पौराणिकों ने, पहिले कुछ गोत्रकाण्डोंका उल्लेख करके फिर उनके कुछ गोत्रगणोंका भी उल्लेख किया है। एक गोत्रगणमें जितने गोत्रोंका उल्लेख किया गया है, उनके प्रवर समान हैं। जैसे भृगुगोत्रकाण्डके आर्ष्टिषेण गोत्र गणके अन्तर्गत जितने गोत्र हैं, उन सबहीके भार्गव, च्यवन, आप्नवान्, आर्ष्टिषेण और आनूप ये पाँच प्रवर हैं। ([illegible] [illegible]) [illegible]। जिसप्रकार समान गोत्रमें विवाह निषिद्ध है, उसीप्रकार समान प्रवर होने पर भी विवाह निषिद्ध है।

बोधायन आदिने जिन जिन गोत्रगणोंका उल्लेख किया है, उनके नाम आदि नीचे लिखे जाते हैं—

भृगुगोत्रकाण्डमें वत्स, आर्ष्टिषेण, विद, यस्क, मित्रयुव, वैन्य और शुनक—इन सात गोत्रगणोंका उल्लेख है। बोधा

यनने इनके प्रत्येक गणके अन्तर्गत जितने गोत्र हैं, उन सबका निर्णय किया है। इस लिए यहां सिर्फ बौधायनके मतानुसार गोत्रगण लिखे जाते हैं।

वत्स, मार्कण्डेय, माण्डुकेय, माण्डव्य, कार्पायण, दार्भायण शार्कराक्ष, देवलायन, शौनकायन, माधुकेय, वार्षिक, शाक, प्रभायण, पैल, पैलायन, वार्ग्रेयकि, वाग्र्यक, वैश्वानरि, वैहिनरि, विरोहित, वाम्न, लभ्र, गोष्ठायन टिकी, कारभ, क्षण, वाटभृतक, ऋतभाग, रौहिनायन, जानायन, पाणिनि, वाल्मीकि, स्थौल पिण्डि, शातन, जिह्विनि, सावर्णि, वाक्यायन, वाल्मायन, सौहति, मण्डविष्टि, हस्ताग्नि, मार्कायण, काचायण, वायकव, वायनो, शाकारव, कारवच, चान्द्रमस, गाङ्गेय नैधेय, याज्ञिय, वाहु, सित्रायण, आपिशलि, वैष्टपुरेय लौहितायन, उतस्तक्ष, मालायन, शारद्वतायन, रजतगाह, वात्स्य और वात्स्यायन—ये सब वत्सगण हैं। इनके प्रवर इस प्रकार हैं,—भार्गव, च्यवन, आप्रवान, और्व और जामदग्न्य। (बौधायन १ प्रवराध्याय)

२ विद, शैल, अवट, प्राचीनयोग्य, अभयटि, काण्ड रथि, वैनस्थि, पुलस्ति, आर्कायन, ताग्नायन, क्रौञ्चायन और फामन—इनको विदगण कहते हैं। इनके भी पांच प्रवर हैं, भार्गव, च्यवन, आप्रवान, और्व और वैद।

(बौधायन, ४ प्रवराध्याय)

३। आर्ष्टिषेण, रथि, कादम्बायन, कौलायन, चन्द्रायण, पौढ़कलायन, सिद्ध, सुमनायन, गोरभी और आन्भ—ये आर्ष्टिषेणगण है। इनके प्रवर भी पांच प्रकारके है—भार्गव, च्यवन, आर्ष्टिषेण, आप्रवान और आनूप। (बौधायन ५ प्रवराध्याय)

४ यस्क, मौनसूक, वाधूल, वर्षपुष्प, भागलेय, राजितायन, भागलेय, उद्दिन, भास्कार, रैवतायन, वाफनि, माध्यसेय, वासि, कौशाम्बेय, क्रौविल्य, सात्वकि, चित्रसेन, भागुरि और कापिशायन इतने यस्कगण है। इनके प्रवर तीन है,—भार्गव, वैतहव्य और सावेतस।

(बौधायन ६ प्रवराध्याय)

५ मित्रयुव, रौक्षायण, सापिण्डित, सुरभिनि, माह्ना-महावाह्ना, ताक्षायण, उक्षायण, वाजायन, मोजाधय, कौषतवायन—इनको मित्रयुवगण कहते है। इनके भी तीन प्रवर हैं,—भार्गव, दैवदास और वाध्र।

(बौधायन ७ प्रवराध्याय)

६ शुनक, गृत्समद, यज्ञपति, सौगन्धि, स्वार्द्धमायण गाभारण, मत्स्यगन्ध, श्रोत्रिय और तैत्तिरीय—इनको शुनकगण कहते हैं। इनका एक ही प्रवर है—शुनक अथवा गार्त्समद। (बौधायन ८ प्रवराध्याय) कात्यायनके मतानुसार इनके दो प्रवर हैं,—एक भार्गव और दूसरा गार्त्समद। आश्वलायनके मतसे इनके प्रवर तीन हैं,—१ शौनक, शौनहोत्र और गार्त्समद। (आश्व० श्रौ० १२।१०।१३)

७ वैन्य, पार्थ और वाष्कल—ये वैन्यगण कहलाते हैं। आश्वलायनके मतसे—वैन्यकी जगह 'गिरत' पाठ भी मिलता है। (आश्व० श्रौ० १२।१०।११) इनके प्रवर तीन हैं—भार्गव, वैन्य और पार्थ। (बौधायन प्रवरा०)

गौतम गोत्रकाण्ड—

१। आयस्य, योगिचेय, मिद्रग्य, सात्यकि, स्वैदेह, कौमारवत्य, तौड़ि, दर्भि, दैकि, सत्यमुनि, कौवाह्य, वोवर, नैकरि, तैपिकि, किलालि, कहगि, कठोकामि और कंचि, इनको आयस्यगौतमगण कहते है। आङ्गिरस, आयस्य और गौतम ये तीन इनके प्रवर हैं।

(बौधायन गौतमकाण्ड १ अ०)

२। शरद्वन्त, अभिजित, रौहिण्य, क्षीरकरम्भ, सौमुचि, मौयागुण, कौपिन्दु, रहुगण, गर्गि और माथव्य—ये शरद्वन्तगौतमगण कहलाते हैं। इनके भी प्रवर तीन हैं,—आङ्गिरस, गौतम और शरद्वन्त। (बौधायन गो० का० २ अ०)

३। कौमण्ड, मामन्दु, ईपणा, यासुराक्ष, काठेरपि और आञ्जग्रन—ये कौमण्ड-गौतमगण हैं। इनके पांच प्रवर इस प्रकार हैं,—आङ्गिरस, औतथ्य, काक्षिवत्, गौतम और कौमण्ड। (बौधायन गो० का० ३ अ०)

४। दीर्घतमागणके भी पांच प्रवर है,—आङ्गिरस, औतथ्य, काक्षिवत्, गौतम और दीर्घतमस्।

(बौधायन गो० का० अ०४)

५। औशनस, आदित्य, अनुपप्रशस्त, सुरूपाक्ष, महोदर, विकन्दत, सुवुधा, निहत, इनको औशनसगण कहते हैं। इनके तीन प्रवर है—आङ्गिरस, गौतम और औशनस।

(बौधायन गो० का० ५ अ०)

६। कारेणुपालि, श्वेतीय, गोजिष्ठ, यौदञ्जायन,

माधुहार और अनगन्धि—इनको कपिगुपालिगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन हैं,— आङ्गिरस, गोतम और कारेणुपालि। (बौधायन गोतम काण्ड ६ अ०)

भरद्वाज गोत्रकाण्ड—

१। भरद्वाज, चाम्यायण, मङ्गडा, देवस्वानुद्वस्थ्या, अगयोसि, सौमायन, तैत्तेह, श्रत्ताश्चा, योत्ताभूरि, परिचाड्डेय, कुम्बरवेय, इपुवत्, बोदयेधि प्रवाहणेय, कम्योण, स्तम्बि, मयोय, प्रक्षतपर, हैरि, सैद्दयद्रुग, क्षारि ग्रीवि, श्रोपमि, वायास्ति, भेट, अग्निवेश्याघट, गौरि, वायवि, कर्ण, धात्त मानविय, कट्टवमेका, खोञ्चलि, खाण्डादि, तरुड्डेय, भद्रामय, सोरभ, मैत्रकेय, कौण्डायन कौण्ड्य प्रवाहणेय, यलभौकि कडाङ्गय, शाल्माहनि, वेदवेलायण, वृत्यायन, शाल्मालय, शार्दूलि, ब्रह्मस्तम्ब, अग्निस्तम्ब, वायुस्तम्ब, सूर्य्यस्तम्ब, सोमस्तम्ब, विष्णुस्तम्ब, यमस्तम्ब इन्द्रस्तम्ब, आपस्तम्ब तथा अन्यान्य स्तम्बान्त शब्द, आरण्याकि भिक्षुसौगन्धि शिखायन, आत्रेयायण, कुचा, कौकाक्षि, पतिनैतूलि, दार्भिस्वामेय, मत्वक्राथ, कारुणायन, कारुपथि, कारियायण और कारस्त इन सबको भरद्वाजगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन प्रकार हैं—आङ्गिरस, बार्हस्पत्य और भरद्वाज।

(बौधायन भरद्वाज गोत्र काण्ड)

केवलाङ्गिरस गोत्रकाण्ड—

१। हरित, प्रडरुयोदना सौभग, लोमरथ, सत्यायु, नावोदर, नैमिश्र, आमिश्रोदन, कौतप कारिषि, कौणि, यौलि, पोण्डुल, माधूय, माधातु और मारुड्कारि इनका गण हरित है। इनके प्रवर तीन हैं—आङ्गिरस, आम्बरीष और यौवनाश्व।

२। कट्ठ, ग्रोवमजरायण, वात्कल, पोलक्षानि, लोमाञ्जि माञ्जि, सोधिगान्ध, विनिवाञ्जि और वाजश्रवस, ये सब कट्ठगण हैं। इनके तीन प्रवर हैं—आङ्गिरस, आजमीढ और काट्ठव।

३। रथीतर, हस्तिदासि, काचायण, नौतिरन्तु, शैलालि, भिलिभि, निडायन, मानडव, मैनावाह और हैमनावाद—इनको रतिगण कहते हैं। इनके भी प्रवर तीन हैं—आङ्गिरस वेरूप और रथीतर।

४। विष्णुवृद्ध, शटामरण, भद्राण, मद्राण, वादायन, शल्यप्रायण, धात्यकि, सात्यकायन, नैतुण्ड, सुतत, भाहन्य और देवस्थानो—इनको विष्णुवृद्धगण कहते हैं। ३ प्रवर ये हैं—आङ्गिरस पौरकुत्स और त्रासदस्य।

५। सङ्कृति, मलक, पौलस्तिण्डि, शम्बु शैभव, तारक, आघारि, ग्रोवागिपय, श्रौतायन, रायम्नायन, याघापि और पूतिमाष—ये सब सङ्कृतिगण हैं। इनके ३ प्रवर—आङ्गिरस गौरवीत और साङ्कृत्य है।

६। कपि, वैतल अनाक्ष मायन, पतञ्जल, अन्तरस्विन, ताण्डिन, आश्लोज, सिनाङ्गाश, स्वनाङ्गर, शिखडायन, आमोपितकि, मागसङ्ग और बोधि—इनको कपिगण कहते हैं। इनके आङ्गिरस, आमहीय और उरुक्षयस ये तीन प्रवर हैं। (बौधायन)

अत्रिगोत्रकाण्ड—

१। अत्रि, छान्दादि, पौष्टिका, माहुलय, नेपाकुरा, लाक्कुनाकि प्रोणभावा गौरिग्रोव, योग विशिष्ठिरा, शिशुपाल, कर्णात्रेय, गौरात्रेय अरुणात्रेय निनात्रेय श्वेतात्रेय, महात्रेय, पालेयेता, गैयरामरथि, वैतभाव, सौद्रेय, कौद्रेय, गोपवतृय कालायचय, गविल्लायन, मानङ्गि, मानङ्गि, सारङ्गि, गौरङ्गि, पुष्पय, सैव्य, साकेतायन भारद्वाजायन और स्थातिमि—इनको अत्रिगण कहते हैं। इनके प्रवर तीन प्रकारके हैं,—आत्रेय आर्चनान और श्यावाश्व।

२। वामूतकगणके तीन प्रवर ये हैं,—आत्रेय, आनसश्याव और वामूतक।

३। गविष्ठिरगणके तीन प्रवर—आत्रेय, आर्चनान और गविष्ठिर।

४। मुद्गल व्यालि, सवि, आरण्यत्त, बोधाक्ष, गविष्ठिर, वैतवाह, शिविपय शाल्मिल, गौरिति, गौरकि और वायवन इनको मुद्गलगण कहते हैं। इनके भी तीन प्रवर हैं—आत्रेय, आर्चनान और मौद्गल्य।

(बधा म अत्रिगोत्रकाण्ड)

विश्वामित्रगोत्रकाण्ड—

१। कुशिक, पर्णजंघ, वारकव, घोटेलि माणि हृहदग्नि वानविरा, यज्ञिशपद्राथा, कामलाका, षडेकथा, चिकि, ताम्र, मकरायण, शालङ्कायन, शाडायन, लाजा, गोर, सौगन्धि, यमदूत, अत्रभिव, ग्रनवकायन,

चौवल, जावालि, याज्ञवल्क्य, उद्गाहवलि, सौसुतया, औपदहन्य, उदम्बरि, भाषग, श्यासेय, चैत्रेय, वला, मयूरास, शौयतप्राति, नव, सयस्तायन, तरन्तु, काम्यान्तर, यच्य, कालि और उत्सरि। इनको कुशिकगण कहते हैं। इनके तीन प्रवर है,—वैश्वामित्र, अष्टक और लोहित।

२। रौहक, रुषौदहल और रेवण—इनके तीन प्रवर ये है.—वैश्वामित्र, रौहक और रेवण।

३। वैश्वामित्र, देवरात, अवस, देवतवस, मिति श्याम, कारण और काकायनिन्—इनके तीन प्रवर ये है—विश्वामित्र, देवस्रवस और देवतवस।

४। अज, माधु और मधुच्छन्द—इनके तीन प्रवर इस प्रकार है—विश्वामित्र, मधुच्छन्द और सार्जात।

५। अघमर्षण गोत्रगणके तीन प्रवर ये हैं,—विश्वामित्र, अघमर्षण और कौशिक।

६। इन्द्रकौशिक गोत्रगणके दो प्रवर है,—विश्वामित्र और इन्द्रकौशिक। (बौधायन विश्वामित्र-गोत्रकाण्ड)

काश्यपगोत्रकाण्ड—

१। काश्यप, आङ्गिरस, भारद्वाज, एतिमायन, भल्य, वैशिप्रा, धूर्मायन, सौम्य, धर्मायण, औरवृच, प्रग्रायण, पैधकि, प्राचर्य, हृद्रोग, आतप, पाश्चायतिक, नैयातिक, सामसि, मासरि, सौवचि, सायस्य, आस्तवायन, छागव्य, सौनि, स्वपर्कशि, वार्षि, औपव्य, लाचण, क्रौष्टाजीव, खाड़ायन, रोहितायन, मितकुम्भ, पिङ्गाचि, मारायण, पचवर, कर्णेय, कौपीतकी, धूमलहायन, सुरा, गौरिवायन, महाचक्रेय, यैश्चिनस, पाणखागि, पगण, दाचपाणि, भालन्दन, साहमित्रेय, हरित्या, जारमात्स्य, औरमाणिश, विस्रावस, वैशम्पायन, खैरकि, काशलि, उत्तायनि, मार्जनायन, कांसलायन, देवहोता, सूचि, रैभि, भागुरि, पश्चिकायन, गोमायन, हिरण्यरश्मि, अग्निदेवी, सौशल, आविस्रेय, सुच्युतदत्ता, मन्वित, वैकर्णि और स्थूलारिन्दम—ये सब निध्रुवगण है। इनके तीन प्रवर इस प्रकार है—निध्रुव, आपसार और काश्यप।

२। रैभगोत्रगणके तीन प्रवर है—काश्यप, आपसार और नैध्रुव।

३। शाण्डिल्य, पाचक, वार्यिक, ओदमेध्या, मौदान मावचस, कारेय, कौकरठकि, तैत्ति, मारुकि, वह्नोदकि, कोषि, मौञ्जायन, जागवंश, खर्वायण, गावभाव, सभालि, गोभिल, वटायन, वात्स्यायन, बह्वदरि, भागुरि, खादंतीमुख, हिरण्यबाहु, तैदेह, गोपुत्रा, वाक्यष्ठा, जालन्धरि और धन्वन्तरि, इनको शाण्डिल्यगण कहते हैं। इनके काश्यप, आपसार और देवल ये तीन प्रवर हैं।

४। लौगाक्षि, दाभपर्ण, मैत्रवादि, पद्मवादि, हपाम्बुचि, तथाकलि, कसपात, कायनितस्वन्ता, विरोधकि, कौनामि, सौलय, मैति, किष्टि, भेरीनिष्टि, चैरत्ति, चौप्यन, पौधकालक, चय और जप, ये सब लौगाक्षिगण कहलाते है। इनके काश्यप, आपसार और वसिष्ठ—ये तीन प्रवर हैं। (बौधायन काश्यपगोत्रकाण्ड)

वशिष्ठ गोत्रकाण्ड—

१। वैतनकि, वाहरकि, सारण, गौरिध्वंश, आश्वलायन, कपिष्ठ, ...सौचि,......वाह्यकायनि, गायनि, कौशायन, मुन्दहरित, सोपवमायन, आनन्तायन, पर्णव्यायन, पणिवाह्न, देवन, गौरवाश्म, वाहव्यथि, अवाकि, वश्वपाय, पूतिमाष और मप्रावन—ये वैतानिकगोत्रगण है। इनका प्रवर सिर्फ एक ही है,—वाशिष्ठ।

२। कुण्डिन, लोहायन, युग, कौक्रोक्य, माङ्गनिन्, पैटक, नवयि, हिरण्याचयन, पैप्यनादि, भोज्याचि, मध्योदिन, स्यान्ति और शौपासिन्, इनको कुण्डिनगोत्रगण कहते है। इनके प्रवर तीन हैं—वशिष्ठ, मैत्रावरुण और काण्डिन्य।

३। पराशर, काढुषि, वाजि, वामिति, वैमतायन और गौराणि, इनको कृष्णपराशर, प्ररोहि, वेकालि, प्राचि, कौमुदि और हर्षदाश्वि, इनको गौरपराशर, तथा काम्पायनि, गोप्रायण, स्याति और वारुणि, इनको अरुणपराशर कहते है। भानुकि, राजानि, क्यानहायन, कोकुलेय और क्रौमथायी, इनको नीलपराशर तथा कृष्णाजिन, कपिमुख, श्वाश्यापायन, श्वेतमुखि और पौष्करसादि इनको श्वेतपाराशर गोत्रगण कहते हैं। इनके भी प्रवर तीन है—पराशर, शक्ति और वशिष्ठ। (बौधायन वशिष्ठ गोत्रकाण्ड)

अगस्तिगोत्रकाण्ड—

१। काण्वायन, आटङ्गकि, माषर्दाण्डिन्, लोणनस, वरद्, वैरणि, वुधौदि, शौरपथि, शाल्पतप, मौञ्जीकर,

पायोदगत जारियोंका रोहिश्व और नोधनहि इनका नाम अगस्तिगोत्रगण है। इनके अगस्ति, दार्ढ्यच्युत और इध्मवाह—ये तीन प्रवर हैं। (बोधायन श्रौतसूत्रोक्त काण्ड)

बोधायनके अनुसार गोत्र और प्रवरका विषय लिखा जा चुका है।* कात्यायन प्रणीत श्रौतग्रन्थमें और मत्स्य पुराणमें भी ये सब गोत्रकाण्ड लिखे हैं। परन्तु दोनों ग्रन्थोंमें एकसा नहीं लिखा कहीं पर किसी ग्रन्थमें दो एक गोत्र ज्यादा भी हैं और कम भी। (प्रवरमञ्जरी)

गोत्रप्रवरदर्पणके कर्त्ता कमलाकरने अपने ग्रन्थमें बोधायनोक्त भृगुगोत्रकाण्डका उल्लेख करते हुए कहा है कि, "एते बोधायनोक्ता यद्यपि प्रवरमञ्जरीधृतबोधायन सूत्र आकरसूत्रे च भूयान् न्यूनाधिकभाव स्तदप्युभयानुसारेण वदाम।" अर्थात्—यद्यपि ये बोधायनके कहे हुए गोत्र हैं, परन्तु तो भी प्रवरमञ्जरीमें बोधायनके जो जो सूत्र उद्धृत किये गये हैं, उनमें और (जो प्राप्त है) बोधायनके मूल ग्रन्थमें बहुतसे पाठोंमें व्यतिक्रम या न्यूनाधिकता पायी जाती है। ऐसी दशामें हम यहां दोनोंके मतानुसार ही लिखेंगे। इसीसे साफ ही जाहिर होता है कि, बोधायनके मूलग्रन्थके साथ पुरुषोत्तमकृत प्रवरमञ्जरीका पाठ बहुत जगह मिलता नहीं। कमलाकर भी यह निश्चित नहीं कर सके कि, किसका पाठ यथार्थ है और किसका भ्रमात्मक। इसी लिए उन्होंने दोनोंके अनुसार लिखा है। अतिप्राचीन हस्तलिखित प्रवरमञ्जरीमें जैसा पाठ लिखा है यहां वैसा ही पाठ सन्निवेशित किया गया है। बोधायनने जिन जिन गोत्रों और प्रवरोंका उल्लेख किया है, वर्त्तमानमें उनका प्रचार बहुत ही कम देखनेमें आता है। जितने भी गोत्र देखे जाते हैं, उनके प्रवर बोधायनोक्त प्रवरसे भिन्न हैं। अत एव धनञ्जयकृत धर्मप्रदीपमें जितने गोत्र और प्रवर लिखे हैं, यहां भी उनका उल्लेख करना जरूरी था।†

वर्त्तमानमें प्रचलित गोत्र और प्रवरोंके नाम (१) इस प्रकार हैं—

गोत्रोंके नाम।	प्रवरके नाम।
१ जमदग्नि	जमदग्नि, और्व और वशिष्ठ।
२ विश्वामित्र	विश्वामित्र मरीचि और कौशिक।
३ अत्रि	अत्रि, आत्रेय और शातातप।
४ गौतम	गौतम, वशिष्ठ और बार्हस्पत्य।
५ वशिष्ठ	वशिष्ठ। मतान्तरमें वशिष्ठ, अत्रि और साङ्कृति।
६ काश्यप	काश्यप, अप्सार और नैध्रुव।
७ अगस्त्य	अगस्ति, दधीचि और जैमिनि।
८ मौकालीन	मौकालीन, आङ्गिरस, बार्हस्पत्य, अप्सार और नैध्रुव।
९ मौद्गल्य	और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।
१० पराशर	पराशर, शक्ति और वशिष्ठ।
११ बृहस्पति	बृहस्पति, कपिल और पार्वण।
१२ आश्वत्थ	आश्वत्थ, देवल और देवराज।
१३ विष्णु	विष्णु, वृद्धि और कौरव।
१४ कौशिक	कौशिक अत्रि और जमदग्नि।
१५ कात्यायन	अत्रि, भृगु और वशिष्ठ।
१६ आत्रेय	आत्रेय शातातप और सांख्य।
१७ काण्व	काण्व, आश्वत्थ और देवल।

(१) "जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रात्रिगौतमाः।
वशिष्ठः काश्यपोऽगस्त्यो मुनयो गोत्रकारिणः॥
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्वते।
[illegible]
मौकालीनसमाख्यातो [illegible]
[illegible] कौशिकौ [illegible]
[illegible]
आङ्गिरस [illegible]
[illegible]
[illegible]
शक्ति [illegible]
[illegible]
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्वते।" (धर्मप्रदीप)

* महापुराण कात्यायन श्रौतसूत्र आश्वलायन श्रौतसूत्र आपस्तम्ब सूत्र सूत्र आदि ग्रन्थोंको देखना चाहिये।

† हस्तलिखित पोथी मिल कर बोधायनोक्त गोत्र और प्रवरके नाम लिखे गये हैं। इसलिए नामोंमें बहुत जगह भूल हुई है।

	गोत्रके नाम	प्रवरके नाम
१८	कृष्णात्रेय	कृष्णात्रेय, आत्रेय और आङ्गिरस। मतान्तरमें आङ्गिरसकी जगह आवास।
१९	साङ्कृति	अव्याहार, अत्रि और साङ्कृति।
२०	कौण्डिल्य	कौण्डिन्य और तिमिकौत्स।
२१	गर्ग	गार्ग्य, कौस्तुभ और माण्डव्य।
२२	आङ्गिरस	आङ्गिरस, वशिष्ठ और वार्हस्पत्य।
२३	अनावृवाच	गार्ग्य, गौतम और वशिष्ठ।
२४	अव्य	अव्य, वलि और सारस्वत।
२५	जैमिनि	जैमिनि, उतथ्य और साङ्कृति।
२६	वृद्धि	कुरुवृद्ध, आङ्गिरस और वार्हस्पत्य।
२७	शाण्डिल्य	शाण्डिल्य, असित और देवल।
२८ २९	वात्स्य सावर्ण	और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।
३०	आलम्यान	आलम्यायन, शालङ्कायन और शाकटायन।
३१	वैयाघ्रपद्य	साङ्कृति।
३२	घृतकौशिक	कुशिक, कौशिक और घृतकौशिक मतान्तरमें वन्धुल।
३३	शक्ति	शक्ति, पराशर और वशिष्ठ।
३४	कात्यायन	आङ्गिरस, वार्हस्पत्य, भरद्वाज और अजमीढ़।
३५	वासुकि	अक्षोभ्य, अनन्त और वासुकि।
३६	गौतम	अयास्य, गौतम, आङ्गिरस, वार्हस्पत्य और नैध्रुव, मतान्तरमें गौतम, आङ्गिरस और आवास।
३७	शुनक	शुनक शौनक और गृत्समद। मतान्तरमें शुनक, सुनिहोत्र और गृत्समद।
३८	सोपायन	और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवत्।

ब्राह्मण ऋषि ही गोत्रके प्रवर्तक हैं। उनके वंशके लोगोंके गोत्र उन्हींके नामसे चलते हैं। क्षत्रिय आदि अन्यान्य वर्णोंके लिए यह बात असम्भव जान पड़ती है। उनके गोत्र उन्हींके पुरोहितोंके नामसे चलते हैं। अति प्राचीन समयमें या गोत्रके नियम बननेके बाद ही, जिन पुरोहितके नामसे जिनने अपने गोत्रका परिचय दिया था, वर्तमानमें उनके वंशधर भी उसी गोत्रका नाम लेते हैं। हालके पुरोहितोंके नामसे कोई भी अपने गोत्रका परिचय नहीं देता।

"पुरोहितप्रवरो राज्ञां।" (आश्व० श्रौ० १२।१५।५)

"[illegible]"

([illegible])

गोत्रक (सं० क्लो०) गोत्रमेव गोत्र स्वार्थे कन्। गोत्र शब्द।

गोत्रकर्तृ (सं० पु०) गोत्रस्य कर्त्ता ६-तत्। गोत्रप्रवर्तक। (भारत १३।४)

गोत्रकर्म (सं० पु०) दिगम्बर जैन सिद्धान्तानुसार—आठ कर्मोंमें गोत्रकर्म सातवाँ कर्म है। यह कर्म जीवोंको ऊंच और नीच गोत्रको प्राप्त कराता है। इसके दो भेद हैं,—

"उच्चैर्नीचैश्च।" (तत्त्वार्थसू. अ ८ सू०)

ऊंच गोत्र और नीचगोत्र ये दो गोत्र कर्मकी प्रकृतियां हैं। जिसके उदयसे लोकपूज्य और महान् कुलमें जन्म हो उसे गोत्रकर्म कहते हैं। जैसे—इक्ष्वाकुवंश, चन्द्रवंश, सूर्यवंश आदि और जिसके उदयसे निन्दा तथा दरिद्रताके साथ अप्रसिद्ध, दुःखसे व्याकुल—ऐसे वंशमें जन्म हो, वह नीच गोत्रकर्म है। जैसे—भङ्गी, चमार, डोम, धोबी आदि।

गोत्रकारिन् (सं० पु०) गोत्रं करोति कृ-णिनि। गोत्रकर्त्ता गोत्रप्रवर्त्तक।

गोत्रकीला (सं० स्त्री०) गोत्रः पर्वतः कील इव विष्टम्भकत्वाद् यस्याः, बहुव्री० टाप्। पृथ्वी।

गोत्रज (सं० त्रि०) गोत्रे समानगोत्रे जायते गोत्र-जन-ड। १ एकही गोत्रमें उत्पन्न, एक ही पूर्वजकी सन्तान। २ चौदह पुरुष (पिढ़ियों) तक एक गोत्रोत्पन्न मनुष्योंको 'गोत्रज' कहते हैं।

गोत्रद्रुम (सं० पु०) धन्वन वृक्ष।

गोत्रभित् (सं० पु०) गोत्रं पर्वतं मेघं वा भिनत्ति भिद्-क्विप्। १ इन्द्र। गोत्रं नाम भिनत्ति भिद्-क्विप्। नामभेदक, जो मनुष्य एक नाम उच्चारण करनेके समय दूसरा नाम उच्चारण करता है। २ पर्वत।

गोत्ररिक्थ (सं० क्ली०) गोत्रस्य रिक्थ, ६ तत्। गोत्रधन।

गोत्रवत (सं० त्रि०) गोत्र अस्त्यस्य गोत्र मतुप् मकारस्य वकार। गोत्रयुक्त, जिसको गोत्र है।

गोत्रवृक्ष (सं० पु०) गोत्रजात वृक्ष। धन्वनवृक्ष। (भावप्रकाश)

गोत्रसुता (सं० स्त्री०) पर्वतकी पुत्री, पार्वती।

गोत्रस्खलन (सं० क्ली०) गोत्रे नामनि स्खलन ७ तत्। एक नाम बोलनेके अभिप्रायसे किसी दूसरे नामका उच्चारण, मनुष्य अतिशय गाढ़ चिन्तामें मग्न रहता है तो इस तरह की घटना घटती है किन्तु आलङ्कारिक गणोंका मत है कि नायक और नायिकाका अनुराग वर्द्धित होने पर गोत्रस्खलन हुआ करता है।

गोत्रा (सं० स्त्री०) गा पशून सर्वान् जीवान, त्रायते त्रै क टाप्। १ पृथ्वी। गवां समूह गो त्र टाप्। २ गोसमूह, गायका झुण्ड। ३ गायत्रीस्वरूपा महादेवी (हरिवंश १६।१२१)

गोत्रादि (सं० पु०) पाणिनीय एक गण। गोत्र, ध्रुव, प्रवचन, प्रहसन, प्रकथन, प्रत्यायन, प्रपञ्च, प्राय, न्याय, प्रचक्षण, विचक्षण, अववचक्षण, स्वाध्याय, भूमिष्ठ और वान्नाम इन सबोंको गोत्रादि गण कहते हैं। गोत्रगण तिङन्तके बाद होने पर अनुदात्त हो जाता है।

गोत्रान्त (सं० पु०) गोत्रस्यान्त ६ तत्। गोत्रका विनाश वंशका नाश।

गोत्रान्तर (सं० क्ली०) नित्यस०। अन्य गोत्र, दूसरा गोत्र।

गोत्रिक (सं० त्रि०) गोत्रे भव गोत्र ठकन्। गोत्रोत्पन्न, गोत्रिय।

गोत्री (सं० त्रि०) समान गोत्रवाले गोत्रज, गोतिया।

गोत्व (सं० क्ली०) गोर्भाव गोत्व। १ जातिविशेष जिस जातिको सिर्फ गौ ही है, दूसरा कोई पदार्थ नहीं, उसीको गोत्व जाति बोलते हैं। २ गौका धर्म।

गोद (सं० पु०) गां नेत्र दायति शोधयति दै क। १ मस्तिष्क, मगज। (त्रि०) गा ददाति दा क। २ गोदाता गोदान करनेवाला। (पु०) ३ गोदावरीके निकटस्थ एक देश।

गोद (हि० स्त्री०) १ उत्सङ्ग, कोरा, ओली। २ वक्ष स्थलके पासका स्त्रियोंकी साड़ीका एक भाग।

गोदगुदनी (हि० पु०) गून नामका पेड़।

गोदत्र (सं० क्ली०) गोद त्रायते त्रै क। १ मस्तिष्क रक्षक मुकुटादि। (पु०) २ इन्द्र। (त्रि०) ३ गोदान करने-वाला।

गोदधि (सं० क्ली०) गायका दही।

गोदनहर (हि०) गोदनहारी देखो।

गोदनहरा (हि० पु०) टीका लगानेवाला, माता छापने वाला।

गोदनहारी (हि० स्त्री०) नटजातिकी स्त्री जो गोदना गोदनेका काम करती है।

गोदना (हि० क्रि०) १ गड़ाना। २ किसी कामके लिए बार बार यत्न करना। ३ छेड़ छाड़ करना। ४ हाथीको अङ्कुश देना। (पु०) ४ एक विशेष प्रकारका काला चिह्न जो तिलके आकार होता है। नट जातिकी स्त्रियां अपनी सूईको नील या कोयलेके पानीमें डुबा कर मनुष्यके शरीरमें छेद देती हैं। इसमें दो तीन रोज तक शरीरमें बहुत वेदना मालूम पड़ती है। किन्तु उसके बाद वह चिह्न सदाके लिए रह जाता है।

गोदना—सारण जिलेके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २५ ४७ उ० और देशा० ८४ ३८ पू०में गङ्गा और घेवरा नदीके सङ्गम पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ६०६५ है। सारण जिलेमें यही नगर प्रधान वाणिज्य स्थान है। चम्पारण, नेपाल बङ्गाल और उत्तर पश्चिम भारतके द्रव्यजातकी रफतनी और आमदनी इसी स्थानसे हुआ करती है। निम्नबङ्गसे जो समस्त नावें चावल और लवण बोझ कर युक्तप्रदेश जाती हैं उनका माल गोरख पुर और फैजाबादको नावोंमें रख कर पश्चिमाञ्चल भेजा जाता है। प्रतिवर्ष दो बार कार्तिक और चैत्र मासमें यहां मेला लगता है। ऐसा प्रवाद है कि न्यायदर्शनकार गौतम ऋषि अहल्याके साथ यहां वास करते थे। एक भग्न कुटीरमें काष्ठपादुका भी देखा जाती है। अधिवासी यात्रियोंको वही स्थान गौतमका आश्रम बतलाया करते हैं।

१८८८ ई०को रेवल साहब गवर्मेण्टके शुल्क संग्रह कर्ता होकर यहां आये थे। जिन्होंने एक आगार तथा शुल्क संग्रहके लिये एक घर निर्माण किया था। आपने

भी बाजारके मनुष्य उनकी कब्रकी देखते और भक्ति प्रदर्शन करते हैं।

गोदनी (हिं० स्त्री०) गोदना गोदनेकी सूई।

गोदन्त (सं० क्ली०) गोदन्त इवावयवोऽस्य। १ हरिताल। २ गौका दांत। ३ दानवविशेष।

गोदन्ता (सं० स्त्री०) दारुमोचभेद, एक स्थावर विषका नाम।

गोदरी (सं० पु०) इन्द्र।

गोदा (सं० त्रि०) गां स्वर्गं ददाति दा-क-टाप्। १ गोदावरी नदी। २ गायत्रीस्वरूपा महादेवी। (त्रि०) गां ददाति गो-दा क्विप्। ३ गोदाता, गौ दान करनेवाला।

गोदागारी—बङ्गालके राजशाही जिलेमें सदर सबडिविजन का गाँव। यह अक्षा० २४° २८ उ० और देशा० ८८° १८ पू० में महानन्दा और पद्मा नदी सङ्गमस्थलके निकट अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १२३५ है। यहां नदीको तरह युक्त प्रदेश तक व्यवसाय चलता है।

गोदान (सं० क्ली०) गावः केश लोमानि वा दीयन्ते खण्ड्यन्ते यत्र आधारे ल्युट्। १ द्विजातिका एक संस्कार, द्विजातियोंकी एक क्रिया, इसका दूसरा नाम केशान्त संस्कार भी है। केशान्त देखो। गवि पृथिव्यां दीयते निधीयते दा कर्मणि-ल्युट्। २ दक्षिणकर्णका समीपवर्त्ती स्थान। गोर्दानं, ६-तत्। ३ गाय या बैलका दान। अपना सत्व परित्याग कर दूसरेको गोदान करनेकी क्रिया। हेमाद्रिके दानखण्डमें गोदानप्रणाली इस तरह लिखी है—विश्वामित्रके मतानुसार वत्सयुक्त गौको पूर्वमुखी कर रखना चाहिए। दाता स्नान और शिखा बन्धन कर गौके पुच्छकी ओर उपवेशन करें। जिस ब्राह्मणको गोदान करना हो उसे उत्तरमुखी कर बैठावे। तदनन्तर दाता एक घृतपूर्ण पात्रमें कुछ सुवर्ण लेकर उसमें गोपुच्छ धारण करें। ब्राह्मणके हाथमें तिल दे पूर्वमुखी कर रखें। इसके बाद तिल और कुशादि ले यथानियमसे ऐसा कहना पड़ता है—

"यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघप्रणाशिनी। विश्वरूप. धरो देवः प्रीयतामनया गवा॥"

यह मन्त्र पढ़ ब्राह्मणके हाथमें जल अर्पण करना चाहिए। ब्राह्मणके गौ ले जानेके समय उन्हें भी गौका अनुगमन करते हुए गोमती मन्त्र जपना पड़ता है।

(विश्वामित्र)

गोमती मन्त्र यथा—

"गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलु गन्धिकाः।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्।
पावनं सर्वभूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि।
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमप्रतिष्ठिकाः॥
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्।
गावः पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम्॥
गावः सर्वस्य लोकस्य गावो धन्याः सुखावहाः।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति॥" (यम)

महाभारतमें दूसरी तरहका गोमतीमन्त्र लिखा है। तिलधेनु देखो।

गोदानका फल—कृष्णवर्ण गौ पट्टवस्त्रसे आच्छादित तथा सुवर्णालङ्कार द्वारा अलङ्कृत कर दान करनेसे उस व्यक्तिको यमलोक जाना नहीं पड़ता तथा आयुः, आरोग्य, ऐश्वर्य्यवृद्धि और मनोभीष्ट पूर्ण होते हैं। रत्नालङ्कार, घण्टामाला और पुष्प द्वारा परिशोभित गौके मुखमें घृत दे शृङ्ग सुवर्णमय और चार खुर रौप्यमय निर्माण कर पट्टवस्त्र द्वारा आच्छादन करें। इस प्रकार श्वेतवर्ण गोदान करनेसे उसके तथा उसके वंशजके पाप विनष्ट होते हैं। इस तरह गौरवर्ण गाय दान करे तो वह हजार करोड़ वर्ष पर्यन्त स्वर्गवास करता, नीलवर्ण गा दान करे तो हजार करोड़ वर्ष वरुणलोकमें बसते हैं एवं उसके पूर्व पुरुष नरकसे मुक्तिलाभ करते हैं। (वशिष्ठ)

कपिलवर्ण वत्सयुक्त और दुग्धवती धेनु दान करनेसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। इस प्रकार वत्सयुक्त दुग्धवती रोहिणी धेनुदानसे इन्द्रलोक, विचित्रवर्ण धेनुदान करनेसे चन्द्रलोक, कृष्णवर्ण धेनुदानसे अग्निलोक, वातरेणुके जैसा वर्णयुक्त धेनुदानसे वायुलोक धूम्रवर्ण धेनुदानसे यमलोक, सुवर्णवर्ण धेनुदानसे वरुणलोक, पिङ्गलवर्ण चक्षुयुक्त हिरण्यवर्ण धेनुदानसे कुबेरलोक, गौरवर्ण धेनुदानसे वसुलोक एवं पाण्डुकम्बलवर्ण धेनुदान करनेसे गन्धर्व लोकमें वास करता है। जो शुद्धचित्त तथा पवित्र

भावसे अनवरत गोदान करते वे सूर्यवर्ण विमानमें आरोहणकर स्वर्गको गमन करते हैं। स्वर्गीय रमणियां क्रीड़ा कौतुक कर सर्वदा उनको आनन्दित किया करती हैं।
(महाभारत)

विष्णु धर्ममें लिखा है कि पुण्य दिनको स्नान कर प्रथम पितृतर्पण करे। इसके पूर्व दिन केवल पञ्चगव्य खाकर रहे। तदनन्तर घृत और क्षीरद्वारा विष्णु या शिवजीका अभिषेक कर पुष्पादि उपहारसे भक्तिपूर्वक उनकी अर्चना करे। इसके बाद एक दुग्धवती गृष्टि धेनुको उत्तरमुखी कर स्थापन करे, गौके शृङ्ग सुवर्णमय और खुर रौप्यमय हों। अन्तको मन्त्र पाठपूर्वक ब्राह्मणको अर्पण करे उसमें यथाशक्ति दक्षिणा दी जाती है।

दानका मन्त्र—

"गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
दत्तेयं भक्तिमन्त्रोक्ता धेनुः सा मया तव।
स मे प्रीतमनो भूत्वा गोविन्द प्रीयतामिति॥" (विष्णु०)

भारत अनुशासन ६६ अध्याय प्रभृतिमें भी गोदानकी प्रशंसा और नियम लिखे हैं। भविष्यपुराणमें लिखा है कि धेनु सूर्यकी कन्या है, सर्व लोकके मङ्गल और यज्ञ सिद्धिके लिए इसकी उत्पत्ति हुई है। ब्राह्मण तथा गो एक कुलमें ही उत्पन्न हैं। गौसे यज्ञकी सिद्धि होती है। देव और षडङ्ग चतुर्वेद इसीसे उत्पन्न हुए हैं। गौके शृङ्गके अग्रभागमें समस्त तीर्थ तथा चराचर, शीर्ष पर सब भूतमय शिव, ललाटाग्रमें देवी, नासिकाके अग्रभाग पर कार्त्तिकेय, दोनों नासापुटोंमें कम्बल और अश्वतर नाग, कर्ण द्वयमें अश्विनीकुमारयुगल, दोनों आँखोंमें चन्द्र तथा सूर्य, दन्तोंमें वायु, जिह्वामें वरुण, कण्ठदेशमें राक्षसगण, हुङ्कारमें सरस्वती, गण्डमें यम और यक्ष, ओठ पर सन्ध्या, ग्रीवामें इन्द्र, वक्षस्थल पर साध्यगण, जङ्घादेश पर धर्म, खुरके अग्रभाग पर पन्नगगण, खुरके पश्चात् भाग पर अप्सरागण, पृष्ठ पर वसुगण, श्रोणितटमें पितृलोक, लाङ्गूलमें चन्द्र, ककुद्में सूर्यरश्मि, मूत्रमें गङ्गा, गोमयमें यमुना, दुग्धमें सरस्वती, दधिमें नर्मदा, घृतमें हुताशन, रोमकूपमें २८ करोड़ देवता, उदरमें पृथिवी तथा स्तनमें चतु सागर और पयोधर अवस्थान करते हैं। इस तरह समस्त ब्रह्माण्ड ही गौमें अवस्थित है।

गोदानिक—गौदानिक देखो।

गोदाम (हि० पु०) माल असबाब रखे जानेका सुरक्षित स्थान।

गोदाय (सं० त्रि०) गां ददाति गो दा अण् उपपदस०। गोदाता, गो दान करनेवाला।

गोदारण (सं० क्ली०) गां भूमिं दारयति दृ णिच् ल्यु। १ हल। २ जमीन खोदनेकी कुदाल।

गोदावरी (सं० स्त्री०) गां स्वर्गं ददाति दा वनिप् ङीप् रश्चान्तादेश। यद्वा गोदाना वरी श्रेष्ठा, ६ तत्। नदीविशेष। यह नदी बहुत दिनोंसे हिन्दुओंकी आदरणीय है, हिन्दू इसे एक पुण्यतीर्थके जैसा समझते हैं। समस्त कार्यके पहले ही जलशुद्धि करनेके लिये मन्त्र द्वारा इस नदीका भी आवाहन करना पड़ता है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणमें लिखा है कि कोई ब्राह्मणी अकेली तीर्थयात्रा कर रही थी। जाते जाते रास्तेमें एक निविड़ निर्जन पुष्पोद्यानके मध्य किसी एक कामुकने उसे देखा। युवतीका सुन्दर रूप देख वह कामुक कुछ देर भी स्थिर न रह सका। ब्राह्मणीने उसे बहुत वारण किया, किन्तु अन्तमें उस कामुकने बलपूर्वक अपनी पापवृत्ति चरितार्थ की। ब्राह्मणीको गर्भसञ्चार हुआ। ब्राह्मण यह देख कर क्या कहेंगे इस भयसे ब्राह्मणीने उसी समय गर्भ परित्याग किया और उससे उसी समय तप्तकाञ्चनवर्ण एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्रका सुन्दर मुख देख ब्राह्मणी उसे फेंक न सकी इस सद्योजात बालकको गोदमें ले रोती रोती ब्राह्मणके निकट पहुंची और समस्त घटना साफ साफ कह सुनाई। ब्राह्मणने पुत्रके साथ इसे परित्याग किया। लज्जा और अभिमानसे ब्राह्मणीने योग करना आरम्भ किया। योगबलसे वह नदी हो गई। उसीका नाम गोदावरी है। (ब्रह्मवै०)

गोदावरीका दूसरा नाम—गौतमी है। ब्रह्माण्ड उपपुराणके अन्तर्गत गौतमीमाहात्म्यमें गोदावरीकी उत्पत्ति कथा अन्य रूपसे वर्णित है—जब महर्षि गौतम ब्रह्मगिरिके आश्रममें रहते थे, उस समय एक बार बारह वर्ष अनावृष्टि रही, जिससे चारों ओर दारुण दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। वशिष्ठादि ऋषिगण गौतमके आश्रमको पहुंचे। गौतमने ऋषियोंको अन्न दे रक्षा की। वे

प्रतिदिन सवेरे ही उद्यानमें बीज बोते और उनके तपोबल द्वारा उस बीजसे अङ्कुर, गाछ तथा फल निकलते थे। सन्ध्याके पहलेही पक्व शस्य काट कर चावल प्रस्तुत किये जाते और उसे सिद्ध कर ऋषि आहार करते थे। द्वादश वर्षके बाद सुवृष्टि हुई, जिससे वसुमती फिर भी शस्य-शालिनी हो गई। इस समय कैलासमें एक विभ्राट् आ पड़ा। शिवजी गङ्गाको अपने जटाके मध्य रखे हुए हैं, ऐसा जानकर एक दिन पतिसोहागिनी हैमवती (पार्वती) को बड़ी ईर्षा हुई। वह कातर हो शिवजीसे बोली—'नाथ! आपने गङ्गाको मस्तक पर और मुझको गोदमें धारण किया है इससे मेरा अपमान होता है। इस लिए आप शीघ्र ही गङ्गाको नीचे उतार रखें।" शिवजीने उनकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया, इससे पार्वतीको और अधिक दुःख हुआ। पार्वतीने गणेशको अपने मनकी व्यथा कह सुनाई। गणपतिने अपनी माताके दुःख दूर करनेकी प्रतिज्ञा ठानी। वे कार्त्तिकके साथ वृद्ध ब्राह्मणके भेषमें गौतमाश्रमके बहिर्भागमें आ ऋषियोंको देख कर बोले—"ब्राह्मणगण! अब सर्वत्र ही शस्य उपज गये हैं, इस समय आप लोगोंको पराव्न पर निर्भर करना उचित नहीं, आप लोग अपने अपने आश्रमको चले जांय।" ऋषियोंने गौतमके निकट आ विदा मांगी। गौतमने उन्हें उत्तर दिया—'दुर्दिनमें आप लोगोंको अन्न दिया है, अभी अच्छा समय देख आप लोग मुझे छोड़ जाते यह उचित नहीं है। मेरी इच्छा है कि आप यहीं ठहरें।" वृद्ध ब्राह्मणवेशी गणेशने ऋषियोंसे यह कथा सुनी। वे वहां-से चल कार्त्तिकके निकट आ बोले—'भाई! तुम गौ हो कर गौतमके क्षेत्रमे जा समस्त शस्य नष्ट कर डालो। गौतम-के ताड़ने पर तुम मृतवत् हो जमीन पर पड़ रहोगे।" कार्त्तिक भी गौ रूपमें गौतमके क्षेत्रमें जा समस्त शस्य नष्ट करने लगे। गौतमकी दृष्टि उस पर पड़ी। ज्योंहीं वे गौको मारनेके लिए दौड़े, त्योंहीं गौ मृतवत् हो पृथ्वी पर लेट गई।

आश्रममें गोहत्या हुई है, यह सुन कर ऋषि लोग जानेकी तैयारी करने लगे। इस समय भी गौतम ऋषिने उन्हें ठहरनेका अनुरोध किया। किन्तु उन्होंने उत्तर दिया—'यदि आप भगीरथकी नाईं गङ्गाजीको ला गौको पुनर्जीवित कर सकें तब हम लोग ठहर सकते नहीं तो किस तरह इस अपवित्र स्थानमें रहें!' गौतम ऋषि उनकी बात पर सम्मत हुवे। उन्होंने ऋषियोंको आश्रममें रख त्र्यम्बक पहाड़ पर जा हरपार्वती और गङ्गाकी पृथक् पृथक् तपस्या कर उन्हें सन्तुष्ट किया। त्र्यम्बकेश्वर पार्वतीके साथ गौतमको दिखाई दिये और उन्होंने वर मांगनेका आदेश किया। गौतमने प्रार्थना की—यदि आप मुझे वर देनेकी इच्छा करते हैं तो अपनी जटास्थित गङ्गा मुझे प्रदान कर, मैं उन्हें ले जाकर मृत गौको पुनर्जीवित करूंगा।" महादेवजीने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। गौतमने पुनः एक और वर मांगा—'भगवन्! गङ्गा मृत गौको जीवन दान कर सागर-में गमन करें तथा मेरे नामसे विख्यात होवें।' शिवजीने कहा—'यह गौतमी गङ्गा और गोदावरी नामसे ख्यात होंगी। जिस तरह भागीरथी सागरसङ्गम पर, यमुना त्रिवेणीसङ्गम पर तथा नर्मदा अमरकण्टकमें पुण्यप्रदा, है, उसी तरह गौतमी गङ्गा भी सर्वत्र पुण्यप्रदा होगी एवं मैं इनके दोनो तीर पर लिङ्गरूपमें अवस्थान करूंगा।" ऐसा कह शिवजीने गङ्गाको गौतमके हाथ समर्पण किया। गौतम हृष्टचित्तसे जटाके साथ गङ्गाको ले ब्रह्म-गिरिस्थ आश्रमको पहुंचे। इस स्थान पर गङ्गाजी त्रिधारा हुई। एक धारा ब्रह्मगिरिस्थ मृत गौको पुनर्जीवित कर दक्षिणसागरमें मिल गई, दूसरी ब्रह्मगिरि भेदकर पाताल-को चली गई और तीसरी धारा आकाशमार्गको जा वियद् गङ्गा नामसे विख्यात हुई।

गोदावरी नदी मध्य-भारतके पश्चिम घाटसे पूर्व घाट पर्वत तक विस्तृत है। जलकी पवित्रता, दोनों कूलोंका सौन्दर्य तथा मनुष्यकी उपकारिताके सम्बन्धमें यह गङ्गा और सिन्धु नदीके तुल्य है। यह ८९८ मील लम्बी एवं प्रायः ११२२०० वर्ग मील भूमिके ऊपर हो कर बहुत वेगसे प्रवाहित है। मनुष्योंसे सुना जाता है कि नासिक जिलेके त्र्यम्बक ग्रामके पश्चाद्वर्ती पहाड़से उस नदीकी उत्पत्ति है। इस स्थान पर एक कृत्रिम कूप है। जिससे नीचे जानेके लिये ६९० एक एक कदमवाली सीढ़ियां हैं। यहां खोदित मूर्त्तिके ओष्ठ प्रान्तसे बुन्द बुन्दमें जल टप-कता है।

स्वभावत नदीको गति दक्षिण पूर्ववाहिनी है। पहले नासिक जिला अतिक्रम कर अहमदनगर और निजाम राज्यके सीमारूपमें प्रवाहित हो सिरोञ्चा नामक स्थानमें आ प्राणहिता नदीके साथ मिली है। तदन्तर वर्द्धा, पेन गङ्गा और वेणगङ्गा ये सब नदियां आ इसके जलमें मिल गई हैं। सिरोञ्चासे जिस स्थान पर यह पूर्व घाट पर्वत अतिक्रम करती है वहां इसकी मध्यवर्ती नदीके दक्षिण कूल पर निजाम राज्यभुक्त तथा उत्तर तीर पर उत्तर गोदावरी जिला सीमारूपमें परिणत है। गोदावरीके दक्षिण कूल पर प्राचीन तैलङ्गराज्यके ध्वंसावशेष आज भी देखे जाते हैं। धवलेश्वर ग्रामके निकट नदीमें एक डेल्टा है। यहां समीपवर्त्ती बांध द्वारा जल खेतोंमें पहुंचाया जाता है। गोदावरीके सब मुखोंमेंसे गौतमी गोदावरी ही सबसे बड़ा है इसके कूल पर फरासीसी अधिकारभुक्त यूनान नगर अवस्थित है। समुद्र कूल पर इस शाखाके ऊपर कोरिङ्ग बन्दर है। नरसपुरके निकट वशिष्ठ गोदावरीकी वैनतेय गोदावरी नामकी शाखा निर्गत हो समुद्रमें गिरी है।

इस नदीके वाम भाग पर भद्राचलम् नगर और इससे १०० मील उत्तरमें राजमहेन्द्री नगर है। राजमहेन्द्री नगर तथा कोटिफली ग्राम गौतमी शाखाके ऊपर अवस्थित हैं।

भिषकशास्त्रके मतसे इसके जलका गुण—पथ्य तथा पित्तार्त्ति, रक्तार्त्ति, वायु पाप, कुष्ठादि दुष्टरोग और तृष्णानाशक है। (राजनि०)

गोदावरी सात भागोंमें विभक्त हो वङ्गोपसागरमें मिली है, इन सात भागोंके नाम तुल्या, आत्रेयी, भारद्वाजी गौतमी, वृद्धगौतमी, कौशिकी और वशिष्ठा है। काकनाडासे २ मीलकी दूरी पर चोलङ्गी ग्रामके निकट तुल्या वर्तमान है। यहां चोलङ्गेश्वर महादेवकी मूर्त्ति स्थापित है। कोरिङ्ग बन्दरके निकट गोदावरीके उत्तर तीर पर आत्रेयीसङ्गम है। धवलेश्वरके दूसरे बगल विजयेश्वर ग्राममें विजयेश्वर शिवलिङ्ग है। धवलेश्वर और विजयेश्वरसे गोदावरी दो भागोंमें विभक्त हो सागराभिमुखको गई है। उसके उत्तर भागके स्रोतका नाम गौतमी और दक्षिणका वशिष्ठा है। गौतमीके उत्तर भागमें यथाक्रमसे तुल्या, आत्रेयी और भारद्वाजी नामकी तीन शाखायें, दक्षिण भागमें वृद्धगौतमी एवं वशिष्ठाके वाम तीरसे कौशिकी नामकी शाखा प्रवाहित हो सागरमें मिली है। ये सप्तशाखायें सप्तगोदावरी नामसे ख्यात हैं। जहां ये सप्तशाखाये मिली हैं वहां उनका नाम सप्तगोदावरी सागरसङ्गम पड़ा है। भागीरथीका सागर सङ्गम जैसा महापुण्य तीर्थ माना गया है वैसा ही दाक्षिणात्यमें सप्तगोदावरी सागरसङ्गम महापुण्यप्रदके जैसा विख्यात है।

गौतमीमाहात्म्यमें प्रत्येक भागका माहात्म्य इस तरह लिखा है—

तुल्यभागा—चन्द्रमा रोहिणीको ही अधिक चाहते थे इसलिए दूसरी स्त्रियोंकी उत्तेजनासे दक्ष कतृक अभिशप्त हो वे क्षयरोगको प्राप्त हुए। पापमुक्तिके लिए उन्होंने विष्णुकी तपस्या की। विष्णुने सन्तुष्ट हो उन्हें तुल्या सङ्गममें स्नान करनेका आदेश किया। चन्द्र भी यथाविधि तुल्यासङ्गममें स्नान कर शापमुक्त हुए। माघ मासकी सोमवार अमावस्याको तुल्यासङ्गममें स्नान कर सोमेश्वर की पूजा करनेसे कोटिगुण फल होते हैं। इस स्थान पर तर्पण और पिण्डदान करनेसे अश्वमेधका फल और सहस्र जन्मके पाप दूर होते हैं। (गौतमी० ७१)

आत्रेयी—आत्रेय ऋषि गौतमीसे जिस नदीको लाये थे वही आत्रेयी नामसे ख्यात है। इसके तीर पर ऋषिने इन्द्रत्व लाभके लिए महायज्ञ किया था। इस स्थान पर मारीच कुरङ्गरूपसे महादेवकी तपस्या किया करता था।

भारद्वाजी—पूर्व कालमें भरद्वाज ऋषिने गौतमीके पूर्वतीरसे ऋषिकुल्याको लाकर उसके तीर पर तपस्या की थी, इसीसे इसका नाम भारद्वाजी हुआ है। इसका दूसरा नाम रेवतीसङ्गम भी है। भारद्वाजके रेवती नामकी एक अतिकुत्सिता भगिनी (बहिन) थी। वयस्या होने पर भी कोई उसे विवाह करना नहीं चाहता था। एक दिन भरद्वाज ऋषि अपने आश्रममें बैठ रेवतीके विवाहके विषयमें सोच रहे थे इसी समय कठ नामक एक खुबसूरत ब्राह्मण कुमारने आश्रममें आ उनका शिष्य होनेके लिये प्रार्थना की। ऋषिने उसे शिष्य रूपमें ग्रहण कर समस्त विद्या सिखा दीं। इसके अनन्तर कठने गुरु

दक्षिणा देनेके लिये प्रार्थना की। इस पर भरद्वाज उसको बड़ाई कर बोले—'तुम इस कन्यासे विवाह करो, इसीसे तुम्हारी गुरु-दक्षिणा हो जायगी।' कठ गुरुका आदेश उलङ्घन कर न सका, उसी समय उसने कुत्सिता कामिनी-का पाणिग्रहण किया। तदन्तर कठने नवविवाहिताके साथ भरद्वाजीसङ्गमके निकट शिवलिङ्ग प्रतिष्ठापूर्वक वेदोक्त स्तवसे शिवजीकी आराधना की। शिवजी साक्षात् हो उसे सस्त्रीक भारद्वाजीसङ्गममें स्नान करनेका आदेश कर अन्तर्हित हुए। उसी समय उन दोनोंने सङ्गममें स्नान किया। स्नान कर ज्योंही बाहर निकले, त्योंही रेवती सुश्री और परमा सुन्दरी दीखने लगी। स्नान कर रेवती-के सुन्दर हो जाने पर सङ्गमका दूसरा नाम रेवतीसङ्गम हुआ है। (गौतमीमाहात्म्य)

गौतमीसङ्गमका दूसरा नाम अहल्यासङ्गम भी है। गौतमीमाहात्म्यमें लिखा है—ब्रह्माकी कन्या अहल्या जैसी सुन्दरी और रूपवती कोई स्त्री न थी। इन्द्रादि देवगणने अहल्याके पानेकी इच्छा की थी, किन्तु ब्रह्माने गौतमको उपयुक्त पात्र स्थिर कर उन्हें अपना कन्यारत्न सम्प्रदान किया। गौतम अहल्याको साथ ले ब्रह्मगिरि आश्रममें सुखसे रहने लगे। इन्द्र अहल्याके रूपमें मुग्ध हो कुअभिप्रायसे आश्रमके निकट अवस्थान करने लगे। एकदिन उन्होंने गौतमका रूप धर अहल्याके साथ संभोग किया था। संयोगवश उसी समय गौतम ऋषि सशिष्य आश्रम आ पहुंचे। इन्द्र गौतमके भयसे विड़ालरूप धर अपेक्षा करने लगे। गौतम गृहमें प्रवेश कर अहल्याकी अवस्था देख क्रुद्ध हो बोले—'पापीयसि! तू यह क्या कर रही है।' इसके बाद उस विड़ालको देख गौतमने कहा—'तुम कौन हो। सत्य सत्य बोलो, नहीं तो अभी तुम्हें भस्म करता हूं।' इस पर मार्जाररूपी इन्द्र भयसे कृताञ्जलिपुटमें बोले—'प्रभो! मैंने मायासे विमुग्ध हो यह पापकार्य किया है, अब आपका शरणापन्न हुआ हूं कृपया मेरी रक्षा कीजिए।' ऋषिने यह कह कर उनको शाप दिया—'पापके प्रतिफलस्वरूप तुम्हारे शरीरमें एक हजार भग होंगे।' तदन्तर अहल्यासे कहा—'पापीयसि! तुम भी अतिकुत्सित हो।' इस समय अहल्या रो कर बोली—'स्वामिन्! इस पापिष्ठने आपके रूपसे मोहित कर मुझे सर्वनाश किया। मैं पापिनी नहीं हूं। मुझे क्षमा कीजिए।' गौतम ऋषि ध्यान योगसे सब जान फिर बोले—'अहल्ये! तुम नदीरूपमें प्रवाहित हो मुझसे पुनः मिल जावोगी।' बाद इन्द्रको अपने चरणों पर निपतित देख कहा—'इन्द्र! तुम भी गौतमीमें स्नान कर पापमुक्त हो सहस्रचक्षु लाभ करोगे।' अहल्या नदी रूपसे फिर भी पतिके साथ मिल गई। इन्द्रने भी इस अहल्यासङ्गममें स्नान कर सहस्र चक्षु लाभ किये। तभीसे इस सङ्गमका और एक नाम इन्द्रतीर्थ हुआ। सङ्गम स्थल पर अभी तीर्थलमगड़ी नामका ग्राम देखा जाता है।

वृद्ध गौतमीकी नामोत्पत्तिके सम्बन्धमें भी गौतमी-माहात्म्यमें इस तरह लिखा है,—"महर्षि गौतमने एक वृद्धासे विवाह किया था। एक दिन वशिष्ठादि कई एक ऋषि गौतमके आश्रम पहुंचे और उस वृद्धाको देख उनमें-से एकने कहा—'गौतम! इस वृद्धासे तुम्हें पुत्रोत्पादन की सम्भावना नहीं है।' यह सुन अगस्त्यने गौतमसे कहा—गौतमी नामकी तुम्हारी लायी हुई नदीके तीर पर वृद्धाके साथ ईश्वराराधना करनेसे तुम्हारा मनस्काम सिद्ध होगा।' यह सुन गौतम गौतमीतीरको आ शिव, गङ्गा और विष्णुकी आराधना करने लगे। गङ्गाजीने साक्षात् हो दोनोंके अङ्ग पर पवित्र जल छिड़क दिया। इससे वे दोनों बहुत अच्छे देख पड़ने लगे। गङ्गासे अभिषिक्त वह जल नदीरूपमें वह सागरको जा मिला वही वृद्धगौतमी नामसे ख्यात है। गौतम ऋषिने इसके तीर पर वृद्धेश्वर नामक शिवलिङ्ग स्थापन किया था। स्वयं शिवजी इस वृद्धासङ्गममें स्नान कर ब्रह्महत्याजनित पापसे मुक्त हुए थे। इस स्थानमें स्नान करनेसे वन्ध्या स्त्री भी पुत्ररत्न लाभ कर सकती है।"

कौशिकी—गौतमीमाहात्म्यमें लिखा है कि विश्वा-मित्रने ब्राह्मणत्व पानेके उद्देशसे वशिष्ठासे कुल्या नामकी नदी ला उसके तीर पर तपस्या की थी। कौशिकसे लाये जाने पर यह काशिकी नामसे मशहूर है। इसके दोनों तीर पर पुण्यप्रद रामेश्वरक्षेत्र और लक्ष्मणेश्वरक्षेत्र है। यहां राम और लक्ष्मणने शिवलिङ्ग स्थापन किया था।

वशिष्ठके गौतमीसे कुल्या लाने तथा उसके तीर पर तपस्या करनेके कारण इसका नाम वशिष्ठासगम पड़ा। सागर और वशिष्ठाके मध्य त्रिकोणाकृति भूमाग अन्तर्वेदी नामसे विख्यात है। यहां नरसिंह देव विद्यमान हैं, यह वैकुण्ठ सदृश पुण्यभूमि है। माघ मासकी रविवार शुक्ल एकादशीको वशिष्ठासङ्गममें स्नान कर नरसिंह देवकी पूजा करनेसे समस्त पाप दूर हो जाते हैं।

गोदावरी-मन्द्राज प्रान्तका एक जिला। यह अक्षा० १६ १८ एवं १८ ३ उ० और देशा० ८० ५१ तथा ८२ ३६ पू०के बीच उत्तरपूर्व सागरतट पर पड़ता है। क्षेत्रफल ७९७२ वर्गमील है। इसके उत्तरपूर्व विजगापट्टम जिला, उत्तर विजगापटम् जिला तथा मध्यप्रदेश, पश्चिम निजाम राज्य और दक्षिण पश्चिम कृष्णा जिला है। गोदावरीके तीन विषम विभाग हैं—एजेन्सी प्रान्त, गोदावरी नदीका सिघाड़ा और ज सा तालुक। उत्तर पूर्व कोण में छिन्न भिन्न पर्वत श्रेणियां हैं। गोदावरी नदी मध्य भागमें प्रवाहित हुई है। धवलेश्वरम् बांधसे समुद्रतट तक धा०के खेत है। वर्षाकालको वहां कितना ही पानी भर जाता और सिवा गांवों, नहरके किनारों, सड़कों तथा खेतकी मेड़ोंके कुछ भी देखनेमें नहीं आता। धान बढ़ने पर सारा प्रान्त खेत जैसा देख पड़ता है। नदीके वाम तटको पूर्व सिघाड़ा, दक्षिण तटको पश्चिम सिघाड़ और पानीसे घिरी हुई बड़ी तिखटी जमीनको मध्य सिघारा कहते हैं।

इस जिलेमें १७२ मील तक समुद्रका किनारा है। सिवा गोदावरी सावरीके दूसरी कोई भी बड़ी नदी नहीं। चिड़ियां बहुत अच्छी होती हैं। जिलेका स्वास्थ्य अच्छा है, परन्तु शीतकालको ज्वरका प्राबल्य रहता है। रोगसे बचनेके लिये लोग अफीम खूब खाते हैं। वर्षा कालको बाढ़ आनेका बड़ा भय है।

पूर्वकालको गोदावरी जिला कलिङ्ग और वेंगी राज्यमें लगता था। प्राचीन राज्य जहां तक मालूम है, आन्ध्र थे। ई०से २६० वर्ष पहले अशोकने उन्हें जीता। किन्तु पीछेको यह ४०० वर्ष तक राज्य करते रहे। उनका साम्राज्य बम्बई और मैसूर तक विस्तृत था। ई० ४थ शताब्दीके पूर्व काल पल्लव राजाओंने उनका स्थान अधिकृत किया। ई० ७वीं शताब्दीको यह प्रान्त पूर्व चालुक्योंका अधिकारभुक्त हुआ। ९९९ ई०को यह चोल साम्राज्यके इस शर्त पर जागीरदार बने कि लड़ाईके समय मदद देंगे। १२वीं शताब्दीके मध्य वरङ्गलके राजत्व हुआ। परन्तु यह क्षुद्र क्षुद्र राज्योंमें विभक्त थे। १३२४ ई०को कुछ समयके लिये मुसलमानोंने गोदावरी पर अधिकार किया। परन्तु कोंडवीड और राजमहेन्द्री के राजाओंने उन्हें निकाल बाहर किया था। १५वीं शताब्दीके बीच उड़ीसाके गजपति राजा हुए। इसके बाद फिर मुसलमान पहुंच गये। १४७० ई०को गुलबर्गेके सुलतानको यह प्रान्त उनके साहाय्यके बदले मिला था। कुछ वर्ष बाद उन्होंने सब गजपति राज्य अपने अधिकारमें कर लिया। परन्तु गुलबर्ग राज्य छिन्न भिन्न होनेसे शताब्दी समाप्तिके पहले ही गजपतियोंका राज्य पुन प्रतिष्ठित हुआ। १५१५ ई०को विजयनगरके सबसे बड़े राजा कृष्णदेवने कुछ समयके लिए इस प्रान्तको अपना अधीनस्थ बनाया था। परन्तु १५४३ ई०को गोलकुण्डाके पहले सुलतान और गजपति राजाओंसे झगड़ा हुआ। उन्होंने इनसे कृष्णा और गोदावरीके बीचका सब देश मांगा था। इससे उन प्रान्तोंमें बलवा हो गया। राजमहेन्द्रके गजपति राजाने जब विद्रोहियोंकी साहाय्य किया, मुसलमान बिगड़ उठे। उन्होंने गोदावरी पार करके सुदूर उत्तर पूर्व तक अपना अधिकार बढ़ाया था। १५७२ ई०को राजमहेन्द्र हस्तगत हुआ और कुछ वर्ष बाद गोदावरीके उत्तर समग्र देशों पर उनका आधिपत्य हो गया। १६८७ ई०को औरङ्गजेबने गोलकुण्डाके सुलतानको परास्त किया था। उस समय सब बड़े बड़े जमींदार स्वाधीन हो गये। १७६५ ई०को अंगरेजोंने यह जिला पाया था। पहले गोदावरी जिलेका पट्टा फौजदार हुसेन अली खांके नाम लिखा गया, किन्तु १७६८ ई०को प्रकृत अंगरेजी अधिकार हुआ। जमींदारोंकी सरकशीसे फिर कलेक्टरेट बनाये गये। १८५९ ई०को गोदावरी जिला कायम हुआ। १८४० ई०को गोदावरीका बांध बना था। १८७९ ई०को पार्वत्य प्रदेशमें रम्पा विद्रोह फूट पड़ा, जो १८८१ ई०को शान्त हुआ। इस जिलेमें कितने ही बौद्ध मठोंका ध्वंसावशेष और हिन्दू कीर्त्ति निदर्शन मिला है।

गोदावरी जिलेकी लोकसंख्या प्रायः २३०१७५८ है। इसमें २६७८ शहर और गांव आबाद हैं। यह जिला १६ तालुकों और तहसीलोंमें बंटा हुआ है। पहाड़ोंमें कोई और संटालोंमें तेलगु लोग रहते हैं। हिन्दुओंमें प्रति शत ५ ब्राह्मण हैं।

मवेशियोंमें बीमारी बहुत होती है। कुमरुा भेड़ अपने रूएंके लिये मशहूर है। गोदावरीका जङ्गल अधिक मूल्यवान् है। इससे वार्षिक कोई १॥ लाख रुपया आता है। ५॥ मील कोयलेकी खान है। किन्तु कोई अच्छी तरह नहीं मिली। ग्रेफाइट कई जगह निकाला जाता है। एजेन्सीमें लोहेके कामके चिह्न पाये जाते हैं। सिंघाड़ेमें गन्धककी दो छोटी छोटी खानें हैं। ऊनी कालीन और मोटे कम्बल बनाये जाते हैं। पहले यह जिला अपने नफीस सूती कपड़ेके लिये प्रसिद्ध था। परन्तु अब वह बहुत थोड़े गांवोंमें होता है। मोटा सूती वस्त्र कितनी ही जगह बुना करते हैं। शकर और शराबका भी कारखाना है। ताड़का गुड़ खूब तैयार होता है। इसके लिये जिलेमें कोई ४००००० पेड़ोंका रस खींचा जाता है। धानकी कुटाई भी काम नहीं चलती। रेड़ीके तेल और चमड़ेके कुछ कारखाने हैं। एक जगह लोहा गलाया जाता है। नीलकी कई कोठियां हैं। दो सरकारी और एक साधारण कुल तीन स्थानों पर नमक बनता है। चावल, दूसरे अनाज, तम्बाकू, तेलहन, घी, नारियल, चमड़े और फलकी रफ्तनी होती है। दक्षिणसे रूई भी ला करके विदेश भेजते हैं। सालमें कोई ८४ लाखका माल विलायत जाता है। प्रधान व्यवसायी मारवाड़ी हैं। वह कपड़ेके साथ अफीमका विनिमय खूब करते हैं। छोटा मोटा काम कोमतियोंके हाथमें है। कितने ही रूफ तावार बाजार लगते हैं।

मन्द्राज रेलवेकी ईष्टकोष्ट शाखा इस जिलेमें चलती है। ८१८ मील पक्की और २९८ मील कच्ची सड़क है। ८१४ मील तक उस पर दोनों ओर पेड़ लगे हैं। ४९३ मील नहरमें नावें चलती हैं।

प्रबन्धके लिये गोदावरी जिलामें ४ उपविभाग हैं। एजेन्सी प्रान्तको ५वां सब-डिविजन समझते जिसका प्रबन्ध एक युरोपीय डिपटी कलेक्टर करते हैं। मामूली चोरी बहुत होती है।

मुसलमानोंके समय सैनिक स्थानोंको छोड़ करके यह जिला जमीन्दारियोंमें बंटा था। वह उपजका पञ्चमांश पाते थे। १८०२-३ ई०को बङ्गाल जैसा दायमी बन्दोबस्त हुआ। किन्तु जमीन्दारोंके बिगड़ जानेसे बहुतसी जमीन गवर्नमेण्टके हाथ लगी। १८४६ ई०को मालगुजारी कायम की गयी और उसको दे देने पर किसान सब तरह आबाद हुए। गोदावरीकी आबपाशी खुल जानेसे १८६२ ई०को सब जिलेमें रैयतवारी बन्दोबस्त कायम किया गया। १८६६ ई०को पैमायश पूरी हुई। १८९८ ई०को दूसरी पैमायश की गयी थी। फिर मालगुजारी बढ़ करके एक तराई पहुंची। इस जिलेकी कुल मालगुजारी ४२३२००००) रुपया है।

यहां ३ मुनिसपालिटियां हैं। इसके बाहर जिला-बोर्ड और तालुक बोर्ड इन्तजाम करते हैं। २५ छोटे शहरोंका इन्तजाम १८८४ ई०की ५ मन्द्राज धाराके अनुसार होता है। शिक्षाका प्रभाव पहले बहुत अच्छा था, किन्तु अब बिगड़ गया। इसमें प्रति वर्ष कोई २९०००० रु० खर्च होता है। यहां दूसरे जिलेकी बनिस्बत मुसलमान ज्यादा पढ़े लिखे हैं। मन्द्राजके जिलोंमें तालीमकी निगाहसे गोदावरीकी गणना छठी है। एजेन्सी प्रान्त शिक्षामें सबसे पिछला है। बालिकाओंको भी शिक्षा दी जाती है। सौमें चारसे अधिक आदमी शिक्षित नहीं। १९०४ ई०को गोदावरी जिलेमें सब मिला करके १७४० शिक्षण संस्थाएं थीं।

गोदी (हिं० स्त्री०) १ बड़ी नदी या समुद्रमें घेरा हुआ स्थान। इस स्थान पर जहाज मरम्मतके लिए वा तूफ़ान आदिके उपद्रवसे रक्षित रहनेके लिए रखे जाते हैं। (पु०) २ बरार पञ्जाब और अवधमें होनेवाला एक तरहका बबूल। यह नहरोंके किनारेके ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है।

गोदुग्ध (सं० क्ली०) गायका दूध। भावप्रकाशमें वर्णके भेदसे गोदुग्धका गुण लिखा है—कालीगायके दूधका गुण वायुनाशक और अत्यन्त उपकारी है। पीली गायके दूधका गुण पित्त और वायुनाशक है। सफेद गायके दूधका गुण कफकारक और गुरुपाक है। लाल या विचित्रवर्णकी गायके दूधका गुण वायुनाशक है। वत्सहीना गायके

दूधका गुण त्रिदोषनाशक है। बहुत दिनोंकी प्रसूता गायके दूधका गुण—त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक और अत्यन्त बलकारी है। जो गाय जङ्गलमें तथा पहाड़ पर विचरती है उसके दूधका गुण गुरु और स्निग्ध है। जो घास बहुत कम खाती है उसके दूधका गुण गुरुपाक, बलकारी, अत्यन्त शुक्रवृद्धिकर तथा सुस्त मनुष्योंके लिए बहुत उपकारी है। जो गाय पयाल, घास या कपासका बीज खाती है उसका दूध रोगीके लिये हितकर है।
(भावप्रका०)

गोदुग्धदा (सं० स्त्री०) गोदुग्ध ददाति सम्पादयति दा क। एक प्रकारकी घास, चणिका तृण।

गोदुग्धा (सं० स्त्री०) १ चणिका तृण, एक प्रकारकी घास। २ इन्द्रवारुणी लता। ३ गोडुम्बा। ४ चिर्भटिका। ५ ककड़ी।

गोदुह् (सं० त्रि०) गां दोग्धि दुह क्विप्, ६ तत्०। १ गाय दुहनेवाला। (पु०) २ गोप, ग्वाला।

गोदूनिका (हिं० स्त्री०) पूर्वीय बङ्गाल और आसाम आदि प्रदेशोंमें होनेवाला बेतकी जातका एक वृक्ष। इस की चिकनी और चमकीली टहनियां छाड़ी बनानेके काममें आती हैं।

गोडो—बङ्गाल प्रान्तमें रहनेवाली एक जाति। यह शब्द गदका अपभ्रंश है। जो गद (lute) के स्वामी थे वे गोदो कहाते कहाते धीरे धीरे गोदो कहलाने लगे। किसी दूसरे विद्वान्‌का मत है कि गदाको धारनेवाले महावीर जाति गोदो कहलाई। अनेक प्रमाणोंसे ज्ञात पड़ता है। कि पूर्व बङ्गालमें हिन्दू या मुसलमान राजा या बादशाहों के समय यह जाति बड़ी ओर गिनी जाती थी और फौजोंमें भरती की जाती थी। आजकल यह जाति धनशालीके पास पास जुल्मी पेशा करनेवाली मानी जाती है। वृटिश गवर्नमेण्टके राज्यसे पहले यह जाति लूट मार करनेमें प्रसिद्ध थी। परन्तु ऐसी दशा इस जातिकी सब न नहीं है। आजकल अस्तसे खेती और व्यापार करते हैं और मान प्रतिष्ठा भी इन्होंने कुछ बढ़ा ली है। ये बड़ी बड़ी वीरताके चिह्न प्रकट करते हैं। ये कठिनसे कठिन श्रमनाशिक (कसरत) कर सकते हैं।

गोदोह (सं० पु०) गवां दोह ६ तत्०। १ गोदोहन, गायका दुहना। २ गोदुग्ध, गायका दूध। ३ कालविशेष, गाय दुहनेमें जितना समय लगे।

गोदोहन (सं० क्ली०) गोर्दोहन, ६ तत्। १ गोका दोहन गायका दुहना। २ गोदोहनकाल, गाय दुहनेका समय।
(भागवत १।१८।१८)

गोदोहनी (सं० स्त्री०) गावो दुह्यन्तेऽस्यां गो दुह आधारे ल्युट ङीप। गोदोहनपात्र, वह पात्र जिसमें गाय दुही जाती है।

गोद्दा—छोटानागपुर प्रान्तके सन्थाल परगनेका सब डिवि जन। यह अक्षा० २४ ३०´ तथा २५ १४ उ० और देशा० ८७ ३ एवं ८७ ३६´ पू०के मध्य अवस्थित है। क्षेत्रफल ८६० वर्गमील और लोकसंख्या प्राय २८०३२३ है। यहां पश्चिम तथा दक्षिण जङ्गल एवं पहाड़ और पूर्वको उपजाऊ जमीन है। इसमें १२७४ गांव बसते हैं।

गोद्दा—छोटा नागपुर प्रान्तके सन्थाल परगने जिलेमें गोद्दा उपविभागका सदर। यह गांव अक्षा० २४ ५०´ उ० और देशा० ८७ १७ पू०में पड़ता है। आबादी कोई २२०८ है।

गोद्रव (सं० पु०) द्रवति द्रु अच गोर्द्रव, ६ तत्। गोमूत्र, गायका मूत।

गोध (हिं० स्त्री०) गोह नामक जंगली जानवर।

गोध—ये हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि थे। इनका जन्म १६८४ ई०में हुआ था।

गोधज (सं० पु०) गोधा।

गोधन (सं० क्ली०) गवां धन समूह, ६ तत्। १ गोसमूह, गौओंका झुण्ड। (त्रि०) गौरव धनमस्य, बहुव्री०। २ जिसकी गौरूपी सम्पत्ति है। (क्ली०) गौरेव धन। ३ गोरूप धन गौ रूपी सम्पत्ति। (पु०) धन इवे भावे अच गोधन इव इव धन रूपो यस्य बहुव्री०। ४ स्थूलाग्र बाण, एक तरहका तीर जिसका फल चौड़ा होता है।

गोधन (हिं० पु०) एशिया, युरोप तथा अफ्रिकामें पाये जानेवाला एक तरहका पक्षी। इसकी चोंच लाल, मस्तक भूरा और पैर हरे रंगके होते हैं। एक बार यह ५ से ८ अण्डे देता है।

गोधा (सं० स्त्री०) एक प्रकारका चौपध।

गोधन्य—सोमपरिशिष्टक वर्णित एक विस्तृत महाद्वीप।

गोधर (सं० पु०) गां पृथिवीं धरति धर-अच्। १ पर्वत, पहाड़। २ प्रभासखण्ड वर्णित एक प्राचीन पुण्यतीर्थ, जहां भगवान् गोपति विराजमान हैं। ३ काश्मीरके एक राजाका नाम।

गोधरा—बम्बई प्रांतके पांचमहाल जिलेका उत्तर तालुक। यह अक्षा० २२° ४३ एवं २३° ६´ उ० और देशा० ७३° २२´ तथा ७३°५८ पू०के बीच पड़ता है। क्षेत्रफल ५८५ वर्गमोल और लोकसंख्या प्रायः ८६४०६ है। मालगुजारी और सेस कोई ८२०००) रु० पड़ता है। इस तालुकमें खेती कम और जंगल झाड़ी बहुत है। उत्तरको ग्रेनाइट पत्थरकी चट्टानें पड़ी हैं। आबहवा अच्छी नहीं। ज्वार ज्यादा बोई जाती है।

गोधरा—बम्बई प्रांतके पाँचमहाल जिलेमें गोधरा तालुकका सदर। यह अक्षा० २२° ४६´ उ० और देशा० ७३° ३७ पू०में गोधरा-रतलाम रेलवे पर पड़ता है। जनसंख्या प्रायः २०८७५ है। पहले वहां अहमदाबादके मुसलमान नवाबोंका एक सूबेदार रहता था। आजकल यह रेवांकाण्ठा पोलिटिकल एजेन्सीका भी सदर है। १८७३ ई०की मुनिसिपालिटी हुई। चमड़ेके दो कारखानोंमें रंगाईका मामूली काम होता है। लकड़ीका बड़ा कारबार है शहरके पास ही ७० एकरका पक्का तालाब है।

गोधर्म (सं० पु०) गोधर्मः, ६-तत्। पशुकी नाईं अविचारशून्य मैथुन, पशुओंको भाँति समागम करना। (भारत ११०४ अ०)

गोधम (सं० पु०) अङ्गिरा वंशके एक ऋषिका नाम।

गोध सामन् (सं० पु०) साम भेद।

गोधा (सं० स्त्री०) गुध्यते परिवेष्ट्यते बाहुरनया गुध करणे-घञ्-टाप्। १ धनुषके गुणाघातनिवारणार्थ वामप्रकोष्ठनिबद्ध चर्मनिर्मित पट्टिका, धनुषके गुणाघात निवारणके लिए बायें प्रकोष्ठमें बंधी हुई चमड़ेकी पटरी। (भारत ३।१७।३) २ जन्तुविशेष, गोह नामक जन्तु। ३ वटपत्रा पाषाणभेद। मनःशिला।

गोधाख्य (सं० पु०) गोधा सर्प, गोसाँप।

गोधाङ्घ्रि (सं० स्त्री०) गोधाया इव अंघ्रिः मूलमस्याः, बहुव्री०। गोधापदी नामकी लता। गोधापदी देखो।

गोधापदिका (सं० स्त्री०) गोधाया इव पादो मूलमस्या, बहुव्री०। १ गोधापदी लता। २ तालमूली। रक्तलज्जालुका।

गोधापदी (सं० स्त्री०) गोधाया इव पादो मूलमस्याः, बहुव्री०। स्वाङ्गत्वात् ङीप् पद्भावश्च पूर्ववत्। लताविशेष, हंसपदी नामकी लता (Cissus Pedata) इसका संस्कृत पर्याय—सुवहा, हंसपदी, गोधाङ्घ्रि, त्रिफला, त्रिपदी, मधुस्रवा, हंसपादी, हंसपादिका, हंसाङ्घ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डिका विश्वग्रन्थि, त्रिपादिका, त्रिपादी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, ब्रह्मादनी, पदाङ्गी, शीतांगी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पदिका, प्रह्लादी, कोटपादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदिका, वल्ली, त्रिदला और हंसवती है। इसका गुण कटु, उष्ण, विष और भूतभ्रान्तिहर, अपस्मारटोपनाशक एवं रसायण है। (राजनि०)

इस लताके मूल या पत्रकी सादृश्यमें मतभेद देखा जाता है। किसी भिषक्शास्त्रवेत्ताके मतसे इसके पत्ते गोधा या हंसचरणके जैसे त्रिदलविशिष्ट है, और कोई कोई कहता है कि पत्तेका मूल ही गोधा या हंसके पद सरीख है एवं मूल हंसचरणके जैसा रक्तवर्ण है। पत्तेका सादृश्य देख चिकित्सकगण हंसपदी लताको ही गोधापदी कहा करते हैं। इस लताके तीन भेद हैं। जिसके वृन्तस्थित दोनों वृन्तोंमें तीन तीन पत्ते रहते उसे चिकित्सकगण प्रकृत गोधापदी कहते हैं। जिस जातिके गोधापदीके केवल एक वृन्तमें तीन तीन दल रहते एवं प्रत्येक दलके पास छोटे छोटे छेद देखे जाते उसे तीन पत्ती या छोटी गोधापदी कहते है। तृतीय जातिको बड़ी गोधापदी मानते हैं। इसके प्रत्येक वृन्तमे एक एक पत्ता रहता जो देखनेमें बड़ा कलमीके पत्तेके जैसा लगता किन्तु उसकी अपेक्षा कुछ छोटा और गोलाकृति होता है। यह लता ग्रन्थियुक्त और अत्यन्त विस्तृत होती है। इसके फल मटराकृति, गुच्छ भावापन्न तथा पकने पर कृष्णवर्णके हो जाते हैं।

२ मूसली नामकी औषध।

गोधामांस (सं० क्ली०) गोधा सर्पका मांस।

गोधायस (सं० स्त्री०) गा ददाति गो-धा बाहुलकात् असुन्। गोधारक, गो धारण करनेवाला।

गोधावती (सं० स्त्री०) गोधा तत्पदसादृश्य विद्यतेऽस्या गोधा मतुप मस्य व ङीप् च । १ गोधापदी । २ वटपत्री, वट वृक्षकी पत्ती ।

गोधावल्ली (सं० स्त्री०) गोधासदृशी लता । १ गोधापदी २ हंसपदी नामकी लता ।

गोधावीणाका (सं० स्त्री०) गोधायाश्चर्मणा नद्धा वीणा, ह्रस्वा गोधावीणा, ह्रस्वार्थे कन् गोधाके चर्म द्वारा आवद्ध क्षुद्रवीणा, गोहके चमड़े से बधा हुआ वीणा ।

गोधास्कन्द (०) गोधास्कन्ध देखो ।

गोधास्कन्ध (सं० पु०) गोधेव स्कन्धोऽस्य, बहुव्री० । अरिमेद नामका एक तरहका वृक्ष ।

गोधि (सं० पु०) गौर्नेत्र धीयतेऽस्मिन धा अधिकरणे कि । १ ललाट । गुध्नाति सहसा कुप्यति गुध इन् । २ गोधिका गोह जन्तु । (शब्दरत्नावली)

गोधिका (सं० स्त्री०) गुध्नाति गुध ण्वुल् टाप् । १ गोधा गोह । २ एक तरहकी छिपकिली ।

गोधिकात्मज (सं० पु०) गोधिकाया आत्मज , ६ तत् । १ एक तरहका जानवर जो नर सर्प और मादा गोहके संयोगसे उत्पन्न होता है । २ गोहको आकृतिका एक प्रकारका छोटा जन्तु । यह वृक्षकी कोटर (खोंड़र) मे रहता है । कभी कभी यह बहुत भयानक शब्द भी किया करता है । बहुतोंका विश्वास है कि उसकी अवस्था जितनी अधिक होती जाती है उतनी ही बार यह शब्द किया करता है । इसका पर्याय—गोधेय, गोधेर और गोधार है ।

गोधिकासुदन (सं० पु०) गोधेरक, जलगोह, वह गोह जो जलमें रहता है ।

गोधिनी (सं० स्त्री०) गोध क्षोदविशेषोऽस्त्यस्या गोध इनि । चविका, कटाई, वरहटा ।

गोधी (हिं० स्त्री०) गोध म देखो ।

गोधीश (सं० पु०) द्रोण पुष्पी ।

गोधुम (सं० पु०) गुध बाहुलकात् ऊम् । गोधूम, गेहू ।

गोधूम (सं० पु०) गुध्यते वेष्टयते त्वगादिभिः गुध ऊम । १ नागरंग नारंगी । २ व्रीहिविशेष । इसका संस्कृत पर्याय—सुमुदुध, अपूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुषक्षीर रसाल और सुमनस । बङ्गला भाषामें इसे गम, गोम, और हिन्दीमें गेहूं कहते हैं, फारसीमें गुन्दुम, अरबीमें हिन्त, तामिलमें गोदुम्बी, तेलगुमें गोदुमलु, मलयमें गन्दुम, पञ्जाबमें खानक, ग्रीकमें पारि, हिब्रूमें खित्ता, इटालीमें ग्रेनो, (Grano) जर्मनमें Weetzen रूपमें Pschenitz, सुइसमें Hvete, पोर्तगीजमें Trigo, ओलन्दाजमें Tarw, डेनमारमें Hvede, फरासीसीमें Froment, Bled और अंगरेजीमें इसे Wheat कहते हैं । इसका पौधा डेढ़ या पौने दो हाथ ऊंचा होता है और इसमें कुशकी तरह लम्बी पतली पत्तियां पेड़ोंसे लगी हुई निकलती हैं । पेड़ोंके बीचमें सीधे ऊपरकी ओर एक सीक निकलती है । इसीमें बाल लगती है । गेहूंकी खेती अत्यन्त प्राचीन कालसे होती आई है । गेहूंसे समस्त देशोंमें मैदा और आटा प्रस्तुत होता है । पृथ्वीके नानास्थानोंमें यह शस्य उत्पन्न होता है । यूरोपके अटलाण्टिक महासागरके उपकूल पर ३०से ५० अक्षान्तरवर्ती स्थानमें, रोकी पर्वतके पश्चिम और उत्तरमें, दक्षिण अमेरिकाके पश्चिम कूलमें एवं उष्णकटिबन्धके मध्यवर्ती समतल और उच्च भूमिमें गेहूं अधिकतासे उत्पन्न होता है ।

वरार, कोयम्बतुर और मध्यदेशमें भी गेहूं अधिक हुआ करता है । भारतवर्षमें जिस तरहके गेहूं उपजाये जाते हैं उनका नाम यह है,—

१ Triticum vulgare var hybernum शीतकालिक ।

२ T Vulgare, var, aestivum वासन्तिक ।

३ T. Compositum, मिसरदेशजात ।

४ T Spelta फरासीय ।

५ T Monococcum (इस गेहूंका दाना अन्य गेहूंकी नाईं दो भागमें बंटे नहीं हैं ।)

इङ्गलैण्डमें शरत् और वसन्त कालमें पूर्वोक्त प्रथम दो जातिके गेहूं उपजाये जाते हैं, किन्तु भारतवर्षमें समस्त प्रकारके गेहूं पैदा होते हैं । कार्त्तिक मासमें अथवा माघ मासके आरम्भमें ही गेहूं बोया जाता एवं वैशाख मासमें काट लिया जाता है । पर्वतके ऊपर १३०००से १५००० फीट ऊंची भूमि पर भी गेहूं जमता है ।

कप्तान वेवमाइवने हिमालय पर्वतके दक्षिणको ओर १२००० फुट ऊंची स्थान पर गेहूंकी उपजको देखा था। स्पिति उपत्यकाके लाड़ा और लटङ्ग नामक स्थानमें १३००० फीट ऊंची जगह पर एवं सिन्धुनदीके निकट वर्त्ती उपत्यकाके मध्य उगमी और चिमरा नामक स्थानमें ११०००से १२००० फीट ऊंची भूमि पर गेहूं उपजाया जाता है। युक्तप्रदेशमें एक तरहका सफेद गेहूं होता है जिसको 'दुग्ध गोधूम, कहते हैं। शतद्रु नदीके दोनों उपकूल पर एवं उनके किनारेकी जलसिक्त वालुकामय भूमि पर इस तरहके गेहूं उपजते देखे गये है। पञ्जाब प्रदेशके गेहूंमें वाल होते हैं और उसके आटेकी रोटी लाल और हल्दी रंगकी होती है। मुलतानके गेहूंमें बाल नहीं होते। अयोध्या प्रदेशमें श्वेत मोरिलवा, वालहीन, रामोदवा और लालिया ये चार प्रकारके गोधूम उपजते हैं। सम्बलपुर जिलेमें भी गेहूंकी खेती बहुत होती है। जव्वलपुर, नरसिंहपुर, होसेङ्गावाद, मन्द्राज प्रदेश और ब्रह्मराज्यमें प्रचुर परिमाणमें गेहूंकी फसल होती है। वम्बई प्रदेशका गेहूं काठियावाड़ जिलेके गेहूंसे कुछ सफेद और भारी होता है, इसलिये उसमें सूजी और मैदा अधिक प्रस्तुत होता है।

परीक्षा कर देखा गया है कि भारतवर्षका गेहूं पृथ्वीके समस्त स्थानोंके गेहूंसे उत्कृष्ट है। इसी कारण भारतवर्षसे प्रतिवर्ष सात करोड़ रुपयेके गेहूं विलायत भेजे जाते हैं।

चीन देशमें भी गेहूंका प्रचुर व्यवहार देखा जाता है।

यूरोपीय चिकित्सकके मतसे इसका गुण—स्निग्ध और वलकारक है। रक्तपित्त रोगमें और दैहिक प्रदाहमें इसका प्रलेप विशेष स्निग्धकर है। विष खाने पर मैदा और जलके साथ पारा, ताम्र, दस्ता, रूपा, लौह और अयोडाइन मिला कर सेवन करनेसे विषका प्रतिकार होता है। क्षत स्थान पर मैदेकी पुलटिस लाभ दायक है।

वैद्यकशास्त्रके मतसे इसका गुण-स्निग्ध, मधुर, वात, पित्त और दाहनाशक, गुरुपाक, श्लेष्मा, मत्तता, मल, रुचि और वीर्यकारक। (राजनि०) वृंहण, जीवनका हितकारक शीतवीर्य, भग्नसन्धान और धैर्यकारी एवं सारक है। (राजवल्लभ) भावप्रकाशमें लिखा है कि गोधूम तीन प्रकारका होता है—महागोधूम, माधुली और नान्दीमुख। महागोधूम इस देशमें बड़ गोधूमा नामसे प्रसिद्ध है, यह पश्चिम देशसे लाया जाता है और माधुलीसे कुछ बड़ा रहता है। माधुली गोधूम मध्यदेश वा प्रयाग प्रदेशके पश्चिममें यहां लाया जाता है। नान्दीमुख गोधूम बलहीन और दीर्घाकृतिके होते है।

महागोधूमका गुण—मधुर रस, शीतवीर्य, वातन, पित्तनाशक, वलकारक, स्निग्ध, भग्नसन्धानकारक, धातुवृद्धिकर, रुचिकारक, वर्णप्रसादक, व्रणका हितकर, रुचिकर और शरीरका स्थिरतासम्पादक है। नया गेहूं खानेसे कफकी वृद्धि होती है, किन्तु पुराना होने पर उसमें कफवृद्धि नहीं होती। मधुली गोधूमका गुण-शीतवीर्य, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर रस, लघुपाक, शुक्रवर्द्धक, शरीरका उपचयकारक और सुपथ्य है।

नान्दीमुख गोधूमका गुण मधुली गोधूमके सदृश। (भावप्रकाश पूर्वखण्ड १ भाग)

गोधूमक (सं० पु०) गोधूम इव कं शिरो यस्य, बहुव्री०। सर्पविशेष, गेहुअन नामका सांप। (सश्रुत)

गोधूमचूर्ण (सं० क्ली०) गोधूमस्य चूर्णं, ६-तत्। चूर्णीकृत गोधूम, मैदा, आटा।

गोधूमज (सं० पु०) तवक्षीर, पायस, तसमै, खीर।

गोधूमफल (सं० क्ली०) गोधूम, गेहूं।

गोधूममण्ड (सं० पु०-क्ली०) गोधूमकृत मण्ड, गेहूंका वना मण्ड।

गोधूमसम्भव (सं० क्ली०) सम्भवत्यस्मात् सं भू अपादाने अप् गोधूमः सम्भवो यस्य, बहुव्री०। मैदाकी बनी खट्टी लप्सी।

गोधूमसार (सं० पु०) गोधूमस्य सारः, ६-तत्। गोधूमका सारांश, गेहूंका निर्यास। प्रस्तुत प्रणाली यों है—गेहूंको अच्छी तरह साफ कर उखलमें चूर्ण करते हैं। सन्ध्या समयके पहले इस चूर्णको मट्टीके पात्रमें रख कर जलसे भर देते है। दूसरे दिन सवेरे जलको फेंक कर उसे सुखा लेते, इसीको गोधूमसार कहते है।

गोधूमचोरिका (सं० स्त्री०) गेहूंकी खीर।

गोधूमाद्यघृत (सं० क्ली०) रसायनाधिकार। इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस तरह है—घृत 8 शराव, दुग्ध १६ श०

में गोधूम १०० पल, जल २१ श० डालकर काढ़ा प्रस्तुत करे जब अन्तमें केवल ८ शराव बच जाय तो उसे नीचे उतार ले और गोधूम, मुञ्जाफल (अभावमें तालमुस्तक), माषकलाय (उरद), द्राक्षा (दाख), पक्षफल (नोनी कटमरैया) काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, शतमूली, अश्वगन्धा, पिण्डी खर्जुर, मधुक फल, त्रिकटु, शर्करा, भल्लातक (अभावमें रक्तचन्दन) और आत्मगुप्तफल या मूल प्रत्येकके ३॥ तो ४॥ र को चर्ण कर उसमें मिलाते हैं। इसके बाद गुड़त्वक (दारचीनी), एला (इला-यची) पिप्पली, धन्याक (धनिया), कर्पूर, नागकेशर प्रत्येकके १०॥ तोले और शर्करा ८ प०, मधु ८ प०को उस में डाल कर श्रुवाकाष्ठसे उसे अच्छी तरह घोटना चाहिए। बाद १ २ प० सेवन करनेका विधान है।

(चक्रपाणिदत्त क्षतक्षय)

गोधूमी (सं० स्त्री) गा धूमयति धूम णिच् अण्-गौरा दित्वात् ङीप्। गोलोमिका, श्वेतदूर्वा, एक तरहकी घास जिसमें पुष्प भी लगते हैं।

गोधूलि (सं० स्त्री०) गवां खुरोत्थिता धूलि । कालविशेष, सन्ध्या समय। ज्योतिषशास्त्रमें लिखा है कि गोधूलि लग्न सब कार्योंमें ही प्रशस्त है। इससे नक्षत्र, तिथि, करण, लग्न, वार, योग और जामित्रादि दोषोंका भय नहीं रहता, गोधूलि समस्त दोषोंको नाश करती है। नक्षादि ज्योतिर्विदोंके मतसे शुभ दिन या शुभलग्नके अभावसे अगत्या गोधूलिमें अपरिहार्य कार्य किया जा सकता है, किन्तु शुभलग्न पाने पर गोधूलिमें कार्य करना निषिद्ध है, करने पर अमङ्गल होता है।

नारदके मतानुसार पूर्वदेश और कलिङ्गदेशवासियों के लिए गोधूलि शुभप्रद है। गोधूलिमें गन्धर्वादि विवाह और यवनोंका विवाह हो सकता है। दैवज्ञ मङ्गलके मतसे शूद्रके पक्षमें गोधूलि प्रशस्त है, किन्तु द्विजोंके लिये प्रशस्त नहीं है।

गोधूलि समयका निरूपण लेकर ज्योतिषशास्त्रमें मतामत लक्षित होता है। किसी किसी ज्योतिर्विदके मतसे सूर्यबिम्बके कुछ अस्त होनेके बाद दो दण्ड समयको गोधूलि कहते हैं। थोड़े ज्योतिषिक कहते हैं कि सूर्य बिम्बके तीन भागोंमें दो भागोंके अदृश्य होनेके बाद दो दण्ड समयको गोधूलि कहते हैं। मुहूर्त्तचिन्तामणिके टीकाकारका कथन है कि उपरोक्त दो मत देशभेद और आचारभेदसे आदरणीय हैं। मुहूर्त्तचिन्तामणिके मतसे हेमन्त और शीत ऋतुमें सूर्य पिण्डाकृति होने पर गोधूलि होती है। इस प्रकार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ मासमें सूर्य अर्द्धास्त, तथा श्रावण, भाद्र, आश्विनी और कार्तिक मासमें सूर्य मण्डलके सम्पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि हुआ करती है।

मुहूर्त-चिन्तामणिके मतसे वृहस्पतिवारमें सूर्यके अस्त होने तथा शनिवारमें स्थित रहने पर गोधूलि शुभ-प्रद है। गोधूलि समयके लग्नसे अष्टम या षष्ठमें चन्द्र रहे उसे गोधूलि समयमें विवाह देनेसे कन्याकी मृत्यु होती है। लग्नमें या अष्टममें मङ्गल रहे तो वरकी मृत्यु होती तथा चन्द्र एकादश वा द्वितीय राशिमें रहे तो वर और कन्या अनेक तरहके सुख पाते हैं

ज्योतिस्तत्त्वके मतसे अग्रहायण और माघ मासके गोधूलि योगमें विवाह करने पर कन्या विधवा होती, फाल्गुनके गोधूलि लग्नमें विवाह करनेसे पुत्र, आयु और धनकी वृद्धि होती है। इसी तरह वैशाखमें शुभ और प्रजावृद्धि, ज्येष्ठमें वरकी सम्मानवृद्धि एवं आषाढ़ मासके गोधूलि लग्नमें विवाह करनेसे धन, धान्य और पुत्र वृद्धि हुआ करती है।

गोधेनु (सं० स्त्री०) गौरिव धेनु । दुग्धवती गाभी, दुधारी गाय।

गोधेर (सं० त्रि०) गुध बाहुलकात् एरक्। रक्षक, रक्षा करनेवाला।

गोधेरक (सं० त्रि०) गोधेर स्वार्थ कन। १ रक्षक। (पु०) गोधेर सञ्ज्ञाया कन। २ चतुष्पद सर्पविशेष।

गोध् (सं० पु०) गां भूमिं धरति गो धृ मूलविभुजादित्वात् क। भूधर, पर्वत पहाड़।

गोधा—गुजरातके पाचमहल जिलेके गोधा उपविभागके अन्तर्गत एक प्रधान नगर। यह अक्षा० २२° ४६ ३०´ उ० और देशा० ७३ ४० पू० पर अवस्थित है। यहां जिलेकी सदर अदालत, दिवानी अदालत, डाकघर कारागार और औषधालय हैं।

गोन (हि० स्त्री०) १ अनाज भरनेका चमड़ा, या कंबलको

बनी हुई छोटी थैली। इसमें अनाज भरकर बैलोंकी पीठ पर रख एक स्थानसे दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। २ साधारण बोरा। ३ टाटका कोई थैला। ४ नाव खींचनेकी रस्सी। (देशज) एक प्रकारकी घास जिसका साग भी बनता है।

गोनन्द (सं० पु०) १ कार्तिकेयके एक गणका नाम। २ काश्मीरके एक राजा, ये गोनर्द नामसे परिचित थे। काश्मीर देखो। ३ मत्स्यप्रदेश।

गोनन्दन—सूक्तिकर्णामृत धृत एक कवि।

गोनन्दी (सं० स्त्री०) गवि जले नन्दति नन्द-अच् गोरादित्वात् ङीष्। सारसी पक्षी।

गोनरखा (हिं० पु०) नावका मस्तूल।

गोनरा (हिं० पु०) एक प्रकारकी लम्बी घास जो उत्तर भारतवर्षमें होती है।

गोनर्द (सं० पु०) गवि जले नर्दति नर्द-अच्। १ सारसी पक्षी। (Crane) २ देशविशेष। बृहत्संहिताके कूर्मविभागमें इस देशका उल्लेख है। यहाँ महर्षि पतञ्जलिका जन्म हुआ था। (क्ली०) ३ कैवर्तमुस्तक, एक प्रकारकी घास, नागरमोथा। ४ काश्मीरके एक राजा। (हरिवंश ८१ अ०) (पु०) गवि वृषे नर्दति नर्द-अच्। ५ महादेव, शिवजी। (भारत १३।२८६ अ०) ६ एक प्राचीन ग्रन्थकार। मल्लिनाथने इनके बनाये कामशास्त्रको उद्धृत किया है।

गोनर्दीय (सं० पु०) गोनर्द देशे भवः गोनर्द-छ। १ पतञ्जलि मुनि।

गोनस (सं० पु०-स्त्री०) गौरिव नासिका यस्य, बहुव्री०। अच् नासिकाया नसादेशश्च। १ सर्पविशेष, एक प्रकारका साँप। इसका पर्याय—तिलित्स, गोनास, घोनस, मण्डली और बोड़ है। बोड़ा देखो। (पु०) २ वैक्रान्तमणि।

गोनसी (सं० स्त्री०) गोनसस्तदाकारो ऽस्त्यस्याः गोनस-अच् गौरादित्वात् ङीष्। ओषध वृक्षविशेष। गोनस सर्पके शरीरके जैसा मण्डलाकार कृष्णवर्ण चिह्नयुक्त रक्ताभ पत्रविशिष्ट मूलप्रधान वृक्षको गोनसी कहते हैं। सुश्रुतमें लिखा है कि यह वृक्ष कृष्णवर्ण मण्डलयुक्त, मूलजात होता है और इसमें सिर्फ दो पत्र रहते हैं। इसका रंग लाल होता है और ऊंचाई लगभग डेढ़ हाथकी रहती है। (सुश्रुत चिकित्स० ३० अ०)

गोनाडीक (सं० पु०) चक्र,शाक, चञ्चु नामक एक प्रकारकी लता।

गोनाथ (सं० पु०) गोर्नाथः, ६-तत्। १ वृष, बैल, सांड़। २ भूमिपति, राजा। ३ गोस्वामी।

गोनाय (सं० पु०) गां नयति नी-अण्। १ गोप, ग्वाला।

गोनास (सं० पु०) गोर्नासा इव न सा यस्य, बहुव्री०। गोनससर्प। (सुश्रु० ५।४।३३) (क्ली०) गोर्नासा इव आकृतिर्यस्य, बहुव्री०। २ वैक्रान्त मणि।

गोनिकोप्पल—कोड़गप्रदेशके अन्तःपाती एक नगर।

गोनिवाला—बम्बई प्रदेशवासी मुसलमान शस्यविक्रेता, इनका आचार व्यवहार शेखोंके जैसा है। शेख देखो।

गोनिया (हिं० स्त्री०) १ दीवारकी सिधाई मालूम करनेका बढ़ई तथा राजका औजार। यह औजार समकोणकी आकृतिका होता और लोहे तथा लकड़ीका बना रहता है।

(पु०) २ बोरा ढोनेवाला। ३ रस्सी बांध कर नाव खींचनेवाला।

गोनिष्क्रमण—एक पुण्यतीर्थ। वराहपुराणके १४१ अध्यायमें इसका माहात्म्य वर्णित है।

गोनिष्यन्द (सं० पु०) गोर्निष्यन्दते निष्यन्द अच ५-तत्०। गोमूत्र, गायका मूत।

गोनी (हिं० स्त्री०) १ टाटका थैला, बोरा। २ पटुआ, सन।

गोनुपल्ली—मन्द्राज प्रदेशस्थ नेल्लुर जिलेके रायपुर तालुकके अन्तर्गत एक ग्राम। यह रायपुरसे ५ मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहां एक पुराना विष्णुमन्दिर है, इसके निकटवर्त्ती पर्वतके ऊपर पिङ्गलकोण मन्दिर पर प्रति वर्ष एक बड़ा मेला लगा करता है।

गोन्दोलि—सतारा जिलेमें मान नदीसे निःसृत एक विस्तृत नहर। १८६७ से १८७२ ई० पर्यन्त इस नहरको बनानेमें लगा था। गोन्दोलि ग्रामसे इसका नामकरण हुआ है।

गोन्धलगार (गोन्धाली) बम्बई प्रदेशवासी मराठाकी एक जाति। ये नृत्य कर जीविका निर्वाह करते, इसीलिए इनका नाम गोन्धलगार या गोन्धाली हुवा है। इनकी उपाधि गरोड़, गुरू, पचङ्गि और तुगड़े हैं। इनका गठन लम्बा और दृढ़काय है। ये अपरिष्कार और बहुत छोटे

घास फसके घरमें रहते तथा कगनीके दाने नित्य आहार करते हैं। सिर्फ पर्व दिनमें ही मिष्टान्न और मांस खाते हैं। मादक सेवनमें ये बड़े पटु हैं। पुरुष जाति भी कानमें पीतलके कुण्डल धारण करते हैं। इनके गुरु नहीं होते हैं, तब कभी कभी कोई निकृष्ट ब्राह्मण इनका पुरोहित हो जाता है।

सन्तानके भूमिष्ठ होने पर उसकी नाड़ी काट कर फेंक दी जाती और गृहस्थ जातिभोज देते हैं। ७वें दिन को शिशुका नामकरण और दोल रोहण होता है। इसके बाद विवाह पर्यन्त और कोई उत्सव ये नहीं मनाते। इनके विवाहके पूर्व दिन वर और कन्याके शरीरमें हल्दी लगाई जाती है। विवाहकालमें गाँवका ग्रहविप्र या वरको पूर्वमुख और कन्याको पश्चिममुख खड़ा कर मन्त्र पाठ करते और शरीर पर धान फेंक कर आशीर्वाद देते हैं। तदन्तर दोनों पक्षका जातिभोज हो विवाह उत्सव हो जाता है। इन लोगोंमें बाल्यविवाह, विधवा विवाह और पुरुषके लिए बहुविवाह प्रचलित है। जातिमें किसी तरहको घटना हो जाने पर पञ्चायतसे उसकी मीमांसा होती है। ये मुर्देको जलाते हैं। समस्त हिन्दू पर्वमें और मुसलमानके मोहर्रममें योग देते हैं।

प्रतिदिन चार पांच गोन्थलगार मिल कर वाद्यादि साथ ले द्वार द्वार घूमा करते हैं। किसीको इच्छा हो जाने पर ये उसके प्राङ्गणमें समस्त रात्रि गोन्थल नाच करते हैं। प्रभात होनेके कुछ पहले इनमेंसे एक व्यक्ति अम्बा देवीको लेकर उन्मत्तकी नाईं कूदता और नाचता तथा भविष्यत् वाक्य कहना आरम्भ करता है। इस समय प्रत्येक दर्शक उसके चरण पर दो दो पैसे रख उसे प्रणाम करता है और फिर वह गोन्थलगार जलती हुई मसाल ही अपने शरीरमें लगा कर खड़ा रहता है। इसके बाद देवीके शरीरसे हल्दी ले आगन्तुकोंके कपालमें अर्पण करता और अपुत्रक स्त्रियोंको पुत्रोत्पत्ति तिथि कह दिया करता है। प्रात काल होने पर वे विदाई ले अपने अपने घरको चले जाते हैं।

गोन्थोधम (सं० पु०) गमनशील, जो दुग्धमें प्रवाहित हो।

गोप (सं० पु० स्त्री०) गां पाति रक्षति गो पा क। १ जाति विशेष, ग्वाला, आहीर। इसका संस्कृत पर्याय-गोसङ्ख्य, गोदुह, आभीर, वल्लव और गोपाल है। साधारणतः ग्वाल नामसे मशहूर है। पश्चिमाञ्चलमें सब जगह आहीर और दाक्षिणात्यमें गाउली नामसे अभिहित है।

आहीर और ग्वाल शब्द देखो।

पूर्व कालसे यह जाति गोप और आभीर नामसे प्रसिद्ध है। मनुके मतानुसार ब्राह्मणके औरस और अम्बष्ठ कन्याके गर्भसे आभीरका जन्म हुआ है (१)। परशुराम पद्धतिके मतसे कसेरो और मणिकार (जड़ीये) के कन्यासे गोप जातिकी उत्पत्ति है। (२) किन्तु रुद्रयामलोक्त जातिमालामें लिखा है कि जुलाहा और मणिबन्ध-कन्याके सम्भोगसे गोपजीवका जन्म ग्रहण हुआ है (३)। ब्रह्मवैवर्तके मतानुसार श्रीकृष्णके लोमकूपसे गोपगण उत्पन्न हुए हैं (४)। ये सत्शूद्रमें गण्य हैं।

यह जाति पूर्वकालसे ही गोपालन करती आ रही है, इसीलिए ये गोप कहलाये। मनुसंहितामें लिखा है कि गोप वेतनार्थी नहीं है, वह गोस्वामीकी अनुमति ले दश गौओंमेंसे एक श्रेष्ठ गौका दुग्ध दोहन कर ले जा सकता है। व्याससंहिताके विकृत वचनमें ये अन्त्यज जातिके मध्य गण्य हैं। किन्तु यम, पराशर, मनु प्रभृति संहितामें ये शूद्र और भोज्यान्नके जैसे गृहीत हैं (५)।

वर्तमान समयमें इस जातिके मध्य अनेक श्रेणी और शाखाभेद देखे जाते हैं। बङ्गदेशमें ग्वालाकी कई एक श्रेणियाँ हैं—राढ़ी, बागड़ी, बारेन्द्र, पल्लव या वल्लव, गोड़ या घोषग्वाला, मधुग्वाला, गुमिया, करञ्जी, काजाल

(१) "आभीरोऽम्बष्ठकन्यायां। (मनु० १० । १५)

(२) "मणिकुट्टात् [illegible] गोपालश्च सम्भवः।"

(परशुरामकृत जातिमाला)

(३) "[illegible] गोपजीवस्य सम्भवः।" रुद्रयामलस्थ जातिमाला।

(४) "कृष्णस्य लोमकूपेभ्यः सद्यो गोपगणो मुने।

आविर्बभूव रूपेण वेशेनैव च तत्समः॥

[illegible]

[illegible]" (ब्रह्म० [illegible])

[illegible]

[illegible]" (ब्रह्म० [illegible])

(५) "दासनापितगोपालकुलमित्रार्धसीरिणः।

एते शूद्रेषु भोज्यान्ना [illegible]" (यम [illegible] पराशर ११।१९)

आहीर या महिषा ग्वाला, मगल या मागधो और भोगा। वारेन्द्र गोपोंके मध्य पल्लाल, लाहेड़ि, मूलगावां, ढागानिया प्रभृति, तथा भोगा श्रेणीके मध्य माटा ग्वाला और लाल ग्वाला है।

उत्तरपश्चिममें—देशो, नन्दवंशी, यदुवंशी, सूर्यवंशी, ग्वालवंशी, अहीर प्रभृति श्रेणियां हैं।

विहारमें—गारिया या दहियारा, मजरौत्, मातमूलिया या किष्नौत्, कनौजिया, वर्गोवार, धनरोआर, चौआनिया, चौधा, गुजिआर या गोढागा, गोड़न्, कॉंटीताहा, पुह्नीया, सेपारो और वनपूर प्रभृति मूल हैं।

उड़ोसामें—दुमाला, यदुपुरिया, मगधा, मथुरा या मथुरावंशो, गौड़ या गोपपुरिया प्रभृति श्रेणियाँ हैं।

छोटानागपुरमें—किष्नोत्, गोरो, चौआनिया, मझवत्, लारि, भोगता, सदौर और माओड़ा प्रभृति शाखायें हैं।

वङ्गालके ग्वालोंके मध्य वारिक, घोमर, ढालि, घोष, जाना, मण्डल, परामाणिक प्रभृति पदवियां और अलमासि वा आलम्यान, भरद्वाज, गौतम, काश्यप, मदुश्रपि वा मधुकुल्य और शाण्डिल्य गोत्रादि प्रचलित हैं।

विहारमें—भाँड़ारी, भोगत, चौधरी, वोरैला, मिराहा, महतो, मण्डर, माझी, मारिक, पञ्जियारा, राय, राम्त और सिं प्रभृति पदवियां देखी जाती हैं।

युक्तप्रदेश, विहार और छोटानागपुर प्रभृति स्थानोंके ग्वालोंमें मूल वा श्रेणीके अतिरिक्त गाँजिके सदृश और कई एक 'थाक' या गोष्ठ प्रचलित हैं।

वङ्गके 'पल्लव' या 'वल्लव' श्रेणीका ख्याल है कि श्रीकृष्णके पमौनासे वामघोष पैदा हुए, वही वामघोष उन लोगोंके आदिपुरुष हैं। किन्तु वागड़ी श्रेणीवाले कहते हैं कि उन लोगोंके पूर्वपुरुष उज्जयिनोसे आ वागड़ी अञ्चलमें रहते थे, इसोलिये वे उज्जैनिया नामसे भी मशहूर हैं। राढ़ी गोप वैलके शरीरमें तप्तलौह द्वारा अङ्कित तथा वधिया करते हैं, इसीसे वे दूसरे दूसरे श्रेणियोंके निकट हेय और नीच गिने जाते हैं। गोड़गोप बहुत दिनोंसे वङ्गालमें लाठियाल नामसे विख्यात हैं, ये अपनेको सत्शूद्रके जैसे परिचय देते एवं दूसरे किसी श्रेणीके साथ आदान प्रदानमें आपत्ति नहीं करते हैं। प्रधानतः ढाका जिलामें लाल और माटा ग्वाले वास करते हैं। लाल ग्वाला विवाहकालमें लाल वस्त्र और माटा ग्वाला सफेद वस्त्र परिधान करते हैं। इन दोनोंमें माटा गोप अपनेको प्रधान समझते और लाल ग्वालेसे कन्यादानके समय वहुत रुपये लिया करते हैं। वङ्गालके ग्वाले स्वगोत्र और मातामह गोत्रमें विवाह नहीं करते। इन लोगोंमें कन्याका वाल्यविवाह ही आदरणीय है; विधवाविवाह प्रचलित है। विवाह-प्रणाली उच्चश्रेणीके हिन्दूके जैसा है। इन लोगोंमें अधिकांश वैष्णव तथा शाक्त और शैव अल्प है। इनके ब्राह्मण पुरोहित भी स्वतन्त्र है जो इस देशमें निम्नश्रेणीमें गिने जाते हैं।

विहारके ग्वालोंमें गोत्रनियम प्रचलित नहीं है, ये मूल लक्षकर विवाहादि सम्बन्ध निर्णय करते हैं। सप्तमूल और नवमूल छोड़ कर आदान प्रदान किया करते हैं। सप्तमूल वा विपरीत अपनेको कृष्णसे उत्पन्न वतलाते हैं। इन दो श्रेणियोंके गोप दधि प्रस्तुत नहीं करते, वे सिर्फ दुग्ध विक्रय किया करते हैं। गोरिया या दहियारा मूलके गोप दुग्धको गरम किये विना उससे दधि तैयार कर लेते इसलिये वे पतित गिने जाते हैं। कॉंटिताहा मूलका ग्वाला गौके शरीरमें कॉंटेसे दाग देता इसी कारण इसका ऐसा नाम रखा गया है। कनौजिया और वर्गोवार उत्तर-पश्चिमसे आ विहारमें वस गये हैं, ये अपने ही हाथसे नवप्रसूत शिशुकी नाड़ो काटा करते हैं इसीलिये दूसरे मूलके गोप इन्हें नीच समझते हैं। विहारके गोपोंमें वाल्यविवाह प्रचलित है तथा पतिको मृत्यु पर विधवा देवरसे विवाह कर सकती है। यहांके ग्वाले विषहरी, गणपत्, गोंसावन, कालामाँझी और भूतको विशेष भक्ति श्रद्धा किया करते, तथा वर्षमें एक वार सत्यनारायणकी पूजा करते हैं। विहारमें शैव और शाक्त अधिक है।

उड़ीसाके गोप अपनेको वङ्ग और विहारके गोपजातिको अपेक्षा श्रेष्ठ तथा शुद्ध समझते हैं। उच्चश्रेणीके हिन्दूकी नाईं ये शास्त्रके मतसे चलते हैं। इनका आचार व्यवहार वहुत कुछ विहारके गोपोंसे मिलता जुलता है। ये कहते हैं कि यदि विवाहके पूर्व लड़की ऋतुमती हो जाय तो उस कन्याको पहले एक नितान्त वृद्ध मनुष्यसे व्याहना चाहिए और विवाहके बाद वह वृद्ध भी उसे

परित्याग कर दे। तदनन्तर वह स्त्री विधवाको नाईं किसी दूसरेसे विवाह कर सकती है। इनके रमणियां पूर्णगर्भा होने पर एक स्वतन्त्र छप्पर घरमें रखी जाती है। प्रसवके २१ दिन पर्यन्त उन्हें गर्भ घरमें रहना पड़ता है। इक्कीस दिनों तक पति और पत्नी दोनों अशुचि रहते और कोई कार्य कर नहीं सकते हैं।

छोटा नागपुरके ग्वालोंमें बाल्यविवाह और अधिक उमरमें विवाह दोनों प्रचलित हैं। विवाहके चार मास बाद 'रोकसदि' या कन्या श्वशुरालय जाती है। इन लोगोंमें जब तक रोकसोधि नहीं होती तब तक विवाह सिद्ध नहीं समझा जाता है। विधवा विवाहकी प्रथा भी इनमें प्रचलित है।

ये गोमेषादि पालन तथा दधिदुग्धादि विक्रय कर जीविका निर्वाह करते हैं। किसी किसी स्थानमें कुछ गोप खेती भी करते हैं।

(पु०) २ ग्रामाधिकारी, गांवका मालिक। ३ भूपाल, राजा। ४ गोठाध्यक्ष, गोशालाका प्रबन्ध करनेवाला। (त्रि०) ५ गोरक्षक, गौकी रक्षा करनेवाला। गोपायति गुप-अच्। ६ रक्षक, रक्षा करनेवाला। ७ उपकारक, भलाई करनेवाला। ८ वीर णावजल, सूर या बोल नाम की औषध। ९ गन्धर्व विशेष, एक गन्धर्वका नाम।

गोपक (सं० त्रि०) गोप स्वार्थे कन गुप् ण्वुल् वा। १ गोप, ग्वाला। २ बहुतसे ग्रामोंके एक अधिपति। ३ रक्षक, रक्षा करनेवाला। ४ वर्तमान गोआका प्राचीन नाम। गोआ देखो।

(पु०) ४ वणिक् द्रव्यभेद। ५ रक्तवाले। ६ शारिवा, अनन्तमूल। ७ सोमादर।

गोपकन्या (सं० स्त्री०) गोपस्य कन्येव प्रियतरा। १ औषध विशेष। गोपस्य कन्या, ६ तत्। गोपजातीय कन्या, ग्वालाकी लड़की।

गोपकपुरि—गोआ देखो।

गोपकर्कटिका (सं० स्त्री०) गोपप्रिया कर्कटिका, मध्य पदलो०। गोपालकर्कटी, गोवाम काकरी या कुन्दरू।

गोपतीर्थ—प्रभास खण्ड वर्णित एक पुण्य स्थान।

गोपघोण्टा (सं० स्त्री०) गोपप्रिया, घोण्टा, मध्यपदलो०। १ वृक्षविशेष, काड़ पेड़। निविड़ वनमें इस जातिका वृक्ष देखा जाता है। इसका फल तथा गाछ बैरके जैसे होते हैं। २ हस्तिकोलिवृक्ष। ३ विकङ्कतवृक्ष। ४ ककाटो, करैलो। ५ पूगभेद, एक प्रकारकी सुपारी।

गोपता (सं० स्त्री०) गोपस्य भाव गोप तल् टाप्। गोप का धर्म।

गोपति (सं० पु०) गो पति, ६ तत्। १ शिव, महादेव। २ वृष साढ़, बैल। ३ विष्णु। ४ भूमिपति, राजा। ५ किरणपति, सूर्य। ६ स्वर्गपति, इन्द्र। ७ ऋषभ नामकी औषध। ८ भोजवंशीय एक राजा। इन्होंने इरावती नगर में इसे निहत किया। ९ गन्धर्वविशेष। १० नौ नन्दोंमें से एक। ११ गोपाल, ग्वाला। १२ वाचाल, मुखर।

गोपतिचाप (सं० पु०) इन्द्रधनुष।

गोपत्व (सं० क्ली०) गोपति यत्। गोपतिका धर्म, ग्वालाका भाव।

गोपथ (सं० पु०) अथर्व वेदका एक ब्राह्मण। ब्राह्मण देखो।

गोपद (सं० क्ली०) गो पद पदस्थान योग्यस्थान। १ गौओंके रहनेकी जगह। २ पृथ्वी पर चिह्नित गौका खुर।

गोपदल (सं० क्ली०) गोपद गोचरणन्यासयोग्य स्थान तदाकार वा लाति ला क। गुवाकवृक्ष, सुपारीका पेड़।

गोपदी (सं० त्रि०) गायके खुरके समान अत्यन्त छोटा।

गोपन (सं० क्ली०) गुप भावे ल्युट्। १ अपह्नव, छिपाव, दुराव। २ रक्षण, रक्षा। ३ कुत्सा, घृणा, तिरस्कार। ४ व्याकुलता। ५ दीप्ति। ६ तेजपत्र तेजपत्ता। ७ ग्रन्थि पर्ण।

गोपना (सं० स्त्री०) गुप दीप्तौ भावे युच्। दीप्ति, कान्ति।

गोपनाथ—हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि। ये १६१२ ई०में विद्यमान थे।

गोपनीय (सं० त्रि०) गुप कर्मणि अनीयर्। १ अप्रकाश्य, जिसका प्रकाश करना उचित नहीं, छिपाने योग्य, गोप्य, २ रक्षणीय।

गोपवधू (सं० स्त्री०) गोपस्य वधुरिव प्रियत्वात्। १ शारिवा, अनन्तमूल। गोपस्य वधू ६ तत्। २ गोपपत्नी, ग्वालेकी स्त्री।

गोपवधूटी (सं० स्त्री०) वधू अल्पार्थे टी गोपस्य वधूटी, ६ तत्। युवती गोपाङ्गना, युवती ग्वालिन्।

गोपभट्ट—गोपालभट्ट देखो।

गोपभद्र (सं० क्ली०) शालूक वृक्षविशेष।

गोपभद्रिका (सं० स्त्री०) गाम्भारीवृक्ष। (Gmelina arborea)

गोपमाउ—युक्त प्रदेशमें हरदोई जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर। यह अक्षा० २७° ३२´ उ० और देशा० ८०° १८ पू०के मध्य अवस्थित है। यह हरदोई सदरसे ७ कोस उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५६५६ है। प्रवाद है कि पूर्वकालमें ठठेरोंने जंगल काट यहां मव्वा बसाया या मव्वाचाचर स्थापित किया था। १०वीं शताब्दीमें राजा गोपने यहां अपने नाम पर एक नगर बसाया ठठेरोंसे प्रतिष्ठित इस स्थानकी कौरेरुदेव और बादल देवकी प्रस्तरमूर्त्तियां आज भी पूजी जाती हैं। १०३२ ई०को मसायुदके अधीन लालपीर गोपमाउ नगर पर आक्रमणके लिये आये थे। किन्तु वह लड़ाईमें मारे गये और विजेताने उन्हें गोपीनाथके मंदिरमें गाड़ दिया। १२३२ ई०को अलतमासके आदेशसे ख्वाजा ताज उद्दीन-होसेन यहां ससैन्य उपस्थित हुये। इन्होंने यहां एक मस्जिद् निर्माणकी जो १७८५ ई०को अर्काटके सुबादार नवाब मुहम्मद अलीखाँके यत्नसे मरम्मत हुई थी। अकबरके समय इस नगरमें ६२ फुट ऊंची एक जुम्मामस्जिद निर्मित हुई और १६९८ ई०में नौनिद्धराय कार्टक यहां एक प्रसिद्ध गोपीनाथका मन्दिर स्थापित हुवा। इस मन्दिरमें संस्कृत शिलालेख है।

गोपरस (सं० पु०) गां जलं पिवति पा क। गोपोरसोऽस्य, बहुव्री०। बोल, चारजल।

गोपराजपण्डित—एक ज्योतिर्विद्, ग्रहणगणितकल्पतरुवासनाभाष्यके रचयिता।

गोपराज—भानुगुप्तके अधीन एरणका एक राजा।

गोपराष्ट्र (सं० पु०) गोपप्रधानाः राष्ट्राः। भारतवर्षस्य एक प्रदेश, ग्वालियर प्रान्तका एक प्राचीन नाम। यह गोपगणोंका प्रधान वासस्थान था। महाभारतमें इस जनपदका उल्लेख है।

गोपरिचर्या (सं० पु०) गोः परिचर्या, ६-तत्०। गोसेवा, गौका प्रतिपालन। हिन्दूशास्त्रमें लिखा है कि प्रत्येक गृहस्थको गौ प्रतिपालन करना उचित है। पूर्वकालमें राजा महाराज गौ सेवा किया करते थे। गृहस्थ मात्र ही गौ द्वारा उपकृत हैं, उनके लिये गोधन सदृश दूसरा धन नहीं है। इन सर्वेशियोंका आहार वन्यतृण और वासस्थान अरण्य है। जो जल दूसरेके पीने लायक नहीं वही वन्य जल पीकर अपना जीवन पालते हैं। गौ प्रतिपालन करनेमें गृहस्थको विशेष आयास करने नहीं पड़ते, वरन् वे इनके दुग्धसे बहुत लाभ उठाते हैं। गौका मूत्र और विष्ठा प्रभृति गृहस्थके लिए प्रयोजनीय और उपकारी हैं, गृहस्थ मात्र ही गौके ऋणसे आबद्ध हैं। बाल्यकालमें माता और गो इन्हीं दोनोंके स्तन पान कर जीवन धारण किया जाता है, इसी लिए दोनोंको समान भावमें भक्ति करनी चाहिये। ब्रह्मपुराणके मतसे गृहस्थको प्रतिदिन गौ पूजा, नमस्कार और उनकी सेवा करनी उचित है। गोष्ठमें जा गौओंका प्रदक्षिण करनेसे चराचर भूमण्डल परिभ्रमणका फल होता है। गोमूत्र, गोमय, घृत, दुग्ध, दधि और रोचना गौके ये छः द्रव्य मङ्गलकर और सकल पापनाशक हैं। गायको ग्रासदान करने पर स्वर्गवास होता है। गौके शरीर पर हाथ फेरनेसे सब पाप दूर हो जाते हैं।

पद्मपुराणके मतानुसार गौको देख कर पहले "नमो गोभ्यः" इत्यादि मन्त्र पाठकर नमस्कार करना चाहिये। रामायणमें लिखा है कि रामचन्द्रके पूर्वपुरुष महाराज दिलीप स्वर्गसे लौट आनेके समय गौको नमस्कार करना भूल गये थे। इसी पापसे अनेक दिन पर्यन्त वे पुत्ररत्नसे वञ्चित थे।

आदित्यपुराणका मत है कि गौको यथाशक्ति लवणदान करनेसे पुण्यलोकको प्राप्ति होती है। जो प्रतिदिन विना खाये गौको खिलाता है, उसे सहस्र गोदानका फल होता है। देवीपुराणमें लिखा है कि मक्षिका और डांस प्रभृतिसे निवारणके लिए गोगृहमें धूम देना चाहिये।

गोगृहमें धूम नहीं देनेसे गोपालक मक्षिकालीन नरकको जाता एवं नरककी भीषण मक्षिकायें उसके चर्मको फाड़ कर रक्त पान करती हैं। गौका बच्चा मर जाने पर इसे दूहना नहीं चाहिए, ऐसा करनेसे उस नराधमको नरकमें वास कर क्षुधाके लिये हाहाकार करना पड़ता है। (देवीपुराण)

महाभारतका मत है कि तृष्णार्त गोको जलपान करते समय जो व्यक्ति बाधा देता उसे ब्रह्मघातक कहते हैं। जो शीत तथा वायुरोधक गोगृह निर्माण करता है, उस के सात कुल उद्धार होते हैं।

गृहस्थके अपने घरमें कुलक्षणा गायको उत्पन्न होने पर उसे परित्याग करना नहीं चाहिये। शीतकालमें अनाथ सवेशियोंका घर निर्माण कर देना उचित है। (अनुगाव)

गायके प्रसव कालसे दो मास पर्यन्त उसे दुहना नहीं चाहिये। तृतीयमासमें सिर्फ दो स्तन दुहनेका विधान है और शेष दो स्तन बच्चेके लिए छड़ देवें। चतुर्थ मासमें तीन स्तन दुहना चाहिये, किन्तु दुहते समय यदि गाय किसी तरह कष्ट अनुभव करे, तो उसे अच्छी तरह न दुहे। आषाढ़ी, आश्विनी और पौष पूर्णिमाको गोदोहन करना निषेध है। युगादि, युगान्त, षडशीति विषुवत् संक्रान्ति, उत्तरायण एवं दक्षिणायन प्रवृत्तिके दिनमें चन्द्र या सूर्य ग्रहणमें एवं पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्दशी, द्वादशी और अष्टमी तिथिमें गोपूजा करनी चाहिए तथा ४ पल लवण, ८ पल घृत, १६ पल अपर दुग्ध और ३२ पल शीतल जल गोको खाने देना उचित है। किन्तु रुचि और दुग्धके परिमाणानुसार आहारीय परिमाण वृद्धि या ह्रास करना पड़ता है। प्रातःकाल लवण और इसके बाद जल तथा तृण खानेके लिये देना चाहिए। रात्रिको गोगृहमें दीप, तम्बोवाद्य और पौराणिक कथाका प्रसङ्ग करे। मनुष्य मात्रको ही गौओंको तृण जलादि द्वारा प्रतिपालन, पूजा और प्राणके साथ भक्ति करना उचित है। तथा उठते, बैठते, खाते, पीते, सोते समय सर्वदा अपने मनमें निम्नलिखित मन्त्र पाठ करना चाहिये।

मन्त्र यथा—

"[illegible]।
[illegible]॥"

इस प्रकार गोपरिचर्या करनेसे ऐहिक सुख भोग और परकालमें स्वर्ग लाभ होता है। (अनुगाव)

सर्वदा सन्तोषके साथ गोको घास खानेके लिये देना चाहिए। ताड़न, आक्रोश या खेद स्वप्नमें भी न करे। गोमय या गोमूत्रको कभी भी घृणा दृष्टिसे न देखे। शुष्क चार द्वारा हमेशा गोगृह परिष्कार कर डालें। ग्रीष्मकालमें शीतल वृक्षकी छायामें और शीतकालमें गर्म तथा कर्दमविहीन गृहमें तथा वर्षा और शिशिरकालको अल्पोष्ण और वायुविहीन घरमें गोको रखना चाहिए। उच्छिष्ट, मूत्र, विष्ठा, कफ, लाश तथा दूसरे किसी तरहका मल गोगृहमें परित्याग न करें। रजस्वला, कुलटा या नीच जातिको गोशालामें प्रवेश होने न दें। कभी भी गोवत्सका लङ्घन न करे। गोशालाके निकट क्रीड़ा करना निषिद्ध है। जूता पहन कर अथवा हाथी, घोड़ा या गाड़ी पालकी प्रभृति पर आरोहण कर गोके मध्य गमन न करना चाहिए। पिता तथा माताकी नाईं श्रद्धा सहित गौओंका प्रतिपालन करें। महा कोलाहल, घोर दुर्दिन और देशमें विप्लव उपस्थित होने पर सवेशियोंको तृण और शीतल जल खानेके लिये देना चाहिए। (अनुगाव)

विष्णुधर्मोत्तरमें लिखा है कि राजाओंके लिये गो प्रतिपालन करना उचित है। गोमय और गोमूत्र द्वारा अलक्ष्मीका विनाश होता है। इन्हें कभी भी घृणा दृष्टिसे न देखे। उतनी ही संख्यामें गौ रखे जितनी संख्याका प्रतिपालन अच्छी तरह कर सके। कभी भी क्षुधार्त्त हो गौ कष्ट न पा सके, उसके प्रति विशेष लक्ष्य रखना चाहिए। जिसके घरमें गाय क्षुधासे कातर हो रोदन करती है, वह व्यक्ति नरकको प्राप्त होता है। दूसरेकी गौको ग्रास दान करनेसे अधिक पुण्य होता है। समस्त शीतकालमें दूसरेकी गौको ग्रासदान एवं आठ वर्ष पर्यन्त अग्रभक्त प्रदान करने पर भी स्वर्गकी प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति सवेशियोंके गृहमें शीत निवारणका उपाय और जलपात्रको जलसे परिपूर्ण कर देता वह वरुण लोकको जा अप्सराओंके साथ नृत्य गीत कर सकता है।

सिंह, व्याघ्र, भयत्रस्त एवं पङ्क या जलमग्न गायको उद्धार करने पर एक कल्प पर्यन्त स्वर्गभोग होता है। घरमें एक गाय मात्रके रहने पर रजस्वला स्त्रीका कभी भी गृहदोष नहीं होता, तथा उस घरकी मिट्टी किसी तरह दूषित रहने पर भी अच्छी हो जाती है। गोके निःश्वास वायुसे वह घर सर्वदाके लिये शान्तियुक्त हो जाता

है। गौकी हड्डी कभी भी लङ्घन न करनी चाहिए। गायकी मृत्यु होने पर उसकी गन्ध परित्याग न करें। वह गन्ध जहां तक फैलती है, वहां तक जमीन पवित्र हो जाती है। जननीके सदृश गाय भी सर्वदा रक्षणीय पूजनीय तथा पालनीय है, जो मनुष्य इन्हें ताड़ना करता, उसे रौरव नरक होता है। जब गाय क्रुद्ध हो आघात करनेके लिए उद्यत हो जाय उस समय जो मनुष्य "नम मातः" ऐसा कहकर स्थिर रह जाता है, उसे गौ आघात नहीं पहुंचाती और वह परम पदको पाता है।

(वं साहि गानखण्ड)

गोपवन (सं० क्ली०) गोपभूयिष्ठं वनं मध्यपदलो०। १ जिस वनमें बहुत बहुत ग्वाला वास करें। (पु०) २ एक ऋषिका नाम।

गोपवनादि (सं० पु०) गोपवन आदिर्यस्य, बहुव्री०। पाणिनीय एक गण। इस गणके उत्तरवर्त्ती अपत्य प्रत्ययका लोप नहीं होता है। न गोपवनादिभ्यः। पा २।४।६७ गोपवन, विन्दु भाजन, अश्वावतान, श्यामाक, श्यामक, श्यापर्ण, हरित, किन्दास, वह्वस्क, अर्कलूष, वध्योग, शिग्रु, विष्णु, हृद्ध, प्रतिबोध, रथीतर, रथन्तर, गविष्ठिर, निषाद, शवर, अलस, मठर, मृड़ाकु, सृपाकु, मृदु, पुनर्भू, पुत्र, दुहितृ, ननान्दृ परस्त्री और परशु इन सबको गोपवनादि, गण, कहते हैं।

गोपवरम्—मन्द्राज प्रदेशस्थ कड़ापा जिलाके अन्तर्गत एक गण्ड ग्राम। यह प्राहुरसे ३ मील उत्तरको अवस्थित है यहां आञ्जनेयस्वामीके मन्दिरमें तीन पुरातन शिलालिपि विद्यमान हैं।

गोपवल्लिका (सं० स्त्री०) गोपवल्ली स्वार्थे कन्-टाप्। गोपवल्ली।

गोपवल्ली (सं० स्त्री०) गां पाति गो-पा-क-टाप्। गोपा चासौ वल्ली चेति, कर्मधा०। १ मूर्व्वा नामका पेड़, जिसकी रेशासे धनुषका गुण और मेखला बनाये जाते हैं। २ शारिवा, अनन्तमूल। ३ श्यामालता।

गोपशु—(सं० स्त्री०) यज्ञिया गौ, यज्ञको गाय।

गोपस (सं० त्रि०) गुप-असुन्। रक्षिता, रक्षक, बचानेवाला।

गोपा (सं० स्त्री०) गां पाति पा-क-टाप्। १ श्यामालता। २ महाभल्लातक गुड़। ३ अनन्ता। ४ मातृशारिवा। ५ गाय पालनेवाली, ग्वालिन।

(त्रि०) गां पाति पा क्विप्। ६ गोरक्षक। ७ गुप्त करनेवाला, छिपानेवाला (स्त्री०) ८ शाक्य किङ्किनीश्वरकी कन्या एवं सिद्धार्थबुद्धकी स्त्री। एक दिन बुद्ध रथ पर चढ़ कर घरको लौटे जा रहे थे, रास्तेमें गोपाकी दृष्टि उन पर पड़ी। बुद्धदेवने गोपाके मनोहररूप पर मुग्ध हो कर उसी जगह रथको नीचा किया और उसके रूपकी छटा देखने लगा। सिद्धार्थको इस तरह मोहित देख कर किसीने गोपाको कथा राजा शुद्धोदनको कह सुनाई। राजाने गोपाको ला अपने पुत्रसे विवाह कर दिया। भोट ग्रन्थ दुल्वके पढ़नेसे पता लगता है कि जब बुद्धदेव श्रावस्ती नगरमें रहते थे देवदत्तने गोपाको हरण करनेको इच्छासे उसका हाथ पकड़ा, किन्तु गोपाने अपना हाथ छुड़ा कर उसीका हाथ इतना जोरसे मचोड़ा कि हाथसे रक्त गिरने लगा। तत्पश्चात् गोपाने उसको घरको छत्तसे बोधिसत्व (बुद्ध)के प्रमोद सरोवरमें फेंक दिया। 'दुल्व' ग्रन्थमें बुद्धदेवकी यशोधरा, गोपा और मृगदजा तीन स्त्रियोंका उल्लेख है। सिफनर साहबका कहना है कि गोपाका दूसरा नाम यशोधरा भी था। यशोधरा देखो।

गोपा—हिन्दी भाषाके एक सुप्रसिद्ध कवि। इनका जन्म १५३३ ई०में हुआ था। इन्होंने रामभूषण तथा अलङ्कारचन्द्रिका रचना की है।

गोपाङ्गना (सं० स्त्री०) गोपस्याङ्गना, ६-तत्। १ गोपस्त्री, ग्वालाकी स्त्री। २ शारिवा, अनन्तमूल नामकी औषध।

गोपाचल (सं० पु०) १ ग्वालियरका प्राचीन नाम। २ ग्वालियरके निकट एक पहाड़।

गोपाजिह्व (सं० त्रि०) गोपा गोप्त्री 'मा बिभीत' इति वाक्योच्चारिणी जिह्वा यस्य, बहुव्री०। जिसकी जिह्वा 'भय नहीं' ऐसा शब्द उच्चारण करती है, जिसे कुछ भी भय नहीं है। (ऋक् ३।३८।८)

गोपाटविक (सं० पु०) गोपाल, जो वन वन गौ चराता फिरता है।

गोपातीर्थ—बौद्धोंका तीर्थविशेष। भद्रकल्पावदान ग्रन्थमें लिखा है कि देवदत्तने यशोधारासे प्रेम रखनेके लिए प्रार्थना की, किन्तु यशोधाराको, उसका यह व्यवहार

पसन्द न आया। इसीसे देवदत्त यशोधाराका चिरशत्रु हो गये एवं २१ वर्ष तक उसका प्राणनाश करनेकी चेष्टा करते रहे। एक समय देवदत्तने यशोधाराको पुष्करिणी में निक्षेप किया। ऐसा करने पर भी यशोधारा मरी नहीं, एव पुष्करिणीस्थित सर्पराज कर्तृक सुरक्षित हो कर पितृसदन लाई गई। उक्त पुष्करिणी यशोधाराके दूसरे नाम 'गोपातीर्थ' से बहुत समय तक प्रसिद्ध थी।

गोपादित्य (स० पु०) १ काश्मीरके एक राजाका नाम। ई०के ४०० वर्ष पहले ये काश्मीरके सिंहासन पर आरोहण हुए थे। ये अतिसुशृङ्खलासे राज्यशासन एवं ब्राह्मणोंको बहुत भूमिदान किया करते थे। २ सुभाषितावली धृत एक प्राचीन कवि।

गोपाध्यक्ष (स० पु०) गोपानामाध्यक्ष, ६ तत्। गोपालकोंके कर्ता गोप त, श्रीकृष्ण। (महाभारत १३१४९ अ०)

गोपानसी (स० स्त्री०) गां जलं पाति निवारयति गोपा न छाद सेधति प्राप्नोति गोपान सिध् ड ङीप्। १ वडभी, घरको छातका निम्नस्थ वक्र काष्ठ। २ कर्णिका, विष्क म्भ काठ। ३ वक्रीभूत धारणकाष्ठ, घरमें लगानेको टेढ़ी धरन।

गोपालीय (स० क्ली०) गोमूत्र, गायका मूत।

गोपायक (स० त्रि०) गोपायति गुप् आय ण्वुल्। रक्षक, बचानेवाला।

गोपायन (सं० क्ली०) गुप् आय भावे ल्युट्। १ गोपन, छिपाव। २ रक्षक।

गोपायित (स० त्रि०) गुप् आय कर्मणि क्त। १ रक्षित। (क्ली०) गुप् आय भावे क्त। २ गोपन, छिपाव।

गोपायितृ (स० त्रि०) गुप् आय तृच्। रक्षक।

गोपाल (स० पु०) गां भूमिं पशुविशेष पालयति पालि अण् उपस०। १ राजा। २ गोरक्षक, गोपालक, ग्वाला। ३ सङ्कीर्ण जातिविशेष। पराशरके मतानुसार क्षत्रियके औरस और शूद्रकन्याके गर्भसे गोपालकी उत्पत्ति है। ब्राह्मणोंके लिए इसका अन्न भोज्य कहा गया है।*

दाक्षिणात्यके मन्द्राज और बेलगांव जिलेमें गोपाल जातिके बहुतसे मनुष्य वास करते हैं। कहीं कहीं ये 'गोल' नामसे परिचित हैं।

ये देखनेमें कृष्णकाय, आकृति मध्यम, मुख लम्बा, गाल चिपटा तथा गला छोटा और लम्बा है। मस्तकके माथे में चोटी, अल्प दाढ़ी और मूछ रहते हैं। साधारणतः ये दाल और रोटी खाते और मत्स्य, छाग, भेड़ा, खरगोश, मुरगाका शिकार कर उनका मांस भी खाते हैं। मादकताके लिए ये ताड़ी, गाँजा और तम्बाकू सेवन करते। ये धातु एवं नाना प्रकारके वृक्षोंसे औषध प्रस्तुत करना जानते हैं। स्त्रियां तथा छोटे छोटे लड़के घरमें रह एक तरहकी चटाई तैयार करते और बाजार जा विक्रय किया करते हैं।

ये ब्राह्मणोंके प्रति विशेष श्रद्धा भक्ति रखते एवं विवाह आदि कर्ममें उन्हें पौरोहित्यमें नियुक्त करते हैं। सिर्फ विवाहमें ही ये जातिभोज देते हैं। ये हिन्दू देव देवी की पूजा करते, इसके अलावा मारुती, व्यङ्कोबा, नर्सोबा और यल्लमादेवीको मूर्ति अपने अपने घरमें रख पूजते हैं।

पुत्र प्रसूत होने पर ये पञ्चिव देवीको पूजा, एवं नवम दिनको पुत्रका नामकरण करते हैं। ये शवको गाड़ते और ५ सप्ताह काल अशौच मानते हैं। लिङ्गायत पुरोहित आ शङ्ख बजाकर इनका अशौच दूर करते हैं।

४ विष्णुका अवतारविशेष नन्दनन्दन श्रीकृष्ण पद्मपुराणमें लिखा है कि ये सर्वदा बालकमूर्त्ति धारण करते हैं। इनके शरीरका वर्ण नवीन जलधरके जैसा है। गोपकन्या और गोपबालक सर्वदा इन्हें वेष्टन किया रहते हैं। ये गोपवेश परिधान करते। इनका मुख हमेशा मृदु मधुर हास्ययुक्त दीख पड़ता है। ये वृन्दावनके कदम्बमूलमें रहना बहुत पसन्द करते हैं। श्रीयमाक्तको नाईं बहुतसे इन बालगोपालको उपासना करते हैं। जगदीश तर्कालङ्कार और गदाधर भट्टाचार्य प्रभृति नैयायिक ग्रन्थकारने ग्रन्थारम्भमें इष्टदेव बालगोपालको नमस्कार किया है। तन्त्रसारमें इनकी उपासनाप्रणाली लिखी हुई हैं।

गोपालका ध्यान—

"[illegible]
[illegible]"

---

* "क्षत्रियात् शूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तु यः सुतः।
स गोपाल इति प्रोक्तो भोज्यो विप्रैर्न संशयः॥" (पराशर)

दीनार्थं दीयते यश दधति विमलं पायसं विश्ववन्द्यो)
गोगोपीगोपवनीताद् दमनविलसत् कण्ठम्नु पिदरं वः।" (तन्त्रसार)

५ राजा कीर्तिवर्मदेवके प्रधान मंत्री और सेनापति इन्हींके उत्साहसे प्रबोधचन्द्रोदय नाटक रचा गया था।

६ मन. इन्द्रियोंका पालनेवाला। ७ पन्द्रह मात्राओंका एक छन्द, इसमें ७ और ८ पर ज्योति होती है।

गोपाल—विदेहराज विरुढ़कके मंत्री, सकालके ज्येष्ठपुत्र। सकाल विदेह परित्यागपूर्वक सपुत्र वैशाली नगरमें आ वास करते थे। गोपाल साहसी और वीर पुरुष थे। प्राचीन बौद्धसूत्रमें लिखा है कि बुद्धदेव वैशालीमें गोपाल और सिंहके शालवनको आये थे। सबकी मृत्युके बाद उनके लड़के सिंहने पितृपद प्राप्त किया था। गोपाल अपनेको उपेक्षित समझ वैशालीका परित्याग कर राजगृहोंमें आ विम्बिसारके राजाके प्रधान मंत्री होकर रहने लगे। थोड़े समयके बाद राजा विम्बिसारने गोपालको भ्रातृकन्या वासवीके साथ विवाह करा दिया।

गोपाल—इस नाम पर बहुतसे संस्कृत ग्रन्थकारोंके नाम पाये जाते हैं।

१ एक धर्मशास्त्रकार, श्रीदत्तने श्राद्धकल्पमें इनका मत उद्धृत किया है।

२ वृत्तदर्पणकार जानकीनन्दनके पितामह और रामानन्दके पिता। इन्होंने कणादसूत्रको टीका और काव्यकौमुदी रचना की हैं।

३ संस्कृत चैतन्य-चरितामृतरचयिता।

४ द्रव्यगुण नामक वैद्यक ग्रन्थप्रणेता। १६०६ ई०को यह ग्रन्थ रचा गया था। इन्होंने चक्रपाणि और नारायणकृत द्रव्यगुण उद्धृत किया है।

५ पत्नीपाख्यानरचयिता।

६ एक ज्योतिर्विद्। ये भास्वतीके टीकाकार।

७ विवेकामृत नामक वैदान्तिक ग्रन्थरचयिता। ८ शालवंशरत्नमुक्तावली नामक ग्रन्थकार। ९ शुल्वसूत्रके एक टीकाकार। १० विषमार्थदीपिका नामक सारस्वत व्याकरणका एक टीकाकार। ११ विवादभङ्गार्णवका एक संग्रहकार। १२ राजानक गोपाल नामसे मशहूर हैं। इन्होंने दीनक्रन्दनस्तोत्र, प्रद्युम्नशिखरपीठाष्टक, महाराज्ञीस्तव और शिवमालाकाव्य प्रणयन किये हैं। १३ ये "परमहंस परिव्राजकाचार्य गोपाल" नामसे ख्यात हैं। ये गणपति और नृसिंहके गुरु हैं। इन्होंने बहुतसे वैदिक ग्रन्थोंकी रचना की है जिनमेंसे थोड़े ये हैं,—आपस्तम्बसूत्रविवरण, आपस्तम्बशुल्वरहस्य, कात्यायनपरिशिष्टस्नानसूत्र्याध्यायभाष्य, गोपालकारिका, बौधायनीय चातुर्मास्यप्रयोगकारिका, दर्शपूर्णमासादिकारिका, पञ्चयागटीका, बौधायनीय पशु प्रयोगकारिका, प्रायश्चित्तकारिका, बौधायनीयश्रौतसूत्रविवरण, भरद्वाजसूत्रटीका, यज्ञप्रायश्चित्तविवरण, श्रौतकारिका और सोमकारिका।

गोपाल आचार्य—१ आदेशकौमुदीखण्डन नामक एक वैदान्तिक ग्रन्थ रचयिता। २ विष्णुपूजाक्रम नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपालक (सं० त्रि०) गां पालयति पालि-ण्वुल्, ६ तत्। १ गोरक्षक, ग्वाला। २ भूपाल, राजा। (पु०) ३ शिव, महादेव। गोपाल स्वार्थे कन्। ४ नन्दनन्दन। ५ चण्ड महासेन नरपतिका एक पुत्र।

गोपालकक्षा (सं० स्त्री०) गोपालानां कक्षेव। १ भारतवर्षके पश्चिम भागमें अवस्थित एक प्रदेश। (पु०) २ तद्देशवासी, गोपालकक्षाके रहनेवाले।

गोपालककटी (सं० स्त्री०) गोपालस्य गोरक्षकस्य प्रिया ककटी। क्षुद्र ककटी, ग्वाल ककड़ी। इसका संस्कृत पर्याय—वन्या, गोपककटिका, क्षुद्रेर्वारु, क्षुद्रफला और चिर्भिटा है। इसका गुण—शीतवीर्य, मधुर, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, मेह, दाह, और शोषनाशक है।

गोपालकवि—१ एक विख्यात हिन्दी कवि। इनका जन्म १६५४ ई०को हुआ था। ये राजा मित्रजित्सिंहके सभाकवि थे। २ बाघेलखण्डके रेवाजिलान्तर्गत बन्धो ग्रामके रहनेवाले एक कवि। ये जातिके कायस्थ एवं बन्धोके महाराज विश्वनाथसिंहके मन्त्री थे। १८३० ई०में इन्होंने गोपाल पचीसी नामक एक प्रसिद्ध हिन्दी ग्रन्थ रचा। ३ आनन्दलहरी नामक वैद्यक ग्रन्थकार।

गोपालकृष्ण—१ एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने अम्बाद्विशती, आर्य वर्णमालिका, उग्रनृसिंहस्तव, महेश्वराष्टक, कुमारकर्णामृत, दुर्गानवरत्न, देवीनवरत्न, पञ्चदशवर्णमालिका, वासुदेवद्वादशाक्षरी, वासुदेवनन्दिनी-

चम्पू, वीरराघवस्तव, श्वेताद्रिराघवाष्टक, सौभाग्य लहरी प्रभृति प्रणयन किये हैं ।

२ रसेन्द्रसारस ग्रह नामक वैद्यक ग्रन्थकार ।

गोपालकृष्णगोखले— ये दक्षिण प्रान्तस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मण । जातिमें कौंकनस्थ ब्राह्मणके अन्तर्गत थे । इनका जन्म १८६६ ई०में कोल्हापुरमें हुआ था मातापिताकी अवस्था शोचनीय होने पर भी इन्हें कालेज की शिक्षा मिली थी इन्होंने दक्षिण कालेज (Deccan College) और एलफिन ष्टन कालेज में (Elphinston College) पढ़ा था और वहींसे १८८४ ई०में बी०ए पास किया था। म क्रम पण्डितों के समाजमें भी ये एक प्रसिद्ध पण्डित गिने जाते थे। इस के बाद दक्षिण एजुकेशनल सोसाइटीसे बोस वर्षके लिये ७५ रुपये मासिक पर पढ़ानेके लिये प्रतिज्ञाबद्ध हुए देशहित, देशसेवा और परोपकारी काय करनेका इनको इतना अधिक प्रेम था कि कालेजकी छुट्टीके दिनोंमें देशसेवाका चंदा एकत्र करनेके लिये इन्हें गांव गांव घर घर घूमने और अनेक तरहके कष्ट सहने पड़ते थे। स्वर्गवासी रानाडे अपने पीछे अपने शिष्य मिष्टर गोख लेको ही देशसेवाके लिये अपना उत्तराधिकारी कर गये थे। कुछ दिन तक ये पूना सार्वजनिक सभाके पत्र (Quarterly Journal) क्वार्टली जर्नलके सम्पादक हुए। बाद इन्होंने चार वर्ष तक अंग्रेजी मरहठी भाषाके सुधारक नामक पत्रका सम्पादन किया और ये चार वर्ष तक (Bombay Provincial Council) बम्बई प्राविन्शियल कौंसिलके मन्त्रीके पद पर भी काय करते रहे १८८५ ई०को जब पूनामें (Indian National Congress) जातीय महासभाका अधिवेशन हुआ तब उसके मन्त्री पद पर ये ही निर्वाचित हुए थे। १८८७ ई०में अन्य प्रसिद्ध सार्वजनिक पुरुषोंके साथ ये भी भारतीय व्ययसम्बन्धी (Welby Commission) वेल्बी कमीशनके सम्मुख अपनी सम्मति देनेके लिये इङ्गलैंड भेजे गये। वहां इनके कीशलसे सबके सब दंग रह गये। सदस्योंने इन्हें नीचा दिखानेका बहुत कुछ प्रयत्न किया, परन्तु इनकी विद्वत्ता और अभिज्ञताके सामने उनकी एक न चली विलायतमें रहते समय उनके पास पूनेसे थोड़े पत्र गये थे जिनमें गवर्नमेंटकी प्लेगसम्बन्धी नीतिके विरुद्ध शिकायतें थी और गोरे सिपाहियोंके अत्याचारोंका वर्णन था। पत्र पढ़कर देशवासियोंके दुःखमें इनका हृदय पिघल गया और तुरंत ही उन पत्रोंका आशय इङ्गलैंडके समाचारपत्रोंमें छपा दिया। इस पर इङ्गलैंडमें बड़ी हलचल मची।

१८०० ई०में इन्होंने प्रान्तीय व्यवस्थापक कौंसिल के निर्वाचित सदस्यकी हैसियतसे बहुत कुछ उपयोगी काम किया। १८०२ ई०में ये वाइसरायकी व्यवस्थापक कौंसिलके सदस्य चुने गये। बजटके सम्बन्धमें इनको प्रथम वक्तृताने लोगों पर बड़ा भारी प्रभाव डाला। इनकी योग्यताको देख कर इनके विपक्ष मुक्तकण्ठसे इनकी प्रशंसा करते थे। यहां तक कि लार्ड कर्जन जैसे निरंकुश शासकने भी इनकी खूब तारीफ की थी और इसके उपलक्ष्यमें इन्हें सी, आई, ई की उपाधि भी मिली थी।

१८०५ ई०में गोखलेने भारतमें अपने ढंगकी निराली और अत्यन्त उपयोगी संस्था भारत सेवक समिति संगठित की क्योंकि इनका विश्वास था कि भारतको इस समय ऐसे सेवकोंकी आवश्यकता है जो मातृभूमिकी सेवामें अपना जीवन अर्पित कर दें। इस वर्ष इन्हें पुनः देशका भलाईके लिये विलायत जाना पड़ा। इस समय वहां लाला लाजपतराय भी उपस्थित थे। दोनोंने मिल कर असाधारण परिश्रम किया तथा भारतवासियोंके स्वत्वोंके लिये और लार्ड कर्जनके कुशासनके विरुद्ध खूब आन्दोलन मचाया। जब ये बम्बई और पूनेको लौटे तो वहां इनका यथेष्ट स्वागत हुआ। स्वागतकर्त्ताओंमें श्रीयुत लोकमान्य पण्डित बालगङ्गाधर तिलक भी सम्मिलित थे। १८१४ ई०में श्रीयुत गोखलेके ऊपर सच मुच बड़ा कार्यभार पड़ा। इनके अस्वीकार करने तथा स्वास्थ्य खराब होने पर भी इन्हें काशीमें कांग्रेसका सभापति होना ही पड़ा। इस समय प्रतिकूल अवस्था होने पर भी इन्होंने इस कठिन कार्यको बड़ी योग्यतासे निबाहा अपनी वक्तृताके आरम्भ होमें इन्होंने लार्ड कर्जनकी औरङ्गजेबसे तुलना की और फिर बंगालियोंके द्वारा विदेशी वस्तुओंके बहिष्कार किये जानेका समर्थन किया।

प्रवासी भारतवासी भी श्रीयुत पण्डित गोपालकृष्ण गोखलेके अत्यन्त कृतज्ञ रहेंगे क्योंकि इन्हींके उद्योगसे नेटालको प्रतिज्ञावद्ध कुलियोंका जाना बन्द हुआ। १९१२ ई०में ये अपने दुर्दशाग्रस्त भाइयों और बहिनोंकी दशा देखनेके लिये दक्षिण अफ्रिकाको गये। वहां इन्होंने राजमन्त्रियोंसे मिल कर वार्तालाप की। इस वार्तालापका फल लाभदायक निकला। इन्होंने सोचा था कि देश तब तक उन्नति नहीं कर सकता है जब तक अशुल्क अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा प्रारम्भ न हो। इस विषयका बिल इन्होंने कौंसिलमें पेश किया, परन्तु अस्वीकार किया गया। इससे ये किञ्चित् निरुत्साहित तथा हताश न हुए। इन्होंने स्वयं कौंसिलमें इस तरह कहा, "मैं हतोत्साह नहीं हुआ हूं और न मैं शिकायत ही करता हूं क्योंकि यह सब कोई जानते हैं कि १८७० ई०के अनिवार्य शिक्षा एक्ट पास होनेके पहले इङ्गलैण्डके लोगोंको कैसे कैसे उद्योग करने पड़े थे। इनके सिवा मुझे यह भी मालूम है तथा बहुत बार कह भी चुका हूं कि वर्तमान पीढ़ीके हम भारतवासियोंकी असफलता द्वारा ही स्वदेश-सेवा करनी बदी है।"

१९१२ ई०में ये (Public Service Commission) पबलिक सर्विस कमीशनके सदस्य नियुक्त हुए थे। १९१४ ई०में सम्राट् इन्हें सरकी उपाधि देते थे, परन्तु इन्होंने उसे सधन्यवाद अस्वीकार कर दिया। इनका विश्वास था कि 'सर'की उपाधि ग्रहण करनेसे देशसेवा मे बाधा पहुंच सकती है। भारतवासियोंके अभाग्यसे ऐसे महापुरुषका देहान्त १९१५ ई०की १९ फरवरीको हो गया। इनके शवके साथ तथा श्मशानगृहमें लगभग बीस हजार मनुष्योंकी उपस्थिति थी। इनकी मृत्यु पर लोकमान्य पण्डित बाल गङ्गाधर तिलकने श्मशानभूमिमें आंसू बहाये थे और बड़े लाट साहबने भी अपनी कौन्सिलकी बैठक एक दिनके लिये बन्द की थी।

गोपालकेशव (सं० पु०) कृष्णकी एक मूर्ति।

गोपालगञ्ज—१ वङ्गके फरिदपुर जिलान्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २३° ०' २२" उ० और देशा० ८९° ५२' पू०के मध्य मधुमती नदीके तीर अवस्थित है। धान, लवण, पाट, दधि और शीतलपट्टी (चटाई) के लिए यह नगर प्रसिद्ध है।

२ दिनाजपुरके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। यहां एक सुन्दर देवमन्दिर है।

३ विहार प्रान्तके सारन जिलेका उत्तर सब डिविजन। यह अक्षा० २३° १२' तथा २६° ३९' उ० और देशा० ८३° ५४' एवं ८४° ५५' पू०में पड़ता है। क्षेत्रफल ७८९ वर्ग मील और लोकसंख्या कोई ६३५०४७ है पूर्वको गण्डक नदी बहती है। इस उपविभागमें एक नगर और २१४८ ग्राम हैं।

४ विहार प्रान्तके सारन जिलेमें गोपालगञ्ज सब डिविजनका सदर। यह अक्षा० २६° २८' उ० और देशा० ८४° २७' पू०में अवस्थित है। जनसंख्या प्रायः १६१४ होगी। यहां साधारण पबलिक दफतर बने और सब जेलमें १८ कैदी रह सकते हैं।

गोपालगिरि—एक गिरि। संस्कृत ज्योतिर्ग्रन्थ यन्त्रराजके मतमें यह २७।२९ अक्षांश पर स्थित है।

गोपाल चक्रवर्त्ती—एक विख्यात टीकाकार। इनका बनाया हुआ भागवत और अध्यात्मरामायणकी टीका प्रचलित है।

गोपालचन्द्रसाहु—एक विख्यात हिन्दी कवि। ये प्रसिद्ध हिन्दीकवि हरिश्चन्द्रके पिता थे। इनका दूसरा नाम गिरिधर बनारसी था। इन्होंने दशावतार काव्य और भाषाभूषणका भारतीभूषण नामक हिन्दी टीका रचना की है।

गोपालताताचार्य—एक विख्यात नैयायिक। इन्होंने संस्कृत भाषामें अनेक ग्रन्थ रचे हैं—जिनमेंसे कुछके नाम ये हैं—अनुपलब्धिवाद, अनुमितिमानसत्वविचार, अन्तर्भाववाद, आत्मजातिसिद्धिवाद, ईश्वरवाद, ईश्वरसुखवाद, एकत्वसिद्धिवाद, कारणता, ज्ञानकारणवाद, द्वन्द्वलक्षणवाद, नव्यमतवाद, परामर्शवादार्थ, बाधबुद्धिवाद, राजपुरुषवाद, वार्टडिण्डिम वादफक्किका, विधिवाद, शिष्यशिक्षावाद, समाधिवाद और सादृश्यवाद।

गोपालतापनीय (स० क्ली०) गोपालस्तापनीयः सेव्यो यत्र, बहुव्री०। उपनिषद्‌विशेष। किसी किसी जगह गोपालतापन नामसे इसका उल्लेख मिलता है। शङ्कराचार्य, जीवगोस्वामी, नारायण, विश्वेश्वर प्रभृतिका रचा हुआ गोपालतापनीका भाष्य अथवा टीका पाई जाती है।

गोपालदारक (म ० पु०) जैनियोंके एक आचार्यका नाम।

गोपालदास—१ पारिजातहरण नामक सस्कृत नाटकके रच यिता एव छन्दोमञ्जरीकर्ता गङ्गादासके पिता। २ वैद्य सारस ग्रह नामक सस्कृत चिकित्साग्रन्थ प्रणेता। ३ कर्पूरकौतुक नामक स स्कृत ग्रन्थके रचयिता। इनके पिता का नाम वल्लभट्ट था। ४ भक्तिरत्नाकर नामक वैष्णव ग्रन्थकार। इन्होंने इस ग्रन्थको १५६० ई०में रचा था। ५ ब्रह्मभाख्यान नामक प्राकृत ग्रन्थकार। ६ एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थकार। ये सिद्धेश्वरके पुत्र और रामरामके पौत्र थे। इन्होंने १७७१ ई०को योगामृत नामक सस्कृत चिकित्सा ग्रन्थ और सुबोधिनी नामक उसकी टीका रची है। ७ एक स्मार्त पण्डित। इनका उपाधि सिद्धान्त वागीश भट्टाचार्य थी। इनका बनाया हुआ व्यवहारा लोक नामका स्मृतिसग्रह पाया जाता है। ८ व्रजके एक हिन्दी कवि। ये ई० सतरहवीं शताब्दीमें विद्यमान थे।

इनकी प्राय सभी कविताय खडी बोलीमें हैं, जिन मे एक नीचे दी जाती है—

"अरे महात्मा मारो कोनिया फन्दाय।
त्रिकुटी चढकर देखन लागी कितीक दूर मौर पिय कर गाँव॥
इस खोलियामें दस दरवजवा चार बजार भिन्न घर पड़ जाय।
कहत गोपालदास करहया चारु कमलको मैं बलि बलि जाय॥"

गोपालदास बरैया न्यायवाचस्पति—दिगम्बर जैन सम्प्रदायके एक प्रसिद्ध विद्वान और ग्रन्थकार। इनके पिता का नाम लक्ष्मणदास और माताका नाम लक्ष्मीमती था। वि० स० १९२३में आगरेमें इनका जन्म हुआ था। जैसवाल जाति और बरैया इनका गोत्र था। सातवर्ष की उम्रमें (स० १९३० में) इनके पिताका देहान्त हो गया। माताने बहुत कष्टसे इनको मैट्रिकुलेशन तक पढ़ाया। गणितमें ये बहुत ही निपुण थे। २० वर्ष की उम्रमें स्काइस्कूल छोड दिया। इनका १४ वर्षकी उम्रमें विवाह हो गया था। अजमेरमें इन्होंने प ण्डत मोहनलालके पास रहकर दो वर्ष तक गोम्मटसार सरीखे महान् ग्रन्थका अध्ययन किया।

इसके उपरान्त ये ग्वालियरके अन्तर्गत मुरेना नामक स्थानमें रहने लगे। यहां रहकर इन्होंने "जैनसिद्धान्त विद्यालय" नामका एक जैन विद्यविद्यालय स्थापन किया। इनकी विद्वत्तासे मुग्ध हो कर कलकत्तेके पण्डित समाजने इन्हें 'न्यायवाचस्पति' उपाधि दी थी। इसके सिवा अन्य सभाओंसे इनको 'स्याद्वादवारिधि' और 'वादिगजकेशरी' इत्यादि कई एक उपाधियां प्राप्त हुई थी। इनके स्वार्थत्यागके लिये समस्त जैन समाज अब भी उनका स्मरण करता रहता है। आपके द्वारा जैन समाजमें न्याय और धर्मसिद्धान्तके जाननेवाले पचासों विद्वान तयार हुए हैं। इस समय जो "जैनमित्र" नामक साप्ताहिकपत्र निकल रहा है, उसको सबसे प हले इन्होंने निकाला था। इन्होंने सुशीला उपन्यास, जैन सिद्धान्तदर्पण, जैनसिद्धान्तप्रवेशिका आदि कई एक हिंदी ग्रन्थ लिखे हैं। पिछली पुस्तकका जैनसमाजमें खूब प्रचार है।

इनका स्थापित गोपालजैनसिद्धान्तविद्यालय आजकल भी जीवित और सुचारू रूपसे कार्य कर रहा है। इसमें ये अवैतनिक अध्यापन करते थे।

१९१७ ई०में ग्वालियरके अन्तर्गत मोरेना नामक स्थानमें इनकी मृत्यु हुई।

गोपालदेव—१ राष्ट्रकूटवंशीय राजा भुवनपालके एक पुत्र का नाम। २ भोजप्रबन्धवर्णित कुण्डिन नगरका एक कवि। ३ एक प्रसिद्ध वैयाकरण। इनका दूसरा नाम मन्युदेव था, ये अभ्रदेवके पुत्र और कृष्णदेवके कनिष्ठ भ्राता थे। इन्होंने परिभाषेन्दुशेखर, वैयाकरणभूषण, लघु वैयाकरणसिद्धान्तभूषण और लघुशब्देन्दुशेखरकी टीका रचना की है।

गोपालदेशिकाचार्य—एक विख्यात स स्कृतवित् पण्डित। इन्होंने स स्कृत भाषामें नित्यचिन्तामणि और सारस्वादिनी नामक वेदान्त, रामनवमीनिर्णय और आह्निकपद्धति प्रणयन किये हैं।

गोपालधानी (स ० त्रि०) गोपालों धीयतेऽत्र धा आधारे ल्युट् ङीप्। गोष्ठ, गौ रहनेका स्थान।

गोपालनगर—बङ्गाल नदिया जिलेके अन्तर्गत एक वाणिज्य प्रधान नगर यह अक्षा० २३ ३ ५० उ० और देशा० ८८ ४८ ४०″ पू० पर अवस्थित है।

गोपालनन्द वाणीविलास—भगीरथ मिश्रके पुत्र। इन्होंने सारावली नामक कुमारसम्भवकी एक उत्कृष्ट टीका लिखी है।

गोपालनायक—भारतवर्षके एक प्रसिद्ध गायक। दाक्षिणात्यमें इनका जन्मस्थान था। सुलतान अला-उद्दीन-सिकन्दर सानीके राजत्वकालमें इन्होंने ख्याति प्राप्त की थी। ये गायक अमीर खुशरूके समसामयिक थे। ऐसा प्रवाद है कि जब गोपाल दिल्लीकी राजसभामें जा गान करते थे तो उस समय दिल्लीमें उनके समान श्रेष्ठ गायक दूसरा कोई नहीं था। सम्राट अपने गायक अमीर खुशरूको सिंहासनके नीचे छिपा कर गोपालको गानेकी आज्ञा देते थे। अमीर खुशरूने गुप्त स्थानसे गोपालके गीत और सुर तानका अभ्यास कर लिया था, एवं एक दिन गोपालके अनुकरणसे इन्होंने 'कौवाल' और 'तराण' गा कर सभाके सकल मनुष्योंको चमत्कृत कर दिया। गोपाल भी इस घटनाको देख कर आश्चर्यान्वित हुए थे।

इनकी कुछ कवितायें नीचे दी जाती हैं।

"कहा वे गुनी जो नाद भेद ब्रह्म ज्ञान कर थोक गावै।
सारग देशी कर मूर्छना गण उपजे जनि
सिद्ध गुरु साध पावै जो पवन सध हर पावै॥
उक्ति युक्ति भक्ति मुक्ति गुप्त होवै ध्यान लगावै।
तब गोपालनायक कूट सिद्ध नव निद्ध जाल जगत मन्त्र पावै॥
लग गुरु समझ धरै ज्यों कहै ग्रन्थन गुरुन प्रमाण।
जैं डि लग तेहो गुरु लग गुरु विवेक प ऊर लाव
सोई उलट धरै जो कहै ग्रन्थन गुरुण प्रमाण॥
मगन नगन जगन तगन भगन सगन यगन न जान।
छन्द बन्ध प्रबन्ध मह्लीन मन गोपालनायक करत विनान॥"

गोपाल न्यायपञ्चानन भट्टाचार्य—वङ्गदेशीय एक विख्यात स्मार्त्त पण्डित। ये वैदिक ब्राह्मण वंशके थे। इनके पाण्डित्यसे मुग्ध हो कर महाराज कृष्णचन्द्रने इन्हें अपना सभासद नियुक्त किया था। ये अंगरेज गवर्मेण्टके भी एक व्यवस्थापक थे, जिसके लिये इन्हें मासिक वेतन भी मिला करता था। एक समय ढाकाके राजा राजवल्लभने विधवा-विवाहके प्रचारके लिये नाना स्थानके पण्डितोंसे मत ले कर एक मनुष्यको राजा कृष्णचन्द्रके भी निकट भेजा। कृष्णचन्द्रके आदेशसे पहले दूसरे दूसरे पण्डितोंने विधवाविवाहको शास्त्रीयता प्रतिपादन की, किन्तु राजसभाके विख्यात पण्डित गोपाल न्यायपञ्चाननने विधवा-विवाहको अशास्त्रीयता और देशाचार-विरुद्धता बतलाया। इस पर नवद्वीपक कोई भी विद्वान् विधवाविवाहका आनुकूल्य मत दे न सका। इस तरह राजवल्लभकी विधवाविवाह प्रचलनार्थ समस्त चेष्टायें निष्फल हुईं। इन्होंने आचारनिर्णय, उद्वाहनिर्णय, कालनिर्णय तिथिनिर्णय, दायनिर्णय, प्रायश्चित्तनिर्णय, विचारनिर्णय, शुद्धिनिर्णय, श्राद्धाधिकारनिर्णय संक्रान्तिनिर्णय और सम्बन्ध निर्णय ग्रन्थ रचे हैं।

गोपालपण्डित—गृह्यभाष्य और प्रायश्चित्तकदम्ब नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपालपट्टनम्—मन्द्राजमें विशाखपत्तन जिलेके अन्तर्गत एक गण्डग्राम, जो सर्वसिद्धिसे ८ कोस दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है। ग्रामके पूर्व एक छोटे पहाड़के ऊपर पाण्डु कुल्लमिट्ट नामका एक पुरातन मन्दिर है। ऐसा प्रवाद है कि पाण्डवोंने इस मन्दिरकी स्थापन किया था। इसी पहाड़के निकट प्रस्तरकी पञ्चमूर्त्ति एवं प्रवेशपथ पर अस्पष्ट शिलालिपि भी है।

गोपालपुर—१ मन्द्राजके गञ्जाम जिलेका बड़ा बन्दर। यह अक्षा० १९° १९' उ० और देशा० ८४° ५३' पू०में भरतपुरसे ८ मील दक्षिणपूर्व पड़ता है। लोकसंख्या प्रायः २१५० है। यहां ब्रटिश-इण्डिया-ष्टीम-नेविगेशन कम्पनीके और बहुतसे दूसरे जहाज आ करके लगते हैं। अनाज, दाल चमड़ा, खाल, साल लकड़ी, सन, रस्सीकी चीजों और तेलहनकी खास-रफ्तनी है। सालमें १४ १५ लाखका माल जाता है। बन्दरकी रोशनी १० मील तक देख पड़ती है। एक लोहित आलोक भी है, उसका प्रकाश २ मील तक पहुंचता है। जहाज कोई १॥ मील दूर लङ्गर डालते हैं। परन्तु रेलवे खुल जानेसे काम कम पड़ गया है।

२ गोदावरी जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यहां पुरातन विष्णु मन्दिर पर अस्पष्ट शिलालिपि उत्कीर्ण है।

३ गोरखपुर जिलेके धुरियापार परगनाके अन्तर्गत एक ग्राम, जो गोरखपुरसे २३ मील दक्षिण है। ग्रामके पश्चिमांशमें बहुतसे स्मृति चिन्ह पड़े हैं जो प्राचीन नगरके अवस्थानका परिचय देते हैं।

४ त्रिहुत जिलेके अन्तर्गत एक परगना। यहांकी जमीन नीची रहनेके कारण वर्षाकालमें इसका अधिकांश भाग जलमग्न हो जाता है।

गोपालभट्ट—इस नामके कई एक ग्रन्थकार हैं।

१ गोपाल रत्नाकर नामक संस्कृत धर्मशास्त्रकार। २ गोपालपद्धति नामका संस्कृत ज्योतिष ग्रन्थके रचयिता। ३ चैतन्यभक्त एक वैष्णवग्रन्थकार। इनका बनाया हुआ भगवद्भक्तिविलास नामक संस्कृत ग्रन्थ है। जो वङ्गीय वैष्णव समाजमें विशेष समादृत है। ४ मिताचराके न्याय-सुधा नामकी टीकाकार। ५ मीमांसातत्त्वचन्द्रिका नामका संस्कृतग्रन्थकार। ६ संस्कृत भाषामें मानन्दगोविन्द नामक नाटककार। ७ सुमगार्चनचन्द्रिका नामका संस्कृत ग्रन्थकार। ८ महिम्नस्तवका स्तुतिचन्द्रिका नामक उत्कृष्ट टीकाकार। ९ गीतगोविन्दका अर्थरत्नावली नामका टीकाकार। इनके पिताका नाम दुर्गादास और पौतामहका नाम मान था। १६७९ ई०को इन्होंने उक्त टीका प्रणयन की थी। १० एक दार्शनिक जो सोड़नाथ भट्टके पुत्र और कृष्णभट्टके पौत्र थे। इन्होंने मीमांसाविधि भूषण नामक संस्कृत ग्रन्थकी रचना की है।

११ एक विख्यात तान्त्रिक। ये आगमवागीशके पौत्र और हरिनाथके पुत्र थे। ये तन्त्रदीपिका नामक एक तान्त्रिक ग्रन्थ लिख गये हैं।

१२ एक द्राविड़ीय पण्डित, हरिवंश द्राविड़के पुत्र। आपने कई एक संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं, जिनमेंसे प्रसिद्ध ये हैं,—कालकौमुदी नामक स्मृतिग्रन्थ, कृष्णकर्णामृतकी कृष्णवल्लभा, शृङ्गारतिलककी रसतरङ्गिणी एवं रसमञ्जरीकी रसिकरञ्जिनी नाम्नी टीका। १३ पद्यावली धृत एक प्राचीन कवि।

गोपालगुटिका (सं० स्त्री०) विशिष्टा, कवड़ी।

गोपालभट्टगुरु—गणेशमहस्त्र नाम व्याख्याके रचयिता।

गोपालभाँड़—नवद्वीपाधिपति महाराज कृष्णचन्द्ररायके एक विख्यात सभासद्। रायगुणाकर भारतचन्द्रने अन्नदा-मङ्गलके प्रारम्भमें कृष्णचन्द्रके सभावर्णन प्रसङ्गमें राज परिवार, अमात्य, पण्डित, भृत्य, प्रभृति सभीका उल्लेख किया है। किन्तु गोपालभाँड़का नाम उसमें लिखा नहीं है, इससे कोई कोई अनुमान करता है कि गोपालभाँड़ भारतचन्द्रके समकालीन नहीं थे। हो सकते हैं अथवा जिस समय अन्नदामङ्गल रचा गया था उस समय गोपाल कृष्णचन्द्रकी सभामें स्थान न पाया था। किम्वा कृष्णचन्द्र भारतचन्द्रकी अपेक्षा गोपाल भाँड़को अधिक चाहते थे जिस कारण ईर्षावशत रायगुणाकरने गोपाल भाँड़का नामोल्लेख न किया हो। जो कुछ हो, गोपाल भाँड़ किस तरह भारतचन्द्रको मानते और भक्ति श्रद्धा करते थे उसका एक सामान्य उपाख्यान इस तरह प्रचलित है।

गोपाल जानते थे कि भारतचन्द्रके ऊपर पण्डित वाणेश्वर विद्यालङ्कार और जगन्नाथ तर्कपञ्चानन प्रभृतिकी ईर्षा बनी है। एकदिन भारतचन्द्र अन्नदामङ्गलका ग्रन्थ वाणेश्वरको पढ़ने दिया। वाणेश्वरको अग्रहाभावसे उक्त ग्रन्थ लेते और विपर्यस्त भावसे इधर उधर ग्रन्थको उलटाते देख गोपाल उनके निकट जा यारबद्ध हो उच्चस्वरसे कहने लगे, "महाशय, यह क्या कर रहे हैं? यह ग्रन्थ न्याय शास्त्र नहीं वरन रसपूर्ण काव्य है, सावधानसे पकड़िये नहीं तो समस्त रस गिर जायगा।" गोपालके ऐसे रसपूर्ण वचनसे विद्यालङ्कार कुण्ठित हो आदरपूर्वक ग्रन्थ देखने लगे।

यद्यपि क्षितीशवंशावलीके मतानुसार गोपालभाँड़ जातिके नापित थे और शान्तिपुरमें इनका वासस्थान था। किन्तु गुप्तिपाड़ा और शान्तिपुरके बहुत मनुष्योंसे ऐसा सुना जाता है कि गोपाल कायस्थ जातिके थे और गुप्तिपाड़ामें इन्होंने जन्म ग्रहण किया था।

गोपालमिश्र—गोपालपूजापद्धतिके रचयिता।

गोपालयज्वन्—आश्व भाष्य देखो।

गोपालयोगी—कठवल्लीभाष्यविवरणका प्रणेता।

गोपालराय—हिन्दीके एक प्रसिद्ध कवि। इन्होंने बहुतसी अच्छी अच्छी कवितायें रची हैं।

गोपाललाल—हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि। ये सम्वत १७६५ ई०में विद्यमान थे। इन्होंने शान्तरसकी बहुतसी कवितायें रची हैं जिनमेंसे कुछ इस तरह हैं—

"[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

इनके सङ्ग सब गोप वधू हैं उनके सङ्ग सब ग्वाल ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है यह दिन दीनदयाल।
मन मानें का फगुवा लै हौं भेंटो कृष्ण गोपाल ॥" बालगोपाल टेको।

गोपालबन्दीजन—बुन्देलखण्डके अन्तर्गत चरखाड़ी-निवासी एक कवि। ये १८४० ई०में चरखाड़ीके राजा रतनसिंहकी राजसभामें विद्यमान थे।

गोपालव्यास—नारायणभट्टके शिष्य और उमेशभट्टके पुत्र। इन्होंने संस्कृतभाषामें नवरात्रनिर्णय प्रणयन किया है।

गोपालशरण—ये राजा गोपालशरण नामसे मशहूर हैं। इन्होंने तुलसीकृत 'शतसई' ग्रन्थके प्रबन्धघटना नामक एक सुंदर हिन्दी टीका रचना की है।

गोपालशर्मन्—१ एक विख्यात कवि। इन्होंने सूर्यशतक रचा है। २ एक विख्यात राढ़ीय ब्राह्मण कुलाचार्य। इन्होंने भुवानन्दमतव्याख्या नामका कुलग्रन्थ प्रणयन किया है।

गोपालसिंह—एक ब्रजवासी हिन्दीग्रंथकार। इनका बनाया हुआ तुलसीशब्दार्थप्रकाश नामक ग्रंथ ब्रजके वैष्णवमण्डलीमें विशेष आदरणीय है।

गोपालसिद्धांत—अशौचमाला नामक धर्मशास्त्रकार।

गोपालस्वामी बेट्ट—महिसुर राज्यके महिसुर जिलेमें गुण्डलपेट तालुकका पहाड़। यह अक्षा० ११° ४३' उ० और देशा० ७६° ३५' पू०में ४७७० फुट ऊंचा पड़ता है। आधारका घेर १६ मील और चढ़ाई ३ मील है। बादल और कुहरेसे आच्छादित रहनेके कारण हिमवद्‌गोपाल स्वामी कहते हैं। पौराणिक नाम कमलाद्रि वा दक्षिण गोवर्धनगिरि है। इसमें झरने बहुत हैं। प्रायः ई० ११वीं शताब्दीकी नवाटनायकोंने उसकी किलेबन्दी की और १५वीं शताब्दीकी समाप्तिसे १७वीं शताब्दीके मध्यभाग तक वह कोटे या बेट्टकोटे राजाओंका दुर्ग रहा। किलेमें गोपाल स्वामीका मन्दिर है। यात्री विष्णु भगवान्‌के दर्शन करने जाते हैं।

गोपालि (सं० पु०) गां वृषभं पालयति पालि-इन्। १ शिव, महादेव। २ प्रवरविशेष।

गोपालिका (सं० स्त्री०) गोपालकस्य पत्नी गोपालक-टाप् अत-इत्वं। १ गोपाङ्गना, ग्वालिन, अहीरिन। २ शारिवा, अनन्तमूल। ३ कीटविशेष।

गोपाली (सं० स्त्री०) गोपालस्तदाकारोऽस्त्यस्य। १ गोपालग्रच्। कर्कटी। २ गोरक्षी नामक मत्स्यक्षुप। गोपालस्य पत्नी ङीप्। ३ गोपपत्नी ग्वालाकी स्त्री। गां पालयति गो-पालि-अण् ङीप्। ४ जो स्त्री गौ पालन करती है, गौ पालनेवाली। ५ कार्तिकेयकी मातृका विशेष।

गोपावत् (सं० त्रि०) गोपा रक्षणमस्त्यस्य गोपा-मतुप् मस्य वः। रक्षणयुक्त, गुप्त, रक्षित।

गोपाष्टमी (सं० स्त्री०) गोप्रिया अष्टमी। कार्त्तिक शुक्लाष्टमी, इसी दिन कृष्णने गोचारण आरम्भ किया था। इस दिन संयत हो कर गोपूजा, गोग्रासदान गोप्रदक्षिण और गवानुगमन करनेसे अभीष्ट सिद्ध होता है।
(कृत्यतत्त्व)

गोपिका (सं० स्त्री) गोपी-कन् टाप् पूर्व ह्रस्वश्च। १ जो स्त्री गोपालन करती है, गोपालिका। गोपी स्वार्थे कन्-टाप् पूर्व ह्रस्वश्च। २ गोपपत्नी, गोपकी स्त्री। गोपायति रक्षति वा गुप ण्वुल्-टाप् अत इत्वं। ३ रक्षित्री, छिपानेवाली। ४ कृष्णशारिवा।

गोपिचेट्टिपालैयम्—मन्द्राज प्रांतके कोयम्बतोर जिलेमें सत्यमङ्गलं तालुकका सदर। यह अक्षा० ११° २१' उ० और देशा० ७७° २६' पू०में एरोड रेलवे ष्टेशनसे २५ मील उत्तरपश्चिम पड़ता है। आबादी कोई १०२२७ है। यहां धनी लोग रहते हैं। कोरण्डम् धातु खूब पाया जाता है।

गोपित (सं० त्रि०) गोपा गोपनं जातास्य गोपा इतच्। छिपाहुआ, गुप्त।

गोपित्त (सं० क्ली०) गोः पित्तमिव। गोरोचना, गोरोचन नामक सुगन्ध द्रव्य।

गोपिन् (सं० त्रि०) ग पायति गुप-णिनि। रक्षक, रक्षा करनेवाला।

गोपिनी (सं० स्त्री०) गोपिन् ङीप्। १ गोपी। २ श्यामलता। ३ नायिकाविशेष। जो नायिका वीराचारनिरता होकर पश्चाचारीके निकट आत्मगोपन कर सकती हो उसे गोपिनी कहते हैं। (त्रि०) ४ छिपानेवाली।

गोपिया (हिं० स्त्री०) गोफना, ढेलवॉस।

गोपिल (सं० त्रि०) गोपयति रक्षति गुप-इलच् निपातने साधु। गोप्ता, छिपानेवाला, रक्षा करनेवाला।

गोपिलपुरम्—मन्द्राजमें वृद्धाचल तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यह वृद्धाचलसे ५ मील पूर्व दक्षिणमें अवस्थित है। यहांके पुरातन शिवमन्दिरमें अनेक शिलालिपि उत्कीर्ण हैं।

गोपिष्ठ (स० त्रि०) अतिशयेन गोपी इष्ठन् टिलोप। गोप्तृतम।

गोपी (स० स्त्री०) गोपस्य स्त्री गोप-ङोष्। गोपपत्नी, ग्वालिनी। पूर्व समयमें ये समस्त कृष्णकी सेवा करती थीं। वृन्दावनकी गोपी कृष्णके प्रेममें मतवाली हो कर अपने पतिपुत्रको छोड़ कृष्णके साथ रहा करती थीं। साधारण मनुष्य उन्हें मानुषी समझते एवं कृष्णके साथ रहनेके कारण उनके चरित्रमें कलङ्क ठहराते थे, किन्तु प्राचीन हिन्दुशास्त्रके प्रति लक्ष्य करनेसे जाना जाता है कि गोपीगण सामान्य मानवी नहीं, पार्थिव सुखके लिए वे कृष्णकी वन्दना नहीं करती और वे कृष्णको नन्दगोपके नन्दन कह कर भी नहीं समझती, वरन् उनको विराट, अव्यय सच्चिदानन्द और जगत्पति मानती थीं, इस लिए सांसारिक सुख परित्याग कर मान, लज्जा और लोभभयको जलाञ्जली दे कर उन्होंने कृष्णमें आत्म समर्पण की थी।

पद्मपुराणके पातालखण्डमें लिखा है कि गोपीगण मानवी थीं। श्रुति, देवकन्या और मुनिकन्यागण ही गोपीरूपसे वृन्दावनमें वास करती रहीं। इनमेंसे राधा, चन्द्रावली विशाखा और ललिता प्रभृति कई गोपियां प्रधान थीं।

गोपायति रक्षति गुप् आय गौरादित्वात् ङीष्। २ शारिवा, अनन्तमूल। ३ रक्षिका रक्षा करनेवाली।

गोपीक—सूक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि।

गोपीकान्त—धीलोटदत्तके पुत्र, न्यायघटोप नामक संस्कृत ग्रन्थके रचयिता।

गोपीकामोदी (स० स्त्री०) आमोद और केदारी योगसे उत्पन्न रागिणीविशेष।

गोपीगीता (स० स्त्री०) भागवतके रास पञ्चाध्यायमें गोपीगण कृत कृष्णकी स्तुति।

गोपीचन्द—ये हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने कई एक कविताएं रची हैं जिनमें एक नीचे देते हैं—

"दास कन्य मनमें मुसकाति आन विक्रम सोच दोउ साथ एक विनान।
गोपीचन्दको गोपी व राजा राम यावत सार मोता गई आगे बहुर सुजान"

गोपीचन्दन (पु०) एक प्रकारकी पीली मट्टी। वैष्णव लोग इस मट्टीका तिलक लगाते और समस्त अङ्ग पर हरिनामका छाप देते हैं।

द्वारकाका गोपीचन्दन ही सर्व श्रेष्ठ है। उनलोगोंका विश्वास है कि जब कृष्ण लीलासम्वरण कर स्वर्ग चले गये तब विरहकातरा गोपीगणने एक पोखरमें डूब कर अपना प्राण त्याग किया था। उसी पोखर (तालाब) की मट्टी गोपीचन्दनसे प्रसिद्ध है।

गोपीचन्द्र—१ रङ्गपुरके एक राजाका नाम। इनका गान अब तक भी रङ्गपुर अञ्चलमें प्रचलित है। कोचविहार और कामरूप देखो।

२ सूक्तिकर्णामृतधृत एक प्राचीन कवि।

गोपीजनवल्लभ (स० पु०) गोप्यश्च जनास्तस्य वल्लभ। श्रीकृष्ण।

गोपीत (स० पु० स्त्री०) गो गौरवनेव पीत। एक प्रकारका खञ्जनपक्षी जिसका देखना अशुभ समझा जाता है।

गोपीथ (स० क्ली०) गा पशून् पाति गो पा थक् निपातनेसाधु। १ तीर्थस्थान। २ सोमपान। ३ रक्षण, रक्षा। ४ राजा। ५ गौके जल पीनेका सरोवर।

गोपीय (स० क्ली०) गो पृथिव्याः पीथ पालनं गोपीथ-मिव गोपीय स्वार्थे यत्। पृथ्वीपालन।

गोपीनाथ (स० पु०) गोपियोंके स्वामी, श्रीकृष्ण।

गोपीनाथ—१ अग्रद्वीपके प्रसिद्ध विष्णुविग्रह, चैतन्यदेव कर्तृक अभिषिक्त और गोविन्दघोष ठाकुर कर्तृक प्रतिष्ठित। अग्रद्वीप और गोविन्दघोषठाकुर देखो। २ कर्माधान प्रयोग नामक संस्कृत ग्रन्थकार। ३ अनुमानवाद नामक न्यायग्रन्थकार। ४ एक विख्यात स्मार्त पण्डित। इन्होंने आह्निकचन्द्रिका, तुलापुरुषदानादिपद्धति प्रेतश्राद्धिका मासिकश्राद्धपद्धति संस्कारप्रमाला, सापिण्ड्यविषय प्रभृति संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। ५ त्रिविक्रमगणकप्रोक्त नामक ज्योतिर्ग्रन्थ और दुर्गासप्तशतीका टीकाकार। ६ न्यायविलासके रचयिता। ७ पदार्थव्याख्याकरण प्रणेता। ८ नानरत्नके पुत्र। इन्होंने शब्दालोकरहस्यकी रचना की है। ९ जातिविवेक रचयिता। ये ब्रह्मानन्दके पुत्र

और मामराजके पौत्र थे। १० पशुपत्याचार्यसिंहके पुत्र और कातन्त्रपरिशिष्टप्रबोध रचयिता।

गोपीनाथ कविराज—एक प्रसिद्ध टीकाकार। इन्होंने कविकान्ता नामक रघुवंशकी टीका, सुमनोहरा नामका काव्यप्रकाशकी टीका, हर्षहृदया नामक नैषधकी टीका एवं दशकुमारकथा और मसारणी नामक दो संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किए थे।

गोपीनाथदीक्षित—श्रावणकर्म्म नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोपीनाथदेव—उड़ीसाके एक राजाका नाम। आपने १७१८ से १७२८ ई० तक राज्य किया था।

गोपीनाथपन्थ—एक विचक्षण महाराष्ट्र ब्राह्मण। "१६५८ ई०को जिस समय विजापुरके मुसलमान राजदरबारमें अमात्योंके मध्य गोलयोग चल रहा था, उस समय अफजल खाँ नामक एक सम्भ्रान्त वीरपुरुष शिवाजी पर शासन करनेके लिये नियुक्त हुवे। ये ५००० अश्वारोही और ७००० उत्कृष्ट पदातिक सैन्य साथ ले रवाना हुए। उस समय शिवाजी प्रतापगढ़में थे, इन्होंने कौशलक्रमसे अफजल खाँको लिख भेजा कि विजापुरके विरुद्ध अस्त्र धारण करना उनके लिये अभिप्रेत नहीं है। यदि अफजल खाँ मनोयोग करें तो वे सुलतानके आश्रय ग्रहण कर सकते हैं। अफजल खाँने देखा कि वन जंगल होकर शिवाजी पर आक्रमण करना सहज नहीं है। इस सुयोगमें शिवाजीको यदि हस्तगत कर सकें तो उनके गौरवकी सीमा न रहेगी। इस लिये इन्होंने गोपीनाथको अनुचरके साथ प्रतापगढ़को भेजा। गढ़के निकटवर्त्ती पार नामक ग्राममें गोपीनाथके पहुंचने पर शिवाजीने स्वयं आ उनका आदर सत्कार किया। गोपीनाथने शिवाजीको कहा "अफजल खाँ भी आपके साथ मित्रता स्थापन करनेके लिये अभिलाषी है, वे सुलतानके निकट आपके हेतु क्षमा प्रार्थना कर आपको जागीरदार बना देंगे।" शिवाजी इस पर सम्मत हो गये और गोपीनाथका वासस्थान कुछ दूरमें निर्दिष्ट करा दिया। ठीक दो प्रहर रात्रिको शिवाजी अकेले गोपीनाथके घरमें प्रवेश कर उनसे भेंट की। गोपीनाथ ब्राह्मण थे, सुतरां शिवाजीने साष्टाङ्गसे प्रणिपात पूर्वक उन्हें यथेष्ट भक्ति दिखलाई। गोपीनाथ ऐसी गभीर रात्रिमे शिवाजीको आपने गगनकक्षमें देख चकित हो उठे, एवं अति समादरसे उनके आनेका कारण पूछा। शिवाजी धीरे धीरे बहुत गम्भीरतासे बोले—"मैं भवानीके आदेशानुसार गोब्राह्मणकी रक्षाके लिये नियुक्त हुआ हूं, म्लेच्छके कराल कवलसे गोब्राह्मणका परित्राण करूंगा, यही मेरा एक मात्र अभिप्राय है। आप स्वयं ब्राह्मण हैं! ब्राह्मण होकर क्या स्वजाति और स्वदेशकी रक्षा कर नहीं सकते! यदि आपने अर्थके लिये मुसलमानका दासत्व स्वीकार किया है तो मैं आपका यह अभाव दूर करनेमें प्रतिश्रुत हूं। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि आप अनुकूल होवें तो हिवरा नामक ग्राम सदाके लिये आपको प्रदान कर दूं।" ऐसा सुन कर गोपीनाथकी आंखोंमें जल आ गया, और आलिङ्गनकर शिवाजीको कहा—"मैं भवानीका आदेश शिरोधार्य करता हूं, अवश्यही मैं आपकी सहायता करूंगा।"

ऐसा कह कर इन्होंने अफजल खाँ की दुरभिसन्धि और मनका भाव प्रकाश किया। बहुतही थोड़े समयमें परामर्श स्थिर कर शिवाजी घर लौट आये। दूसरे दिन इन्होंने गोपीनाथके साथ कृष्णाजी भास्कर नामक एक ब्राह्मणको अफजल खाँके निकट भेजा। गोपीनाथ और कृष्णाजीने शिवाजीसे भेंटके लिये अफजलखाँके निकट अनेक अनुनय विनय किया। गोपीनाथका वचन मान वे शिवाजीके साथ मुलाकातके लिये प्रस्तुत हुए। इधर शिवाजीने अफजलखाँकी अभ्यर्थनाके लिये प्रतापगढ़के नीचे एक स्थानको सुसज्जित किया और वनजंगल कटवा कर उनके आनेका रास्ता परिष्कार करवा दिया। पथके चारों ओर रीतिमत सेना रखी गई। अफजल अल्पसंख्यक सैन्य और गोपीनाथको साथ ले शिवाजीसे मुलाकातके लिये आये। जिस स्थान पर दोनों साक्षात् होते वहां अपने अपने पक्षका सिर्फ एक एक व्यक्ति सङ्ग ले उपस्थित हुवे। शिवाजीकी कमरमें बाघनख नामक दारुण अस्त्र रक्षित था। दोनोंमें ज्योंही परस्पर आलिङ्गन होनेको था त्योंही शिवाजीने कटिस्थ 'बाघनख' से अफजलका उदर विदीर्ण कर हृत्पिण्ड छिन्न कर डाला। थोड़े ही समयमें अफ़फलखाँ निहत हो गए। शिवाजीने भी अपना अङ्गिकार पालन

किया। गोपीनाथने अधिक अर्थ और महाराष्ट्र सैन्यके मध्य उच्च पद लाभ किया। विवरण देखो।

गोपीनाथपुर—उड़ीसाके कटक जिलेके अन्तर्गत गण्डग्राम यह कटक नगरसे प्राय ५ कोस उत्तर पूर्वमें अवस्थित है। यहां सुवृहत् गोपीनाथजीके मन्दिरका ध्वंसावशेष पड़ा है। गोपीनाथका मूल और गर्भगृहका कुछ भी चिन्ह नहीं है। भग्न नाटमन्दिरके मध्यस्थलमें एक नूतन गृह निर्मित हुआ है जिसमें दधिवामन मूर्ति विराजित है। भग्नावशेष नाटमन्दिरके चारों ओर उत्कृष्ट शिल्प नैपुण्ययुक्त स्तूपाकार प्रस्तर पड़ा हुआ है। नाटमन्दिर जानेकी सीढ़ीकी वामपार्श्वको ओर प्राचीरगात्रमें प्राचीन उत्कलाक्षरसे उत्कीर्ण शिलाफलकमें प्रशस्ति वर्णित है। इसके पढ़नेसे जाना जाता है कि उड़ीसेमें कपिलेन्द्र नामक एक सूर्यवंशीय राजा थे। इन्होंने बाहुबलसे दिल्लीके राजाओंको पराजय एवं गौड़ और मालव राज्य को जय किया था। इनके लक्ष्मण नामक एक पुरोहित और मन्त्री रहता रहा। लक्ष्मणके नारायण नामक एक पुत्र था और उनके अनुजका नाम गोपीनाथ था। इन्होंने अपने नाम पर गोपीनाथका उक्त देवमन्दिर निर्माण कर जगन्नाथ बलराम और सुभद्राकी मूर्ति स्थापन की थी।

इस ग्राममें ब्राह्मणशासन है। यहांके एक घर ब्राह्मण अपनेको गोपीनाथ महापात्रके वंशधरके जैसे परिचय देते हैं। इन्हींके मुखसे ऐसा सुना गया है कि गोपीनाथने सिर्फ दो घण्टेके लिए कपिलेन्द्रका मन्त्रित्व पाया था, इन दो घण्टोंके मध्य उक्त गोपीनाथका मन्दिर निर्माण किया गया था। किन्तु दो घंटेमें इस तरहका मन्दिर निर्मित होना नितान्त असम्भव है।

गोपीनाथ बन्दीजन—बनारसके रहनेवाले एक बन्दी। इनके पिताका नाम गोकुलनाथ था। बनारसके राजा उदितनारायणके आदेशसे इन्होंने तथा इनके शिष्य मनिदेवने सम्पूर्ण महाभारतका अनुवाद हिन्दीमें किया था। ये १८२० ई०में विद्यमान थे।

गोपीनाथभट्ट—१ हिरण्यकेशिसूत्रके 'ज्योत्स्ना' नामकटीकाकार। २ निर्णयरत्नाकर नामक धर्मशास्त्रकार।

गोपीनाथमिश्र—१ 'क्रियाकौमुदी' नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता। २ तत्त्वचिन्तामणिसार नामक न्याय ग्रन्थकार।

गोपीनाथमौलिक—एक विख्यात नैयायिक और बार्विरके राजा जयसिंहके सभापति। इन्होंने राजा जयसिंहके अनुरोधसे सिद्धान्ततत्त्वसार नामक पदार्थविवेककी टीका और न्यायकुसुमाञ्जलिविकाश प्रणयन किये हैं।

गोपीनाथ शर्मन्—१ शब्दमाला नामका संस्कृत अभिधानकार।

गोपीनाथशैव—माधवशैवके पुत्र और स्नानसूत्र दीपिकाके प्रणेता।

गोपीनारायण—एक विख्यात स्मार्त्त। इन्होंने राजा सूर्यसेनके आदेशसे निर्णयामृत नामक धर्मशास्त्र रचे हैं।

गोपीन्द्रतिप्पभूपाल—वामनके काव्यालङ्कारसूत्रकी काव्यालङ्कारकामधेनु नामक टीकाकार।

गोपीरमण—आनन्दलहरीके एक टीकाकार।

गोपीयन्त्र-एक तार वाद्ययन्त्रविशेष एक प्रकारका बाजा, जिसमें केवल एक ही तार लगा रहता है। आध हाथका गाँठदार एक पतले बांसके डण्डेका ऊपरके ग्रन्थियुक्त भागका छह या सात उङ्गली छोड़ कर शेष अंशको बराबर चार भागोंमें विभक्त करते हैं। उन चार भागोंके परस्पर विपरीत दो भागोंको फेंक कर शेष दो भागोंके सिरे पर कद्दूका गोल खोखला अंश बांध देते हैं और उसमें कील एक तार लगा दिया जाता है। यह तार बाँसके दो खण्डोंके मध्य रहना चाहिये और तारका एक सिरा अखण्डित बांसके डंडेमें कीलके साथ और दूसरा सिरा कद्दूके खोखलेमें आबद्ध रहता है। इसीको गोपीयन्त्र कहते हैं। कुछ जातिके लोग इसे बजाकर दरवाजे दरवाजे भीख मांगते हैं।

गोपीलाल—हिन्दीके एक जैन कवि। इन्होंने नागकुमार चरित्र, जम्बूद्वीपपूजा और तीसचौबीसी पूजा ये तीन पद्यग्रन्थ बनाये हैं।

गोपुच्छ (स० पु०) गो पुच्छ इव पुच्छो यस्य, बहुव्री०। एक तरहका बन्दर जिसको पूछ गायकी सी होती है। (क्ली०) गो पुच्छ, ६ तत्। २ गौकी पूछ, गायकी दुम। (पु०) ३ एक तरहका गावदुमा हार। ४ प्राचीन कालका एक बाजा।

गोपुर (स० पु०) क्षुद्रमुस्ता छोटा मोथा।

गोपुटा (स० स्त्री०) गोरिव पुटमस्या बहुव्री०। बड़ी इलायची।

गोपुटीक (सं० क्लो०) गोः शिवदृषस्य पुटिकं पुटयुक्तं मस्तकं। शिवदृषका मस्तक, महादेवजीके बैलका मस्तक।

गोपुत्र (सं० पु०) गोः पुत्रं, ६-तत्। १ गोवत्स गायका छोटा बच्चा। २ सूर्यके पुत्र, कर्ण।

गोपुर (सं० क्लो०) गोः स्वर्गवत् रम्यं पुरं यस्मात् यद्वा गोपायति रक्षति नगरं गुप् बाहुलकात उरच्। १ पुरद्वार। शहरका फाटक। २ किलेका फाटक। ३ फाटक, दरवाजा। गवा जलेन विपत्तिं पूरयति आत्मानं पृ-क। ४ कैवर्त्ती-मुस्तक। (पु०) ५ वैद्यशास्त्रके प्रणेता एक प्राचीन ऋषि ६ दाक्षिणात्यमें मन्दिरोंके सम्मुख निर्मित समुच्च प्रवेश-गृहविशेष। इस गोपुरका तल बहुत ऊंचा है, इसके शिल्पनैपुण्य और चित्रकार्यके निरीक्षण करनेसे विस्मित होना पड़ता है।* ७ स्वर्ग, गोलोक।

गोपुरक (सं० क्लो०) गोपुर स्वार्थे कन्। १ गोपुर। (पु०) गोः पृथिव्याः पूरकः, ६-तत्। २ कुन्दुरकवृक्ष। गवा पूरकः, ६-तत्। ३ जो गोपालन करता है।

गोपुरी—गोवा देखा।

गोपुरीष (सं० क्लो०) गोः पुरीषं ६-तत्। गोमय, गोबर।

गोपुष्ट (सं० क्ली०) परिपिल्लतृण, एक तरहकी घास।

गोपेन्द्र (सं० पु०) गोषुषु इन्द्रः श्रेष्ठः, ६-तत्। १ श्रीकृष्ण। गोपानामिन्द्र ईश्वरः, ६ तत्। २ गोपाधिपति नन्द, ये वृन्दावनके गोपोंके अधीश्वर थे।

गोपेश (सं० पु०) गोपानामीशः, ६-तत्। १ नन्दगोप। २ शाक्य मुनि।

गोपेश्वर—१ आत्मवाद और वादकथा नामक वैदान्तिक ग्रन्थकार, ये कल्याणरायके पुत्र थे। २ कुमाऊं जिलामें नागपुर परगनाके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम। यहां एक अति प्राचीन सुन्दर शिवालय है, जिसके अन्दर १५ फोट ऊंचा एक लोहेका त्रिशूल गड़ा हुवा है और इसके एक ताम्रपात्रमें उत्कीर्ण प्रशस्ति संलग्न एवं और कई एक शिलालिपि देखो जाती है।

इस खोदित लिपिसे जाना जाता है कि राजा अनेक-मल्लने केदारभूमिको जय कर ११३८ शकको एक राजकीय मन्दिर निर्माण किया था।

गोपोक—सूक्तिकर्णामृतधृत एक कवि।

गोप्तव्य (सं० त्रि०) गुप्त कर्मणि तव्य। १ अप्रकाश्य, जो प्रकाश करने योग्य नहीं है। २ रक्षणीय।

गोप्तृ (सं० त्रि०) गुप-तृच्। १ रक्षक। २ संवरक, आच्छादनकारी। ३ विष्णु। (स्त्री०) ४ गङ्गा।

गोप्य (सं० त्रि०) गुप्-ण्यत्। १ रक्षणीय। २ गोपनीय, अप्रकाश्य, छिपाने योग्य। ३ दासीपुत्र।

गोप्यक (सं० पु०) गोप्य एव स्वार्थे कन्। दासीपुत्र।

गोप्यादित्य (सं० पु०) गोपीभिः स्थापित आदित्यः मध्य-पदलो०। प्रभासतीर्थमें गोपियोंसे स्थापित एक सूर्य मूर्त्ति। स्कन्दपुराणके प्रभास खण्डमें लिखा है कि प्रभास तीर्थकी भूतेशमूर्त्तिसे थोड़ी दूर वायुकोण पर गोप्या-दित्य मूर्त्ति अवस्थित है। नारद प्रभृति प्रभासवासी मुनिगणके द्वारा सोलह हजार गोपियोंने सूर्यकी मूर्त्ति स्थापित कर ऋषियोंको विपुलधन दान दिया था। ऋषि गणने संतुष्ट हो कर इस सूर्यमूर्त्तिका नाम 'गोप्यादित्य' रखा।

गोप्राधि (सं० पु०) गोपश्चासौ आधिश्चेति कर्मधा०। आधिविशेष। आधि देखो।

गोप्रकाण्ड (सं० क्ली०) प्रशस्ता गौः नित्य कर्मधा०। श्रेष्ठ गो, उत्तमा गाय।

गोप्रचार (सं० पु०) प्रचरत्यस्मिन् प्रचर आधारे घञ्, ६-तत्। गोचारणस्थान, गाय रहनेकी जगह, गोष्ठ। २ तीर्थविशेष। (स्कन्दपु० प्रभास०)

गोप्रतार (सं० पु०) गवां प्रतारः प्रतरणतुल्यः संवद्धो ऽत्र बहुव्री०। १ सरयूतीर्थ विशेष। महाराज रामचन्द्रजी सरयूमें जिस स्थान पर पाञ्चभौतिक शरीर त्याग कर स्वर्ग गये थे वही स्थान 'गोप्रतारतीर्थ' से विख्यात है। इस तीर्थमें स्नान करनेसे समस्त पाप विनष्ट होते और मरनेके बाद आत्माको स्वर्गकी प्राप्ति होती है।

(भारत ३।८४ अ०)

२ शिव। गवां प्रतारः, ६ तत्। ३ गौओंका अवतरण।

* Fergusson s History of Indian and Eastern Architecture p 368.

गोप्रवेश (सं० पु०) गो प्रवेश, ६-तत्। १ गौओंका वनसे घर प्रत्यागमन। २ गोप्रवेशकाल, जिस समयमें गौ चर कर घर लौटती हैं, सन्ध्या, गोधूली।

गोफ (सं० पु०) १ दास, सेवक। २ दासीपुत्र। ३ गोपियों का झुंड। ४ दृष्टवन्धक, एक तरहका रेहन जिसमें रेहन रखी हुई चीज पर महाजनको कोई अधिकार न रहे बरन् वह सिर्फ सूद लेनेका अधिकारी हो।

गोफणा (सं० स्त्री०) फोड़े और जखम आदि बांधनेका एक प्रकारका बन्धन जिसका व्यवहार चिवुक, नासिका, ओठ, स्कन्ध आदिको बांधनेके लिये होता है।

गोफा (हि० पु०) नया निकला हुआ पत्ता, गाभा।

गोबध (सं० क्ली०) गौका मारना।

गोबर (हि० पु०) गोमय, गायकी विष्ठा, गौका मल।

गोबरगणेश (हि० वि०) १ भद्दा, जो देखनेमें अच्छा न मालूम हो। २ मूर्ख, बेवकूफ।

गोबरहारा (हि० पु०) गोबर उठाने या पाथनेवाला नौकर।

गोबरिया (हि० पु०) हिमालय तथा नेपालमें होनेवाला एक तरहका पौधा। इसकी जड़ विष है।

गोबरी (हि० स्त्री०) १ कंडा, उपला गोहरा। २ गोबर का लेपन।

गोबरैला (हि० पु०) गोबरमें रहनेवाला एक तरहका कीड़ा।

गोबरौरा (हि०) गोबरैला देखो।

गोबन्ध (सं० पु०) श्वेत यावनाल, सफेद ज्वार।

गोबाल (सं० क्ली०) गौका बाल, गायका रोयां।

गोबालधी (सं० स्त्री०) चमरीमृग।

गोबाली (सं० स्त्री०) गोबाला बालोऽस्या बहुव्री० ङीप्। औषध विशेष, एक दवा

गोबिया (देश०) आसामकी पहाड़ियोंमें पाया जानेवाला एक तरहका छोटा बांस। यह देखनेमें सुन्दर होता और इसमें लम्बी लम्बी घनी पत्तियां रहनेके कारण इसकी छाया सघन होती है। इसके पर्व पर्व भांति चारेके काम आते और लकड़ोमें तीर समान टोकरे बनाये जाते हैं। दुर्भिक्षके समय दीन मनुष्य इस बीजोंका भात भी बना कर खाते हैं।

गोबी (हि०) गोभी देख।

गोभ (हि० पु०) पौधोंका एक रोग।

गोभण्डीर (सं० पु०-स्त्री०) गवि जले भण्डीर अग्निवा चाल्प। जलकुक्कुभपक्षी।

गोभानु (सं० पु०) तुर्वसु राजाके पौत्र और वह्निके पुत्र।

गोभिरामा (सं० स्त्री०) रामतरुणी। (हरिवंश १२१ अध्याय)

गोभिल (सं० पु०) एक गृह्यसूत्रप्रणेता ऋषि। इन्होंने साम-वेदीय गृह्यसूत्र प्रणयन किया है।

गोभिलपुत्र—गोभिलके पुत्र, एक स्मृतिकार।

गोभी (हि० स्त्री०) १ गोजिह्वा गायकी जीभ।

२ एक तरहकी तरकारी। यह प्राय समस्त देशोंमें उपजायी जाती है। यह तीन प्रकारकी होती है—फूल गोभी, गाँठ गोभी और पातगोभी। फूलगोभीकी ऊंचाई लगभग एक बलिश्तकी होती और जमीनमें गड़ी रहती है। इसके ऊपर चारों तरफ चौड़े, मोटे और बड़े पत्ते रहते हैं और इनके मध्यमें फूलका गुथा हुआ समूह होता यें ही तरकारीके काम आते हैं। गोभी कार्तिक मासके अन्त तक तैयार हो जाती और जाड़ा पर्यन्त रहती है। दूसरी ऋतुओंमें खानेके लिये गोभी शुष्क कर रखी जाती है।

३ पौधोंका गोभ नामक रोग।

गोभुज (सं० पु०) गां पृथिवीं भुनक्ति गो भुज् क्विप्। भूपाल, राजा।

गोभृत् (सं० पु०) गां भूमिं बिभर्ति भृ क्विप् तुगागमस। पर्वत, पहाड़।

गोम (देश०) १ घोड़ोंकी नाभी और छातीके मध्यकी भवरी। ऐसा घोड़ा बुरा माना जाता है। २ पृथिवी।

गोमक्षिका (सं० स्त्री०) गो क्लेशदायिका मक्षिका। एक तरहकी मक्खी।

गोमघ (सं० त्रि०) गां मंहति दानार्थं मन्हदाति गो मंहि क, निपातनात् नकारलोप। गोदाता, जो गौ दान करता है।

गोमण्डल (सं० क्ली०) गवां मण्डलं, ६ तत्। १ गौ समूह, गायका झुण्ड। गोम ण्डल, ६ तत्। २ भूमण्डल। ३ किरणसमूह।

गोमत (सं० त्रि०) गौरस्त्यस्य गो मतुप्। १ गोस्वामी।

२ गोयुक्त, जिसे गो हो। ३ किरणशाली, जिसमें प्रकाश हो। ४ स्तुतिवादक, स्तुति करनेवाला।

गोमत (सं० क्ली०) गवां मतं, ६-तत्। अध्वपरिमाण, गव्यूति, दो कोस।

गोमतल्लिका (सं० स्त्री०) प्रशस्ता गौः नित्यस० परनिपातः। प्रशस्त गो, अच्छी गाय।

गोमती (सं० स्त्री०) गोमत्-ङीप्। १ स्वनामख्यात नदीविशेष, एक नदीका नाम।

स्कन्दपुराणके प्रभासखण्डमें इसकी उत्पत्ति, माहात्म्य और स्नानादि फलके लिए इस तरह लिखा है—

"गङ्गासरस्वतीपुण्या यमुना च महानदी।
गोदावरी गोमती च नदी तापी च नर्मदा॥
नद्यः समुद्रसंयोगात् सर्वाः पुण्याः प्रभावदाः"

अर्थात् गङ्गा, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, गोमती, तापी और नर्मदा प्रभृति पुण्यशलिला नदियां समुद्रमें जा मिली हैं, इनका जल पवित्र है। उक्त वचनसे जाना जाता है कि गङ्गा प्रभृतिकी नाईं गोमती नदी भी पर्वतसे निकल समुद्र तक चली गई है। किन्तु महाभारतके मतसे गोमती नदी काशीके उत्तर गङ्गासे मिश्रित है। (भारत ३।८४) गोमती गङ्गासङ्गममें स्नान करनेसे अग्निष्टोमका फल होता और कुलका उद्धार होता है। रामतीर्थमें स्नान कर गोमतीमें स्नान करनेसे अश्वमेधका फल और कुल पवित्र होता है। गोमतीमें शतसाहस्रक नामका एक तीर्थ है। इसमें संयत भावसे स्नान करने पर सहस्र गोदानका फल होता है। (भारत ३।८४)

गोमती नदी उत्तरपश्चिम प्रदेशके शाहजहानपुर जिलेके अन्तर्गत फलजरताल नामक क्षुद्र ह्रदसे निर्गत है। यह अक्षा० २८° ३७' उ० और देशा० ८०° ७' पू०में अवस्थित है। देओहा और घर्घरा नदीके मध्यवर्ती वालुकामय भूमि हो कर प्रायः ५००मील प्रवाहित हो अक्षा० २५° ३५' उ० और देशा० ८३° २३' पूर्व गङ्गाके वामकूलमें आ मिली है। प्रवल स्रोतमें दक्षिण-पूर्व गतिसे ४२ मील प्रवाहित हो अक्षा० २८° ११' उ० और देशा० ८०° २०' पूर्वमें अयोध्याके खेरी जिलेमें आ गिरी है। अक्षा० २७° २८' उ० और देशा० ८०° २७ पूर्वमें कथना नामक एक शाखा नदी आ इसके वामकूलमें मिली है। इस स्थानसे प्रायः ८० मील दक्षिण-पूर्वाभिमुख आकर सरायण नामक एक शाखा देखी जाती है। इसके बाद लखनऊ शहर है। यहां नदीके ऊपर ५ सेतु हैं। इस स्थान पर सब ऋतुओंमें नदीके मध्य हो कर नौका द्वारा लोग आते जाते हैं। लखनऊ नगरके दक्षिण गोमती नदी क्रमशः सङ्कीर्ण होती गई है। इस स्थान पर चारों धाराका दृश्य अतिशय मनोहर लगता है। अयोध्या नगरसे १७० मील दक्षिणपूर्व सुलतानपुरके निकट यह नदी २०० हाथ चौड़ी एवं स्रोतका वेग घण्टामें प्रायः दो मील होगा। गोमती सुलतानपुरसे ५२ मील दक्षिण जौनपुर जिला तक आई है। यहां नदीके ऊपर एक सुन्दर पुल है। जौनपुरसे १८ मील दक्षिण वाराणसी जिलेकी सिन्दनदी आ गोमतीके दक्षिणकूलमें मिली है। जहां गोमती गङ्गाके साथ मिली है वहांसे कुछ नौका संलग्नसेतु हो कर ग्रीष्म और शीत ऋतुमें गोमती पारापार होते हैं। वर्षाके समयमें नौकाके अलावा पार होनेका दूसरा कोई उपाय नहीं है। टिलवार घाटसे खेरी जिलेके मुहम्मदी नामक स्थान तक नदीमें सब समय ५०० सौ मनी नौका जाती आती है।

गौः गोपदमाधिक्येन विद्यतेऽस्य गो मतुप् ङीप्। २ विद्याविशेष, गोदान प्रभृति करनेका मन्त्र। गोदान देखो। ३ गङ्गा।

४ पीठस्थानकी अधिष्ठात्री गोमन्त पर्वत पर अवस्थित भगवती मूर्त्ति।

"गोमन्ते गोमती देवी मन्दरे कामचारिणी।" (देवी भागवत ७।३०।५७)

गोमुदस्थि यत्रास्ति गो-मतुप्-ङीप्। मृत मवेशी फेंकनेका स्थान। ५ वङ्गमें त्रिपुरा जिलेके अन्तर्गत एक नदी। त्रिपुरपर्वतश्रेणीके अतारमुरा और लङ्गधरा नामक पहाड़से उत्पन्न चाइमा और राइमा नदी दुमरा प्रतापके ऊपर एकत्र मिल कर गोमती नाम धारण किया है। कुमिल्लासे प्रायः ७ मील पूर्व वीवीबाजार ग्रामके निकट त्रिपुरा राज्यमें प्रवेश करती है। इसके बाद पश्चिमाभिमुख हो दाउदकान्दी ग्रामके निकट अक्षा० २३° ३१' ४५" उ० और देशा० ९०° ४४' १५" पू० पर मेघना नदीमें मिली है। इस नदीकी लम्बाई प्राय ६६ मील होगी। वर्षाकालमें इसकी गभीरता एवं स्रोतका

वेग बढ़ जाता है। पार्वतीय त्रिपुरा राज्यमें इस नदीके उत्तरकूल पर काशीगञ्ज, पित्रगागञ्ज, और मैनाक चेरल नामक तीन शाखाएं हैं। नदीके कूल पर कुमिल्ला, जाफरगञ्ज और पाँचपुखुरिया ये तीन प्रधान नगर हैं। कुमिल्ला, कम्पनीगञ्ज और मुरपुरमें नदी पार होनेके लिए नौकादि हैं।

६ गोरोचना।

गोमतीशिला (सं० स्त्री०) हिमालयकी वह चट्टान जिस पर पहुंच कर अर्जुनका शरीर गल गया था।

गोमत्स्य (सं० पु०) गौरिव स्थूलो मत्स्यः। सुश्रुतके अनुसार एक तरहकी मछली।

गोमन्त (सं० पु०) एक पर्वतका नाम। इसके ऊपर एक पीठस्थान है जिसको अधिष्ठात्री देवीका नाम गोमती है। गोमती, गोवा, वगैरह और कृष्ण देखो।

गोमन्द (सं० पु०) पर्वतविशेष। यह क्रौञ्चद्वीपमें अवस्थित है, कमललोचन सर्वदा इसी पर्वत पर वास करते हैं। (भारत भीष्म० १२ अ०)

गोमय (सं० पु० क्ली०) गो पुरीष गो मयट्। १ गोकी विष्ठा, गोबर। इसका गुण गो शब्दमें देखो। स्मृतिका मत है कि वन्ध्या, रोगपीडिता और नवप्रसूता एवं वृद्धा गौका गोमय ग्रहण करना उचित नहीं है। पुराणमें लिखा है कि एक समय समस्त गौने मिल कर आपसमें इस बातका परामर्श किया कि उन सबकी उन्नतिका क्या उपाय है। अनेक वादानुवादके बाद स्थिर हुआ कि जो मनुष्य उनके गोबर तथा मूत्रसे स्नान करेगा उसीका शरीर पवित्र होगा ऐसा होनेसे ही उनकी उन्नति होगी अन्यथा नहीं। इसके लिये समस्त गौने एक शत वर्ष कठोर तपस्या की। प्रजापतिने तपस्यासे सन्तुष्ट हो कर यही वर दिया जो उनका अभीष्ट था। उसी समयसे गौका गोमय और मूत्र पवित्र माना जाता है। गोमय द्वारा देवदेवियोंके अभिषेक करनेका विधान है। महाभारतके दानधर्ममें लिखा है कि एक समय गौने लक्ष्मीजीसे कहा कि "हम सब आपका सम्मान करेंगे और आप हमारे गोमय और मूत्रमें वास कीजिए।' लक्ष्मी उनकी प्रार्थनाको अङ्गीकार कर तभीसे गोमूत्र और गोमयमें वास करने लगी। कोई कोई इन्हें साक्षात् यमुना कह कर वर्णन करते हैं। (काशीखण्ड)। ऐसा प्रवाद है कि गोमयसे पृथिवी होता है। (त्रि०) २ गोस्वरूप।

गोमयच्छत्र (सं० क्ली०) गोमयजात छत्रमिव। करक, कुकुरमुत्ता।

गोमयच्छत्रिका (सं० स्त्री०) गोमये गोमयप्रचुरस्थाने जाता छत्रिकेव। गोमयच्छत्र, छातेके आकारका एक छोटा गाछ जो प्रायः गोमयकी ढेर पर निकला करता।

गोमयतैल (सं० क्ली०) नेत्ररोगका तैल।

गोमयप्रिय (सं० क्ली०) गोमय प्रियमस्य उत्पादकत्वात्। १ भूतृण, एक तरहकी सुगन्धि घास। २ बालक, सुगन्ध वाला।

गोमयाद्यघृत (सं० क्ली०) नेत्ररोगका घृत, आंखकी बामारीका घी। इसकी प्रस्तुत प्रणाली इस तरह है— छागघृत ४ शराव, गोमयरस ४ शरावमें काकोली, क्षीर काकोली, जीवक, ऋषभक, मुद्गपर्णी, मायाणी, मेदा, महामेदा, गुलुच, कर्कटशृङ्गी, वंशलोचन, पद्मकाष्ठ, पुण्डरिया, ऋद्धि, वृद्धि, किशमिश, जीवन्ती और यष्टिमधु इन सबके १ शराव चूर्ण मिलाते हैं। इसके बाद उसमें १६ शराव जल डाल दिया जाता है।

गोमयोत्था (सं० स्त्री०) गोमयादुत्तिष्ठति उद्-स्था क टाप्। १ गोमयजात कीटविशेष, एक तरहका कीड़ा जो गोबरसे उत्पन्न होता है, गोबरीला, पर्दभी।

गोमयोद्भव (सं० त्रि०) गोमय उद्भव उत्पत्तिस्थान यस्य बहुव्री०। १ गोमयजात, जो गोबरसे उत्पन्न हो। (पु०) २ आरग्वध, अमलतास।

गोमर्द (सं० पु०) सारस पक्षी।

गोमर (हिं० पु०) बूचर कसाई।

गोमरी (सं० स्त्री०) वार्त्ताकुविशेष, रामबैंगन।

गोमल (सं० पु०) १ गोमय, गोबर। २ पंजाबके पश्चिम सुलेमान पहाड़से निःसृत एक नदी। ऋग्वेदमें यही नदी गोमती नामसे वर्णित है। इस नदीके निकट ही गोमल नामका गिरिसङ्कट पंजाबसे अफगानिस्तान तक गया है।

गोमहिषदा (सं० स्त्री०) गा महिषांश्च ददाति भक्तेभ्य गो महिष दा क टाप्। कार्त्तिकेयकी अनुगामिनी मातृकाविशेष।

गोमांस (सं० क्लो०) गोमांस ६-तत्। गोका मांस। चरकके मतसे इसका गुण—वायु, पीनस, विषमज्वर, शुष्क काम, श्रम, अग्निवृद्धि और क्षयरोगनाशक है। (चरक सूत्र० २७ अध्याय) सुश्रुतके मतसे इसका गुण—श्वास, काम, प्रतिश्याय और विषमज्वर वायुनाशक एवं श्रमजीवी और वर्द्धिताग्नि मनुष्यके लिये विशेष हितकर हैं। (सुश्रुत सूत्र ४६ अ०) हिन्दूधर्मशास्त्रके मतसे इसका मांस खानेसे बहुत पाप होता है। अज्ञानसे गोमांस खाने पर प्राजापत्य व्रतका अनुष्ठान कर पवित्र हो सकता है। "गोमांस भक्षदि प्राजापत्यं चरेत।" (मनक) यदि सज्ञानसे गोमांस भक्षण करे तो उसके प्रायश्चित्तके लिये समुद्रगामिनी किसी नदीके तीर जा चान्द्रायण व्रतका अनुष्ठान करे। व्रतकी समाप्ति होने पर ब्राह्मणभोजन करावे और प्रत्येक ब्राह्मणको एक वृष और एक दुग्धवती गाय दान दे। ऐसा करने पर ज्ञानकृत गोमांस भक्षणका प्रायश्चित्त होता है। (प्रायश्चित्त)

सज्ञानसे यदि अनेक वार गोमांस खाया जाय तो संवत्सर कृच्छ्रव्रतका अनुष्ठान करने पर पाप नाश होता है। (यम)

द्विजजातिके लिए उपरोक्त प्रायश्चित्त करनेके बादभी पुनर्वार उपनयनादि संस्कार करना उचित है।

(प्रायश्चित्तविवेक)

गोमांसभक्षण (सं० क्लो०) गोमांसस्य भक्षणम्, ६-तत्। १ गौका मांस खाना। २ तालुस्थानमें जिह्वाका प्रवेश।

गोमाची (सं० स्त्री०) कर्णस्फोट, एक प्रकारकी लता।

गोमातृ (सं० स्त्री०) गवां माता, ६-तत्। १ सुरभि, कश्यपकी स्त्री। २ मरुत् देवता।

गोमायु (सं० पु० स्त्री०) गां विकृतां वाचं मिनोतीति मा-उण्। १ शृगाल, सियार, गीदड़। इसका मूत्र और पुरीषादि भक्षण निषिद्ध है। द्विजाति यदि मूत्रादि भक्षण करे तो उसे चान्द्रायणव्रत करना चाहिये। इसके शब्द से शुभाशुभका विचार किया जाता। शृगाल देखो। २ एक गन्धर्वका नाम। (हरिवंश २६ अ०) (क्लो०) ३ वंश लोचन।

गोमायुभक्ष (सं० पु०) गोमायुं भक्षयति भक्ष-अण् उप-पदस०। नीच जातिविशेष।

गोमित्री—दक्षिण देशमें रहनेवाली वाल्मीक ब्राह्मणोंके अन्तर्गत एक श्रेणी। इनकी उत्पत्तिके विषयमें प्रवाद है कि जब श्रीरामचन्द्रजीने वाल्मीकि ऋषिको यथेष्ट धन दिया था तब ऋषिने उस धनका सदुपयोग करनेके लिए एक यज्ञ करना निश्चय किया और इस हेतु आवू पहाड़ पर वाल्मीकेश्वरी देवीके मन्दिरमें अपना आश्रम स्थापित किया। यज्ञारम्भके लिए उन्होंने दूर दूरसे ऋषियोंको बुलाया। यज्ञमें गौतमजी, वशिष्ठजी, कण्व, च्यवन आदि ऋषियोंके साथ साथ एक लाख अन्य ऋषिगण उपस्थित हुए।

"ऋषिं ते शिवा लक्षं कमुक्तमा वेदविचारा:।
तेषां विद्विसंख्यानां गोमित्र इत्यभिधानि च ॥ १६ ॥"

(शिव० ब्रा० मा० पृ० ४'६)

अर्थात् उस यज्ञमें आये हुए एक लाख ऋषि थे। वे सब वेदपारग थे। उनमेंसे उन पचास हजार ऋषियोंकी गोमित्री संज्ञा हुई। जो गौवोंकी रक्षा करनेके लिए नियत किये गये थे।

इनके गोत्र ये हैं—

गोत्र		प्रवर
१	भरद्वाज	
२	वशिष्ठ	वसिष्ठ।
३	काश्यप	काश्यप, वत्स, ध्रुव।
४	गार्ग्य	काश्यप, वत्स, ध्रुव।
५	आत्रेय	आत्रेय, अर्चनानु, शशावाश्व।
६	गौतम	
७	वत्स	
८	कौण्डिन्य	वशिष्ठ, मैत्रावरुण, कौण्डिन्य।
९	भार्गव	भार्गव, च्यवन, आप्नवान, आर्ष्टिषेण और अनुपेक्षा।
१०	मुद्गल	आङ्गिरस, ब्राह्म, मुद्गल।
११	जमदग्नि	जमदग्नि, भार्गव, और्व।
१२	आङ्गिरस	आङ्गिरस, ब्राह्म, मुद्गल
१३	कुत्स	मान्धाता, आङ्गिरस, कौत्स।
१४	कौशिक	
१५	विश्वामित्र	विश्वामित्र, हैवत, हैद, यवस।
१६	पुलस्त्य	

१७ अगस्ति — विश्वामित्र, स्मरथ, वार्धल।
१८ शाण्डिल्य
१९ कात्यायन — भार्गव, च्यवन, और्व, जमदग्नि, वत्स।

गोमिथुन (सं॰ क्लो॰) गवां मिथुन, ६ तत्॰। वृष और गाभी, गाय और बैल।

गोमिन् (सं॰ त्रि॰) गावो विद्यतेऽस्य गो मिनि। १ गोमान्, गोवाला, जिसको गो है। २ उपासक। (पु॰) ३ शृगाल, गोदड़। ४ बुद्धके एक शिष्यका नाम। ५ पृथ्वी।

गोमीन (सं॰ पु॰ स्त्री॰) गौरिव स्थूलो मीन। मत्स्य विशेष, एक तरहको मछली।

गोमुख (सं॰ पु॰) गोमुखमिव मुखं यस्य, बहुव्री॰। १ नक्र, कुम्भीर, मकर, ग्राह। २ तृणविशेष। ३ मातलीके पुत्र। (भारत उद्यो॰ ९९ अ॰) ४ कुटिलाकारवाद्ययन्त्र, शृङ्गादि नरसिंहा नामका बाजा। (क्लो॰) ५ लेपनविशेष, घर को भीतमें गोमुखाकारका चित्र बनाना। ६ गोमुखाकृति सन्धिविशेष, गोके मुखके आकारका एक तरहका सेंध। ७ माला रख कर जपनेकी थैली जिसका आकार गो मुखके सदृश होता। शाक्त, सौर, वैष्णव प्रभृति गोमुखमें हाथ रख कर माला द्वारा इष्टमन्त्र जप किया करते हैं। गोमुख छब्बीस आङ्गुल या एक हाथका बना रहना चाहिए, जिसमें आठआङ्गुल परिमाणका मुख और अठा-रह आङ्गुल परिमाणको ग्रीवा रहे ८ आसनविशेष। पृष्ठके वाम पार्श्वमें दक्षिण गुल्फ (ठेहन) और दक्षिण पार्श्वसे वामगुल्फके योग करनेसे गोमुखाकृति गोमुखा सन बनता है। (रुद्र॰ति॰) ९ यक्षराज मणिभद्रके पुत्र। (कथासरित्सा॰ २२।२७)

१० नरवाहनदत्तके प्रतिहारी। (कथासरित्सा॰)

११ गोका मुख। १२ गोके मुखके आकारका एक तरहका शङ्ख। १३ टेढ़ा मेढ़ा घर। १४ लेपन

गोमुखव्याघ्र (सं॰ पु॰) एक तरहका व्याघ्र, जिसका मुख गौके मुखके जैसा हो।

गोमुखी (सं॰ स्त्री॰) गोमुखमिव आकृतिरस्या, बहुव्री॰। ङीप्। १ हिमालयमें गङ्गाके पतन स्थान पर अवस्थित एक गुहा या कन्दरा। २ दाक्षिणात्यस्थ एक नदी।

गोमुतो—भारतीय द्वीपपुञ्जजात वृक्षविशेष। (Arenga saccharifera)। यह देखनेमें नारियल या ताड़के वृक्ष जैसा होता है। इसके स्कन्धके ऊपर घोड़ेकी दुमके बाल जैसा रोआं रहता है। जिसको मलयवासीगण गोमुतो कहते हैं। इसकी भी छिलकासे मजबूत रस्से आदि बनते हैं जो नारियलके रस्सेकी अपेक्षा दृढ़ और बहुकाल स्थायी होते हैं।

गोमुद्रा (सं॰ स्त्री॰) प्राचीनकालका एक बाजा, जिस पर चमड़ा मढ़ा रहता है।

गोमूढ़ (सं॰ त्रि॰) बैलके सदृश निर्बोध।

गोमूत्र (सं॰ क्लो॰) गोर्मूत्र, ६ तत्॰। गौका प्रस्राव या पेशाब इसका संस्कृत पर्याय-गोजल गोम्भ, गोनिष्यन्द और गोद्रव है। कृच्छ्रसान्तपनव्रतमें गोमूत्र भक्षण करने का विधान है।

गोमूत्रबीजक—(सं॰ पु॰) रक्तबीजासन वृक्ष।

गोमूत्राभ (सं॰ पु॰) सल्पविष वृश्चिकविशेष।

गोमूत्रिका (सं॰ स्त्री॰) गोमूत्रस्येव वक्रासरलाकृतिरस्य स्याः गोमूत्र ठन् टाप्। १ तृणविशेष, एक प्रकारको घास जिसके बीज सुगन्धित होते हैं। इसका संस्कृत पर्याय—रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा है। इसका गुण-मधुर वृष्य एवं गायकी दुग्धवृद्धिकारक है। गोमूत्रिका तृण देखनेमें ताम्रवर्ण है।

गोमूत्रस्येव गतिरस्यत गोमूत्र ठन् टाप्। २ चित्र काव्यविशेष। इस काव्यके पढ़नेको तरकीब है कि पहली पङ्क्तिके एक वर्णको दूसरी पङ्क्तिके दूसरे वर्णसे मिलाकर फिर पहलीके तीसरेको दूसरीके चौथेसे फिर पहलीके पांचवेंको दूसरीके छठेसे और फिर आगे इसी प्रकार पढ़ते चलते हैं। जिस श्लोकके अर्धद्वयका एकान्तर वर्ण समान होते अर्थात् प्रथमार्द्धके द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम द्वादश, चतुर्दश और षोडश अक्षर एवं द्वितीयार्द्धके द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, चतुर्दश और षोडश अक्षर एक ही हों। इसीको गोमूत्रिकाबन्ध कहते हैं।

उदाहरण—

[illegible]

[illegible]

इसे वर्धानूतन भी कहते हैं।

गोमूत्रप्रकार: गोमूत्र प्रकारार्थे कन् टाप्। १ त इत्वञ्च। २ गोमूत्रके सदृश वक्र और सरल प्रचारादि।

गोमूत्री (सं० स्त्री०) रक्तकुलत्थिका, लालकुल्थी।

गोमृग (सं० पु० स्त्री०) गवाकृतिर्मृगः। गवय, नील गाय।

गोमेद (सं० पु०) गां जलं मेदयति स्नेहयति गो-मिद णिच्-अच्। १ गोमेदकमणि। (राजनिघण्टु) २ द्वीपविशेष। युक्तिकल्पतरु ग्रन्थमें लिखा है कि पूर्व समय इस द्वीपमें गोपति नामके एक राजा रहते थे, इन्होंने गोमत्र नामक यज्ञ किये थे। गोपति अग्नितुल्य तेजस्वी औतथ्य गणके यजमान थे। किसी समय महाराज गोपतिने किसी दूसरे यज्ञमें भृगुवंशीयोंको वरण दिया था। इस पर गोतमने क्रुद्ध होकर शाप दिया जिससे गोपतिका अकालमृत्यु हुआ एवं मुनिके अमोघ कोपाग्निसे यज्ञकी समस्त गायें भस्म हो गईं। भस्मीभूत गौका चार उक्त द्वीपके समस्त भूभाग पर आच्छादित हुआ जान कर द्वीपका नाम गोमेद पड़ा। (युक्तिकल्पतरु) ३ प्लक्षद्वीपका एक वर्षपर्वत। (क्ली०) ४ तेजपत्र।

गोमेदक (सं० पु०) गोमेद स्वार्थे कन्। १ स्वनामख्यात मणिविशेष, गोमेद। इसका पर्याय:—राहुमणि तमोमणि स्वर्भानव और लिङ्गस्फटिक है। इसका गुण—अम्ल, उष्ण, वायुके कोप और विकारनाशक, दीपन, पाचन एवं धारण करने पर पापनाशक है। (राजनिघण्टु) हिमालय पर्वत पर तथा सिन्धु नदीमें गोमेद मणिकी उत्पत्ति है। यह मणि स्वच्छकान्ति, भारयुक्त, स्निग्ध, दीप्तियुक्त एवं शुक्लवर्ण वा पीतवर्ण होती है। इस प्रकारका गोमेद अच्छा समझा जाता है। इसके चार भेद हैं। यथा—शुक्लवर्ण गोमेदको ब्राह्मण, रक्तवर्णको क्षत्रिय, ईषत् पीतवर्णको वैश्य एवं ईषत् नीलवर्ण गोमेदकको शूद्र जाति कहते हैं। गोमेद मणिकी छाया भी चार प्रकारकी है, यथा—श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण। गुरु या भारयुक्त, प्रभाशाली, शुक्लवर्ण, स्निग्ध, मृदु और अधिक पुरातन एवं स्वच्छ गोमेद धारण करना चाहिये। इसके धारणसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है। लघु, कुत्सिताकार, अस्वच्छ, स्नेहोपलिप्त और मलिन गोमेद मणि पहनना नहीं चाहिए, इसके धारण करनेसे सम्पत्ति, भोग, यश एवं वीर्य नष्ट हो जाते। गोमेद मणिकी परीक्षा अग्निमें की जाती है। शुद्ध गोमेद मणिका मूल्य सुवर्णसे द्विगुण है। चारों प्रकारके गोमेद धारण योग्य हैं। सुश्रुतके मतसे गोमेद मणिसे अस्वच्छ जल परिष्कार हो जाता है।

(क्ली०) २ पीतमणि। ३ काकोल नामक विष जो काला होता है। ४ पचक नामक साग।

गोमेदसन्निभ (सं० पु०) दुग्धपाषाण।

गोमेध (सं० पु०) मेध हिंसायां भावे घञ्। गवां मेधो हिंसा यत्र, बहुव्री०। यज्ञविशेष। इसका दूसरा नाम गोसवयज्ञ भी है। यह यज्ञ कलिकालमें निषिद्ध समझ कर वर्तमान समयमें जिन ग्रन्थोंमें यज्ञादिका विधान पाया जाता है, उसमें गोमेध यज्ञका विशेष विवरण नहीं है। कात्यायनश्रौतसूत्रमें गोसवयज्ञ नामसे इस यज्ञका उल्लेख है।

मनुके मतसे अज्ञानकृत ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्तके लिये अश्वमेधके जैसा इस यज्ञका अनुष्ठान किया जाता है। इसकी अनुष्ठान प्रणाली अश्वमेधके सदृश है।

कात्यायनश्रौतसूत्रमें इस यज्ञका विधान इस तरह है—

"उक्थ्यो गोसवो द्युतद्विधिः।" (कात्यायन २२।११।८)

अर्थात् गोसव नामक यज्ञ उक्थ्य संस्थित हुआ करता है। (उक्थ्य देखो।) इस यज्ञमें दश हजार दुग्धवती गाय दक्षिणा देना पड़ता है।

किसी किसी मुनिके मतसे केवल वैश्यगणके लिये ही यह यज्ञ करनेका विधान है, दूसरा कोई वर्ण इस यज्ञका अनुष्ठान कर नहीं सकता। दूसरे दूसरे मुनिका कथन है कि ब्राह्मण क्षत्रिय प्रभृति अपर वर्ण भी गोसव यज्ञका अनुष्ठान कर सकते हैं। मनुसंहिताके ११।१५ श्लोककी व्याख्यामें टीकाकार कुल्लूकभट्टने इस यज्ञको त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णोंका अनुष्ठेय कहा है। कात्यायनके मतानुसार राजा और प्रजा जिसको सम्मान करें वह गोसवयज्ञके अधिकारी है, दूसरा इस यज्ञका अनुष्ठान कर नहीं सकता

है। आहवनीय अग्निको दक्षिणा ओर एक स्थण्डिल प्रस्तुत करे, यजमान उस स्थण्डिलमें उपवेशन कर धारोष्ण दुग्ध द्वारा अभिषिक्त होवें। जो गोसवयज्ञका अनुष्ठान करते, वे है सब कोई स्थपति कह कर पुकारते हैं। वैश्यस्तोम दक्षिणाका जो सब लिङ्ग वा चिह्न विहित है इसमें भी उसी तरहकी रीति प्रचलित है। सहोदरगण या मित्रगण परस्पर मिल कर इस यज्ञका अनुष्ठान कर सकते हैं। इसका और एक नाम गणयज्ञ है।

(कात्यायनश्रौतसूत्र २२।११।१२)

गोऽश्रम् (स० क्ली०) गवामश्र, ६ तत्। गोमूत्र, गायका मूत।

गोय (फा० पु०) गेंद।

गोयज्ञ (स० पु०) गवाकृती यज्ञ, मध्यपदलो०। १ गोसव यज्ञ, गौके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है।

गोभिलगृह्यसूत्रके मतसे पुष्टिकामनाके लिये गोयज्ञ किया जाता है इस यज्ञमें अग्नि पूषा इन्द्र और ईश्वर ये चारो देवताएँ अर्चनीय हैं। वृषभकी पूजा ही गोयज्ञ का प्रधान अङ्ग है। यज्ञ देखो। (गोभिलगृह्य ३।६।१० ११)

२ वृन्दावनवासी गोपगणके लिए कृष्ण कर्तृक अनुष्ठित महोत्सव। हरिवंशमें लिखा है कि वर्षाकालके अवसान पर वृन्दावनके समस्त गोपगण शक्रोत्सव किया करते थे। एक समय जब वर्षाकाल समाप्त हो गया तब सकल ग्वाले हर्ष और उत्साहसे शक्रोत्सवके आयोजन कर रहे थे, उसी समय गोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचन्द्रने उन्हें रोक कर कहा कि "हम लोग ग्वाले हैं, जिससे गौकी उन्नति हो वही हम सबोंका एकान्त कर्त्तव्य है। इस लिए मैं समझता हूं कि गिरिपूजा कर गोयज्ञ करना चाहिये, क्योंकि पर्वत ही वृन्दावनके समस्त गोपोंको पालन करता और अगर उन्हें पर्वत परसे घास नहीं मिलती तो वृन्दावनमें आज तक एक भी गौ बचो न रहती।' श्रीकृष्णचन्द्रके ऐसे वचनको सुन कर समस्त ग्वाले गिरिपूजा ही करनेको बाध्य हुए, एवं महाधूमधामसे गिरियज्ञ और गोयज्ञका अनुष्ठान किया।

(हरिवंश ७१ अ०)

गोया (फा० क्रि० वि०) मानो, जैसे। ऐसा देखो।

गोयीचन्द्र (स० पु०) संक्षिप्तसारके एक टीकाकार। इन की टीका अत्यन्त सरल भाषामें लिखी है। इन्होंने अपनी टीका प्रमाणित करनेके लिए कई जगह कलापटीका उद्धृत कर उसकी मीमांसा की है।

गोयुक्त (स० त्रि०) गवा युक्त, ३ तत्। गोविशिष्ट, जो गाय या बैलसे खींचा जाता हो।

गोयुग (स० क्ली०) गवां युग, ६ तत्। गोयुगल, एक जोड़ा गौ।

गोयुत (स० त्रि०) गवा युत, ३-तत्। गोयुक्त।

गोयुति (स० स्त्री०) गोर्युति गमन, ६ तत्। गौका गमन, गायका जाना।

गोर (फा० स्त्री०) मृत शरीर गाड़नेका गड्ढा। कब्र।

गोर (अ० पु०) फारसदेशके एक प्रान्तका नाम।

गोर (हि० वि०) १ गोरा। २ श्वेतवर्णका, जिसका रंग सफेद हो।

गोरक (स० पु०) विषधरसर्प, एक तरहका जहरीला साँप।

गोरका (देश०) दक्षिणी भारतमें पाये जानेवाला अरयन नामका वृक्ष।

गोरक्ष् (स० त्रि०) गा रक्षति गो रक्ष क्विप्। गोरक्षक, गौकी रक्षा करनेवाला।

गोरक्ष (स० पु०) गा रक्षति गो रक्ष अण् उपस०। १ लता-विशेष। २ नागरङ्ग, नारङ्गी। ३ ऋषभ नामक औषध। (त्रि०) ४ गोपालक, गौकी रक्षा करनेवाला। रक्ष भावे घञ्। ५ गोरक्षण, गोप्रतिपालन। ६ गोमाञ्चलमें स्थापित एक प्राचीन तीर्थ। (वराहपु० १११।१२)

गोरक्षक (स० त्रि०) गा रक्षति रक्ष ण्वुल्, ६ तत्। गो-पालक, ग्वाला।

गोरक्षकर्कटी (स० स्त्री०) गोरक्षा नाम्नी कर्कटी चेति कर्मधा०। चिर्भटा, भुकुर। इन्द्रवारुणी।

गोरक्षजम्बुक, गोरक्षजम्बू देखो।

गोरक्षजम्बू (स० स्त्री०) गोरक्षा नाम्नी जम्बू चेति कर्मधा०। १ गोधूम, गेहूं। २ गोरक्षतण्डुला, कोई वृक्ष। ३ घोण्टाफल, एक तरहका पेड़। ४ धन्या, धाना।

गोरक्षतण्डुला (स० स्त्री०) गोरक्षतण्डुलो यौर्ज यस्य, बहुव्री० टाप्। वृक्षविशेष। (Hedysarum lagopodioides)। इसका संस्कृत पर्याय—नागकर्को, नाग बला, ऋष्यगन्धिका, खरयष्टिका और विश्वदेवा है। इसके

पत्ते मोहड़ा वृक्षके पत्ते जैसे होते हैं, किन्तु मोहड़ाका वृक्ष इनसे मोटा और लम्बा होता है। इसकी शाखायें बड़ी बड़ी लम्बा छड़की नाईं बढ़ कर पीछे नम्र हो जाती हैं। इसमें छोटे छोटे पुष्प लगते जो शुक्लवर्ण और ईषत् पीताभ वर्णके होते हैं। भाद्र आश्विन मासको इसमें छोटे छोटे फल भी लगते हैं।

गोरक्षतण्डुली (सं० स्त्री०) गोरक्षस्तण्डुलो यस्याः, बहुव्री०, गोरादित्वात् ङीष्। गोरक्षतण्डुला देखो।

गोरक्षतुम्बी (सं० स्त्री०) गोरक्षा चासौ तुम्बी चेति कर्मधा०। कुम्भाकार तुम्बी, एक तरहकी मोटी लौकी।

गोरक्षदुग्धा (सं० स्त्री०) गोरक्षं गोपोषकं दुग्धं निर्यासो यस्याः, बहुव्री०। क्षुपविशेष, एक तरहकी लता। इसका पर्याय—गोरक्षी, ताम्रदुग्धा, रसायनी, बाहुपत्री, अमृता, जोव्या और अमृमतञ्जीवनी है। इसका गुण—मधुर, वृष्य, संग्राही, शीतल, सर्ववश्यकर, रससिद्धि गुणवर्द्धक।

गोरक्षनाथ—एक महासिद्ध पुरुष। कणफट् योगी प्रभृति बहुतसे शैव सम्प्रदाय इन्हें शिवावतारके जैसा विश्वास करते हैं। प्रवाद यों है—

"आदिनाथके नाती मच्छन्द्रनाथके पुत। मैं योगी गोरक्षअवधूत॥"

उक्त प्रवाद वचनसे जाना जाता है कि गोरक्षनाथ मत्स्येन्द्रनाथके पुत्र थे। हठयोगप्रदीपिका प्रभृति ग्रन्थमें वे नौ नाथके एक नाथ अर्थात् नौ प्रधान गुरुके एक गुरु माने गये हैं। महात्मा कबीरके बनाये हुए बीजक पढ़नेसे एक स्थानमें ऐसा पाया जाता है कि इसके पहले ही गोरक्षनाथ विद्यमान थे। हिन्दी भाषामें कबीर और गोरक्षनाथके प्रबन्ध देखे जाते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि गुरु गोरक्षनाथ और कबीर एक ही समयमें अर्थात् पन्द्रहवीं शताब्दीमें विद्यमान थे।

कबीर देखो।

जिस समय चैतन्यदेवके विशुद्ध धर्मोपदेशसे बङ्गदेश मतवाला हो उठा था, प्रायः उसी समय उत्तरपश्चिममें गोरक्षनाथके अमृतमय वचन और असाधारण योगकौशलसे मोहित हो उत्तरपश्चिमके सैकड़ों मनुष्य उनके मतमें दीक्षित हुए थे। चैतन्य महाप्रभु जिस तरह उच्च नीच सभी वर्णोंके मनुष्योंको अपनाया था, गुरु गोरक्षनाथने भी उसी तरह सर्व जातिके मनुष्योंके मध्य अपना मत प्रचार किया था। राजासे रङ्क तक उनका आदर करते और वे सभीको समान भावसे देखते थे। गुरु गोरक्षनाथ बहुतसे पातञ्जलका मत प्रचार करते थे। उनके मतसे योगी ही संसारमें सभीसे श्रेष्ठ माने गये हैं, क्योंकि योगबलसे मानव सब प्रकारके ऐश्वर्य और सर्वोच्च अवस्था पा सकते हैं। वे हठयोगके भी प्रवर्त्तक थे। नेपालकी तुषारमय गिरिकन्दरसे लेकर भारतके प्रायः सभी स्थानोंमें गोरक्षनाथके सम्बन्धमें बहुतसे अलौकिक गल्प प्रचलित हैं। वे सिर्फ योगी और महासिद्ध पुरुष ही नहीं थे, वरन इनके बनाये हुए हठयोग सम्बन्धीय अनेक अच्छे अच्छे ग्रंथ हैं जिनमेंसे गोरक्षकल्प, गोरक्षसंहिता, गोरक्षसहस्र और गोरक्षपिष्टिका प्रभृति ग्रंथ पाये जाते हैं। ई० सन्‌से १०म शताब्दीके मध्य गुरु गोरक्षनाथका अभ्युदय हुआ था। कणफट और योगी देखो।

गोरक्षा (सं० स्त्री०) गावां रक्षा, ६-तत्। १ गोपालन। गां रक्षति रक्ष-अच्-टाप्। २ वह स्त्री जो गौ रक्षा करती है।

गोरक्षी (सं० स्त्री०) गोरक्ष-ङीष्। १ गोरक्षदुग्धा, लताविशेष। २ कुम्भतुम्बी। ३ क्षुद्र क्षुपविशेष, एक तरहकी छोटी लता जो मालवदेशमें पायी जाती है। इसका पर्याय—सर्पदण्डी, सुदण्डिका, चित्तला, पञ्चपर्णिका, गन्धबहुला और गोपाली है। इसका गुण—मधुर, तिक्त, शीतल, दाह, पित्त, विस्फोट, वान्ति, अतिसार और ज्वर दोषनाशक है। इसका फल खुर्बुजाके फलके जैसा मीठा होता है। ४ ऋषभक।

गोरख इमली (हिं० स्त्री०) दक्षिण भारतमें होनेवाला एक तरहका वृक्ष। इसका धड़ बहुत मोटा एवं इसकी शाखायें बहुत दूर तक फैली रहती हैं। इसकी लकड़ी बहुत कमजोर और छाल बहुत नर्म होती है। छालके रेशेसे चटाइयां, रस्से और कहीं कहीं कपड़े भी बनाये जाते हैं। इसमें पद्मके आकारके बड़े बड़े पुष्प श्रावण भाद्र मासमें लगते हैं। अफ्रिकाके मनुष्य इसके पत्तेको चूर्ण कर भोजनके साथ खाते हैं। इस वृक्षमें फल भी लगते हैं। जिनके बीज औषधके काममें आते हैं। ज्वर निवारणके लिये यह रामवाण है। इसका गुण मधुर

शीतल और दाह, वमन, पित्त, अतिसार और ज्वरनाशक है। यह कल्पवृक्ष नामसे भी विख्यात है।

गोरख ककड़ी (हि० स्त्री०) एक तरहकी ककड़ी।

गोरख डिब्बी (हि० स्त्री०) गर्म जलका कुण्ड या स्रोत।

गोरखधंधा (हि० पु०) १ कई तारों कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ोंका समूह। २ झगड़ा या उलझनका काम। ३ झगड़ा, उलझन पेंच।

गोरखनाथ—गोरक्षनाथ देखो।

गोरखपंथी (हि० वि०) गोरखनाथका अनुगामी, गोरखनाथके उपदेशका माननेवाला।

गोरखपुर—१ युक्त प्रदेशके उत्तर पूर्वका एक विभाग। यह अक्षा० २५ ३८ से २७ ३०´ उ० और देशा० ८२ १२´ से ८४ २६ पू०में अवस्थित है यह विभाग नेपाल की तराईसे लेकर घर्घराके उत्तर तक फैला है। इस का उत्तरीय भाग बहुत आर्द्र है तथा चारों ओर जङ्गल से घिरा है। भूपरिमाण ८५३४ वर्गमील और जन सख्या लगभग ६३३३०१२ है। इसमें गोरखपुर, बस्ति और आजमगढ़ नामक तीन जिला लगते हैं। गोरखपुर और बस्ति घर्घरा नदी पर तथा आजमगढ़ उससे कुछ दक्षिणमें अवस्थित है। इस विभागमें कुल १८१२५ ग्राम पड़ते हैं। यहांके प्रधान वाणिज्य स्थान गोरखपुर, आजमगढ़, बरहज बरहलगञ्ज, उसका, पदरौना और गोला है।

२ युक्त प्रदेशका एक पूर्वीय जिला। यह अक्षा० २६ ५´ तथा २७ २८ उ० और देशा० ८३ ४ एवं ८४ २६ पू०में अवस्थित है। यह जिला वाराणसी विभागके अन्तर्गत है। इसके उत्तरमें नेपालराज्य, पूर्वमें सारण और चम्पारण जिला, दक्षिणमें घघरा नदी तथा पश्चिममें बस्ति और फैजाबाद जिला है। भूपरिमाण प्राय ४५३५ वर्गमील होगा। लोकसंख्या प्राय २८९७०७४ है।

हिमालय पर्वतसे बहुतसे वेगवान् जलस्रोत पहाड़के बालुकणाको साथ लिये निकले हैं। यह बालू क्रमश जमकर जिलेके धातुकामय स्तरमें परिणत हो गया है। इस जिलेमें एक भी बड़ा पर्वत नहीं है। यहां अनगिनती नदियां और जलस्रोत प्रवाहित हैं। स्थान स्थान पर जलाभूमि और गहरी झील देखी जाती हैं। अधिक पानी रहनेके कारण समूचा जिला उर्वरा तथा वृक्षादि से परिपूर्ण है। जिलेके उत्तर और मध्यांशमें विस्तीर्ण शालवन है

पर्वत श्रेणीके निम्नभागमें तराई है। घने जंगल हो कर अनेक जलस्रोत प्रवाहित हैं। यहांके पहाड़ी अधिवासी देखनेमें ठीक गोर्खा या नैपालीके जैसे होते हैं। उनमेंसे थारु जातिकी ही संख्या अधिक है। सिर्फ थारु जातिके मनुष्य वर्षाऋतुमें तराई भूमिमें रह सकते दूसरी कोई जाति रह नहीं सकती है, क्योंकि इस समय भयानक महामारी फैला करती है। जिलेके दक्षिण की ओर जितना ही अग्रसर होते जाय उतनाही सुशो भित खेतकी कतार दृष्टिगत होती है।

अधिक वर्षा होनेसे भमि उपत्यकाका जल पूर्व ओर की झीलमें मिल कर एक समुद्रका आकार धारण करता है। इस जिलेकी प्रधान नदियोंके नाम ये हैं—राप्ती, घर्घरा, बड़ी गण्डक, कुआना, रोहिणी, अमि और गुड्‌घी। इसके अलावा रामगड़, नन्दौर, नखर, मौड़ि, चिलुरा, और अमियरताल प्रभृति कई एक झील है।

घर्घरा नदीके उत्तर तथा अयोध्या और बिहारके मध्य जो सब स्थान वर्तमान समयमें गोरखपुर और बस्ति जिलेमें बटे हैं वे प्राचीन कोशल राज्यके अन्तर्गत थे और अयोध्या नगरी उक्त राज्यकी राजधानी थी। गौतम बुद्ध इस जिलेके निकट कपिलवास्तु नगरमें पैदा हुये थे। वर्तमान तराईके 'भूइला' नामक स्थानमें उनकी मृत्यु हुई थी। आजतक भी उनके समाधिस्थानके ऊपर एक खोदी हुई बड़ी मूर्त्ति विद्यमान है।

ऐसा प्रवाद है कि अयोधाके सूर्यवंशीय किसी राजाने इस जिलेमें काशीधामके सदृश गौरवविशिष्ट एक बड़ी नगरी स्थापन करनेकी चेष्टा की थी। जब वे उक्त नगरको सम्पूर्ण रूपसे निर्माण कर चुके, तब उस समय थारु और भरजातिने आ उन्हें पराभ्त किया तथा नगरको बरबाद कर डाला। बहुत समयसे यह जाति अयोधा और गङ्गाके उत्तर पूर्व स्थान पर राज्य करती रही बौद्ध धर्मके उत्थानके साथ साथ फिर भी इनकी अनेक घटनाएं

जानी जाती है। भरजातिके सर्दार पहले स्वाधीन भावसे राजत्व करते थे, अन्तको वे मगधके बौद्धराजाके आश्रित हुए। बौद्धोंके अधःपतनके बाद हिन्दुओंकी प्रधानता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। ६०० ई०को कनौजके हिन्दू राजाओंने इस जिले पर आक्रमण तथा वर्तमान गोरखपुर नगर तक अधिकार किया था। चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्ग जब इस देशको देखने आये उस समय वे बहुतसे बौद्धमठ और स्तूपादि देख गये थे। ८०० ई०में दोमहतार नामक किसी ब्राह्मणके दलने राठौरोंको गोरखपुरसे भगा दिया था। ११वीं शताब्दीमें नागरराज विष्णुसेन इस राज्यके सामन्त (राजा) थे, किन्तु उस समय भरजाति भी जिलेके पश्चिममें राज्य करती थी। इसके बाद मोगलसम्राट् अकबरके समयमें जयपुरके राजासे उन दोनोंका सम्पूर्ण रूपसे अधःपतन हुआ। १४वीं शताब्दीके प्रारम्भमें मुसलमानोंसे भगाये हुए राजपूत राजगण इस जिलेमें आये। उनमेंसे धूरचंद धूड़ियापाड़ेमें और चन्द्रसेन शतासी नामक स्थानमें आ कर रहने लगे थे। चन्द्रसेन दोमानगढ़ पर (वर्तमान गोरखपुर दुर्ग) आक्रमण कर दोमहतारके सर्दारको मार कर आप राजा बन बैठे। इसी शताब्दीमें बतवल और बंसीके राजाओंके साथ घमसान युद्ध होनेसे जिलेका अधिकांश मरुभूमिसा हो गया था। १३५०से १४५० ई० तक शतासी और मझहोलेके राजाओंमें अविच्छेद युद्ध होता रहा।

प्रायः १४०० ई०में गोरखपुर नगर स्थापित हुआ। उक्त ई०के बाद यह जिला क्रमशः विभक्त होने लगा। मझ्होलीवंशने दक्षिणपूर्व अधिकार किया था और धूरचन्दके वंशधर दक्षिण-पश्चिमांशमें राज्य करते थे। इसके बाद आवनला और शतासी राज्य तथा जिलेके उत्तर पश्चिमांशमें छोटा बनवल राज्य संगठित हुए। उक्त राजगण स्वाधीनभावसे राज्य करते थे।

मोगल राजत्वके पहले थोड़े मुसलमान घर्घरा नदी पार हुए थे। लेकिन वे इस प्रदेशको आ न सके १५७६ ई०में बङ्गेश्वर दाउद खाँको परास्त कर अकबरका सैन्य दल इस जिला हो कर आया था तथा जिन राजाओंने उसे जाते रोका था, सम्राट्के सेनापति फदाई खाँने उन सबको पराजित कर गोरखपुर दखल किया। औरङ्गजेबके समयमें उनके लड़के बहादुरशाह शिकारके उद्देशसे इस जिलेको देखने आये थे। परन्तु १७२१ ई०में लखनऊ नगरमें अयोध्याके नवाब वजीरके प्रतिष्ठित होनेके पहले मुसलमानोंका गोरखपुरके ऊपर विशेष लक्ष्य न था। उस समय देशीय राजा इस प्रदेशमें राज्य करते थे। नवाब सयादत् अली राजगद्दी पर बैठ गोरखपुर पर अधिकार करनेका यत्न करने लगे थे। १७५० ई०में अली कासीम खाँने बहुतसी सेना ले गोरखपुर हस्तगत किया। इस समय मुसलमान गोरखपुरके राजासे कर ले लेते और कोई उत्पात नहीं मचाते थे, देशीय राजाओंसे जो कुछ मिलता, उसे ही सहर्ष ग्रहण करते थे। १८ वीं शताब्दीमें बञ्जारके उपद्रवसे यह जिला विशेष क्षतिग्रस्त हो गया। १७२५ ई०में बञ्जरा पहले पहल देखे गये थे। तीस वर्ष तक वे शान्त रहे, इसके बाद ये बंसीके राजाके साथ मिल दूसरे दूसरे सर्दारोंको कष्ट पहुंचाने लगे थे। इस समय अयोध्याके नवाबके मनुष्य प्रजाकी धन सम्पत्ति लूट रहे थे। प्रजाके हाहाकारसे आकाश विदीर्ण हो उठा। १७४४ ई०में बक्सरकी लड़ाईके बाद एक वृटिश सेनापतिके ऊपर नवाबके सैन्य परिचालन और गोरखपुरसे कर वसूल करनेका भार सौंपा गया। इन्होंने बहुतसे ताल्लुकदारोंको जमीन ठीका दे दी। ठीका पाकर वे प्रजासे मन माना कर लिया करते थे। १८०१ ई०की सन्धिके अनुसार अयोध्याके नवाबने वृटिश गवर्मेंटको यह जिला दे दिया। वृटिश गवर्मेंटने गोरखपुर, आजमगढ़ और बस्ति जिलेमें शासनका सुप्रबन्ध कर दिया। समय समय पर प्रजाओंके राजत्वको भी घटाने लगे। १८१३ ई०में नेपालियोंने गोरखपुर पर आक्रमण किया, किन्तु थोड़े समयके बाद ही वे लौट जानेके लिये बाध्य हुए। इस समयसे लेकर सिपाही विद्रोह तक यहां किसी तरहकी गड़बड़ी न हुई। १८५७ ई०के अगस्त मासमें मुहम्मद होसेनके अधीनमें विद्रोहियोंने इस जिलेपर अधिकार किया था १८५८ ई०की ६ठी जनवरीको जङ्गबहादुरने गोर्खासैन्यके साथ आ मुहम्मद होसेन और दूसरे दूसरे विद्रोहियोंको गोरखपुर जिलेसे भगा दिया। तभीसे यह जिला वृटिश

गवर्मेण्टके अधीन आ रहा है। यहां एक एक राजाके अधीन बहुतसे परगने हैं।

यहां ज्वार, बाजरा, जौ, गेहूं, उर्द और मूंग बहुत उपजते हैं। जंगलमें शहद यथेष्ट पाया जाता है। यहांका बढाज नामक स्थान वाणिज्यके लिये प्रधान है। फैजाबाद, अकबरपुर, जमानिया प्रभृति स्थानमें अनेक तरहके कारबार हैं।

इस जिलेको जलवायु स्वास्थ्यकर है। पर्वतके निकट होनेके कारण गरमी और जाडा अधिक नहीं पड़ता। परन्तु तराई और जङ्गल अंशमें मलेरिया ज्वरका यथेष्ट प्रादुर्भाव है। गोरखपुर, रुद्रपुर कसिया और बडलगञ्जमें दातव्य औषधालय है। यहां ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी, शेख, सैयद, मोगल और पठान रहते हैं। हिन्दू अधिवासियोंमें ब्राह्मण और कर्मी जाति तथा मुसलमानोंमें शेखोंकी संख्या अधिक है।

यहां चीनी परिष्कार करनेका प्रधान व्यवसाय है तथा नीलका भी कारबार यहां अधिक होता है। यहांसे चावल, जौ, गेहूं और चीनीकी रफ्तनी दूर दूर देशोंमें होती है और दूसरे देशसे नमक, धातु मट्टीका तेल इत्यादि आते हैं। घघरा नदी तथा B N R द्वारा व्यापार किया जाता है। यहांकी सडक अच्छी नहीं होनेके कारण व्यापारमें कुछ बाधा पहुंचती है। गोरखपुर शहरसे गाजीपुर और फयजाबाद तथा उरहजसे पडरौना तक जो सडक गई है वही कुछ कुछ अच्छी है। और सब जगहकी सडक वर्षाके दिनोंमें कीचडसे भर जाती है। यहां कई बार भयानक दुर्भिक्ष पड़ा है। औरङ्गजेबके समय तथा १८वीं शताब्दीमें ऐसा अकाल हुआ था कि अगसो हि सकपण मनुष्योंको पकड पकड खानेको ले जाते थे। अब गवर्मेण्टने दुर्भिक्षसे बचनेके लिये अच्छी व्यवस्था कर दी है।

पडरौना तहसील एक स्वतन्त्र उपविभाग हो गया है और यह इण्डियन सिविल सर्विसके मेम्बरोंके अधीन है। तथा हाता तहसील डेपुटी कमिश्नरको देख भालमें है। इसके अलावा यहां तीन जिला मुन्सिफ और एक सबजज हैं। इन्होंके हाथमें समस्त गोरखपुर तथा बास्तके राज्य कार्यका प्रबन्ध है। पहले यहां राजस्वविभागका प्रबन्ध अच्छा नहीं था, किन्तु अब उपजके अनुसार मालगुजारी ली जाती और प्रजा चैनसे रहती है। यहांकी राजस्व आय २५ लाख रुपये की है।

यह जिला शिक्षामें बहुत पीछे पडा हुआ है। अब गवर्मेण्टने विद्योन्नतिके लिए अधिक रुपये खर्च करके बहुतसे स्कूल खोले। आजकल यहां ८० स्कूल ऐसे हैं जिनमें गवर्मेण्ट कुछ आर्थिक सहायता देती है और थोडेको सरकार स्वयं चलाती है। स्कूलके अतिरिक्त यहां अब कालेज भी संगठित हुए हैं। स्कूल विभागमें लगभग ८४००० रुपये खर्च होते हैं।

यहां १३ चिकित्सालय हैं, बहुतोंमें रोगी भी रखे जाते हैं।

३ उक्त जिलेकी एक प्रधान तहसील। यह अक्षा० २६ २८ से २७ ७० और ८३ १२ से ८३ ३८ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ६५ वर्गमील और लोकसंख्या लगभग ४८६०११ है। इसमें १०८० ग्राम और दो शहर लगते हैं। यह तहसील रामो आमी और रोहिणी नदियोंमें बंट गई है।

४ उक्त जिले और तहसीलका नगर और शहर। यह अक्षा० २६ ४५ और देशा० ८३ २° पू०में बङ्गाल और उत्तर पश्चिम रेलवे किनारे राप्ती नदी पर पड़ता है। यह लगभग कलकत्तेसे रेलद्वारा ५०६ मील और बम्बईसे १०५६ मीलकी दूरी पर अवस्थित है। कहा जाता है कि यह शहर १४०० ई०में सतासी परिवारकी किसी श्रेणीसे स्थापित किया गया है। अकबरके समयमें यह अवध सूबाके सरकारका सदर था। १६१० ई०में हिन्दुओंने मुसलमानको भगा कर अपना अधिकार इस पर १६८० तक जमाया। अठारवीं शताब्दीमें यह अवधमें मिला दिया गया। यहां जिलेका सदर अदालत विचारालय, कारागार, दातव्य औषधालय और म्युनिसपालिटी है।

गोरखमुण्डी (हि० स्त्री०) एक तरहकी घास जिसकी पत्तियां लगभग एक अङ्गुल लम्बी होती हैं। इसमें गुलाबी रंगके पुष्प लगते जो रक्तशोधनके लिये बहुत उपकारी हैं।

गोरखर (फा० पु०) पश्चिमी भारत और मध्य एशियामें पाये

जानेवाला एक तरहका पशु जो गधेसे बड़ा और घोड़ेसे छोटा होता है। यह प्रायः तीन हाथ ऊंचा और पांच छः हाथ लम्बा होता है। इसका पेट श्वेत और शेष अङ्ग हिरनके रंगका होता है। यह द्रुतगामी एवं इसके कान बड़े और दुम पर रोएं होते हैं। ये मैदानमें झुंडके झुंड रहते और हरी घास तथा पत्तियां खा कर जीवन निर्वाह करते हैं।

गोरखा (हिं० पु०) १ नेपालके अन्तर्गत एक प्रदेश। २ गोरख देशका रहनेवाला। गोरखा देखो।

गोरखाली (हिं० पु०) नेपालके मध्य गोरखा नामक प्रदेश।

गोरडु (सं० पु०-स्त्री०) गवा वाचारङ्गुरिव। १ एक तरहका जलपक्षी। २ लग्नक, जमीनदार। ३ बन्दी, कैदी।

गोरचकरा (देश०) एक तरहका जंगली पौधा जो मन जातिका होता और जिसके पत्ते घीकुआरकी तरह चिकने और लम्बे होते हैं। फिलहाल शोभाके लिये यह पौधा उद्यानमें लगाया जाता है। इसमें छोटे छोटे फल भी लगते हैं। यह दवाईमें बहुत उपयोगी है। इसका गुण कड़ुआ, गरम, भारी दस्तावर, और प्रमेह, कोढ़, त्रिदोष, रुधिरविकार तथा विषमज्वरनाशक है।

गोरज (सं० पु०) गौके खुरोंसे उड़ी हुई गर्द वा धूल।

गोरट (सं० पु०) गवि रहति रट-अच्। खदिर, खैर।

गोरटा (हिं० वि०) गोरे रंगवाला, गोरा।

गोरण (सं० क्ली०) गुर भावे ल्युट्। उत्तोलन, उद्यम।

गोरगटल—मन्द्राजके कर्णूल जिलेके अन्तर्गत और कर्णूल नगरसे ८० कोस दक्षिणमें अवस्थित एक ग्राम। यहां बहुतसे प्राचीन मन्दिर और उनमें उत्कीर्ण शिलालिपि हैं।

गोरथ (सं० पु०) मगधदेशस्थित एक मनोरम पर्वत।

गोरथक (सं० पु०) गोयान, बैलकी गाड़ी।

गोरन (देश०) एक तरहका छोटा पेड़। इसकी लकड़ी लाल होती है। और किश्तियां बनाने और इमारतके काममें आता है। चमार इसके छिलकेसे चमड़ा सिद्ध करता है। यह वृक्ष सिंध, बंगालकी नदियों और समुद्रके किनारेकी भीगी जमीनमें अधिकतासे होता है।

गोरमा (सं० स्त्री०) तृणविशेष, एक तरहकी सुगन्धि घास।

गोरभस (सं० त्रि०) गोः पयस्तद् रसम् इव गो वीर्य यस्य, बहुव्री०। वीर्यवान्, बलिष्ठ।

गोरया (देश०) अग्रहायण मासमें होनेवाला एक तरहका धान। इस धानका चावल बहुत दिन तक रख सकते हैं।

गोरल (देश०) एक तरहका जंगली बकरा।

गोरखा (देश०) एक तरहका ग्राम। इसकी छोटी छोटी टहनियोंसे कुएं के नीचे बनाये जाते हैं।

गोरवाल—गुजरात प्रदेशकी एक ब्राह्मण जाति। उदयपुरके राजाने इन ब्राह्मणोंको बुलाकर अपने यहां यज्ञ किया था। यज्ञकी समाप्ति होने पर इन्हें राजाकी ओरसे बाईस गाँव दान दक्षिणामें मिले थे जिनमेंसे गोल नामक ग्राम प्रसिद्ध था। उसी गोलके नामसे ये गोलवाल या गोरवाल ब्राह्मण कहलाने लगे हैं।

गोरस (सं० पु०) गवां रसः, ६-तत्। १ गोदुग्ध, गायका दूध। २ दधि, दही। ३ तक्र, मठा, छाछ ४ वाक्यगत रस इन्द्रियोंका सुख।

गोरसज (सं० क्ली०) गोरसात् जायते गो रस-जन-ड। १ तक्र, मठा, छाछ। (त्रि०) जो गोरससे तैयार हो।

गोरसर (देश०) बाँसके पंखोंकी डंटीमें बंधी हुई पतली कमाची।

गोरसा (हिं० पु०) गायके दूधसे पाला हुआ बच्चा।

गोरसी (हिं० स्त्री०) दूध गर्म करनेकी अंगीठी।

गोरस्तान (फा० पु०) कब्र, मुर्दा गाड़नेकी जगह।

गोरा (हिं० वि०) १ गौरवर्ण, श्वेत और स्वच्छ वर्णवाला। (देश०) २ नीलके कारखानेकी एक तरहकी कल। ३ लंबोदरा आकारका एक तरहका नींबू।

गोराई (हिं० स्त्री०) १ गोरापन। २ सुन्दरता, सौंदर्य।

गोराचन्द—एक मुसलमानधर्मावलम्बी फकीर। ये पीर-गोराचन्द नामसे मशहूर हैं। ऐसा प्रवाद है कि एक समय ये मक्का दर्शन कर सुन्दल नामक नौकरके साथ लौटे आ रहे थे। हतियागढ़ परगनेके निकट दो पिशाचने उन पर आक्रमण किया। बहु काल युद्धके बाद उनमेंसे एक मारा गया, किन्तु दूसरेने गोराचन्दको विशेष रूपसे चोट दी और उनके कंधेको दो खण्ड कर दिये

रस्तेके स्रोतमें गोराचन्द बहने लगे। इन्होंने सुन्दलको पान ला कर स्वस्थानको वापस देनेके लिए कहा, किन्तु पान कहीं भी पाया न गया। तब गोराचन्द पानके अन्वेषणमें बालान्दा परगनेको गये। वहां वे घोड़ेसे गिर मृतवत् हो गये। इस समय गोराचन्दने सुन्दलको माताके पास जा कर यह सम्वाद देनेके लिए कहा। इस स्थानमें कालुघोषको कपिला नामकी एक गाय थी, वह गाय गुप्तभावसे जङ्गलमें आ गोराचन्दको दूध दे जाती थी। वही दूध पीकर गोराचन्द जीवन धारण करते थे। ग्वाला कालुघोषने देखा कि कपिला गाय अब उसे दूध नहीं देती, इसका क्या कारण है? अन्तमें धीरे धीरे उसने कपिलाके इस रहस्यको जान लिया। कालु कपिलाको मारनेके लिए दौड़ा। यह देख गोराचन्द कालुको शाप देनेके लिये उद्यत हुए। तब कालुने उनका पैर पकड़ कहा "प्रभो! आज्ञा कीजिए मैं और मेरे भाई मिल आपका सत्कार करें।" अन्तमें गोराचन्द कह गए थे "देखो। इस बालान्दामें कोई भी पानकी खेती न करे, जो पान उपजायगा, वह अवश्य नाश होगा।" यह कहते हुए वे परलोकको सिधारे। कालुघोष और उसके भाइने गोराचन्दको गाड़ दिया तथा उनको कब्रके ऊपर वे प्रतिदिन प्रकाश दिया करते थे। थोड़े दिनके बाद उस स्थान पर एक मस्जिद निर्मित हुई।

बालान्दाके अन्तर्गत हाड़ोया नामक ग्राममें प्रतिवर्ष फाल्गुन मासको गोराचन्दके सम्मानार्थ एक बड़ा मेला लगा करता है, इसमें हजारों मनुष्य जुटते हैं। कालुघोषके वंशधर आज भी गोराचन्दकी कब्रके ऊपर फल और दूध उत्सर्ग करते हैं। तभीसे बालान्दामें कोई मनुष्य पानकी खेती नहीं करते हैं।*

गोराज (स० पु०) गवां राजा, ६ तत्, समासान्त टच्। श्रेष्ठवृष, साँड़।

गोराटिका (स० स्त्री०) गा वाचं रटति रट ण्वुल्। शारिका पक्षी, मैना।

गोराटी (स० स्त्री०) गां वाचं रटति रट अण् ङीप्। शारिका पक्षी मैना।

* Ralph Smyth • Statistical and Geographical Report of the 24 Pergunnahs p 83-84

गोराटु (देश०) बालू मिश्रित मट्टी जिसमें कोदो बहुत उत्पन्न होता है। यह मट्टी गुजरातमें बहुत होती है।

गोरामृग (हिं० पु०) एक प्रकारको जङ्गली मृग जो दुर्भिक्षके समय दीन मनुष्य खाते हैं।

गोरिका (स० स्त्री०) गोराटिका पृषोदरादित्वात् साधु। शारिका।

गोरिल्ला (अ० पु०) अफ्रिकामें पाया जानेवाला एक तरहका वनमानुष। यह काले वर्णका होता एवं इसके कान छोटे और हाथ बहुत बड़े होते हैं। यह बहुत बलिष्ठ पशु है, इसको ऊंचाई प्रायः साढ़े पांच फुटकी होती है। यह वृक्ष पर झोपड़े बना कर रहता है। इसका प्रधान भोजन फल है। इसके शरीरकी बनावट मनुष्यसे बहुत कुछ मिलती जुलती है।

गोरिबिन्दूर—महिसुरमें कोलार जिलेके अन्तर्गत एक तालुक। इसका भूपरिमाण १५३ वर्गमील है। यहांकी जमीन उर्वरा होनेके कारण धान, हरिद्रा (हल्दी), नारियल, सुपारी और ईख यथेष्ट होती है।

२ उक्त तालुकका प्रधान नगर। यह अक्षा० १३ ३७ उ० और देशा० ७७ ३२´ ५० पू०में पिनाकिनी नदीके वाए तीर पर अवस्थित है। यह नगर बहुत प्राचीन है।

गोरी (हिं० स्त्री०) सुन्दर और गौर वर्णकी स्त्री, रूपवती स्त्री।

गोरोमर (स० पु०) मानसा, उग्रशा।

गोरुकलु—मन्द्राजमें कर्णूल जिलेका एक विध्वस्त प्राचीन नगर। यह नन्द्यालसे सात मील उत्तर पश्चिममें अवस्थित है। यहां भैरव तथा वीरभद्रके ध्वंसावशिष्ट अति प्राचीन मन्दिर हैं।

गोरुची (स० स्त्री०) गोरोचना देखो।

गोरुत (स० क्ली०) गवां रुत, ६ तत। १ गोरव, गौका शब्द गोरुत श्रुतिगोचरत्वेनास्त्यस्य गोरुत अर्शआदित्वादच्। २ दो कोस

गोरू (हिं० पु०) १ सींगवाला पशु, गाय, बैल, भैंस प्रभृति मवेशी। २ दो कोसका मान।

गोरूप (स० क्ली०) गवां रूप, ६-तत्। १ गौका रूप, गौकी आकृति। (पु०) २ शिव महादेव। (भारत १३।१७)

गोरीच (सं० क्ली०) गवां किरणेन गोचते रुच-अच्। हरिताल, हरताल।

गोरोचना (सं० स्त्री०) गाभ्यो जाता रोचनेव। पीले रंग-का एक तरहका सुगन्धि द्रव्य, गौके मस्तकस्थित शुष्क पित्त। इसका संस्कृत पर्याय—रुचि, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, शिवा, पीता, गौतमी, गव्या, वन्दनीया, काञ्चनी, मेध्या, मनोरमा, श्यामा, रामा, वन्द्या, रोचना है। इसका गुण—शीतल, तिक्त, वश्य, मङ्गल और कान्तिकारी, विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव और क्षतरक्तनिवारक है। (भाव प्रकाश) तन्त्रके मतसे गोरोचना द्वारा देवयन्त्र प्रस्तुत किया जा सकता है। पण्डितगण इससे देवताओंके कवच प्रभृति लिखा करते हैं।

गोर्खा—नेपाल राज्यके अन्तर्गत एक जिला। यह गण्डकी नदीके उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। मसियांदि और त्रिशूल गङ्गा नदीके मध्यवर्त्ती समुदाय भूभाग इस जिलेका अन्तर्गत है। यहां लगभग दो हजार घर और राज-प्रासाद है। राजप्रासाद अत्यन्त भग्नावस्थामें पड़ा है।

गोर्खा—उक्त जिलेके रहनेवाले। ये गोर्खाली भी कह-लाते हैं। अभी नेपाल और उसकी तराईके रहनेवाले मनुष्य अपनेको गोर्खा कहा करते हैं। किन्तु जिनके पूर्व-पुरुष गोर्खा नामक जनपदमें वास कर स्वाधीन और प्रवल हो उठे थे, वे ही यथार्थ गोर्खा या गोर्खाली हैं। पृथ्वीनारायणके अभ्युदयमें उनके साथ ये भी नेपालके भिन्न भिन्न स्थानोंमें फैले हुये थे। नेपालमें गोर्खा राजाओं-का विवरण देख। इनका कथन है कि एक समय गुरु गोरक्ष-नाथ नेपालको आये, जिस स्थानमें रह कर उन्होंने १२ वर्ष तक कठोर तपस्या की थी, वही स्थान उनके नामा-नुसार गोर्खा नामसे परिचित हुआ है। ये भी गोरक्ष-नाथको विशेष भक्ति श्रद्धा करते और शिवावतार गोरक्ष-के शिष्यके जैसे परिचय देते हुए "गोरक्षा" या गोर्खा नामसे अभिहित है।

गोर्खा कोई भिन्न जाति नहीं है। गोर्खाराज पृथ्वी-नारायणके साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय, मगर, गुरुङ्ग, कामाई, धामाई प्रभृति नाना जातियोंने अस्त्रधारण किया था, आजकल वे ही गोर्खा नामसे परिचित है

गोर्खे बलिष्ठ, साहसी, दृढ़काय, मध्यवाटी और कष्ट-सहिष्णु होते हैं। पार्वतीय युद्धमें इनके समान योद्धा भारतमें और दूसरे नहीं हैं। इनके शरीरको गठन चीन या तातारोंसा तथा आंख छोटी और नाक चिपटी होती है।

११ वीं शताब्दीमें मुसलमानके आक्रमणसे पीड़ित हो हिन्दूराजाओंने ससैन्य नेपालके पार्वतीय प्रदेशमें आ आत्मरक्षा की थी। किसी किसीका मत है कि उन्हीं हिन्दुओंके साथ यहांके मगर, गुरुङ्ग प्रभृति जातिकी स्त्रियोंके संस्रवसे गोर्खाकी उत्पत्ति है। नेपालके गोर्खा नामक स्थानमें यही गोर्खा बहुत दिन तक निरापदसे शान्तिसुख भोग करते थे। उनके सर्दार नाममात्र नेपाल-राजाके अधीन थे। १७६८ ई०के कुछ पहले मुहम्मद तुगलक नेपाल जीतनेके लिये आगे बढ़े थे, किन्तु चीन सैन्य आ तुगलककी पराजय कर नेपालसे भगा दिया। इस समय भाटगांव, काठमांडू और ललितपत्तनके राजा-ओंमें शत्रुता थी। पृथ्वीनारायण उस समय गोर्खाओंके राजा थे। वे अपनेको उदयपुरके राणाके वंशधर बत-लाते थे। भाटगाँवके राजाने दूसरे राजाओंके विरुद्ध पृथ्वीनारायणका साहाय्य प्रार्थना की थी, किन्तु जब उन्होंने देखा कि पृथ्वीनारायणसे सहायता पाना तो दूर रहे, गोर्खाधीप ही उनके विपक्ष हो उठे हैं; तब उक्त तीन स्थानके राजा और उनके अधीनस्थ सामन्त सबके सब गोर्खाराज पृथ्वीनारायणके विपक्ष हो लड़ने लगे। किन्तु एक एक कर सब राजधानी गोर्खा सर्दारके हाथ आने लगी। अन्तमें एक राजा युद्धक्षेत्रमें मारे गये, दूसरे बन्दी हो कर कारागारमें मरे और शेष तीसरे राजा भाग कर वृटिश गवर्मेण्टके आश्रयमें आकर रहे। वृटिश गवर्मेण्टने उनकी सहायताके लिये सेना भेजी थी, किन्तु वे कुछ कर न सके। पृथ्वीनारायणकी मृत्युके बाद उन-के पौत्रके प्रतिनिधि गोर्खावीर बहादुर शाहने गोर्खासैन्य के साहाय्यसे समस्त नेपाल और भोटके बहुत अंशों पर अधिकार जमा लिया।

अब गोर्खा सिकिम राज्य जीतनेके लिये अग्रसर हुए। १८१४ ई०में वृटिश गवर्मेण्ट और गोर्खामें लड़ाई छिड़ी। पहले गोर्खाने बहुतसी अंगरेजी सेना नष्ट कर दी।

दूसरे वर्ष सर डेविड अक्टरलोनोने दृटिश गौरवको बचानेके लिये प्रबल प्रतापसे गोर्खों पर आक्रमण किया, किन्तु वे भी कुछ विशेष हानि पहुंचा न सके। १८१६ ई०में दृटिश गवर्मेण्ट और नेपाल राजामें सन्धि हो गई, जिससे दृटिश गवर्मेण्टने कौशलक्रमसे गोर्खाके कई एक स्थान ले लिये।

सन्धिके अनुसार नेपालकी राजधानी काठमाण्डू में एक दृटिश रेसिडेण्ट रहने लगा। १८४०-४१ ई०में सिख युद्धके समय नेपालके गोर्खा भी अंगरेजके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये प्रस्तुत थे, किन्तु दृटिश रेसिडेण्ट सुविज्ञ ब्रायण हजसन साहबके कौशलसे कोई घटना न होने पायी थी। १८३३ ई०में हजसन साहबने गोर्खा सैन्यके युद्धनिपुणताका परिचय देते हुए दृटिश गवर्नमेण्टको एक पत्र लिखा तथा नेपालसे गोर्खा सैन्य संग्रह कर दृटिश सैन्यमें नियुक्त करनेका अनुरोध किया था। दृटिश गवर्मेण्टने आदरपूर्वक इनके प्रस्तावको समर्थन किया। गोर्खा भारतवासियोंको "म्लेच्छिया" समझ कर घृणा करते हैं। पहले वे दृटिशके अधीन नोकरी करना नहीं चाहते थे, परन्तु जो गोर्खा सैन्य नेपालराज सरकारमें नियुक्त नहीं थे, वे ही हजसन साहबके कहनेसे दृटिश राज्य आनेमें स्वीकृत हुए थे। धीरे धीरे इसी तरह प्राय तीस हजार सैन्य दृटिश सेनामें भर्ती हुए। उस समय चतुर नेपाल राजाने छेड छाड की थी कि दृटिश गवर्मेण्ट नेपालसे किसीको भी ले जा नहीं सकती क्योंकि ऐसा होने पर नेपालराजका बल ह्रास होनेकी सम्भावना है। तभीसे दृटिश सरकार नेपालसे यथार्थ गोर्खा सेना संग्रह नहीं कर सकी, दृटिश अधिकारभुक्त नेपालकी तराईमें जो गोर्खा वास करते हैं, उन्हींसे उपयुक्त मनुष्य ले कर दृटिश गवर्नमेण्टके गोर्खासैन्य दल संगठित हुआ है। गोर्खा सैन्य अत्यन्त प्रभुभक्त, सत्यवादी और साहसी हैं। दृटिश सरकार गोर्खा सेनासे जितना उपकार पाती वह अकथनीय है। जङ्ग बहादुरने गोर्खा सैन्यकी सहायतासे सिपाही विद्रोहके समय दृटिश राजत्वकी रक्षा की थी। नेपाल राज्यके अधीन भी प्राय लाखसे अधिक गोर्खा सैन्य हैं।

गोर्खा—जातिविशेष। यह युक्तप्रदेशके खेरी जिलेमें रहते हैं। संख्या ८६३ से अधिक नहीं। कहते हैं, पहले वह कहूण क्षत्रिय थे, गोरखपुरसे खेरीमें जा करके रहने पर गोरखिया कहलाये। फिर गोरखिया शब्द बिगड करके गोर्खा बन गया। यह अपनेको चित्तोरसे आया हुआ बतलाते हैं। पहले छह भाई थे। जब किसी शत्रुने उन पर आक्रमण किया, सिर्फ दो भाई आ करके लड़े —चार भयभीत हो छिप करके बैठ रहे। विजयी होने पर दोनों वीर भाइयोंने अपने चार भीरु भ्राताओंको निकाल बाहर किया और उनसे अपना सब सम्बन्ध तोड लिया। इनको वंशावली भी थी परन्तु जङ्गल गोर्खोंकी असतर्कतामें आगसे जल करके भस्मीभूत हुई।

इनमें गोत्रकी बहुत कम बतला सकते हैं। विधवायें प्राय अपने पतिके किसी सम्बन्धीको ले करके रहती हैं। यह आस्तिक हिन्दू हैं। किसी अपने लोगोंके दूसरोंके हाथकी कच्ची या पक्की रसोई नहीं खाते। कहते हैं, कभी वह जमींदार थे। आजकल गोर्खा किसानी और मजदूरी करते हैं।

गोदं (क्ली०) गुद दद्‌न् निपातने साधु। अथर्व ९।७। ४।२८। १ मस्तिष्क, मगज, मस्तिकस्थ घृत, मगजका घी।

गोलअर (हि० पु०) १ गुंबद, गुंबज। २ गोलाई। ३ उद्यानमें बना हुआ गोल चबूतरा। ४ कालिब।

गोल (स० पु०) गुड अच् डस्य ल। १ वर्त्तुलाकार पदार्थ, जिसका घेरा वृत्ताकार हो, चक्रके आकारका हो। २ मदनवृक्ष, मैन फलका पेड। ३ विधवाका जारज पुत्र। ४ मुर नामकी औषध। ५ भास्कराचार्यका बना हुआ गोलाध्याय नामक ग्रन्थ। ६ वृत्त, क्षेत्रविशेष। (क्ली०) ७ मण्डल, गोलाकार पिण्ड, घटक। ८ ग्रहयोग विशेष। ग्रहकौमुदीके मतसे एक राशिमें छह ग्रहके रहनेसे गोलयोग हुआ करता है। ऐसे योगमें देवराज इन्द्र भी नाश हो सकते। मनुष्यगण राक्षस प्रकृतिके हो जाते, माता पुत्रके प्रति दया माया परित्याग करती, समस्त राजाओंका विनाश होता, वसुधामण्डल भीषण अनलमें ज्वलित हो जाता और नद नदी तड़ाग जलाशय सबके सब शुष्क पड जाते हैं। मयूरचित्रकके मतसे सात ग्रहोंके एक राशिमें आ जानेसे गोलयोग होता है। ऐसी

को नलिकामें इस तरह रखें जिससे दण्डका अग्रभाग ध्रुवाभिमुखी हो। इसके बाद दण्डके आगे सरलपथमें पूर्वाभिमुखी एक जलप्रवाह ऐसा बनावें कि उसमें गोल के नीचेका भाग उसके पश्चात् भागमें आहत हो। आघात सबको देखनेमें न आवे, इसीलिये वस्त्रसे ढांक देनेके लिये ऊपर कहा गया है कोई कोई कहते हैं कि आकाशकी नाईं प्रस्तुत करना ही वस्त्राच्छादनका उद्देश्य है। वह वस्त्र जलसे भींगने न पावे, इसीलिये उसको चिकने वस्तु द्वारा अर्थात् जिसके लेप देनेसे वस्त्र न तो जले और न भींगे ऐसे द्रव्योंसे लेपना चाहिए। गोलके चारों ओर खाईकी नाईं इस तरहकी दीवार बनी रहे जिससे क्षितिजवृत्तके सदृश उस खाईमें गोलका अधोभाग आच्छन्न रह कर दृष्टिगोचर न हो। आधार दण्डका दक्षिण भाग शिथिल करना चाहिए, नहीं तो गोल घूम नहीं सकेगा और पूर्व परिवा विभागके बाहर आदृश्य जल प्रवाह करना चाहिए।

स्वयंवह करनेका दूसरा उपाय। गोल छेद कर वहिर्गत आधारदण्डके दोनों प्रान्तमें इच्छानुसार दो या तीन जगह परिधिकी तरह नेमि (चारखी) बना कर ताड़के पत्तेसे अच्छी तरह आच्छादन करें और उसमें एक छिद्र भी रहे। इस छिद्र द्वारा परिधिका आधा भाग परिमित पारा और दूसरे अर्द्धपरिमित जल देकर पूर्ण कर दें। छिद्रको बन्द कर देना चाहिए। दण्डका अग्रभाग दोनों ओरकी नलोमें इस तरहसे रखे जिससे गोल शून्य भावसे रह सके। पारा और जलमें आकर्षणशक्ति है। दोनोंके आकर्षणसे दण्ड आपसे आप घूम जायगा और उसके आश्रित गोल भी भ्रमण करने लगा।

सिद्धान्त-शिरोमणिके मतसे गोल तीन प्रकारका है, खगोल, भूगोल और दृक्गोल। इसका विशेष विवरण उन्हीं शब्दोंमें किया गया है। किस तरहसे गोल बाँधा जाता है उसीका ब्योरा इस स्थानमें दिखलाया गया है। चिकनी, गोल तथा भागचिन्हयुक्त सीधी बाँसकी शलाकासे गोल प्रस्तुत करे। एक सुन्दरका शालवन काष्ठका डंटा तैयार कर डंटेके मध्यस्थानमें शिथिलभावसे भूगोल बांध दें। उसके बाहरमें यथाक्रम चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति और शनिके ग्रहगोल और उपयुक्त स्थान पर भूगोल स्थापन करना पड़ता है। इसके बाहरको नलीमें खगोल और दृग्गोल रखना चाहिए। इस गोलके यथा स्थान पर गणित-शास्त्रानुसार पूर्व-पश्चिमवृत्त दक्षिणोत्तरवृत्त और कोणवृत्तद्वय प्रभृति वृत्त या कक्षा खींचें।

पहले जिन चार वृत्तोंकी कथा लिखी गई है, उन्हींके नीचे क्षितिजवृत्त रखना चाहिए। पहले कहे हुए दक्षिणोत्तरवृत्तके मध्य उत्तर क्षितिजवृत्तके ऊपर एक ध्रुव चिन्ह और दक्षिण क्षितिजवृत्तके ऊपर एक दूसरा ध्रुव-चिन्ह अङ्कित कर दें। समवृत्त और क्षितिजवृत्तके दोनों स्थानमें सम्पात है। इसके पहलेको पूर्व सम्पात और दूसरेको पश्चिम सम्पात कहा जा सकता है। संपातसे ध्रुव-चिन्ह तक एक मण्डल करें। इसका नाम उन्मण्डल है। इसी मण्डल द्वारा दिन और रात्रिका क्षय और वृद्धि जानी जाती है। पूर्व और पश्चिम सम्पातमें संलग्न दक्षिणोत्तरवृत्तके स्वस्तिक स्थानसे दक्षिण तथा अधः स्वस्तिक स्थानसे उत्तरमें अक्षांशकी दूरी पर एक वृत्त खींचें। इसका नाम विषुवद्वृत्त है।

ऊर्द्ध और अधस्तन स्वस्तिक स्थानमें दो कील मजबूतीसे रख उन पर दृग्वलय बांधना पड़ता है। दृग्वलयको पूर्वोक्त वृत्तोंसे छोटा करना होता है। जिससे खगोलमें उसको अच्छी तरह घुमाया जा सके। यदि ग्रहगोल सिर्फ एक रहे, तो एक दृङ्मण्डल बनानेसे ही काम चल सकता है। ग्रहलोक जिस स्थान पर रहेगा, इस मण्डलको घुमा कर उसके ऊपर ले जाना पड़ता है; ऐसा होनेसे दृग्ज्या और शङ्कु (कील) प्रभृति देखने आते हैं अथवा अलग अलग आठ दृङ्मण्डल बनावें। इसीका दूसरा नाम दृक्क्षेप मण्डल है।

खगोलके ध्रुवचिन्ह स्थानमें दो नली बांध उसमें खगोलके बाहर तीन अङ्गुलकी दूरी पर दृग्गोल बनावें। खगोलवृत्त, भगणवृत्त, क्रान्ति और विमण्डल प्रभृति इस गोलमें निबद्ध रहेंगे। खगोलमें अवस्थित क्षितिज और दक्षिणोत्तरवृत्तकी नाईं दो आधारवृत्त मजबूतीसे ध्रुवदण्डमें बाँधकर उसके ऊपर समान मण्डलाकारका एक दूसरा वृत्त बनावें। इस वृत्तको बराबर बराबर साठ भागोंमें विभक्त कर चिन्हित करना पड़ता है। इसका नाम नाड़ीवृत्त है।

नाडोवृत्तके बराबर एक दूसरा वृत्त खींच कर उसमें मेषादि द्वादश राशि अङ्कित करें अर्थात् बराबर बराबर बारह भागोंमें विभक्त करके चिन्हित करें। इसके नाम क्रान्तिवृत्त है। सूर्य इसी वृत्तमें भ्रमण करते हैं। रविसे आधी छायाके अन्तर पर पृथ्वीकी छाया है। इस वृत्तमें क्रान्तिपात मेषादिका विलोम क्रमसे घूमता है। ग्रहोंका विक्षेप पात भी इसीमें भ्रमण करता है इस वृत्तमें क्रान्तिपातादि स्थान अङ्कित करना चाहिए।

इस वृत्तमें एक क्रान्तिपात चिह्न कर उसमें ६ नक्षत्रको दूरी पर एक दूसरा चिह्न करें। यह चिह्न दो नाडो वृत्तके साथ योग कर पातचिह्नके आगे तीन नक्षत्रके अन्तर पर नाडीवृत्तसे २४ अंश उत्तरमें तथा दूसरे विभागमें तीन नक्षत्रके अन्तर पर २४ अंश दूर रहे। इसी तरह बांधना चाहिए। क्रान्तिवृत्तके जैसा एक दूसरा वृत्त खींच कर उसमें राशि अङ्क और मेषादिका क्षेपपातस्थान चिह्नित करें, इसका नाम विमण्डल है। क्रान्तिवृत्त और विमण्डलके दोनों क्षेपपातमें सम्पात कर उससे ६ नक्षत्रकी दूरी पर एक सम्पात करें। क्षेपपातके आगेसे तीन नक्षत्रके अन्तर पर क्रान्तिवृत्तके उत्तरस्फुट क्षेपभाग जितना होगा, उतनी ही दूरी पर तथा उसके पश्चाद् भागमें तीन नक्षत्रके अन्तर पर क्रान्तिका उतना ही भाग दक्षिणमें स्थिर कर विमण्डलको स्थापन करना चाहिये। इसी तरह चन्द्रादि ग्रहोंके छह विमण्डल करने होते हैं। चन्द्रप्रभृति ग्रहगण विमण्डलमें भ्रमण करते हैं।

क्रान्तिवृत्तके स्फुटग्रहस्थानके नाडीवृत्तमें वक्र रूपमें जितना अन्तर होता है, उसीको क्रान्ति कहते हैं। विमण्डलके ग्रहस्थानसे क्रान्तिवृत्तसे तिर्यक् रूपमें जितना अन्तर होगा, उसे विक्षेप और विमण्डलके ग्रहस्थानमें नाडीवृत्तसे तिर्यक् अन्तरको स्फुटक्रान्ति कहते हैं।

विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्तके सम्पातको क्रान्तिपात कहते हैं। यह क्रान्तिपात एक स्थानमें स्थिर नहीं रहता, धीरे धीरे पीछेकी ओर हट जाता है, अर्थात् मेषादिके पृष्ठभागमें विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्त आपसमें मिल जाता है उसीका नाम क्रान्तिपात है।

इस क्रान्तिको स्थिर कर ग्रहका स्फुट करना होता है। क्रान्तिवृत्त और विमण्डलके सम्पातको क्षेपपात कहते हैं। ग्रहसाधन करनेमें इसकी भी आवश्यकता होती है।

भूगोलके मध्य ग्रहगोल बांधना पड़ता है। पूर्व नियमके अनुसार ग्रहगोलमें भी विषुवद्वृत्त और क्रान्तिवृत्त बांधे। क्रान्तिवृत्तको कक्षामण्डल मान कर छेद्यकोक्त विधिके अनुसार प्रतिमण्डल बांधना होता है। प्रतिमण्डलमें गणितके अनुसार मेषादिका पातस्थान करें। एक दूसरा राशि अङ्क और क्रान्तिपातचिन्ह अङ्कित करना चाहिए। इसको विमण्डल कहा जा सकता है। प्रतिमण्डल और विमण्डलके पातचिह्नमें एक सम्पात कर उसके आधेके अन्तर पर एक दूसरा सम्पात करें। पातके अगले और पिछले भागसे तीन नक्षत्र अन्तर पर प्रतिमण्डलके दक्षिण और उत्तरमें जितना अंश विक्षेप होगा, उतने अंशको दूरी पर विमण्डल स्थापन करे। इस मण्डलमें मन्दस्फुट गतिसे ग्रह भ्रमण करते हैं। मेषादिके अनुलोमसे मन्दस्फुट चिन्ह करना पड़ता है। प्रतिमण्डलसे जितने दूर पर मन्दस्फुट हो, उस स्थान पर उतना ही विक्षेप हुआ करता है। ग्रह वृत्तके सम्पातस्थ होने पर विक्षेपका अभाव होता तथा तीन नक्षत्र दूरमें रहनेसे सर्वाधिक विक्षेप होता है। मध्यस्थित कालमें अनुपात अनुसार विक्षेप स्थिर करना चाहिए।

नाडी वृत्तके उत्तर और दक्षिणमें इष्ट क्रान्ति जितनी होगी, उतनी ही दूरमें अहोरात्रवृत्त बन्धन करना है। इसको साठ बराबर बराबर भागोंमें विभक्त करे। इस मण्डलमें सूर्यकी दैनिक गति हुआ करती है।

भूगोलके जैसा ग्रहगोल भी ध्रुवदण्डसे बांधना पड़ता है, भूगोलके अधमण्डलके नीचे सूत बांधकर ग्रहकक्षाको उसमें निबद्ध करें, इस प्रकार भूगोलको दण्डमें मजबूतीसे बांध कर दण्डकी दोनों ओर बंधे हुए दोनों नलियोंमें खगोल और ग्रहगोल रख भूगोलका भ्रमण अवलोकन करे। (विशेष विवरण ... और भूगोल शब्दमें लिखा गया है।)

गोल—दाक्षिणात्यमें बिजापुर जिलेके रहनेवाले ग्वालोंकी जाति। कहीं कहीं इन्हें गोल्ल या गोल्लेर कहा करते हैं। इनमें आडवि, इनम् कुण्ण, पाकनाक और शास्त्र प्रभृति

कई एक शाखायें हैं। एक शाखा दूसरी शाखासे पान भोजन और आदान प्रदान नहीं करती। कुणगोल किसी किसी स्थानमें यादव नामसे परिचित है। ये कनाड़ी भाषामें बोलते हैं, इससे अनुमान किया जाता है कि ये लोग निजाम राज्यसे इस प्रदेशमें आये हुए हैं।

कुणगोलमें कोई भी जनेऊ धारण नहीं करता है, इन्हीं लोगोंमेंसे एक स्वजाती गुरु होता जो 'उम्मोर' कहलाता है। वह गुरु विवाहके समय उपस्थित रहता है। इनका मृत शरीर जलाया जाता है।

मुद्दे विभाल उपविभागके तालिकोट, नलतिवाद और कौर नामक स्थानमें भिङ्गिगोल नामका एक दूसरी श्रेणीका वास है। ये देखनेमें 'इनम्'से मिलते जुलते हैं। ये साधारण गृहस्थ हैं। हनुमानके मन्दिरमें याजकता करनी ही इनका प्रधान कार्य है। इनके गुरुका नाम 'सोमिर' और सोमनाथ ही इन लोगोंका कुलदेवता हैं। ये मृत शरीरको जमीनमें गाड़ते हैं। इसके सिवा निजाम राज्यसे केड्गु गो नामकी एक और शाखा है। सफेद भेड़ा या वकराका व्यवसाय ही उनकी उपजीविका है। ये लोग भी हनुमान और क्षणाकी पूजा करते तथा मृतदेह जमीनमें गाड़ रखते हैं। प्रवाद है कि जिस समय वादामी उपविभागमें मनुष्योंका वास नहीं था, उसी समय अदेवानी या अदोनी प्रदेशसे ये इस प्रदेशमें आ कर बसे हैं।

आडवि या तेलगू गोल रास्ते रास्ते औषध बेचा करते हैं। इनमें याधव, मोरि, पवार, शिन्दे, यादव और महाराष्ट्रीयोंकी पदवी देखी जाती हैं। एक ही पदवीके वर और कन्यामें विवाह नहीं चलता। ये तेलगू और मराठी भाषा बोलते हैं, कुछ कुछ हिन्दुस्तानी भाषा भी जानते हैं।

ये रविवार और मङ्गलवारको गृहदेवताकी पूजाके लिए स्नान किया करते हैं। जिसे गृहदेवता नहीं होता, वह मारुती मन्दिरमें जा पूजा करता है। विवाहके बाद ये तुलजा भवानीके सामने बकरा बलिदान देते हैं। ये मद्य, ताड़ी, गाँजा, भाँग, तम्बाकू और अफीम खाना बहुत पसन्द करते हैं।

इस जातिके मनुष्य निर्दय, अभिमानी, चतुर और अपरिष्कार होते हैं। जब ये नशा नहीं खाते तब ये कर्मठ और मितव्ययी होते हैं। कार्तिक माससे अब्दमें जब वर्षा नहीं रहती, तब ये प्रायः दो तीन महीनों तक वन वनमें ओषधियां खोज कर संग्रह करते हैं।

स्त्रियां चटाई बुनतीं और खेतीके समय पुरुषोंकी मदद करती हैं।

ये बड़े धार्मिक होते। श्रावण मासमें प्रति मङ्गलवार और शनिवारको स्नान कर मारुतीकी पूजा किया करते हैं। खण्डोब, तुलजाभवानी, मरगाइ, पारसगढ़के ललमा और मिराजके मीर साहब इनके पूज्य हैं। समाजमें किसी तरहकी घटना उपस्थित होने पर वृद्ध मनुष्यसे इसका निपटारा करा लेते हैं।

गोलक (सं० पु०) गुड़-ण्वुल् टाप् नः। १ मणिक, अलिञ्जर। २ गुड़। ३ गन्धरस। ४ कलाय, मटर। गोल स्वार्थे कन्। ५ गोलाकृति पदार्थ। ६ गोलपिण्ड। ७ काल सर्पफल। ८ रक्त सुगन्ध बोल। ९ सुगन्ध रोहिषतृण। (क्ली०) १० गोलोकधाम। ११ आंखका डेला। १२ आंखकी पुतली। १३ मट्टीका बड़ा कुण्डा। १४ पुष्पोंका निकला हुआ सार, इत्र। १५ गुम्बद। १६ रुपये रखनेकी थैली या सन्दूक। १७ रोजाना आमदनी रखनेकी थैली या सन्दूक। १८ मनुप्रोक्त विधवाके गर्भोत्पन्न जारज पुत्र। (मनु० ३।१५६) ये अपनेको गोवर्द्धन ब्राह्मण कह कर परिचय देते हैं। बम्बई प्रदेशके नासिक, पूना धारवार, बेलगांव, शोलापुर प्रभृति स्थानमें वास करते हैं। शोलापुरमें इस जातिके मुण्ड, पुण्ड और रण्ड गोलक, बेलगाम और धारावारमें कुण्डगोलक और रण्ड-गोलक एवं नासिक जिलामें इनकी कई एक शाखायें हैं। केशमुण्डनकारिणी विधवा पुत्रका नाम मुण्डगोलक, पति मृत्युके एक वर्षके मध्य विधवासे जो पुत्र उत्पन्न होता उसे पुण्डगोलक, विवाहित होनेके पहले ब्राह्मण कन्यासे दूसरे ब्राह्मण द्वारा जो पुत्र उत्पन्न होता उसे कुण्डगोलक एवं विधवा ब्राह्मणीके गर्भजात पुत्रका नाम रण्डगोलक है। इनके भारद्वाज, भार्गव, काश्यप, कौशिक, सांख्यायन, वशिष्ठ और वत्स प्रभृति गोत्र हैं। भिन्न शाखा और एक गोत्रमें इन लोगोंका विवाह नहीं होता है। ये समस्त अपनेको प्रकृत ब्राह्मण कह कर परिचय देते हैं, किन्तु

दाक्षिणात्यक उच्च श्रेणीके ब्राह्मण इन्हें शूद्र समझते हैं। इनका आहार, व्यवहार और साजसज्जा देशस्थ ब्राह्मण ब्राह्मणोंके जैसा है। (*देशस्थ ब्राह्मण देखो।*)

दूसरे ब्राह्मणोंके जैसे ये भी उपनयनादि संस्कारके अधिकारी हैं, किन्तु किसी स्थानमें ब्राह्मण इन्हें वेदपाठ करने नहीं देते।

गोलकमल (हिं० पु०) चाँदीके पत्तर परकी नक्काशी ठीक करनेकी एक तरहकी छेनी।

गोलकली (हिं० स्त्री०) दक्षिण और मध्यभारतमें होने वाली एक तरहका अंगूर।

गोलकुण्डा—(गोलगोण्डा) मन्द्राजमें विशाखपत्तन जिलेके अन्तर्गत गवर्मेण्टका एक खास तालुक। यह अक्षा० १७ २२ तथा १८ ४ उ० और देशा० ८२' एवं ८२ ५ पू०के मध्य अवस्थित है। इस तालुकमें ५१७ ग्राम लगते और १५७४२६ मनुष्योंके वास हैं। क्षेत्रफल प्राय १२६३ वर्गमील है। यह तालुक पर्वतसे घिरा है और लगभग ७२८० वर्गमील गवर्मेण्टका वनविभाग है। पहले यह जयपुर राजाके कर्तृ राज्यको भूसम्पत्ति थी। १८३५ ई०में रानीके हत्याकाण्डके बाद गवर्मेण्टने इसे दखल किया था और जमींन्दार भी कारागार भेजे गये थे। दूसरे वर्ष गवर्मेण्टने नीलाम पर इसे खरीद किया। १८४५ ई०में स्थानीय सर्दार विद्रोही हो तीन वर्ष तक गोलकुण्डाको अपने अधिकारमें रखा था। फिर भी १८५७।५८ ई०में उनके विरुद्ध सेना भेजी गई और जमींदारी गवर्मेण्टके तालुकभुक्त हुई। नर्सीपत्तनमें इसको सदर अदालत और पुलिस है। इस तालुकके एक दूसर प्रधान नगरका नाम गोलकुण्डा है। यह अक्षा० १७ ४० ४०´ उ० और देशा० ८२ ३०´५० पू०में अवस्थित है।

गोलकुण्डा—निजाम राज्यके अन्तर्गत एक ध्वंसावशिष्ट नगर और दुर्ग। यह अक्षा० १७ २२ उ० और देशा० ७८ २४ पू०में हैदराबाद नगरसे ७ मील पश्चिममें अवस्थित है। यह दुर्ग वरङ्गलके राजासे निर्माण किया गया था। राजाने १३६४ ई०में इसे गुलबर्गके मुहम्मद शाह बाह्मनी पर सौंप दिया। कुछ काल तक यह मुहम्मद नगर नामसे प्रसिद्ध था। १५१२ ई०में यह बाहमनी राजासे कुतबशाहीके हाथ चला गया। कई वर्षों तक उनकी राजधानी यहीं रही। बाहमणी वंशके अधःपतनके बाद गोलकुण्डा दक्षिणमें एक वृहत् समृद्धिशाली राज्यमें परिणत हुआ था। १६८६ ई०में औरङ्गजेबने इसे अधिकार कर अपने राज्यमें मिला लिया था। ग्रेणाइट पर्वतके शिखर पर गोलकुण्डा दुर्ग स्थापित है। यह शत्रुसे दुर्भेद्य और पूर्ण सस्कृत है। इस दुर्गसे ६०० गजकी दूरी पर प्राचीन राजाओंकी बनाई हुई बहुतसी ऊंची ऊंची मस्जिद हैं। समय पाकर इनके बहुत अंश टूट फूट गये हैं। दुर्ग चारों ओर कंगुरेदार पत्थरकी दीवारोंसे घिरा है। इसमें आठ दरवाजे लगते हैं जिनमें आजकल केवल चारही काममें लाये जाते हैं। इसके चारों ओर पानीसे भरा हुआ खंदक है। दुर्गसे आध मील दक्षिणमें कुतबशाही राजाओंके समाधि मन्दिर हैं। इनके बनानेमें बहुत रुपये खर्च हुए थे और उस समयकी चमक दमक अपूर्व थी। किन्तु औरङ्गजेबकी चढ़ाईके समय उनका अधिकांश तहस नहस हो गया। दुर्गके दक्षिणमें मुसी नामकी नदी प्रवाहित है। यहां आजकल तोपखाना है और रक्षाके लिये अरबी सेना रखी गई है। यह दुर्ग अभी निजाम राजके कोषागार और राजकारागार रूपमें व्यवहृत है।

गोलक्षण (सं० क्ली०) गोः लक्षणं, ६ तत्। गौका शुभाशुभ सूचक चिह्न विशेष। (*गो देखो।*)

गोलगप्पा (हिं० पु०) एक तरहका खानेका पदार्थ जिसे खटाईके रसमें डुबा कर खाते हैं।

गोलत्तिका (सं० स्त्री०) गवि भूमौ लत्तिकेव। वनचर स्त्रीजातीय पशुविशेष, एक तरहका जंगली मादिन पशु।

गोलदार (फा० पु०) दुकानदार, क्रय और विक्रय करनेवाला।

गोलदारी (फा० पु०) गोलादारका कार्य्य।

गोलन्दाज (फा० पु०) तोपमें गोला रख कर चलानेवाला।

गोलन्दाजी (फा० पु०) गोला चलानेका काम या विद्या।

गोलपत्ता (हिं० पु०) सूंदरा जूता।

गोलपत्ता (हिं० पु०) सुंदरवनमें पाये जानेवाला गुल्मा नामक झाड़।

गोलफल (सं० पु०) मदनवृक्ष, मैनाका पेड़।

भागी और उक्त गोकर्णनाथकी सेवाके लिये बहुतसी निष्कर जमीन दान की।

इस पवित्र भूमिके मध्यस्थलमें मन्दिर बना है और पवित्र क्षेत्रको चारो सीमा पर चार फाटक हैं जो मंदिरसे १२ कोसकी दूरी पर होंगे। पश्चिममें शाहजहानपुर जिलाका मतोद्वार, उत्तरमें भूर परगणास्थ शाहपुर द्वार, पूर्वमें खेरी जिलास्थ देवकालीद्वार, दक्षिणमें मुहम्मदी परगणाका बरखार-द्वार है। इस मन्दिरमें प्रवेश करनेके पहले यात्रियोंको उक्त चारो द्वार प्रदक्षिण करने होते हैं। इस स्थानसे दो कोसकी दूरी पर एक मन्दिरके पूर्वकी ओर बदरकुण्ड, उत्तरमें पनाह, दक्षिणमें कोर्णगड़ और पश्चिममें माइनकुण्ड आदि तीर्थ स्थान हैं।

गोलागोकर्णनाथसे ८ मीलमें भेटवा ग्राम है। इस ग्रामके निकटवर्ती अरण्यमें किसी प्राचीन नगरका ध्वंसावशेष देखा जाता। इसके मध्य फकीरकी मढी और विजना नामक स्तूप प्रधान है। उस स्तूपके निकट विष्णु और महिषमर्दिनी, दुर्गा प्रभृति देवमूर्तिका भग्नावशेष पड़ा हुआ है। बहुत स्थानमें अभी भी २० फुट ऊंचे भग्न स्तूप प्राचीर देखे जाते हैं।

गोलाघाट—आसामके शिवसागर जिलेका एक उपविभाग। यह अक्षा० २५° ४८' से २६° ५५' उ० और ८३° ३' से ८४° ११' पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण ३०१५ वर्गमील है। इसका पूर्वीय भाग समतल है। नीची भूमिमें धान और उच्च भूमिमें चाय और ईख उपजाई जाती है। यहां धनसिरी नामकी नदी प्रवाहित है। जिसके आसपास सघन वन दृष्टिगोचर होता है। लोकसंख्या लगभग १६७०६८ है। इसमें गोलाघाट नामक एक शहर तथा ७८२ ग्राम लगते हैं। यहां विशेष कर चायकी खेती होती है।

२ उक्त उपविभागका शहर। यह अक्षा० २६° ३१' उ० और देशा० ८३° ५८' पू० में धनसिरी नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः २३५८ है। यहांसे रूई, सरसों और गुड़की रफतनी होती है और दूसरे देशोंसे अन्न, दाल, मट्टी तथा दूसरा तेल और नमकको आमदनी होती है। शहरसे ८ मीलकी दूरी पर कमरबन्द अली नामका रेलवे स्टेशन है। यहां एक साधारण कारागार, चिकित्सालय और एक उच्च श्रेणीका विद्यालय है।

गोलाङ्क (पु०) ऋषिविशेष।

गोलांगूल (सं० पु०) गोर्लाङ्गूलमिव लांगूलमस्य, बहुव्री०। १ वानरविशेष। कश्यपपत्नी क्रोधाकी कन्या हरिके गर्भमें इसकी उत्पत्ति हुई थी। (भारत १।६६ अ०)

काशीखण्डके मतमें लालमुख नील शरीर यथपति वानरको गोलांगूल कहते हैं।

गोलांगूल परिवर्तन (सं० क्ली०) राजगृहके निकटवर्त्ती एक क्षुद्र पहाड़।

गोलाधार (हिं० वि०) मूसलाधार।

गोलाध्याय (सं० पु०) भास्कराचार्य प्रणीत एक ग्रन्थ। इसमें भूगोल और खगोल प्रभृति अति विशद रूपसे वर्णित हैं।

गोलार्द्ध (सं० पु०) पृथ्वीका आधा भाग जो एक ध्रुवसे दूसरे ध्रुव तक उसे बीचो बीच काटनेसे बनता है।

गोलापूर्व—एक अत्यन्त नीच श्रेणीके ब्राह्मण। युक्तप्रदेशमें ये 'गोलापूरब' नामसे प्रसिद्ध हैं। इनकी उत्पत्तिके विषयमें बहुतोंका मतभेद है। कोई कहते हैं कि गालव ऋषिके औरस एक नीच जातिकी विधवाके गर्भसे ये उत्पन्न हुए हैं। फिर कोई कहते हैं कि चन्द्रसेन राजाके शकसेनी नामकी एक कन्या थी, उसीके गर्भसे गोलापूर्वने जन्म ग्रहण किया है।

राजा लक्ष्मणसिंहके मतानुसार ये सनाढ्य ब्राह्मणके अन्तर्गत है। इनका आचार व्यवहार ठीक उन्हींके जैसा है। इनमें विधवा विवाहकी प्रथा नहीं है। ये नीमगाछके तले अपने छोटे लड़केका मुण्डन करते हैं। जिस तरह उच्च श्रेणीके मनुष्य पीपलवृक्षको पवित्र मानते हैं उसी तरह इन लोगोंके लिए नीमका वृक्ष है।

इन लोगोंमें बहुविवाहकी प्रथा प्रचलित है। वही मनुष्य दूसरी बार शादी कर सकता है जिसकी पहली स्त्री बांझ हो अथवा उसे किसी प्रकारकी बीमारी हुई हो। नौ या दश वर्ष तककी लड़की कुंवारी नहीं रह सकती है।

सन्तानके भूमिष्ठ होने पर ये बहुत उत्सव मनाते हैं तथा बारहवें दिन स्वजातियोंको भोज देते है। ये प्रव-

को जलाते हैं। जब कोई नदी समीपमें नहीं रहती है तो ये किसी दूसरी जगह मुर्देको जलाते और उसकी थोड़ी हड्डी गङ्गाजीमें फेंकनेके लिए रख लेते हैं। ये दश दिन तक अशौच मानते और ग्यारहवें और बारहवें शास्त्रानुसार श्राद्ध करते हैं। सन्तानके जन्म लेने पर भी ये दश दिन तक अपनेको अपवित्र समझते हैं।

ये ग्रामदेवता चामुण्डादेवी तथा पथवारीदेवीकी पूजा करते हैं। इसके सिवा ये कार्त्तिक मासमें गोवर्द्धन के दिन गाय और भैंसकी तथा आश्विनमें घोड़ेकी पूजा करते हैं। ग्रह या नक्षत्रमें इनका पूरा विश्वास है जिसके लिए ये ग्रहविप्रको समय समय पर कुछ दान भी दिया करते हैं।

गोलापूर्व वैष्णव होते हैं। ये लहसुन, प्याज और गाजर इत्यादि नहीं खाते हैं। उच्च श्रेणीके ब्राह्मणोंकी नाईं ये भङ्गी, धोबी तथा चमार इत्यादि नीच जातियों से स्पर्श नहीं करते हैं। ये राजा, गुरु, पिता, बड़े भाई, ज्येष्ठ पुत्र तथा श्वसुरका नाम लेना दोष समझते हैं। विना पण्डितोंसे शुभ दिन बताए ये प्रथम बार खेत नहीं जोतते हैं। श्रावण मासकी कृष्ण सप्तमीमें वृष्टि होनेको ये शुभ और ज्येष्ठ मासकी शुक्ल सप्तमीमें बिजली दिखाई देनेको अशुभ समझते हैं। ये गाँजाको व्यवहारमें नहीं लाते हैं, किन्तु भाग और अफीम प्रायः खाया करते हैं।

गोलापूर्व खेती करके अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। ये परिश्रमी, सच्चरित्र और अध्यवसायी होते हैं।

गोलापूर्व जैन—बुन्देलखण्ड प्रदेशमें रहनेवाली एक वैश्य जाति। ये दिगम्बर जैनधर्मके पालक और घी कपड़े आदिका व्यापार करते हैं।

गोलायपुर—युक्तप्रदेशके शाहजहानपुर जिलेके पवायन तहसीलके अन्तर्गत एक अति प्राचीन ग्राम। ग्रामकी अवस्था देखनेसे ही मालूम पड़ता है कि एक समय यहां समृद्धिशाली नगर था। यहां खेरा या स्तूपके भीतरमें बड़ी बड़ी ईंट, मील और मबूके पत्रादि तथा बौद्ध राजाओंके समयकी अति प्राचीन मुद्रा पायी गयी है। किसीके मतसे चीन परिव्राजक फाहियनका वर्णित हिलो नामक स्थान यहीं पर था एवं बुद्धके कपालकी एक खंड अस्थि यहींके दागोवमें रखी हुई थी। तवारीख फिरोजशाही और आइन-ई-अकबरी पढ़नेसे जाना जाता है कि तेरहवीं शताब्दीसे सोलहवीं शताब्दी तक उस गोलामें कान्त गोलाकी सदर अदालत थी।

गोलाम (सं॰ पु॰) गां भूमिं लासयति प्रकाशयति गो लस णिच् अण् उपपदसमास। शिलीन्ध्र, छत्रा, गोबर छत्ता।

गोलि—कृष्णा जिलेके पालनाडा तालुकके अन्तर्गत एक प्राचीन ग्राम जो तुम्मिकोटसे ४ मील उत्तरपूर्वमें अव स्थित है ग्रामके दक्षिण पश्चिम भागमें एक पुरातन दुर्ग और चारों तरफ कई एक भग्न प्राचीन मन्दिर है। इसी स्थान पर विश्वामित्रने यज्ञ किया था, आज भी उसका होमकुण्ड विद्यमान है। यहांके महेश्वर और हनुमान स्वामीके मन्दिरमें शिलालिपि उत्कीर्ण है। इस ग्राममें प्राचीन असभ्य वासियोंके समाधिप्रस्तर देखे जाते हैं।

गोलिका (सं॰ स्त्री॰) चोगटा एक जंगली वृक्ष।

गोलियाना (हिं॰ क्रि॰) किसी चीजको गोल बनाना।

गोलिह (सं॰ पु॰) गोभिः लिह्यते लिह घञर्थे क। १ छत्रिका, छाता। २ कालमुष्कवृक्ष मोखा।

गोलिहल्लि—बेलगाम् जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह बिदिनगरसे एक मील दक्षिणमें अवस्थित है। यहां कल्मेश्वर, रामलिङ्ग, और सिद्धलिङ्गके तीन विख्यात मन्दिर हैं। कल्मेश्वर मन्दिरके निकट २य चालुक्यराज सोमेश्वर या भूलोकमल्लके राजत्व समयमें (११ ६ ११३८ ई॰में) कदम्बवंशके किसी अधीन राजाकी दो हुई एक प्रशस्ति है। ग्रामके बाहर यादव-मन्दिरके सामने एक खोदा हुआ शिलाफलक देखा जाता है। उस शिला फलकके मध्य भागमें शालुकसे ढको हुई एक लिङ्गमूर्ति है। इसके बाद और बासव और सूर्य तथा दाहिनी ओर वत्स युक्त गो और चन्द्रकी मूर्ति खोदी हुई है। उस फलकमें गोआके कदम्बराज पर्माडीके राजत्वकालमें (११४७-७५) प्रदत्त शासनादिका उल्लेख है। उक्त गोपक (गोआ)के राजा भी जनपदविशिष्ट कोङ्कण और २२ हजार ग्रामयुक्त पलसिग या हलसीके ऊपर आधिपत्य करते थे। वे किट्टमप्प गाडी जिलेके ईश्वर की सेवाके लिए बहुत धन और जमीन दान कर गए हैं।

गोली (हिं० स्त्री०) १ वर्तुलाकार पिण्ड, वटिका, वटिया। २ दवाईकी वटिका, वटी। ३ लड़कोंके खेलनेका काँच या मिट्टीका गोलपिण्ड। ४ गोलीका खेल। ५ पशुओंका एक रोग। ६ पीले या बदामी रंगकी गाय। ७ मदककी गोली। ८ छोटा घड़ा।

गोली—मुजफ्फर नगर जिलेमें रहनेवाली एक जाति। इनकी संख्या बहुत थोड़ी है। ये लुनिया जातिके अन्तर्गत है।

गोलीढ़ (सं० पु०) गोभिर्लिह्यते लिह-क्त। घण्टा पाटलि, एक तरहका शाक।

गोलेर—पञ्जाबके काङ्गरा जिलेके अन्तर्गत डेरा तहसीलका एक राज्य। भूपरिमाण २५ वर्गमील है। प्रवाद है कि काङ्गरेके कतोच राजा हरिचन्द शिकार करते समय किसी एक कुएंमें गिर पड़े। इनके साथियोंने, राजाका पता न पा कर सोचा कि वे कहीं मार डाले गए। अन्तमें उन्होंने लौट कर राजाके उत्तराधिकारीको राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त किया। कुएंसे निकाले जाने पर राजा हरिचन्दने राज्यका दावा न किया, वरन उन्होंने अलग ही गोलेर नामकी एक राजधानी स्थापित की और वे वहीं रहने लगे। समयके फेरसे कुछ काल तक यह राज्य शाहजहां, अकबर तथा सिखोंके अधिकार भुक्त रहा। अन्तमें अङ्गरेजके अधिकारमें आ जानेसे वहांके प्राचीन राजा शमशेरसिंहको २० ग्रामोंकी एक जागीर मिली थी। आज भी वह जागीर उनके भतीजे रघुनाथसिंह भोग कर रहे हैं। जागीरकी आय लगभग २६०००) रुपये हैं।

गोलैंदा (देश०) महुवेका फल, कोइंदा।

गोलोक (सं० पु०) गोभिर्ज्योतिभिः परिव्याप्तः लोकः मध्यपदलो०। १ एक परमधाम, एक सुन्दर पवित्र विष्णु या कृष्णका वास स्थान, ब्रह्माण्डके अन्तर्गत समस्त लोकके ऊपर एक लोक। अनेक पुराण और तन्त्रमें गोलोकका वर्णन देखा जाता है। ब्रह्मवैवर्तपुराणके मतसे वैकुण्ठके ऊपर गोलोक अवस्थित है। इसका आयत पचास करोड़ योजन है। गोलोक अगम्य और अनिर्वचनीय विष्णुके अभिप्रायसे वायुके ऊपर बसा हुआ है। इस स्थानमें एक मनोहर नदी है। उस नदीके तीर पर भांति भांतिके मुक्ता, माणिक्य, परशमणि प्रभृति बहुमूल्य रत्न पाये जाते हैं। इसके दूसरे पारमें एक विशाल पर्वत है जिसके मनोहर एक शृङ्ग है। इस पर्वतकी ऊंचाई एक करोड़ योजन, चौड़ाई दश करोड़ योजन और शैलप्रस्थका परिमाण लगभग पचास करोड़ योजन माना गया है। यह पर्वत गोलोककी दो बारके रूपमें अवस्थित है। इसके शिखर पर दश योजन विस्तृत एक रासमण्डल है। इस रासमण्डलके मध्य एक हजार पुष्प उद्यान और एक हजार कोटिरत्नमण्डप हैं। मनोहारिणी गोपाङ्गना रात दिन रासमण्डल घिरी हुई रहती हैं।

पर्वतके बाहर विरजा नदीके तीर पर एक सुन्दर वन है। यह वन राधिका और कृष्णका क्रीड़ा स्थान वृन्दावन नामसे विख्यात है। इसके बाद ही गोलाकार गोलोकपुरी है। इसकी चौड़ाई तथा लम्बाई एक करोड़ योजन है, चारों ओर रत्नमय दीवारसे घिरा है। इसके चार गोपुर या प्रधान द्वार हैं। प्रत्येक द्वार पर असंख्य गोप द्वार रक्षा कर रहे हैं। इस पुरीके मध्य कृष्णभृत्य गोपोंके पचास करोड़, कृष्णभक्त सौ करोड़ और कृष्णपार्षदोंके मनोज्ञ नाना प्रकारके रत्नसे जड़े हुए एक करोड़ आश्रम है। इसके अलावा कृष्णकी प्यारी गोपियां और उनकी दासियोंके भी अनेक आश्रम हैं। जो मनुष्य शत जन्म तपस्या कर पवित्र हो गये हैं, कृष्णभक्ति जिनके हृदयमें दृढ़ और निश्चल रूपसे अवस्थित है, कर्मफलकी आशा न करते हुए जो सिर्फ ईश्वरके संतोषके लिये सांसारिक समस्त कर्तव्य कर्मका अनुष्ठान करते, जो सोते, जागते और स्वप्न अवस्थामें भी कृष्णकी मूर्त्तिको ध्यानमें रखते तथा जो दिन रात "राधाकृष्ण, राधाकृष्ण" जप किया करते, उन्हीं भक्तोंके रहनेके लिये महार्घ रत्ननिर्मित एक लाख घर प्रस्तुत है। भक्तोंके पाञ्चभौतिक शरीर छोड़नेके बाद ही वे गोलोक जा उक्त गृहोंमें वास कर सकते हैं। इसके बाद एक विशाल अक्षयवट है जिसका मूल पचास योजन और ऊपरका भाग उसका द्विगुण है। इस वटवृक्षमें एक हजार स्कन्ध और असंख्य शाखायें हैं। इसके फल रत्नमय हैं। नीचेमें रत्नमयी वेदी भी है। इसमें रत्नमय फल लगते हैं। वृक्षके मूलके पास

कृष्ण प्रेममें उन्मत्त गोपबालक खेला करते हैं। इसके कुछ दूरके बाद ही सिन्दूर रंगके पत्थरसे बना हुआ राजपथ है, जिसके दोनों बगल रत्नमय घरोंकी पंक्ति है। इसकी दीवारें इन्द्रनील, पद्मराग तथा अनेक प्रकारके पत्थरोंसे बनी है। ये घर पुष्पमालाओंसे सुशोभित विलासभवन हैं। गोपियां नाना प्रकारके रत्नोंसे अलङ्कृत हो सर्वदा इन्हीं घरोंमें क्रीडा किया करती हैं। इसके बाद समस्त गोपियोंकी प्रधाना रासेश्वरी राधिकाका मनोहर भवन है। इसमें सोलह मनोहर द्वार हैं। इस भवनमें एक सौ मन्दिर या कुटी है। इसके चारों ओर विशाल-प्रासाद और सैकड़ों पुष्पोद्यान हैं। राधिकाभवनके बाहरमें एक पर्वत और उसके बाद विरजा नदी है। कृष्णको तुष्टि करनेके लिये समस्त देवता यहां आ पहुंचते हैं। गोलोकके [illegible] आश्चर्य [illegible] और दूसरी जगह कहीं नहीं देखा जाता। (ब्रह्मवैवर्त्तपुराण कृष्णजन्मख० ४ अ०)

तन्त्रके मतसे गोलोक वैकुण्ठके दक्षिण ओर अवस्थित है। शिवजी बोलते हैं कि गोलोकके जैसा दूसरा कोई स्थान नहीं है। त्रिगुणातीत कृष्ण तथा राधिकाके सिवाय इस स्थानमें और ब्रह्मादि [illegible] करते हैं। गोलोकको [illegible] मन और वचनके अगोचर है। इस स्थानका माहात्म्य [illegible] बिना वर्णन नहीं किया जा सकता है। [illegible] इस स्थानमें आनेसे मोक्षकी प्राप्ति होती है। गङ्गा प्रभृति समस्त नदियां और ब्रह्मादि देवता इसी स्थानमें उपस्थित रहते हैं। यहां सर्वदा वसन्त ऋतु [illegible] रहता है। [illegible] नाना प्रकारके स्वरोंमें [illegible] [illegible] आच्छादित करते हैं। [illegible] राधिका भी भक्तोंके मङ्गलके लिये इसके चारों ओर उपस्थित रहा करती हैं। (स्वर्ग शब्द देखो।)

गोलोकन्यायरत्न—बङ्गदेशके एक विख्यात नैयायिक। इनके न्यायरत्नमाथुरीटीका नव्यन्यायका एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। पश्चिम प्रदेशमें इस ग्रन्थका बहुत आदर होता है। अभी इसके अन्तर्गत अनुमितिप्रसिद्धपूर्वपक्ष, प्रसिद्धसिद्धान्त, उपाधिपूर्वपक्ष, [illegible]लक्षण, केवलान्वयिसिद्धान्त, तृतीयप्रगल्भलक्षण, द्वितीय मिश्रलक्षण, पक्षतापूर्वपक्ष, पक्षलक्षणी, परामर्शपूर्वपक्ष, परामर्शसिद्धान्त, पक्षलक्षण, प्रतिज्ञालक्षण, प्रथम मिश्रलक्षण, बाधपूर्वपक्ष, बाधसिद्धान्त, सामान्यनिरुक्ति, सामान्यलक्षण और हेतुलक्षण विवेचन प्रभृति बहुतसे ग्रन्थ पाये जाते हैं।

गोलकेश (सं० पु०) श्रीकृष्णचन्द्रजी।

गोलोचन (हिं० पु०) गोरोचन देखो।

गोलोमिका (सं० स्त्री०) गोलोमेव लोमान्यस्य, [illegible] गोलोम ठन् टाप्। तृणविशेष, एक तरहकी घास। इसका पर्याय गोधूमी, गोजा, कोष्टकर्णिका, गोस्तनी और प्रस्तारिणी है। इसका गुण—कटु, तिक्त, त्रिदोषघ्न, शीतल, मूत्रशोधक और [illegible] दोषनाशक, ग्राही, एवं दीपन है।

गोलोमी (सं० स्त्री०) गोलोमेव लोम लोमसदृशं दलं यस्याः बहुव्री० ततो ङीप्। १ श्वेत दूर्वा, सफेद घास। २ वचा, एक प्रकारका जलका पौधा। [illegible] लोमयति अनुकल्पयति गोलोमि [illegible] गौरादित्वात् ङीष्। ३ वेश्या, रण्डी। ४ गोलोमिका तृण। ५ भूतकेशी। ६ नीलदूर्वा। ७ जटामांसी। (भावप्र०)

गोल्ड (अं० पु०) स्वर्ण, सोना।

गोल्डन (अं० वि०) १ सोनेका। २ सुनहला।

गोल्डष्टुकर (Theodore Goldstucker) एक विख्यात संस्कृतज्ञ जर्मन पण्डित। इनका जन्म जर्मनीके कोनिग्स-बर्ग नगरमें [illegible] हुआ था। ये [illegible] विश्वविद्यालयमें प्रसिद्ध [illegible] साथ साथ पढ़ते थे। कुछ कालके बाद ये लण्डन नगरमें आ अध्यापकके पद पर नियुक्त हुए। यहीं पर ये [illegible] राजधानी [illegible] आये, यहां महापण्डित [illegible] विल्सनके साथ इनकी मित्रता हुई।

[illegible] ई०में गोल्डष्टुकरने जर्मनकी पत्रिकामें अमरकोषकी समालोचना प्रकाश की, यही उनकी संस्कृत शिक्षाका प्रथम फल था। १८४२ ई०में इन्होंने प्रबोधचन्द्रोदय नाटकका अनुवाद किया था जिसे देख सबने इनके संस्कृत अनुरागकी यथेष्ट प्रशंसा की थी। इस समय ये जर्मन भाषामें महाभारतके अनुवादमें प्रवृत्त हुए। किन्तु यह उनके लिये दुःखका विषय था कि उनका इस अनुवादका एक अंश भी मुद्रित नहीं हुआ।

वैदिक ग्रन्थ पढ़नेमें गोल्डष्टुकरका बड़ा ही प्रेम और यत्न था। एक अभिनव वैदिक ग्रन्थ पालेनेसे ही आहार निद्रा छोड़ कर एकचित्त हो उसे पाठ करते थे एक दिन इन्होंने हठात् इण्डिया-आफिस पुस्तकालयमें एक पुस्तक बाहर की, पुस्तककी तालिकामें उसका नाम तक भी लिखा नहीं था। इन्होंने कौतुहलसे उस ग्रंथको पढ़ कर देखा कि वह कुमारिलभट्टका मानवकल्पसूत्र है। इसके पहले उस ग्रन्थके विषयमें कोई कुछ नहीं जानता था, अतएव इस नवीन आविष्कारसे उत्साहित हो इन्होंने उस संस्कृत ग्रन्थकी प्रतिकृति और उसकी भूमिकामें पाणिनि-व्याकरण, मीमांसादर्शन और वैदिक क्रियाकाण्ड सम्बन्धमें बहुत गवेषणा पूर्ण एक प्रबन्ध निकाला था। इसके बाद इनके पाणिनिका कालनिरूपण और उसके समालोचना-विषयक ग्रन्थ प्रकाशित हुए। इन्होंने संस्कृत भाषामें कितनी दूर तक पाण्डित्य लाभ किया था और ये कितने सैकड़ों संस्कृत ग्रन्थ पढ़ कर उनकी अपूर्व समालोचना करनेमें साहसी हुए थे, वह उक्त दोनों ग्रन्थोंके पढ़नेसे ही जाना जाता और विस्मय होना पड़ता है। इस समय ये लण्डनके विश्वविद्यालयमें संस्कृत अध्यापक हुए थे।

लण्डनकी संस्कृत ग्रन्थप्रचारिका सभाके ये सभापति थे। उक्त सभाके यत्नसे इन्होंने माधवाचार्यका जैमिनीय न्यायमाला-विस्तर नामका एक बड़ा ग्रन्थ प्रकाश किया था। एक उत्कृष्ट संस्कृत और अंगरेजी अभिधान प्रकाश करनेकी इनकी इच्छा हुई थी, किन्तु अकाल मृत्यु होनेसे उक्त अभिधानका "अ" अक्षरका कुछ अंश प्रकाश हो कर बन्द हो गया।

सर्वदा मानसिक परिश्रम और गहरी चिन्तासे उन्हें कासरोग उत्पन्न हुआ। इसी रोगसे ५८ वर्षकी अवस्थामें १८७१ ई०को ६ मार्चको लण्डन नगरमें इनका देहान्त हुआ।

उनके दया, उदारता तथा अनेक तरहके सद्गुण थे। भारतवासियोंके प्रति उन्हें यथेष्ट अनुराग था। जब इस देशका कोई युवक विलायत पढ़नेके लिये जाता तो गोल्डष्टुकर उसे पुत्रवत् स्नेह करते और सर्वदा सदुपदेश देते थे।

उनकी मृत्युके बाद उनके बनाये हुए दूसरे दूसरे संस्कृत साहित्यविषयक प्रबन्ध प्रकाशित हुए हैं।

गोवक (सं० पु०) एक तरहका छोटा बगला।

गोवत्स (सं० पु०) गोर्वत्सः ६-तत्०। १ गोका वत्स, बछड़ा। २ प्रभासके अन्तर्गत एक पवित्र तीर्थ।

(प्रभासखण्ड)

गोवत्सादिन् (सं० पु०) गोवत्सं अत्ति गोवत्स-अद-णिनि उपस०। भेड़िया।

गोवध (सं० पु०) गवां वधः ६-तत्०। गोहिंसा, गोहत्या, गायका मारना। (गाहत्या देखो।)

गोवन—निकुम्भवंशीय। एक राजा, कृशाराजके पुत्र।

गोवन्दना (सं० स्त्री०) महादेवा, एक तरहका वृक्ष।

गोवन्दनी (सं० स्त्री०) गवि भूमौ वन्द्यते वन्द कर्मणि ल्युट्-ङीप्। १ प्रियंगू, एक तरहका पौधा जिसका बीज सुगन्धित होता है। २ पीतदण्डोत्पल, एक किस्मका पौधा।

गोवपुष्प (सं० वि०) चमकीला। २ गोआकारका।

गोवर (सं० क्ली०) शुष्क गोमय चूर्ण। भावप्रकाशमें लिखा है कि गोशालामें गौके खुरसे चूर किये हुए गोमयको 'गोवर' कहते हैं। पारदशोधनमें यह सर्वोत्कृष्ट है।

गोवरडङ्गा—वङ्गके २४ परगणाके वारासात उपविभागका एक नगर; अक्षा० २२° ५३' उ० और देशा० ८८° ४' पू० मध्य यमुना नदीके पूर्व कूल पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५८६५ है। चीनी, गुड़ और पाटके व्यवसायके लिये यह स्थान प्रसिद्ध है। ऐसा प्रवाद है कि श्रीकृष्णचन्द्रजी इसी स्थान पर गो चराते थे। इसके पासका गायपुर ग्राम गोपीपुरका अपभ्रंश है जो श्रीकृष्ण सहेली गोपियोंके नाम पर रखा गया है। यहां अङ्गरेजी विद्यालय, औषधालय, पुलीस और म्युनीसीपालिटी है।

गोवरपुट (सं० क्ली०) औषध पुटविशेष।

गोवराट (सं० क्ली०) कपाटके निम्नस्थ काठ, किवाड़के नीचेकी लकड़ी जिसके ऊपर किवाड़के पार्श्वस्थित अवलम्बन काठ संयोजित रहता है। गृह लेपनके समय उस काठमें अकसर गोवर लग जाता है इसलिये उसका नाम 'गोवराट' पड़ा।

गोवर्णी (सं० स्त्री०) अश्वगन्धा।

गोवर्धन (स० क्ली०) गवां वर्द्धन, ६ तत्०। १ गौओंकी वृद्धि, गायकी बढ़ती। वृध करणे ल्युट् ६ तत्०। गिरियज्ञविशेष। गोवर्द्धनको गा वर्द्धयति गो वृध णिच ल्यु। ३ वृन्दावनस्थ एक पर्वत। श्रीकृष्णचन्द्रजीने भयानक शिलावृष्टिसे वृन्दावनवासी गोपोंको बचानेके लिये उक्त पर्वतको अपने हाथके कनिष्ठ अङ्गुल पर उठाया था। यह पर्वत अनादि एवं श्रीकृष्णका अतिशय प्रिय है। हरिभक्तिविलासमें लिखा है कि कार्त्तिक मासको शुक्ल प्रतिपद तिथिमें पूर्वाह्णको इसकी पूजा करना वैष्णवोंका मुख्य कर्त्तव्य है। (१६।१०)

इस प्रतिपद्‌के साथ अमावस्याका समान आदर है। जिस दिन प्रतिपद्‌के साथ अमावस्याका योग रहता है उसी दिन गवोत्सव करना उचित है। परविद्ध तिथिमें करने पर भी स्त्री, पुत्र और धनकी हानि होती है।

निर्णयामृतधृत "या कुहू प्रतिपन्मिश्रा तत्र गा पूजयेत् च" इत्यादि पौराणिक वचनमें भी अमावस्यायुक्त प्रतिपदमें ही गोवर्धनपूजाका विधान देखा जाता है। पद्मपुराणका मत है कि उस दिवसमें वृन्दावनवासी वैष्णवगणको गोवर्द्धनपूजा करना उचित है। दूसरे स्थानके वैष्णवोंको गोमय द्वारा गोवर्द्धन पर्वतका निर्माण कर उसकी पूजा करना चाहिये। भक्ति पूर्वक गोवर्द्धनकी पूजा और प्रदक्षिण करनेसे गोलोकमें हरिके निकट रह बहुत तरह के सुख लाभ होते हैं। पूजाका मन्त्र—

"गोवर्द्धन धराधार गोकुल त्राणकारक।
विष्णुबाहुकृतोच्छ्राय गवां कोटिप्रदो भव॥" (हरिभक्तिविलास)

गोवर्द्धन—मथुरा जिलेके अन्तर्गत एक प्राचीन नगर और पवित्र तीर्थस्थान। यह मथुरा जिलेके पश्चिम प्रान्तमें पहाड़के ऊपर अक्षा० २७ ३०´ उ० और देशा० ७७ २८´ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्राय ६७३८ है। यहां यथेष्ट प्राचीन हिन्दुकीर्ति देखी जाती है। जिनमेंसे हरिदेवका मन्दिर प्रसिद्ध है। अकबरके राजत्वकालमें अम्बराधिप राजा भगवान्दासने उक्त मन्दिरका निर्माण किया था। भरतपुराधिप रणधीरसिंह और बलदेवसिंहके समाधिमन्दिर भी देखने लायक हैं। यहांके मानसी नामक सरोवरमें स्नान करनेके लिये दूर दूर देशसे यात्री आते हैं।

यह शहर मानसीगङ्गा नामक एक सुन्दर तालाबके चारों ओर पड़ता है। दिवालीके उपलक्षमें यहां भारी उत्सव मनाया जाता है। प्रवाद है कि यहां श्रीकृष्णचन्द्र जी वास करते थे और उन्हींके नाम पर 'शहरका' नाम गोवर्द्धन पड़ा है। यहां राजा यशवन्तसिंहका एक समाधिभवन है। शहरके उत्तर कुसुम सरोवर नामक एक सुन्दर कृत्रिम झीलके किनारे सूरजमलके बहुतसे समाधिभवन हैं जो उनके लड़के जवाहिरसिंह द्वारा निर्माण किये गये हैं। शहरकी आय लगभग २२०० रु० है। यहां किसी प्रकारका व्यापार नहीं होता है। यहां केवल एक प्राइमरी स्कूल है।

गोवर्द्धन—१ ताजिक पद्मकोष नामक ज्योतिर्ग्रन्थकार। २ नामावली नामका संस्कृत अभिधान रचयिता। ३ श्रीपतिपद्धति नामक ज्योतिःशास्त्रकार। ४ एक प्राचीन अलङ्कार शास्त्रके रचयिता।

५ तत्त्वचिन्तामणिदीधितिके टीकाकार। ६ एक तैलङ्ग पण्डित, घनश्यामभट्टके पुत्र। इन्होंने वेदान्तचिन्तामणि रुक्मिणीचम्पू और १८६६ ई०को षट्कर्पटटीका रचना की है। ७ वैशेषिकसूत्रका सम्बन्धोपदेश नामका ग्रन्थके टीकाकार। ८ एक जैन शास्त्रकार। (वृहत् चरन)

९ मेदिनीकार उद्धृत एक प्राचीन कोषकार।

१० एक हिन्दी कवि। इनकी बनाई हुई बहुतसी कवितायें पाई जाती हैं।

गोवर्द्धनाचार्य—एक विख्यात प्राचीन कवि, नीलाम्बरके पुत्र, बलभद्रके भ्राता और उदयनके गुरु। इन्होंने आर्यासप्तशती नामक एक सुन्दर संस्कृत काव्य रचा है।

गोवर्धन उपाध्याय १ उद्वाहचन्द्रिका नामक संस्कृत ग्रन्थकार। २ गोवर्द्धनकविमण्डन नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गोवर्द्धनगिरि—१ वृन्दावनके निकट एक प्रसिद्ध पर्वत। ऐसा प्रवाद है कि श्रीकृष्णचन्द्रजीने इस पर्वतको उंगली पर धारण किया था। (गोवर्द्धन देखो।)

२ महिसुर राज्यके सागर तालुकके अन्तर्गत सिमोगा जिलेका एक पहाड़। यह अक्षा० १४° १०´ उ० और देशा० ७४ ४० पू० पर स्थित है। इसका दूसरा नाम कमलाचल है। इसके ऊपर महिसुर राजाओंसे

निर्मित सुरम्य विष्णुमन्दिर, गार्गीया प्रपात और एक सुदृढ़ दुर्ग है।

गोवर्द्धनदास—छन्दोमञ्जरीके एक टीकाकार।

गोवर्द्धनदीक्षित त्रिपाठी—एक विख्यात वेदज्ञ पण्डित। ये वेणीदासके पुत्र थे। इनके बनाये अग्निष्टोमप्रयोग, ज्योतिष्टोमसौदुगात्रप्रयोग, वाजपेयसर्वपृष्ठाप्तोर्यामौदुगात्रप्रयोग और सप्तसोमसंस्था-पद्धति प्रभृति ग्रन्थ पाये जाते हैं।

गोवर्द्धनधर (सं० पु०) गोवर्द्धनं वृन्दावनस्थ पर्वतं धरति धृ-अच्। श्रीकृष्ण। श्रीकृष्णके गोवर्द्धन धारणकी कथा हरिवंशमें इस तरह वर्णित है—वृन्दावनके गोपगण प्रतिवर्ष वर्षाकालमें इन्द्रकी अर्चना किया करते थे उनका विश्वास था कि इन्द्रकी पूजा करनेसे उन लोगोंके गौमें किसी प्रकारका विघ्न नहीं होगा। श्रीकृष्णचन्द्रजीके वृन्दावन आने पर वे (गोपगण) एक वर्ष बड़े उत्साहके साथ इन्द्रोत्सवका आयोजन कर रहे थे। उसी समय श्रीकृष्णने उन्हें इन्द्रपूजा करनेसे मना किया और तत्क्षण गोवर्द्धनपूजा करनेकी आज्ञा दी। उस वर्षमें इन्द्रोत्सव नहीं मनाया गया, वरन् कृष्णकी आज्ञाको शिरोधार्य कर उन्होंने गोवर्द्धनकी ही पूजा की। उनके इस व्यवहारसे सुरपति इन्द्रने क्रोधित हो मेघगणको वृन्दावन ध्वंसके लिये बुलाया। मेघ इन्द्रके आदेशानुसार वृन्दावन पर शिलावृष्टि और वज्रपात करने लगे। गोपगण इस उत्पातको एक क्षण भी सह्य न कर रोते रोते कृष्णके निकट उपस्थित हुवे। उसी समय श्रीकृष्णचन्द्रजीने गोपकुल और गोकुलकी रक्षा करनेके लिये गोवर्द्धन पहाड़को अंगली पर उठा कर उन लोगोंके ऊपर धारण किया। ऐसा करनेसे सभीको आश्रय मिला। इसी तरह श्रीकृष्णने सात दिन पर्यन्त पर्वतको अङ्गुल पर रखा था। जब इन्द्रानुचर मेघने देखा कि सात दिन सात रात्रि तक अविश्रान्त शिलावृष्टि और वज्रपात होने पर भी वृन्दावनवासियोंका कोई अनिष्ट न हुआ तब वे उसी समय अपने कार्यको छोड़ इन्द्रके पास लौट आये। (हरिवंश ७६ अ०) महाभारतके सभापर्वमें भी कृष्णके गोवर्द्धन धारणका अल्प प्रसङ्ग है।

गोवर्द्धनधारिन् (सं० पु०) गोवर्द्धनं धारयति धारि णिनि। श्रीकृष्ण।

गोवर्द्धननाथ—एक हिन्दी कवि। इनका बनाया हुआ सुन्दरीतिलक नामावली ग्रंथ हिन्दुस्तानी समाजमें आदरणीय है।

गोवर्द्धनपणक भट्ट—वेदान्तसारसंग्रह नामक एक उत्कृष्ट वेदान्तिक ग्रन्थ प्रणेता।

गोवर्द्धन पाठक—एक विख्यात पौराणिक। इन्होंने १४७४ ई०को मलयखानके आदेशसे पुराणसर्वस्व नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किया है।

गोवर्द्धन मिश्र—एक विख्यात नैयायिक। ये बलभद्रके पुत्र, विश्वनाथ और पद्मनाभके कनिष्ठ भ्राता थे। इन्होंने तर्कभाषाप्रकाश और तर्कसंग्रहके न्यायबोधिनी नाम्नी टीका रचना की है।

गोवर्द्धन योगीन्द्र—योगचन्द्रिकाके रचयिता।

गोवर्द्धनरङ्ग—१ आमोदविद्रावण नामक संस्कृत ग्रन्थकार। २ वृन्दावनवासी एक नैयायिक, इन्होंने तर्कसंग्रहके न्यायार्थलघुबोधिनी नामकी टीका रचना की है।

गोवर्द्धनवैद्य—चिकित्सालेश और रोगप्रदीप नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार।

गोवर्द्धन श्रोत्रिय—द्रौपदीवस्त्रहरण नामक संस्कृत काव्यके प्रणेता।

गोवर्द्धनानन्द—एक प्राचीन संस्कृत कोषकार।

गोवशा (सं० स्त्री०) वशा वन्ध्या, गौः कर्मधारये वशाशब्दस्य परनिपातः। वन्ध्यागाभी, बाँझ गाय।

गोवाट (सं० क्ली०) गवां वाटं, ६-तत्। गोशाला, गोष्ठ, गौ रहनेकी जगह।

गोवारि (सं० क्ली०) गोमूत्र, गायका मूत।

गोवाल (सं० पु०) गोवालः, ६-तत्। १ गौका रोम, गायका रोआँ।

गोवास (सं० पु०) गवां वास, ६-तत्। १ गौका वास-स्थान, गोशाला, गोष्ठ।

गोवासदासन (सं० पु०) प्राच्य देशविशेष, पूर्वीय देश।

गोवासन (सं० पु०) गां वासयति वस-णिच्-ल्यु, तत्, ६-तत्। ब्राह्मणविशेष, गोपालक मुनिविशेष। (भाग ३।३३ अ०)

गोवि (सं० पु०) सङ्कीर्ण रागका एक भेद।

गोवि—मध्यएशियास्थ जलहीन एक विस्तृत मरुभूमि।

मङ्गोलीय भाषामें "गोवि" शब्दसे मरुका बोध होता है, उसीसे इस विस्तृत भूभागका नाम पड़ा है। यह अक्षा० ३० से ५० उ०, तथा देशा० ७५ से ११८ पू०में स्थित, श्याम और मङ्गोलीय पर्यन्त विस्तृत है। चीनदेशमें कभी कभी बालूकी वृष्टि हुआ करती है। लोगोंका विश्वास है कि वहो बालू यहां आ जम जाता है।

गोविकर्त्त (सं० पु०) गां विकृन्तति वि कृत अण् उपस०। १ गोघातक, बूचर, कसाय। २ कपक हलचलानेवाला।

गोविकर्त्त (सं० पु०) गां विकृन्तति वि कृत तृच्, ६ तत्। गोहिंसक, गोको मारनेवाला।

गोविट् (सं० स्त्री०) गोमय, गोबर।

गोवितत (सं० पु०) गावो वितता यत्र बहुव्री०। गोभूयिष्ठ अश्वमेध यज्ञ। (भारत १४।८० अ०)

गोविदांपति (सं० पु०) गा वेदवाणी विदन्ति गोविदो वेदज्ञास्तेषां पति, अलुक समास। परमेश्वर।

गोविनत (सं० पु० गावो विनता यत्र, बहुव्री०। अश्वमेध। (शतपथब्राह्मण १३।४।४।२८)

गोविन्द (सं० पु०) गां वेदमयीं वाणीं गां भूमिं स्वर्गं धेनुं वा विन्दति गो विद श। १ श्रीकृष्ण। हरिवंश प्रभृतिमें गोविन्द शब्दकी अनेक तरहकी व्युत्पत्ति देखी जाती है। हरिवंशमें लिखा है कि श्रीकृष्ण वृन्दावनमें रह कर बहुतसे गौओंका प्रतिपालन करते थे, इसी कारण 'गोविन्द' इस तरहकी व्युत्पत्तिके अनुसार इन्द्रने उनका नाम गोविन्द रखा। विष्णुतिलकका मत—

गोविन्दाभोमिन्दे .... ।
.... तत्वतः ॥'

ब्रह्मवैवर्त पुराणका मत—

"........"

विन्दतीति विन्द पालकः स्वामी वा, गवां विन्द पालक ६ तत्। २ गवाध्यक्ष, गौओंका अध्यक्ष। ३ वृहस्पति। ४ परब्रह्म। धार्मिक हिन्दूगण द्विभुजमुरलीधर गोविन्द मूर्त्तिकी पूजा करते हैं। इनका ध्यान यों है—

"........ ।
.... ॥
.... ।
.... ॥'

पूजाका मन्त्र— ओं .... स्वाहा।

५ वेदान्तवेत्ता, तत्त्वज्ञ। ६ गोमेदमणि।

गोविन्द—१ राष्ट्रकूट वंशीय एक राजा। २ निकुम्भ वंशीय एक राजा। ३ शङ्कराचार्यके गुरु और गौड़पादके शिष्य।

४ षडगुरुशिष्यके एक गुरु। ५ भोजप्रबन्धवर्णित एक कवि। ६ आत्मतत्त्वविवेकके एक टीकाकार। ७ गणेशगीताके एक टीकाकार।

८ एक विख्यात आलङ्कारिक और टीकाकार। इन्हों ने नलोदयटीका, शिशुपालवधटीका, सभ्याभरणटीका, कुमारदेवके शालिवाहन सप्तशतीकी टीका एवं छन्दोदर्पण नामक संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। ९ एक प्रसिद्ध कवि। (........)

१० जन्मदीपक और तिथिनिर्णय नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

११ नाड़ीप्रकाश नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार।

१२ तालदश प्राणदीपिका नामक सङ्गीतशास्त्रकार।

१३ परमार्थविवेक नामक वैदान्तिक ग्रन्थप्रणेता।

१४ एक विख्यात ज्योतिर्विद्। इन्होंने संस्कृत भाषा में बालवृद्धिप्रकाशिनी, विवाहप्रकरण और संस्कारप्रकरण नामकी ज्योतिर्ग्रन्थ रचना किये हैं।

१५ पूजाप्रदीप नामक भक्ति शास्त्रकार।

१६ वृहस्पति सव प्रयोग और आश्वलायनीय प्रायश्चित्तप्रयोग रचयिता।

१७ मानसोल्लास नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता।

१८ एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थकार। इन्होंने रससार, रसहृदय और सन्निपातमञ्जरी नामके संस्कृत चिकित्सा ग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

१९ मतादिनिर्णय नामका ज्योतिर्ग्रन्थकार।

२० हलायुध और मधुसूदन प्रभृतिके शिष्य, शाङ्खायनश्रौतसूत्रीय महाव्रतका एक टीकाकार।

२१ कल्ह कवीश्वरके पुत्र, सम्वित्प्रकाश नामक ज्योतिःशास्त्रकार।

२२ जुवरनिवासी गदाधरके पुत्र। इन्होंने १६८२ ई० को कुण्डमार्त्तण्ड नामक संस्कृत ग्रन्थ प्रणयन किये हैं।

२३ भट्ट रङ्गाचार्यके एक पुत्र संस्कृत भाषामें गोपालमोमार्णव नामका भाण रचयिता।

२४ विट्ठलदेवज्ञके पुत्र, प्रश्नसार नामक ज्योतिर्ग्रन्थ बनानेवाले।

२५ एक नैयायिक। इनके पिताका नाम नारायण था इन्होंने न्यायशास्त्रके बालबोध नामकी टीका रचना की है।

२६ गोविन्दाचार्य नामका ख्यात, अष्टश्लोकीके एक व्याख्याकार।

२७ सिक्खोंके १० गुरुओंमेंसे एक। (गुरुगोविन्द देखो।)

२८ एक मशहूर कवि। इन्होंने हिन्दी भाषामें अनेक सी कवितायें बनाई हैं जिनमेंसे दो नीचे दी जाती हैं—

"मोहन सुबासबिन्द पर मकरन्द सिटिक आवो न रहै।
ना है ओर भाइनि भाव परत है सिर अईं रसन लुभाई॥
अलक सिरक फुलन अविल छवि एक हमका जांपे बरनो न जाई।"
गोविन्द प्रभुको गाति न दर गति बनि रसिक चूड़ामणि आई॥
"लाल प्यारी अति विलक्षण बन किधौं सुहाग।
त्रिविध समुन सुगन्ध शीतल विविध कथा रची
जाने मदन मोहन मिश्रा जाग॥
बैठे कुंजन द्वार [illegible] कोकिल भरि भरि आवत
नयन नियाल तव अनुराग।
दूनौं बचन सुनि प्रेम व्याकुल भई किधौं जाय
गोविन्द प्रभुको मीठो उदय दाग॥"

गोविन्द अटल—एक विख्यात हिन्दी कवि।

गोविन्द अभिराम—हिन्दीके एक कवि। इनकी रची हुई एक कविता नीचे दी जाती है—

"बजा गोपालको आज बाजै।
बहुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्त सुरको गाजै॥
लाग धीर कुल बान बाज डर सुध बुध बाजत सुनत सब भाजै।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम सौं मिल सब सघर गाजै॥"

गोविन्दकूट (सं० पु०) पर्वतविशेष।

गोविन्दगञ्ज—बङ्गालके बगुड़ा जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम। यह अक्षा० २५° ८' २५" उ० और देशा० ८८° २८' पू०के मध्य करतोया नदीके कूल पर अवस्थित है। इसके निकट ही प्राचीन वर्द्धनकोट नगरका ध्वंसावशेष देखा जाता है।

गोविन्दगढ़—१ पञ्जाब प्रदेशके पटियाला राज्यके अन्तर्गत अनाहदगढ़ निजामतकी पूर्वीय तहसील। यह अक्षा० २९° २३' से ३०° ३०' उ० और देशा० ७४° ४१' से ७५° ३१' पू० में अवस्थित है। भूपरिमाण ८६८ वर्गमील और लोकसंख्या प्रायः १४६४१७ है। इस तहसीलमें भटिण्डा नामक शहर और १८६ ग्राम लगते हैं। यहांकी आय दो लाख रुपयेसे अधिक है।

२ मध्य-भारतके रेवा राज्यके अन्तर्गत हुजूर तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २४° २६' उ० और देशा० ८१° १८' पू० समुद्रपृष्ठसे १२०० फुट ऊंचे पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ५०७२ है। पहाड़के समीप होने तथा जङ्गलोंसे घिरे रहनेके कारण गोविन्दगढ़का दृश्य अत्यन्त मनोहर लगता है। यहां एक डाकघर विद्यालय तथा चिकित्सालय है।

३ राजपूतानेमें अलवर राज्यके अन्तर्गत इसी नामकी तहसीलका शहर। यह अक्षा० २७° ३०' उ० और देशा० ७७° पू० अलवर शहरसे पूरबमें पड़ता है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः ४८३८ है। १८०५ ई०का महाराव राजा बख्तावरसिंहका निर्माण किया हुआ एक दुर्ग है जो इस शहरसे आध मील उत्तरमें अवस्थित है। रोशनी तथा स्वास्थ्य विभागका प्रबन्ध म्युनिसिपालिटीके हाथ है। गोविन्दगढ़ तहसील १८वीं शताब्दीमें जाटोंके अधीन था, लेकिन १८०३ में महाराव राजा बख्तावर सिंहने महाराष्ट्रकी सहायतासे उन्हें निकाल भगाया और तहसीलको अपने अधिकारमें कर लिया, यह अलवरके अधीन आ रही है। इस शहरमें एक डाकघर और वर्नाक्युलर स्कूल है।

गोविन्दगढ़—अमृतसर नगरके उत्तर-पश्चिममें अवस्थित एक दुर्ग। यह अक्षा० ३१° ३०' उ० और देशा० ७४° ४५' पू०में है। सिख जातिके पवित्र अमृतसर नगरमें तीर्थयात्रियोंके आश्रयके लिये राजा रणजित्सिंहने १८०८ ई०को यह दुर्ग निर्माण किया था। १८५७ ई०में सिपाहीविद्रोहके बाद यह दुर्ग अंगरेजोंके अधिकारमें आ गया।

गोविन्दघोषठाकुर—इनका प्रकृत नाम गोविन्दचन्द्रघोष था। ये "घोषठाकुर" नामसे प्रसिद्ध हैं। ये अग्रद्वीपके प्रसिद्ध गोपीनाथ विग्रहके प्रकाशक थे।

कोई कहता है कि अग्रद्वीपके निकट ही काशीपुर विष्णुतलामें घोषठाकुरका वास था किसीका मत है कि देवगावतलामें उनका जन्म स्थान रहा, अभी तक भी

घोषउपाधिके बहुतसे कायस्थ रहते हैं। फिर कोई बोलते हैं कि घोषठाकुर उत्तरराढ़ी कायस्थ थे। स्त्रीके मरनेके बाद कोई सन्तान नहीं रहनेके कारण ये उदास हो गङ्गातीर पर अग्रद्वीपके निकट आ वास करते थे। एक दिन चैतन्यदेव भक्तमण्डलीके साथ जाह्नवी तीर पर पहुंचे, इस समय गोविन्द उनसे आ मिले। नवीन सन्यासीकी तेजोमय अपूर्व मुखश्री देख गोविन्दका चित्त पिघल गया। वे महाप्रभुके चरणों पर गिर रो रो कर कहने लगे, 'प्रभो!—मैं संसार नहीं चाहता। धन मान तथा ऐश्वर्य कुछ नहीं चाहता, सिर्फ आपके चरण कमलोंकी सेवा करना चाहता हूं।' तब गौराङ्गदेव उन्हें संसारके अनेक प्रलोभन दिखाने लगे। गोविन्द तनिक भी विचलित न हो बोले, "धन, मान, ऐश्वर्य दूर रहे, मुझे अब इनसे कुछ भी प्रयोजन नहीं है। दया करके आप अपने चरणमें स्थान दीजिए।" ऐसा कहते हुए उन्होंने चैतन्य महाप्रभुका पैर जोरसे पकड़ा। गोविन्दको प्रकृत भक्त समझ महाप्रभुने उनसे आलिङ्गन किया और कहा, "यदि निष्काम व्रत पालन करनेमें समर्थ हो तब मेरे साथ रह सकते हो।" गोविन्दने बहुत उल्लाससे उनका पदरेणु ग्रहण किया और निष्काम व्रतपालनमें मग्नमन हुए।

चैतन्यदेव बङ्गालसे पैदल हो अग्रदीप आये। यहां ने भोजनादिके बाद मुखशुद्धि न पाकर भक्तगणसे बोले, "आज मालूम पड़ता है कि मुखशुद्धि नहीं हुई है।" इस पर शिष्योंने कुछ भी उत्तर न दिया तब गोविन्दने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, 'प्रभो! मेरे पास एक हर्रेतकी है यदि आज्ञा हो तो सेवामें अर्पण करूं।'

चैतन्यदेव हंस कर बोले, "गोविन्द! तुम्हारी भक्तिको मानकर अत्यन्त आह्लादसे ग्रहण किया किन्तु आजसे हो तुम मेरा साथ छोड़ दो।'

गोविन्दको सहसा वज्राघात सा मालूम पड़ा और वे रो रो कर कहने लगे, देव! इस दासने कौनसा अपराध किया जिससे ऐसा कठोर आदेश दिया गया है?'

चैतन्यदेवने स्नेह पूर्वक उत्तर दिया, "गोविन्द! तुम यथार्थ भक्त और हरिकृपाके अधिकारी हो, किन्तु निष्काम व्रत पालनका अधिकारी नहीं हो, अभी तक भी तुम्हारी विषयवासना दूर नहीं हुई है। अब भी तुम्हें सञ्चय स्पृहा मौजूद है। इसी लिये कहता हूं कि घर लौट जाओ, हरिकी आराधना करो, उसीसे तुम्हारी मुक्ति होगी।"

दीर्घनिश्वास लेते हुए गोविन्द सजल नयन हो बोले, 'मैं कुछ नहीं चाहता, सर्वस्व तिलाञ्जलि दी है, संसार लौट कर नहीं जा सकता हूं।'

चैतन्यदेवने भक्तको आलिङ्गन करते हुए कहा, "तुमने सर्वस्व परित्याग किया है सही, किन्तु अब भी तुम्हें विषम कण्टक रह गया है। आज तुमने हर्रेतकी सञ्चय की है, कल्ह, फिर एक नवीन प्राप्ति करनेकी इच्छा होगी इसी कामनाको बाधक जानो। तुम घर लौट जाओ इसीमें कुशल है। जिस दिन तुम्हारे जीवनमें अलौकिक घटना घटेगी, उसी दिन मुझसे भेंट पाओगे। यदि कोई अनूठी चीज पाओ तो उसे यत्नपूर्वक रखो उसीसे तुम्हारी आशा पूर्ण होगी।"

इस तरह गोविन्दको शोकसागरमें डुबाते हुए आप अग्रद्वीप छोड़ चल बसे। एक दिन भक्त गोविन्द गङ्गा जलसे शुद्ध हो ध्यानमें मग्न थे। उसी अवस्थामें किसी चीजने उनकी पीठ पर तीनबार धक्का दिया। अन्तमें उन्हें मालूम पड़ा कि यह सिर्फ सूतदारका एक छोटा काठ है। किन्तु उसे उठानेके समय जान पड़ा कि वह सामान्य काष्ठ स्वाभाविक गुरुत्वकी अपेक्षा सौ गुना भारी है ऐसा क्यों होता है। विस्मयसे गोविन्दके मनमें एक अपूर्व भाव उत्पन्न हो आया। वे कुटी पर लौट आये, परन्तु मनका सन्देह दूर नहीं हुआ। रात्रिकालमें गोविन्दने स्वप्न देखा कि, शङ्खचक्रगदाधर मानों उनसे कह रहे हैं, "गोविन्द! मत भूलो! मत भूलो! उस काठको उठा लाओ। महाप्रभु यहां रहें हैं आने पर उन्हींको दे देना।' गोविन्दकी निद्रा टूट गई, उन्होंने देखा कि चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ है। वे उसी समय अन्धकारमें गङ्गाके किनारे पहुंचे वहां जा कर उन्होंने देखा कि वह लकड़ी उसी स्थान पर पड़ी है। बहुत यत्नसे उस काठको कन्धे पर रख धीरे धीरे अपनी कुटीको आये। उस रात गोविन्दको तनिक

"कनक छरी सी कहनाद कुण्डलाञ्चित अंगरे।
केलि कीन्हें यमुन कृष्णको लाकना कल अंगरे ॥
केसरी कटि कसबु कन्दर कुच कंचन दामरे।
कहि यान . । गोप नवनि कवित दास गोविंद नामरे ॥"

गोविंददीक्षित – एक संस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने अपत्नीकाधाननिर्णय और काम्येष्टिप्रयोगकी रचना की है।

गोविंदद्वादशी (सं० स्त्री०) गोविंदप्रिया द्वादशी मध्यपदलो० पुष्यानक्षत्रयुक्त फाल्गुन मासकी शुक्ल द्वादशी। ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि इस दिन उपवास करनेसे समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। लोकव्यवहारमें यह तिथि आमर्दकी द्वादशीसे भी प्रसिद्ध है। पापनाशिनी-माहात्म्यका मत है कि फाल्गुण मासमें आमर्दकी व्रत करनेसे विष्णुलोकको प्राप्ति होती है। प्रभासखण्डके मतसे शुक्ला एकादशीमें उपवासी रह कर द्वादशीके दिन नदी तड़ाग या दीर्घिका (कूप) में स्नान करना उचित है और उसके बाद पर्वत, वन अथवा अन्य किसी दूसरे स्थानमें (जहां आमर्दकी वृक्ष पाया जाय वहां) उपस्थित हो हरिकी पूजा कर समस्त रात्रि जाग कर व्यतीत करनी चाहिये। एक जलपूर्ण कमण्डलु भी सद्ब्राह्मणको दान दे। हविष्य करके सारी रात जाग कर हरिकथा श्रवण करें। ऐसा करनेसे मनुष्य समस्त पापोंसे मुक्ति लाभ कर सकते और पाञ्चभौतिक शरीर पतन होने पर ही निर्वाण (मोक्ष) लाभ करते हैं। (हरिभक्तिवि०)

गोविंदनाथ—शङ्कराचार्यके गुरु और गौड़पादके शिष्य। ये एक प्रसिद्ध योगी थे। सर्वदर्शनसंग्रहमें इनका मत उद्धृत है।

गोविंदनायक—एक शैवशास्त्रकार।

गोविंदन्यायवागीश—प्रसिद्ध वासुदेव सार्वभौमवंशीय एक विख्यात नैयायिक।

गोविंदपण्डित–१ एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विंद। इन्होंने संस्कृत भाषामें ज्योतिषरत्नसंग्रह, यामलानुसारिग्रन्थ, उत्पलपरिमलटीका, मुहूर्तचिन्तामणिकी पीयूषधारा नाम्नी टीका तथा नीलकण्ठताजिककी सरला नामकी टीका प्रणयन की है।

२ रामपण्डितके पुत्र, श्राद्धपद्धति नामका स्मृतिसंग्रहकार।

गोविंदपन्थी— वैष्णवोंका एक सम्प्रदाय। इनके गुरु गोविन्द दास थे जिनकी कब्र फैजाबाद जिलेके अहरौली ग्राममें है।

गोविंदपुर—१ मानभूम जिलाके अन्तर्गत उत्तरीय उपविभाग। १८५१-५२ ई०को यह एक स्वतन्त्र उपविभागरूपमें संगठित हुआ। यह अक्षा० २३° ३८' तथा २४° ४' उ० और देशा० ८६° ७' एवं ८६° ५०' पू०के मध्य अवस्थित है। इसका भूपरिमाण ८०३ वर्गमील है। १८७०-७१ ई०को यहां सिर्फ दो फौजदारी अदालत स्थापित हुए थे।

२ बंगालके अन्तर्गत मानभूम विभागका एक सदर। यह अक्षा० २३° ५०' उ० और देशा० ८६° ३२' पू०में अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या २७७१२२ है। इस सबडिवीजनमें दामोदर और बराकर नदीके मध्य त्रिभुजाकृति एक स्थान है। इसकी पश्चिम सीमा छोटा नागपुर है। उत्तर और पूर्वमें खुला मैदान है जो कुछ पहाड़ियोंके रहनेसे ऊंचा नीचा है। इसमें १२४८ ग्राम लगते हैं, जिसमें गोविन्दपुर ही सदर है, इसके सिवा और कोई शहर नहीं है। झरियाकी कोयलेकी खान भी इसी उपविभागके अन्तर्गत है।

३ कलकत्ताके दक्षिण अभी जहाँ फोर्ट विलियम दुर्ग है उसको समतलभूमि और समस्त अंग पूर्व समयमें गोविंदपुर नामसे मशहूर था। (कलकत्ता देखो।)

गोविंदपुरम्—तञ्जोर जिलेके अन्तर्गत एक ग्राम जो नरसरावपेटासे ५ मील दक्षिण-पूर्वमें स्थित है। इस ग्रामके पश्चिम एक मंदिरमें बहुतसी प्रतिमूर्तियां और दो खोदित शिलालिपि है। ऐसा सुना जाता है कि द्वादश शताब्दीमें किसी चोलराजसे यह मंदिर निर्माण किया गया था। इस ग्राममें कृष्णदेवरायसे प्रतिष्ठित एक विष्णु मंदिर है। इस मंदिरके प्रवेशद्वार पर तेलगू भाषामें लिखा हुआ एक शिलाफलक दृष्ट होता है।

गोविन्दप्रभु—ये भी अच्छे कवियोंमें गिने जाते थे। यों तो इन्होंने बहुतसी कवितायें रची है लेकिन यहां पर सिर्फ एक ही दी जाती है—

"कहा करौ बैकुण्ठ ही जाय

जहाँ तहाँ कुञ्जनतर चहुँ कोकिल मद युत धन बायु बहार।
जहाँ वहाँ सुमोहन अरु वन अन फुल फूल न पुरत मधुप अमाय।
सारस हंस मोर जहाँ कोकिल तहाँ बतवे कोमल सोहाय।
जहाँ वहाँ तन वृन्दावन दीपन गोपीन सन यथोचित काय।
गोविन्द प्रभु गोपी चरणनकी हजरत तनिकहो जाय बताय ॥

गोविन्दभट्ट—१ आत्मावबोध नामक वेदान्त ग्रन्थके रचयिता।

२ तिथिनिर्णय नामका स्मृतिसंग्रहकार।

३ पराशरसंहिताके एक भाष्यकार।

४ मीमांसा मङ्गल्यकौमुदी नामक स्मृतिसंग्रहकार।

५ राजचन्द्रयश प्रबन्ध नामक संस्कृत काव्यरचयिता।

६ वृत्तरत्नाकरके एक टीकाकार।

७ एक विख्यात अलङ्कारशास्त्रवित्, केशवके पुत्र और रुचिकरके वैमात्रेय भ्राता। इन्होंने काव्यप्रदीप नामका काव्यप्रकाशकी टीका रचना की है। काव्यप्रदीप पहले पहल श्रीहर्षने लिखना आरम्भ किया था। किन्तु उनकी मृत्यु होने पर उनके शत्रु गोविन्दने इसे पूर्ण किया। ८ वेदान्तसूत्रके एक वैष्णवीय भाष्यकार।

गोविन्दभट्ट—एक जैन ग्रन्थकार। ये जातिके कायस्थ थे। इनका बनाया हुआ एक ग्रन्थ "पुरुषार्थानुशासन" प्राप्त है। इनके श्रीकुमार कवि, सत्यवाक, देवरवल्लभ, उद्यत भूषण, हस्तिमल्ल कवि और वर्द्धमान कवि ये छह पुत्र थे और सभी उद्भट विद्वान् थे। इनमें से विक्रान्तकौरव आदि नाटकोंके कर्त्ता हस्तिमल्ल प्रसिद्ध हैं।

गोविन्दभट्टाचार्य चक्रवर्त्ती—बङ्गदेशीय, एक विख्यात पण्डित, इन्होंने संस्कृत भाषामें समासवाद और पदार्थखण्डन-टीका लिखी है।

गोविन्द महामहोपाध्याय—एक विख्यात पण्डित। इन्हें 'बुधमालावधूत' नामकी एक और उपाधि है। इन्होंने अधिकरणमाला नामका एक उत्कृष्ट संस्कृत दर्शनग्रन्थ प्रणयन किया है।

गोविन्दमिश्र—१ पद्यावलीधृत एक प्राचीन कवि।

२ आनन्दतीर्थ रचित ब्रह्मसूत्रभाष्यके एक टीकाकार।

गोविन्दराय—कल्याणपुरके चालुक्यवंशीय एक राजा, वीरसत्याश्रयके पिता। (चालुक्य देखो।)

गोविन्दराज—१ एक विख्यात पण्डित, माधवभट्टके पुत्र। इन्होंने मानवधर्मशास्त्रकी टीका और मञ्जरी नामकी याज्ञवल्क्यस्मृतिकी टीका रचना की है।

२ सुभाषितावलीधृत एक प्राचीन कवि।

३ तैत्तिरीयोपनिषद्‌का एक भाष्यकार।

४ रामायणचम्पू और राजवंश नामक संस्कृत काव्यकार।

५ मयूरशतककीव्याख्या और शृङ्गारतिलकका 'भूषण' नामक टीकाकार।

गोविन्दराम—१ गोविन्दविलास नामक वेदान्त ग्रन्थके रचयिता।

२ कुमारसम्भवके धीररञ्जनिका नामक एक टीकाकार

३ देवीमाहात्म्य और गङ्गासहस्र नामक एक टीकाकार।

४ रामदेवके पुत्र, महिम्नस्तवप्रकाशिकाके रचयिता।

५ राजस्थानके एक विख्यात कवि, इन्होंने सुन्दर हिन्दी कवितामें "हारावती" नामक हरवंशीय राजपूत राजगणोंका इतिहासको रचना की है।

गोविन्दराम शिरोमणि—एक बङ्गदेशीय पण्डित। इन्होंने शब्ददीपिका नामक मुग्धबोधकी टीका रची है।

गोविन्दरामसेन नाड़ीज्ञान नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थकार।

गोविन्दयज्व—अद्वैतादित्य नामक वेदान्त ग्रन्थ रचयिता।

गोविन्द विद्याविनोदभट्ट—एक विख्यात संस्कृत ग्रन्थकार। इन्होंने भागवतसार, क्रमदीपिकातन्त्रकी टीका और त्रिपुरासारसमुच्चयका पदार्थप्रकाश नामकी टीका रची है।

गोविन्दशर्मन्-वेदान्त कथारत्न नामक वैदान्तिक ग्रन्थकार।

गोविन्दशास्त्री—१ आचारसारहस्य नामक संस्कृत ग्रन्थकार। २ अच्युततीर्थका नामान्तर। १७४८ ई०को इनका देहान्त हुआ था।

गोविन्दशेष—काशीरामके शेष यज्ञेश्वरके पुत्र। एक विख्यात वेदवित्। इन्होंने बौधायनीय दर्शपूर्णमासप्रयोग, बौधायनीय अग्निष्टोमप्रयोग सोमप्रयोग और विनतानटव्यायोग नामक कई एक धार्मिक ग्रन्थोंकी रचना की है।

गोविन्दस्वामिन् १ एक परमवैष्णव और विख्यात कवि, भक्तिमाहात्म्य नामक प्राचीन वैष्णव ग्रंथमें इनका माहात्म्य विस्तार रूपसे वर्णित है। २ एक वैदिक पण्डित बौधायणीय धर्मसूत्र और ऐतरेय ब्राह्मणके एक भाष्यकार। माधवीय धातुवृत्तिमें इनका मत उद्धृत है।

गोविन्दा (सं० स्त्री०) जीवन्धरस्वामीकी पत्नी।

जीवंधरस्वामी देखो।

गोविंदाचार्य—१ शङ्कराचार्यके गुरु। शंकराचार्य देखो। २ एक फारसी और संस्कृतभाषावित् पण्डित। इन्होंने अध्यात्मरामायणका फारसी अनुवाद किया था।

गोविन्दानंद—१ अर्थरत्नप्रभा नामक जातकार्णवके टीकाकार। इनकी उपाधि "कविकाञ्चनाचार्य" थी।

२ एक विख्यात स्मृतिशास्त्रवित्, गणपतिभट्टके पुत्र। इन्होंने क्रियाकौमुदी, दानकौमुदी, वर्षकौमुदी, शुद्धिकौमुदी, श्राद्धकौमुदी, गोविंदानंदीय धर्मशास्त्र एवं शूलपाणिके प्रायश्चित्तविवेकके तत्त्वकौमुदी नामकी टीका प्रणयन की है।

गोविन्दिनी (सं० स्त्री०) प्रियङ्गु।

गोविन्दु (सं० त्रि०) गवां विन्दुः, ६-तत्। गोलम्भक, ग लाभ करनेवाला।

गोविराटी (सं० स्त्री०) शारिका पक्षी।

गोविष (सं० स्त्री०) गोर्विट्, ६-तत्। गोविष्ठा, गोमय, गोबर।

गोविषाण (सं० क्ली०) गोर्विषाणं, ६-तत्। गौके शृङ्ग, गायका सींग।

गोविषाणाह्वा (सं० स्त्री०) बबूलवृक्ष।

गोविषाणिक (सं० पु०) गोविषाणं साधनतया अस्त्यस्य गोविषाण-ठन्। गोविषाण निर्मित वाद्यविशेष, गोशृङ्गका बना हुआ एक तरहका बाजा।

गोविष्ठा (सं० स्त्री०) गोर्विष्ठा, ६-तत्। गोमय, गोबर।

गोविसर्ग (सं० पु०) गोर्विसर्गः, ६-तत्। १ गोपरित्याग। २ प्रातःकाल, सुबह, तड़का।

गोवीथि (सं० स्त्री०) गवां ग्रहाणां वीथिर्मार्गविशेषः, ६ तत्। ज्योतिर्विद्गण अश्विनी प्रभृति तीन तीन नक्षत्रमें एक एक वीथि या पथ कल्पना करते हैं। नक्षत्रमण्डलमें सर्वसम्मत नौ वीथि हैं, जिनमेंसे हस्ता, चित्रा और स्वाती इन तीन नक्षत्रोंमें जो वीथि हो उसे गोवीथि कहते हैं। किसी किसी ज्योतिषीके मतसे अश्विनी, रेवती, पूर्वभाद्र और उत्तरभाद्र इन चार नक्षत्रोंमें गोवीथि हुआ करती है। (वृहत्संहिता ६।२)

गोवीर्य (सं० क्ली०) गवां वीर्यं, ६-तत्। गौका वीर्य।

गोवृन्द (सं० क्ली०) गवां वृन्दं, ६-तत्। गोसमूह, गौका झुण्ड।

गोवृन्दारक (सं० पु०) गौर्वृन्दारक इव उपमितस०। श्रेष्ठ गौ, सुंदर गोरू।

गोवृष (सं० पु०) गोषु वर्षति रेतः सिञ्चति वृष-क। १ श्रेष्ठ वृष, अच्छा सांढ़। गोश्च वृषश्च तौ माटग्वं नामत्यस्य गोवृष·श्च। २ न्यायविशेष। ३ शिवजी।

गोवृषध्वज (सं० पु०) शिव, महादेव।

गोवृषभ (सं० पु०) श्रेष्ठ वृष, सुंदर बैल या सांढ़।

गोवेष्ट (सं० क्ली०) शोसक धातु, सीसा। (Lead)

गोवैद्य (सं० पु०) गौरिव वैद्यः। १ मूर्ख वैद्य। गोवैद्यः चिकित्सकः, ६-तत्०। २ गोचिकित्सक गौका वैद्य।

गोव्यच्छ (सं० त्रि०) गौके निकट गमनशील, वह जो गौके पास जाता हो।

गोव्याधिन (सं० पु०) गोत्रप्रवर्त्तक एक ऋषि।

गोव्याघ्र (सं० पु०) गौ और बाघ।

गोव्रज (सं० पु०) गवां व्रजः, ६-तत्०। १ गोसमूह, गायका झुण्ड। गावो व्रजन्त्यत्र व्रज आधारे क। गो-गतिस्थान, गोष्ठ, गोशाला। २ दानवविशेष।

गोव्रत (सं० क्ली०) गोषु व्रतम्, ६-तत्०। एक प्रकारका व्रत जो गोहत्याके प्रायश्चित्तके लिये किया जाता है। इस व्रतमें गोव्रतिन्को केश मुण्डन कर एक मास तक किसी गौके पीछे घूमना पड़ता है। गायको ठहरानेके लिए एक मुहूर्त्त भी कोशिश करना निषेध है। हां, यदि वह अपनी ही इच्छासे ठहरे तो व्रती खड़ा हो सकता है, अन्यथा उसके पीछे पीछे चलना पड़ता है। गायके अवसन्न हो जाने अथवा किसी आपत्तिमें पड़ जानेसे उसे उद्धार तथा रक्षा भी करनी पड़ती है। गोसूत्रमें स्नान करना एवं केवल गोदुग्ध पी कर ही जीवन

धारण करना पड़ता है। एक मास पर्यन्त उक्त नियमके अनुष्ठानको गोव्रत कहते हैं। गाव्रत शब्दमें विशेष विवरण देखो।

गोव्रतिन् (स त्रि०) गोव्रतमस्यास्ति अनुष्ठेयतया गोव्रत इनि। गोव्रत आचरण करनेवाला।

गोहा—यशोर जिलाके सुन्दरवन विभागके अन्तर्गत एक ग्राम। यह कपोताच नदी कूल पर अवस्थित है। पूर्व समयमें यह बहुजनाकीर्ण रहा, ध्वंसावशिष्ट बृहत् वास भवनादि आज भी उसका परिचय देते हैं। इस ग्रामकी रक्षाके लिये कपोताच नदी पर एक पुल है।

गोश (फा० पु०) १ सुननेकी इन्द्रिय, कान। (स्त्री०) २ पर्दानशीन, जो स्त्री सदा घरमें ही रहती, किसी दूसरे पुरुषके समक्ष बाहर नहीं होती हो।

गोशकृत् (सं० क्ली०) गो शकृत् ६ तत्०। गोमय, गोबर।

गोशत (स० पु०) १०० गौओंका टाना।

गोशपेच (फा० पु०) कानमें पहनेका जेवर।

गोशफ (स० पु क्ली०) गो शफ, ६ तत्०। गोका खुर।

गोशमायल (फा० पु०) कानके पास लटका रहता हुआ मोतियोंकी लड़ीका गुच्छा जो पगड़ीमें एक ओर लगा रहता है।

गोशमाली (फा० स्त्री०) १ कान उमेठनी। २ ताड़ना, कड़ी चेतावनी।

गोशर्य (स० पु०) शर्या शीर्णा गोर्यत्र, बहुव्री०, विशेषण स्य परनिपातश्छांदस। इहत् सर्प, अजगर।

गोशवारा (फा० पु०) १ खज्जक नामका पेड़। २ कुण्डल, कानका बाला। ३ सीपका बड़ा मोती। ४ पगड़ीका किनारा जो कलाबतूसे बुना रहता है। ५ तुर्रा, कलगी, सिरपेच। ६ जोड़, मिजान।

गोशा (फा० पु०) १ कोण, कोना। २ एकान्तस्थान, जहां कोई न हो। ३ तरफ, दिशा, ओर। ४ धनुषकोटि, कमानकी दोनों नोंके।

गोशाड्वल (स० पु०) अग्निपर्णी।

गोशाल (स० क्ली०) गवां शाला, ६-तत्। विकल्पे क्लीव त्वञ्च। गोशाला, गौके रहनेका घर।

गोशाला (सं० स्त्री०) गो:शाला, ६ तत्। गोष्ठ, गोठ, गौओंके रहनेका स्थान।

गोशिशरा—कौशाम्बी नगरका उपनगर। कौशाम्बी देखा।

गोशीर्ष (स० पु०) गो: शीर्षमिव शीर्षं यस्य, बहुव्री०। १ एक पर्वतका नाम जो देखनेमें ठीक गोशृङ्गाकृति की है। २ चन्दनविशेष, जो उक्त पर्वत पर उत्पन्न होता है। ३ एक प्रकारका अस्त्र। (क्ली०) गोशीर्ष, ६ तत्। गोमस्तक, गौका मस्तक।

गोशीर्षक (स० पु०) गो शीर्षमिव कायति कै क। १ द्रोणपुष्पीवृक्ष। गोशीर्ष स्वार्थे कन्। २ श्वेतचन्दन।

गोशृङ्ग (स० पु०) गो शीर्षमिव शृङ्ग शीर्षभागो यस्य, बहुव्री०। १ ऋषिविशेष। (ब्र०पु० प्रभावखण्ड) २ एक पर्वत। रामायणमें लिखा है कि इस पर्वत पर मंदेह नामके बहुतसे राक्षस रहा करते थे। ये क्षुद्राकृति अथवा एक हाथ परिमाणके ऊंचे थे। रात्रिके समय ये टहलने बाहर निकलते और सांसारिक कार्य किया करते थे, किन्तु रात्रिके अवसान होने पर पुन जलमें छिप जाते और सूर्यास्त होने पर बाहर निकल आते थे। ये बड़े दुष्ट और दुराचारी रहे, इनके शापसे इस अवस्थाको प्राप्त हुवे थे। यह पर्वत बौद्धोंके धर्म-ग्रन्थमें एक पुण्य शैल कह कर वर्णित है। स्वयम्भुपुराणमें लिखा है कि सत्ययुगमें इस पर्वतका नाम पद्मगिरि, त्रेतायुगमें वज्रकूट, द्वापरमें गोशृङ्ग और वर्तमान कलियुगमें गोपुच्छ पड़ा है। (स्वयम्भुपुराण १ अ०)

महाभारतमें भी इस पर्वतका उल्लेख है। चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्गने "किउ शि लि किया" नामसे इस पर्वतका उल्लेख किया है। (क्ली०) गोशृङ्ग, ६ तत्। गौका शृङ्ग, गौका सिंग। (पु०) गोशृङ्ग तदाकारोऽस्यस्य गोशृङ्ग अच्। ४ बब्बूर वृक्ष, बबूलका पेड़। ५ हिन्दुओंके एक तरहका सामरिक यन्त्र।

गोश्त (फा० पु०) मांस, आमिष।

गोश्रुति (पु०) वैयाघ्रपद्य गोत्रोत्पन्न एक ऋषि।

गोश्व (स० पु०) गौयाश्वश्च इतरेतरद्वन्द्व। गौ और अश्व, बैल और घोड़ा।

गोसखि (स० पु०) गौ सखा यस्य, बहुव्री०, छांदसत्वात् सत्व। १ दुग्धसे मिश्रित मधु। २ वह मनुष्य जिसका गौ ही सखा हो।

गोषड्गव (स० क्ली०) गवां षट्क गो षड्गवच। गोषट्क, गौकी छः संख्या, छः गाय।

गोषणि (सं॰ त्रि॰) गां सनोति ददाति सन दाने इन् वा षत्वं ।। गोदाता, जो गाय दान करता हो।

गोषदु (सं॰ त्रि॰) गवि वाचि सीदन्ति सद-क्विप्-पूर्वपदात् षत्वं । जो बात बोलनेमें तुतलाता हो।

गोषदादि (सं॰ पु॰) गोषत् आदिर्यस्य, बहुव्रो॰। पाणिनीका एक गण। गोषद, इपेला, मातरिश्वन्, देवस्यला, देवीगयः कणास्या, खरेष्ठा, देवीधियः, रक्षोहण, युञ्जान, अञ्जन, प्रभूत, प्रतुर्त्त, कृशानु और गोपद इन सबको गोषदादि गण कहते हैं।

गोषन (सं॰ त्रि॰) गां सनोति सन्-विच्। गोदाता गाय दान करनेवाला।

गोषा (सं॰ त्रि॰) गां सनोति षन्-विट्। गोदाता, जो गौ दान करता हो।

गोषाति (सं॰ स्त्री॰) गो भावे क्तिन गवां षातिः, ६-तत्। इत्वञ्च। १ गोलाभ। २ गोदान।

गोषादी (सं॰ स्त्री॰) गां सादयति सद-णिच्-अण् उपस॰ सत्वं गौरादित्वात् ङीष्। पक्षिविशेष, कोई चिड़िया।

गोषुचर (सं॰ त्रि॰) गोषु चरति चर-ट अलुक्स॰। गोमध्ये विचरण, गौके साथ चलनेवाला।

गोषुयुध् (सं॰ त्रि॰) गोषु युध्यत इति युध् क्विप् अलुक्स॰। जो गौके लिए लड़ता हो।

गोष्क्तिन् (सं॰ पु॰) एक ऋषिका नाम।

गोषेधा (सं॰ स्त्री॰) गोरिव सेध उल्लेधो यस्याः, बहुव्रो॰। पूर्वपदात् षत्वं। दुर्लक्षणा स्त्री, खराब चाल चलनकी औरत।

गोष्टानदी—मन्द्राजमें गोदावरी जिलाके अन्तर्गत नदीविशेष। कोई कोई इसे गोस्तनी अर्थात् गोदुग्धप्रवाहित नदी कहते हैं। इसका जल हिन्दुओंके लिए पवित्र माना गया है। वायुपुराणीय गोस्तनीमाहात्म्यमें इसकी पवित्रताकी कथा वर्णित है। यहांकी जमीन उर्वरा बनानेके लिए नदीमें खाल काट कर निकाली गई है।

गोष्टोम (सं॰पु॰) गोसंज्ञः स्तोमोऽत्र, बहुव्रो॰, षत्वञ्च। १ स्तोमविशेष, प्रार्थनामार्ग, भक्तिका रास्ता। २ यागविशेष।

गोष्ठ (सं॰ क्ली॰) गावस्तिष्ठन्त्यत्र गो-स्था-क। १ गोशाला, गौओंके रहनेका स्थान। (क्ली॰) गोष्ठी बहुजनाः कर्तृतया अस्त्यस्य गोष्ठी-अच्। २ श्राद्धविशेष, जो कई मनुष्य मिल कर करते हैं, गोष्ठीश्राद्ध। ३ परामर्श, सलाह। ४ दल, मण्डली।

गोष्ठकुक्कुट (सं॰ पु॰) १ भासपक्षी। २ काकविशेष, एक तरहका कौवा।

गोष्ठज (सं॰ त्रि॰) गोष्ठे जायते गोष्ठ जन-ड। १ गोष्ठजात, जो गोशालासे उत्पन्न हो। (पु॰) २ एक ब्राह्मणका नाम।

गोष्ठपति (सं॰ पु॰) गोष्ठस्य पतिः, ६ तत्। गोष्ठका अध्यक्ष, प्रधान गोरक्षक।

गोष्ठशाला (सं॰ स्त्री॰) सभाभवन, वह स्थान जहां कोई सभा होती हो।

गोष्ठश्व (सं॰ पु॰) गोष्ठे श्वा समासे अच्। १ गोष्ठ अवस्थित कुक्कुर, वह कुत्ता जो सदा गोशालामें रह दूसरों पर भूकता है। २ परहिंसक, वह मनुष्य जो केवलमात्र घरही पर रह दूसरेको हिंसा किया करता है।

गोष्ठश्वन् (सं॰ पु॰) गोष्टस्य श्वा, ६-तत्। गोष्ठश्व देखो।

गोष्ठागार (सं॰ क्ली॰) गोष्ठस्य सभाया बहुजनस्थानस्य आगारं, ६-तत्। १ सभागृह, सभा करनेका घर। २ जिस घरमें बहुत मनुष्य वास करते हों। गोष्ठस्य गोप्रचारस्थानस्य आगारं, ६-तत्। ३ गोप्रचार स्थानका घर।

गोष्ठाध्यक्ष (सं॰ पु॰) गोष्ठस्याधाक्षः, ६-तत्। गोष्ठपति देखो।

गोष्ठान (सं॰ क्ली॰) गोः स्थानं, ६-तत्, पूर्वपदात् षत्वं। १ गोप्रचारस्थान, गोष्ठ।

गोष्ठाष्टमी (सं॰ स्त्री॰) गोपाष्टमी देखो।

गोष्ठि (सं॰ स्त्री॰) गावो वाग्विशेषास्तिष्ठन्त्यत्र स्था बाहुलकात् कः, ६-तत्। गोष्ठी देखो।

गोष्ठिक (सं॰ त्रि॰) गोष्ठ्यां भवः गोष्ठी-इकन्। गोष्ठीसम्बन्धीय।

गोष्ठी (सं॰ स्त्री॰) गावोऽनेका वाचस्तिष्ठन्त्यत्र स्था-क गौरादित्वात् ङीष्। १ सभा, बहुतसे लोगोंका समूह। २ परस्परालाप, वार्त्तालाप, बातचीत। ३ परामर्श, सलाह। ४ पोष्यवर्ग। ५ समूह, झुंड। ६ एक ही अङ्कका रूपक या नाटक, जिसमें ५ या ७ स्त्रियां और ८ या १० पुरुष हों।

गोष्ठीपति (सं॰ पु॰) गोष्ठीनां पतिः, ६-तत्॰। १ परि-

वारका स्वामी, घरका मालिक। २ समापति या समाजपति।

राढ़ी ब्राह्मणोंकी कुलाचार्यकारिकामें लिखा है—

"कुलीना यान्ति यस्यान्नं [illegible] ।
कुलीनाय सुतां दत्वा स गोष्ठीपतिरुच्यते ॥"

कुलीन और श्रोत्रियगण जिसका अन्न भोजन करते, जो अपनी कन्याको कुलीनको दान करते, उन्हें गोष्ठीपति कहते हैं।

गोष्ठीपतिका लक्षण—नानाशास्त्रविशारद, रसिक, काव्यानुरागी, निर्दोष, कुलभूषण कुलज्ञ और भागवत कथा श्रवणपरायण।

वङ्गीय कुलाचार्योंके ग्रन्थोंमें लिखा है कि गाङ्गुली वंशमें लक्ष्मीकान्त मजुमदार, मुखुटीवंशमें मदनभट्टाचार्य, इसके बाद उसी वंशमें गन्धर्व राय, बन्द्य वंशमें शुभराज खान तथा चट्ट वंशमें अनन्त भट्टाचार्य, ये पांच मनुष्य प्राचीन गोष्ठीपति थे। अभी राढ़ी ब्राह्मणोंमें बहुतसे गोष्ठीपति देखे जाते हैं।

पाश्चात्य वैदिकोंमें हरिहरकी सन्तान कोई गोष्ठीका पद मिला करता था।

दक्षिणराढ़ीय कायस्थोंकी कुलाचार्यकारिकाके मतसे कायस्थ गोष्ठीपतिका लक्षण—नीतिज्ञ, कुलकर्मठ मान्य, गण्य धार्मिक, कुलीनप्रतिपालक, कुलमर्यादाकारी, दाता, सद्वंशीय और सम्मौलिक।

कायस्थकुलीनके कुलाचार्य ग्रन्थमें इन समस्त गोष्ठीपतियोंके नाम यों हैं—

प्रथम १२वीं पर्यायमें सुबुद्धि खाँके पुत्र श्रीमन्त राय १३वीं पर्यायमें पुरन्दर खाँ, १४वीं पर्यायमें उनके पुत्र केशव खाँ, १५वीं पर्यायमें केशवके पुत्र श्रीकृष्ण विश्वासखास, १६वीं पर्यायमें दयाराम पाल, १७वीं पर्यायमें उनके पुत्र रामभद्रपाल, १८वीं पर्यायमें उन्हींके पुत्र, १९वीं पर्यायमें पालवंशीय कन्यासे विवाह कर किङ्करसेन, २०वीं पर्यायमें किङ्करसेनको वंशीय कन्यासे विवाह कर गोपीकान्तसिंह चतुर्धुरी २१वीं पर्यायमें गोपीकान्त वंशके रामकान्तसिंह, २२वीं पर्यायमें रामकान्त वंशकी कन्यासे अपने दत्तकपुत्र गोपीमोहनका विवाह देते हुए राजा नवकृष्ण, २३वीं पर्यायमें राजा गोपीमोहन, २४वीं पर्यायमें उनके पुत्र परम पण्डित राजा राधाकान्त देव गोष्ठीपति हुए थे।

गौड़ब शाबली पढ़नेसे जाना जाता है कि—

वङ्गज कायस्थोंमें चन्द्रद्वीपके सिर्फ वसुवंशीय राजा बराबर समाजपति या गोष्ठीपति होते थे। उसके बाद वसु वंशके अन्तिम राजा प्रेमनारायणके कोई पुत्र न रहनेसे उनके भांजा उदयनारायणमित्र और उसी वंशके चन्द्रद्वीपके राजा वङ्गज कायस्थोंके गोष्ठीपति होते आ रहे हैं।

उत्तरराढ़ीय कायस्थोंमें राजा बल्लालसेनके समसामयिक व्यासिंह वंशके राजा लक्ष्मीधर पहले "कायस्थ गुरु" या सभापति हुए थे। इसी वंशमें दीवान गङ्गागोविन्दसिंह पैदा हुए थे। गङ्गागोविन्द देखो। राजा लक्ष्मीधर वंशके प्रधान मनुष्य ही सभापति या गोष्ठीपति हुआ करते थे। किन्तु बहुत स्थानोंमें उत्तर राढ़ीय वंशके राजा अपनेको उक्त समाजोंके सभापति या गोष्ठीपतिके जैसा परिचय देते हैं।

वैद्य भरतमल्लिककी कुलपञ्जिकाका मत है कि विनायक सेन ही पहले पहल गोष्ठीपति हुए थे। इसी वंशके राजा बराबर गोष्ठीपति हुआ करते थे, अन्तमें ढाकाके नवाब राजवल्लभ और उसी वंशके प्रधान व्यक्ति गोष्ठीपति हुए। कुलीनवंश देखो।

गोष्ठीश्वर (सं० पु०) उद्गुम्बर।

गोष्ठेक्ष्वेडिन् (सं० पु०) गोष्ठे क्ष्वेडते क्ष्विड-णिनि पात्रेसमितादित्वात् अलुकसमा०। प्रगल्भ आत्मश्लाघी, वह मनुष्य जो अपनी झूठी बड़ाई करता हो।

गोष्ठेगल्भ (सं० पु०) गोष्ठे गल्भते गर्वं करोति गल्भ-अच्। प्रगल्भ।

गोष्ठेपटु (सं० त्रि०) पात्रेसमितादित्वादलुक्समा०। प्रगल्भ, वह जो सिर्फ घरहीमें शूर हो।

गोष्ठेपण्डित (सं० त्रि०) पूर्ववत् अलुक्समा०। प्रगल्भ, जिसका पाण्डित्य घरहीमें चले बाहरमें किसीमें आदर न पाता हो।

गोष्ठेप्रगल्भ (सं० त्रि०) पूर्ववत् अलुक्स०। प्रगल्भ जो सभास्थलमें अपनी प्रगल्भता प्रकाश करता है।

गोष्ठेशय (सं० त्रि०) गोष्ठे गोस्थाने शेते शी-अच् अलुक्

सया०। जो मनुष्य गोव्रत अनुष्ठानके लिये गोशालामें शयन करता हो।

गोष्ठेशूर (सं० पु०) अलुक्‌स०। प्रगल्भ।

गोष्ठ्य (सं० त्रि०) गोष्ठे भवः यत्। १ गोष्ठोत्पन्न, जो गोशालामें उत्पन्न हो। (पु०) २ रूपविशेष।

गोष्पद (सं० क्ली०) गोः पदं, ६-तत्, गावः पद्यन्ते गच्छन्ति अस्मिन् देशे गो-पद-अच्। १ गौके खुरचिन्ह-परिमित स्थान, गौके खुरके इतना बड़ा गड्ढा। २ गोपदजात गर्त्त, वह गर्त्त जो गोखुरसे हो गया हो। ३ गोसेवित स्थान, वह स्थान जहां गौ सर्वदा आते जाते हों। ४ गो कर्तृक असेवित स्थान, वह स्थान जहां गौओंका गमनागमन न हो। ५ प्रभासक्षेत्रस्थित एक तीर्थ। स्कन्दपुराणमें लिखा है कि सरस्वती प्रभासक्षेत्रमें पांच स्रोतमें प्रवाहित है। सरस्वती पञ्चम स्रोत और न्यङ्कुमतीके तीरके मध्य-का स्थान गोष्पद नामक तीर्थसे ख्यात है। इस तीर्थ-का दर्शन और इसमें स्नानादि करनेसे समस्त पाप नाश होते हैं। पूर्व समयमें यह तीर्थ रुद्रगया नामसे प्रसिद्ध रहा; किन्तु कलिकालमें यह गोष्पद कहलाने लगा। क्षीरोदसमुद्र मथे जाने पर कई एक लोकमाता गाभी (गाय) उत्पन्न हुई थीं। वे एक समय तीर्थ भ्रमणके लिए बाहर निकलीं। देवगण इनके तीर्थयात्राके अनु-यात्रिक हुवे थे। वे गौएं अनेक तीर्थपर्यटन कर अन्त-को रुद्रगयामें उपस्थित हुईं। उनमेंसे प्रधान गौ नन्दिनी का एक पद शिलाफलक पर पड़ गया। यह देख कर नन्दिनीने चिल्ला कर देवगणसे कहा "हे देवगण! मेरा एक पद शिलाफलक पर पड़ गया, इस पर पड़ा हुआ चिन्ह ठीक गगनाङ्गनमें उदित चन्द्रबिम्बका जैसा मालूम पड़ने लगा। अतः मेरे आदेशसे चराचर त्रैलोक्य आज से इस तीर्थको गोष्पद नामसे उल्लेख करें।" नन्दिनीके आदेशसे उसी दिनसे उसका नाम गोष्पद हुआ है और रुद्रगया नाम सदाके लिये विलुप्त हो गया।

(स्कन्दपुरा० प्रभासखण्ड)

गोष्पदीकृत (सं० त्रि०) गोष्पद-च्वि। जो गौके पद चिन्ह तुल्य बनाया गया हो।

गोस (सं० पु०) गां जलं स्यति सो-क। १ बोल, चार-जल एक तरहका झाड़ जिससे गोंद निकलता हो। २ उषाकाल, प्रातःकालमें दो घड़ी पहलेका समय। ३ प्रभात, प्रातःकाल, सवेरा।

गोसड़े (देश०) कपासके पौधोंका एक रोग।

गोसखि (सं० पु०) गौः सखा अस्य, बहुव्री०। गौसे जिस-को सहायता होती हो।

गोसदन (सं० क्ली०) शयनगृह, सोनेका घर।

गोसङ्ख्य (सं० पु०) गाः सङ्ख्यष्टे गो-सम्-चक्ष-क। गोप, ग्वाला, गौ गिननेवाला।

गोसङ्ख्यातरी (सं० पु०) गोसङ्ख्य देखो।

गोसङ्ग (सं० पु०) प्रभात, सुबह।

गोसत्र (सं० पु०) गोभिः कृतं सत्रं। यज्ञविशेष, गवा-मयन यज्ञ। गवामयन देखो।

गोसदृक्ष (सं० पु०-स्त्री०) गोः सदृक्षः, ६-तत्। १ पशु-विशेष, नील गाय। (त्रि०) २ गोसदृश, गोतुल्य, गाय, बैल।

गोसनि (सं० त्रि०) गां सनोति ददाति सन-इन् पक्षे षत्वाभावः। गोषणि देखो।

गोसदाय (सं० त्रि०) गोः संददाति गो-सम्-दा अण्। गोदाता, जो गोदान करता हो।

गोसम्प्रदाय (सं० त्रि०) गां सम्प्रददाति गो-सं-प्र-दा-अण्। गोदाता, गौ दान करनेवाला।

गोसम्भवा (सं० स्त्री०) गोरिव सम्भवो लोमादिरूपाकृति र्यस्याः, बहुव्री०। १ श्वेतदुर्वा, उजली घास। (त्रि०) सम्भवत्यस्मात् सं भू अपादने अप् गोः सम्भव उत्पत्तिस्थानं यस्याः, बहुव्री०। २ गोजात, जो गौसे उत्पन्न होता हो। गोलोमिका।

गोसर्ग (सं० पु०) गावः सृज्यते यत्र काले सृज आधारे घञ्। प्रातःकाल, वह समय जब गौयें चरनेके लिये खोले जाते हैं।

गोसर्प (सं० पु०-स्त्री०) गोधा, गोह नामक जन्तु।

गोसव (सं० पु०) गौः सुरते हिंस्यतेऽत्र गो-सू आधारे अप्। गोमेध यज्ञ। गोमेध देखो।

गोसशश (सं० पु०) गोस एव शशः तत्तुल्यः। बोल, एक-तरहका झाड़ जिससे गोंद निकलता है।

गोसहस्र (सं० क्ली०) गवा सहस्रं दातव्यतया यथा यत्र, बहुव्री०। तुला प्रभृति सोलह महादानोंमेंसे एक महा-

दान। मत्स्यपुराणमें लिखा है कि, पुण्यतिथि, युगादि या मन्वन्तरमें यह दान किया जाता है। तुलापुरुषदानके जैसा सबसे पहले लोकपालोंको आवाहन करना चाहिए और उसी नियमके अनुसार पुण्याहवाचन और होम करे। ऋत्विक्, मण्डपसज्जा, भूषण, आच्छादन प्रभृति और लक्षणयुक्त एक वृषको वेदीके मध्य लाना चाहिए। वेदीके बाहर एक हजार गौको वस्त्र तथा माल्यद्वारा भूषित कर रखे। गौओंके शृङ्ग सुवर्णमय और खुर रौप्यमय होना चाहिए। इसके बाद इन गौओंमेंसे दश गौओंको मण्डपमें ले जाकर वस्त्र तथा मालासे सुशोभित करे। सुवर्णका छोटा घण्टा, काँसेका दोहनपात्र, सुवर्णतिलक, हेमपट्ट रेशमी कपड़ा, माल्य, गन्ध, हेमरत्नमय शृङ्ग, चामर, पादुका, जूता, छत्र और आसन ये समस्त द्रव्य गौके साथ देने होते हैं। दश गौओंके मध्य एक काञ्चनमय नन्दिकेश्वरकी मूर्त्ति भी रहे। उसे भी रेशमी वस्त्रादिसे सुशोभित करे। इस तरह वृष और गौओंको भूषित कर मण्डपमें रखे जानेके बाद पुण्यकाल आने पर सर्वौषधि जलसे स्नान और कुसुमाञ्जली ग्रहण कर निम्नलिखित मन्त्र पाठ करना चाहिए। मन्त्र यथा—

> 'नमोऽस्तु विश्वमूर्तिभ्यो विश्वमातृभ्य एव च।
> लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहिणीभ्यो नमो नमः॥
> गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनान्येकविंशतिः।
> ब्रह्मादयस्तथा देवा रोहिण्यः पान्तु मातरः॥
> गावो मे अग्रतः सन्तु गावः पृष्ठत एव च।
> गावः शिरसि मे नित्यं गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
> यस्मात्त्वं वृषरूपेण धर्म एव सनातनः।
> अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन॥'

यह मन्त्र पढ़ कर नन्दिकेश्वर गुरुको दान दे। इसके साथ साथ एक गाय और अनेक तरहके उपकरण भी देने पड़ते हैं। उन दश गौओंमेंसे एक एक गो यज्ञ करानेवालेको दान करना चाहिए और याजक तथा गुरुकी अनुमति ले कर दूसरे दूसरे ब्राह्मणोंको एक एक गौ दान करें। एक मनुष्यको दो गो कदापि दान न दे। इस दानके पहले तीन दिन वा एकाहमें एक दिन सिर्फ दूध खा कर रहना पड़ता है। दूसरे दूसरे दानके जैसे इसके पहले भी इन्द्रियसंयम, शिवादिपूजा और याजकोंका वरण करना होता है। इस तरह गोसहस्र दान करनेसे समस्त पाप नष्ट होते हैं। जो उपरोक्त रीतिसे गोसहस्र दान करते वे किङ्किणीजाल परिवृत सुवर्ण रथ पर चढ़ देवलोक जा कर सुखसे काल क्षेपण कर सकते हैं। एक मन्वन्तर पर्यन्त वहां पुत्र पौत्रादियोंके साथ रह कर शिवपुर जाते हैं। उनके पितृकुलके एकसौसे अधिक तथा मातामह कुलके भी उतने ही पुरुष पापसे मुक्ति लाभ करते हैं। वे एक सौ कल्प तक शिवलोकमें वास कर भूमण्डलमें राजचक्रवर्त्ती हो जन्मग्रहण कर सकते तथा इस जन्ममें शिवभक्त होते हैं। एकसौ अश्वमेध और वैष्णवयोग अवलम्बन कर संसार बन्धनसे छुटकारा पाते हैं। जो गोसहस्र दान करते हैं, समस्त पितृलोक उन पर सन्तुष्ट रहते हैं। पितृलोकके रहनेवाले पितृगण गोसहस्रदाताकी प्रशंसाके लिये सर्वदा निम्न दो श्लोक पाठ किया करते हैं—

> 'अपि स्यात् स कुलेऽस्माकं पुत्रो दौहित्र एव वा।
> गोसहस्रप्रदो भूत्वा नरकादुद्धरिष्यति॥
> तस्य [illegible] ...स्माकमपि सदा तस्यैव च।
> स [illegible]...ध्यात् स तारयिष्यति॥'

इस श्लोकसे जाना जाता है कि जो मनुष्य गोसहस्र दाताके भृत्य हैं और जो भक्तिपूर्वक आद्योपान्त गोसहस्र दान देखते हैं उनके पितृकुल तथा मातृकुलका भी उद्धार हो जाता है। (मत्स्यपु० २०८ अ० और हेमाद्रिदानखण्ड)

आथर्वण गोपथब्राह्मणमें गोसहस्रकी विधि इस तरह लिखी हुई है—गोशालेमें जलके समीप एक स्थान परिष्कार कर बहुतसा पुराना जलानेका काष्ठ उस जगह रखे। बाद विधिके अनुसार अग्निस्थापन कर होम करें। पहले [illegible] मन्त्र द्वारा और उसके बाद "[illegible]" इत्यादि मन्त्र द्वारा होम करना चाहिये। अग्निके पश्चिम भागमें तीर्थोदकसे परिपूर्ण एक कलसी रख '[illegible]' इत्यादि मन्त्र पाठ करके दश गौओंको स्नान करावें। इसके बाद सहस्र गौओंका भी अभ्युक्षण कर उस गौके स्नान जलसे '[illegible]' इत्यादि मन्त्र पाठपूर्वक राजाको अभिषिक्त करना होता है। तत्पश्चात् '[illegible]' मन्त्रसे अञ्जन अभ्यञ्जन और अनुलेपन कर सहस्र गौओंके आगेकी गायको अलङ्कृत करें, और '[illegible]' इत्यादि मन्त्र पाठपूर्वक गौको

प्रिय भक्ष्य द्रव्य खानेके लिये दें। सहस्रतमी गौको स्पर्श करते हुए "हिरण्मया" इत्यादि मन्त्र जप करना पड़ता है। "मया गाव" ! तेना मयहम्" इस मन्त्रसे अर्घ्य दान तथा फिर भी गौओंको स्पर्श कर 'म.नित्यप्रति गृह्णात्' मन्त्र महस्र वार जप करते हुए समस्त गौओंकी प्रदक्षिण पूर्वक नम स्कार करें और ब्राह्मणोंकी स्वस्ति वाचन करा कर दान दे दें। सहस्रतमी गाय और वस्त्रयुगल तथा दक्षिणाके लिये दश गायें यागकर्त्ता ऋत्विकको देनी पड़ती हैं। इस तरह गोसहस्रदान करनेसे सात पुरुषोंके किये हुए सप्त जन्मके पाप नाश होते हैं। (गोपथब्रा०) दूसरे दूसरे पुराणमें भी इसका विधान है। गवां सहस्रं, ६-तत। २ सहस्र गौ, हजार गायें।

गोसहस्री (सं० स्त्री०) गोसहस्रं तद्दानफलं विद्यते अत्र गोसहस्र-अच् गौरादित्वात् ङीप्। १ मङ्गलवारयुक्त अमावस्या। मङ्गलवारको अमावस्या होने पर उसको गोसहस्री कहते। इस दिन गङ्गास्नान करनेसे महस्र गोदान करनेका फल होता है। २ सोमवारयुक्त अमावस्या। इस दिन अरुणोदयकालसे स्नानकाल तक मौन रह स्नान करनेसे गोसहस्रदानका फल होता है।

गोसा (हिं० पु०) गोइंठा, उपला।

गोसाइँ (हिं० पु०) गोस्वामी देखो।

गोसाती (फा० स्त्री०) पाल उतार लेने पर भी जहाजके चलनेमें बाधा डालनेवाली हवा।

गोसाद (सं० त्रि०) गां सादयति गो-सद-णिच् अण् उप०-स०। गो चालक, गौको चलानेवाला।

गोसादिन् (सं० त्रि०) गां सादयति सद्-णिच्-णिनि, ६-तत्। गोसारथी, गोचालक, गौके चलानेवाला।

गोसारथी (सं० पु०) गो: सारथिः, ६-तत्। गोचालक वह जो गौको चलाता हो।

गोसी (देश०) एक प्रकारकी नाव जो समुद्रमें चलती है। इसमें २से लेकर ७ तक मस्तूल होते हैं।

गोसीपरवान (देश०) जहाजके मस्तूलमें पालके ऊपरी छोरको छटा बढ़ानेकी एक लम्बी छड़।

गोसुत (सं० पु०) वछड़ा, गौका बच्चा।

गोसूक्त (सं० पु०) अथर्ववेदका एक अंश। उसमें ब्रह्माण्डकी रचनाको गौके रूपमें वर्णन किया गया है।

गोसूत्रिका (सं० स्त्री०) गोवन्धनरज्जु, गो बांधनेकी डोरी।

गोसेवा (सं० स्त्री०) गो: सेवा, ६-तत्। गोपरिचर्या, गायकी सेवा।

गोसैयाँ (हिं० पु०) प्रभु, नाथ, मालिक।

गोस्तन (सं० पु०) गोस्तन इव गुच्छो यस्य, बहुव्री०। १ फूलका गुच्छा। २ चार लड़ीका हार। गो: स्तन, ६-तत्। ३ गायका स्तन।

गोस्तना (सं० स्त्री०) गो: स्तन इव फलमस्याः, बहुव्री०, स्वाङ्गत्वात् वा ङीष् भावपक्षे टाप्। द्राक्षा, दाख, मनक्का।

गोस्तनाकारा (सं० स्त्री०) खजूरका वृक्ष।

गोस्तनी (सं० स्त्री०) गोस्तन-इव फलमस्याः, बहुव्री०, स्वाङ्गत्वात् ङीष्। १ द्राक्षा, किशमिश। २ कपिलद्राक्षा, अंगुर। गो: स्तना इव स्तना यस्याः, बहुव्री०। ३ कार्त्तिककी अनुगामिनी मातृकाओंमेंसे एक।

गोस्तनीभव (सं० पु०) द्राक्षाका आसव, मनक्काका रस।

गोस्तोम (सं० पु०) गोनामकः स्तोमः विकल्पपक्षे यत्वाभावः। अग्निष्टोम यागका एक अङ्ग। गोष्टोम देखो।

गोस्थान (सं० क्ली०) गो: स्थानं, ६-तत्। गोठ, गोशाला, गौका स्थान।

गोस्थानक (सं० क्ली०) गोस्थान स्वार्थे कन्। गोष्ठ, गुहाल, गोशाला।

गोस्थानी—विशाखपत्तन जिलाके गजपतिनगरसे निर्गत एक नदी जो प्रायः ४८ मील दक्षिण-पूर्वको बहती हुई कोनाड़के निकट समुद्रमें मिल गई है। इसके तीर पर गजपतिनगर और अन्य ग्राम अवस्थित हैं।

गोस्रव (सं० पु०) गोमूत्र।

गोस्वलु (पु०) शाकल्यके एक शिष्यका नाम।

गोस्वामिन् (सं० पु०) गवां स्वामी, ६-तत्। १ गौका अधिपति। गवां इन्द्रियाणां स्वामी, ६-तत्। २ उपाधिविशेष। पूर्वकालमें जो यति आराधना कर इन्द्रियोंको जय कर लेते अर्थात् जो इन्द्रियोंके वशीभूत नहीं रहते, उन्हें 'गोस्वामी' का उपाधि मिलता था।

गोस्वामिन्—१ गोस्वामी उपाधिभूषित अमरकोषके बाल-

बोधिनी नामके टीकाकार। २ माधवभट्टाचार्यके प्रसिद्ध गादाधरी नामक सुवृहत् न्यायग्रन्थके टिप्पणीकार। ३ नारायणचरित्रमाला, भक्तिरसामृत और भागवतके टीकाकार। ४ तिथिवल्लि नामके ज्योतिर्ग्रन्थकार।

गोस्वामिस्थान (स० क्ली०) गोस्वामिनां यतीनां वास योग्य स्थान, ६ तत्। हिमालयके एक विख्यात शृङ्ग जिस पर बैठ यति आराधना किया करते थे।

गोह (स० पु०) गुह्यतेऽत्र गुह आधारे घञ् बाहुलकात् उत्वाभाव। गृह, घर।

गोह (हि० स्त्री०) सरीसृपविशेष, छिपकलीकी जातिका एक जङ्गली जन्तु। इसका संस्कृत पर्याय—गोधा, गोधि, निहिका गोधिका और दारुमस्याहा है। अंगरेजोंमें इसे इगुआना (Iguana) कहते हैं। गोह तीन प्रकारकी होती है—Varanus flavescene, V draceana, V nebulosus। दो तरहकी आगरा अञ्चलमें और शेष पूर्व द्वीपपुञ्जमें पायी जाती है। प्रथम दो तरहकी गोह दो फुट लम्बी होती और रात्रिकालमें छिपकर घर में प्रवेश करती तथा घरके पालित पक्षियोंको खा कर भाग जाती है। इसका चमड़ा बहुत मोटा और मजबूत होता है। यह देखनेमें ठीक नेवले जैसी होती है। इसके फुफकारमें विष रहता है। इसके दंशन करने पर पहले शरीरका मांस गलने लगता और तब समस्त अङ्गमें विषका प्रवेश हो जानेसे मनुष्य पञ्चत्वको प्राप्त होता है। इसका चमड़ा मजबूत और मोटा रहनेके कारण पूर्व समयमें लड़ाईके समय उंगलियोंकी रक्षा करनेके लिये इसके दस्ताने बनते थे। कोई कोई मुसलमान तथा जङ्गली जातियां गोहका मांस खाती हैं। अमेरिकाके वेष्ट इण्डीज द्वीपवासी इसका मांस लवणाक्त कर भिन्न भिन्न देशोंमें रफ्तनी करते हैं। भारतवर्षमें इसका मांस सुरा घृत मिश्रण कर एक प्रकारका स्नेहद्रव्य प्रस्तुत किया जाता जो क्षयकास रोगीके लिये एक फलकर महौषध है। इस जंतुसे एक तरहका तेल भी निकलता है। सिंहलवासी तामिल जातियोंका विश्वास है कि जीवन्त गोहकी जिह्वा काट कर यदि खाई जाय तो क्षयकासरोग आरोग्य हो जाता है।

वैद्यशास्त्रके मतसे इसके मांसका गुण—वात, श्वास और कासनाशकारी है। इसका मांस पाक करने पर मधुर, कषाय, कटुरसयुक्त, पित्तनाशक, रक्त और शुक्रवृद्धिकर एवं बलकारक होता है।

गोहत्या (स० स्त्री०) गोर्हनन गो हन क्यप् तकारश्चान्तादेश। (हनस्त च पा।३।१।१०८) लोकव्यवहारात् स्त्री त्व ततश्च टाप्। गोवध गायका कत्ल करना। अग्निपुराणमें लिखा है कि राग, द्वेष और अनवधानतासे अपने या दूसरे द्वारा प्राणियोंके संहारके लिए जो काम किया जाता है उसीको कत्ल या वध कहते हैं।

'प्राणवियोगफलकव्यापारो हननं स्मृतम्
रागाद्द्वेषात् प्रमादाद्वा स्वतः परत एव वा।' (अ० पु०)

शास्त्रकार और संग्रहकारोंने ज्ञानकृत या अज्ञानकृत दो तरहकी गोहत्या निरूपण की है। 'इस गौको मैं संहार करूंगा' ऐसी इच्छासे जो गोहत्या की जाती है उसको ज्ञानकृत गोवध कहते हैं। "यह गो है ऐसा ज्ञान रहने पर भी यदि गोवध करनेकी इच्छा न रहे तो भी अभिष्ट सिद्धिके लिये जो गोहत्या की जाती है उसको अज्ञानकृत गोवध कहते हैं। फिर भी गोहत्याके दो भेद हैं, एक साक्षात् दूसरा परम्पराकृत या असाक्षात्। पत्थर, लाठी, शस्त्र या किसी दूसरे हथियारसे यदि बलपूर्वक गौ वध किया जाय तो उसे साक्षात् गोहत्या कहते हैं और रस्सीमें बंधी रहनेसे यदि गायकी मृत्यु हो जाय तो उस जगह असाक्षात् गोहत्या कही जा सकती है। गोहत्याके लिये जो सब प्रायश्चित्त निरूपित हैं साक्षात् गोवधमें हत्याकारियोंको वे समस्त प्रायश्चित्त करने पड़ते हैं। असाक्षात् गोवधमें हत्याकारीके लिये एक चतुर्थांश प्रायश्चित्त निर्दिष्ट है। शास्त्रकारोंने जिस तरहके गोपालनका विधान निरूपण किया है उस तरहसे पालन करने पर भी यदि गाय मर जाय तो उसे अपालन निमित्त गोवध कहते हैं। (प्रायश्चित्ततत्त्व)

मैं इसका प्रायश्चित्त, प्रायश्चित्त और ... शब्द देखो।

प्राचीन हिन्दूशास्त्रमें अनेक तरहके कार्य भी गोहत्या नामसे कई एक भेद उल्लेख किया गया है जो पारिभाषिक शब्द कहलाते। 'विप्रदण्डसोद्यतो ति विप्राय... इत्युपचर्यते।' (शब्दार्थ० ... १।१।१८) इत्यादि स्मृतियोंके मतसे वे समस्त कार्य आतिदेशिकी गोहत्या कह कर निरू-

पित है। यथा—गोको खाने या जल पीनेके समय बाधा देना, गो और ब्राह्मणके बीच हो कर जाना, गोको डंडासे मारना, बैलको गाड़ीमें जोतना, उच्छिष्ट द्रव्य गोको खाने देना वृषवाहकोंका पौरोहित्य करना या यजमान होना, अग्निमें पैर रखना, पैरसे गोको मारना, स्नानके बाद बिना पैर धोये घरमें प्रवेश करना, शुष्क पादसे अर्थात् बिना पैर धोये भोजन करना, पैर भिंगे रहते शयन करना, कट्टर ब्राह्मणोंका दिनमें दो बार खाना, विधवा स्त्रियोंके हाथ भोजन करना, योनिव्यवसायमें जीविकानिर्वाह करना, सन्ध्या नहीं करना, पर्वकाल (त्योहार) में पितृगण और पुण्यतिथिमें देवताओंकी अर्चना न करना, अतिथि सत्कार न करना, अपने स्वामी और कृष्ण भगवान्से भेद समझना (वैष्णवकुलकामिनियोंके लिये), स्वामीको कटुवाक्य कहना, गोमार्ग पर गड्ढा करना, तड़ाग या उसके ऊर्ध्वभाग पर शस्य बोना, अर्थलोभ या अज्ञानसे गोवध प्रायश्चित्तका न लेना, सवेशीको रीतिके अनुसार पालन न करना, गोको किसी तरहका दुःख देना, प्राणी देवपूजा, अनल, जल, नैवेद्य, पुष्प और अन्न लङ्घन करना, झूठ बोलना, प्रतारणा, देवता या गुरुद्वेष करना, देवप्रतिमा, गुरु या ब्राह्मणोंको प्रणाम न करना, इन सब कार्योंको आतिदेशकी गोहत्या कहते है।

(ब्रह्मवै० प्रकृति० २०।१४९-१८१)

स्थलविशेषमें गोहत्या विधेय है या नहीं, इसका विचार उपस्थित होने पर हिंसाकी विधेयता और अविधेयता मानना आवश्यक है।

हिन्दूशास्त्रके मतानुसार हिंसा मात्र ही पापजनक और अविधेय है। प्राणीहिंसासे इस लोकमें नरकसा कष्ट भोगना पड़ता है। इसी कारण प्राचीन सामाजिक नियमकर्त्ता या धर्मशास्त्रप्रणेता आर्यगण "माहिंस्यात् पुरुष जगत्" इस यजुर्वेदीय उपदेशवाक्य अवलम्बन करते हुए शास्त्रोंमें हिंसाकी अविधेयता तथा हिंसाकारियोंको इस लोक और परलोकमें जो सब यन्त्रणायें भोगने पड़ते हैं, उनका लिपिबद्ध किया है। वेद, स्मृति, इतिहास, पुराण और उपपुराण प्रभृति हिन्दूशास्त्रोंमें हिंसाको अविधेय कह कर माना है। इसमें तनिक भी मतभेद या व्यवस्था भेद दीख नहीं पड़ता। धर्मशास्त्र और वेदमें जिस तरह हिंसाको अविधान बतलाया है, उसी तरह फिर कहीं कहीं हिंसाका विधान भी देखा जाता है। यथा 'अश्वमेधेन यजेत स्वर्गकामः' अर्थात् स्वर्गकामनासे अश्वमेध यज्ञ किया जाता है इत्यादि। इस स्थान पर अब आपत्ति इस बातकी उठती है कि, वेद और धर्मशास्त्रमें एक बार हिंसाका निषेध बतलाया और फिर हिंसाका विधान भी किया गया है। इसमें एक दूसरेसे विरोध होनेकी सम्भावना है। प्राचीन ऋषियोंने इसको मीमांसा कर विधिवाक्यको दो तरहका बतलाया है एक सामान्य और दूसरा विशेष। कोई विशेष बात न ले कर जो विधिवाक्य है उसे सामान्य तथा किसी विशेष स्थल या विषयके लिये जो विधिवाक्य है उसे विशेष कहते हैं।

सामान्य और विशेष देखो।

सामान्यविधि विशेषविधिको जगह छोड़ दिया करती है। इस स्थान पर "माहिंस्यात् पुरुषं जगत्" अर्थात् इस जगत्के प्राणीमात्रकी ही हिंसा नहीं करनी चाहिए। इस लिये विशेषविधिका विषय परित्याग कर सामान्य विधिकी प्रवृत्ति होनेसे इस जगह सामान्य विधिवाक्यका ऐसा अर्थ हुआ है। अश्वमेध प्रभृति यज्ञमें जिन जिन पशुओंकी हिंसाका उल्लेख है, उन्हें छोड़ दूसरे प्राणीकी हिंसा नहीं करनी चाहिए, ऐसा होनेसे परस्पर विरोध नहीं रहता है। पशुहिंसाके जितने विधान कहे गये हैं, उन्हें वैधहिंसा और इनके अतिरिक्त हिंसाको अवैध हिंसा कहते हैं। वैधहिंसासे पाप नहीं होता और उसका कोई प्रायश्चित्त भी नहीं है। शास्त्रमें जो समस्त पाप या प्रायश्चित्त निरूपित हैं, वे सिर्फ अवैधहिंसाके लिये बतलाये गये हैं। ऊपरमें जो कुछ कहा गया है वह मीमांसादर्शनका मत है, स्मृतिसंग्रहकारोंने इसी मतको अवलम्बन किया है। वर्तमान समय यही मत प्रचलित है। लेकिन सांख्य और पातञ्जल इसे स्वीकार नहीं करते, उनके मतसे वैधहिंसामें भी पाप होता है।

प्राणीहिंसा देखो।

अब इस जगह कहना यह है कि जिस तरह अश्वमेधयज्ञमें अश्वहिंसाका विधान है, उसी तरह मनु प्रभृति शास्त्रमें गोमेधयज्ञमें गोहत्याका भी विधान देखा जाता है इस लिये गोहत्या भी विधेय है। गोमेध देखो।

वर्तमान समयमें गोमांसप्रिय अहिन्दू शास्त्र मीमांसा का गूढ़ार्थ न जान कर अथवा अपना मत प्रचलित रखने के लिये कहा करते हैं कि, गोहत्या हिन्दूशास्त्रानुमोदित है। इस लिये हिन्दुओंका गोमांस खानेमें किसी तरह की आपत्ति नहीं है क्योंकि मधुपर्कमें गोहत्या करनेका विधान प्रायः सभी शास्त्रोंमें देखा जाता*। है 'महोक्षं वा महाजं वा श्रोत्रियायोपकल्पयेत्।' (याज्ञ० १।१०९) अर्थात् श्रोत्रिय अतिथि होने पर उसे बड़ा बैल या बड़ा छाग खानेके लिये दिया जाता था।

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ पढ़नेसे भी जाना जाता है कि पूर्व समय श्रोत्रिय अतिथिगण मधुपर्कमें दिये हुए मवेशी को खाते थे। सूर्यकुलपुरोहित वशिष्ठजी जब महर्षि वाल्मीकिके आश्रम गये थे तो उन्हें मधुपर्कमें एक बछड़ा दिया गया। वशिष्ठने बहुत आदरसे उसका मांस खाया था। इसके सिवा जिस तरह यज्ञविशेषमें छागादि मारने का विधान है उसी तरह गोमेधयज्ञमें गो मारनेका भी विधान देखा जाता है।

फिर भी वैदिक सूत्रकारोंका मत है कि अन्त्येष्टि कालमें एक गोवध करना चाहिए। लेकिन यदि कोई विघ्न हो जाय तो गायके सम्मुखका आधा पैर तोड़ कर उसके ऊपर मिट्टीका प्रलेप देवे और तीन बार चिता प्रदक्षिण करा कर उसे छोड़ देना चाहिए। आश्वलायन श्रौतसूत्रके मतसे निहत गौको चर्बी 'अग्ने' इत्यादि मन्त्र पाठ कर मृत मनुष्यके मस्तक और चक्षु पर रखी जाती है। "अग्नि" इत्यादि मन्त्र पढ़ कर उस गायका हृदय, गायके दोनों हाथों पर और उसके मांसादि मृतके दूसरे अङ्ग पर रखना चाहिए। लेकिन यदि गौ न रहे तो गौ के मांसादिके बदले यव और धान्यचूर्ण तथा चर्बीको जगह पिष्टक देने होते हैं।*

तैत्तिरीय आरण्यकका मत है कि गौ न मार कर उस के बदले मृतदेहके साथ एक छाग बांध कर लाना चाहिए। इन्हीं प्रमाणोंसे बहुत मनुष्य गोहत्याका अनु समर्थन किया करते हैं।

यथार्थमें यदि शास्त्रीय मीमांसा करनी हो तो किस समय और किस मनुष्यके प्रति किस उद्देश्यसे शास्त्रकारों ने कैसा विधान किया है, उसके प्रति विशेष लक्ष्य रखना चाहिए। प्राचीन धर्मशास्त्रमें जितने भी विधान देखे जाते वे खास कर एक मनुष्य या एक कालके लिये नहीं हैं। सत्ययुगमें मानवोंके सात्त्विकभाव और प्रताप अधिक थे, उसी समयके लिये एक तरहका विधान था, दिनों-दिन मानवप्रकृतिकी सात्त्विकताकी न्यूनता और शक्ति ह्रासके साथ साथ व्यवस्था तथा विधानका भी तारतम्य होता आ रहा है। सत्ययुगसे द्वापरके शेष काल तक मधुपर्कमें पशुवध और गोमेधयज्ञमें गोहिंसा प्रभृतिकी प्रथा प्रचलित थी एवं उस हिंसाको वैधहिंसा कहा जाता था। किन्तु उस समय भी अवैध गोहिंसाका कठिन प्रायश्चित्त और ज्ञानपूर्वक गोहत्या करनेसे हिंसाकारियोंको सामाजिक नियमसे दण्ड मिला करता था। द्वापरके शेषकाल में धर्मशास्त्रवित् परिणामदर्शी ऋषियोंने मिल कर कलि कालके लिये जो नियम बनाये हैं, मधुपर्कमें पशुवध और गोमेधयज्ञ निषिद्ध है।* अतएव हिन्दूधर्मशास्त्रके मत से कलियुगमें किसी तरहकी गोहिंसा विधेय नहीं है। अज्ञानसे गोहत्या करने पर यथाविहित प्रायश्चित्त कर लेनेसे पाप नाश होता एवं हिंसाकारी समाजमें व्यवहार्य हो सकता है किन्तु ज्ञान पूर्वक गोहत्याकारियोंका कोई निस्तार नहीं है।

निर्णयसिन्धुप्रणेता कमलाकर कहते हैं कि धर्म-शास्त्रमें लिखा है कि — 'अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्ममप्याचरेन्न तु' अर्थात् शास्त्रविहित होने पर भी जो कार्य अत्यन्त दुःखजनक या स्वर्गप्रतिकूल है तथा जो कार्य अधिकांश मनुष्योंको समझमें अनभिमत है, उसका आचरण कदापि न करना चाहिए। अतएव धर्मशास्त्रके मतसे

* Journal of the Asiatic Society of Bengal (1870) Vol XXXIX Pt I p 216-25

* प्रायश्चित्तविधानञ्च विप्राणां मरणान्तकम्।
संसर्गदोषः पापेषु मधुपर्के पशोर्वधः॥
दत्तौरसेतरेषान्तु पुत्रत्वेन परिग्रहः।
एतानि लोकगुप्त्यर्थं कलेरादौ महात्मभिः।
निवर्तितानि कर्माणि व्यवस्थापूर्वकं बुधैः।
समयश्चापि साधूनां प्रमाणं वेदवद्भवेत्॥
(हेमाद्रि परिशिष्टखण्ड)

* [illegible]
[illegible] (वृहन्नारदीय)

कलिकालमें मधुपर्कमें गोवध और गोमेधयज्ञ निषिद्ध है इसके अनुष्ठानसे पाप होता है।

शास्त्रमें इस तरह गोहत्या निषिद्ध और गौके प्रति विशेष यत्न और सम्मान प्रदर्शनकी कथा लिखित रहनेसे सात्विक हिन्दूगण गोहत्याके विशेष विरोधी हैं और इसी लिये गोहत्याकारी विधर्मियोंके साथ बहुत दिनोंसे विवाद विसम्वाद और सैकड़ों हत्याकाण्ड हुआ करते हैं।

मुसलमानोंके राजत्व कालमें गोहत्या ले कर सर्वदा वादानुवाद हुआ करता था। आइन-अकबरी और मुन्तखब् उत्तवारिख पढ़नेसे जाना जाता है कि इसी लिये प्रजावत्सल अकबर बादशाहने गोहत्याकी प्रथा कुछ कालके लिये उठा रखी थी। लेकिन हिन्दूविद्वेषी औरङ्गजेबके समयमें यह प्रथा फिर भी विशेषरूपसे प्रचलित हो गई थी। उस समय हिन्दू मुसलमानोंमें गोहत्या ले कर जैसा भीषण काण्ड हुआ था वह वर्णनातीत है। भारतमें हिन्दूके समक्ष गोहत्या न की जाय इसके लिये दिल्लीश्वर शाह आलमने एक नियम प्रचार किया था। बङ्गालमें भी गोहत्या ले कर हिन्दू और मुसलमानोंमें कैसा द्वेष था और बङ्गालके नवाबोंने इसके प्रतिविधानके लिये किस तरह चेष्टा की थी वह गुलाम हुसेनके बनाये हुए 'सियार उल् मुताखिरीन' नामक इतिहास पढ़नेसे ही जाना जाता है।

गोहद—मध्यभारतमें ग्वालियर राज्यके अन्तर्गत एक नगर। यह अक्षा० २६° २६´ उ० और देशा० ७८° २७´ पू० पर ग्वालियरसे इटावा जानेके पथ पर तथा सिन्धकी सहायक नदी वैसलीके दाहिने किनारे अवस्थित है। नगर अच्छी तरहसे सुगठित और सुरक्षित है। लोकसंख्या प्रायः ५३४३ है। पूर्व समयमें यह एक जाट सर्दारकी राजधानी थी। इसके वंशज अभी धौलपुरमें राज्य करते हैं। १७०७ से १७३८ ई० तक यह फिर भदुरिया राजपूतके अधीन रहा, किन्तु इसके दूसरे वर्षमें राना भीमसिंह पुनः इसे अपने अधिकारमें लाये। १७७९ ई०में गोहदके राणा और सिन्धियामें लड़ाई छिड़ी। उस समय वृटिश गवर्मेंटने गोहदके राणाका पक्ष ले ग्वालियर जीत कर राणाको दे दिया। लेकिन थोड़े दिनके बाद ही सिन्धियाने रानाको मार भगाया और ग्वालियर राज्यको अधिकारमें लाया। ये इतनेहीसे सन्तुष्ट न हुए, परन्तु गोहद नगर पर भी चढ़ाई कर दी। १८०३ ई०के बन्दोबस्तके अनुसार गोहद नगर ग्वालियर राज्यमें मिला लिया गया और गोहदके रानाको इसके बदले धौलपुर राज्य मिला। गोहदमें चारों ओर पत्थरके ऊपर मट्टीकी दीवार है। यहांका दुर्ग बहुत बड़ा और उसकी चोटी बहुत ऊंची है। पहले यहां अद्भुत मनुष्योंका वास था। लेकिन दिनों दिन नगरका ह्रास होता जा रहा है। यहां एक स्कूल, डाकबङ्गला तथा एक पुलिस घर है।

गोहन् (सं० त्रि०) गां हन्ति गो हन्-क्विप्। १ गोहन्ता, गौका मारनेवाला, कसाई, बूचर। (पु०) २ मेघस्थित जलभेदक इन्द्र।

गोहन (सं० त्रि०) गूहति संवृणोति गुह ल्यु, छान्दसत्वात् दुत्वाभावः। १ सम्वरक, छिपानेवाला। (क्ली०) २ गोमय, गोबर।

गोहन (हिं० पु०) १ साथी संग, रहनेवाला। २ सङ्ग, साथ।

गोहना (गौना) युक्तप्रदेशके गढ़वाल जिलेका एक ह्रद (झील) यह अक्षा० ३०° २२´ उ० और देशा० ७९° २८´ पू० गोहना नामके ग्रामके पास अवस्थित है। बाढ़के समय इससे अधिक पानी हो जानेके कारण इसके पास ही एक सेतु भी बना दिया गया है।

गोहनियां (हिं० पु०) संगी, साथी।

गोहन्न (सं० क्ली०) हद पुरीषोत्सर्गे क्त हन्नं गोर्हन्नः, ६-तत। गोमय, गोबर।

गोहमुख (सं० पु०) भारतवर्षस्थ एक पर्वत। भागवतमें यह गोकामुक नामसे उक्त है और विष्णुपुराणमें इसका नाम गोहमुख रखा गया है।

गोहर (सं० पु०) १ गोहरण गौका चुराना।

गोहर (हिं० स्त्री०) १ विसखोपड़ा नामक जंतु।

गोहरा (हिं० पु०) सुखा हुवा गोबर, जो जलावनके काममें आता है।

गोहराना (हिं० क्रि०) पुकारना, बुलाना, शब्द करना।

गोहरीतकी (सं० स्त्री०) गोर्हरीतकीव हितकारीत्वात्। विल्ववृक्ष, बेलका पेड़।

गोहरौर (हिं० पु०) पथे हुवे कंडोका ढेर।

गोहला (सं० स्त्री०) गोधाप देखो।

गोहलोत (हि० पु०) राजपूतोंकी एक शाखा। गहलौत देखो।

गोहन (सं० क्ली०) गोमय, गोबर।

गोहमम (देश०) एक प्रकारका वृक्ष।

गोहान—१ पञ्जाब प्रदेशके रोहतक जिलेकी एक तहसील। यह अक्षा० २८ ५७ तथा २९ १७ उ० और देशा० ७९ २६ एवं ५२ पू० मध्य अवस्थित है। यहांकी लोकसंख्या प्रायः १४७०८५ और भूपरिमाण ३२६ वर्गमील है। इसमें गोहाना बडोदा और बुटाना नामके तीन शहर तथा ७८ ग्राम लगते हैं। यहांसे आय दो लाखसे अधिक रुपयेकी है।

२ पञ्जाबमें रोहतक जिलेके अन्तर्गत गोहान तहसीलका सदर। यह अक्षा० २९ ८ उ० और देशा० ७६ ४७ पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ६५६७ है। यहां सुप्रसिद्ध मुहम्मद घोरकी सङ्गी शाह जिया उद्दीन मुहम्मद नामक एक मुसलमान साधुकी कब्र है। उन्हींके उपलक्षमें प्रतिवर्ष मेला लगता है। यहां पार्श्वनाथ देवका मन्दिर, सदर कचहरी, थाना डाकघर और विद्यालय है।

गोहार (हि० स्त्री०) १ पुकार, दुहाई। २ हल्ला गुल्ला, शोर, चिल्लाहट।

गोहारी (हि० स्त्री०) १ गोहार। २ वह धन जो कोई हानि पूरी करनेके लिये हो।

गोहालिका (सं० स्त्री०) लताविशेष।

गोहिंसा (सं० स्त्री०) गोहिंसा, ६ तत्। गोहत्या, गोवध, गोका मारना।

गोहित (सं० पु०) गोषु हितं, ६ तत्। १ विल्व, बेलका पेड। २ घोषा नामकी लता। ३ विष्णु। (त्रि०) ४ गोहितकारक, गोकी भलाई करनेवाला।

गोहिर (सं० क्ली०) गुह बाहुलकात् इरच्। १ पाद मूल, एडी। (पु०) २ अधम जातिका घोडा।

गोही (हि० स्त्री०) १ दुराव, छिपाव। २ गुप्तवार्त्ता, छिपी हुई बात। ३ महुवेका बीज। ४ फलोंका बीज गुठली।

गोहुवन (हि० पु०) एक तरहका विषधर सर्प।

गोहेरा (हि० पु०) विसखोपरा नामक विषैला जन्तु।

गोहेलवाड—बम्बई प्रदेशके काठियावाडका करद राज्य। गोहेल राजपूतोंके नाम पर इस स्थानका नामकरण हुआ है। इसकी राजधानी भवनगर है, राजधानीके नामसे यह भवनगर कह कर प्रसिद्ध है। यहांके राजगण गोहेल राजपूतवंशीय हैं। लोकसंख्या प्रायः ५८१०७९ और भूपरिमाण ४०१० वर्गमील है। यहांकी आय ५५२७७८७) रुपयेकी है।

गोह्य (सं० त्रि०) गुह वा ण्यत्। १ गुह्य, गोपनीय, छिपाने लायक। २ अप्रकाश्य, जिसका प्रकाश करना उचित नहीं। ३ संवरणीय।

गौं (हि० स्त्री०) १ सुयोग, मौका, घात, दांव। २ प्रयोजन, मतलब, गरज।

गौंच (हि०) गौंच देखो।

गौंट (देश०) उत्तर और पश्चिम भारतमें होनेवाला एक तरहका छोटा वृक्ष। इसकी लकडी पीलापन लिये बहुत कडी होती है।

गौंटा (हि० पु०) प्रजाकी भलाईके लिये या परोपकार धर्म आदिके विचारसे जमींदार कर्त्तक खर्च। २ छोटा गांव, छोटी बस्ती।

गौ (सं० स्त्री०) गाय, गैया। गौ देखो।

गौकक्ष (सं० त्रि०) गौकक्षस्य छात्र, गौकक्ष्य अण् यलो पश्च। गौकक्षका छात्र, गौकक्ष्यका विद्यार्थी।

गौकक्ष्य (सं० पु० स्त्री०) गोकक्षस्य अपत्यं गोत्रापत्यं गोकक्ष गर्गादित्वात् यञ्। गोकक्ष नामक गोत्रापत्य, गोकक्षका वंशज।

गौकक्ष्यायणि (सं० पु० स्त्री०) गौकक्ष्यस्य अपत्यं गौकक्ष्य तिकादित्वात् फिञ्। गौकक्ष्यका अपत्य।

गौकाक्ष (सं०) गोकाक देखो।

गौख (हिं० स्त्री०) १ खिडकी, झरोखा। २ दालान या बरामदा।

गौखा (हि० पु०) झरोखा, गौख।

गौखी (हि० स्त्री०) जूता।

गौगा (अ० पु०) १ शोर, गुल, हल्ला। २ जनश्रुति, अफवाह।

गौग्गुलव (सं० त्रि०) गुग्गुलौ भव। गुग्गुलु अण्। गुग्गुलमें उत्पन्न, जो गुग्गुलमें पैदा हुआ हो।

गौङ्गव (सं० क्लो०) सामभेद।

गौचरिक (सं० त्रि०) गोचरे भवः गोचर-अण्। गोचर-पात, जो गोचरसे उत्पन्न हुआ हो। गोचर देखो।

गौचरी (हिं० स्त्री०) गाय चरानेका कर। जमींदार गौ चरनेके लिये थोड़ी जमीन छोड़ देता और उसके बदले अपनी प्रजासे कर लिया करता है।

गौच (सं० पु०) गोचा हिमालयपत्नयाः अपत्यं गोचो बाहुलकात् यत्। हिमालयके पुत्र, मैनाक।

गौञ्जिक (सं० पु०) गुञ्जा परिमाणविशेषः तां अर्हति शील-मस्या गुञ्जा ठक्। स्वर्णकार, सोनार।

गौड़ (सं० पु०) एक विस्तृत प्राचीन जनपद या देश। शक्तिसङ्गमतन्त्रमें ऐसा लिखा है कि, वङ्गदेशसे लगा कर भुवनेश्वरकी सीमा तक गौड़देश कहाता है। (१) और वहांके लोग सब शास्त्रोंमें विशारद होते हैं। शक्तिसङ्गमके अनुवर्त्ती हो कविकङ्कणने "धन्यराजा मानसिंह, विष्णुपदाम्भोजभृङ्ग, गौड़वङ्ग उत्कल अधिप।" ऐसा लिख कर गौड़राज्यको वङ्ग और उड़िष्यासे पृथक् बताया है।

परन्तु ई० ११वीं शताब्दीमें कृष्णमिश्रने अपने प्रबोधचन्द्रोदयनाटकमें अनुपमा राढ़ापुरीको भी गौड़राज्यके अन्तर्गत कहा है। (२) वर्तमानमें वर्द्धमान और उसके दक्षिण हिस्सेको लोग "राढ़ा" या "राढ़" कहा करते हैं। ऐसे तो कृष्णमिश्रके मतसे वर्द्धमान आदि स्थान भी गौड़राज्यके अन्तर्गत समझे जांयगे।

इसके अलावा ७वीं शताब्दीमें वराहमिहिरने ऐसा लिखा है कि, गौड़, पौण्ड्र, वङ्ग और वर्द्धमान सब पृथक् पृथक् जनपद हैं। (३)

कूर्मपुराण तथा लिङ्गपुराणमें यह लिखा है कि सूर्यवंशीय श्रावस्तिपुत्र वंशकने गौड़देशमें श्रावस्ती नगरी रची थी। श्रावस्तीका वर्तमान नाम शेटमहेट है जोकि अयोध्याके अन्तर्गत है। अयोध्यामें गोण्डा नामका एक बड़ा जिला है, उसका नाम भी गौड़ है, यही कूर्म और लिङ्गपुराण वर्णित गौड़देश है। (४) गोण्डा देखो।

विष्णुशर्माके हितोपदेशमें लिखा है—

"अस्ति गौड़विषये कौशाम्बी नाम नगरी।"

गौड़राज्यमें कौशाम्बी नामकी नगरी है। कौशाम्बीका वर्तमान नाम कोसाम् है, यह इलाहाबाद जिलेमें है। कौशाम्बी देखो।

ईस्वीकी नौवीं, दशवीं और ग्यारवीं शताब्दीमें उत्कीर्ण राष्ट्रकूट और चेदिराजाओंके ताम्रशासन तथा शिलालेखोंसे जाना जाता है कि,—चेदि, मालव और बरार राज्यके सीमान्तमें एक गौड़देश था। गौड़ देखो।

राजतरङ्गिणीमें भी (४।४६५) लिखा है—

"पञ्चगौड़ाधिपान् जित्वा श्वशुरं तदधः व्यधात्।"

अर्थात्—काश्मीरराज जयादित्यने पञ्चगौड़के राजाओंको जीत कर श्वशुरको उनका अधीश्वर बना दिया था।

कविकङ्कणके पूर्ववर्ती माधवाचार्यने अपने दुर्गा-माहात्म्यमें अकबर बादशाहका परिचय देते समय लिखा है कि—

"पञ्चगौड़ नाम स्थान पृथ्वीमें सार है।
अकबर नामका राजा अर्जुन अवतार है॥"

स्कान्दपुराणीय सह्याद्रिखण्डमें भी लिखा है—

"सारस्वताः कान्यकुब्जा उत्कला मैथिलाश्च ये।
गौड़ाश्च पञ्चधा चैव पञ्चगौड़ाः प्रकीर्तिताः॥" (उत्तरार्द्ध १ अ०)

सारस्वत अर्थात् सरस्वतीके किनारेके, कन्नौज, उत्कल, मिथिला और गौड़के रहनेवाले ब्राह्मणोंको पञ्चगौड़ कहते हैं। उपरोक्त प्रमाणसे ऐसा मालूम होता है कि, गौड़ नामका देश एक ही नहीं था, बल्कि पांच थे। उनमेंसे सरस्वतीनदीप्रवाहित कुरुक्षेत्रमें एक था, इलाहाबाद और कान्यकुब्जके बीचमें एक, अयोध्यामें एक, मिथिला और वङ्गदेशके बीचमें एक तथा वर्तमान उड़िषा और मध्यप्रदेशके अन्तर्गत गोण्डावानाके बीचमें एक, इस प्रकार पाँच गौड़ थे। इन पञ्चगौड़के अधिवासी ब्राह्मण हो बादमें सारस्वत, कान्यकुब्ज गौड़,

(१) "वङ्गदेशं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे।
गौड़देशः समाख्यातः सर्वशास्त्रविशारदः॥"

(२) "गौड़राष्ट्रमनुत्तमं निरुपमा तत्रापि राढ़ापुरी।"

(३) "उदयगिरि-भद्र-गौड़क-पौण्ड्रोत्कल काशि-मेकलाम्बष्ठाः।
एकपद-ताम्रलिप्तिक कौशलक वर्द्धमानाश्च॥
आग्नेय्यां दिशि कौशलकलिङ्गवङ्गोपवङ्ग जठराङ्गाः।"
(बृहत्संहिता १४।६-८)

(४) "श्रावस्तिश्च महातेजा वंशकस्तु ततोऽभवत्।
निर्मिता येन श्रावस्ती गौड़देशे द्विजोत्तमाः॥" (कूर्म और लिङ्गपु०)

मैथिल और उत्कल नामसे प्रसिद्ध हुए । *

उक्त पञ्चगौड़ोंमें मिथिला और वङ्गदेशके बीचके गौड़राज्यको सब ही जानते हैं। इतिहासमें भी यही गौड़राज्य प्रसिद्ध है, दूसरे गौड़राज्योंका उल्लेख नहीं है। पहिले इस गौड़राज्यका आयतन कितना बड़ा था, यह नहीं कहा जा सकता ।

बाणभट्टके श्रीहर्षचरितमें लिखा है कि,—राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धनके समयमें गौड़में नरेन्द्रगुप्त नामके एक राजा थे । चीनपरिव्राजक युएनचुयाङ्गने बौद्धद्वेषी शशाङ्क नामसे उस राजाका उल्लेख किया है। कर्णसुवर्ण-में शशाङ्ककी राजधानी थी ।

उक्त चीनपरिव्राजकने पौण्ड्रवर्द्धन और कर्णसुवर्ण इन दोनोंको भिन्न भिन्न राज्य बतलाया है। कर्णसुवर्ण देखो।

बाणभट्टने हर्षचरितमें कर्णसुवर्णके राजाको ही गौड़राज कहा है। इसी गौड़राज नरेन्द्रगुप्तने हर्षके भाई राज्यवर्द्धनको मार डाला था। ईस्वीकी छठी शताब्दीके अन्तमें यह घटना हुई थी, अर्थात् सातवीं शताब्दीके अन्तमें नरेन्द्रदेव मारे गये।

राजतरङ्गिणीके पढ़नेसे मालूम होता है कि, सातवीं शताब्दीके अन्तमें काश्मीरराज ललितादित्यने गौड़राज्य जय किया था और गौड़राज काश्मीर चले गये थे। उसके बाद आठमी शताब्दीमें काश्मीरराज जयादित्य गौड़राज्यमें आये थे, उस समय गौड़के राजा जयन्त थे और उनकी राजधानी पौण्ड्रवर्द्धनमें थी । राजतरङ्गिणी और युएनचुयाङ्गके भ्रमणवृत्तान्तके पढ़नेसे जाना जाता है कि, ईस्वीकी ७वीं शताब्दीमें यह गौड़राज्य भी कई भागोंमें विभक्त था। परन्तु आठवीं शताब्दीमें पौण्ड्रवर्द्धनके राजा जयन्त दामादकी सहायतासे सारे गौड़के अधीश्वर हुए थे और उन्होंने एकक्षत्र राजा होकर आदिशूर उपाधि ग्रहण की थी ।

प्राचीन कुलाचार्य हरिमिश्रकी राढ़ीय कारिकामें लिखा है—आदिशूरके वंशधरोंने बहुत दिनों तक गौड़में राज्य किया था । ये सब ही ब्राह्मण्यधर्मावलम्बी थे। इनके बाद पालवंशीय देवपाल राजा हुए थे । पालवंशीय राजाओंकी ताम्र और शिलालिपियोंसे ज्ञात होता है कि, देवपालके ताऊ धर्मपालने इन्द्रराजको पराजय किया था। सम्भव है कि, इन्होंने ८४० या ८४१ ई०-में गौड़राज्य अधिकार किया हो और इसी लिए आदिशूर वंशका अधःपतन हुआ हो। पालवंशीय राजाओंकी राजधानी भी पौण्ड्रवर्द्धनमें थी ।

इससे पहिले लिख आये हैं कि, आदिशूर पञ्चगौड़के अधीश्वर हुए थे, उनके समयमें वङ्ग और राढ़ भी गौड़राज्यके अन्तर्गत था । परन्तु पालवंशीय राजाओंके शेष समयमें वङ्ग और राढ़ गौड़ या पौण्ड्रवर्द्धन राज्यके अन्तर्गत नहीं था । तिरुमलयगिरिके शिलालेखसे मालूम होता है कि दिग्विजयी राजेन्द्रचोलके समयमें (ई० १०वीं शताब्दीमें) उत्तरराढ़, दक्षिणराढ़, वङ्ग और पुण्ड्रभुक्ति ये सब पृथक् पृथक् स्वतन्त्र राज्य थे। उस समय उत्तर-राढ़के राजा महीपाल, दक्षिणराढ़के रणशूर *, वङ्गदेशके गोविन्दचन्द्र और पुण्ड्रभुक्ति † या पौण्ड्रवर्द्धनके धर्मपाल राजा थे । महाराज राजेन्द्रचोलने उक्त राजाओंको परास्त किया था (१)।

* शब्दकल्पद्रुममें स्कन्दपुराणीय वचन उद्धृत कर "सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़मैथिलिकोत्कलाः । पञ्चगौड़ा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः ॥" इतना उद्धृत किया गया है। परन्तु विन्ध्याचलोत्तरवासिनः यह पाठ असङ्गत जान पड़ता है क्योंकि इसमें तो यदि, मालव और बरारके सीमान्त तो उत्कल और मैथिलके बीचका प्राचीन गौड़का सम्बन्ध देखते भिन्न हो जाता है। ऐसी दशामें सह्याद्रिखण्डका पाठ ही सङ्गत मान म पड़ता है।

* ये रणशूर सम्भवतः आदिशूरके वंशके कोई राजा होंगे। गौड़ाध्यायीके पास शुन्‌या परगनामें एक प्राचीन कायस्थराजवंश है, उनका कहना है कि, आदिशूर वंशीय कोई राजा बल्लालकी दर्पसे निर्दिष्ट थे, उसी मौके पर पालवंशियोंने गौड़राज्य दखल कर लिया था। आदिशूर वंशीय राजाने मार्गमें यह खबर सुनी और राढ़के दक्षिणांशमें उन्होंने आश्रय लिया। शुन्‌या-वाले ये कायस्थ उन्हींके वंशधर हैं। यदि यह बात सच हो तो ईस्वीकी १०वीं शताब्दीके अन्तमें और ११वीं शताब्दीके प्रारम्भमें आदिशूर वंशीय रणशूर दक्षिणराढ़का शासन करते थे, यह भी असम्भव नहीं है।

† सुप्रसिद्ध प्राचीनलिपिविद् हुल्ट्‌श साहबने "दण्डभुक्ति" पढ़ा है, परन्तु सम्भवतः "दण्ड" न हो कर "पुण्ड्र" होगा।

(१) हुल्ट्‌श साहबने उक्त तिरुमलयके शिलालेखकी प्रतिलिपि प्रकाशित की है। (F Hultzsch's South Indian Inscriptions Vol I p 95) उक्त प्रतिलिपिकी भूमिकामें हुल्ट्‌श साहबने लिखा है—'Takkana Ladam and Uttira Ladam are Northern and South Lata (Gujrat) the former was taken from a certain Ranasur" (p 97)

इसके थोड़े ही दिन बाद सेनवंशीय प्रथम राजा विजयसेन, राढ़से आ कर गौड़ाधिपति हुए थे। उनके वंशके राजा गौड़ेश्वर नामसे प्रसिद्ध है। गौड़देश बहुत पुराना है, परन्तु उस समय भी इसका गौड़ ही नाम था, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिला। विजयसेनके पूर्ववर्ती राजा पौण्ड्रवर्द्धन, कर्णसुवर्ण आदि नगरोंमें रहते थे। कर्णसुवर्ण, पौण्ड्र आदि शब्द देखो।

विजयसेनके पुत्र बल्लालसेनने गङ्गाके किनारे गौड़ नामके नगरमें अपनी राजधानी स्थापन की थी। उनके पुत्र महाराज लक्ष्मणसेनने उस नगरका नाम लक्ष्मणावती रखा था। फिर उन्होंने नवद्वीपमें दूसरी एक राजधानी स्थापित की थी। जिस प्रकार हिन्दू राजा अपनेको गौड़ेश्वर कह कर परिचय देते थे, उसी प्रकार सेनराजके परवर्त्ती मुसलमान राजगण लखनौति या लक्ष्मणावतीके अधिपति कह कर अपना परिचय दिया करते थे। उस समयके सब ही मुसलमानी इतिहासोंमें गौड़का मुसलमान अधिकृत भूभाग 'लखनौती' राज्यके नामसे वर्णित हुआ है। परन्तु आज तक भी वह नगर गौड़ नामसे प्रसिद्ध है।

अभी मालदह जिलेमें गङ्गाके प्राचीन गर्भमें अक्षा० २४° ५४' उ० और देशा० ८८° ८' पू०में वह प्राचीन गौड़ अवस्थित है, जो इस समय बाघ, भालूओंका जंगल हो रहा है।

हरिमिश्रकी प्राचीन कारिकामें लिखा है कि, लक्ष्मणसेनके पुत्र राजा केशवसेनने यवनोंके भयसे गौड़राज्य छोड़ दिया था। इससे मालूम होता है कि, केशवसेनके राजत्वकालमें ही मुहम्मद-ई-बख्तियारने गौड़राज्य अधिकार किया था।

मुसलमानोंके अत्याचारोंसे सेनराजाओंकी प्रतिष्ठित यहांकी तमाम हिन्दु कीर्तियां विलुप्त हो गई थीं। गौड़में जिस जगह सेनराजगण रहते थे, मुसलमानोंने उसका चिह्न तक नहीं छोड़ा। इस नगरके दक्षिणांशमें "पातालचण्डी" और उत्तरांशमें "फुलवाड़ीदरवाजा" इन नामोंको देख कर प्रततत्त्वविद् कनिङ्गहाम साहबने अनुमान किया है कि, सेनराजाओंके समयकी प्राचीन गौड़राजधानी इस अंशमें और उत्तर-दक्षिणमें करीब ४ वर्गमील तक विस्तृत थी। इसमें गङ्गास्नानघाट, लोहगड़, धर्मपुर, व्यासपुर और राजचन्द्रपुर आदि नामोंके रहनेसे ऐसा मालूम होता है कि, यहां हिन्दुओंका वास था। फुलवाड़ीदरवाजेमें एक पुराना दुर्ग है। आइन-ए-अकबरीमें आबुलफजलने लिखा है कि, "गौड़के दुर्गके निर्माता बल्लालसेन हैं।" इससे अनुमान किया जा सकता है कि, फुलवाड़ीका प्राचीन दुर्ग बल्लालसेनका बनाया हुआ है। फुलवाड़ी दरवाजेसे ४ मील उत्तरमें बल्लालवाड़ी नामकी एक जगह है। इसके चारों तरफ ऊंची दीवार है। शायद इसी स्थानमें बल्लालसेन कभी कभी रहते भी थे।

इस नगरमें १६०० गज विस्तृत "बड़सागर" नामका एक ह्रद है। बहुतोंका कहना है कि इतनी बड़ी भील बङ्गालमें दूसरी नहीं है। यह भी सेनराजाओंकी एक पुरानी कीर्ति है। बड़सागरको छोड़ कर पावकोसके करीब जानेसे कमलावाड़ी नामका एक ग्राम पड़ता है, यहां गौड़ोंकी अधिष्ठात्री देवी "गौड़ेश्वरी"-का मन्दिर है। पुण्यप्रदा द्वारवासिनीके नामसे यह स्थान प्रसिद्ध है। अभी तक प्रतिवर्ष जेठ माससें यहां मेला भी लगता है।

मुसलमानोंके आधिपत्यके समय गौड़, बङ्गालके सब नगरोंसे ज्यादा समृद्धिशाली था। उस समय गौड़ नगर उत्तर-दक्षिणमें ७ मील और पूर्व-पश्चिममें २ मीलके करीब

उन्होंने मूल तामिलमें "तक्कण-लाडम" और 'उत्तिर-लाडम्' शब्द देख कर (गुजरातके) दक्षिणलाट और उत्तरलाटका निश्चय कर लिया, परन्तु यह सिद्धान्त अमौलिक ज्ञात पड़ता है। राजेन्द्रचोलने किस समयमें गुजरात पर अधिकार किया था, उसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। उक्त शिलालिपिमें "बङ्गालदेश" के साथ साथ "तक्कण-लाडम" और उत्तिरलाडम्" का भी उल्लेख है। सिंहलके प्रसिद्ध पालिग्रन्थ 'महावंश'में बङ्गराज्यके अन्तर्गत 'लाड़' नामके स्थानका वर्णन देखनेमें आता है। पहिले लिखा जा चुका है कि, ईस्वीकी ग्यारहवीं शताब्दीमें रचे हुये प्रबोधचन्द्रोदयनाटकके मतसे "राढ़ापुरी" गौड़राज्यके अन्तर्गत है। बंगदेशीय प्राचीन कुलाचार्योंके ग्रन्थोंमें और वर्तमान बंगसमाजमें उत्तरराढ़ीय, दक्षिणराढ़ीय, बङ्गजा, वारेन्द्र आदि स्थानानुसार श्रेणीविभाग प्रचलित हैं। इस देशके कुलाचार्योंका विश्वास है कि, गौड़ाधिप आदिशूरके समयसे ही ये श्रेणी विभाग चले आये हैं। इत्यादि कारणोंसे राजेन्द्रचोलके शिलालेखमें लिखे हुए 'तक्कण लाडम्' और उत्तिर-लाडम्" का अर्थ दक्षिणराढ़ और उत्तरराढ़ जान कर ही बिना किसी सन्देहके ग्रहण किये गये।

था। कुल भूपरिमाण १३ वर्गमील था। उपनगरों सहित यदि मान रखा जाय तो करीब २० से ३० वर्ग मील तक विस्तृत था। यहां ६-७ लाख आदमियोंका वास था। मिन्हाजकी तवकत-ए नासिरीके मतसे (११९८ ई०में) ब-ख्तियार पुत्रने यहां शासनदण्ड स्थापन किया था। १२०५ ई०में उनके हत्याकाण्डके बाद दिल्ली के अधीनतामें मुसलमान नवाबोंने १२८६ ई० तक यहां रह कर मुसलमानअधिकृत गौड़राज्यका शासन किया था। सम्राट् बलवनकी मृत्युके बाद नासीरुद्दीन बगरा खाँने यहांका स्वाधीन राज्य अधिकार किया था। कुतुब्-उद्दीन् आइबेककी मृत्युके बाद इमाम् उद्दीनने अपना गियाम उद्दीन नाम रख कर स्वाधीनतासे यहांका राज्य किया था। उन्होंने यहांकी फुलवाड़ीसे एक कोसकी दूरी पर दक्षिणकी ओर एक मजबूत किला बनवाया था और देवकोटसे कांकजोल तक ऊंचा बांध बना कर रास्ता बनवाई थी। यह सड़क करीब २७ कोस तक गई है।

१३२६ ई०में दिल्लीश्वर मुहम्मद तुगलकने लक्ष्मणावती पर आक्रमण किया था। उस समय यहांके सुलतान बहादुरशाहको पुनः दिल्लीकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी। इसी समयमें सुवर्णग्राममें और भी एक स्वाधीन राजधानी स्थापित हुई थी।

१३३८ ई०में हाजी इलियास स्वाधीन बन गये थे। दिल्लीके बादशाह फिरोजशाहने इनकी राजा पर दो बार हमला किया था, पर कुछ कर न सके थे। फिरोज-शाहके आक्रमण करनेके समय हाजी इलियास पाण्डुआ में रहते थे। उनके पुत्र सिकन्दरने गौड़को छोड़ कर पाण्डुआमें राजधानी की थी। इससे गौड़में लोकसंख्या कुछ घट गई थी।

१४४२ ई०में प्रथम मामूद पुनः आ कर गौड़में राजधानी स्थापित की थी। इसके बाद शेरशाहके आक्रमणकाल तक बङ्गालके मुसलमान राजा यहीं रहते थे। शेरशाहके समयमें गौड़का दूसरा नाम जिवतावाद भी था। फिर हुमायुनने इसका नाम बखताबाद रखा था। इस समयमें टेण्डरा नामक स्थानमें फिर राजधानी स्थानान्तरित हुई थी।

बङ्गदेशीय नवाबोंमें आपसमें युद्ध होनेके कारण धीरे धीरे गौड़देश श्रीहीन हो गया था और वहांकी प्रजा भी घट गई थी। इस पर भी आफगानवंशीय बङ्गालके शेष स्वाधीन राजा दाउद खाँने गौड़राजधानीको न छोड़ सके थे। १५७५ ई०में दाउद खाँके पूर्ण रूपसे पराजित होने पर अकबरके सेनापति मुनिम् खाँने गौड़ अधिकार किया था। यही बङ्गदेशके शासनदण्डका मुख्य सदर बनानेकी भी बात चीत चली थी। मोगलोंके राजप्रतिनिधि हमेशा गौड़ नगरमें आ कर रहा करते थे। बादमें १६३९ ई०में शाहसुजाने जब राजमहलमें राजधानी स्थापित की, तब लोग धीरे धीरे गौड़को छोड़ कर अन्यत्र जाने लगे। इस प्रकारसे बहुत दिनोंका पुराना गौड़ महानगर क्रमशः जनहीन हो कर अब जंगली जानवरोंका रहनेका जङ्गल हो गया है।

गङ्गाके स्रोतसे इस नगरका पश्चिमका भाग बिल्कुल धुल गया है और दूसरे हिस्सेमें कदम रसूल कोतवाली दरवाजा, दाखिल दरवाजा, फिरोजमोनार, गुण-मन्त, लत्तन, तांतीपाड़ा और सोना नामकी बड़ी बड़ी मसजिदें तथा बड़ी बड़ी अट्टालिकाओंका भग्नावशेष पड़ा है, जो मुसलमानोंकी मस्तिष्का और बङ्गदेशके शिल्पि-योंके पुरुषकी पराकाष्ठा दिखला रहा है।

गौड़का प्रसिद्ध दुर्ग बुढ़ी गंगाके किनारेके फुलवाड़ी किला और कोतवाली दरवाजेके बीचमें अवस्थित है। इसको चारों तरफ बहार दीवारी और उसके बाद गहरी खाई है। यह प्राचीर ३० फुट ऊंची और तलेमें १६० फुट चौड़ी है। खाई भर जाने पर २०० फुट विस्तृत होती है। प्राचीर पर अब बड़े बड़े जंगली पेड़ उत्पन्न हो गये हैं। खाईमें काफी सरकण्डे और बड़े बड़े मगर देखनेमें आते हैं।

किसी किसीका अनुमान है कि, १म मामूदने और उनके उत्तराधिकारियोंने यह दुर्ग बनवाया था। इस किलेके दो प्रधान द्वार हैं उनमेंसे उत्तरके प्रवेशद्वारका नाम दाखिल या सलामी दरवाजा है। यद्यपि इसका अधिकांश नष्ट हो गया है, पर तोभी जितना है उससे उस इंटसे बने हुए किलेकी कारीगरीका काफी परिचय मिलता है।

किलेके पूर्वके दरवाजेका नाम लचछिप्पि है। यहां की खोदी हुई लिपिसे मालूम होता है कि, हिजिरा सं० ८१८ (१५१२ ई०) में गौड़ाधिप हुसेन शाहने उस दरवाजेको बनवाया था। उत्तरद्वारको जाते समय बीच में चन्द-दरवाजा और नीम-दरवाजा नामके दो प्राचीन द्वार मिलते हैं, जो हि० सं० ४७६ (१४६६ ई०)-में सुलतान बारबकशाहके बनाये हुए हैं।

गौड़के ध्वंससे आविष्कृत पारस्यभाषाके शिलालेखसे मालूम होता है कि,—६०० वर्ग गज ऊंचा फिरोज मीनार ८८५ हिजरामें, ताँतीपाड़ाको मसजिद ८८० हिजरामें, नतन मसजिद ८८८ हि०में, गुणमन्त मसजिद ९३२ हि०में तथा बड़सोना मसजिद और कोतवाली दरवाजा ६२७ हिजरामें बना था।

फिरोजमीनारके दक्षिण-पूर्व में 'पियासबाड़ी" नाम की एक बड़ी पुष्करिणी है। इसका पानी नुनखरा और बहुत ही गन्दा है। आइन ए-अकबरीमें ऐसा लिखा है कि, पहिले अपराधियोंको सिर्फ उसी तालाबका पानी पिलाया जाता था और उसे पी-पी कर वे मर जाया करते थे।

गौड़के पार्श्ववर्त्ती उपनगरोंमें भी मुसलमानोंकी काफी कीर्तियां मिलती हैं। उनमेंसे फिरोजपुरकी (८९८से ९२८ हिजराकी बनी हुई) छोटी सोना-मसजिद और निजामत उल्लाकी बारहद्वारी तथा सादुल्लापुरकी (७५० की बनी हुई) सेख आखिसिराजकी कब्र और (६४१ हि०की बनी हुई) फनफनिया मसजिद हो मुख्य है।

गौड़नगरका अधिकांश भाग जङ्गल हो गया था। थोड़े ही दिन हुए होंगे गवर्मेण्टने उसे साफ करानेके अभिप्रायसे वहां सामान्य करमें प्रजा बसा दी है। अब वहाँ खेत बोये जाते हैं और धीरे धीरे जङ्गल भी साफ होता जाता है (२)।

(२) विध्वस्त गौड़ नगरका विस्तृत विवरण जाननेके लिए निम्नलिखित पुस्तकें देखनी चाहिए,—H. Creighton's Ruins of Gaur, Ravenshaw's Gaur, Martin's Eastern India, Vol. II., Journal Bengal Asiatic Society, Vols XLI and XLII, A Cunningham's Arch Sur. Reports, Vol XV. 39-76, W. W. Hunter's Imp. Gaz Calcutta Review, Vol. LXIX July.

(त्रि०) गुड़स्य विकार गुड़-अण्। २ गुड़विकार-बखड़, आमव आदि जो गुड़से बनता हो।

"गुडस्य हता मद्यस्य पौना गौडं सुरासवम्।" (भारत १।४४ अ०)

३ रागविशेष, देवगिरि और गान्धारके योगसे उत्पन्न हुए समस्त राग। इसका पञ्चम वादो और ऋ, ग, ध, नि, कोमल होता है। यह राग वीर और शृङ्गाररसमें रात्रिके समय गाने योग्य है। यह मेघरागका पुत्र है और किसी किसीके मतसे श्रीरागका पुत्र है।

(सं० रत्नाकर)

४ एक धर्मशास्त्रकार और प्राचीन वैयाकरण। नोरस्वामी और कमलाकरने इनका उल्लेख किया है।

गौड़क (सं० पु०) गौड़निवासी, गौड़देशका रहनेवाला।

गौड़ देखो।

गौड़कम्ब (सं० पु०) वन्यघोटकविशेष, एक तरहका जङ्गली घोड़ा।

गौड़कायस्थ—पश्चिम अञ्चलके कायस्थ जातिकी एक शाखा।

कायस्थ देखो।

गौड़तगा—युक्तप्रदेशमें रहनेवाले ब्राह्मणोंकी एक जाति। देहली, रोहिलखण्ड और दोआबमें ये बहुत देखे जाते हैं। इनका कहना है कि जनमेजय सर्पसत्र करनेके लिए गौड़देशसे बहुत ब्राह्मणोंको लाया था, यज्ञ की समाप्ति पर जनमेजयने उन्हें पारितोषिक स्वरूप दान करनेको इच्छा की। किसो किसीने दान लेनेसे अस्वीकार किया, किन्तु थोड़ोंने भूमिदान लिया था। वे जिन्होंने भूमि दान ग्रहण किया था, ब्राह्मणधर्म त्याग कर कृषिकार्यमें लग गए। इसी 'त्याग'के अपभ्रंशसे उनका "तग" या तगा" नाम हुआ है। जिन्होंने अपनी उपाधि और ब्राह्मणवृत्ति नहीं छोड़ी थी, वे ही गौड़ब्राह्मण नामसे विख्यात हुए। कोई कोई इसे स्वीकार नहीं करते कि गौड़ब्राह्मण गौड़देशसे आए हुए थे। वे बोलते हैं कि, हरियाणा और बिकानीर अञ्चलमें उनके पूर्वपुरुष रहते थे।

दोआबके उत्तरवासी गौड़तगा अपनेको गौड़ ब्राह्मणसे सम्पूर्ण भिन्न बतलाते हैं।

इनके कई एक श्रेणीभेद हैं। यथा—मङ्गल, तितवाल, महेश्वर, वसियान्, दत्तियान्, करावाल, मुक्त, दीक्षित, अर्द्धमलि और दभ।

देशमें अञ्चलमें गौड़ ब्राह्मण और गौड़तगाके मध्य आदान प्रदान प्रचलित है, लेकिन दूसरे स्थानोंमें ऐसा नहीं है। मेरठ और मुरादाबाद अञ्चलमें बहुतसे इसलाम धर्मावलम्बी गौड़तगा देखे जाते हैं।

गौड़नट—गौड़ और नटके योगसे बना हुआ एक राग। (सङ्गीतरत्नाकर)

गौड़पाद (सं॰ पु॰) एक प्रसिद्ध वेदान्तिक, शङ्कराचार्यके गुरुके गुरु और गोविन्दनाथके गुरु। इन्होंने माण्डूक्योपनिषद्‌कारिका, अनुगीताभाष्य, उत्तरगीताभाष्य, सांख्य कारिकाभाष्य, नृसिंहतापिनीभाष्य और देवीमाहात्म्यके चिदानन्दविलास नामकी टीका रचना की है।

कुमारिल शब्द देखो।

गौड़पार्श्व—बौद्धमत नामक संस्कृत ग्रन्थप्रणेता।

गौड़पुर—एक शहरका नाम। गौड़ देखो।

गौड़भृत्यपुर (सं॰ क्ली॰) एक प्राचीन नगर।

गौड़मल्लार (सं॰ पु॰) गौड़ और मल्लारके योगसे उत्पन्न एक राग जो वर्षाऋतुमें रातके दूसरे पहरमें गाया जाता है। इसका स्वरग्राम इस प्रकार है—ऋ ग म प ध नि स। (सङ्गीतरत्नाकर)

गौड़राजपूत—राजपूतोंके छत्तीस कुलोंमेंसे एक। प्रसिद्ध ऐतिहासिक टाड साहबके मतसे वङ्गके स्वाधीन हिन्दू राजा इसी गौड़राजपूतवंशके थे। युक्तप्रदेशमें सब जगह गौड़राजपूतोंका वास है, इनमेंसे बहुत जमीन्दार हो गये हैं। पूर्व समयमें ये स्वाधीन थे। बुर्हान उलमुल्क, सादत खां प्रभृतिके समय गौड़राजपूत मुसलमानोंके ऊपर बहुत अत्याचार किया करते थे, अन्तमें वे पूर्ण रूपसे पराजित हुए। टाड साहबके मतसे गौड़राजपूतोंमें पांच शाखा हैं, लेकिन युक्तप्रदेशके गौड़राजपूत भाट गौड़, बामन गौड़ और चमार गौड़ सिर्फ ये ही तीन शाखा मानते हैं। कठरिया नामकी एक चौथी श्रेणी भी देखी जाती है। चमारगौड़का कथन है कि किसी समय जब वे लोग विपदमें पड़े थे, उस समय उनकी एक गर्भवती स्त्रीने किसी एक चमारके घर जा आश्रय लिया था। चमारने उसे सहायता दी थी इस कारण नव जात शिशुका नाम भी चमारगौड़ पड़ा। भाट और बामनगौड़ भी इसी तरह आश्रय पा कर भी कृतज्ञता प्रकाश न की थी, इसी लिये वे चमारगौड़की अपेक्षा कुलमर्यादामें नीचे गिने जाते हैं। चमारगौड़ अपनेको चौहान या चिमनगौड़ भी कहा करते हैं। इनका कहना है कि, इस जातिमें चौहान नामके एक राजा और चिमन नामके एक मुनि थे, उन्हींके नाम पर ये अपना परिचय देते हैं। चमारगौड़में फिर राजा और राय नामके दो भेद हैं। इन दोनोंमें आदान प्रदान चलता है। हिमालयस्थ क्षणुवार, सुखेत मन्दी, केओन्थल प्रभृति स्थानोंके राजा अपनेको गौड़राजपूतके जैसा परिचय देते हैं। वे कहते हैं कि उनके पूर्वपुरुष वङ्गदेशसे जा वहां वास करते हैं।

Vol VI 160

गौड़वास्तूक (सं॰ पु॰ क्ली॰) गौड़जात वास्तूक मध्य पटली॰। चिल्लीशाक।

गौड़ब्राह्मण—दश तरहके ब्राह्मणोंमेंसे एक। गौड़ और ब्राह्मण देखो। युक्तप्रदेश और विहारमें इस श्रेणीके ब्राह्मण रहते हैं।

गौड़ब्राह्मणोंका कथन है कि, वे गौड़ राज्यसे उत्तर-पश्चिममें जा बसे हैं। गौड़तगा देखो। दिल्लीमें भी इनकी सख्या अधिक है। कनौजिया प्रभृति श्रेणियोंकी अपेक्षा ये अनेकांशमें मूर्ख हैं। हिन्दीजातिमालामें इनकी छह शाखायें हैं—गौड़, परोक, सनौन्, खण्डेलवाल, सारस्वत और सन्दरेल। किन्तु कोई कोई गौड़ ब्राह्मण उक्त शाखायें स्वीकार नहीं करते हैं, उनके मतसे गौड़ ब्राह्मणोंमें ४२ विभाग हैं जिनमेंसे आध, गुगद, कैथल, गूजर, धरम और मिश्रगौड़ प्रधान गिने जाते हैं।

गौड़सारङ्ग—गौड़ और सारङ्गके योगसे बना हुआ एक राग। यह ग्रीष्मऋतुमें दो पहरसे पहले गाया जाता है।

गौड़सीधु (सं॰ पु॰) गुड़कृत तीव्रमद्य, गुड़का बना हुआ एक तरहकी तेज शराब।

गौड़ाचार्य—वर्त्तमान युगके एक प्रधान आचार्य।

गौड़ाभिनन्द—एक कविका नाम।

गौड़ारस (सं॰ पु॰) शूलरोगका औषध। रससिन्दूर ५ भाग, मृतलौह ५ भाग, शतावरी, आमलकी एवं गुड़ूचीकाथमें तीन दिन भावना देनी चाहिये। चार रत्ती परिमाणकी मात्राका प्रतिदिन घृत और मधुके साथ सेवन करनेसे शूलरोग नाश होता है।

गौड़ासव (सं० पु०) गुड़कृत आसव, गुड़का बना हुआ शराब।

गौड़िक (सं० त्रि०) गुडे भवः गुड़-ठक्। १ गुड़ोत्पन्न, गुड़से बना हुआ। (पु०) गुडे साधुः गुड़-ठञ्। २ इक्षु, ऊख, केतारी। गौड़ गुड़विकारः साधनतया अस्त्यस्य गौड़-ठन्। ३ मद्यविशेष, गुड़से बनी हुई शराब।

गौड़ी (सं० स्त्री०) गुड़स्य विकारः गुड़-अण् स्त्रियां ङीप्। १ गुड़से बनी हुई एक तरहकी शराब। इसका पर्याय—वाल्कली है। इसका गुण—तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, वातनाशक, पित्त, बल, कान्ति और तृप्तिकर, दीपन और पथ्य है। (राजनि०)

हारीतके मतसे इसका गुण—कषाय, मधुर, अम्ल, शीतल, सन्दीपन, शूलरोगनाशक, रुचिकर, त्रिदोष, अजीर्ण, पाण्डु, आमय और अर्श नाशक है। (१११ अ०)

तन्त्रमतमें इसकी प्रस्तुत प्रणाली यों है—वञ्जुल वृक्ष की छालका चूर्ण २० सेर धातकीफूल या नारियल फूल २ सेर, हरीतकी और वहेड़ा ८ निष्क, चिता और त्रिकूट (लवणविशेष) १ निष्क, इन समस्त द्रव्योंके साथ गुड़ मिला कर एक पात्रमें रखते एवं अनुलोम और विलोम-क्रमसे १०८ बार हस्त द्वारा संचालन करते हैं। तीन दिन तक इसी तरह करना पड़ता है। तत्पश्चात् १० दिन तक पाक करना चाहिये। इसीको गौड़ी कहते हैं। कुलार्णव ५म उल्लास।

मनुके मतसे इसका सेवन ब्राह्मणोंके लिये अविधेय है। वृहस्पतिका कथन है कि गौड़ी मदिरा ग्रहण करने पर ब्राह्मणको तप्तकृच्छ्र, पराक और चान्द्रायण व्रत करना चाहिए।

राजनिघण्टुका मत है कि सिद्धि, गजपिप्पली, दधि और गुड़ मिला कर पाक करनेसे गौड़ीमद्य प्रस्तुत होता है।

आत्रेयसंहिताके मतसे धातकीफूलमें अधिक परिमाण गुड़ मिलाने पर गौड़ीमदिरा बन जाता है। इसका गुण—तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, वातनाशक, बल और पित्तवृद्धिकर, कान्ति और तृप्तिजनक, पथ्य, अग्नि और कामवर्द्धक है।

२ काव्यमें एक प्रकारकी रीति। शरीरके अवयव संस्थानके न्याय पदसंयोजनाको काव्यकी रीति कहते हैं। रीतिके चार भेद हैं-वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली और लाटिका जिस रचनामें ओज गुणप्रकाशक अनेक वर्ण एवं दीर्घ समास आते हैं, उसे गौड़ी रीति कहते। गौड़वासीगण इस रीतिको अपने व्यवहारमें अधिक लाते हैं। इसीसे इसका नाम गौड़ी पड़ा। ३ संपूर्ण जातिकी एक रागिणी जो रातके पहले पहरमें गाई जाती है। कुछ लोग इसे कल्याण रागका एक भेद मानते हैं। यह वीर और शृङ्गाररसके वर्णनके लिये बहुत उपयुक्त होती है।

गौड़ीय (सं० त्रि०) गौड़देशसम्बन्धी, गौड़देशका।

गौड़ीया (सं० स्त्री०) गौड़ी रीति गौड़ी देखा।

गौड़ेश्वर (सं० पु०) कृष्णचैतन्यस्वामी जिन्हें गौराङ्ग महाप्रभु भी कहते हैं।

गौण (सं० त्रि०) गुणादागता गौणी तत आगतः गौणी-अण्। १ गौणी लक्षण द्वारा जिस अर्थका ज्ञान हो उसे गौण कहते हैं। २ अप्रधान, जो प्रधान या मुख्य न हो। ३ सहायक, सञ्चारी। ४ गुण सम्बन्धीय।

गौणकाल (सं० पु०) गौणोऽमुख्यः कालः। मुख्यकालके कर्तव्य कर्मका करने योग्य कालान्तर।

गौणचान्द्र (सं० पु०) गौणोऽप्रधानश्चान्द्रश्चान्द्रमासः कर्मधा०। कृष्ण प्रतिपद्से पौर्णमासी पर्यंत तीस तिथिको गौणचान्द्र मास कहते हैं। थोड़े धर्मशास्त्रकार गौणचान्द्रमास स्वीकार नहीं करते, जो कोई स्वीकार करते हैं उनके मतसे भी विन्ध्य पर्वतके दक्षिणमें इस मासका चलन नहीं है। विन्ध्यदेशके उत्तरमें गौणचान्द्र और मुख्यचान्द्र इन दो प्रकारके मासोंको व्यवस्था है।

मुख्यचान्द्र देखो।

गौणिबिम्बी (सं० स्त्री०) बिम्बीभेद।

गौणिक (सं० त्रि०) गुणे रूपादौ साधुः गुण-ठक्। १ गुणसाधन। २ सत्व, रज, तम आदि गुणोंसे संबंध रखनेवाला। ३ गुणवेत्ता, गुणी। ४ गुणप्रतिपादक ग्रन्थको अध्ययन करनेवाला। (पु०) गुण एव गुण अङ्गुल्यादित्वात् स्वार्थे ठक्। ५ गुण।

गौणी (सं० स्त्री०) गुणं सादृश्यमधिकृत्य प्रवृत्ता गुण-अण्-ङीप्। १ अस्सी प्रकारकी लक्षणाओंमेंसे एक लक्षणा जिसमें सिर्फ किसी एक वस्तुका गुण ले कर दूसरेमें

आरोपित किया जाता है। लक्षण देखो। २ लोणिकाशाक। ३ मन शिला। (वि०) ॥ अप्रधान, साधारण, जो मुख्य न मानी जाय।

गौण्य (स० क्ली०) गोणस्य भाव गोण यत्। १ गुणता, गुणत्व, गुणका धर्म। (पु०) २ कशेरुक, कसेरुघास।

गौरुल्लपाडेम्—नेल्लूर जिलेके मध्य समुद्रके उपकूलवर्त्ती एक ग्राम। यह नेल्लूर नगरसे प्राय १७ मील उत्तरपूर्वमें अवस्थित है। यहांके रहनेवाले इस स्थानको रामतीर्थ कह कर मानते हैं। यहां एक प्राचीन और भग्न शिव मन्दिर है जिसके प्रवेशद्वारके ऊपर अस्पष्ट अक्षरमें एक शिलाफलक उत्कीर्ण है। वह अक्षर किस भाषाका है इसका निरूपण नहीं किया जा सकता है। मन्दिरसे एक मील दूर गांवके बीच हो कर वकि इम खाल प्रवाहित है।

गौतम (स० पु०) गोतमस्य ऋषिरपत्य गोतम अण्। १ गौतम ऋषिके वंशज। २ भरद्वाज मुनि। ३ सप्तर्षि मण्डलके ताराओंमेंसे एक। ४ अहल्याका पुत्र शतानन्द। ५ कृपाचार्य। कृपाचार्य देखो। गोतम्या' पालित अपत्य गोतमी बाहुलकात् अण्। ६ गोतमीसे प्रतिपालित शाक्य मुनि। इसका पर्याय—शाक्यमुनि, शाक्यसिंह, सर्वार्थ सिद्ध, शौद्धोदनि, अर्कबन्धु, मायादेवोसुत, स्वजित, श्वेत केतु, धर्मकेतु, महामुनि, पद्मपाणि, सर्वदर्शी, महाबोधि, महाबल, बहुसम, त्रिमूर्ति, सिद्धार्थ और शक है। ७ रामायण, महाभारत और पुराणों आदिके अनुसार एक ऋषि जिन्होंने अपनी स्त्री अहल्याको इन्द्रके साथ अनुचित सम्बन्ध करनेके कारण शाप देकर पत्थर बना दिया था। बाद अहल्याने भगवान् रामचन्द्रजीके चरण स्पर्शसे ही उद्धार पाया था। ८ एक स्मृति शास्त्रकार। कुलमणि, मस्करी, हरदत्त प्रभृति पण्डितगणने गौतमस्मृतिकी टीका लिखी है। गौतमका बनाया हुआ पितृमेधसूत्र प्रभृति वैदिक ग्रन्थ पाये जाते। ९ दानचन्द्रिकाके रचयिता। १० एक न्यायशास्त्रकार। ११ बुद्धदेवका एक नाम। १२ नासिकके निकटका एक पर्वतका नाम जहांसे गोदावरी नदी निकली है। १३ क्षत्रियोंका एक भेद। गौतम राजपूत देखो। १४ भूमिहारोंका एक भेद। १५ दिगम्बर जैनियोंके चौबीसवें तीर्थङ्कर महावीर स्वामीके गणधर। १६ स्थावर विषभेद। एक जैन ग्रन्थकार। इन्होंने प्रतिक्रमण टीका (श्लो० ३०००) और सम्बोधपञ्चासिका नामके दो ग्रन्थ रचे हैं।

गौतमगणधर—दिगम्बर जैन मतानुसार आजसे करीब २४५० वर्ष पहले जब कि भगवान महावीर स्वामीको केवलज्ञानकी प्राप्ति हुई थी, उस समय इन्द्र समस्त देवों सहित मध्यलोकमें आया और उनके समवसरणकी रचना कराई। इसके बाद भगवान्की दिव्यध्वनि खिरने लगी, परन्तु बिना गणधरके उसका अर्थ कौन समझावे। तब इन्द्रने अवधिज्ञानसे जाना कि, इन्द्रभूति नामक एक ब्राह्मण पण्डित जो कि गौतम नामसे प्रसिद्ध है, वह जिन-धर्मसे विरुद्ध चार वेद, अठारह पुराणादिक समस्त शास्त्रोंका ज्ञाता है। उसको किसी प्रकारसे बहका कर यहां लाऊं तो भगवान्का दर्शन करते ही वह जैनधर्म धारण करके भगवान्का गणधर बन जायगा। इस पर इन्द्रने एक कठिन श्लोक बना कर वृद्धब्राह्मणका स्वरूप धारण किया और जहां गौतम अपने ५०० शिष्योंको पढा रहा था, वहां पर गया और बोला—"मैं वर्द्धमान स्वामीका शिष्य हूं, वे एक श्लोक बता कर तत्काल ही ध्यानमें बैठ गये, मुझे इस श्लोकका अर्थ तक नहीं बताया, लाचार आपका नाम सुन कर आया हूं, कृपा कर आप इसका अर्थ बता दीजिये।" गौतमने कहा कि 'हम तुम्हारे श्लोकका अर्थ तो बता देंगे, पर तुम्हें हमारा शिष्य बनना पडेगा।" इन्द्रने ऐसा मञ्जूर कर लिया। इसी समय एक शिष्य बोल उठा कि—"यदि हमारे एक श्लोकका तुम्हारे गुरु अर्थ बता देंगे तो हम ५०० शिष्य उनके शिष्य बन जांयगे।" इसके बाद गौतमने इन्द्रसे श्लोक पूछा। इन्द्र इस प्रकार बोला—

'त्रैकाल्य द्रव्यषट्क नवपदसहित जीव [illegible]।
[illegible] पञ्चास्तिकाय व्रतसमिति [illegible] भेदाः ॥
[illegible] विधिमहितमल [illegible] ।
प्रत्येति श्रद्दधाति जिनवचन [illegible] ॥'

इस श्लोकको सुन कर इन्द्रभूति (गौतम) बड़े विचार में पड गया। तीन काल कौनसे, छह द्रव्य और नौ पदार्थ कौनसे? ये सब किस ग्रन्थमें हैं? इत्यादि शङ्काओंका कुछ निर्णय न कर सके। बहुत सोच विचारके बाद

गौतमने इन्द्रसे कहा "चल, तेरे गुरुके पास ही इसका अर्थ बताऊंगा।" इन्द्र तो यह चाहता ही था कि, किसी प्रकार यह समवसरणमें पहुंचे। इसके बाद गौतम अपने ५०० शिष्यों तथा अपने वायुभूति और अग्निभूति नामके दोनो विद्वान् भ्राताओं सहित समवशरणमें जानेको तयार हो गया। इन दोनों भ्राताओंके भी प्रत्येकके पाँच पाँचसौ शिष्य थे। समवसरणमें पहुंचनेके पहिले ही दरवाजे पर "मानस्तम्भ" देखा। इसके देखते ही सबका मान गलित हो गया, तब नम्रतापूर्वक समवसरणमें जा कर उसकी विभूति और भगवान्‌को देख कर उनके मिथ्या विचार सब नष्ट हो गये। भक्तिसे तीन प्रदक्षिणा दे कर नमस्कार किया और १००८ नामोंसे उनकी स्तुति कर मनुष्यसभामें जा कर बैठ गये। इसके बाद इन्द्रभूति (गौतम) ने भगवान्‌से धर्मोपदेश देनेके लिए प्रार्थना की। इस पर महावीर स्वामीने सप्तभङ्गी न्याय जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्त्वोंका और सम्यक्त्व आदिका सविस्तृत वर्णन किया। उपदेशके सुननेसे गौतम आदिको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसी समय दोनों भ्राता और ५०० शिष्यों सहित गौतमने दिगम्बरी दीक्षा धारण कर साधु हो गये। गौतमको उसी दिन अवधि और मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हुई और उन्होंने महावीरस्वामीके प्रथम गणधर हो कर द्वादशांग वाणीकी रचना की। इस प्रकार गौतम-गणधरकी उत्पत्तिका इतिहास जैनशास्त्रोंमें पाया जाता है।

महावीरस्वामीके इन्द्रभूति, वायुभूति, अग्निभूति, आदि ११ गणधर थे। महावीरस्वामीके मुक्ति गये पीछे (२४४८ वर्ष हुए है) कुछ वर्ष बाद गौतमस्वामी भी केवलज्ञान पूर्वक श्रीसम्मेदशिखर (जो कि हजारीबाग जिले में है)से मोक्ष गये हैं। इस महान् पर्वत पर इनका मन्दिर भी बना है। (श्रीमहावीरपुराण, मोक्ष कल्याण प्रकरण)

गौतमपुरा—मध्यभारतके इन्दोर राज्यके अन्तर्गत इन्दोर जिलेका शहर। यह अक्षा० २२° ५८' उ० और देशा० ७५° ३५' पू०में इन्दोर शहरसे ३२ मील उत्तर-पश्चिम और राजपूताना-मालवा-रेलवेके चम्बल ष्टेशनसे ३ मील पर अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ३१०२ है। कहा जाता है कि यह शहर १७६६ में मल्हारराव होलकरकी स्त्री गौतमबाई द्वारा स्थापित किया गया है और उन्हींके नाम पर शहरका नाम गौतमपुर पड़ा है। यह कपड़े में छींट छापनेके व्यवसायके लिये प्रसिद्ध है। गौतमबाईका बनाया हुआ यहां अचलेश्वर महादेवका एक वृहत्‌मंदिर है। इसके अलावा यहां स्कूल और चिकित्सालय भी है।

गौतमराजपूत—चन्द्रवंशीय राजपूत जातिकी एक शाखा। यह जाति राजपूतोंके छत्तीस कुलोंसे न्यारी है। बुन्देलखण्ड, बनारस, गाजीपुर आयामा, सूतापूर, कोरा, कुठियागुमीर, बिन्दकी, फतेपुर, परगणा, जाजसी, सेलिमपुर, इस्लामनगर, देवगांव, निजामाबाद और गोरखपुरके अन्तर्गत अतरोलिया, महोलो, अरवाबाद आदि स्थानोंमें इनका वास है।

किसी समयमें इन गौतम वंशीयराजपूतोंने निम्न दोआबमें स्वाधीन भावसे राज्य किया था। कोरा परगणाकी रिन्दी नदीके किनारेमें जो आर्गल ग्राम है, उसमें इनकी राजधानी थी। वर्तमानमें यद्यपि उनके वंशधरोंकी क्षमताका ह्रास हो गया है, पर तो भी वे आज राजसम्मानसे समादृत होते हैं। ये कहते हैं कि, "हम लोग पहले ब्राह्मण थे। हमारे पूर्व पुरुष शृङ्गी ऋषि, कन्नौजके गहरवाड़राजके निमन्त्रण करने पर पुत्रों सहित राजसदनमें पहुंचे। राजाने मुनिके पुत्र शृङ्गीऋषिको अपनी कन्या व्याह दी, और कन्नौजसे कोरा तकके समस्त ग्राम दहेजमें दिये थे। राजकन्याके साथ विवाह करनेसे वे राजपूतोंमें शामिल किये गए।"

इनमें राजा, राणा, राव और रावत् ये चार श्रेणियां हैं। राजाश्रेणीके समाजपति आर्गलमें, रावोंके बरहाणपुरमें, राणाओंके चिलोमें और रावतोंके समाजपति भाजपुरमें रहते हैं।

अर्द्धगौतम नामकी और भी एक राजपूतोंकी श्रेणी है, यह श्रेणी पहिले जिनवर राजपूतके नामसे प्रसिद्ध थी। इन लोगोंने आर्गलके राजाको सतरञ्ज खेलना सिखाया था, इस पर राजाने इनको बिन्दकी परगणेमें २८ गाँव दिये थे। तब हीसे ये लोग अर्द्धगौतम कहलाते हैं।

गोरखपुरके गौतमराजपूतोंका कहना है कि, किसी

समय सारा बुन्देलखण्ड इनके अधिकारमें था।

जौनपुर और उसके पूर्वांशलके गौतमराजपूत सोम वंशी, वचगोती, वन्धलगोता, राजवार और राजकुमार आदि अन्यान्य श्रेणियोंके साथ विवाहका सम्बन्ध रखते हैं। और दोयाबके गौतमराजपूत भादौरिया, कच्छवाह, राठोर, गहलोत, चौहान, तूयार आदि भिन्न भिन्न श्रेणियोंमें कन्या दान करते हैं।

आजिमगढ़के गौतमराजपूतोंने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया है।

गौतमसम्भवा (सं० स्त्री०) गौतमाय तद्वचनाशाय सम्भवति सम्भू अच्। गोदावरी नदी। गोदावरी देखो।

गौतमस्वामी—गौतमगणधर देखो।

गौतमी (सं० स्त्री०) गौतमस्य इयं गौतम अण् ङीप्। १ दुर्गा। २ गौतम महर्षियों स्त्री, अहल्या। ३ राक्षसी विशेष। ४ गोदावरी नदी। ५ गोरोचन। गौतमस्यापत्यं स्त्री गौतम अण् ङीप्। ६ कृपी, गौतमवंशीय शरद्वान्की कन्या। (भागवत ९।२१।३६) ७ गायत्रीस्वरूपा महादेवी। (देवी भा० १२।६।७०) ८ गौतम प्रणीत न्याय-विद्या।

गौतमीपुत्र—१ अन्ध्रवंशीय एक राजा, शिवस्वामीके पुत्र। वायुपुराणके मतसे इन्होंने २१ वर्ष एवं ब्रह्माण्डपुराणके मतमें ३४ वर्ष तक राज्य किया। नासिकमें गौतमपुत्रके समयका शिल्पमय अति सुन्दर एक कन्दरा है। २ वाकाटक वंशीय एक पराक्रान्त राजा, वाकाटक महाराज रुद्रसेनके पिता। इन्होंने भारशिवके महाराज भवनागकी कन्यासे विवाह किया था। वाकाटक देखो।

गौतमीय (सं० त्रि०) गौतमस्येदं गौतम छ। गौतम सम्बन्धीय।

गौतमेश्वर (सं० पु०) गौतम ईश्वर प्रभुर्यस्य, बहुव्री०। तीर्थविशेष। (मत्स्यपुराण)

गौत्त—भारतके दक्षिणपश्चिमका एक प्राचीन राजवंश। ई०को ११वीं और १३वीं शताब्दीमें ये लोग अपनेको महामण्डलेश्वर कह कर अपना परिचय दिया करते थे। फ्लीट साहबका अनुमान है कि, यह गौत्तवंश सोमवंशीय राजाओंकी और सम्भवतः शाखा है। ये लोग पश्चिमके चालुक्यराजके कर देनेवाले राजा थे; और सम्भवतः धारवार जिलेमें तथा महिसूर राज्यमें इनका वास था। क्योंकि, धारवार जिलेके चौड़दामपुर ग्रामको चारों तरफ और महिसूरके हालविट नगरमें, चालुक्यके राजा छठे विक्रमादित्यके समयमें (१) १०७५में ११२६ ई०के भीतरके शिलालेखोंमें और उनके बादके राजाओंके समय में (२) ११७६ से ८० तक, (३) ११८१ ८२, (४) ११८७ ८८, (५) ११८१ ८२, (६) १२१३ १४, (७) १२३७ ३८, (८) १२६२ से ६३ ई० तकके सब मिलाकर करीब आठ शिलालेखोंमें इन गौत्तसामन्त राजाओंका परिचय मिलता है।

गौत्तम (सं० पु०) गच्छतीति ग गात्रमुत्तायति उद् तम अच स्वार्थे अण्। स्थावरविषभेद।

गौदन्तेय (सं० त्रि०) गोदन्तस्य ढ गोदन्त ढक्। गोदन्त चन्दनसम्बन्धीय।

गौदानिक (सं० त्रि०) गोदान कर्मास्य गोदान ठक्। १ गोदानाख्य ब्रह्मचर्य। गोदाने उक्त ठक्। गोदानोक्त कर्म, गोदान करनेका काम।

गौदुमा (हिं० वि०) गोवदुम गायकी पूंछके आकारका।

गौधार (सं० पु०) गोधाया अपत्य गोधा आरक्। गोधा पुत्र, गोह जन्तुकी सन्तान।

गौधूम (सं० त्रि०) गोधूमस्य विकारः गोधूम अण्। गोधूमका विकार, गेहूंसे तैयार किया हुआ, रोटी इत्यादि।

गौधूमी (सं० स्त्री०) गोधूमस्य निव गोधूम खञ्। गोधूम उत्पन्न होनेका उत्तम खेत गेहूं उपजनेकी अच्छी जमीन।

गौधेय (सं० पु०) गोधाया अपत्य गोधा ढक्। गोधिका जात। गोहकी सन्तान।

गौधेर (सं० पु०) गोधाया अपत्य गोधा द्रक्। गोधिकाजात, गोह नामक जन्तुका बच्चा।

गौधेरक (सं० पु०) गौधेर एव गौधेर स्वार्थे कन्। गौधेर देखो।

गौधेरकायणि (सं० पु०) गौधेरस्य अपत्य गौधेर फिञ् कुक् च। गौधेर देखो।

गौन (हिं० पु०) गमन देखो।

गौनई (हिं० स्त्री०) गायन गान, गीत।

गौनर्द (सं० त्रि०) गोनर्दे देशे भव गोनर्द अण्। १ गोनर्द देशवासी, गोनर्द देशके रहनेवाले। (पु०) २ पतञ्जलि मुनि।

गौन्दी—दाक्षिणात्यवासी जातिविशेष जो गवन्दि नामसे ख्यात है। गवन्दि देखो।

गौनहाई (हिं० वि०) जिसका गौना हालमें हुआ हो।

गौनहार (हिं० स्त्री०) दुलहिनके साथ उसके ससुराल जानेवाली स्त्री।

गौना (हिं० पु०) द्विरागमन, मुकलावा। विवाहके बादकी एक प्रथा, जिसमें वर अपने ससुरालमें जाता और कुछ रीति रस्म पूरी करके वधूको अपने साथ वर ले आता है।

गौपत्य (सं० क्ली०) गोपतेर्भाव: गोपति-यक्। गोपतिभाव, गोस्वामित्व, गौका अधिकार।

गौपवन (सं० पु०) १ एक ऋषिका नाम। इनका जन्म मधुकाण्ड वंशमें हुवा था। (क्ली०) २ सामभेद।

गौपाड़ा—सन्ताल परगनेके अन्तर्गत एक प्रधान ग्राम जो गिरिशृङ्ग पर अवस्थित है। यहां सिर्फ पहाड़ी जाति वास करती है।

गौपायन (सं० पु०) गोपकी सन्तान।

गौपालपशुपालिका (सं० स्त्री०) गोपालपशुपालयोर्भाव, गोपाल-पशुपाल-वुञ्। १ गोपाल (ग्वाला) तथा पशुपालनेका धर्म। २ ग्वाला और पशुपालनेका काम।

गौपिक (सं० पु०-स्त्री०) गोपिकाया अपत्यं गोपिका-अण्। गोपिकाका अपत्य, ग्वालिनकी सन्तान।

गौपिलेय (सं० त्रि०) गोपिल चातुरर्थिक ढक्। गोशाछिपाने लायक।

गौपुच्छ (सं० त्रि०) गोपुच्छमिव गोपुच्छ-अण्। गायकी पूंछके आकारका।

गौपुच्छिक (सं० त्रि०) गोपुच्छेन क्रीतं गोपुच्छ-ठञ्। जो गोपुच्छ द्वारा खरीदा गया हो।

गौप्तेय (सं० पु०-स्त्री०) गुप्ता वैश्यजातीया स्त्री तस्या: अपत्यं गुप्ता-ढक्। वैश्य जातिकी स्त्रीकी सन्तान।

गौमत (सं० त्रि०) गोमत्यां भव: गोमती-अण्। गोमती नदीमें उत्पन्न।

गौमतायन (सं० त्रि०) गोमती चातुरर्थिक फञ्। जो गोमती नदीमें उत्पन्न हो।

गौमयिक (सं० त्रि०) गोमय चातुरर्थिक ठञ्। गोमय निवृत्त प्रभृति।

गौमायन (सं० पु०-स्त्री०) गोमिनो गोत्रापत्यं गोमिन्-फञ्, टिलोपश्च। गोमीका गोत्रापत्य, गोदडकी सन्तान।

गौमुख (हिं० पु०) गोमुख देखो।

गौमुखी (हिं० स्त्री०) गोमुखी देखो।

गौमेद (सं० पु०) गोमूत्रके रङ्गका एक तरहका रत्न।

गौर (सं० पु०) गुड् गतौ र निपातनं साधु। १ चन्द्रमा। २ श्वेतसर्षप, उजला सरसों। ३ धवहृक्ष, धव नामका पेड़। ४ पीतवर्ण, पीला रंग। ५ श्वेतवर्ण, उजला रंग। ६ अरुणवर्ण, लाल रंग। (त्रि०) ७ पीतवर्ण विशिष्ट, पीले रंगका। ८ श्वेतवर्णयुक्त। (पु०) ९ चैतन्य महाप्रभु। (क्ली०) १० पद्मकेसर। ११ कुङ्कुम, एक तरहका पौधा। १२ स्वर्ण, सोना। (पु०) १३ परिमाणविशेष, याज्ञवल्क्यके अनुसार ८ त्रसरेणुको १ लिक्षा, ३ लिक्षाका एक सरसों, ३ सरसोंका १ गौर होता है। (पु०-स्त्री०) १४ एक प्रकारका मृग जिसके खुर बीचसे फटे नहीं होते। १५ एक पर्वत जो ब्रह्माण्डपुराणके मतसे कैलासके उत्तरमें है। (त्रि०) १६ विशुद्ध, स्वच्छ, निर्मल। (पु०) १७ करञ्जहृक्ष। १८ खदिर। १९ हरिताल।

गौर (अ० पु०) १ सोचविचार, चिन्तन। २ ध्यान, ख्याल।

गौरक (सं० पु०) १ गिरिमृत्तिका, गेरू मिट्टी। २ लाक्षादि तैल। ३ लावपक्षी, लावा नामकी चिड़िया।

गौरकदम्ब (सं० पु०) कदम्बका पेड़।

गौरक्ष्य (सं० क्ली०) गोरक्षस्य भाव: कर्म वा। १ पाशुपाल्य, गोकी रक्षा, वैश्यकर्म विशेष।

गौरखर (सं० पु०) वन्यगर्दभ, जंगली गदहा।

गौरखटी (सं० स्त्री०) श्वेतखटिका, सफेद मट्टी, खड़िया मिट्टी।

गौरग्रीव (सं० पु०) गौरी ग्रीवा अस्त, बहुव्री०। १ देशविशेष जिसका उल्लेख कूर्मविभागके मध्यभागमें है। (त्रि०) २ तद्देशवासी, उस देशका रहनेवाला।

गौरग्रीवीय (सं० त्रि०) १ गौरग्रीवसम्बन्धीय। २ गौरग्रीववासियोंकी सन्तान।

गौरचणक (सं० पु०) धवलचणहृक्ष।

गौरचन्द्र (सं० पु०) महाप्रभु चैतन्यदेव।

गौरचन्द्र गजपतिनारायणदेव—गञ्जामके अन्तर्गत किमि-

दिकाके एक राजा जगन्नाथनारायणदेवके पुत्र।

गौरजीरक (सं॰ पु॰) गौरश्चासौ जीरकश्चेति। श्वेतजीरक सफेद जीरा। इसका संस्कृत पर्याय अजाजी, श्वेतजीरक, कणाह्वा, कणजीर, कणा, मितदीप्य, दीर्घकणा, सिता जाजी और गौराजाजी है। इसका गुण—शीतल, रुचिकर, कटु, मधुर, दीपन, कृमि, विष और आध्माननाशक एवं चक्षुका हितकर है। (भावप्र॰)।

गौरता (सं॰ स्त्री॰) १ गोराई, गोरापन। २ सफेदी।

गौरतित्तिरि (सं॰ पु॰ स्त्री॰) श्वेतवर्ण तित्तिरिपक्षी, सफेद रङ्गकी तीतर चिड़िया।

गौरत्वच् (सं॰ पु॰) गौरोत्वक् यस्य, बहुव्री॰। इङ्गदीवृक्ष, एक तरहका पेड़।

गौरद्रु (सं॰ पु॰) हरिद्रावृक्ष, हल्दीका पेड़।

गौरधान्य (सं॰ क्ली॰) शालिधान्यविशेष, एक प्रकारका धान।

गौरपाषाण (सं॰ क्ली॰) श्वेतखटिका, खड़िया मिट्टी।

गौरपृष्ठ (सं॰ पु॰) गौरं पृष्ठं यस्य, बहुव्री॰। यमराजके सभासद् एक राजा (भारत सभा)

गौरबाजार—वीरभूमके अन्तर्गत एक गण्डग्राम। टेगा वल्ली नामक संस्कृत भूवृत्तान्तमें यह गौराङ्गवीथि नामसे वर्णित है।

गौरमाल्य (सं॰ पु॰) गिरिज मधुकवृक्ष, पर्वत पर उत्पन्न महुवेका पेड़।

गौरमुख (सं॰ पु॰) गौरं विशुद्धं मुखं यस्य, बहुव्री॰। १ महर्षि शमीकका एक शिष्य। (त्रि॰) गौरं मुखं यस्य, बहुव्री॰। २ श्वेतवर्ण मुखविशिष्ट, जिसका चेहरा सफेद हो।

गौरमृग (सं॰ पु॰-स्त्री॰) नित्यकर्मधा॰। गौरवर्ण मृगविशेष, उजले रङ्गका मृग (हरिण)।

गौररम्भा (सं॰ स्त्री॰) सुवर्णकदलीवृक्ष, एक तरहका केलेका पेड़।

गौरव (सं॰ क्ली॰) गुरोर्भाव गुरु-अण्। १ महत्त्व, बड़प्पन। २ गुरुता भारीपन। ३ सम्मान, आदर, इज्जत। ४ उत्कर्ष। ५ अभ्युत्थान। ६ गुरुका काम। ७ काफज रोग। (त्रि॰) गुरोरिदं गुरु-अण्। ८ गुरु सम्बन्धीय।

गौरवर्णवती (सं॰ स्त्री॰) हरिद्रा, हल्दी।

गौरवल्ली (सं॰ स्त्री॰) प्रियङ्गु लता।

गौरववत् (सं॰ त्रि॰) गौरवमस्त्यस्य गौरव मतुप् मस्य व गौरवविशिष्ट, जिसको गौरव हो।

गौरवा (सं॰ पु॰) चटकपक्षी।

गौरवासन (सं॰ क्ली॰) गौरवेण इत्तमासन मध्यपदलो॰। उत्कर्ष सूचक आसन।

गौरवाहन (सं॰ पु॰) गौरं गौरवर्णं वाहनं यस्य, बहुव्री॰। एक राजाका नाम। इनका दूसरा नाम श्वेतवाहन था।

गौरवित (सं॰ त्रि॰) गौरव सञ्जातमस्य गौरव तारकादित्वादितच्। पूज्य, आदरणीय, सम्मान करनेके लायक।

गौरव्रीहि (सं॰ पु॰) गौरशालि, सफेद धान।

गौरशाक (सं॰ पु॰) गौरं शाकोऽस्य, बहुव्री॰। मधुकवृक्ष, एक प्रकारका महुवेका पेड़।

गौरशाखी (सं॰ पु॰) जलमधुक, एक तरहका जलमहुवा।

गौरशालि (सं॰ पु॰) नित्यकर्मधा॰। शालिधान्यविशेष, एक तरहका सुगन्धित धान।

गौरशिरस् (सं॰ त्रि॰) गौरं शिरोऽस्य, बहुव्री॰। १ शुक्लवर्ण केशयुक्त, जिसके मस्तकका बाल उजला हो गया हो। (पु॰) २ राजनीतिशास्त्रके प्रणेता एक मुनि। इनका बनाया हुआ नीतिशास्त्र वर्तमान समयमें दुष्प्राप्य है। महाभारतमें नीतिशास्त्र-प्रणेतृगणके मध्य इनका नाम भी उल्लेख है।

गौरषष्टिक (सं॰ पु॰) षष्टिकशालिधान्यभेद, सफेद साठीधान। इसका गुण—रुच्य, शीतल, दीपन, वृष्य, पथ्य, दीपन तथा वीर्यवृद्धिकर है।

गौरसर्षप (सं॰ पु॰) गौरश्चासौ सर्षपश्चेति कर्मधा॰। १ श्वेतसर्षप, सफेद सरसों। इसका पर्याय—अन्वय सिद्धार्थ, भूतनाशन, कटुस्नेह, ग्रहघ्न, कण्डुघ्न, राजिकाफल, तीक्ष्णक, दुराधर्ष, रक्षोघ्न, कुष्ठनाशन, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन और सितसर्षप है। इसका गुण-कटु, तिक्त, उष्ण, वात, रक्त, ग्रह, त्वक्, दोष, विष और व्रणनाशक एवं रक्तपित्त और अग्निवृद्धिकर है। (भावप्रकाश) मनुके अनुसार इसके द्वारा सोमशुद्धि करनेका विधान है। २ परिमाणविशेष। मनुके मतसे ८ त्रसरेणुको १ लिक्षा ३ लिक्षाका १ राज तथा ३ राजसर्षपका १ गौरसर्षप माना गया है।

गौरसुवर्ण (सं० क्लो०) गौरं शुभ्रः सुवर्णं उत्कृष्ट वर्णो यस्य, बहुव्री०। एक प्रकारका साग, जो चित्रकूटके तर स्थानोंमें अधिकतासे होता है। इसकी पत्तियां सुनहले रंगकी छोटी छोटी और सुगन्धित होती हैं। हाथमें लेकर मलनेसे ये चूर चूर हो जातीं और उससे बहुत अच्छी गन्ध निकलती है। इसका पर्याय—स्वर्ण, सुगन्धिक, भूमिज, वारिज, ह्रस्व गन्धशाक, कटुशृङ्गाल और चूर्णशाकाङ्क है और गुण—शीतल, कफ, पित्त, ज्वर, दाह, रुचि, भ्रान्ति और श्रमनाशक तथा पथ्य है।

गौरा (सं० स्त्री०) गौर टाप्। १ विशुद्धा स्त्री, गौर रंगकी स्त्री। २ पार्वती, गिरिजा। ३ हरिद्रा, हल्दी। ४ सुवर्णकदलीवृक्ष, एक तरहका केलेका पेड़, जिसका फल सुनहले रंगका होता है। ५ श्वेतसर्षपवृक्ष, सफेद सरसोंका गाछ। ६ एक रागिणी जिसको कुछ मनुष्य श्रीरागकी स्त्री मानते हैं। ७ गोरोचना।

गौरा—युक्तप्रदेशके गोरखपुर जिलान्तर्गत देवरिया तहसीलका एक शहर। यह अक्षा० २६° १७' उ० और देशा० ८३° ४३' पू०में अवस्थित है। लोकसंख्या प्रायः ७८६५ है। यहां चीनीका व्यवसाय होता है।

गौराङ्ग (सं० पु०) गौरं श्वेतं पीतं वा अङ्गं यस्य, बहुव्री०। १ विष्णु। इन्होंने युगावतारमें श्वेत और पीत वर्ण शरीर धारण किया था इसीसे इनका नाम गौराङ्ग पड़ा। (भागवत० १० स्क०) गौरं विशुद्धं अङ्गं यस्य, बहुव्री०। २ श्रीकृष्ण। ३ शचीके पुत्र चैतन्य महाप्रभु। चैतन्यदेव देखो। (त्रि०)। ४ गौरवर्ण देहविशिष्ट, जिसके शरीरका चमड़ा सफेद हो। (क्ली०) गौरञ्च तत् अङ्गञ्चेति कर्मधा०। ५ गौरवर्ण शरीर। गरुड़पुराणके मतानुसार कुष्माण्डनालके क्षार और कुष्माण्डकी छालको हल्दीके साथ चूर्ण कर और महिषविष्ठामें वेष्टन करके थोड़ी आगमें उबाल कर लेना चाहिए। इसके लगानेसे शरीर गौरवर्णका हो जाता है।

गौराङ्गदिहि—बङ्गालमें बाँकुड़ा जिलाकी गिरिश्रेणी। यह अक्षा० २३° २६' उ० और देशा० ८६° ४८' ४५" पू०में अवस्थित है। बांकुड़ासे रघुनाथपुरके रास्ते तक १२ कोसके मध्य तीन पर्वत इसी नामसे ख्यात है। पर्वत प्रायः ३०० फुट ऊंचा और जंगलमय है।

गौराङ्गी (सं० स्त्री०) छोटी इलायची।

गौराजाजी (सं० स्त्री०) श्वेतजीरक, सफेद जीरा।

गौराट (सं० पु०) श्वेतखदिर, सफेद खैर।

गौराटिका (सं० स्त्री०) शारिकापक्षी, मैना।

गौरादि—(सं० पु०) गौर आदिर्यस्य गणस्य, बहुव्री०। पाणिनिका एक गण। इसके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ङीष् होता है। गौर, मत्स्य, मनुष्य, शृङ्ग, पिङ्गल, हय, गवय, मुकय, ऋष्य, पुट, तूण, द्रुण, द्रोण, हरिण, कोकण, काकण, पटर, उणक, आमल, आमलक, कुवल, बिम्ब, बदर, फर्करक, ककर, तर्कार, शर्कार पुष्कर शिखण्ड, शलद, शष्कण्ड, सनन्द, सुषम, सुषव, अलिन्द, गडुल, पाण्डुश, आढ़क, आनन्द, आश्वत्थ सृपाट आखक आपच्चिक, शष्कुल, सूर्य, सूर्म, शूर्प, सूच, यूष, पूष, यूथ सूप, मेथवल्लक, धातक, मल्लक, मालक, मालत, माल्वक, वेतस, वृक्ष, द्रुम, अतस, उभय, भृङ्ग मह, मठ, छेद, पेश, मेद श्वन्, तक्षन्, अनडुही, अनड्वाही, एषण (करणमें), देह, देलन, काकादन, गवादन, तेजन, रजन, लवण, औद्गाहमानि, गोतम, गौतम, पारक, अयःस्थूण, अयस्थूण, भौरिकि, भौलिकि, भौलिङ्गि, यान, मेध, आलम्बि, आलजि, आलब्धि, आलक्षि, केवाल, आपक, आरट, नट, टोट, नोट, मूलाट, शातन, पोतन, पातन, पाठन, पानठ, आस्तरण, अधिकरण, अग्रहायण, आग्रहायण प्रत्यवरोहिन्, सेचन, सुमङ्गल, (संज्ञामें) अण्डर, सुन्दर, मण्डल, मन्थर, मङ्गल, पट, पिण्ड, षण्ड, ऊर्द, गुद, शम, सूद, आर्द, ह्रद, पाण्ड, भाण्ड, लोहाण्ड, कदर, कन्दर, कदल, तरुण, तलुन, कल्माष, बृहत्, महत्, सोम, सौधर्म, रोहिणी (नक्षत्रमें), रेवती (नक्षत्रमें), विकल, निष्फल, पुष्कल, कटी, पिप्पल्यादि (पिप्पली, हरितकि, हरीतकी, कोशातकी, शमी, वरी, शरी, पृथिवी, क्रोष्ट्री, मातामही, पितामही,) इनको गौरादिगण कहते हैं। गौरादि आकृतिगण।

(पा० ४।१।४१)

गौरार्द्रक (सं० पु०) नित्यकर्मधा०। स्थावरविष, यथा अफीम संखिया और कनेर।

गौराभ (सं० पु०) हरिद्रावृक्ष, हल्दीका पेड़।

गौरामलक (सं० क्लो०) १ परिणतामलक, पक्का अमड़ा। २ प्राचीनामलक।

गौरावस्कन्दिन (स० पु०) गुणैरिट गौरव गुरुपत्नीरूप कलत्र तदास्कन्दति गौरव आ स्कन्द णिनि पृषोदरादित्वात् वर्णविकारे साधु। अगम्यागामी, दुष्ट।

गौराश्व (स० पु०) गौरोऽश्वोऽस्य बहुव्री०। १ एक राजाका नाम जो यमकी सभाके सभासद् हैं। २ अर्जुन। (त्रि०) ३ जिसके गौरवर्णका घोड़ा हो।

गौरास्य (स० पु० स्त्री०) गौरमास्य यस्य, बहुव्री०। नील वानर, एक तरहका बन्दर, जिसका मुख लाल तथा शेष अङ्ग कृष्णवर्णका होता है।

गौराहिक (स० पु० स्त्री०) गौरश्चासौ अहिश्चेति कर्मधा० स्वार्थे कन्। विषशून्य एक तरहका सर्प, विषहीन सांप।

गौरि (स० पु०) गौरस्यापत्यं गौर-इञ्। आङ्गिरस ऋषि।

गौरिक (स० त्रि०) गौरो वर्णोऽस्त्यस्य गौर ठन्। १ श्वेतवर्ण युक्त, जिसका शरीर श्वेतवर्णका हो। (पु०) २ श्वेतसर्षप सफेद सरसों।

गौरिका (स० स्त्री०) १ जलमधूक, जलज महुवा। २ शारिका पक्षी। ३ अष्टवर्षीयकन्या, आठ वर्षकी लड़की।

गौरिकी (स० स्त्री०) गौर्येव गौरी स्वार्थे कन् ह्रस्वश्च। अष्टवर्षीया कन्या, आठ वर्षकी लड़की।

गौरिणी (स० स्त्री०) क्षुद्रविशेष एक तरहकी झाड़।

गौरिमत् (स० त्रि०) गौरीं मन्यन्ते मन क्विप् ६ तत्। ह्रस्वश्च। गौरीतीर्थ।

गौरिमती (स० स्त्री०) गौरीमत् ङीप्। गौरीतीर्थस्थ एक नदी, गौरीतीर्थमें बहनेवाली एक नदीका नाम।

गौरिया (हिं० स्त्री०) १ एक प्रकारका जलपक्षी जिसका सिर भूरा और गर्दन सफेद होती है। ऋतुके परिवर्तनके साथ साथ इसकी चोंचका रंग भी बदला करता है। २ मट्टीका बना हुआ एक छोटा हुक्का। ३ एक प्रकारका मोटा वस्त्र।

गौरिल (स० पु०) गौरो वर्णोऽस्य गौर बाहुलकात् इलच्। १ श्वेतसर्षप, सफेद सरसों। २ लोहचूर्ण।

गौरिवीत (स० क्ली०) गौरीवीतिना दृष्ट गौर वीति अण्। सामविशेष।

गौरिवीति (स० पु०) गौर्या वेदवाचि वीतिर्विशेषगतिरस्यस्य, बहुव्री०। ऋषिविशेष, शक्ति मुनिके पुत्र। (शतपथ० १२।८।३।७)

गौरी (स० स्त्री०) गौर ङीष्। १ गौरवर्णा, गोरी स्त्री। २ पार्वती, हिमालयकी कन्या। ३ अष्टवर्षीया कन्या, आठ वर्षकी लड़की। ४ हरिद्रा, हल्दी। ५ दारुहरिद्रा, दारुहल्दी। ६ गोरोचना, गोरोचन। ७ वरुणपत्नी। ८ प्रियङ्गुवृक्ष। ९ पृथिवी। १० नदीविशेष। ११ सूर्यवंशीय प्रसेनजित् राजाकी स्त्री जो स्वामीके शापसे नदी हो गई थी। उस नदीका नाम बाहुदा रखा गया है। (हरिवंश) १२ बुद्धशक्तिविशेष, बुद्धकी एक शक्तिका नाम। १३ मञ्जीष्ठा, मजीठ। १४ श्वेतदूर्वा, सफेद दूब। १५ मल्लिका पुष्पवृक्ष। १६ तुलसी। १७ सुवर्ण कदली, सुनहले रंगका केला। १८ आकाशमांसी। १९ सफेद रंगकी गाय। २० गुड़से बनी हुई शराब, गौड़ी। २१ चमेली। २२ रागिणीविशेष। हनुमानके मतसे यह मालव रागकी पत्नी, भरतके मतसे मालकोषकी और ब्रह्माके मतसे श्रीरागकी पत्नी है। यह आसावरी और जयन्तीके योगसे उत्पन्न हुई है। इसके आरम्भ और समाप्तिका स्वर षड्ज है। इस रागिणीकी मूर्ति—कुमारी, मुख चन्द्रमासा सुन्दर तोतेकी नाईं मुखमें दाड़िमका बीज धारण किये हुए उपवनमें वास करती है। (सङ्गीतदामोदर)

उदाहरण—

स० ग म० ध नि स।
नि ध प म ग ऋ स। (कल्लीनाथ)
नि स ऋ० म प०। (रा० वि)
स० ग म० ध नि। (सं० सौ)
स ऋ ग म० ध नि।—(सं० ना)

२३ माध्यमिक वाक्। २४ दमिमती स्त्री। २५ गङ्गा २६ शरीरकी एक नाड़ी।

गौरीकल्प (स० पु०) कल्पभेद, ब्रह्माका छब्बीसवां दर्यो।

गौरीकान्त (स० पु०) गौर्याः कान्त ६ तत्। महादेव, शिवजी।

गौरीकान्तसार्वभौम भट्टाचार्य—एक वङ्गदेशीय विख्यात पण्डित। इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रन्थ रचे हैं। जिनमेंसे आनन्दलहरीटीका, केशवकी तर्कभाषाकी भावार्थदीपिका नाम्नी टीका, तर्कसंग्रहटीका, मुक्तावली और गौरीकान्तीय नामक न्यायग्रन्थ प्रसिद्ध है।

गौरीकेश (सं० पु०-क्लो०) अभ्रधातु, अबरक।

गौरीखण्ड—एक पुण्य जनस्थान। (रेवाखण्ड)

गौरीगुरु (सं० पु०) गौर्यागुरुः, ६-तत्। १ हिमालय।

गौरीचन्दन (सं० पु०) लालचन्दन।

गौरीज (सं० क्लो०) गौर्यास्तद्रजसो जायते गौरी-जन-ड। १ धातुविशेष, अभ्रक, अबरक। २ गन्धक। (पु०) ३ कार्त्तिक। ४ गणेश।

गौरीजेय (सं० क्लो०) अभ्रधातु, अबरक।

गौरीतक्र (सं० क्लो०) गौर्या विहितं तक्रं, मध्यपदलो०। सुगन्धिद्रव्य और मसालायुक्त तक्रविशेष। लवण, मिर्च, शूंठ, जीरा, नारङ्गज (नारंगी), दारचीनी और इलायचीके चूर्णको मट्ठेके साथ मिला कर घृत और हींग द्वारा धूपित करें, इसीको गौरीतक्र कहते हैं।

गौरीतेज (सं० क्लो०) अभ्रधातु, अभ्रक, अबरक।

गौरीदत्त—वाग्मतीतीर्थयात्राप्रकाश नामक संस्कृत ग्रन्थकार।

गौरीदार—काठियावाड़के झल्लार प्रदेशके अन्तर्गत एक क्षुद्र राज्य। एक करद भूम्याधिकारी इस राज्यके कुछ ग्रामोंके ऊपर अपना आधिपत्य करते हैं। राज्यकी आय १२०००) रु०की है जिसमेंसे १०१०) रु० वृटिश गवर्मेंटको और ६१०) रुपये जुनागड़के नवाबको कर स्वरूप देने पड़ते हैं।

गौरीनाथ (सं० पु०) गौर्यानाथः, ६-तत्। १ महादेव। २ तर्कपल्लव नामक न्यायग्रन्थरचयिता।

गौरीपति (सं० पु०) गौर्याः पतिः, ६-तत्। १ शिव। २ दामोदरके पुत्र जिन्होंने १६४० ई०को आचारादर्शकी टीका रचना की थी।

गौरीपाषाण (सं० क्लो०) शुक्लपाषाण, फुलखली।

गौरीपुष्प (सं० पु०) गौरी हरिद्रेव पीतं पुष्पं यस्य, बहुव्री०। १ प्रियङ्गु नामका वृक्ष। २ श्वेत करवीरका पुष्प, सफेद कनेलका फूल।

गौरीपुत्र (सं० पु०) गौर्याः पुत्रः, ६-तत्। १ कार्तिक। २ गणेश।

गौरीपुर—आसाममें ग्वालपाड़ा जिलेकी चिरस्थायी प्रबन्धकृत जमीन्दारी। यह अक्षा० २५° ३८' तथा २६° १८' उ० और देशा० ८८° ५०' एवं ९०° ६' पू०में अवस्थित है। इसमें घुरला, जामीरा, मकरमपुर, कालु मालपाड़ा तथा और दूसरे दूसरे छोटे परगने लगते हैं। यहांका भूपरिमाण ५८३ वर्गमील है। जमीन्दारका पारिवारिक वास स्थान गौरीपुर ग्राममें है जो धुवड़ीसे ६ मील उत्तरमें पड़ता है। यहां एक हाइ स्कूल और एक चिकित्सालय है। यहां पाट, अनाज और कपड़का व्यवसाय होता है।

गौरीपूजा (सं० स्त्री०) गौर्याः पूजा, ६-तत्। गौरीमूर्तिधारिणी देवीकी पूजा।

गौरीबेंत (सं० पु०) एक प्रकारका बेंत।

गौरीभर्त्तृ (सं० पु०) गौर्या भर्त्ता, ६-तत्। शिव।

गौरीमन्त्र (सं० पु०) गौरीका मन्त्र। यथा—

"ह्रीं गौरि! रुद्रदयिते! योगेश्वरि! सवर्मफट्।
इति त. षोडश वर्णोऽयं मन्त्रः सद्भिरुदीरितः॥"

गौरीरज (सं० क्लो०) गन्धक।

गौरीललित (सं० क्लो०) गौरी हरिद्रेव ललितं। हरिताल, हड़ताल।

गौरीवर (सं० पु०) गौर्या वरः, ६-तत्। शिव।

गौरीवरशर्मा—देवीमाहात्म्यका विद्वन्मनोरमा नामक एक टीकाकार।

गौरीव्रत (सं० क्लो०) व्रतविशेष। पुराणमें लिखा है कि यदि महिलागण इस व्रतको करके गौरीपूजा करें तो उन्हें आशानुरूप पति लाभ होते हैं। कुशध्वजकन्या वेदवतीने सबसे पहले यह व्रत किया था। व्रतके फलानुसार दूसरे जन्ममें जगत्पति रामचन्द्रजी इसके स्वामी हुवे थे।

वेदवती देखो।

गौरीश (सं० पु०) गौर्याः ईशः, ६-तत्। पार्वतीपति, शिवजी।

गौरीशङ्कर (सं० पु०) १ महादेव। २ हिमालयका सर्वोच्च शृङ्ग जो आज कल एवरेष्ट कहलाता है। हिमालय देखो।

गौरीशङ्कर उदयशङ्करयाज्ञिक—भावनगरके एक प्रधान राज

मन्त्री। सामान्य अवस्थासे मनुष्य कहां तक अपनी उन्नति कर सकता है, इस घोर कलिकालमें भी मनुष्य आत्मोन्नतिके गुणसे प्राचीन आर्य ऋषियोंके समान उन्नत हृदय बन सकता है, इस पाश्चात्य सभ्यताके प्रबल स्रोतमें बहते हुए भी मनुष्य किस तरह अपने प्राचीन जातीय भावकी रक्षा कर सकता है, ये सब बातें गौरीशङ्कर उदयशङ्करकी जीवनीसे जानी जा सकती हैं। जिस समय भावनगरके राजा बहुत कर्जदार हो गये थे, जूनागढ़के नवाबके साथ उनका कुछ झगड़ा चल रहा था, ब्रटिश गवर्मेण्टकी भी भावनगर राज्य पर कड़ी दृष्टि थी, ऐसे सङ्कटमय समयमें युवक गौरीशङ्कर भावनगर राज्यके मन्त्री हुए थे। उनकी विद्या, बुद्धि और अपूर्व शासननीतिके गुणसे थोड़े ही दिनोंमें उक्त राज्यकी समस्त विपत्तियोंका लोप हो गया। देश विदेशके सब ही राजपुरुष उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करने लगे। बम्बईके गवर्नर एलफिन्ष्टोनसे लगा कर लार्ड रिये (Lord Reay) तक जितने गवर्नर हुए हैं, वे सब ही इनका आदर करते थे। ब्रटिश गवर्मेण्टने उनकी कार्यकुशलता पर प्रसन्न हो कर उन्हें कमाण्डर आफ दी ष्टार आफ इण्डीया (C S I) की उपाधि दी थी।

सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि बम्बईके गवर्नर लार्ड रिये (Lord Reay) ने उनके साथ मुलाकात करके यह भी कहा था कि,—

"यह प्रसिद्ध पुरुष मानो सरलताकी प्रतिमूर्ति ही है। इनके अकपट, निर्मल और पवित्र हृदयके उच्च भावोंसे तथा विशुद्ध प्रतिभासे मैं विमुग्ध हो गया हूं। राज्यके सुशृङ्खलताकी रक्षाके लिए इन्होंने गांवोंमें सिपाहियोंका और विचारका अच्छा बन्दोबस्त किया है और दुष्ट जमीन्दारोंके उत्पीड़नसे प्रजाको बचाया है। एक व्यक्तिसे सर्वसाधारणका जितना उपकार हो सकता है, इन गौरीशङ्करने उतना कर दिखलाया है।"

करीब पचास वर्ष तक राजकीय कार्योंमें लगे रहने बाद १८७९ ईस्वीमें जनवरीकी १३ तारीखमें इन्होंने मन्त्रित्व छोड़ दिया था। उस समय इनकी उमर ७४ वर्षकी थी। इससे थोड़े ही दिन पहिले ये अपने इष्टमित्रोंसे यह कहा करते थे कि,—'गृहस्थमें रह कर जो कुछ करना चाहिये था, सो सब ही कर लिया। अब मुझे कुछ भी आकांक्षा नहीं, मैंने गृहस्थका सारा सम्बन्ध छोड़ देनेका सङ्कल्प कर लिया है। इतने दिनों तक मैं दूसरोंके कार्योंमें फंसा हुआ था, मैंने अपना काम कुछ भी न कर पाया। अब मैं अपना ही काम करूंगा। हमारे पूर्वजोंने आखिरी जीवनमें जो पथ अवलम्बन किया था, मैं भी उसी वेदान्त और उपनिषत् प्रदर्शित मार्गका अनुसरण कर आत्मोन्नतिके लिए प्रयत्न करूंगा। मैं इस आखिरी जीवनको निर्जन स्थानमें रह कर सन्यास व्रत ग्रहणपूर्वक बिताऊंगा।"

मन्त्रित्व छोड़ कर वे वेदान्त और उपनिषद्की आलोचनामें प्रवृत्त हुए। सब दा ही वे इनमें लीन रहते थे। इस प्रकार १८८७ ई०में उन्होंने संसारसे सर्वदाके लिए विदा होनेके लिए अपने इष्टमित्रोंको आह्वान किया। उस दिन उनके इष्टमित्रोंके सिवा बहुतसे अन्य जन भी वहां आये थे। वृद्ध गौरीशङ्करने सबको यथायोग्य आशीर्वाद देते हुए कहा—"चतुर्थ आश्रममें प्रवेश करूंगा मैं सन्यासी होऊंगा। जिससे भविष्यत्में फिर मुझे इस असार संसारमें न आना पड़े, जिससे भगवान् मुझे सर्वदाके लिए निर्वाणमुक्ति दें ऐसा प्रयत्न करूंगा।"

उनके मित्रोंने उनसे सैकड़ों बार अनुरोध किया कि आप गृहस्थाश्रम न छोड़ें, मोह बढ़े, ऐसे दृश्य भी बहुतसे दिखलाये, कितने प्रलोभन दिखलाये, परन्तु उनका उत्साहित उज्ज्वल हृदय विचलित न हुआ। उन्होंने स्त्री, पुत्र, इष्टमित्र, धनधान्यादिका मोह छोड़ वानप्रस्थका अवलम्बन किया।* १८९१ ई०में १ली दिसम्बरमें उन्होंने निर्वाण लाभ किया था।

गौरीशिखर (सं० क्ली०) गौरीप्रिय शिखर, मध्यपदलो०। एक तीर्थस्थान। पार्वती पर्वतके जिस शिखर पर बैठ कर तपस्या करी थीं वही गौरीशिखरतीर्थ नामसे प्रसिद्ध है। इसका दूसरा नाम गौरीशङ्कर है।

'ततस्तु पश्चात् प्रविशेत् तडाग्यास्ता प्रासाद गौरीशिखर 'सार्वसमः।'"

(कुमार)

* Gauri Sankar Udaysankar C S I by L. U Yajnik. Bombay 1889 इस ग्रन्थमें गौरीशङ्करकी विस्तृत जीवनी लिखी है।

गौरीसर (पु०) हंसराज नामको बूटो, समलपत्ती।

गौरीसुत (सं० पु०) गौर्याः सुतः, ६-तत्। १ आठ वर्ष में जिसका विवाह हुआ हो ऐसी स्त्रीके गर्भजात पुत्र। २ कार्तिकेय। ३ गणेश। ४ श्यामालाष्टकके रचयिता।

गौरीहार—मध्यभारत एजेन्सीके बुन्देलखण्डके अन्तर्गत एक छोटा राज्य। यह अक्षा० २५° १४´ तथा २५° २६´ उ० और देशा० ८०° १२´ तथा ८०° २१´ पू०के मध्य अवस्थित है। इसके पूर्वांशमें बान्दा जिला और हमीरपुर, उत्तर और पश्चिममें बान्दा तथा दक्षिणमें छत्रपुर राज्य है। भूमिपरिमाण ७२ वर्गमील और लोकसंख्या ७७६० है। इस राज्यकी वार्षिक आमदनी २७०००) रुपये है।

यहांका सर्दार जिझोतिया ब्राह्मण हैं। पूर्व समयमें इस वंशके आदि पुरुष महापुर ग्राममें रहते थे। राजाराम तिवारी अजयगढ़के राजा गुमानसिंहके अधीनमें रह कर बान्दा जिलेके भुरगढ़ दुर्ग पर शासन करते थे। परन्तु अली बहादुरकी चढ़ाईके समय अर्थात् जब बुन्देलखण्डमें अराजकता फैली थी तब ये गुमानसिंहके विरुद्ध हो लुटेरोंके सर्दार हो गये। गुमानसिंह इन्हें अपने वशमें न कर सके। बाद बुन्देलखण्ड अङ्गरेजोंके हाथ आ जाने पर उन्होंने राजारामको पकड़नेकी चेष्टा की। इस पर राजारामने अंगरेजोंसे निवेदन किया कि बुन्देला सर्दारोंको जैसा अधिकार मिला है यदि वैसा ही अधिकार मुझे भी मिले तो मैं सन्धि स्थापनको तयार हूं। गवर्मेंटने भी इसे स्वीकार कर १८०७ ई०में गौरीहारका राज्य इन्हें अर्पण किया। १८४६ ई०में राजारामका देहान्त हुआ और उनके उत्तराधिकारी राजधर रुद्रसिंह तिवारी राज सिंहासन पर बैठे। उन्होंने १८५७ ई०में सिपाही विद्रोहके समय अङ्गरेजोंकी सहायता की थी। इसमें उन्होंने अंगरेज गवर्मेंटसे राय बहादुरकी उपाधि, १००००) रुपयोंको पोषाक और दत्तकग्रहणके लिये भी एक सनद पाई थी। रुद्रसिंहके बाद पृथ्वीपालसिंह गद्दी पर बैठे। उनका जन्म १८८६ ई०में हुआ था और उन्होंने १९०४ ई० तक राज्य किया। इस राज्यमें २२ ग्राम लगते हैं।

२ उक्त राज्यका प्रधान नगर। यह अक्षा० २५° १६´ उ० और देशा० ८०° १४´ पू०में अवस्थित है।

गौरुतल्पिक (सं० त्रि०) गुरुतल्पं गुरुपत्नीं गच्छति गुरुतल्प-ठक्। गुरुपत्नीगामी, गुरुकी स्त्रीके साथ सम्भोग करनेवाला।

गौरेया (हिं० स्त्री०) गोरिया देखो।

गौर्जर (सं० पु०) १ मेषशृङ्ग, भेंडका सींग। २ गुर्जर देशवासी।

गौर्य (सं० क्ली०) तमालपत्र।

गौर्यश्मा (सं० पु०) शुक्लपाषाण, खड़िया मट्टी।

गौर्यामल (सं० क्ली०) अभ्रक, अबरक।

गौलक्षणिक (सं० त्रि०) गोलक्षणं वेत्ति गोलक्षण-ठक्। १ जो गौरुका लक्षण जानता हो। गोलक्षणं तत्प्रतिपादकं ग्रन्थमधीते गोलक्षण-ठक्। २ जो गौलक्षण प्रतिपादक शास्त्र अध्ययन करता हो।

गौलन्द (सं० पु०) गोलन्द ऋषिके छात्र।

गौलन्द्य (सं० पु०-स्त्री०) गोलन्दस्य गोत्रापत्यं गोलन्द गर्गादि यञ्। गोलन्द ऋषिके वंशज।

गौला (सं० स्त्री०) गौर टाप्, रस्य लत्वं। हिमालयकी कन्या, गौरी, पार्वती, गिरिजा।

गौलाङ्कायन (सं० पु० स्त्री०) गोलाङ्कस्य गोत्रापत्यं गोलाङ्क-फञ्। गोलाङ्क ऋषिके वंशज।

गौलि—बम्बई प्रदेशके खान्देश जिलेके मध्यवर्ती एक राज्य। यह नितान्त पर्वतमय और जङ्गलसे परिपूर्ण है। यहांके जंगलमें बड़े बड़े काष्ठ पाये जाते हैं। २ दाक्षिणात्यकी गोपजाति। गावली देखो।

गौलिक (सं० पु०) गुड़ साधुः गुड़-ठक् डस्य लः। मुष्ककवृक्ष, एक तरहका पेड़।

गौलोमन् (सं० त्रि०) गोलोमेव गोलोमन् प्रकरादि अण्। गोलोम सदृश, गौके रोएंके समान।

गौलगुलव (सं० त्रि०) गुग्गुलु सम्बन्धीय, जो गुग्गुलसे उत्पन्न हो।

गौल्मिक (सं० पु०) गुल्मे नियुक्तः गुल्म-ठक्। गुल्म स्थानमें नियुक्त सेनाविशेष, चौकसी देनेवाला एक सिपाही।

गौल्य (सं० क्ली०) गुड़स्य भावः गुड़-ष्यञ् डस्य लः। १ माधुर्य, मीठारस। २ एक तरहको शराब। ३ चिकनो सुपारी। (स्त्री०) ४ बिम्बीलता, कंदरुकी नामकी लता।

गौशकटिक (स० त्रि०) गोशकट सम्बन्धीय, जिसे बैलकी गाडी हो।
गौशतिक (स० त्रि०) गोशतमत्यास्ति गोशत ठञ्। जिसके एक सौ गो हो।
गौशृङ्ग (स० त्रि०) सामभेद, एक प्रकारका सामगान।
गौश्य (स० पु० स्त्री०) गुश्मिके व गज।
गौपूक्त (स० क्ली०) सामभेद।
गौपूक्ति (सं० पु०) एक मुनिका नाम।
गौष्ठ (स० त्रि०) गोष्ठा भव गोष्ठी फकादि अण्। जो गोशालासे उत्पन्न हो।
गौष्ठीन (स० क्ली०) पूर्व भूत गोष्ठ गोष्ठ खञ्। पहले जिस स्थान पर गुहाल था, पुराना और त्यक्त गोशाला।
गौसम (हि० पु०) कोसम नामका पेड।
गौसहस्रिक (स० त्रि०) गोसहस्रमस्यास्ति गोसहस्र ठञ्। जिसके एक हजार गौ हो।
गौह (स० त्रि०) गुहस्येद गुह अण। १ गुहसम्बन्धीय। २ जो गुह द्वारा निर्वृत्त हो।
गौहर (फा० पु०) मोती, मुक्ता।
गौहलव्य (स० पु०) गुहलोर्कर्पर्गोलापत्य गुहलु गोर्यादि यञ्। गुहलु नामक ऋषिके व गज।
गौहलव्यायनी (स० स्त्री०) गौहलव्य-ङीय, लोहितादित्वात् फ। गुहलु नामक ऋषिकी वंशोत्पन्ना स्त्री।
गौहाटी—पूर्वीय बङ्गाल और आसामके कामरूप जिलेका एक शहर। यह अक्षा० २६ ११ उ० और देशा० ९१ ४५ पु० पर ब्रह्मपुत्र नदीके दाहिने किनारे अवस्थित है। आसाममें यह सब नगरोंसे बडा है। पहले यही नगर प्राग्ज्योतिषपुर नामसे प्रसिद्ध था। उस प्राचीन नगरके पूर्व कीर्ति का ध्व सावशेष ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों कूल पर विद्यमान है। हिन्दू राजाओंके समयसे लेकर ब्रटिश गवर्मेंटके १८७४ ई० तक यहीं आसाम राज्यका प्रधान सदर था। उक्त वर्षमें यह सदर उठ कर खासी पहाडके सिलङ्ग नगरमें गया। दक्षिणो गौहाटीसे शिलङ्ग तक एक पक्की सडक गई है। उत्तर और दक्षिण गौहाटीकी लोकसंख्या प्राय १४२४४ है। सोलहवीं शताब्दीसे पहलेका कोई इतिहास इस शहरका नहीं पाया जाता है। सोलहवीं शताब्दीमें यह कोचराज्यके अन्तर्गत था। सतरहवी शताब्दीमें मुसलमान और अहोमने इस पर आक्रमण किया और लगभग पचास वर्ष तक शहर उन्हींके अधिकारमें रहा। १७८१ ई०मे मुसलमान कामरूपसे भगाये गये और तभीसे गौहाटी निम्न आसामके अहोम शासकका वासस्थान हो गया। १७८६ ई०में जब मोआमरियाने रङ्गपुर दखल किया तब उन्होंने अपनी राजधानी गौहाटीमें स्थापन की। १८२६ ई०में जब आसाम ब्रटिस गवर्मेंटके अधिकारमें आया तब गौहाटी आसाम राज्यका प्रधान सदर था। यह अब भी आसामकी तराई जिले के कमिश्नर और जजका प्रधान सदर है। यहां एक चिकित्सालय, विश्वविद्यालय और कारागार है जिसमें केवल २५२ कैदी रखे जाते हैं।

यहांसे सदर उठ जाने पर भी गौहाटी आसाममें प्रधान वाणिज्यस्थानमें गण्य है। यहांसे कुछ दूर प्रसिद्ध कामाख्या और उमानन्द तीर्थ है। कामरूप और कामाख्या देखो।
ग्धि (स० स्त्री०) अद क्तिन् वेदे घसादेश उपधालोपश्च। भक्षण, भोजन।
ग्ना (स० स्त्री०) गम बाहुलकात् ना डिश्च। १ स्त्री, औरत। २ देवपत्नी, देवताओंकी स्त्री। ३ वाक्य। ४ वेद।
ग्नावत् (स० त्रि०) ग्ना अस्त्यस्य ग्ना मतुप् मस्य वः। १ स्त्रीयुक्त, सपत्नीक, जो स्त्रीको कहीं साथ ले जाता हो। २ स्तुतिवाक्यविशिष्ट।
ग्नास्पति (स० पु०) ग्नाया पति, ६-तत्। निपातनात् सुट्। १ देवपत्नीका पति। २ छन्दका पति।
ग्नास्पत्नी (स० स्त्री०) स्त्रियोंकी पालयित्रीदेवी। स्त्रियोंकी रक्षा करनेवाली देवी।
ग्मन्—ग्ध्मन् देखो।
ग्मा (स० स्त्री०) पृथिवी, दुनिया।
ग्याबिर (देश०) कीकरकी जातिका एक पेड। इस पेडके पत्तों और लकडियोंसे पपडिया खैर बनाया जाता है।
ग्यान (हि० पु०) ज्ञान देखो।
ग्यारस (हि० स्त्री०) एकादशी तिथि।
ग्यारह (हि० वि०) दश और एक।
ग्रथन (स० क्ली०) ग्रन्थ बाहुलकात् क्यु न लोप। १ ग्रन्थन, जोडना, गूथना। २ तत्वशास्त्रप्रसिद्ध साध्य

(अकोआ) और वेतके पत्तोंका चमड़े पर लेप करना चाहिये। अथवा सेकचन्द वृक्षके त्वग्हीन कन्दको पीस कर सर्वदा लेप करते रहना चाहिये। पक जाने पर उसे फोड़ देना चाहिये और वनस्पतिके क्वाथसे धोना चाहिये। यष्टिमधु (मुलहटी)-के साथ तिलकी बुकनीका लेप करा कर घावको साफ करके उस पर काकोल्यादि गण सहित पाचित घृतका प्रयोग करना उचित है।

श्लेष्माजन्य ग्रंथिरोगमें वमन और दस्त करा कर ग्रंथि में गरमी पहुंचानी चाहिये। फिर उसे अंगूठेसे या लोहेसे मर्दन करके बैठा देना चाहिये। इसके बाद वैची, अमलतास (आरग्वध), श्वेतगुञ्जाकी जड़, कड़आ कद्दू, अकवन (मदार), भार्गी (वरङ्गी), और करञ्ज (कण्टकरेजी) इन सबको मिला कर प्रलेप करना चाहिये। मर्मस्थानके सिवा दूसरी जगहमें गांठ हो तो उसे तुरत चिरवा कर भीतरका मल निकलवा देना चाहिये।

रक्तजन्य ग्रंथिरोगमें ग्रंथिको जला कर शीघ्र ही व्रण-चिकित्साके विधानानुसार चिकित्सा करनी चाहिये। मांसकन्दी उन्नत और वृहत् ग्रंथि होने पर इस तरहकी चिकित्सा करें अथवा पक जाने पर उसे चीर कर हित-कर कषायसे प्रचालित करें। प्रचुर क्षार, घृत और शहदके साथ घनी संशोधनी वस्तु द्वारा संशोधन करना चाहिये। पीछे विड़ङ्ग-पाठा और हलदीके साथ तैल पाक करके उस पर प्रयोग करना चाहिये।

मेदजन्य ग्रंथिरोगमें तिलकी खरका लेप करके ऊपर-से दुहरे कपड़े से बाँध देना चाहिये या लोहेके टुकड़े को गरम करके उस पर लगा देना चाहिये। दारुहल्दीका लेप कर गरम लाखका सेक देना भी ठीक है। फोड़ कर भीतरका मेद निकाल कर दग्ध करना चाहिये। अथवा पक जानेके बाद फोड़ कर मूत्रद्वारा धोना उचित है। बादमें पिष्ट, तिल, मञ्जीमिट्टी आदिको लवण और हरतालके साथ मिला कर घी और मधुके साथ गाढ़ा करके प्रयोग करना चाहिये। इस प्रकार जब घाव साफ हो जाय, तब उस पर नाटा-करौंटा, डहर-करौंदा, गुञ्जा (शोणकाँड़च चिरमिति), हिङ्गोटा और वंशनील इन सबको गोमूत्रके साथ मिलाकर तेल बनाना चाहिये और उसे लगाते रहना चाहिये। इस प्रकारकी चिकित्सा-से ग्रंथि रोगका नाश होता है। (सुश्रुत चिकित्सा० १८ अ०)

ग्रन्थिक (सं० क्लो०) ग्रन्थिरिव कायति ग्रन्थि-कै-क। १ पिप्पलीमूल, पिपरामूल। २ ग्रंथिपर्ण नामक वृक्ष, गठिवन। ३ गुग्गुल। ४ करीर। ग्रंथिना कौटिल्येन कायति ग्रंथि-कै-क। ५ दैवज्ञ। ६ माद्रीके तनय सह-देव। ७ अर्जुनवृक्ष।

ग्रन्थिका (सं० स्त्री०) १ ग्रंथिपर्ण, गठिवन। २ वच।

ग्रन्थिकोप (सं० पु०) ग्रंथिपर्ण नामका पेड़।

ग्रन्थिखेड़ (सं० क्लो०) गन्धमातृका।

ग्रन्थिच्छेदक (सं० पु०) ग्रंथीनां छेदकः, ६-तत्। जालिक, गाँठ काटनेवाला, गांठकट्टा, गिरहकट।

ग्रंथित (स० त्रि०) ग्रंथि-क्त। गुम्फित, गूंथा हुआ, जोड़ा हुवा, गाँठ दिया हुवा।

ग्रन्थितक (सं० पु०) शूकरोग।

ग्रन्थित्व (सं० क्लो०) ग्रंथिर्भावः। ग्रंथिका भाव, गूथने-की क्रिया।

ग्रन्थिदल (सं० पु०) चोरक नामका गन्धद्रव्यविशेष।

ग्रन्थिदला (सं० स्त्री०) ग्रंथिर्दलेऽस्याः, बहुव्री०, टाप्। १ मालाकन्दकी जड़। २ चोरक। ३ ग्रंथिपर्ण।

ग्रन्थिदूर्वा (सं० स्त्री०) ग्रंथिप्रधाना दूर्वा शाकपार्थि-वादि, मध्यपदलो०। दूर्वाविशेष, गाँडर दूब।

ग्रन्थिन् (सं० त्रि०) ग्रंथस्तदर्थो वा ज्ञेयतया अस्त्यस्य ग्रन्थ-इनि। १ ग्रंथयुक्त, गांठदार, जिसमें गांठ लगी हो। २ ग्रंथार्थवित्, जो ग्रंथका अर्थ समझता हो। ३ ग्रंथ-कर्ता, किताब बनानेवाला।

ग्रन्थिनी (सं० स्त्री०) कदलीवृक्ष, केलेका पेड़।

ग्रन्थिपत्र (सं० पु०-क्लो०) ग्रन्थिप्रधानं पत्रमस्य, बहुव्री०। चोरक नामका गन्धद्रव्य।

ग्रन्थिपर्ण (सं० क्लो०) ग्रंथौ पर्णान्यस्य ग्रंथियुक्तानि पर्णान्यस्य वा बहुव्री०। वृक्षविशेष, गठिवन नामका पेड़। इसका संस्कृत पर्याय—शूक, वर्हिपुष्प, स्थौणेय, कुक्कुर वर्ही, पुष्प वर्ह, शूकवर्ह, स्थौणेयक, कुशपुष्प, गुल्मक, विशीर्णाख्य, क्षारामगुच्छक, वर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, ग्रंथिक, काकपुष्प, नीलपुष्प, सुगन्ध और तैलपर्णक है। इसका गुण—तिक्त, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, दीपन, लघु,

कफ, वात, विष, श्वास, कण्डू और दोगन्ध्यनाशक है। इसके लेपन करनेसे शरीरकी रूक्षता, अलक्ष्मी, राक्षस और ज्वर नाश हो जाते हैं। (राजवल्लभ) इस जातिका वृक्ष नेपाल अञ्चलमें उत्पन्न होता है। इसका वर्तुला-कार ग्रन्थियुक्त अग्र बनियेकी दूकान पर बेचा जाता जो गठियाला कहलाता है। इस वृक्षसे नीलवर्ण शुका कार केशरका गुच्छा निकलता जो देखनेमें बहुत सुन्दर लगता है। इसका पुष्प कुकशिमा पुष्पके जैसा होता और पत्ते शूकपत्तीके डैनेके सदृश होते हैं। इस वृक्षके नोलर गके पुष्प फट कर छत्राकारमें रूईकी तरह इधर, उधर हवामें उड़ जाते हैं।

— (पु०) २ चौरग्र नामक गन्धद्रव्य।

ग्रन्थिपर्णक (स० पु०) ग्रन्थिपर्ण स्वार्थे कन्। ग्रीवास।

ग्रन्थिपर्णा (स० स्त्री०) ग्रन्थिपर्ण टाप्। अतुका लता।

ग्रन्थिपर्णी (स० स्त्री०) ग्रन्थिपर्णा गौरादित्वात् ङीष्। गण्डदूर्वा, गांडर दूब।

ग्रन्थिफल (स० पु०) ग्रन्थियुक्त फलमस्य, बहुव्री०। कपित्थवृक्ष, कैथका पेड़। २ मदनवृक्ष, मैनफलका पेड़। ३ माकुरण्ड वृक्ष।

ग्रन्थिबन्धन (स० क्ली०) ग्रन्थेर्बन्धन, ६ तत्। विवाहके समय वर और कन्याके वस्त्रोंके परस्पर गांठ देकर बांधनेकी क्रिया, गठबन्धन। २ जन्मतिथिमें गोरोचना युक्त सूत्र बन्धन।

ग्रन्थिबर्हिन् (स० पु०) ग्रन्थि बर्हति बर्ह स्तुतौ ग्रन्थि बर्ह णिनि। ग्रन्थिपर्ण वृक्ष, गठिवनका पेड़।

ग्रन्थिभा (स० स्त्री०) अस्थिस हारवृक्ष, हड जोड़ाका पेड़।

ग्रन्थिभेद (स० पु०) ग्रन्थि वस्त्रादि ग्रन्थि भिनत्ति ग्रन्थि भिद् अण् उपपदस०। चौरविशेष, गठकटा, गिरहकट। मनुका मत है कि गठकटा चोरका प्रथम बार अङ्गुलि छेदन, द्वितीयबार हस्त और पद छेदन तथा तृतीयवार चोरी करनेसे वध करना उचित है।

(मनु० ९।२७७)

ग्रन्थिमत् (स० त्रि०) ग्रन्थिरस्त्यत्र ग्रन्थि मतुप्। १ ग्रन्थियुक्त, गाठदार। (पु०) २ अस्थिस हारिवृक्ष। इसका संस्कृत पर्याय—अस्थिस हारी, वज्राङ्गी और अस्थि शृङ्खला है। इसका गुण वात श्लेष्मा, कृमि और दुर्गन्ध नाशक, अस्थियोगकारी, उष्ण, सारक, अर्शरोग और पित्तवर्द्धक, रूक्ष, स्वादु, लघु, वृष्य और पाचन है।

(भावप्रकाश)

ग्रन्थिमत्फल (स० पु०) ग्रन्थिमत्फल यस्य, बहुव्री०। मान्दारका पेड़।

ग्रन्थिमान् (स० पु०) अस्थिस हारवृक्ष।

ग्रन्थिमूल (स० क्ली०) ग्रन्थि गुणवत् मूलमस्य, बहुव्री०। १ रसुन, सलगम, गाजर, मूली आदि मूल जो गांठोंके रूपमें पृथ्वीके भीतर होते हैं। २ लहसुन। ३ ताल-मूली, मूसल।

ग्रन्थिमूला (स० स्त्री०) ग्रन्थिबहुल मूलं यस्याः बहुव्री०। टाप्। मालादूर्वा, मालादूब।

ग्रन्थिल (स० त्रि०) ग्रन्थिर्विद्यतेऽस्य ग्रन्थि लच्। १ ग्रन्थि-युक्त, गाठदार, गठीला। (क्ली०) २ पिप्पलीमूल, पिपरा-मूल। ३ आर्द्रक, अदरक। (पु०) ४ कटाय नाम-का कण्टीला वृक्ष। पूर्व समयमें इसकी लकड़ीसे यज्ञ-पात्र बनते थे। ५ करीरका वृक्ष। ६ विल्ववृक्ष, बेलका पेड़। ७ चोरक नामका गन्धद्रव्य। ८ चौराइका साग। ९ विकङ्कटवृक्ष, बैंचीका गाछ। १० आलू।

ग्रन्थिला (स० स्त्री०) ग्रन्थिल टाप्। १ भद्रमुस्ता, भद्र मोथा। २ माला दूर्वा, माला दूब। ३ गाडर दूब।

ग्रन्थिवर्ही (स० पु०) ग्रन्थिपर्णवृक्ष, गठिवनका पेड़।

ग्रन्थिविसर्प (स० पु०) विसर्परोगभेद, गेंठियाकी बीमारी।

ग्रन्थिसहता (स० स्त्री०) एक तरहकी लता।

ग्रन्थिहर (स० पु०) ग्रन्थि हरति हृ-अच्। अमात्य, मन्त्री।

ग्रन्थीक (स० क्ली०) ग्रन्थिक पृषोदरादित्वात् साधु। पिप्पलीमूल, पिपरामूल।

ग्रप—ग्रस देखा।

ग्रभ (स० पु०) ग्रभ (वैदिकधातु) अप्। ग्रहण, पकड़।

ग्रभण (स० क्ली०) ग्रभ-ल्युट्। ग्रहण, पकड़।

ग्रभणवत् (स० त्रि०) ग्रभण विद्यतेऽस्य ग्रभण-मतुप् मस्य व। ग्रहणविशिष्ट।

ग्रभीत् (स० त्रि०) ग्रभं तृच्। ग्रहीता, ग्रहण करने योग्य, पकड़ने लायक।

ग्रस (सं० क्रि०) १ निगलना। २ मुखसे पकड़ना।
ग्रसन (सं० क्ली०) ग्रस-भावे ल्युट्। १ भक्षण, निगलना। २ पकड़, ग्रहण। ३ ग्रास, कौर। ४ एक असुरका नाम। ५ राहु द्वारा चन्द्रमा या सूर्यका ग्रास। ६ ग्रहणविशेष।
ग्रसना (हिं० क्रि०) १ ग्रसन करना, बुरीतरह पकड़ना। २ सताना।
ग्रसपति (सं० पु०) मनुष्यमुखको आकृतियाँ जो पत्थर पर खोदी रहती है।
ग्रसमान (सं० त्रि०) ग्रस्-शानच्। ग्रास करनेवाला, जो किसी चीजको पकड़ कर निगल जाता हो।
ग्रसिष्ठ (सं० त्रि०) अतिशयेन ग्रसिता ग्रसित-इष्ठन्। भक्षयितृतम, जो अधिक निगलता हो।
ग्रसिष्णु (सं० त्रि०) ग्रस-इष्णुच्। १ गहनशील। (पु०) २ परब्रह्म।
ग्रस्त (सं० त्रि०) ग्रस कर्मणि क्त। १ भक्षित, खाया हुवा। २ पीड़ित। ३ ग्रसित, पकड़ा हुवा। ४ भक्षक, खानेवाला।
ग्रस्तास्त (सं० पु०) ग्रस्त एवास्तः। ग्रहण लगने पर चन्द्रमा या सूर्यका विना मोक्ष हुए अस्त होना।
ग्रस्ति (सं० स्त्री०) ग्रस-क्तिन्। ग्रास, सूर्य या चन्द्रमामें ग्रहण लगना।
ग्रस्तोदय (सं० पु०) ग्रस्तस्य-उदयः, ६-तत्। राहुग्रस्त चन्द्र या सूर्यका उदय होना, चन्द्रमा या सूर्यका उस अवस्थामें उदय जाना जब कि उन पर ग्रहण लगा हो।
ग्रस्य (सं० त्रि०) ग्रस कर्मणि बाहुलकात् यत्। भक्षणीय, खाने लायक।
ग्रह (सं० पु०) गृह्णाति गतिविशेषान् ग्रह-अच्। १ सूर्यादि ज्योतिष्क पदार्थ। हम जो आकाशमें ज्योतिष्क देख रहे हैं, वे सब ही प्रवह वायुपर अवस्थित हैं। प्रवहवायु लगातार घूमती ही रहती है, उसके आधार पर ज्योतिष्कमण्डल भी घूमा करता है। प्राचीन हिन्दूज्योतिर्विद्‌गण इस ज्योतिष्कमण्डलको प्रधानतः दो भागोंमें विभक्त कर गये हैं,—एक श्रेणीको ग्रहमें और दूसरीको नक्षत्रमें। जो ज्योतिष्क हमारे निकटवर्ती हैं और जिनकी गति, उदय, अस्त आदिको प्राचीन ज्योतिर्वेत्ताओंने अपने असाधारण प्रतिभाबलसे उद्भावित यन्त्र और गणित द्वारा स्थिर किया है, उनको ग्रह कहते हैं और जो ज्योतिष्क बहुत दूर हैं तथा जिनकी गति आदिका उस समय निर्णय नहीं हुआ था, वे नक्षत्र कहलाते हैं। इससे मालूम होता है कि गृह्यन्ते यन्त्रादिना यथायथं दृष्टिगोचरो भवन्ति (ग्रह कर्मणि अप्) अर्थात् यन्त्रादिसे जिनका स्वरूपादि मालूम पड़ सके, उसका नाम ग्रह है—ऐसी व्युत्पत्तिके आधार पर कुछ ज्योतिष्कोंको ग्रह नामसे उल्लेख किया गया है। परंतु प्राय किसी ग्रंथमें इसका उल्लेख नहीं मिलता कि, जिससे समझा जाय कि प्राचीन ज्योतिर्वेत्ताओंका क्या अभित है और किस व्युत्पत्तिके आधार पर कौनसी संज्ञा दी गई है।

ग्रह कितने हैं, इस विषयमें भी पहिलेसे मतभेद चला आ रहा है। वराहमिहिरके मतसे सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि ये सात ग्रह हैं। राहु और केतु पातविशेष है, ग्रह नहीं। वराहका मत ग्रहण कर सारदातिलकमें भी सात ग्रहोंका उल्लेख है।

"लोकान् खड्गेन् स्वरान् धातुन् मुनीन् द्वीपान् ग्रहानपि।
समिधः सप्तसञ्जाताः सप्तजिह्वा हविर्भुजः॥" (४,स्दाति० १५०)

सूर्यसिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणि ग्रंथमें खगोलकी सात ग्रहकक्षाएं निरूपित की गयी हैं। राहु और केतुकी कक्षाओंका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता।

खगोल राहु और केतु देखो।

इस देशमें प्रचलित कुछ फलित ज्योतिषोंके मतसे राहु और केतु भी ग्रहोंमें गिने जाते हैं। उनके मतानुसार ग्रह नौ हैं। नीलकण्ठताजकमें इन नौ ग्रहोंके अतिरिक्त मुथहा नामके और एक ग्रहका उल्लेख है, परन्तु सब फलित ज्योतिषोंमें मुथहाका कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। मुथहा देखो।

आर्यभटके मतसे पञ्जर वा ज्योतिष्कमण्डल निश्चल है। उनका किसी प्रकारका हलन-चलन नहीं होता। पृथिवीके भ्रमण करनेसे ऐसा मालूम पड़ता है कि ज्योतिष्क भ्रमण कर रहे हैं।

पाश्चात्य ज्योतिर्वेत्ताओंके वर्तमान सिद्धान्तानुसार नभोमण्डलमें जो अनन्त ज्योतिर्गण विद्यमान हैं, उनके साधारण नाम ये हैं—Star (तारा), सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नक्षत्र इत्यादि इत्यादि। तारागण लक्षणभेदसे Sun

(सूर्य), Planet * (ग्रह), Satellite † (उपग्रह), (पारिपार्श्विक वा चन्द्र) Fixed planet ‡ (नक्षत्र या अचला तारा), Comet (धूमकेतु), Meteor (उल्का), Nebula (नीहारिका) इन श्रेणियोंमें विभक्त है।

जिस सूर्यके उज्ज्वल आलोकके प्रकाश और अप्रकाशसे दिन और रातका भेद मालूम पड़ता है, वह गतिशून्य है और अपने स्थानमें अचल भावसे अवस्थित है। उस सूर्यको पृथिवी और पृथिवीवत् और भी बहुतसे तारा सदैव प्रदक्षिण किया करते हैं। इनमें पहिले § बुध (Mercury) उसके बाद क्रमसे शुक्र (Venus), पृथिवी (Tellus) वा (Earth), मङ्गल (Mars), फिर बहुसंख्यक क्षुद्र तारे और उसके बाद वृहस्पति (Jupiter), शनि (Saturn) इउरानस् (Uranus) (१) और नेपचुन् (Neptune) (२) हैं। इन तारोंको (Planet) (ग्रह) कहते हैं। उक्त मङ्गल और वृहस्पतिके मध्यमें जो २२१ क्षुद्र तारे आविष्कृत हुए हैं, उन्हें क्षुद्र ग्रह या कनिष्ठ ग्रह (Asteroids, planetoids या Minor planets) कहते हैं। जिस तरह पृथिवीको एक चन्द्र प्रदक्षिण करता है उसी प्रकार शनिको आठ, इउरानस् और वृहस्पतिको चार चार तथा नेपचुनको एक चन्द्र प्रदक्षिण करता है। इन चन्द्रमाओंके दूसरे नाम उपग्रह या पारिपार्श्विक ग्रह (Satelites) हैं। ये अपने अपने ग्रहोंकी प्रदक्षिणा देते समय उन ग्रहोंके साथ मानो रज्जुबद्ध हो कर सूर्यकी प्रदक्षिण देते हैं। इसी प्रकार आठ मुख्य और २२१ कनिष्ठ या छोटे ग्रह हैं, अर्थात् २२९ ग्रह हैं और १८ उपग्रह या चन्द्र हैं। सब समेत २४७ ग्रहोपग्रह सूर्यको प्रदक्षिण करते हैं। इन घूमने वालोंको सूर्यका ग्रहदल वा परिवार कहते हैं। इसी प्रकार अनन्ताकाशमें अनन्त सूर्य हैं और उनमें प्रत्येकका एक एक ग्रहदल वा परिवार है। यह शेषोक्त ग्रहदल यद्यपि आज तक भली भांति दृष्टिगोचर नहीं हुआ परन्तु तब भी उनका रहना सम्भव जान पड़ता है। कालान्तरमें दूरवीक्षणयन्त्रकी दृष्टिसीमा शक्ति वृद्धि होने पर उसका आविष्कार हो सकता है। उक्त सूर्यपुञ्ज अचल तारा या नक्षत्र (Fixed Star) के नामसे प्रसिद्ध है और ये ही असंख्य ज्योतिष्करूपसे आकाशमें खचित हैं। हमारे इस सूर्यके ग्रहदलको सम्बन्ध निबद्ध और सूर्यके साथ उसका सम्बन्ध नियमबद्ध इसकी जो एक प्रणाली है, उसे Planetary system (ग्रहक्रम या ग्रहपद्धति) कहते हैं। सूर्य, ग्रहदल और धूमकेतु सबसमष्टिको सौरजगत् (Solar system) कहते हैं। और अयन देखो।

बुध, शुक्र मङ्गल, वृहस्पति, शनि इत्यादिको पुरातन ग्रह कहते हैं, क्यों कि, ये प्रायः सब ही प्राचीन सभ्यजातिके विज्ञात हैं। सर्वसमस्य ग्रहोंको क्रान्तिग्रह (Zodiacal planets) कहते हैं, कारण ये क्रान्तिरेखाके उर्द्धाध ८० अंश व्यास स्थानमें सञ्चालित होते हैं। सिरिज़ (Ceres), पैलेस् (Pallas), जुनो (Juno), भेष्टा (Vesta), आष्ट्रेया (Astraea) आदि कनिष्ठ ग्रहोंको अतिक्रान्त ग्रह (Ultra Zodiacal planets) कहते हैं, क्यों कि ये क्रान्तिकी उक्त सीमाके बहिर्भूत हैं। पृथिवी और सूर्यके बीचके बुध और शुक्रको अपरग्रह (Inferior) तथा पृथ्वीके बाद अर्थात् पृथिवीकी अभिमुखसे दूरस्थ मङ्गल, वृहस्पति, शनि इउरानस् और नेपचुनको परग्रह (Superior planets) कहते हैं और वृहस्पति आदि ग्रहोंको Major planets कहते हैं। पृथिवी तथा उसकी भांतिके बुध और शुक्र ये तीन ग्रह सूर्य और कनिष्ठग्रहोंमें अवस्थित हैं। इनको पार्थिवग्रह (Terrestrial planets) भी कहा जाता है।

सूर्य एक बड़ा अद्भुत विशाल गोलपिण्डाकार पदार्थ

---

* [illegible] ग्रह [illegible]

† [illegible] पारिपार्श्विक [illegible]

‡ [illegible] Fixed Star [illegible] सूर्य और [illegible]

§ बुध और [illegible] (Vulcan) [illegible]

(१) [illegible] (Herschel) [illegible] Georgium [illegible]

(२) [illegible]

है। यह आलोक, उत्ताप और सर्ववीर्यका आधार है। मध्याकर्षण (Gravitation) और प्रक्षेपिका (Tangential) की शक्तिद्वारा ग्रहगण स्व स्व कक्षाच्युत न हो कर, चक्राभास (Elliptical) मार्गसे क्रान्तिके समतल देशगत न होते हुए अपनी अपनी कक्षासे क्रान्तिको दो दो बिन्दूमें भेद कर तिर्यग्‌रूपसे घूमते रहते हैं। इस प्रकार घूमते रहनेसे ग्रह एक प्रदक्षिणामें एक बार सूर्यके पास और एकबार दूरतम स्थानमें जाता रहता है।

पृथिवी जिस प्रकार गोल, ज्योतिशून्य और सूर्यालोकसे आलोकित है तथा अपनी ध्रुवयष्टिके चारों तरफ फिरती रहती हैं, उसी प्रकारकी चाल ग्रहोपग्रहोंकी भी है।

ग्रहकक्षा और ग्रहसम्बन्धी जितने ज्ञातव्य विषय निर्णयार्थ हैं, उनके विषयके सात मौलिक तत्त्व जानने पड़ते हैं और उसको Seven elements of the orbit कहते हैं।

१। कक्षाके गरिष्टव्यासका (Major axis) दैर्घ्य।

२। ग्रहकी केन्द्रापसारिता (Eccentricty) जिससे उसका (कक्षाकी) वास्तविक आकार निर्णीत हो।

३। ग्रह सूर्यके पास रहते समय उस ग्रहको ध्रुवक (Longitude of the perihelion) कहते हैं।

४। क्रान्तिमें कक्षाके तिर्यक् स्थितिका परिमाण (Inclimation of the orbit to the ecliptic).

५। ग्रहके पातका ध्रुवक (Longitude of the ascending mode of a planet)।

६। ग्रहके सूर्यावर्तनका समय (भगण) (Periodic time.)।

७। किसी निर्दिष्ट समयमें ग्रहका ध्रुवक (Longitude of a planet at a given epoch); जिसको Longitude of the epoch भी कहते हैं।

इन सब बातोंसे ग्रह सम्बन्धी सब गणनाएं हो सकती हैं। इस लिए इनकी सारणी (Synoptical table) बनाना ज्योतिर्विदोंका एक प्रधान कर्तव्य है।

यन्त्रवेधसे जो ग्रहतत्त्व आविष्कृत हुए हैं वह केप्लरके निकाले हुए ग्रहगति सम्बन्धीय नियम (जिसको कि Kepler's laws कहते हैं) तथा निउटन् द्वारा आविष्कृत मध्याकर्षणके नियम है।

केप्लरके तीन नियम इस प्रकार है—

१। प्रत्येक ग्रहकी कक्षा एक एक (Ellipse) है, चक्राभास दो (Focal points) है और अन्यतरमें सूर्य अवस्थित है।

२। ग्रहका योजकसूत्र (Radius vector) (अर्थात् सूर्यसे ग्रहलग्नसूत्र) ग्रहकी गति पर समकाल समायतनको रचना करता है।

३। किसी ग्रहके (Time of revolution) भगण कालका वर्ग और सूर्यसे माध्यमिक दूरका (Mean distance) घन, इन दोनोंका जो मान (Ratio) है वह सब ग्रहोंके वैसे मानके समान ही है।

मुख्य मुख्य ग्रहोंमें परस्पर तथा सूर्यके साथ तुलना कर उनके विषयोंमें बहुतसी जानने योग्य बातें नीचे लिखी जाती हैं।

नाम	पिण्ड व्यासकी मील	वर्ष परिमाण	सूर्यसे दूर, नियुत मील	पृथिवीसे दूर, नियुत मील	ध्रुवयष्टिमें चक्रावर्तन	पृथिवीके पिण्डका परिमाण १ होनेसे उसका कितना गुणा हो
सूर्य	८६६४००	....	....	९१.९	६०७ घ, ४८मि	१३१००००
बुध	३०३०	८७.९६९	३६	५६.९	२४ $५\frac{१}{२}$	०,५६
शुक्र	७५००	२२४ दिन	६७.२	२५.७	२३. $२१\frac{१}{२}$	०,९२०
पृथिवी	७९१८	३६५ "	९२.९	....	२३. ५६	
मङ्गल	४२६२	६८७ " पार्थिव वर्षका	१४०	४८.६	२४. $३७\frac{१}{२}$	०,१५२
बृहस्पति	८५००	१२ गुणा	४७८	३९०.४	९ $५५\frac{१}{२}$	१३,९
शनि	७०००	ऐ ३० गुणा	८७२	७९३.१	१०. $१४\frac{१}{२}$	८४९
इउरास	३३०००	ऐ ८५ गुणा	१७५२	१६८९.	९. ३०	५९
नेपचून	३६०००	ऐ १०० गुणा	२७५०	२६९८.४	....	१०२

छोटे छोटे ग्रहोंके सम्बन्धमें उनकी क्षुद्रता प्रयुक्त अनेक तत्त्व तो अब तक प्रकाशित नहीं हुए, परन्तु उनमें वृहत्तम २०० और क्षुद्रतम २० मीलसे ज्यादा न होंगे। बहुतसे लोग अनुमान करते हैं कि, उनमें कोई कोई तो युगके ग्रहके परस्परके आघातसे टूट कर खण्ड खण्ड हो गये हैं। परन्तु यह अनुमानमात्र ही है। ज्योतिर्विदों ने खास खास यन्त्रों और गणनाओंकी सहायतासे सूर्य आदि अनेक ग्रहोपग्रह तथा किस किसी नक्षत्र निर्मेय पदार्थके और उनके भार सम्बन्धी परिचय दिये हैं।

सूर्य आदि शब्दमें विशेष देखो।

२ बालकके अनिष्टकारक स्कन्द आदि रोग। कुमार शब्द देखो। ग्रह भावे अप्। ३ ग्रहण, आदान। ४ अनुग्रह। ५ निर्बन्ध। "अवश्य भवो ऽनवग्रहग्रहा।" (नैषध) ६ रणोद्यम। ७ मलबन्ध। ८ चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण। "एकराव परित्यज्य कुर्यात् पापविग्रह ग्रहे।" (ज्योतिस्तत्त्व) ९ नव संख्या, नौकी संख्या।

ग्रहक (स॰ पु॰) ग्रह कर्त्तरि अच् स्वार्थे कन। ग्राहक, ग्रहण करनेवाला।

ग्रहकक्षा (स॰ स्त्री॰) वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है (Orbit)।

ग्रहकल्लोल (स॰ पु॰) ग्रहेषु-कल्लोल इव। राहु नामक ग्रह।

ग्रहकुष्माण्ड (स॰ पु॰) पुराणानुसार एक प्रकारकी देव योनि।

ग्रहगणित (स॰ क्ली॰) ग्रहाणां तद्गत्यादीनां गणित यत्र बहुव्री॰। ज्योतिषशास्त्रका वह स्कन्ध जिसमें ग्रहोंका विवरण उल्लेख है।

ग्रहगति (स॰ स्त्री॰) ग्रहाणां गतिः, ६ तत्। ग्रहगणका गमन, ग्रहोंका अपनी कक्षा पर घूमना।

ग्रहगन्ध (स॰ पु॰) ग्रहस्य गन्ध, ६-तत्। गन्धक देखो

ग्रहगोचर (स॰ पु॰) ग्रहस्य गोचर ६-तत्। जन्म प्रभृति राशिमें ग्रहगणोंकी गतिविशेष। गोचर देखो।

ग्रहचिन्तक (स॰ पु॰) ग्रहान् चिन्तयति चिन्ति ण्वुल्, ६ तत्। दैवज्ञ, ज्योतिषी।

ग्रहण (स॰ क्ली॰) ग्रह भावे ल्युट्। १ स्वीकार, मञ्जूरी २ ज्ञान, समझ। ३ आदर, इज्जत। गृह्यतेऽनेन ग्रह करणे ल्युट्। ४ हस्त, हाथ। ५ इन्द्रिय। गृह्यतेऽसौ, ग्रह कर्मणि ल्युट्। ६ शब्द, आवाज। ७ इन्द्रिय। ८ उपराग।

राहु द्वारा चन्द्र वा सूर्यके आच्छादन या ग्रासको ग्रहण कहते हैं। भारतमें बहुतसे लोगोंको विश्वास है कि सिंहिका नामकी कोई राक्षसी रही। राहु उसीका पुत्र है। पहले इसके हस्तपदादि सभी अवयव थे। समुद्र मथनके पीछे कौशलसे इन्होंने अमृत पी लिया। उसीसे विष्णुने चक्रसे इसका मस्तक काटा था। अमृतके गुणसे वही कटा हुआ मस्तक चिरदिनको अविकृत रहा। चन्द्र और सूर्यकी बात पर विष्णुने राहुका शिर काटा था। राहुका खण्डितमस्तक पूर्व अपकारको भूल न सका, मुंह फाड करके उन्हें निगल डालनेको आगे बढा। अन्तको कोई उपाय न देख करके ब्रह्माने विधान किया कि अमावस्याविशेषमें सूर्य और पूर्णिमा विशेषमें चन्द्रको वह एक बार खा सकेगा, दूसरे किसी भी समय नहीं। खण्डित राहुमस्तकको यही करना पडा। इसीसे उपयुक्त दिनमें वह चन्द्र और सूर्यको ग्रास करता है। इसीका नाम ग्रहण है। राहु देखो।

भारतवासी ग्रहणके समय शङ्ख घण्टा बजाते हैं। लोग समझते हैं कि शङ्ख घण्टा बजानेसे राहु डर करके शीघ्र उन्हें छोड जावेगा।

गणितवित् पण्डित इसमें कोई बात नहीं मानते। बृहत्सं हितामें लिखा है कि आकाशचारी राहु शरीर धारी, मस्तकाकृति या मण्डलमय होनेसे भगणार्ध पर या ६ राशि दूर रहते ग्रहण पड नहीं सकता। राहुकी गतिकी स्थिरता न रहनेसे गणना द्वारा किस प्रकार उस की उपलब्धि होगी। राहुको मुख पुच्छ आदि आकार-विशिष्ट माननेसे अमावस्या पूर्णिमा भिन्न अन्य समय भी ग्रहण लग सकता है। वह यदि सर्पाकार रहता, तो कभी मुख और कभी पुच्छ प्रभृति दूसरे किसी अवयव द्वारा ग्रहण पडता। अतएव राहु किसी प्रकार आकार-विशिष्ट अथवा अनियतगामी नहीं होता। वह अन्धकार मय छाया विशेष है। (बृहत्सं हिता ५ अ॰)

भास्कराचार्यके मतमें सूर्यप्रभृति सभी ग्रहोंकी एक एक कक्षा होती है। ग्रह नियत गतिसे अपनी अपनी कक्षामें अनवरत भ्रमण करते हैं। सूर्यकी कक्षाके

नीचे चन्द्रकी कक्षा है। अमावस्याके दिन सूर्य और चन्द्र एक ही राशिमें रहते हैं। मेघके सूर्य किरणको आच्छादन करने पर जैसे सूर्य नहीं देख पड़ता, चन्द्र द्वारा आच्छादित सूर्य भी भूमण्डलवासियोंसे छिपा रहता है। चन्द्रमण्डल द्वारा सूर्यके ऐसे ही आच्छादनका नाम सूर्यग्रहण है। सूर्यकी गतिसे चन्द्रकी गति अधिक होती है। अवश्य चन्द्र पश्चिम दिक्से जा करके क्रमशः सूर्यके निकट पहुंच करके उसको ढांप लेता है। इसीसे सूर्यग्रहणमे पश्चिम दिक्को स्पर्श होता है। चन्द्रकी गति अधिक रहनेसे चन्द्रमण्डल शीघ्र ही उसको अतिक्रम करके पूर्व और सरक जाता है। अतएव सूर्य-ग्रहणमें पूर्व दिक्को ही मोक्ष होता है। दृष्टिपरिच्छेदक वा क्षितिज वृत्तसे वाहर कोई पदार्थ देख नहीं पड़ता। एवं चन्द्रमण्डल भी सूर्यमण्डलसे परिमाणमें वहुत छोटा है। खगोल देखो। सूर्य ग्रहणके समय चन्द्र जिनकी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके वीच रह करके सूर्यको आच्छादन करता, उनको सूर्य देख नहीं पड़ता। किन्तु उसी समय चन्द्र जिनकी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके वाहर जाता उनको परिष्कार सूर्य देखनेमें आता है। इसी कारणसे एक देशमें सूर्यग्रहण पड़ते भी अपर देशमें वह नहीं होता। जिस प्रकार मेघमण्डल जिनकी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके अन्तर्वर्ती रहता, उनके लिये सूर्य अदृश्य है और जिनके दृष्टिपरिच्छेदकके वाहर पड़ता, उनको सूर्य देखनेको मिलता है।

अपने मस्तक पर आकाशमण्डलमें उत्तरसे दक्षिण पर्यन्त एक सरल रेखा कल्पना करनेसे उसको मध्यरेखा कह सकते है। कोई ग्रह मध्यरेखाके पूर्व वा पश्चिम जितनी दूर रहता उसको नति और दृष्टिपरिच्छेदकके वाहर जितने अन्तर पर अवस्थिति करता उसको लम्बन कहना पड़ता है। अमावस्याके अन्त समय सूर्य पूर्व वा पश्चिमको झुकता और उसी समय चन्द्र उसको आच्छादन करता है। इसी कारणसे भूमध्यस्थ दर्शक सूर्यको देख नहीं सकते। किन्तु भूपृष्ठस्थ दर्शक दृष्टिपरिच्छेदकके अधोभागमें चन्द्र लम्बित रहनेसे सूर्यको देखा करते है। (सिद्धान्तशिरोमणि गोलाध्याय० ग्रहण २ अ०)

अमावस्या विशेषको पृथिवी, चन्द्र और सूर्य एक सतमें ग्रथित जैसे ऊर्ध्वाधो भावसे अवस्थित करते हैं। पृथिवी और सूर्यके मध्यस्थित चन्द्रमण्डलकी छाया पृथिवीके जिस स्थान पर पड़ती, वहांके लोगोंके सूर्य देखनेमें नहीं आता। चन्द्र उनकी दृष्टिको यवनिकाकी भांति अवरोध कर लेता है। अतएव वह सूर्यको ग्रस्त पाते हैं। जिस स्थान पर चन्द्रमण्डलको छाया नहीं पड़ती, वहां लोग सूर्यको देखा करते हैं।

किसी वर्तुलाकार पदार्थका एक भाग सूर्यकिरणसे उद्भासित होने पर उसके विपरीत भागमें सूच्याकार छाया पड़ती है। पृथिवी गोलाकार और शून्यमार्गमें अवस्थित है। राशिचक्रस्थित ग्रह उसीकी गतिके अनुसार उसीके बीचमें घूमते हैं। खगोल और भूगोल देखो। जिस समय ज्योतिर्मय सूर्य हमारी दृष्टिपरिच्छेदक रेखाके मध्य रह करके पृथिवीका उपरि भाग आलोकित करता, हमारे दृष्टिपरिच्छेदकके वाहर गगनमण्डलके किसी स्थान पर पृथिवीकी सूच्याकार छाया पड़ती है। ऐसे ही सूर्यके हमारे दृष्टिपरिच्छेदकसे वाहर रह करके भूमण्डलका तलपृष्ठ आलोकित करने पर हमारे दृष्टिपरिच्छेदकके मध्य किसी गगनमें वह छाया पतित होती है। पृथिवी और सूर्य देखो।

सूर्यकी गतिके अनुसार पृथिवीकी छाया भी सर्वदा पूर्वाभिमुख चला करती है। इसीसे उसकी गति सूर्यके समान है। पृथिवीच्छाया अपेक्षा शीघ्रगामी चन्द्र स्वीय गतिके अनुसार पृथिवीकी छायामें प्रवेश करने पर उससे वह म्लान पड़ जाता है। इसीका नाम चन्द्रग्रहण है। (वासनाभाष्य गोलाध्याय, ग्रहणवासना ४ श्लोक) पूर्णिमाके समय पृथिवी, चन्द्र और सूर्यके मध्य अवस्थान करती है। वह सूर्य जिस ओर रहता, चन्द्र उसके विपरीत भागमें पड़ता अर्थात् पूर्णिमाको सूर्यसे ६ राशि अन्तर पर चन्द्र अवस्थान करता है। चन्द्रका जो भाग जितनी देर तक पृथिवीकी छायाके बीच रहता, उसमें उतनी ही देर तक सूर्य किरण नहीं पड़ता, सुतरां वह अदृश्य रहता है। चन्द्र शीघ्रगामी होनेसे पूर्व दिक्से जा करके क्रमशः पृथिवीकी छायामें प्रवेश करता है। इसीसे चन्द्रग्रहणमें पूर्व दिकको स्पर्श होता है। फिर चन्द्र शीघ्रगतिमें क्रमशः पूर्वदिकको पृथिवीको छायासे निकल जाने पर पश्चिममें मोक्ष पाता

है। चन्द्रग्रहणमें छादक (पृथिवीच्छाया) और छाद्य (चन्द्र) एक राशिको एक ही कलामें रहनेसे लम्बन वा नति नहीं होती। इसीसे सभी स्थानोंके लोग समान भावसे चन्द्रग्रहण देख सकते हैं। (गोलाध्याय ग्रहणवासना वासनाभाष्य) ग्रहणके समय अर्धग्रस्त चन्द्रका विषाण वा कोटिद्वयकी कुण्ठता और अपेक्षाकृत बहुतसे समय चन्द्रग्रहणकी स्थिति होनेसे सूर्यच्छादकसे चन्द्रका छादक बृहत् होता है। सूर्यग्रहणमें अर्धग्रस्त सूर्यका विषाण वा कोटिद्वयकी तीक्ष्णता और ग्रहण स्थिति अल्प काल होनेसे सूर्यच्छादक अपेक्षाकृत छोटा पड़ता है। (गोलाध्याय ग्रहणवासना)

वराहमिहिरके मतसे चन्द्रग्रहणमें चन्द्र पृथिवीच्छाया और सूर्यग्रहणमें सूर्यमण्डलमें प्रवेश करता है। इसी कारण पश्चिम दिक्से चन्द्रग्रहण और पूर्व दिक्से सूर्य ग्रहण नहीं लगता। जिस प्रकार वृक्षकी छाया सूर्यके आलोकमें क्रमसे एक ओरको बढ़ती, वैसे ही सूर्यके आवरणसे पृथिवी छाया भी दिन दिन दीर्घ पड़ती है। जब सूर्यके सप्तम राशिमें चन्द्र अवस्थान करता और सूर्यसे उत्तर वा दक्षिणको अधिक नहीं चलता, तब वह पूर्वाभिमुख जा कर पृथिवीकी छायामें घुसता है। सूर्यग्रहणके समय सूर्यसे अधः स्थित चन्द्र पश्चिमदिक्से आ कर मेघकी भांति उसको ढांक लेता है। इसीसे सूर्यग्रहण सब देशोंमें बराबर नहीं पड़ता। यह शास्त्रका सद्भावमात्र लगता कि राहु चन्द्र वा सूर्यको ग्रास करता है। (बृहत्संहिता ५।८०)

अब बात यह है कि ज्योतिषकोंका वह मत अर्थात् राहु नामक असुरका चन्द्र वा सूर्यको ग्रास न करना माननेसे प्राचीन शास्त्रोंके साथ विरोध होता है। वेद तथा पुराण प्रभृति सभी शास्त्रोंमें लिखा है कि राहु, सूर्य और चन्द्रको ग्रास करता है—

"स्वर्भानुर्ह वा आसुरः सूर्यं तमसा विव्याध।" (माध्यन्दिनी श्रुति)

"सर्वं गङ्गासमं तीर्थं सर्वे ब्रह्मसमा द्विजाः।

सर्वं भूमिसमं दानं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः॥" (पुराण)

यहां विरोध मिटानेके लिये शङ्कराचार्य लिखते हैं कि चन्द्रग्रहणके समय राहु पृथिवीकी छायामें घुसके चन्द्रको और सूर्यग्रहणके समय चन्द्रमण्डलमें प्रवेश करके सूर्यको आच्छादन करता है। ब्रह्माके वरसे तमोमय राहु ऐसे ही सूर्य और चन्द्रको ढांप लेता है। (गोलाध्याय) प्राचीन ज्योतिर्विद् श्रीपतिने भी इसी मतको माना है। (श्रीपति) बृहत् संहिताके मतमें राहु नामक किसी असुरको ब्रह्माने वर दिया है कि ग्रहणके समय लोग जो होम करेंगे, उसके अंशसे तुम सन्तुष्ट होगे। इसी कारण ग्रहणके समय राहुका सान्निध्य होनेसे यह कल्पना की जाती है कि वह चन्द्र वा सूर्यको ग्रास करता है। (बृहत्संहिता ५।८०) वास्तविक पक्षमें यह किसी प्राचीन वैज्ञानिक मतसे सिद्ध नहीं होता, किसी जीव वा खण्डित मस्तकके चन्द्र वा सूर्यको खा जानेका नाम ग्रहण है। (राहु देखो।) सूर्य और चन्द्रमण्डलका व्यास, पृथिवीकी छायाका परिमाण तथा इनकी गति प्रभृति अच्छी तरह न समझनेसे ग्रहणका कारण और सम्बन्ध तथा स्थिति, मोक्ष एवं स्पर्श क्यों कर मालूम पड़ेगा। सूर्यसिद्धान्तमें ऐसा लिखित हुआ है—

जो सूर्यमण्डल हमको देख पड़ता उसका व्यास परिमाण ६५०० योजन और चन्द्रका व्यास ४८० योजन है। सूर्य और चन्द्रके व्यासको उनकी स्पष्ट गतिसे गुण करके मध्यगति द्वारा भाग करनेसे जो निकलेगा, वही यथाक्रम सूर्य तथा चन्द्रका स्पष्ट व्यास ठहरेगा। (सूर्यसिद्धान्त ४) हमें आकाशमण्डलमें चन्द्रको छोड़ करके जो ग्रहबिम्ब देख पड़ते, अतिशय दूरस्थ होनेसे प्रकृत कक्षामें कोई नहीं मिलते। सभी ग्रह अधःस्थ चन्द्रकी कक्षामें दृष्ट होते हैं। इसीसे चन्द्रकी कक्षामें सूर्यका व्यासपरिमाण स्थिर किया जाता है। वास्तविक पक्ष पर अपनी कक्षामें केवल चन्द्र ही घूमता है। सूर्य वा दूसरे ग्रहका चन्द्रकक्षाके साथ योग नहीं होता। (सूर्यसिद्धान्त ४।२ श्लो रङ्गनाथ) पूर्वप्रदर्शित सूर्यमण्डलके स्पष्ट व्यासको सूर्यभगण द्वारा गुण करके चन्द्रभगणसे बांटने पर जो लब्ध होता, चन्द्रकी कक्षामें सूर्यका व्यासपरिमाण ठहरता है। चन्द्रके व्यास (४८० योजन) और चन्द्र कक्षास्थ सूर्य व्यासको १५से बांटने पर जो लब्ध होता, वही चन्द्र सूर्यके बिम्बव्यासको परिमाण कला है। (सूर्यसिद्धान्त ४।६)

भूगोलके परिमाणसे सूर्यमण्डलका परिमाण अधिक है। इसी कारण सूर्यकी विपरीत दिक्को सूचोकी

भांति पृथिवीकी छाया क्रमसे बढ़ करके चंद्रमण्डलको अतिक्रम करती है। इसके परिमाणको स्थिर करनेका उपाय यह है—चंद्रकी स्पष्ट गतिको सूव्यास (१५८१ योजन) द्वारा गुण करके चंद्रकी मध्यगति (०।०।७६०। ३४।५२) से बांटने पर जो लब्ध होगा, वही सूची अर्थात् पृथिवीच्छायाका परिमाण माना जावेगा। (सूर्यसिद्धांत ४।४)

इसी पृथिवीच्छायाका एक भाग घोर अन्धकारमय है। प्राचीन गणिताचार्य उसको तम नामसे उल्लेख करते हैं। अपर भागमें आलोकका थोड़ा-बहुत सद्भाव रहनेसे उतना अन्धकार नहीं रहता।

पृथिवी व्यास और सूर्यका स्पष्ट व्यास दोनोंके अन्तर-को चंद्रविम्बके मध्यव्यास (४८०) द्वारा गुण करके सूर्य-के मध्यव्यास (६५००) से बांटने पर जो लब्ध होगा, तम वा भूच्छायाके अन्धकारमय अंशका परिमाण योजन निकलेगा। (सूर्यसिद्धांत ४।५) इसको १५ से भाग करने पर भूच्छायाका कलापरिमाण आता है।

अमावस्याको सूर्यग्रहण और पूर्णिमाको चन्द्रग्रहण लगता है। परन्तु सभी अमावस्याओं वा पूर्णिमाओंको ग्रहण नहीं पड़ता। इसीसे सूर्यसिद्धान्त प्रभृतिमें यह जाननेका सहज उपाय लिखा है-किस दिनको ग्रहणको सम्भावना हो सकती है। ग्रहण गणना करनेको सबसे पहले देखना होगा, उस दिन ग्रहण लग सकता है या नहीं। सम्भव होनेसे गणना किया करते हैं।

सूर्यके विपरीत भागमें पृथिवीकी छाया पड़ती है। पृथिवीकी यह छाया सूर्यसे ६ राशिके अन्तर पर रहती है। चन्द्रपात (राहु) और पृथिवीच्छाया कुछ अंश न्यूनाधिक वा समान रहनेसे चन्द्रग्रहण और सूर्यके साथ समान वा कुछ अंश न्यूनाधिक होनेसे सूर्यग्रहण पड़ता है। (सूर्यसिद्धांत ४।६) अमावस्याके समय सूर्यस्फुटके साथ पात स्फुटके १० अंश न्यूनाधिक होनेसे सूर्य-ग्रहण और पूर्णिमाको चन्द्रस्फुटके सहित पात स्फुटका १३ अंश अन्तर आनेसे चंद्रग्रहण लग सकता है। (ज्योति०)

सूर्यसिद्धान्तके टीकाकार रङ्गनाथने कहा है कि चंद्रग्रहणमें १२ अंश और सूर्यग्रहणमें ७ अंश न्यून वा अधिक होनेसे भी ग्रहण पड़ सकता है। (सूर्यसिद्धांत ४।६ टी० रङ्गनाथ) आधुनिक अङ्गरेज ज्योतिर्विदोंके मतमें पात स्थानसे १७ अंश २१ कला दूर सूर्य और ११ अंश ३४ कला दूर चन्द्र रहनेसे ग्रहण होता है। दूसरे ज्योतिष-कोंके मतमें रवि जिस नक्षत्र के जिस पादमें अवस्थिति करता, उसी नक्षत्रके उसी पादके पूर्वापर त्रिपादके मध्य राहु वा केतु आनेसे सूर्यग्रहण और चन्द्र जिस नक्षत्रके जिस पादमें अवस्थित होता, उसी नक्षत्रके उसी पादके चतुष्पादके मध्य राहु वा केतु पड़नेसे चन्द्रग्रहणको सम्भा-वना होती है। (ज्योति०)

मतान्तरसे जिस नक्षत्रमें सूर्य रहता, उससे गणनाके चतुर्दश नक्षत्रमें चन्द्र आनेसे चद्रग्रहण और कृष्णपक्षकी तृतीयाको माम नक्षत्र पड़नेसे उसकी अपेक्षा गणनामें त्रयोदश नक्षत्र जिस दिन पड़ेगा, सूर्यग्रहण लगेगा। (ज्योति०)

ग्रहणगणना—सुमेरुसे लङ्का पर्यन्त कल्पित सरल रेखाका नाम मध्यरेखा है। गणितके अनुसार ग्रहणका जो समय ठहरता, मध्यरेखाके पूर्वभागमें उस समयसे पहले और उसके पश्चाद् भागमें उसी समयसे पीछे ग्रहण देख पड़ता है। (ज्योति०)

ग्रहणगणना करनेमें जिस दिनको उसको सम्भावना आती, उस दिनकी पूर्णिमा वा अमावस्याके अन्तिम समय-का दिनवृन्द, रवि चंद्रका तात्कालिक स्फुट और गति निरूपण की जाती है। फिर दिनोंको २०से भाग करने पर जो लब्ध होता, पात वा राहु स्फुटका अंशादि कह-लाता है। दिनोंको दोबारा ६से गुणा करके १८८से बांटने पर जो आवेगा, वह पूर्व प्राप्त अंशादिमें मिलाया जावेगा। दूसरे किसी स्थान पर लब्धपिण्डको १५०से भाग करके जो लब्ध होता, राहु स्फुट अंशादिकी विक-लाओंमें मिलाना पड़ता है। स्फुटके अंशोंको ३०से बांट करके लब्ध अङ्कको पुनर्वार १२से भाग करने पर जो अवशिष्ट रहता, राश्यादि ठहरता है। इसी राश्यादिको ३।३।१२।५२ क्षेपसे निकाल डालने पर जो अवशिष्ट बचता, राहुका स्फुट पड़ता है। इसका अपर नाम स्फुटपात है। (ज्योति०)

चन्द्रग्रहणगणना—पूर्णिमाके अन्तिम समयका राश्यादि स्फुटपात जो आवेगा, उसको तत्कालके रविस्फुटके राश्यादिसे घटाने पर बचनेवाला अंशादि ०से गुण

करनेके पीछे कलाके साथ मिलानेसे आनेवाला अङ्क ४१से गुण करके गुणफलको दो स्थानोंमें रखना चाहिए। फिर उसके एक स्थानोय अङ्कको १६से बाटते हैं। इससे लब्ध होनेवाले अङ्कको द्वितीय स्थानके अङ्कसे घटाने पर जो बचता, उसको एक स्थान पर रखना पड़ता है। तत् सामयिक रविगति कलादिको १३४से गुण करने पर जो फल मिलता उसका पूर्व अङ्कके साथ योग लगता है। इस युक्ताङ्कसे १८६५ कम करने पर जो अवशिष्ट आवेगा वही अङ्क उस कालकी चन्द्रगति द्वारा बाँटा जावेगा। इससे जो बचता, उसको ४३।२०से घटाने पर निकल नेवाला अङ्क ग्रास ठहरता है। लब्धाङ्क ४३।२०से अधिक होने पर ग्रहण नहीं पड़ता। इस ग्रासाङ्कको दो स्थानोंमें रखना चाहिये। फिर उनमें एकको १२से गुण करते और दूसरेमें १० जोड़ देते हैं। इसके बाद १२ और गुणित अङ्कको दस युक्त अङ्कद्वारा भाग करने पर जो लब्ध होता वही इस दिनको चन्द्रग्रहणको स्थितिका दण्डादि ठहरता है। (ज्योति०)

प्रकारान्तरसे चन्द्रग्रहणको स्थितिके दण्डादिका जाननेका उपाय—पूर्णिमाके अन्तिम समयमें स्फुटपात तथा रविस्फुटका अन्तर जितने अंश हो, उसको कला बना करके दो स्थानोंमें रख देना चाहिये। फिर उनमें एकको ८से भाग करने पर जो लब्ध आता, वह भी दो स्थानों पर रखा जाता है। इसमें एकको क तथा दूसरेको ख -चिह्नित करते हैं। क चिह्नित अङ्कको ५५से बांटने पर जो निकलेगा, उसमें ख चिह्नित अङ्क मिलाना पड़ेगा। इस युक्ताङ्कको पूर्वस्थापित कलासे घटाना चाहिये। जो अवशिष्ट रहेगा, उसके साथ इस समयको रविगतिको ३से गुण करके जोड़ना पड़ेगा। इस युक्ताङ्कमें ४० घटाने पर जो बचता, उसको तत्कालको चन्द्र गतिसे हीन करने पर शेष रहनेवाला अङ्क ६से गुण करना पड़ता है। इसका जो फल आवेगा, वही ग्रास कहलावेगा। ग्रासको दो स्थानों पर रख करके ग और घ चिह्न लगाया जाता है। ग चिह्नित अङ्कको १२से गुण घ चिह्नित अङ्कमें १८३ योग करना चाहिये। योग फल द्वारा गुणफलको बाटने पर जो लब्ध होगा, उस दिनके चन्द्रग्रहणका स्थितिदण्डादि ठहरेगा। (ज्योति०)

पूर्णिमाके अन्तिम समयके राश्यादि चन्द्रस्फुटसे राश्यादि स्फुटपातको हीन करने पर जो राश्यादि आवेगा उसमें २ मिलाया जावेगा। यदि युक्ताङ्क ६से अधिक होता, तो ६ छोड़ करके अवशिष्ट अङ्क लिया जाता है। फिर देखना चाहिये, वह अङ्क ३से अधिक है या नहीं। यदि ३से अधिक हो, तो उससे ३ निकाल करके अव शिष्टको कला बना डालना चाहिये। फिर उक्त अङ्क ३से न्यून रहने पर उसको ३से घटा करके बचनेवाले अङ्कको ही कलाएं बनायी जाती हैं। इसके बाद उक्त कलाओंके ७से गुण करते हैं। इसमें आनेवाले अङ्कको ८०से भाग करने पर जो लब्ध आता, वही शर कहलाता है।

चन्द्रको साधित गतिको १७से गुण करके ४२० द्वारा बाटने पर जो लब्ध होता उसीका नाम चन्द्रमान है। चन्द्रमानको १०से गुण करके ३से बाटने पर जो लब्ध आता, एक स्थान पर रखा जाता है। रविकी गतिको ६०से गुण करने पर जो मिलता, उससे ८७३ निकालना पड़ता है। फिर अवशिष्टको १११से भाग करने पर जो फल आता, वह पूर्वस्थापित अङ्कसे घटाया जाता है। इसके अवशिष्ट रहनेवालेका नाम राहुमान है।

लब्धाङ्कसे शरका अङ्क अधिक आनेसे ग्रहण नहीं पड़ता। ग्रासाङ्कको जो सख्या होगी, उसीके अनुसार स्थित्यर्धखण्डा और शुद्धिफल ले करके एक स्थानमें रखना चाहिये। फिर तत्कालके चन्द्रको गतिको ८६०से घटा करके जो अवशिष्ट आता, शुद्धिफल द्वारा गुण किया जाता है। इस गुणफलको १६०से बाटने पर जो लब्ध होगा, उसको स्थित्यर्धखण्डाके अङ्कमें मिलानेसे शुद्ध स्थित्यर्ध दण्डादि मिलेगा।

पूर्णिमाके स्थिति दण्डको दो स्थानोंमें रख करके उसमें एकसे शुद्धस्थित्यर्ध दण्डादि घटाने पर आनेवाला अङ्क ही चन्द्रग्रहणका स्पर्श दण्डादि होता है। दूसरेमें शुद्धस्थित्यर्ध दण्डादि मिलानेसे चन्द्रग्रहणका मोक्ष दण्डादि निकलता है।

चन्द्रस्फुट पातस्फुटमें घटानेसे यदि हीनाङ्क राशिसे न्यून आता, तो ईशान कोणमें स्पर्श तथा वायुकोणमें मोक्ष देखा जाता है। हीनाङ्क ६ राशियोंसे अधिक पड़ने पर अग्निकोणमें स्पर्श तथा नैऋत कोणमें मोक्ष होता

स्थित्यर्ध खण्डा

ग्रास	स्थित्यर्ध	शुद्धिपल
०।१०	०।२१	१
०।२०	०।२९	२
०।३०	०।३६	३
०।४०	०।४१	३
०।५०	०।४६	४
१।०	०।५०	४
१।३०	१।२	५
२।०	१।११	६
२।३०	१।२०	६
३।०	१।२७	६
४।०	१।४०	७
५।०	१।५१	८
६।०	२।१	९
७।०	२।११	१०
८।०	२।१९	१०
९।०	२।२७	१०
१२।०	२।४७	१२
१५।०	३।४	१३
१६।०	३।९	१३
२०।०	३।२८	१२
२४।०	३।४४	११
२८।०	३।५७	१०
३२।०	४।८	९
३६।०	४।१८	७
४०।०	४।२६	५
४४।०	४।३२	३
४८।०	४।३७	३
५२।०	४।४१	५
५६।०	४।४३	८
६०।०	४।४५	८
६४।०	४।४७	९

सूर्यग्रहण—सूर्य ग्रहण गणना करनेके दिन पहले इसी दिनका अब्दपिण्ड, दिनवृन्द, स्फुटपात, अयनांश॰ अमावस्याके अन्तिम दण्डका तात्कालिक रवि तथा चन्द्रका स्फुटपात और गति प्रभृति पूर्व प्रक्रियाके अनुसार गिन करके स्थिर करना चाहिये। सूर्य ग्रहण सम्भावनाको अमावस्याके दिन इस दिनकी अमावस्याके स्थिति दण्डादिसे इस दिवसीय दिनमानका अर्ध अन्तर करने पर जो अवशिष्ट आता, नतदण्ड कहलाता है। नतदण्ड दो प्रकारका होता है—प्राङ्नत और पश्चान्नत। इस दिवसकी अमावस्याका स्थितिदण्ड इसी दिनार्धमें न्यून होने पर प्राङ्नत और अधिक रहनेसे पश्चान्नत कहा जाता है। (ज्योति॰)

ग्रहण गणना करनेके दिवस दिवसीय अयनांशके साथ रविस्फुट योग करनेसे जो राश्यादि निकलता, क चिह्नित खण्डाचक्रमें रखना पड़ता है। इसी राशिमें नतदण्डकी आनेवाली खण्डा और अनुखण्डाको परस्पर अंतर करते हैं। इससे होनेवाले भोग्याङ्क द्वारा इसी नत दण्डके शेषाङ्कपलको पूरण करके ६०से भाग करने पर जो लब्ध आता, इसी खण्डामें मिला दिया जाता है। इसके फलका ही नाम लम्बन है।

अयनांशयुक्त तात्कालिक रविस्फुटके राशिसंख्या अनुसार लङ्कोदयखण्डा ले करके इसी खण्डाके भोग्य द्वारा रविस्फुटके अंशादिको पूरण करके एक जातीय बनाते हैं। इससे मिलनेवाले अङ्कको तीससे बांटने पर जो लब्ध आता, इसी लङ्कोदयखण्डामें मिलाया जाता है। फिर पूर्वसाधित लम्बनके साथ नतदण्ड योग करते पर आनेवाले इसी युक्ताङ्कसे हीन करते हैं। किन्तु अमावस्याका स्थितिदण्ड उस दिनके दो प्रहर पीछे तक रहने पर युक्ताङ्कमें यही अङ्क मिलाना पड़ता है। इसी प्रकार जोड़ने या घटानेसे आनेवाले अङ्कसे उसी राशिकी संख्यामें लङ्कोदयखण्डाका अङ्क घटाना सम्भव होने पर वही खण्डा इस युक्त किम्वा हीनाङ्कसे निकाल डालते हैं। लब्ध अवशिष्टको पांचसे गुण करने पर जो लब्ध होता, उसको एक स्थानमें रख देना चाहिये। फिर जिस राशिको खण्डा वियोग की गयी है, उसी राशिको भोग्यखण्डा द्वारा इस पञ्चगुणित अङ्कको बांटते हैं। इसका लब्धाङ्क एक स्थानमें रखा जाता है। फिर जितनी संख्यक राशि की खण्डा हीन की गयी है, उसी संख्यक अङ्कको पांचसे पूरण करके पूर्वस्थापित अङ्कमें योग करते हैं। इसी

योगफलका नाम मध्योदय वा दशमोदय है।

मध्योदयके अङ्कमें १५ मिलाना चाहिये। युताङ्क ३० से अधिक होने पर ६०में घटाया जाता है। फिर यदि यह युताङ्क ६० से अधिक हो, तो उसमें ६०' निकाल करके शेष अङ्क ग्रहण करना चाहिये। यदि युताङ्क ३० से अधिक न आवे तो उसकी प्रथम अङ्क सङ्ख्या क्रान्ति खण्डा और अनुखण्डा ले करके उभयको अन्तर करते हैं इसीका नाम भोग्य है। भोग्यद्वारा मध्योदयको द्वितीय और तृतीय सङ्ख्याका अङ्कपूरण करके एक जातीय बनाने पर आनेवाले अङ्कको ६० से भाग देकरके खण्डामें मिलाने पर जो आता, क्रान्ति कहलाता है। इसे क्रान्ति को अक्षाङ्क ७८८।३२से अन्तर करते हैं। उसमें जो निकलता, १००से एकवार मात्र बाटना पड़ता है। इससे लब्ध आता, उसी सङ्ख्याको शरखण्डा और अनुखण्डा को ले करके परस्पर घटा दिया जाता है। इससे होने वाले भोग्य द्वारा जिसकी शरखण्डा अनुखण्डाको लेते, गुण कर देते हैं। फिर १००से यथारीति भाग देने पर शर निकलता है।

अयनांशयुक्त रविस्फुटके राश्यादिको अंशादि बना करके ६से भाग देते हैं। इसमें जो लब्ध आता, पूर्व-साधित मध्योदयके साथ घटाने पर स्फुटनत कहलाता है। स्फुटनत जो होगा, वह यदि ३०से अधिक हो तो ६०से निकाल डालना चाहिये और यदि १५से अधिक पड़े, तो ३०से घटाने पर जो आवेगा, उसकी प्रथमाङ्क संख्या ज्याखण्डा तथा अनुखण्डा परस्पर अन्तर करने पर जो होगा, उससे स्फुटनतके शेषाङ्कको गुण करके ६०से भाग दे लब्धाङ्क ज्याखण्डमें मिलने पर जो आवेगा, उसीका नाम ज्या है। इसी ज्याक अङ्कको शराङ्क द्वारा भाग करने पर जो लब्ध आता, स्थिरलम्बन कहलाता है।

लम्बन और स्थिर लम्बन दोनोंके अन्तरको एक स्थानमें रखना चाहिये। पश्चात्कालको यदि पूर्व लम्बनसे स्थिर लम्बन न्यून आता, तो मध्योदयके स्थापित अङ्कमें घटाया और अधिक होनेसे मिलाया जाता है। प्राड्नतकालको पूर्व लम्बनसे स्थिर लम्बन न्यून होनेपर मध्योदयमें योग और अधिक रहनेसे हीन करते हैं। इसी प्रक्रियासे निकलनेवाले अङ्कका नाम स्फुटदशमोदय है।

तात्कालिक दशमोदयमें १५ मिलाने पर यदि ३०से अधिक आता, तो वह ६०से घटाया जाता है। अवशिष्ट प्रथम अङ्क सङ्ख्यासे क्रान्तिखण्डा और उसकी अनुखण्डा ले करके परस्पर अन्तर करने पर जो भोग्य आता, तद्वारा उसके द्वितीय तथा तृतीय अङ्कको पूरण करके एक जातीय बनाया जाता है। इस अङ्कको ६०से भाग दे खण्डामें मिलाने पर जो अङ्क निकलता, उसके साथ १५०० योग करके ७७८।३२ अक्षाङ्कको वियोग करते हैं। अवशिष्टको एक बार मात्र १००से बाटना चाहिये। भागफल सङ्ख्याको नतखण्डा और अनुखण्डा परस्पर घटानेसे भोग्य निकलता है। इसी भोग्य द्वारा गतहस्त शेषाङ्कको गुण करके १००से भाग देना चाहिये। फिर यही भागफल नतखण्डामें मिलाने पर नत बनता है।

स्थिरलम्बको प्राड्नत समय अमावस्याके स्थिति-दण्डमें घटाने और पश्चात्नत समय मिलाने पर स्फुट दर्श दण्ड आता है। (आदि०)

तत्कालको चन्द्रगतिको स्थिर लम्बन द्वारा गुण करके ६०से बाटने पर भागफल कलादि होगा। इसी कलादिको तात्कालिक रविस्फुटसे हीन पश्चान्नतकालमें योग करनेसे लो अर्थात् स्फुटदर्शदण्डका चन्द्रस्फुट निकलता है।

स्फुटदर्शदण्ड समयके चन्द्रस्फुटसे ३ राशि निकाल डालने पर यदि ३ राशिसे न्यून आता तो इसे चन्द्र-स्फुटके राशिमें १२ मिला ३ राशि घटानेसे जो होता, उससे इसी दिवसके स्फुटपातको वियोग किया जाता है। यदि यही अङ्क ६ राशिसे अधिक निकले, तो उसे १२ राशिसे हीन करे। इससे आनेवाले राश्यादिको कला बना ८से गुण करना चाहिये। गुणिताङ्कसे १५३८० घटाने पर जो शेष रहता, उसको १०३से बाटना पड़ता है। इसी भागफलका नाम शर है।

शरको पूर्वसाधित नतिके साथ अन्तर करने पर जो अवशिष्ट आता, स्फुटशर कहलाता है।

तात्कालिक रविस्फुटगतिको ५७से गुण करके १०४ से बांटने पर रविमान निकलता है।

चन्द्रमान और रविमानके योगार्धसे स्फुटशर घटाने पर ग्रास आता है। भागफलसे स्फुटशर अधिक होने पर ग्रहण नहीं पड़ता। ग्रासाङ्क सङ्ख्यासे सूर्यग्रहणकी

स्थित्यर्ध खण्डामें जो होगा, एक स्थानमें रखना पड़ेगा। फिर रविमानको ६०से गुण करना चाहिये। गुणफल १८६९से हीन करने पर जो अवशिष्ट आवेगा, वह ग्रासाङ्क संख्याके रविशुद्धिपल द्वारा पूरण किया जाने पर २५१से भाग करके स्थापन किया जावेगा। फिर चंद्रमानको ६० से पूरण करके २०८९में घटाने पर जो अवशिष्ट रहता, उसको इसी ग्रासाङ्क संख्याके चंद्रशुद्धपल द्वारा पूरण करके ३२८से बांटना पड़ता है। फिर यह भागफल पूर्व स्थापित रविके भागफलमें जोड़ करके इसी पूर्वस्थापित स्थित्यर्धखण्डाके साथ मिलानेसे स्थित्यर्ध आ जाता है।

पूर्व स्थापित स्फुटदर्श खण्ड पलको दो स्थानोंमें रखना चाहिये। फिर उसमें एकसे स्थित्यर्ध पलको हीन करने पर सूर्य ग्रहणका स्पर्श दण्ड होगा। दूसरेके साथ योग करने पर इसी सूर्य ग्रहणका मोक्षदण्ड निकलता है।

प्राक् और पश्चान्नतदण्ड संख्यामें लम्बन लगानेकी खण्डा।

० राशिप्राङ्नत	१ राशिप्राङ्०	२ राशिप्राङ्०	३ राशिप्राङ्०
०।४०	०।४५	०।४२	०।३८
१।१३	१।२४	१।२२	१।१४
१।३९	१।५६	१।५७	१।४७
१।५६	२।१८	२।२६	२।१९
२।१०	२।३४	२।४९	२।४६
२।२०	२।४६	३।५	३।७
२।२८	२।५३	३।१५	३।२४
२।३४	२।५६	३।२०	३।३५
२।३८	२।५७	३।२२	३।४१
२।४०	२।५६	३।२०	३।४२
२।४१	२।५४	३।१७	३।४१
२।४२	२।५०	३।१५	३।३६
२।४२	२।४६	३।४	३।३०
२।४१	२।४१	२।५५	३।५१
२।३९	२।३५	२।४६	३।११
२।३७	२।२९	२।३७	३।०
२।३३	२।२३	२।२७	२।४८
२।२७	२।१७	२।१६	२।३६
१८	१८	१८	१८

४ रा० प्रा०	५ रा० प्रा०	६ रा० प्रा०	७ रा० प्रा०
०।३८	०।४२	०।४८	०।३८
१।१४	१।२३	१।२८	१।१९
१।४७	२।०	२।८	१।५७
२।१७	२।२८	२।३९	२।३३
२।४३	२।५३	३।५	३।२
३।५	३।१३	३।२५	३।२५
३।२६	३।२९	३।३९	३।३९
३।३६	३।४१	३।४८	३।५१
३।४७	३।५०	३।५५	३।५६
३।५३	३।५६	३।५९	३।५९
३।५५	३।५९	४।०	३।५६
३।५४	३।५९	३।५९	३।५६
३।५०	३।५७	३।५६	३।५२
३।४४	३।५३	३।५१	३।४६
३।३६	३।४६	३।४४	३।३८
३।२५	३।३७	३।३६	३।२६
३।१४	३।२७	३।२७	३।२६
३।२	३।१५	३।१७	३।२८
१८	१८	१८	१८

८ रा०प्रा०	९ रा०प्रा०	१० रा०प्रा०	११ रा०प्रा०
०।२८	०।२२	०।२३	०।३०
०।५७	०।४२	०।४३	०।५५
१।२७	१।५	१।२	१।१६
२।०	१।२[illegible]	१।११	१।३४
२।३२	१।५२	१।३६	१।४८
३।१४	२।१७	१।५५	२।०
३।२२	२।३६	२।१०	२।११
३।३८	२।५६	२।२५	२।२१
३।४८	३।१३	२।४०	२।१६
३।५४	३।३१	२।५४	२।३[illegible]
३।५५	३।३८	३।५	२ ४४
३।५३	३।४२	३।१३	२।४६
३।४९	३।४३	३।१९	२।५३
३।४३	३।३६	३।२१	२।५१
३।३४	३।३४	३।२२	२।५७
३।२५	३।२६	३।१८	२।५६
३।१५	३।१६	३।१२	२।५४
१७	१७	१७	१७

० राशि पला०	१ राशि पला०	२ राशि पला०	३ राशि पला
०।४४	०।४२	०।३८	०।३८
१।२८	१।१३	१।१४	१।१४
२।१८	२।२०	१।४७	१।४७
२।३९	२।२८	२।१७	२।१८
३।५	२।५३	२।४२	२।४६
३।७५	३।१३	३।०	३।७
३।३६	३।२६	३।२०	३।२४
३।४८	३।४१	३।३६	३।३५
३।५०	३।५०	३।४७	३।४१
३।५६	३।५६	३।५३	३।४२
४।०	३।५६	३।५५	३।४१
३।५६	३।५६	३।५४	३।३६
३।५६	३।५७	३।५०	३।३०
३।५१	३।५३	३।४४	३।२१
३।४४	३।४६	३।३६	३।११
३।३६	३।३७	३।२५	३।०
३।२७	३।२७	३।१५	२।४८
१७	१७	१७	१७

४ रा० प	५ रा० प०	६ रा० प०	७ रा० प
०।४३	०।४५	०।४०	०।३०
१।२२	१।२४	१।१३	०।५५
१।५७	१।५६	१।३६	१।१६
२।२६	२।१८	१।५६	१।२४
२।५६	२।३४	२।१०	१।४८
३।५	२।४६	२।२०	२।०
३।१५	२।५३	२।२८	२।११
३।२०	२।५६	२।३४	२।२१
३।२२	२।५७	२।३८	२।२९
३।२०	२।५१	२।४०	२।३७
३।१७	२।५४	२।४१	२।४४
३।१०	२।५०	२।४२	२।४६
३।४	२।४६	२।४२	२।५३
२।५५	२।४०	२।४१	२।५६
२।४६	२।३५	२।३६	२।५७
२।२७	२।२८	२।३७	२।५६
२।३७	२।२३	२।३३	२।५४
१७	१७	१७	१७

८ रा० प्रा०	९ रा० प्रा०	१० रा० प्रा०	११ रा० प्रा०
०।२३	०।२२	०।२८	०।३८
०।४३	०।४३	०।५७	१।१८
१।८	१।५	१।२७	१।५७
१।२१	१।२७	२।०	२।३३
१।३६	१।५२	२।३३	३।२
१।५६	२।१७	३।०	३।२५
२।१०	२।३१	३।२२	३।४०
२।२५	२।५६	३।३३	३।५१
२।४०	३।१७	३।४८	३।५६
२।४५	३।३०	३।५१	३।५६
३।५	३।३८	३।५५	३।५६
३।१३	३।४२	३।५३	३।५६
३।१६	३।४०	३।४८	३।५२
३।२२	३।०८	३।४३	३।४६
३।२२	३।३४	३।३४	३।३८
३।१८	३।२६	३।२५	३।२८
३।१२	३।१६	३।१५	३।१६
१७	१७	१७	१७

उक्त खण्डाको लम्बनखण्डा कहते हैं। प्रक्रियाकालको जहां लम्बन खण्डा लिखा गया है, वहां उक्त खण्डाका ग्रहण ले करके कार्य किया जाता है।

लग्नोदयखण्डा और भोग्य।

खण्डा	भोग्य
४।३८	४।५८
८।३७	५।२१
१५।०	५।२२
२०।२२	४।५६
२५।२२	४।३८
३०।०	४।३८
३४।३८	४।५६
३९।३७	५।२२
४५।०	५।२१
५०।२३	५।५१
५५।२२	४।१८
६०।०	४।२८
१२	१२

इसका नाम लग्नोदयखण्डा है। प्रक्रियाग्रन्थमें लग्नोदयखण्डा और भोग्य जैसा जहां यथेष्ट है, वहां वही निर्दिष्ट ग्रहण ले करके गणना करना चाहिये।

१	२
क्रान्तिखण्डा	क्रान्तिखण्डा
३	७२०
९	७४४
२१	७६३
३७	७७९
५६	७९१
८०	७९७
१०७	८००
१३७	३०
१७०	इन्हीं तीस अङ्कोंको क्रान्तिखण्डा कहते हैं। प्रक्रिया जहां क्रान्तिखण्डा जैसा लिखा है, वहां इसी खण्डाके अङ्कोंसे कार्य किया जाता है।
२०५	शून्यादिहार
२४२	६०।०
२८०	६०।२१
३१९	६१।२२
३५९	६३।६
४००	६५।४२
४४१	६९।१६
४८१	७४।११
५२०	८०।४६
५५८	८९।४२
५९५	१०२।८
६३०	१२०।०
६६३	१४७।२०
६९६	
२०३	

ज्याखण्डा	१	२
२५	नतिखण्डा	नतिखण्डा
५०	२२१।१४	२५०।११
७४	२२१।३१	२५४।५६
९८	२२२।१६	२६६ ५२
१२०	२२३।३८	२६४।५४
१४१	२२५।२८	२७०।०
१६१	२२७।४६	२७५।६
१७८	२३०।३४	२८०।८
१९४	२३३।४६	२८५।४
२०८	२३७।२३	२८६।४९
२१९	२४१।२१	इसका नाम नतिखण्डा है
२२८	२४५।२७	
२३५		
२३९		
२४०		

इन्हीं कई एक अङ्कोंकी ज्याखण्डा कहते हैं।

सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि, ग्रहलाघव आदि मूल ग्रंथोंमें ग्रहण गणनाकी प्रणाली और उसकी उपपत्ति लिखी है। परन्तु वह सहजमें समझ नहीं पड़ती। उसीसे आजकल इस देशमें जिस सहज नियमसे ग्रहण गणना की जाती, इस स्थानमें बतलायी है। सिवा इसके भास्वती मतसे भी ग्रहण गणना करते हैं।

खगोल ज्योतिर्मण्डलके साथ प्राणियोंका अनिर्वचनीय सम्बन्ध है। ज्योतिष्कमण्डलीकी गति और अवस्था परिवर्तनसे मानव प्रभृति प्राणियोंकी अवस्था बदलती या शुभाशुभ हुआ करता है। प्राचीन भारतीय ज्योतिर्वित्ता यह सब शुभाशुभ फल निरूपण कर गये हैं। समयविशेषमें ग्रहण होनेसे भी मानवका मङ्गल वा अमङ्गल होता है। बृहत्संहितामें लिखा है कि ब्रह्मा, चंद्र इंद्र, कुवेर, वरुण, अग्नि और यम सातो देवता यथाक्रम छः छः महीने पीछे ग्रहणके अधिपति हुआ करते हैं। अधिपतिके अनुसार ग्रहणका अलग अलग फल लगता है। ब्रह्मा ग्रहणके अधिपति होनेसे ब्राह्मण, पशु, मङ्गल, आरोग्य और शस्यकी वृद्धि होती है। इसी प्रकार चंद्र अधिपति होनेसे पूर्वकथित समस्त फल मिलता, पण्डितोंका दुःख बढ़ता और पानी नहीं बरसता है। इन्द्र अधिपति होनेसे राजविरोध, शारदीय शस्यका विनाश एवं अमङ्गल, कुवेरके आधिपत्यमें धनियोंका अर्थनाश तथा सुभिक्ष, वरुण अधिपति होनेसे राजाका अमङ्गल, दूसरे लोगोंका मङ्गल एवं शस्यवृद्धि, अग्नि अधिपति होनेसे अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और शस्य हानि होती है। इसको छोड़ करके अन्य समयमें ग्रहण पड़नेसे क्षुधा, महामारी और अनावृष्टि होती है।

ग्रासके अवस्थाभेदसे चन्द्र तथा सूर्यग्रहण दश प्रकार पड़ता है—१ सव्य, २ अपसव्य, ३ लेह, ४ ग्रसन, ५ निरोध, ६ अवमर्द, ७ आरोह, ८ आघ्रात, ९ मध्यतम और १० तमोन्त्य।

राहु सव्यगत हो अर्थात् वामभागमें रह करके चन्द्र वा सूर्यको ग्रास करनेसे सव्य ग्रहण कहलाता है। इससे जगत् जलप्लुत, आह्लादित और भयशून्य होता है।

राहुके अपसव्य अर्थात् दक्षिणमें रह करके ग्रास करनेसे अपसव्य ग्रहण कहते हैं। इसका फल राजा तथा तस्करकी पीड़ा और प्रजा नाश है।

राहु जब जिह्वाकी भांति चन्द्रमण्डलको लेहन करता, लेह ग्रहण लगता है। फल—पृथिवीस्थ प्राणिमण्डलको आह्लाद और धरातल पर प्रभूत वारिवर्षण है।

चंद्र वा सूर्यमण्डलके एक पाद, अर्ध वा त्रिपादग्रस्त होनेका नाम ग्रसन है। इससे गर्वित राजाओंका धन नाश और गर्वित देशोंकी पीडा होती है।

चन्द्र वा सूर्यमण्डलको शेष सीमा पर्यन्त ग्रास करके राहु मध्यस्थलमें पिण्डीकृत जैसा रहनेसे निरोध कहलाता है। इससे सभी प्राणी आह्लादित होते हैं।

राहुके चन्द्र वा सूर्यको सम्पूर्ण ग्रास करके अधिक काल अवस्थिति करनेको अवमर्दन कहते हैं। इससे राजाओंका विनाश, बड़े बड़े देशोंका ध्वंस और अन्धकारका भय होता है।

राहु वर्तुलाकार ग्रहमण्डलको आवरण करके तत्क्षणात् पुनर्वार दृष्ट होनेसे आरोह कहा जाता है। इससे राजाओंका परस्पर विरोध और भय होता है।

वाष्पयुक्त निश्वास वायुसे दर्पणके मध्यभागकी भांति राहुग्रस्त ग्रहमण्डलका एकदेश मलिन होनेसे आघ्रात कहलाता है। फल सुवृष्टि और मङ्गल विषयोंकी वृद्धि है।

चन्द्रमण्डलका मध्यभाग राहुग्रस्त और चारो ओर वितमस्क अर्थात् परिष्कार रहनेसे मध्यतम कहते हैं। इससे मध्यदेश बिगड़ता और उदरामय रोग बढ़ता है।

ग्रहणके समय चन्द्रमण्डलकी शेष सीमा अतिशय अन्धकारमय और मध्यभाग अपेक्षाकृत परिष्कृत होनेसे तमोन्त्य नाम पड़ता है। फल—मुषिक, शलभ प्रभृति ईति और भयानक चोरोंका उत्पात है।

पहले ग्रासभेदसे जैसे दश प्रकार ग्रहणका उल्लेख किया गया है, वैसे ही मोक्ष भी दश प्रकारका है—१ दक्षिणहनुभेद, २ वामहनुभेद, ३ दक्षिणकुक्षिभेद, ४ वामकुक्षिभेद, ५ दक्षिणवायुभेद, ६ वामवायुभेद ७ सञ्छर्दन, ८ जरण, ९ मध्यविदारण और १० अन्तविदारण।

चन्द्रग्रहणका अग्निकोणमें मोक्ष होना दक्षिणहनुभेद मोक्ष कहलाता है। इससे शस्यनाश, मुखरोग, राजपीडा और सुवृष्टि होती है। पूर्वोत्तर कोणोंमें मोक्ष होनेका नाम वामहनुभेद है। फल—राजा तथा राजपुत्रका भय, मुखरोग और सुभिक्ष है। दक्षिण पार्श्वमें मोक्ष होनेको दक्षिण कुक्षिभेद कहते हैं। फल—राजपुत्रकी पीडा और दक्षिण देशस्थ शत्रुओंका अभियोग है। राहु उत्तर पथमें रहनेसे वामकुक्षिभेद नामक मोक्ष होता है। फल—स्त्रियोंकी गर्भविपत्ति और मध्यमरूप शस्य है। नैर्ऋत कोणका मोक्ष दक्षिणवायुभेद और वायुकोणका मोक्ष वामवायुभेद कहलाता है। इस द्विविध मुक्तिमें सामान्यरूप गुह्यपीडा और सुवृष्टि होती है। किन्तु वामवायुभेदमें विशेषत राजमहिषी पर विपद् पड़ती है। राहु चन्द्र वा सूर्यमण्डलका पूर्वभाग ग्रास करना आरम्भ करके यदि पूर्वदिक्‌को चला जाता, सञ्छर्दन मोक्ष कहलाता है। इससे जगत्‌का मङ्गल और शस्यकी श्रीवृद्धि होती है। पूर्वदिक्‌में ग्रहण लग करके पश्चिममें मोक्ष होनेसे जरण नामक मोक्ष कहा जाता है। इससे मानव क्षुधासे कातर और शस्त्रभयसे उद्विग्न हो जाते तथा कहीं भी आश्रय नहीं पाते। मध्यस्थल प्रथम प्रकाशित होनेसे मध्यविदारण नामक मोक्ष कहते हैं। इससे प्राणियोंका मानसिक कोप, सुचारुवृष्टि और सुभिक्ष होता है। अन्तविदारण नामक मोक्षमें चन्द्रमण्डलकी शेष सीमा पर निर्मलता और मध्यभाग पर अतिशय अन्धकार रहता है। इससे मध्यभागका विनाश और शारदीय शस्यका क्षय होता है। चन्द्रग्रहणमें जिस दश प्रकारके मोक्षकी बात कही है, सूर्यग्रहणमें भी वही होता है। किन्तु चन्द्रके जिस स्थलमें पूर्वदिकका उल्लेख है, सूर्यविषयमें उसी स्थल पर पश्चिम दिक्‌की कल्पना करनी पड़ती है।

ग्रहणके मुक्तिकाल पीछे सप्ताह मध्य पांशुपात होनेसे दुर्भिक्ष, नीहारपात होनेसे रोगभय, भूमिकम्प होनेसे श्रेष्ठ नरपतिका विनाश, उल्कापात होनेसे मन्त्रिनाश और ग्रहणके पीछे सात दिनके बीच नाना वर्णका मेघ देख पड़नेसे भय, मेघका भयानक गर्जन होनेसे गर्भनाश, बिजली चमकनेसे राजा तथा दंष्ट्री जीवकी पीडा, परिवेश होनेसे रोगभय, दिग्दाहसे राजभय तथा अग्निभय, प्रबल रूक्ष वायु चलनेसे चौरभय, निर्घात, इन्द्रधनु वा दण्डदर्शनसे क्षुद्भय और शत्रुचक्रसे असङ्गल एवं ग्रहयुद्ध वा केतुदर्शनसे राजसंग्राम लगता है। परन्तु ग्रहणके

पीछे स्नान दिनके सधर सुन्दररूप दृष्टिपात होनेसे किसी प्रकारका अशुभ नहीं पड़ता और सुभिक्ष हुआ करता है। चंद्रग्रहण निवृत्त होने पर यदि पक्षान्तर्को सूर्यग्रहण पड़ जाता, तो प्रजागणकी अनीति और दम्पतीकी परस्पर शत्रुता बढ़ती है। सूर्यग्रहणके पीछे पञ्चदश दिवसमें फिर चंद्रग्रहण पड़नेसे ब्राह्मण लोग अनेक यज्ञोंका फल भोग नहीं कर सकते। किन्तु प्रजा सर्वदा ही आह्लादित रहती है। (वृहत्सं० ५७०)

चंद्र और सूर्यकी भाँति बुध मङ्गल प्रभृति अपर ग्रहों का भी ग्रहण पड़ता है। किन्तु वह ग्रहण मानवमण्डलीके नयन गोचर नहीं होते। इसी कारण बहुतसे प्राचीन भारतीय ज्योतिर्वित्ताओंने उनका उल्लेख नहीं किया है। वराहमिहिरने वृहत्संहितामें इन सब ग्रहणोंकी बात लिखी तो है, परन्तु उसकी गणितप्रक्रियाका कोई उल्लेख नहीं मिलता, केवल फलाफल मात्र निरूपित हुआ है वराहमिहिरके मतमें मङ्गलका ग्रहण होनेसे अवन्तीदेश, कावेरी तथा नर्मदाके तटस्थ देश और सब गर्वित नरपतियोंका विनाश होता है। बुधके ग्रहणमें अन्तर्वेदी, सरयू, नेपाल, पूर्वसागर और शोण प्रभृति देशके स्त्री, राजा, योद्धा, पण्डित और बालक मर मिटते हैं। वृहस्पतिमें ग्रहण लगनेसे विद्वान्, राजमन्त्री, हस्ती तथा अश्व और सिन्धु नदीके तटस्थ वा उत्तरदिगाश्रित व्यक्तियोंका विनाश होता है। शुक्रके ग्रहणमें दासेरक, कैकेय, यौधेय, आर्यावर्त और शिवि प्रभृति देश, स्त्री और मन्त्री दुःख पाते हैं। शनिग्रहण पड़नेसे मरुभव, पुष्कर, सौराष्ट्र प्रभृति देशीय लोग, पदातिक अर्बुदादि अन्त्य जाति और गोमन्त तथा पारियात्र पर्वतस्थ व्यक्तियोंका विनाश होता है। (वृहत्सं० ५।६४-६८)

ज्योतिस्तत्त्वमें लिखा है कि सूर्य किंवा मङ्गलके नवांशमें ग्रहण लगनेसे ग्रहणके समय आकाश खुला रहता; बुध वा शनिके नवांशमें ग्रहण पड़नेसे आकाशमण्डल मलिन दिखजाता और अल्पवर्षण आता है। गुरुके नवांशमें ग्रहण होनेसे उस समय आकाशमण्डल मेघसे घिर जाता है। वर्षाकालको शुक्र किंवा शनिके नवांशमें ग्रहण लगनेसे ग्रहणके समय हो भयानक जलपात होता; अपर कालको चंद्र तथा सूर्यमण्डल आच्छादित रहता है।

राजमार्तण्डके मतसे ग्रहण कालको चन्द्र जन्मराशि अथवा उससे सप्तम, अष्टम, द्वादश, चतुर्थ, दशम और नवम राशिमें पड़नेसे ग्रहण देखना न चाहिये।

वशिष्ठके मतानुसार जन्मराशिके जन्मनक्षत्र अथवा षष्ठ, अष्टम, चतुर्थ वा द्वादश राशिमें चन्द्र आनेसे ग्रहण दर्शन निषिद्ध होता है। उसको देखनेसे अर्थनाश होता है। जन्मनक्षत्रसे गणनामें सप्तम नक्षत्र पर चन्द्र पड़नेसे भी ग्रहण देखा नहीं जाता, देख लेनेसे रोग, बहुक्लेश और वित्तक्षय होता है। जो ग्रहण जिसके लिये देखना निषिद्ध है, दैवात् उसके वही ग्रहण देख लेने पर चन्द्रग्रहणमें चन्द्र और सूर्यग्रहणमें सूर्यकी अर्चना करके ग्रहविप्रको सुवर्ण दान करते हैं। ऐसा करनेसे अशुभ मिट जाता है।

आधुनिक स्मृतिसंग्रहकार रघुनन्दनके मतसे जिसके पक्षमें जो ग्रहण देखना निषिद्ध नहीं होता, वही व्यक्ति उस ग्रहणमें पुरश्चरण कर सकता है। परन्तु प्राचीन धर्मशास्त्रवित् पण्डितोंने सभी ग्रहणोंमें पुरश्चरणका विधि रखा है। पुरश्चरण देखो। ग्रहण समयमें विशेष श्राद्ध करनेका विधान है। श्राद्ध देखो।

शिवार्चनचन्द्रिकाके मतमें ग्रहण दिनसे सात दिनोंके बीच आगमोक्त दीक्षा प्रशस्त है। दीक्षा देखो। इन सात दिनों यात्रादि नहीं करते।

ग्रहणके समयमें सभी जल गङ्गाजलके समान होता है। स्नान, दान प्रभृतिका फल अनन्त है। ग्रहणके समय आहार वा मलमूत्र परित्याग करना न चाहिये। इस समयमें उच्छिष्ट वासन वा पक्वान्न प्रभृति अपवित्र हो जाता है। इसीसे भारतवासी ग्रहणके पीछे उच्छिष्ट वासन व्यवहार ग्रहणसे पहले पक्वान्न भोजन नहीं करते। ग्रहणके पीछे पाककी हण्डी आदि फेंक करके रसोई घर लीपा पोता जाता है। स्मृतिके मतमें चन्द्रग्रहणसे चार और सूर्यग्रहणसे ३ प्रहर पहले खाना न चाहिये।

युरोपीय मत—ग्रहण शब्दसे भारतमें साधारणतः चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण ही लिया जाता है। किन्तु युरोपीय ज्योतिर्विदोंने ग्रहणके सुपर्याप्त अर्थमें उसके तत्त्वको लिपिबद्ध किया है। अङ्गरेजी भाषामें ग्रहणको इक्लिप्स (Eclipse) कहते हैं। यह शब्द ग्रीक भाषाके

त्याग अर्थवाले 'लिपो' धातुजात 'इक्लिप्सिस्' शब्दसे निकला है। इसका अर्थ अभाव कलङ्क इत्यादि है। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र किसी भी ज्योतिष्कका आलोक अन्य ज्योतिष्क द्वारा रुकने वा निष्प्रभ होनेका घटनाव्यञ्जक व्यापार ज्योतिषशास्त्रमें 'इक्लिप्स' शब्दसे व्यवहृत होता है। सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, ग्रहग्रहण, उपग्रहग्रहण, नक्षत्रग्रहण नानाविध ग्रहण सम्बन्धमें भिन्न भिन्न तत्त्वनिर्णायक और गणनानिर्देशक प्रबन्ध हैं। इन विविध ग्रहणोंकी भविष्यत् घटनाके काल और अन्यान्य विषय गणनार्थ तथा ज्योतिर्गण सम्बन्धी विशेष विशेष घटना ओंके निर्णयार्थ सौरसारणी, चन्द्रसारणी तारकासारणी प्रभृति अनेक सारणियां प्रति वत्सर नाविक पञ्जिकामें (Nautical almanac) इङ्गलेण्डके ग्रीनविच वेधालयका (Greenwich Observatory) अध्यक्ष कर्टक प्रका शित होती हैं।

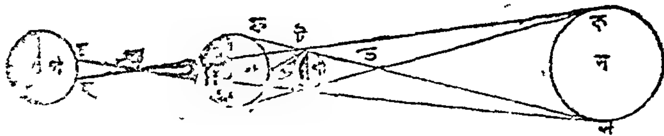
कोई कोई ग्रहण सुयन्त्रद्वारा उपयुक्त प्रदेशमें सुदक्ष यन्त्रवेधकारी ज्योतिषी कर्टक दृष्ट होनेसे तन्निबन्धनके जो विषय आविष्कृत होते, उससे ज्योतिषशास्त्र, अनेक प्राकृततत्त्व और लौकिक तथा राजकार्यका विशेष उन्नति साधन होता है। इसीसे अनेक युरोपीय राजाधिप विपुल अर्थव्यय करके ऐसे सुदक्ष लोगोंको नियुक्त किया करते हैं।

सूर्य और पृथिवी सम्बन्धमें जैसे अवस्थासादि पड़ते, तदनुसार अमावस्यासे पूर्णिमा पर्यन्त चन्द्रकी कला क्षीण रेखासे पूर्ण चक्राकार एवं फिर उक्त हिसके क्रमानुसार क्षय होते होते अदृश्य होता है। इसी परिवर्तनसे चन्द्र और सूर्यग्रहण सबका प्रत्यावर्तन पड़ता है। सूर्य ग्रहण केवल अमावस्याको लग सकता है। क्योंकि उस समय सूर्य और पृथिवीके बीच चन्द्र आ करके सूर्यालोकको अवरोध करता है। चन्द्रग्रहण केवल पूर्णिमाको लग सकता है। क्योंकि उस समय सूर्य और चन्द्रके मध्य पृथिवी आ करके सौर छायामें चन्द्रको आच्छन्न करती है। पृथिवी और चंद्र दोनोंमें अपना ज्योति नहीं होता सूर्यालोकसे ही मिलता है। उनका आकार भी प्राय गोलपिण्ड है। सुतरां सूर्यग्रहण कालको चन्द्रका जो पृष्ठ सूर्याभिमुख रहता उसके विपरीत पृष्ठादिमें कोई सूच्याकार छाया पड़ती है। इसी छायामें जब पृथिवी डूब जाती, चन्द्रलोक वा अन्य ग्रहलोकके दर्शकोंको भूग्रहण दिखलायी देता है और हमलोग सूर्यग्रहण दर्शन करते हैं अर्थात् हमें चन्द्रबिम्बका-छायापृष्ठ सूर्यबिम्बके ऊपरसे सञ्चालित दृष्टिगोचर होता है।

बुध शुक्रादि ग्रहोंसे चन्द्रवत् जो सूर्यग्रहण होता, बुधसङ्क्रम शुक्रसङ्क्रम (Transit of Mercury, Tran-sit of Venus) इत्यादि कहलाता है। राशिचक्रके जिस भागमें चन्द्रकी गति रहती उसी भागके मध्य अनेक ग्रह सञ्चालन और कितने ही नक्षत्र अवस्थान करते हैं। इनमें बहुतोंको चन्द्र प्रतिनियत एक प्रकार ग्रस्त करता है। ऐसे ही ग्रहणका नाम तारासङ्क्रम (Occulation of stars) है। चंद्र यद्यपि सूर्य अपेक्षा अत्यन्त क्षुद्र है और पृथिवीके इतने सन्निकटस्थ है कि उसके और सूर्यके बिम्बव्यास (Apparent diameter) दोनोंका अति यत्सामान्य भेद दृष्ट होता है, परन्तु तदुभय व्यासों की इतनी परिहति (Variation) है, कभी कभी चन्द्र का यह बिम्बव्यास सूर्यके इसी बिम्बव्यासकी अपेक्षा वृहत् और कभी छोटा पड़ता है। किसी दर्शकको चक्षु चन्द्र और सूर्यसे समसूत्रस्थित होने पर सूर्य अस्त देख पड़ता है। उस समय चन्द्रका यह बिम्बव्यास सूर्यसे बड़ा दीखने पर सूर्यका पूर्णग्रास दिखलायी देगा। फिर यही व्यास न्यून देख पड़नेसे सूर्यबिम्बमें चित्रित चन्द्रके कृष्ण-वर्ण बिम्बको चारों ओर कोई आलोक वलयवत् लग जावेगा। इसीको वलयाकार ग्रहण (annular eclipse) कहते हैं। जब दर्शकका चक्षु चंद्र और सूर्यसे समसूत्रस्थ नहीं होते चन्द्र सूर्यका कियदंश मात्र आच्छादन करता है। इसका नाम खण्डग्रहण (partial eclipse) है। अतएव अमावस्याको भूकेन्द्रसे चन्द्र सूर्यकी दूरी और चन्द्रपाद व्याससे चन्द्रको दूरीके कारण सूर्यग्रहणके कई भेद पड़ा करते हैं।

सूर्यग्रहण चित्र प्रतिकृति द्वारा स्पष्ट समझमें आ जावेगा।

पृथिवी दो व्यासोंसे चपटित हुई है। पृथिवी जब चन्द्र-के निकट समसूत्रमें रहती चन्द्रच्छायाका प्रान्त या तो उसको बराबर छू लेता या उससे भूप्रदेशको अतिक्रम

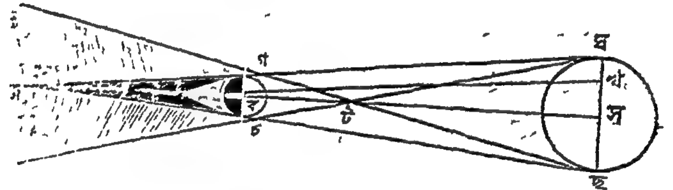


ग—पृथिवी म—सूर्य

करता है। चन्द्रच्छायाका प्रान्त पृथिवीपृष्ठ स्पर्श न कर-के सूर्य और पृथिवीके मध्य (ङ स्थानमें) रहनेसे क ङ तथा ग ङ वर्धित हो पृथिवीपृष्ठके च और छ स्थानको स्पर्श कर सकते हैं। इस अवस्थामें च और छके मध्य-वर्ती सब स्थानोंके लोग सूर्य मण्डल परिधिके एक भाग-में गोलाकार ग्रहण और इसी भागकी चारों ओर आलोक देखेंगे। चन्द्र और सूर्य केन्द्रके समसूत्रमें च तथा छ स्थान अवस्थित है। यहांके लोगोंको सूर्यके ठीक मध्य-भागमें ग्रहण और अवशिष्ट भाग उज्ज्वल वलयाकार जैसा देख पड़ता है। पृथिवी छायाकी भांति चंद्रच्छाया-की भी खण्डच्छाया होती है, यथा क ट व और न ट प इस खण्डच्छायाके मध्य सर्वस्थान पर सूर्यालोक नहीं पहुं-चता। सुतरां इन सभी स्थानोंमें आंशिक ग्रहण होता है।

—पाश्चात्य मतमें चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहणमें भूच्छायापात होनेसे इसी सूचीके अग्रसे तत्केन्द्रभेदी रेखा (Axis of the cone) सूर्य तथा भूकेन्द्रगत अर्थात् समसूत्रस्थ हो जाती है। जहां सूर्य और पृथिवीका दृश्य विम्वव्यास* समपरिमाण हो सकता, सूच्यग्र ठिक उसी स्थान पर पड़ता है। पूर्णिमाके समय पृथिवीसे चन्द्र मध्यम दूर† (Mean distance) रहनेसे उसका केंद्र सूर्यविम्बकी १८१४″ २ विकला परिमित कोण रचना करता अर्थात् चंद्रलोकमें इसी परिमित कोण पर सूर्यव्यास और भूव्यास चंद्रलोकमें ६९०८ ३ विकला कोण पर दृष्ट होता है। इसी प्रकार पृथिवीसे चंद्रकी जितनी दूर न्यूनकल्पित छायाका दैर्घ्य आता उसका साढ़े तीन गुणको अपेक्षा अधिक हो जाता और छायाका जो स्थान भेद करके चंद्र चलता, छायाका प्रस्थ चंद्रव्यासका प्राय. ६ परिमित लगता है। प्रति पूर्णिमाको चंद्रग्रहण पड़ सकता था, परन्तु वैसा नहीं होता। कारण चंद्र-कक्षा क्रान्तिके ऊर्ध्वाधो तिर्यग्भावसे अवस्थान करती है। इसी तिर्यगवस्थितिको परमापम (Inclination to the plane of the ecliptic) कहते हैं। ऐसी ही अव-स्थितिके कारण साधारणतः पूर्णिमाको चंद्र भूच्छायाके ऊपर या नीचे रहता है, केवल चंद्रपात स्थल पर अर्थात् राहुकेतुगत वा सन्निहित होनेसे वह नहीं पड़ता। पातसे चंद्रकी दूरादूर अवस्थिति पर ही चंद्र-ग्रहणके नाना भेद देखनेमें आते हैं।

चन्द्रग्रहणमें चंद्रपृष्ठकी प्रत्येक कणा पर्यायक्रमसे सूर्यविम्बके भिन्न भिन्नांशका ज्योति क्रम क्रम गंवाया करती है। सुतरां भूच्छायामें मज्जित होनेसे पहले चंद्र-की दीप्ति धीरे धीरे घटती जाती है। सूचिस्पर्शके पूर्व और उसकी मुक्तिके पीछे चंद्र जो क्षीण छायागत होता अर्थात् मलिनत्व पाता, उसी क्षीणछायाको उपच्छाया (Lenumbra) कहा जाता है। उपच्छाया जहां पड़ती, उसका प्रस्थ चंद्रसे दृश्य सूर्यके विंबव्यासके (appa-rent diameter) सामान होता है।



ग क च पृथिवीकी छाया है। ङ ग घ स्पर्शज्या, पृथिवीपृष्ठ और सूर्यमण्डलका परिधि स्पर्श करके अव-स्थित होती है। इसी रेखाको पृथिवी और सूर्यके परिधिकी चारों ओर घुमा कर ले जानेसे घ ङ छ वृत्त-सूचीकी वाह्य सीमा बनती है। सूर्यकेंद्र म और पृथिवीकेंद्र ग से न क ङ रेखा खींचनेसे यही रेखा उक्त सूचीके मध्यरेखा होगी। अङ्कित चित्रमें म पृथिवी और चंद्र मानो ग स्थानमें पृथिवीकी छायामें घुसते मालुम पड़ते हैं। (क स्थानमें पृथिवीच्छायाका व्यासार्ध निकाला जाता है) चन्द्रमण्डलसे छायामण्डल बहुत बड़ा है। इसीसे चंद्रमण्डल अनायास पृथिवी-च्छायामें सम्पूर्ण रूपसे और अनेकक्षण तक आच्छादित रह सकता है। सूर्यके दो पादविक्षेप स्थानों घ और छसे जो दो सरल रेखाएं तिर्छा ट विन्दुसे हो करके पृथिवी

---

* किसी ज्योतिष्कका व्यास पृथिवीसे जैसा देख पड़ता, उसको इसी लिये विम्बका Apparent diameter कहते हैं।

† चन्द्रकक्षाका गठित व्यासार्ध परिमाण इसी पड़के सूर्यसे मध्यम दूर होता है।

विपरीत भागमें स्पर्श करती है, पृथिवीकी अपर दिक्में फैल पडती है। इन्हीं दोनों विस्तृत रेखाओंके मध्य पृथिवीच्छाया दो भाग हो जाती है। म च्याकार एक भाग प्रकृत छाया और अपर भाग खण्डच्छाया कहलाता है। खण्डच्छाया सम्पूर्ण अन्धकारमय नहीं होती। उसके बीचमें सूर्यके किसी किसी भागका किरण पतित होता। प्रकृत छायामें किसी भागका किरण सीधा नहीं पडता। सुतरा वह अपेक्षाकृत अन्धकारमय रहता है। उसीसे चद्र इस खण्डच्छायामें घुसते घुसते क्रमश दीप्ति हीन होते जाता, शेषको प्रकृत छायामें प्रवेश करने पर ही एककालमें पूर्णग्रास होता है।

हमारे चद्र अर्थात् पार्थिव उपग्रहका जैसा ग्रहण देख पडता, वृहस्पति प्रभृति उपग्रहवाले ग्रहवाले ग्रहों का भी ग्रहण लगा करता है। वार्हस्पत्य चद्रोंकी ग्रहण गणनाका बडा प्रयोजन है और वह यन्त्रवेध द्वारा दृष्ट होता है।

चन्द्रपात अर्थात् राहु वा केतुके ग्रास किसी भी समयको सूर्य जैसी अवस्थिति करता और फिर वैसा ही होनेमें जो समय लगता, उसको पातसम्बन्धीय सूर्यावर्तनकाल (Duration of the revolution of the sun with regard to the node of the lunar orbit) कहना पडता है। उसी समयको और भी घटती बढती होती है। इसको (गड) माध्यमिक काल (Mean duration) कहा जाता है। इसी माधामिककाल और चान्द्रमास (Duration of the synodic revolution of the moon) का सबन्ध २२३ और १८ होता है। इन्हीं दोनों अङ्कोंके सम्बन्धके समान जैसा २२३ चन्द्र-मासका अन्तर चन्द्र और सूर्य चद्रपात (Node)से एक बार जितनी दूर रहता, बार बार उतनी ही दूर पडता है। सुतरा ग्रहण इसी पर्याय क्रममें पुन पुन हो सकते हैं। किन्तु सूर्य चद्रके गति व्यतिक्रमसे ठीक उक्त समय को वैसे ही बार बार अवस्थिति नहीं आती।

उक्त २२३ और १८ दोनों अङ्कोंके अनुपातानुसार गिनने का कारण यह है कि २२३ माधामिक चांद्रमासमें ६५८५-३२ दिन रहते और १८ बार पातगतिमें ६५८५-७८ दिन पर्याप्त होते हैं। अतएव २२३ चांद्रमासके प्रथम और शेषको पातकी मधामावस्थितिको विशेष विभिन्नता नहीं पडती। अतएव २२३ माधामिक चान्द्रमास अर्थात् १८ वत्सर १० दिन ग्रहणगणनार्थ विशेष प्रयोजन होता है। अति प्राचीन सभ्य लोग (कालडियान आदि) इसको जानते और सारोस (Saros) कहते थे। ग्रहणका प्रकृत कारण समझनेके बहुकाल पूर्व ऐसे ही पुराने लोग ग्रहण गणना करते रहे।

ग्रह कभी कभी एक दूसरेको ग्रास वा आच्छादन करते हैं। शुक्रद्वारा बुध, मङ्गलसे वृहस्पति और हमारे चद्र द्वारा शनिका आच्छादन दीर्घ कालान्तरको दर्शित होता आया है। ऐसे दीर्घकालान्तरमें होनेका कारण यह है कि सब ग्रहोंकी बात छोड दीजिये, उनमें कितने ही एक बार सूर्यके साथ समसूत्रस्थ अर्थात् नभोमण्डलके एकदेशमें एक ही समय अति विरल दृष्ट होते हैं। ईसो सनसे २५०० वत्सराधिक काल पूर्व बुध, शुक्र, मङ्गल वृहस्पति और शनिको समसूत्रता रही थी। ११८६ ई० १० सितम्बरको कन्या और तुला राशिके मध्य उक्त प्रकार की समसूत्रता पडी और १८०१ ई०को चद्र, वृहस्पति, शनि तथा शुक्र मिथ राशिके मध्य एकत्र हुए थे। ग्यानिरड नामक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्ने यह देखानेको गिना था, उस प्रकारकी समसूत्रता कैसी विरल घटना है। १७ गड वत्सर अन्तर बुध शुक्र, मङ्गल, वृहस्पति, शनि और युरानस् छहों ग्रहोंका युगपत् मिलन (Conjuction) होता है।

ग्रहणसम्बन्धीय कई छोटी मोटी बातें ज्योतिर्विद् बतलाया करते हैं। यथा—

१ प्रतिवत्सर न्यूनकल्पमें २ चद्रग्रहण पडते हैं।

२ किसी वर्ष एक भी सूर्यग्रहण नहीं हो सकता।

३ सर्वग्रास और केंद्रीय एक भी चद्र ग्रहण पडनेसे उसमें पिछली और अगली अमावस्याको एक सूर्यग्रहण हो सकता है। यह घटना राहुकी भांति केतुमें भी घटित हो सकती है। वैसा होने पर किसी वर्ष छह ग्रहण लग सकते हैं।

४ किसी वत्सर जनवरी महीनेके आरम्भमें पहले एक ग्रहण पडनेसे इसी वत्सरके शेष भागमें फिर कोई सूर्यग्रहण हो सकता है।

५ अतएव एक वर्षमें पांच सूर्य और दो चंद्र अथवा चार सूर्य और तीन चंद्रके सात ग्रहण लग सकते हैं।

६ ऐसे हो चंद्रग्रहण अपेक्षा अधिक सूर्यग्रहण होते हैं। किन्तु किसी निर्दिष्ट स्थानमें अति अल्प ही सूर्यग्रहण देख पड़ते हैं।

बहुपूर्वकालके ग्रहणोंका ऐतिहासिक तत्त्व मालूम रहनेसे अनेक प्रयोजनीय ऐतिहासिक घटनाओंका काल निर्णय हो सकता है। फिर किसी किसी ज्योतिर्वित्‌ने यह हिसाब लगा करके रख दिया है, बहु दूर भविष्यत् कालको कौन विशेष ग्रहण पड़ेगा। हाइगड साहबने पूर्वकालके १७ ग्रहणोंका तत्त्व लिखा है और १९९९ ई० ११ अगस्तको इङ्गलैण्डमें जो सर्वग्रासी सूर्यग्रहण होगा, उसका भी हिसाब लगा रखा है। उनका कहना है कि इस ग्रहणको छोड़ करके २५० वर्ष बीच इङ्गलैण्ड-में ऐसा ही और एक भी सूर्यग्रहण देख न पड़ेगा।

पाश्चात्य मतानुसार ग्रहादिकी ग्रहणगणना तत् तत् सुबृहत् ग्रन्थोंमें द्रष्टव्य है।

पुरातत्त्वविदों और ज्योतिर्विदोंकी सुविधाके लिये अतीत तथा भविष्यत् कालके २००० वर्षोंमें जो ग्रहण हुए या होंगे, उसकी एक तालिका नीचे दी जाती है—

इसी सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१	१० जून	२४ जून
२	२३ नवम्बर	१५ मई ८ नवे०
३	——	४ मई, २८ अक्टू
४	८ अप्रेल	२३ अप्रे, १७अ०
५	२८ मार्च, २२सेप्टेम्बर	——
६	११ सेप्टे०	३ मा०,२७ अग०
७	६ फर,० ३१ अग०	२० फर०, १७अग०
८	२६ जन०	८ फर०, ५ अग०
९	१५ जन्०, १०जु०	२० दिसं०
१०	३० जू०, २४ नवे०	१५ जून, १०दि०
११	14 नव०	४ जून, २९ नवे०
१२	८ मई	२४ मई
१३	२८ अप्रे	१४ अप्रे, ७ अग
१४	१८ अप्र	४ अप्रे, २७ से
१५	२ से	२४ मार्च, १६ सेप्टे
१६	२१ अग	——
१७	१५ फर	३० जन, २७ जुला
१८	१ जुला	२० जन, १६ जुला
१९	२१ जून, १५ दि	९ जन, ५ जुला
२०	१० जून, ३ दि	२५ मई, १८ नवे
२१	२३ नवे	१५ मई, ८ न
२२	१९ अप्रे	४ मई, २८ अक्ट,
२३	——	——
२४	२१ मे	१४ मार्च, ६ मे
२५	१० से	३ मा, २७ अग
२६	६ फर	२० फर, १६ अग
२७	२६ जन, २२जुला	३१ दिस
२८	१८ जुला	५ जून, २० दि
२९	२४ नवे	१४ जू, ९ दि
३०	२२ मई, १४ नवे	४ जून
३१	१० मई	२५ अप्रे, १९ अग
३२	२८ अप्र	१४ अप्रे, ७ अग
३३	१२ मे	३ अप्रे, २७ से
३४	८ मार्च, १ से	——
३५	——	११ फर, ७ अग
३६	१६ फर, १२ जुला।	३१ जन, २६ जुला
३७	१ जुला, २५ दि०	२० जन, १५ जुला
३८	२१ जून	३० नवे
३९	४ दि	२६ मई, १८ नवे
४०	२९ अप्रे	१५ मई, ७ नवे
४१	१८ अप्रे, १२ अक्टो	——
४२	२ अक्टो	२५ मा, १८ से
४३	२८ फर	१४ मा, ७ से
४४	१७ फर	२ मा, २७ अग
४५	१ अग	——
४६	२२ जुला, १६ दि	११ जन, ६ जुला, ३१ दि०
४७	——	२६ जून, २१ दि
४८	२१ मई, २४ नवे	१४ जून
४९	२० मे	६ मे, २९ अक्टो

ख्रीष्टाब्द	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
५०	६ मे	२५ अप्रे, १८ अक्टो
५१	२३ मे	१४ अप्रे, ८ अक्टो
५२	१८ मा	——
५३	६ मा	२१ फर १८ अग
५४	२३ जुला, २६ फर	२१ फर, ७ अग
५५	१३ जुला	३१ जन, २७ जुला
५६	१ जुला, २५ दि	१० दि
५७	——	५ जू, २९ न
५८	११ मे	२६ मे, ११ न
५९	३० अप्रे, २५ अक्टो	——
६०	१३ अक्टो	४ अप्रे, १८ मे
६१	१० मा, ३ अक्टो	२४ मा, १८ मे
६२	२८ फ	१३ मा, ७ मे
६३	१७ फ	——
६४	१ अग	२२ ज १७ जुला
६५	१६ दि	११ ज, ६ जुला
६६	—	३१ दि २६ जू
६६	—	२६ ज
६७	३१ मे	१० मे, ६ न
६८	२१ मे	६ मे, २६ अक्टो
६९	४ अक्टो	२५ अप्रे, १८ अक्टो
७०	२० मे	—
७१	२० मा	४० मा, २८ अग
७२	७ अग	२२ फ, १७ अग
७३	२१ जुला	१२ फ ६ अग
७४	१७ जुला	२२ दि
७५	५ ज	२६ दि, १० ज, ११ दि
७६	२१ मे	५ न, २९ न
७७	——	——
७८	३० अप्रे २४ अक्टो	१६ अप्रे ६ अक्टो
७९	११ अक्टो	५ अप्रे, २६ मे
८०	१० मा	२४ मा, १० मे
८१	२७ फ २१ अग	——
८२	१२ अग	२ फ, २८ जुला
८३	२ अग, २७ दि	२१ ज, २३ जुला

ख्रीष्टाब्द	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
८४	१६ दि	११ ज, ६ जुला
८५	१० जू	२७ मे, २० न
८६	३१ मे	६ न १० मे
८७	१५ अक्टो	६ मे, ३० अक्टो
८८	१० अप्रे, ३ अक्टो	——
८९	२० मा	१५ मा, ८ मे
९०	२० मा	४ मा, २८ अग
९१	३ अग	२२ फ, १७ अग
९२	२७ ज,	२७ जुला ——
९३	——	१ ज, २१ दि
९४	५ ज, १ जू	१० जू, १० दि
९५	२७ मे	६ जू
९६	१० मे २ न	२६ अप्रे, २० अक्टो
९७	१ अप्रे	१५ अप्रे, ९ अक्टो
९८	२१ मा	४ अप्रे, २६ मे
९९	३ मे	——
१००	२१ अग	१३ फ, ७ अग
१०१	१७ ज, १२ अग	१ फ, २८ जुला
१०२	२७ दि	२२ ज, १७ जुला
१०३	२२ जू	१ दि
१०४	१० जू	२७ मे, ११ न
१०५	२५ अक्टो	१६ मे ६ न
१०६	२१ अप्रे	——
१०७	११ अप्रे	२६ मा, २० मे
१०८	३० मा, २४ अग	१५ मा, ८ मे
१०९	१४ अग	४ मा, २८ अग
११०	३ अग	——
१११	२७ ज	१२ ज, ८ जुला
११२	१० जू	१ ज २७ जू
११३	१ जू, २१ न	१६ जू
११४	२२ मे १५ न	३१ अक्टो
११५	४ न,	२६ अप्रे, २१ अक्टो
११६	३१ मा,	१५ अप्र, ९ अक्टो
११७	२१ मा	——
११८	३ मे	२३ फ १८ अग

ईस्वी सन्।	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
११९	——	२३ फ, ८ अग
१२०	१८ ज	२ फ. २८ जुला
१२१	२ जुला	११ दि
१२२	२१ ज,	७ जू, १ दि
१२३	६ न	२८ मे. २१ न
१२४	१ से, २५ अक्ट	——
१२५	२१ अप्रे,	५ अप्रे, ३० से
१२६	१० अप्रे, ४ से	२६ मा. १८ से
१२७	५ अग	१६ मा, ८से
१२८	——	——
१२९	६ फ	२३ ज, १८ जुला
१३०	२७ ज, २३ ज	१२ ज, ८ जुला
१३१	१२ जू	१ ज, २८ जू
१३२	१ जू, २५ न	१० न
१३३	१४ न	६ मे, ३१ अक्टू
१३४	१२-अप्रे	२६ अप्रे
१३५	१ अप्रे, २५ से	१५ अप्रे
१३६	१३ से	६ मा, २६ अग
१३७	३ से	२३ फ, १८ अग
१३८	२८ ज,	१२ फ, अग
१३९	१८ ज	२३ दि
१४०	२ जुला	१८ जू, ११ दि
१४१	२१ जू, १६ न	७ जू, १ दि
१४२	१३ मे, ५ न	२७ मे
१४३	२ से	१७ अप्रे, ११ अक्टो
१४४	२० अप्रे,	५ अप्रे, २६ से
१४५	४ से	२६ मा, १८ से
१४६	२८ फ	——
१४७	१७ फ	३ फ, ३० जुला
१४८	२जुला, ७फ,	२३ ज, १८ जुला
१४९	२३ जू	११ ज, ८ जुला
१५०	१२ जू, ६ दि	२२ न
१५१	२५ न	१८ मे, ११ न
१५२	२२ अप्रे	६ मे, ३१ अक्ट
१५३	११ अप्रे	२६ अप्रे

सन् ई०	सूर्य ग्रहण	च० ग्र०
१५४	३१ मा, २५ से	१७ मा, ६ से
१५५	१४ से	६ मा, ३० अग
१५६	८ फ	२४ फ, १८ अग
१५७	२८ ज, २४ जू	——
१५८	१३ जुला	२ ज, २६ जू, २३ दि
१५९	——	१८ जू, १२ दि
१६०	२३ मे	६ जू
१६१	१२ मे	२२ अक्टू
१६२	२ से	१७ अप्रे, ११ अक्टू
१६३	१६ से	६ अप्रे, ३० से
१६४	४ से	——
१६५	२८ फ	१३ फ, ६ अग
१६६	१८ फ	२ फ, ३० जुला
१६७	४ जुला	२३ ज, १६ जुला
१६८	२३ जू, १७ दि	२ दि
१६९	६ दि	२८ मे, २२ न
१७०	३ मे	१७ मे, ११ न
१७१	२२ अप्रे	७ से
१७२	५ अक्टू	२७ मा, २१ से
१७३	——	१७ मा, ६ से
१७४	१६ फ	६ मा. ३० अग
१७५	८ फ, ४ अग	——
१७६	२३ जुला	१३ ज, ६ जुला
१७७	१३ जुला, ८ दि	२ ज, २८ जू, २३ दि
१७८	२७ न	१७ जू
१७९	२४ मे	२ न
१८०	१२ मे	२७ अप्रे, २१ अक्टू
१८१	२६ से	१७ अप्रे, १० अक्ट
१८२	——	——
१८३	११ मा	२५ फ, २१ अग
१८४	२६ फ	१४ फ, ९ अग
१८५	१४ जुला	२ फ, ३० जुला
१८६	८ ज, ४ जुला, २८ दि	१४ दि

ई० सन्	सू० ग्रं०	चं० ग्रहण
१८७	१० दि	८ जू, ३ दि
१८८	१४ मे	२८ मे, २१ न
१८९	३ मे, २७ अक्टू	१३ मे
१९०	२२ अप्रै	८ अप्रै
१९१	१ अक्टू	२८ मा, २० सि
१९२	१ मा	१६ मा, ६ सि
१९३	१६ फ	——
१९४	४ अग	२४ फ, २० जुला
१९५	२४ जुला, १८ दि	१३ ज, १० जुला
१९६	७ दि	३ ज, २८ जू
१९७	३ जू	१२ न
१९८	२० मे	८ मे, १ न
१९९	७ अक्टू	२८ अप्रै, २१ अक्टू
२००	१ अप्रै	——
२०१	२२ मा	७ मा, ३१ अग
२०२	११ मा	२४ फ, २० अग
२०३	२५ जुला	१३ फ, १० अग
२०४	१४ जुला	२४ दि
२०५	२८ दि	१८ जू, ११ दि
२०६	७ मे	८ जू, ३ दि
२०७	१४ मे	२८ मे
२०८	३ मे	१८ अप्रै
२०९	१६ अक्टू	७ अप्रै, १ अक्टू
२१०	१३ मा	२८ मा, २० सि
२११	२ मा, २५ अग	——
२१२	१ अग	५ फ, ३१ जुला
२१३	३ अग	२४ ज, २० जुला
२१४	——	१३ ज, ६ जुला
२१५	१४ जू	——
२१६	२ जू	१८ मे, १२ न
२१७	१८ अक्टू	८ मे, १ न
२१८	१२ अप्रै, ७ अक्टू	२८ अप्रै, २१ अक्टू
२१९	७ अप्रै	१८ मा, ११ सि
२२०	२२ मा	६ मा, ३१ अग
२२१	५ अग	२४ फ, २० अग
२२२	२० ज, २५ जुला	——
२२३	१८ ज	४ ज, ३० जू, २५ दि
२२४	८ ज, ४ जू	१८ जू, १२ दि
२२५	२४ मे, १७ न	८ जू
२२६	७ न	——
२२७	——	१८ अप्रै, १२ अक्टू
२२८	२३ मा	७ अप्रै, १ अक्टू
२२९	१३ मा	——
२३०	२५ अग	१४ फ
२३१	१५ अग	४ फ, ११ अग
२३२	१० ज, २६ दि	२५ ज, १६ जुला
२३३	२५ जू	——
२३४	१४ जू	३० मे, २३ न
२३५	३ जू, २८ अक्टू	२० मे, १२ न
२३६	१७ अप्रै, १० अक्टू	८ मे, ३१ अक्टू
२३७	——	१२ मे
२३८	२ अप्रै	१८ मा, ११ सि
२३९	१६ अग	७ मा, १ सि
२४०	५ अग	१० फ
२४१	२६ ज	१५ ज, १० जुला
२४२	१५ जू	४ ज, २६ जुला, २४ दि
२४३	४ जू	१३ जू
२४४	२४ मे	——
२४५	७ न	२८ अप्रै, २२ अक्टू
२४६	३ अप्रै	१८ अप्रै, १२ अक्टू
२४७	२४ मा	७ अक्टू
२४८	४ मा	२६ फ, २१ अग
२४९	२५ अग	१४ फ, १० अग
२५०	२० ज	४ फ, ३१ जुला
२५१	१ ज, ६ जुला	——
२५२	२४ जू	८ जू, १ दि
२५३	१३ जू	१० मे, २२ न
२५४	३ मे, २७ अक्टू	१८ मे, १२ न
२५५	२१ अप्रै	६ अक्टू
२५६	१३ अप्रै	२६ मा

ईस्वी०	सू.ग्र०	चं० ग्रहण
२५७	२६ अग	१७ मा, ११ से
२५८	१६ अग	७ मा
२५९	६ अग	२६ ज, २१ जुला
२६०	३० ज	१६ ज, ११ जुल
२६१	१५ ज०	४ ज, २८ ज
२६२	४ ज०, २९ न	——
२६३	१८ न	१० मे, ३ न
२६४	१४ अप्रे	२८ अप्रे, २२ अक्टू
२६५	३ अप्रे	१७ अप्रे, १२ अक्टू
२६६	२४ मा, १६ से	८ मा
२६७	५ से	२६ फ, २२ अग
२६८	३१ ज	१५ फ, १० अग
२६९	२६ जुला	—
२७०	५ जुला	२० ज०, १५ दि
२७१	२४ ज०, २० न	१० ज०, ४ दि
२७२	८ न	३० मे, २२ न
२७३	——	४ मे, १३ अक्टू
२७४	२४ अप्रे	८ अप्रे, ३ अक्टू
२७५	७ से	२८ मा, २२ से
२७६	३ मा, २६ अग	१७ मा
२७७	२० फ	५ फ, १ अग
२७८	९ फ	२६ ज०, २१ जुला
२७९	२६ ज०, २१ दि	१५ ज, ११ जुला
२८०	१४ ज०, ९ दि	——
२८१	——	२१ मे, १३ न
२८२	२५ अप्रे	१० मे, ३ न
२८३	१५ अप्रे ८ अक्टू	२९ अप्रे, २३ अक्टू
२८४	३ अप्रे, २६ से	——
२८५	१६ से	८ मा, १ से
२८६	११ फ	२६ फ, २१ अग
२८७	३१ ज, २७ जुला	१० अग
२८८	१६ जुला	१ जुला, २५ दि
२८९	५ जुला, ३० न	२० ज०, १४ दि
२९०	१९ न	१० ज०, ३ दि
२९१	१५ मे	२५ अक्टू
२९२	४ मे	१९ अप्रे, १३ अक्टू
२९३	१७ से	८ अप्रे, २ अक्टू
२९४	१४ मा, ७ से	२८ मा
२९५	३ मा	१७ फ
२९६	——	६ फ, ३१ जुला
२९७	६ जुला, ३१ दि	२५ ज, २१ जुला
२९८	२५ ज०, २० दि	——
२९९	१० दि	१ ज०, २४ न
३००	५ मे	२० मे, १३ न
३०१	२५ अप्रे	९ मे, ३ न
३०२	८ अक्टू	——
३०३	२७ मे	१९ मा, १२ से
३०४	२२ फ	८ मा, ३१ अग
३०५	१० फ, ७ अग	२१ अग
३०६	२०जुला	१२ जुला
३०७	१६ जुला	५ ज, २ जुला, २५ दि
३०८	३० न	२० जुला, १४ दि
३०९	२५ मे	४ न
३१०	१५ मे	३० अप्रे, २५ अक्टू
३११	——	१९ अप्रे, १४ अक्टू
३१२	१७ से	८ अप्रे
३१३	७ मे	२७ फ
३१४	३ मा	१७ फ, २२ अग
३१५	१८ जुला	६ फ, १ अग
३१६	६ जुला, ३१ दि	——
३१७	२० दि	११ ज०, ५ दि
३१८	१६ मे	३१ मे, २४ न
३१९	६ मे	२० मे, १४ न
३२०	२५ अप्रे, १८ अक्टू	——
३२१	८ अक्टू	३० मा, २३ मे
३२२	४ मा	१९ मा, १२ से
३२३	२१ फ	१ से
३२४	६ अग	२२ जुला
३२५	२६ जुला, २२ दि	१६ ज, १२ जुला
३२६	११ दि	५ ज, १ जुला, २५ दि

ईस्वी सन्	सूर्य ग्रहण	चन्द्र ग्रहण
३२७	६ जू	——
३२८	२५ मे	१० मे, ४ न
३२९	८ अक्टू	२८ अप्रे, २४ अक्टू
३३०	२८ से	१६ अप्रे १३ अक्टू
३३१	२५ मा	१० मा
३३२	१३ मा	२८ फ, २२ अग
३३३	२८ जुला	१६ फ, १० अग
३३४	१७ जुला	१ अग
३३५	११ ज	२२ जू, १५ दि
३३६	२७ मे	१० जू, ५ दि
३३७	१६ मे	३१ मे, २४ न
३३८	६ मे	——
३३९	१८ अक्टू	१० अप्रे, ४ अक्टू
३४०	१४ मा	३० मा, २२ से
३४१	४ मा	१९ मा, ११ से
३४२	१७ अग	३ अग
३४३	६ अग	२७ ज, २३ जुला
३४४	२ ज, २१ दि	१६ ज, १२ जुला
३४५	१६ जून	४ ज
३४६	६ जून	२१ मे, १५ न
३४७	१० अक्टू	११ मे, ४ न
३४८	८ अक्टू	२८ अप्रे २३ अक्टू
३४९	४ अप्रे	२१ मा
३५०	२४ मा	१० मा, २ से
३५१	८ अग	२७ फ २३ अग
३५२	२ फ २७ जुला	१२ अग
३५३	२२ ज, १७ जुला	३ जुला २६ दि
३५४	११ ज, ७ जुल	२२ जू, १६ दि
३५५	१८ मई	११ जू ६ दि
३५६	१६ मई, ८ न	——
३५७	२६ अक्टू	२० अप्रे, १४ अक्टू
३५८	२६ मा	१० अप्रे, ३ अक्टू
३५९	१३ मा	३१ मा, २३ से
३६०	२८ अग	१३ अग
३६१	१७ अग	६ फ, ३ अग
३६२	——	२६ ज, २१ जुला
३६३	२ ज	१६ ज
३६४	१६ जू	१ ज, २६ न
३६५	६ जू	२१ मे, १५ न
३६६	२० अक्टू	११ मे ४ न
३६७	१५ अप्रे, १० अक्टू	——
३६८	३ अप्रे	२१ मा, १३ से
३६९	——	१० मा, २ से
३७०	८ अग	——
३७१	७ फ, २८ जुला	१४ जुला
३७२	२७ ज	७ ज, २ जुला २६ दि
३७३	७ जुला	२१ जू, १६ दि
३७४	२७ मे, २० न	——
३७५	१० न	२ मे, २६ अक्टू
३७६	——	२० अप्रे, १४ अक्टू
३७७	२५ मा	१० अप्रे ३ अक्टू
३७८	१५ मा, ८ से	——
३७९	२८ अग	१७ फ, १४ अग
३८०	२५ ज	७ फ २ अग
३८१	१२ ज, ८ जुला	२६ ज
३८२	२७ जू	१७ जू, ७ दि
३८३	११ न	१ जू, २६ न
३८४	३१ अक्टू	२१ मे, १४ न
३८५	——	——
३८६	१५ अप्रे	१ अप्रे, २४ से
३८७	३० अग	२१ मा, १४ से
३८८	१८ अग	८ मा, २ से
३८९	१२ फ	——
३९०	——	१७ ज १३ जुला
३९१	१८ ज	७ ज, २ जुला २७ दि
३९२	७ जू	——
३९३	२० न	१२ मे, ५ न
३९४	१६ अप्रे	२ मे, २१ अक्टू
३९५	६ अप्रे	२१ अप्रे, १४ अक्टू
३९६	——	——
३९७	——	२८ फ, २४ अग

ईस्वीसन्	सूर्यग्रहण	चा० ग्र०
३९८	३ फ	१७ फ, १४ अग
३९९	२३ ज १६ जुला	७ फ
४००	८ जुला	२२ ज, १७ दि
४०१	२७ ज	२२ ज, ६ दि
४०२	११ न	१ ज, २५ न
४०३	७ से, ३१ अक्टू	——
४०४	२५ अप्रे	११ अप्रे, ४ अक्टू
४०५	१५ अप्रे, ८ से	३१ मा, २४ से
४०६	६ मा, २८ अग	२० मा, १४ से
४०७	२४ फ, १९ अग	——
४०८	१३ फ,	२६ ज, २४ जुला
४०९	२१ ज	१७ ज, १३ जुला
४१०	१८ ज, १२ दि	७ ज,
४११	——	२३ मे, १६ न
४१२	२७ अप्रे	१२ मे, ४ न
४१३	१६ अप्रे	२ मे, २५ अक्टू
४१४	६ अप्रे, ३० से	——
४१५	१६ से	११ मा, ५ से
४१६	——	२८ फ, २४ अग
४१७	३ फ,	१७ फ, १३ अग
४१८	१६ जुला	२६ दि
४१९	८ जुला, २ दि	२३ जुला, १८ दि
४२०	——	१२ ज, ६ दि
४२१	२७ मे, ११ न	——
४२२	६ मे	२२ अप्रे, १६ अक्टू
४२३	२ अप्रे	१२ अप्रे, ५ अक्टू
४२४	८ से	३१ मा, २४ से
४२५	६ मा, २६ अग	——
४२६	२३ फ	८ फ, ४ अग
४२७	१० जुला	२६ ज, १४ जुला
४२८	२२ दि	१८ ज, १२ जुला
४२९	१२ दि	३ ज, २७ न
४३०	——	२३ मे, १६ न
४३१	२७ अप्रे	१३ मे, ५ "
४३२	१६ अप्रे, १० अक्टू	——
४३३	२६ से	२१ मा, १५ से

ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
४३४	२५ फ	११ मा, ४ से
४३५	१४ फ	२८ फ, २४ अग
४३६	३ फ, २६ जुला	——
४३७	१३ दि, १६ जुला	८ ज, ३ जुला, ८ दि
४३८	३ दि	२७ ज, १७ दि
४३९	—	——
४४०	१७ मे	३ मे, २६ अक्टू
४४१	६ मे, १ अक्टू	२२ अप्रे, १६ अक्ट
४४२	२० से	११ अप्रे, ५ अक्टू
४४३	१७ मा	——
४४४	——	१६ फ १४ अग
४४५	२० जुला	८ फ ३ अग
४४६	१० जुला	२८ ज, २४ जुला
४४७	२६ ज, २३ दि	१४ ज, ८ दि
४४८	——	३ ज, २६ न
४४९	८ मे	२३ मे, १६ न
४५०	——	——
४५१	——	२ अप्रे, २६ से
४५२	७ मा	२१ मा, १५ से
४५३	२४ फ	११ मा, ४ से
४५४	१३ फ, १० अग	——
४५५	३० जुला	१८ ज, १५ जुला
४५६	१३ दि	६ ज, २ जुला, २७ दि
४५७	८ जू, २ दि	——
४५८	२८ मे	१४ मे, ६ न
४५९	१८ मे, १२ अक्टू	३ मे, २७ अक्टू
४६०	३० से	२१ अप्रे, १६ अक्टू
४६१	२७ मा, २० से	——
४६२	१७ मा	२ मा, २५ अग
४६३	१ अग	११ फ, १५ अग
४६४	२० जुला	६ फ, ३ अग
४६५	१३ ज, ६ जुला	२४ जू, १८ दि
४६६	२ ज	१४ जू, ७ दि
४६७	१९ मे	३ जू, २७ न
४६८	८ मे, १ न	——

ई० सन्	सू० ग्रहण	चन्द्रग्रहण
४६८	२१ अक्टू०	१२ अप्रै, ७ अक्टू०
४७०	१० अक्टू०	१ अप्रै, २६ से
४७१	७ मा	२२ मा, १५ से
४७२	२० अग	——
४७३	१८ अग	३० ज, २५ जुला
४७४	४ ज	१८ ज, १५ जुला
४७५	१६ जू	८ ज, ४ जुला
४७६	७ जू	२४ मे, १७ न
४७७	२८ मे	१३ मे, ६ न
४७८	१२ अक्टू०	२ मे, २७ अक्टू०
४७९	८ अप्रै, १ अक्टू०	——
४८०	२७ मा	१२ मा, ५ मे
४८१	११ अग	२ मा, २५ अग
४८२	३१ जुला	१८ फ, १४ अग
४८३	२४ ज	६ जुला, ३० दि
४८४	१४ ज	२४ जू, १८ दि
४८५	२८ मे	१४ जू, ७ दि
४८६	१६ मे, १२ न	——
४८७	१ न	२३ अप्रै, १८ अक्टू०
४८८	२६ मा	१२ अप्रै ६ अक्टू०
४८९	१८ मा	१ अप्रै, २५ से
४९०	७ मा	——
४९१	२१ अग	१० फ, ५ अग
४९२	१५ ज	३० ज, २५ जुला
४९३	४ ज	१८ ज, १५ जुला
४९४	१८ जू०	५ जू०, २८ न
४९५	८ जू०, ३ न	२५ मे, १८ न
४९६	२२ अक्टू०	१३ मे, ६ न
४९७	१८ अप्रै	——
४९८	७ अप्रै	२३ मा, १६ से
४९९	२२ अग	१३ मा, ५ से
५००	१० अग	१ मा, २५ अग
५०१	३१ जुला	——
५०२	——	८ ज, ६ जुला, २८ दि
५०३	१० ज	२५ ज, १८ दि
५०४	२८ मई	——
५०५	——	४ मई, २८ अक्टू०
५०६	८ अप्रै	२८ अप्रै, १८ अक्टू०
५०७	३१ मा	१२ अप्रै ७ अक्टू०
५०८	१७ मा, ११ से	——
५०९	३१ अग	२० फ, १६ अग
५१०	——	८ फ, ५ अग
५११	१५ ज	२६ ज, २६ जुला
५१२	२६ जू०	१५ जू०, ८ दि
५१३	१८ जू०	४ जू०, २८ न
५१४	२ न	२४ मे, १८ न
५१५	२३ अक्टू	——
५१६	१८ अप्रै	३ अप्रै, २६ से
५१७	७ अप्रै	२७ मा, १५ से
५१८	२२ अग	१३ मा, ५ से
५१९	१६ फ, ११ अग	——
५२०	५ फ	२० ज, १६ जुला
५२१	२ जू०	८ ज, ५ जुला, २९ दि
५२२	१० जू०, ४ दि	——
५२३	२३ न	१५ मे, ८ न
५२४	११ न	३ मे, २८ अक्टू०
५२५	——	२३ अप्रै, १७ अक्टू०
५२६	२२ से	——
५२७	११ से	४ मा, २८ अग
५२८	६ फ	२० फ १६ अग
५२९	२५ ज	९ फ ५ अग
५३०	१५ ज, १० जुला	२० दि
५३१	३० जू०	१५ जू० १० दि
५३२	१३ न	३ जू०, २८ न
५३३	१० मे	——
५३४	२६ अप्रै	१४ अप्रै, ८ अक्टू०
५३५	१८ अप्रै, १२ से	४ अप्रै, २७ से
५३६	१ से	२३ मा १५ मे
५३७	२५ फ, २१ अग	——
५३८	१५ फ	३१ ज, २८ जुला

ई० सन्	सूर्य ग्रहण	चं० ग्रहण
५३९	१ जुला	२० ज, १७ जुला
५४०	२० जुला, १४ दि	६ ज, ५ जुला
५४१	३ दि	२५ मे १६ न
५४२	——	१५ मे, ८ न
५४३	२० अप्रै	४ मे, २८ अक्टू
५४४	८ अप्रै	——
५४५	२२ से	१४ मा, ६ से
५४६	१६ फ	३ मा, २७ अग
५४७	६ फ	२० फ, १७ अग
५४८	२१ जुला	३० दि
५४९	१० जुला, ५ दि	२५ जू, २० दि
५५०	२४ न	१५ ज, ८ दि
५५१	२१ मे	४ जू
५५२	६ मे	२८ जू, १८ अक्टू
५५३	२३ से	१४ अप्रै, ७ अक्टू
५५४	——	३ अप्रै, २७ से
५५५	——	——
५५६	२६ फ	११ फ, ६ अग
५५७	१५ फ, १२ जुला	३० ज, २७ जुला
५५८	१ जुला	२० ज, १६ जुला
५५९	——	३० न, २१ जू
५६०	३ दि	२५ मे, १६ न
५६१	३० अप्रै	१५ मे, ८ न
५६२	१६ अप्रै, १६ अक्टू	——
५६३	३ अक्टू	२५ मा, १८ से
५६४	२८ फ, २१ से	१३ मा, ६ से
५६५	१६ फ	२ मा, २७ अग
५६६	१ अग	——
५६७	२२ जुला, १६ दि	११ ज, ७ जुला, ३१ दि
५६८	——	२५ जू, २० दि
५६९	२१ मे, २४ न	२४ जू
५७०	२० मे,	६ मे, २८ अक्टू
५७१	९ मई	२५ अप्रै, १८ अक्टू
५७२	२३ से	१४ अप्रै, ७ अक्टू
५७३	२६ मा, १२ से	——
५७४	८ मा	२१ फ, १८ अग
५७५	२३ जुला	११ फ, ७ अग
५७६	१२ जुला	३१ ज, २६ जुला
५७७	५ ज, २५ दि	२१ दि
५७८	——	५ जू, ३० न
५७९	११ मे	२६ मे, १८ न
५८०	२६ अप्रै, २४ अक्टू	——
५८१	१३ अक्टू	५ अप्रै, २८ से
५८२	१० मा, २ अक्टू	२५ मा, १८ से
५८३	२८ फ	१४ मा, ७ से
५८४	१७ फ, ११ अग	——
५८५	१ अग	२१ ज, १७ जुला
५८६	१६ दि	११ ज, ६ जुला, ३१ दि
५८७	११ जू, ५ दि	२५ जू
५८८	३१ मे	१६ मे, ८ न
५८९	२० मे, १५ अक्टू	६ मे, २८ अक्टू
५९०	४ अक्टू	२५ अप्रै, ८ अक्टू
५९१	३० मा, २३ से	——
५९२	१८ मा	४ मा, २८ अग
५९३	२ अग	२१ फ, १७ अग
५९४	२३ जुला	१० फ, ६ अग
५९५	१६ जन, १२ जुला	२२ दि
५९६	५ जन, २५ दि	१५ जू, १० दि
५९७	२१ मे	४ जू, २८ न
५९८	११ मे	——
५९९	३० अप्रै, २५ अक्टू	१६ अप्रै, ६ अक्टू
६००	——	४ अप्रै २८ से
६०१	१० मा	२४ मा, १७ से
६०२	२२ अग	——
६०३	१२ अग	१ फ, २८ जुला
६०४	१७ ज, १ अग, २६ दि	२२ ज, १६ जुला
६०५	२२ जू, १६ दि	११ ज, ६ जुला

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
६०६	११ जु	२७ मे, २० न
६०७	३१मे, २६ अक्टू	१७ मे ६न
६०८	——	५ मे २६ अक्टू
६०९	१० अप्रै	——
६१०	३० मा	१५ मा, ८ से
६११	२० मा	४ मा, २९ अग
६१२	२ अग	२२ फ, ११ अग
६१३	२७ जुला	——
६१४	——	{ १ ज, २७ ज, २२ दि
६१५	७ ज, २ जू	१६ जू ११ दि
६१६	२१ मे, १५ न	५ जू
६१७	१ मे, ४ न	२६ अप्रै, २० अक्टू
६१८	१ अप्रै, २४ अक्टू	१५ अप्रै ९ अक्टू
६१९	२१ मा	४ अप्रै २९ से
६२०	१० मा, २ से	——
६२१	२२ अग	१२ फ, ८ अग
६२२	१७ ज, १२ अग	१ फ, २८ अग
६२३	२७ दि	२२ ज, १७ जुला
६२४	२१ जू	६ जू, ३० न
६२५	१० जू	२७ मे, २० न
६२६	२६ अक्टू	१७ मे, ९ न
६२७	२१ अप्रै, ५ अक्टू	——
६२८	१० अप्रै	२५ मा, १९ से
६२९	३० मा, २४ अग	१५ मा, ८ से
६३०	१३ अग	४ मा, २८ अक्टू
६३१	३ अग	——
६३२	२७ ज	१३ ज ७ जुला
६३३	१२ जू	{ १ ज २७ ज, २१ दि
६३४	१ जू	१६ जू
६३५	१५ न	७ मे ३१ अक्टू
६३६	११ अप्रै, ३ न	६ अप्रै २० अक्टू
६३७	१ अप्रै	१५ अप्रै ९ अक्टू
६३८	२१ मा	——
६३९	३ मे	२३ फ, १९ अग
६४०	——	१३ फ, ७ अग
६४१	१७ ज	१ फ, २७ जुला
६४२	२ जुला	१२ दि
६४३	२१ जू	७ जू, १ दि
६४४	५ न	२७ मे, १९ न
६४५	१ मे, २५ अक्टू	——

ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
६४६	२१ अप्रै	५ अप्रै, ३० मे
६४७	४ से	२६ मा, १९ मे
६४८	२४ अग	१४ मा, ७ से
६४९	१७ फ, १३ अग	——
६५०	६ फ	२३ ज, १८ जुला
६५१	२७ ज, २३ जू	१२ ज, ८ जुला
६५२	११ जू	१ ज, २७ जू
६५३	१ जू, २६ न	१८ मे, १० न
६५४	——	७ मे, ३१ अक्टू
६५५	१२ अप्रै	२६ अप्रै २१ अक्टू
६५६	३१ मा, २३ मे	——
६५७	१३ मे	५ मा, २० अग
६५८	८ फ, ३ मे	२३ फ, १८ अग
६५९	२८ ज	१३ फ ८ अग
६६०	१८ ज, १३ जुला	२२ दि
६६१	२ जुला	१८ जू ११ दि
६६२	——	७ जू १ दि
६६३	——	——
६६४	१ मे	१६ अप्रै, १० अक्टू
६६५	२१ अप्रै	५ अप्रै, ३० मे
६६६	४ से	२६ मा, १९ से
६६७	२८ फ, २५ अग	——
६६८	१७ फ	३ फ, २९ जुला
६६९	६ फ	२३ ज, १८ जुला
६७०	२३ जू, १८ दि	१२ ज, ८ जुला
६७१	१२ जू, ७ दि	२२ न
६७२	२५ न	१७ मे, १० न
६७३	२२ अप्रै	६ मे, ३१ अक्टू
६७४	१२ अप्रै ५ अक्टू	——
६७५	२५ से	१७ मा, ९ से
६७६	१३ से	५ मा, २९ अग
६७७	——	२३ फ, १८ अग
६७८	२३ ज, २४ जुला	——
६७९	१३ जुला	{ २ ज, २८ जू, २३ दि
६८०	२७ न	१० जू, ११ दि
६८१	२३ मे १६ न	७ जू
६८२	१२ मे	२७ अप्रै, २२ अक्टू
६८३	२ मे	१६ अप्रै, ११ अक्टू
६८४	१४ से	५ अप्रै, २९ से
६८५	४ से	——
६८६	२८ फ	१४ फ, ९ अग

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
६८७	१५ जुला	३ फ, ३० जुला
६८८	३ जुला २८ दि	२३ ज, १८ जुला
६८९	२२ जू, १७ दि	२ दि
६९०	६ दि	२८ मे, २२ न
६९१	३ मे	१७ मे, ११ न
६९२	२२ अप्र	१६ मे
६९३	५ अक्टू	२७ मा, २० से
६९४	—	१७ मा, ६ से
६९५	१९ फ	६ मा, २६ अग
६९६	—	—
६९७	२३ जुला, १६ दि	१३ ज, ८ जुला
६९८	१३ जुला ८ दि	२ ज, २८ जू, २२ दि
६९९	३ ज २७ न	१८ जू
७००	२३ मे	१ न
७०१	१२ मे	२७ अप्रे, २१ अक्ट
७०२	२६ से	१६ अप्रे, १० अक्ट
७०३	२२ मा	—
७०४	१० मा	२५ फ, १९ अग
७०५	२८ फ, २५ जुला	१२ फ, ९ अग
७०६	१४ जुला	२ फ, ३० जुला
७०७	४ जुला, २६ दि	१३ दि
७०८	१७ दि	८ जू, ६ दि
७०९	१४ मे	२८ मे, २२ न
७१०	३ मे, २७ अक्टू	१७ मे
७११	१६ अक्टू	७ अप्रे, १ अक्टू
७१२	५ अक्टू	२७ मा, १९ से
७१३	१ मा	१७ मा, ६ से
७१४	१९ फ, १५ अग	—
७१५	४ अग	२४ ज, २१ जुला
७१६	२३ जुला	१३ ज, ६ जुला
७१७	—	२ ज, २८ जू
७१८	३ जू	१२ न
७१९	२ मे	८ मे, २ न
७२०	६ अक्टू	२७ अप्रे, २१ अक्टू
७२१	१ अप्रे, २६ से	—
७२२	२१ मा	७ मा, ३१ अग
७२३	११ मा	२४ फ, २० अग
७२४	२५ जुला	१३ फ, ९ अग
७२५	१९ ज, १४ जुला	२४ दि
७२६	८ जू, २८ दि	१९ जू, १३ दि
७२७	२५ मे	८ जू, ३ दि

ई० सन	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
७२८	१३ मे, ६ न	२७ मे
७२९	२७ अक्टू	१८ अप्रे, ११ अक्ट
७३०	१६ अक्टू	७ अप्रे, १ अक्ट
७३१	१२ मा	२८ मा, २० से
७३२	१ मा, २५ अग	—
७३३	१४ अग	३ फ, ३१ जुला
७३४	१० ज, ३ अग, ३० दि	२४ ज, २० जुला
७३५	२६ दि	१३ ज, ८ जुला
७३६	—	२३ न
७३७	३ जू	१८ मे, १२ न
७३८	१८ अक्टू	८ मे, १ न
७३९	७ अक्टू	—
७४०	१ अप्रे	१८ मा, १० से
७४१	—	७ मा, ३१ अग
७४२	५ अग	२४ फ, २० अग
७४३	३० ज	—
७४४	१९ ज	४ ज, २८ जू, २४ दि
७४५	४ जू	१८ जू, १३ दि
७४६	२५ मे	८ जू
७४७	१४ मे, ७ न	२८ अप्रे
७४८	२७ अक्टू	१८ अप्रे ११ अक्ट
७४९	२३ मा	७ अप्रे, ३० से
७५०	—	—
७५१	२५ अग	१५ फ, ११ अग
७५२	१४ अग	४ फ, ३१ जुला
७५३	६ ज, २६ दि	२४ ज, २० जुला
७५४	२५ जू	४ दि
७५५	१४ जू	३० मे, २३ न
७५६	२८ अक्टू	१८ मे, ११ न
७५७	२३ अप्र	८ मे
७५८	१२ अप्रे	२६ मा, २१ से
७५९	२ अप्रे	१८ मा, ११ से
७६०	१५ अग	६ मा, ३१ अग
७६१	५ अग	—
७६२	३० ज	१५ ज, १० जुला
७६३	१८ ज, १६ जू	४ ज, ३० जू, २५ दि
७६४	४ जू, २८ न	१८ जू
७६५	२४ मे	६ मे
७६६	७ न	२६ अप्रे, २२ अक्ट

ई०सन्	सूर्य ग्रहण	चन्द्र ग्रहण
७६७	३ अप्रै	१८ अप्रै, १२ अक्टू
७६८	२३ मा	——
७६९	५ मे	२५ फ, २२ अग
७७०	२५ अग	१४ फ, ११ अग
७७१	—	४ फ, ३१ जुला
७७२	५ जुला	१५ दि
७७३	२४ ज	८ जू, ४ दि
७७४	—	३० मे २३ न
७७५	४ मे, २९ अक्टू	११ मे
७७६	—	८ अप्रै, २ अक्टू
७७७	१२ अप्रै	२८ मा, २१ से
७७८	२६ अग	१७ मा, ११ से
७७९	२१ फ, १६ अग	—
७८०	१० फ	२६ ज, २१ जुला
७८१	२९ ज, २६ जू	१५ ज, १० जुला
७८२	१५ जू	४ ज, २९ जू
७८३	२६ न	-
७८४	१७ न	६ मे, २ न
७८५	१३ अप्रै	२६ अप्रै, २२ अक्टू
७८६	२ अप्रै, २७ से	१२ अक्टू
७८७	१६ से	८ मा, २ से
७८८	--	२६ फ, २१ अग
७८९	३१ ज	१४ फ, १० अग
७९०	२० ज	२६ दि
७९१	६ जुला	२० जू, १५ दि
७९२	२४ जू, १८ न	८ ज, ३ दि
७९३	८ न	३० मई
७९४	४ मई	१३ अक्टो
७९५	२३ अप्रै	६ अप्रै, ३ अक्टू
७९६	६ से	२८ मा, २१ से
७९७	३ मा	---
७९८	२० फ	५ फ, १ अग
७९९	६ फ, ७ जुला	२६ ज, २१ जुला
८००	२६ जू	१५ ज, १० जुला
८०१	१५ जू, ९ दि	—
८०२	२६ न	२१ मे, १३ न
८०३	२५ अप्रै	१० मे, २ न
८०४	१३ अप्रै	२२ अक्टू
८०५	३ अप्रै, २६ से	१९ मा, १२ से
८०६	१६ से	८ मा, १ से
८०७	११ फ	२६ फ, २१ अग
८०८	३१ ज २७ जुला	——
८०९	१६ जुला	५ ज, १ जुला, २५ दि
८१०	५ जुला, ३० न	२० ज, १४ दि
८११	——	१० जू
८१२	१४ मे	२३ अक्टो
८१३	४ मे	१६ अप्रै, १३ अक्ट
८१४	१७ से	८ अप्रै, ३ अक्टू
८१५	७ से	२८ मा
८१६	३ मा	१७ फ, ११ अग
८१७	१८ फ	५ फ, ३१ जुला
८१८	७ जुला	२६ ज, २१ जुला
८१९	२६ जू	——
८२०	८ दि	३१ मे, २३ न
८२१	५ मे	२० मे, १३ न
८२२	२५ अप्रै	८ मे, २ न
८२३	८ अक्टू	२४ से
८२४	२६ से	१८ मा, १७ से
८२५	——	८ मा १ से
८२६	७ अग	—
८२७	२७ जुला	१७ ज, १२ जुला
८२८	१५ जुला	६ ज १ जू, २५ दि
८२९	३० न	२० जू
८३०	२५ मे	४ न
८३१	१४ मे	३० अप्रै, २४ अक्टू
८३२	——	१८ अप्रै, १३ अक्टू
८३३	२४ मे, १७ से	८ अप्रै
८३४	१४ मा, ७ से	२० फ
८३५	३ मा	१७ फ, १२ अग
८३६	१७ जुला	६ फ ३१ जुला
८३७	१० ज, १६ जुला, २१ दि	——
८३८	——	११ जू, ५ दि
८३९	१५ मे	१ ज, २५ न
८४०	५ मे, २६ अक्टू	२० मे, १३ न
८४१	२५ अग, १८ अक्टू	——
८४२	——	३० मा, २३ सि
८४३	५ मा	१६ मा, १२ से
८४४	२२ फ	——
८४५	७ अग	२७ ज, २२ जुला
८४६	२७ जुला, २२ दि	११ ज १२ जुला

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
८४७	११ दि	५ ज, २ जुला
८४८	५ जू	१४ न
८४९	२५ मे	११ मे, ४ न
८५०	९ अक्टू	३० अप्रे, २४ अक्टू
८५१	५ अप्रे	१९ अप्रे
८५२	२४ मा, १७ से	८ मा
८५३	१३ मा	२७ फ, २२ अग
८५४	२८ जू	१६ फ, १२ अग
८५५	१७ जुला	——
८५६	११ ज, २१ दि	२२ जू, १५ दि
८५७	२७ मे	२१ जू, ५ दि
८५८	—	३१ मे, २४ न
८५९	६ मे, २९ अक्टू	——
८६०	१८ अक्टू	८ अप्रे, ३ अक्टू
८६१	१५ मा	३० मा, २२ से
८६२	४ मा २९ अग	१९ मा ११ से
८६३	१८ अग	७ फ, ३ अग
८६४	६ अग	२७ ज, २२ जुला
८६५	१ ज, २१ दि	१५ ज, १२ जुला
८६६	१६ जू	२६ न
८६७	६ जू	२२ मे १५ न
८६८	१९ अक्टू	१० मे, ४ न
८६९	९ अक्टू	२६ अप्रे
८७०	——	२१ मा
८७१	२५ मा	१० मा, २ से
८७२	८ अग	२८ फ, २२ अग
८७३	१ फ २८ जुला	१२ अग
८७४	२१ ज, १७ जुला	३ जुला, २६ दि
८७५	११ ज, ७ जू	२२ जू, १६ दि
८७६	२७ मे	१० जू, ५ दि
८७७	९ न	——
८७८	२९ अक्टू	२० अप्रे, १५ अक्टू
८७९	२६ मा	१० अप्रे, ४ अक्टू
८८०	१४ मा, ८ से	३० मा, २२ से
८८१	२८ अग	१० फ, १३ अग
८८२	१७ अग	७ फ, ३ अग
८८३	—	२७ ज, २३ जुला
८८४	२ ज, २६ जू	१६ ज, ६ दि
८८५	१६ जू	१ जू, २६ न
८८६	६ जू	२१ मे, १६ न
८८७	२० अक्टू	११ मे
८८८	१५ अप्रे, ९ अक्टू	३१ मा

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चं० ग्र०
८८९	४ अप्रे	२१ मा, १३ से
८९०	१९ अग	१० मा, २ से
८९१	१२ फ	२३ अग
८९२	२ फ	१३ जुला
८९३	१७ जू	(६ ज, २ जुला, (२६ दि
८९४	७ ज	२२ जू, १६ दि
८९५	२८ मे, ३० म	——
८९६	——	१ मे, २५ अक्टू
८९७	५ अप्रे	२० अप्रे, १४ अक्टू
८९८	२६ मा	१० अप्रे, ३ अक्टू
८९९	१५ मा	२४ अग
९००	—	१८ फ, १३ अग
९०१	२३ ज	६ फ, ३ अग
९०२	१२ ज ८ जू	२६ ज, १७ दि
९०३	२७ जू	१२ ज, ७ दि
९०४	१६ जू १० न	३१ मे, २५ न
९०५	—	२१ मे
९०६	२६ अप्रे	——
९०७	१५ अप्रे	१ अप्रे, २४ से
९०८	२८ अग	२० मा, १३ से
९०९	१८ अग	२ से
९१०	१२ फ	२४ जुला
९११	२ फ	१७ ज, १४ जुला
९१२	१७ जू	७ ज, २ जुला, २६ दि
९१३	७ जू	—
९१४	२० न	१२ मे, ५ न
९१५	१७ अप्रे	२ मे २५ अक्टू
९१६	५ अप्रे	२० अप्रे, १३ अक्टू
९१७	१९ से	—
९१८	८ से	२८ फ, २४ अक्टू
९१९	३ फ,	१७ फ १४ अग
९२०	२४ ज, १८ जुला	७ फ, २८ दि
९२१	८ जुला	२३ जू, १७ दि
९२२	२७ जू, २१ न	१२ जू, ७ दि
९२३	११ न	१ जू
९२४	६ मे	—
९२५	२५ अप्रे	११ अप्रे ४ अक्टू
९२६	१० से	१ अप्रे २४ से
९२७	६ मा, ३ अग	१४ से
९२८	२४ फ, १८ अग	४ अग

ई० सन्	सूर्य ग्रहण	चन्द्र ग्रहण
९२९	१२ फ	२७ ज, २४ जुला
९३०	२८ जू	१७ ज, १३ जुला
९३१	१८ जू, १२ दि	७ ज,
९३२	३० न	२२ मा, १६ न
९३३	२७ अप्रे	१२ मे, ५ न
९३४	१६ अप्रे, ११ अक्ट	२ मे, २५ अक्टू
९३५	६ अप्रे, ३० से	—
९३६	१८ से	११ मा, ४ से
९३७	१३ फ	२८ फ, २४ अग
९३८	३ फ	१७ फ,
९३९	१८ जुला	८ ज, ४ जुला, २८ दि
९४०	८ जुला	२२ जू, १७ दि
९४१	२१ न	१२ जू
९४२	१७ मे, ११ न	—
९४३	७ मे	२२ अप्रे, १६ अक्टू
९४४	२५ अप्रे, २० से	११ अप्रे, ४ अक्टू
९४५	१६ मा, ८ से	२४ से
९४६	६ मा, २९ अग	—
९४७	—	८ फ ४ अग
९४८	६ जुला	२८ ज २३ जुला
९४९	२८ जू, २२ दि	१७ ज
९५०	१२ दि	२ जू, २७ न
९५१	८ मे	२३ मे, १६ न
९५२	२६ अप्रे	१२ मे, ४ न
९५३	१६ अप्रे	—
९५४	—	२२ मा, १५ से
९५५	—	११ मा, ४ से
९५६	१४ फ, ८ अग	२८ फ
९५७	२६ जुला	१८ ज
९५८	१६ जुला, १३ दि	८ ज, ३ जुला, २८ दि
९५९	२ दि	२३ जू
९६०	२८ मे	—
९६१	१७ मे	३ मे, २६ अक्टू
९६२	१ अक्टू	२२ अप्रे, १६ अक्टू
९६३	२० से	११ अप्रे, ५ अक्टू
९६४	१६ मा	—
९६५	६ मा	१८ फ, १५ अग
९६६	२० जुला	८ फ ४ अग
९६७	१० जुला	२८ ज

ई० सन्	सूर्य ग्रहण	चन्द्र ग्रहण
९६८	२२ दि	१३ जू, ७ दि
९६९	१६ मे	२ जू २६ न
९७०	८ मे	२२ मे, १५ न
९७१	२७ अप्रे, २२ अक्टू	—
९७२	१० अक्टू	१ अप्रे, २५ से
९७३	७ मा	२१ मा, १५ से
९७४	२४ फ, २० अग	११ मा ४ से
९७५	१० अग	—
९७६	२६ जुला	१६ ज, १४ जुला
९७७	१३ दि	८ ज, ३ जुला, २८ दि
९७८	८ जू	—
९७९	२८ मे	१४ मे, ६ न
९८०	१७ मे	३ मे, २६ अक्टू
९८१	३० से	२२ अप्रे, १६ अक्टू
९८२	२८ मा, २० से	—
९८३	१७ मा	१ मा, २६ अग
९८४	३० जुला	१८ फ १४ अग
९८५	२० जुला	८ फ, ३ अग
९८६	१३ ज	२४ जू १६ दि
९८७	—	१४ ज, ८ दि
९८८	१८ मे	२ जू, २६ न
९८९	८ मे १ न	—
९९०	२१ अक्टू	१२ अप्रे, ७ अक्टू
९९१	१८ मा, १० अक्टू	१ अप्रे, २६ से
९९२	७ मा	२१ मा, १४ से
९९३	२४ फ, २० अग	—
९९४	६ अग	३० जन, २५ जुला
९९५	४ ज	१९ जन, १४ जुला
९९६	—	८ जन
९९७	७ जून	२४ मे, १७ न
९९८	२८ मे, २३ अक्टू	१४ मे, ६ न
९९९	१२ अक्टो	३ मे, २७ अक्टू
१०००	७ अप्रे, ३० से	—
१००१	—	१२ मा, ५ से
१००२	११ अग	१ मा, २५ अग
१००३	३१ जुला	१८ फ, १४ अग
१००४	२४ ज, २० जुला	४ जुला, २६ दि
१००५	१३ ज,	२४ जू, १८ दि
१००६	२८ मे	७ दि
१००७	१८ मे	—
१००८	—	२२ अप्रे, १० अक्टू

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण	ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१००९	२९ मा	१२ अप्रे, ६ अक्टू	१०४९	५ फ	२० फ, १५ अग
१०१०	१८ मा	१ अप्रे २६ से	१०५०	—	८ फ, ५ अग
१०११	७ मा, ३१ अग	—	१०५१	१५ ज, १० जुला	२६ ज, २० दि
१०१२	२० अग	१० फ, ४ अग	१०५२	२८ जू, २४ न	१५ जू, ८ दि
१०१३	१४ ज	२८ ज, २५ जुला	१०५३	१३ न	४ जू, २८ न
१०१४	४ ज, ३० जू	१८ ज, १४ जुला	१०५४	१० से	—
१०१५	१९ जू	५ जू, २८ न	१०५५	२८ अप्रे	१४ अप्रे, ८ अक्टू
१०१६	७ जू, २ न	२४ मे, १७ न	१०५६	१२ से	२ अप्रे, २६ से
१०१७	२२ अक्ट	१३ मे, ६ न	१०५७	—	२३ मा, १५ से
१०१८	१८ अप्रे	—	१०५८	२५ फ, २२ अग	—
१०१९	२१ अग	२३ मा, १६ से	१०५९	१५ फ	३१ ज, २७ जुला
१०२०	—	१२ मा, ४ से	१०६०	३० जू	२० ज, १६ जुला
१०२१	११ अग	१ मा, २५ अग	१०६१	२० जू	८ ज
१०२२	३१ जुला	१६ जुला	१०६२	—	२५ मे, १९ न
१०२३	२४ ज	६ ज, ५ जुला, २९ दि	११६३	१ मे	१५ मे, ८ न
१०२४	६ जू	२४ जू, १८ दि	१०६४	८ अप्रे	३ मे, २८ अक्टू
१०२५	२६ मे, २३ न	—	१०६५	४ अप्रे	—
१०२६	१२ न	४ मे, २८ अक्टू	१०६६	२२ मे	१४ मा, ६ से
१०२७	६ अप्रे, १ न	२३ अप्रे, १८ अक्टू	१०६७	१६ फ	३ मा, २७ अग
१०२८	२८ मा	१२ अप्रे, ६ अक्टू	१०६८	६ फ	२१ फ, १५ अग
१०२९	११ से	—	१०६९	२१ जुला	७ जुला, ३० दि
१०३०	३१ अग	२० फ, १६ अग	१०७०	१० जुला, ५ दि	२६ जू, २० दि
१०३१	—	१० फ, ५ अग	१०७१	२४ न	१५ जू, ९ दि
१०३२	१५ ज, १० जुला	३० ज, २५ जुला	१०७२	२० मे	—
१०३३	४ ज, २९ जू	१५ जू, ८ दि	१०७३	९ मे	२४ अप्रे, १८ अक्टू
१०३४	१८ जू	४ जू, २८ न	१०७४	२९ अप्रे	१४ अप्रे, ७ अक्टू
१०३५	—	२४ मे, १८ न	१०७५	१३ मे	३ अप्रे, २७ से
१०३६	२९ अप्रे, २२ अक्टू	—	१०७६	१ से	—
१०३७	१८ अप्रे	२ अप्रे, २७ से	१०७७	२५ फ	१० फ, ६ अग
१०३८	१ से	२३ मा, १६ मे	१०७८	११ जुला	३० ज, २७ जुला
१०३९	२२ अग	१३ मा, ५ से	१०७९	१ जुला, २६ दि	२० ज
१०४०	१५ फ	—	१०८०	२० जू, १४ दि	५ जू, २९ न
१०४१	—	२० ज, १६ जुला	१०८१	३ दि	२५ मे, १९ न
१०४२	२० जू	९ ज, १६ जुला, २९ दि	१०८२	३० अप्रे	१४ मे, ८ न
१०४३	९ जू, ४ दि	—	१०८३	१४ अक्टू	—
१०४४	२२ न	१४ मे, ८ न	१०८४	२ अक्टू	२४ मा, १६ से
१०४५	१९ अप्रे, ११ न	३ मे, २८ अक्टू	१०८५	—	१४ मा, ६ से
१०४६	६ अप्रे	२३ अप्रे १७ अक्टू	१०८६	१६ फ	३ मा, २७ अग
१०४७	२६ मा, २२ से	—	१०८७	१ अग	—
१०४८	१० से	३ मा, ६ अग	१०८८	२० जुला	११ ज, ६ जुला, ३० दि
			१०८९	—	२५ जू, २० दि

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१०९०	२४ न	—
१०९१	२१ मे	५ मे, ३० अक्टू
१०९२	८ मे	२४ अप्रे, १८ अक्टू
१०९३	२३ मे	१४ अप्र, ७ अक्टू
१०९४	१८ मा	—
१०९५	—	२१ मा, १८ अग
१०९६	२२ जुला	११ फ, ६ अग
१०९७	—	३० ज, २७ जुला
१०९८	{५ ज १ जुला, २५ दि}	११ दि
१०९९	—	५ ज, ३० न
११००	११ मे	२४ मे, १८ न
११०१	३० अप्रे, २४ अक्टू	—
११०२	—	५ अप्रे, २८ से
११०३	१० मा	२५ मा, १७ से
११०४	—	१३ मा, ६ से
११०५	१६ फ	—
११०६	१ अग, २७ दि	२१ ज १७ जुला
११०७	१६ दि	{११ ज ६ जुला, ३१ दि}
११०८	११ जू	२५ जू
११०९	३१ मे	१८ मा, ६ न
१११०	२० मे, १५ अक्टू	५ मे, २६ अक्टू
११११	—	१५ अप्रे, १८ अक्टू
१११२	२१ मा, १२ से	—
१११३	१८ मा	४ मा २८ अग
१११४	२ अग	२१ फ, १८ अग
१११५	२३ जुला	१० फ, ७ अग
१११६	—	२१ दि
१११७	—	१६ जू, ११ दि
१११८	२२ मे	५ जू, ३० न
१११९	११ मे	—
११२०	२४ अक्टू	१५ अप्रे ८ अक्टू
११२१	२० मा, १३ अक्टू	४ अप्रे, २८ से
११२२	१० मा	२४ मा, १७ से
११२३	२२ अग	—
११२४	११ अग	१ फ, २८ जुला
११२५	६ ज, २६ दि	२१ ज, १७ जुला
११२६	२१ जू	११ ज ६ जुला
११२७	११ जू	२० मे, २० न
११२८	१० मे, २५ अक्टू	१६ मे, ८ न
११२९	१५ अक्टू	५ मे २१ अक्टू

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
११३०	४ अक्टू	—
११३१	३० मा	१५ मा, ८ से
११३२	१६ मा	३ मा, २८ अग
११३३	२ अग	२१ फ, १७ अग
११३४	२० ज, २३ जू	—
११३५	१६ ज	{१ ज २० जू, २२ दि}
११३६	५ ज, १ ज	१५ ज, १० दि
११३७	२१ मे १५ न	५ जू
११३८	८ न	२६ अप्रे, २० अक्टू
११३९	—	१६ अप्रे, ६ अक्टू
११४०	२० मा	४ अप्रे, २८ से
११४१	१० मा, २ से	—
११४२	—	१२ फ, ८ अग
११४३	१२ अग	१ फ, २८ जुला
११४४	६ ज २६ दि	२२ ज, १६ जुला
११४५	१२ जू	६ ज, १ दि
११४६	११ जू, ६ न	२० मे, २० न
११४७	२६ अक्टू	१७ मे, ६ न
११४८	२० अप्रे, २४ अक्टू	—
११४९	६ अप्रे	२६ मा, १८ से
११५०	२४ अग	१५ मा, ८ से
११५१	१३ अग	४ मा, २८ अग
११५२	७ फ, २ अग	—
११५३	२६ ज	१२ ज, ७ जुला
११५४	१२ जू	{१ ज, १७ जू, २१ दि}
११५५	१ जू, २६ न	१६ जू
११५६	२१ मे	७ मे, ३० अक्टू
११५७	११ अप्रे, ४ न	२६ अप्रे, १८ अक्टू
११५८	—	१० अप्रे, ६ अक्टू
११५९	२१ मा	—
११६०	२ से	१३ फ, १८ अग
११६१	१८ ज	१२ फ, ७ अग
११६२	१७ ज	१ फ, २७ जुला
११६३	६ ज ३ जुला	१८ ज, १२ दि
११६४	२१ जू, १६ न	६ जू, ३० न
११६५	—	२८ मे, १६ न
११६६	१ मे	—
११६७	२१ अप्रे	६ अप्रे, १० से
११६८	३ अप्रे, ३ से	२५ मा १९ से
११६९	२४ अग	१४ मा, ८ से
११७०	—	—

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
११७१	—	२३ ज, १८ जुला
११७२	२७ ज, २३ जू	१३ ज
११७३	१२ जू	१ ज, २७ जू
११७४	१ जू, २६ न	१८ मे, १० न
११७५	१५ न	७ मे, ३१ अक्टू
११७६	११ अप्रे	२५ अप्रे, १६ अक्टू
११७७	२३ से	—
११७८	१३ से	५ मा, ३० अग
११७९	८ फ, ३ से	२३ फ, १९ अग
११८०	२८ ज	१३ फ, ७ अग
११८१	१७ ज, १३ जुला	२२ दि
११८२	२ जुला	१८ जू, ११ दि
११८३	१७ न	७ जू, १ दि
११८४	५ न	—
११८५	१ मे	१६ अप्रे, १० अक्टू
११८६	२१ अप्रे	५ अप्रे, ३० से
११८७	४ से	२६ मा, १९ से
११८८	२१ फ, ४ अग	—
११८९	१७ फ	३ फ, २१ जुला
११९०	६ फ, ४ जुला	२३ ज, १८ जुला
११९१	२३ जू, १८ दि	१२ ज, ८ जुला
११९२	११ जू, ६ दि	२८ मे, २१ न
११९३	—	१८ मे, १० न
११९४	२२ अप्रे	७ मे, ३१ अक्टू
११९५	१२ अप्रे, ५ अक्टू	—
११९६	—	१६ मा, ९ से
११९७	१३ से	५ मा, २६ अग
११९८	७ फ	२३ फ, १८ अग
११९९	२८ ज, २४ जुला	—
१२००	१२ जुला, ८ दि	३ ज, २८ जू, २२ दि
१२०१	२७ न	१८ जू, ११ दि
१२०२	२३ मे	—
१२०३	१२ मे	२७ अप्रे, २२ अक्ट
१२०४	१ मे	१६ अप्रे, १० अक्टू
१२०५	—	५ अप्रे २६ से
१२०६	११ मा, ४ से	—
१२०७	२८ फ	१४ फ, ९ अग
१२०८	१४ जुला	३ फ, २९ जुला
१२०९	३ जुला, २८ दि	२२ ज, १८ जुला
१२१०	१७ दि	८ ज, २ दि
१२११	—	२६ मे, २२ न
१२१२	२ मे	१७ मे, १० न
१२१३	२२ अप्रे	—
१२१४	५ अक्टू	२७ मा, २० मे
१२१५	२ मा	१७ मा, ६ मे
१२१६	१९ फ	५ मा, २८ अक्टू
१२१७	७ फ, ४ अग	—
१२१८	२४ जुला, १९ दि	१३ ज, ९ जुला
१२१९	—	२ ज, २८ जू, २२ दि
१२२०	२ जू	—
१२२१	२३ मे	८ मे १ न
१२२२	१२ मे, ६ अक्टू	२७ अप्रे, २२ अक्टू
१२२३	२६ से	१६ अप्रे, ११ अक्टू
१२२४	२१ मा	—
१२२५	—	२४ फ, १९ अग
१२२६	२८ फ, २५ जुला	१४ फ, ९ अग
१२२७	१५ जुला	३ फ, ३० जुला
१२२८	३ जुला, २८ दि	१२ दि
१२२९	—	८ जू, २ दि
१२३०	१४ मे	२८ मे, २२ न
१२३१	३ मे, २६ अक्टू	—
१२३२	१५ अक्टू	६ अप्रे, १ अक्टू
१२३३	५ अक्टू	२७ मा, २० से
१२३४	१ मा	१७ मा, ९ से
१२३५	१९ फ, १५ अग	—
१२३६	३ अग	२४ ज, २० जुला
१२३७	१६ दि	१२ ज, ९ जुला
१२३८	८ दि	२ ज, २९ जू
१२३९	३ ज	१२ न
१२४०	२३ मे	७ मे, १ न
१२४१	६ अक्टू	२७ अप्रे, २१ अक्टू
१२४२	२६ से	—
१२४३	२२ मा	८ मा, ३१ अग
१२४४	१० मा, ५ अग	२५ फ, २६ अग
१२४५	२५ जुला	१३ फ, ९ अग
१२४६	१९ ज, १४ जुला	२४ दि
१२४७	८ ज	१९ जू, १३ दि
१२४८	२४ मे	७ जू, २ दि
१२४९	१४ मे, ६ न	२८ मे
१२५०	—	१८ अप्रे, १२ अक्टू
१२५१	१६ अक्टू	७ अप्रे, १ अक्टू
१२५२	११ मा,	२७ मा, १९ से

ई० सन	सूर्य ग्रहण	चन्द्रग्रहण
१२५३	१ मा, २५ अग	——
१२५४	१४ अग	४ फ, ३१ जुला
१२५५	१० ज, २० दि	२४ ज, २० जुला
१२५६	१८ दि	१३ ज, ८ जुला
१२५७	१३ ज	२३ न
१२५८	३ जू	१८ मे, १२ न
१२५९	—	८ मे, १ न
१२६०	१२ अप्रे, ६ अक्टू	——
१२६१	१ अप्रे	१८ मा, १० से
१२६२	—	७ मा, ३१ अग
१२६३	५ अग	२४ फ, २० अग
१२६४	३० ज	——
१२६५	१९ ज	३ ज, ३० जू, २४ दि
१२६६	८ ज, ४ जू,	१९ जू, १३ दि
१२६७	२५ मै	८ जू
१२६८	१३ मे, ६ न	२८ अप्रे, २२ अक्टू
१२६९	——	१८ अप्रे, ११ अक्टू
१२७०	२७ मा	७ अप्रे, ३० से
१२७१	१२ मा, ६ से	——
१२७२	२५ अग	१५ फ, १० अग
१२७३	२० ज, १४ अग	३ फ, ३१ जुला
१२७४	——	२३ ज, २० जुला
१२७५	२५ जू	४ दि
१२७६	१३ जू	२९ मे, २३ न
१२७७	२८ अक्टू	१८ मे, १२ न
१२७८	२३ अप्रे	८ मे
१२७९	१२ अप्रे	२९ मा, २१ से
१२८०	१ अप्रे	१८ मा, १० से
१२८१	१५ अग	७ मा ३१ अग
१२८२	५ अग	——
१२८३	२० ज	१४ ज, ११ जुला
१२८४	१६ ज १५ जू	४ ज, २९ जू, २४ दि
१२८५	४ जू, २८ न	१८ ज
१२८६	१७ न	८ मे, २ न

ईस्वी सन्	सूर्य ग्रहण	चन्द्रग्रहण
१२८७	७ न	२९ अप्रे, २२ अक्टू
१२८८	२ अप्रे	१८ अप्रे, ११ अक्टू
१२८९	२३ मा, १६ से	——
१२९०	५ से	२५ फ, २२ अग
१२९१	२५ अग	१४ फ, ११ अग
१२९२	२१ ज	४ फ, ३० जुला
१२९३	६ ज, ५ जुला	१५ दि
१२९४	२५ जू	६ जू ४ दि
१२९५	८ न	३० मे, २४ न
१२९६	२८ अक्टू	१८ मे
१२९७	२३ अप्रे	९ अप्रे, २ अक्टू
१२८८	१२ अप्रे	२९ मा, २१ से
१२९९	२७ अग	१८ मा, ११ से
१३००	२१ फ, १५ अग	——
१३०१	६ फ	२५ ज, २१ जुला
१३०२	२६ जू	१४ ज, १० जुला
१३०३	१५ जू, ९ दि	४ ज, २९ जू,
१३०४	४ जू, २८ न	२० मे, १३ न
१३०५	१७ न	९ मे, २ न
१३०६	१३ अप्रे	२९ अप्रे २२ अक्टू
१३०७	३ अप्र	——
१३०८	१५ से	८ मा, १ से
१३०९	११ फ	२५ फ, २१ अग
१३१०	३१ ज	१४ फ, ११ अग
१३११	२० ज, १६ जुला	२६ दि
१३१२	५ जुला	१९ जू, १४ दि
१३१३	—	९ जू, ३ दि
१३१४	१५ मे, ८ न	३० मे
१३१५	४ मे	२० अप्रे, १३ अक्टू
१३१६	२२ अप्रे	८ अप्रे, २ अक्टू
१३१७	६ से	२८ मा, २१ से
१३१८	३ मा	——
१३१९	२१ फ	५ फ, १ अग
१३२०	१० फ, ६ जुला	२६ ज, २० जुला
१३२१	२६ जू	१४ ज, १० जुला
१३२२	१५ जू, ९ दि	२४ न

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१३२३	२९ न	२१ मे, १३ न
१३२४	२४ अप्रै	८ से, १ न
१३२५	१३ अप्रै, ७ अक्ट	——
१३२६	२६ से	१८ मा, १२ से
१३२७	१६ से	८ मा, २ से
१३२८	—	२५ फ, २१ अग
१३२९	२७ जुला	—
१३३०	१६ जुला	५ ज, १ जुला २६ दि
१३३१	३० न	२० जू, १५ दि
१३३२	२५ मे	८ जू
१३३३	१४ मे	३० अप्रै, २३ अक्टो
१३३४	४ मे	१९ अप्रै, १३ अक्टो
१३३५	—	८ अप्रै, २ अक्टो
१३३६	६ से	—
१३३७	२ मा	१५ फ, १२ अग,
१३३८	२० फ, १८ जुला	५ फ, १ अग
१३३९	७ जुला, २१ दि	२६ ज, २१ जुला
१३४०	——	४ दि
१३४१	९ दि	३१ मे, २३ न
१३४२	५ से	२१ मे, १३ न
१३४३	२५ अप्रै, १९ अक्ट	——
१३४४	७ अक्टो	२८ मा, २३ से
१३४५	२६ से	१८ मा, १२ से
१३४६	२२ फ	८ मा, १ से
१३४७	११ फ, ७ अग	——
१३४८	२६ जुला	१७ ज, ११ जुला
१३४९	१० दि	५ ज, १ जुला, २५ दि
१३५०	३० न	२० जू
१३५१	—	४ न
१३५२	१४ मे	३० अप्र, २३ अक्टू
१३५३	२८ से	१९ अप्रै, १३ अक्टू
१३५४	२५ मा, १७ से	——
१३५५	१४ मा, ६ से	१७ फ, २३ अग

ई० सन्	सूर्यग्रहण	च० ग्रहण
१३५६	२८ जुला	१६ फ, ११ अग
१३५७	१७ जुला	१५ फ, ३१ जुला
१३५८	१० ज, ७ जुला, ३१ दि	१६ दि
१३५९	——	११ जू, ५ दि
१३६०	१५ मे	३१ मे, २३ न
१३६१	५ मे	२० मे
१३६२	१८ अक्टो	४ अक्टो
१३६३	—	७० मा, २३ से
१३६४	४ मा	१८ मा, १२ से
१३६५	२१ फ	——
१३६६	७ अग	२७ ज, २२ जुला
१३६७	२७ जुला, २२ दि	१६ ज, १२ जुला
१३६८	१० दि	५ ज, १ जुला
१३६९	५ ज	१४ न
१३७०	२५ मे	११ मे, ४ न
१३७१	६ अक्टू	३० अप्रै, २४ अक्टू
१३७२	४ अप्रै, २७ से	——
१३७३	२४ मा, १७ से	६ मा, २ से
१३७४	१४ मा, ८ अग	२८ फ, २२ अग
१३७५	२६ जुला	१६ फ, १२ अग
१३७६	१७ जुला	२६ दि
१३७७	१० ज, ३१ दि	२२ जू, १५ दि
१३७८	२७ मे	११ जू, ४ दि
१३७९	१६ मे	३१ मे, २४ न
१३८०	५ मे	१४ अक्टू
१३८१	१८ अक्टू	९ अप्रै, ४ अक्टू
१३८२	—	२६ मा, २३ से
१३८३	२८ अग	——
१३८४	१७ अग	७ फ, २ अग
१३८५	६ अग	२७ ज, २२ जुला
१३८६	१ ज, २२ दि	१६ ज, १२ जुला
१३८७	१६ ज	२५ न
१३८८	५ ज	२१ मे, १४ न
१३८९	—	१० मे, ४ न
१३९०	६ अक्टू	२९ अप्रै

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१३९१	५ अप्रे	२० मा
१३९२	२५ मा	६ मा, २ से
१३९३	८ अग	२७ फ, २२ अग
१३९४	२८ जुला	——
१३९५	—	६ ज, २ जुला, २९ दि
१३९६	११ ज ६ जू	२१ जू, १५ दि
१३९७	२९ मे	११ जू, ४ दि
१३९८	१६ मे, ९ न	२६ अक्टू
१३९९	२८ अक्टू	२० अप्रे, १५ अक्टू
१४००	२६ मा	९ अप्रे, ३ अक्टू
१४०१	१५ मा, ८ से	३० मा
१४०२	४ मा	१९ अग
१४०३	१८ अग	७ फ, २ अग
१४०४	—	२७ ज, २२ जुला
१४०५	१ ज, २६ जू	६ दि
१४०६	१६ जू	२ ज, २५ न
१४०७	३१ अक्टू	२२ मे, १५ न
१४०८	२६ अप्रे, १८ अक्टू	१० मे
१४०९	१५ अप्रे, ६ अक्टू	३१ मा
१४१०	४ अप्रे	२१ मा, १३ से
१४११	१९ अग	१० मा, २ से
१४१२	१? फ, ७ अग	२२ अग
१४१३	१ फ	१७ ज, १२ जुला
१४१४	१७ जू	६ ज, २ जुला, २६ दि
१४१५	७ जू	२२ जू, १६ दि
१४१६	२७ मे, १९ न	५ न
१४१७	——	१ मे, २५ अक्टू
१४१८	६ अप्रे	२० अप्रे, १४ अक्टू
१४१९	२६ मा	१० अप्रे
१४२०	१४ मा, ८ से	२९ फ, २३ अग
१४२१	२८ अग	१७ फ, १३ अग
१४२२	२३ ज	६ फ, २ अग
१४२३	८ जुला	१७ दि

ईसवी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१४२४	२६ जू	१२ जू, ६ दि
१४२५	१० न	१ जू, २५ न
१४२६	७ मे	२१ मे
१४२७	२० अक्टू	११ अप्रे
१४२८	१४ अप्रे	३१ मा, २३ से
१४२९	३० अग	२० मा, १३ से
१४३०	१९ अग,	२ से
१४३१	१२ फ, ८ अग	२४ जुला
१४३२	२ फ, २७ जू	१० ज, १३ जुला
१४३३	१७ ज	६ ज, २ जुला, २९ दि
१४३४	७ जू, ३० न	१९ न
१४३५	२० न	१२ मे, ६ न
१४३६	१६ अप्रे	३० अप्रे, २५ अक्टू
१४३७	५ अप्रे, ३० से	२० अप्रे, १४ अक्टू
१४३८	१९ से	११ मा, ३ से
१४३९	८ से	१ मा, २४ अग
१४४०	३ फ,	१८ फ, ११ अग
१४४१	२३ ज, १८ जुला	२७ दि
१४४२	७ जुला	२३ जू, १७ दि
१४४३	२७ जू	१२ जू, ७ दि
१४४४	१० न	३१ मे
१४४५	७ मे	—
१४४६	२६ अप्रे	११ अप्रे, ५ अक्टू
१४४७	१० से	१ अप्रे, २४ मे
१४४८	५ मा, २९ अग	१२ से
१४४९	१८ अग	४ अग
१४५०	१२ फ,	२८ फ, २४ जुला
१४५१	२८ जू,	१७ ज, १३ जुला
१४५२	१७ जू ११ दि	७ ज, ३० न
१४५३	३० न	२२ मे, १६ न
१४५४	२७ अप्रे	१२ मे, ५ न
१४५५	१० अप्रे, ११ अग	१ मे, २५ अग
१४५६	५ अप्रे	२० मा
१४५७	१८ से	११ मा, ३ से

ईसवीसन	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१४५८	——	२८ फ, २४ अग
१४५९	३ फ, २८ जुला	—
१४६०	१८ जुला	८ ज, ३ जुला, २८ दि
१४६१	७ जुला, २ दि	२२ ज, १७ दि
१४६२	२१ न	१२ जू
१४६३	१८ से, ११ न	—
१४६४	६ से	२२ अप्रे, १५ अक्टो
१४६५	२० से	११ अप्रे, ४ अक्टो
१४६६	१६ मा	२४ से
१४६७	६ मा	१५ अग
१४६८	—	८ फ, ४ अग
१४६९	९ जुला	२७ ज, २४ जुला
१४७०	२८ जू, २२ दि	१७ ज, ८ दि
१४७१	—	३ जू, २७ न
१४७२	८ से	२२ मे, १५ न
१४७३	२७ अप्रे	१२ मे, ४ न
१४७४	१६ अप्रे, ११ अक्टू	——
१४७५	३० से	२२ मा, १५ से
१४७६	२५ फ	१० मा, ३ से
१४७७	८ अग	——
१४७८	२९ जुला	१८ ज, १५ जुला,
१४७९	१९ जुला, १३ दि	८ ज, ४ जुला, २९ दि
१४८०	—	२२ जू
१४८१	२८ से	——
१४८२	१७ म	३ से, २६ अक्टू
१४८३	२ अक्टो	२२ अप्रे, १६ अक्टो
१४८४	२० से	४ अक्टू
१४८५	१६ मा, ८ से	२५ अग
१४८६	६ मा	१८ फ, १५ अग
१४८७	२० जुला	८ फ, ४ अग
१४८८	८ जुला	२८ ज
१४८९	१ ज २२ दि	१७ जू, ८ दि
१४९०	—	२ जू, २७ न

ईसवीसन	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१४९१	८ न	२३ फ, १६ न
१४९२	२६ अप्रे, २१ अक्टू	——
१४९३	१० अक्टू	२ अप्रे, २५ से
१४९४	७ मा	२२ मा, १५ से
१४९५	२५ फ, २० अग	११ मा, ४ से
१४९६	१४ फ, ८ अग	३ ज, २५ जुला
१४९७	२९ जुला	१८ ज, १४ जुला
१४९८	१३ दि	८ ज, ३ जुला
१४९९	८ जू	—
१५००	२८ मे	१३ मे, ६ न
१५०१	१२ अक्टू	३ मे, २६ अक्टू
१५०२	७ अप्र, १ अक्टू	२२ अप्रे, १५ अक्टू
१५०३	२७ मा, २० से	६ से
१५०४	१६ मा	१ मा, २५ अग
१५०५	३० जुला	१८ फ, १४ अग
१५०६	२० जुला	८ फ
१५०७	१३ ज	२४ जून १६ दि
१५०८	२ ज, २६ मे	१३ जून, ७ दि
१५०९	१८ मे	२ जून, २६ न
१५१०	८ मे	—
१५११	—	१३ अप्रे, ६ अक्टू
१५१२	१७ मा	१ अप्रे, २५ से
१५१३	७ मा	३० ज, २५ जुला
१५१४	२० अग	८ फ
१५१५	९ अग	३० ज, २५ जुला
१५१६	४ ज, २३ दि	१८ ज, १३ जुला
१५१७	१८ जू	——
१५१८	८ जू	२४ मे, १७ न
१५१९	२८ मे,	१४ मे, ६ न
१५२०	११ अक्टू	२ मे, २६ अक्टू
१५२१	७ अप्रे	——
१५२२	२७ मा	१२ मा, ५ से
१५२३	११ अग	१ मा, २६ अग
१५२४	३० जुला	१८ फ
१५२५	२३ ज,	४ जुला, २८ दि

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१५२६	१३ ज	२४ जू, १८ दि
१५२७	३० मे	१४ जू, ७ दि
१५२८	१८ मे, १२ न	—
१५२९	१ न	२३ अप्रै, १७ अक्टू
१५३०	२९ मा	१२ अप्रै, ६ अक्टू
१५३१	—	१ अप्रै, २६ से
१५३२	३० अग	—
१५३३	१० अग	९ फ, ४ अग
१५३४	१४ ज	३० ज, २५ जुला
१५३५	३ ज, ३० जू	—
१५३६	१८ जू	४ जू, २७ न
१५३७	७ जू	२४ मे, १७ न
१५३८	२३ अक्टू	१४ मे, ६ न
१५३९	१८ अप्रै, १२ अक्टू	—
१५४०	७ अप्रै	२२ मा, १६ से
१५४१	२१ अग	१७ मा, ५ से
१५४२	११ अग	१ मा, २५ अग
१५४३	३ फ	१६ जुला
१५४४	२४ ज	{ १० ज, ४ जुला, २९ दि
१५४५	९ जू	२४ जू, १८ दि
१५४६	२९ मे, २२ न	—
१५४७	१२ न	४ मे, २८ अक्टू
१५४८	८ अप्रै	२२ अप्रै, १७ अक्टू
१५४९	२९ मा	१२ अप्रै, ६ अक्टू
१५५०	१८ मा	—
१५५१	३१ अग	२० फ, १६ अग
१५५२	—	१० फ, ४ अग
१५५३	१४ ज	२५ जुला
१५५४	२८ जू	१५ जू, ९ दि
१५५५	११ जू, १४ न	५ जू, २८ न
१५५६	२ न	२४ मे, १७ न
१५५७	२८ अप्रै, २२ अक्टू	—
१५५८	१८ अप्रै	२ अप्रै, २७ से
१५५९	—	२० मा, १६ से
१५६०	२१ अग	१२ मा, ४ से
१५६१	१४ फ, ११ अग	२६ ज,ला
१५६२	—	२० जू, १६ जुला
१५६३	२० जू	{ ९ ज ५ जुला, २९ दि
१५६४	८ जू	—
१५६५	—	१५ मे, ८ न
१५६६	१९ अप्रै	४ मे, २८ अक्टू
१५६७	८ अप्रै	२३ अप्रै, १८ अक्टू
१५६८	२८ मा, २१ से	—
१५६९	—	२ मा, २६ अग
१५७०	५ फ	२० फ, १५ अग
१५७१	२५ ज, २२ जुला	१० फ, ५ अग
१५७२	१५ ज, १० जुला	२५ जू, १८ दि
१५७३	२९ जू २४ न	१५ जू, ८ दि
१५७४	१३ न	४ जू, २८ न
१५७५	१० मे	—
१५७६	२८ अप्रै	१३ अप्रै, ७ अक्टू
१५७७	१२ से	२ अप्रै, २७ से
१५७८	—	२२ मा, १६ से
१५७९	२५ फ, २२ अग	—
१५८०	१५ फ	३१ ज, २६ जुला
१५८१	३० जू	१९ ज, ११ जुला
१५८२	२० जू, २५ दि	८ ज
१५८३	१४ दि	५ जू, २९ न
१५८४	१० मे	२४ मे, १८ न
१५८५	२९ अप्रै	१३ मे, ७ न
१५८६	१९ अप्रै, १२ अक्टू	—
१५८७	२ अक्टू	२४ मा, १६ से
१५८८	२६ फ,	१३ मा, ५ से
१५८९	१५ फ, ११ अक्टू	२ मा, २५ अग
१५९०	४ फ, ११ जुला	१७ जुला
१५९१	२० जुला, १५ दि	{ १ फ, १ जुला, १० दि
१५९२	९ दि	२४ जू, १८ दि

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१५९३	३० मे, २३ न	—
१५९४	२० मे	४ मे, २६ अक्टू
१५९५	३ अक्टू	२४ अप्रे, १८ अक्टू
१५९६	२२ से	१२ अप्रे, ६ अक्टू
१५९७	१७ मा	—
१५९८	७ मा	२१ फ, १६ अग
१५९९	२२ जुला	१० फ, ६ अग
१६००	१० जुला	३० ज
१६०१	४ ज, ३० जू, २४ दि	१५ जू, ८ दि
१६०२	२१ मे	४ जू, २६ न
१६०३	११ मे	२४ मे, १४ न
१६०४	२६ अप्रे,	—
१६०५	१२ अक्टू	३ अप्रे, २७ से
१६०६	—	२४ मा, १६ से
१६०७	२६ फ	१३ मा, ६ से
१६०८	१० अग	२७ जुला
१६०९	३० जुला, २६ दि	२० ज, १६ जुला
१६१०	१५ दि	९ ज, ६ जुला, ३० दि
१६११	४ दि	—
१६१२	३० मे	१४ मे, ८ न
१६१३	—	४ मे, २८ अक्टू
१६१४	३ अक्टू	२४ अप्रे, १७ अक्टू
१६१५	२८ मा, २२ से	—
१६१६	—	३ मा, २७ अग
१६१७	१ अग	२० फ, १६ अग
१६१८	—	९ फ, ६ अग
१६१९	११ जुला	२६ जू, २१ दि
१६२०	२१ मे	१५ जू, ९ दि
१६२१	२१ मे	४ जू, २८ दि
१६२२	१० मे, ३ न	—
१६२३	—	१५ अप्रे, ८ अक्टू
१६२४	१८ मा	३ अप्रे, २६ से
१६२५	—	२४ मा, १६ से
१६२६	२६ फ, २१ अग	७ अग
१६२७	११ अग	३१ ज, २८ जुला
१६२८	६ ज, २५ दि	२० ज, १६ जुला
१६२९	२१ जू, १४ दि	९ ज
१६३०	१० जू	२६ मे, १९ न
१६३१	३१ मे, २५ अक्टू	१५ मे, ८ न
१६३२	—	४ मे २७ अक्टू
१६३३	८ अप्रे, ३ अक्टू	—
१६३४	२६ मा	१४ मा, ७ से
१६३५	१२ अग	३ मा, २८ अग
१६३६	१ अग	२० फ, १६ अग
१६३७	२६ ज	७ जुला, ३१ दि
१६३८	१५ ज	२६ ज, २१ दि
१६३९	१ जू	१५ जू, १० दि
१६४०	—	—
१६४१	३ न	२६ अप्रे, १८ अक्टू
१६४२	३० मा	१५ अप्रे, ८ अक्टू
१६४३	२० मा	४ अप्रे, २७ से
१६४४	१ से	—
१६४५	२१ अग	१० फ, ७ अग
१६४६	१७ ज	३१ ज, २७ जुला
१६४७	५ ज, २ जुला, २६ दि	२० ज
१६४८	२१ जू	५ जू, ३० न
१६४९	१० जू, ४ न	२६ मे, १९ न
१६५०	२५ अक्टू	१५ मे, ८ न
१६५१	—	—
१६५२	८ अप्रे	२५ मा, १७
१६५३	२८ मा	१४ मा, ७ से
१६५४	१२ अग	३ मा, २७ अग
१६५५	६ फ, २ अग	—
१६५६	२६ ज	११ ज, १६ जुला, ३१ दि
१६५७	११ जू	२५ जू, २० दि
१६५८	१ जू, २४ न	—
१६५९	१४ न	६ मे, ३० अक्टू
१६६०	३ न	२५ अप्रे, २८ अक्टू

ई० सन्	सूर्य ग्रहण	चं० ग्रहण	ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१६६१	३० मा	४ अप्रे, ८ अक्टू	१६९६	—	१६ मे, ९ न
१६६२	२० मा, १२ से	—	१६९७	२१ अप्रे	६ मे, २८ अक्टू
१६६३	—	२२ फ, १८ अग	१६९८	४ अक्टू	—
१६६४	२८ ज, २१ अग	११ फ, ६ अग	१६९९	२३ से	१५ मा, ९ से
१६६५	१६ ज	३१ ज, २६ जुला	१७००	१८ फ	५ मा, २९ अग
१६६६	५ ज, २ जुला	६ जू, ११ दि	१७०१	७ फ, ४ अग	२२ फ, १८ अग
१६६७	२१ जू	६ ज, ३० न	१७०२	२४ जुला	—
१६६८	४ न	१६ मे, १८ न	१७०३	१४ जुला, ८ दि	{ ३ ज, २९ जू, २३ दि }
१६६९	३० अप्रे	—	१७०४	२७ दि	१७ जू, ११ दि
१६७०	१९ अप्रे	५ अप्रे, २९ से	१७०५	—	—
१६७१	३ से	२५ मा, १८ से	१७०६	१२ मे	२८ अप्रे, २१ अक्टू
१६७२	२७ अग	१३ मा, ७ से	१७०७	२ मे	१७ अप्रे, ११ अक्टू
१६७३	१२ अग	—	१७०८	१४ से	५ अप्रे, २९ से
१६७४	—	२२ ज, १७ जुला	१७०९	११ मा, ४ से	—
१६७५	२३ जू	११ ज ७ जुला	१७१०	२८ फ	१३ फ, ९ अग
१६७६	११ जू, ५ दि	१ ज, २१ जू	१७११	१५ जुला	३ फ, २९ जुला
१६७७	२४ न	१७ मे, ९ न	१७१२	३ जुला, २८ दि	२३ ज, १८ जुला
१६७८	२१ अप्रे, १४ न	६ मे, २९ अक्टू	१७१३	१७ दि	८ जू, २ दि
१६७९	११ अप्रे	२५ अप्रे, २९ अक्टू	१७१४	७ दि	२९ मे, २१ न
१६८०	३० मा	—	१७१५	३ मे	१८ मे, ११ न
१६८१	१२ से	४ मा, २८ अग	१७१६	२२ अप्रे, १५ अक्टू	—
१६८२	१ से	२१ फ, १८ अग	१७१७	—	२७ मा, २० से
१६८३	२७ ज, २३ जुला	११ फ, ७ अग	१७१८	२ मा २४ से	१६ मा, ९ से
१६८४	१२ जुला	२७ ज, २१ दि	१७१९	१८ फ	६ मा, २८ अग
१६८५	१ जू	१६ जू, १० दि	१७२०	८ फ, ४ अग	—
१६८६	—	६ जू, २९ न	१७२१	२४ जुला, १९ दि	१३ ज, ८ जुला
१६८७	११ मे, ५ न	—	१७२२	[illegible] दि	{ २ ज, २९ जू, १९ दि }
१६८८	३० अप्रे	१५ अप्रे, ९ अक्टू	१७२३	३ ज	—
१६८९	१३ मे	४ अप्रे २९ से	१७२४	२२ मे	८ मे, १ न
१६९०	३ से	२४ मा, १८ से	१७२५	१२ मे, ४ अक्टू	२७ अप्रे, २१ अक्टू
१६९१	२८ फ	—	१७२६	२५ से	१६ अप्रे, ११ अक्टू
१६९२	१७ फ	२ फ, २८ जुला	१७२७	१५ से	—
१६९३	२ जुला	२२ ज, १७ जुला	१७२८	—	२५ फ, १९ अग
१६९४	२२ जू, १६ दि	११ ज ७ जुला			
१६९५	६ दि	२८ मे, २० न			

ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१७२९	२६ जुला	१३ फ, ६ अग
१७३०	१५ जुला	३ फ, २६ जुला
१७३१	{ ८ ज, ४ जुला, २६ दि	२० ज, १३ दि
१७३२	१७ दि	८ ज, १ दि
१७३३	१७ से	२८ मे, २१ न
१७३४	३ मे	——
१७३५	१६ अक्टू	७ अप्रे, २ अक्टू
१७३६	४ अक्टू	२६ मा २० से
१७३७	१ मा	१६ मा, ६ से
१७३८	१५ अग	——
१७३९	४ अग, ३० दि	२४ ज, २० जुला
१७४०	१८ दि	१३ ज, ६ जुला
१७४१	१३ जू, ८ दि	१ ज
१७४२	३ जू	१६ मे, १२ न
१७४३	२३ मे, १७ अक्टू	८ मे, ७ न
१७४४	६ अक्टू	२६ अप्रे, २१ अक्टू
१७४५	२ अप्रे	——
१७४६	२२ मा	७ मा, ३० अग
१७४७	११ मा, ६ अग	२५ फ, २० अग
१७४८	२५ जुला	१४ फ, ८ अग
१७४९	१४ जुला	३० ज, २३ दि
१७५०	८ ज	१२ जू, १३ दि
१७५१	२५ से	६ जू, २ दि
१७५२	१३ मे, ६ न	—
१७५३	२६ अक्टू	१७ अप्रे, १२ अक्टू
१७५४	२३ मा, १६ अक्टू	७ अप्रे, १ अक्टू
१७५५	१२ मा	२८ मा, २० से
१७५६	१ मा	——
१७५७	१४ अग	४ फ, ३० जुला
१७५८	३० दि	२४ ज, २० जुला
१७५९	१९ दि	१३ ज, १० जुला
१७६०	१३ जू	२८ मे २२ न
१७६१	३ जू	१८ मे, १२ न
१७६२	१७ अक्टू	८ मे, १ न

ई० सन्	सूर्यग्रहण	च० ग्रहण
१७६३	१३ अप्रे, ७ अक्टू	—
१७६४	१ अप्रे	१८ मा, १० से
१७६५	१६ अग	७ मा, ३० अग
१७६६	५ अग	२४ फ, २० अग
१७६७	३० ज	—
१७६८	—	४ ज, २३ दि
१७६९	८ ज, ४ जू	१९ जू, १३ दि
१७७०	२५ मे, १७ न	—
१७७१	—	२८ अप्रे, २३ अक्टू
१७७२	३ अप्रे, २६ अक्टू	१७ अप्रे, ११ अक्टू
१७७३	२३ मा	७ अप्रे, ३० से
१७७४	१२ मा, ६ से	—
१७७५	२६ अग	१५ फ, ११ अग
१७७६	२१ ज,	२४ फ, २१ जुला
१७७७	६ ज, ५ जुला	२३ ज २० जुला
१७७८	१० जू, ४ दि	—
१७७९	१४ जू, ८ न	३० मे, २३ न
१७८०	२७ अक्टू	१८ मे, १२ न
१७८१	२३ अप्रे, १७ अक्टू	——
१७८२	१२ अप्रे	२३ मा, २१ से
१७८३	—	१८ मा, १० से
१७८४	१६ अग	७ मा, ३० अग
१७८५	६ फ, ५ अग	—
१७८६	२५ अक्टू	१४ ज, ११ जुला
१७८७		{ ३ ज, ३० जू २४ दि
१७८८	४ जू	—
१७८९	१७ न	१६ मे, ३ न
१७९०	—	२६ अप्रे, २३ अक्टू
१७९१	३ अप्रे	१८ अप्रे, १२ अक्टू
१७९२	१६ से	—
१७९३	५ से	२५ फ, २१ अग
१७९४	३१ ज	१४ फ, ११ अग
१७९५	२१ ज, १६ जुला	४ फ, ३१ जुला
१७९६	१० ज, ४ जुला	१४ दि

ई० सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१७९७	२४ जू॰	८ जू॰, ४ दि
१७९८	८ न	२९ मे, २३ न
१७९९	—	—
१८००	२४ अप्रै	१ अप्रै, २ अक्टू॰
१८०१	१३ अप्रै, ८ सि	३० मा, २२ सि
१८०२	२८ अग	१९ मा, ११ सि
१८०३	१७ अग	—
१८०४	११ फ	२६ ज २० जुला
१८०५	२६ जू	१५ ज, ११ जुला
१८०६	१६ जू १० दि	५ ज, ३० जू
१८०७	६ ज॰, २९ न	२१ मे, ५ न
१८०८	१८ न	१० मे, ३ न
१८०९	—	३० अप्रै २३ अक्टू॰
१८१०	४ अप्रै	—
१८११	—	१० मा, २ सि
१८१२	—	२७ फ, २२ अग
१८१३	१ फ,	१५ फ, २० अग
१८१४	२१ ज, १७ जुला	२६ दि
१८१५	७ जुला	२१ जू॰, १६ दि
१८१६	१९ न	१० अप्रै, ४ दि
१८१७	१६ मे, ९ न	३० मे
१८१८	५ मे,	२१ अप्रै, १४ अक्टू॰
१८१९	२६ अप्रै, १९ सि	१० अप्रै, ३ अक्टू॰
१८२०	७ सि	२९ मा, २२ सि
१८२१	४ मा	—
१८२२	—	६ फ, ३ अग
१८२३	११ फ, ८ जुला	२६ ज, २३ जुला
१८२४	२६ ज॰, २० दि	१६ ज, ११ जुला
१८२५	१६ जू॰	१ जू॰, २५ न
१८२६	२९ न	२१ मे, १४ न
१८२७	२६ अप्रै	११ मे, ३ न
१८२८	१४ अप्रै, ९ अक्टू	—
१८२९	२८ सि	२० मा १३ सि
१८३०	२३ फ	९ मा, २ सि
१८३१	—	२६ फ, २३ अग
१८३२	२७ जुला	—
१८३३	१७ जुला	६ ज, २ जुला, २६ दि
१८३४	—	२१ जू॰, १६ दि
१८३५	२७ सि, २० न	१० जू॰
१८३६	१५ मे	१ मे, २४ अक्टू॰
१८३७	४ मे	२० अप्रै, १३ अक्टू॰
१८३८	—	१० अप्रै ३ अक्टू॰
१८३९	१५ मा, ७ सि	—
१८४०	४ मा	१७ फ, १३ अग
१८४१	२१ फ, १८ जुला	६ फ, २ अग
१८४२	८ जुला	२६ ज २२ जुला
१८४३	२१ दि	१२ जू॰, ७ दि
१८४४	—	३१ मे, २५ न
१८४५	६ मे	२१ मे, १४ न
१८४६	२५ अप्रै, २० अक्टू॰	—
१८४७	९ अक्टू॰	३१ मा, २४ सि
१८४८	२७ सि	१९ मा, १३ सि
१८४९	२३ फ	९ मा, २ सि
१८५०	१२ फ, ७ अग	—
१८५१	२८ जुला	१७ ज, १३ जुला
१८५२	११ दि	७ ज, १ जुला, २६ दि
१८५३	—	२१ जू॰
१८५४	—	१२ मे ४ न
१८५५	१६ मे	२ मे, २५ अक्टू॰
१८५६	२८ मे	२० अप्रै, १३ अक्टू॰
१८५७	१८ मे	—
१८५८	१५ मा	२७ फ, २४ अग
१८५९	२९ जुला	१७ फ, १३ अग
१८६०	१८ जुला	७ फ, [illegible] अग
१८६१	११ ज, ८ जुला, ३१ दि	१० दि
१८६२	२१ दि	१२ जू, ६ दि
१८६३	१७ मे	२ जू॰ २५ न
१८६४	११ अक्टू॰, ६ मे	—

ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चंद्रग्रहण
१८६५	१८ अक्टू	११ अप्रे, ४ अक्टू
१८६६	१६ मा, ८ अक्टू	३१ मा, २४ से
१८६७	६ मा	२० मा, १४ से
१८६८	२३ फ, १८ अग	——
१८६९	७ अग	२८ ज, २३ जुला
१८७०	२२ दि	१७ ज, १२ जुला
१८७१	१८ ज, १२ दि	६ ज, २ जुला
१८७२	६ जू	२२ मे, १५ न
१८७३	२६ मे	१२ मे, ४ न
१८७४	१० अकटू	१ मे, २५ अकटू
१८७५	६ अप्रे, २९ से	—
१८७६	—	१० मा, ३ से
१८७७	१५ मा, ९ अग	२७ फ, २३ अग
१८७८	२९ जुला	१७ फ, १३ अग
१८७९	२२ जुला, १९ जुला	२८ दि
१८८०	११ ज, ३१ दि	२२ जू, १६ दि
१८८१	२८ मे	१२ जू, ५ दि
१८८२	१७ मे, ११ न	—
१८८३	३१ अकटू	२२ अप्रे, १६ अक्टू
१८८४	२७ मा, १९ अकटू	१० अप्रे, ४ अकटू
१८८५	—	३० मा, २४ से
१८८६	२९ अग	——
१८८७	१९ अग	८ फ, ३ अग
१८८८	—	२६ ज, २३ जुला
१८८९	२२ दि	१७ ज, १२ जुला
१८९०	१७ ज	३ जू, २६ न
१८९१	६ जू	२३ मे, १६ न
१८९२	—	११ मे, ४ न
१८९३	१६ अप्रे	—
१८९४	६ अप्रे, २९ दि	२१ मा, १५ से
१८९५	२६ मा, २० अग	११ मा, ४ से
१८९६	९ अग	२८ फ, २३ अग
१८९७	——	——
१८९८	२२ ज,	८ ज, ३ जुला, २७ दि

ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१८९९	११ ज, ८ जू	२३ जू, १७ दि
१९००	२८ मे, २२ न	१३ जू
१९०१	१८ मे, ११ न	३ मे, २७ अक्टू
१९०२	३ अक्टू	२२ अप्रे, १७ अक्टू
१९०३	२९ मा, २१ से	११ अप्रे, ६ अक्टू
१९०४	१७ मा	——
१९०५	३० अग	१९ फ, १५ अग
१९०६	२० अग	९ फ, ४ अग
१९०७	१४ ज	२९ ज, २५ जुला
१९०८	२७ जू, २३ दि	७ दि
१९०९	१७ जू,	४ जू, २७ न
१९१०	२ न	२४ म, १७ न
१९११	२२ अक्टू	——
१९१२	१७ अप्रे, १० अक्टू	१ अप्रे, २६ से
१९१३	——	२२ मा, १५ से
१९१४	२१ अग	११ मा, ४ से
१९१५	१४ फ, १० अग	——
१९१६	३ फ,	१८ ज, १५ जुला
१९१७	२३ ज, १९ ज	८ ज, ४ जुला, २८ दि
१९१८	८ जू, ३ दि	२४ जू
१९१९	२९ मे, २२ न	८ न
१९२०	१० न	३ मे, २७ अक्ट
१९२१	८ अप्रे, १ अक्टू	२२ अप्र, १६ अक्टू
१९२२	२८ मा	——
१९२३	१७ मा, १० से	३ मा, २६ अग
१९२४	३० अग	२० फ, १४ अग
१९२५	२४ ज	८ फ, ४ अग
१९२६	१४ ज, ८ जुला	१९ दि
१९२७	२९ जू	१५ जू, ८ दि
१९२८	११ मे, १२ न	३ जू, २७ न
१९२९	९ मे, १ न	२३ मे
१९३०	—	१३ अप्रे, ७ अकटू
१९३१	१७ अप्रे	२ अप्रे, २६ से
१९३२	—	२२ मा, १४, से

ई० सन्	सूर्य ग्रहण	चं० ग्रहण
१८३३	२४ फ, २१ अग	—
१८३४	१४ फ, १० अग	३० ज, २६ जुला
१८३५	—	१८ ज, १६ जुला
१८३६	१५ जू	८ ज, [illegible] जुला
१८३७	२ दि	१८ न
१८३८	२२ न	१४ मे, ७ न
१८३९	१ अप्रै	३ मे, २८ अक्टू
१८४०	१ अक्टू	२२ अप्रै
१८४१	२१ से	१३ मा ५ से
१८४२	१० से	२ मा, २६ अग
१८४३	४ फ	२० फ, १५ अग
१८४४	२५ ज, २० जुला	२६ दि
१८४५	१४ ज, ६ जुला	२५ जू, १८ दि
१८४६	२८ जू	१४ जू, ८ दि
१८४७	२० मे	३ ज
१८४८	६ म, १ न	२२ अप्रै, ८ अक्टू
१८४९	२८ अप्रै	१२ अप्रै, ७ अक्टू
१८५०	१२ मे	७ माप, २६ से
१८५१	१ मे	—
१८५२	२१ फ, २० अग	१० फ, ५ अग
१८५३	१४ फ, ११ जुला	२६ ज २१ जुला
१८५४	३० न, २५ दि	१६ ज, १६ जुला
१८५५	२० अ, १४ दि	२६ न
१८५६	२ दि	२४ मे, १८ न
१८५७	२३ अक्टू	१३ मे, ७ न
१८५८	१६ अप्र	३ मे
१८५९	२ अक्टू,	२४ मा, १७ से
१८६०	२० म	१३ मा, ५ से
१८६१	११ अग	२ मा २५ अग
१८६२	४ फ, ३१ जुला	—
१८६३	२५ ज	६ ज, ६ जुला, ३० दि
१८६४	६ जुला, ४ दि	२ जू, १६ दि
१८६५	२३ न	१४ जू
१८६६	२० म, २२ म	४ मे, २१ अक्टू

ईस्वी सन्	सूर्यग्रहण	चन्द्रग्रहण
१८६७	६ मे	२४ अप्रै, १८ अक्टू
१८६८	—	१३ अप्रै, २२ से, ६ अक्टू
१८६९	१८ मा	—
१८७०	७ मा	२१ फ, १७ अग
१८७१	२५ फ, २२ जुला	१० फ ६ अग
१८७२	——	३० ज, २६ जुला
१८७३	४ ज, ३० जू, २४ दि	१० दि
१८७४	१२ दि	४ जू, २६ न
१८७५	२१ मे	२५ मे, १८ न
१८७६	२६ अप्रै २६ अक्टू	१३ से
१८७७	१८ अप्रै	४ अप्रै २७ से
१८७८	२ अक्टू	२४ मा, १६ से
१८७९	२६ फ	१३ मा, ६ से
१८८०	११ फ	—
१८८१	३१ जुला	१७ जुला
१८८२	२० जुला, १५ दि	८ ज, ६ जुला, ३० से
१८८३	११ ज, ४ दि	२५ ज
१८८४	३० मे	—
१८८५	१७ न	[illegible] मे, २८ अक्टू
१८८६	—	२४ अप्र, १३ अक्टू
१८८७	२६ मा, २२ से	——
१८८८	१८ मे, ११ मे	२७ अग
१८८९	—	२० फ, १७ अग
१८९०	२२ जुला	८ फ ६ अग
१८९१	——	१० ज, ३१ दि
१८९२	२४ दि	१५ जू, ८ दि
१८९३	२१ मे	४ न, २० न
१८९४	१० मे, ३ न	२१ से
१८९५	२८ अप्रै, २३ अक्टू	१४ अप्र
१८९६	१३ अग	३ अप्रै, २७ से
१८९७	८ मा	१६ से
१८९८	२२ फ, १७ अग	—

ईस्वी सन	सूर्य ग्रहण	चंद्रग्रहण
१९९९	१६ फ, ११ अग	२८ जुला
२०००	३१ जुला	२१ ज, १६ जुला

ऊपर जो ग्रहणकी सूची दी गई है, उसमें सब ग्रहण एक स्थान वा देशमें नहीं देखे गये वा नहीं देखे जायंगे।

ग्रहणक (सं० क्ली०) गृह्यतेऽनेन ग्रह करणे ल्युट् ततः स्वार्थे कन्। ग्राहक शास्त्र।

ग्रहणान्त (सं० क्ली०) ग्रहणस्यान्तं ६-तत्। ग्रहणका अवसान, ग्रहणका अस्त होना, राहुसे चन्द्रमा या सूर्यका मोक्ष पाना।

ग्रहणि (सं० स्त्री०) गृह्णाति आक्रमते रोगीणां देहं ग्रह-अनि। १ ग्रहणीरोग। २ सुश्रुतके अनुसार उदरके मध्य पक्वाशय और आमाशयके बीचकी एक नाड़ी जो अग्नि या पित्तका मुख्य आधार है। इसी नाड़ीके दूषित होनेसे ग्रहणी रोग उत्पन्न होता है।

ग्रहणी (सं० स्त्री०) ग्रहणि-ङीष्। १ अग्न्याधिष्ठान नाड़ी, पित्ताधार, एक नाड़ी जो अग्नि या पित्तका प्रधान आधार है। ३ अपने नामसे प्रसिद्ध एक रोग, उदरभङ्ग रोग, एक प्रकारका रोग जिसमें खाया हुआ अन्न पचता नहीं, ज्योंका त्यों दस्तकी राहसे निकल जाता है। (Diarrhœa) इस रोगमें वैद्यक चिकित्सा ही ज्यादा उपकारी है। सुश्रुतमें इस रोगके निदान और लक्षणादि इस प्रकार लिखे हैं,—

पक्वाशय और आमाशयके बीचमें पित्तधरा नामकी एक नाड़ी है, उसको ग्रहणी कहते हैं। इस ग्रहणीका वल अग्नि है, परन्तु वह अग्नि ग्रहणीका आश्रय ले कर रहती है। इस लिए अग्निके दूषित होनेसे ग्रहणी भी दूषित हो जाती है। फिर धीरे धीरे एक या समस्त दोष बढ़ कर ग्रहणीको दूषित कर डालते हैं। इसमें ज्यादा भोजन करनेसे पचता नहीं। खाया हुआ पदार्थ ज्योंका त्यों दस्तकी राहसे निकल जाता है। अथवा पच कर दुर्गन्धयुक्त मल यन्त्रणाके साथ निकलता है और कभी कभी दस्त बन्द भी हो जाता है। इसीको ग्रहणी रोग कहते हैं। अतीसारके दूर होने पर जो अहितकर भोजन करता है उसकी अग्नि मन्द हो जाती है। अग्निके दूषित हो जानेसे ग्रहणी भी दूषित होने लगती है। इस लिए अतीसार रोगके अच्छे हो जानेके बाद, जब तक शरीर पहिले जैसा स्वाभाविक न हो जाय तब तक खाने पीनेका खूब परहेज रखना चाहिये। ग्रहणीके प्रारम्भमें गलेमें जलन, देहमें हरारत, आलस, प्यास, क्लान्ति, वल क्षय, अरुचि, खाँसी, कानमें पीड़ा और आँतोंमें गुड़गुड़ाहट, ये सब लक्षण प्रगट होते हैं। रोग होनेके बाद हाथ पैरमें सूजन, दुर्वलता, गाँठोंमें पीड़ा और शिथिलता, प्यास, वमन, ज्वर, अरुचि, कड़ुई और खट्टी डकार, मुंहमें पानी आना, मुंहका स्वाद बिगड़ना और गुस्सा, ये सब लक्षण दिखाई देते हैं। ग्रहणी वायुजन्य होनेसे गुदा, हृदय, बगल, उदर और मस्तकमें शूल, पित्तजन्य होनेसे दाह और कफजन्य होनेसे देह भारी हो जाती है। तथा सान्निपातज होनेसे तीनों ही लक्षण प्रगट होते हैं। नख, मल, मूत्र, मुख और आँखोंमें दोषका वर्ण प्रगट हो जाता है। इसमें हृद्रोग, पाण्डुरोग उदररोग गुल्मरोग, ववासीर और तिल्ली होनेकी आशङ्का रहती है। ऊपर और नीचेके हिस्सेको साफ करके दोषानुसार अग्निवर्द्धक द्रव्योंसे पेय आदि बना देना चाहिये। बादमें पाचन, संग्राहक और अग्निकर पदार्थ या त्रिविध सुरा, अरिष्ट (काढ़ा), स्नेह (तेल), मूत्र या गरम पानीके साथ पीना चाहिये। ये सब चीजें मठाके साथ भी पीयी जा सकती हैं। सिर्फ मठा पीनेसे भी ग्रहणीरोग शान्त हो जाता है। क्रमि, गुल्म, उदररोग और ववासीरको नाश करनेवाली औषध भी ग्रहणीरोगमें प्रयोज्य है। हिंग्वादिचूर्ण वा प्लीहानाशक घृत अथवा पिप्पल्यादि गण और चूका (खट्टासाग)-के रसके साथ पका हुआ घी सेवन करना चाहिये। चौगुणे दहीमें घी पका कर पीनेसे ग्रहणी रोग अच्छा होता है। ग्रहणी रोगमें अग्निवर्द्धक औषधियोंका सेवन करना चाहिये। ज्वर आदिका उपद्रव हो, तो दोषोंकी चिकित्साप्रणालीके अनुसार उन उपद्रवोंकी चिकित्सा करानी चाहिये, परन्तु जो औषधि अतीसार रोगमें न दी जाती हो वह न देनी चाहिये। (सुश्रुत उत्तरतन्त्र ४० अ०)

इसके सिवा ग्रहणीरोगमें लघुलाईचूर्ण, वृहल्लाईचूर्ण, जातीफलादिचूर्ण, चित्रकादिवटिका, विल्वकल्क, वार्त्ताकु

गुटिका, कल्याणगुड, महाकल्याणगुड और कुष्माण्ड-कल्याणगुण आदि औषधियां भी प्रयोजनीय है। यदि ज्वर न रहे, तो रोज पानी और थोड़ा लवण मिला कर मठा पीना चाहिये। इससे खूब फायदा पहुंचता है।

बिना कुछ खाये हुए खाली पेटमें, कच्चे बेलको भून कर मिश्रीके साथ खाना चाहिये, इससे खूब फायदा होता है। इसमें रात्रि जागरण, मैथुन, स्नान, मलमूत्र-के वेगको रोकना, नस्य, तमाकू, परिश्रम, गेहूं, यव, कुम्हड़ा, लौकी, मधु या शहद, पान ईख आम सुपारी लहसुन, दूध, गुड़, काञ्जीवटक आदि नहीं खाना चाहिये, क्यों कि ये पदार्थ इस रोगके लिए बहुत हानिकारक होते हैं। चक्र स० टीका।

ग्रहणीकपर्द पोट्टली—एक औषध। कौड़ीकी भस्म, पारा, गन्धक, लोहेकी चूर और सुहागा, इन सबको समान भागसे ले कर सिद्धिरसमें एक दिन तक (खरलमें) पीस कर गोलियाँ बनानी चाहिये। इसीका नाम 'ग्रहणी कपर्द पोट्टली' है। यह वातज ग्रहणीरोगमें सेवनीय है। (रसेन्द्रसार०)

ग्रहणीकपाट—१ एक प्रकारकी दवा। समान पारा और गन्धककी बुकनी बना कर अदरखके रसमें भिगो दीजिये। फिर उसमें दुगुनी कुटजकी छालकी राख मिला कर ४ रत्तीके तौलकी गोलियाँ बना लें। इसीका नाम 'ग्रहणीकपाट' है। यह बकरीके दूध, कुटजके काढ़े या दहीके साथ दो रत्तीसे लगा कर १० रत्ती तक खाई जाती है और १० रत्तीसे फिर क्रमशः घटाई जाती है। इसके सेवन करनेसे ग्रहणीरोग शान्त हो जाता है। (रसेन्द्रसार)

२ लोहा, पारा, हरताल, स्वर्णमाक्षिक, सुहागा प्रत्येक १२ तोला, कौड़ीकी भस्म ४० तोला गन्धक १६ तोला, इनको जंबीर नीबूके रसमें घोंट कर पुटपाक बनता है। इसके सेवन करनेसे ग्रहणी, गुल्म, क्षय, कुष्ठ और प्रमेह ये रोग अच्छे हो जाते हैं।

३ पारा एक भाग, अभ्र (अभ्रक) दो भाग, गन्धक तीन भाग, इनको काकजङ्घाके रसमें तीन दिन रख कर जयन्ती, भृङ्गराज और जंबीर नीबूके रसमें एक दिन घोटना चाहिये, फिर गन्धकके बराबर यवक्षार और सुहागा दे कर अण्डीके तेलके साथ पुटपाक करना चाहिये। बादमें गिलोय, सेमल और भाङ्गके रसमें पुनः घोट कर आधे तोलेकी गोलियाँ बनानी चाहिये। इसीका नाम ग्रहणीकपाट है। यह मरिचचूर्ण और मधुके साथ सेवनीय है। इससे ग्रहणी रोगका प्रतीकार होता है।

४ चाँदी, मोती, सुवर्ण और लौह प्रत्येकका एक भाग, गन्धक दो भाग और पारा तीन भाग, इनको कैथ-के पत्तेके रसमें घोटना चाहिये, फिर गाढ़ा होने पर मृगशृङ्गभस्मके साथ मभारी पुटपाक करना चाहिये। बादमें वद्यालिका (बरियारा) के रसमें सातबार, लट-जीराके रसमें तीनबार, लोध, अतिविषा, मुस्तक, धावई के फूल और इन्द्रयवके काढ़ेमें तीन तीन बार भावना दे कर एक मासेकी गोलियां बनानी चाहिए। यह भी एक प्रकारका ग्रहणीकपाट है। यह अग्निवर्धक होता है। गोलमिचके साथ या शहदके साथ सेवन करनेसे सब तरहका अतीसार और ग्रहणीरोग दूर हो जाता है। (रसेन्द्रसार०)

ग्रहणीकपाटरस—एक प्रकारका औषध। पारा, गन्धक, जायफल, लवङ्ग प्रत्येकका अर्धतोला एकत्र चूर्ण कर सूर्यावर्त्त, बेल पानीफलके पत्तेके रससे भावना दे कर सूर्योत्तापमें सुखा ले और तब दो रत्ती परिमित हरएक गोली प्रस्तुत करे। यह विल्वपत्र रसके साथ सेवन कर नेसे ग्रहणी, अतिसार, शोथ और ज्वर इत्यादि रोग नाश हो जाते हैं।

ग्रहणीगजेन्द्रवटिका—एक तरहका औषध। पारा, गन्धक, लोह, सोहागा, अभ्र, हिङ्गु, शठी, तालिशपत्र, मोथा, धान्यक (धनिया), जीरा सैन्धवलवण, धातकी अतिविषा, शुण्ठी, शठद्धम (झोल) हरीतकी, रक्तचन्दन, तेजपत्र, जायफल, लवङ्ग, दालचीनी, इलायची, बाला (बालक) विल्वशलाटु मेथी और भाङ्ग समान भाग ले कर छागदुग्धमें मर्दन कर दो मासा परिमाणकी प्रत्येक गोली बनावें। इसका सेवन करनेसे नाना प्रकारकी ग्रहणी ज्वर, अतिसार, शूल, गुल्म, अम्लपित्त कामला हलीमक, कण्डु, कुष्ठ, विसर्प, गुदभ्रंश और क्रिमि प्रभृति रोग नाश होते हैं। यह बलकर, अग्निवर्धक और रसायन है।

ग्रहणीदोष (सं० पु०) ग्रहणीरोगसे उत्पन्न दोष।

ग्रहणीप्रदोष (सं० पु०) ग्रहणीदोष।

ग्रहणीमिहिरतैल (सं' क्लो०) ग्रहणी रोगके लिए उपयुक्त तैल। तिलतैल ४ शराव (३ सेर १६ तोला), मठा ४ शराव, कुटजत्वक् २ शराव, जल १६ शराव, शेष ४ शराव, धनियाँ २ शराव, जल १६ शराव, शेष ४ शराव, इन सबको मिला कर शरीर पर मालिस करनेसे ग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

ग्रहणीय (सं० त्रि०) ग्रह-अनीयर्। ग्रहण करने योग्य, जो ग्रहण किया जा सके।

ग्रहणीरुक् (सं० स्त्री०) संग्रहणी रोग।

ग्रहणीरोग (सं' पु०) स्वनामख्यात रोग। ग्रहणी देखो।

ग्रहणीवज्रकपाट—ग्रहणी रोगका एक तरहका औषध। पारा, गन्धक, यवक्षार, सिद्धि, वच, अभ्र और सोहागा, समभाग जयन्ती, भृङ्गराज और जम्बीर नीबूके रस द्वारा तीन दिन पीस कर अग्निके मृदु सन्तापसे चार दण्ड स्वेद दें। उसके बाद भाङ्ग, शिमूल और जयन्तीके रसमें सात सात बार भापरा दे कर दो या तीन मासा परिमित गोली बनावें। इसीको ग्रहणीवज्रकपाट कहते हैं। मधुके साथ सेवन करनेसे ग्रहणी दोष दूर हो जाता है।

ग्रहणीशार्दूलरस—रुद्रदेवसे आविष्कृत एक तरहका औषध। दो तोला पारा और दो तोला गन्धककी कज्जली कर सुवर्ण १६ भाग, लवङ्ग, नीमका पत्ता, जावित्री, छोटी इलायची प्रत्येक दो तोला, इन समस्त द्रव्योंको बीजामें भर कर ढांक दें। पाँच रत्तीकी मात्रा प्रतिदिन सेवन करनेसे सूतिका, ग्रहणी, अर्श, कास, श्वास, अतिसार और आमशूल प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं। यह दीपन, बलवीर्य और पुष्टिकारक है।

ग्रहणीशार्दूलवटिका (सं० स्त्री०) ग्रहणी रोग। जायफल, लवङ्ग, कुष्ठ, टङ्कण (सोहागाका फूला), विटलवण, जीरा, गुड़त्वक्, एला, धतुराका बीज, अफीम समान भाग ले कर प्रसारणी रससे मर्दन करें। पांच रत्ती परिमाणकी गोली बना कर प्रतिदिन सेवन करनेसे भी ग्रहणी रोग हट जाता है।

ग्रहणीहर (सं० क्लो०) ग्रहणीं हरति, हृ-अच। १ लवङ्ग। (त्रि०) २ ग्रहणीनाशक, वह जिससे ग्रहणी रोग नाश हो।

ग्रहता (सं० स्त्री०) ग्रहस्य भावः ग्रह-तल टाप्। ग्रहका भाव, ग्रहका धर्म।

ग्रहदक्षिणा (सं० पु०) ग्रहाणां ग्रहोद्देशेन देया दक्षिणा, ६-तत्। ग्रहयज्ञमें देने लायक दक्षिणा। यज्ञ देखो।

ग्रहदशा (सं० स्त्री०) १ गोचर ग्रहोंकी स्थिति। २ ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार किसी मनुष्यकी भली या बुरी अवस्था। ३ अभाग्य, कमबख्ती।

ग्रहदान (सं० क्लो०) ग्रहाणां दानं, ६-तत्। १ ग्रहके लिये दान, ग्रह दूर करनेका दान। २ ग्रहमें जो जो द्रव्य दान किया जा सकता। ग्रहविप्र देखो।

ग्रहदाय (सं० स्त्री०) जन्मकालके ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार किसीकी आयु, उम्र।

ग्रहदृष्टि (सं० स्त्री०) ग्रहाणां दृष्टि, ६ तत्। ग्रहगण जिस जगह अवस्थान करें, वहाँसे स्थानान्तरमें उनकी दृष्टि रहती है। यह दृष्टि चार प्रकारकी होती है,—पूर्ण, त्रिपाद, अर्द्ध और एकपाद। ग्रहगणकी दृष्टिके अनुसार फलाफलका भेद होता है। शुभग्रहोंकी पूरी दृष्टि रहनेसे शुभफल और अशुभग्रहोंकी पूरी दृष्टि हो तो अशुभफल होता है। दृष्टिकी हीनतासे यथाक्रमसे फलमें हीनता होती है। किस ग्रहको किस स्थानमें कैसी दृष्टि है इस बातको जाननेके लिए नीचे ग्रहदृष्टि-चक्र दिया जाता है। जिस स्थानमें ग्रह रहता है, उसे प्रथम स्थान और उसका परवर्त्ती राशियोंको क्रमसे द्वितीयादि स्थान जानना चाहिये। पूर्ण दृष्टिकी संख्या ६०, त्रिपाद दृष्टिकी ४५, अर्धदृष्टिकी २० और एकपाद दृष्टिकी संख्या १५ है। ग्रहचक्रमें जो दृष्टियां लिखी गई है, वे साधारण कार्यके लिए उपयोगी है।(१)

(१) "दशमे तृतीये चैव पाददृष्टिरुदाहृता।
अर्धं दृष्टिं नवमं पञ्चमं परिकीर्त्तिताः॥
चतुर्थे ऽष्टमे चैव पादोना परिकीर्त्तिता।
सप्तमे परिपूर्णं च फलमेवं प्रकल्पयेत्॥
तृतीय दशमा वार्किः पश्यन् पूर्णफलप्रदः।
त्रिकोणगान् गुरुश्चैव चतुर्थाष्टमगान् कुजः॥
सुतभवनगवान्यो पूर्णदृष्टिः सुरारे-
युगलदशमराशौ दृष्टिपादत्रयार्द्धः।
सहजरिपुचतुर्थे ऽष्टमे चार्द्धदृष्टिः।
स्थितिभवनसुपाल्यं नैव दृश्यं हि राहोः॥" (ज्योतिस्तत्त्व)

(क) ग्रहदृष्टिचक्र।

स्थान	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
१म	०	०	०	०	०	०	०	०
२य	०	०	०	०	०	०	०	४५
३य	१५	१५	१५	१५	१५	१५	६०	३०
४र्थ	४५	४५	६०	४५	४५	४५	४५	३०
५म	३०	३०	३०	३०	६०	३०	३०	६०
६ठा	०	०	०	०	०	०	०	३०
७म	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
८म	४५	४५	६०	४५	४५	४५	४५	३०
९म	३०	३०	३०	३०	६०	३०	३०	६०
१०	१५	१५	१५	१५	१५	१५	६०	४५
११श	०	०	०	०	०	०	०	०
१२श	०	०	०	०	०	०	०	६०

(ख) ग्रहदृष्टिचक्र।

ग्रहके स्थान	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि
१म	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
२य	०	०	०	०	०	०	०
३य	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०
४थ	१५	१५	१०	१५	१५	१५	१५
५म	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५
६म	०	०	०	०	०	०	०
७म	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
८म	०	०	०	०	०	०	०
९म	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५
१०म	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
११श	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१२श	०	०	०	०	०	०	०

नीलकण्ठताजकमें वर्षप्रवेशकालमें ग्रहोंकी दृष्टिका उल्लेख दूसरी तरहसे है। उसके अनुसार (ख) चिह्नित ग्रहदृष्टि चक्र दिया गया है। इसके दूसरे नियम (क) चिह्नित ग्रहदृष्टिचक्रके समान ही हैं। वर्षप्रवेशमें (ख) चिह्नित चक्रके अनुसार ग्रहोंकी दृष्टिसे फलाफल निरूपण किया जाता है।

दूसरे नियम वर्षप्रवेश और जातक आदि ग्रहोंमें देखना चाहिये।

नीलकण्ठताजकके मतसे वर्षप्रवेशकालमें सात ग्रहों की दृष्टिका तारतम्य देखनेमें आता है। इस लिए (ख) चिह्नवाले चक्रमें सात ग्रहोंका उल्लेख किया गया है।

ग्रहदेवता (सं० स्त्री०) ग्रहाणां देवता, ६ तत्। ग्रहगण का अधिष्ठात्री देवता रुद्र प्रभृति। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहद्रुम (सं० पु०) ग्रहनाशको द्रुम, मध्यपदलो०। शाकवृक्ष, काकडासींगी।

ग्रहधूप (सं० पु०) ग्रहाणां धूप, ६ तत्। ग्रहोंके उद्देशसे प्रदेय धूपविशेष, ग्रहोंको देनेलायक धूप। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहनायक (सं० पु०) ग्रहाणां नायक, ६ तत्। १ सूर्य। २ शनिश्चर। ३ अर्कवृक्ष, मन्दारका पेड़।

ग्रहनाश (सं० पु०) ग्रह मलवन्ध नाशयति नश णिच् अण, उपस। शाकवृक्ष, सतिवन नामका पेड़।

ग्रहनेमि (सं० पु०) ग्रहाणां ग्रहकक्षाणां नेमिरिव। १ मूल और मृगशिरा नक्षत्रोंके मध्यका चन्द्रमाका मार्ग। २ चन्द्रमा। ३ आकाश।

ग्रहपति (सं० पु०) ग्रहस्य पतिः, ६-तत्। १ सूर्य। २ अर्कवृक्ष। ३ शनि। ४ गृहस्वामी, घरका मालिक। ५ चन्द्र। (भारत १३।१४६।२१)

ग्रहपीड़ा (सं० स्त्री०) ग्रहजन्या पीड़ा, मध्यपदलो०। अशुभ ग्रह शारीरिक या मानसिक यातना देता है। इस लिये इसका नाम ग्रहपीड़ा पड़ा है।

ग्रहपीड़न (सं० क्ली०) ग्रहस्य पीड़न, ६ तत्। ग्रह पीड़ा।

ग्रहपुष (सं० पु०) ग्रहान् चन्द्रादीन् पुष्णाति स्वतेजसा ग्रहपुष-क। सूर्य।

ग्रहपूजा (सं० स्त्री०) ग्रहस्य पूजा, ६ तत्। ग्रहोंकी अर्चना, ग्रहोंकी पूजा।

ग्रहप्रत्यधिदैवत (सं० क्ली०) ग्रहाणां प्रत्यधिदैवत, ६ तत्। ग्रहोंका अधिपति देवता।

ग्रहबल (सं० क्लो०) ग्रहस्य बलं, ६-तत्। ग्रहका बल, ग्रहको सामर्थ्य ताकत या कार्यदक्षता। वृहज्जातकके मतानुसार—ग्रहोंका बल चार प्रकारका है—स्थानबल, दिक्बल, चेष्टाबल और कालबल। ग्रहगण अपने अपने उच्च, नवांश त्रिकोण या मित्रक्षेत्रमें अथवा अपने भवनमें रहनेसे बलवान् होते हैं इसोको स्थानबल कहते हैं। पूर्व में अर्थात् लग्नमें बुध और वृहस्पति दक्षिण या दशम स्थानमें रवि और मङ्गल पश्चिम या सप्तम राशिमें शनि तथा उत्तर या चतुर्थ राशिमें शुक्र और चन्द्र रहनेसे बलवान् होते हैं। इसका नाम दिक्बल है। जो ग्रह जिस राशिमें रहनेसे बलवान् होता है, वह ग्रह उस राशिसे गणनामें सप्तम राशिमें रहे, तो वह बिलकुल बलशून्य हो जाता है। बीचका बल अनुपातके अनुसार निरूपण करना चाहिये।

मकर आदि छह राशियोंको उत्तरायण और कर्कट आदि छह राशियोंको दक्षिणायन कहते हैं। रवि और चन्द्र उत्तरायणमें रहनेसे तथा मङ्गल, बुध, वृहस्पति, शुक्र और शनि वक्रगामी या चन्द्रके साथ रहनेसे बलवान् होते हैं। इसोको चेष्टाबल कहते हैं। युद्धमें जीतनेवाले ग्रह भी बलवान् होते हैं। (ग्रहयुद्ध देखो।)

चन्द्र, मङ्गल और शनि रातमें सूर्य, वृहस्पति और शुक्र दिनमें तथा बुध रात-दिन दोनों समयमें बलवान् होते हैं। पापग्रह कृष्णपक्षमें और शुभग्रह शुक्लपक्षमें बलशाली होते हैं। जो ग्रह जिस वर्ष, जिस मास, जिस दिन और जिस घड़ोका अधिपति है, उसी वर्ष में, उसी मासमें, उसी दिनमें और उसी घड़ीमें उसे बलवान् समझना चाहिये। इसको कालबल कहते हैं। वृहज्जातकको मतसे शनि सब ग्रहोंसे कमजोर है। शनिसे ज्यादा बलवान् मङ्गल है, मङ्गलसे ज्यादा बुध, बुधसे ज्यादा वृहस्पति, वृहस्पतिसे ज्यादा शुक्र, शुक्रको अपेक्षा चन्द्र और चन्द्रको अपेक्षा सूर्य ज्यादा बलवान् है। लघुजातकके मतसे, यही ग्रहोंका नैसर्गिक बल है।

बलके अनुसार ग्रहोंके फलोंका तारतम्य जाननेके लिये भावफल आदि शब्द देखो।

ग्रहबलि (सं० पु०) ग्रहाणां बलिः, ६ तत्। ग्रहोंका पूजोपहार। ग्रहयज्ञमें ग्रहके लिए देने योग्य गुड़ोदनादि। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहभक्ति (सं० स्त्री०) ग्रहाणां भक्तिर्भागः, ६-तत्। ग्रहोंका भाग, अंश या अधिकार। भूगोलमें अवस्थित ग्रहगण अंशक्रमसे समस्त देश, द्रव्य और पुरुष आदिका भोग करते हैं। जो जिस ग्रहका भोग्य है, उसे उस ग्रहकी भक्ति कहते हैं। वृहत्संहितामें ग्रहभक्तिके विषयमें ऐसा लिखा है—

सूर्यको भक्ति—नर्मदाके पूर्वार्द्ध शोण, भद्र, वङ्ग, सुह्म, कलिङ्ग, वाह्लिक, शक, यवन, मगध, शवर, प्राग्ज्योतिष, चीन काम्बोज, मेकल, किरात, विकट, पर्वतके भीतर और बाहर रहनेवाला, पुलिन्द, द्राविड़का पूर्वार्द्ध, यमुनाका दक्षिण किनारा, चम्पा, उदुम्बर, कौशाम्बी, चेदि, विन्ध्याटवी, पुण्ड्र, गोलाङ्गूल, श्रीपर्वत, वर्द्धमान और इक्षुमती ये सब देश, तस्कर, पारत, कान्तार, गोप, बीज, तुष, धान्य, कटुकवृक्ष, कनक, अग्नि, विष, औषध, समर, शूर, वैद्य, चतुष्पद, कृषिकर नृप, हिंस्र, पदातिक, चोर, कृष्णसर्प तथा यशोयुक्त तीक्ष्ण अरण्यद्रव्य, इन सबोंका अधिपति सूर्य है।

चन्द्रमाको भक्ति—गिरि, सलिल, दुर्ग कोशल, भरुकच्छ, समुद्र, रोमक, तुषार, वनवासी, तङ्गण, हल, स्त्रीराज्य, महार्णवद्वीप, मधुररस, कुसुम, फल, लवण, मणि, शङ्ख, मौक्तिक, पद्म शालि, यव, ओषधि, गेहूं, यजमान, राजाके वशीभूत ब्राह्मण, सफेद घोड़ा, रतिकारी युवती, चमूपति, भोज्यवस्त्र, शृङ्गयुक्त पशु, निशाचर, कार्षक और यज्ञविद्, ये सब चन्द्रके भोग्य है

मङ्गलको भक्ति—शोण, नर्मदा और भीमरथीके पश्चिमार्द्धमें स्थितराज्य, निर्विन्ध्या, वेत्रवती, गोदावरी, शिप्रा, वेणा, मन्दाकिनी, पयोष्णी, महानदी, सिन्धु, मालती और पारा आदि नदी, उत्तरपाण्ड्य, महेन्द्रादि, विन्ध्यमलयके निकटवर्त्ती स्थान, चोल, द्रविड़, विदेह, अन्ध्र अश्मक, भासापुर, कोङ्कण, ऋषिक, कुन्तल, केरल, दण्डक, कान्तिपुर, म्लेच्छ, सङ्करज, नासिक, भोगवर्द्धन विराट विन्ध्याद्रिपार्श्ववर्ती देश तापी और गोमती नदीका मीठा पानी पीनेवाले मनुष्य, नगरवासी, कृषिकर, पारत हुताशनाजीवी शस्त्राजीवी, अरण्यचर, दुर्ग, क्षुद्रनगर, घातक, गर्वित, नरपति कुमार, हस्ती, दाम्भिक, बालक पशुपालक, लाल फल और फूल, विद्रुम, चमूपालक,

गुड़, शराब, कोषागार अग्निहोत्री, धातुकी खान, चोर, शठ, दीर्घवैर और बहुभोजी, इन सबका अधिपति मङ्गल है।

बुधको भक्ति—लोहित्य और सिन्धुनद, सरयू गम्भीरिका, रथाह्वा, गङ्गा और कौशिकी आदि नदी, काम्बोज, वैदेह, मथुराका पूर्वार्द्ध, हिमालय, गोमन्त और चित्रकूटके तमाम राज्य, सौराष्ट्र, सेतु, जलमार्ग, पण्य, गुफा और पर्वतके जीवजन्तु, कूप, यन्त्र, गायन, लिखनेकी चीज, मणि, अङ्गराग, गन्धयुक्तिज्ञ पण्डित, चित्रकार, शाब्दिक गणितज्ञ प्रसाधक आयुष्कर, शिल्पशास्त्राभिज्ञ, चर, मायावी, शिशु, कवि, शठ, सूचक, अभिचाररत, दूत, नपुंसक, हास्यज्ञ, भूततन्त्र, इन्द्रजालज्ञ, रक्षक, नट, नर्त्तक, घृत तैल स्नेहके बीज, तिक्त, व्रतचारी, रसायनकुशल और अश्वतर इन सबका अधिपति बुध है।

वृहस्पतिकी भक्ति—सिन्धु नदीका पूर्वभाग, मथुराका पश्चार्द्ध, भरत, सौवीर, स्रुघ्नको उत्तरदिशा विपाशा और शतद्रु नदी, रामठ, शाल्व त्रैगर्त्त, पौरव, अम्बष्ठ, पारत, वाटधान यौधेय सारस्वत आर्जुनायन तथा मत्स्यदेशके अर्द्ध भागके ग्राम और सारे राज्य, हस्ती घोड़ा, पुरोहित राजा, मन्त्री, माङ्गल्य और पौष्टिक कार्यमें आसक्त व्यक्ति, कारुण्य, सत्य, शौच, व्रत, विद्या दान और धर्ममें आचरण करनेवाला व्यक्ति, पौर, धनशाली, शाब्दिक, वैदिक अभिचार और नीतिज्ञ, छत्र, ध्वजा और चामर आदि उपकरण, शैलज, मांसी, तगर कुड़, पारद सैन्धव, लतासे उत्पन्न हुई चीज, मधुररस, मोम तथा चोरक नामका गन्धद्रव्य, ये सब वृहस्पतिके भोग्य हैं।

शुक्रको भक्ति—तक्षशिला, मार्त्तिकावत, बहुगिरि, गान्धार, पुष्कलावत, प्रस्थल, मालव, कैकय, दशार्ण, उशीनर और शिविदेश, वितस्ता, इरावती और चन्द्रभागा नदीका पानी पीनेवाले मनुष्य, रथ, कुञ्जर, रजताकर, माहुत, धनुर्धारी, सुरभीकुसुम, अनुलेपन, मणिवज्रादि विभूषण, पद्म, शय्या, नवीन युवती, सुपक्व अन्न और मधुर रसवाले भोजनको खानेवाले प्राणी, उद्यान, जल, कामी, यश, सुख, औदार्य और रूपवान्, विद्वान, मन्त्री, वणिक्, कुम्हार, चित्राण्डज, हर्र, बहेड़ा रेशमी कपड़ा, सनका कपड़ा, कम्बल, पत्ता, श्रोणिक लोध्रपत्र, चोरक, जायफल, अगुरु, वच, पीपल और चन्दन, इन सबका अधिपति शुक्र है।

शनिकी भक्ति—आनर्त्त, अर्बुद पुष्कर, सौराष्ट्र आभीर, शूद्र, रैवतक, जिस देशमें सरस्वती नदी न हो वह देश, पश्चिमके देश, कुरुक्षेत्र प्रभास, विदिशा, वेदस्मृतिके पासकी चीज, खलूरूड, मलिन, नीच, तैली, विहीनसत्त्व, उपहतपुरुष, बन्धनकारी, व्याध, अशुचि, कैवर्ट (धीवर), विरूप, वृद्ध, शौकरिक, गणपूज्य, स्खलितव्रत भील, पुलिन्द, दरिद्र, कटु, तिक्त, रसायन, विधवा स्त्री, सर्प, चोर, रानी, खर, करभ (हाथीका बच्चा), चना, पागल और निष्पाप द्रव्य, इन सबका शनि अधिपति है।

राहुकी भक्ति—पर्वतकी चोटी, गुफा, गुहाके निवासी, म्लेच्छ, शूद्र, गोमायुभक्ष्य, शूलिक, वोक्काण, अश्वमुख, विकलाङ्ग, कुलाङ्गार, हिंस्र, कृतघ्न, चोर, सत्य, शौच और दानसे वर्जित खरचर, मल्लयुद्धकारी, तीव्ररोषयुक्त, नीच, उपहत, दाम्भिक, राक्षस, निद्रालु, धर्महीन, मूग और तिल इन सबका अधिपति राहु है।

केतुग्रहकी भक्ति—गिरिदुर्ग, पह्लव, श्वेतहूण, चोल, अवगान, मरु, चीन, प्रत्यन्तदेश, धनी, उदारस्वभाव, कलहकारी, पराक्रमी, परदाररत (लम्पट), झगड़ैलू, मदगर्वित मूर्ख और अधार्मिक विजयाभिलाषी, इनका अधिपति केतुग्रह है।

जो ग्रह प्रकृतिस्थ स्निग्धांशु तथा निर्घात उल्का रज वा ग्रह मर्दन द्वारा हत नहीं होता, स्वभवनगत स्वोच्च स्थित है और शुभग्रहसे देखे जाने पर उदित होता है उस ग्रहको जिनका अधिपति कहा गया है, उनका मङ्गल होता है। इसके विपरीत लक्षण हो तो अमङ्गल होता है। (वृहत्संहिता १६ अ०)

ग्रहभीतिजित् (सं० पु०) ग्रहभीति जयति जि क्विप्। चोड़ा नामका गन्धद्रव्य।

ग्रहभोजन (सं० क्ली०) ग्रहाणां भोजनं, ६ तत्। ग्रहके लिये देने लायक गुड़ ओदन प्रभृति। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहमण्डल (सं० क्ली०) ग्रहाणां मण्डलं, ६-तत्। १ ग्रह समूह, ग्रहोंका झुण्ड। २ ग्रहपूजाके लिये अष्टदल पद्माकार स्थानभेद। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहमैत्र (सं० क्ली) ग्रहयोर्दम्पति राश्यधिपयोर्मैत्र,

६-तत्। वर और कन्याके ग्रहोंके स्वामियोंकी मित्रता। इसका विचार विवाहके समय किया जाता है।

विवाह देखो।

ग्रहमैत्री (सं० स्त्री०) ग्रहमैत्र देखो।

ग्रहयज्ञ (सं० पु०) ग्रहाणां यज्ञः, ६-तत्। शान्ति और पुष्टि आदिकी कामनाके लिए ग्रहके उद्देश्यसे जो यज्ञ किया जाता है। इसका प्रारम्भ काल इत्यादि संस्कार-तत्त्वमें लिखा है। दीपिकाके मतसे शुभग्रहके दिनमें या रविवारमें चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, पुष्या, अश्विनी, हस्ता, रोहिणी, उत्तरफल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तरभाद्रपदनक्षत्रमें, शुभराशिमें तथा विलग्नमें शुभ होनेसे शान्तिक और पौष्टिक ग्रहयज्ञ करना चाहिये। जन्मलग्नमें और गोचरमें जो ग्रह अशुभसूचक होते हैं, ग्रहयज्ञमें उन्हींकी पूजा की जाती है। भावी अमङ्गल-का निवारण करना ही ग्रहयज्ञका उद्देश्य है। शान्तिके लिए जो ग्रहयज्ञ किया जाता है, उसमें समयका विचार नहीं करना पड़ता। मलमास (लौंदका महीना) आदि-में भी किया जा सकता है, परन्तु पौष्टिक ग्रहयज्ञ शुद्ध समयमें किया जाता है।

प्रयोग—जिस दिन ग्रहयज्ञ करना हो, उस दिन यज-मानको सबसे पहिले स्नान और नित्यक्रिया करके गोबर-से लिपे हुए शुद्ध स्थानमें उत्तरकी तरफ मुंह कर कुशा-सन पर बैठना चाहिये, फिर स्वस्तिवाचन करना चाहिये। ब्राह्मणोंका वरण करके सङ्कल्पपूर्वक मन्त्रोच्चारणके साथ साथ सफेद सरसों क्षेपण कर विघ्नकारी असुरोंको दूर करना चाहिये। इसके बाद गणाधिप और षोड़श मातृ-काकी पूजा, वसोधारा और आभ्युदयिक श्राद्ध करते हैं। यजमानके अशक्त होनेसे प्रतिनिधि रूपसे ब्राह्मण वरण कर सकते हैं। मण्डपके उत्तरपूर्व भागमें २४ अङ्गुल या एक हात विस्तीर्ण और १२ अङ्गुल या आधा हात ऊंची वेदी बनानी पड़ती है। वेदीके बीचमें लालचन्दनसे गोलाकार सूर्य बनाया जाता है, अग्निकोण-में सफेद रंगका अर्द्धचन्द्राकृति चन्द्र, दक्षिणकी तरफ त्रिकोण लाल मंगल, ईशानकोणमें पीला चम्पाकृति बुध, उत्तरमें पीतवर्णका पद्माकार वृहस्पति, पूर्वमें श्वेतवर्ण-का चौकोन शुक्र, पश्चिममें काला सर्पाकृति शनि, नैऋत-कोणमें कृष्णवर्णका मकराकृति राहु तथा वायुकोणमें खड्गाकार धूम्रवर्णका केतु बनाया जाता है। अपने गृह्य-सम्मत विधिके अनुसार अग्निस्थापनसे ले कर ब्रह्मस्थापन तक कर्मका अनुष्ठान कर ग्रहोंका ध्यान और आवाहन पूर्वक यथोक्त गन्धपुष्पादि द्वारा ग्रहोंकी पूजा की जाती है।

गन्ध—सूर्यको लालचन्दन, चन्द्रको श्वेतचन्दन, मङ्गल-को कुङ्कुम, बुधको सरलकाष्ठ, वृहस्पतिको समान भाग-से मिश्रित लालचन्दन, श्वेतचन्दन, कुङ्कुम और सरल काष्ठ, शुक्रको श्वेतचन्दन, शनिको कस्तूरी तथा राहु और केतुको पद्मकाष्ठकी गन्ध देनी पड़ती है।

धूप—सूर्यको गुग्गुल, चन्द्रको सरलकाष्ठ, मङ्गलको देवदारु, वृहस्पतिको दशाङ्ग, शुक्रको अगुरु शनिको कालागुरु, राहुको दारचीनी, तथा केतुको मधुमिश्रित दारचीनीकी धूप दी जाती है। ग्रहपूजाके बाद ग्रहके अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताकी पूजा करके ग्रहोंको बलि प्रदान किया जाता है

बलि—सूर्यको गुड़ौदन, चन्द्रको सरलकाष्ठ, मङ्गल-को पक्व यवचूर्णका यावक, बुधको क्षीरान्न, वृहस्पतिको दध्योदन शुक्रको घृतौदन, शनिको यव और तिलतण्डुल-की खिचरी, राहुको छागमांस, केतुको बकरीके दूधकी खीरके साथ अजकर्णरक्त मिश्रित यव और तिलतण्डुल दिया जाता है।

इसके बाद चरुपाक कर कुशण्डिका समापनपूर्वक रवि आदि ग्रहोंका चरुहोम किया जाता है। यथाशक्ति जप और मधु व घृतयुक्त समिधमें होम करना पड़ता है।

समिध—सूर्यको अकवन, चन्द्रको पलाश, मङ्गलको खदिर (कत्थेका पेड़), बुधको लटजीरा, वृहस्पतिको पीपल, शुक्रको उदुम्बर, शनिको अग्निगर्भा (शमी या किकुर), राहुको दूब और केतुके लिए कुशाकी लकड़ी-से अग्नि जलाई जाती है। (ग्रहयागतत्त्व)

मत्स्यपुराणमें लिखा है कि, ग्रहवेदीके पूर्वोत्तर कोणमें एक भरा हुआ घड़ा रख कर, उसे दही, अक्षत, फल, वस्त्रयुगल, पञ्चरत्न, पञ्चभङ्ग और आमके पत्तोंसे सुशोभित कर फिर उस पर गज, अश्व, अश्विनी, वल्मीक, सङ्गम और गोशालाकी मिट्टी तथा यजमानके स्नानके लिए सर्वौषधि निक्षेप की जाती है।

ग्रहोंके अधिदेवता—सूर्यका ईश्वर, चन्द्रमाकी उमा, मङ्गलका स्कन्द, बुधका हरि, बृहस्पतिका ब्रह्मा शुक्रका इन्द्र, शनिका यम, राहुका काल और केतुका चित्रगुप्त।

ग्रहोंके प्रत्यधिदेवता—सूर्यका अग्नि, चन्द्रका जल, मङ्गलका क्षिति, बुधका विष्णु, बृहस्पतिका इन्द्र, शुक्रकी शची या इन्द्राणी, शनिका प्रजापति, राहुका सर्प और केतुका ब्रह्मा। (मत्स्यपु० [illegible])

ग्रहध्यान—मत्स्यपुराण और ग्रहयागतत्त्वके मतानुसार—

सूर्यध्यान—

"आदित्यं काश्यपं रक्तं कालिङ्गं द्वादशाङ्गुलम्।
पद्महस्तद्वयं पूर्वाननं सप्ताश्ववाहनम्।
शिवाधिदैवतं सूर्यं वह्निप्रत्यधिदैवतम्॥"

चन्द्रका ध्यान—

"शशाङ्कं वैश्यमात्रेयं हस्तमात्रं सिताम्बरम्।
श्वेतं द्विबाहुं वरदं दक्षिणेतरम्॥
दशाश्वं श्वेतपद्मस्थं विचिन्त्योमाधिदैवतम्।
जलप्रत्यधिदैवञ्च सम्यगावाहयेत् तथा॥

मङ्गलका ध्यान—

"आवन्त्यं क्षत्रियं रक्तं मेषस्थं चतुरङ्गुलम्।
आरक्तमाल्यवसनं भारद्वाजं चतुर्भुजम्॥
[illegible]।
आग्नेयं सुमुखं [illegible] तद्देवं समाह्वयेत्॥
स्कन्दाधिदैवतं ध्यायेत् क्षितिप्रत्यधिदैवतम्॥"

बुधका ध्यान—

"मागधं [illegible] पीतं चतुर्भुजम्।
[illegible]॥
[illegible] पीतवस्त्रं समाह्वयेत्।
नारायणाधिदैवं च विष्णुप्रत्यधिदैवतम्॥

बृहस्पतिका ध्यान—

"[illegible] पीतं [illegible] गुरुम्।
ध्यात्वा पीताम्बरं [illegible] चतुर्भुजम्॥
[illegible]।
ब्रह्माधिदैवं [illegible] इन्द्रप्रत्यधिदैवतम्॥"

शुक्रका ध्यान—

"शुक्रं [illegible]।
[illegible] चतुर्भुजम्॥
[illegible]।
[illegible] शचीप्रत्यधिदैवतम्॥

शनिका ध्यान—

"सौराष्ट्रं काश्यपं शूद्रं [illegible] चतुरङ्गुलम्।
कृष्णं कृष्णाम्बरं [illegible] सौरिं चतुर्भुजम्॥
[illegible] समाह्वयेत्।
यमाधिदैवतं प्रजापतिप्रत्यधिदैवतम्॥"

राहुका ध्यान—

"राहुं मलयजं शूद्रं पैठीनं द्वादशाङ्गुलम्।
कृष्णं कृष्णाम्बरं सिंहासनं ध्यात्वा समाह्वयेत्॥
चतुर्बाहुं [illegible]।
कालाधिदैवं [illegible] सर्पप्रत्यधिदैवतम्॥"

केतुका ध्यान

"कौशद्वीपं केतुगणं जैमिनीयं [illegible]।
धूम्रं [illegible]॥
[illegible] तथा।
चित्रगुप्ताधिदैवं च ब्रह्मप्रत्यधिदैवतम्॥

विष्णुधर्मोत्तरमें ग्रहोंके अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता-के ध्यान लिखे हैं। जानना हो तो उस ग्रन्थको देखना चाहिये।

ग्रहोंकी दक्षिणा—सूर्यकी दक्षिणा कपिलाधेनु है। दान-मन्त्र इस प्रकार है—

"कपिले सर्वदेवानां पूजनीयासि रोहिणि।
तीर्थदेवमयी यस्मात् शान्तिं प्रयच्छ मे॥"

चन्द्रकी दक्षिणा शङ्ख है। दानमन्त्र इस प्रकार है—

'पुण्यस्त्वं शङ्ख पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम्।
विष्णुना विधृतश्चासि अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥'

मङ्गलकी दक्षिणा है—भार ढोनेवाला लाल रंगका बैल। दानमन्त्र—

"धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारकः।
अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥"

बुधकी दक्षिणा है—स्वर्ण। दानमन्त्र—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥'

बृहस्पतिकी दक्षिणा—पीतवस्त्र। दानमन्त्र—

पीतवस्त्रयुगं यस्माद्वासुदेवस्य वल्लभम्।
[illegible] विष्णो अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

शुक्रकी दक्षिणा—अश्व। दानमन्त्र—

"[illegible]।
चन्द्रार्कवाहनो नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥'

शनिकी दक्षिणा धेनु है। दानमंत्र—

"यस्मात्त्वं पृथिवी सर्वा धेनुः केशवसन्निभा।
सर्वपापहरा नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥"

राहुकी दक्षिणा अयस है। दानमन्त्र—

"यस्मादायसकर्माणि तवाधीनानि सर्वदा।
लाङ्गलाद्यायुधादीनि तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥"

केतुकी दक्षिणा—अज। दानमन्त्र—

"यस्मात्त्वं सर्वयज्ञानां मुख्यत्वेन व्यवस्थितः।
दानं विभावसो नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥"

ग्रहोंको सन्तुष्ट करनेके लिए गाय, पलङ्ग और भूमि दान करनेका भी विधान है। सब तरहके ग्रहयज्ञमें अयुत होम करना पड़ता है। अभीष्ट कामनाकी पूर्तिके लिए लाख जप किये जाते हैं।

ग्रहयज्ञ समाप्त होने पर पूर्णाहुति दे कर पूर्वस्थापित पूर्णकुम्भसे चार ब्राह्मण यजमानको स्नान कराते हैं। स्नानका मन्त्र इस प्रकार है—

"सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निरृतिस्तथा॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः पुष्टिः कान्तिश्च मातरः॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च॥
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च॥
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये॥"

स्कन्दपुराणमें लिखा है कि, ग्रहोंको जन्मभूमि, गोत्र, अग्नि, वर्ण और मुख आदिको बिना जाने ही शान्ति करनेसे ग्रहगण अपमानित होते हैं। इस लिए उसका कुछ फल भी नहीं होता, अतएव शान्ति करनेसे पहिले ग्रहोंको जन्मभूमि आदि भी जानना आवश्यकीय है। ग्रहोंकी जन्मभूमि आदि जाननेका सरल तरीका नीचे दिया जाता है—

नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	बृहस्पति	शनि	राहु	केतु
जन्मभूमि	कलिङ्ग	यमुना	अवन्ती	मगध	सैन्धव	भोजकट	सौराष्ट्र	बर्बरदेश	अन्तर्वेदी
गोत्र	काश्यप	अत्रि	भरद्वाज	अत्रि	अङ्गिरा	भृगु	काश्यप	पैठिनसि	जैमिनि
अग्नि	कपिल	पिङ्गल	धूमकेतु	जाठर	शिखी	हाटक	महातेजा	हुताशन	हुताशन
विप्रादिवर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य	विप्र	विप्र	शूद्र	शूद्र	शूद्र
वर्ण (रूप)	रक्त	शुक्ल	रक्त	पीत	पीत	शुक्ल	कृष्ण	कृष्ण	चित्र
मण्डलमें स्थान	मध्य	पूर्वदक्षिण	दक्षिण	पूर्वोत्तर	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	दक्षिणपश्चिम	पश्चिमोत्तर
दृष्टि	ऊर्द्ध्वदृष्टि	अधोदृष्टि	दक्षिणदृष्टि	वामदृष्टि	वामदृष्टि	ऊर्द्ध्वदृष्टि	अधोदृष्टि	दक्षिणदृष्टि	दक्षिणदृष्टि
आकार	गोल	अर्द्धचन्द्र	त्रिकोण	चाप	पद्म	चतुष्कोण	सर्प	मकर	खड्ग
वाहन	सप्ताश्वरथ	दशाश्वरथ	मेष	सिंह	हस्ती	घोड़ा	गृध्र	सिंह	गृध्र
मूर्त्ति द्रव्य	ताम्र	स्फटिक	श्वेतचन्दन	स्वर्ण	स्वर्ण	चाँदी	लोहा	सीसा	काँसा
गन्ध	लालचन्दन	श्वेतचन्दन	लालचन्दन	कुङ्कुम	कुङ्कुम	श्वेतचन्दन	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी
पुष्प	कनेर	कुमुद	जवा	चम्पा	पद्म	मालती	चमेली	कुन्द	चमेली
धूप	गुग्गुल	घृताक्त यक्षधूप	सर्जरसयुक्त सिल्हक	पीला अगुरु और सिल्हक	दशाङ्ग	घृतयुक्त बिल्वागुरु	पद्मकाष्ठ	यक्षधूप	मधुयुक्त दारचीनी
मतान्तरमें धूप	कुंदरू	घृताक्त	सर्जरस	पीलाअगुरु	सिल्हज	बिल्वागुरु	गुग्गुलू	लाख	लाख
फल	अङ्गूर	ईख	सुपारी	नारङ्गी	जम्बीरीनीबू	बीजौरा	जायफल	नारियल	अनार
वस्त्र	रक्त	श्वेत	रक्त	पीला	पीला	श्वेत	कृष्ण	काला	चित्र

नाम	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	शुक्र	बृहस्पति	शनि	राहु	केतु
रत्न	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलक	लोहितमणि	वैदुर्यमणि
बलि	गुडोदन	घृतपायस	यावक	क्षीरयष्टिक	दध्योदन	घृतौदन	कृसर	अजमास	चित्रान्न
समिध	अकवन	पलाश	कत्थका पेड	लटजोरा	पीपल	उदुम्बर	शमी	दुर्वात्रय	कुशत्रय
दक्षिणा	कपिलाधेनु	शङ्ख	लाल बैल	स्वर्ण	पीतवस्त्र	श्वेताश्व	कृष्णधेनु	खड्ग	छाग
जपसंख्या	६०००	१००००	७०००	१७०००	१६०००	२००००	१९०००	१८०००	७०००
अधिदेवता	शिव	उमा	स्कन्द	नारायण	ब्रह्मा	इन्द्र	यम	काल	चित्रगुप्त
प्रत्यधिदेवता	अग्नि	जल	चिति	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	प्रजापति	सर्प	ब्रह्मा

यजमान अर्थात् जिसके लिए ग्रहयज्ञका अनुष्ठान किया जाता है, उसको वेदके अनुसार वैदिक मन्त्र द्वारा ग्रह, अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताका होम करना पडता है। भिन्न भिन्न वेदमन्त्रके आदिके कुछ शब्द और किस वेदमें किस जगह वह मन्त्र लिखा है उसके चिह्न नीचे लिखे जाते हैं—

सूर्यके होममन्त्र। ऋक—"आकृष्णेण रजसा।" १।३५।२। यजु—'आकृष्णेण रजसा।" (वा०) ३।४०, साम—'उदुत्य जातवेदस" १।१।२।३।११, अथर्व—'विपासहि महमान" १७।१।१।

चन्द्रके होममन्त्र। ऋक—"आप्यायस्व समेतुते १।९१।१६, यजु—'इम देवा असपत्न" (वा०) ९।४०, साम—"सन्तो पयांसि" (वा०) १२।११३, अथर्व—शक्रध स नक्षत्राणि" ६।१२८।१।

मङ्गलके होममन्त्र। ऋक—'अग्निमूर्द्धा दिव" ८।४४।१६। यजु—"अग्निर्मूर्द्धा दिव' (वा०) १३।१२०, साम—'अग्निर्मूर्द्धांदिव" १।१।१।३।७, अथर्व—"त्वया मन्यो सरथम्" ४।३१।१।

बुधके मन्त्र। ऋक—"अग्ने विवस्वत्" १।४४। यजु—"उद्बुध्यस्वाग्ने" (वा०) १५।५४; साम—"अग्ने विवस्वत्' १।१।१।४।८, अथर्व—"यद्राजानोविभजन्त" ३।२९।१।

बृहस्पतिके मन्त्र। ऋक्—"बृहस्पते परिदीया" १०।१०३।४, यजु—"बृहस्पते अतियदर्य्य' (वा०) २६।३। साम—"बृहस्पते परिदीया १।६।३।२।१; अथर्व—"बृहस्पतिर्न परिपातु" ७।५१।१।

शुक्रके मन्त्र। ऋक—"शुक्र ते अन्यत् ६।५८।१; यजु—"अन्नात् परिस्रुत' (वा०) १९।७५; साम—"शुक्र तेऽन्यत्' १।२।१।६।२, अथर्व—'हिरण्यवर्णा शुचय १।३३।१।

शनिके मन्त्र। ऋक्—"शन्नोदेवीरभीष्टये" १०।९।४, यजु—"शन्नोदेवीरभीष्टये" (वा०) ३६।१२। साम—"शन्नो" १।१।१।३।१३, अथर्व—"सहस्र बाहु पुरुष" १९।६।१।

राहुके मन्त्र। ऋक—"कयानश्चित्र" ४।३१।१; साम—वैसा ही, यजु—"काण्डात् काण्डात्" (वा०) १३।२०, अथर्व—"दिव्य चित्र ऋतुधा"।

केतुके मन्त्र। ऋक—"केतु कृण्वन्नकेतवे" १।६।३; ऐसा ही यजुमें है—(वा०) २९।३७, साममें ऐसाही—२।९।३।१२।३, अथर्व—"यस्ते पृथु स्तनयित्नु" ७।११।१।

ग्रहाधिदेवताके होमके मन्त्र। १ ईश्वरके मन्त्र। ऋक—"गौरीर्मिमाय" १।१६४।४१, यजु—'श्रीश्चते लक्ष्मीश्च" (वा०) ३१।२२; साम—"आपोहिष्ठा" २।९।२।१०।१; अथर्वमें ऐसा ही है—१।५।१।

२ उमाके मन्त्र। ऋक्—"आवो राजानम्" ४।३।१; यजु—"त्र्यम्बकं यजामहे" (वा०) ३।६०; साम—१।१।२।२७ अथर्व—मनोविदन विव्याधिन." १।१६।१।

३ स्कन्दके मन्त्र। ऋक्—"कुमार माता" ५।२।१। यजु—"यदक्रन्द प्रथमम्" (वा०) २९।११; साम—"स्योना पृथिवी" (वा०) ३५।२१; अथर्व—"अग्निरिव मन्योत्विषित' ४।३१।२।

४ हरिके मन्त्र। ऋक्—"इदं विष्णुर्विचक्रमे" १।२२।१७। साममें भी ऐसाही है—१।३।१।३।९; यजु—विष्णोरराटमसि" (वा०) ५।२१; अथर्व—"प्र तद्विष्णु स्तवते' ७।२६।२।

५ ब्रह्माके मन्त्र। ऋक्—"त्वमित् सप्रथा" ८।६०।५। यजु—"आ ब्रह्मन् ब्राह्मण" (वा०) २२।२२, साम—'त्वमित्सप्रथा" १।१।१।४।८; अथर्व—"ब्रह्मज्ज्ञानम्"-५।६।१।

६ इन्द्रके मन्त्र। ऋक्—"इन्द्रं वो विश्वत:" १।७।१०; यजु:—"सजोषा इन्द्रः" (वा०) ७।३७; साम—'इन्द्रमित् देवतातये' १।३।२।१।७; अथर्व-"इन्द्रेमं प्रतरं" ६।५।२।

७ यमके मन्त्र। ऋक्—"यमाय सोमं सुनुत" १०।१४।१३; यजुः—'यमाय त्वाङ्गिरस्वते' (वा०) ३८।९; साम—'आय गौ: पृश्निः' २।६।१।११।१; अथर्व-"यः प्रथमं प्रवतमाससाद' ६।२८।३।

८ कालके मन्त्र। ऋक्—"ब्रह्मज ज्ञान"; साममें भी ऐसा है—१।४।१।३।९; यजु:—"कार्षिरसि समुद्रस्य" (वा०) ६।२८; अथर्व—"रोहित: काल:" १३।२।३९।

९ चित्रगुप्तके मन्त्र। ऋक्—"उषो वाजं हि" १।४८।११; यजु:—"चित्रावसो स्वस्ति (वा०) ३।१८; साम—"चित्र इच्छिशो:" १।१।२।२।२; अथर्व—"आज्ञातं यदनाज्ञातम्"

प्रत्यधिदेवताओंके मन्त्र। १ अग्निके मन्त्र। ऋक् "अग्निं दूतं वृणीमहे" १।१२।१ और साममें १।१।१।१।३; यजु:—"अग्निं दूतं पुरोदधे" (वा०) २२।१७, अथर्व—"समास्त्वाग्ने ऋतवः" २।६।१।

२ जलके मन्त्र। ऋक्, "अप्सु मे सोमः" १।२३।२०;यजुः-"आपो हिष्ठा" (वा०) ११।५०; साम—"उदुत्तमं वरुण पाशम्" (वा०) १२।१२; अथर्व "शन्नो देवीरभीष्टये" (वा०) ३६।१२।

३ क्षितिके मन्त्र। ऋक् "स्योना पृथिवि" १।२२।२५; यजुः (वा०) ३५।२१; साम—"पृथिव्यन्तरोक्षम्" (तै० आ०) ७।७।२; अथर्व—"भूमे मातर्निधेहि" १२।१।६३।

४ विष्णुके मन्त्र। ऋक् "सहस्रशीर्षा पुरुष" १०।९०।१, साममें भी ऐसा है; यजु:—"इदं विष्णुर्विचक्रमे" (वा०) ५।१५, अथर्वमें भी ऐसा है—७।२६।४।

५ इन्द्रके मन्त्र। ऋक्—"इन्द्रायेन्द्रो मरुत्वते" ९।६४।२२; यजु:—"इन्द्र आसां नेता" (वा०) १७।४०; साम—"इन्द्रायेन्दो" १।५।२।४।६; अथर्व—"इन्द्र जुषस्व प्रवहा" २।५।१।

६ शचीके मन्त्र। ऋक्—"उत्तानपर्णे सुभगे" १०।१४५।२, यजु:—"अदित्यै रास्नासि" (वा०) १।३०; साम—"एकाष्टका तपसे" (अ० ३।१०।१२); अथर्व—"प्रेतं पादौ" १।२७।४।

७ प्रजापतिके मन्त्र। ऋक्—"प्रजापते न त्वद्" १०।१२१।१०; साममें भी ऐसा है; यजु:में भी ऐसा है—(वा०) १०।२०। अथर्व—"नक्तं जातस्योषधे" १।२३।१।

८ सर्पके मन्त्र। ऋक्—"आयं गौ: पृश्निः" १०।१८९।१; यजु:—"नमोऽस्तु सर्पेभ्यः" (वा०) १३।६; साम—"तवेन्द्रिद्रावसम्" १।३।२।३।८; अथर्व—'शेरभक शेरभ" २।२४।१।

९ ब्रह्माके मन्त्र। ऋक्—"ब्रह्मजज्ञानम्" (वा०) १३।३८; यजुमें भी ऐसा ही है (वा०) १३।३; साम—"एष ब्रह्मा य ऋत्विजः" १।५।२।१।२; अथर्व—"ये दिशामन्तर्देशेभ्यः" ४।४०।८।

ग्रहयाग (सं० पु०) ग्रहाणां यागः, ६-तत्। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहयामल—ज्योतिष सम्बन्धीय एक यामल ग्रन्थ।

ग्रहयाय्य (सं० त्रि०) ग्रह-णिच्-आय्य। ग्राहक, लेनेवाला।

ग्रहयालु (सं० त्रि०) ग्रह-णिच्-आलु। १ ग्राहक, ग्रहण करनेवाला। २ खरीदनेवाला, मोल लेनेवाला।

ग्रहयुति (सं० पु०) ग्रहाणां युतिः, ६-तत्। सूर्यादि ग्रहोंकी स्थितिविशेषमें कल्पनीय योगविशेष। ग्रह सर्वदा अपनी अपनी कक्षामें रहते हुए भ्रमण करते हैं, इनका योग या मिलन नहीं हो सकता। परन्तु जब दो ग्रह ठीक समसूत्रपात होते हैं अर्थात् जब एक सूत्रमें गुंथ जाते हैं, तब वे मोतीकी तरह तरऊपर ठहरे रहते हैं। उस समय उन्हें ग्रहयुति कहते हैं।

सूर्यसिद्धान्तके मतसे—बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और मङ्गल इन पांचोंका नाम ताराग्रह है। ताराग्रहके साथ चंद्र और सूर्यका योग अर्थात् समसूत्रमें स्थिति होती है। सूर्यके साथ ताराग्रह या चन्द्रका योग होनेसे उनका पूर्ण अस्त होता है। चन्द्रके साथ ताराग्रहका परस्परमें योग होनेसे, उसे ग्रहयुद्ध कहते हैं। ग्रहयुद्ध देखो। गणितको प्रक्रियाके अनुसार ग्रहोंके भूत या भविष्यत्‌के योग स्थिर किये जा सकते हैं। सूर्यसिद्धान्तके मतानुसार जिन दो ग्रहोंका योग निर्णय करना हो, उनमेंसे जो शीघ्रगामी हो उसके स्फुटसे मन्दगतिवालेका स्फुट थोड़ा हो तो समझना चाहिये कि, कुछ दिन पहिले ही उन दोनों ग्रहोंका संयोग हो गया है और यदि शीघ्रगतिवाले ग्रहकी अपेक्षा मन्दगतिवाले ग्रहका स्फुट अधिक

हो, तो समझना चाहिये कि थोड़े हो दिनोंमें उन दोनोंका संयोग हो जायगा। दोनों ग्रहोंकी स्वाभाविक गति पूर्वकी तरफ हो, तब ऐसा होता है। वक्रगतिवाले दो ग्रहोंमेंसे शीघ्रगामी ग्रहका स्फुट मन्दगामी ग्रहसे अधिक हो, तो दोनोंका योग भविष्यमें होता है और शीघ्रगामी ग्रहसे मन्दगामी ग्रहका थोड़ा हो तो योग हो चुका है—ऐसा निर्णय करना चाहिये। दो ग्रहोंमेंसे एककी गति वक्र और एककी सीधी होनेसे वक्रगति वालेसे पूर्वगामी ग्रहका स्फुट अधिक होनेसे योग हो गया और पूर्वगामीसे वक्रगामी ग्रहका स्फुट अधिक हो तो योग होगा—ऐसा निश्चय करना चाहिये।

ग्रहयुतिके समय निर्णय करनेका तरीका—गणितवेत्ता अपनी इच्छानुसार जब चाहें तब गणना द्वारा पूर्ववर्त्ती और परवर्त्ती ग्रहयोगका समय निर्णय कर सकते हैं। जिस समय ग्रहयोगोंकी गणना करनी हो, उस समय अभीष्ट ग्रहद्वयका तात्कालिक स्फुट निर्णय करके दोनोंके अन्तरकी कला करनी चाहिये। बादमें उसके दोनों ग्रहोंकी गतिकी कलासे पृथक् पृथक् गुणा करनेसे जो दो राशि उपलब्ध होगी, उनमेंसे जिस ग्रहकी गतिकी कलासे गुणा करें जो राशि उपलब्ध हुई हो उस राशिको उस ग्रहके आदिके अक्षरसे चिह्नित कर अलग रखना चाहिये। फिर दोनों ग्रहोंकी वक्रगति होने पर उनका वियोग और एकके पूर्वगामी दूसरेके वक्र होनेसे दोनोंके योगफलसे चिह्नित दोनों राशिका भाग करना चाहिये। उपलब्ध दोनों फलोंको भी यथाक्रमसे ग्रहके आदिके अक्षरसे चिह्नित करना चाहिये। स्वाभाविक गतियाले ग्रहोंका योग भावी हो, तो दोनों ग्रहके स्फुटमें स्वीय स्वीय आद्यक्षर चिह्नित दोनों फलोंका जोड़ देना पड़ता है और अतीत होनेसे बाकी निकालनी पड़ती है। इस प्रकार वक्रगतिवाले दोनों ग्रहोंके भावी योगमें लब्धद्वयका वियोग और भूत योगमें जोड़ लगाया जाता है। दो ग्रहोंमेंसे एककी वक्रगति और दूसरेका सरलगति हो तो पहलेकी प्रक्रियाके अनुसार लब्धको अतीत योगमें स्वाभाविक गतियाले ग्रहमेंसे घटाना चाहिये। फिर वक्रगतिवाले ग्रहमें जोड़ तथा भावी योगमें वक्रगति वाले ग्रहमेंसे घटाना और स्वाभाविकगतिवाले ग्रहमें जोड़ना चाहिये। इस प्रकारसे प्रक्रिया करनेसे जो दो राशि उपलब्ध होगी उनको दोनों ग्रहोंका समकलात्मक फल कहते हैं। पूर्व प्रक्रियानुसार ग्रहके आदिके अक्षरसे चिह्नित दोनों राशियोंको भाग करनेसे जो फल उपलब्ध होगा, उनको दिन आदि समझना चाहिये। भूत योगका निर्णय करना हो तो गणनाके समयसे लब्ध दिनादि बाद दे कर जो समय हो, उस समयमें उक्त दोनों ग्रहोंका योग हुआ था—ऐसा समझना चाहिये और भावी योगका निर्णय करना हो तो गणनाके समयके साथ लब्ध दिनादि जोड़ कर जो समय हो, उस समयमें ग्रहोंका योग होगा—ऐसा समझे। (सूर्यसिद्धान्त ७।१६)

दुर्गादास देवो।

ग्रहयुद्ध (सं० क्ली०) ग्रहस्य युद्ध, ६ तत्। मङ्गल आदि पाँच तारा ग्रहोंमेंसे कोई दो तारे तरऊपर स्थित होनेसे, उनकी किरण आपसमें स्पर्श करती हैं, इसीका नाम ग्रहयुद्ध है। स्थितिके अनुसार ग्रहयुद्धके चार भेद हैं—उल्लेख, भेद, अंशुविमर्द और अपसव्य।

तारकास्पर्श अर्थात् सिर्फ छाया मात्रसे दोनों ग्रहोंका स्पर्श हो जाना सो उल्लेख है। फल—मन्त्रीको पीड़ा।

दोनों ग्रहोंका परिमाण यदि योगफलके आधेसे ग्रहद्वयका अन्तर ज्यादा हो, तो उस युद्धको भेद कहते हैं। फल—धनक्षय।

दो ग्रहोंकी किरणका सङ्घट्ट या योग होना, सो अंशुविमर्द है। फल—भयङ्कर संग्राम।

दो ग्रहोंके अन्तरका अंश अर्थात् साठ कलासे न्यून होनेसे उसको अपसव्य कहते हैं। यह युद्ध दो प्रकारका होता है—१ व्यक्त और २रा अव्यक्त। दोनों ग्रहोंके बीचमें एक अणु हो तो उनका अपसव्य युद्ध मनुष्योंके दृष्टिगोचर होता है, इस लिए इसका नाम व्यक्त है और इससे विपरीत अर्थात् अणुके न रहने पर जो अपसव्य युद्ध होता है वह मनुष्योंके दृष्टिमें नहीं आता, इस लिए उसका नाम अव्यक्त अपसव्य युद्ध है।

(सूर्यसि० ७।१८।१९)

वृद्ध पिताके मतानुसार तरऊपर अपनी अपनी कक्षामें अवस्थित ग्रहोंमें अति दूरत्वनिबन्धन देखनेसे

विषयमें जो समता होती है, उसे ही ग्रहयुद्ध कहते हैं। भेदयुद्धका फल—सूखा पड़ना और मित्रों तथा कुलीनोंमें भेद पैदा होना। उल्लेखयुद्धका फल—शस्त्रभय, मंत्रिविरोध और दुर्भिक्ष। अंशुमर्दयुद्धका फल—राजविरोध, शस्त्रयुद्ध, रोग, प्रजाओंका भूखों मरना और दुःख पाना। अपसव्य युद्धसे राजविरोध होता है। (बृहत्सं० १७।२-५)

सूर्यसिद्धान्तके मतानुसार—अपसव्य युद्धमें एक ग्रह की जय और दूसरेकी पराजय हुआ करती है। पराजित ग्रहका लक्षण, ग्रहयुद्धके बाद जो ग्रह अव्यक्त, क्षुद्रबिंब, दीप्तिशून्य, विवर्ण और दक्षिण दिशामें दीखे; उसे पराजित समझना चाहिये।

जयी ग्रहके लक्षण—ग्रहयुद्धके बाद जो ग्रह दूसरोंसे स्थूल, दीप्तिमान् और उत्तर दिशामें दीखे, उसे विजयी समझना चाहिये। ग्रहोंकी जय और पराजयमें जिस दिशामें उनकी संस्थिति लिखी गई है वह निश्चित नहीं है। तेजस्वी और बलवान् ग्रह उत्तर या पश्चिममें चाहे जिस दिशामें क्यों न हो, वह जयी ही समझा जायगा। उभय ग्रहयुद्ध लक्षणाक्रान्त, दीप्तियुक्त, बलवान् और आसन्न अर्थात् एक भाग अन्तरमें अवस्थित होनेसे जो युद्ध होता है, उसका नाम समागम है और ग्रहोंके पराजय लक्षणाक्रान्त अथवा क्षुद्रबिंबयुक्त होनेसे यथाक्रमसे कूट और विग्रह नामका युद्ध होता है। उत्तर या दक्षिणमें अवस्थित शुक्र प्रायः जयलाभ करता है।

जो ग्रह परस्पर बहुत दूरी पर अवस्थित हों, उनका कभी भी योग नहीं होता। परन्तु समय समयमें तरजपर हो जाते हैं, उस समय भूमिके दर्शकवृन्द उनको युक्त समझ लेते हैं। शास्त्रकारोंने उनहोमें ग्रहयोग अथवा अवस्थाविशेषसे ग्रहयुद्धकी कल्पना की है। मनुष्यके शुभाशुभका निरूपणही ऐसी कल्पनाओंका एक मात्र उद्देश्य है। (सूर्यसि० ७।२०-२४।) बृहत्संहिताका मत है कि, ग्रहयोग वा ग्रहयुद्धमें ग्रहोंको तीन नामोंसे उल्लेख किया जाता है,-आक्रन्द, पौर और यायी। सूर्य पूर्वाह्नमें पौर मध्याह्नमें आक्रन्द और अपराह्नमें यायी कहलाता है। बुध, बृहस्पति और शनि, ये सब समय पौर कहलाते हैं। इसी प्रकार चन्द्र आक्रन्द तथा केतु, मङ्गल, राहु और शुक्र ये भी सब समयमें यायी कहलाते हैं।

इन तीन जातिके ग्रहोंमेंसे कोई एक, दूसरी जातिके ग्रहसे पराजित होने पर वह नामके अनुसार आक्रन्द, यायी या पौरोंका विनाश करता है। परन्तु पौरग्रह द्वारा अगर पौरग्रह ही पराजित हो तो पुरवासी या राजाओंका विनाश होता है। ऐसे ही यायी ग्रह तथा आक्रन्दग्रह द्वारा आक्रन्दग्रह पराजित होनेसे अपने अपने अधिकृतोंको विनाश करते हैं। (बृहत्सं० १७।) जो ग्रह दक्षिणमें स्थित हो, रूक्ष, कम्पित, टेढ़ा, छोटा, दूसरे ग्रहसे आच्छादित, विकृत और प्रभाहीन हो; उसे पराजित तथा इससे विपरीत लक्षणवालोंको विजयी समझना चाहिये। ग्रहयुद्धके समय दोनों ग्रह रश्मियुक्त, विपुलमण्डल और स्निग्ध होनेसे, उसे अन्योन्यप्रीति कहते हैं। ऐसा होनेसे पृथिवीके राजाओंकी भी युद्धके समय समता होती है। इससे उलटा होनेसे आत्मपक्ष नष्ट होता है।

बृहस्पतिके द्वारा मङ्गलकी पराजय होनेसे वाह्लीक, यायी और अग्निजीवियोंको कष्ट पहुंचता है। बुधद्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल—शूरसेन, कलिङ्ग और साल्वदेशमें पीड़ा होती है। शनिद्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल—पौरोंकी जय प्रजाओंका अवसाद और विनाश होता है। शुक्रद्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल—कोष्ठागार, म्लेच्छ और क्षत्रियोंको परिताप होता है।

मङ्गलद्वारा बुधके पराजित होनेका फल - वृक्ष, नदी, तापस, अश्मकदेशके राजा और उत्तर दिशाके रहनेवालों याज्ञिकोंको सन्ताप होता है। बृहस्पति द्वारा मङ्गलके पराजित होनेका फल म्लेच्छ, शूद्र, चौर, धनशाली, पुरवासी, त्रिगर्त और पार्वतीय मनुष्योंको पीड़ा तथा भूमिकम्प होता है। शनिद्वारा बुधके पराजित होनेका फल — नाविक, योद्धा, जलज, धनी और गर्भिणीओंका विनाश होता है। शुक्रद्वारा बुधके पराजित होनेका फल अग्निकोप, अनाज, मेघ और यायियोका विनाश होता है।

शुक्रद्वारा बृहस्पतिके पराजित होनेका फल—कुलूत गान्धार, कैकेय, मद्र साल्व, वत्स और वङ्गदेशके लोगोंका, गोसमूहका तथा अनाजका विनाश है।

मङ्गलद्वारा बृहस्पति पराजित हो, तो मध्यदेश,

राजा और गो समूहका क्षय होता है। बुधद्वारा बृहस्पति पराजित हो तो म्लेच्छ, मल्ल और शस्त्राजीवी तथा मध्य देशका विनाश होता है। शनिद्वारा बृहस्पतिके पराजित होनेका फल—आर्जुनायन, वसाति, यौधेय, शिवि और ब्राह्मणोंका अमङ्गल है। बृहस्पति अगर शुक्रको पराजित करे, तो श्रेष्ठ यायीका विनाश, ब्राह्मण और क्षत्रियमें विरोध, अनावृष्टि, कोशल, कलिङ्ग, बङ्ग, वत्स, मत्स्य मध्यदेशके लोग, शूरसेनगण और लघुमकोंको घोर पीड़ा होती है। मङ्गलद्वारा शुक्रको पराजय हो तो वीरोंकी मृत्यु, और राजाओंमें युद्ध होता है। बुधद्वारा शुक्रको पराजय हो तो पार्वतीय देशोंमें पीड़ा, दूधकी हानि और थोड़ो वर्षा होती है। शनि द्वारा शुक्रपराजय का फल गणश्रेष्ठ, शस्त्राजीवी, क्षत्रिय और जलजोंको पोड़ा होती है। शुक्रद्वारा शनिके पराजित होनेका फल महगो होती है तथा सर्प, पक्षी और मानियोंका कष्ट होता है। बुधद्वारा शनिके पराजयका फल—टङ्कण, अंध्र, उड्र, काशी और वाह्लीक देशके रहनेवालोंको कष्ट होता है। बुधद्वारा शनिके पराजित होनेका फल—अङ्ग देश, वणिक्, विहङ्ग, पशु, और सर्पोंको सन्ताप होता है। (बृहत्‌संहिता १७ अध्याय) मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि, इनके परस्परके पराजयका फल लिखा गया है। नक्षत्र आदिके साथ ग्रहके युद्धमें ग्रहभुक्तिके समान ही फल होता है। ग्रहभुक्ति देखो।

ग्रहयुद्धभ (स० क्लो०) ग्रहयोर्युद्धं यत्र, बहुव्री० तादृश भ कर्मधा०। जिस नक्षत्रमें रह कर दो ग्रहोंका युद्ध हो जाता है। विशेष देखो।

ग्रहयोग (स० पु०) ग्रहयुति देखो।

ग्रहराज (स० पु०) ग्रहाणां राजा, ६ तत्। तत टच्। १ सूर्य। २ चन्द्र। ३ बृहस्पति।

ग्रहवर्मन्—मौखरीवंशके कान्यकुब्ज देशका एक राजा, अवन्तिवर्माका पुत्र और प्रभाकरवर्द्धनका जामाता। इन्होंने हर्षदेवकी सहोदरा (बहन) राज्यश्रीसे विवाह किया था। प्रभाकरवर्द्धनके मृत्युके बाद मालवराजने ग्रहवर्माको विनाश कर राज्यश्रीको कान्यकुब्जके कारागारमें आबद्ध किया था। हर्षवर्द्धन देखो।

ग्रहवर्षादिफल (स० क्लो०) ग्रहस्य वर्षादि तस्य फल, ६ तत्। १ फलित ज्योतिष शास्त्रके अनुसार ग्रहगण अवस्थानुसार क्रमश वर्ष, मास और दिनके अधिपति हुआ करते हैं। अधिपतिके भेदसे जो प्राणीगणका शुभाशुभ फल हुआ करता है, उसीका नाम ग्रहवर्षादिफल है। ग्रहवर्षादि फलं यत्र, बहुव्री०। २ वह शास्त्र जिसमें ग्रहवर्षादिका फल लिखा हो, बृहत्‌संहिताके उन्नीसवां अध्याय।

ग्रहवह्नि (स० पु०) ग्रहस्य वह्नि ६ तत्। ग्रहके लिये स्थापित वह्नि, ग्रहके निमित्त रखी हुई आग। ग्रहयज्ञ देखो।

ग्रहविप्र (स० पु०) ग्रहाचार्य, गणक या ज्योतिषी। गणक और दैवज्ञ शब्दमें इस श्रेणीके ग्रहविप्रोंका विवरण देखो।

दाक्षिणात्यके ग्रहविप्र कानियार पणिक्करके नामसे प्रसिद्ध हैं, ये लोग पतित हैं। इनकी उत्पत्तिके विषयमें दाक्षिणात्यमें ऐसा प्रवाद है कि, "पाल्‌रभत्तरी" नामके एक ज्योतिषशास्त्रके पारदर्शी ब्राह्मण पैदल नदीको पार कर रहे थे दैवयोगसे वे उसीमें बह गये। बादमें बड़ी मुश्किलसे किनारे लग कर किसी थियारजातिके "पायाल" पर (चबूतरे पर) सो गये। घरका मालिक अपनी स्त्रीके साथ लड़ कर चला गया था। थियारकी स्त्रीने अपने पतिका आगमन जान दरवाजा खोला और उस ब्राह्मणको पति समझ कर घरमें ले गई। ब्राह्मण बेचारे सोता नींदोंमें थे, इस लिए थियारकी स्त्रीको अभीष्ट सिद्धिमें कुछ भी बाधा न आई। जब ब्राह्मण होशमें आये तब उन्होंने अपनेको किसी स्त्रीके साथ सोते पाया। इससे उनने अपनेको पतित समझा और घर नहीं लौटे। वहीं रह कर उस स्त्रीके साथ सहवास करने लगे। इससे थोड़े दिनोंमें उस स्त्रीके एक पुत्र पैदा हुआ। ब्राह्मणने उसे सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्र पढ़ाया जिससे यह बालक ज्योतिषशास्त्रमें पूर्ण दक्ष हो गया। यह "गणकान्" नामसे प्रसिद्ध हो गया, पीछे यह शब्द अपभ्रंश होते होते "कानिकान्" "कनियान्" और "कानियार" हो गया। कनियार लोग ग्रहाचार्यका काम करते हैं। जन्मपत्री बनाने और शुभाशुभ गणना करनेसे इनकी जीविका चलती है। खेती बारी आदि सब कामोंके प्रारम्भमें इनकी आज्ञा ली जाती है।

अगर ये मना कर दें तो कोई भी किसी कामको छोड़ता नहीं। इसी लिए दक्षिणमें कनियारोंका खूब आदर होता है। ये लोग जमीन पर खड़ियाकी रेखा करके शुभाशुभकी गणना करते हैं। इनमें बहुस्वामिक-प्रथा प्रचलित है, अर्थात्—ये लोग दो-तीन चार भाई मिल कर एक स्त्रीको ग्रहण करते हैं। कनियारोंमें बहुतसी कन्याएं अविवाहित ही रह जाती हैं। वे नायर जातिकी कन्याओंकी तरह सम्बन्ध कर लेतीं हैं और उससे पैदा हुई सन्तान नानाके अन्नसे प्रतिपालित होतीं है।

ग्रहवेध (सं० क्ली०) ग्रहकी स्थिति आदिका जानना।

ग्रहशृङ्गाटक (सं० क्ली०) ग्रहयोगविशेष। इसमें भी मानवमण्डलीका शुभाशुभ फल हुआ करता है। इसका विशेष विवरण बृहत्संहिताके २० अध्यायमें देखो।

ग्रहसमागम (सं० पु०) ग्रहाणां समागमः, ६-तत्। चन्द्रमाके साथ मङ्गल, बुध आदि ग्रहोंका योग।

ग्रहस्वर (सं० पु०) किसी रागमें वह स्वर जिससे वह राग आरम्भ होता है।

ग्रहागम (सं० पु०) भूत सञ्चार।

ग्रहाचार्य (सं० पु०) ग्रहविप्र देखो।

ग्रहादि (सं० पु०) ग्रह आदिर्यस्य, बहुव्री०। पाणिनिके मतसे सिद्ध एक धातुगण।

ग्रहाधार (सं० पु०) ग्रहाणां आधारः आश्रयः, ६-तत्। ध्रुवनक्षत्र। इसी नक्षत्र पर ग्रहमण्डलकी अवस्थिति होनेके कारण ध्रुवका नाम ग्रहाधार पड़ा। खगोल देखो।

ग्रहाधिकरण (सं० क्ली०) ग्रहस्य अधिकरणं, ६-तत्। अधिकरणविशेष, न्यायरूप पञ्चाङ्ग। (मीमांसा ३।१।१४)

ग्रहाधीश (सं० पु०) ग्रहाणामधीशः, ६-तत्। ग्रहोंके स्वामी सूर्य।

ग्रहापहा (सं० स्त्री०) गोरोचना, गोरोचन।

ग्रहामय (सं० पु०) ग्रहकृत आमय, मध्यपदलो०। ग्रहका आवेश, ग्रहपीड़ा। यथा मिरगी, ऐंठन प्रभृति।

ग्रहावमर्दन (सं० पु०) ग्रहौ चन्द्रसूर्यौ अवमृद्नाति ग्रह-अव-मृद्-ल्यु। १ राहु। मृद भावे ल्युट्, ६-तत्। २ ग्रहयुद्ध।

ग्रहाशिन् (सं० पु०) ग्रहं ग्रहजन्यदोषं अश्नाति दूरीकरोति अश-णिनि। ग्रहनाशकवृक्ष मयूरपर्ण या मतीवन नामका पेड़।

ग्रहाश्रय (सं० पु०) ग्रहाणामाश्रयः, ६ तत्। ग्रहाधार देखो।

ग्रहाह्वय (सं० पु०) ग्रहान् आह्वयति ग्रह-आ ह्वे-श। भूताङ्कुश नामका वृक्ष।

ग्रहिल (सं० त्रि०) ग्रहोऽस्त्यस्य ग्रह-काशादि इलच्। निर्बन्धयुक्त। आग्रहातिशयविशिष्ट।

ग्रहीत (सं० त्रि०) गृहीत देखो।

ग्रहीतव्य (सं० त्रि०) ग्रह-तव्य। ग्राह्य, जो ग्रहण करने-का योग्य हो, जो लेनेके लायक हो।

ग्रहीतृ (सं० त्रि०) ग्रह-तृच् इटो दीर्घता च। १ ग्रहण-कर्ता, जो ग्रहण करता हो, लेनेवाला।

ग्रहेश (सं० पु०) ग्रहाणां ईशः, ६-तत्। ग्रहोंका अधिपति, सूर्य।

ग्रहोपराग (सं० पु०) ग्रहोंका ग्रहण।

ग्रह्य (सं० पु०) ग्रहः हविः पात्रभेद एव ग्रह स्वार्थे यत्। यज्ञीय पात्रविशेष, यज्ञका एक पात्र।

ग्रांडील (अं० वि०) ऊंचे कदका, बहुत बड़ा या ऊंचा

ग्राभ (सं० पु०) ग्रह ण छान्दसत्वात् ह्स्य भः। ग्राहक, लेनेवाला।

ग्राम (सं० पु०) ग्रस्-मन् धातो रकारान्तादेशश्च। १ लोकालय, बहुत मनुष्योंका वासस्थान, ग्राम, गांव, छोटी वस्ती। २ स्वरसङ्घविशेष, जिसमें षड्ज प्रभृति सात स्वर रहें। यह ग्राम तीन प्रकारका है—षड्ज, मध्यम और गान्धार। प्रत्येक ग्राममें सात, मूर्छनाएं होती हैं। ३ सङ्घात, समूह, ढेर। ४ जनपद, अवाटी। ५ शिव। ६ ग्रामवासी, कृषक प्रभृति साधारण मनुष्य। ७ ग्राम सदृश संहत पदार्थ। ग्रामस्येदं ग्राम-अण्। ८ ग्राम्यधर्म, ग्रामवासीका कर्तव्य। (त्रि०) ९ ग्राम-सम्बन्धीय, गांवके सम्बन्ध रखनेवाला।

ग्रामक (सं० पु०) ग्राम स्वार्थे कन्। ग्राम देखो।

ग्रामकाम (सं० त्रि०) ग्रामं स्वकीयत्वेन कामयते काम-णिङ्-अण् उपपदस०। १ जो ग्राम लेनेकी कामना करता हो। २ जो ग्राममें रहना पसन्द करता हो।

ग्रामकुक्कुट (सं० पु० स्त्री०) ग्रामे कुक्कुटः, ७-तत्। घराल मुरगा, पालतू मुरगा। मनुके मतसे इसका मांस खाना निषिद्ध है। (मनु ५।१९) प्रायश्चित्त देखो।

ग्रामकुमार (स० पु०) ग्रामेषु सर्वो कुमार सुन्दर। ग्रामसुन्दर, वह जिसका सौन्दर्य ग्रामके सब लोगोंसे अधिक हो। खूबसूरत लडका।

ग्रामकुमारक (स० क्ली०) ग्रामकुमारस्य भाव कर्म वा ग्रामकुमार वुञ्। १ ग्रामकुमारका धर्म, सौन्दर्यातिशय। २ ग्रामकुमारका कर्म।

ग्रामकुलाल (स० पु०) ग्रामे कुलाल, ७ तत्। ग्राम्य कुलाल, कुम्भकार, कुम्हार।

ग्रामकुलालक (स० क्ली०) ग्रामकुलालस्य भाव कर्म वा ग्रामकुलाल वुञ्। १ कुम्हारका धर्म। २ कुम्हारका काम।

ग्रामकूट (स० पु०-स्त्री०) ग्रामस्य कूट इव वञ्चना प्रधान त्वात्। शूद्र।

ग्रामकोल (स० पु०) वराह, शूकर।

ग्रामक्रोड (स० पु० स्त्री०) ग्रामे क्रोड, ७ तत्। ग्राम्य शूकर, पालतू सूअर।

ग्रामगृह्य (स० त्रि०) ग्रह बाह्यार्थे क्यप् ग्रामात् गृह्य, ५ तत्। ग्रामबाह्य, ग्रामसे वहिर्गत, गाँवका बाहर।

ग्रामगृह्या (स० स्त्री०) ग्राम गृह्य टाप्। ग्रामके बाहर अवस्थित सेना, गाँवके बाहर ठहरी हुई सेना।

ग्रामगेय (स० क्ली०) एक प्रकारका साम।

ग्रामगोदुह् (स० पु०) ग्रामे गोधुक्, ७ तत्। ग्राम्य गोप, गाँवका ग्वाला।

ग्रामघात (स० पु०) ग्रामस्य घात, ६ तत्। १ ग्राम्य द्रव्यका लूटना, बस्तीके धनका लूटना। २ ग्रामवासीका अमङ्गल।

ग्रामघातिन् (स० त्रि०) ग्रामार्थं ग्रामवासिना भक्षणार्थं हन्तिपशून् हन् णिनि। १ बहुत मनुष्योंके खानेके लिये पशुहिंसाकारी। २ ग्रामको लूटनेवाला।

ग्रामघोषिन् (स० पु०) ग्रामे कर्षके घोषोऽस्यस्य ग्राम घोष इनि। १ इन्द्र, देवराज। किसान वर्षाके लिये इन्द्रकी आराधना करते हैं। इस लिए उनका नाम ग्राम घोषिन् पडा है। २ मनुष्य तथा सेनाके मध्य उत्पन्न शब्द।

ग्रामचर्या (स० स्त्री०) ग्रामस्य चर्या, ६ तत्। ग्राम्यधर्म, स्त्रीका सम्भोग।

ग्रामचैत्य (स० पु०) ग्रामस्य पवित्र वृक्ष, गाँवका पवित्र वृक्ष। यथा, पीपल, वट, तुलसी प्रभृतिका गाछ।

ग्रामज (स० त्रि०) ग्रामे जायते ग्राम जन ड। ग्राम्य जो गाँवमें पैदा होता हो।

ग्रामजनिष्पावी (स० स्त्री०) ग्रामजा चासौ निष्पावो चेति कर्मधा०, पूर्वस्य पुवद्भावश्च। नलनिष्पावी एक तरहका धान। धान देखो।

ग्रामजा (स० स्त्री०) खर्जूरवृक्ष, खजूरका पेड।

ग्रामजात (स० त्रि०) ग्रामे जात,, ७ तत्। ग्रामोत्पन्न, जो गाँवमें पैदा हुआ हो।

ग्रामजाल (स० क्ली०) ग्रामस्य जाल, ६ तत्। ग्राम समूह, बहुतसी बस्तियाँ, जिला।

ग्रामजालिन् (स० पु०) किसी देशका शासक।

ग्रामजित् (स० त्रि०) ग्राम सहत जयति जि-क्विप्। १ संहत पदार्थका विक्षेपकारी, सूकवित चीजको छितर बितर करनेवाला। २ ग्रामका लूटनेवाला। ३ सेना जीतनेवाला।

ग्रामण (स० त्रि०) ग्रामण्य इद ग्रामणी अण्। ग्रामणी सम्बन्धीय, मालिकके लगावका।

ग्रामणी (स० त्रि०) ग्राम समूह नयति प्रेरयति स्व स्व कार्येषु ग्रामणी-क्विप् णत्व। १ प्रधान, अगुआ। २ ग्रामका अधिपति, गाँवका मालिक। ग्राम ग्रामधर्मे नयति प्रापयति ग्राम नी क्विप्। ३ भोगिक, वह जो सदा आमोद प्रमोदमें लीन हो। (पु०) ४ नापित, नौआ। ५ सेनाका मालिक। ६ विष्णु। ७ यक्ष। (स्त्री०) ग्रामेण मैथुनव्यापारेण नयति काल। ८ वेश्या, रण्डी। ९ नीलिका, नीलकी गोटी।

ग्रामणीत्व (स० क्ली०) ग्रामण्य भाव ग्रामणी-त्व छान्दसत्वात् त्वस्य यत्वादेश। आधिपत्य, स्वामित्व, प्रभुत्व, अधिकार।

ग्रामणीपुत्र (स० पु०) वेश्याका पुत्र, जारज, हरामीका जना।

ग्रामणीय (स० त्रि०) ग्रामणीरिवाचरति ग्रामणी क्यच् कर्त्तरि अच्। ग्रामणीके सदृश, मालिकके मानिंद।

ग्रामणीसव (स० पु०) एकाहयागविशेष एक प्रकारका याग जो एक दिनमें होता है।

ग्रामतक्ष (सं० पु०) ग्रामस्य तक्षा, ६-तत्, ततष्टच्। ग्रामरस्तधर, ग्रामका बढ़ई, देहाती कमार।

ग्रामता (सं० स्त्री०) ग्रामाणां समूहः ग्राम-तल्। १ ग्रामसमूह। ग्रामस्य भावः ग्राम-तल्। २ ग्रामत्व, ग्रामका भाव।

ग्रामदेवता (सं० स्त्री०) ग्रामस्य देवता, ६-तत्। १ ग्रामस्थ साधारणसे प्रतिष्ठित देवमूर्ति, गांवके किसी साधारण मनुष्यसे स्थापित की हुई देवमूर्ति। २ ग्राम की रक्षा करनेवाला देवता।

ग्रामदेशाधिपति (सं० पु०) ग्रामका अधिपति, गाँवका मालिक।

ग्रामदौत्य (सं० क्ली०) ग्रामदूतस्य भावः ग्रामदूत-ष्यञ्। ग्रामस्थ संवादवाहकता, वह जो ग्रामकी खबर लाता हो।

ग्रामद्रुम (सं० पु०) ग्रामका एक पवित्र वृक्ष।

ग्रामधरा (सं० स्त्री०) गिरिभेद, एक पहाड़का नाम।

ग्रामधर्म (सं० पु०) ग्रामे भवः ग्राम-अण्, ग्रामचासौ धर्मश्चेति यद्वा ग्रामस्य धर्म, ६-तत्। ग्राम्यधर्म, मैथुन।

ग्रामनापित (सं० पु०) ग्रामस्य नापित, ६-तत्। ग्रामस्थ साधारण नापित, देहाती नौआ।

ग्रामनिवासिन् (सं० त्रि०) ग्रामे निवसति नि-वस-णिनि। जो ग्राममें वास करता हो, देहाती।

ग्रामपाल (सं० पु०) ग्रामं पालयति पालि-अण्, उपपदस०। १ ग्रामरक्षक सैन्यविशेष, गाँवकी रक्षा करनेवाली सेना। २ ग्रामाध्यक्ष, गाँवका मालिक।

ग्रामपुत्र (सं० पु०) ग्रामस्य ग्रामस्थ बहुजनस्य पुत्र इव। १ वह लड़का जिसको ग्रामवासी पुत्रस्नेहसे पालन करते हों। २ देहाती लड़का।

ग्रामपुत्रक (सं० क्ली०) ग्रामपुत्रस्य भावः कर्म वा। ग्रामपुत्रका धर्म वा कर्त्तव्य।

ग्रामप्रेष्य (सं० पु०) ग्रामस्य प्रेष्यः, ६-तत्। वह जो गांवके सब लोगोंकी सेवा करता हो, ग्रामदास। मनुके अनुसार ऐसे मनुष्यको यज्ञ और श्राद्ध आदि कार्यों में सम्मिलित न करना चाहिए। (मनु ३।१५३)

ग्रामप्रेष्यक (सं० क्ली०) ग्रामप्रेष्यस्य भावः ग्रामप्रेष्य मनोज्ञादि वुञ्। ग्रामदासका धर्म वा कर्तव्य।

ग्रामभृत (सं० पु०) ग्रामेण ग्रामस्य समूहेन भृतः भरणीयः, ३-तत्। वह मनुष्य जो बहुतसे मनुष्योंकी सेवा करता हो। ऐसा मनुष्य यदि ब्राह्मण भी हो तो अब्राह्मण हो जाता है। (बधायन देखो।)

ग्राममद्गुरिका (सं० स्त्री०) ग्रामस्य प्रिया मद्गुरिका मध्यपदलो०। यद्वा ग्रामस्य मद्गुरिकेव। १ क्षुद्रमत्स्य, एक तरहकी मछली। २ ग्रामयुद्ध, गांवकी लड़ाई।

ग्राममहिषी (सं० स्त्री०) ग्रामस्य महिषी, ६-तत्। १ ग्रामकी अधिष्ठात्री, गांवकी स्वामिनी। २ ग्रामकी भैंस, पालतू भैंस।

ग्राममुख (सं० पु०) ग्रामो ग्रामस्य जनो मुखमिवास्य, बहुव्री०। बाजार, हाट।

ग्राममृग (सं० पु०) ग्रामस्य मृगः, ६-तत्। कुक्कुर, कुत्ता।

ग्राममौख्य (सं० पु०) ग्रामका प्रधान व्यक्ति, मुखिया, अगुआ।

ग्रामयाजक, (सं० पु०) ग्रामस्य याजकः, ६ तत्। वह ब्राह्मण जो ऊंच नीच सभी जातिके मनुष्योंका पुरोहित हो। शातातपके मतसे ग्रामयाजक ब्राह्मण अब्राह्मणोंमें गिना जाता है। (शातातप देखो।) महाभारतके अनुसार ऐसे ब्राह्मणको दान देनेका कोई फल नहीं होता।

ग्रामयाजिन् (सं० पु०) ग्रामान् ग्रामस्थ नाना वर्णान् याजयति यज् णिच् णिनि। (ग्रामयाजक देखो।)

ग्रामयुद्ध (सं० क्ली०) ग्रामस्य युद्ध, ६-तत्। क्षुद्र युद्ध, ग्रामवासियोंका आपसमें विरोध, झगड़ा, लड़ाई।

ग्रामरथ्या (सं० स्त्री०) ग्रामस्य रथ्या, ६-तत्। वृहत् ग्रामस्थ रास्ता, गाँवका बड़ा रास्ता।

ग्रामलुण्ठन (सं० क्ली०) ग्रामका लूटना, गांवका उजाड़ना।

ग्रामवत् (सं० त्रि०) ग्रामो ऽस्त्यस्य ग्राम-मतुप् मस्य वः। १ ग्रामका स्वामी जिसके अधीन ग्राम हो। २ ग्रामविशिष्ट।

ग्रामवल्लभा (सं० स्त्री०) १ वेश्या, रण्डी, कसबी। २ पालकीका साग।

ग्रामवास (सं० पु०) ग्रामे वासः, ७-तत्। ग्राममें अवस्थित, वह मनुष्य जो ग्राममें रहता हो, देहाती।

ग्रामवासिन् (स ० त्रि०) ग्रामे वसति वस णिनि । ग्रामका रहनेवाला, जो गाँवमें वास करता हो।

ग्रामवास्तव्य (स ० पु०) ग्रामे वास्तव्य, ७ तत्। ग्राम वासी, गाँवका बासिन्दा।

ग्रामशत (स ० क्ली०) एक सौ ग्राम, देश, मुल्क।

ग्रामशतेश (स ० पु०) देशका शासक, मुल्कका हुकुमत करनेवाला।

ग्रामषण्ड (स ० पु०) ग्रामे ग्राम्यधर्मे षण्ड । ग्राम्यधर्म-रहित क्लीव, गावका धर्मंहीन नपुसक।

ग्रामषण्डक (स० क्ली०) ग्रामषण्डस्य भाव ग्रामषण्ड मनोज्ञादि वुञ्। नपुसकका धर्म वा कर्त्तव्य।

ग्रामसङ्कर (स ० पु०) ग्रामकी साधारण प्रणाली, जल निर्गम नली।

ग्रामसिंह (स ० पु०) कुक्कुर, कुत्ता।

ग्रामसुख (स ० क्ली०) ग्राम्यसुख देखो।

ग्रामस्थ (स ० त्रि०) ग्रामे तिष्ठति स्था-क । ग्रामवासी, देहाती।

ग्रामहासक (स ० पु०) ग्राम हासयति हस णिच् ण्वुल्। भगिनीपति, बहनोई, बहनका स्वामी।

ग्रामाचार (स ० पु०) ग्रामस्य आचार, ६ तत्। ग्राम्य व्यवहार, गांवकी रहन सहन।

ग्रामाधान (स० क्ली०) ग्रामस्य ग्रामपोषनार्थं आधीयते आ धा ल्युट्। मृगया, शिकार, आखेट।

ग्रामाधिकृत (स० पु०) ग्रामका मालिक, मुखिया।

ग्रामान्त (स० क्ली०) ग्रामस्यान्त, ६ तत्। ग्रामका समीप, गाँवका निकट।

ग्रामान्तर (स ० क्ली०) नित्यकर्म०। अन्यग्राम, दूसरा गाँव।

ग्रामान्तीय (स ० त्रि०) ग्रामान्ते भवः। ग्रामान्त छ। ग्रामसमीपमें उत्पन्न, वह जो ग्रामके नजदीकमें अवस्थित हो।

ग्रामिक (स ० पु०) ग्रामे तद्रक्षणे नियुक्त ग्राम ठञ्। १ वह मनुष्य जिसे ग्रामवाले अपनी रक्षाके लिये अपना प्रधान चुनें। २ ग्रामसम्बन्धीय, गांवका।

ग्रामिक्य (स ० क्ली०) ग्रामिकस्य भाव ग्रामिक पुरोहितादि० यक। ग्रामिकका धर्म वा कर्त्तव्य, ग्रामाध्यक्षता।

ग्रामिणी (स ० स्त्री०) ग्रामिन् ङीप्। १ नीलीवृक्ष, नीलका गाछ।

ग्रामिन (स० त्रि०) ग्राम स्वामित्वेन आधारत्वेन वास्त्यस्य ग्राम इनि। १ ग्रामस्वामी, गांवका मुखिया। २ ग्राम वासी, गाँवका रहनेवाला, देहाती। ३ ग्रामधर्मयुक्त, जो गाँवके समस्त धर्मोंको जानता हो।

ग्रामीण (स० पु० स्त्री०) ग्रामे भव, ग्राम खञ्। १ ग्राम्य कुक्कुर, कुत्ता। २ मुरगा। ३ कौवा। ४ सूअर। (त्रि०) ५ ग्रामोत्पन्न, देहाती, गंवार।

ग्रामीणा (स ० स्त्री०) ग्रामीण स्त्रियां टाप्। १ पालङ्क-शाक, पालकी नामका साग। २ नीलका पेड़। इसका पर्याय—नीली, नीलिनी, तूली, कालदोला, नीलिका, रजनी, श्रीफली, तुत्था, मधुपर्णिका, क्लीतका कालकेशी और नीलपुष्प है।

ग्रामीय (स ० त्रि०) ग्राम छ। ग्रामसम्बन्धीय, गाँवका।

ग्रामीयक (स ० पु०) ग्रामीय स्वार्थे कन्। ग्रामवासी वह मनुष्य जो गाँवमें रहता हो।

ग्रामेय (स ० त्रि०) ग्रामे भव ग्राम ठक्। ग्रामोत्पन्न, देहाती, गंवार।

ग्रामेयक (स ० त्रि०) ग्रामे भवः ग्राम ढकञ्। ग्राम्य।

ग्रामेयी (स ० स्त्री०) ग्रामेय ङीप्। वेश्या, कसबी, रण्डी।

ग्रामेवास (स ० पु०) ग्रामे वासः, अलुक्स०। ग्रामवास, गावमें रहना।

ग्रामेवासिन् (स० त्रि०) ग्रामे वसति वस णिनि, अलुक्स०। ग्रामवासी, जो गाँवमें रहता हो।

ग्रामोफोन (अ ० पु०) एक तरहका बाजा जिसमें गीत आदि भरे और इच्छानुसार समय समय पर सुने जा सकते हैं। फोनोग्राफ देखो।

ग्राम्य (स ० त्रि०) ग्रामे भव ग्राम य। १ ग्रामोत्पन्न, ग्रामवासी, ग्रामीण। २ मूढ़, बेवकूफ। ३ प्राकृत, असली। (पु०) ४ मैथुन, स्त्री-प्रसंग। ५ स्त्रीकार। ६ एक प्रकारका रतिबन्ध। ७ अश्लील शब्द या वाक्य। ८ काव्यका एक दोष। वह काव्य जिसमें गवारू शब्दोंकी अधिकता हो अथवा जिसमें गवारू विषयोंका वर्णन हो, इस दोषमें दूषित समझा जाता है। ९ मिथुन

राशि। १० रात्रिकालमें मेष और वृष राशिको ग्राम्य कहते हैं। (स्त्री०) ११ पशुविशेष। पैठीनसिके मतानुसार गोरू, भेड़ा, पाठा, घोड़ा, खच्चर, गदहा और वनमानुष इन सातोंको ग्राम्यपशु कहते हैं। १२ सुश्रुतानुसार एक तरहका पशु। इसके मांसका गुण—वातनाशक, वृंहण, कफ और पित्तवर्द्धक, मधुर, दीपन और वलकार है।

ग्राम्यकन्द (सं० पु०) ग्राम्यश्चासौ कन्दश्चेति, कर्मधा०। कन्दविशेष, वनओल।

ग्राम्यकर्कटी (सं० स्त्री०) ग्राम्या चासौ कर्कटीचेति, कर्मधा० पुंवद्भावश्च। कुष्माण्ड, कुम्हड़ा।

ग्राम्यकर्मन् (सं० क्ली०) ग्राम्यस्य प्राकृतस्य कर्म, ६-तत्। मैथुन, स्त्रीप्रसंग।

ग्राम्यकुक्कुट (सं० पु०) पालतू मुरगा।

ग्राम्यकुङ्कुम (सं० क्ली०) ग्राम्यञ्च तत् कुंकुमञ्चेति, कर्मधा०। कुसुंवपुष्प।

ग्राम्यकोशा (सं० स्त्री०) हस्तिकोशातकी, एक तरहका पेड़।

ग्राम्यगज (सं० पु०) पालतू हाथी।

ग्राम्यता (सं० स्त्री०) ग्राम्यस्य भावः ग्राम्य-तल्। १ जघन्यता, निकृष्टता, नीचता। २ असभ्यता, गंवारपन, नाशा दुरुस्तगी। ३ अश्लीलता, गन्दापन, भद्दापन।

ग्राम्यदेवता (सं० स्त्री०) ग्रामदेव देखो।

ग्राम्यधर्म (सं० पु०) ग्राम्यस्य प्राकृतस्य धर्मः, ६-तत्। मैथुन, स्त्रीप्रसंग।

ग्राम्यधर्मिन् (सं० त्रि०) ग्राम्यधर्मोऽस्त्यस्य ग्राम्यधर्म-इनि। ग्राम्यधर्म विशिष्ट, जो मैथुनमें रत हो।

ग्राम्यपशु (सं० पु०) नित्यकर्मधा०। पशुविशेष। ग्राम्य देखो।

ग्राम्यबुद्धि (सं० त्रि०) मूढ़, गंवार।

ग्राम्यमद्गुरिका (सं० स्त्री०) ग्राम्या चासौ मद्गुरिकाचेति, कर्मधा० पुंवद्भावश्च। शृङ्गीमत्स्य, एक तरहकी मछली।

ग्राम्यमांस (सं० क्ली०) पालतू पशुका मांस।

ग्राम्यमृग (सं० पु०-स्त्री०) ग्राम्यश्चासौ मृगश्चेति कर्मधा०। कुक्कुर, कुत्ता।

ग्राम्यराशि (सं० पु०) ग्राम्यश्चासौ राशिश्चेति, कर्मधा०। मिथुन प्रभृति कई एक राशि। ग्राम्य देखो।

ग्राम्यवराह (सं० पु०) वराह, सूअर।

ग्राम्यवल्लभा (सं० स्त्री०) ग्राम्यस्य वल्लभा, ६-तत्। १ पालङ्कशाक पालकी नामका साग। ग्राम्यं अश्लीलं वल्लभं प्रियं यस्याः, बहुव्री० टाप्। २ वेश्या, कसबी, रण्डी।

ग्राम्यवादिन् (सं० त्रि०) ग्राम्यं वदति वद-णिनि। जो ग्राम्यशब्द बोलता हो, अश्लीलशब्द बोलनेवाला।

ग्राम्यशूकर (सं० पु०-स्त्री०) ग्राम्यश्चासौ शूकरश्चेति, कर्मधा०। ग्राम्यवराह, पालतू सूअर। इसका संस्कृत पर्याय—विड्वराह, ग्रामीण, ग्रामक्रोड़, ग्रामकोल, विष्फल और दारक है। इसके मांसका गुण—गुरु, मेद, वल और वीर्यवृद्धिकर है।

ग्राम्यसुख (सं० क्ली०) १ मैथुनसुख। २ ग्रामवासियोंका सुख।

ग्राम्या (सं० स्त्री०) ग्रामे भवा ग्राम-यत्-टाप्। १ नीलका पेड़। २ तुलसी वृक्ष। ३ निष्पावो, मटर।

ग्राम्यायनि (सं० पु०-स्त्री०) ग्राम्यस्यापत्यं ग्राम्य-निकादिंफिञ्। प्राकृत मनुष्यकी सन्तान।

ग्राम्याश्व (सं० पु०) नित्यकर्मधा०। गर्दभ, गधा।

ग्राम्योदक (सं० क्ली०) ग्राम्यजल, गाँवका पानी।

ग्रावग्राभ (सं० पु०) ग्रावाणमभिषवणपाषाणं सुल्या गृह्णाति ग्राव-ग्रह-अण् हस्य भः उपपदस०। ऋत्विज्विशेष।

ग्रावन् (सं० पु०) १ पत्थर। २ ओला, बिनौरी। ३ पर्वत, पहाड़। ४ मेघ, बादल। (त्रि०) ५ दृढ़, मजबूत।

ग्रावरोहक (सं० पु०) ग्रावणि रोहति रुह-ण्वुल्, ७ तत्। अश्वगन्धका वृक्ष।

ग्रावस्तुत (सं० पु०) ग्रावाणं स्तौति स्तु क्विप्, ६ तत्। सोलह ऋत्विजोंमेसे तेरहवाँ ऋत्विज जिसे अच्छावाक भी कहते है। अच्छावाक देखो।

ग्रावस्तोत्र (सं० पु०) ग्रावस्तुत देखो।

ग्रावस्तोत्रिय (सं० त्रि०) ग्रावस्तोत्रस्येदं ग्रावस्तोत्र घ। ग्रावस्तोत्र सम्बन्धीय

ग्रावस्तोत्रीय (सं० त्रि०) ग्रावस्तोत्राय हितं ग्रावस्तोत्र-छ। ग्रावस्तोत्रका हितकर।

ग्रावहस्त (स ० पु०) ग्रावा अभिषवसाधन पाषाणो हस्ते ऽस्य बहुव्री० । यज्ञमें एक ऋत्विक् जिसके हाथमें अभि षवका पत्थर रहता है ।

ग्रावायण (स० पु०) एक प्रवरका नाम ।

ग्रावारो (स० पु०) नया प्रकारका पत्थर ।

ग्रास (स० पु०) ग्रस्यते ग्रस कर्मणि घञ । १ कौर निवाला, एकबार मुखमें जितना भोजन डाला जाय । २ पकड़नेकी क्रिया, पकड़, गिरफ्त । ३ सूर्य या चन्द्रमाका ग्रहण लगना । ४ तृण, घास ।

ग्रासक (स० त्रि०) १ पकड़नेवाला । २ निगलनेवाला । ३ छिपाने या ढांकनेवाला ।

ग्रासकट (स० पु०) घास काटनेवाला, घसियारा ।

ग्रासना (हि० क्रि०) १ पकड़ना, धरना, निगलना । २ कष्ट देना, सताना ।

ग्रासशल्य (स० क्लो०) ग्रासे शल्य , ७ तत् । ग्रासस्थित मत्स्यादि का कांटा, कौरमें मछलीका कांटा, जो निगलनेके समय गलेमें अटक जाता है ।

ग्रासीकृत (स० त्रि०) अग्रासो ग्रास' कृत ग्रास-च्वि कृ क्त । जो निगला गया हो ।

ग्राह (स० पु०) १ ग्रहण, पकड़ । २ जलचर जन्तुविशेष, मगर, घड़ियाल । ३ ग्रहण, उपराग । ४ ज्ञान, समझ । ५ आग्रह, अनुरोध, हठ, जिद । ६ स्वीकार । (त्रि०) ग्रह ण । ७ ग्रहीता ग्रहण करनेवाला । ८ शिशुमार ।

ग्राहक (स० पु०) ग्रह ण्वुल । १ श्येनपक्षी, बाज चिड़िया । २ विषवैद्य, शरीरमें प्रविष्ट विषको चिकित्सा द्वारा दूर करनेवाला वैद्य । ३ चौपतिया नामका साग । ४ एक तरहका औषध जिसके सेवन करनेसे पतला दस्त बन्द हो जाता एवं बधा मैला होने लगता है । (त्रि०) ५ ग्रहीता, ग्रहण करनेवाला । ६ मोल लेनेवाला, खरीद दार । ग्रह णिच । ७ ग्रापक ग्राहनेवाला ।

ग्राहग्नोमगा (स ० स्त्रो०) वच ।

ग्राहवत् (स० त्रि) ग्राहो ऽस्त्यत्र ग्राह मतुप मस्य व । ग्राहविशिष्ट, मगरके सदृश

ग्राहि (स० स्त्री०) गृह्णाति व्याधिन पुरुषं ग्रह बाहुलकात् इञ । ग्रहणशीला, यन्त्रणा देनेवाला ।

ग्राहिका (स ० स्त्री०) शिवलीका सौमगावम ।

ग्राहिन् (स ० पु०) ग्रह णिनि । १ कपित्थ, कैथ । (त्रि०) २ मलवन्धकारक, मल रोकनेवाला । ३ ग्राहक, ग्रहण करनेवाला । ४ प्रतिकूल, उल्टा ।

ग्राहिणी (स ० स्त्री०) ग्राहिन् ङीप् । १ क्षुद्र दुरालभा, छोटी जवासा, धमासा, छिगुवा । २ ताम्रमूला द्रुम, चीरिणी, खिरनी । ३ श्वेत लज्जावती ।

ग्राहिफल (स ० पु०) ग्राहि मलवन्धक फल यस्य, बहुव्री० । कपित्थवृक्ष, कैथका पेड़ ।

ग्राहुक (स० त्रि०) ग्राह बाहुलकात् उकञ । ग्रहणशाली, पकड़ने योग्य ।

ग्राह्य (स ० त्रि०) ग्रह ण्यत् । १ जिसका ग्रहण करना उचित हो, लेने लायक । २ स्वीकार्य स्वीकार करने लायक अङ्गीकार करने योग्य । ३ उपादेय । ४ ज्ञेय, जानने योग्य । ५ अन्वयेतस ।

ग्रोक (स ० त्रि०) १ यूनान देशका वासी यूनान देशका । (स्त्री०) २ यूनान देशकी भाषा । (पु०) ३ यूनान देशका निवासी । मीन स्त्री ।

ग्रीनलैण्ड—अमेरिका महाद्वीप और आइसलैण्ड नामक द्वीपके बीचमें अवस्थित एक बड़ा द्वीप । इसका सर्व दक्षिण सीमामें फेयरवोयेल अन्तरीप अक्षा० ५९ ४९ उ० और देशा० ४३ ५४ प में अवस्थित है । इसका उत्तरांश हमेशा बरफसे ढका रहता है । इस द्वीपके उत्तर पूर्व कूलमें अक्षा० ७८ में एडामण्डल नामक स्थान और पश्चिममें मार्चिसन साउण्ड तक आविष्कृत हो गया है । प्राय समस्त पश्चिमकूल वृटिश, ओलन्दाज और डिनेमारक नाविकों द्वारा पुङ्खानुपुङ्खरूपसे आलोड़ित हुआ है । परन्तु इसका पूर्व उपकूल अनाविष्कृत है ।

समस्त द्वीपोंको जलगर्भस्थ या वृहत् पर्वतखण्ड भी कहा जा सकता है । इस प्रस्तरमय पक्षो समुद्रउपकूल वर्त्ती सीमा ऊंचा असमान और बन्धुर है । इसके किनारेमें उक्त प्रस्तरराशि ऊंचे पवतके आकारमें तथा तुङ्गशृङ्गादिमें परिणत हो गई है । ये शिखर प्राय ६० मील दूरसे समुद्रमें दीखती हैं । इसकी पश्चिम सीमा समभावसे उत्तर-पश्चिम और दक्षिण पूर्वको चार गई है । दक्षिण और पूर्व उपकूलके कुछ अंशोंसे लगकर बाहर अन्यप्रवाहसे समुद्रको बाढ़ दिखलाई जाती है । इस बाढ़

योंमें कोई कोई प्रायः १०० मील तक स्थलको ओर प्रविष्ट हुई हैं।

इस पार्वतीय स्तूपके जिस स्थान पर उपत्यका है, उसके पासकी ऊंचाई प्रायः २००० फुट होगी। इसके सिवा पर्वत शिखरोंकी उच्चता प्रायः ४००० फुट होगी। ये ऊंचे स्थान हमेशा बरफसे ढके रहते हैं। द्वीपका पूर्वांश बरफसे ढकी हुई अधित्यका भूमि है। नदीगर्भ और पर्वतादि बरफसे ढक कर समतल बरफ-क्षेत्रमें परिणत हो गये हैं। इस लिए लोग ऐसा अनुमान किया करते हैं कि, ग्रीनलैण्ड बरफका स्तूप है। पश्चिमांशके बरफसे ढके हुए स्थानमें दो एक शिखर दीख पड़ते हैं। किन्तु उस पर वृक्ष लतादि कुछ भी नहीं है; हां पास जानेसे एक तरहकी छोटी घास अवश्य दिखलाई देती है। पश्चिममें अक्षा० ६२° से ६३° उ० में समुद्रके किनारे प्रायः २० मील तक पानीके ऊपर ऐसी उम्दा (देखने लायक) बरफ जमा करती है, कि जिससे किनारेका काम चले। दिनेमारवासी उस स्थानको "आइस ब्लिंक" कहते हैं।

ग्रीनलैण्डके परिसरमें बहुतसी प्रणालियां हैं, जिससे वह क्षुद्र क्षुद्र द्वीपपुञ्जमें खण्डित हो गया है। वर्तमानमें "प्रिन्स क्रिश्चियन साउण्ड" के सिवा सभी प्रणालियां बरफसे ढकी गई हैं।

ग्रीनलैण्डके चारों तरफका समुद्र कुछ आश्चर्यजनक है। उत्तर केन्द्रसे तुषारागारको साथ ले कर समुद्र-स्रोत—कुछ इस द्वीपके पूर्वांशमें हो कर और कुछ डेविस प्रणाली तक प्रवाहित हो कर फेयरवेल अन्तरीपमें १२० से १६० मील दूरके समुद्रमें आ कर मिलता है। जब समुद्रसे हवाका चलना शुरू होता है, तब दक्षिण और पूर्व दिशाकी खाड़ियोंमें बरफ जम कर दृढ़ हो जाती है। उस समय दिनेमारोंके औपनिवेशिक जहाज आदि कुछ भी किनारे नहीं लग सकते। फेयरवेल अन्तरीपके पास तथा पश्चिम कूल पर सेप्टेम्बर माससे बरफ-स्रोतका आना बन्द हो जाता है और फिर जनवरी माससे पहलेकी तरह वह निकलता है। यह स्रोत क्रमशः दक्षिणकी तरफ जा कर औपसागरिक स्रोतमें परिणत हो जाता है।

ग्रीनलैण्डके निम्नप्रदेशमें वहांके अधिवासी और दिनेमारोंका वास है। इसके सिवा उत्तरांशमें सभी जगह इतना शीत है कि वहां आदमी जाते ही मर जाता है। फरवरी और मार्च मासमें इतना अधिक शीत पड़ता है कि, उस समय पहाड़ फट जाते हैं तथा घरमें आग जलाते रहने पर भी कटोरेका शीतल हो कर जम जाता है। जुलाईके महीनेमें यहां बिलकुल ही बरफ नहीं गिरती। जून मासमें थोड़ी थोड़ी बरफ गलती रहती है। अप्रेलसे अगस्त तक यहां घोर कुहरा होता है और समय समय पर थोड़ा पानी भी बरसता है। उत्तर केन्द्रस्थ सोमगिरि नामक उज्ज्वल आलोकमय पर्वत (Aurora-borealis) सब ऋतुओंमें विशेषतः शीतऋतुमें अपेक्षाकृत साफ दीखता है।

यहां फसल अच्छी नहीं होती। इसके दक्षिणांशमें पालकी खेती होती है। यूरोपीय मूली, छोटे छोटे गोभि तथा कभी कभी अण्डेकी तरहके छोटे छोटे शालग्राम होते हैं। यहां एक तरहकी भाड़ी देखनेमें आती है जिसका फल तूंत-फल जैसा सुस्वादु है। जुनिपार, उइलो, वार्च और एलडार वृक्ष कभी मनुष्यसे ऊंचे होते नहीं देखे गये।

ग्रीनलैण्डके लोग बकरी पाला करते हैं। शीतऋतुमें खाद्यके अभावमें बकरियोंकी संख्या घट जाती है। गृहपालित जन्तुओंमेंसे एस्कुइमो जातिके लोग कुत्ते पालते हैं। यहां पहाड़ी हिरण, खरगोस, शृगाल और सफेद भालू जङ्गली अवस्थामें दिखलाई देते हैं। वेफिन प्रणालीके पास सिन्धुघोटकोंका वास है। मछलीसे ही एस्कुइमो जातिका समस्त अभाव दूर हो जाते हैं। मछली पकड़ना ही ग्रीनलैण्डवासियोंकी प्रधान उपजीविका है। डेविस, वेफिन आदि प्रणालियोंमें बहुत तिमि मत्स्य देखनेमें आते हैं।

१८५२ ई०में ग्रीनलैण्डकी स्वाभाविक अवस्थाका निरूपण करनेके लिए भूतत्त्वविदोंके एक समूहने कोपेनहेगनसे इस देशमें आगमन किया। उनके मतसे ग्रोनलैंडके सभी पत्थर ग्रेनाइट, निस, पोरफिरि, कीचड़युक्त और भस्म सम्बन्धी पत्थरोंसे गठित हैं। डिस्कोद्वीपमें कोयलेकी खानें और इसके उत्तरांशमें बहुमूल्य तांबेकी खानें हैं। इसके अलावा यहां सीसा, "एसबेष्टस", सार्पेण्टाइन

ग्रानिट और दानेदार कांच-पत्थर मिलता है। मि० मर्चिसनसे लिखा है कि, १८५३ ई०में कप्तान इङ्गलफिटइने अक्षा० ७७ उ०में वैसा पत्थर देखा है

९७० ई०में गुनविओरन नामक आइसलैण्डवासी किसी व्यक्तिने पहले ग्रीनलैण्डके उपकूल देखा। एरिक रोडा नामक एक व्यक्ति जो कि आइसलैण्डके राजा अघन्लिङ्ग द्वारा कुछ दिनोंके लिए राज्यसे निकाला गया था, गुनबिओन-आविष्कृत उक्त देशमें रहने लगा। गुनबिओनने इसका ग्रीनलैण्ड नाम रख कर इसके विषयमें बहुतसी बातोंका प्रचार किया। इसके बाद फिर ९८६ ई०में एरिकने अपने देशके कुछ आदमियोंको लेकर यहां उपनिवेश स्थापन किया। तदनन्तर और भी कुछ लोग ग्रीनलैण्डके दक्षिणांशमें जा बसे।

ग्रीनलैण्डके लोग ईसा धर्ममें दीक्षित हैं। ११२१ ई०में मि० आनल्ड पहले पहल विशप् हो गये थे। १४०६ ई०में ग्रीनलैण्ड दक्षिण और पश्चिमांशमें १८० ग्रामोंमें विभक्त हो गया। १५८५ ई०में डेभिस साहबने ग्रीनलैण्डका पुन आविष्कार किया। १६०५ ई०में दिनेमारके राजा ४र्थ ख्रष्टीयनेन ग्रीनलैण्ड जय करनेके लिए जो सेनापति गोडस्कि लिनडेनोको तीन युद्ध-जहाज दे कर रवाना किया। १८-६ ई०में दिनेमारके राजा ६ठे फ्रेडारिकके आदेशसे कप्तान ग्रे ग्रीनलैण्डका पर्यवेक्षण कर आये। ग्रे साहबने उक्त द्वीपके दक्षिण पूर्वमें ६५ १८ उ० अक्षांश तक आविष्कार किया। इसके बाद किसी जातिको वास करते नहीं देखा गया।

दिनेमारके उपनिवेशके बाद यह द्वीप उपारनाविक और नाक याकोबसाभन, ख्रष्टीयनशायर हलिष्टिन मिण्डे, गडाभन, इगर्टिनबर्ग, सुकारटोपन, गडशायब, फिस्कारनिसेट, फ्रेडारिकशायर और जुलियानशायर आदि कई एक जिलोंमें विभक्त हो गया है।

ग्रीनलैण्डके लोग ताम्रवर्ण, परन्तु इनके सिरके बाल स्याह हैं। शरीर ठिगना, नाक चपटी और ओठ मोटे होते हैं। ये विश्वासघातक होते हैं। किसीसे दुश्मनी होने पर उसका प्रतीकार किये बिना इनसे निरस्त नहीं रहा जाता। ये विलक्षण बलशाली और

चौर्यवृत्तिमें अत्यन्त पटु हैं। शीतऋतुमें ये समुद्रतीरस्थ पर्वतकी गुहाओंमें जा कर रहते हैं। उस समय गुहाएं एक एक ग्रामरूपमें परिणत हो जाती हैं। कहीं कहीं मगरमच्छके चमडेके तम्बूओंमें भी रहते हैं। तिमि मच्छकी हड्डीमें शिशुककी खाल मढ कर ये उसके दरवाजे बनाते हैं। देशमें उत्पन्न कोमल शैवालदाम इनकी शय्या है। इनमें सन्तानका स्नेह अत्यन्त प्रबल होता है।

ग्रीनलैण्ड इस समय दिनेमारके अधीन है। इसके दक्षिण और पश्चिम भागमें प्राय दो सौ दिनेमार रहते हैं। ये शिशुकका चिमडा, सि धुघोटक और जल गैडाके दांतोंको यूरोपके नाना देशोंमें वेचा करते हैं।

ग्रीवा (स० स्त्री०) गीर्यते ऽनया ग्ट वन् निपातने साधु। १ कन्धरा, गर्दन इसका संस्कृत पर्याय—शिरोधि, कन्धि, शिरोधरा और कन्धरा है। २ मन्या, गदनकी नस।

ग्रीवाच (स० पु०) ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।

ग्रीवाघण्टा (स० स्त्री०) ग्रीवाया घण्टा, ७ तत्। ग्रीवा स्थित घण्टा घोडेको गर्दनमें लटकता हुआ घंटा।

ग्रीवारोग (स० पु०) ग्रीवाजातरोग, गलेका रोग।

ग्रीवाबिल (स० क्ली०) ग्रीवाया बिलम्, ६ तत्। ग्रीवाके अन्तर्गत गर्त्त, गर्दनके भीतरका गड्ढा।

ग्रीवास्थि (स० क्ली०) गर्दनकी हड्डी।

ग्रीविन् (स० पु० स्त्री०) प्रशस्ता ग्रीवा अस्त्यस्य ग्रीवा-इनि। १ उष्ट्र, ऊंट। (त्रि०) २ दीर्घ ग्रीवायुक्त, जिसके गर्दन लम्बी हो।

ग्रीष्म (स० पु०) ग्रसते रसान् ग्रस मक्। १ गरमीकी ऋतु, गरमीका समय। इसका पर्याय—उष्णक, निदाघ, उष्णोपगम, उष्ण, ऊष्मागम, तप, घर्म, तापन, उष्णागम और उष्णकाल है। प्राचीन पण्डितोंके मतसे ज्येष्ठ और आषाढ ये दो मास गरमी ऋतु माना गया है, किन्तु आधुनिक ऋतुनिर्णायकगणके अनुसार वैशाख और जेठ ही ग्रीष्म ऋतु है। भा०२।७०। २ उष्ण, गरम।

ग्रीष्मकर्कटी (स० स्त्री०) ग्रीष्मजकर्कटी, ग्रीष्मऋतुमें होने वाली ककडी या कद्दू।

ग्रीष्मका (स० स्त्री०) पुष्पविशेष, मल्लिका, नेवारीका फूल।

ग्रीष्मकाल (सं० पु०) ग्रीष्मऋतु, गरमीका मोसिम।

ग्रीष्मकालीन (सं० त्रि०) जो ग्रीष्मकालमें उत्पन्न होता हो।

ग्रीष्मज (सं० त्रि०) ग्रीष्मे जायते ग्रीष्म-जन-ड। ग्रीष्मजात, गरमी समयमें उत्पन्न होनेवाला।

ग्रीष्मजा (सं० स्त्री०) ग्रीष्मज-टाप्। १ लवलीवृक्ष, हरफरीका गाछ। २ नवमल्लिका, नेवारका फूल।

ग्रीष्मधान्य (सं० क्ली०) ग्रीष्मे जातं धान्यम् धान्यविशेष।

ग्रीष्मपुष्पी (सं० स्त्री०) ग्रीष्मे पुष्पं यस्याः, बहुव्री०, ग्रीष्मपुष्प-ङीप्। करुण पुष्पवृक्ष, करवीर फूलका गाछ।

ग्रीष्मभवा (सं० स्त्री०) ग्रीष्मे भवति भू अच्-टाप्। १ नवमल्लिका, नेवारीका फूल। (त्रि०) २ ग्रीष्मजात, जो गरमी कालमें पैदा होता हो।

ग्रीष्मसुन्दर (सं० पु०) ग्रीष्मे सुन्दरः, ७-तत्। शाकविशेष, एकतरहका साग।

ग्रीष्मसुन्दरक (सं० पु०) ग्रीष्मे सुन्दर इव कायते शोभते कै-क। यद्वा ग्रीष्मसुन्दर स्वार्थे कन्। एक तरहका साग। इसका गुण—तिक्त, लघु, कफ और पित्तदोषनाशक तथा रुचिकर है।

ग्रीष्महास (सं० क्ली०) ग्रीष्मे ह्रासो विकाशो यस्य, बहुव्री०। इन्द्रतुला, रूईका बीज, कपास।

ग्रीष्मा (सं० स्त्री०) १ लोध्रवृक्ष, लोधका पेड़। २ नवमल्लिका, नेवारीका फूल।

ग्रीष्मी (सं० स्त्री०) ग्रीष्मः कालः कारणत्वेनास्त्यस्य ग्रीष्मअच गौरादित्वात् ङीप्। नवमल्लिका, नेवारीका पुष्प।

ग्रीष्मोद्भव (सं० त्रि०) ग्रीष्म उद्भवोऽस्य, बहुव्री०। १ ग्रीष्मजात, जो ग्रीष्मकालमें उत्पन्न होता हो। (स्त्री०) २ नवमल्लिका, नेवारीका फूल।

ग्रीस—युरोपकी दक्षिण-पूर्व सीमाका एकराज्य और बालकान प्रायोद्वीपका अन्तिम दक्षिण भाग। इसको हिन्दीमें यूनान भी कहते है। इसके उत्तरको युरोपीय तुर्कस्थान और पूर्व-दक्षिण तथा पश्चिम ईजियन, मेडिटेरेनियन और इयोनियन सागर है। (प्राचीन) अक्षांश ३५° से ४०° उत्तर मध्य पुराना ग्रीस राज्य स्थापित था। इसकी उत्तर सीमा इलिरिया और मकदूनियाका राज्य थी। ग्रीसके उत्तर-पूर्व कोणस्थ थेसलीसे ओलिम्पास पर्वत और उत्तर-पश्चिमस्थ एपिरास राज्यके निकटसे एक्रोसारोवनीय पर्वत परस्पर विस्तृत हो उक्त दोनों राज्योंको पृथक् रखते हैं।

आरिष्टटलने अपने निज ग्रन्थमें एपिरासवासी पुराने 'ग्रीकाई' लोगोंका उल्लेख किया है। किसी समय इन लोगोंने ग्रीसके पश्चिम कूल पर्यन्त पहुंच करके वासस्थापन किया और इटली देशवासियोंने उक्त जातिके नाम पर ही देशका नाम भी 'ग्रीस' रख लिया। यूनानी ग्रन्थोंमें पूर्वकथित सीमान्तवर्ती प्रदेशको 'हेलास' लिखा है। प्राचीन ग्रीस राज्यसे हेलास अधिक विस्तृत रहा। हेलास शब्दसे 'हेलेनिस' लोगोंका बोध होता है। इसी कारण अफ्रीकाका साइरेन राज्य, एशियाखण्डका मिलेटास और सिसिली द्वीपका सिराक्यूज प्रभृति सभी यूनानी उपनिवेश इसी हेलास राज्यके अन्तर्भुक्त रहे। हिरोदतसने लिखा है कि मिसरपति आमसिसने यूनान राजको बहुतसा उपढौकन और साइरेस, लिनडास तथा श्यामास द्वीप दान किया था।

भूगोलवित् पुराने यूनान राज्यको दो भागोंमें विभक्त करते हैं। उत्तरांशमें थेसेली, एपिरास, अकारनानिया, इटोलिया, लोक्रिश (ओपानटियाल, एपिकनेमाडिया एवं ओजालियान), डोरिस, फोसिश, विओटिया, मेगाटिश और आटिका प्रभृति छोटे छोटे राज्य थे। दक्षिणांश पिलोपनिसास कहलाता है। लाकोनिया, मेसोनिया, आर्केडिया, एलिश, आरनेलिश, एकिया, सिकिओनिया और करिन्थ आदि क्षुद्र क्षुद्र विभागोंमें उक्त दक्षिण राज्य बंटा है।

उपद्वीपके पूर्वांशमें अवस्थित इजीय सागरका द्वीपपुञ्ज यूनानके अधिकारमें रहा। सिवा इसके भूमध्य सागरका रोडस, साइप्रास और साइक्लेडिस द्वीपावली थी। इसके दक्षिणांशमें सिथेरा (वर्तमान सेरिगो) और क्रीट द्वीप रहा। पश्चिममें आयोनीय सागरस्थ करसिरा (वर्तमान करफ्यू), सिफालोनीय और इथाका था। एतद्व्यतीत सिसिली द्वीपमें और दक्षिण इटालीमें और एशिया माइनरमें ग्रीक उपनिवेश रहा। यूनानियोंके एशिया अधिकारमें आइयोनीय राज्य ही प्रधान था। इफेसिउस नगरमें इस राज्यकी राजधानी रही।

पुराण—कहते हैं कि मिसर राज्यकी उन्नतिके साथ ही खृष्टजन्मसे प्राय १८०० वसर पहले ग्रीस राज्यका इतिहास आरम्भ हुआ है। किन्तु ई० पू८४ से पहलेका समुदाय काण्ड गल्प जैसा समझ पड़ता है।

यूनानी काव्यमें लिखा है कि पहले उक्त राज्यके पर्वत गुहादिमें पेलासगी नामक असभ्य लोग रहते थे। वह कपड़ोंके बदले जङ्गली जन्तुओंके चमड़ेसे अपना अङ्ग आच्छादन करते थे। यूरेनेस नामक मिसरके राजपुत्रने ग्रीस देशमें जा टिटान नामक राक्षसके घर अपना विवाह किया। फिर इन्हीं टिटानोंने विद्रोही हो उनको राज्यच्युत बनाया। यूरेनेसके पुत्र सिटारनने राज्यभार लिया और बापकी भांति दुरदृष्टमें पड़नेके भयसे अपने लड़कोंको मार डालनेका आदेश दिया था। किन्तु उनकी पत्नीने तत्पुत्र जुपिटरको चुपकेसे ले जा क्रीट द्वीपमें लालन पालन किया। वयःप्राप्त होने पर जुपिटरने पिताको राज्यसे हटाया और विद्रोही टिटानोंको दबाया तथा राज्यसे निकाला था।

जुपिटरने अपना राज्य भाई नेपचुन और प्लुटोको बांट दिया। वह बड़े विलक्षण भावसे राजाके शासन कार्यकी देख भाल करते थे। थेसेलीके निकटवर्ती ओलिम्पास पर्वत पर उनका विहार भवन रहा। ग्रीककाव्यमें सिटारन आदि देवता जैसे वर्णित हुए और ओलिम्पास पर्वतके शिखर देश देवताओंके वासभवन जैसे ठहराये गये हैं। दर्शनशास्त्र चर्चाके बहुकाल पीछे भी सिटारन, जुपिटर प्रभृति जातीय देवता जैसे पूजे जाते रहे हैं।

इसके बहुत पीछे किसी समयको एशियाखण्डसे हेलेनिस लोग जा करके ग्रीसमें बसे थे। पेलासगी लोगोंके मेलमें रहनेसे किसी समय समस्त ग्रीसवासी हेलेनिस नामसे अभिहित हुए।

पाश्चात्य भूतत्त्ववित् कहा करते हैं कि यही हेलेनिस नामक यूनानी प्राचीन आर्यशाखा सम्भूत हैं। जिस प्रकार भारतके आर्योंने सप्तसिन्धुके उत्पत्तिस्थानसे क्रमशः दक्षिणाभिमुख भारत आ उपनिवेश स्थापन किया। यूनानियोंने भी मध्य एशियास्थ आदि वासस्थान छोड़ करके सुदूर पश्चिम समुद्रतीर यूनान देशमें पहुंचा करके वास लिया है। बहुत पुराने समयको मध्यएशियामें आर्योंके साथ ग्रीक लोगोंके पूर्वतन आदि पुरुष रह करते थे। उस समय आर्य और ग्रीक दोनों एक ही माकी गोदमें लालित पालित होते और एक ही भाषा बोलते थे। बहुतसी शताब्दियां बीत चुकी, वह परस्पर सम्बन्धसूत्र विच्छिन्न करके अपने अपने निर्दिष्ट पथमें जा पड़े हैं। देशभेद, आचारभेद और विभिन्न लोगोंके संस्रवसे उन को पुरानी अवस्था और भाषा बदल गयी है। इतना परिवर्तन रहते भी उनकी पुरानी भाषामें ऐसे बहुतसे शब्द मिले हैं, कि पाश्चात्य विद्वान् दोनोंको एक आर्य जाति सम्भूत जैसा माननेमें कुण्ठित नहीं होते। (भाषा देखो।)
बात यह है कि ग्रीक और आर्य एकवंश सम्भूत हों या न हों सिन्धुतीरवासी प्राचीन आर्योंके प्रथम अवस्थामें भारतके आदिम अधिवासी दस्यु, असुर प्रभृति असभ्य लोगोंके साथ सर्वदा युद्ध विग्रहमें लिप्त रहनेकी तरह पुराने युनानियोंने भी ग्रीस देशमें पेलासगी नामक लोगों को दमन करके नाना स्थानोंमें आधिपत्य फैलाया था।

हेलेनिस लोग अपने रहनेके स्थानको 'हेलास' कहते थे। ग्रीसका अधिकांश पर्वतमय, बन्धुर और नदीहीन है। इसमें नदीमातृक थेसेली नामक जनपद ही कुछ उपजाऊ था। सुतरां यहांके लोग थोड़ा बहुत सुख पाते, दूसरे स्थानोंके लोग उपयुक्त आहारादिके अभावसे कष्ट उठाते थे। इसीसे वह अपने सुखवर्धनार्थ धीरे धीरे नाना स्थानोंको जाने लगे।

इनमें दूसरे भी कई एक श्रेणी विभाग रहे। उसमें डोरीय इओलीय और आइयोनीय प्रधान थे। इनकी कथित भाषाका कुछ अंश मिलते भी परस्पर अनैक्य रहा; सुतरां वह स्वतन्त्र भाषा जैसी समझी जाती थी।

ई०से १८५६ वर्ष पहले इनाकास नामक कोई फिनिकीय परिव्राजक स्वजातिके साथ ग्रीस देखने पहुंचे और पिलोपनिसासके नेपोली उपसागर कूलमें आर्गस नामक एक नगरी स्थापन की। उक्त घटनाके ३०० वर्ष पीछे ई०से १५५६ वर्ष पहले मिसरवासी सिक्रपसने जा करके आटिका प्रदेशमें उपनिवेश और आथेन्समें महानगरी बसायी थी उन्होंने असभ्य आटिका वासियोंको बहुतसी विद्यायें पढ़ायी और अपनेको उनका राजा जैसा मत लाया। उन्होंने अपने पार्वतीय आवासकी रक्षाके लिये

आथिनी नामक ग्रीक देवी मूर्तिकी स्थापन किया था। फिर लाटिन लोग आथिनी नामके बदले मिनार्भा नामसे उसे पूजने लगे। उक्त आथिनीदेवीके नामानुकरण पर भी आथेन्स महानगरीका नामकरण हुआ है। फिनिकीय लोगोंसे ही यूनानियोंको मिसर देशका सन्धान लगा और उन्हींके यत्नसे इन्होंने समुद्रमें पोतपरिचालनकौशल तथा वाणिज्य विषयादि सीख लिया।

ग्रीस और पिलोपनिसासके मध्यवर्ती योजकके बीच कोरिन्थ नगर समुद्रके उपकूल पर ई०से १५२० वर्ष पहले बना था। लाकोनियाकी राजधानी विख्यात स्पार्टा वा लेसिडिमन नगर उसी वर्ष लेलेक्स नामक जनैक मिसरवासी कर्तृक स्थापित हुआ।

ई०से १४९३ वर्ष पहले फिनिकीयवासी काडमासने बिओटियाका थिबिस नगर बसाया था। इन्होंने सबसे पहले यूनानियोंको अक्षरलिखनेका ढङ्ग सिखलाया।

ई०से १४८५ वर्ष पहले इनायुस नामक कोई मिसरवासी खदलके साथ आर्गस नगर पहुंचे और वहांके अधिवासियों कर्तृक राजपद पर अभिषिक्त हुए।

एक शताब्दी पीछे ई०से प्रायः १३५० वर्ष पूर्वको फ्रेजियाराजपुत्र पेलपस ग्रीसके पिलपनिसास विभागमें जा करके बसे और वहांकी राजपुत्रीका पाणिग्रहण करके राजसिंहासन पर बैठ गये।

होमर-लिखित ट्रय युद्धके सेनानायक माइकिनीराज आगामेमनन और स्पार्टाराज मानिलास दोनोंने पेलपसके वंशमें जन्म लिया था। उस समय हेलेसपण्ट और इजीय सागरके तीर ट्रय वा इलियम नामक कोई राजधानी रही। ट्रय-राजकुमार पारिसने घटनाक्रमसे ग्रीस देशको जा करके कुछ काल स्पार्टाके मानिलासकी सभामें अतिवाहित किया था। स्पार्टाराजके अनुपस्थिति कालको पारिस स्पार्टाकी राजमहिषी हेलनके रूपमें मुग्ध हुए और उनको ले करके ट्रयराज्य भाग गये। मानिलासने राजधानी लौट करके पारिसके दुर्व्यवहारकी कथा सुनी और रौद्रमूर्ति धारण कर ली। उन्होंने ग्रीसके समस्त राजाओंको ट्रयराजके विपक्षमें उभाड़ा था। कोई कोई अनुमान करता कि उक्त घटना ई० ११८४ वर्ष पहले हुई थी।

माइकिनीराज आगामेमनन, इथाकाके राजा प्राज्ञ यूलिसिस, पाइलसके राजा नेष्टर, थेसेलीके राजपुत्र आकिलिस, सलामिसके आजाक्स, इटोलियाके डोमिडिस, क्रीटके इडोमिनियास आदि बहादुरोंने बदला लेनेको स्पार्टाराजका पक्षावलम्बन किया था। लगभग १२०० अर्णवपोत और एक लाख लोग ट्रय ध्वंस करनेको चल पड़े। ट्रयराज प्रायम विपक्षकी गति रोकनेको एशिया माइनर थ्रेस, असीरिया आदिके राजाओंका साहाय्य लिया था। १० वर्ष बराबर ट्रयमें लड़ाई हुई। इस युद्धमें दोनों ओर सैकड़ों योद्धा खेत रहे। फिर अशेष चेष्टाके पीछे ग्रीक लोग जीते, ट्रय नगर विध्वस्त हो गया। इसी आख्यायिका पर सुप्रसिद्ध कवि होमरने 'इलियड' नामक बढ़िया काव्य बनाया है।

लड़ाई जीतने पीछे बहुत थोड़े लोग ही ग्रीस लौट सके थे। महात्मा यूलिसिसने युद्ध बन्द होने पर बहुतसे टापुओंमें घूम फिर करके कोई १० साल पीछे ग्रीसको प्रत्यागमन किया। उनके भ्रमण वृत्तान्त पर होमरने 'ओडिसी' नामक काव्य लिख डाला।

ट्रययुद्धके समय ग्रीसकी स्त्रियां अस्त्र शस्त्र ले करके राज्यरक्षा करती थीं। अनेक रमणियां परपुरुषों पर आसक्त हो गयीं। ग्रीक-सेनापति आगामेमनन दीर्घकाल पीछे स्वराज्यको लौट तो आये, परन्तु शान्तिसे बैठने न पाये। उनकी महिषी भी परपुरुष पर आसक्त हो गयी थीं। उस भ्रष्टाने अति घृणित भावसे पतिको मार डाला और उनके पुत्र अरेष्टिसको लोगोंने देशसे निकाला। कुछ दिनों पीछे अरेष्टिसने आर्गस पहुंच अपनी माता और उसके प्रणयियोंको विनाश करके पैतृक राज्य उद्धार किया।

ट्रय युद्धके प्रायः ८० वर्ष पीछे ग्रीसमें एक दारुण विद्रोहानल भड़का था। उस समय हारक्युलिसके वंशधर पिलपनिसासके सब स्थान अधिकार कर बैठे। माइकिनी वा आर्गसके राजपुत्र सबके सब निर्वासित हुए। ई०से ११०४ वर्ष पहले हारक्युलिस-पुत्र हेलारसके प्रपौत्र तेमेनास, क्रेसफण्टिस और अरिष्टडिमास डोरियोंके साहाय्यसे आर्केडिया छोड़ करके पिलपनिमासका अधिकांश अधिकार किया था। उसमें तेमेनस,

घार्गस और क्रे मफगिटस मेसिनीयाके राजा हुए। अरिष्ट डिमासने युद्धमें प्राणत्याग किया था। उनके पुत्र यूरिस्थिनिस और प्रोक्लिसने स्पार्टा राज्य बांट लिया।

ई०से १०७० वर्ष पहले पिलपनिसीयोंने आटिका आक्रमण किया था। उस समय आथेंसराज कोड्रसने अपना जीवन उत्सर्ग करके राज्यकी रक्षा की।

इसीके कुछ समय पीछे कोड्रसके वंशमें राज्य पर गृहविवादका सूत्रपात हुआ। उससे आथेन्सवासियोंने एककाल राजपद उठा करके कोड्रसके बड़े लड़के मिडनको प्रजा साधारणके प्रधान व्यक्ति जैसा चुना था। कोड्रसके दूसरे दो लड़कोंने कई आथेन्सवासियोंके साथ एशिया माइनर पहुंच करके उपनिवेश स्थापन किया। यहां पहले उन्होंने १२ नगर बनाये और प्रदेशका नाम आइयोनिया रख दिया। इसी आइयोन शब्दसे फारसीका यूनान और संस्कृतका यवन शब्द निकला है। आइयोनियाके ग्रीक भी पूर्वकालको भारतवासियोंके निकट यवन कहलाते थे। (यवन देखो।) उस समय ग्रीक लोग एशिया और युरोपके नाना स्थानोंमें जा करके उपनिवेश लगा रहे थे।

पाश्चात्य पुराविदोंके मतमें उसके बाद समय ग्रीस साम्राज्य तीन भागोंमें विभक्त हुआ। प्रथम उत्तर ग्रीस द्वितीय पिलपनिसास और तृतीय द्वीपपुञ्ज था। साइक्लैडिस, स्पोराडिस और यूबिया आदि द्वीप भी उसमें लगते थे। उत्तर ग्रीसके दक्षिण करिन्थ उपसागर, उत्तर तुर्कस्थान, पूर्व इजीय सागर और पश्चिमको आइयोनीय समुद्र है। इसी राज्यके अन्तर्भुक्त एकार्मानिया और इटोलिया राज्य पश्चिम ग्रीस, डोरिस, फोसिस, बियोटिया, आटिका, मेगारिस, लोकरी तथा पानतियाइयोंका राज्य एवं स्पार्कियाकी उपत्यका पूर्व ग्रीस कहलाती है।

उत्तर ग्रीसका अधिकांश स्थान पहाड़ी है। उसमें इटा नामक पर्वत ही प्रधान है। यह पूर्व उपकूल यूरिया प्रणालीके तटसे क्रमान्वयमें पश्चिमाभिमुखको एटोलियाके टिमफ्रेसटास पर्वत श्रेणीमें जा मिला है। बीचमें एमप्रोपोटामस उपत्यका, इटा पर्वत, करनानिया और एपिरास पर्यन्तके साथ उसका मिलान हो न सका। इटा पर्वतसे दक्षिणगामी शाखा फोसिसके पारनासिस और करिन्थ उपसागरके उत्तरकूलमें अवस्थित पहाड़में मिल गयी है। ग्रीस विभागके दक्षिण पूर्व दिक्को हेलिकोन, सिथिरोन और पारनिश पर्वत है। शेषोक्त पर्वतने आटिकासे बियोटिकाको अलग कर रखा है।

ग्रीसके अपर विभागका नाम पिलपनिसास या मोरिया टापू है। इसके मध्य आकिया, आर्केडिया, आर्गोलिस, करिन्थ, एलिस, लाकोनिक प्रभृति कई छुट राज्य हैं। इस विभागकी मध्यभूमि अधित्यकामय है। अस त्य पर्वतोंसे आच्छादित होनेके कारण बीच बीच उसमें विस्तीर्ण अववाहिका, जलमय भूमि और छोटे छोटे ह्रद देख पड़ते हैं। मोरिया उपद्वीपका उत्तरस्थित टेगीटास और दक्षिणका सिलोनी पहाड़ समुद्रपृष्ठसे प्राय ५००० फुट ऊंचा है। एलिस इलाकास और आर्गस नामक स्थानमें विस्तीर्ण समतल क्षेत्र हैं। अलफियास यूरोटास, पमिसास और पेनियास नदीमें वत्सरके सभी समयको जल रहता है।

यूबिया व्यतीत ग्रीस राज्यको द्वीपावलीमें साइक्लेडिस और स्पोराडिस द्वीपपुञ्जके बीच जो द्वीप जन मानव परिपूर्ण है, वह निम्नलिखित रूपसे विभक्त हुए हैं—

१ पश्चिम स्पोरेडिस—हाइड्रो, इपेजिया, इजिना, पोरस, सालामिस, अङ्गिष्ट्रा।

२ उत्तर स्पोराडिस—स्कोपेलस, खिलिड्रोमो, स्कियाथोस, स्काइरस।

३ उत्तर साइक्लेडिस—एण्ड्रोस, जिया, थारसिया, टिनो, मिकोनी, साइरा।

४ मध्य साइक्लोडिस—नाक्सस, परोस आण्टिपरोस, सिफाण्टो, सेरिफोस, सोनो किमोल्लोस, पोलिकाण्ड्रो, सिकिनो निश्रो अमर्गो।

५ दक्षिण साइक्लेडिस—सान्टोरिन, आनाफी, एष्टीपालिया काण्डिया वा क्रीट, कियस, सामस, लेसबस। एतद्व्यतीत एशिया माइनरके तीरवर्ती बहुतसे द्वीप उस समयको ग्रीसके अधीन रहे।

ग्रीस राज्यके मध्य किसी नदीमें नावसे व्यवसाय वाणिज्य करनेकी सुविधा नहीं पड़ती। नदियोंको सामान्य पार्वतीय उत्सस्रोत भी कह सकते हैं। जो कुछ कुछ विस्तीर्ण हैं, ग्रीष्मके प्रादुर्भावसे वह भी सूख

जाती हैं। होमरने अपने ग्रंथमें आक्सिनाम नदीको नदी-राज जैसा बतलाया है। आज भी यही आक्सिलाम नदी सबसे बड़ी है। सिवा इसके मिफिसास, इलिसास, आकारोन, स्पार्किंयस, अलफेइयास, पामिसास इना कास युरोटास प्रभृति नदियोंकी वर्तमान आवश्यकता जितनी अधिक है, प्राचीन काव्यमें उनके सम्बन्ध पर उतनी ही आश्चर्याश्चर्य घटनाओंका उल्लेख है। करिन्थ उपसागरको छोड़ करके एमव्रासिया, भोलो, इजिना, आर्गस वा नौप्लिया, कोलोकोली कोरोन आदि उपसागर भी विद्यमान हैं। फिर कोपाई वा टोपोल्लिया, अपोकुरो-भलटो, लिकुरिया नामक झील हो बड़े हैं। अपरापर जो ह्रद दिखलाते, ग्रीष्मकालको सूख जाते है।

भूतत्त्व—इटा, पारनासास और इलिकोन पर्वतमें धूसर वर्णके चूनेका पत्थर भरा है। जमे हुए पत्थरको देखते ही अनुमान कर सकते कि वह बहुत समय पीछे किसी पदार्थसे वर्तमान आकारमें रूपान्तरित हुआ है। इस पर्वतमें पत्थरका कोई अंश ग्रेनाइट कोई चकमकसे मिला सांप जैसा वक्राकार हरिद्रा चिह्नयुक्त, कहीं हरा पत्थर और कहीं अबरकका पत्थर देख पड़ता है। पिलोपनिसासके उपकूलमें मृत शम्बूकादिके जम जानेसे एक रूप पदार्थ उत्पन्न हो गया है। ग्रीसके प्रायः सभी स्थानोंमें आग्नेय पर्वतका चिह्न और कार्यादिका लक्षणादि दृष्टिगोचर होता है। पहाड़की खोह या गुहाके बीचसे गन्धकमय धूम और अपरापर दुर्गन्धमय वाष्प नाना स्थानों पर निकला करता है। यही भाप प्राचीन कालको डेलफीके धर्मकर्मादिमें व्यवहृत होता था। शीतल और उष्णप्रस्रवण बहुत हैं। आटिका, सेरिफोस और मिफान्टो द्वीपमें सोना, चांदी और सीसा मिलता है। इसमें सुर्मा, मनःशिला, तांबा और गन्धक भी उपजता है। युबिया, स्काइरस, लाको-निया और एजिस नामक स्थानमें लोहा और बहुतसा कोयला होता है। यहां पिलपनिसासके स्थान स्थान पर अत्युत्कृष्ट श्वेत पेण्टालिक और लाल तथा हरे रंगका मर्मर मिलता है। पिलपनिसाससे उत्तर ग्रीसमें अनाज आदिकी खेती अच्छी होती है आर्गस और मारायनके समतलक्षेत्रमें तथा उपकूलकी निकटवर्ती सजल भूमिमें धान होते हैं। आर्गस और कालामाटा नामक स्थानमें खूब तम्बाकू और रूई उपजती है। पिलपनिसासके तट-कूलवर्ती जिलाओंमें अङ्गूर और किशमिश पैदा होता है। मेसिना, लाकोनिया टिनोस और अन्यान्य द्वीपमें रेशमकी उपज है। यहांसे प्रचुर मधु बाहर भेजा जाता है। उसमें हेमिटास और आटिकाका मधु बहुकालसे विख्यात है। बादाम, अञ्जीर, अखरोट, नारंगी, कागजी-नीबू, अनार आदि फल बहुत होते हैं

ग्रीसमें जो समस्त वाणिज्य द्रव्य बनता ग्रीक लोगोंके व्यवहारमें हो लगता है। किसी किसी बन्दरमें जहाज और पाल तैयार होता है। मिसोलङ्गीके निकटवर्ती छोटे छोटे झीलोंसे नमक निकलता है। नौपिया, मिसो-लङ्गी, पाट्रास, गालाकसाइडी, हाइड्री, सोजिया, साइरा आदि सिवाराह सागरस्थ द्वीपोंसे ष्टीमर द्वारा वाणिज्य सम्पन्न हुआ करता है।

ग्रीस साम्राज्यमें जो लोग रहते, स्थानके अनुसार उनकी शारीरिक गठनप्रणाली भिन्न भिन्न लगती है। उत्तर ग्रीसमें रोमेल्लियोटिस लोगोंका वास है। यह योद्धा और साहसी है। तुर्क बड़ी चेष्टा करके भी इनको अधीन न कर सके। पश्चान्तरसे पिलपनिसासवासी मोरियोटिस लोगोंने तुर्कोंको वश्यता स्वीकार की।

रोमिलिया प्रदेशके पारनासास, एगराफा, वालटो, जारोमेनस पर्वतवासी तथा इटोलियाके मध्यस्थलवासी हेलेनिस और समतलक्षेत्रवासी किसानोंमें भालासीय, बुलगेरीय वा अलवानीय वंशसम्भूत हैं।

पिलपनिसासके आर्गोलिस और टिफिलियावासी अलवानीन जाति है। अपरापर सभी लोग ग्रीक भाषामें बात किया करते हैं।

द्वीपोंमें अलवानीय, ग्रीक और मध्ययुगके रोमकोंके आक्रमण समय लाटिनरक्तमिश्रित सङ्कर जाति रहते थे। हाइड्री और स्पेजियावासी अलवानीय जाति हैं। इसी प्रकार वर्तमान माइराके कियटी और सेरिटी लोग हेलेनिक वंशसम्भूत है। एतद्व्यतीत ग्रीक विद्रोहके पीछे युरोपके नाना स्थानोंसे नाना जाति आ करके बसे हुए हैं।

अति प्राचीन कालसे ग्रीक लोगोंमें समाज-संसारका

भार गृहस्वामी पिताके हाथमें न्यस्त है। पुत्रों के साथ परामर्श न करके वह स्वेच्छानुसार उनका विवाह और किसी व्यवसाय या कर्मादिमें उन्हें नियुक्त कर सकता था। प्राचीन समयको यवानियों के बीच एक ही बात पर पुत्रके अदृष्टका फलाफल पिताके इच्छाधीन था। यहां तक कि कभी कभी निकट कटम्बको एकत्र करके पारिवारिक सभामें लड़केके कर्मफल पर जीवनरक्षा वा जीवननाशका विचार होता था। वह निर्विघ्न तथा परस्पर रक्षित हो ग्रामादिमें रहते थे। प्रति वर्ष गृहस्वामी किसी धर्ममन्दिरमें एकत्र हो प्रति ग्रामके एक जन और नगरके तीन लोगों को म्युनिसिपाल मजिष्ट्रेट मनोनीत करते थे। यह पद प्रायः धनी व्यक्ति या गांवके जमीन्दारको मिलता था। वह लोग दण्डनायक और धनाध्यक्षका काम करते थे। स्थानीय करनिर्धारण और संग्रह करनेकी सभामें उक्त म्युनिसिपाल मजिष्ट्रेट तथा अपरापर बड़े लोगों का मत ले करके कार्य चलता था। इसी सभासे सहकारी वा दण्डनायक निर्वाचित हो प्रत्येक जिलाके प्रधान नगरमें रखे जाते थे।

प्रकृत इतिहास—प्राचीन इतिहास-कालको कुज्झटिकामें समाच्छन्न हुआ है। जिन देवदेवियों और वीर पुरुषों की इतिहासगत आश्चर्य घटना सम्वलित कथा सुनी जाती, उस पर केवल दूसरे लोगों का ही विश्वास जम सकता है। पूर्वको जो पुराणकथा लिखित हुई है और मिक्रप, क्याडमास दनायुस, थेसियास, हिराक्लिस प्रभृतिका जो उपाख्यान तथा आर्गोनटिक युद्धयात्रा, ट्रययुद्ध एवं कालिडोनिय सूअर शिकार आदिका जो इतिवृत्त कहा है, उसके सम्बन्धमें प्रकृत तथ्य उद्धार करनेकी ऐतिहासिक विन्दुमात्र भी आशा नहीं रखते कि वह कहां तक ठीक है। ग्रीसमें बहुत पराक्रमशाली वीरोंके जन्म ग्रहणका समय (Heroic age) १४०० से १२०० खुष्ट पूर्वाब्दके मध्य निरूपित हुआ है।

(प्रायः ८८० खुष्ट पूर्वाब्दको) स्पार्टा राजवंशमें लाइकारगासने जन्म लिया था। मिस्र भारत प्रभृति नाना स्थान पर्यटन और नाना स्थानों की रीतिनीति दर्शन करके उनके मनमें धारणा हुई कि चिरस्थायी जातीय शक्तिकी एकता युद्धमें बड़ कर्त्तव्य सिवा कोई जाति जगत्‌में प्राधान्य नहीं पा सकती, सुतरां सर्वसाधारणको पहले ही दैहिक उन्नति आवश्यक थी। लाइकारगासने इस पक्षमें नये नियम प्रवर्तन किये थे कि स्पार्टाका प्रत्येक अधिवासी साहसी तथा बलशाली होता और स्पार्टाको सभी रमणियां बलवान् पुत्र प्रसव करतीं। उक्त नियम यह है—

१ सन्तानको विकलाङ्ग होने पर पर्वतकी गुहामें डाल दिया जावे।

२ जो कोई सवह वर्षका होने पर बापका घर छोड़ निराले शिक्षागारमें अपरापर युवकोंके साथ लालित पालित और शिक्षित होगा, पितामाताके साथ कोई सम्बन्ध न रखेगा।

३ देशके अक्षर परिचयको छोड़ करके कोई साहित्य विज्ञानादि पढ़ न सकेगा, क्यों कि उससे साहस तथा युद्धोत्साह घट सकता है।

४ सन्तानको बड़ा होने पर डियाना (रणदेवी) के उत्सवमें दैहिक बलपरीक्षाके समय कशाघात (कोड़ेकी मार) सहना पड़ेगा।

५ स्त्रियों को बीस वर्ष तक पुरुषों की भांति कठोर शिक्षा दी जावेगी। वीरप्रसविनी और वीरसङ्गिनी होनेके लिये उनको ऐसी शिक्षाका प्रयोजन है।

६ पुरुष ३० वर्ष और स्त्री २० वर्षसे पहले विवाह कर न सकेगी।

७ विवाहके पीछे भी आठ वर्ष तक समाजकी मङ्गलकामनासे कोई अधिक स्त्री सहवास कर न सकेगा, करने पर भी ऐसे करना पड़ेगा जिसमें कोई समझ न सके।

८ कोई अपरिचित अतिथिको घरमें रख न सकेगा।

९ कोई मद्यपान वा यथेच्छा व्यवहार कर न सकेगा। इस बातमें घृणा उत्पन्न करानेके लिये नीचको शराब पिला करके उस पर अत्यन्त निष्ठुर व्यवहार करना चाहिये।

उक्त नियमोंके आधार पर ही पुरुषने अपना स्त्रीको उसकी अपेक्षा बलवान् पुरुषके साथ सहवास करनेका उपदेश दिया और अम्लान हृष्टचित्तसे अपने क्षीणकाय तथा दुर्बल सन्तानको परित्याग किया है।

उसीसे कुमारियां और युवतियां युद्ध कौशल सीखती थीं।

पहले ग्रीसके भिन्न भिन्न स्थानीय लोग सुविधा मिलने पर परस्पर युद्ध करके एक दूसरे पर कर्तृत्व करनेको यत्नवान् रहते थे। उनमें एकता न थी। सुतरां विदेशी वणिक् जब आ करके यूनानियोंका यथासर्वस्व छीन ले जाते, वह प्रति विधान कर न पाते थे। इसी प्रकार बार बार उत्पन्न और धनलोलुप हो जातीय एकता बन्धनके लिये प्रधान प्रधान व्यक्तियोंने मिल करके ओलिम्पीय (Olympian), इस्थमीय आदि उत्सवोंका आयोजन किया। ७७६ खृष्ट पूर्वाब्दको सर्वप्रधान ओलिम्पीय उत्सव आरम्भ हुआ। इस जल्सेमें राजाधिराजसे ले करके दीन दरिद्र पर्यन्त सभी शामिल होते थे। उस समय समस्त ग्रीस जातीय एकतासूत्रमें आबद्ध हो जाता, शत्रुताको कोई स्थान न दिखलाता था। ग्रीसके सब ग्रन्थकार, कवि, मल्ल, योद्धा, अश्वारोही आदि उत्सवक्षेत्रमें उपस्थित होते थे। वहां सभीकी परीक्षा ली जाती थी। इसमें जो जयी हो जाता, राजाधिराजकी अपेक्षा समधिक सम्मान पाता और कवि अपनी शक्ति भर उसका यश गाता था। ओलिम्पीय उत्सवके प्रारम्भ कालको ग्रीसके महाकवि होमर आविर्भूत हुए। उनका ग्रन्थ पढ़नेसे जान पड़ता कि उस समय ग्रीसके लोग वीरका समधिक आदर करते, यथेष्ट दैहिक बल रहनेसे उसको देवता जैसा समझते थे। भीरु व्यक्तिको सभी घृणा करते थे। यहां तक कि जिस सुन्दरीके लिये ट्रयका महासमर हुआ, उसी हेलेनने जिसके लिये पति पुत्र, ऐश्वर्य, राजभोग प्रभृति तुच्छ समझा और जिसको अपना सर्वस्व मान जन्मभूमि छोड़ चली गयी, उसी पारिसकी भीरुता देख इसने भी अति घृणाके साथ भर्त्सना की थी। वीरपूजाका यह प्रकृष्ट निदर्शन है।

ओलिम्पीय उत्सवके पीछेसे ग्रीसका प्रकृत इतिहास समझा जा सकता है। ७४३ खृ० पूर्वाब्दको स्पार्टावासियोंके साथ मेसेनियाका युद्ध हुआ। इसी लड़ाईके बाद ग्रीसवासियोंने नाना देशोंमें जा करके उपनिवेश स्थापन किया। यह युद्ध क्रमान्वयसे तीन शताब्दीकाल चला था। परिशेष पर ४५५ खृ० पूर्वाब्दको तृतीय मेसेनिया युद्धमें आईथोम ध्वंस होनेसे दोनों जातियोंके चिर वैरिता दूर हुई।

६२४ खृ० पूर्वाब्दको ड्रेकोने ग्रीसका विधिसमूह लिख करके चलाया था। पीछे ५९४ खृ० पूर्वाब्दको सोलनने आथेन्स महानगरमें बैठ करके नये और पुराने कानूनको सुधारा। ५६० और ५१० खृ० पूर्वाब्दके मध्य पिसिष्ट्रेटास तथा हिपियास और हिपार्कास नामक उनके दो लड़कोंने आथेन्स नगरमें एकच्छत्रराज उपाधि ग्रहण पूर्वक राजत्व किया था।

५६०-५४७ खृ० पू०के मध्य लिडियाराज क्रिसासके साथ ईरानके राजा वीर काइरासकी लड़ाई लगी। ५४७ खृ० पू०को क्रिसासने कापाडोकिया आक्रमण किया था। फिर उन्होंने निज राजधानी सारडिस नगर लौट करके साहाय्यकारियोंसे सैन्य भेजनेको कहा। वह फौज आनेसे पहले ही काइरासने ससैन्य पहुंच करके सारडिस अधिकार किया था। ४९८ खृ० पू०को आथेनीयों और आइयोनीयों कर्तृक सारडिस नगर भस्मीभूत होने पर पारस्यराजने तीन बार ग्रीस पर धावा मारा।

पहले ४९२ खृ० पू०को मार्डोनियास ग्रीस आक्रमण को जा आथोस पर्वतके निकटस्थ समुद्रमें ससैन्य डूबे थे। दूसरी बार ४९० खृ० पू०को डेटिस और आर्टाफारनिस ग्रीस अधिकार करनेको पहुंचे और यूनानियों कर्तृक माराथान युद्धमें पराजित हो करके लौट पड़े। तृतीय युद्ध स्वयं पारस्यराज जरकसेस कर्तृक परिचालित हुआ था। कहते हैं कि वह ५ लाख सिपाही और ४०० जङ्गी जहाज इकट्ठा करके ग्रीस पर चढ़नेको चले, परन्तु थारमोपिलो, सलामिस और प्लाटियाको लड़ाईमें रहा करके स्वदेशको लौट जाने पर बाध्य हुए। उसी समय आथेनीय ४०४ खृ० पू० पर्यंत वैरोकटोक राजत्व करते रहे। फिर ४३१ खृ० पू०को पिलोपनिसीयकी लड़ाई लगी। क्रमान्वयसे २७ वर्ष तक यूनानियोंका बल क्षय होता रहा। परिशेषमें ४०४ खृ० पू०को आथेन्स नगर ध्वंस होने और आथेन्सवासियोंके अधीनता स्वीकार करने पर झगड़ा निबटा।

४१५ खृ० पू०को सिसिलीका विख्यात युद्ध हुआ। ४२९ खृ० पू०को आथेनीय नायक पेरिक्लिस मरे थे।

उस समयसे पहले यूनानियोंने जो अद्भुत भास्कर कार्य-युक्त सुन्दर सुन्दर अट्टालिकाएं बनायीं थीं, उनका ध्वंसावशेष देखनेसे आज भी मानवका मन विस्मयरस और आनन्दमें नाचने लगता है।

४०१ खृ० पू०को आर्टाजरकसेसको राज्यच्युत करनेके लिये छोटे काइरासने युद्धयात्रा की थी। किन्तु वह इसी वर्ष कुनाकसाकी लड़ाईमें पराजित और निहत हुए। इस युद्धके लिये काइरासने यूनानी फौज जोड़ी थी। किन्तु ४०१ ४०० खृ० पू०को ग्रीक नायक जेनोफन सगर्व प्रत्यावृत्त हुए। ३९९ खृ० पू०को जेनोफन और प्लेटोके अध्यापक विख्यात दार्शनिक सक्रेटिस मर गये।

पिलोपनिसीयों कर्तृक आथेनीय पराजित होने पर स्पार्टावाले धीरे धीरे बलशाली बने थे। प्रथम एलिय (३९९—३९८), द्वितीय कारिन्थीय (३९५ ३८७), ३य ओलिन्थिय (३८० ३७९) और चतुर्थ थेबिय (३७८—३६२) युद्धमें उनका वीरत्व सम्यक् प्रकाशित हुआ। इस युद्धविग्रहके समय अद्वितीय योद्धा एजिसिलास स्पार्टाके सेनानायक थे। उसी समय (३६४) कारोनिया तथा करिन्थ, (३७४) अरकोमिनास (३७१) ल्यूकट्रा और (३६२) मानटिनियाकी लड़ाई हुई। इसमें थिबीय वीर इपामिनान्डास मारे गये। ३५९ खृ० पू को फिलिप मकदूनियाके सिंहासन पर बैठे थे। कुछ काल पीछे वह ग्रीसके सब कामोंमें हाथ डालने लगे। इसीसे आथेंसके दूसरे मित्र राजाओंने उनका वैसा एकाधिपत्य माना न था। क्रमशः विद्रोहसूत्र पर ग्रीस राज्यमें (३५७ ३५५ खृ०पू०) सामाजिक युद्ध उपस्थित हुआ। उस लड़ाईमें आथेंसराज अपने अधिकृत अनेक राज्य खो बैठे। इसके पीछे (३५५-३४६ खृ० पू०) कई वर्षों तक धर्म युद्ध होता रहा उस लड़ाईमें मकदूनियाके अधिपति फिलिप सहयोगी थे। इस समयको (३५२ खृ० पू०) डिमस्थनिसने फिलिपके विरुद्ध सुदीर्घ वक्तृता दी उसका 'फिलिपिक' कहते हैं। ३३८ खृ० पू०को किरोनियाकी लड़ाईमें आथनीय और थिबीय लोग फिलिप कर्तृक पराजित हुए। ३३० खृ० पू०को फिलिप करिन्थकी महासभामें ईरानके विरुद्ध युद्धोन्मुख ग्रीक सैन्यके अधिनायक चुने गये। किन्तु उसी वर्ष मकदूनियाकी विवाहसभामें किसी दस्यु ने उनका गला काट डाला।

फिलिपके मरने पर बहुतसे लोग उनके पुत्र अलेक-सन्दर (सिकन्दर)के विपक्षमें विद्रोही हुए। पीछे यूनानियोंने बाध्य हो उन्हीं वीर युवकको ईरान जानेवाले अपने सैन्यका अधिनायक बना दिया। अलेकसन्दर देखो।

मकदूनियाराजकी श्रीवृद्धिके साथ ही समस्त ग्रीस राज्य सौभाग्यशाली बना था पीछे जब रोमकोंने आ करके मकदूनिया अधिकार किया, ग्रीक लोग स्वाधीनता खो अनेक कष्ट उठाने लगे। इन्होंने अपनी स्वाधीनता बचानेको पिलपनिसासके सभी नगरवासियोंको 'एकियान लीग' नामसे दलबद्ध करके रोमकोंके विरुद्ध युद्ध किया था। परन्तु अपने दुर्भाग्यक्रमसे यह स्वदेशकी रक्षा कर न सके।

१४६ खृ० पू०को रोमक सेनापति कनसाल सुमियासने करिन्थ अधिकार करके समस्त ग्रीस देशको रोम-साम्राज्यभुक्त बनाया था। रोम देखो।

करिन्थ अधिकारके पीछे ग्रीसका इतिहास रोमक इतिहासमें मिलित हुआ है। अन्तिओकास तथा मिथ्रिडाटिसके साथ रोमकों, एएटनी एवं अकटेवियानासके साथ सिजा, पम्पी ब्रूटास तथा केसास और अकटेडियामसका युद्ध प्रभृति घटनावली ग्रीसके रङ्गमञ्च पर अभिनीत हुई। उस समय अभागे यूनानियोंको बहुतसा कष्ट उठाना पड़ा था। आगाष्टासके राज्यारोहणको दो शताब्दियों बाद ग्रीसमें शान्तिराज्य स्थापित हुआ। उस समय ईसाई धर्म ने धीरे धीरे अधिवासियोंमें प्रवेश लाभ किया था। जगह जगह गिर्जा बने और बहुतसे यूनानी ईसाकी उक्तियां फैलानेको अपना जीवन उत्सर्ग करके नाना देशोंको चल गए।

इसके अनतिकाल पीछे ही शीतप्रधान उत्तर दिकसे आभोनीय, अलआनीय आदि असभ्य लोग दलके दल आ करके ग्रीसमें लूट मार मचाने लगे।

कनष्टानटाइनके अपना साम्राज्य बांटते समय ग्रीस उनका पृथ विभाग ठहरा था। परन्तु १२०४ ई०को जब मिनिसीयोंने सिजाक दुर्ग म य शत्रोंका राना अधिकार किया, ग्रीस भी उन्हींके हाथ लग गया।

१३५५ ई०को उसमान वंशीय तुर्क युरोपखण्डमें जा करके रहे और ग्रेस, मकदूनिया, थेसेली आदि बहुतसे स्थान दबा बैठे। १४५३ ई०को उन्होंने कनस्तान्तिनोपल जय किया था। इसी समयसे गत शताब्दी पर्यन्त ग्रीस मुसलमानों राज्यके अन्तर्गत रहा। शेषमें १८२० ई०को तुर्की राज्यके विरुद्ध ग्रीक लोगोंने विद्रोह किया था। किसीने स्वप्नमें भी न समझा था कि वही पुराना ग्रीस फिर स्वाधीन हो जावेगा। परन्तु ग्रीसका अदृष्ट हंस पड़ा। अन्यान्य ईसाई राज्योंके साहाय्यसे १८२९ ई०को परपददलित ग्रीस राज्य पुनर्वार स्वाधीन हो गया। १८३१ ई०को ग्रीसकी स्वाधीनताके प्रतिष्ठाता क्यापा-दि-इष्ट्रिय मारे गये। उस समय बहुतसे लोगोंने सिंहासन पर बैठना चाहा था। किन्तु बृटेन, फ्रान्स और रूसकी अनुमतिसे बावेरियाराजके द्वितीय पुत्र अथो १८३२ ई०को सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। अथो राजा हो करके भी सुखसे राजकार्य चला न सके। अनेक बाधा विघ्नोंको अतिक्रम करके १८३५ ई०को वह ग्रीस राज्यमें शान्तिस्थापन और सुशृङ्खलापूर्वक राजकार्य निर्वाह करनेमें समर्थ हुए।

डेनमार्कके द्वितीय राजपुत्र जार्जने १८६३ ई०को ग्रीसमें राज्यारोहण किया था। फिर क्रीट द्वीपमें विद्रोह भड़का, जो १८६६ ई०को दबा दिया गया। १८७० ई०को आथेन्सके पड़ोसमें डाकुओंने कई अंगरेजोंको मार डाला। १८८१ ई०को ग्रीस और तुर्कीके बीच नयी सीमा बनी। पेनिउस और लाटिमोना मुखके मध्य एक बिन्दुसे पश्चिमको क्तितिरी तथा जिगोस पर्वतके शिखर तक कोई रेखा खींची गयी जो आर्टा नदीके साथ उसीके मुख तक चली गयी। इससे ग्रीसका राज्य बहुत बढ़ गया। १८८६ ई०को जातीय आन्दोलनने जोर पकड़ा और १८९७ ई० ४ फरवरीको क्रेनियामें विद्रोह उठ खड़ा हुआ। २८ मार्चको तुर्कीसे ग्रीसका युद्ध होने लगा। १७ अप्रेलको तुर्कीने युद्धघोषणा की थी। २४ अप्रेलको ग्रीक सेना लारिसासे पीछे हटी। परन्तु १८ मईको शक्तियोंके बीचमें पड़नेसे सन्धि हो गयी।

पूर्व विश्वास—आजकल सभी यूनानी ईसाई धर्मावलम्बी हैं। [ईसाई देखो।] परन्तु ईसा मसीह आविर्भावके बहुत पहलेसे यह अभ्र लोकवासी देवों, पातालमें रहनेवाले उपदेवताओं और प्रधान प्रधान व्यक्तियोंके प्रेतात्माओंको उपासना करते रहे हैं। प्राचीन ग्रीक और रोमक प्रायः तीस हजार देवताओंको मानते थे। वह सभी देवता मानवधर्माक्रान्त और मनुष्योंकी ही भांति पाप-पुण्यके फलभोगी हैं। फिर अनेक देवता मिसरसे गृहीत हुए हैं। कोई कोई समझता है कि उक्त सकल देववंश प्राकृतिक शक्तिसमूहके रूपकको कल्पना मात्र ठहरता है। परन्तु ग्रीसके प्रधान इतिहासलेखक ग्रोट साहब इसको स्वीकार नहीं करते। उनके मतसे मानवके प्रथम ज्ञानोदयकालको अतर्कित तथा अपरिज्ञात भावसे जिस पर भक्ति, श्रद्धा और भय लगा है, उसीमें देवत्वका आरोप किया गया है। इसी प्रकार बहुतसे जघन्य चरित्र लोग भी ग्रीक समाजमें देवता जैसे गण्य हुए हैं। पहले हिसियद, उसके पीछे अर्फियसने (७०० पू० खृ०) देवतत्त्व प्रचार किया। ५३८ खृ० पू०को जेनोफनने देवतत्त्वको नितान्त अलीक आख्यायिका और ईश्वर अपना अज्ञात जैसा स्वीकार कर गये हैं। किन्तु परवर्तीकालके प्रधान प्रधान व्यक्तियोंने देवोंके अस्तित्वमें सन्देह किया। पहले यूनानी आध्यात्मिक तत्त्व कुछ भी न समझते, सभी लोग बाह्य जगत् सुखस्वच्छन्द और विलासमें व्यस्त थे। प्रायः ६०० खृ० पू०को इनमें केवल महात्मा थेलिस कथञ्चित् अध्यात्मतत्त्व समझ सके, उन्होंने प्रथम ईश्वर और जन्ममृत्यु अभिन्नताकी बात बतलायी थी। फिर सक्रेटिस, प्लुटो, इपिक्यूरस और ष्टोइक आदि अज्ञातभावसे थेलिसका अनुसरण करके दार्शनिक विषयकी आलोचनामें प्रवृत्त हुए। वह सभी जनसाधारणके भ्रान्त और दूषित मतका विरोध करते थे। स्थानभेदसे ग्रीसमें भिन्न भिन्न देवदेवियोंकी पूजा होती थी। जैसे ग्रेसमें वाकासदेव, आथेन्समें आथिनी उत्तर ग्रीसमें आपोली, करिन्थ सागरके उपकूलमें नेपचुन, आर्गसमें जूनी और इफेसासमें डियानाकी उपासना प्रसिद्ध थी। इसके मध्य वाकासदेवके उत्सवमें ग्रीसके नर और नारी साथ साथ मद्यपानमें लगे रहते थे। स्त्री-पुरुष सम्बन्धीय सब प्रकारका बीभत्स व्यापार होता था। सिवा इसके इल्यूसीय नामक एक नवरात्र उत्सव रहा।

इसका अनुष्ठानादि अति निगूढ़ और गभीर रजनीको गुप्त भावसे होता था। इयत्ता नहीं थी, उसमें कितना कुकाण्ड किया जाता। देवके पर्वादिमें नानाप्रकार पूजा, नृत्यगीत, कविको लड़ाई, मल्ल तथा युद्धक्रीडा होती थी। फिर उपयुक्त लोगोंको पुरस्कार दिया जाता था। ग्रीसके रोमकोंकी अधीनता स्वीकार करने पर उन्होंने भी इनको देवदेवियोंको ग्रहण किया। वर्तमान पाश्चात्य पौराणिकोंने निम्नलिखित ग्रीक, रोमक और भारतीय देवदेवियोंका सोसादृश्य स्वीकार किया है —

अश्विनी }	Castor,	कृष्ण	Apollo
कुमारद्वय }	Pollux	दुर्गा	Juno
अरुण	Aurora	नारद	Mercury
इन्द्र	Jupiter	पृथिवी	Cybele
अन्नपूर्णा	Annaperenna	राम	Dionysius
काली	Proserpine	लक्ष्मी श्री)	Ceres
काम	Cupid, Eros	वरुण	Neptune
कुमार (कार्तिक)	Mars	वायु	Æolus
कुवेर	Plutus	विश्वकर्मा	Vulcan
यम	Pluto	त्वष्टा	Vesta
यमका कुकुर	Cerberus	हनुमान्	Pan
सूर्य	Sol		

पाश्चात्य लोग इसी प्रकार अनेक देवदेवियोंकी कथा लिख गये हैं। उनके मतानुसार यूनानी ज्यूस ((Zeus) "द्यौस्" और एरिनिस् (Erinys) "सरण्यु" जैसा वेदमें वर्णित है।

किन्तु हमारी विवेचनामें हिन्दू और यूनानी देवादिकी उक्त आख्यायिका पढ़नेसे परस्पर विशेषरूप सन्देह निर्णय करनेको विलक्षण सन्देह उठता है। देवतत्त्व देखो।

एशियाके साथ ग्रीसका सम्बन्ध—भारतवर्षको कथा ग्रीसमें बहुकालसे प्रचलित है। ग्रीसके प्राचीन ऐतिहासिकोंके मध्य हीकेटियास और मिलिटासके ग्रन्थमें इस देशकी बात स्पष्ट रूपसे कही गयी है। यह दोनों ग्रन्थकार ५४६ से ४८६ खृ० पू०के लोग थे। उनके पीछे हिरोडोटासने भारतवर्षके सिन्धुतीर पर्यन्त स्थानका विशेष सम्वाद ग्रहण किया। हिरोडोटासके समय ४५० खृ० पू० को उनके पर चिकित्सक टिसियासने (४०१ खृ० पू०) अपने वासस्थान पारस्य देशसे भारतके रङ्ग, 'कपड़े', वानर, शूकपक्षी प्रभृति विषयोंका विवरण सग्रह किया था। सिन्धुके परवर्ती स्थानका संवाद अलेकसन्दरके सहयात्री ऐतिहासिकों और विद्वज्जनों कर्तृक (३२७ खृ० पू०) युरोपमें प्रथम प्रचारित हुआ। इनका मस्टहोन विवरण नष्ट तो हो गया है, परन्तु उसका सारभाग ष्ट्राबो, प्लिनि, एरियान आदि ग्रन्थोंमें मिलता है। मगधराज चन्द्रगुप्तके सभास्थ ग्रीकदूत मेगास्थिनिसने (३०६-२९९ खृ० पू०) युरोपमें भारततत्त्व विशेष रूपसे प्रचारित किया था। उन्हींको अनुसन्धित्साके फलसे ग्रीक और रोमकोंने भारतवर्षीय सर्वविषयके ज्ञानज्योतिकी कथा सुनी। अलेकसन्दर और मेगास्थिनिस देखो।

अलेकसन्दरके पूर्वको ग्रीक देशीय विद्वान् एशियाके विषयसे परिचित थे। मुसलमान ऐतिहासिकोंके ग्रन्थादिमें निम्नलिखित ग्रीक रोमक विद्वानोंके नाम मिलते हैं—

हिरोडोटास	४५०	खृ० पू०
टिसियस	४००	"
ओनिसिक्रिटास	३२५	"
मेगास्थिनिस	३००	"
ष्ट्राबो	२०	"
पम्पोनियास मेला	२०	"
प्लिनि	७७	"
पेरिप्लास मरि	८०	"
एरिथ्रेई	८०	"
डायोनिसियास	८६	"
पेरिजिटिस	८६	"
टलेमि	१३०	"
एरियान	१५०	"
क्लेमेन्स आलेक	२००	"
सान्द्रिनास	२००	"
यूसिवियास	३२०	"
फेसटास एवियेनास	३८०	"
मार्सियान	४२०	"
कसमास इण्डिकोप्लुष्टस	५२५	"
ष्टिफेन (वाइजानटियामवासी)	५६०	"

रामेन्नोटिस आनोनिमि-	
कसमोग्राफिया	७म शताब्दी
जर्जियास सिनसिलास	८००
वष्टेथियास	१२ शताब्दी

यह नहीं कि उक्त सभी नाम मुसलमानोंके ग्रंथोंमें अविकृत भावसे गृहीत हुए हों। अलेकसन्दरका नाम उन्होंने सिकन्दर जैसा लिखा है। इसी प्रकार आरिष्टटल 'अरस्तू', सक्रेटिस 'शुकरात', हिपोक्रेटिस 'बुकरात' और प्लेटो 'अफलातू' नामसे वर्णित है।

सिकन्दरने सिन्धुके तीर पर उपनीत हो वाकट्रिया (वाह्लीक) नामक स्थानमें एक स्कन्धावार स्थापन किया। सिकन्दरके मरने पर जब उनके सेनापतियोंने उनका विशाल राज्य आपसमें बांट लिया, यही जनपद एक स्वतन्त्र राज्यमें परिणत हुआ। २५७ खृ० पू०से २०७ शताब्द पर्यन्त बाकट्रियाका बड़ा प्रादुर्भाव रहा। लासेनके मतानुसार एशियामें ४ ग्रीक राज्य स्थापित हुए। उनके मध्य मिनान्टार नामक सेनापतिने वाकट्रियाके पूर्वांशमें एक राज्य स्थापन किया। आपोलोडोटासने काबुल, पञ्जाब और सिन्धुकूलमें राज्य बनाया। धीरे धीरे आर्कोसिया (कन्दाहार) भी इसीमें मिल गया। दूसरा राज्य हेरातमें स्थापित हुआ। चतुर्थ राज्य परोपामिसासके अधीन (निषध पर्वतके) मध्यस्थलमें ठहर गया। प्रत्नतत्त्ववित् प्रिन्सेप उसीको वाकट्रिया राज्य बतलाते हैं। अधिकसे अधिक उस समयको एशियामें नीचे लिखे ग्रीक राज्य बने थे—वाकट्रिया (वाह्लिक), सोगदियाना, मार्जयाना, परोपानिसिडी (निषध), आइरा, आरिया, ड्रांगा, आर्कोसिया (आर्चोद), गान्दारिटिस (गान्धार), प्युकेल्योटिस (पुष्कलावती), तक्शिला (तक्षशिला), पात्तलिन (पाताल), सुराष्ट्रीन (सौराष्ट्र) और लेरिस (लाट)। इन सकल राज्योंकी सीमा निरूपण करना सहज नहीं है। इनके राजाओंके मध्य चार राजश्रेणियां विशेष विख्यात हैं। नीचे तत्तद्वंशके राजाओंके नाम दिये गये हैं—

१म—सिरीयराजगण

१	अलेकसन्दर	(३६५-३२३ खृ० पू०)
२	सिल्यूकस १म निकेटर	(३१२ ,,)
३	अन्तियोकस १म सोटार	(२८० खृ० पू०)
४	,, २य थियस	(२६१ ,,)
५	सिल्यूकस २य कालिनिकास	(२४६ ,,)
६	,, ३य केरोनास	(२२६ ,,)
७	,, अन्तियोकास ३य मागनास् (एकियस)	(२२३ ,,)
८	सिल्यूकस ४र्थ फिलोपेटार	(१८७ ,,)
९	अन्तियोकास ४र्थ एपिफिनिस	(१७५ ,,)
१०	,, ५म यूपेटर	(१६४ ,,)
११	डिमिट्रियास १म सोटार	(१६२ ,,)
१२	अलेकसन्दर १म कथित	(१५० ,,)
१३	डिमिट्रियास २य निकेटार	(१४७ ,,)
१४	अन्तियोकस ६ठ थियस	(१४४ ,,)
१५	त्रिफन	(१४२ ,,)
१६	अन्तियोकस ७म सिडेटिस	(१३७ ,,)
१७	अलेकसन्दर २य जेबिना	(१२८ ,,)
१८	सिल्यूकस ५म	(१२५ ,,)
१९	अन्तियोकस ८म ग्राइपास	(१२५ ,,)
२०	,, ९म साइजिकेनास	(११२ ,,)
२१	सिल्यूकस ६ठ एपिफिनिस	(९६ ,,)
२२	अन्तियोकस १०म यूसिबिस	(९५ ,,)
२३	,, ११श एपिफिनिस	(९५ ,,)
२४	फिलिप	(९५ ,,)
२५	डिमिट्रियास ३य यूकिरास	(९४ ,,)
२६	अन्तियोकास १२श डायुनिसियास	(८८ ,,)
२७	तिग्रानिस (अर्मेनियावासी)	(८३ ,,)
२८	अन्तियोकस १३ एसियाटिकास	(६९ ,,)

उसके पीछे सिरीया राज्य रोमकोंके हस्तगत हुआ।

आर्सकेस नामक किसी सिथियावासीने ग्रीक आजफ सागरके तीरसे जा करके इंरानियोंको ग्रीक अधीनता छोड़नेका परामर्श दिया और पार्थिया (पारद) साम्राज्य स्थापन किया। थियोडोटासके वाकट्रियामें स्वाधीन राज्य स्थापनके समय हो उक्त स्थापना हुई थी। थियोडोटासके अभ्युदयका मूल भी वही पारस्यविद्रोह था। वह सिरीयाके अधीन वाकट्रियाके शासनकर्ता थे।

आर्सकेसको मुसलमान ऐतिहासिकोंने अस्तू जैसा

अभिहित किया है। इनके मतमें वह फारसके प्राचीन राजवंशोद्भूत थे। इन्होंने राज्यलाभ करके प्रजासे कर न लेने जैसी प्रतिज्ञा की और छोटे छोटे राजाओं पर आधिपत्य जमाया। पारस्य इतिहासकी मुख्य उत् तोक गणना उसी समयसे प्रवर्तित हुई।

२य—पार्थिया (पारद) राजवंश।

१	आर्सेकेस	१म	२५५ (खृ० पू०)
२	तिरिडेटिस	१म	२५३ ,,
३	आर्टाबेनास	१म	२१६ ,,
४	फ्रापेटियास		१८६ ,,
५	फ्राहटिस	१म	१८१ ,,
६	मिथ्रिडेटिस	१म	१७३ ,,
७	फाहटिस	२य	१३६ ,,
८	आर्टाबेनास	२य	१२६ ,,
९	मिथ्रिडेटिस	२य	१२३ ,,
१०	मिनास्किरेस		८७ ,,
११	मिनाट्रोकेस		७७ ,,
१२	फ्राहटिस	३य	७० ,,
१३	मिथ्रिडेटिस	३य	६० ,,
१४	ओरोडिस	१म	५४ ,,
१५	फ्राहटिस	४र्थ	३७ ,,
१६	तिरिडेटिस	२य	३७ ,,
१७	फ्राहटिस	५म	३७ ,,
१८	ओरोडिस	२य	सन् ५ ई०
१९	ओनोनिस	१म	५ ,,
२०	आर्टाबेनास	३य	१२ ,,
२१	तिरिडेटिस	३य	,, ,,
२२	सिनामास		,, ,,
२३	आर्टाबेनास	३य	,, ,,
२४	बरडानेस		४२ ,,
२५	गोटार्जेस		४५ ,,
२६	मेहेरडेटिस		५० ,,
२७	भोनोनिस २य		५१ ,,
२८	भोलोजेसिस १म		५१ ,,
२९	आर्टाबेनास ४र्थ		६२ ,,
३०	पाकोरास		७७ ,,
३१	चोसरोज १म		१०८ ई०
३२	पार्थामासपटिस		११५ ,,
३३	चोसरोज २य		११६ ,,
३४	भोलोजेसिस		१२१ ,,
३५	,,	३य	१४८ ,,
३६	,,	४र्थ	१९२ ,,
३७	,,	५म	२०९ ,,
३८	आर्टाबेनास	५म	२०९ ,,
३९	आर्टाजेरकसेस १म (ससानवंशीय राजा)		२२५ ,,

३य—बाकट्रिया (बाह्लिक) राजवंश।

बाकट्रियाके इतिहासमें बड़ी गड़बड़ी है। वह कभी स्वाधीन, कभी सीरियाके अधीन रहा। इसका प्राचीन इतिहास अधिक नहीं मिलता। सम्प्रति उन राजाओंकी बहुसंख्यक मुद्राएं प्रकाशित होनेसे इस वंशकी छोटी मोटी तालिका पायी जाती है। अध्यापक विल्सनने १म थियोडोटासमे एक संक्षिप्त तालिका लगायी है। इस वंशके राजा लोग सकल स्थानोंके अधिकारी न रहे। प्रत्नतत्त्ववित् कनिङ्गहामने इस प्रकार तालिका दी है—

२५६ खृ० पू० डिओडोटास १म } बाकट्रियाना (सोगडियाना, बाकट्रिया
२४३ ,, , २य } और मार्जियानासह)

२४७ आगाथोक्लिस } परोपमिसिडि और नाइसा
२२७ पाण्टलोन }

२२० यूथिडिमास—बाकट्रियाना, आरियाना, (आरिया, ड्रङ्गिया, आर्कोसिया, परोपमिसिडि) नाइसा, गान्दारिटिस, प्युकेलाओटिस, और तक्षशिला।

१९५ डिमिट्रियास—यह सकल स्थान और राजत्व कालके शेषको पात्तालिन, सुराष्ट्रियाना, नेरिस।

१९० एनिथोक्लिस—बाकट्रियाना और परोपमिसिडि।

१८० आर्टिमेकास ध्योस—नाइसा, गान्दारिटीस प्यूकेलाओटिस और तक्षिला।
१८५ यूक्रेटाइडिस—बाकट्रियाना, आरिया, पात्तालिन, सुराष्ट्रीन, लेरिस, नाइसा, गान्दारिटिस, प्यूकेलाओटिस, तकशिला।
१७३ आर्टिमेकास न्यूकेफोरोस—नाइसा, गान्दारिटिस, प्यूकेलाओटिस, तकशिला और पूर्वोक्त राज्य।
१६५ फिलोकसेनिस—यही सब राज्य
निसियास—तकशिला व्यतीत यह सब।
आपोलोडोटास—यूक्रेटाडिस राज्यके बीच आरियाना, पात्तालिन, सुराष्ट्रिन और लेरिस।
१६५ जोइलास, डायोमिडिस, डायोनिसियास — केवल आरियाना
१५८ लिसियास—उत्तराधिकारित्वसे परोपमिसिडि प्राप्त हुए, निसियासके राज्य मध्य नाइसा, गान्दारिटिस, प्यूकेलाओटिस।
आण्टियालसाइडिस—लीसियासका राज्य।
आमिण्टास
आर्चिवियास—आण्टियल साइडिसका राज्य।
१६१—१४० मिनान्दार—परोपमिसिडि नाइसा, गान्दारिटिस, प्यूकेलाओटिस, तकशिला, पात्तालिन, लेरिस, सुराष्ट्रीन इत्यादि।
१३५ ष्ट्राटो—पात्तालिन, सुराष्ट्रनी और लेरिस भिन्न सब।
हिपोष्ट्रेटास, टेलिफास, थियोफिलास — ष्ट्राटोर राज्य।

यूक्रेटाइडिसके बाद आपोलोडोटास और मिनान्दारका नाम काव्यादिमें विख्यात है। मिनान्दार भारतवर्षके मध्य मथुरा तक सम्भवतः आये थे। क्योंकि काबुलसे यमुनातीर पर्यन्त स्थानमें उनकी मुद्रा देख पड़ती है। यह भारतीय ग्रन्थमें मिलिन्द नामसे ख्यात हैं।

इसके पीछे कुछ असभ्य राजाओंने प्रधान हो करके बाकट्रियाके राजाओंको निर्वासित किया।

४र्थ वर्बरिक राजगण।

१२६ हारमियास—परोपमिसिडि, नाइसा, गान्दारिटिस, प्यूकेलाओटिस, आरिया, ड्रङ्गिया आर्कोसिया, (पार्थियोंसे शकजातिने ग्रहण किया)
सोयस—तकशिला, पात्तालिन, सुराष्ट्रीन, लेरिस इत्यादि।
१५० काडफिसिस (युचि) हारमियासका राज्य और तकशिला।
भोनोनेस, स्पालिरिस, स्पालिरिजिस — परोपमिसिडि।
११० आजास—सोयसका राज्य, नाइसा, गान्दारिटिस, प्यूकेलाओटिस।
८० आजिलास—आजासके राज्य बीच शेष तीन और तकशिला, परोपमिसिडि।
सोटारमेगास—आजास और आजिलासका राज्य।
६० युचि (फिर) परोपमिसिडि, नाइसा, तकशिला इत्यादि।
२६ गाण्डोफिरिस—आरियाना।
आवडागासिस, सिनोकिस वा अब्डिगिसस — यही परोपमिसिडिको छोड़ करके।
४४ ई०। आर्सकेस यही
१०७ „ पाकोरिस—मोनेसिस वाकट्रियाना
२०७ „ आर्टेमन—अरिया, ड्रङ्गिया, आर्कोसिया।

अलेकसन्दर आगमनके बाद काकेशस पर्वतस्थ अलकजन्द्रिया, अरिगस, वजीरा, नाइसा, औरा, मस्सग (मशक) प्यूकेलाओटिस, अओरनिस (वरणा) आदि

स्थानोंमें मकदूनियावालोंने आ करके उपनिवेश स्थापन किया। सम्राट अशोकके खोदित अनुशासनमें पांच ग्रीक राजकुमारोंका उल्लेख है। यथा—अन्तियोक (Antiochus of Syria), तुरमय (Ptolemy Philadelphos of Egypt), अन्तिगोन (Antigonos वा Gonatas of Macedon), मग (Magas of Kyrene) अलमन्द्र। Alexander of Epirus)

डियोडोरास और जष्टिनके ग्रन्थपाठसे समझ पड़ता, अलेकसन्दर यूडिमस और तक्षशिलाको पञ्जाबके किसी किसी स्थानका शासनका भार दे गये थे। किन्तु उनके मरने पर युडिमासने पुरुराज (Porus) को निहत करके स्वाधीन बननेकी चेष्टा की। इस हत्याकाण्डमें मगधराज चन्द्रगुप्त भी लिप्त थे। उन्होंने ग्रीक सेनापति सिल्यूकासकी कन्यासे विवाह किया था। परन्तु ग्रीक वीर यूडिमसकी आशा सफल न हुई। पुरुराजके अधःपतनसे चन्द्रगुप्त सिन्धु नदी तीर पर्यन्त अधिकार करके राजचक्रवर्ती बने थे।

पञ्जाबके नानास्थानोंमें आपल्लोडोटास और मिलिन्द (Menander) नामक ग्रीक राजाओंकी अनेक मुद्राएं आविष्कृत हुई हैं। यह मुद्राएं एक ओर यूनानी और दूसरी ओर शासनीय वा असलमें संस्कृत भाषामें लिपि हैं। सौराष्ट्रमें शाह राजाओंकी जो स्वर्ण और रौप्य मुद्राएं मिली हैं, वह भी एक दिक् पर यूनानी और अपर दिक् पर संस्कृत वर्णमालामें खोदित हैं। ग्रीक राजा अपनी अपनी मुद्राओंमें भारतवासियोंके अनुकरणसे स्वस्तिक व्यवहार करते थे। आजकल भी ताजक और थोड़े बहुत उजबक लोग मुसलमान होते हुए भी अपनेको सिकन्दर रूमीके संश्रव जैसा बतलाते हैं। बदख्शाके ताजक सिकन्दरको एक पैगम्बर जैसा समझते हैं। इसन, मिश्र देश, रूम, यूनानी आदि शब्दमें विवरण देखो।

युप (अं॰ पु॰) झुण्ड, समूह, गरोह।

ग्रेटग्राइमर (अं॰ पु॰) छापाखानेका एक तरहका बड़ा अक्षर।

ग्रेटब्रिटेन (अं॰ पु॰) इंगलैण्ड और स्काटलैण्ड देश।

ग्रेन (अं॰ पु॰) एक जवके बराबर अंगरेजी तौल।

ग्रेनाइट (अं॰ पु॰) एकतरहका कठिन आग्नेय प्रस्तर। इसका वर्ण पीले और कुछ कुछ भूरे रंगका होता है। यह उस तरहके ग्रेनाइट संगमरमरकी नाईं उजले होते हैं। पुलकी कोठिया अथवा जहां मजबूतीकी आवश्यकता हो वहीं पर ग्रेनाइट काममें लाया जाता है। गरमी लगनेसे ही यह पत्थर बहुत जल्द चटक जाता। यह कड़े और खुरदरे होनेके कारण इसकी मूर्त्तियां बन नहीं सकतीं और खुदाईका सूक्ष्म कार्य भी इस पर नहीं हो सकता।

ग्रेजुएट (अं॰ पु॰) अंग्रेजी विद्यामें बी॰ ए॰ की डिग्री प्राप्त विद्वान।

ग्रेन (अं॰ पु॰) एक अंग्रेजी तौल जो १५ रत्तिसे कुछ ज्यादा होती है।

ग्रैव (सं॰ त्रि॰) ग्रीवायां भवं ग्रीवा अण्। १ जो गर्दन पर उत्पन्न हो। (क्ली॰) २ एक तरहका आभूषण जो गलेमें पहना जाता है।

ग्रैवाद्य (सं॰ पु॰) एक ऋषिका नाम।

ग्रैवेय (सं॰ त्रि॰) ग्रीवायां भव ग्रीवा ढञ्। ग्रैवेयी।

ग्रैवेयक (सं॰ क्ली॰) ग्रीवायां बद्ध अलङ्कार, ग्रीवा ढकञ्। १ ग्रीवाभूषण, गलेमें पहननेका गहना। यथा—हार, माला, हैकल, हँसली प्रभृति। २ हाथीकी हैकल। ३ जैन मतानुसार—सोलह स्वर्गोंके ऊपरके नौ विमान। इनमें अहमिन्द्र देव रहते हैं। जिस प्रकार अन्य स्वर्गोंमें इन्द्र, सामानिक आदि देवोंके भेद हैं और विभूति आदिसे हीनाधिक हैं उस प्रकार इन विमानोंके देव नहीं होते। सबको समान ऋद्धि और इन्द्रियजनित सुख होता है। ये विमान तीन तीनकी पंक्तिसे तिमञ्जले हैं। उनमें मन्दकषायी जीव ही पैदा होते हैं। (तत्त्वार्थ टीका)

ग्रैव्य (सं॰ त्रि॰) ग्रीवायां उत्पन्न ग्रीवा ष्यञ्। ग्रैव्यी।

ग्रैष्म (सं॰ त्रि॰) ग्रीष्मे भव। १ जो ग्रीष्म ऋतुमें उत्पन्न होता हो। २ उष्ण सम्बन्धीय, गरमीका।

ग्रैष्मक (सं॰ त्रि॰) ग्रीष्मे वसन्ते भव ग्रीष्म वुञ्। जो गरमियोंमें उत्पन्न होता हो।

ग्रैष्मायण (सं॰ पु॰ स्त्री॰) ग्रीष्मस्य अपत्यं गोत्रापत्य ग्रीष्म अश्वादि फञ्। ग्रीष्म नामक ऋषिके वंशज।

ग्रैष्मिक (सं॰ त्रि॰) ग्रीष्मं ग्रीष्मकाल वेत्ति तत्प्रतिपादकं

ग्रन्थमधीते ग्रीष्म-ठञ्। जो ग्रीष्म ऋतुका धर्म जानता हो, जो ग्रीष्म-विवरणप्रतिपादक शास्त्र अध्ययन करता हो।

ग्रैष्मिका (सं० स्त्री०) नवमल्लिका, सेवती।

ग्लटन (Glutton) एक भयानक मांसाहारी पशु। इसका शरीर बहुत स्थूल, किन्तु मस्तक बहुत छोटा होता है। आंख छोटी और दांत तथा चारों पावोंके नख बहुत कठिन होते हैं। इसके शरीरके बाल कोमल होनेके कारण यह बहुमूल्यमें बेचे जाते हैं। चार ही मासमें गर्भधारण कर एक समयमें २ या तीन बच्चे प्रसव करती है।

यह भालूकी जातिका पशु है। उत्तर महासागरके निकटवर्त्ती देशमें यह अधिकतासे पाया जाता है। यह दौड़नेमें बहुत तेज एवं चतुर है। छागादिको पकड़नेके लिये वृक्षके ऊपर चढ़ कर छिप बैठता और जब छाग या हरिणको वृक्षके नीचे आया देखता तो बहुत चलाकीसे उसके ऊपर कूद पड़ता है एवं दाँत और नख द्वारा



मजबूतीसे पकड़ कर मांस निचोड़ लेता और तब रक्त पान करने लगता है। क्षुधाकी तृप्ति हो जाने पर चला जाता अथवा दो या तीन दिन तक उसी मृत पशुके निकट सोया रहता और अन्तको उसका माँस और हड्डी खा डालता है।

ग्लपन (सं० क्ली०) ग्लै णिच् पुक् ह्रस्वश्च ततो भावे ल्युट्। १ ग्लानिकरण, निन्दा, शिकायत। २ शिथिलता, श्रम, खेद। (त्रि०) ग्लै णिच् कर्त्तरि ल्यु। ३ ग्लानिकारक निन्दा करनेवाला। ४ जो मनुष्यके शरीरमें शिथिलता वा खेद उत्पन्न करता हो।

ग्लपित (सं० त्रि०) ग्लै णिच् कर्मणि क्त। १ ग्लानीकृत, अनुत्साहित, लज्जित। २ दग्ध, जला हुआ, झुलसा हुआ।

ग्लप्स (सं० पु०) गुच्छ, स्तवक, गुच्छा, समूह।

ग्लस्त (सं० त्रि०) ग्लस कर्मणि क्त। भक्षित, खाया हुआ, निगला हुवा।

ग्लह (सं० पु०) ग्रह-अप् निपातने साधु। १ पाशा खेलनेका पण, दाव, बाजी। (क्रि०) २ जूआ खेलना। ३ लेना। ४ स्वीकार करना।

ग्लहन (सं० क्ली०) ग्लह भावे ल्युट्। द्युतिक्रीड़ा, जूआका खेल।

ग्लास्नु (सं० त्रि०) ग्लै-स्नु। १ ग्लानियुक्त, जिसको खेद हो। २ जो थक गया हो।

ग्लान (सं० त्रि०) ग्लै कर्त्तरि क्त। १ रोगसे जिसका शरीर क्षीण हो गया हो, बीमार, रोगी २ थका हुआ। ३ कमजोर। (क्ली०) ग्लै भावे क्त। ४ दैन्य, दीनता, दरिद्रता।

ग्लानि (सं० स्त्री०) ग्लै भावे नि। १ दौर्बल्य, दुर्बलता। साहित्यदर्पणके अनुसार ग्लानि व्यभिचारिभावके अन्तर्गत है। रति, परिश्रम, मनस्ताप, क्षुधा और पिपासादि द्वारा उत्पन्न दौर्बल्यका नाम ही ग्लानि है। इसमें शारीरिक वा मानसिक शिथिलता, अनुत्साह और खेद हुआ करता है। २ स्वकार्यमें अक्षमता, अपने कार्यकी बुराई या दोष आदिको देख कर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता होनेवाली मनकी वृत्ति।

ग्लान्य (सं० क्ली०) शक्तिकी क्षीणता, कमजोरी।

ग्लाव (सं० पु०) द्व्यामुष्यायण नामक ऋषि।

ग्लाविन् (सं० त्रि०) ग्लै बाहुलकात् विन्। हर्षशून्य, अप्रसन्न, असंतुष्ट।

ग्लास्नु (सं० त्रि०) ग्लानियुक्त, ग्लान, कमजोर, बीमार, रोगी।

ग्लुचुक (सं० पु०) ऋषिविशेष, एक ऋषिका नाम।

ग्लुचुकायनि (सं० पु०-स्त्री०) ग्लुचुकस्य गोत्रापत्यं ग्लुचुक-फिञ्। ग्लुचुक नामक ऋषिके वंशज।

ग्लेपन (सं० क्ली०) ग्लेप दैन्ये ल्युट्। दैन्य, दीनता, दरिद्रता।

ग्लेय (सं० त्रि०) ग्लानिके योग्य, जिसकी निन्दा करना उचित हो।

ग्लेव (सं० क्रि०) अर्चना करना, पूजा करना।

ग्लौ (सं० पु०) ग्लायति क्षयं प्राप्नोति क्षयपक्षे ग्लै-

डौ। १ चन्द्र, चाँद। २ कर्पूर, कपूर। ग्लायन्ति ग्लै डौ। ३ हृदयकी नाड़ी।

ग्लौचुकायनक (स० त्रि०) ग्लुचुकायनि भक्ति मेऽस्य ग्लुचुकायनि वुञ्। ग्लुचुकायनिका सेवक।

ग्वाड़ा (हि० पु०) १ गुच्छ, घेरा, वृत्त। २ घरके चारो ओरका बाड़ा।

ग्वार (हि० स्त्री०) गोराणी, एक तरहका पोधा। इसके फलको तरकारी और बीजकी दाल होती है। चौपाए इसके पत्ते बहुत रुचिसे खाते हैं। यह वर्षाके आरम्भमें बोई जाती और जाड़ेके मध्यमें तैयार हो जाती है। इसके फलका गुण—बादी, मधुर भारी, दस्तावर, पित्त नाशक, दीपक और कफनाशक है। इसको सेवन करनेसे रतौंधी दूर होती है। कौरी, खुरथी।

ग्वारनट (अ० स्त्री०) एक तरहका सुन्दर रंगीन रेशमी वस्त्र।

ग्वारपाठा (हि० पु०) घृतकुमारी, घीकुआँर।

ग्वारिन (हि० स्त्री०) गोपकी स्त्री, ग्वालिन्।

ग्वारी (हि० स्त्री०) ग्वार देखो।

ग्वाल (हि० पु०) अहीर, गोप।

ग्वाल—एक पुराने हिन्दी कवि। १६५८ ई०को उनका जन्म हुआ।

ग्वालककड़ी (हि० स्त्री०) एक तरहका जंगली चिचड़ा। इसके बीज, जड़ और पत्ते औषधके काम आते हैं। लाल रंगके इसमें एक तरहके छोटे फल भी लगते हैं।

ग्वालककरी (हि०) ग्वालककड़ी देखो।

ग्वालकवि—युक्तप्रदेशके मथुरा नगरवासी एक भाट। १८१५ ई०को उनका दौर दौरा था। साहित्यमें वह बड़े प्रवीण थे। उनके प्रधान ग्रन्थ यह हैं—१ साहित्यभूषण, २ साहित्यदर्पण, ३ भक्तिभाव, ४ शृङ्गारदोहा, ५ शृङ्गार कवित्त। उन्होंने नखशिख, गोपीपचीसी, यमुनालहरी (१८२२ ई०) आदि हिन्दीकी छोटी मोटी किताबें भी लिखी हैं। यह देवदत्त और पद्माकरके समसामयिक थे।

ग्वालदाडिम (हि० पु०) एक तरहका क्षुप या पेड़। यह मासकांगनीकी लीमना रीता और अफगानिस्तान, पञ्जाब तथा उत्तर भारतवर्षमें होता है।

ग्वालपाड़ा—१ आसाम प्रदेशके पश्चिममें एक जिला। यह अक्षा० २५ २८ तथा २६ ५४ उ० और देशा० ८९ ४२ एवं ९१ ५ पू०के मध्य ब्रह्मपुत्र नदीके दोनों कूल पर अवस्थित है। इसके उत्तर भूटान राज्यस्थ पर्वतमाला तथा दक्षिणमें पार्वतीय गारो जिला, पूर्वमें कामरूप और पश्चिममें रङ्गपुर जिला, जलपाइगुड़ी जिला तथा कोच-विहार राज्य है। भूपरिमाण लगभग ३९६१ वर्गमील है। लोकसंख्या प्राय ४६२०५२ है। ब्रह्मपुत्र नदीके बांये तट पर ग्वालपाड़ा नगर है। यहां जिलाके विचार विभाग और सदर अदालत है।

जिस स्थान पर ब्रह्मपुत्र नद वक्रगतिसे प्रायः दक्षिणाभिमुख हुई है, ब्रह्मपुत्रकी उसी छोटी उपत्यका पर बहुतसे मनुष्योंके वासस्थान हैं। नदीके बांये कूल पर आठ मीलसे अधिक विस्तृत समतलभूमि देखी नहीं जाती। नदीके उत्तरतीरवर्ती भूमिसमूहमें खेती होती है। ग्रामकी चारो ओर धान्यक्षेत्रके मध्य बहुतसे फलशाली वृक्ष देखे जाते हैं। जिलाकी उत्तरी सीमामें जङ्गलमय गिरिमाला है, जिसके ऊपर दूरस्थ बर्फसे ढकी हुई हिमालयकी चोटी है। ये सब दृश्य ऐसे सुंदर हैं कि देखनेसे ही नयन और मन तृप्त होते हैं। पहाड़के ऊंची भूमि पर गेरूमट्टी, ग्रेनाइट और बालूके पत्थर देखनेमें आते हैं।

इस जिलाके उत्तर भूटान पर्वतश्रेणीसे मानस, गदाधर और सङ्कोश नामकी नदियां पूर्वद्वारके मध्य प्रवाहित हो ग्वालपाड़ा जिलामें ब्रह्मपुत्र नदीसे मिली है। इन नदियोंमें सब ऋतुमें वाणिज्य द्रव्य ले जानेके लिये बड़ी बड़ी नाव आती जाती हैं। खरस्रोता ब्रह्मपुत्र नदीने अपने प्रबलवेगसे बहुत स्थानको काट जलप्लावित कर दिया है तथा कहीं बालू जमा हो कर नदीके बीच छोटे छोटे टापूसे बन जाता है। इस नदीसे प्रतिवर्ष भयानक बाढ़ आती जिस कारण बहुतसे ग्राम भस जाते और मार्गोंको क्षति होती है।

पूर्वद्वारमें गवर्मेण्टके अधिकृत वन समूहका भूपरिमाण लगभग ७८० वर्गमील है। ग्वालपाड़ा जिलेमें बाघ, गैंडा और महिषादि नाना प्रकारके जङ्गली जन्तु देखे जाते हैं। प्राय तीन वर्ष पहले राजस्वविभागसे

आदेश हुआ था कि जो मनुष्य जंगली जानवरको मार सकेगा उसे पारितोषिक दिया जायगा।

इस जिलाके बहुतांश प्राचीन कामरूप राज्यके अन्तवर्ती थे। उस समयमें निर्मित ठाकेश्वरोंके प्रधान मंदिरका ध्वंशावशेष देखा जाता है। कोचविहार-राजवंशकी वृद्धिके साथ साथ यह राज्य क्रमशः बहुतसे छोटे छोटे विभागमें परिणत हुआ है। जिलाके मध्य वर्तमान विजनीद्वारके राजाकी एक बड़ी जमींदारी है। ये अपनेको कोचविहार राजाके कनिष्ठ पुत्रके वंशधर बतलाते तथा उक्त सम्पत्ति राजवंशीयगणोंकी भरणपोषणार्थ प्राप्त वृत्ति कह कर दावा करते हैं।

१६वीं शताब्दीमें दोनों ओरसे दो शत्रु सैन्यदल ग्वालपाड़ा आक्रमण करनेके लिये आये थे। पूर्वाञ्चलसे असभ्य आहोम जाति धीरे धीरे ब्रह्मपुत्रकी उपत्यकाभूमिमें आ पहुंची। इसी जातिके नाम पर इस प्रदेशका नाम आसाम हुआ है। पश्चिमसे मोगल दिल्ली साम्राज्यमें इस्लाम धर्म बढ़ानेके लिये क्रमशः अग्रवर्ती हुए थे। अफगानोंके हाथसे मानसिंह द्वारा वङ्ग अधिकृत होनेके २७ वर्ष पीछे १६०३ ई०को मोगलने पहले पहल आ आसाम उपत्यकासे दरङ्ग जिला तककी भूमि दिल्लीमें मिला दी थी। शीघ्रही आहोम जातिके साथ उन्हें लड़ाई छिड़ी।

१६६२ ई०में गौहाटीके निकटवर्ती प्रदेशमें मोगल-सेनाके अध्यक्ष मीरजुमला आहोमसे पराजित और विशिष्ट रूपसे क्षतिग्रस्त हो भागनेके लिये बाध्य हुए थे। इस नगरमें तथा ब्रह्मपुत्रके उस पार अवस्थित राङ्गामटी नामक स्थानमे सैनिकावास निरूपित हुआ। स्थानीय जङ्गलभूमिका देखभाल और अहोम जातिसे इस प्रदेशकी रक्षा करनाही उक्त सैनिकोंका प्रधान कार्य था।

मोगल राज्याधिकारके समय इस जिलाके प्रायः २२ अंश मनुष्य इस्लामधर्ममें दीक्षित हुए थे। १७९३ ई०को चिरस्थायी प्रबन्धके समय इस जिलाका राजस्व ११७००) रुपये निरूपित हुये थे। वृटिश शासनके समयसे ही रङ्गपुर जिलाके साथ इस जिलाका शासनकार्य स्वतन्त्र भावसे चला आता था, किन्तु १८२२ ई०से एक कमिश्नरके अधीन इसका शासनकार्य स्वाधीन रूपसे चला आ रहा है।

बहुत दिनोंसे ग्वालपाड़ा नगर राजनैतिक और वाणिज्य-विषयमें प्रधान स्थानके जैसा गण्य था। १७८८ ई०को मिष्टर रउत नामक एक अङ्गरेज वणिकने मोआमारिआओंका विद्रोह दमनके लिये अपने खरचसे मान्य मी सम्भ्र व्यक्ति हो आसामराजका सहायता की थी। १८२५ ई०में आसाम प्रदेश अङ्गरेजके हाथ आने पर ग्वालपाड़ा जिला उक्त नव अधिकृत प्रदेशमें मिला दिया गया था। किन्तु यहांका राजस्व वसूल करनेका कार्य बङ्गालके नियमानुसार चलता है। १८६४ ई०को भूटान युद्धके बाद भूटीयाने द्वारराज्य अङ्गरेजोंके हाथ सौंप दिया था। १८६८ ई०में ग्वालपाड़ाको दीवानी और फौजदारी विचारकार्य आसामके जुडिसियल कमिश्नरके हाथ अर्पित हुआ। १८९२ ई०में आसाम प्रदेश बङ्गालसे स्वतन्त्र भावसे संगठित हुआ था। यहां एक डिप्टी कमिश्नर है। तीन मजिष्ट्रेट, कलेक्टर और सबरडिनेट जजका काम करते हैं।

इस शताब्दीके प्रथमभागमें हामिल्टन बुकानन साहबने ग्वालपाड़ा माप कर इसका भूपरिमाण २६१५ वर्गमील स्थिर किया था। इसके बाद इसका भूपरिमाण २५७१ वर्गमील निरूपित हुआ।

इस प्रदेशमें राभा, मेच, कछाड़ी, गारो प्रभृति आदिम जातिका वास है। इन्हें छोड़ कोच जातिकी संख्या भी अधिक है।

धान्य यहांको प्रधान फसल है। हैमन्तिक, शाली या आमन धान आषाढ़में तथा आउस धान फाल्गुन मासमें बोया जाता है। जलभूमिमें बाव नामक एक तरहका धान्य फाल्गुनमासमें बोया जाता और कार्त्तिकमासमें काटा जाता है। यहां जोतदारी बन्दोबस्तमें अधिकांश जमीन है १८६३ ई०में टिड्डिने यहांको समस्त फसल नष्ट कर दी थी। इसके अलावे प्रतिवर्ष बाढ़के समय जिलाका उत्तरांश जलसे डूब जाता है, किन्तु इस तरहकी बाढ़से दुर्भिक्ष नहीं होता।

यहां कीड़ेके गोलीसे एड़िया और मुगा रेशम निकाले जाते और इससे वस्त्रादि निर्मित होते हैं, इसके सिवा सरसों, पाट, कपास, बहादुरी काठ, आसामी अण्डी वस्त्र, भारतीय रबर और चाय प्रभृतिकी रफ्तनी होती

है। यहांके ग्वालपाडा, धुवडो, योगीगोफा विजनो, गोरी पुर तथा सिङ्गिमारो नगर ही प्रधान वाणिज्यस्थान हैं।

सुचारु रूपसे विचारकार्य चलानेके लिये यह जिला दो उपविभागसे विभक्त हुआ है। यहां सब मिलाकर ८ थाना है।

२ उक्त जिलेका एक विभाग। यह आसाम प्रदेशस्थ गारो पर्वत और ब्रह्मपुत्र नदके मध्य अक्षा० २५° ५२´ तथा २६° ३०´ उ० और देशा० ९० ६ एव ९१ ६ पू०में अवस्थित है। इसका दक्षिण पूर्वांश उक्त नदीके ऊपर कूल तक विस्तृत है तथा कहीं कहीं छोटी छोटी पहाड़ियोंसे सुशोभित है। ग्वालपाड़ेकी अधिकांश जमीन नीची और जलाशयोंसे परिपूर्ण है। यहांके कामारकाटा और तामराङ्गा नामके दो बड़े जलाशय ग्रीष्मकालमें भी जलसे भरे रहते हैं। आसाम प्रदेशके अन्यान्य स्थानों की तरह ग्वालपाड़ा भी विशेषरूपसे प्रसिद्ध कालाज्वर द्वारा आक्रान्त होता है। इसी लिए १८८१से १८९१ तक दश वर्षोंमें लोकसंख्या फीसदी १८ घट जाती है।

नदीके किनारे धान और सरसोंकी फसल बहुत होती है, परन्तु १८९७ ई०के भीषण भूमिकम्पके बादसे बाढ़के कारण यहांकी फसल बिगड जाती है। ग्वाल पाड़ा विभागकी जनसंख्या ६२४७ है। इसका शासन एक भारतीय शासनकर्त्ताके द्वारा परिचालित होता है। शासनकर्त्ताके सुभीतेके लिए यह ग्वालपाड़ा, दुधनिया, लक्ष्मीपुर और उत्तर सालमारा इन ६ थानोंमें विभक्त कर दिया गया है। इसमें ३८५ ग्राम लगते हैं।

३ उक्त जिलेका एक प्रधान शहर। यह ब्रह्मपुत्र नदके दक्षिण तट पर अक्षा० २६° १०´ उ० और देशा० ९०° १८´ पू०में अवस्थित है। आसामके साथ संयुक्त होनेसे पहले ग्वालपाड़ा इष्ट इण्डियन कम्पनीके अधिकृत सीमांत स्थान समूहमें प्रधान नगर था और यहांके रहनेवाले अंग्रेज बङ्गालमें वाणिज्यका पूर्णाधिकार प्राप्त कर देशीय वणिकोंके साथ लाभमूलक व्यवसायमें एक प्रकार बन गये तथा देशीय व्यापारियोंने भी आसाममें व्यवसाय सम्बन्धी कर्तृत्व लाभ कर बहुत अर्थ उपार्जन करने लगे थे। अंग्रेज गवर्मेण्टने सबसे पहले १७८८ ई०में आसाम गवर्मेण्टके वैषयिक व्यापारमें हस्तक्षेप करनेका प्रयत्न किया था। इसी वर्षमें राउश नामक किसी एक लवण व्यवसायीने विद्रोहको दबानेके लिए ग्वालपाडाके राजा को ७०० सिपाहीकी सहायता दी, किन्तु दुर्भाग्यवश उनमेंसे कोई भी जीता नहीं लौटा। राउशके दो शिशु सन्तानोंकी स्मृति स्वरूप एक कुटीरका खण्डहर नदीके किनारे अभी तक पड़ा है।

उस स्थानसे दक्षिणकी ओर ब्रह्मपुत्रकी अधित्यकामें वनवृक्षशोभित क्षुद्र पर्वतमाला और उत्तरमें बरफसे ढके हुए हिमालयकी शोभा दीख पड़ती है। १८७९ ई०से जिलेका प्रधान कार्यालय ग्वालपाड़ासे धुवड़ीको चला गया और तभीसे यह एक उपविभागमें गिना जाता है।

ग्वाला (हिं०) गोप देखो।

ग्वालिन (हिं० स्त्री०) १ ग्वालाकी स्त्री। २ ग्वार, सुरयी, कौरी।

ग्वालियर—१ मध्यभारत एजेंसीका मुल्की हकुमत। (Residency) इसमें मध्यभारतके पश्चिमीय विभागका उत्तरी हिस्सा सामिल है। यह उत्तरमें चम्बलसे दक्षिण भिलसा तक और पूर्वमें बुन्देलखण्ड तथा युक्तप्रदेशसे पश्चिममें राजपूताना एजेन्सी तक फैला हुआ है। यह अक्षा० २३° २१´ तथा २६° ५२´ उ० और देशा० ७६° २८´ एव ७९° ८´ पू०में पड़ता है। इसका भूपरिमाण १७८२५ वर्गमील है।

यहां लगभग २१८७६१२ मनुष्य बसते हैं, जिनमेंसे १८८३०३८ हिन्दू और शेषमें मुसलमान तथा जैन हैं।

२ भारत गवर्मेण्ट तथा मध्यभारत एजेन्सीके राज नैतिक सम्बन्धमें आबद्ध देशी राजाके अधीन एक विस्तृत राज्य। प्रसिद्ध महाराष्ट्र सर्दार सेन्धियाके वंशधर यहां राज्य करते थे। कई एक विभिन्न जिला ले कर यह राज्य संगठित है। इसके पूर्वमें युक्तप्रदेशका जालौन और झांसी जिला तथा मध्यप्रदेशका सागर जिला, दक्षिणमें भूपाल, खिलचीपुर और राजगढ़, पश्चिममें झालावार और कोटाराज्य है, तथा उत्तर, उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिममें चम्बल नदीने राजपूतानाके धौलपुर और करौली नामक स्थानोंको विभक्त किया है। इसी चम्बल नदीने आगरा और इटावाको विभक्त कर दिया है। १८६० ई०के पहले नर्मदा नदीके दक्षिणस्थ प्रदेश सेन्धियाके अधिकारमें

था। किन्तु १८६१ ई०में इन्होंने उक्त प्रदेशको सिन्धु और वेतावा नदीकूलस्थ प्रदेशके साथ बदल लिया था। प्राचीन आगरा और मालव प्रदेशका बहुतांश ग्वालियर राज्यमें मिलता है। यह अक्षा० २२° १०´ तथा २६° ५२´ उ० और देशा० ७४° ३८´ एवं ७९° ८´ पू०में अवस्थित है। भूपरिमाण २५०४१ वर्गमील है।

ग्वालियरके उत्तर-पूर्व सीमामें आगराकी निकटवर्त्ती जमीन साधारणतः समतल और कुछ कुछ उर्वरा है। जलस्रोतके निकट स्थान स्थान पर गहरा गड्ढा देखा जाता। इसके दक्षिण ग्वालियर नगरके निकट जमीन क्रमशः ऊंची होती आई है। समतल क्षेत्रकी जगह जगह यह पहाड़ हैं। जिनमेंसे एकके ऊपर विख्यात ग्वालियर दुर्ग स्थापित है। इस राज्यके मालव अधित्यकाका अंश लगभग १५०० फीट ऊंचा होगा। मन्दु-शिखरका उपरिस्थ शैजगढ़ नगर समुद्रपृष्ठसे २६२८ फीट ऊंचा है।

मन्दु शिखरसे यह अधित्यका उत्तर पूर्वमें कुछ कुछ ढाल हो गई है। उस ढाल हो कर बहुतसे जलस्रोत चम्बल नदीमें जा गिरे हैं। इसका दक्षिण अंश उत्तरकी नाईं ढाल नहीं है।

बहुतसी नदियां इस राज्य हो कर बहती हैं। इनमेंसे नर्मदा, चम्बल और सिन्धु प्रधान हैं। इन्हें छोड़ कुवारी, असर, शङ्क प्रभृति कई एक क्षुद्र जलस्रोत राज्यके उत्तरांशसे निकल सिन्धु नदीमें जा गिरे हैं।

ग्वालियरके दक्षिण-पश्चिममें बहुत अफीम उत्पन्न होता जो मालवा ओपियम (Malwa Opium) नामसे मशहूर है। यहां यव, गेहूं, जोआर, बजरा, मूङ्ग, भुट्टा, धान, हल्दी, अदरक, ऊख, नील, उत्कृष्ट तम्बाकू और कपास होते हैं।

बुर्हानपुर नामक स्थानमें सुन्दर कपास और रेशमीका कारबार है। चन्देरी नगरमें पहले अच्छे अच्छे सूती वस्त्र तैयार होते थे ; अभी विलायती वस्त्रकी आमदनी होने पर उक्त व्यवसायकी कमी हो गई है।

ग्रीष्मकालमें यहांका जलवायु उतना अस्वास्थ्यकर नहीं है। वर्षाऋतुमें इस राज्यके उत्तरांशमें ज्वरका प्रादुर्भाव देखा जाता है। जङ्गली जंतुओंमें व्याघ्र, चीता, भालु, बघेरा, हायना, जङ्गली कुत्ता, गीदड़, जलमार्जार, नकुल (नेवला), इन्दूर, जङ्गली शूकर, नीलगाय, छुछुंदर, नानाजातिके हरिण, महिष, बन्दर, शल्य (ख्वारपुश्त), खरगोश, अनेक तरहके पक्षी और सर्प पाये जाते हैं।

इतिहास—ग्वालियर नगर कब स्थापित हुआ इसमें मतभेद है। कवि खड़्गरायके मतसे कलियुगके प्रारम्भमें तथा फजल अलि और हीरामनके मतानुसार ३३६ विक्रम सम्वत्में अर्थात् २७५ ई०को यह नगर सूर्यसेनसे स्थापित हुआ था। प्रत्नतत्त्ववित् कनिंहमने लिखा है कि "तोरमाणके पुत्र राजा पशुपतिके राज्यकालमें उनके मन्त्रीने सूर्यमन्दिर स्थापित किया था। उसी समय ग्वालियरका दुर्ग स्थापित और सूर्यकुण्ड खोदा गया था।"*

ग्वालियरके दुर्गमें प्राप्त मिहिरकुलके १५वीं सम्वत्-सरज्ञापक शिलालिपिमें लिखा है कि मातृचेट नामक एक मनुष्यने उक्त सूर्यमन्दिर प्रतिष्ठा की थी।

तोरमाण और मिहिरकुल देखो।

प्राचीन गुालियर नगर किस समय निर्मित हुआ था यह ठीक कहा नहीं जाता। महाभारतमें यह जनपद गोपराष्ट्र नामसे तथा मिहिरकुल प्रभृतिके समय उत्कीर्ण शिलाफलकमें "गोपाह्वय भूधर", "गोपाचल", "गोपाद्रि" इत्यादि नामसे अभिहित हुआ है।

खड़्गरायने लिखा है कि—कच्छवाह वंशीय कुन्तलपुरीके राजा सूर्यसेनको कुष्ठरोग हुआ था। एक दिन वे गोपगिरिके निकट आखेटके लिये गए थे। यहां इन्होंने तृष्णार्त हो गुालिया नामक एक सिद्धके गुहामें जा जलके लिये प्रार्थना की। सिद्धने कमण्डलुसे जल ला कर राजाको पीनेके लिये दिया था। जल पीते ही सूर्यसेन कुष्ठ रोगसे मुक्त हो गये। उस समय राजाने कृतज्ञ हृदयसे हाथ जोड़ सिद्धका कोई अभीष्ट पूर्ण कर देनेकी प्रार्थना की। सिद्ध पुरुषने उन्हें गोपगिरिके ऊपर दुर्ग निर्माण और कुण्डको बड़ा आकारमें बना देनेके लिये कहा। सूर्यसेनने भी उनकी आज्ञानुसार दुर्ग निर्माण कर उसका नाम "ग्वालि-आवर" या "ग्वालियर" और बड़ा कूप काट कर उसका नाम सूर्यकुण्ड रखा। सिद्धने सूर्य-

* Cunningham's Arch. Sur. Rept. Vol II. p 372.

मैनका दूसरा नाम सुहनपाल दिया। खड्गराय और फजल अलिके मतमें सुहनपालसे ले ८४वीं पोढ़ीमें तेजकर्णने जन्म लिया था उन्हींके समयमें ग्वालियर दूसरेके हाथ आ गया था। खड्गराय, वदलीदास प्रभृतिका मत है कि तेजकर्ण राजा रणमल्लकी कन्यासे विवाह करनेके लिये देवास गये थे। जानेके समय अपने भानजे परमाल्देवके ऊपर राज्यभार सौंप गये थे। रणमल्लको कोई पुत्र न होनेसे जामाता तेजकर्णको ही अपना राज्य अर्पण किया था। इधर परमालने मामाको मधुर वचनमें लिख भेजा कि ग्वालियरका राज्य उसे ही प्रदान करें। तेजकर्णने इसे अङ्गोकार न किया। इस पर परमालने विद्रोही हो मामाको कहला भेजा कि वे अब ग्वालियरके दुर्गका अधिकार पा नहीं सकते। इस तरह ग्वालियर परिहार वंशोय परमाल या परमर्दी देवके हाथ आया था। खड्गराय प्रभृतिके मतानुसार परमाल ११२६ ई०में राजसिंहासन पर बैठे थे। टाड साहबने लिखा है कि, 'ग्वालियरके अन्तिम कच्छवाह राजा ढोलारायने १०२३ सम्वत्‌को राज्य छोड़ दिया था।' खड्गरायने लिखा है कि दुल्हाराय ग्वालियरमें सिर्फ एक वर्ष राजा कर विवाह करनेके लिये चले गये थे और विवाहके एक वर्ष बाद इन्होंने श्वशुर-का राज्य पाया था। इसके बाद ही परमाल विद्रोही हो गया था। सुतरां परमालने जब ११८६ सम्वत्‌में राजारोहण किया है तब दुल्हाराय या तेजकर्णने १०२३, १०६२ या ११६७में राजा छोड़ा, यह बात ठोक नहीं जचती। खड्गरायने दुल्हाराय और उनके पूर्ववर्ती कच्छवाह राजाओंके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है उसका अधिकांश काल्पनिक मालूम पड़ता है, क्योंकि ग्वालियरमें आविष्कृत शिलालिपि द्वारा जाना जाता है कि ६वीं शताब्दीमें ग्वालियर महाराज रामदेव और उनके पुत्र महाराज भोजदेवके अधीन था। भोजदेव ८६२ से लगभग ८८२ ई० तक विद्यमान थे। प्रत्न तत्त्वविद् कनिंहमका मत है कि पहलेसे हो बराबर स्वाधीनभावसे न हो करद रूपसे हो कच्छपघातवंश ग्वालियरमें राजत्व करते थे। उक्त भोजदेवके कनिष्ठ पौत्र विनायकपालके बाद कच्छपघातवंशीय वज्रदामा ग्वालियरको अधिकार कर नवराजवंशके प्रतिष्ठाता हुये थे। यहांके जैनदेवमूर्तिके पवित्र अङ्गमें उत्कीर्ण वज्रदामाको शिलालिपि पढ़नेसे जाना जाता है कि ये लक्ष्मणके पुत्र थे और इन्होंने हो पहले गोपगिरिदुर्गमें जयढक्का बजाया था। सासबहूके मन्दिरमें ११५० और ११६० सम्वत्‌को उत्कीर्ण उस वंशके राजा महिपालको दो शिलालिपिसे जाना जाता है कि वज्रदामाके पुत्र मङ्गल, मङ्गलके पुत्र कीर्तिपाल, कीर्तिपालके पुत्र भुवनपाल, भुवनपालके पुत्र देवपाल, देवपालके पुत्र पद्मपाल, पद्मपालके पुत्र सूर्यपाल तथा सूर्यपालके पुत्र महाराज महीपाल थे। वे सबके सब ग्वालियरमें राजा करते थे। इसके बाद एक वृहत् मर्मर प्रस्तरमें ११६१ सम्वत्‌को उत्कीर्ण शिलालिपिमें भुवनपालके पुत्र कच्छपघातवंशीय मधुसूदन नामक एक राजाका नाम पाया जाता है। मधुसूदनके बाद उनके वंशके और किसी दूसरे राजाके नाम शिला-लिपिमें नहीं पाये जाते। सम्भवतः मधुसूदनके राजत्व अवसानमें कच्छवाह वंशियोंके हाथसे ग्वालियर राज्य अप-हृत हुआ था। इसके अनन्तर १२०७ सम्वत्‌में उत्कीर्ण परिहारवंशीय रामदेव और गोविन्दचन्द्रके नाम पाये जाते हैं। खड्गराय और वदलोदासके ग्रन्थमें लिखा है कि परमालदेव (परमर्दिदेव) के पुत्र रामदेव थे। पर-माल हो ग्वालियरके परिहारवंशीय प्रथम राजा थे। ये ११८६ सम्वत् (११२८ ई०)में और इनके पुत्र रामदेव १२०५ सम्वत् (११४८ ई०) में सिंहासन पर बैठे थे। रामदेवके बाद क्रमानुसार १२१२ सम्वत्‌में इनके पुत्र हम्मीरदेव, १२२५ स०में हम्मीरदेवके पुत्र कुवेरदेव, १२३६ सवत्‌में इनके पुत्र रत्नदेव, १२५१ सवत्‌में इनके पुत्र लोहङ्गदेव तथा इनके बाद १२६८ स०में इनके पुत्र सारङ्गदेवने राजा प्राप्त किया था। विख्यात मुसलमान ऐति-हासिक फरिस्ताने लिखा है कि "वहाउद्दीन तुग्रीलने प्रायः एक वर्ष ग्वालियर अवरोध किया था। इस समय इन्होंने पर्वतको चारों ओर बहुतसे छोटे छोटे दुर्ग निर्माण किये थे। ग्वालियरके राजाने राज्यरक्षामें असमर्थ हो अन्तमें गुप्तरूपसे कुतबुद्दीन आइबेगको बुलाया। तदनुसार आइबेगने सैन्य भेज कर ग्वालियरको अधिकारमें कर लिया।' इनके पुत्र आरामने थोड़े दिन तक यहां राजा किया था। इसके बाद १२१० ई०को

हिन्दुओंने मुसलमानोंके हाथसे इस स्थानका पुनरुद्धार किया। खड्गरायने लिखा है कि १२८६ सं० (१२३२ ई०)में अल्तमासने ग्वालियर पर आक्रमण किया था। बहुत काल युद्ध कर ग्वालियरके राजा बलहीन हो गये। जब इन्होंने देखा कि अब कोई निस्तार नहीं है तब राजमहिलायोंने कठिन जहरव्रतका अनुष्ठान किया। जिस सरोवर-तीर पर जहरव्रत हुआ था, अभी वह "जहर ताल" नामसे विख्यात है। महिलाओंके जलती हुई आगमें कूदने पर राजा डेढ़ हजार सहचरोंको साथ ले दुर्गका द्वार खोलते हुए बाहर निकले। ये ५३६० मुसलमान सैनिकोंको विनाश कर अन्तमें आप भी सहचरोंके साथ रणक्षेत्रमें मर मिटे। उनके साथ साथ ग्वालियरके परिहारवंशका भी अंत हो गया। यह युद्ध कहानी पत्थरके ऊपर चार पंक्तिमें खोदी हुई थी, सम्राट् बाबरने इसे देखा था।*

इसके बाद १३६८ ई० तक ग्वालियर दिल्लीके मुसलमान राजाओंके अधीन था। उस समय ग्वालियरदुर्गमें राजकीय सम्भ्रान्त कैदी रखे जाते थे। फिरिस्ताने फिर भी लिखा है कि ६६५ हिजरी या १२६५ ई०में जलालउद्दीन फिरोजने यहां एक बड़ा गुम्बज निर्माण किया था। १३१६ ई०में मुबारकने यहां अपने तीन बन्दो भ्राताओंको मार डाला था। १३३६ ई० में इबन-बतुताने ग्वालियरके दुर्गको देख कर लिखा है कि दिल्ली-सम्राट् जिनसे कुछ भय खाते, उन्हें इस दुर्गमें बन्दी कर रखते हैं।

उनके पिता वीरसिंहदेव ग्वालियरके राजा हुए थे। वीरसिंह पहले ग्वालियरके उत्तर इन्दरोली नामक परगनाके एक जमींदार थे। ये दिल्लीके प्रधान मंत्रीके अधीन काम करते थे। भाग्यवश सम्राट्की कृपादृष्टि इन पर पड़ी। सम्राट् इनकी कार्यपटुता और विचक्षणता देख संतुष्ट हुए और उन्हें ग्वालियर दुर्गके शासनकर्ताके पद पर नियुक्त किया। उस समय सैयदके अधीन ग्वालियर दुर्ग था। उसने सम्राट्की आज्ञा उल्लङ्घन कर दी। इस पर वीरसिंहने कौशलक्रमसे उनको और प्रधान कर्मचारियोंको निमन्त्रण कर बुला अफीमयुक्त भोजन कराया और अन्तमें उन सबको बन्दी कर किला अधिकारमें कर लिया था। वीरसिंह २५ वर्ष तक दुर्गाधिपति थे, उसके बाद १४५७ संवत् (१४०० ई०) में इनके पुत्र विरमदेवने शासनभार प्राप्त किया।

ग्वालियरके त्रिकोणियाताल और कुन्तानियाकी अम्बिकादेवीके मन्दिरसे १४६५ सम्वत् (१४०८ ई०) और १४६७ सम्वत् (१४१० ई०)में लिखी हुआ विरमदेवकी शिलालिपि पाई जाती है। खड्गरायने इनका नामोल्लेख कहीं नहीं किया। उन्होंने वीरसिंहके बाद उद्धरणदेव, धीरमदेव, लक्ष्मीसेन और गणपतिदेवके नाम वर्णन किये हैं। फिर तोमरवंशावलिमें विरमदेवके बाद यथाक्रमसे उद्धरण, ढोलनशाह और गणपति देवके नाम मिलते हैं, परन्तु गणपतिदेवके पुत्र डुङ्गरदेवके समयमें लिखा हुआ ४ शिलालेखोंमें गणपतिके सिवा दूसरे किसीका नाम नहीं पाया जाता। इससे अनुमान किया जाता है कि विरमके बाद गणपति राजा हुए थे। पूर्व समयमें दुर्गाधिपति सम्राट्को कर देते थे। १४२४ ई०में डुङ्गरसिंह दुर्गाधिपति हुए। इस वर्ष मालवाके होसङ्गाहने ग्वालियरके दुर्ग पर आक्रमण किया। अन्तमें उनके हाथसे दिल्लीपतिने पुनः ले लिया था। १४२६ ई०में दिल्लीश्वर मुबारकशाह ग्वालियर जा राजाओंसे कर ले लौट आये थे।* इसी तरह १४२७, १४२८ और १४३२ ई०में भी दिल्लीपति ग्वालियर गये थे। इससे जाना जाता है कि डुङ्गरसिंह अपने मनसे कर देना नहीं चाहते, दिल्लीश्वरके ससैन्य वहां पहुंचने पर कर देनेमें बाध्य होते थे। राजा डुङ्गरसिंह ३० वर्ष तक ग्वालियरमें राज्यशासन करते रहे। उनके समयमें यहां शिल्प और पत्थरके कामकी बड़ी उन्नति थी। डुङ्गरसिंहकी शिलालिपि पढ़नेसे जाना जाता है कि उनके समयमें ग्वालियर आर्यावर्तमें एक पराक्रान्त राज्यके जैसा गिना जाता था। तथा दिल्ली, मालव और जौनपुरके मुसलमानराज भी समय समय पर उनसे सहायता लिया करते थे।

डुङ्गरसिंहके बाद उनके लड़के कीर्तिसिंह राजा हुए। कीर्तिसिंहके समयमें पर्वत काट कर जो सुन्दर

* Babor's Memoirs, by Erskine, p. 384.

* Brigg's Ferishta, Vol. I. p. 519

शिल्पकार्य किया गया था वह बहुत प्रशसनीय है। उनके समयमें १५२५ और १५३० सम्वत्‌की लिखी हुई शिलालिपि पाई गई है। उस समयके मालव, जोनपुर और दिल्लीके इतिहासमें भी ग्वालियरके राजाका पूरा पूरा हाल जाना जाता है। ये मुसलमान इतिहासमें "किरण-राय" नामसे मशहूर हैं। दिल्लीश्वर बहलोल लोदीके साथ जोनपुरके महमुद सरकीके भीषण युद्धकालमें किरण और उनके भाई पृथ्वीराय भी सम्मिलित थे। उस युद्धमें फतेखाँ हार्बिसे पृथ्वीरायके मारे जाने पर किरणने इसका बदला लेनेके लिये उसी समय फतेखांका मुण्ड दो खण्ड कर दिल्लीश्वरके निकट भिजवा दिया था। तभीसे जोनपुरके मुसलमान ग्वालियर राजासे उसका बदला लेनेका मौका ढूंढ रहे थे। फिरिस्ताने लिखा है कि, "८७० हिजरी या १४६५ ई०में जोनपुरके हुसेन सरकीने ग्वालियरके दुर्ग पर आक्रमण करनेके लिये एक बड़ी भारी सेना भेजी थी। घोरतर युद्धके बाद ग्वालियरके राजाने सन्धि कर ली और कर देनेके लिये राजी हुए।" इस समयसे ग्वालियरके राजाने दिल्लीके विरुद्ध जोनपुरका पक्ष अवलम्बन किया था। जोनपुराधिपति हुसेनकी माता बीबी राजीकी मृत्यु होने पर किरणरायने १४७३ ई०में सरकी राजाको सान्त्वना देनेके लिये अपने लड़के कल्याणको भेजा था। इसके बाद १४७८ ई०में हुसेन सरकी दिल्लीश्वर बहलोलसे पराजित हो ग्वालियर भाग आये थे। यहां आने पर किरणराय लाखों रुपये और तम्बू आदि नाना द्रव्य भेंट दे कालिपी पहुंचा आये थे। दूसरे वर्ष कीर्तिसिंह या किरणरायकी मृत्यु हुई। इनके बाद इनके पुत्र कल्याणमलने ७ वर्ष निर्विवाद राज्य शासन किया। १४८६ ई०में इनके पुत्र मानसिंहने पितृपद प्राप्त किया। इसी वर्ष बहलोल लोदीने उन पर चढ़ाई की थी। इन्होंने दिल्लीश्वरको ८० लाख रु० दे कर अपना छुटकारा पाया। १४८८ ई०में बहलोलके पुत्र सिकन्दरलोदीने मानसिंहको एक सुन्दर पोशाक और घोड़ा भेंट स्वरूप भेजा। मानसिंहने सहस्र अश्वारोहियोंके साथ अपने भतीजेको बयाना नामक स्थानमें भेज कर सिकन्दरको सम्मान रक्षा की थी। इसके बाद १५०० ई० तक ग्वालियरमें कोई विशेष घटना नहीं हुई। १५०१ ई०में राजा मानसिंहने दिल्लीश्वरके निकट निहाल नामके एक दूतको भेजा था। दूतको अनुपयुक्त कथासे दिल्लीश्वर क्रोधित हो उठे तथा थोड़े समयके बाद ही ससैन्य ग्वालियर राजाके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये चल पड़े। इस समय राजा मानसिंहने सैयद खाँ, बाबर खाँ और राय गणेश नामके तीन भागे हुए मनुष्योंको पकड़ दिल्लीश्वरके निकट भेज दिया और बहुत भेंट देकर अपने पुत्र विक्रमादित्यको भेज कर सन्धिस्थापन कर ली। १५०५ ई०में सिकन्दरने फिर भी एक सेना भेजी थी, किन्तु इस बार ग्वालियर वासियोंने अदम्य उत्साहसे विपक्षकी गति रोक दी थी। इस लड़ाईमें दिल्लीपति विशेष क्षतिग्रस्त हो रणक्षेत्रसे भागनेके लिये बाध्य हुए थे। इस समय मानसिंह यथार्थमें स्वाधीन राजा हुए। १५१७ ई०में सिकन्दरने ग्वालियरके राजाको पराजित करनेके लिये दूर दूरके अमीर उमरावोंको आगरामें बुलाया था। किन्तु थोड़े ही समयके बाद उनकी मृत्यु हो जानेसे अभीष्ट सिद्ध नहीं हुआ। इसके बाद सुलतान इब्राहिमलोदी अपने पिताके पद पर आरूढ़ हुए। मानसिंहने इब्राहिमके भाई जलालखांको ग्वालियरके दुर्गमें आश्रय दिया था। इसीसे इब्राहिमने प्रतिहिंसा और उच्च आशासे उन्मत्त हो ग्वालियर जीतनेके लिये अजीम हुमायूके अधीन तीसहजार अश्वारोही, तीन सौ गजारोही तथा अनेक तरहके यन्त्रादि भेजे थे। उनने सात सर्दारोंको भी हुमायूको मदद देनेकी अनुमति दी थी। उस समय महावीर और तीक्ष्णबुद्धि मानसिंह दोनों कालग्रासमें फंस गये। इन्हीं तोमर राजाओंके समयमें ग्वालियरकी विशेष उन्नति हुई थी उन्होंने कृषिकार्यकी सुविधाके लिये अनेक स्थानोंमें झीलें खुदवाई थीं। वे शिल्पशास्त्रके एक प्रगाढ़ अनुरागी थे ग्वालियरके दुर्गमें उन्होंने जो मानमन्दिर नामक सुन्दर पत्थरका प्रासाद निर्माण किया था, मोगल सम्राट बाबर, राजमन्त्री अबुल फजल प्रभृति मुक्तकण्ठसे उस प्रासादके शिल्पनैपुण्यकी बहुत प्रशंसा कर गये हैं। उनमेंसे एक सङ्गीतानुरागी और दूसरे सुगायक थे, जिनकी रची हुई कविता आजतक भी प्रचलित है। मुसलमान ऐतिहासिक नियामत उल्लाने मान

सिंहको बहुत प्रशंसा कर अन्तमें लिखा है "वे कभी भी किसी मनुष्यके ऊपर अत्याचार नहीं करते। हिन्दू होने पर भी वे इस्लाम धर्मानुरागी थे।" फजल अलीने लिखा है 'मानसिंहके सदृश उदार राजा विरले ही होंगे, उनके समयमें ग्वालियरवासी उन्नतिके शिखर पर पहुंच गये थे।"

मानसिंहके पुत्र विक्रमादित्यने सिर्फ दो या तीन वर्ष राज्य किया था। इसी समय अजीम हुमायूंने ग्वालियर अवरोध किया था। कई एक मास अविरल चेष्टाके बाद इन्होंने बादलगढ़ द्वारको जला दिया। दग्धावशेष होने पर एक सुवृहत् पीतलकी वृषभ मूर्ति पायी गई थी। वह मूर्ति दिल्लीमें ला कर दिल्लीके बोगदाद-द्वार पर रखी गई। १५९३ ई०में अकबर उस प्रसिद्ध मूर्तिको फतेपुरसिकरीमें ले आये थे। अजीम हुमायूंने बहुत दिन अवरोध और बहुतसे सैन्यके मारे जानेके बाद एक एक करके सब द्वार अधिकार कर लिये थे। लक्ष्मणपुरद्वार आक्रमणके समय ताज खां नामक सुलतान इब्राहिमके एक प्रधान अमीर मारे गये थे। उस द्वारके निकट उनकी कब्र है। इस तरह एक वर्ष अवरोधके बाद जब सिर्फ हथियापुर नामक द्वार जीतनेके लिए रह गया था, विक्रमादित्यने देखा कि अब कोई निस्तार नहीं है और शीघ्र ही मुसलमानोंके हाथसे मानसंभ्रम नष्ट हो जायगा तब शीघ्र ही उनने युद्ध छोड़ सन्धिका प्रस्ताव किया। इस तरह ग्वालियर फिर भी मुसलमानोंके अधीन हो गया। विक्रमादित्यने दिल्ली जा सुलतान इब्राहिमसे भेंट की। इब्राहिमने उन्हें संमावाद जिला जागीर और दिल्ली साम्राज्यके मध्य एक उच्च अमीरपद प्रदान किया।

१५२६ ई०को पानीपथकी लड़ाई तक ग्वालियर दिल्लीके लोदीवंशके अधीन था। पानीपथके भीषण रणक्षेत्रमें इब्राहिमके साथ ग्वालियरके अन्तिम तोमर राजा विक्रमादित्य भी मारे गए थे। सम्राट् बाबरने भी विक्रमादित्यके वीरत्वकी तारीफ की थी। कोहिनूर शब्दमें विक्रमादित्य सम्बन्धीय विवरण देखो। दिल्ली साम्राज्य मोगलवीर बाबरके हस्तगत होने पर ग्वालियर राज्य भी उन्हींके अधिकारमें आया। जब बाबरने आगरा अधिकार किया था, उस समय मङ्गलराय नामके एक तोमरवंशीय राजा ग्वालियरमें अपना प्रभुत्व जमाये हुए थे। ग्वालियरके पठान दुर्गाधिपति तातार खाँने तोमर राजाके आक्रमणसे भयभीत हो बाबरको यों लिख भेजा,—"यद्यपि आप भी पठानके शत्रु हैं तथापि जातिके मुसलमान हैं, विधर्मीकी वश्यता स्वीकार करनेकी अपेक्षा आपहीकी अधीनता स्वीकार करनेको मैं प्रस्तुत हूं।" बाबरने रहिमदादखाँको ससैन्य ग्वालियरको भेजा। रहिमदाद खाँके यहां आने पर पठान-दुर्गाधिपने उन्हें दुर्ग प्रवेश न करने दिया। इसके बाद मुहम्मद घाउस् नामके एक सम्पत्तिशाली मुसलमान साधुके कौशलसे रहिमदादने ग्वालियर पर दखल किया। १५२७ ई०में तोमरराजा मङ्गलरायने ग्वालियरका दुर्ग अवरोध किया, किन्तु उनकी आशा सफल न हुई। १५२८ ई०में रहिमदाद विद्रोही हुए इस पर सम्राट् बाबरने आ उनके हाथसे ग्वालियरका दुर्ग छीन लिया।

१५३० ई०में बाबरकी मृत्युके बाद हुमायूं राजा हुए। ये ग्वालियरका दुर्ग देखने आये थे तथा यहां हुमायूं-मन्दिर नामसे एक प्रासाद निर्माण किया था। १५४२ ई०को शेरसाह ग्वालियर अधिकार कर यहां कुछ काल तक रहे थे। इन्होंने यहां एक सेरमन्दिर निर्माण किया था। इस समय विक्रमादित्यके पुत्र रामशाहने मोगलोंके हाथसे ग्वालियर दखल नहीं करने पर शेरसाहका पक्ष अवलंबन किया। शेरसाहकी मृत्युके बाद १५४५ ई०में उनके पुत्र सलीमने चुनारसे पिताकी समस्त धनसम्पत्ति ग्वालियर दुर्गमें ला रखी। १५४६ ई०में नियाजियोंको पराजित कर सलीम ग्वालियरमें आ कर रहने लगे। उस समय ग्वालियर दिल्ली साम्राज्यकी राजधानीके रूपमें गिना जाता था। १५५३ ई०में सलीमके देहान्त होनेके बाद शेरसाहके क्रतदास बहवलके हाथ ग्वालियरका दुर्ग सौंपा गया। इस समय विक्रमादित्यके पुत्र रामशाहने राजपूत-सैन्यकी सहायतासे ग्वालियर अधिकारमें लानेकी चेष्टा की। उसी समय कावखां नामक अकबरके एक सेनापति ग्वालियरका दुर्ग जीतनेके लिये आये। पहले पहल रामशाहके साथ उनका तीन दिन तक घोर युद्ध हुआ, जिसमें मोगल

मन्यको जीत हुई। इसके बाद बाहवलके साथ सामान्य युद्धके बाद ग्वालियरका दुर्ग अकबरके अधिकारमें आया। रामशाहने मेवाड़ जा आश्रय ग्रहण किया। वहां उनके पुत्र शालिवाहनके साथ शिशोदियाराजकुमारीका विवाह हुआ। रोहितासके प्राप्त एक शिलालिपि पढ़नेसे जाना जाता है कि शालिवाहनके पुत्रश्यामशाह और मित्रसेनने अकबरका आनुगत्य स्वीकार किया था। श्यामके दो पुत्र थे। सग्रामशाह और नारायणदास। संग्राम १६७० ई०में नाममात्र ग्वालियरके राजा हुए। इनके पुत्रका नाम राजा कृष्णसिंह था १७१० ई०में कृष्णकी मृत्यु हुई। उनके पुत्र विजयसिंह और हरिसिंहने उदयपुर जा आश्रय लिया। हरिसिंहके वंशधर आज भी उदय पुरमें वास करते हैं।

मोगल राजाओंके अधःपतन कालमें गोहादके जाट सर्दारने ग्वालियर अधिकार किया था, किन्तु थोड़े समयके बाद ही यह महाराष्ट्रोंके हाथ आया।

भारतके इतिहासमें अभी जो ग्वालियरका राजवंश प्रसिद्ध है महाराष्ट्रवीर रणजी सिन्धिया ही उस वंशके आदिपुरुष हैं। ये बालाजी पेशवाके पादुकावाहक थे। इनके पिता दाक्षिणात्यके किसी ग्राममें पटवारी थे। पेशवाके घरमें रणजीकी श्री और सौभाग्यकी वृद्धि दिन दूनी और रात चौगुनी होने लगी। क्रमशः ये पेशवाके रक्षिदलके प्रधान व्यक्ति हो गये। मालवके मध्य हो कर हिन्दुस्थानमें महाराष्ट्रीय सैन्य ले जा कर बहुत बार युद्ध करके मृत्युके कुछ पहले वर्तमान ग्वालियर राज्यके अधिकारी हुए थे। उनकी मृत्युके बाद उनके द्वितीय पुत्र माधाजी सिन्धिया राजसिंहासन पर बैठे। राजनैतिक सम्बन्ध और युद्धविद्यामें ये अद्वितीय थे। १७६१ ई०में पानीपथकी लड़ाईमें माधाजीने अपने वीरत्व और युद्धकौशलका अच्छी तरह परिचय दिया था। ये नाममात्र पेशवाके अधीन थे, किन्तु सब समय स्वाधीन भावसे राज्यशासन करते थे। दिल्लीके सम्राट्ने भी उनसे क्षमा प्रार्थना की थी तथा राजपूत सर्दार प्रसिद्ध अश्वारोही योद्धा भी थोड़ी देर तक भी उनके सैन्य सम्मुखमें ठहर नहीं सकते थे। १७९३ ई०में पेशवाके साथ मलवाड़ नगरमें जो युद्ध हुआ था, उसमें ये ही नायक थे। १७९४ ई०में अपने भाईके पौत्र दौलतराव सिन्धियाको राज्यभार सौंप आप परलोकको सिधारे। मधुरावनारायण पेशवाकी मृत्युके बाद (प्रजाविद्रोहके समय) दौलतरायने अपने प्रभुत्व फैलानेकी चेष्टा की थी। इन्होंने बाजीरावको अपने अधीन कर लिया और होलकरके अधिकृत राज्यके बहुतसे अंश पर दखल जमाया। इसके बाद इन्होंने दाक्षिणात्यमें अहमदाबादके दुर्गको जय कर पेशवा और निजाम राजा हो कर जानेका रास्ता साफ कर दिया। दौलतरायकी सेना फरासीसी सैनिक द्वारा परिचालित होती देख अंगरेज लोग डरने लगे थे। वेसिनकी सन्धिके अनुसार अंगरेजोंने भारतके छोटे छोटे राजाओंके ऊपर अपने ही खर्चसे सेना रख नेकी जो व्यवस्था की थी, पूना नगरमें इसी तरह सैन्य-दल रखते देख दौलतरायने बरारके राजा राघोजी भौंसले-के साथ मिल कर उक्त व्यवस्थाको खण्डन करनेकी चेष्टा की थी। १८०३ ई०में दोनोंने निजाम राज्य पर आक्रमण किया। इसी वर्ष २३वीं सितम्बरको सर आर्थर वेलिसलीने असाई नगरमें महाराष्ट्रों पर चढ़ाई की। बहुत दिन घोर युद्धके बाद महाराष्ट्रसेनाकी हार हुई। फिर भी उक्त वर्षके २८वी नवम्बरको वेलिसलीने अरगांव नगरमें महाराष्ट्रोंकी शक्ति पूर्ण रूपसे चूर कर डाली। उक्त वर्षमें दिल्लीको दूसरे पार फरासीसी नायक बुर्कोसे परिचालित सिन्धियाको सेना लॉर्ड लेकसे अच्छी तरह परास्त हुई थी। इसके बाद लसवारीकी लड़ाईमें जेनेरल लेकने सिन्धियाकी अवशिष्ट सेनाको नाश किया। इस तरहका चमता क्षम होने पर दौलतरावने सर्जि अंजे गांवकी सन्धिके अनुसार अपने अधिकृत हिन्दुस्थानके प्रदेश समूह और अजन्ता पर्वतके दक्षिणस्थ भूभाग छोड़ दिये। इस सन्धिसे सिन्धियाके गोहद और ग्वालियर हस्तच्युत होने पर ये बहुत क्षुब्ध हुए थे तथा होल-करके साथ मिल कर फिर भी अंगरेजोंके ऊपर आक्रमण करनेकी चेष्टा करने लगे। थोड़े समयके बाद ही इन्होंने रेसिडेण्टका तंबू जला कर उन्हें बन्दी कर लिया। लार्ड कोर्नवालिसने गोहद और ग्वालियर दखल कर रखना नितान्त अन्याय समझ कर उक्त सन्धिपत्रको फाड़ दिया और १८०५ ई०के नवम्बर महीनेमें एक दूसरी

सन्धि की गई, जिसमें अञ्जिगांवकी सन्धिकी सब शर्तें थीं, सिर्फ यही बदला गया कि गोहद और ग्वालियर सिन्धिया राजाको लौटा दे तथा चम्बल नदी ग्वालियर राज्यकी उत्तरी सीमारूपसे निर्दिष्ट हो।

१८१७ ई०में पिण्डारी युद्धके समय पिण्डारी डाकू दलने धीरे धीरे महाराष्ट्रीय सेनाओंके ऊपर अत्याचार करना आरम्भ किया। जब पेशवाने जाना कि दौलतराव गुप्तरूपसे पिण्डारियोंको सहायता दे रहे हैं तो इन्होंने दौलतरावको ऐसा कार्य छोड़ देनेका अनुरोध किया, किन्तु दौलतरावने उनकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया। अतएव गवर्नर जेनराल मार्क्विस ओफ हेष्टिंग्स बहुतसी सेना साथ ले सिन्धियाके विरुद्ध चम्बल नदीके तीर पर्यन्त अग्रसर हुए। इस समय एक और सन्धि स्थापित की गई, जिससे १८०५ ई०में लिखे हुये सन्धिपत्रकी कुल शर्तें रद की गईं और एक नया प्रस्ताव लिखा गया जिसमें था कि "सिन्धिया राजा पिण्डारियोंके विरुद्ध अङ्गरेजका पक्ष ले साहाय्य करें और उक्त प्रस्ताव-को माननेके लिये वे आशीरगढ़ और हिन्दियाके दुर्ग अङ्गरेजोंके हाथ सौंप दें।" पहले सिन्धियाराज किसी हालतसे अंगरेजोंके हाथ अशीरगढ़ छोड़ देनेको स्वीकृत न हुए थे, किन्तु अन्तमें अङ्गरेजोंने बलपूर्वक उक्त दुर्ग अधिकारमें कर लिये। दुर्गके मध्य एक पत्रमें लिखा था कि सिन्धियाके राजाने वहांके शासनकर्ताको पेशवाकी अनुमति पालन करनेका आदेश दिया। पेशवाहीने पूनाकी रेसिडेन्सी पर आक्रमण कर अंगरेजोंके साथ युद्ध घोषणा कर दी। सिन्धियाकी इस तरह विश्वासघात-कता देख अंगरेजने सदाके लिये आशीरगढ़ दुर्ग अपने अधिकारमें कर लिया।

१८२७ ई०में दौलतरावकी मृत्यु हुई। अपुत्रक होने और दत्तकपुत्र ग्रहण न करनेके कारण मृत्युकाल ये राज्यका समस्त भार वृटिश गवर्मेण्टके हाथ सौंप गये और अपनी छोटी स्त्री बाइजाबाईकी यथारीति व्यवहार करने कह गये थे। दौलतरावके इच्छानुसार अंगरेज गवर्मेण्टने मूगतराव नामक एक बालकको सिंहासन पर बिठाया तथा राजकीय समस्त कार्यका भार बाइजाके हाथ अर्पित कर दिया। नये महाराजने दौलतरावकी दौहित्रीसे विवाह किया तथा जनकाजी सिन्धिया नामसे मशहूर हुये। १८३३ ई०में बाइजाबाईका राज्यकार्य शिथिल हो पड़ा। बालक राजा बाइजाके व्यवहारसे अत्यन्त असन्तुष्ट हो उनकी अधीनतासे निकल भागे। जनकजीके राजत्वकालमें यद्यपि बाहरसे शत्रुओंका कोई उपद्रव न था, तौभी सीमान्त प्रदेशमें नित्यप्रति कोई न कोई उपद्रव हुआ ही करता था।

१८४३ ई०में जनकजीने पुत्रहीन अवस्थामें प्राणत्याग किया। उनकी विधवा स्त्रीने राज्यके सम्भ्रान्त मन्त्रियोंके साहाय्यसे बाजीराव नामक एक आठवर्षके बालक को दत्तकपुत्र ग्रहण किया। वृटिश गवर्मेण्टके समर्थन करने पर बालक बाजीराव सिन्धिया नामसे राजगद्दी पर बैठाये गये। इस समय राज्यमें विशेष अशान्ति फैल गई थी। शांति स्थापन करनेके लिये अंगरेजोंने ग्वालियरकी सेना भेजी। १८४३ ई०के २९ दिसम्बरमें महाराजपुर और पन्नियर नामक स्थानमें अंगरेजी सेना और विद्रो-हियोंमें लड़ाई छिड़ी। अन्तमें विद्रोही दल पराजित हो भाग चले। अंगरेजोंने फिर भी इन नव शिशुको राज्या-भिषिक्त किया। इनकी रक्षाके लिए ३००० प्यादे और ३२ तोपें रखी गईं और धीरे वहांकी सैन्य संख्या घटा दी गई। इससे सेनाओंके मनमें अंगरेजोंके विरुद्ध एक दूसरा ही भाव उत्पन्न हो आया। १८५७ ई०में सिपाही विद्रोह-के समय ये प्रकाश्यरूपसे अंगरेजोंके विरुद्ध हो गये। १८५८ ई०में जब विद्रोही तांतिया तोपी वहां पहुंचा तब सिन्धियाके सिपाहियोंने तोपीके साहाय्यसे बाजीराव-को सिंहासनसे हटा दिया। वे तथा उनके मन्त्री दिनकर-राव आत्मरक्षाके लिये आगराको चले गये थे। इसी वर्ष-के जून महीनेमें सर हिउरोजने ग्वालियर दखल कर महाराजको फिर वहांके प्रासादमें स्थापन किया। सिन्धियाके कार्यसे खुश हो गवर्मेण्टने उन्हें दत्तक पुत्र लेनेकी अनुमति दी तथा ३००००० रुपये आयकी संपत्ति और सैन्य संख्या वृद्धि करनेका आदेश प्रदान किया। महाराज वृटिश-सैन्यके एक प्रधान सेनापति हुए और इन्हें नाइट ग्राण्ड क्रास ओफ बाथ (K. G. C. B.) तथा नाइट ग्राण्ड कमाण्डर ओफ दि ष्टार ओफ इण्डिया (K. G. C. S. I.) की उपाधियां मिलीं। सिन्धिया

अपने राज्यमें २१ और वृटिश राज्यमें १९ तोपोंसे सम्मानित होते थे। किन्तु महाराज जयाजीराव (झाजीराव)-को सम्मानसूचक २१ तोपध्वनि मिलती थी। १८८६ ई०में जयाजीरावका स्वर्गवास हो गया। १० वर्षकी उम्रमें वर्तमान महाराज माधवराव सिन्धिया सिंहासन पर बैठे। नाबालिगी अवस्था होनेके कारण १८९४ ई० तक राजकार्य अंग्रेज रेसिडेण्ट द्वारा परिचालित हुआ। राजकीय विभागोंके परिचालन विषयमें इनका विशेष लक्ष्य रहनेसे इन्होंने विशेष उन्नति की है। १९०० ई०में युद्धके समय महाराज चीनदेशको गये थे और घायलोंकी सेवाके लिए इन्होंने एक बड़ा जहाज भेजा था। ये महाराज और हिज हाइनेस उपाधिसे विभूषित हैं। इनके सम्मानार्थ २१ तोपें दागी जाती हैं। वर्तमान महाराज भारतसम्राट्के G C V O, G C S I, A D C और अंग्रेजी सेनाके सेनापतियोंमें अन्यतम (Honorary Colonel) हैं। इन्हें केसर ए हिन्द नामक स्वर्णपदक तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालयसे सम्मानसूचक L L D की उपाधि मिली है।

यह राज्य विचारके सुभीतेके लिये दो विभागोंमें विभक्त किया गया है—एक उत्तर ग्वालियर और एक मालवप्रान्त। उत्तर ग्वालियरमें सात जिले हैं—ग्वालियर गिर्द, भिण्ड, श्योपुर, तनवारगढ़ ईसागढ़, भेलसा और नरवर। मालव प्रान्तमें चार जिले हैं—उज्जैन, मन्दसोर, साजापुर और अमझेर। महाराज खुद सदर बोर्डकी सहायतासे न्यायकार्य सम्पादन करते हैं। उक्त बोर्ड सात सदस्योंसे सगठित हुआ है। महाराज स्वयं उसके सभासद हैं, अन्य सदस्यों पर राजस्व आदि विभिन्न कार्योंका भार सौंपा गया है। इनके कोई सख्या नहीं हैं, किन्तु सेक्रेटरी बहुत हैं और उनके कार्यको देखरेख करनेके लिए एक प्रधान सेक्रेटरी भी है। सेक्रेटरियोंका काम यह है कि, वे महाराजको अन्तिम आज्ञा लेनेके लिए कागजात तयार कर रखते हैं। छोटी दीवानी अदालतमें ५००) तककी नालिशें होती हैं, जिनका फैसला कमासदार करते हैं और २०००) रुपये तककी नालिशोंका फैसला सदर अमीन द्वारा तथा पचास हजार रुपये तककी नालिशोंका फैसला प्रान्तीय जज करते हैं। इससे ज्यादेकी नालिशें सदर अदालत अर्थात् हाईकोर्टमें होती हैं। फौजदारी अदालतमें कामसदार २य या ३य मजिष्ट्रेटका अधिकार पाते हैं। सदर अमीन प्रथम मजिष्ट्रेटका अधिकार पाते हैं। राज्यकी आमदनी डेढ़ सौ लाखकी है।

२ ग्वालियर राज्यकी राजधानी। यह अक्षा० २६ १३ उ० और देशा० ७८ १२ पू० पर आगरा नगरसे ६५ मील दक्षिणमें अवस्थित है। सिन्धिया महाराजका यहां एक दुर्ग है, जो एक डेढ़ मील ऊंचे पहाड़ पर अवस्थित है। यह उत्तरांशमें ग्वालियर नगरसे ३०० फीट ऊंचा है, परन्तु इसके प्रधान दुर्गद्वारकी ऊंचाई २७४ फीट है। इस दुर्गके नीचे उत्तरांशमें प्राचीन ग्वालियर नगर तथा दक्षिणांशमें प्रायः एक मीलकी दूरी पर नया ग्वालियर या लस्कर नगर अवस्थित है। दुर्गके दक्षिण जहां दौलतराव सिन्धियाने स्कन्धावार स्थापन किया था, वही स्थान लस्कर या स्कन्धावार नामसे मशहूर है। सिन्धियाने यहीं पर प्रधान नगर स्थापन किया है। दिनों दिन इसकी उन्नतिके साथ प्राचीन ग्वालियरकी समृद्धि क्षीण होती गई है। जो कुछ हो, इन दोनों नगरोंको एकत्र रखनेसे भारतके मध्य एक बहुत जनाकीर्ण प्रधान नगर जैसा समझ पड़ता है। यहां सब मिला कर दो लाख मनुष्य रहते और लगभग पैंतीस हजार घर लगते हैं।

यहां देखनेको बहुतसी चीज है। हिन्दू और जैन शिल्पनैपुण्यके लिये बहुत दिनसे यह स्थान प्रसिद्ध है। दुर्ग प्रवेश करनेमें छह वृहत् तोरण (वहिर्द्वार) पार होने पड़ते हैं। इन दरवाजोंके नाम अलमगिरिपुर, बादलगढ़ या हिन्दोलापुर, भैरो या बांसोरपुर, गणेशपुर, लक्ष्मणपुर और हतियापुर हैं।

दुर्गके सबसे नीचे फाटकका नाम अलमगिरि है। १६६० ई०में औरङ्गजेबके नाम पर मोतामिदखांने यह द्वार प्रस्तुत किया था।

राजा कल्याणमलके भाई बादलसिंहके नाम पर बादलगढ़ स्थापित हुआ था। इसके बाद यहां बहुतसे हिन्दोल पक्षी देखे गये थे इसी कारण इसका दूसरा नाम हिन्दोलपुर हुआ है।

सर्वसाधारणके मतसे पूर्वकालमें भैरवपाल नामक एक

कच्छवाह राजा ग्वालियरमें राज्य करते थे। उन्होंने अपने नाम पर भैरों द्वार निर्माण किया था। मराठाके अधीन एक मनुष्यने यह स्थान बाँसकी लकड़ी (लाठी)से बचाया था, इसी कारण इसका नाम बाँसोरपुर रहा।

१४२४ से १४५४ ई०में राजा डुङ्गरसिंहसे गणेशपुर द्वार बनाया गया था। इस दुर्गके बाहर नुरसागर नामका एक सरोवर है। १६६७ ई०में मोतामिदखाँने इसका संस्कार किया था। गणेशद्वारके भीतर ग्वालिपा सिद्धका एक छोटा मन्दिर है। पहले जिस स्थान पर ग्वालिपा सिद्धका मन्दिर था वहां मोतामिदखाँने उस मन्दिरको ध्वंस कर मस्जिद निर्माण कर दी थी। उस मस्जिदके एक पासमें शिलालिपिमें ये सब बातें लिखी हुई हैं।

लक्ष्मणपुर द्वार जानेके रास्ते पर एक छोटा चतुर्भुज-मन्दिर है। इस मन्दिरमें गोपगिरि स्वामी भोजदेवके राजत्व कालमें ९३३ सम्वत्‌में उत्कीर्ण एक बड़ी शिलालिपि देखी जाती है। फजलअलीने लिखा है कि कच्छवाह वंशके १७ वें राजा लक्ष्मणपालने यह फाटक निर्माण किया था। सुहानियासे प्राप्त कच्छवाहके राजा वज्रदामाकी शिलालिपिसे जाना जाता है कि उनके पिताका नाम लक्ष्मण था। मालूम पड़ता है कि अपने पिता लक्ष्मणके ही नाम पर वज्रदामाने यह द्वार निर्माण किया होगा। लक्ष्मण फाटकके ऊपर एक स्थानमें बहुतसे शिवलिङ्ग, हरगौरी, गणेश प्रभृतिकी पाषाण मूर्त्तियां देखी जाती और उनके मध्यमें १५½ फीट ऊंची एक वृहत् वराह अवतारकी मूर्ति रखी हुई है।

ग्वालियरके राजा मानसिंहने हतियापुर द्वार निर्माण किया था। यहां एक पूर्णायतन हस्तीमूर्ति थी जिसकी पीठ पर सामनेमें माहुत और पीछे राजा मानसिंह बैठे हुए थे। सम्राट् बाबर, अबुलफजल आदि उस मूर्तिकी यथेष्ट प्रशंसा कर गये हैं। इसी हाथीकी मूर्तिसे हथियापुर नाम हुआ है। अभी उस हाथी मूर्तिका चिह्न मात्र भी न रहा है। शायद मोतामिदखाँने उसका ध्वंस किया होगा। यह फाटक मानसिंह-निर्मित मानमन्दिरका एक अंश है। मानमन्दिरका शिल्पनैपुण्य ऐसा सुन्दर और चमत्कार है कि समस्त उत्तरभारतमें वैसा शायद ही होगा। दुर्गके उत्तर-पश्चिमांशके प्रवेश द्वार पर तीन फाटक हैं, इस द्वारका नाम ढुण्डिपुर है। यहां मानसिंह प्रतिष्ठित ढुण्डिदेवका एक प्राचीन मंदिर है। इसी मन्दिरसे इस द्वारका नाम हुआ है। परन्तु मानसिंहके पहले भी उक्त द्वार विद्यमान था यह यहांके १५०५ सम्वत्‌में उत्कीर्ण शिलालिपिसे जाना जाता है।

दुर्गके दक्षिण पश्चिममें मानसिंहका बनाया हुआ घरगज पुर द्वार है। यहां भी बहुतसी पत्थरकी देवमूर्ति रखी हुई है।

ग्वालियरके सदृश दुर्भेद्य दुर्ग उत्तरभारतमें कहीं भी देख नहीं पड़ता है। कालञ्जर और अजयगढ़के दुर्ग दुर्भेद्यके जैसे ख्यात हैं सही किन्तु उसे बहुत दिन अवरोध करने पर जलाभाव हो जाता था, परन्तु ग्वालियरके दुर्गमें कभी जलाभाव नहीं होता ना कभी होनेकी सम्भावना ही है। गोपार देखो।

ग्वालियर दुर्गमें कई एक प्रासाद है। यथा—करणमन्दिर, मानमंदिर, गूजरिणिमंदिर, विक्रममन्दिर, शेरमन्दिर या जहाङ्गिरी महल और शाहजहान मंदिर।

मुसलमानकी कीर्तियोंमें यहां मुहम्मद घाउसकी कब्र, जुम्मा मस्जिद और प्रसिद्ध गायक तानसेनकी कब्र है। भिन्न भिन्न स्थानसे प्रधान प्रधान गायक तानसेनका कब्रस्थान देखने आया करते हैं। यहां एक इमलीका वृक्ष है, कब्रकी अपेक्षा इसीका आदर अधिक होता है। लोगोंको विश्वास है कि इस इमली वृक्षके पत्ते चिवानेसे कण्ठस्वर मधुर हो जाता है। इसी कारण आजभी भी बहुतसी गायिका, नर्त्तकी चाहे तानसेनके सम्मानार्थ आवें या न आवें परन्तु इमलीके पत्ते खानेके लिये तो आती ही हैं। इसी उत्पातसे पूर्वका गाछ मर गया। पुनः एक नवीन गाछ उसी स्थान पर उगा हुआ है।

२ ग्वालियर राज्यकी शहर। इसमें दो शहर लगते हैं, पहला उत्तरीय शहर जो ग्वालियर दुर्गके पास ही अवस्थित है। दूसरा लस्कर जो प्रधान राजधानी है, २ मील दक्षिणमें अवस्थित है।

दोनो स्थानकी लोकसंख्या प्रायः ११९४३२ है। जिनमें हिन्दुओंकी संख्या अधिक है। १६वीं शताब्दीमें

ग्वालियर मालव सूवाके एक महालका प्रधान शहर था।

प्राचीन ग्वालियर शहर अभी उजाड़सा दीख पड़ता है। यहाको मसजिद मंदिर तथा बड़े बड़े घर भग्न अवस्थामें पड़े हैं। यहा एक बहुत लम्बी चौड़ी सड़क है जिसके किनारे बहुतसे अच्छे अच्छे भवन बने हैं, जिनमेंसे जुमा मसजिद प्रसिद्ध है। इसके अलावा खान दौलतखाँ और उनके लड़के नजोरी खाँ, पूर्वमें मुहम्मद गौस और तानसेनके समाधिभवन देखने योग है।

ग्वालियर दुर्गसे २ मील दक्षिणमें लस्कर शहर पड़ता है। यह एक बड़ा और सौन्दर्यशाली शहर है। यहांकी जनसंख्या प्राय ८११५४ है। सिपाहीविद्रोहके समय यहांके सिन्धिया तातिया तोपी और झांसीको रानीसे आगरेको भगाये गये। बाद सर ह्यु,रोज (Sir Hugh Rose) ने जब विद्रोहियों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त किया तब सिन्धिया पुन लौट कर लस्कर को आये।

ई०की षष्ठ शताब्दीमें यह शहर हूनके राजा तोरमान और उनके लड़के मिहिरकुलके अधीन था। इस वंशका शिलालेख दुर्गमें पाया जाता है। अष्टम शताब्दीमें यह कन्नौजके राजा भोजके अधिकारमें आया। कहा जाता है कि दशवीं शताब्दीके मध्य यह कच्छवाह राजपूतके हाथमें था। जिन्होंने ११२८ ई० तक राज्य किया। बाद वे परिहारसे परास्त किये गये। इनके अधिकारमें यह ११९६ ई० तक रहा। कुछ काल तक मुहम्मद गजनोने इस पर अपना अधिकार जमाया। १२१० ई०में कुतबुद्दीनके लड़केके शासनकालमें यह फिर परिहारके हाथमें आया और १२३२ ई० तक उन्हींके अधीन रहा। १२३२ ई०में अल्तमासने इस पर चढ़ाई की और इसे अधिकार कर लिया। ग्वालियर शहर १३९८ ई० तक मुसलमानोंके दखलमें रहा बाद तोमर राजपूतने इस पर अपना आधिपत्य जमाया और १५१८ ई० तक इसी अवस्थामें रहा। तोमरके समय यह शहर उन्नतिशिखर पर पहुंच गया था। १५४२ ई०में यह शेरशाह सुरोके अधिकारमें आया। १५५८ ई०में अकबरने सभी छोटे छोटे राजाओंको परास्त कर ग्वालियर शहर अपने कब्जेमें कर लिया और अठारहवीं शताब्दी तक यह मुगल वंशके अधिकारमें रहा। १९ जून १८५८ ई०में सर ह्यु,रोजकी सेनाने लेफटेनाण्ट वालर और रोजके अधीन ग्वालियर पर चढ़ाई कर उसे अपने हाथ कर लिया और १८८६ ई० तक यह इन्हींके दखलमें रहा बाद उन्होंने सिन्धियासे झांसी ले कर यह शहर उन्हें सौंप दिया।

ग्वैंठना (हिं० क्रि०) मरोड़ना, ऐंठना।

ग्वैंठा (हिं० पु०) गोंइठा देखो।

ग्वैंड़ा (हिं० पु०) ग्रामके आसपासकी जमीन।

ग्वैंड़े (हिं० क्रि० वि०) निकट, पास, करीब, समीप।

ग्वैंया (हिं० स्त्री०) गोइयां देखो।

घटपर्यसन (सं० क्ली०) घटस्य पर्यसनं, ६ तत्। धर्मशास्त्रानुसार पतित मनुष्यके प्रायश्चित्त न करने पर उसको परित्याग करनेके लिए उसके जातिवर्गोंकी करने योग्य क्रिया, जीवित दशामें पतितका प्रेतकार्य। मिताक्षराका मत है कि पतित मनुष्य यदि उद्धतवश प्रायश्चित्त न करे तो जाति और मातृपक्षके बान्धवोंको चाहिए कि ग्रामके बाहर उसकी जीवित दशामें ही पिण्ड दे कर प्रेत कार्य करें। सब मिल कर एक दासी द्वारा जलपूर्ण घड़ा मंगा कर स्थापन करावें। इसके बाद सब एकत्र हो कर विधानानुसार उसका उदकपिण्डदानादि समस्त प्रेतकार्य समाप्त करें। कार्यकी समाप्ति होने पर दासी दक्षिणकी ओर मुख कर उस जलपूर्ण पात्रको पैरसे गिरा दें। कुम्भसे जल निकल जानेसे ही इसका नाम घटपर्यसन पड़ा। रिक्ता प्रभृति निन्दित तिथिमें सन्ध्याको इसका अनुष्ठान करना होता है। अन्तमें मुक्तशिख हो स्नान कर ग्राममें प्रवेश करना चाहिए। पतित व्यक्तिको सब कोई मिल कर प्रायश्चित्त करनेको कहें। यदि वह प्रायश्चित्त न करे तो उक्त रीतिके अनुसार उसे छोड़ देना उचित है। इसके बाद उस पतितके साथ सम्भाषण और एक आसन पर बैठ कर कोई कार्य न करें तथा उसके साथ किसी तरहका संबंध न रखना चाहिए। स्नेहवश बातचित करनेसे भी प्रायश्चित्त करना पड़ता है। मनुके टीकाकार कुल्लुकभट्टके मतसे घटपर्यसनके बाद समानोदक और सपिण्ड सबको एक रात्र अशौच मानना पड़ता है।

विशेष विवरण पतित शब्दमें देखो।

घटप्रक्षेप (सं० पु०) घटस्य प्रक्षेपः, ६-तत्। प्रायश्चित्तके बाद करने योग्य कर्मविशेष। पतित मनुष्य प्रायश्चित्त कर किसी पुण्यप्रद जलाशयमें स्नान करें। उस जलाशयसे एक घड़ा जल ला कर सपिण्डगणके सामने आ अपवर्जन करें। इसीका नाम घटप्रक्षेप है।

गौतमके मतसे प्रायश्चित्त कर शुद्ध होनेके बाद एक सुवर्ण घड़ामें किसी पवित्र ह्रदसे जल भर कर लाना चाहिए। कृतप्रायश्चित्त मनुष्य उस घड़ेको स्पर्श कर "आपोहिष्ठा: पृथिवी" इत्यादि मन्त्र जप और होम कर ब्राह्मणको दक्षिणा देवें।

किसी संग्रहकारका मत है कि सब तरहके प्रायश्चितके बाद ही घटप्रक्षेप विधि करने योग्य है। फिर कोई कोई संग्रहकार सिर्फ पतित-प्रायश्चित्तके बाद ही इसका अनुष्ठान स्वीकार किया करते हैं। प्रायश्चित्त देखो।

घटबढ़ (हिं० स्त्री०) न्यूनाधिकता, कमोवेशी।

घटभव (सं० पु०) घटे भवः, ७-तत्। घटज, कुम्भयोनि, जो घड़ेसे उपजा, अगस्त्य मुनि। (त्रि०) २ जो घड़ेसे उत्पन्न हुआ हो।

घटभेदनक (सं० पु०) घटस्य भेदनकः, ६-तत्। वह यन्त्र जिससे घड़ा बनाया जाता हो, घड़ा बनानेका औजार।

घटयितव्य (सं० त्रि०) घट-णिच्-तव्य। १ घटनाके योग्य, होने लायक। २ जिसका होना उचित हो।

"कथमेतत् मदृच्छिद्रं घटयितव्यम्।" (पञ्चतन्त्र)

घटयोनि (सं० पु०) घटः योनिः उत्पत्तिस्थानं यस्य, बहुव्री०। कुम्भयोनि, अगस्त्यमुनि। कुम्भयोनि देखो।

घटराज (सं० पु०) घटेन योजनेन राजते राज-अच्। कुम्भ, बड़ा घड़ा, कलसा।

घटराशि (सं० पु०) एक द्रोण जो प्रायः सोलह सेरका होता है।

घटरिका (सं० स्त्री०) एक प्रकारका वीणा, एक तरहका बाजा।

घटवाना (हिं० क्रि०) घटानेका काम करना, कम करना।

घटवाई (हिं० पु०) १ घाटवाला, वह मनुष्य जो घाटका कर लेता हो। २ रोकनेवाला, वह जो विना कर वा तलाशी लिए न जाने देता हो।

घटवार (हिं० पु०) १ घाटका महसूल लेनेवाला। २ मल्लाह, केवट, मांझी। ३ वह ब्राह्मण जो घाट पर बैठ कर दान लेता हो, घाटिया। ४ घाटका देवता।

घटवारिया (हिं० पु०) घटवालिया देखो।

घटवालिया (हिं० पु०) वह पण्डा जो तीर्थस्थानोंमें नदी या सरोवरके घाट पर बैठ कर दान लेता हो, तीर्थपण्डा, घाटिया।

घटसम्भव (सं० पु०) घटः सम्भव उत्पत्तिस्थानमस्य, बहुव्री०। कुम्भसम्भव, अगस्त्य मुनि।

घटसृञ्जय (सं० पु०) दक्षिणास्थ जनपदविशेष, दक्षिणमें एक गण्डग्राम। महाभारतके भीष्मपर्वमें इस जनपदका उल्लेख है।

घटस्थापन (सं० क्लो०) घटस्य स्थापन, ६ तत्। मन्त्रपूर्वक घड़े की स्थापना, मन्त्र पढ़ कर घड़े का रखना।

पूजा शब्द देखो।

घटहा (हिं० पु०) १ घाटका ठेकेदार, वह मनुष्य जो घाटका ठेका लेता हो। २ वह नाव जो इस पारसे उस पार जाती हो।

घटा (सं० स्त्री०) घट अङ्‌ टाप। १ समूह, झुण्ड, ढेर। २ घटना, कोई बात जो अचानक हो जाय, वाकया हादसा। ३ गोष्ठी, परिवार। ४ बहुतसे लोगोंका समूह, सभा। ५ युद्धस्थलमें हाथियोंका झुण्ड। ६ धूमधाम, समारोह, उत्सव। ७ मेघोंका घना समूह, उमड़े हुए बादलोंका समूह, मेघमाला। ८ मोठा नीबू।

घटाई (हिं० स्त्री०) हीनता, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

घटाकाश (सं० पु०) आकाशका उतना भाग जितना एक घड़ेके भीतर आ जाय, घड़ेके भीतरकी खाली जगह।

घटाग्र (सं० पु०) वास्तु स्तम्भका अष्टम भाग, वास्तुविद्या में खम्भेके नौ विभागोंमेंसे आठवाँ भाग।

घटाटोप (सं० पु०) घटया आटोप, ३ तत्। १ आडम्बर, पाखण्ड तड़क भड़क, गप्पर। २ गाड़ी या पालकोको ढक लेनेवाला ओहार, किसी वस्तुको पूर्णत ढक लेनेवाला कपड़ा। ३ चारों तरफसे घिरी हुई बादलोंकी घटा। ४ बादलोंकी तरह चारों ओरसे घेर लेनेवाला दल या समूह।

घटाना (हिं० क्रि०) १ न्यून करना, कम करना। २ बाकी निकालना, काटना। ३ अप्रतिष्ठा करना, बेइज्जती करना।

घटाभ (सं० पु०) हिरण्यकशिपुका सेनापति असुरविशेष एक दैत्यका नाम जो हिरण्यकशिपुका सेनानायक था।

घटाभिधा (सं० स्त्री०) सफेद कुम्हड़ा, गोल लौकी।

घटाल (सं० त्रि०) घटा निन्दिता घटना अस्त्यस्य। घटा-लच्‌। कुत्सित घटनायुक्त, वह जो खराब तोरसे घटी हो।

घटालाबु (सं० स्त्री०) घट इवा लाबु। कुम्भतुम्बी, गोल कद्दू, गोल घीया, तितलौकी।

घटालिका (सं० स्त्री०) मोठा नीबू, डाभ नीबू।

घटाव (हिं० पु०) १ कम होनेका भाव, न्यूनता, कमी। २ अवनति, तनज्जुली।

घटिक (सं० त्रि०) घटेन तरति घट ठन्। १ जो घड़ा द्वारा नदी पार होता हो। (पु०) घटि कायति वादयति घटिवादनेन समय ज्ञापयतीति यावत् कै क पूर्व ह्रस्व'। २ घण्टा बजानेवाला सिपाही। (क्लो०) ३ नितम्ब, कमरके नोचेका भाग, चूतड़।

घटिका (सं० स्त्री०) १ कालका परिमाणविशेष, एक दंड या २४ मिनिटका समय। घटयति विहितकार्यकरणाय घट णिच् ण्वुल् टाप्। मुहूर्त, दो दण्ड। अल्पोघट घट-ङीप् स्वार्थे कन्। ३ छोटा घड़ा गगरी। ४ पाश्चात्य मतसे २½ दण्डकी एक घटिका होती है। ५ घड़ी, टाइमपीस।

घटिकाचल—मन्द्राज नगरके पूर्व चितोर नगरके पासका एक पर्वत। यहां एक नृसिंह मन्दिर है। घटिकाचल माहात्म्यमें इसका विशेष विवरण लिखा है।

घटिकायन्त्र (सं० क्लो०) समयनिर्णायक यन्त्रविशेष, समय बतलानेवाली घड़ी।

घटिकालवण (सं० क्लो०) विड्‌लवण, विट नमक।

घटिघट (सं० पु०) घट्या घटते घट अच् सप्तात् ह्रस्व'। महादेव, शिव।

"नमो घटाय घट्याय नमो घटिघटाय च।" (हरिवं० १०८ अ०)

घटित (सं० त्रि०) घट णिच् क्त। १ योजित, बना हुआ। २ रचित, रचा हुआ। ३ सक्रान्त, निर्मित। ४ न्याय-प्रसिद्ध पारिभाषिक पदार्थ। जिसका ज्ञान हो जानेसे दूसरेका ज्ञान होना जरूरी है उसको दूसरेका घटित कहते हैं। जैसे 'वह्निमान् पर्वत' इसका ज्ञान करनेसे अवश्य ही वह्नि और पर्वतका ज्ञान हुआ करता है। इस लिये "वह्निमान् पर्वत" यह वह्नि और पर्वत दोनोंसे घटित है।

घटितव्य (सं० त्रि०) जो घटेगा, जिसके होनेकी सम्भावना हो।

घटिन् (सं० पु०) घटस्तदाकारो ऽस्त्यस्य घट इनि। १ कुम्भराशि। (त्रि०) २ कुम्भयुक्त, जिसके पास घड़ा हो।

घटिन्धम (सं० त्रि०) घटीं धमति घटी ध्मा खश् मुम् ह्रस्वश्च। जो मुखसे घड़ो बजाता हो।

घटिन्धय (सं० त्रि०) घटीं धयति घटी धेट् खश् मुम् ह्रस्वश्च। जो छोटा घड़ामें पीता हो।

घटियन्त्र—घटीयन्त्र देखो।

घटिया (हिं० वि०) १ जो अच्छे मोलका न हो, खराब, कम मूल्यका, सस्ता। २ अधम, तुच्छ, नीच।

घटियारी (देश०) खवी नामकी एक तरहकी घास। यह पंजावमें होती और इसकी सुगन्ध अदरककीसी होती है।

घटिल (सं० त्रि०) घटोऽस्त्यस्य घट पिच्छादि इलच्। घटयुक्त, जिसके पास घड़ा हो।

घटिसेवड़ा—एक तरहका छोटा पेड़।

घटिहा (हिं० वि०) १ घात लगानेवाला, दाव पा कर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २ चालाक, मक्कार। ३ धोखेवाज, वेईमान। ४ व्यभिचारी, लंपट। ५ दुष्ट, दुःख देनेवाला, खल।

घटी (सं० स्त्री०) घटः कालमानज्ञापकः सच्छिद्रः कुम्भः ज्ञापकतया अस्त्यस्यां घट-अच् गौरादित्वात् ङीष्। १ दण्डपरिमाणकाल। सिद्धान्तशिरोमणिके मतसे १० गुरु अक्षर उच्चारण करनेमें जितना समय लगता हो, उसका नाम असु, ६ असु या ६० गुरु अक्षरका एक पल और ६० पलका एक दण्ड होता है।

घट अल्पार्थे ङीप्। २ क्षुद्रकुम्भ, छोटा घड़ा, गगरी। ३ समयसूचक यन्त्र, टाइम्पीस, क्लाक।

घटी (हिं० स्त्री०) १ कमी, न्यूनता। २ हानि, क्षति। नुकसान, घाटा।

घटीकार (सं० पु०) घटीं करोति घटी-कृ-अण् उपपदसमा०। कुंभकार, कुम्हार।

घटीग्रह (सं० त्रि०) घटीं गृह्णाति घटी-ग्रह-अच्। घटी ग्राहक, जो छोटा घड़ा लेता हो, जो पानी ढोता हो।

घटीयन्त्र (सं० क्ली०) घट्याः दण्डरूपकालस्य ज्ञापकं यन्त्रं। समयसूचक यन्त्र, घड़ी। प्राचीन भारतवासी आर्य अपनी प्रतिभाशक्तिसे अनेक तरहके कालसूचक यन्त्र आविष्कार कर गये हैं। जब दूसरे दूसरे देशके मनुष्य घटीयन्त्र या कालमानज्ञापक किसी यन्त्रके विषयमें कुछ भी नहीं जानते तथा दूसरे किसी देशमें घटीयन्त्रका आविष्कार नहीं हुआ था, उस समय भी हिन्दुस्थानमें घटीयन्त्रका प्रचार था। अनेक प्राचीन ग्रन्थमें घटीयन्त्रका उल्लेख देखा जाता है। सूर्यसिद्धान्तके मतसे इसका दूसरा नाम कपालकयन्त्र है। घड़ेके नीचे भागको नाईं एक ताम्बेका पात्र बना कर उसके तलेमें एक ऐसा छिद्र बनावें जिसमेंसे धीरे धीरे जल प्रवेश करने पर ठीक एक दण्ड समयमें वह पात्र जलपूर्ण हो जाय। किन्तु स्मरण रहे कि प्रथम जल प्रवेशसे जल पूर्ण हो जाने तकका समय एक दण्डसे अधिक न हो। जो पात्र दिन रातमें ६० बार जलमग्न हो जाय, वही पात्र उपयुक्त है। इसके बाद एक जलपूर्ण बरतनमें उस ताम्रमय पात्रको रख देवें, पात्रके जलमें निमज्जनानुसार कालका परिमाण स्थिर करना चाहिए।

सूर्यसिद्धान्त-टीकाकार रङ्गनाथके मतसे दश पल ताम्रसे घड़ेके नीचे भागके सदृश एक पात्र बनावें। पात्रकी ऊंचाई ६ अंगुल और मुखकी चौड़ाई उसका द्विगुण करना होता है। ३⅓ माषे परिमाणके स्वर्णसे चार अंगुल परिमाणकी एक शलाका बना कर उस ताम्रपात्रमें घुसेड़ दें। इसीका नाम घटीयंत्र है। इस पात्रको किसी दूसरे जलपूर्ण पात्रमें रखनेसे एक दण्डमें वह जलसे भर जाता है।

सिद्धान्तशिरोमणिका मत है कि घड़ेके निम्नभागके जैसा एक तांबेका पात्र बनावें। उसमें एक छिद्र करके एक जलपूर्ण पात्रमें रख छोड़ें। इस पात्रका कोई नियत परिमाण नहीं है। इसे इच्छानुसार छोटे या बड़े आकारका बना सकते हैं। इसके बाद विशेष ध्यान रखना चाहिए कि यह दिन रातमें के बार निमज्जित होता है। यह जितनी बार डूबे उसका अनुपातके अनुसार प्रत्येक बार कितना समय लगता है, उसका स्थिर कर लेवें। इसीका नाम घटीयन्त्र है। किसी किसीके मतसे इस यन्त्रका निर्दिष्ट परिमाणका उल्लेख देखा जाता है, किन्तु वह असङ्गत है क्यों कि उसमें कोई युक्ति नहीं है।

विष्णुपुराणके मतानुसार १२⅓ पल ताम्रका एक पात्र बनावें। चार माषे सुवर्णसे चार अंगुल परिमाणकी एक शलाका तैयार कर पात्रमें छेद कर दें, इसकी नाम घटीयन्त्र है। इसको जलमें रख देनेसे यह ठीक एक दण्डमें जलसे भर जाता है। भारतके गौरवके साथ दिन दिन इन समस्त भारतीय यन्त्रोंका व्यवहार भी घटने

लगा है। वर्तमान समयमें पाश्चात्य कालसूचक यन्त्र ही विशेष प्रचलित है। किसी किसी जगह वर्तमान समयमें इस घटीयन्त्रका व्यवहार देखा जाता है। विशेष विवरण यन्त्र शब्दमें देखो।

२ कूए से जल निकालनेका यन्त्र रहट। ३ सुश्रुतोक्त रोगका एक भेद जो असाध्य माना जाता है। सुश्रुत, पार्श्वशूल और पेटके भीतर जलपूर्ण लोटेकी नाईं शब्द होनेको ही घटीयन्त्रग्रहणी रोग कहते हैं।

घटोत्कच (सं० पु०) भीम और हिडिम्बाके संयोगसे उत्पन्न एक राक्षस। महाभारतमें लिखा है—लाह घरके जलनेके बाद पाण्डव गुप्तभाव हो कर जङ्गलको भागे थे। वे हिडिम्बा नामकी एक राक्षसके राज्यको पहुंचे। राक्षसने उन्हें संहार करनेकी इच्छासे अपनी बहन हिडिम्बाको भेजा। हिडिम्बाने बलशाली भीमके रूपसे मुग्ध हो उनसे विवाह कर लिया। उसके गर्भसे घटोत्कचकी उत्पत्ति हुई। जन्मकालमें ही घटोत्कच राक्षस रूपमें एक भयानक वीर हो उठा। किसी दिन बालकके मातापिताके पास आने पर हिडिम्बा "घटो ह्यस्योत्कच" यह शब्द बोली, इसीसे उस बालकका नाम घटोत्कच रखा। इनकी दोनों आंखें विवर्ण, मुख बहुत बड़ा, कान दोनों खूंटेकी नाईं, ओष्ठ ताम्रवर्ण और शरीर कुछ कुछ बलिष्ठ था। कुरुक्षेत्रकी लड़ाईमें कर्णके हाथसे इनकी मृत्यु हुई। भीम और कर्ण देखो।

घटोत्कचान्तक (सं० पु०) घटोत्कचस्यान्तक, ६ तत्। कर्ण। घटोत्कचारि शब्द भी इसी अर्थमें व्यवहृत होता है।

घटोदर (सं० पु०) घट इव उदरमस्य, बहुव्री०। एक असुरका नाम, हिरण्यकशिपुका एक सेनापति।

घटोद्भव (सं० पु०) घटउद्भव उत्पत्तिस्थान यस्य, बहुव्री०। अगस्त्य मुनि।

घटोर (हि० पु०) मेष, मेढ़ा, भेड़ा।

घट्ट (सं० पु०) घट्टते ऽस्मिन् घट्ट घञ्। १ जिस स्थानमें पुष्करिणी प्रभृति जलाशयमें उतरा जा सकता है, घाट। २ घाटका महसूल लेनेका स्थान। घट्ट भावे घञ्। ३ संचालन चलाना।

घट्टकुटीप्रभात (सं० क्ली०) घट्टस्य कुटी तत्र प्रभातमिव। न्यायका एक भेद। न्याय देखो।

घट्टगा (सं० स्त्री०) दाक्षिणात्यकी एक नदी।

घट्टजीविन् (सं० पु०) घट्टेन घट्टे देयतरपण्येन शुल्कादिना जीवति जीव णिनि। वर्णसङ्कर जातिविशेष, घटवार। विवादार्णवसेतुके मतानुसार वैश्या और रजकके संयोगसे इस जातिकी उत्पत्ति है। घटवार देखो।

घट्टन (सं० क्ली०) घट्ट ल्युट्। संचालन, चलाना।

घट्टना (सं० स्त्री०) घट्ट युच टाप्। १ संचालन। २ वृत्ति, जीविका, पेशा।

घट्टानन्द (सं० पु०) कन्दका एक भेद।

घट्टिका (सं० स्त्री०) घण्टिका देखो।

घट्टित (सं० त्रि०) घट्ट कर्मणि क्त। १ निर्मित, बनाया हुआ। २ चालित चलाया हुआ। ३ कलप दिया हुआ। ४ नृत्यमें पैर चलानेका एक प्रकार जिसमें एड़ीको जमीन पर दबा कर पंजा नीचे ऊपर हिलाते हैं।

घट्टीट (सं० त्रि०) घट्ट तृच्। चालक, चलानेवाला।

घट्टी (सं० स्त्री०) घट्ट अल्पार्थे ङीष्। क्षुद्र घाट, छोटा घाट। घट्ट देखो।

घट्ठा (हि० पु०) शरीर पर उभड़ा हुआ चिह्न जो किसी वस्तुको रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।

घड़घड़ (हि० पु०) बादल गरजने या गाड़ी चलनेकी आवाज।

घड़घड़ाना (हि० क्रि०) गड़गड़का शब्द करना।

घड़घड़ाहट (हि० स्त्री०) १ घड़घड़ आवाज होनेकी क्रिया। २ बादल गरजने या गाड़ी चलनेका शब्द।

घड़त (हि० स्त्री०) गढ़त देखो।

घड़नैल (हि० पु०) छोटी छोटी नदियां पार होनेके लिए बांसमें घड़े बांध कर बनाया हुआ ढांचा, घरनई।

घड़ा (हि० पु०) घट मिट्टीका बना हुआ गगरा, जलपात्र, बड़ी गगरी, कलसा, घैना, कुम्भ।

घड़ाई (हि० स्त्री०) गढ़ाई देखो।

घड़िया (हि० स्त्री०) १ सोनारका एक बरतन जिसमें रख कर वह सोना चांदी गलाता है। २ मिट्टीका छोटा प्याला। ३ शहदका छत्ता। ४ गर्भाशय, गर्भाशय। ५ लोहारके लोहे गलानेका मिट्टीका पात्र।

घड़ियाल (हि० पु०) १ पूजाके समयमें बजाया जानेवाला घण्टा। २ एक बड़ा जोर हिंसक जलजन्तु, ग्राह। नक्र देखो

घड़ियाली (हिं० पु०) १ वह मनुष्य जो समयकी सूचनाके लिये घंटा बजाता है, घंटा बजानेवाला। (स्त्री०) २ देवालयमें लगा हुआ एक तरहका घंटा जो पूजनके समय बजाया जाता है, विजयघंटा।

घड़ी—(घटी शब्द) १ समय बतलानेवाला एक यंत्र।

आज तक काल-विभागज्ञापक जितने उपाय और यंत्र प्रकाशित हुए हैं, उनमें इङ्गलैण्डकी बनी हुई घड़ी ही सबसे उत्कृष्ट है। घड़ीकी इस उन्नतिका श्रेय किसी एक ही व्यक्ति पर नहीं है। विलायती घड़ीका इतिहास देखनेसे यह ज्ञात होता है कि, करीब ४५० वर्षके उद्योगसे आज घड़ीकी ऐसी उन्नति हो पाई है।

घटीयन्त्र देखो।

ग्रह आदिकी गतिके आधारसे समयको प्रथमतः वर्ष मास और दिन-इन तीन स्थूल विभागोंमें विभक्त किया गया, पीछे दिनको फिर क्षुद्रांशमें विभक्त करनेकी जरूरत हुई, तब तरह तरहके उद्योग जारी हुए। सबसे पहिले खड़ा किया हुआ एक स्तम्भ, ध्वज वा बांस या काठसे बनी हुई सीधी लम्बी लकड़ीकी छाया देख कर दण्ड आदिका निश्चय किया जाता था। पाश्चात्य देशोंमें दिनको इसी तरह कई एक समभागोंमें विभाग कर लिया जाता था। इसके बाद ही सूर्य-घड़ी (Sundials) या रविचक्र, जल-घड़ी (Clepsydra) और बालू-घड़ी (Sand-glass) आविष्कृत हुई। रविचक्रसे सूर्यके उदयकालसे ले कर अस्तकाल तक उसकी छाया देख कर समयका निश्चय किया जाता था। जल-घड़ी और बालू-घड़ीसे कोई एक निर्दिष्ट समयका निश्चय किया जाता था। जलघड़ीके दो आधार (पात्र) रहते थे; जिसमे एक तो करीब भरा हुआ रहता था और दूसरा खाली रहता था। ये दोनों पात्र इस तरह संयुक्त रहते थे कि, जिसमें बाहरकी वायु या तापादि प्रवेश नहीं कर सकती थी। दोनों पात्रोंके जोड़की जगहमें एक ऐसा सूक्ष्म छिद्र रहता था कि जिसके द्वारा एक पात्रका पानी क्रमशः खतम हो कर दूसरे पात्रमे आ जमता था। एक पात्रसे दूसरे पात्रमें पानी जानेके समयको, समयका कोई भी एक निश्चय किया हुआ अंश मान लिया जाता था। बालू-घड़ी भो ठ-वह ऐसी ही बनती थी, सिर्फ फर्क इतना ही रहता था कि, उसमें पानीकी जगह सूखी बालू रहती थी। पर इससे सूक्ष्मतासे समयका निर्णय नहीं होता था, क्यों कि जल-घड़ीमें जलका भार, वाष्पतापादि, जलकी घनता व तरलता होती थी और इसमें बालूकी शुष्कता, सूक्ष्मता और संयोगस्थलमें छिद्रके वेधकी घट बढ़के अनुसार बहुतसा फर्क पड़ जाता था।

रविचक्र, जलघडी और बालुघडी देखो।

आजकल जिसको हम साधारणतः घड़ी कहते हैं, वे सब ही पाश्चात्य देशोंकी बनी हुई हैं और वह एकमात्र गतिविज्ञानकी सहायतासे ही बनी है। घड़ी पांच प्रकारकी देखनेमें आती हैं,—(१) घड़ी (Clock) इसमें यन्त्रसंयुक्त लौहशलाकाओंकी सहायतासे दिनके बारह समान अंश (घण्टा, होरा) होते हैं, और उस खदेशांशके प्रत्येक अंशका षष्ठ्यांश (सेकेण्ड) निर्द्धारित और प्रदर्शित होता है, तथा प्रत्येक द्वादशांश उत्तीर्ण होते समय घंटाकी आवाजसे प्रत्येक उत्तीर्ण द्वादशांशकी संख्या बतलाई जाती है। (२) टाइमपीस (Timepiece) इसमें भी उस ही एक ही उपायसे दिनके वैसे ही विभाग निरूपित होते और दिखलाए जाते हैं। फर्क इतना ही है कि, इसमें घण्टी नहीं बजती। (३) जेब-घड़ी (Watch or pocket-timepiece) यह बहुत छोटी होती है, आदमी इसे चलते फिरतेमें भी काममें ला सकते हैं। इसमें भी पहिले कहे हुए उपायोंसे और अपचाकृत बहुत छोटे छोटे कल पुर्जोंकी सहायतासे दिनके वैसे ही विभाग निरूपित होते और दर्शाये जाते है। इसमें भी घण्टी नहीं बजती। (४) क्रनोमिटर—इसमें दिनके सब ही विभाग निरूपित और प्रदर्शित होते हैं और साथही समुद्र आदिमें देशान्तर निरूपित होता है। स्थान और समयके तारतम्यके भेदसे इस घड़ीकी गतिमें फर्क न पड़े, अर्थात् समय निर्देशमें जरासा भी पार्थक्य न होने पावे, इस लिए उसका उपाय भी साथ ही में लगा हुआ रहता है। इसके सिवा घड़ी और जेबघड़ीमे मास, वार और दिनका नाम तक जाननेके लिये यंत्र लगे हुए रहते हैं। घड़ीमें दिनके बारहवें अंशमेंसे प्रत्येक अंशके एकचतुर्थांशमें घण्टा बजनेकी भी व्यवस्था की जाती है। जेब घड़ीमे भी इच्छानुसार बजानेकी

व्यवस्था की जा सकती है। इस तरहकी जेब घड़ियोंका नाम रिपिटर (Repeater) है। घड़ी और टाइमपीसमें घण्टा बजनेके अलावा एक ऐसा भी विशेष यन्त्र लगाया जा सकता है कि, जिसके द्वारा अपने कोई एक खास एक समय पर उस घण्टेको बजा लिया जा सके। इससे सोते हुए अन्यमनस्क और आलसी आदमियोंको बड़ी सुविधा होती है। इस यन्त्रके सहारे वे आवश्यकतानुसार समय पर यन्त्रको तुरत और कर्कश शब्द सुन कर कार्यमें प्रवृत्त हो सकते हैं। इस यन्त्रका नाम 'चैतन्योत्पादक" (Alarm) है। (५) हाथ घड़ी (Wrist Watch) यह जेब घड़ीके सदृश पर उससे कुछ छोटी होती है। हाथकी कलाईमें चमड़े, कपड़े या सोने चाँदीकी बैण्डसे बाँधी जाती है। इसके नाना आकार हैं गोल चौखूटी, कड़कोनी आदि।

सबसे पहिले किसने इस यन्त्रकी स्थापना की, इसका निर्णय करना कठिन है। पहिले यूरोपके नाना स्थानोंमें क्लक वा टाइमपीस शब्दके बदले घड़ी समझानेके लिए 'होरोलजियम्' (Horologium) शब्द काममें लाया जाता था क्यों कि समयविभाजकशास्त्रको उक्त देशोंमें 'होरोलजी'(Horology)कहते हैं। घण्टा बजानेवाली घड़ियोंका व्यवहार प्राचीन समयमें यूरोपके जिन जिन देशोंमें होता था उनमेंसे इटालीदेशके इतिहासमें सबसे ज्यादा प्राचीनकालका विवरण पाया जाता है। वहां तेरहवीं शताब्दीके मध्यके समयमें घड़ीका प्रचार था, ऐसा जाना जाता है। इङ्गलैण्डके इतिहाससे जाना जाता है कि, १२८८ ई०में 'किंगसबेंच' (King's Bench) नामक अदालतके प्रधान विचारकको जो अर्थदण्ड हुआ था, उससे वेस्टमिनिस्टर हाल नामक प्रासादके पास जो सुविख्यात घड़ि घर (Clock house) है, उसकी सबसे पहिले घड़ी बनी थी। इङ्गलैण्डके राजा तृतीय एडवर्ड सेण्टपिटर्स गिर्जाके प्रधान यानक विलियम पोटर्विकको उस घड़ीके लिए प्रतिदिन ६ पेन्स खर्च दिया करते थे। डोभरकी पहिली घड़ी १३०० ई०में स्थापित हुई थी। हेनरी डी वाइक नामक एक जर्मन शिल्पीने फ्रान्सके राजा पञ्चम चार्ल्सके प्रासाद में १३६४ ई०में एक घड़ी स्थापित की थी। इससे पहिले जो सब घड़ियां अर्थात् जिस नियमसे घड़ियां बनती थीं, इन्होंने उसमें बहुत ज्यादा उन्नति की। डाइसार नामक कविके 'फिडेरा' नामके काव्यमें ऐसा है कि,—३य एडवर्ड तीन तीन घटियास्त्र-वित् औलन्दाजोंको प्रतिपालन करते थे। ये लोग डेफ्ट' (Delft) से १३६८ ई०में इङ्गलैण्ड आये थे। १३७० की सालमें ष्ट्रासवर्ग नगरमें एक घड़ी बनी थी कनुरेडाम डासिपोडियास इस घड़ीका विशेष विवरण लिख गये हैं। फ्रइसाटके मतसे इसी समयमें कूर्ट्रेकी भी एक घड़ी थी और उस घड़ीको १३८२ ई०में डिउक औफ बारगण्डि छीन लाये थे। १३६५ ई०में ग्लायारमें एक घड़ी थी, लेमानने इसका विवरण लिखा है।

नरणबर्गमें १४६२ ई०में, अकजियारमें १४८३ ई०में और मिनिममें १४८७ ई०में एक एक घड़ी थी—ऐसा ज्ञात हुआ है। पाम्प्रोनियास् कामाल गुले लिमसु पर्नोरेम नगरमें निकोलासके जो पत्र लिखा था, उस पत्रमें (Lib ९१ epis 1) जाना जाता है कि, १५वीं शताब्दीके पीछले समयमें यूरोपके प्राय समस्त देशोंमें बहुतोंके घर में घड़ीका व्यवहार प्रचलित हुआ था। इससे ही अनुमान किया जा सकता है कि हेनरी डी भीयाइककी घड़ीके बाद और भी डेढ़ सौ दो सौ वर्षके बीचके समयमें यूरोप में कोई भी घड़ीको दुर्लभ व आश्चर्यजनक पदार्थ नहीं समझते थे, साधारण स्थितिके लोगोंके घर भी घड़ीका व्यवहार जारी था। हेनरी डी भीयाइकके बाद घड़ीकी जो इतनी उन्नति हुई है, वह किसी एकके जरिये नहीं; बल्कि एकके बाद दूसरेके बहु उद्योगसे और तरकीबोंसे इतनी उन्नति हो पाई है। भीयाइकके समयमें जहां पर घड़ी स्थापन करनेकी आवश्यकता होती थी, वहीं सब बनाई भी जाती थी। क्यों कि बनाई हुई घड़ी एक जगहसे दूसरी जगहमें ले जाने लायक नहीं होती थी। फिर जब वह १५वीं शताब्दीके शेषभागमें सर्वसाधारणके काम में आने लगी, मालूम होता है तब वह तभी बनाई जाने लगी, स्थानान्तरित की जा सके। इस अनुमानसे यह भी मालूम होता है कि, हेनरी डी भीयाइकसे पहले, उससे पहिलेके घड़ी बनानेवालोंकी समस्त चेष्टा का और स्फुट परिश्रमका फल है।

उस समयमें घड़ीमें पेण्डुलम् वा दोलक नहीं था। उसकी जगह घड़ीकी गतिकी रक्षाके लिए एक मोटा रोलर या सिलिण्डरके मुंह पर रस्सी लपेट कर घड़ीकी एक तरफ एक भार लटका दिया जाता था। इसी भारके जरियेसे रोलर वा सिलिण्डरमें रस्सीकी पेंठ खुलते समय उसमें लगे हुए अन्यान्य चक्रोंमें गति पैदा होती थी।

१६ वीं शताब्दी तक इसी यंत्रकी कुछ कुछ उन्नति होती रही और उसीके अनुसार घड़ी बनती रही। घड़ी बनानेवालोंमें जो जितने जितने पीछे होते गये हैं, वे ही इसकी उन्नति करते हुए घड़ी बनाते गये हैं। इस दर्जेकी घड़ियोंकी साधारणतः वैलेन्स क्लक (Balance clock) संज्ञा थी। इसमें स्प्रिङ्ग वा पेण्डुलम नहीं था, परन्तु इस लिए उसके कार्यमें कोई बाधा नहीं आती थी। ज्योतिषतत्त्वकी आलोचनाके लिए १४८४ ई०में ओयाल्टरने इसी वैलेन्स क्लकको व्यवहार किया था, इसके बाद ज्योतिर्वित् लैं गड्रयें भने भी इसी उद्देश्यसे व्यवहार की थी। जेम्मा फ्रिसियसने १५३० ई०में समुद्रमें देशांतर निरूपणार्थ स्थानांतर करने लायक घड़ी बनानेके लिए प्रस्ताव किया था। १५६० ई०में ताइकोब्रे हिकी चार घड़ी थीं, उसमें घंटा, मिनिट और सेकेण्ड अलग अलग जाने जा सकते थे। इनमेंसे जो सबसे बड़ी थी, उसमें सिर्फ तीन चक्के थे, उनमें एकका व्यास २ फोट था। इस चक्केमें १२०० दांत थे। ताइकोब्रे हिने इन घड़ियोंमें शीत और उष्णताकी घट-बढ़के कारण समय निरूपणमें गड़बड़ होते देखा, पर उस समय वे भी इसका कारण नहीं समझ पाये थे कि, क्यों ऐसा होता है; पीछे मालूम हुआ था। १५७७ ई०में मोएष्टलिनकी एक घड़ी थी, जिसमें २५२८ वार आघात (टिक् टिक् शब्द) होता था। सूर्य उदयके बाद और अस्तसे पहिले इस घड़ीकी शब्द संख्या गिन कर सूर्यका व्यास निरूपण किया गया था। इससे यह स्थिर हुआ कि, सूर्यका व्यास ३४' १३" है। यह किस समयसे प्रारम्भ हुआ था, वह ठीक मालूम नहीं हुआ, किन्तु यह निश्चय है कि १५४४ ई०से पहिले ही प्रारंभ हुआ है। क्यों कि उस सालमें पारी नगरके घड़ी-निर्माताओंने १म फ्रान्सिस-के पाससे यह अनुमति ली थी कि, जो घड़ा निर्माणपटु इस विद्यामें शिक्षित न होंगे, वे बड़ी या छोटी घड़ी कैसी भी न बना सकेंगे। स्थानांतरित की जानेवाली घड़ी बननेके साथ साथ हो या उससे कुछ दिन पहिले, भार लटका कर घड़ीकी गति रक्षा करनेके स्थानमें स्प्रिंग आविष्कृत और व्यवहृत हुआ था। स्प्रिंग व्यवहारके समयसे ही घड़ीकी उन्नतिका द्वितीय युग प्रारंभ समझना चाहिये। इसी समयसे स्प्रिंगका गतिप्रदायक 'फुसि' नामक चक्रका व्यवहार प्रारंभ हुआ था।*

घड़ीकी जब इतनी उन्नति हो चुकी थी, तब गैलिलियोने भी स्थिर किया कि, कोई भार यदि उसके समान लंबे सूतसे लम्बित हो, तो वह एक दफेके हिलानेसे जितनी आगे पीछेकी गति पैदा कर सकता है, उसमें जितना परिमित काल अतीत होता है द्वितीय वार हिलानेके समयमें भी कालका परिमाण प्रायः समान ही रहता है। इससे पेण्डुलमकी सृष्टि हुई है। लण्डन नगरमें रिचार्ड हैरिस नामक एक शिल्पीने १६४१ ई०में सबसे पहिले पेण्डुलम बनाया था। उन्होंने उसी सालमें पेण्डुलमयुक्त घड़ी भी बनाई थी। पेण्डुलम आविष्कृत होनेके बाद हाइजेन्स नामक एक व्यक्तिने जेम्मा फ्रिसियानका मत अवलम्बन करके नाविकोंके व्यवहारके लिए देशान्तरनिरूपक घड़ी निर्माण की थी। उन्होंने घड़ीहीकी सहायतासे पृथिवीका आकार भी निर्णय किया था। उनकी वह घड़ी विषुवरेखाके जितने नजदीक पहुंचती थी, उसके पेण्डुलमकी गति भी उतनी ही कम होती जाती थी। इससे ही उन्होंने यह स्थिर किया था कि पृथिवी ठीक वर्तुलाकार नहीं है, मेरुदण्डके उत्तर-दक्षिणकी तरफ कुछ चपटी है। उसके बाद १६७६ ई०में लण्डनके क्लो नामक एक शिल्पीने घड़ीमें बजनेका यंत्र लगाना प्रारंभ किया। फिर घड़ीमें समयका निर्णय ठीक होता रहे इसके लिए तरह तरहके उपाय किये गये। १६८० ई०में लण्डन-

---

* Beckmann's History of Inventions, Vol. I. p. 340-355. घड़ीका पुरातत्त्व देखने योग्य है।

निवासी ह्लेमेगट नामक शिल्पीने 'एकर एस्केपमेंट' चक्रका आविष्कार किया, इसके जरिये पेण्डुलमके बदले पतला इस्पातका स्प्रिंगका व्यवहार चालू हुआ। सेकेण्ड निरूपणका पेण्डुलम उसमें स्प्रिंगके साथ संयुक्त होने पर उसका नाम हुआ,—'रयाल पेण्डुलम'। उसके बाद १७१५ ई०में जार्ज ग्रेहाम द्वारा पेण्डुलमका एक बड़ा दोष संशोधित हुआ। उन्होंने देखा कि, शीत उष्णताके परिवर्तनके साथ साथ पेण्डुलमके धातुके आकुञ्चन और प्रसारणसे उसकी गतिमें तारतम्य पाई जाती है, अतएव समय निरूपण विशुद्ध भावसे नहीं होता। उनने बहुत अनुसन्धान करके इस दोषको निकाल बाहर किया। फिर हैरिसन नामक दूसरे एक शिल्पीने उसकी और भी अधिक उन्नति की। इसके बाद ग्रेहामने अपने आविष्कृत किये हुए शब्दहीन एस्केपमेंट चक्र (Deadbeat escapement) व्यवहार किया। इस को जगहसे घड़ीकी उन्नतिका तृतीय युग समझना चाहिये।

उसके बाद इस एक सौ वर्षके भीतर भीतर घड़ीके कल-पुर्जाकी इतनी उन्नति हुई है कि, उसमें सेकेण्डमें भी सूक्ष्म काल विभागका निर्णय किया जा सकता है। इसके अलावा एक वर्षके भीतर घड़ीसे ऋतु, मास, पक्ष, दिन, घण्टा, मिनिट, तिथि, वार, मासकी तारीख तक जाननेकी व्यवस्था की गई है। जहाजमें रेलगाड़ीमें, हिमालयके शिखर पर वा विषुवरेखाकी उपरिस्थित मरुभूमिमें ले जाने पर भी आज कलकी घड़ीमें समयमें तारतम्यता नहीं होती। गिर्जा और प्रासादके स्तम्भ आदि पर व्यवहारके लिए एक तरहकी बड़ी घड़ी बनी है, उसका नाम है,—'टारेट क्लाक'। यह क्लाक घड़ियोंके यन्त्रोंसे स्वतन्त्र प्रणालीसे बनती है। टेलिग्राफ विभागमें अथवा ज्योतिर्विदोंके व्यवहार करने योग्य एक तरहकी घड़ी बनी है। वह बिजलीके जरिये चलती है। इसको बिजलीकी घड़ी कहते हैं। बिजलीकी सहायतासे दिनके किसी एक समय विशेषके निरूपणके लिए 'टायम बल' या समय गोलककी सृष्टि हुई है।

रातमें गिर्जा या मन्दिर पर स्थापित घड़ियोंका टायम देखनेके लिए उसमें स्वच्छ डायेल काममें ला कर आलोक पड़ने की भी व्यवस्था की गई है। वह बत्ती इस तरीकेसे संयोग की जाती है कि, जिससे घड़ीके यन्त्रोंकी छाया डायेल पर न पड़ने पावे। इसके सिवाय घड़ीके साथ तरह तरहके दृश्य भी लगाये जाते हैं। किसी किसी घड़ीमें घण्टा बजते समय घड़ीके एक स्थानमें छोटेसे केदका ढक्कन खुल कर उसमेंसे एक घुघु चिड़िया निकल पड़ती है और जितनी दफे घण्टा बजेगा उतनी दफे वह 'घू' 'घू' शब्द करती है। किसी घड़ीमें प्रति घण्टेके आधे घण्टेमें एक बन्दर या मनुष्यकी मूर्ति निकल कर एक लम्बे घंटे पर हतोड़ीसे मार कर बजाता है और किसीमें प्रति घण्टेमें गीत बजता रहता है। किसीमें बरात या ठाकुरविसर्जन और किसीमें वाद्य भाण्डसहित मनुष्य मूर्ति निकलती है।[1] किसी घड़ीमें एक फाटकदार काठका घर बना हुआ रहता है, उसके सामने एक द्वारवानकी मूर्ति बनी हुई रहती है, प्रति सेकेण्डकी गतिके साथ साथ वह एक तरफसे दूसरी तरफ आता जाता रहता है और फाटक एक बार पूरा बन्द हो कर फिर पूरा खुल जाता है। इस प्रकारकी तरह तरहके दृश्यवाली घड़ी देखनेमें आती हैं।

युरोपसे जिन जिन देशोंसे घड़ी चलती हैं, उनमेंसे लण्डनकी घड़ी ही सबसे अच्छी और मूल्यवान् समझी जाती है। परन्तु सुइजर्लेण्ड और जर्मनीमें सबसे ज्यादा घड़ी बनती हैं। आजकल घड़ीका व्यवहार इतना चालू है कि, सुइजर्लेण्डके किसी एक कारखानेमें सालभरमें २ लाख जेब घड़ी बना करती हैं।

कलकत्तेमें कई एक प्रसिद्ध मसजिद, अट्टालिका और गिर्जाओंके शिखर पर बड़ी बड़ी घड़ी लगी हुई हैं। उससे राहगीरोंका बड़ा लाभ है। अमेरिकामें स्त्रियां और बालक बालिकायें साधारणतः घड़ीका तरह तरहके काम करती हैं। भारतमें यद्यपि सब गांवोंमें घड़ीका व्यवहार अभी तक नहीं हुआ है तथ भी इतना जरूर है कि, कमसे कम ग्रामके कोई भी गांवमें पुराने हिसाबसे दण्ड पलादि न कह कर घण्टा मिनिटके हिसाबसे दिनका परिमाण बतलाने पर समझ जाते हैं।

[1] एक दृश्य। २ पाश्चात्य मतसे ढाई दण्ड।

घड़ीदिया (हिं० पु०) एक तरहका घड़ा जो किसी मनुष्यके मरने पर घरमें रखा जाता है। यह घड़ा १०।१२ दिनों तक रहता है। घड़ेके तलेमें एक छेद रहता जिसमें हो कर बूंद बूंद पानी टपकता है और इसके मुख पर एक दीपक जला कर रख दिया जाता है।

घड़ीसाज़ (हिं० पु०) घड़ीकी मरम्मत करनेवाला।

घड़ीसाज़ी (हिं० स्त्री०) घड़ी साजका कार्य या व्यवसाय।

घड़ौला (हिं० पु०) छोटा घड़ा, झंझर।

घड़ौंचो (हिं० स्त्री०) एक तिपाई जिस पर जलपूर्ण घड़ा रखा जाता है।

घण्ट (सं० पु०) घण-क्त। १ दीप्तियुक्त, कान्तिवाला। २ एक तरहकी मछली। ३ शाक प्रभृतिका व्यञ्जन। इसका गुण—बलवर्द्धक, रुचिकर और वातनाशक है।

घण्टक (सं० पु०) घण्ट संज्ञायां कन्। क्षुपविशेष, कोई छोटा पौधा। इसके मूलका गुण—कफनाशक, कटुपाक और पित्तवृद्धिकर है।

घण्टकर्ण (सं० पु०) घण्टो दीप्तः कर्ण इव पत्रमस्य, बहुव्री०। क्षुपविशेष, एक तरहका छोटा पौधा जिसके पत्ते बड़े बड़े अरूईकी तरह होते हैं।

घण्टा—(सं० स्त्री०) घटि शब्द करणे अच्। १ कांस्यादि निर्मित वाद्ययन्त्रविशेष।

"घण्टां वा पणवं वापि वामतः सन्निवेशयेत।" (दुर्गाध्यान)

स्नान और पूजनके समयमें इसका बजना प्रशस्त है। स्कन्दपुराणके मतसे,—जो वासुदेवके पास पूजाके समयमें घण्टा बजाता है, उसका एक सौ करोड़ हजार वर्ष देवलोकमें वास होता है और मनोहारिणी अप्सराएं उसकी परिचर्या करती है। घण्टा सर्ववाद्यमयी, विष्णुका अतिशय प्रिय है। दूसरे वादित्रोंके अभावमें सिर्फ घण्टा बजानेसे ही पूजाकी सिद्धि होती है। घण्टाके दंडके उपर गरुड़ मूर्ति और चक्र बनाया जाता है। ऐसा घण्टा बजानेसे विष्णु सर्वदा वहां उपस्थित रहते हैं।

विष्णुधर्मोत्तरके मतसे—गरुड़मूर्तियुक्त घण्टा बजानेसे उसको फिर जन्म मृत्युका डर नहीं रहता। घण्टाके दण्ड पर चक्रयुत गरुड़मूर्ति स्थापित करनेसे त्रिभुवन स्थापन करनेका फल होता है। जिस घरमें गरुड़मूर्तिवाला घण्टा रहता है, उस घरमें सर्पका भय नहीं रहता। जिसके यहां घण्टा नहीं, उसे विष्णुभक्त वा भागवत नहीं कह सकते। अतएव समस्त वैष्णवोंको चाहिये कि, वह घण्टा पासमें रखें। इसका विशेष विवरण स्कन्दपुराण, विष्णुधर्मोत्तर और हरिभक्ति-विलास आदिसे जानना चाहिये।

घण्टा दो प्रकारके देखनेमें आते हैं। एक तो थाली जैसा गोल होता है, जो हिन्दू, बौद्ध आदि आरतीके समयमें बजाते हैं। और जैनी लोग दसलाक्षिणी पूजाके अंतमें स्वयम्भू स्तोत्रके साथ साथ बजाते हैं और दूसरा मंदिरोंके दालानोंमें तथा वेदीगृहके सामने टंगा हुआ रहता है, इसका आकार औंधा ग्लास जैसा होता है और भीतरमें एक भारी किसी भी धातुका टुकड़ा लटकता रहता है। इसको हिन्दू, जैन, बौद्ध आदि सब ही मन्दिरमें घुसते समय बजाते हैं। इसमेंसे एक हाथसे बजानेका भी होता है, जिसके ऊपरकी तरफ एक पकड़नेके लिए हत्तल रहता है, इसी पर गरुड़ आदिका मूर्ति बनाई जाती है।

मन्दिरोंमें घण्टा लटकानेकी प्रथा यद्यपि भारतमें अति प्राचीनकालसे ही जारी है। पर तब भी यूरोपमें गिर्जा आदिमें जैसा बड़े आकारका घण्टा देखनेमें आता है, इस देशमें वैसा नहीं है।

मिसरवासी, प्राचीन ग्रीक और रोमकोंमें भी हाथसे बजाने योग्य घण्टाका यथेष्ट प्रचार था। मिसरमें 'ओरिसिसका भोज' नामक उत्सवका समय घण्टा बजा कर सबको जनाया जाता था। प्राचीन इहूदीयोंमें आरन नामके प्रधान याजकगण छोटी छोटी सोनेकी घण्टियां अंगरखामें सिलवा कर पहना करते थे। आथेन्स नगरमें सिबिलिके याजकगण पूजामें घण्टा काममें लाते थे। ग्रीक लोग शिविरमें चौर छावणीमें घण्टा (कोड़ा) व्यवहार करते थे। रोमक लोग 'टिनटिन्ना-बुलाम्' बजा कर नहानेका और धन्धेके काममें लगनेका समय सर्वसाधारणको बतलाता था।

४०० ई०में कैम्पानियाके अन्तर्गत नोलाके बिशप पलिनियासने सबसे पहिले बड़ा घण्टा व्यवहार किया था। कैम्पानियामें सबसे पहिले घंटा बना था, इस लिए कुछ दिन तक घण्टाको "कैम्पानि" भी कहते थे और उस

होमें यहां जो गिर्जा घरमें बड़े घण्टे टंगे रहते हैं, उनको 'कैम्पेनाइल' कहते हैं।

फ्रांसमें ५५० ई०में घण्टाका बजना चालू हुआ था। उद्यारमथका आबट वेनेडिक्ट ६८० ई०में इटालीसे एक घण्टा अपने गिर्जाके लिए लाये थे। पोप साबिनियानने (६०० ई०में) यह नियम कर दिया था कि, घण्टा घण्टामें गिर्जासे बड़ा घण्टा बजना चाहिये, जिससे सर्वसाधारण उपासनाका वक्त जान सकें। ये सब बड़े बड़े घण्टे दक्षिण यूरोपमें ही देखनेमें आते थे। यूरोपके पूर्वांशमें ८वीं शताब्दीमें और इङ्गलैंण्ड और जर्मनीमें ११वीं शताब्दीमें घण्टा प्रचलित हुआ था। आयर्लैण्ड, स्कोटलैण्ड, तथा उयेल्सूमें कुछ पुराने घण्टे सुरक्षित रखे हुए हैं, सुनते हैं, वे सब ६वीं शताब्दीके बने हुए हैं। लोहेकी चद्दरको टेढ़ी करके चौमुखी (अर्थात् बीचमें गड्ढासा और चारों कोन उठे हुए) करके रिभेटसे जोड़ कर ये सब घण्टा बनाये गये हैं, इनके ऊपर पीतलकी कलई की जाती है। इनमेंसे एकका नाम 'सेण्ट पेट्रिकका' घण्टा, और यह ६ इञ्च ऊंचा, ५ इञ्च चौड़ा तथा ४ इञ्च गहरा है। यह एक पीतलके डिब्बेमें सुरक्षित रखा हुआ है। यह डिब्बा रत्न खचित है और उस पर चांदीका काम किया हुआ है। आइरिस शुज (Irish Shews) के एक शिलालिखसे जाना जाता है कि, यह घण्टा १०९१से ११०५ ई०के भीतर भीतर बना है। "The Annals of Ulster" नामक पुस्तकमें ऐसा भी उल्लेख पाया जाता है कि, यह घण्टा ५५२ ई०में भी था। सेण्टमल नामके एक आइरिस मिशनरीके पास (६४६ ई०में) एक चापना घण्टा था। यह घण्टा अब भी सुइजर्लैण्ड नगरमें (मठमें) मौजूद है और सर्वसाधारणको दिखलाया जाता है।

आरलिन्स नगरके गिर्जाके लिए किसी राजाने एक घण्टा दान स्वरूप दिया था। खृष्टीय ग्यारहवीं शताब्दीमें इस घण्टाने बहुत प्रसिद्धि पाई थी। इसका वजन २६०० पौण्ड अर्थात् १३०० सेरके करीब था। १३वीं शताब्दीमें इससे भी बड़े बड़े घण्टे बनने लगे। १४०० ई०में पारी नगरमें 'जैकेलिन्' नामका एक घण्टा सांचेमें ढाला गया था जो कि वजनमें १५००० पौण्ड अर्थात् १८१॥ मन था। पारी नगरमें और भी एक १४७२ ई०में ढाला गया था, वह भी वजनमें २५००० पौण्ड अर्थात् ३१२॥ मन था। रुया नगरका जो प्रसिद्ध घण्टा है, वह १५०१ ई०में ढाला गया था। उसका वजन था ३६३६४ पौण्ड अर्थात् करीब ४५४॥ मन १ सेर।

रूसियाके मस्काउ नगरमें जो बड़ा भारी घण्टा है, उससे बड़ा या उसके समान दूसरा घण्टा यूरोपमें इससे पहिले नहीं था। यह घण्टा पहिले पहल कब बना था, उसका निश्चय नहीं। पर १५वीं शताब्दीमें ही बना है, यह ठीक है। इसका नाम था, 'जार कोलोकोल' अर्थात् 'घण्टाराज'। ऐसा सुननेमें आता है कि, मस्काउ नगरमें किसी समयमें १७०६ घण्टे थे। इनमें से एक घण्टा इतना बड़ा था कि, उसके भीतरका लटकन हिला कर बजानेमें २४ आदमियोंकी जरूरत होती थी। इसका वजन २८८००० पौण्ड अर्थात् ३६०० मन था। यह एक दफे टूट गया था और फिर १६५४ ई०से बना था। इसके बाद फिर भी एक दफे गिर पड़ा था, उस समय उसको तोड़ ताड़ कर और भी धातु मिला कर फिरसे (१७३४ ई०में) इसमें बड़ सांचेमें ढाला गया था। तबहीसे इसका नाम "जार कोलोकोल" पड़ा था। यह घण्टाराज' १८ फुट ३ इञ्च लम्बा ६० फुट ८ इञ्च घेर और २ फुट मोटा था। इस घंटेमें ६७००० पौण्ड अर्थात् (१०) दश रुपयेका अगर एक पौण्ड माना जाय) ६७००००) रु० खर्च पड़ा था। १९८ टन अर्थात् १०३६ मनके करीब इसका वजन था। बहुत दिन तक ऐसा भ्रम था कि, यही घण्टा किसी वक्त व्यवहृत होता था, फिर १७३७ ई०में यह अग्निकाण्डमें गिर कर जमीनमें प्राय घुस गया था। पर पीछे यह भ्रम दूर हो गया। बहुतसे सूक्ष्मदर्शी और धीरबुद्धियोंकी विवेचनासे यह निश्चय हुआ है कि यह कभी भी लटकाया नहीं गया और न कभी सांचेमेंसे निकाला ही गया था। ऐसा ही ८० टन वजनवाला और भी एक घण्टा मस्काउ नगरमें मौजूद है। इसके अलावा यूरोपके नाना देशोंके गिर्जाओंमें १८से लेकर ५ टन तकका घण्टा पाया जाता है।

मस्कोउके "घण्टाराज"के विषयमें क्लार्कके भ्रमण-वृत्तान्तसे यह मालूम होता है कि, जिस समय इसकी धातु गलाई जाती थी, उस समय साधारण और सम्भ्रान्त लोगोंने धार्मिक उद्देश्यसे इसमें इतना सोना, मुद्रा, अलङ्कार और तैजसादि डाला है कि, वह देखनेमें चांदी जैसा मालूम पड़ता है। सम्राट् 'निकोलस'ने इस घंटेको जमीनसे निकलवा कर एक ग्रेनाइट नामको पत्थरकी वेदी पर स्थापित किया था। उसी समय इसका एक तरफका थोड़ासा भाग टूट गया था और फिर वह घंटेमें घुसनेका दरवाजा सरीखा हो गया; जो अब छोटा गिर्जा (Chapel) कहलाता है। टूटा हुआ अंशका वजन ११ टनके करीब होगा।

ईसाई लोग इसी तरह बहुत दिनोंसे घण्टा व्यवहार करते आये हैं। मुसलमानोंमें घंटेका व्यवहार नहीं है। उपासनाका समय होने पर ईसाई लोग जिस प्रकार गिर्जामें घण्टा बजा कर साधारणको सूचित करते हैं, मुसलमान लोग उसी तरह मसजिदमें जा कर "आजान" दिया करते हैं। यह "आजान" देनेकी व्यवस्था शायद हिन्दू और ईसाइयोंके घण्टा व्यवहारके प्रति विद्वेष दिखलानेके लिए की गई होगी। हिन्दुओंमें जिस प्रकार घण्टाके बहु-व्यवहारसे उसकी पवित्रता, लक्षणालक्षण और उसमें देवप्रियता बतलाई है, उस ही प्रकार प्राचीन ईसाइयोंमें भी घण्टाके बहु व्यवहारमें उसकी पवित्रता और घण्टापवित्रीकरण प्रचलित था। घण्टा बनाते समय नाना प्रकारके धर्मानुष्ठान होते थे और फिर उसका मनुष्योंकी भांति अभिषेक (वैप्टाइज) कर नामकरण और सुगन्धि द्वारा लेपन होता था और सफेद या लाल रङ्गके टोप वा दूसरे कोई तरहके सुदृश्य आच्छादनसे ढक दिया जाता था। यह सब व्यवहार आलकुइनके समयसे चला आया है और १८वीं शताब्दीमें भी रोमन् कैथलिकोंमें प्रचलित था। ईसाई लोग घंटेको इतना पवित्र मानते है कि, उस पर पवित्र श्लोक आदि खुदाते है। उनका विश्वास है कि, घंटेमें आघात करनेसे उसकी आवाजके साथ खुदे हुए मंत्रोंके अंशसे उत्पन्न हुए शब्द मिल कर मङ्गल विधान करते हैं। तथा आंधी, मड़क और शत्रुकी दुरभिसन्धि, अग्नि-भय यह सब भी घंटेकी ध्वनिसे नष्ट हो जाते हैं। मध्ययुगमें प्रायः सब ही घंटोंमें निम्नलिखित श्लोक खुदा हुआ रहता था—

"Funera plango, fulgura frango, Sabbata pango, Excito lentos, dissipo ventos, paco cruentos."

इस तरहके बहुतसे कुसंस्कार उस समयके आदमियोंके हृदयमें घुस गये थे, इसका फोटो वाशिंगटन आरभिंगने अपनी Sketch book नामक पुस्तकमें खूब अच्छा उतारा है। घण्टाके बजनेसे आंधी रुकती है ऐसा विश्वास १९वीं शताब्दीमें भी सुसभ्य सुशिक्षित यूरोपियोंके हृदयसे नहीं निकला था। १८५२ ई०में जब माल्टाके उपकूलमें बड़ी भारी आंधी आई थी तब माल्टाके विशपने खुद समस्त गिर्जाओंमें ऐसा आर्डर भेजा था कि आंधी बन्द करनेके लिए लगा तार कई घंटे तक बड़े बड़े घंटे बजाये जांय।

पहिले किसी ईसाईकी मृत्यु होने पर घंटा बजाया जाता था। फिर धीरे धीरे मृत्युके ठीक अव्यवहितमें पहिले घण्टा बजानेकी व्यवस्था हुई। इस घंटाको मृत्यु-घण्टा अर्थात् Passing bell कहते थे: इस रीतिके प्रचारके समय लोगोंका ऐसा विश्वास था कि, घण्टाकी आवाज सुननेसे मुमुर्षुकी देह पवित्र हो जाती है और पिशाचादि भाग जाते हैं। १७वीं शताब्दीमें यह प्रथा बन्द हो गई और "मृत्यु-घण्टा" नामका भी लोप हो गया। परन्तु मरे हुए व्यक्तिको ले कर गोरस्थानमें पहुंचने तक तथा जब तक उसकी समाधिक्रिया पूरी न हो पाती थी, तब तक घंटा बजता रहता था। इसमें कोई कुसंस्कार नहीं था, मरे हुएके प्रति सम्मान दिखलाना ही इसका उद्देश्य था। अब भी यह प्रथा कहीं कहीं जारी है। रोमन कैथलिकोंमें अब भी दूसरे प्रकारसे घंटा बजानेकी रीति मौजूद है। गिर्जामें उपासना शुरू होते समय घंटा बजा कर लोगोंको इकट्ठा किया जाता और उपासनामें प्रवृत्त होनेसे पहिले मेरीकी उपासना करके तथा उपासना खतम होने पर क्षमा प्रार्थनापूर्वक उपासना करते समय फिर घण्टा बजाया जाता था। इन दो प्रकारके वाद्यको "क्षमा-वादन" वा Pardon-bell कहते थे। खृष्टीय समाज

मस्कारसे (Reformation) पहिले यह प्रथा सब गिर्जामें थी । पर यह प्रोटेष्टाण्ट गिर्जामें बन्द हो गई थी, परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि, 'मृत्यु घण्टा' एक ही समयमें उठ गया था ।

११वीं शताब्दीकी शुरू आतमें इङ्गलैण्डके 'कार्फिउ बेल' नामका एक प्रकारका घंटा बजाना प्रचलित हुआ था । इसमें धार्मिक कोई सम्बन्ध नहीं था । रातके आठ बजे सबको बत्तियां बुझा देनी होंगी ऐसा प्रथम विलियमने हुक्म दिया था, इसी आदेशके अनुसार सवसाधारणको होशियार हो जानेके लिए शहरोंमें यथासमय घंटे बजाये जाते थे । विलियम कफासके समय तक वह नियम जारी रहा, फिर उठ गया था । अब भी इङ्गलैंड में और स्कोटलैण्डमें बहुत जगह रातके आठ बजे घण्टा बजते हैं परन्तु उसके साथ साथ अधिवासियोंको बत्तियां नहीं बुझानी पड़ती ।

आखिरमें घण्टामें संगीतकी ध्वनि उत्पन्न करनेकी तरकीब निकाली गई । यह आविष्कार सबसे पहिले नेदारलैण्डके लोगोंने निकाला था । उस देशके बहुतसे गिर्जाओंमें हमेशह मृदु सुस्वरसे घण्टा बजते हैं और घंटा घण्टामें घडीकी भांति घंटे भरमें आधे घंटेमें पाव घंटेमें बजते रहते हैं । इनमें कई एक बैरेल लगे हुए अर्गन नामक यंत्रकी तरह बजते हैं और कुछ ऐसे भी हैं, जिनको चाबोकी सहायतासे वादक आ कर बजाते हैं । फरासी लोग इस प्रकारके बाजेको "कैरिलोन्स" कहते हैं । इङ्गलैण्डमें भी ऐसे घंटे हैं, पर वह एक नहीं, ५६ घंटे सुर मिला कर ऐसे कौशलसे रखे जाते हैं कि बजते समय उन घण्टोंसे तरह तरहके सुर उत्पन्न हो कर बहुत ही मनोमोहिनी ध्वनि उत्पादन करते हैं । अङ्गरेज लोक ऐसे ही घण्टोंको "कैरिलोन्स" कहते हैं । वार्सेस् नगरके 'लि होले' नामक प्रासादके शिखर पर ऐसा "कैरिलोन्स" नामका घण्टा है । ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर और सुस्वर वाद्यवाला घंटा सारे यूरोपमें और दूसरा नहीं है । लण्डनमें और बहुतसे घण्टोंमें कैरिलोन्स घण्टाकी भांति ४१६ घण्टोंका सुर मिलाया गया है, परन्तु उसकी तुलना नहीं कर सकता टिंग टांग् टग् टग् टाग् टंग् ऐसा बजता रहता है । इसका सुर मीठा और दूरसे मनमें आता है । इस बाजेकी यहां तक तरक्की हुई है कि, १२ घण्टा मिला देनेसे ४७८,००१,६०० प्रकारके भिन्न भिन्न सुस्वर बजते रहते हैं । चिपसाईड्' नामक स्थानके 'सेण्टमेरि लि बो' नामके गिर्जामें इसी तरहका घण्टा इतना प्रसिद्ध है कि, उसके विषयमें इङ्गलैण्डमें एक कहावत हो गई है कि, किसीको अगर लण्डनमें जन्म स्थान है—ऐसा परिचय देना होता था; तो वह कहता था—"Born within the sound of bowbells ।' ये सब घण्टे कोई एक निर्दिष्ट समय पर बजानेके लिए प्रति दिन लोग अर्थदान करते थे । पूर्वोक्त (Bowbells) प्रति दिन सुबह गम्भीर आवाजसे बजता है । लण्डनवासी एक व्यक्ति इस वाद्यके लिए यथेष्ट धन दे गये हैं । उनका यह उद्देश्य था कि, इससे लण्डनको शिक्षित सम्प्रदाय इसके नादको सुन कर जगेंगे और अपने अपने कार्यमें तत्पर होंयगे ।

यूरोपमें रोमकोंने घोड़े आदि पशुओंके गलेमें छोटे छोटे घण्टा बांधनेका नियम चलाया था । घोड़ेकी गर्दनमें सामको घण्टी लटका देनेसे अंधेरेमें रास्तागीरोंको घोड़के आगमनका ज्ञान हो जाता था । गाय, बकरी, भेड़ आदि पशुओंके गलेमें घण्टी रहनेसे पहाड़ व जंगलोंमें उनके खो जानेसे ढूंढनेमें सुविधा होती है ।

साहबोंके मकान पर किसीके आगमन होनेपर उसकी सूचनाके लिए जो घण्टा बजता है, वह इंगलैण्डकी रानी एनिके राजत्वकालमें नहीं था उसके बाद प्रचलित हुआ है । अंगरेज लोग नोकरको बुलानेके लिए हिन्दुस्तानियोंकी तरह हला नहीं करते, एक तरहकी घण्टी बजाते हैं । इस घण्टेको 'आह्वान घण्टा' (Calling bell) या 'गृहघण्टा' (Room bell) या 'टेबिलघण्टा' (Table-bell) कहते हैं । साहब लोग होटलोंमें, रहनेके घरमें इत्यादि स्थानोंमें प्रत्येक कमरेमें सवादादि देनेके लिए एक तरहकी तारसे बंधी हुई घंटी काममें लाते हैं । इन तारोंका एक मुंह तो नोकरोंके घरमें और एक मुंह दरवाजेके पास रहता है । इन तारोंमेंसे किसी एक तारके खींचनेसे अभीप्सित घरमें घण्टी बज जाती है ।

एशियाके दक्षिणपूर्वांशमें बड़े घण्टोंका अधिक प्रचार है । ब्रह्मदेशमें बहुतसे घण्टे बजानेके लिए

टोलक (लटकन) नहीं रहता, हिरणके सींगकी हथौड़ी द्वारा वे बजाये जाते हैं। ब्रह्मदेशमें करीब करीब सब मंदिरोंमें घण्टा है। रेंगूनके 'श्वेदागुन' नामक मन्दिरमें १८४२ ई०का ढला हुआ एक घण्टा है। इसका वजन ४२ टन ५ हन्दर ४० पौण्ड है। यह ऊंचाई-में ६॥ हाथ है, इसका व्यास ५ हाथ और मुटाई १५ इञ्चकी है। मेंगूनका घण्टा १८ फुट ऊंचा है, वजनमें ८८ टन ७ हन्दर १०६ पौण्ड अर्थात् करीब २५०० मन है।

पिकिन चीनदेशकी राजधानी है। यहाँ एक छोटेसे मठमें १ घण्टा है, जिसका वजन ५३॥ टन है। इस पर चीन भाषामें बौद्धधर्मके हजारों उपदेश खुदे हुए हैं। इससे उस 'मठ'का इतिहास जाना जा सकता है। क्योंकि प्रत्येक मठ-स्वामी अपनी मृत्युसे पहिले इस पर कुछ न कुछ लिख गये हैं। पिकिनमें ७ घण्टा ऐसे हैं, जो वजनमें ५० टन या इससे कुछ अधिक होंगे। इनमें एक घण्टा पृथिवी भरमें सबसे बड़ा है और मस्काउका 'घण्टाराज' दोयम नम्बर है।

हिन्दू लोग भी देवमन्दिरोंमें घण्टा लटकाते हैं। प्रत्येक दर्शनार्थी इसको बजाते हैं। विलायती 'कैरिलोन्स'की भांति ५-७-१२ घंटे एकत्र बजानेकी प्रणाली हिन्दुओंमें भी बहुत दिनसे है। किसी किसी मंदिरमें ऐसे १०८ घण्टा भी देखनेमें आये हैं। परन्तु इंगलैण्डके 'कैरिलोन्स'में जैसा सुर मिलाया जाता है, वैसा यह नहीं होता।

नेपालके किसी किसी प्राचीन मंदिरमें हजार डेढ़ हजार वर्षके पुराने घण्टा पाये जाते हैं।

देवपूजामें धूप और दीप दानके बाद बांये हाथसे घण्टाका हत्तल पकड़ कर घण्टा बजाना चाहिये। तंत्रसारके मतानुसार अस्त्रमंत्रमें (फट्) घण्टाकी पूजा करनेका विधान पाया जाता है।

२ घण्टापाटली वृक्ष। ३ अतिबला। ४ नागबला। (राजनि०) ५ जवापुष्पवृक्ष।

घण्टाक (सं० पु०) घण्टाइव कायति कै-क। घण्टापाटलीवृक्ष, मोरवा नामका पेड़।

घण्टाकर्ण—(सं० पु०) घण्टावत् कर्णौ यस्य, बहुव्री०। १ शिवका एक अति प्रिय अनुचर। मीन संक्रांतिमें स्त्र हिवृक्षकी जड़में इसकी पूजा होती है। पूजाका मंत्र—

"घण्टाकर्ण ! महावीरः ! सर्वव्याधिविनाशन।
विस्फोटकभये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबलः॥" (तिथ्यादितत्त्व)

घण्टाकर्णके शिवानुचर होनेकी ऐसी कथा प्रचलित है,—ये मंगलके पुत्र हैं, मेधाके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं। इनका दूसरा नाम घण्टेश्वर है। इन्होंने अभिशप्त हो कर उज्जयनी नगरीमें मनुष्य रूपमें जन्मग्रहण किया और महाराज विक्रमादित्यकी सभामें प्रधान रत्न होनेके लिए शिवकी आराधना की। शिवने संतुष्ट हो कर वर भी देना चाहा, पर इनके अभीष्टकी सिद्धि नहीं हुई। शिवने वर दिया कि,—"तुम कालिदासके सिवाय और सबको पराजित कर सकोगे। कालिदास सरस्वतीका वरपुत्र है, उसको पराजित कर सको ऐसा वर मैं नहीं दे सकता। यदि उसको पराजित करनेकी इच्छा हो, तो सरस्वतीकी आराधना करो।" घण्टाकर्ण इसमें राजी न हुआ। उन्होंने फिर भी शिवहीकी आराधना करनी शुरू की। पर उससे भी उनके अभीष्टकी सिद्धि न हो सकी। तब फिर उन्होंने झकमार कर ऐसी प्रतिज्ञा ली कि, देह रहते हुए अब शिवका नाम भी न लूंगा। पर इससे शिवके प्रति जो उनकी भक्ति और श्रद्धा थी, वह न घटी। आखिर विक्रमादित्यकी सभाके सभ्योंको पराजित करनेके लिए वे राजधानीकी तरफ जाने लगे। उनको इस बातका विश्वास था कि, शिवमें भक्ति रखनेसे मैं अवश्य ही कालिदास आदिको भी पराजित कर सकूंगा। देवादिदेव महादेव भी परोक्ष भावसे उनके पीछे पीछे चल दिये।

इधर यह भी प्रसिद्ध हो चुका था कि, घण्टाकर्णने महादेवका नाम परित्याग कर दिया है। उन्होंने राजसभामें प्रवेश कर कालिदासके अतिरिक्त सब पण्डितोंको पराजित कर दिया। कालिदासने देखा कि, मामला तो गड़बड़ाता है। उन्होंने विचार करनेसे पहिले यह कह दिया कि, "अगर आप दीर्घ छन्दसे, महादेवका स्तव कर सकें; तो हम भी आपके साथ विचार करेंगे, अन्यथा नहीं।" ऐसा कहनेका तात्पर्य शायद यही था कि, न तो यह शिवका स्तव करेगा और न मेरेको पराजित कर

सकेगा। पर इससे कालिदासकी अभीष्ट सिद्धि न हुई। घण्टाकर्ण महादेवमें भक्ति तो रखते ही थे, सिर्फ मानसिक कष्टसे उन्होंने ऐसी प्रतिज्ञा ली थी। अतएव उनने नामशून्य स्तव पढ़ना शुरू किया। जैसे—

'किं वाच्यो महिमा महाजलनिधे यत्रेन्द्रवज्राहति
ध्वस्तो भूधरसञ्चयस्तु निवसत्यौर्वोऽनलोऽहर्निशं ।
मैनाकोऽतिनिरीश्वरो विमलम् पाठीनपृष्ठोत्थम्
गौरव्यापकोटिकोटरकुटे कृष्णतरेऽपि तं ।
तावत् सततमुदस्तुहितमहो स सर्वथा तवं
तावद्धि परिवारितम् इव इव शेषः तमस्तारिन्यम् ।
यस्य व्यापकनामभी विलुलिते धत्ते ज्वलत्काऽऽकृति
सैव शीतलतामयन्तम्य कस्मै विदध्मो नमः ॥

इस स्तवको सुन कर सम्पूर्ण सभा उनकी प्रशंसा करने लगी। महाराज भी सन्तुष्ट हुए। कालिदासने विना विचारके ही अपनी पराजय स्वीकार की। घण्टाकर्ण शापमुक्त हुए। महादेवने इनकी अचला भक्ति देख कर इनको अपना प्रिय पार्षद बनाया।

२ घण्टकक्षुप।

घण्टागार (स० पु०) घण्टाया आगार ६ तत्। जिस घरमें घण्टा रखा जाता है।

घण्टाताड (स० पु०) घण्टा कालज्ञापकघण्टा ताडयति घण्टा ताडि अण्, उपपदस०। कालसूचक घण्टा बजाने वाला, वर्णसङ्कर जातिविशेष। जो लड़ाईमें घण्टा बजाता हो उसीको घण्टाताड कहते हैं।

घण्टाताडन (स० क्ली०) घण्टा बजानेकी क्रिया या भाव।

घण्टानाद (स० पु०) घण्टाया नाद, ६ तत्। १ घण्टाका शब्द, घड़ीकी आवाज। घण्टा या नाद इव नादोऽस्य, बहुव्री०। २ कुवेरके एक मन्त्रीका नाम।

घण्टापथ (स० पु०) घण्टानां घण्टादिवाद्यानां घण्टायुक्त हस्त्यादीनां वा पन्था, ६ तत्। समा अच। बड़ा राजपथ, हाथी जाने लायक ग्राममार्ग, गाँवकी वह राह जिस पर हाथी जा आ सकता हो।

घण्टापाटलि (स० स्त्री०) घण्टा नामी पाटलिरिति कर्मधा०। वृक्षविशेष मोखा नामका एक पेड़। (Bignonia Suaveolens) इसका संस्कृत पर्याय—गोलीढ़, झाटल, मोख, मुष्कक गोलिह, धारद्रु, काल मुष्कक, पाटलि, घण्टाक, झाट, तीक्ष्ण, घण्टक, मोचक, काष्ठपाटली, कालस्थाली और कालस्थली है। (भावप्र०)

घण्टाभ (स० त्रि०) घण्टाया इव आभा यस्य, बहुव्री०। एक दैत्यका नाम। घटाभ देखो।

घण्टारवा (स० स्त्री०) घण्टारववत् रव पक्वफलेषु यस्य, बहुव्री० टाप। वनशणवृक्ष, झनझनियाका पेड़। इसका पर्याय—शणपुष्पिका और शणपुष्पी है।

घण्टारवी (स० स्त्री०) घण्टारव बाहुलकात् ङीप्। घण्टारवा देखो।

घण्टाल (स० पु०) मदनवृक्ष।

घण्टालिका (स० स्त्री०) घण्टाली स्वार्थे कन् टाप् पूर्व-ह्रस्वश्च। घण्टाली देखो।

घण्टाली (स० स्त्री०) घण्टा तच्छब्द अलति अल-अण्-ङीप्। कोषातकी, एक तरहका पौधा, झाँक। घण्टानामाली, ६ तत्। २ घण्टाश्रेणी।

घण्टावत् (स० त्रि०) घण्टा मतुप् मस्य व। घण्टायुक्त, जिसको घण्टा हो।

घण्टावाद्य (स० क्ली०) घण्टाका शब्द, घड़ीकी आवाज।

घण्टावीज (स० पु०) घण्टेव वीज यस्य, बहुव्री०। १ जैपालवृक्ष, जायफलका पेड़। २ जायफलकी गुठली।

घण्टाशब्द (स० पु०) घण्टाया शब्द, ६ तत्। १ घण्टारव, घण्टाकी आवाज। घण्टाया शब्द इव शब्दो यस्य, बहुव्री०। २ कांस्य, कांसा धातु।

घण्टाशोता (स० स्त्री०) अतिबला।

घण्टाशोला (स० स्त्री०) महाशण वृक्ष।

घण्टिक (स० पु०) जलजन्तुविशेष घड़ियाल, ग्राह। कुम्भीर देखो।

घण्टिका (स० स्त्री०) घण्टा अल्पार्थे ङीप् ततः स्वार्थे कन् ह्रस्वश्च। १ बहुत छोटा घण्टा। २ तालुस्थ जिह्वा, वह छोटी जिह्वा जो तालुमें लगी रहती है, काग। ३ घुंघुरू। ४ गलरोगविशेष, गलेका एक तरहका रोग। ५ शणपुष्प, झनझनियाके फूल। ६ ~ मरिच सरचाद।

घण्टिन (स० त्रि०) घण्टाऽस्यास्ति घण्टा इनि। १ घण्टायुक्त, जो घण्टासे सुसज्जित हो, जिसको घण्टा हो।

घण्टिनीवीज (स० क्ली०) घण्टिन्या वीज, ६-तत्। जैपाल, जायफल।

घण्टु (सं० पु०) घटि-उण्। १ गजघण्टा, हाथीके गले-का घण्टा। २ प्रताप, उष्णता, गरमी, ताप।

घण्टेश्वर (सं० पु०) मङ्गल और मेधाके संभोगसे उत्पन्न देवताविशेष। इन्होंने व्रण दान किया था। इनकी पूजा करनेसे व्रणरोग आरोग्य होता है।

घण्टोदर (सं० पु०) घटोदर देखो।

घण्ड (सं० पु०) घणिति शब्दं कुर्वन् डयते उड्डीयते घण्-डी-ड्। १ भ्रमर, भौंरा। (त्रि०) हन्ति हन् सुम् निपातने साधुः। २ मारक, हिंसा करनेवाला, मारनेवाला, कत्ल करनेवाला। ३ मधुमक्षिका।

घतर (देश०) प्रभातकाल, तड़का।

घतिया (हिं० वि०) घात करनेवाला, धोखा देनेवाला।

घतियाना (हिं० क्रि०) १ अपनी घात या दाँवमें लाना। २ चुराना, छिपाना।

घन (सं० पु०) हन् अप्, घनादेशश्च। मूर्तौ घनः। पा ३।३।७७। १ मेघ। "माल्यवत्यनवद्यासमीपोपगतान् घनान्।" (भारत ११।१५७।२४) २ मुस्तक, मुथा। ३ समूह। ४ दार्ढ्य। ५ विस्तार लौहमुद्गर। (मेदिनी)

"प्रतिजघान घनैरिव मुष्टिभिः।" (भारवि १८।१)

६ शरीर। ७ कफ। ८ अभ्रक, अबरक। (त्रि०) ९ निविड़, निरंतर।

"तदलब्धपदं हृदि शोकघने प्रतियातमिवान्तिकमस्य गुरोः।" (रघु ८।९१)

१० दृढ़। "यश्चकार विवरं शिलाघने।" (रघु ११।१८)

११ पूर्ण।

"कि स्विद्यापूर्वं नैवास जलधारा घनैर्घनैः।" (भारत ११३६।२८)

१२ सम्पुट। (शब्द१०) १३ करतालादि कांस्यवाद्य। १४ मध्यम नृत्य। (मेदिनी) १५ लोहा। १६ त्वच्। (राजनि०) १७ मोटा, स्थूल। १८ अविरत, अविच्छिन्न। (पु०) १९ वेदपाठविशेष।

"जटामुक्ता विपर्यस्य घनमाहुर्मनीषिणः।"

(जटा शब्दमें विस्तृत विवरण द्रष्टव्य) २० नागरमुस्तक, नागरमोथा। २१ वङ्ग, सीसा। २२ गुड़। २३ गणित-विशेष, समान तीन अंकका घातु अर्थात् गुणा करके गुणफलको पुनः उससे गुणा करनेसे जो संख्या होती है, उसे भी राशिका घन कहते हैं। जैसे ३ का घन करना है, तो ३ को ३ से गुणा करने पर फल हुआ ९। इस गुणफलको पुनः ३ से गुणा करनेसे फल हुआ २७; इस लिए तीनको घन राशि सत्ताईस हुई। दो या इससे अधिक संख्याका घन करनेका सहज नियम लीलावतीमें लिखा हुआ है।

सिर्फ एक राशिका घन करना हो तो, उस राशिको उसीसे गुणा करके गुणफलको पुनः उसी राशिसे गुणा करनेसे जो संख्या होगी, वह ही उस राशिका घन है। दो या उससे अधिक राशिका घन निकालनेका यही नियम है।

१म नियम।—जिन दो राशिका घन करना होगा, उसकी दाहिनी ओरकी राशिको अन्त्य और बाईं ओरकी राशिको आदि कहते हैं। पहिले अन्त्य अंकका घन बैठाना होगा। उसके बाद अन्त्यके वर्गको ३ और आदिके द्वारा गुणा करके पहिले बैठाये हुए अंकके नीचे एक स्थान छोड़ कर बैठाना होगा और आदिके वर्गको ३ और अन्त्यसे गुणा करके दूसरी पंक्तिके नीचे एक स्थान छोड़ कर शुद्ध घन करना चाहिए। बादमें आदिके घनको तीसरी पंक्तिके नीचे एक स्थान छोड़ कर लिखो और फिर उसका जोड़ लगाओ। यह योगफल ही उन दो राशियोंका घन होगा। इसकी बाईं तरफ और भी राशि रहने पर जिन दो राशिका घन किया गया है, उसकी अन्त्य और उससे पहिलेकी एक राशिको आदि कल्पना करके पूर्व नियमसे प्रक्रिया करनी चाहिये। तीसरे अंकको आदि कल्पना करके प्रक्रिया करना चाहें तो ऊपरकी पंक्तिके दो अंकको छोड़ कर उसके नीचे दूसरी पंक्तिको स्थापना करनी चाहिये। इस प्रकारसे तत्परवर्ती राशि होने पर उनकी भी प्रक्रिया करनी चाहिये।

उदाहरण—२७ और १२५, इसका घन निश्चित करो।

प्रक्रिया—२७, इन दो राशिका घन करना हो तो ७को अन्त्य समझना चाहिये और २ को आदि समझना चाहिये। ७के घन ३४३को एक पंक्तिमें स्थापन करो। अन्त्यवर्ग ४९ (को) आदि २×३से गुणा करनेसे २९४

फल हुआ, इसको पहिली पङ्क्तिके नीचे एक स्थान छोड कर रखो और आदि २के वर्ग ४को अन्त्य ७×३से गुणा करने पर ८४ फल हुआ, इसको द्वितीय पङ्क्तिके नीचे एक स्थान छोड कर रखो। फिर आदिके घन ८को एक स्थान छोड कर रखो, फिर उसका जोड देनेसे १८६८३ फल होगा। इस लिए २७ की घन राशि १८६८३ हुई। दो राशिको घन प्रक्रिया चार पङ्क्तियोंमें होती है। उसकी प्रणाली निम्न प्रकार समझनी चाहिये—

$$२७^३ = १९६८३।$$

३४३
२९४
८४
८
———
१९६८३

प्रक्रिया—पहिली प्रक्रियाके अनुसार ५ अन्त्य और दो आदि कल्पना करके प्रक्रिया करनेसे २५, घन होगा १५६२५। फिर २५को अन्त्य और २१को आदि कल्पना करके प्रक्रिया करनी चाहिये। अन्त्य २५के वर्ग १५६२५ की एक पङ्क्तिमें रखो। अन्त्यके वर्ग ६२५को आदि १×३ द्वारा गुणा करनेसे फल १८७५ होता है, इसको पहिली पङ्क्तिके दो स्थान छोड कर रख दो। आदिके वर्ग १को २५×३ द्वारा गुणा करने पर फल ७५ होगा, इसको दूसरी पङ्क्तिके नीचे दो स्थान छोड कर रखो फिर १के १को तीसरी पङ्क्तिके नीचे दो स्थान छोड कर रखो और जोड लगाओ। इसका फल १९५३१२५ होगा। अतः १२५का घन १९५३१२५ हुआ। पङ्क्ति रखनेकी प्रणाली इस प्रकार है—

$$१२५^३ = १९५३१२५।$$

१५६२५
१८७५
७५
१
———
१९५३१२५

इस नियमसे आदि अङ्कसे प्रक्रिया शुरू करनेसे भी काम चल सकता है।

२रा नियम—जिस राशिका घन करना होगा, इच्छानुसार उसके दो टुकडे कर दोनों खण्डके घातको उस ही राशिसे पूरण करने पर जो कुछ होगा, उसको ३ द्वारा गुणा करके रखो, पृथक् रूपसे दोनों खण्डोंका घन करके उसके योगफलको पूर्वस्थापित राशिके साथ योग करनेसे जो होगा वह ही उक्त राशिका घन है। ऐसी जगह राशिको जिन दो खण्डोंमें विभक्त करनेसे प्रक्रिया सहजमें हुई उसी तरह खण्डमें विभक्त करना चाहिये।

उदाहरण—९ और २७ इन दो राशिका घन निर्णय करो।

१ प्रक्रिया—९ को ५ और ४ ऐसे दो खण्डोंमें विभक्त करो। दोनोंके घात २०से ९को पूरण करो, फिर उसको ३से गुणा करनेसे फल ५४० होगा। दोनों खण्डोंका घन ६४ और १२५का योगफल १८९को पूर्वस्थापित ५४०के साथ जोड देनेसे फल ७२९ हुआ। इस प्रकार २य नियमके अनुसार ९का घन ७२९ हुआ।

२ प्रक्रिया—२७को २० और ७ इन दो खण्डोंमें विभक्त करो। दोनोंका घात १४० हुआ, इससे २७को पूरण करो, फिर उसे ३से गुणा करनेसे ११३४० उपलब्ध होंगे। दोनोंका घन ८००० और ३४३का जोड हुआ—८३४३। इसको पहली रखी हुई राशिके साथ जोड देनेसे १९६८३ होगा। इस तरह २७का घन १९६८३ होता है।

३य नियम—जिस राशिका घन करना होगा वह राशि अगर वर्गराशि हो तो वर्गमूलकी प्रक्रियाके अनुसार उसका मूल निकालना होगा। उस मूलका घन, उसके वर्गहीको वगराशिका घन समझना चाहिये।

उदाहरण—४ और १६का घन कितना होता है?

प्रक्रिया—४का वर्गमूल २ है, २का घन ८ और ८ का वर्ग ६४ होता है। इस लिए तीसरे नियमके अनुसार ४का घन ६४ हुआ। १६का वर्गमूल ४ है, ४का घन ६४ है, और ६४का वर्ग ४०९६ है। अत तीसरे नियमके अनुसार १६का घन ४०९६ होता है।

घनकफ (स० पु०) घनस्य मेघस्य कफ इव, ६ तत्। करका, ओला, वर्षाका पत्थर।

घनकाल (सं० पु०) घनस्य कालः, ६-तत्। वर्षा ऋतु, वर्षा मौसिम।

घनकोदण्ड (सं० पु०) इन्द्रधनुष, मदाइन।

घनक्षेत्र (सं० क्ली०) जिस क्षेत्रकी लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई समान रहे उसे घनक्षेत्र बोलते हैं।

घनगरज (हिं० स्त्री०) १ बादलके गरजनेकी ध्वनि। २ आषाढ़ या वर्षारम्भमें उत्पन्न होनेवाली एक तरहकी खुमी। ऐसा कहा जाता है कि बादलके गरजने पर इसके बीज जमीन फोड़ गाँठके रूपमें निकल पड़ते हैं। इसकी तरकारी बनाई जाती है। ३ एक तरहकी तोप।

घनगोलक (सं० पु०) घनेन मूल्यो गोल इव कायति कैं-क। मिश्रित स्वर्ण रौप्य, सोना और चाँदीका मिला हुआ द्रव्य।

घनघन— अतिशय निरन्तर, परस्पर मिलान, जिसके बीचमें फांक न हो।

घनघनाना (हिं० क्रि०) घनघन शब्द होना, घंटेके जैसा शब्द निकलना।

घनघनाहट (हिं० स्त्री०) घन घन शब्द निकलनेकी आवाज।

घनघोर (हिं० पु०) १ घनघनाहट, भीषण ध्वनि, भारी आवाज। २ बादलकी गरज। (वि०) ३ बहुत घना, गहरा। ४ जिसका दर्शन और श्रवण भयानक हो, जिसे देख और सुन हृदय दहल जाय, भीषण, भयावना।

घनचक्कर (हिं० पु०) १ चञ्चल बुद्धिका मनुष्य, वह मनुष्य जिसकी बुद्धि सदा चञ्चल रहे। २ मूर्ख, बेवकूफ, मूढ़। ३ वह मनुष्य जो निष्प्रयोजन इधर उधर भ्रमण करता हो, निठल्ला, आवारागर्द। ४ एक तरहकी आतशबाजी, चकरी, चरखी। ५ सूर्य्यमुखीका पुष्प। ६ गर्दिश, चक्कर। ७ फेरफार, जञ्जाल।

घनचतुष्कोण (सं० पु०) लम्बाई, चौड़ाई, तथा ऊंचाई चतुष्कोणका नाम घनचतुष्कोण है।

घनचन्दनादि (सं० पु०) वातपित्तज्वरका क्वाथ (काढ़ा)। मोथा, रक्तचन्दन, पपड़ी, कटकी, वेणाका मूल, परवल लता, वाला, प्रत्येकको १४ रत्ती ले कर आधसेर जलमें उन्हें उबालें जब जल आधा पाव बच जाय तो उसे उतार ४ माषा चीनी डाल दें। इसे छान कर लेनेसे वातपित्त-ज्वरनाश हो जाता है।

घनच्छद (सं० पु०) घना निविड़ाश्छदा यस्य, बहुव्री०। १ शिग्रु, सहिंजनका दरख्त। २ तालीशपत्र।

घनजम्बाल (सं० पु०) घनश्चासौ जम्बालश्चेति, कर्मधा०। चुल्लुक, गण्डूष, मुख भरने लायक पानी, चुल्लू।

घनज्वाला (सं० स्त्री०) घनस्य ज्वालेव। १ वज्राग्नि, बिजलीकी तड़क। २ मेघकी दीप्ति, मेघकी चमक दमक।

घनता (सं० स्त्री०) घनस्य भावः घन-तल्-टाप्। घना होनेका भाव, ठोसपन, घनापन।

घनताल (सं० पु०) घनतायां निविड़तायां अलति पर्याप्नोति अल्-अच्। १ सारङ्ग पक्षी, चातक चिड़िया, पपीहा। (पु०) घनश्चासौ तालश्चेति, कर्मधा०। बाद्यादिका तालविशेष, करताल। ताल देखो।

घनतिमिर (सं० पु०) गहरा अन्धकार।

घनतोय (सं० पु०) ह्रदविशेष, कोई झील।

घनतोल (सं० पु०) घनं मेघं तोलयति ऊर्ध्वं नयति आघ्राणेन घन-तुल् अण्, उपपदस०। चातकपक्षी, पपीहा।

घनत्व (सं० क्ली०) घनस्य भावः घन-त्व। १ घनता, घनापन, घना होनेका भाव। २ लम्बाई, चौड़ाई, और मोटाई तीनोंका भाव।

घनत्वच् (सं० पु०) घना निविड़ा त्वक् यस्य, बहुव्री०। शिग्रु, सहिंजनका पेड़।

घनद्रुम (सं० पु०) घनश्चासौ द्रुमश्चेति, कर्मधा०। विकण्टकवृक्ष, जवासा।

घनधातु (सं० पु०) घनश्चासौ धातुश्चेति, कर्मधा०। चर्बी, मेद।

घनध्वनि (सं० पु०) मुस्तक, मोथा।

घननाद (सं० पु०) १ बादलोंकी गरज। २ रावणका पुत्र मेघनाद।

षष्ठ भाग संपूर्ण